अपदाना

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान

विषय-सूची

अपदाना

अपदान में लगभग 600 कविताएँ हैं, जिनमें से अधिकतर वरिष्ठ बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों की जीवनीपरक कहानियाँ हैं, लेकिन बुद्धों और एकांत बुद्धों की भी हैं। भिक्षुओं और भिक्षुणियों की कई कहानियाँ थेरागाथा और थेरिगाथा में प्रस्तुत छंदों का विस्तार हैं, या उनसे संबंधित हैं, जिन्हें प्रारंभिक संघ के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा बोला गया माना जाता है। अपदान जातक टीका के समानांतर है, जिसमें बुद्ध अपने पिछले जन्मों का वर्णन करते हैं।

अधिकांश अपदान कहानियाँ एक अनुमानित रूपरेखा का अनुसरण करती हैं, जिसमें वक्ता भारत के विभिन्न भागों में विभिन्न परिस्थितियों में नैतिक व्यक्तियों के रूप में अपने पिछले जन्मों में किए गए पुण्य कर्मों का वर्णन करता है, और अंत में अपने वर्तमान जन्म की कहानी और वे बुद्ध के शिष्य कैसे बने, इसका वर्णन करता है प्रसिद्ध और कम प्रसिद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों के पूर्व जन्मों की ये कहानियाँ संभवतः उन गृहस्थ अनुयायियों को नैतिक उदाहरण प्रदान करने के उद्देश्य से लिखी गई थीं जो बौद्ध जीवन जीना चाहते थे, लेकिन भिक्षु या भिक्षुणी के रूप में दीक्षा लेने में असमर्थ या अनिच्छुक थे।

यह ग्रंथ चार भागों में विभाजित है:

1. बुद्ध-अपदान: पूर्व बुद्धों और उनके बुद्धक्षेत्रों (बुद्धखेत्त) की स्तुति।
2. पच्चेकबुद्ध-अपदान: आनंद द्वारा बुद्ध से एकांतवास में रहने वाले बुद्धों (पच्चेकबुद्ध) के ज्ञानोदय के बारे में प्रश्न।
3. थेरा-अपदान: वरिष्ठ भिक्षुओं के 10 अपदानों के 55 अध्याय।
4. थेरी-अपदान: वरिष्ठ भिक्षुणियों के 10 अपदानों के 4 अध्याय।

अपादान 1.बुद्ध

अपादान 1.1: पिछले बुद्ध

सुमेधा पर प्रवचन, भावी गौतम बुद्ध
, अन्य पूर्व बुद्धों द्वारा
सिद्धियों की प्राप्ति, बोधिसत्व द्वारा

अपादान 1.2: गौतम बुद्ध

राजकुमार सिद्धार्थ का जन्म
; ऐश्वर्य; दुःखों को देखना; पुत्र का जन्म

; सांसारिक जीवन का त्याग
; ज्ञानोदय; मारा (राक्षस स्वामी) का पराजय;
बुद्ध बनना और कामुकता पर विजय;
भिक्षु संघ की शुरुआत;
पिता के राज्य में वापसी;
मठों की स्थापना;
बुद्ध का अपने बारे में कथन : कर्मों का फल होता है
अपादान 2: अतीत के मौन बुद्ध (पच्चेकबुद्ध)
अपादान 2.1: मौन बुद्ध-1
अपादान 2.2: मौन बुद्ध-2
अपादान 3: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य)
अपादना 3.1: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 1-10
अपादना 3.2: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 11-77
अपादना 3.3: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 78-200
अपादना 3.4: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 201-300
अपादना 3.5: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 301-400
अपादना 3.6: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 401-500
अपादना 3.7: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 501-559

अपादान 4: प्रमुख थेरी (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ)
अपदान 4.1: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध नन) 1-40

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.1ए सुमेधा, भविष्य गौतम बुद्ध
स्रोत: संभवतः पीटीएस

अगला >>>>

विषय-सूची

अपादान भाग - 1.1ए: पिछले बुद्ध - दीपंकर बुद्ध ने सुमेधा को आशीर्वाद दिया

ग्रंथ की प्रस्तावना
लघु खंड
अपदान पर टिप्पणी
(पहला भाग)
नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासंबुद्धस्स

मैं सिर झुकाकर परम श्रेष्ठ बुद्ध को प्रणाम करता हूँ, जो अद्वितीय हैं और जिन्होंने ज्ञान के सागर और संसार के चक्रों को पार कर लिया है। इसी प्रकार, मैं परम शांत, गहन सत्य, धम्म को प्रणाम करता हूँ, जो सूक्ष्म, सूक्ष्म, अनेक रूपों का सृजन करने वाला, शुद्ध और सर्वज्ञ बुद्ध द्वारा सम्मानित है। इसी प्रकार, मैं परम श्रेष्ठ संघ, बुद्ध के शिष्यों को प्रणाम करता हूँ, जो बुराई और आसक्ति से मुक्त हैं, जो दान-पुण्य के सबसे योग्य प्राप्तकर्ता हैं, जिनकी इंद्रियाँ शांत हैं और जो आसवों से मुक्त हैं।

मैंने इस और उस 'रत्न' को विशिष्ट रूप से श्रद्धांजलि अर्पित की है, और तीनों रत्नों के प्रति विशेष आदर दिखाया है। इस अनुभव के बाद, बौद्ध धर्मगुरुओं के वरिष्ठ सदस्यों ने, जो दृढ़ता से स्थिर हैं, बुद्ध की शिक्षाओं और आगमों के ज्ञाता हैं, और अपने अनुयायियों के बीच प्रसिद्ध हैं, मुझसे बार-बार और आदरपूर्वक अनुरोध किया है: "आदरणीय महोदय! अपदान पर एक टीका संकलित की जानी चाहिए।"

अत: मैं तीनों पिटकों में मौजूद पाठ के अनुसार उचित व्याख्या प्रस्तुत करूंगा, जिसमें जीवनी और उपलब्धियों से संबंधित कोई भी बात नहीं छोड़ी जाएगी।

बुद्ध के शिष्यों द्वारा एक विशेष श्रेणी की विधि से व्याख्या करना।

यह उत्कृष्ट धम्म किसके द्वारा, कहाँ और कब प्रचारित किया गया था? इसका उद्देश्य क्या था? इन प्रश्नों के उत्तर देने के बाद, निष्कर्ष निकलता है। प्रारंभिक जानकारी के लिए और सुगमता से समझने और याद रखने के लिए, मैं पहले और बाद के अर्थों को अलग करने वाले विभिन्न समाधानों के बारे में बताऊंगा, साथ ही उन सभी बातों के बारे में भी बताऊंगा जो भले लोगों की अपेक्षा है और जो प्राचीन सिंहली भाषा और पुरानी टीकाओं में निर्धारित नियमों के अनुसार पूरी नहीं हुई हैं। अतः, प्राचीन टीकाओं की पद्धति का सहारा लेते हुए और अप्रिय अनुवादों से बचते हुए, मैं स्पष्ट अर्थों को उजागर करूंगा। इस प्रकार, मैं एक व्याख्यात्मक टीका संकलित कर रहा हूँ - जो उत्कृष्ट और असाधारण व्याख्या है।

परिचय

मैंने अपनी प्रस्तावना में जो वादा किया था, अर्थात्:- "मैं एक टीका संकलित करूँगा जिसमें यह बताया जाएगा कि यह परम उत्कृष्ट धम्म, सत्य, कब, कहाँ और किस समय कहा गया था", उसके कारण अपदान का यह व्याख्याकार निश्चित रूप से अतीत की प्रस्तावना (दूरोनिदान), निकट अतीत की प्रस्तावना (अविदूरे निदान) और निकटवर्ती प्रस्तावना (शांतिके निदान) का उल्लेख करेगा। जो लोग ऐसी (व्यापक) टीका सुनते हैं, वे निश्चित रूप से सुनी हुई बातों को दोहराने के समय से ही पूर्णतः समझ लेते हैं। क्योंकि ऐसी समझ को अच्छी समझ कहा जा सकता है, इसलिए मैं इन तीनों प्रस्तावनाओं (निदान) का उल्लेख करने के बाद ही अपनी यह टीका संकलित कर रहा हूँ।

वहाँ, प्रारंभ से ही, तीनों प्रस्तावनाओं के प्रत्येक प्रकरण को जानना आवश्यक है (पहला प्रकरण) उस समय से है जब परम पुरुष बुद्ध दीपांकर के चरणों में भविष्यवाणी प्राप्त करने से लेकर राजा वेस्सन्तरा के रूप में अपने निधन के बाद तुषिता के स्वर्ग नगर में पुनर्जन्म लेने तक। इन दोनों अवसरों के बीच के प्रवचन मार्ग को दूरस्थ प्रस्तावना (दूरेनिदाना) के रूप में जाना जाता है। (दूसरा प्रकरण) तुषिता के स्वर्ग से प्रस्थान करने के समय से लेकर बोधि वृक्ष के चरणों में सर्वज्ञता प्राप्त करने तक है। इन दोनों अवसरों के बीच के प्रवचन मार्ग को निकटवर्ती प्रस्तावना (अविदूरे निदाना) के रूप में जाना जाता है। निकटवर्ती प्रस्तावना (सन्तिके निदाना) के संबंध में, प्रकरण के बारे में जानकारी उन स्थानों से प्राप्त होती है जो स्वयं बुद्ध के निवास स्थान बन गए थे।

प्रस्तावना

1. उस विषय में, यह विशेष रूप से दूरस्थ प्रस्तावना (दूरेनिदान) है। हमें बताया गया है कि एक लाख विश्व युगों से भी अधिक, असंख्य विश्व युगों (कप्पा) के चार पूर्ण समुच्चयों से, अमरावती नामक एक नगर था। उस नगर में सुमेध नामक एक ब्राह्मण रहता था। वह माता और पिता दोनों ओर से एक अच्छे परिवार में जन्मा था। सातवीं पीढ़ी (कुलपरिवत्त) तक, उसके पूर्वजों और उसका स्वयं का अंतरात्मा निर्मल था। उसके जन्म और पालन-पोषण के संबंध में कोई निंदा (अक्खित्त) या निंदा (अनुपकुत्थे) नहीं हुई थी। वह अत्यंत सुंदर, आकर्षक और मनभावन था, और उसका रंग-रूप अत्यंत सुंदर कमल के समान था। वह केवल ब्राह्मण विद्या का अध्ययन करता था, कोई अन्य कार्य नहीं करता था। कम उम्र में ही उसने अपने माता-पिता दोनों को खो दिया। उनके माता-पिता की मृत्यु के बाद, उनके पुरोहित, जो परिवार की सारी संपत्ति के प्रभारी थे, उनके पास संपत्ति का लेखा-जोखा लेकर आए, जिसमें उनकी पैतृक संपत्ति दर्ज थी। इसके बाद, रजिस्ट्रार ने वह कक्ष खोला, जिसमें सोना-चांदी, रत्न-मोती आदि का खजाना रखा था, और उन्हें समझाया: "इतना आपकी

माता का था; इतना आपके पिता का, और इतना आपके दादा-दादी का।" इस प्रकार, उनके माता-पिता और दादा-दादी द्वारा विरासत में मिली संपत्ति के बारे में जानकारी देने के बाद, जिसमें पिछली सात पीढ़ियों की संपत्ति भी शामिल थी, अभिलेखपाल, यानी मंत्री ने, उस युवक से अपनी विरासत में मिली संपत्ति का उचित उपयोग करने का अनुरोध किया। बुद्धिमान सुमेधा ने चिंतन किया: “इतनी संपत्ति अर्जित करने के बाद, मेरे पिता और दादा आदि ने परलोक जाते समय अपने साथ एक भी सिक्का (कहापना) नहीं ले गए। मेरे लिए तो यही उचित है कि मैं उन्हें अपने साथ ले जाकर परलोक जाऊं।” अतः उन्होंने राजा को सूचित किया, पूरे नगर में ढोल बजवाया, जनसमूह को दान दिया, संसार त्याग दिया और संन्यासी बन गए। इस बात को स्पष्ट करने के लिए, इस स्थान पर सुमेधा कथा का उपदेश दिया जाना चाहिए। यह घटना बुद्धवंश में लगातार आती रही है। फिर भी, क्योंकि यह लगातार काव्य रूप में आती है, इसलिए स्पष्ट रूप से समझ में नहीं आती। अतः मैं नियमित अंतराल पर इसके श्लोकों और उनके प्रासंगिक व्याख्यात्मक पाठों का वर्णन करूंगा।
सुमेधा पर प्रवचन, भावी गौतम बुद्ध
1.1 एक लाख युगों (पृष्ठ 5) से अधिक चार असंख्य युगों (कप्पा) पहले, एक नगर था, जिसे अमरावती या अमर नाम दिया गया था, जहाँ दस प्रकार की ध्वनियाँ निरंतर गूंजती रहती थीं। इस संबंध में बुद्धवंश में इस प्रकार कहा गया है:-

एक लाख युग और चार असंख्य युग (कप्पा) पहले, अमारा नामक एक नगर विद्यमान था, जिसमें रमणीय दृश्य थे, जहाँ दस प्रकार की ध्वनियाँ कभी शांत नहीं होती थीं और जहाँ प्रचुर मात्रा में भोजन और पेय उपलब्ध थे।

1.2 वहाँ, पाली अभिव्यक्ति: दशही सद्देही अविवित्तं का अर्थ है कभी मौन नहीं, बल्कि दस प्रकार की ध्वनियों से भरा हुआ, जिनमें हाथियों की आवाज़, घोड़ों की आवाज़, रथों की आवाज़, बड़े ढोलों की आवाज़, ढोलों (मुदिंगा) की आवाज़, वीणाओं की आवाज़, गीतों की आवाज़, शंखों की आवाज़, झांझों की आवाज़ और ऐसे निमंत्रण और स्वागत की आवाज़ें शामिल हैं जैसे: "अपनी जगह बैठिए, अपना भोजन कीजिए; अपना पेय लीजिए;" दसवीं ध्वनि के रूप में। इन दस प्रकार की ध्वनियों से शहर कभी भी मौन एकांत की स्थिति में नहीं रहता था।
लेकिन बुद्धवंश में, उन ध्वनियों को अलग-अलग लिया गया और उनका उल्लेख इस प्रकार किया गया:

"हाथियों की आवाज, घोड़ों की आवाज, बड़े ढोलों की आवाज, शंखों की आवाज और रथों की आवाज। खाने-पीने की चीजों के साथ घोषणाएं की गईं: कृपया खाएं-पिएं।"

इसके साथ ही निम्नलिखित बयान भी दिया गया:-

“यह एक ऐसा नगर था जो हर तरह से परिपूर्ण था, जहाँ लोग हर तरह के काम के लिए आते थे। सात प्रकार के रत्नों से युक्त यह नगर विभिन्न श्रेणियों के लोगों से भरा हुआ था। स्वर्ग नगर की तरह समृद्ध (समिद्ध) यह नगर पुण्य कर्म करने वालों का निवास स्थान था। अमरावती नगर में सुमेध नामक एक ब्राह्मण के पास करोड़ों-करोड़ों की संपत्ति थी और वह प्रचुर मात्रा में धन और धान का स्वामी था। वह मंत्रों का ज्ञाता और स्मरण करने में निपुण था, क्योंकि उसने तीनों वेदों में पारंगत था। हस्तरेखा शास्त्र और पारंपरिक ज्ञान के साथ-साथ अपने स्वयं के सिद्धांत में भी वह पूर्णता प्राप्त कर चुका था।”

1.3 फिर एक दिन, वह ज्ञानी सुमेध अपने उत्तम महल की ऊपरी मंजिल पर अकेले बैठे हुए, पालथी मारकर इस प्रकार चिंतन करने लगे: “हे ज्ञानी! परलोक में जन्म लेना वास्तव में दुख है। इसी प्रकार, शरीर का क्षय होना भी एक पीड़ा है, जहाँ भी कोई और सभी पुनर्जन्म लेते हैं। मैं भी जन्म के अधीन हूँ, वृद्धावस्था का भागी हूँ, रोगग्रस्त हूँ और मृत्यु के लिए नियत हूँ। ऐसी स्थिति में, मुझे अमर निर्वाण की खोज करनी चाहिए, जो सुखमय और शीतल है, जहाँ जन्म, वृद्धावस्था, रोग और मृत्यु का अभाव है। अनिवार्यतः, जन्म से मुक्त होकर, मुझे सही मार्ग पर एक ही यात्रा द्वारा निर्वाण, अमर अवस्था की ओर अग्रसर होना चाहिए। अतः यह कहा गया है:-

एकांत में जाकर, बैठकर मैंने यह चिंतन किया: 'चूंकि अब जीवन वास्तव में दयनीय है, वैसे ही शरीर का क्षय भी है। चूंकि मैं जन्म, वृद्धावस्था और रोग के अधीन हूं, इसलिए मैं पूर्ण शांति (निब्बुति) की खोज करूंगा, जो वृद्धावस्था से रहित और सभी खतरों से सुरक्षित है। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि मैं इस सड़ते हुए, घावों से भरे शरीर को त्याग दूं और बिना किसी इच्छा और लालसा के आगे बढ़ूं? वह

सही मार्ग अवश्य है, जो बिना किसी कारण के संभव नहीं है। मैं उस सही मार्ग की खोज करूंगा, ताकि मैं अस्तित्व से पूर्ण रूप से मुक्त हो सकूं।'

1.4 इसके अलावा, उन्होंने इस प्रकार विचार किया:-
"जिस प्रकार इस संसार में सुख और दुःख का एक-दूसरे के विपरीत अस्तित्व है, उसी प्रकार यदि जन्म है, तो उसका विपरीत भी होना चाहिए - जन्म न होना। फिर, जिस प्रकार ऊष्मा का होना स्वाभाविक है, शीतदंश का होना स्वाभाविक है, उसी प्रकार कामवासना (राग) आदि की अग्नि के शांत होने के साथ ही निर्वाण (अमर शांति) भी होनी चाहिए। जिस प्रकार निम्न और दुष्ट धर्म (धम्म) के विपरीत केवल अच्छा और निष्पाप सत्य (धम्म) है, ठीक उसी प्रकार यदि बुरा जन्म हो, तो जन्म-मुक्त अवस्था (निर्वाण) भी होनी चाहिए, जहाँ जन्म का कोई ज्ञान नहीं होता, क्योंकि सभी जन्मों का त्याग हो जाता है।"

इसलिए यह कहा गया:-

"जिस प्रकार दुखों की बहुतायत में सुख अवश्यंभावी होता है, उसी प्रकार जब कर्म विद्यमान होता है, तो कर्म का अभाव अपेक्षित होता है। जिस प्रकार ऊष्मा की उपस्थिति में शीतलतापूर्ण अमरता विद्यमान होती है, उसी प्रकार तीनों प्रकार की अग्नियों (लोभ, दोष और मोह) के प्रज्वलित होने पर निर्वाण (निब्बान) अपेक्षित होता है। जिस प्रकार बुराई की उपस्थिति में अच्छाई विद्यमान होती है, उसी प्रकार जन्म की उपस्थिति में जन्म-मुक्त अवस्था अपेक्षित होती है।"

1.5 आगे उन्होंने सोचते हुए कहा: "जैसे किसी व्यक्ति के लिए, जो गोबर के ढेर में धंसा हुआ है, पांच रंगों के कमलों से ढकी एक विशाल झील तक जाने का उचित मार्ग खोजना और पाना उचित है, जिसे उसने बहुत दूर से देखा है; यदि वह खोज न करे, तो दोष झील का नहीं, बल्कि उस व्यक्ति का है। ठीक उसी प्रकार, जब निर्वाण का महान सागर, जो पाप (किलेसा) को धोने के लिए विद्यमान है, मौजूद है, और यदि कोई खोज न की जाए, तो दोष निर्वाण के महान अमर सागर का नहीं, बल्कि उस व्यक्ति का है। जैसे कोई व्यक्ति लुटेरों से घिरा हो और यदि भागने का कोई मार्ग भी हो, और वह फिर भी न भागे, तो दोष मार्ग का नहीं, बल्कि उस व्यक्ति का है। ठीक उसी प्रकार, जब निर्वाण की ओर ले जाने वाला एक शीतल मार्ग मौजूद हो, और कोई व्यक्ति पाप (किलेसा) से घिरा और जकड़ा हुआ हो, यदि वह मार्ग की खोज नहीं करता, तो दोष मार्ग का नहीं, बल्कि मनुष्य का है। जब कोई चिकित्सक, जो रोगों का उपचार कर सकता है, उपलब्ध हो, और कोई रोगग्रस्त व्यक्ति उस चिकित्सक से संपर्क न करे और अपना इलाज न करवाए, तो दोष चिकित्सक का नहीं, बल्कि रोगी का है। ठीक इसी प्रकार, यदि कोई जीवित गुरु, जो भ्रष्टता (किलेसा) के निवारण का मार्ग दिखाने में कुशल हो, किसी भ्रष्टता (किलेसा) से पीड़ित व्यक्ति द्वारा न खोजा जाए, तो दोष खोज न करने वाले का है, न कि गुरु का, जो भ्रष्टता (किलेसा) का नाश करने वाला है। अतः, यह इस प्रकार कहा गया है:

"जिस प्रकार किसी गंदे गोबर में उतरे व्यक्ति द्वारा झील का न मिल पाना दोष नहीं है, यद्यपि उसने उसे (दूर से) पानी से भरी हुई देखा था, उसी प्रकार अमरता की झील का भी दोष नहीं है, जब कोई उसकी खोज नहीं करता, यद्यपि मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाली ऐसी झील, जो दुराचार (किलेसा) की अशुद्धियों को धो देती है, विद्यमान है। जिस प्रकार मुक्ति का सीधा मार्ग दोषरहित है, क्योंकि शत्रुओं से बुरी तरह घिरे व्यक्ति ने भागने का रास्ता न होने के बावजूद वह नहीं भागा, ठीक उसी प्रकार शीतल सीधा मार्ग दोषरहित है, क्योंकि कोई उसकी खोज नहीं करता, जबकि व्यक्ति दुराचार (किलेसा) के पापों से बुरी तरह घिरा हुआ है, यद्यपि मुक्ति का शीतल मार्ग मौजूद है। जिस प्रकार चिकित्सक दोषरहित है, क्योंकि रोगी ने अपने रोग का चिकित्सकीय उपचार नहीं कराया, यद्यपि वह रोगी चिकित्सक के अस्तित्व को जानता है, ठीक उसी प्रकार, गुरु-शिक्षक दोषरहित है, यदि उसकी खोज न हो।" शिक्षक का निर्माण एक ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो विकृतियों (किलेसा) के रोगों से पीड़ित और पूरी तरह से ग्रस्त होता है।

1.6 आगे चलकर उसने मन ही मन सोचा: "जैसे जन्म से ही आभूषणों का शौकीन कोई व्यक्ति अपने गले में फँसी लाश को त्यागकर प्रसन्नतापूर्वक चला जाता है, वैसे ही मुझे भी अपने इस सड़े हुए शरीर को निर्वाहवश त्याग कर निर्वाण में प्रवेश करना चाहिए। जैसे गोबर

के ढेर पर पुरुष और स्त्रियाँ मल-मूत्र त्यागकर स्नान करने के बाद उसे अपने साथ गोद में लिए या वस्त्रों के किनारे मोड़कर ले जाने के बजाय चले जाते हैं: चाहे वे भूखे ही क्यों न हों, वे अपने मल-मूत्र की परवाह नहीं करते और उसे त्याग कर चले जाते हैं; उसी प्रकार मुझे भी इस सड़े हुए शरीर को निर्वाहवश त्याग कर निर्वाण में प्रवेश करना उचित लगता है। जैसे समुद्री नाविक अपने पुराने जहाज को निर्वाहवश त्याग कर चले जाते हैं, वैसे ही मुझे भी अपने इस शरीर को, जो नौ घावों से रिस रहा है, निर्वाण में प्रवेश करना चाहिए। एक व्यक्ति, जो अनेक प्रकार के रत्न लेकर लुटेरों के साथ यात्रा पर निकलता है, अपने सभी रत्नों को त्यागकर एक सुरक्षित मार्ग चुनता है, जब उसका अपना रत्न-स्वरूप नष्ट होने के खतरे में होता है, तो यह अपवित्र शरीर एक लुटेरे के समान है, जो रत्नों की चोरी और लूट से अपना जीवन यापन करता है। यदि मैं इससे आसक्त हो जाऊं, तो मेरे लिए रत्न-संबंधी पुण्य और रत्न-समान श्रेष्ठ मार्ग नष्ट हो जाएगा। इसलिए, मेरे लिए यह आवश्यक है कि मैं इस लुटेरे जैसे शरीर को त्याग दूं और निर्वाण के महान अमर नगर में प्रवेश करूं। अतः यह कहा गया है:

“जिस प्रकार एक व्यक्ति अपने गले से, जहाँ एक शव घृणित रूप से जकड़ा हुआ था, मुक्त होने के बाद सुरक्षित, स्वतंत्र रूप से, अपनी इच्छा अनुसार चला जाता है, ठीक उसी प्रकार मैं भी इस सड़े हुए शरीर को, जिसमें अनेक मृत शरीर संचित हैं, त्यागने के बाद निर्संतुष्ट और उदासीन होकर चला जाऊँगा। जिस प्रकार पुरुष और स्त्री शौचालय में मल त्याग करने के बाद उदासीन और निर्संतुष्ट होकर चले जाते हैं, ठीक उसी प्रकार मैं भी स्नान करने के बाद, जहाँ भी शौचालय हो, अपने इस शरीर को, जो अनेक मृत शरीरों से भरा हुआ है, त्यागने के बाद चला जाऊँगा।”

"जहाज मालिकों की तरह, जो एक पुराने, रिसावग्रस्त और जर्जर जहाज को लापरवाही और अनिच्छा से छोड़कर चले जाते हैं, ठीक उसी तरह, मैं भी इस जर्जर शरीर को, जो अपने नौ छेदों से लगातार रिसाव करता रहता है, उसी तरह छोड़ कर चला जाऊंगा, जैसे मालिक अपनी जर्जर नाव के साथ करते हैं।"

“जिस प्रकार एक व्यक्ति जो अपने साथ खजाना लेकर आया हो और संयोगवश चोरों के साथ यात्रा कर रहा हो, अपने शरीर-खजाने के टुकड़े-टुकड़े होने के खतरे को देखकर सबको और सब कुछ छोड़कर चला जाता है, ठीक उसी प्रकार मैं भी इस शरीर को, जो एक बड़े चोर के समान है, अपने अच्छे कर्म के टुकड़े-टुकड़े होने के खतरे के कारण छोड़कर चला जाऊंगा।”

1.7 इस प्रकार, ज्ञानी सुमेधा ने त्याग के लिए प्रत्यक्ष रूप से लाभकारी इस विषय पर विभिन्न उदाहरणों के साथ चिंतन किया, महान दान दिया, सभी जरूरतमंद यात्रियों आदि को उपहार वितरित किए, और उपर्युक्त तरीके से दोनों प्रकार के इंद्रिय सुखों, भौतिक (वत्थु) और पापी दुराचार (किलेष) का त्याग किया, अमर नगर से एकाकी होकर निकले और हिमालय में धम्मिका (धर्मी) नाम की एक पहाड़ी के पास एक आश्रम बनाया। वहाँ उन्होंने पत्तों की कुटिया और एक गलियारे का निर्माण करवाया। इसके बाद, उन्होंने बारह गुणों से युक्त छाल के वस्त्र धारण करके और नौ दोषों से दूषित वस्त्रों का त्याग करके एक संन्यासी बनकर अपने त्याग को पूर्ण किया, ताकि वे अपने लिए उस आश्रम में आध्यात्मिक शक्ति, जिसे उच्च ज्ञान, अभिज्ञा (जादुई) के रूप में जाना जाता है, आठ परिस्थितिजन्य गुणों से परिपूर्ण प्राप्त कर सकें, जिनका वर्णन सामान्यतः इस प्रकार किया जाता है: “जब इस प्रकार मन शांत और एकाग्र हो जाता है” इत्यादि, तो वह परम ज्ञान (अभिज्ञा) (जादुई) प्राप्त होता है जो पाँच बाधाओं (निवरण) का त्याग कर देता है। इस प्रकार संन्यासी बनकर उन्होंने अपनी पत्तियाँ-कुटिया त्याग दी, क्योंकि वह आठ दोषों से युक्त मानी जाती थी, और दस गुणों से युक्त माने जाने वाले वृक्ष की शरण में गए। फिर उन्होंने चावल और अन्य अनाजों से बने सभी भोजन का त्याग कर वृक्षों से गिरे ताजे फल खाने लगे। केवल तीन मुद्राओं - बैठना, खड़ा होना और इधर-उधर चलना - का पालन करते हुए परिश्रमपूर्वक उन्होंने केवल सात दिनों के भीतर पाँच प्रकार के परम ज्ञान (अभिज्ञा) और आठ ध्यान संबंधी उपलब्धियों (समापत्ति) को प्राप्त कर लिया। इस प्रकार, अपनी आकांक्षा के अनुसार वे परम ज्ञान की शक्ति की अवस्था तक पहुँच गए। अतः यह कहा गया है:-

"इस प्रकार विचार करने के बाद, मैं हिमालय की ओर चल पड़ा।"
असहायों को सुरक्षा प्रदान करने के बाद
करोड़ों-करोड़ों रुपये दान के रूप में दे दिए और मेरे सैकड़ों
पैसा। मेरे लिए, एक अच्छी तरह से बनी हुई पत्तों की झोपड़ी थी,
धम्मिका पहाड़ी पर, पास ही में, एक सुंदर ढंग से निर्मित आश्रम है।

हिमालय से। वहीं पर एक मठ भी बनाया गया था।
पांच गलतियों से मुक्त होकर चलें, आठ पूरे करें
गुण और अनुकूल परिस्थितियाँ जो शक्ति लाने में सहायक होती हैं
अतिज्ञान का। वहाँ मैंने अपना (महंगा) उतार दिया।
नौ दोषों से दूषित कपड़े और पहनावा
मैं स्वयं छाल के वस्त्र में, बारह अच्छे लोगों के साथ
गुण। यहाँ तक कि पत्तों की झोपड़ी भी, (मैंने इसे) मिश्रित माना।
आठ दोषों के साथ सामने आया, (और इसलिए) अस्वीकार कर दिया गया।
दस अच्छे लोगों से भरी एक टोली पेड़ के नीचे पहुंची
गुण। क्या मैंने पूरी तरह से सुसंस्कृत और
बोई गई फसल और गिरे हुए ताजे फलों को स्वीकार किया
वृक्ष, (ऐसे पके हुए) फल जो अनेकों फलों से भरे हुए थे
सद्गुण। वहाँ, पेड़ के नीचे, मैंने ज़ोरदार प्रयास किए।
प्रयास, तीन मुद्राओं का पालन करना: बैठना, खड़ा होना
और केवल पैदल चलने से ही मुझे आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त हुई।
केवल सात दिनों के भीतर ही अतिज्ञान (अभिञ्ञा) की प्राप्ति।

1. पाली भाषा में परंपरागत रूप से पूर्व कथनों को संदर्भित करने के दो तरीके हैं: (क) रुक्खारूल्हा नया, (ख) मग्गागामा नया। यहाँ, पहला तरीका, रुक्खारूल्हा नया, प्रयोग किया गया है। अतः हेत्झा, वृक्ष के निचले भाग को दर्शाता है जिस पर पहले चढ़ा गया था। इस प्रकार पाली अभिव्यक्ति हेत्झावुत्त का अंग्रेजी पर्याय "उपर्युक्त" है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "नीचे कहा गया"।

1.8 ऊपर दिए गए श्लोक में, इस संदर्भ में, अर्थात्: "अस्समो सुकतो मयहंग" से ऐसा प्रतीत होता है कि: ऐसा कहा गया है मानो पत्तों की कुटिया और गलियारे से युक्त आश्रम का निर्माण ज्ञानी सुमेधा ने अपने हाथों से किया हो। लेकिन वास्तव में यहाँ इसका अर्थ यह है: सक्का ने देखा कि महान सत्ता हिमालय में प्रवेश कर धम्मिका पर्वत की घाटी में पहुँच गई है, तो उसने युवा देवी विस्सकम्मा को इस प्रकार संबोधित किया: "मेरी प्रिय! "इस बुद्धिमान सुमेधा ने संसार त्याग दिया है और अपने नगर से बाहर आ गए हैं, आप उनके लिए एक निवास स्थान बनाएँ।" उस दिव्य प्राणी, विस्साकम्मा ने सक्का के शब्दों को ग्रहण करते हुए, एक रमणीय आश्रम की रचना की, जिसमें एक सुरक्षित पत्तन की कुटिया और एक सुखद गलियारे (या सैरगाह) शामिल थे। हालाँकि, तेजस्वी बुद्ध ने उस आश्रम को उनके अच्छे कर्मों की प्रबल शक्ति के कारण पूर्ण बताया और कहा: सारिपुत्त! धम्मिका पर्वत की उस घाटी में:-

"मेरे लिए वह एक सुव्यवस्थित आश्रम था, जो पाँचों से मुक्त था।"
एक अच्छी तरह से निर्मित पत्तों की झोपड़ी और एक अन्य दोष सहित
क्लोस्टर-वॉक (या सैरगाह)।

वहाँ, (दो पंक्तियों के उस श्लोक में), अभिव्यक्ति सुकतो मयहंग को 'सुत्तु कातो मयः' के रूप में व्याख्यायित किया जाना है, 'मेरे द्वारा अच्छा किया गया'; अभिव्यक्ति पन्नासाला सुमापिता को इस प्रकार समझा जाना है: पन्नाच्चदानसालापि मे सुमापिताहोसि (पत्तों की छत से ढका एक घर भी मेरे द्वारा ठीक से बनाया गया था)।

1.9 पंचदोसविवज्जिता अभिव्यक्ति में: ये (खराब) मठ-मार्ग (या सैरगाह) के पाँच दोष हैं: (1) कठोरता और असमान सतह (2) अंदर पेड़ होना (3) गोबर या झाड़ियों से ढका होना (4) बहुत संकरा होना (5) बहुत चौड़ा होना। वास्तव में, असमान और कठोर सतह पर

सैरगाह पर चलने वाले व्यक्ति को कष्ट होता है; सूजन और छाले पड़ जाते हैं। मन एकाग्र नहीं हो पाता। ध्यान साधना में कोई प्रगति नहीं होती। दूसरी ओर, नरम और समतल सतह पर आराम से चलना ध्यान साधना में अच्छी प्रगति के लिए सहायक होता है। इसलिए, मठ की कठोरता और असमान स्थिति को एक दोष समझा जाना चाहिए। यदि मठ के अंदर, मध्य में या छोर पर कोई पेड़ हो, तो वहाँ अचानक आने वाले व्यक्ति का माथा या सिर उससे टकरा सकता है। अतः, उसमें पेड़ होना सैरगाह का दूसरा दोष है।
जो कोई भी अंधेरे में घास, लताएँ आदि से ढके हुए सैरगाह पर चलता है, वह या तो साँपों आदि जैसे जीवों को कुचलकर मार सकता है या उनके काटने से पीड़ा झेल सकता है। इसलिए झाड़ियों से घिरे होने की स्थिति तीसरा दोष है। जो व्यक्ति बहुत संकरे सैरगाह पर चलता है, जहाँ चौड़ाई केवल एक हाथ या आधा हाथ होती है, उसके नाखून, पैर की उंगलियाँ और हाथ की उंगलियाँ सीमा पर ठोकर लगने से टूट जाती हैं। इस प्रकार अत्यधिक संकरापन सैरगाह का चौथा दोष है। जो व्यक्ति बहुत चौड़े सैरगाह पर चलता है, उसका मन अशांत हो जाता है। मन एकाग्र नहीं हो पाता। इस प्रकार अत्यधिक चौड़ा होना सैरगाह का पाँचवाँ दोष है। चौड़ाई की दृष्टि से, यह (केंद्र में) डेढ़ हाथ और दोनों किनारों पर (प्रत्येक) लगभग एक हाथ चौड़ा होना चाहिए, जैसे छोटे गलियारे। इसकी लंबाई साठ क्यूबिट होनी चाहिए, और यह रेत से समान रूप से फैले हुए क्षेत्र को कवर करे। सैरगाह थेरा महा महिंदा की तरह होनी चाहिए, जो पैगोडा पहाड़ी (चेतियागिरि) पर स्थित द्वीप (लंका) को प्रकाश प्रदान करने वाले तेजस्वी देवता हैं।

1.10 'अष्टगुणसमुपेतं' अभिव्यक्ति को इस प्रकार समझा जाना चाहिए: 'अष्टहि समणसुखेहि उपेतं', 'आठ प्रकार के भिक्षु सुखों से संपन्न'। ये आठ प्रकार के भिक्षु सुख हैं: धन और धान प्राप्त करने की स्थिति, भिक्षापात्र में निष्पाप भोजन प्राप्त करने का अवसर, शांतिपूर्वक भोजन करने की स्थिति, भ्रष्टता (किलेसा) का अभाव, जिसमें शाही रिश्तेदार आपस में राज्यों को परेशान करते हैं, उनके राज्य को लूटते हैं और धन, सिक्के आदि छीन लेते हैं, साथ ही एक-दूसरे का सिर कलम करते हैं; भिक्षु के साजो-सामान (या भिक्षु के उद्देश्य की प्राप्ति के साधनों) के प्रति आसक्ति और लालसा से मुक्ति; लुटेरों द्वारा लूटे जाने पर निर्भयता का भाव; राजा और उसके प्रधानमंत्रियों से कोई संबंध न रखना; चारों दिशाओं में आघात (अप्पतिहत) न होने की स्थिति। यह कहा गया है: (सक्का) ने एक ऐसा आश्रम बनवाया, जहाँ रहने से संन्यासियों को आठ प्रकार के सुख प्राप्त हो सकें। इस प्रकार वह आश्रम आठ प्रकार के सुखों को बढ़ावा देता है।

1.11 अभिव्यक्ति: अभिञ्ञा-बलमाहरिञ को इस प्रकार समझा जाना चाहिए: मैंने अनित्यता और दुःख (दुक्खा) के कोण से स्वयं को स्पष्ट रूप से देखने का प्रयास करके प्राप्त परम ज्ञान की शक्ति को उस आश्रम में रहते हुए नेत्रस्थल (कसीण, यंत्र) अभ्यास द्वारा उत्पन्न किया और उससे परम ज्ञान और ध्यान संबंधी उपलब्धियों (समापत्ति) को प्राप्त किया। जिस प्रकार मैं उस आश्रम में रहते हुए उस (आध्यात्मिक) शक्ति को उत्पन्न करने में सक्षम हूँ, ठीक उसी प्रकार (सक्का) ने परम ज्ञान (अभिञ्ञा) और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) की शक्ति प्राप्त करने के लिए उपयुक्त एक आश्रम की रचना की; इस प्रकार अभिव्यक्ति की व्याख्या की जानी चाहिए।

1.12 अभिव्यक्ति: sāṭakaŋ pajahiŋ tattha navadosamupāgataŋ का अर्थ इस प्रकार है:- यहाँ, यह प्रवचन अपने क्रमिक क्रम में है। कहा जाता है कि उस समय देवी विस्साकम्मा (संस्कृत: विश्वकर्मा) ने एक रमणीय आश्रम की रचना की, जिसमें शौचालय, सुरक्षित आश्रय, गलियारा आदि थे, जो पुष्पीय और फलदार वृक्षों से छायादार था, जिसमें मीठा जल बहता था, और जो ऐसे स्थान पर स्थित था जहाँ क्रूर जानवरों और भयानक जंगली पक्षियों को हटा दिया गया था, और जहाँ एकांत सुगम होता था। अलंकृत गलियारे के प्रत्येक छोर पर लकड़ी की रेलिंग बनाई गई थी; गलियारे के मध्य में बैठने के लिए **** (पृष्ठ 16) रंग की समतल सतह वाली पत्थर की आसन बनाई गई थी। आश्रम के भीतर, संन्यासियों की आवश्यक वस्तुएँ रखी गई थीं, जैसे: गुंथी हुई केश-गुच्छा, छाल के वस्त्र, तीन छड़ें (जिनसे तिपाई बनती है), एक जलपात्र इत्यादि; सामने के कक्ष (मंडप) में एक जलपात्र, एक शंख और एक तश्तरी सहित जलपात्र रखा गया था; ताप कक्ष (अग्गिसाला) में राख, जलाऊ लकड़ी आदि के लिए मिट्टी के बर्तन रखे गए थे। इस प्रकार, संन्यासियों के लिए उपयोगी सभी वस्तुएँ बनाई गई थीं। इसके बाद, एक शिलालेख उत्कीर्ण करवाकर: "जो भी संन्यासी बनना चाहते हैं, वे इन संन्यासी-आवश्यक वस्तुओं (तापसपरिक्खारा) को लेकर संन्यास ले सकते हैं"; (बाद में), देवता विस्साकम्मा अपने स्वर्गलोक लौट गए। उस समय, बुद्धिमान सुमेधा अपने निवास के लिए एक उपयुक्त स्थान की तलाश कर रहे थे, क्योंकि उन्होंने पहाड़ियों और घाटियों के मार्ग का अनुसरण किया था। हिमालय की तलहटी में। नदी के मोड़ पर, ज्ञानी व्यक्ति ने सक्का द्वारा प्रदत्त और विस्साकम्मा द्वारा निर्मित रमणीय आश्रम देखा। वह एकांतवास के एक छोर पर गया, और ज़मीन पर कोई पदचिह्न न देखकर मन ही मन सोचने लगा: "ज़रूर नियमित संन्यासी पास के गाँव में भीख माँगकर भोजन की तलाश में गए होंगे और थककर लौट आए होंगे, और इस पत्तियाँ-पत्थर की

कुटिया में आकर बैठ गए होंगे।" इसलिए, उसने थोड़ी देर प्रतीक्षा की और बाद में मन ही मन कहा: "यह बहुत समय ले रहा है, मैं पता लगाऊँगा कि वास्तव में क्या है।" उसने पत्तियाँ-पत्थर की छत वाले आश्रम का द्वार खोला, अंदर प्रवेश किया, इधर-उधर देखा, बड़ी दीवार पर लिखे लेख को पढ़ा और कहा: "ये मेरे लिए उपयोगी और उपयुक्त वस्तुएँ हैं; इन्हें लेकर मैं एक सच्चा संन्यासी बन जाऊँगा।" ऐसा कहकर उसने अपने दोनों वस्त्र, निचले और ऊपरी, त्याग दिए। इसलिए कहा गया है: Sāṭakaŋ pajahiŋ tatthā,
'वहाँ मैंने अपने वस्त्र त्याग दिए।' हे सारिपुत्त! उस पत्तों की छत वाले आश्रम में प्रवेश करके मैंने अपने वस्त्र त्याग दिए।

1.13 अभिव्यक्ति: नवदोषमुपागतं, की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए: 'मैंने अपने वस्त्रों का त्याग इसलिए किया क्योंकि मैंने उनमें नौ दोष देखे।' वास्तव में, संसार का त्याग करके संन्यासी बनने वालों के लिए, अच्छे वस्त्र में नौ दोष प्रकट होते हैं: (1) पहला दोष उसका उच्च मूल्य है; (2) दूसरा दोष दूसरों पर निर्भरता के कारण उसका अस्तित्व में आना है; (3) तीसरा दोष उसके उपयोग से शीघ्र गंदा हो जाना है; गंदा होने पर उसे धोना और रंगना भी आवश्यक है; (4) चौथा दोष उसके उपयोग से पुराना और घिस जाना है; फटे हुए वस्त्र को या तो सिलवाना पड़ता है या उसमें गसेट लगवाना पड़ता है; (5) पाँचवाँ दोष नए वस्त्रों का सफलतापूर्वक प्राप्त करने में कठिनाई है; (6) छठा दोष संसार का त्याग करने वाले संन्यासी के लिए उसका अनुपयुक्त होना है; (7) सातवाँ दोष शत्रुओं की साझा संपत्ति होना है। ताकि शत्रु इसे छीन न लें, इसलिए इसकी देखभाल की जानी चाहिए; (8) आठवां दोष यह है कि यह इसका उपयोग करने वाले के लिए आभूषण बन जाता है। (9) नौवां दोष अपने शरीर पर बोझ लादने, उसे ढोने और इधर-उधर घूमने के अत्यधिक लालच में निहित है।

1.14 अभिव्यक्ति: वाकाचीरं निवासेसिं का अर्थ इस प्रकार है: हे सारिपुत्त! उस समय मैंने इन नौ दोषों को देखकर अपने वस्त्र त्याग दिए और छाल का वस्त्र धारण कर लिया। मुंज सरकंडे को काटकर, उन्हें जोड़कर और बांधकर, सरकंडे का वस्त्र बनाया जा सकता था, जिसे मैंने अपने निचले और ऊपरी वस्त्रों के रूप में धारण किया।

1.15 द्वादसगुणमुनागतंग अभिव्यक्ति का अर्थ बारह प्रकार के लाभों से युक्त होना है। वास्तव में, सरकंडे के वस्त्र में बारह लाभ हैं; (1) पहला, इसकी कम कीमत, उत्कृष्टता और उपयुक्तता के कारण नया होना; (2) दूसरा, इसे स्वयं अपने हाथों से बनाया जा सकता है; (3) तीसरा, यह उपयोग से धीरे-धीरे गंदा होता है; और इसे धोने में कोई विलंब (पापंच) नहीं होता; (4) चौथा, उपयोग से घिस जाने पर भी इसमें रस्सा या सिलाई की आवश्यकता नहीं होती; (5) पाँचवाँ, नया वस्त्र खरीदने पर आसानी से उपलब्ध होना; (6) छठा, संन्यासी संन्यासी के लिए इसकी अनुकूलता; (7) सातवाँ, शत्रुओं के लिए लाभदायक न होना; (8) आठवाँ, पहनने वाले को स्वयं को सजाने का कोई कारण (ताना) न होना। (9) नौवां इसे ले जाने में हल्कापन है; (10) दसवां वस्त्र की आवश्यकता में कम इच्छा (अपिचा) है; (11) ग्यारहवां सरकंडे (सन्यासियों के वस्त्र के लिए कच्चा माल) की प्राप्ति के लिए निष्पाप और धर्मी होना है; (12) बारहवां सरकंडे के वस्त्र के नष्ट हो जाने पर भी उदासीनता है।

1.16 अभिव्यक्ति: aṭṭhadosa samākiṇṇaŋ pajahiŋ paṇṇasālakaŋ को इस प्रकार समझा जाना चाहिए: मैंने कैसे त्याग दिया? कहा जाता है कि (बुद्धिमान सुमेधा ने) उत्तम वस्त्रों का सूट (युग) उतार दिया, अनोजा फूलों की माला के समान लाल सरकंडे का वस्त्र धारण किया, जो एक वस्त्र की आवश्यकता के अनुरूप था, निचला वस्त्र पहना, जिसके ऊपर उन्होंने अपने ऊपरी अंगों पर सुनहरे रंग का एक और सरकंडे का वस्त्र पहना, जबकि अपने एक कंधे पर उन्होंने उसके खुरों सहित पुन्नागा फूलों के फैले हुए ढेर के समान एक मृग की खाल रखी, उपयुक्त रूप से गुंथे हुए बालों के घेरे को खोल दिया, उसे अपने केश-शिखर के साथ अविचल बनाने के उद्देश्य से (कठोर लकड़ी की) एक मजबूत सुई चुभो दी, ******(पृष्ठ 18) एक डोरी से, जो जाल से निकले ढीले धागे के समान थी, उन्होंने मूंगे के रंग का पीने के पानी का बर्तन नीचे उतारा, एक डंडा लाया, जिसमें तीन बिंदुओं पर वक्र थे, डंडे के एक सिरे पर उन्होंने पीने के पानी का बर्तन लटका दिया; दूसरे, हुक, टोकरी और तीन-छड़ी आदि लेकर; उसने भार से लदे खंभे को अपने कंधे पर उठाया; अपने दाहिने हाथ से उसने अपनी तपस्वी छड़ी (कत्तरदण्डक) पकड़ी, पत्तों की छत वाले आश्रम से बाहर निकला, साठ क्यूबिट के विशाल मठ (महाचंकम) में इधर-उधर चला (एम*****?पृष्ठ 19), अपने स्वरूप को देखा और मन ही मन कहा, 'मेरी इच्छित वस्तु अपने उच्चतम शिखर पर पहुँच गई है; मेरा त्याग वास्तव में तेजस्वी है; मेरा यह त्याग सर्वज्ञ बुद्धों, मौन बुद्धों और सभी बुद्धिमान व्यक्तियों द्वारा प्रशंसित (वान्निता) और स्तुति (थोमित) है; मैंने अपने गृहस्थ बंधन को त्याग दिया है; मैं संसार का त्याग करके निकला हूँ; अब मैंने एक संन्यासी का सबसे श्रेष्ठ जीवन प्राप्त कर लिया है।' अब मैं संन्यासी के कर्तव्यों का पालन करूंगा ताकि मुझे सही मार्ग (मग्ग) का सुख और

उसका फल (फल) प्राप्त हो सके। उनमें ऊर्जा का संचार हुआ; उन्होंने अपना भार लटकाने वाला डंडा नीचे रख दिया, स्वयं एक बैठी हुई स्वर्ण प्रतिमा के समान, मठ के केंद्र में स्थित सेम के रंग की पत्थर की पटिया पर बैठ गए, दिन का कुछ भाग व्यतीत किया; और शाम को पत्तों की छत वाले आश्रम में प्रवेश किया; वे फटी हुई बांस की पलंग (बिदल) के किनारे टहनियों से बनी चटाई (कट्ठाथारिका) पर लेट गए, अपने शरीर को तरोताजा किया (अर्थात ठंडे पानी से शरीर को धोकर आदि), सुबह बहुत जल्दी उठ गए, और अपने (वहाँ) आने पर इस प्रकार विचार किया: "गृहस्थ जीवन में दोष देखकर, मैंने अपने अपार धन और अनंत समृद्धि को त्याग दिया, वन में प्रवेश किया और संन्यासी बन गया।" मैं त्याग का साधक (नेक्खम्मगवेशक) हूँ। अब से मेरे लिए विस्मृति में भटकना उचित नहीं है। बुरे विचारों के कीड़े एकांत त्यागने वाले भटकते हुए व्यक्ति को नष्ट कर देते हैं। इस समय मेरे लिए एकांतवास में स्वयं को समर्पित करना उचित है। मैंने गृहस्थ जीवन को बाधा के रूप में देखते हुए ही त्याग किया है।यह पत्तों की छत वाला आश्रम मुझे बहुत भाता है; इसके चारों ओर का मैदान पके हुए बेल के रंग का है; इसकी सफेद दीवारें चांदी जैसी चमकती हैं; पत्तों की छत कबूतर के पैरों के रंग की है; इसकी फटी हुई बांस की पलंग रंग-बिरंगे कालीन जैसी है; यह एक सुखमय निवास है। मुझे लगता है कि इस पत्तों की छत वाले आश्रम के अलावा कोई और इतना सुखदायी निवास (गेहसंपदा) नहीं है।" इस प्रकार ज्ञानी सुमेध ने अपने पत्तों की छत वाले आश्रम की कमियों की जांच करते हुए आठ दोष देखे।

1.17 पत्तों की छत वाले आश्रम का उपयोग करने में वास्तव में आठ हानियाँ हैं: (1) पहली हानि आवश्यक सामग्री को बड़ी मेहनत से इकट्ठा करने और तैयार करने में निहित है; (2) दूसरी हानि घास, पत्तों और मिट्टी के गिरने पर उन्हें बार-बार सही ढंग से बदलने के उद्देश्य से निरंतर सतर्कता बरतने में निहित है; (3) तीसरी हानि यह कहते हुए उठने में निहित है कि जो व्यक्ति असमय जाग जाता है, जैसे कि कोई वृद्ध तपस्वी आश्रम में आ जाए, उसे एकाग्र मन की शांति नहीं मिल पाती; (4) चौथी हानि ठंड, गर्मी आदि से बचाव के कारण शरीर के नाजुक होने में निहित है; (5) पाँचवीं हानि आलोचना को दबाने में निहित है, क्योंकि किसी भी निवास में प्रवेश करने वाला व्यक्ति कोई भी बुरा कर्म कर सकता है; (6) छठी हानि यह कहते हुए अधिग्रहण करने में निहित है: 'यह मेरा है'; (7) सातवीं हानि इस तथ्य में निहित है कि इस, अर्थात् पत्तों की छत वाले आश्रम का अस्तित्व, किसी के दूसरे निवास स्थान जैसा प्रतीत होता है; (8) आठवीं हानि अनेकों के साथ रहने में निहित है, क्योंकि वहां रहने वाले साधु को पीले रंग की जूं (ऊकामंगुल), घरेलू छिपकलियों आदि के साथ मिलकर रहना होगा। इस प्रकार, आठ हानियों को देखते हुए, महानुभाव ने पत्तों की छत वाले आश्रम का त्याग कर दिया। अतः कहा गया है: "मैंने आठ हानियों से ग्रस्त पत्तों की छत वाले आश्रम का त्याग कर दिया।"

1.18 यह अभिव्यक्तिः- उपगमिं रुक्खमूलं गुणे दशहुपागत, का अर्थ इस प्रकार समझा जाना चाहिए: छत वाले निवास (चन्नम) को त्यागकर, मैं दस उत्तम गुणों से युक्त वृक्ष की तलहटी की ओर गया। इस अभिव्यक्ति में दस उत्तम गुण इस प्रकार हैं: (1) पहला उत्तम गुण है कम प्रयास, वास्तव में, वहाँ जाने मात्र से ही यह उचित है; (2) दूसरा गुण है सतर्क रहने की आवश्यकता न होना; (3) वास्तव में, चाहे साफ किया हुआ हो (सम्मत्था) या बिना साफ किया हुआ (असम्मत्था), यह हमेशा उपयोग के लिए तैयार रहता है; तीसरा गुण यह है: उठने और काम करने की कोई आवश्यकता नहीं है; (4) चौथा गुण यह है कि यह निंदा से बचने का आवरण नहीं देता; वास्तव में, वहाँ पाप करने पर पापी लज्जित होता है; इस प्रकार, निंदा से कोई आवरण नहीं है; (5) पाँचवाँ गुण शरीर की कठोरता का अभाव है, क्योंकि वृक्ष की जड़ में रहने वाला संन्यासी खुले में रहने वाले की तरह अपने शरीर को कठोर नहीं करता; (6) छठा गुण किसी भी निवास से लगाव का अभाव है; (7) सातवाँ गुण किसी भी निवास से आसक्ति का निषेध है; (8) आठवाँ गुण निष्कासन का अभाव है, जैसे कि किसी ऐसे घर में जहाँ कई लोग रहते हों; (9) नौवाँ गुण निवास करने वाले संन्यासी का उत्साह से भर जाना है; (10) दसवाँ गुण उदासीनता है; क्योंकि संन्यासी जहाँ भी जाता है, उसे वृक्ष की जड़ में निवास आसानी से मिल जाता है। इसलिए पाठ कहता है: 'मैं इन दस गुणों को देखकर वृक्ष की तलहटी में जाता हूँ।'

1.19 इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, महान आत्मा अगले दिन भोजन मांगने के लिए गाँव में प्रवेश किया। गाँव में, जहाँ वे स्वस्थ अवस्था में पहुँचे, लोगों ने उन्हें बड़े प्रेम से भोजन दिया। उन्होंने भोजन समाप्त किया, अपने एकांतवास में वापस आए, बैठ गए और इस प्रकार सोचने लगे:- "मैंने संसार का त्याग और संन्यास भोजन प्राप्त करने के लिए नहीं लिया; उदाहरण के लिए, यह वसायुक्त (सिनिद्ध) भोजन पुरुष के अहंकार, घमंड और कामुक उत्तेजना को बढ़ाता है। भोजन से उत्पन्न होने वाले दुखों का भी कोई अंत नहीं है। क्या मेरे

लिए यह अच्छा नहीं होगा कि मैं बोए और उगाए गए अनाज से उत्पन्न भोजन का त्याग कर मौसमी फल खाने लगूँ!" उस समय से, बुद्धिमान सुमेधा ने ऐसा ही किया और प्रयास और परिश्रम से मात्र सात दिनों के अंतराल में आठ आध्यात्मिक उपलब्धियों (समापत्ति) के साथ-साथ पांच प्रकार के ज्ञान (अभिज्ञा) को भी प्राप्त कर लिया। इसलिए, यह कहा गया है:-

मैंने बोए और खाए हुए चावल के दानों से पूरी तरह परहेज किया।
उगाया गया; मौसमी फलों पर अनेक गुणों से युक्त
मैंने अच्छे गुणों को अपने जीवन में उतारा। वहाँ मैंने प्रयास किया।
कठिन परिश्रम, बैठना, खड़े होना और चलना;
सात दिनों के भीतर, मुझे आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त हो गई।
अतिज्ञान का।"

दीपांकर बुद्ध ने सुमेधा के लिए बुद्धत्व की भविष्यवाणी की

1.20 जब सुमेधा नामक ऋषि ने इस प्रकार अतिज्ञान की आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त कर ली थी और अपनी उत्कृष्ट उपलब्धि के आनंद में समय व्यतीत कर रहे थे, तब दीपांकर नाम के विश्व-शिक्षक का संसार में उदय हुआ। उनके गर्भाधान, जन्म, ज्ञानोदय और धम्म के चक्र को घुमाने के समय, समस्त दस हजार विश्व-तत्व कांप उठे, थरथरा उठे और हिल गए। एक भयंकर कोलाहल हुआ। बत्तीस अपशकुन (पुब्बानिमित्त) प्रकट हुए। सुमेधा नामक ऋषि, जो अपनी आध्यात्मिक उपलब्धि (समापत्ति) के आनंद में समय व्यतीत कर रहे थे, उन्होंने न तो वह ध्वनि सुनी और न ही वे अपशकुन देखे

"जब मैंने इस प्रकार अपनी उपलब्धि प्राप्त कर ली और
इस अनुशासन में अपनी इंद्रियों पर प्रबल नियंत्रण।
एक एकांतवासी, विजेता और पुरुषों के नेता के रूप में,
जैसे ही दीपांकर संसार में प्रकट हुए। मैं उसमें लीन हो गया था।
गहन ध्यान (झान) में लीन होकर मैंने ऐसा नहीं किया
उनके प्रकट होने के समय, चारों शकुनों पर ध्यान दें।
उनका जन्म, उनका ज्ञानोदय और उनका उपदेश
सच।

1.21. उस समय, दस अलौकिक रूप से शक्तिशाली (दशबल) दीपांकर बुद्ध, चार लाख दोषरहित (खीणासव) शिष्यों के साथ, क्रमिक रूप से आसान चरणों में यात्रा करते हुए, राम्मा नगर पहुंचे और सुदस्सन के महान मठ में निवास करने लगे। राम्मा नगर के नागरिकों ने सुना कि भिक्षुओं के नेता दीपांकर, सर्वज्ञ बुद्ध के सर्वोच्च ज्ञान को प्राप्त करके, धर्म के उत्कृष्ट चक्र का संचालन करते हुए, क्रमिक रूप से आसान चरणों में यात्रा करते हुए, उनके राम्मा नगर पहुंचे हैं और सुदस्सन के महान मठ में ठहरे हुए हैं। फिर वे घी, ताजा मक्खन आदि, साथ ही रोगों की दवाइयाँ, वस्त्र और कपड़े के आवरण अपने हाथों में लिए हुए, इत्र, फूलों की मालाएँ आदि लिए हुए, इस प्रकार व्यवहार करते हुए कि जिस दिशा में बुद्ध, धम्म और संघ स्थित थे, उस दिशा में वे प्रणाम करते, झुकते और ढलान बनाते हुए गुरु के पास पहुँचे, उन्हें प्रणाम किया, आदरपूर्वक उन्हें इत्र, फूलों की मालाएँ आदि भेंट कीं, एक उपयुक्त तरफ बैठ गए, धम्म के उपदेश सुने, बुद्ध और उनके अनुयायियों को अगले दिन के भोजन के लिए आमंत्रित किया, अपनी सीटों से उठे और चले गए।

1.22. अगले दिन, उन्होंने एक बड़ा दान-पुण्य किया, शहर को सजाया, और दसबाला बुद्ध के आगमन के लिए मार्ग को उनके योग्य बनाने के लिए, जहाँ कहीं जल द्वारा मिट्टी का कटाव हो गया था (उदकभिन्न), वहाँ मिट्टी भर दी, ज़मीन को समतल किया और उस पर

चाँदी के रंग की रेत बिछा दी। उन्होंने भुने हुए अनाज और फूल भी बिखेर दिए। विभिन्न रंगों में रंगे हुए कपड़ों के टुकड़ों से सजे झंडे और मालाएँ भी फहराई गईं और दिखाई गईं। पत्तों वाले केले के पेड़ और पानी से लबालब भरे मिट्टी के घड़ों की कतारें भी लगाई गईं। उस अवसर पर, ऋषि सुमेधा अपने आश्रम से आकाश में गए और जब वे हवा में उन लोगों के ऊपर से गुज़रे, तो उन्हें खुशी से हँसते हुए देखा, आकाश से नीचे उतरे, एक तरफ खड़े हुए और लोगों से पूछा कि आखिर क्या बात है, इस प्रकार:- "हे मेरे मनुष्यों! तुम इस ऊबड़-खाबड़ सड़क को किसके लिए सजा रहे हो?" इसलिए, यह कहा गया है:-

"तथागत को बाहरी इलाके में आमंत्रित करने के बाद"
उस क्षेत्र में, प्रसन्न हृदय वाले लोगों ने सफाई की।
उनके आगमन का मार्ग। उस अवसर पर, मैंने छोड़ दिया।
मेरी अपनी शरणस्थली; अपने सरकंडे के वस्त्र को झटकते हुए, मैं
फिर बादलों में ऊपर चला गया। लोगों को ऊपर जाते हुए देखकर
भावुक, खुशी और प्रसन्नता से हंसते हुए, मैं
वह आकाश से उतरा और लोगों से पूछा
वहीं और उसी समय:- किसके लिए सड़क साफ की गई थी?
और इसी तरह सीधा किया गया, पुरुषों का यह विशाल समूह,
उत्साहपूर्वक आनंदित और हँसी से झूमते हुए (अंजसम)
vaṭumāyanam)?

1.23. लोगों ने उत्तर दिया, “आदरणीय सुमेधा! क्या आपको नहीं पता था? सर्वज्ञ दशबल बुद्ध दीपांकर ने परम ज्ञान प्राप्त कर धर्मचक्र का संचालन करते हुए अपनी यात्रा पर हमारे नगर में आगमन किया था और अब वे महान सुदस्सन मठ में निवास कर रहे हैं। हमने उस तेजस्वी बुद्ध को आमंत्रित किया था। हम अब इस मार्ग को इस तेजस्वी बुद्ध के आगमन के लिए सुशोभित कर रहे हैं।” तब संन्यासी सुमेधा ने मन ही मन सोचा, “इस संसार में बुद्ध का नाम सुनना भी कितना कठिन है। बुद्ध के प्रकट होने का क्या ही कठिन होगा? मेरे लिए अच्छा होगा कि मैं इन लोगों के साथ मिलकर दशबल बुद्ध के लिए मार्ग को सुशोभित करूँ।” तब उन्होंने उन लोगों से कहा, “यदि आप सब बुद्ध के लिए इस मार्ग को सुशोभित कर रहे हैं, तो कृपया मुझे भी एक भाग दें; मैं भी तुम्हारे साथ मिलकर सड़क को समतल करूँगा।” उन्होंने ‘ठीक है’ कहते हुए सहमति जताई और जल-क्षरण से क्षतिग्रस्त एक स्पष्ट रूप से सीमांकित क्षेत्र उन्हें सौंपते हुए कहा, “तुम्हें इस गड्ढे को समतल कर देना चाहिए,” क्योंकि वे सभी जानते थे कि सुमेधा (पृष्ठ 24) के पास अलौकिक शक्ति थी। बुद्ध के चिंतन में तल्लीन सुमेधा ने मन ही मन सोचा, “मैं अपनी जादुई शक्ति से इस भूमि को समतल करने में सक्षम हूँ। इस प्रकार की मरम्मत मुझे पूरी तरह से संतुष्ट नहीं करेगी; अब मुझे स्वयं शारीरिक श्रम करना होगा।” ऐसा सोचने के बाद, उन्होंने स्वयं ढीली मिट्टी लादकर उस क्षतिग्रस्त क्षेत्र में डाल दी।

1.24. उस छोटे से खंड में उनका समतलीकरण कार्य अभी पूरा नहीं हुआ था कि दसबाला दीपांकर, अपने चार लाख शिष्यों से घिरे हुए, जो उनके दोषरहित अरहंत थे और आध्यात्मिक रूप से अत्यंत शक्तिशाली और अतिज्ञान प्राप्त कर चुके थे, उस समतल और सुशोभित मार्ग पर एक सिंह की तरह प्रवेश कर गए, मानो किसी रमणीय पत्थर की पटिया पर अपनी गतिविधि के लिए तैयार हों, बुद्ध की अतुलनीय महिमा के बीच, दिव्य और मानवीय प्राणियों द्वारा आदर, सम्मान और भेंट अर्पित की जा रही थी, जिनमें से दिव्य प्राणी दिव्य सुगंध, माला आदि से सजे हुए थे, दिव्य संगीत बजा रहे थे और साथ मिलकर दिव्य गीत गा रहे थे, और मनुष्य मानवीय इत्र, पुष्प-माला आदि से सजे हुए थे और मानवीय संगीत बजा रहे थे। ऋषि सुमेधा ने अपनी आँखें खोलीं और दसबल बुद्ध के व्यक्तित्व को देखा, जो एक महान व्यक्तित्व के बत्तीस गुणों से सुशोभित थे, अस्सी छोटे संकेतों से प्रकाशित थे, एक अथाह गहराई के प्रकाश से सावधानीपूर्वक घिरे हुए थे, जिनका शरीर उत्तम शारीरिक अनुपातों से परिपूर्ण था, जिनसे बुद्ध की ठोस छह-रंगीय किरणें निकल रही थीं, जो चारों ओर फैलकर और विकिरण करते हुए जोड़े और युग्म (युगल युगल भूता) बना रही थीं, जैसे रत्न रंग के नीले आकाश की सतह (गगनातल) पर बिजली की विभिन्न श्रेणियों की लताओं (विजुलता) के समान। उन्होंने यह निर्णय लिया: "अब मेरे लिए दसबल बुद्ध को अपना प्राण

अर्पित करना ही उचित है। हे प्रतापी बुद्ध, कीचड़ पर न चलें। वे अपने चार लाख दोषमुक्त शिष्यों के साथ, मेरी पीठ पर ऐसे चलें मानो रत्नों से बने पुल पर चल रहे हों। ऐसा करने से मुझे दीर्घकाल तक लाभ और सुख प्राप्त होगा।" यह निर्णय लेने के बाद, ऋषि ने अपनी चोटी खोली, काले रंग की मिट्टी पर अपनी हिरण की खाल, अपनी गुंथी हुई बालों की माला और अपने सरकंडे के वस्त्र फैलाए, और स्वयं को रत्नों से सजे पुल की तरह मिट्टी के ऊपर लिटा दिया। अतः यह कहा गया है:-

जब मैंने उनसे पूछा, तो उन्होंने मुझे इस प्रकार बताया:
'बुद्ध संसार में प्रकट हुए हैं।'
विजेता दीपांकर के नाम से प्रसिद्ध,
जिसका कोई श्रेष्ठ नहीं है, और जो नेता है।
पुरुषों के संरक्षक। उनके लिए, मार्ग है
सफाई की गई और उसे व्यवस्थित किया गया।
"बुद्ध शब्द सुनते ही मेरा उत्साह..."
यह विचार वहीं और उसी क्षण उत्पन्न हुआ। मुझे मानसिक आनंद मिला।
जैसे ही मैंने ये शब्द दोहराए: बुद्ध! बुद्ध!
मैं वहाँ खड़ा होकर प्रसन्न और उत्साहित होकर सोचने लगा।
मैं मन ही मन सोच रहा था: 'यहाँ मैं बीज बोऊँगा, चलो
एक पल की भी देरी नहीं होनी चाहिए।
"यदि आप सभी बुद्ध के लिए सफाई कर रहे हैं, तो कृपया
मुझे भी ऐसा करने का अवसर मिलेगा। मैं भी ऐसा करूँगा।
सड़क की सफाई और उसे सीधा करना
उसी का।
"जब उन्होंने मुझे सड़क साफ करने का मौका दिया।
मन ही मन बुद्ध! बुद्ध! कहकर मैंने साफ किया
फिर सड़क।
"सड़क की मरम्मत का अपना हिस्सा पूरा करने से पहले,
महान ऋषि दीपांकर, विजेता, साथ में
चार लाख ऐसे स्टेनलेस और

(पृष्ठ 26) शिष्यों ने छह प्रकार प्राप्त कर लिए थे
अतिज्ञान रास्ते में प्रकट हुआ।
"आनंदित देवता और मनुष्य मिलने के लिए निकले; कई
ढोल बजने लगे और बधाईयां दी गईं।
"स्वर्गीय प्राणियों ने मनुष्यों को देखा और इसलिए
क्या मनुष्य देवताओं के समान थे? वे दोनों ही उनका अनुसरण करते थे।
बुद्ध के पीछे, हाथ जोड़े हुए
आराधना।
"स्वर्गीय संगीत वाद्ययंत्रों वाले दिव्य प्राणी-

वाद्ययंत्र और मानव बैंड वाले मनुष्य
संगीत के क्षेत्र में, दोनों वर्गों के छात्रों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।
संगीत और तथागत का अनुसरण किया।
दिव्य प्राणी स्वर्ग की ऊँचाई पर चढ़ गए।
आकाश और बिखरे हुए दिव्य मंदारव
परिचट्टका मूंगा फूलों के साथ और
चारों ओर कमल के फूल खिले हुए हैं। स्वर्गिक दृश्य!
प्राणी आकाश की दिव्य ऊंचाइयों पर चढ़ गए
और दिव्य चंदन पाउडर की वर्षा की और
हर तरह से बेहतरीन परफ्यूम।
मनुष्य पृथ्वी की सतह पर विचरण करते थे।
जमीन पर गिरा और चारों दिशाओं में सुगंधित हवा फेंक दी
कैम्पाका के सफेद और पीले फूल, मीठी सुगंध वाले
सलाला के फूल, अशोक के फूल, लाल परी वृक्ष
और पुन्नागा के फूल, साथ ही केतका के फूल भी।
अपने बिखरे बालों के साथ, मैंने अपनी त्वचा को फैलाया।
मैंने कीचड़ पर आसन और सरकंडे का वस्त्र रखा और फिर लेट गया।
मैंने अपना चेहरा नीचे की ओर करके खुद को नीचे झुका लिया।
बुद्ध अपने शिष्यों के साथ पदयात्रा पर जाते हैं
मुझ पर; उन्हें उस कीचड़ पर पैर न रखने दें।
यह मेरे कल्याण के लिए होगा।

1.25. लेकिन उस ऋषि सुमेधा ने कीचड़ पर लेटे हुए अपनी आँखें खोलीं और दशबल दीपांकर बुद्ध की महिमा को ध्यानपूर्वक देखते हुए इस प्रकार चिंतन किया: "यदि मैं चाहूँ, तो मैं अब सभी प्रकार के दुराचार (किलेसा) को जलाकर बुद्ध के शिष्यों के संघ का नया सदस्य बन सकता हूँ और राम नगर में प्रवेश कर सकता हूँ। परन्तु मेरे लिए, दुराचार (किलेसा) को जलाकर अमर सुख (निर्वाण) प्राप्त करने जैसा कोई विषय नहीं है। क्या मेरे लिए यह उचित नहीं होगा कि मैं इस दशबल दीपांकर की तरह परमभिसंबोधि की सर्वोच्च चोटी प्राप्त करूँ, असंख्य लोगों को सत्य (धम्म) के मार्ग पर चलने में सहायता करूँ, उन्हें बार-बार जन्मों के सागर से पार कराऊँ और उसके बाद ही मैं स्वयं पूर्ण निर्वाण प्राप्त करूँ? यह मेरे लिए उचित होगा। इसके बाद, उन्होंने आठ धम्मों का पालन करते हुए बुद्ध बनने का संकल्प लिया। अतः यह कहा गया है:-

"लेटते समय मेरे मन में यह विचार आया।"
ज़मीन पर: 'अगर मैं अब ऐसा चाहूँ, तो मैं कर सकता हूँ'
मेरी सारी बुराइयाँ (किलेसा) जलाकर राख हो जाएँ। इसका क्या लाभ?
मेरे लिए, यहाँ, सत्य (धम्म) को एक के रूप में समझना
अज्ञात व्यक्ति? स्वयं सर्वज्ञान प्राप्त कर लिया है-
विज्ञान, मैं अपने सभी साथियों को भेज दूंगा
देवताओं के साथ (सदेवकम)। इससे मेरा
बुद्ध के प्रति किया गया भक्तिपूर्ण कर्म (अधिकार)।
हे परम श्रेष्ठ पुरुष, मुझे सर्वज्ञता प्राप्त करने की शक्ति मिले।
और कई लोगों को भेजें।
बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों की धारा को काटकर

(संसार) ने तीन प्रकार के अस्तित्वों का नाश किया।
मैं स्वयं धर्म के जहाज पर सवार होऊंगा और
मेरे साथियों को देवताओं के साथ भेज दो
(सदेवकम)।

अतः जो व्यक्ति बुद्ध बनने की आकांक्षा रखता है, उसे...
उनकी आकांक्षा संयुक्त रूप से पूरी होती है
आठ आवश्यक शर्तों की पूर्ति
1. मनुष्य बनना;
2. पुरुष लिंग का प्राप्त होना;
3. परिस्थितिजन्य कारण;
4. गुरु (सत्था यानी बुद्ध) को देखना;
5. संन्यास लेकर भिक्षु बनना;
6. नेक गुणों का होना;
7. समर्पित सेवा का कार्य;
8. तीव्र इच्छा।

1.26. केवल मनुष्य के अस्तित्व में स्थापित, बुद्धत्व का लक्ष्य रखने वाले व्यक्ति की आकांक्षा
यह कार्य बखूबी संपन्न हुआ है। दूसरी ओर, एक अजगर की प्रार्थना
या किसी तेज पंखों वाले गरुला पक्षी का, या किसी देवता का, या सक्का का।
देवों का राजा मानव अस्तित्व में प्रभावी नहीं है।
इसके अलावा, उस व्यक्ति की प्रार्थना, जिसके साथ पुरुष यौन संबंध है-
किसी अंग का प्रभाव तभी होता है जब वह स्त्री का हो या किसी हिजड़े का।
या ऐसे व्यक्ति का, जिसके जननांग नहीं हैं, या ऐसे व्यक्ति का, जिसके जननांग हैं
पुरुष और महिला दोनों के यौन अंग प्रकट नहीं होते हैं।
यहां तक कि एक पुरुष के मामले में भी, उसकी आकांक्षा तभी पूरी होती है जब पर्याप्त परिस्थितिजन्य कारण मौजूद हों।
उसी जीवन में अरहतत्व की प्राप्ति के लिए; अन्यथा नहीं। पर्याप्त परिस्थितिजन्य कारणों की उचित व्यवस्था के लिए भी, प्रार्थना केवल जीवित बुद्ध की उपस्थिति में ही की जानी चाहिए ताकि प्रार्थना प्रभावी हो सके; दूसरी ओर, मृत्यु के समय की गई प्रार्थना (परिनिभूत) बुद्ध की शरण में, या किसी मंदिर की उपस्थिति में, या उनके चरणों में।
बोधि वृक्ष का फल भी नहीं लगता।
बुद्धों की उपस्थिति में की गई आकांक्षा, केवल वही एक, जो
यह कार्य उस व्यक्ति द्वारा किया जाता है जो स्थापित और मान्यता प्राप्त संन्यासी है।
एकांतवासी परिपूर्ण हो जाता है; परन्तु एकांतवासी के साथ ऐसा नहीं होता।
वह व्यक्ति, जिसे गृहस्थ समझा जाता है। यहाँ तक कि एक संन्यासी भी, केवल उसी की आकांक्षा होती है जिसने आठों प्राप्त कर लिए हों।
आध्यात्मिक उपलब्धियों (समापत्ति) और पांच प्रकार के उच्च ज्ञान (अभिज्ञा) की सिद्धि प्राप्त होती है; परन्तु जो व्यक्ति उक्त पुण्य उपलब्धियों से रहित होता है, उसकी सिद्धि नहीं होती।
उपलब्धि वह भी है जिस पर किसी का अपना जीवन पूर्णतः टिका होता है।
बुद्धों को समर्पित। उनकी इसी सेवा के कारण, समर्पित सेवा कर्म करने वाले की आकांक्षा पूर्णतः परिपूर्ण हो जाती है, किसी और कारण से नहीं। समर्पित सेवा कर्म पूर्णतः करने वाले की आकांक्षा परिपूर्ण हो जाती है।
इसके अलावा, केवल उसी व्यक्ति की प्रार्थना कारगर होती है जो अत्यधिक इच्छा, प्रयास, परिश्रम और गहन खोज रखता हो;

लेकिन दूसरे का नहीं।

1.27. उस संदर्भ में, यह उदाहरण है।
अत्यधिक इच्छा रखने वाले व्यक्ति के बारे में:- यदि कोई इस प्रकार सोचे कि मैं वहाँ जाने में सक्षम हूँ, अपनी शारीरिक शक्ति से इस संसार चक्र के संपूर्ण गर्भगृह को पार कर सकता हूँ, जो एक ठोस रूप में समाहित हो गया है, तो वह बुद्धत्व प्राप्त कर लेता है। या फिर, जो कोई भी पैदल चलकर, बांस की झाड़ियों से पूरी तरह ढके हुए संसार चक्र के संपूर्ण गर्भगृह को पार करते हुए उस पार किनारे तक जाने में सक्षम है, तो वह बुद्धत्व प्राप्त कर लेता है।
उन्हें हटाने पर, वह बुद्धत्व प्राप्त करता है। अन्यथा, जो कोई भी, चाहे जैसे भी हो,
पैदल चलकर या कदम बढ़ाते हुए बैंक तक जाने में सक्षम है।
भाले और नुकीले बरछी के मिश्रण पर और विश्व चक्र के भीतर हर जगह भाले पटकते हुए, उसने
बुद्धत्व प्राप्त करता है। या फिर, जो कोई भी, किसी भी तरह से, पूरी गुफा को पार करके दूसरे किनारे तक पहुँचने में सक्षम हो।
विश्व चक्र, अपने पैरों से भरी हुई सतह पर चलते हुए और
जलते हुए कोयले से भी समतल हो जाने पर, वह बुद्धत्व प्राप्त करता है। जो कोई भी
मानता है कि इनमें से कोई भी ऐसा नहीं है जिसे पाना कठिन हो।
स्वयं द्वारा किया गया; यह कहते हुए: 'मैं इसे भी पार करके पहुँच जाऊँगा'
दूर का किनारा। इस प्रकार, वह स्वयं उचित रूप से संपन्न है।
अत्यंत इच्छा, प्रयास, परिश्रम और गहन खोज (परियेत्थी) के साथ। केवल ऐसी आत्मा की आकांक्षा ही पूर्ण होती है।
लेकिन दूसरे का नहीं। इसलिए, ऋषि सुमेधा ने लाया
इन आठ आवश्यकताओं ने मिलकर बुद्ध बनने और स्वयं को बलिदान करने का संकल्प उत्पन्न किया।

1.28. दीपांकर, जो महिमावान हैं, आकर सुमेधा ऋषि के सिरहाने खड़े हो गए। जब उन्होंने सुमेधा ऋषि को कीचड़ पर आँखें खोलकर लेटे हुए देखा, तो उनकी आँखें पाँच मनभावन रंगों से परिपूर्ण थीं, मानो रत्नजड़ित वंश के द्वार खुले हों। उन्होंने भविष्य के अपने ज्ञान का आह्वान करते हुए मन ही मन कहा, "इस ऋषि ने बुद्धत्व प्राप्त करने का संकल्प लिया और लेट गए; क्या इनकी आकांक्षा पूरी होगी या नहीं?" इस प्रकार चिंतन करते हुए, उन्हें यह ज्ञान प्राप्त हुआ: "अब से एक लाख कल्पों के बाद, और अनगिनत कल्पों के चार कालखंडों के बाद, उस अवधि को पार करने पर, यह बुद्ध, गौतम नाम से विराजमान होंगे।" सभा के बीच में,
खड़े-खड़े ही उन्होंने यह भविष्यवाणी की: "क्या आप सबने इस परम तपस्वी को देखा है, जो कीचड़ पर लेट गए हैं?" शिष्यों ने उत्तर दिया: "जी हाँ, हमने देखा है, पूज्यवर!" "इसने बुद्ध बनने का संकल्प लेकर स्वयं को लेटाया है, जिनका नाम गौतम है। अपने इस शरीर में वे कपिलवस्तु नगर के निवासी होंगे। उनकी माता का नाम माया देवी होगा। उनके पिता का नाम सुद्धोदन होगा। उनके प्रमुख शिष्य उपतिस्सा होंगे और उनके दूसरे शिष्य कोलिता होंगे। उस बुद्ध की सेविका खेमा थेरी होंगी और उनकी दूसरी महिला शिष्या उप्पलावना***(पृष्ठ 31) थेरी होंगी। जब इस ऋषि की बुद्धि पूर्णतः परिपक्व हो जाएगी, तो वे महान वैराग्य धारण करेंगे, अत्यंत कठोर तपस्या का जीवन व्यतीत करेंगे, निग्रोध बरगद के वृक्ष की तलहटी में भिक्षा के रूप में दूध-चावल ग्रहण करेंगे, नेरांजरा नदी के तट पर भोजन करेंगे, बोधि वृक्ष की छत पर चढ़ेंगे और असत्था वृक्ष की तलहटी में पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध बनेंगे। अतः यह कहा गया है:

"दीपांकर,***(पृष्ठ 31) जगत का ज्ञाता, दाता
मेरे सिर के ऊपरी सिरे पर बलि के उपहार रखे थे और
उन्होंने मेरे बारे में ये शब्द कहे:
'तुम इस साधु को गुंथे हुए बालों के साथ देखते हो और
मितव्ययिता! सुदूर भविष्य में कप्पा, पूरी तरह से अप्रत्याशित-
अब से कुछ समय बाद, वह बुद्ध बन जाएगा।
उनका जन्म कपिला नामक रमणीय नगर में होगा।
तथागत***(पृष्ठ 32) संसार का त्याग करेंगे और

कठोर तपस्या का आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करते हुए वह
कठिन कार्यों को करना।
बकरी चराने वाले के बरगद के पेड़ के नीचे बैठे तथागत
वहाँ दूध-चावल स्वीकार करके आगे बढ़ेंगे।
नेरांजारा नदी। उस विजेता को भोजन का आनंद अवश्य आएगा।
नेरांजारा नदी के किनारे दूध-चावल का और उसके बाद
बोधि वृक्ष के आधार के पास पहुँचेंगे***(पृष्ठ 32)
अच्छी तरह से तैयार किए गए रास्ते पर चलते हुए। अतुलनीय-
इसके बाद, वह छत की परिक्रमा करेगा।
बोधि वृक्ष और महान ख्याति प्राप्त व्यक्ति बन जाएंगे
असत्था पर्वत के चरणों में पूर्णतः प्रबुद्ध बुद्ध
वृक्ष।
इस बच्चे को जन्म देने वाली माता का नाम माया होगा
नाम। पिता को सुद्धोदन के नाम से जाना जाएगा और यह
वह संन्यासी गौतम बुद्ध बनेंगे। उनके प्रमुख शिष्यों में से एक...
उपतिस्सा और कोलिता रोग मुक्त होंगे।
(आसवगेन)***(पृष्ठ 32) कामवास से रहित, (राग), जिसका
मन शांत और संयमित हैं; परिचारक
आनंद नाम का एक व्यक्ति उस विजेता की सेवा करेगा।
प्रमुख महिला शिष्याएं खेमा और उप्पलावन्ना होंगी।
आसव से मुक्त, कामवासना से रहित, राग से मुक्त
शांत मन और संयमित (समाहिता)। बोधि
उस महान बुद्ध के वृक्ष को असत्था कहा जाता है।

1.29. उस भविष्यवाणी को सुनकर, ऋषि सुमेधा ने
यह सोचकर उसका मन प्रसन्न हो गया: "मुझे बताया गया है कि मेरा
हमारी आकांक्षा पूरी होगी। दशाबल दीपांकर के ये शब्द सुनकर कि ऋषि सुमेधा बुद्ध के बीज (बीज) और अंकुर (अंकुरा) हैं, जनसमूह आनंद और प्रसन्नता से भर गया। उन्होंने यह भी सोचा: “जैसे लोग नदी पार करते समय सीधे किनारे से पार न कर पाने के कारण नीचे से पार करते हैं, ठीक उसी प्रकार हम भी...”
सही मार्ग प्राप्त न कर पाना और व्यवस्था में सफलता न पाना
इस बुद्ध दीपांकर ने भी भावी बुद्ध (बोधिसत्व) की प्रशंसा की और उन्हें आठ मुट्ठी फूल भेंट करके सम्मानित किया।
उन्होंने उनकी परिक्रमा की और वहां से चले गए। उन चार लाख रोगमुक्त (खीणासव) शिष्यों ने भी बोधिसत्व को इत्र और मालाओं से सम्मानित किया, उनकी परिक्रमा की और
वे वहां से चले गए। दूसरी ओर, देवताओं और मनुष्यों ने भी इसी प्रकार सिर झुकाकर अपना सम्मान व्यक्त किया और चले गए।

1.30. सभी के चले जाने के बाद, बोधिसत्व लेटी हुई मुद्रा से उठे और फूलों के ढेर पर पालथी मारकर बैठ गए, और मन ही मन कहने लगे: "मैं जाँच करूँगा।"
या फिर उन सिद्धियों (पारमी) की खोज करें जिनकी तलाश करनी चाहिए। जब बोधिसत्व इस प्रकार बैठे थे, तो दस हजार लोक-चक्रों के सभी देवताओं ने उन्हें बधाई दी और विशेष रूप से उनकी प्रशंसा करते हुए कहा: "आदरणीय सुमेधा! जब प्राचीन बोधिसत्व पद्मासन में बैठकर सिद्धियों की खोज करते थे, तो जो भी पूर्व संकेत प्रकट होते थे, वे सब अब प्रकट हो चुके हैं। निःसंदेह, आप बुद्ध बनेंगे। हम सब जानते हैं: 'जिस किसी को भी ये संकेत प्राप्त होते हैं, वह निश्चित रूप से बुद्ध बनता है'। आप अपना प्रयास दृढ़ करें और इस अवसर का लाभ उठाएं।" इसलिए, यह कहा गया है:

इस भविष्यवाणी को सुनकर मनुष्य और दिव्य प्राणी
अद्वितीय महान ऋषि (महेसी) के कथन थे
यह जानकर अत्यंत प्रसन्न (आमोदिता) हुई कि यह साधु
यह बुद्ध का बीज था। जयजयकार की गूंज सुनाई दी।
और वहां तालियां बजने लगीं और लोग खुशी से चिल्लाने लगे (हसन्ती)।
साथ ही, देवताओं के साथ-साथ संपूर्ण दस हजार संसार-
पुरुषों का एक समूह हाथ जोड़कर सिर झुकाए खड़ा था।
क्या हमें इस व्यवस्था के वितरण में विफलता का सामना करना पड़ेगा?
लोकनाथ (विश्व रक्षक), अभी आने वाले समय में, हम
उन्हें (निर्वाण की ओर अग्रसर होने का) अवसर प्राप्त होगा।
इस (सन्यासी) की उपस्थिति में। ठीक वैसे ही जैसे लोग,
नदी पार करते समय, विपरीत दिशा में पहुँचने में असफल रहने के बाद
तटबंध, महान नदी को पार करने के बाद
नदी पार करने के बाद बड़ी नदी को पार करना
निचले जलमार्ग पर, ठीक उसी तरह।
क्या हमें अपनी मुक्ति के लिए इस विजेता को खो देना चाहिए?
सुदूर भविष्य में हम शायद (मुक्त) हो जाएंगे
इसकी उपस्थिति। दीपांकर, ज्ञाता
लोकविदू (लोकविदू), बलिदान का योग्य प्राप्तकर्ता
मेरे कर्म की घोषणा करने के बाद, उन्होंने उपहार उठाकर अपना हाथ ऊपर उठा लिया।
दायाँ पैर। विजेता के सभी पुत्र, जो थे
वहाँ, उन्होंने मेरी परिक्रमा की। मनुष्य, ड्रैगन और
गंधब्बा की परियों ने मुझे प्रणाम किया और मुझे ले गईं।
उनका प्रस्थान। जब मैंने विश्व रक्षक को देखा
उनके भिक्षुओं के संगठन के साथ ही सब कुछ समाप्त हो गया था, मैं
फिर मैं प्रसन्न और आनंदित होकर अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ।
मेरा मन प्रसन्न हो गया। मैं आनंद से भर उठा, मैं
मैं अत्यंत प्रसन्न और उत्साह से अभिभूत था, तब
मैंने अपने पैर मोड़ लिए, पालथी मारकर बैठ गया और फिर सोचने लगा।
इस प्रकार: 'मैं अपनी इच्छा और प्रसन्नता से किसी भी अवस्था में प्रवेश कर सकता हूँ।'
चारों झानों (ध्यान समाधि/सम्मोहन अवस्थाओं) में पारंगत होकर पूर्णता प्राप्त कर चुके हैं।
अतिज्ञान। ज्ञान के मामले में मेरे बराबर कोई संन्यासी नहीं है।
दस हजार दुनियाओं में, जादू के मामले में मेरा कोई सानी नहीं है।
मुझे ऐसी शक्तियां प्राप्त हुई हैं। इस प्रकार का सुख मुझे मिला है।
मुझे पालथी मारकर बैठे हुए, यहाँ के निवासियों के लिए
दस हजार ब्रह्मांडों ने एक ज़ोरदार घोषणा की: "तुम
निश्चित रूप से बुद्ध बनेंगे: चाहे जो भी संकेत हों
पिछले बोधिसत्वों को उनके
पालथी मारकर बैठने की उनकी उत्कृष्ट मुद्रा अब स्पष्ट है:
ठंड दूर हो जाती है और गर्मी बुझ जाती है।
अब ऐसे घटनाक्रम देखने को मिल रहे हैं। निश्चित रूप से, आप देखेंगे।
बुद्ध बनो। "दस हजार विश्व-तत्व

ऐसी घटनाओं के प्रकट होने पर शांत और अविचलित हो जाना
आज स्वयं को सुधारो। निश्चय ही तुम बुद्ध बनोगे।
तेज हवाएं नहीं चलतीं, नदियां बहना बंद हो जाती हैं;
आज भी ऐसी घटनाएं होती हैं। आप निश्चित रूप से
बुद्ध बनो"। "उस प्राचीन अवसर पर फूल खिल रहे थे"
शुष्क भूमि और आर्द्र जल में उगने वाले वृक्ष और पौधे
फूलों से भर गया; ऐसी घटना होती है
आज भी ऐसा ही होता है। निश्चित रूप से आप
बुद्ध बन जाएंगे। "इसी तरह के महत्वपूर्ण अवसरों पर
पहले, फल देने वाले पौधे, चाहे वे थे
पेड़ हों या लताएँ, उन सभी में फल लगते थे;
अब तो सब फल से भरे हुए हैं। इसलिए यह निश्चित है कि
तुम बुद्ध बन जाओगे।
"इससे पहले, स्वर्गीय और सांसारिक रत्न चमकते थे।"
वैभव के साथ; वही रत्न अपनी चमक बिखेरते हैं।
अब भी चमकती हुई भव्यता। इसलिए यह निश्चित है।
तुम बुद्ध बन जाओगे।
"पहले, मानव और दिव्य संगीत वाद्ययंत्रों का प्रचलन था।"
सुनाई दिया; अब भी दोनों प्रकार के संगीत अपने चरम पर हैं।
उच्चतम स्वर। आप निश्चित रूप से बुद्ध बन जाएंगे।
"पहले, आकाश से वर्षा होती थी।"
ऊपर, बहुरंगी फूल; वही फूल
अभी भी बारिश हो रही है। बिल्कुल सही।
तुम बुद्ध बन जाओगे। "विशाल सागर (तब)"
पीछे हट गई, महान पृथ्वी, दस हजार (योजन)
विस्तार में), भूकंप आया; अब वे दोनों भी हैं
बेहद शोरगुल वाला। आप निश्चित रूप से बुद्ध बन जाएंगे।
"पहले, नरक में आग की लपटें, दस
हजार (योजन क्षेत्र में फैले हुए) जीवों का नाश हुआ;
अब भी, आग की वही लपटें हैं
शांत हो जाओ। निश्चय ही तुम बुद्ध बनोगे।
"उस समय सूर्य निर्मल था और सारे तारे भी।"
उन्होंने स्वयं को प्रकट किया; वे अब भी उसी प्रकार दिखाई देते हैं।
आप भी निश्चित रूप से बुद्ध बनेंगे।
"पहले तो पानी था ही, इसके बावजूद..."
बारिश न होने के कारण यह अंकुरित हो गया।
अब पृथ्वी से भी जल फूट रहा है।
जमीन पर बैठो। तुम निश्चित रूप से बुद्ध बन जाओगे।
तारे, ग्रह और तारामंडलों के समूह
आकाश की सतह पर चमक; एकता है
चंद्रमा का विसाख नक्खत्ता के साथ। निश्चित रूप से
तुम बुद्ध बन जाओगे।

"गुफाओं और बिलों में रहने वाले जानवर बाहर आ गए।"
उन्होंने अपने ही ठिकानों को (तब) अस्वीकार कर दिया; अब भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया।
उनकी कालकोठरी। निश्चित रूप से, तुम बन जाओगे
बुद्ध।"
"पहले, जीवों में कोई घृणा नहीं थी
जीव संतुष्ट थे। अब,
साथ ही, वे सभी आत्मसंतुष्ट हैं। निश्चित रूप से, आप
बुद्ध बन जाएँगे।"
"तब बीमारियों का अंत हुआ। भूख
भी समाप्त हो गई। आज भी उन्हें होना है।"
देखा (या यह ******(पृष्ठ 36) है)। यह निश्चित है कि आप
बुद्ध बन जाएँगे।"
"तब आसक्ति वाली इच्छा सूक्ष्म हो गई; क्रोध और
अंधकारमय भ्रम नष्ट हो गया। आज भी, सभी
वे कहीं और चले गए हैं। निश्चित रूप से, आप
बुद्ध बनो।"
"तो फिर कोई खतरा नहीं हुआ; आज भी यह
स्थिति देखी जाती है। हम उस विशेषता से जानते हैं
कि तुम निश्चित रूप से बुद्ध बन जाओगे।"
"धूल ऊपर आसमान में नहीं उड़ी। अब भी, यह
देखा जाता है। उस विशेषता से हम जानते हैं कि
तुम निश्चित रूप से बुद्ध बनोगे।
अप्रिय गंध दूर हो गई; दिव्य सुगंध फैल गई
(तब) वातावरण सुगंध से भर गया था। अब भी ऐसा ही है।
वही मीठी खुशबू हवा के साथ बहती है।
आप निश्चित रूप से बुद्ध बनेंगे।
"निराकार प्राणियों को छोड़कर सभी दिव्य प्राणी..."
उन्होंने (तब) खुद को प्रकट किया। उन सभी को होना है
अब भी दिख रहा है। निश्चय ही तुम बुद्ध बनोगे।
"पहले, सब कुछ दिखाई देता था, अर्थात्, जैसा कि
नरकलोक की बात करें तो, अब वे सभी दिखाई दे रहे हैं।
निश्चित रूप से, आप बुद्ध बनेंगे।
"पहले, दीवारें, दरवाजे और पत्थर नहीं थे
अब भी, उनके पास है
खाली आकाश बन जाओ। निश्चित रूप से, तुम बन जाओगे।
बुद्ध।"
"उस समय, उनका कोई अस्तित्व नहीं था
मृत्यु या जन्म (अर्थात मृत्यु या उत्पत्ति),
अपने प्रयास को मजबूती से थामे रखें; हार न मानें।
हाँ, आप आगे बढ़ सकते हैं। हमें भी इसके बारे में अच्छी तरह पता है।
तुम निश्चित रूप से बुद्ध बनोगे।

1.31. दस हजार विश्व-चक्रों के दिव्य प्राणियों की भविष्यवाणी और उनके कथन को सुनकर बोधिसत्व अत्यंत उत्साह से भर गए और उन्होंने इस प्रकार विचार किया:- "बुद्धों का स्वभाव व्यर्थ बोलना नहीं है। बुद्धों के कथन में कोई त्रुटि नहीं है। जिस प्रकार आकाश में फेंके गए मिट्टी के ढेले का नीचे गिरना निश्चित है, जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है, रात्रि के अंत में सूर्योदय निश्चित है, मांद से निकले शेर की दहाड़ निश्चित है, गर्भवती स्त्री का भारी बोझ उतारना अपरिहार्य है, उसी प्रकार बुद्धों की भविष्यवाणी भी व्यर्थ नहीं है। निश्चय ही मैं बुद्ध बनूंगा।" अतः यह कहा गया है:-

बुद्ध की भविष्यवाणी और दोनों को सुनने के बाद
दस हजार विश्व निवासियों का बयान-
चक्रों के बाद, मैं संतुष्ट, आनंदित और प्रसन्न हो गया और
इस प्रकार विचार करें: उनका स्वभाव कभी भी बुद्धों जैसा नहीं होता।
ऐसे बयान देना जो तोड़-फोड़ कर दें। न ही कॉन-
प्रश्नकर्ता व्यर्थ बोलते हैं और बुद्धों में कोई असत्यता नहीं है।
मैं निश्चय ही बुद्ध बनूंगा।
जैसे मिट्टी का एक ढेला आकाश की ओर उछाला जाता है।
यह निश्चित रूप से जमीन पर गिर जाता है, इसलिए यह भी
परम श्रेष्ठ बुद्धों का कथन निश्चित है और
स्थायी। बुद्धों के लिए कोई उच्चारण नहीं है।
असत्य, और इसलिए मुझे निश्चित रूप से बुद्ध बनना है।
निश्चित। जैसे मृत्यु निश्चित और अटल है।
सभी जीवित प्राणी, उसी प्रकार, निश्चित रूप से और
यह बात परम श्रेष्ठ बुद्धों का कथन है, निःसंदेह।
जैसे शेर की दहाड़, जो बाहर आ गया है
उसके ठिकाने के बारे में निश्चित है, इसलिए यह भी पक्का और निश्चित है।
यह परम श्रेष्ठ बुद्धों का कथन है।
जिस प्रकार बोझ जैसे बच्चे का जन्म निश्चित होता है
उस जीव के लिए जो (तक) पहुँच चुका है
(माँ का गर्भ) इसलिए अधिकांश लोगों का कथन भी यही है।
उत्कृष्ट बुद्धत्व निश्चित और स्थायी है।

1.32. उन्होंने यह आत्मनिर्णय इस प्रकार लिया: "निश्चित रूप से मैं बुद्ध बनूंगा"। बुद्ध बनने के लिए आवश्यक सभी अवस्थाओं (धम्म) का क्रमानुसार अध्ययन करते हुए, उन्होंने स्वयं से कहा, 'वास्तव में बुद्ध बनने के लिए आवश्यक अवस्थाएँ (धम्म) क्या हैं? ऊपर या नीचे, प्रत्यक्ष या विपरीत दिशाओं में क्या है?' उन्होंने सर्वप्रथम अपने पूर्ववर्ती बोधिसत्वों द्वारा बार-बार अपनाए गए दान के पूर्णतः स्वरूप का ध्यान किया और स्वयं को इस प्रकार उपदेश दिया: "हे बुद्धिमान सुमेधा! अब से, सर्वप्रथम दान के पूर्णतः स्वरूप को पूरा करो। जिस प्रकार उल्टा रखा हुआ जल पात्र जल को पूरी तरह से खाली कर देता है और पुनः ग्रहण नहीं करता, ठीक उसी प्रकार तुम भी बोधि वृक्ष के आधार पर विराजमान बुद्ध बनोगे, सब कुछ दान करके, अपनी सारी इच्छाएँ और माँगें, चाहे तुम्हारा धन-दौलत कुछ भी हो, पत्नी, बच्चे या शरीर के छोटे-बड़े अंग, सब कुछ अर्पित कर दोगे।" इस प्रकार उन्होंने सर्वप्रथम दान देने में पूर्णता प्राप्त करके अपने मन को सुदृढ़ किया। अतः ऐसा कहा गया है;

अब, मैं उन कर्मों (धर्म) की जाँच करता हूँ जो किए गए हैं

(पिछला) बुद्ध, इधर, उधर, ऊपर, नीचे,
दस दिशाएँ, जहाँ तक कर्म-तत्व का संबंध है
(धम्मधातु) विस्तार करना। जाँच करने पर, मुझे यह समझ में आया,
सबसे पहले, दान देने में पूर्णता,
पिछली बार द्वारा क्रमिक रूप से अभ्यास की गई महान प्रक्रिया (पाठा)
महान ऋषियों। यदि आप पूर्णता प्राप्त करना चाहते हैं।
ज्ञानोदय (बोधि), जाओ, सबसे पहले, अब, इसके द्वारा
दान देने में पूर्णता का मार्ग, इसके बाद-
इसे दृढ़ता से करने के लिए आगे बढ़ना।
जैसे पानी से भरा हुआ घड़ा उल्टा कर दिया जाए तो...
किसी के लिए भी, यह अपना पानी पूरी तरह से गिरा देता है और करता है
वहाँ हर जगह, उसी तरह से (इसकी) देखभाल नहीं करना।
जब आप भिखारियों को देखते हैं, चाहे वे निम्न वर्ग के हों या उच्च वर्ग के, तो
चाहे उदासीन हों या उदासीन, दान अवश्य दें, कुछ भी न छोड़ें।
तुम तो उल्टे रखे पानी के घड़े की तरह हो।

1.33. फिर, जब उन्होंने आगे विचार करते हुए मन ही मन कहा, 'वास्तव में, केवल पूर्व बुद्धों द्वारा किए गए प्रारंभिक कर्म ही पर्याप्त नहीं हैं", तो उन्होंने नैतिक उपदेशों (शील) की दूसरी पूर्णता देखी; और मन ही मन कहा, 'हे बुद्धिमान सुमेधा! अब से आपको नैतिक उपदेशों (शील) की पूर्णता को पूरा करना चाहिए। जिस प्रकार चामारी नामक घनी पूंछ वाला जानवर अपने जीवन की परवाह किए बिना अपनी पूंछ के बालों की रक्षा करता है, उसी प्रकार आप भी अब से केवल अपने नैतिक उपदेशों (शील) की परवाह करते हुए बुद्ध बनें, अपने जीवन की परवाह किए बिना।' इस प्रकार, उन्होंने नैतिक उपदेश (शील) की दूसरी पूर्णता को दृढ़ता से प्राप्त करने का संकल्प लिया (या स्वयं को दृढ़ बनाया)। अतः यह कहा गया है:-

"पूर्ववर्ती बुद्धों के ये (प्रारंभिक) कर्म
(बुद्धधर्म) केवल इतना ही नहीं होगा।
मैं इसी तरह के अन्य कृत्यों की जांच करूंगा।
मेरे ज्ञानोदय (बोधि) की परिपक्वता।
फिर जांच करते हुए, मुझे दूसरा तथ्य समझ में आया।
सिद्धांतों की पूर्णता का निष्ठापूर्वक अभ्यास किया गया
पिछले महान ऋषियों द्वारा। अब, यदि आप चाहें
ज्ञान (बोधि) प्राप्त करने के लिए, आगे बढ़ें
नियमों (सीला) की पूर्णता का उपक्रम
इस दूसरे प्रयास से अपने आप पर दृढ़तापूर्वक भरोसा रखें।
फर्म पर।
ठीक वैसे ही जैसे वह जानवर, जो उस प्रजाति से संबंधित है,
जिसकी अनमोल बालों वाली पूंछ है, वहाँ मौत को गले लगाता है, जहाँ-
इसकी पूंछ उलझ जाती है, लेकिन खराब होने के बजाय
इसकी पूंछ, ठीक उसी तरह, आपको पूरी तरह से
चारों चरणों में उपदेशों का पालन करें
(भूमि)। अपनी हर चीज़ पर कड़ी नज़र रखें।

याक बैल की तरह हर समय सिद्धांतों का पालन करना
(camarī) इसकी पूंछ के ऊपर"।

1.34. फिर, जब उन्होंने और आगे विचार करते हुए मन ही मन कहा: वास्तव में, केवल इतना ही नहीं, पूर्व बुद्धों द्वारा किए गए कर्म भी आवश्यक हैं, तो उन्होंने त्याग की तीसरी सिद्धि (नेक्खम्मा) देखी और मन ही मन कहा: "हे बुद्धिमान सुमेधा! अब से, आपको त्याग की सिद्धि को पूर्ण करना चाहिए। जिस प्रकार, वास्तव में, जो व्यक्ति लंबे समय तक बंधन के घर में रहता है, उसे उस स्थान से कोई लगाव नहीं रहता; बल्कि वह असंतुष्ट हो जाता है और वहाँ न रहने की इच्छा रखता है। ठीक उसी प्रकार, आप भी, सभी अस्तित्वों को कारावास के स्थान के समान मानकर, सभी अस्तित्वों से असंतुष्ट होकर, उससे मुक्ति पाने का निश्चय करें और त्याग की ओर अग्रसर हों। इस प्रकार, आप बुद्ध बन जाएँगे।" अतः यह कहा गया है:

"इतना ही नहीं, बल्कि पूर्व के ये कृत्य ही काफी हैं।"
बुद्ध होंगे। मैं अन्य बातों की जाँच करूँगा।
वे भी जो मुझे ज्ञान प्रदान करते हैं
(बोधि) परिपक्व।" जांच करने पर, मुझे यह समझ में आया
त्याग में तीसरी पूर्णता, भक्तिपूर्वक
पिछले महान ऋषियों द्वारा अनुसरण किया गया। 'अब, ले लो
अपने ऊपर अच्छी तरह और दृढ़ता से, तीसरा
यदि आप त्याग में पूर्णता प्राप्त कर लें और इसी प्रकार आगे बढ़ते रहें, तो
बोधि प्राप्त करना चाहता हूँ, बुद्ध बनना चाहता हूँ।' "बस
एक कैदी की तरह, जो वहां लंबे समय से रह रहा है
खड़े रहने से होने वाली असुविधा से कोई लाभ नहीं होता।
वहां लगाव तो है, लेकिन उससे बचने का ही रास्ता ढूंढता है।
इसी प्रकार, आपको भी सभी प्राणियों को ध्यान से देखना चाहिए।
जेलखानों से मिलते-जुलते और आगे की ओर देखते हुए
अस्तित्व से पूर्ण मुक्ति पाने के लिए त्याग।

1.35. फिर, जब उन्होंने आगे विचार करते हुए सोचा, 'निश्चित रूप से पूर्व बुद्धों के कर्म ही पर्याप्त नहीं हैं,', तो उन्हें ज्ञान की चौथी सिद्धि (पञ्ञा पारमी) दिखाई दी, और उनके मन में यह विचार आया: "हे सुमेधा! अब से आपको ज्ञान की सिद्धि (पञ्ञा पारमी) भी प्राप्त करनी चाहिए। अपने से छोटे, अपने समान (मज्झिमा) और अपने से बड़े लोगों में से किसी से भी संकोच न करते हुए, सभी ज्ञानी पुरुषों के पास जाकर प्रश्न पूछें। जिस प्रकार एक भिक्षु जो केवल अपने कटोरे में भिक्षा प्राप्त भोजन से अपना जीवन यापन करता है, अपने परिवार के किसी भी दाता से संकोच नहीं करता, जो निम्न वर्ग आदि में से कोई भी हो, घर-घर जाकर लगातार भिक्षा मांगता है और शीघ्र ही अपनी जीविका प्राप्त कर लेता है, ठीक उसी प्रकार आप भी सभी ज्ञानी पुरुषों के पास जाकर प्रश्न पूछें और आप बुद्ध बन जाएंगे।" इसके बाद, उन्होंने ज्ञान की चौथी सिद्धि (पञ्ञा पारमी) को दृढ़ करते हुए स्वयं को स्थापित कर लिया। अतः यह कहा गया है:-

बुद्धों के कर्म वास्तव में ऐसे नहीं हो सकते थे।
बहुत कुछ। मैं अन्य कार्यों की भी जांच करूंगा।
इससे मेरा बोधित्व परिपक्व हो सकता है। फिर इसकी जांच करूंगा।
मैंने ज्ञान में चौथी पूर्णता को निरंतर देखा।
यह कार्य पूर्व महान ऋषियों द्वारा संपन्न किया गया था। अब आप आगे बढ़ें।
ज्ञान में पूर्णता प्राप्त करना, जो चौथा है,

इसे स्वयं अपने ऊपर लेना और इसे मजबूती से बांधना।
जिस प्रकार एक भिक्षु अपनी लय में रहकर अपना जीविका प्राप्त करता है
इस प्रकार कि वह किसी भी (घर) को न छोड़े
परिवारों के साथ (भेदभाव करके उन्हें) हीन समझना
उच्च या मध्यम वर्ग, इसी प्रकार (इसलिए) आपके लिए बेहतर होगा
ज्ञान में पूर्णता की ओर व्यापक रूप से आगे बढ़ें
हमेशा बुद्धिमान और प्रबुद्ध लोगों से प्रश्न पूछते रहना।

1.36. फिर, जब उन्होंने आगे तर्क करते हुए सोचा, 'केवल इतना ही नहीं, पूर्व बुद्धों के कर्म भी अवश्य ही रहे होंगे', तो उन्होंने परिश्रम में पाँचवीं सिद्धि (वीर्य पारमी) देखी, और उनके मन में यह विचार आया: "हे सुमेधा! अब से आपको परिश्रम में सिद्धि (वीर्य पारमी) भी प्राप्त करनी चाहिए। जिस प्रकार पशुओं का राजा, सिंह, अपनी सभी मुद्राओं और गतिविधियों में दृढ़ और ऊर्जावान होता है, उसी प्रकार आप भी अपने सभी जन्मों में अपनी सभी मुद्राओं और गतिविधियों के संबंध में दृढ़ और ऊर्जावान रहकर बुद्ध बन जाएँगे।" तदनुसार, उन्होंने परिश्रम में पाँचवीं सिद्धि (वीर्य पारमी) को दृढ़ करने का निश्चय किया। अतः यह कहा गया है:

बुद्धों के कर्म वास्तव में ऐसे नहीं होने चाहिए।
बस इतना ही; मैं और छानबीन करके पता लगाऊंगा।
ऐसे कर्म जिनसे मेरा बोधि परिपक्व हो। जाँच करना
फिर, मुझे प्रयास में पाँचवीं पूर्णता मिली-
इससे पहले महान ऋषियों द्वारा लगातार किया जाता रहा है।
अब आप इस पाँचवीं पूर्णता की ओर आगे बढ़ सकते हैं।
प्रयास (वीर्य पारमी), इसे स्वयं पर लेना
और इसे दृढ़ बनाना। ठीक वैसे ही जैसे हिरणों का सरदार,
शेर चाहे बैठा हो, उसे परिश्रम की कभी कमी नहीं होती।
खड़े रहना हो या चलना-फिरना, और हमेशा एक ऊंचा स्वर रखता है
इसी प्रकार, आप भी अपनी पूर्ण क्षमता प्राप्त कर लेंगे।
ज्ञान प्राप्ति और बुद्ध बनने की दिशा में आगे बढ़ते हुए
प्रयास में पूर्णता और दृढ़ता को बढ़ावा देना
अपने जीवन के हर पहलू में प्रयास करो।"

1.37. फिर जब उन्होंने और आगे विचार किया, यह सोचते हुए कि 'केवल इतना ही नहीं, पूर्व बुद्धों के कर्म भी अवश्य ही रहे होंगे,' तो उन्होंने धैर्य की छठी सिद्धि (खन्ती पारमी) देखी, और उनके मन में यह विचार आया: "हे बुद्धिमान सुमेध! अब से आपको धैर्य की सिद्धि को पूर्ण करना चाहिए। आपको आदर करने वालों और अनादर करने वालों दोनों के प्रति समान रूप से धैर्यवान रहना चाहिए। जिस प्रकार पृथ्वी पर लोग शुद्ध और अशुद्ध दोनों प्रकार की वस्तुएँ फेंकते हैं और उस क्रिया के फलस्वरूप पृथ्वी न तो आकर्षित होती है और न ही प्रतिकर्षित; वह धैर्य रखती है; वह सहन करती है और धीरज रखती है; ठीक उसी प्रकार, आप भी आदर करने वालों और अनादर करने वालों दोनों के प्रति धैर्यवान रहकर बुद्ध बन जाएँगे।" तदनुसार, उन्होंने धैर्य की छठी सिद्धि (खन्ती पारमी) को दृढ़ करने का निश्चय किया। अतः यह कहा गया है:-

बुद्धों के कर्म वास्तव में ऐसे नहीं होने चाहिए।
मुझे केवल जांच करनी होगी और अन्य जानकारी प्राप्त करनी होगी।
ऐसे कर्म जिनसे मेरा बोधि परिपक्व हो। जाँच करना
तब मुझे धैर्य में छठी पूर्णता प्राप्त हुई।
महान ऋषियों द्वारा पहले भी इसे निरंतर रूप से किया जाता रहा है।

बेहतर होगा कि आप इस छठे को बनाने का जिम्मा स्वयं उठा लें।
अब पूर्णता को दृढ़ करें और आप पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त करेंगे-
अगर आपका मन एकाग्र है लेकिन आप वहां ईमानदार हैं तो यह एक अच्छा विकल्प है।
ठीक उसी प्रकार, जैसे पृथ्वी पर फेंकी गई हर चीज को वहन करती है।
उस पर, साफ और गंदा दोनों ही।
इससे कोई दुर्भावना नहीं होती, ठीक उसी प्रकार, आप भी।
आगे बढ़ने से आपको अपनी बोधि भी प्राप्त हो जाएगी।
धैर्य और आत्म-निरीक्षण द्वारा पूर्णता का अभ्यास करना
सभी प्रकार के सम्मान और तिरस्कार के प्रति उदासीन।

1.38. फिर, उन्होंने आगे तर्क करते हुए सोचा, 'पिछली बुद्धों के कर्म केवल इतने ही नहीं रहे होंगे', उन्होंने सत्य की सातवीं पूर्णता (सच्च पारमी) देखी और उनके मन में यह विचार आया: "हे बुद्धिमान सुमेधा! अब से, आपको सत्य की पूर्णता को पूरा करना चाहिए। इच्छा आदि के प्रभाव में आकर, धन के लाभ के लिए जानबूझकर झूठ मत बोलो, चाहे वह तुम्हारे सिर पर ही क्यों न गिरे। जैसे, (यथा नाम) वास्तव में, उपचार का तारा (ओसाधि तारका), अर्थात्, कभी दूसरे तारे के साथ नहीं जाता ***(पृष्ठ 44) वह सभी ऋतुओं में अपनी परिक्रमा का मार्ग छोड़कर अपने ही मार्ग पर परिक्रमा करता रहता है, ठीक उसी प्रकार, तुम भी केवल झूठ न बोलकर, सत्य का त्याग करके बुद्ध बन जाओगे।" तदनुसार, उन्होंने सत्य की सातवीं पूर्णता को दृढ़ता से अपना लिया। अतः, यह कहा गया है:

बुद्धों के कर्म वास्तव में ऐसे नहीं होने चाहिए।
मैं और अधिक जानकारी जुटाऊंगा, इसकी जांच करूंगा और पता लगाऊंगा।
ऐसे कर्म जिनसे मेरा बोधि परिपक्व हो। जांच
फिर, मुझे सत्य में सातवीं पूर्णता मिली, जो...
इससे पहले महान ऋषियों द्वारा लगातार इसका पालन किया जाता रहा है।
आपको यह सातवां कार्य स्वयं पर लेना चाहिए।
अब पूर्णता को दृढ़ करें और आप पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त करेंगे-
यदि आपका भाषण संदिग्ध नहीं बल्कि ईमानदार है तो आपको सफलता मिल सकती है।
ठीक उसी प्रकार, अर्थात्, उपचार का तारा (ओसाधी), साथ ही
अन्य समान खगोलीय पिंडों के साथ, चाहे वे किसी भी स्थिति में हों
बरसात के मौसम में हो या अन्य मौसमों में, यह अपने से विचलित नहीं होता है।
इसके कक्षीय पथ का अनुसरण करते हुए, आप भी उसी प्रकार इसे प्राप्त करेंगे।
बुद्धत्व के मार्ग पर चलकर पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त करना
सत्य में पूर्णता, बिना विचलित हुए
सत्यों का मार्ग।

1.39. फिर, जब उन्होंने आगे तर्क किया, यह सोचते हुए: 'केवल इतना ही नहीं, यह पिछले बुद्धों द्वारा किए गए कर्म भी रहे होंगे', तो उन्होंने संकल्प में आठवीं पूर्णता (अधिष्ठान) देखी और उनके मन में यह विचार आया: "हे बुद्धिमान सुमेधा! अब से, आपको संकल्प में पूर्णता को पूरा करना चाहिए। आपको अपने द्वारा किए गए ऐसे संकल्प पर अडिग रहना चाहिए। जैसे, वास्तव में, *********(पृष्ठ 45) एक पर्वत-पहाड़ी, जब उस पर सभी दिशाओं से हवाएँ चलती हैं, तो न तो काँपती है और न ही हिलती है, बल्कि अपनी जगह पर ही खड़ी रहती है, उसी प्रकार, आप भी अपने आत्म-निर्णय में अडिग रहकर बुद्ध बन जाएँगे।" तदनुसार, उन्होंने आत्म-निर्णय में आठवीं पूर्णता को दृढ़ करने का निश्चय किया। इसलिए, यह कहा गया है:-

बुद्धों के कर्म वास्तव में ऐसे नहीं होने चाहिए।
बस इतना ही; मैं और छानबीन करके पता लगाऊंगा।

ऐसे कर्म जिनसे मेरा बोधि परिपक्व हो। जाँच करना
फिर, मुझे आत्म-संकल्प में आठवीं पूर्णता प्राप्त हुई।
महान ऋषियों द्वारा निरंतर संपन्न की जाने वाली प्रार्थना,
पहले।
बेहतर होगा कि आप इस आठवें को बनाने का जिम्मा लें
अब पूर्णता को दृढ़ करें और आप पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त करेंगे-
वहाँ आपके अडिग होने से आपका प्रभाव कम हो जाएगा। ठीक वैसे ही
साथ ही एक सुस्थापित, अडिग चट्टानी पर्वत
तेज हवाओं के कारण न तो यह कांपता है और न ही हिलता है।
लेकिन यह अपनी जगह पर ही खड़ा रहता है, ठीक उसी तरह,
आपको भी हमेशा अपने रुख में अडिग रहना चाहिए।
संकल्प, पूर्णता के मार्ग पर चलना
दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ो और तुम्हें पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त होगा।"

1.40 फिर, जब उन्होंने आगे तर्क करते हुए सोचा: 'केवल इतना ही नहीं, पूर्व बुद्धों द्वारा किए गए कर्म भी अवश्य ही महत्वपूर्ण रहे होंगे', तो उन्होंने प्रेममयी (मेट्टा पारमी) की नौवीं पूर्णता देखी और उनके मन में यह विचार आया: "हे बुद्धिमान सुमेधा! अब से, आपको प्रेममयी पूर्णता को पूर्ण करना चाहिए। आपको उन लोगों के प्रति एक समान मन रखना चाहिए जो आपके लिए लाभकारी हैं और जो आपके लिए लाभकारी नहीं हैं। जिस प्रकार, वास्तव में, बुद्ध एक दुष्ट व्यक्ति और एक अच्छे व्यक्ति के प्रति भी उदासीन भाव रखते हैं, दोनों को एक समान मानते हुए, उसी प्रकार, आप भी एक समान मन रखते हुए, जीवित प्राणियों के प्रति प्रेममयी हृदय से प्रेममयी रहें।" तदनुसार, उन्होंने प्रेममयी की नौवीं पूर्णता को दृढ़ किया। अतः, यह कहा गया है:

बुद्ध के कर्म वास्तव में ऐसे नहीं होने चाहिए।
बस इतना ही; मैं जाँच करके अन्य जानकारी प्राप्त करूँगा।
ऐसे कर्म जो मेरे बोधित्व को परिपक्व करेंगे। जांच करना
फिर, मुझे प्रेम में नौवीं पूर्णता प्राप्त हुई।
महान ऋषियों द्वारा निरंतर प्रदर्शित की जाने वाली दयालुता।
पहले। आप शायद (या बेहतर होगा) इसे अपने हाथ में ले लें।
अब नौवीं पूर्णता को दृढ़ बनाते हुए स्वयं को तैयार करें;
यदि आप पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त करना चाहते हैं, तो बेहतर है कि आप
प्रेम और दयालुता में अद्वितीय। ठीक वैसे ही, जैसे पानी
यह अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोगों में समान रूप से व्याप्त है।
शीतलता, धूल भरी अशुद्धियों को धोकर साफ कर देती है, इसी प्रकार,
आगे बढ़ने से आपको भी पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त होगा।
प्रेम और दया के मार्ग पर विकास करते हुए
जो लोग
यह आपके लिए या उन लोगों के लिए फायदेमंद हो सकता है जो नहीं हैं।

1.41. फिर, जब उन्होंने और आगे तर्क किया, यह सोचते हुए कि 'केवल इतना ही नहीं, पूर्व बुद्धों के कर्म भी अवश्य ही रहे होंगे', तो उन्होंने समभाव (उपेक्खा पारमी) की दसवीं सिद्धि देखी और उनके मन में यह विचार आया: "हे सुमेधा! अब से, आपको समभाव की सिद्धि को पूर्ण करना चाहिए। समृद्धि हो या विपत्ति, आपको केवल उदासीन रहना चाहिए। जिस प्रकार पृथ्वी स्वच्छ या अस्वीकृत

वस्तुओं के फेंके जाने पर उदासीन रहती है, ठीक उसी प्रकार, आप भी समृद्धि और विपत्ति के बीच उदासीन रहकर बुद्ध बन जाएंगे।" तदनुसार, उन्होंने समभाव की दसवीं सिद्धि को दृढ़ संकल्पित करते हुए अपना मन बना लिया। अतः यह कहा गया है:

बुद्ध के कर्म वास्तव में ये नहीं होने चाहिए।
बहुत कम; मैं जांच करके पता लगाऊंगा।
अन्य ऐसे कर्म जिनसे मेरा बोधि भाव परिपक्व हो सके।
फिर छानबीन करने पर मुझे दसवीं पूर्णता मिली।
समभाव में, महान द्वारा निरंतर निष्पादित
पहले, ऋषियों ने। बेहतर होगा कि आप स्वयं यह जिम्मेदारी ले लें।
अब दसवीं पूर्णता को दृढ़ बना लो, और तुम
एक सुसंतुलित व्यक्ति की तरह रहकर पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त करें।
तराजू का जोड़ा। ठीक वैसे ही, जैसे पृथ्वी दिखती है
स्वच्छ और गंदी दोनों ही चीजों पर उदासीनता से
क्रोध और पक्षपात से मुक्त होकर, उस पर गिरा दिया गया।
इसी प्रकार, आपको भी हमेशा एक जोड़ी की तरह रहना चाहिए।
सुख और दुख के बीच संतुलित तराजू का।
समभाव में पूर्णता के मार्ग पर अग्रसर होते हुए आप
पूर्ण बुद्धत्व प्राप्त करेंगे।

1.42 अतः उन्होंने सोचा, "इस संसार में बुद्धों द्वारा किए गए कर्म इतने ही हैं, जिन्हें बोधिसत्वों को अपने बोधि की पूर्ण परिपक्वता के लिए पूरा करना चाहिए। दस सिद्धियों के सिवा और कुछ नहीं है। ये दस सिद्धियाँ न तो आकाश में हैं, न ही पृथ्वी पर। न ही पूर्व दिशा में, न ही अन्य दिशाओं में। ये केवल मुझमें ही हैं, मेरे हृदय में विराजमान हैं।" इस प्रकार, उन्हें अपने हृदय में विराजमान देखकर, उन्होंने उन सभी को दृढ़ और निश्चित कर लिया। बार-बार उन्हें ग्रहण करते हुए, उन्होंने प्रत्यक्ष और विपरीत क्रम में उन पर ध्यान किया। एक छोर को पकड़कर, उन्होंने आरंभ को प्राप्त किया। आरंभ को पकड़कर, उन्होंने अंतिम छोर को प्राप्त किया। केंद्र को पकड़कर, उन्होंने दोनों ओर के छोरों को प्राप्त किया। दोनों छोरों को पकड़कर, उन्होंने मध्य को प्राप्त करके विषय को समाप्त किया। 'सार्वभौमिक संपदा का पूर्ण त्याग दान में पूर्णता (कानापारमी) है, शरीर के अंगों का सर्वांगीण त्याग लघु दान है, परन्तु दान में उच्चतर पूर्णता तथा अपने प्राण का पूर्ण त्याग परम सर्वोच्च दान है', ऐसा सोचते हुए उन्होंने कुल तीस पूर्णताओं का ध्यान किया, जिनमें दस साधारण पूर्णताएँ, दस उच्चतर पूर्णताएँ और दस सर्वोच्च पूर्णताएँ शामिल थीं, मानो वे विशाल विश्व-चक्र रूपी सागर को तेल लगाकर, बार-बार घुमा रहे हों और उसमें घुमा रहे हों, और विशाल मेरु पर्वत को उसका शीर्ष बना रहे हों। जब वे दस पूर्णताओं का ध्यान कर रहे थे, तब यह विशाल पृथ्वी, जो दो लाख योजन से अधिक घनी है, चार नहुत से भी अधिक, उनके कर्म की शक्ति के कारण काँप उठी, थरथरा उठी और कर्कश गूँज से गूंज उठी, मानो किसी हाथी द्वारा सरकंडों के गट्ठे को रौंदा जा रहा हो या गन्ने को निचोड़ने वाली मशीन में दबाया जा रहा हो। वही विशाल पृथ्वी कुम्हार के चाक और तेल बनाने की मशीन की तरह घूमती थी। इसलिए, यह कहा गया है:

दुनिया में केवल इतने सारे कर्म ही मौजूद हैं।
जो आपके बोधि को परिपक्व बनाते हैं; इनके अलावा,
और कुछ नहीं है। बेहतर होगा कि आप स्थापित कर लें।
स्वयं को दृढ़ता से वहाँ स्थापित करें। जब ये कर्म, उनका स्वरूप,
सार और विशेषताओं पर ध्यान किया जाता है,
दस हजार (लीग) के विस्तार वाली धरती कांप उठी।
कर्म की शक्ति से। धरती कांपती और गड़गड़ाती है।
प्रेसिंग मशीन में गन्ने से मिलती-जुलती।
तेल उत्पादन मशीन के पहिये से टकराने पर, वह हिलता है।

धरती।

1.43 धरती के ज़ोर से कांपने के कारण, राम्मा नगर के निवासी ठीक से खड़े न रह पाने के कारण इधर-उधर गिर पड़े, मानो किसी विशाल हॉल से तूफ़ानी बवंडर ने उन्हें छोड़ कर बाहर फेंक दिया हो। पानी के घड़े और कुम्हारों के बर्तन इधर-उधर गिरते हुए एक-दूसरे से टकराए और चूर-चूर हो गए। घबराई हुई जनता ने गुरु के पास जाकर उनसे पूछा, “हे महिमावान! यह क्या है? क्या यह शक्तिशाली अजगर का घूमना है या किसी राक्षसी दानव का घूमना? वास्तव में, हम सब इसके बारे में नहीं जानते। फिर भी, हम सब, समस्त जनसमूह, बहुत व्याकुल हैं। यह कैसे हो सकता है? क्या इससे कोई बुराई होगी? या फिर कोई भलाई होगी? कृपया हमें इस विषय की व्याख्या कीजिए।” तब, उनकी बातें सुनकर गुरु ने कहा: "तुम सब भयभीत न हो। चिंता मत करो। इस घटना से तुम्हें कोई खतरा नहीं है। वह ज्ञानी सुमेधा, जिसके बारे में मैंने आज भविष्यवाणी की थी कि वह भविष्य में गौतम नाम से बुद्ध बनेगा, इस समय दस गुणों का ध्यान कर रहा है। जब वह उनका ध्यान कर रहा था, तब उसके कर्मों की शक्ति से समस्त दस हजार विश्व तत्व एक साथ कांप उठे और गर्जना करने लगे।" अतः यह कहा गया है:

"उतना बड़ा जितना कि प्रस्ताव देने वाले लोगों की सभा
उस सभा में बुद्ध के समक्ष पुरुष उपस्थित थे।
वहाँ, कांपते हुए, उसने भागने का रास्ता खोजा और लेट गया।
जमीन पर। हजारों पानी के घड़े और कई
सैकड़ों बर्तन आपस में टकरा रहे थे
वहाँ उसे टुकड़ों और चूर्ण में कुचल दिया गया। बड़ा
लोगों का समूह, *******(पृष्ठ 50) उत्तेजित, स्तब्ध,
भयभीत, डगमगाते और अनिश्चित मन से आया
वे सब मिलकर बुद्ध दीपांकर के पास पहुँचे।
इन शब्दों के साथ: 'हे अंतर्दृष्टि के स्वामी! क्या
दुनिया का क्या होगा? क्या यह अच्छा होगा या बुरा?
पूरी दुनिया संकट में है। कृपया इसे दूर करें।
उस विपत्ति के बारे में।' तब महान ऋषि दीपांकर ने कहा।
उन्हें सूचित किया:

'इस भूकंप में, आप आश्वस्त रहें, न
डरो। जिसके बारे में आज मैंने भविष्यवाणी की थी
कि वह संसार में बुद्ध बन जाएगा, यह एक मध्यम बात है।
कार्य पर टिप्पणी करते हुए, लगातार निष्पादित किया गया
पूर्व विजेताओं पर ध्यान करते समय।
वह कर्म जो बुद्ध बनने की दिशा में सहायक हो
परिणामस्वरूप, संपूर्ण इकाई, यह दस हजार
विशाल पृथ्वी के साथ-साथ आकाश भी कांप उठा।

1.44. बुद्ध के वचन सुनकर लोगों का विशाल समूह तृप्त और प्रसन्न हो गया। वे अपने साथ फूलों की मालाएँ, इत्र और सुगंधित वस्तुएँ लेकर राम्मा नगर से बाहर आए, बोधिसत्व के पास पहुँचे, उन्हें मालाएँ, सुगंधित वस्तुएँ आदि भेंट कीं, उन्हें प्रणाम किया, उनकी परिक्रमा की और राम्मा नगर में प्रवेश किया। बोधिसत्व ने भी दस सिद्धियों का ध्यान किया, अपने प्रयास को दृढ़ किया, अपना संकल्प बनाया और अपने आसन से उठ खड़े हुए। अतः यह कहा गया है:

बुद्ध के वचन सुनकर उनके मन में
तब और वहीं शांति छा गई। सभी लोग
उन्होंने भी मुझसे संपर्क किया और मुझे श्रद्धांजलि अर्पित की।
फिर से।
बुद्ध के गुणों को अपनाते हुए।
मैंने अपना मन दृढ़ किया। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद
बुद्ध दीपांकर, फिर मैं अपने से उठ खड़ा हुआ
आसन।

1.45 इसके बाद, दस हजार विश्व-चक्रों के सभी दिव्य प्राणी एकत्रित हुए, बोधिसत्व के आसन से उठने पर, दिव्य मालाओं और सुगंधों से उनका सम्मान किया, उन्हें प्रणाम किया और प्रारंभ में यह कहकर औपचारिक स्तुतिगान किया: "आदरणीय ऋषि सुमेधा! आज आपने दशबल दीपांकर के चरणों में महान आकांक्षा की है। आपकी वह आकांक्षा बिना किसी बाधा के पूर्ण हो। आपको कोई खतरा या भय न हो। आपके शरीर में किसी भी प्रकार की बीमारी न हो। शीघ्र ही सिद्धियों को पूर्ण करें और तदनुसार बुद्ध के पूर्ण ज्ञान को प्राप्त करें। जिस प्रकार पुष्प और फलदार वृक्ष उचित मौसम में फूल और फल देते हैं, उसी प्रकार आपको भी समय-सीमा समाप्त होने से पहले शीघ्र ही बुद्ध के उत्कृष्ट आत्मज्ञान के संपर्क में आना चाहिए।" इस प्रकार घोषणा करके, दिव्य प्राणी अपने-अपने दिव्य निवासों में लौट गए इस प्रकार, देवताओं द्वारा विधिवत प्रशंसा प्राप्त करने के बाद, बोधिसत्व ने मन ही मन कहा: "दस सिद्धियों को प्राप्त करने के बाद, मैं अनगिनत विश्व-चक्रों के चार समुच्चयों के अतिरिक्त एक लाख युगों (कप्पा) की समाप्ति पर बुद्ध बनूँगा।" अपने परिश्रम को सुदृढ़ करने के बाद, उन्होंने यह संकल्प लिया और आकाश में विचरण करते हुए हिमालय लौट गए। अतः यह कहा गया है:

"स्वर्गीय और मनुष्य दोनों ही नीचे बिखर गए।"
जैसे ही मैं अपनी सीट से उठा, मुझ पर फूल आ गिरे।
दिव्य और मानव। दोनों ही, मानव और
दिव्य शक्तियों ने मुझे मेरी समृद्धि के बारे में बताया: 'आपका
आकांक्षा बहुत अच्छी है। आशा है आपको वह प्राप्त हो।
आप जो चाहें, वह करें। सभी विपत्तियाँ आपको छोड़ दें।
आपकी चिंताएँ और बीमारियाँ दूर हो जाएँ।
आपके लिए कोई बाधा न बनें। बेहतर होगा कि आप इसे प्राप्त कर लें।
सबसे उत्कृष्ट बोधि, शीघ्र:
जैसे ही उचित मौसम आता है, फूल खिलने लगते हैं।
पेड़-पौधे खिलते हैं, उसी प्रकार आप भी खिलें।
हे महान वीर! दस गुणों को पूर्ण कीजिए।
क्योंकि कुछ और सभी सर्वज्ञ बुद्ध, बुद्ध बन गए।
अपने-अपने बोधि वृक्ष की छत पर,
इसी प्रकार, हे महान नायक! आप भी बन जाइए!
विजेता के बोधि वृक्ष के पास बुद्ध।
जिस प्रकार कुछ और सभी सर्वज्ञ बुद्धों ने अपना रुख मोड़ा
हे महान वीर!, धम्म के चक्र का अनुसरण करो, उसी प्रकार तुम भी करो!
कृपया धम्म के चक्र को घुमाएँ।
ठीक वैसे ही जैसे पूर्णिमा की रात को, पूर्णतः शुद्ध
चाँद बहुत चमक रहा है, उसी प्रकार तुम भी।
कृपया पूर्ण हृदय से दस पर अपनी रोशनी चमकाएँ।
हजारों विस्तृत क्षेत्र। ठीक वैसे ही जैसे सूर्य ने छोड़ा।

अपने ग्रहण से भी, अपनी चमक से सबको मात देता है।
इसी प्रकार, आप भी विशेष रूप से चमकें।
भौतिक संसार से मुक्त होकर, आपकी महिमा।
जैसे कुछ और सभी नदियाँ विशाल सागर में बहकर आती हैं
इसी प्रकार, महासागर, मनुष्य का यह संसार और इस संसार के लिए भी समान रूप से सहायक हो सकता है।
दिव्य प्राणी आपकी उपस्थिति के प्रति आकर्षित हों। स्तुति हो!
और उनकी प्रशंसा सुनकर, उन्होंने स्वयं यह कार्यभार संभाला।
उन दस पूर्णतावादी कार्यों को पूर्णतः पूरा करने का
और फिर जंगल में प्रवेश कर गए।
सुमेधा एपिसोड समाप्त हो गया है।

1.46 राम्मा नगर के निवासी अपने नगर में प्रवेश कर गए
और भिक्षुओं के नेतृत्व वाले संगठन को एक बड़ा दान दिया।
बुद्ध द्वारा। गुरु ने उन्हें धम्म का उपदेश दिया, जिसके कारण
तीन रत्न-आश्रय स्थलों आदि में असंख्य लोगों को स्थापित किया जाना है।
और उन्होंने राम्मा शहर से प्रस्थान किया। इसके बाद, आगे
बुद्ध दीपांकर ने अपना पूरा जीवन इन सभी कार्यों को करने में व्यतीत किया।
बुद्ध के कर्तव्यों का पालन किया और अंततः उनका निधन हो गया, और वे अपने पीछे कुछ भी नहीं छोड़ गए।
अस्तित्व के आधार के पीछे, पूर्ण अमर शांति में
निर्वाण के तत्व का साधन।(1) वहाँ जो कुछ भी कहा जाना है
उस संदर्भ में, बुद्धवंश में भी जैसा कहा गया है, उसका विस्तृत और पूर्णतः स्पष्टीकरण किया जाना चाहिए।***(पृष्ठ 53)

वास्तव में, वहाँ इस प्रकार कहा गया है:-
फिर उन्होंने जगत के रक्षक को आनंद लेने दिया
अपने शिष्यों के समूह के साथ भोजन किया और आगे बढ़े।
उन्हें गुरु दीपांकर की शरण में जाने के लिए कहा गया। (पृष्ठ)
53) तथागत ने उनमें से कुछ को अंदर जाने की अनुमति दी।
तीन शरणस्थल (सरणा), कुछ पाँच का पालन करने के लिए
नैतिक उपदेशों और अन्य बातों को स्वयं पर लेने के लिए
दस प्रकार के नियमों का पालन।
बुद्ध ने अनायास ही उनमें से कुछ को चार सबसे महत्वपूर्ण बातें बता दीं।
उन्होंने उत्कृष्ट परिणाम दिए, जबकि कुछ को उन्होंने ज्ञान प्रदान किया।
अतुलनीय धम्म का विश्लेषणात्मक ज्ञान।
पुरुषों में श्रेष्ठ व्यक्ति ने उनमें से कुछ को यह उपाधि प्रदान की।
आठ उत्कृष्ट ध्यान संबंधी उपलब्धियाँ (समापत्ति)
और उनमें से कुछ को तीन प्रकार प्रदान किए।
प्रबुद्ध ज्ञान और छह प्रकार के अति-
ज्ञान। उस संबंध के माध्यम से, महान
ऋषि ने लोगों के समूह को फटकारा, और इसी कारण
कि, दुनिया के रक्षक की व्यवस्था
विस्तृत हो गया। विशाल बैल जैसे शरीर वाला और महान

जबड़ेदार व्यक्तित्व, (महानु'सभकखंड) द्वारा जाना जाता है
दीपांकर का नाम, कई लोगों के बीच भेजा गया (तारयति)
पुरुषों को पूरी तरह से बुराई भरे अस्तित्व से मुक्त कराया।
(दुग्गतिम)। किसी ऐसे व्यक्ति को देखकर जो ज्ञान प्राप्त करने के योग्य हो,
एक लाख योजन दूर एक स्थान पर
यहां तक कि महान ऋषि पल भर में उसके पास चले गए।
समय ने उन्हें ज्ञान प्राप्त कराया।
इस महान अवसर पर,
धम्म, बुद्ध ने सौ करोड़ लोगों को ज्ञान प्रदान किया
लोग। दूसरे विशेष अवसर पर
धम्म का अहसास, रक्षक प्रबुद्ध
नब्बे करोड़। जब बुद्ध ने धम्म का उपदेश दिया
हालाँकि, देवताओं के निवास में, तीसरे महान पर
धम्म की अनुभूति के अवसर पर,
नब्बे हजार करोड़। तीन हजार थे।
करोड़ों लोगों का एक साथ इकट्ठा होना और यह
मास्टर दीपांकर की पहली सभा आयोजित की गई।
फिर, नारदा शिखर पर, जब विजेता गया
एकांत में, सौ करोड़ शुद्ध अरहत,
जिनके घाव (आसवा) सूख गए थे, वे एक साथ आ गए।
जब महान नायक चट्टानी पहाड़ी पर थे
महान ऋषि सुदस्सन ने समापन समारोह मनाया।
उपवास के मौसम का समारोह, (पवाराणा) नब्बे के साथ
हजार करोड़। उन दिनों मैं एक उच्च पदस्थ अधिकारी था।
तपस्वी, तपस्या का अभ्यास करने वाला और चोटीदार बाल धारण करने वाला
और अतिज्ञान में निपुण होने के नाते,
मैं पहले आकाश में सफ़र करता था। मुझे समझ आ गई थी।
दस हजार बीस हजार लोगों के बीच धम्म का प्रसार हुआ।
संख्याओं में गणना से परे वे थे जो
एकल और युगल, जिन्होंने बाद में धम्म का ज्ञान प्राप्त किया।
गौरवशाली दीपांकर की उत्तम शुद्धिकृत व्यवस्था
उस समय बुद्ध का ज्ञान व्यापक हो गया, जिसे समझा जाने लगा।
असंख्य, चमत्कारी और समृद्ध। चार सौ
छह प्रकार की अलौकिक शक्तियों से संपन्न हजार शिष्य-
ज्ञान और महान जादुई शक्तियां, हर समय विद्यमान-
दीपांकर, संसार के ज्ञाता। जो कोई भी,
उन दिनों, उन्होंने अपने मानवीय अस्तित्व को त्याग दिया।
चारों सही मार्गों के किसी भी फल को प्राप्त करना,
उनकी निंदा की गई। वनस्पतियों से मिलते-जुलते उपदेशों की
बुद्ध ने ऐसे फूलों को उचित रूप से धारण किया।
अद्वितीय रूप से शुद्ध अरहत जिनके घाव (आसव) थे
वह सूख गया और इसलिए वह हमेशा के लिए चमकता रहा।

जहां तक मास्टर दीपांकर की जीवन गाथा का संबंध है
संबंधित व्यक्ति: वह राजा सुदेव थे, जिनका शहर
वह रामवती थीं और उनकी रानी का नाम सुमेधा था।
दस हजार वर्षों तक उन्होंने गृहस्थ जीवन व्यतीत किया।
उनके तीन सबसे उत्कृष्ट महल जिन्हें हंस के नाम से जाना जाता है,
(हम्सा), बगुला, (कोनका) और मोर, (मयुरा)।
वह महिला, उनकी रानी-माता पदुमा, जिनके पास
तीन हजार सजी-धजी महिलाओं का एक दल
इस संख्या ने बैल जैसे दिखने वाले इस पुत्र को जन्म दिया।
चारों शकुनों (निमित्त) का उसने संसार त्याग दिया।
अपने शाही हाथी पर सवार होकर। कम से कम के लिए नहीं
विजेता ने दस महीने तक अथक परिश्रम किया।
बुद्ध बनने का प्रयास। अभ्यास करने के बाद
कठोर तपस्या से ऋषि मानसिक रूप से मजबूत हो गए।
उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और वे बुद्ध बन गए। अनुरोध प्राप्त होने पर
ब्रह्मा, महान ऋषि दीपांकर द्वारा निर्मित।
हीरो ने धम्म के पहिये को सुंदर ढंग से घुमाया।
मनमोहक नदराम उद्यान में निवास करते हुए। बैठे हुए
उसने बबूल के सिरिसा वृक्ष की जड़ों को रौंदा।
विधर्मियों में से। सुमांगला और तिस्सा दो विधर्मी बन गए।
प्रमुख शिष्यों में से एक, और सागत नामक थेरा, बन गए।
मास्टर दीपांकर की परिचारिका नंदा भी।
सुनंदा उनकी प्रमुख महिला शिष्या बन गईं।
उस महान बुद्ध के बोधि वृक्ष का नाम पिप्पली था।
काली मिर्च का पेड़। दो आदमी, तपस्सा और भल्लिका, नाम से।
प्रमुख पुरुष भक्त और सिरिमा भी शामिल थे।
कोणा गुरु की प्रमुख महिला भक्त थीं।
दीपांकर। महान ऋषि दीपांकर अस्सी वर्ष के थे।
ऊंचाई में क्यूबिट। पुष्पित राजसी के समान
साल का पेड़, और द्वीप के पेड़ के समान,
बुद्ध दीपांकर अत्यंत सुंदर थे। उनकी किरणें फैलती थीं।
बारह योजन तक उनके चारों ओर। जीवनकाल
उस महान ऋषि का जीवनकाल एक लाख वर्ष था।
इतने लंबे जीवनकाल तक जीवित रहकर, उन्होंने संदेश भेजा
अनेक लोगों को (अमर शांति के लिए)। कारण बनने के कारण
धर्म की अच्छाई को प्रकाशमान करने के लिए, उन्होंने इसे पार भेजा (संतारेत्ना)
लोगों का एक बड़ा समूह। अपने शिष्यों के साथ, उन्होंने
निर्वाण में विलीन हो गया, जैसे कि अंत हो गया हो।
प्रज्वलित अग्नि के एक पिंड का। वह महान जादुई शक्ति,
साथ ही उनके दल और उनकी प्रतिष्ठा भी, और
और उनके पैरों के तलवों पर रत्नों के समान वृत्त भी हैं।
वे सभी गायब हो गए। क्या सभी समूह

(संखारा) खाली?"
विजेता गुरु दीपांकर का निधन हो गया
नंदा पार्क में निर्वाण। वहाँ खड़े थे
विजेता का स्तूप, छत्तीस मील (योजना)
ऊंचाई में"।
....

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.1 बी विभिन्न अन्य पिछले बुद्ध
स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

अपदाना भाग - 1.1ख: अन्य पूर्व बुद्ध

अन्य विभिन्न पूर्व बुद्ध
(2)बुद्ध कोंडन्ना
1.47. हालाँकि, उनके निधन के बाद
हे गौरवशाली बुद्ध दीपांकर, जब असंख्य युगों का काल बीत चुका था।
(कप्पा) के गुजर जाने के बाद, गुरु कोन्दञ्ञा नाम से प्रकट हुए।
उनके शिष्यों की तीन सभाएँ थीं: सौ
पहली विधानसभा में हजार करोड़; दूसरी विधानसभा में हजार करोड़
दूसरे में नब्बे करोड़ और तीसरे में नब्बे करोड़। उस समय, बोधिसत्व
वह विजयतावी नाम से एक सार्वभौमिक सम्राट बने और उन्होंने एक महान वरदान दिया।
भिक्षु संगठनों को एक लाख करोड़ का दान
बुद्ध के नेतृत्व में संघ। गुरु ने बोधिसत्वों को भविष्यवाणी की।
कि वे बुद्ध बनेंगे और (बाद में) उन्हें धम्म का उपदेश दिया।

राजा ने गुरु का धार्मिक प्रवचन सुना और चला गया।
संप्रभुता का त्याग करने के बाद संन्यासी के रूप में विरक्ति।
राज्य। उसने तीनों पिटकों का ज्ञान प्राप्त किया, जागृत किया
स्वयं में ध्यान की आठ उपलब्धियाँ (समापत्ति) विद्यमान हैं।
साथ ही पांच प्रकार के अतिज्ञान और कभी भी कमी न होने की क्षमता
ध्यान की उच्च अवस्थाओं तक पहुँचकर, उनका ब्रह्म में पुनर्जन्म हुआ।
विश्व। हालाँकि, बुद्ध कोंडन्ना के लिए, शहर का नाम
राममावती थी. उनके पिता खटिया राजा सुनंदा थे; उसका
उनकी माता रानी सुजाता थीं। भद्दा और सुभद्दा उनके दो प्रमुख सरदार थे।
शिष्य। अनुराधा उनकी सेवा में परिचारक थे। तिस्सा और
उपतिस्सा उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। उनका अन्न-वृक्ष
ज्ञान (बोधि) अच्छा साल वृक्ष (सालकल्याणी) था।
उसका कद आठ क्यूबिट था। उसकी जीवन अवधि
यह एक लाख वर्ष था।
दीपांकर के निधन के बाद,
वहाँ नेता कोण्डञ्ञ, बुद्ध प्रकट हुए।
असीम शक्ति, अतुलनीय प्रतिष्ठा
और अनुचर, अद्वितीय और कठिन
पराजय (दुरसदा)
(3)बुद्ध मंगल, (4)सुमन, (5)रेवत और (6)शोभिता
1.48. उनके निधन के बाद, एक
असंख्य युगों के लंबे अंतराल (कप्पा) की समाप्ति पर, चार उत्पन्न हुए
बुद्धः मंगला, सुमना, रेवता और शोभिता, एक ही युग में
(कप्पा) केवल। गौरवशाली बुद्ध की तीन सभाओं में से।
मंगला की पहली विधानसभा में एक लाख करोड़ लोग शामिल थे।
भिक्षुओं का; दूसरे में एक हजार करोड़; तीसरे में नब्बे
करोड़ों। कहा जाता है कि उनका भाई, जो दूसरी माँ से पैदा हुआ था,
युवा आनंद, अपने साथ लोगों की एक सभा को लेकर उपस्थित था।
नब्बे करोड़ की संख्या में लोग गुरु के समक्ष उपस्थित हुए।
उनके धर्म को सुनो। गुरु ने उन्हें धार्मिक उपदेश दिया।
प्रवचन अपने क्रमिक क्रम में (अनुपुब्बिकथम)। साथ ही
श्रोतागणों के बीच, उन्होंने चारों प्रकार के देवताओं के साथ अरहत पद प्राप्त किया।
विश्लेषणात्मक ज्ञान। पूर्व की देखभाल करने में माहिर।
अच्छे परिवारों के इन बेटों के तौर-तरीकों से उनकी पर्याप्तता का पता चला।
जादुई रूप से अपने कटोरे और वस्त्र प्राप्त करने के लिए योग्यता प्राप्त करना
(उपनिषय), और अपना दाहिना हाथ फैलाकर कहा: "आओ, हे
भिक्षुओं!" वे सभी तुरंत ही उचित वस्त्र धारण कर लिए।
साठ वर्ष की आयु के बुजुर्ग भिक्षुओं की तरह, वस्त्र पहने हुए और
कटोरे लिए हुए, उन्होंने झुककर गुरु को प्रणाम किया और
उन्होंने उसे घेर लिया। यह उनके शिष्यों की तीसरी सभा थी।

1.49. ठीक वैसे ही, जैसे अन्य बुद्धों के चारों ओर

शरीर से अस्सी क्यूबिट की दूरी तक किरणें निकल रही थीं।
विस्तार में भी, इस बुद्ध के मामले में ऐसा नहीं है। शारीरिक किरणें
लेकिन उस महिमामय बुद्ध की उपस्थिति सर्वत्र व्याप्त रही।
दस हजार विश्व-तत्व। पेड़, धरती, पहाड़, महासागर।
इत्यादि, यहां तक कि वे बर्तन जिनमें चावल और अन्य खाद्य पदार्थ उबाले जाते हैं।
परिणामस्वरूप ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह सोने की पट्टियों से ढका हुआ हो। उसका जीवनकाल
हालांकि, जीवन की अवधि नब्बे हजार वर्ष थी। इतनी लंबी अवधि के लिए
उनके जीवनकाल में चंद्रमा, सूर्य आदि भी उनका वर्णन नहीं कर पाए।
अपनी किरणें बिखेरना। रात्रि और दिन का समय
स्पष्ट नहीं। जीव-जंतु हमेशा प्रकाश में ही चलते थे।
केवल बुद्ध ही थे, मानो वे दिन के उजाले में घूम रहे हों।
सूर्य का। सजीव प्राणियों की दुनिया ने विभाजनों को नोट किया।
कुसुमा के फूलों के माध्यम से जो दिन और रात खिलते हैं
शाम के समय पक्षियों का रोना (रावणक) आदि।
1.50. एक प्रश्न पूछा जा सकता है: तो फिर यह कैसा है? क्या
क्या अन्य बुद्धों में ऐसी कोई महान शक्ति नहीं थी? नहीं। ऐसा नहीं है।
वे चाहें तो निश्चित रूप से सर्वव्यापी भी हो सकते हैं।
उनकी शारीरिक किरणें या तो दस हजार विश्व तत्व हैं या इससे भी अधिक
उससे परे। दूसरी ओर, मंगल बुद्ध की शारीरिक किरणें।
पिछली प्रार्थना के प्रभाव से उसका हाथ खड़ा रहा।
दस हजार विश्व तत्व में हर समय व्याप्त, जो कि समान है
अन्य बुद्धों का अथाह लंबा प्रभामंडल। ऐसा कहा जाता है कि जब वे
वह बोधिसत्वों की साधना का पालन कर रहा था, वह स्वयं अपने मार्ग का नेतृत्व कर रहा था।
जीवन, वांका पहाड़ी से मिलते-जुलते एक पहाड़ी जंगल में, साथ में बिताया।
अपनी पत्नी और बच्चों के साथ, वेसंतारा की तरह। फिर, एक राक्षस,
शार्प-टस्कर नाम के व्यक्ति ने, उसके परोपकारी उद्देश्य के बारे में सुनकर
एक महान व्यक्तित्व ने एक अन्य व्यक्ति के वेश में उस महान सत्ता से संपर्क किया।
ब्राह्मण से उसके दो पुत्रों के लिए विनती की। महान सत्ता
वह प्रसन्न और प्रसन्न होकर बोली, 'ब्राह्मण! मैं अपने पुत्रों को आपको अर्पित करती हूँ।'
और उसने अपने दो बेटों को भी दान कर दिया, जिससे जलजनित संतानें पैदा हुईं।
भयंकर वैश्विक भूकंप के दौरान। राक्षस पास ही खड़ा था।
मठ के अंतिम छोर पर स्थित रेलिंग बोर्ड और भोजन कक्ष
लड़कों को खाने योग्य कमलों के गुच्छे की तरह उठाओ, जबकि
महान सत्ता देख रही थी। यहाँ तक कि एक हल्की सी झलक से भी।
बाल, मानसिक असंतोष उस महान व्यक्ति के सामने प्रकट नहीं हुआ।
इस तथ्य के बावजूद कि जब उसने उस राक्षस को देखा, उस क्षण
बाद वाले ने अपना मुंह खोला, उसने बाद वाले का मुंह देखा, ले जा रहा था
और आग की लपटों जैसी दिखने वाली रक्तधाराओं को पकड़े हुए। दूसरी ओर,
उसके पूरे शरीर में अपार उत्साह और मानसिक आनंद का संचार हुआ।
वह यह कहने पर विचार कर रहा था: 'मेरा दान वास्तव में उचित ही दिया गया है'।
उस महान व्यक्तित्व ने इस प्रकार आकांक्षा व्यक्त की:- "परिणामस्वरूप
यह मेरा दान है, आशा है कि मेरे शरीर से इसी प्रकार किरणें निकलेंगी।

तदनुसार, आने वाले समय में। उस आकांक्षा के फलस्वरूप
जब वे बुद्ध बने तो उनसे किरणें निकलीं और व्याप्त हो गईं।
इतना विशाल स्थान।
1.51. उनकी एक और पूर्व प्रथा भी मौजूद थी।
ऐसा कहा जाता है कि जब वे बोधिसत्व थे, तब उन्होंने बुद्ध का एक मंदिर देखा था।
और मन ही मन कह रहे थे: "मुझे पूरी तरह से बलिदान देना चाहिए।"
"मेरा जीवन इस बुद्ध को समर्पित है", उसने पूरी रात परिक्रमा करते हुए बिताई।
मंदिर में उनके सिर को उठाकर उनके पूरे शरीर को आग लगा दी गई।
एक लाख रुपये मूल्य का रत्नजड़ित सोने का कटोरा, जो कि
घी से भरा हुआ, जहाँ एक हजार बत्तियाँ जलाई गईं, उसे घेरने के बाद
उसका पूरा शरीर इस तरह ढका हुआ था मानो किसी जलती हुई छड़ी पर छाया डाली जा रही हो।
हालांकि, गर्मी का उन पर किसी भी तरह से कोई असर नहीं पड़ा।
उनके रोमछिद्रों में भी, हालांकि उन्होंने इसे पूरी ऊर्जा के साथ अंजाम दिया।
इस तरह सूर्योदय तक। उनके लिए यह एक विशेष अवसर के समान था।
जब वह कमलों के कक्ष में प्रवेश कर चुका था। निश्चय ही, वास्तव में
धर्म, धर्म का पालन करने वाले की रक्षा करता है।
स्वयं। इसलिए, परम पूज्य बुद्ध ने कहा:
"धम्म वास्तव में अभ्यास करने वाले की रक्षा करता है।"
धम्म। सुचारु धम्म से लाभ होता है।
खुशी। जब धम्म का सही ढंग से अभ्यास किया जाता है तो यह
इसका लाभ यह है: जो धम्म का अभ्यास करता है उसे कोई हानि नहीं होती।
"शुद्धिकरण में जाओ।"
इस अच्छे कर्म के फलस्वरूप भी, उस
महिमामय बुद्ध का शरीर दृढ़ता से स्थिर रहा, दसों में व्याप्त
हजार विश्व-तत्व (लोकधातु)।
1.52. उस समय हमारे बोधिसत्व ब्राह्मण बन गए,
सुरुचि नाम के व्यक्ति ने मन ही मन कहा, 'मैं गुरु को आमंत्रित करूंगा।'
वह बुद्ध के पास गया और उनके मधुर धार्मिक प्रवचन सुने।
प्रवचन देते हुए उन्होंने कहा: "आदरणीय महोदय, कल कृपया स्वीकार करें।"
"मेरा भोजन भिक्षा के रूप में।" 'हे ब्राह्मण! तुम कितने भिक्षुओं के साथ हो?'
'चाहते हो!' बुद्ध ने उत्तर दिया। ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "आदरणीय
महोदय! आपके भिक्षुओं की संख्या चाहे कितनी भी हो,
उस समय शिक्षक की पहली सभा हुई थी।
केवल शिष्यों में से। इसलिए उन्होंने उत्तर दिया: 'एक लाख
करोड़ों। ब्राह्मण ने उत्तर दिया: 'आदरणीय महोदय! साथ में
कृपया उन सभी के साथ मेरा भोजन भी दान के रूप में स्वीकार करें।
गुरुजी मान गए। ब्राह्मण, निमंत्रण देने के बाद घर लौट रहा था।
अगले दिन के भोजन के लिए बुद्ध ने इस प्रकार विचार किया: "मैं हूँ
चावल का दलिया, पका हुआ चावल और करी, कपड़े आदि प्रदान करने में सक्षम।
आदि, उन बड़ी संख्या में भिक्षुओं के लिए; बैठने की व्यवस्था के संबंध में
अंतरिक्ष के संदर्भ में क्या होगा?
1.53. उस ब्राह्मण का वह विचार

हल्के पीले मखमल के समान पत्थर की सीट को गर्म किया गया।
देवों का राजा, जो स्वर्गिक शिखर पर विराजमान था
चौरासी हजार लीग (योजना)। सक्का मन ही मन कह रहा था।
'कौन चाहता है कि मैं इस जगह को छोड़ दूं?'
अपनी दिव्य दृष्टि से चारों ओर देखा और उस महान व्यक्ति को पाया और
वह उसके सामने कुल्हाड़ी और एक
कुल्हाड़ी, बढ़ई का वेश धारण करने के बाद, इसके साथ
विचार: "सुरुचि नामक ब्राह्मण ने संगठन को आमंत्रित किया था
बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के एक समूह ने उनके बैठने की जगह पर विचार किया;
मुझे वहां जाकर पुण्य का हिस्सा लेना चाहिए।
बढ़ई ने पूछा: "क्या वास्तव में कोई ऐसा काम है जो
क्या वेतनभोगी किसी भी व्यक्ति के लिए ऐसा किया जाना चाहिए?" उस महान व्यक्ति ने उसे देखा
और उनसे यह सवाल पूछा: "आप क्या काम करेंगे?"
मेरे लिए ऐसा कोई तकनीकी कार्य नहीं है जिसे बुद्धिमानी से न किया जा सके।
हो गया। जिसे भी मुझसे घर या पंडाल बनवाना हो, मैं जानता हूँ।
“मैं उसके लिए यह कैसे करूँ?” बढ़ई ने उत्तर दिया, “वह महान व्यक्ति।”
उन्होंने उत्तर दिया, 'अच्छा, तो वास्तव में, मुझे काम करना है।' जब
जब पूछा गया कि काम क्या है, तो जवाब मिला: 'अगले दिन के लिए'
मैंने एक लाख करोड़ भिक्षुओं को भोज के लिए आमंत्रित किया था;
'उन्हें बैठाने के लिए तुम एक पंडाल बनाओगे।' बढ़ई ने कहा।
उन्होंने कहा: 'यदि आप मुझे वेतन दे सकते हैं, तो मैं'
'काम करो'। जब जवाब सकारात्मक था कि वह
जब बढ़ई भुगतान कर सका, तो वह काम करने के लिए तैयार हो गया।
और जाकर एक उपयुक्त जगह की तलाश की। एक क्षेत्र
बारह-तेरह योजन के क्षेत्रफल में फैली यह वस्तु समतल सतह की थी, जो देखने में कुछ इस प्रकार थी:
ध्यान अभ्यास के लिए एक गोलाकार यांत्रिक सहायक उपकरण (कसीना मंडल)।
वह उस जगह को देखते हुए सोचने लगा: "इस ज़मीन पर एक..."
पंडाल सात प्रकार के रत्नों से बना हो और ऊपर उठे। वहाँ और
फिर पंडाल धरती को चीरते हुए ऊपर उठ खड़ा हुआ। सोना
उस पंडाल के स्तंभों पर चांदी की शीर्ष-शीर्षें थीं; चांदी
स्तंभों के शीर्ष सोने के थे; रत्नजड़ित स्तंभों के शीर्ष मूंगे के थे।
मूंगे के स्तंभों पर माणिक्य के शीर्ष लगे हुए थे और
सात रत्नों से बने स्तंभों पर सात प्रकार की सामग्रियों से निर्मित शीर्ष स्तंभ स्थापित थे।
रत्नों का। इसके बाद, पंडाल निर्माता ने संरचना को देखा।
इस विचार के साथ: 'झनझनाती घंटियों की एक जालीदार झालर हो।'
पंडाल के अंदर अंतरालों पर लटकते हुए।" इस प्रकार, जैसे ही वह
चारों ओर देखा, घंटियों का जाल नीचे लटक रहा था। यह उत्सर्जित करता है
पांच प्रकार के वाद्ययंत्रों की मधुर ध्वनि जब भी सुनाई देती है
हल्की हवा के झोंके से हिल रहा था। यह उस अवसर के समान प्रतीत हो रहा था।
जब दिव्य गीत एक साथ गाए जाते थे। जब भी ऐसा होता था
विचार: "सुगंधित मालाओं की श्रृंखला हो।"
इधर-उधर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर फूल लटके हुए हैं।

फूलों की मालाओं की लटकती हुई लड़ियाँ दिखाई दीं। निर्माता
इस पर भी विचार किया गया: "भिक्षुओं के लिए बैठने और खड़े होने की व्यवस्था इस प्रकार की जाए..."
धरती को चीरते हुए एक लाख करोड़ रुपये निकलते हैं।
वहीं और उसी क्षण वे सब प्रकट हुए। उसने इस प्रकार योजना बनाई: "चलो
वहाँ प्रत्येक कोने पर एक-एक जलपात्र प्रकट हुए। तदनुसार जलपात्र प्रकट हुए।
1.54. जब उसने इतना बना लिया, तो उसने
वह ब्राह्मण के समक्ष गया और बोला: "आइए, मेरे स्वामी!"
"अपना पंडाल देखो और मेरी मजदूरी अदा करो।" वह महान व्यक्ति पंडाल देखने गया। जैसे ही उसने पंडाल देखा,
उसका पूरा शरीर या काया स्थायी रूप से उसमें समा गई।
पांच विवरणों का उत्साह। इसके बाद, जब उसने देखा
पंडाल के निर्माण के दौरान, उनके मन में यह विचार आया: "यह पंडाल इनके द्वारा नहीं बनाया गया था।"
एक मनुष्य। मेरी गहरी इच्छा और मेरे सद्गुण के कारण, निश्चित रूप से,
सक्का का महल गर्म हो गया होगा। परिणामस्वरूप, ऐसा होना ही चाहिए।
कि इस पंडाल का निर्माण देवों के राजा सक्का ने करवाया था।
इस प्रकार भी विचार किया गया: "हालांकि, इस तरह के पंडाल में,
मेरे लिए केवल एक दिन के लिए दान देना उचित नहीं है।
मैं सात दिनों तक भेंट चढ़ाऊंगा। बाहरी भेंट
वस्तुएँ, वास्तव में, भले ही वह इतनी भी न हो कि सक्षम हो
बोधिसत्वों को संतुष्ट करें। दूसरी ओर, वहाँ, अर्थात्, है
बोधिसत्वों को उनके बलिदान के फलस्वरूप संतोष प्राप्त हुआ।
उसके सजे हुए सिर को काटने के बाद उसे दान करने का समय
इसे उतार दो, या उन्हें हटाने के बाद उसकी अभिषेकित आँखें, या उसका मांसल
अभिषेक करने के बाद हृदय। वास्तव में, हमारे बोधिसत्व के लिए भी
राजा शिवी की जन्म कथा (जातक), उस दान की कहानी, जिसमें शामिल था
प्रतिदिन पाँच लाख कहपना दान करने में, चारों स्थानों पर
द्वारों के साथ-साथ शहर के मध्य में भी, लाने में असमर्थ रहा।
उनके त्याग में संतोष के बारे में। दूसरी ओर, उनका
जब उसने अपनी दोनों आँखें दिखा दीं तो आनंदमयी हंसी गूंज उठी।
देवताओं के राजा सक्का ने यह अनुरोध किया था, जो उनके पास एक अलग रूप में आए थे।
एक ब्राह्मण के विचार में भी कोई परिवर्तन नहीं आया।
बाल के सिरे का। इस प्रकार, अर्थात्, कोई नहीं है
बोधिसत्वों को दी गई भेंट के संबंध में संतोष।
इसलिए, उस महान व्यक्ति ने भी दान दिया जिसे दान के रूप में जाना जाता है।
सात दिनों तक गोमांस का पेय (गवापान) मांगते हुए
बुद्ध और उनके शिष्यों को उस मंडप में बैठने के लिए कहा गया था।
इस प्रकार विचार किया: "मेरे लिए सात लोगों के लिए दान देना उचित है।"
एक लाख करोड़ भिक्षुओं के लिए दिन।
अभिव्यक्ति: गवपान को विशेष रूप से समझा जाना चाहिए
कुछ चावल के दानों के साथ तैयार किया गया पका हुआ भोजन
गर्म शहद, पिसी हुई चीनी और घी को दूध में मिला दिया जाता है।
यह विशाल बर्तनों में पककर ठोस हो गया।
दूध से भरे हुए और ओवन पर लगे हुए। हालाँकि, मानव-

वे प्राणी स्वयं से आतिथ्य सत्कार प्रदान करने में सक्षम नहीं थे।
वे बारी-बारी से दिव्य प्राणियों के साथ मिलकर सेवा करते थे।
बारह-तेरह योजन का विशाल क्षेत्र भी पर्याप्त नहीं था।
सभी भिक्षुओं को समायोजित करने में सक्षम। हालाँकि, वे भिक्षु,
अपनी शक्ति के बल पर उन्होंने अपनी सीटें ग्रहण कीं। अंत में और
लेकिन अंतिम दिन, उसके पास सभी भिक्षुओं के भिक्षापात्र थे।
उन्हें अच्छी तरह धोकर घी से औषधीय प्रयोजन के लिए भर दिया गया।
ताजा मक्खन, तेल, शहद और गुड़ मिलाकर एक साथ परोसा।
तीन वस्त्रों के सेट के साथ। प्राप्त वस्त्रों में शामिल हैं...
नवदीक्षित भिक्षुओं की कीमत एक लाख थी।
1.55. गुरु ने धन्यवाद व्यक्त करते हुए जाँच की:
इस व्यक्ति ने इतना बड़ा दान दिया; भला कौन ऐसा करेगा?
क्या वह होगा?" और पता चला: "काफी समय बाद, भविष्य में, सौ
हजारों युगों (कप्पा) के अतिरिक्त दो असंख्य समूहों के अलावा
युगों (कप्पा) बाद, उनका नाम बुद्ध, गौतम होगा।
गुरु ने उस महान व्यक्ति को बुलाया और इस प्रकार भविष्यवाणी की: "तुम
जब एक निश्चित अवधि बीत जाएगी, तब वह व्यक्ति बुद्ध, गौतम नाम से जाना जाएगा।
समय बीत चुका था।" जब उस महान व्यक्ति ने भविष्यवाणी सुनी,
उन्होंने इस प्रकार सोचा: "मुझे बताया गया है कि मैं बुद्ध बनूंगा। यह क्या है?"
गृहस्थ जीवन के उपयोग को मैं त्याग दूंगा और बन जाऊंगा।
एक संन्यासी की तरह। उसने अपनी उपरोक्त सारी समृद्धि को त्याग दिया।
लार का एक गुच्छा, गुरु की उपस्थिति में एकांतवासी बन गया।
हमने बुद्ध के वचन ग्रहण किए, और हमारे समान ही अतिज्ञान प्राप्त किया।
झाना में और अपने जीवनकाल के अंत में उनका पुनर्जन्म हुआ।
ब्रह्मा जगत।
1.56. महिमावान बुद्ध मंगल का नगर,
हालाँकि, उत्तरा के नाम से जाना जाता था। उनके पिता का नाम उत्तरा था
यह नाम योद्धा (खत्तिया) वंश का भी है। उनकी माता थीं।
रानी उत्तरा नाम से भी. सुदेव और धम्मसेना उनके थे
उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनके सेवक का नाम पालिता था।
सियावली और अशोक उनकी प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। उनके वृक्ष का
ज्ञानोदय (बोधि) नाग वृक्ष के समान था। उसका शरीर
उसकी लंबाई अस्सी-आठ क्यूबिट थी। वह नब्बे हजार वर्ष तक जीवित रहा।
जब वे पूर्ण निर्वाण में देहांत हुए, तो दस
हजारों विश्व चक्र सर्वसम्मति से अंधकार के एक समूह में तब्दील हो गए।
एक ही क्षण में। समस्त ब्रह्मांडों में रोना और विलाप करना शुरू हो गया।
मानव जाति का।
कोंडाना के बाद, नेता, मंगाला,
नाम से ही, उसने दुनिया से अंधकार को दूर किया और
धर्म की मशाल को बुलंद रखा।
1.57. सुमना नाम के स्वामी ने संसार में उदय किया।
उसके पूर्ण रूप से निर्वाण प्राप्त कर लेने के बाद

इस प्रकार दस हजार संसारों को अंधकारमय करने के बाद, महिमावान बुद्ध ने
तत्व। उनके शिष्यों की सभा में भी तीन सदस्य थे।
पहली विधानसभा में एक लाख करोड़ रुपये थे।
भिक्षुओं। स्वर्ण पर्वत पर दूसरी सभा में
नब्बे हजार करोड़ थे। तीसरे में अस्सी थे।
हजार करोड़। उस समय, वह महान प्राणी एक राजा था।
नागराज (ड्रैगन), जिनमें उच्च जादुई शक्ति और महान सामर्थ्य होती है।
अतुला नाम से। उस ड्रैगन के राजा ने उसके प्रकट होने के बारे में सुना।
बुद्ध अपने अजगरों के महल से बाहर निकले, जो उनके चारों ओर घिरा हुआ था।
रिश्तेदारों की संगति में, बड़ी दान-पुण्य की पेशकश की, साथ में
दिव्य संगीत द्वारा, प्रत्येक ने वस्त्रों की एक जोड़ी भेंट की।
वह तेजस्वी बुद्ध और उनके एक लाख अनुयायियों का दल
करोड़ों भिक्षुओं का भंडाफोड़ किया और त्रिरत्न में स्वयं को स्थापित किया।
शरणस्थल। उस गुरु ने उससे यह भविष्यवाणी भी की: "तुम
आने वाले समय में बुद्ध बनो। उस गौरवशाली शहर का
बुद्ध का नाम मेखला था। उनके पिता का नाम राजा सुदत्त था।
नाम। उनकी माता का नाम सिरिमा था। सरवा और भावितत्ता
उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उदेना उनका सेवक था।
सोना और उपासना उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। उनके बोधि
वह वृक्ष नागरुक्ख वृक्ष था। उसका शरीर नब्बे वर्ष का था।
उसकी ऊंचाई क्यूबिट में थी। उसका जीवनकाल नब्बे हजार वर्ष था।
मंगला के बाद नेता का आगमन हुआ।
सुमना, समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ,
धर्म के सभी रूपों में अद्वितीय।
1.58. उनके बगल में, गुरु रेवता उठे,
नाम से। उनके शिष्यों की सभाएँ भी तीन थीं।
पहली सभा में संख्या अकल्पनीय थी। दूसरी सभा में संख्या का अनुमान लगाना असंभव था।
वहाँ एक लाख करोड़ भिक्षु थे। संख्या में लगभग समान-
वह तीसरा व्यक्ति था। उस समय, बोधिसत्व ब्राह्मण बन गया।
अतिदेव नाम से। उनके द्वारा दिए गए धम्म उपदेश को सुनकर।
गुरु ने त्रिरत्न शरणस्थलों में अपनी पहचान स्थापित कर ली।
अपने हाथों को सिर पर रखकर, उसने बुद्ध की वाणी सुनी।
उन्होंने दुराचार (किलेसा) के त्याग की प्रशंसा की और उनका सम्मान किया।
अपने ऊपरी वस्त्र के साथ। बुद्ध ने उनसे यह भविष्यवाणी भी की थी कि
वह बुद्ध बनेंगे। उस गौरवशाली बुद्ध का नगर था।
सुधञ्जवती के नाम से जानी जाती थीं। उनके पिता का नाम विपुल था।
योद्धा वंश (खत्तिया)। उनकी माता का नाम विपुल था। वरुण
और ब्रह्मदेव उनके दो प्रमुख शिष्य थे। संभव उनके शिष्यों में से एक थे।
उनके सेवकों के नाम। भद्दा और सुभद्दा उनके दो सेवक थे।
प्रमुख महिला शिष्याएँ। उनका बोधि वृक्ष लौह-लकड़ी का वृक्ष था।
(नागरुक्ख)। उनका जीवनकाल साठ हजार वर्ष था।
सुमाना के बाद अगला नेता रेवता था।

वह एक उत्कृष्ट विजेता था, अतुलनीय, अद्वितीय और
अद्वितीय।
1.59. उनके बाद, गुरु उठे, जिनका नाम
शोभिता था। उनके शिष्यों की सभाएँ भी तीन थीं
पहली विधानसभा में सौ करोड़ लोग थे।
दूसरे, नब्बे करोड़ थे। तीसरे में थे।
अस्सी करोड़। उस समय बोधिसत्व ब्राह्मण बन गए।
उसका नाम अजित्रा था। उसने गुरु का धार्मिक प्रवचन सुना।
उन्होंने शरणार्थी शिविरों में अपना ठिकाना बनाया और वहां बहुत दान दिया।
बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं का संगठन। वह बुद्ध भी
भविष्यवाणी की गई थी कि वह बुद्ध बनेंगे। उस शहर का
महान बुद्ध सुधम्म के नाम से जाने जाते थे। उनके पिता राजा थे।
उनका नाम सुधम्मा था। उनकी माता का नाम भी रानी सुधम्मा था।
असामा और सुनेट्टा उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनका नाम अनोमा था।
उनकी सेविका नकुला और सुजाता उनकी दो सेविकाएँ थीं।
प्रमुख महिला शिष्याएँ। नागरुक्ख वृक्ष उनका था।
बोधि। उनके शरीर की लंबाई अट्ठावन क्यूबिट थी। उनका शरीर इतना लंबा था।
जीवन की अवधि नब्बे हजार वर्ष थी।
रेवता के बाद, अगला नेता उभरा जिसका नाम था
शोभिता। वह शांत मन वाला था, आत्म-
दृढ़ संकल्प। वह अद्वितीय था, उसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं था।
उनके लिए।

बुद्ध: (7) अनोमदस्सी, (8) पद्म और (9) नारद
1.60. इसके बाद बुद्ध, जब एक लंबी अवधि बीत गई
असंख्य युग बीत जाने के बाद, एक ही क्षण में प्रकट हुआ।
कप्पा, तीन बुद्ध: अनोमदस्सी पद्म और नारद। तीन
महान बुद्ध के लिए शिष्यों की सभाएँ अस्तित्व में थीं।
अनोमादस्सी: पहली सभा में आठ सौ लोग थे
हजार भिक्षु थे। दूसरे में सात थे और तीसरे में भी सात थे।
तीसरा छठा। उस समय बोधिसत्व एक राक्षस सेना बन गया।
वह सेनापति जादुई शक्तियों से परिपूर्ण और अत्यंत शक्तिशाली था।
वह असंख्य हजारों-करोड़ों लोगों का सर्वोच्च मुखिया था।
राक्षस। उस राक्षस सेनापति ने सुना कि बुद्ध का उदय हुआ है, वह आया।
और उन्होंने भिक्षुओं के संघ को बहुत बड़ा दान दिया।
बुद्ध द्वारा। बुद्ध ने यह भी भविष्यवाणी की थी कि वह बनेंगे
आने वाले समय में बुद्ध। गौरवशाली बुद्ध का नगर।
अनोमादस्सी, जिनका नाम चंदवती था। राजा ने उनका नाम रखा।
यशवा उनके पिता थे। यशोधरा नाम की रानी उनकी पुत्री थीं।
माता। निसाभा और अनोमा उनके दो प्रमुख शिष्य थे।
उनकी सेवा में उपस्थित सेवक का नाम वरुण था। सुंदरी
और सुमना उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। वृक्ष

पंचपश्चावृक्ष अर्जुन उनका बोधि वृक्ष था। उनका शरीर अट्ठावन वर्ष का था।
उसकी लंबाई एक हाथ थी। उसका जीवनकाल एक लाख वर्ष था।
सर्वज्ञानी बुद्ध का अगला भाग, सबसे उत्कृष्ट
पुरुषों में, शोभिता के बाद, अनोमदस्सी का स्थान था।
अतुलनीय प्रतिष्ठा, शक्तिशाली और कठिन
उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए।
1.61. उनके बाद, पद्मा नाम के गुरु,
उठे। उनके शिष्यों की सभाएँ भी तीन थीं
पहली विधानसभा में एक लाख करोड़ रुपये थे।
दूसरे में तीन लाख भिक्षु थे।
तीसरे में दो लाख भिक्षु थे, जो
वे गांवों में अच्छी तरह से नहीं रह पाते थे, बल्कि जंगलों में ही रहते थे।
घने जंगलों में। उस समय बोधिसत्व एक शेर थे। उनका मन
जब उसने गुरु को आनंदित होते देखा तो वह आस्था से भर गया।
स्वयं द्वारा पूर्णतः अमर शांति (निरोधसमापत्ति) की प्राप्ति
उन्होंने उन्हें नमन किया, उनकी परिक्रमा की, उत्साह से भर गए।
मानसिक आनंद से परिपूर्ण होकर, उसने तीन बार शेर की दहाड़ मारी।
उसने सात दिनों तक अपना उत्साह नहीं छोड़ा, पीछे नहीं हटा।
अपने शिकार के दौरान, उन्होंने अपने जीवन का पूर्ण बलिदान दिया और
वे तेजस्वी बुद्ध की सेवा में खड़े थे। गुरु,
सात दिनों की समाप्ति पर उन्होंने अमरता के अपने आनंद से उठ खड़े हुए।
निरोध ने सिंह को देखकर मन ही मन विचार किया:
"यह सभा में उपस्थित लोगों की मानसिक आस्था को जगाएगा।"
भिक्षुओं की भी पूजा हो और पुरोहितों का भी आदर हो; भीड़ को भी शामिल होने दो
भिक्षु इधर आओ।" तभी तुरंत सभी भिक्षु
आया। शेर ने भी उसके मन को आस्था से भर दिया।
भिक्षुओं का समूह। गुरु ने उसमें देखा।
मन में यह बात आई और भविष्यवाणी की: "यह भविष्य में बुद्ध बनेगा।"
गौरवशाली बुद्ध पद्म का नगर चंपक था।
नाम से। असामा नाम का राजा उसका पिता था। रानी
उनकी माता का नाम असमा था। साला और उपसाला उनके मुखिया थे।
उनके शिष्य। उनकी सेवा करने वाले उनके सेवक का नाम वरुण था।
रामा और सुरामा उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। सोना
वह वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। उनका शरीर अट्ठावन हाथ लंबा था।
उनकी ऊँचाई। उनका जीवनकाल एक लाख वर्ष लंबा था।
सर्वज्ञानी बुद्ध का अगला भाग, सबसे उत्कृष्ट
पुरुषों में, अनोमादस्सी के बाद पद्मा नाम का एक व्यक्ति था।
अद्वितीय व्यक्तित्व, जिसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं।
1.62. उनके बाद नारद नामक गुरु उठे।
उनकी सभाएँ भी तीन थीं। पहली सभा में
वहाँ एक लाख करोड़ भिक्षु थे। नब्बे
दूसरे में हजार करोड़ और अस्सी हजार करोड़ थे।

तीसरे चरण में, उस समय बोधिसत्व ने संसार का त्याग कर दिया।
एकांतवासी बन गया, और अभ्यास में पारंगत हो गया।
आठ प्रकार के ध्यान और पाँच प्रकार के अलौकिक-
ज्ञान। उसने मंडली को एक बड़ा दान दिया।
बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं को लाल चंदन देकर सम्मानित किया गया।
लकड़ी। उस गुरु ने उससे यह भविष्यवाणी भी की थी कि वह बन जाएगा
भविष्य में बुद्ध। उस महिमावान बुद्ध का नगर धन्ञ्वती था।
नाम से। उनके पिता सुदेव, क्षत्रिय वंश के थे।
नाम। अनोमा नाम की रानी उनकी माता थीं। भद्दसाला और
जितामित्त उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनके सेवक उनके
सेवा का नाम वासेत्थ्ठा था। उत्तरा और फाग्गुनी उनकी दो सेवकाइयाँ थीं।
प्रमुख महिला शिष्याएँ। महान सोना वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। उनका
नब्बे हज़ार वर्ष।
"सर्वज्ञ बुद्ध, जो सबसे श्रेष्ठ हैं
पद्म के बाद, पुरुषों में सबसे श्रेष्ठ, नारद नाम के थे, अद्वितीय
और प्रतिद्वंद्वी कम।"

(10) बुद्ध पद्ममुत्तरा
1.63. बुद्ध नारद के निधन के बाद,
एक लाख कप्पाओं की समाप्ति पर, एक ही उत्पन्न हुआ
बुद्ध केवल पद्ममुत्तरा नाम से एक विशेष कप्पा में हैं।
उस बुद्ध के शिष्यों की तीन सभाएँ भी थीं।
पहली विधानसभा में एक लाख करोड़ लोग थे।
भिक्षुओं। वेभारा पहाड़ी पर दूसरी सभा में, वहाँ
तीसरे में नब्बे हजार करोड़ और अस्सी हजार करोड़ थे।
करोड़ों। उस समय बोधिसत्व एक महान नागरिक बन गए।
धनवान व्यक्ति, जातिला नामक व्यक्ति, जिसने वस्त्रों सहित दान दिया।
बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं का समूह। वह गुरु भी
उन्हें भविष्यवाणी की गई थी कि वे भविष्य में बुद्ध बनेंगे।
लेकिन गौरवशाली बुद्ध पद्ममुत्तरा के दिनों में,
वे, अर्थात्, विधर्मी नहीं थे। सभी दिव्य और मनुष्य चले गए।
वे केवल बुद्ध की शरण में जाते थे। उनका नगर हंसवती था।
नाम। उनके पिता एक योद्धा वंश (खत्तिया) के राजा थे।
आनंद। उनकी माता सुजाता नामक रानी थीं। देवला और
सुजाता उनके दो प्रमुख शिष्य थे। सुमना उनका नाम था।
उनकी सेवा में तत्पर रहने वाली परिचारिकाएँ। अमिता और असमा उनकी दो परिचारिकाएँ थीं।
प्रमुख महिला शिष्याएँ। साल का वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। उनका शरीर
उसकी लंबाई अट्ठावन क्यूबिट थी। उसके शरीर की किरणें फैल गईं।
चारों ओर बारह योजन की सीमा तक। उसका विस्तार
जीवन की अवधि दस हजार वर्ष थी।
सर्वज्ञ बुद्ध नारद के पदचिह्नों पर चलते हुए,
पद्ममुत्तरा नाम का एक अत्यंत उत्कृष्ट व्यक्ति बन गया।

विजेता, सागर के समान, अविचलित।

(11)बुद्ध सुमेधा
1.64. उनके निधन के बाद,
तीस हजार युगों (कप्पा) की समाप्ति पर, एक ही युग में उत्पन्न हुआ
(कप्पा) दो बुद्ध: सुमेधा और सुजाता। तीन थे
सुमेधा के लिए भी शिष्यों की सभाएँ आयोजित की गईं। पहली सभा में,
वहाँ सौ करोड़ अरहत थे, जो रोगों (आसव) से मुक्त थे।
सुदस्साना शहर में। दूसरे में नब्बे थे।
करोड़ों में से तीसरे में अस्सी करोड़। उस समय बोधिसत्व
उत्तरा नाम का एक युवक था, जिसने अपनी अस्सी साल की संपत्ति खर्च कर दी थी।
उन्होंने अपने दबे हुए खजाने में से करोड़ों रुपये दान में दिए।
बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं की सभा में उपस्थित होकर उन्होंने सुना...
धम्म का अनुसरण करते हुए, उन्होंने शरणस्थलों में शरण ली और धर्म का त्याग कर दिया।
संसार में जाकर वे संन्यासी बन गए। बुद्ध ने भी यही भविष्यवाणी की थी कि
वह भविष्य में बुद्ध बनेंगे। गौरवशाली नगर
बुद्ध सुमेधा का मूल नाम सुदस्सन था। राजा का नाम सुदत्त था।
उनके पिता थे। रानी सुदत्ता उनकी माता भी थीं।
सरणा और सब्बकामा उनके दो प्रमुख शिष्य थे। सागर उनके शिष्य थे।
उनकी सेवा में। राम और सुरमा उनकी दो प्रमुख महिलाएँ थीं।
शिष्य। नीपा किस्म का वृक्ष (या अशोक वृक्ष की प्रजाति)।
उनका बोधि वृक्ष था। उनके शरीर की ऊंचाई अस्सी आठ क्यूबिट थी।
उनका जीवनकाल नब्बे हजार वर्ष था।
पदुमुत्तरा के बाद, सुमेधा नेता थे।
शक्तिशाली ऋषि पर हमला करना कठिन था।
शक्ति, जो सभी मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ है।

(12)बुद्ध सुजाता
1.65. उनके पीछे, सुजाता नाम के गुरु उठे।
उनके शिष्यों की सभाएँ भी तीन थीं
पहली सभा में साठ लाख भिक्षु थे।
दूसरे में पचास थे और तीसरे में चालीस। उस समय
उस समय बोधिसत्व एक सार्वभौमिक सम्राट बन गए, जिन्होंने सुनकर
बुद्ध उठे, उनके पास गए और धर्म को सुना।
उन्होंने चार महान द्वीपों पर अपनी संप्रभुता दान में दे दी।
अपने सात प्रकार के शाही रत्नजड़ित वस्त्रों के साथ
बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के एक समूह में शामिल हुए और एकांतवासी बन गए।
प्रभु की उपस्थिति। उनके राज्य के सभी निवासी
उन्होंने अपने देश के उत्पादों को ग्रहण किया और बड़ी भेंटें दीं।
बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं की सभा के प्रति सर्वकालिक समर्पित।

संपूर्ण मठवासी व्यवस्था के कर्तव्यों का निर्वहन करना।
उस गुरु ने उन्हें यह भविष्यवाणी भी की थी कि वे बुद्ध बनेंगे।
भविष्य में। सुमंगला उस महान बुद्ध का नाम था।
शहर। उनके पिता का नाम उगाता था, जो राजा थे। उनकी माता थीं।
नाम से पभावती. सुदासन और सुदेव उनके दो प्रमुख थे
शिष्य। नारद उनकी सेवा में उपस्थित थे। नाग और
नागसमाला उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। महान
बांस का वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। ऐसा कहा जाता है कि वे प्रकाशमान हुए।
जैसे किसी कोमल त्वचा पर मोर की पूंछ के पंखों का गुच्छा लिपटा हो।
पेड़ का छिद्रयुक्त ठोस तना, जिसकी बड़ी-बड़ी शाखाएँ बाहर की ओर फैली हुई हैं
वहाँ से। उस तेजस्वी बुद्ध का शरीर पचास क्यूबिट का था।
उनकी लंबाई नब्बे हजार वर्ष थी।
उसी मंडकप्पा में, जो नेता हैं,
सुजाता नामक एक व्यक्ति का जबड़ा शेर जैसा और शरीर बैल जैसा था।
उसे हराना मुश्किल था, क्योंकि उसका कोई मुकाबला नहीं था।

(13) पियादस्सी, (14) अत्थादस्सी और (15) धम्मदस्सी बुद्ध
1.66. उनकी मृत्यु के बाद, अठारह सौ
युगों (कप्पा) बाद, एक ही युग (कप्पा) में तीन बुद्धों का जन्म हुआ:
पियादस्सी, अट्ठदस्सी और धम्मदस्सी। वहाँ तीन सभाएँ थीं
शिष्यों में से एक, गौरवशाली बुद्ध पियादस्सी के लिए भी। पहले में
वहां एक लाख करोड़ भिक्षुओं की सभा थी।
दूसरे में नब्बे करोड़ और तीसरे में अस्सी करोड़ थे।
उस समय बोधिसत्व कासपा नाम का एक युवक था।
तीनों वेदों में पूर्णतः पारंगत, जिन्होंने सुना
गुरु के धार्मिक प्रवचन के आधार पर एक मठ का निर्माण किया गया।
पादरी वर्ग ने अपनी एक लाख की संपत्ति का पूरी तरह से त्याग कर दिया।
करोड़ों रुपये कमाकर उसने शरणस्थलों और उपदेशों में स्वयं को स्थापित किया।
तब गुरु ने उससे भविष्यवाणी की कि वह बन जाएगा
अठारह सौ युगों (कप्पा) की समाप्ति पर बुद्ध। शहर
उस महान बुद्ध का नाम अनोमा था। राजा का नाम
उनके पिता सुदिन्ना थे। उनकी माता का नाम चंदा था। पालिता
और सब्दस्सी उनके दो प्रमुख शिष्य थे। शोभिता उनके शिष्यों में से एक थे।
उनके सेवकों के नाम: सुजाता और धम्मदिन्ना
उनकी प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। काकुधा वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था।
वृक्ष। उसका शरीर अस्सी क्यूबिट लंबा था। उसका जीवनकाल
यह नब्बे हजार वर्ष था।
सुजाता के बाद, महान पियादस्सी का उदय हुआ।
प्रतिष्ठा, दुनिया का नेता, जो बन गया
स्वयं से प्रबुद्ध, अद्वितीय और अतुलनीय,
जिसे हराना मुश्किल था।

1.67. उनकी मृत्यु के बाद, यह उत्पन्न हुआ
अत्थादस्सी नामक महिमावान बुद्ध। तीन सभाएँ थीं।
उनके शिष्यों की संख्या भी थी। पहले समूह में नब्बे शिष्य थे।
दूसरे में आठ लाख भिक्षु थे।
तीसरे भाग में भी उतनी ही संख्या में अस्सी सौ सौ हजार हैं।
उस समय बोधिसत्व ने सुसीमा नामक एक संन्यासी का पद ग्रहण किया।
महान जादुई शक्तियाँ। वह दिव्य शक्तियों से युक्त एक छत्र लेकर आया था।
देवलोक से मूंगा वृक्ष के फूल लाए और उसे अर्पित किया।
गुरु के लिए। बुद्ध ने यह भी भविष्यवाणी की थी कि वह बन जाएगा
भविष्य में बुद्ध। उस महिमावान बुद्ध का नगर शोभना था।
नाम से। उनके पिता राजा सागर थे। उनकी माता
उनका नाम सुदस्सना था। उनके दो प्रमुख गुरुओं में से एक संता और उपासन्त थे।
शिष्य। अभय उनके सेवक का नाम था।
धम्मा और सुधम्मा उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। चंपक
वह वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। उनके शरीर की ऊंचाई अस्सी क्यूबिट थी।
उनकी शारीरिक किरणें हर समय उनके चारों ओर व्याप्त थीं।
एक लीग (योजना) के बराबर। उनका जीवनकाल सौ वर्ष था।
हजार वर्ष।
उसी मंड कप्पा में, मनुष्यों में बैल,
अत्थादस्सी ने घोर अंधकार को दूर करके,
उन्होंने सर्वोच्च आत्मज्ञान प्राप्त किया।
और बुद्ध बन गए।
1.68. उनके बाद, बाद में, धम्मदस्सी नामक गुरु
प्रकट हुए। उनके लिए भी शिष्यों की तीन सभाएँ थीं
पहले में सौ करोड़ भिक्षु थे।
दूसरे में नब्बे करोड़ और तीसरे में अस्सी करोड़ थे।
उस समय, बोधिसत्व सक्का थे, जो देवताओं के राजा थे, जिन्होंने यह कार्य किया।
बुद्ध को दिव्य सुगंधों से सम्मानित करते हुए उन्हें अर्पित की जाने वाली भेंटें और
फूलों के साथ-साथ दिव्य संगीत भी। वह गुरु भी
उन्हें भविष्यवाणी की गई थी कि वे भविष्य में बुद्ध बनेंगे।
उस महान बुद्ध का नगर सरणा था, राजा का नाम भी सरणा ही था।
सरणा नामक व्यक्ति उनके पिता थे। रानी का नाम सुनंदा था।
उनकी माता, पद्मा और फुस्सादेव उनके दो प्रमुख शिष्य थे।
सुनेट्टा उनके सेवक का नाम था। खेमा और
सुब्बनामा उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। लाल अंकुरण वाली,
रत्नकुरा वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। इसे लाल वृक्ष भी कहा जाता था।
अमरंथ का वृक्ष (बिम्बिजाला)। उसका शरीर अस्सी हाथ लंबा था।
उनकी ऊँचाई एक लाख वर्षों की थी।
जीवन का।
"उसी मंडकप्पा में, महान प्रतिष्ठा वाले धम्मदस्सी
ने चकाचौंध भरे अंधकार को दूर करते हुए,
दुनिया के साथ-साथ दुनिया में चमक उठा

देव।"

(16)बुद्ध सिद्धार्थ
1.69. उनके बाद, उसके बाद
चौरानवे युगों (कप्पा) में, एक ही कप्पा में उत्पन्न हुआ, एक
एकमात्र सर्वज्ञ बुद्ध, जिनका नाम सिद्धार्थ है।
उनके लिए शिष्यों की तीन सभाएँ भी आयोजित की गईं। पहली सभा में
सभा में सौ करोड़ भिक्षु थे।
दूसरे में नब्बे करोड़ और तीसरे में अस्सी करोड़ थे।
उस समय, बोधिसत्व मंगला नामक एक संन्यासी बन गए।
जिसके पास अपार शक्ति थी और जो अलौकिक सामर्थ्य से संपन्न था।
ज्ञान। वह महान यूजेनिया (जाम्बू) फल लाया और
वही फल तथागत को अर्पित किया गया। गुरु ने उस फल का आनंद लिया।
और भविष्यवाणी की कि संन्यासी अपनी मृत्यु के दिन बुद्ध बन जाएगा।
चौरानवे युगों (कप्पा) का। उस गौरवशाली बुद्ध का नगर।
उनका नाम वेभारा था। उनके पिता का नाम जयसेना था।
सुफस्सा नाम की रानी उनकी माता थीं। सांबला और सुमित्ता
उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनके सेवक थे।
रेवता, सिवैया और सुरमा उनकी दो प्रमुख महिलाएँ थीं।
शिष्य। पटेरोस्पर्मम एसरीफोलियम (कणिकारा) वृक्ष था।
उनकी बोधि। उनके शरीर की ऊंचाई साठ क्यूबिट थी। एक अवधि
उनका जीवनकाल एक लाख वर्ष था।
धम्मदस्सी के बाद, यह विचार उत्पन्न हुआ कि...
विश्व नेता सिद्धार्थ, समस्त अंधकार को दूर करते हुए
जैसे सूर्य बादलों से निकलता है।"

बुद्ध: (17)तिस्सा और (18)फुस्सा
1.70. बाद में, उनकी मृत्यु के बाद, उनकी मृत्यु की अवधि समाप्त होने पर, तब से,
बानवे युगों (कप्पा) में, दो बुद्धों का उदय हुआ: तिस्सा और
फुस्सा, एक ही कल्प (कप्पा) में। गौरवशाली बुद्ध तिस्सा के पास थे
शिष्यों की तीन सभाएँ। भिक्षुओं की पहली सभा में,
दूसरे में सौ करोड़ थे। दूसरे में नब्बे करोड़ थे।
करोड़ों में से तीसरे में अस्सी करोड़। उस समय, बोधिसत्व
वह योद्धा (खत्तिया) वंश का राजा बन गया, जो अत्यंत धनी था और
सुजाता नाम से प्रसिद्ध उस राजा ने अपनी प्रतिष्ठा का त्याग कर दिया।
संसार में प्रवेश किया और तपस्वी बन गए। जब उन्होंने शिखर प्राप्त किया
उसने महान जादुई शक्तियों के बारे में सुना, और उसे बुद्ध के प्रकट होने की सूचना मिली।
अपने साथ दिव्य मूंगा फूल, कमल और लिली लेकर,
उन्होंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया, जो उस समय लोगों के बीच घूम रहे थे।
सभाओं की चार श्रेणियाँ। उन्होंने बुद्ध के लिए एक प्रवाह बनाया-
आकाश में उसकी छत। उस गुरु ने उससे यह भविष्यवाणी भी की थी कि

वह बानवे युगों (कप्पा) की समाप्ति पर बुद्ध बनेंगे।
वहाँ से, उस महान बुद्ध के नगर को खेमा के नाम से जाना जाता था।
क्षत्रिय वंश के राजा जनासंध उनके वतन थे।
पिता। पद्मा नामक रानी उनकी माता थीं। ब्रह्मादेव
उदय और उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनके सेवक
उनकी सेवा का नाम सुमना था। फुस्सा और सुदत्ता उनकी दो शिष्याएँ थीं।
प्रमुख महिला शिष्याएँ। वृक्ष पेंटाप्टेरा टोमेंटोसा (आसन)
उनका बोधि वृक्ष था। उनके शरीर की ऊँचाई साठ क्यूबिट थी। एक कालखंड
उनका जीवनकाल एक लाख वर्ष का था।
"सिद्धार्थ के बाद, यह उत्पन्न हुआ कि..."
विश्व के नेता, अद्वितीय तिस्सा, जो
उसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं था, जिसकी प्रतिष्ठा अतुलनीय थी।
और जिसकी शक्ति असीमित थी।
1.71. उनके बाद, गुरु फुस्सा,
नाम से प्रकट हुए। उनके शिष्यों की तीन सभाएँ भी थीं।
पहली सभा में साठ लाख भिक्षु थे, दूसरी में पचास और तीसरी में बत्तीस थे।
उस समय बोधिसत्व योद्धाओं के राजा (क्षत्रिय) थे।
विजितावी नामक वर्ग के व्यक्ति, जिन्होंने अपनी महान संप्रभुता का त्याग कर दिया,
उन्होंने गुरु की उपस्थिति में भिक्षु दीक्षा ली, तीनों पिटकों का ज्ञान प्राप्त किया और जनसमूह को धम्म का उपदेश दिया। उन्होंने उपदेशों में भी पूर्णता प्राप्त की। बुद्ध ने उनके बारे में भविष्यवाणी भी की थी कि वे
बुद्ध बने। उस तेजस्वी बुद्ध का नगर काशी कहलाता था। उनके पिता का नाम जयसेना था। उनकी माता का नाम सिरिमा था। सुरक्षित और धम्मसेना उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनके सेवक का नाम सत्या था। चाला और उपाचाला उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। आंवला (आमलक) वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। उनका शरीर अट्ठावन हाथ लंबा था। उनका जीवनकाल नब्बे हजार वर्ष था।
उसी मंडकप्पा में, उत्पन्न हुआ
अतुलनीय गुरु, फुस्सा, नेता
विश्व में, जो अद्वितीय था, जिसके जैसा कोई दूसरा नहीं था
उनके समतुल्य के रूप में।

(19) विपस्सी बुद्ध

1.72 उनके निधन के बाद, इक्यावन युग (कप्पा) बाद, विपस्सी नामक तेजस्वी बुद्ध का उदय हुआ। उनके शिष्यों की तीन सभाएँ हुईं। पहली सभा में अड़सठ लाख भिक्षु थे। दूसरी में एक लाख और तीसरी में अस्सी हजार। उस समय, अतुल नामक नागराज का एक राजा हुआ, जो अत्यंत शक्तिशाली और महान था। उस राजा ने तेजस्वी बुद्ध को सोने से बना और सात प्रकार के रत्नों से जड़ा एक उत्तम सिंहासन दान में दिया। बुद्ध ने उन्हें भविष्यवाणी भी की कि वे इक्यावन युग (कप्पा) बाद बुद्ध बनेंगे। उस तेजस्वी बुद्ध का नगर बंधुमती था। उनके पिता का नाम बंधुमा था। उनकी माता का नाम बंधुमती था। *********** ************** ****************** (पृष्ठ 76)। उनके सेवक का नाम अशोक था। चंदा और चंदमित्ता उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। पातलि का वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। उनका शरीर अस्सी हाथ लंबा था। उनके शरीर की किरणें सात योजन के क्षेत्र में निरंतर व्याप्त रहती थीं। उनका जीवनकाल अस्सी हजार वर्ष था।
"फुस्सा के बाद, सर्वज्ञ बुद्ध
विपस्सी नाम के व्यक्ति, जो सबसे उत्कृष्ट थे
पुरुषों में से, जिनके पास आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि थी
दुनिया में उत्पन्न हुआ।
(20) सिख और (21) वेस्सभू बुद्ध

1.73. उनके बाद, इकत्तीस युगों (कप्पा) के बाद, दो बुद्ध हुए: सिखी और वेस्साभू। सिखी बुद्ध के भी तीन शिष्यों की सभाएँ हुईं। पहली सभा में एक लाख भिक्षु थे। दूसरी में अस्सी हजार और तीसरी में सत्तर हजार। उस समय, अरिंदमा नाम के बोधिसत्व राजा बने, जिन्होंने बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं की सभा को वस्त्रों का दान सहित एक महान दान-पुण्य किया। सात प्रकार के रत्नों से सजे अपने राजसी हाथी को दान करते हुए, उन्होंने भिक्षुओं के लिए अनुमत बर्तनों का भार भी दान कर दिया। उस बुद्ध ने उन्हें यह भविष्यवाणी भी की कि वे इकत्तीस युगों (कप्पा) के अंत में बुद्ध बनेंगे। उस तेजस्वी बुद्ध का नगर अरुणावती था। उनके पिता क्षत्रिय वर्ग के राजा अरुण थे। उनकी माता का नाम पभावती था। अभिभू और साम्भव उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनके सेवक का नाम खेमांकर था। सखिला और पद्मा उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। पुन्द्रिका वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। उनका शरीर सत्तर हाथ लंबा था। उनके शरीर की किरणें तीन योजन (लीग) के क्षेत्र में फैली हुई थीं। उनका जीवनकाल सत्तर हजार वर्ष था।

सर्वज्ञ बुद्ध विपस्सी के बाद,
मनुष्यों में सर्वश्रेष्ठ, विजेता,
सिख धर्म कहलाने वाला व्यक्ति उदय हुआ। वह अद्वितीय था और उसके पास
कोई प्रतिद्वंदी नहीं।"

1.74. उनके निधन के बाद, वेस्साभू नामक गुरु का उदय हुआ। उनके शिष्यों की तीन सभाएँ हुईं। पहली सभा में अस्सी हजार भिक्षु थे, दूसरी में सत्तर और तीसरी में साठ। उस समय, बोधिसत्व सुदस्सन नामक राजा थे, जिन्होंने बुद्ध के नेतृत्व में पुरोहितों के समूह को वस्त्र सहित बहुत दान दिया। राजा उनकी उपस्थिति में संन्यासी बन गए और अच्छे आचरण के गुण से संपन्न होकर बुद्ध-रत्न में प्रचुर उत्साह से भर गए। बुद्ध ने उन्हें यह भविष्यवाणी भी की कि वे इकत्तीस युगों (कप्पा) बाद बुद्ध बनेंगे। उस तेजस्वी बुद्ध का नगर अनोमा था। उनके पिता सुप्पतिता नामक राजा थे। उनकी माता यशवती थीं। सोन और उत्तर उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनके सेवक का नाम उपासंत था। राम और सुरमा उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। साल का वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। उनका शरीर साठ हाथ लंबा था। उनका जीवनकाल साठ हजार वर्ष था।

"उसी मांडा कप्पा में, उत्पन्न हुआ
विश्व, वह विजेता, जिसे इस नाम से जाना जाता है
वेस्साभू अद्वितीय थे, उनका कोई प्रतिद्वंदी नहीं था।

बुद्ध: (22) ककुसंध, (23) कोणागमना, (24) कस्सपा

1.75. उनके बाद, इस युग (कप्पा) में, चार बुद्ध उत्पन्न हुए: ककुसंध, कोणागमना, कस्सपा और हमारे महिमावान बुद्ध गौतम। महिमावान बुद्ध ककुसंध के शिष्यों की केवल एक ही सभा थी। उस एक सभा में चालीस हजार भिक्षु थे। उस समय, बोधिसत्व खेमा नामक एक राजा थे, जिन्होंने बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं की सभा को भिक्षापात्र, वस्त्र और नेत्रदंड आदि जैसी औषधियाँ दान कीं। उन्होंने गुरु द्वारा दिए गए धार्मिक प्रवचन को सुना और भिक्षु बन गए। उस गुरु ने उन्हें यह भविष्यवाणी भी की कि वे बुद्ध बनेंगे। महिमावान बुद्ध का नगर खेमा था। उनके पिता अग्गिदत्त नामक ब्राह्मण थे विशाखा नामक ब्राह्मण महिला उनकी माता थीं। विदुर और संजीव उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनके सेवक बुद्धिज थे। सामा और चम्मा उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। बबूल सिरिसा उनका बोधि वृक्ष था। उनका शरीर चालीस हाथ लंबा था। उनका जीवनकाल चालीस हजार वर्ष था।

वेस्साभू के बाद सर्वज्ञता का उदय हुआ।
बुद्ध, मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ, जिन्हें इस नाम से जाना जाता है
काकुसंध का नाम, जो अतुलनीय और कठिन थे।
हार का।

1.76. उनके बाद, गुरु कोणागमना का उदय हुआ। उनकी भी केवल एक ही सभा थी। उनकी उस एक सभा में तीस हजार भिक्षु थे। उस समय, बोधिसत्व पब्बत नामक राजा थे, जो अपने अनेक मंत्रियों से घिरे हुए गुरु के समक्ष गए, धर्म उपदेश सुने, बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं की मंडली को आमंत्रित किया, महान दान किया, भिक्षापात्र, चीनी ऊनी वस्त्र, रेशमी मखमली वस्त्र और स्वर्ण ऊनी वस्त्र दान किए और गुरु के समक्ष संन्यासी बन गए। बुद्ध ने उन्हें यह भविष्यवाणी भी की कि वे बुद्ध बनेंगे। उस तेजस्वी बुद्ध के नगर का नाम शोभवती था। उनके पिता ब्राह्मण य्यञ्ञदत्त थे। उनकी माता ब्राह्मण स्त्री उत्तरा थीं। भैयास और उत्तरा उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनके सेवकों में सोत्थिज नाम का एक व्यक्ति था। समुद्दा और उत्तरा उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। उनका बोधि वृक्ष (उदुंबरा) था। उनका शरीर तीस हाथ लंबा था। उनका जीवनकाल तीस हजार वर्ष था।

सर्वज्ञ बुद्ध काकुसंध के बाद,
पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ, विजेता
कोणागमना नाम से, विश्व में सबसे वृद्ध,
पुरुषों में श्रेष्ठ बैल की तरह, वह उठ खड़ा हुआ।

1.77 उनके बाद, कस्सपा नामक गुरु उठे। उनके शिष्यों की भी केवल एक ही सभा थी। उस सभा में बीस हजार भिक्षु थे। उस समय बोधिसत् ज्योतिपाल नामक एक युवक थे, जो तीनों वेदों में पारंगत थे, पृथ्वी और आकाश दोनों में विख्यात थे और कुम्हार घटिकारा के मित्र थे। उनके साथ वे गुरु के पास गए, धार्मिक प्रवचन सुने, एकांतवासी बन गए, सदा परिश्रमी रहे, तीनों पिटकों का ज्ञान प्राप्त किया और सभी प्रकार के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों में निपुण होकर बुद्ध धर्म का प्रकाश फैलाया। गुरु ने उन्हें यह भविष्यवाणी भी की कि वे बुद्ध बनेंगे। उस तेजस्वी बुद्ध का जन्मस्थान बनारस था। उनके पिता ब्रह्मदत्त नामक ब्राह्मण थे। उनकी माता धनवती नामक ब्राह्मण स्त्री थीं। तिस्सा और भारद्वाज उनके दो प्रमुख शिष्य थे। उनके सेवक सब्बामित्त थे। अनुला और उरुवेला उनकी दो प्रमुख महिला शिष्याएँ थीं। निग्रोध बरगद का वृक्ष उनका बोधि वृक्ष था। उनका शरीर बीस हाथ लंबा था और उनकी आयु बीस हजार वर्ष थी।

सर्वज्ञ बुद्ध कोणागमना के बाद,
पुरुषों में सबसे श्रेष्ठ, जिसे कुल के अनुसार कस्सपा कहा जाता था,
धम्म के राजा, प्रकाश के निर्माता, प्रकट हुए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.1c पूर्णता प्राप्त करना/परमिस
स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

अपदाना भाग - 1.1सी: पारमी-निर्वाण अवस्था में प्रवेश करने की क्षमताएँ प्राप्त करना

पहले उल्लेखित सभी बुद्ध

1.78. हालाँकि, जब दशबल दीपांकर का उदय हुआ, तो उस कल्प में अन्य तीन बुद्ध भी प्रकट हुए। उनकी उपस्थिति में बोधिसत्व के लिए कोई भविष्यवाणी नहीं थी। इसीलिए, उन्हें यहाँ नहीं दिखाया गया है। हालाँकि, अष्टकथा की टीका में, तांहांकर से शुरू होने वाले सभी बुद्धों के बारे में भी यह कथन किया गया था; इस प्रकार:-

"तांहंकरा, मेधांकरा और फिर सरणंकरा
साथ ही सर्वज्ञ बुद्ध दीपांकर, कोण्डञ्ञ,

पुरुषों में सबसे उत्कृष्ट, मंगला और सुमाना, रेवता
और शोभिता, ऋषि, अनोमदस्सी, पद्म, नारद और
पदुमुत्तारा; सुमेधा और सुजाता के साथ-साथ पियादस्सी,
महान प्रतिष्ठा वाले, अत्थादस्सी, धम्मदस्सी और
विश्व के नेता सिद्धार्थ; तिस्सा और
सर्वज्ञ बुद्ध फुस्सा। विपस्सी, सिखी और वेस्साभू;
ककुसंध, कोनागमन और नेता कस्पा भी;
ये सर्वज्ञ बुद्ध थे, जो निर्मल थे।
कामुकता (राग) और सुसंतुलित, जो उठे, जैसे
सौ किरणों का सूर्य, घने को दूर करने वाला
अंधकार। उन्होंने स्वयं को एक समूह की तरह प्रकाशित कर लिया।
वे अपने शिष्यों सहित अग्नि की चपेट में आकर मर गए।
और उन्होंने निर्वाण (अमर आनंद) में प्रवेश किया।

बोधिसत्व द्वारा आठ शर्तों की पूर्ति

1.79. वहाँ, हमारे बोधिसत्व ने दीपांकर से शुरू करते हुए चौबीस बुद्धों की उपस्थिति में अपनी आकांक्षा व्यक्त की और चार असंख्य विश्व चक्रों से भी अधिक एक लाख कल्पों का लंबा समय व्यतीत किया। इस सर्वज्ञ बुद्ध के सिवा कोई अन्य बुद्ध उपस्थित नहीं थे, जो तेजस्वी बुद्ध कश्यप के निकट थे। इस प्रकार, बोधिसत्व ने दीपांकर से शुरू करते हुए चौबीस बुद्धों की उपस्थिति में भविष्यवाणी प्राप्त की। अतः यह कथन है:
उनकी प्रबल आकांक्षा पूरी हुई क्योंकि
आठ शर्तों का संयोजन (धम्म):
(1) मानवता (2) यौन पूर्णता (ब्रह्मचर्य) (3) कारण
परिस्थिति (4) गुरु को देखना (5) भिक्षुत्व
(6) सद्गुण की व्यक्तिगत प्राप्ति (7) आकांक्षा
और (8) इच्छा रखना।"

बोधिसत्व द्वारा दस सिद्धियों/परमिताओं की प्राप्ति

(1)दान परमिता की सिद्धि

इन आठ अवस्थाओं (धम्म) को मिलाकर और बुद्ध दीपांकर के चरणों में तीव्र आकांक्षा के साथ प्रयास करते हुए, उन्होंने कहा: "अब मैं पूर्व बुद्धों द्वारा किए गए कर्मों का अध्ययन करूंगा।" तब उन्होंने पाया कि सर्वप्रथम धर्मपरायणता में पूर्णता थी। इस प्रकार, धर्मपरायणता में पूर्णता से प्रारंभ होने वाले पूर्व बुद्धों द्वारा किए गए कर्मों (धम्म) का पता चला। उन पूर्णताओं को पूर्ण करते हुए बोधिसत्व वेसंतारा राजा (वेसंतारा-जातक) के रूप में अपने जन्म तक पहुंचे। (उस स्थान पर) पहुंचने के बाद भी, वहां तीव्र आकांक्षा रखने वाले बोधिसत्वों के सभी लाभों की प्रशंसा की जानी चाहिए।
इस प्रकार, बोधि द्वारा निर्देशित पुरुष
(ज्ञानोदय), सभी विशेषताओं से युक्त,
बार-बार पुनर्जन्म लेने के अपने चक्रों को पूरा करने में
लंबी अवधि, यहां तक कि सैकड़ों वर्षों तक
करोड़ों युगों (कप्पा) के लोग पुनर्जन्म नहीं लेते थे।
अवीसी नरक; इसी प्रकार, शुद्धिकरण स्थलों के समूह में भी।
एकल लोकों के बीच स्थित (लोकान्तर)
वे बहुत प्यासे पेटा नहीं बने, जिन्हें कष्ट सहना पड़ा।

भूख से और **पृष्ठ 82, न ही वे दिग्गज बन पाए,
(कालकंजक)। वे छोटे जीवन यापन करने वाले नहीं बने।
जीव; भले ही वे ***पृष्ठ 82 दुर्भाग्यशाली हों। जन्म के समय
पुरुषों में, वे जन्मजात अंधे नहीं होते थे;
उनमें सुनने की कोई कमी नहीं थी और न ही वे गूंगे हुए थे।
उन्हें कभी औरत बनने की ज़रूरत नहीं पड़ी, ***पृष्ठ. क्या वे औरतें बनीं?
******पृष्ठ 82 वे ****** दोहरे ****** *******पृष्ठ 82.
बोधि द्वारा निर्देशित पुरुष बच निकले *****पृष्ठ 82 (अनंतरिका)
प्रतिशोध; उनकी गतिविधियों का दायरा सर्वत्र फैला हुआ है
शुद्ध और स्वच्छ होने के कारण। उन्होंने गलत राहों का अनुसरण नहीं किया।
विचार; वे कार्यप्रणाली को समझते थे
(कर्म)। यहां तक कि जब वे आनंद का अनुभव कर रहे थे तब भी।
स्वर्ग में उनका पुनर्जन्म अस्स्न्या ब्रह्मा में नहीं हुआ था।
ऐसी दुनिया जहां केवल भौतिक रूप ही मौजूद हैं।
अस्तित्व में नहीं है *******पृष्ठ 82 परिस्थितिजन्य कारण
दिव्य सुधावास ब्रह्मा लोकों में। अच्छा
लोग त्याग की ओर प्रवृत्त होते हैं; वे
छोटे-बड़े सभी अस्तित्वों से विरक्त
(भावभाव); वे सभी प्रथाओं का अभ्यास करते हैं
विश्व के लिए लाभकारी और सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला
परिपूर्णताएँ"।

1.80. हमारे बोधिसत्व ने उन लाभों को प्राप्त करने के बाद ही आगमन किया। जब वे सिद्धियों को पूरा कर रहे थे, उस समय जब वे ब्राह्मण अकित्ति (अगत्य) (अकित्त-जातक) (चरियापिटक ग्रंथ 1) थे, उस समय जब वे ब्राह्मण शंख (शंख-जातक) (चरियापिटक ग्रंथ 2) थे, उस समय जब वे राजा धनंजय (कुरुधम्म-जातक , चरियापिटक ग्रंथ 3 में भी) थे, उस समय जब वे राजा महासुदस्सन (महासुदस्सन-जातक) (चरियापिटक ग्रंथ 4) थे, उस समय जब वे महागोविन्द (महागोविन्द सूत्र) (चरियापिटक ग्रंथ 5) थे, उस समय जब वे महान राजा निमि (निमि-जातक) (मखदेव सूत्र) (चरियापिटक ग्रंथ 6) थे, उस समय जब वे राजकुमार चंदकुमार थे। खंडाहल जातक (चरियापितक ग्रंथ 7) के अनुसार, जब वे धनाढ्य विसयह (विसयह-जातक) थे, जब वे राजा शिव (सिवि -जातक) (चरियापितक ग्रंथ 8) थे, जब वे राजा वेसंतारा (वेसंतारा-जातक) (चरियापितक ग्रंथ 9) थे, तब दान देने में पूर्णता प्राप्त करने की कोई सीमा नहीं थी। दान देने में उनकी असीमित पूर्णता निश्चित रूप से बुद्धिमान खरगोश (ससपण्डितजातक) (चरियापितक ग्रंथ 10) की जन्म कथा में स्पष्ट है ।

"भिक्षा मांगने वाले को अपनी ओर आते देख,
मैंने अपने शरीर का पूर्णतः बलिदान कर दिया।
मेरे जैसी कोई और चैरिटी नहीं है। यही मेरी पूर्णता है।
दान देने में।"

इस प्रकार पूर्णता की पराकाष्ठा प्राप्त हुई, बोधिसत्व को दान (दान पारमिता) देने की पूर्ति हुई, जिन्होंने स्वयं को पूर्णतः बलिदान कर दिया।

---

(2) नैतिक उपदेशों में पूर्णता (सीलापारमिता)

ठीक उसी प्रकार, जब वे हाथी (नाग) राजा सीलव (सीलवनगा-जातक) बने, जब वे सर्प (नाग) राजा चम्पेय (चम्पेय-जातक) बने , जब वे हाथी (नाग) राजा भूरिदत्त (भूरिदत्त-जातक) बने, जब वे हाथी राजा छद्दंत (छद्दंत-जातक) बने, जब वे राजकुमार जयदिष (जयदिष-जातक) बने , और जब वे युवा राजकुमार अलीनसत्तु बने, तब भी नैतिक उपदेशों में पूर्णता प्राप्त करने की कोई सीमा नहीं थी

(सीलपारमी)। हालांकि, उपदेशों में उनकी असीमित पूर्णता शंखपालजातक (शंखपाल-जातक) की जन्म कथा में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

यद्यपि सूलों (सूला) से छेदा (विज्झयन्त) जा रहा हो,
भाले से निशाना बनाए जाने के बावजूद, मुझे ऐसा महसूस नहीं होता
गांव वालों के बेटों से नाराज़; यही मेरी पूर्णता है।
उपदेशों में।

इस प्रकार, जब वह स्वयं का पूर्ण बलिदान कर रहे थे, तब उपदेशों (सीलापारमिता) में पूर्णता को पूरा करने में उनकी सर्वोच्च पूर्णता उत्पन्न हुई

---

(3) त्याग में पूर्णता (नेक्खम्मपारमी)

इसी प्रकार, जब वे सोमना (सोमनस्स-जातक) नामक युवक थे, जब वे हत्थीपाल (हत्थी-पाल जातक) नामक युवक थे , जब वे अयोगरा (अयोगरा-जातक) नामक ज्ञानी व्यक्ति थे , तब उन्होंने महान प्रभुत्व का त्याग किया। उनके पूर्ण त्याग में कोई सीमा नहीं थी। हालाँकि, त्याग में उनकी पूर्णता की असीमित पूर्ति, निश्चित रूप से, चूलसुतसोमा (चूला -सुतसोमा-जातक) की जन्म कथा (जातक) में स्पष्ट है :-

मैंने उस महान संप्रभुता को त्याग दिया, जो मुझे प्राप्त हुई थी।
मेरे हाथों में, लार के एक गुच्छे की तरह। वहाँ था
परिणामस्वरूप कोई आसक्ति (लग्गना) नहीं
मेरा बलिदान। यही मेरी त्याग की पूर्णता है।"

इस प्रकार, जब वह बिना किसी बाधा के राजत्व को अस्वीकार कर रहा था, तब उसने त्याग (नेक्खम्मपारमी) की पूर्णता को पूरा करने में पूर्णता की पराकाष्ठा प्राप्त की।

---

(4) विद्या/ज्ञान/बुद्धि में पूर्णता (पञ्ञपारमिता)

इसी प्रकार, जब वे ज्ञानी मंत्री विधुरा (विधुरपंडित-जातक) थे, जब वे ज्ञानी महागोविन्द (महागोविन्द सूत्र) थे, जब वे ज्ञानी कुद्दाला (या कुडवाल) (कुद्दाला-जातक) थे, जब वे ज्ञानी अरक (अरक-जातक) थे, जब वे भ्रमणशील तपस्वी बोधि (बोधिराजकुमार सूत्र) थे और जब वे ज्ञानी महोषधा थे, तब भी उनके ज्ञान में पूर्णता की कोई सीमा नहीं थी। हालाँकि, ज्ञान में उनकी असीमित पूर्णता, निश्चित रूप से, सत्तुभस्त (सत्तुभस्त-जातक) के जन्म-वृत्तांत (जातक) में स्पष्ट है, जब वे ज्ञानी सेनाक थे।

अपनी जानकारी के आधार पर जांच करते हुए, मैंने निर्धारित किया
दुखों से मुक्त ब्राह्मण।
मेरे लिए सीखने से बढ़कर कुछ नहीं है। यही मेरा विश्वास है।
विद्या में पूर्णता।

जब वह उस साँप को दिखा रहा था जो बोरी में चला गया था (तभी विद्या/ज्ञान (पञ्ञपारमिता) में पूर्णता को पूरा करने में उसकी पूर्णता की पराकाष्ठा उत्पन्न हुई

---

(5) प्रयास में पूर्णता (वीर्य पारमिता)

इसी प्रकार, परिश्रम आदि में पूर्णता प्राप्त करने में उनकी कोई सीमा नहीं थी। परिश्रम में पूर्णता की उनकी असीमित प्राप्ति, निश्चित रूप से महाजनक की जन्म कथा (जातक) (महाजनक-जातक) में स्पष्ट है।

"पूरी तरह से, हर इंसान मारा गया।"
पानी के एक विशाल विस्तार के बीच, जिसका किनारा था
अदृश्य। मेरी नज़र में कोई अंतर नहीं था।
यही मेरी परिश्रम की पूर्णता है।

इस प्रकार विशाल सागर को पार करते समय, उन्होंने परिश्रम में पूर्णता (वीर्य पारमिता) की पूर्ति में पूर्णता की पराकाष्ठा प्राप्त की।

---

(6) धैर्य में पूर्णता (खन्ती पारमी)
खंतिवादी के जन्म-वृत्तांत (खंतिवादी-जातक) में:
"जब कासी राजा ने काटा तो मुझे उस पर गुस्सा नहीं आया।"
बिना किसी मकसद के मुझे तेज कुल्हाड़ी से मार गिराया।
(चेतना) यही मेरी धैर्य की पूर्णता है।"
क्योंकि वह इस प्रकार बिना किसी कारण (चेतना) के अत्यधिक पीड़ा सहन कर रहा था, इसलिए उसने धैर्य में पूर्णता की प्राप्ति में सर्वोच्च शिखर प्राप्त किया।

---

(7) सत्यनिष्ठा में पूर्णता (सच्चा पारमी)
महासुतसोमा की जन्म-कथा (जातक) में (महा-सुतसोमा-जातक):

मेरे पास एक सौ एक सम्राट थे
योद्धा (खत्तिया) वर्ग को बलिदान देकर मुक्त किया गया
मैंने अपना जीवन अपने सत्य कथन को संरक्षित रखने में व्यतीत किया।
यही मेरी सत्यता में पूर्णता है।
इस प्रकार सत्य की रक्षा करते हुए, अपने जीवन का बलिदान करते हुए, इस तरह सत्य में पूर्णता की ऊँचाई प्राप्त हुई।

---

(8) आत्म-निर्णय में पूर्णता (अधिष्ठान पारमी)
मूगपक्ष के जीवन-वृत्तांत (जातक) में (मूक होने के पक्ष में, जादभारत के समान कहानी)।
"ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि मेरे माता-पिता मुझे घृणित लगते थे।"
न ही महान राजसी वैभव घृणित था।
सर्वज्ञता मुझे प्रिय थी। इसलिए, वास्तव में,
मैंने स्वयं से यह संकल्प लिया।
जब वह स्वयं यह संकल्प ले रहा था, इस प्रकार अपने जीवन का बलिदान भी कर रहा था, तब आत्मनिर्णय की पूर्णता में पूर्णता की सर्वोच्च ऊंचाई प्राप्त हुई।

---

(9) प्रेमपूर्ण दया/करुणा में पूर्णता (मेट्टा पारमी)
सुवन्नसामा (समाजातक) की जीवन गाथा (जातक) में कहा गया है: "मुझे किसी ने डराया नहीं; न ही मैं भयभीत हुआ।"
किसी भी व्यक्ति का; काफी दृढ़ होना, यानी समर्थित होना
(पत्थद्धा) प्रेम और दया की शक्ति से,
उस समय मैं जंगल में आनंदपूर्वक रहता था।
जब वह इस प्रकार अपने जीवन की परवाह किए बिना प्रेमपूर्ण दया का अभ्यास कर रहा था, तब प्रेमपूर्ण दया में पूर्णता की पराकाष्ठा उत्पन्न हुई।

---

(10) समभाव में पूर्णता (उपेक्खा पारमी)
लोमहंस के जीवन वृत्तांत (लोमहंस-जातक) में:
मैंने कब्रिस्तान में लेटने के लिए अपना बिस्तर बिछाया, तुलना करते हुए
मैं लाश की हड्डियों के साथ था। पहुँचकर...
उन्होंने मुझे कई बैलों के चक्कर (गमाण्डला) दिखाए।
रूप (रूपम)"

हालांकि गांव के लड़कों द्वारा थूकने (नित्तुभना) आदि से, फूलों की माला और इत्र आदि भेंट करने से सुख-दुख का प्रलोभन दिया जा रहा था, फिर भी वे समभाव से परे नहीं जा रहे थे। इस प्रकार, समभाव की पूर्णता को प्राप्त करने में उन्हें परम परिपूर्णता प्राप्त हुई। यह संक्षेप में है। हालांकि, इस विषय को विस्तृत रूप से चरीय पिटक से समझा जाना चाहिए। इस प्रकार पूर्णताओं को प्राप्त करने के बाद, वे राजा वेसंतारा के 'शरीर' में आसीन हुए।

पृथ्वी, अनजाने में, बिना समझे
सुख और दुख, सात बार कांपे। वह भी
यह सब मेरी दानशीलता की शक्ति के कारण संभव हुआ।

इस प्रकार महान पुण्य कर्म करके, जिनसे पृथ्वी कांप उठी, आदि, और अपने जीवनकाल के अंत में वहाँ से विदा होकर, उन्होंने तुषिता नामक स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लिया। इस प्रकार, बुद्ध दीपांकर के चरणों से लेकर तुषिता नामक स्वर्गलोक में इस पुनर्जन्म तक का काल व्यतीत हुआ। इस प्रसंग के इतने भाग को पूर्ववर्ती प्रस्तावना के रूप में समझा जाना चाहिए।

प्रस्तावना पर चर्चा यहीं समाप्त होती है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.2ए राजकुमार सिद्धार्थ का जन्म

स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

अपदाना भाग - 1.2 : गौतम बुद्ध

1.2a राजकुमार सिद्धार्थ का जन्म, जो भविष्य में गौतम बुद्ध बने

2. जब बोधिसत्व तुषिता नामक दिव्य नगर में रह रहे थे, तब बुद्धति-संदेश (बुद्धकोलाहला) प्रकट हुआ। वास्तव में, संसार में तीन महान समाचार (कोलाहला) प्रकट होते थे: संसार के अंत का समाचार, बुद्ध के प्रकट होने का समाचार और विश्वराज के आगमन का समाचार। इनमें से एक समाचार संसार के अंत का है: "एक लाख वर्षों के बीतने के साथ ही कल्प का प्रलय होगा।" इस प्रकार, कामुक स्वर्ग के देवता (कामावचर देव) लोकब्युहा, जिनके सिर खुले (मुत्त) हैं, बिखरे हुए बालों (विकिन) से, रोते हुए चेहरे वाले, हाथों से अपने आँसू पोंछते हुए, लाल वस्त्र पहने हुए, भद्दे रूप और भावों वाले, मनुष्यों की गलियों में विचरण करते हुए, यह सूचना देते हैं: "हे मेरे प्रिय मित्रों! एक लाख वर्ष बाद, कल्प में उथल-पुथल होगी; यह संसार नष्ट हो जाएगा; विशाल सागर भी सूख जाएगा; यह पृथ्वी भी, साथ ही पर्वतों के राजा सिनरु भी, जलकर नष्ट हो जाएंगे; ब्रह्मा लोक तक संसार का विनाश हो जाएगा। हे मेरे प्रिय मित्रों! प्रेम, सहानुभूति, आनंद और समभाव विकसित करो। अपने माता-पिता की सेवा और सहायता करो। परिवार में बड़ों का आदर करो। यह संसार के अंत का समाचार है।" जगत के संरक्षक देवता जोर-जोर से घोषणा करते फिरते हैं: "मेरे प्रिय मित्रों! संसार में एक विश्वराज प्रकट होंगे।" वे ऐसा तब करते हैं जब ऐसी घटना एक हजार वर्ष बाद घटित होने वाली होती है। यह बुद्ध के प्रकट होने का समाचार है। यदि सौ वर्षों के अंतराल में कोई विश्वराज प्रकट हो, तो देवता जोर-जोर से घोषणा करते फिरते हैं: "मेरे प्रिय मित्रों! सौ वर्षों के अंतराल में एक विश्वराज संसार में प्रकट होंगे।" यह विश्वराज के प्रकट होने का समाचार है। ये तीन महान समाचार (कोलाहला) हैं।

2.1. सभी एक लाख ब्रह्मांडों (चक्कवळा) के दिव्य प्राणी बुद्ध के प्रकट होने का समाचार सुनकर तीनों समाचारों के साथ एकत्रित हुए और बुद्ध के पास जाकर उनसे निवेदन किया, जब उन्हें पता चला कि ऐसा व्यक्ति बुद्ध बनेगा। उन्होंने यह निवेदन तब किया जब

पूर्वाभास (पुब्ब-निमित्त) प्रकट हुए। उस समय, प्रत्येक ब्रह्मांड (चक्कवळा) में सभी, जिनमें चार महान राजा सक्का, सुयामा, संतुस्सिता, सुनिमिता, वासवत्ती और ब्रह्मा भी शामिल थे, एक विशेष ब्रह्मांड (चक्कवळा) में एकत्रित हुए और तुषिता स्वर्ग में बोधिसत्व के समक्ष जाकर उनसे निवेदन किया। मेरे प्रिय मित्र! दस सिद्धियों को पूर्ण करके आपने सक्का, मारा, ब्रह्मा और विश्वराज की महिमा प्राप्त करने की आकांक्षा नहीं रखी। आपने सर्वज्ञ बुद्ध बनने की आकांक्षा से ऐसा किया, ताकि संसारियों को संसार से मुक्ति दिला सकें। मेरे प्रिय मित्र! अब आपके बुद्ध बनने का समय आ गया है। मेरे प्रिय मित्र, यही समय है आपके बुद्धत्व का।

2.2. तब परमेश्वर ने स्वर्गवासियों को कोई वचन दिए बिना, समय, द्वीप, स्थान, परिवार, माता और जीवनकाल के संबंध में पाँच प्रमुख विषयों पर गहन चिंतन किया। सर्वप्रथम उन्होंने समय का विश्लेषण किया और यह जाँच की कि क्या वह समय के अनुकूल है या नहीं। इस संदर्भ में, एक लाख वर्षों से अधिक जीवनकाल का बढ़ना समय के अनुकूल नहीं है। क्यों? क्योंकि ऐसे समय में जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु का कोई आभास नहीं होता। अतः, बुद्धों के धर्म का ऐसा कोई उपदेश नहीं होता जो इन तीन लक्षणों (लक्खण) से मुक्त हो। जब लोगों को अनित्यता, दुःख और आत्महीनता के विषय में उपदेश दिया जाता है, तो वे कहते हैं कि यह उपदेश न तो सुनने योग्य है और न ही श्रद्धा और विश्वास को प्रेरित करता है। परिणामस्वरूप, धर्म का ज्ञान प्राप्त नहीं होता। जब ऐसा ज्ञान प्राप्त नहीं होता, तब धर्म की व्यवस्था मोक्ष की ओर ले जाने वाली नहीं होती। अत: ऐसा समय असमय है। सौ वर्ष से कम जीवनकाल का समय भी असमय है। क्यों? क्योंकि ऐसे समय में जीव-जंतु दुराचार (किलेसा) से भरे होते हैं। अत्यधिक दुराचार (किलेसा) से ग्रस्त लोगों को दी गई चेतावनी स्थायी नहीं रहती; वह पानी में छड़ी से बनी लकीरों की तरह शीघ्र ही लुप्त हो जाती है। अत: ऐसा समय भी असमय है। हालांकि, ऐसा समय एक लाख वर्ष से शुरू होने वाली संख्या से नीचे और सौ वर्ष से शुरू होने वाली संख्या से ऊपर का समय उचित समय है। उस समय जीवनकाल सौ वर्ष था। तब परमेश्वर ने अपने प्रकट होने का समय आ गया समझा।

2.3. इसके बाद, द्वीप का गहन चिंतन करते हुए, उन्होंने चारों द्वीपों और उनके आसपास के क्षेत्र का अवलोकन किया और उचित द्वीप को देखकर कहा:- "बुद्ध अन्य तीन द्वीपों में कभी जन्म नहीं लेते; वे केवल जंबु द्वीप (जंबु दीप यानी भारत) में ही जन्म लेते हैं।"

2.4. इसके बाद, उचित स्थान की खोज करते हुए, उन्होंने सोचा: "जम्बू द्वीप (भारत) विशाल है; इसका क्षेत्रफल चारों ओर दस हजार योजन है। वास्तव में, बुद्ध किस स्थान पर जन्म लेते हैं?", तब उन्होंने मध्य क्षेत्र (मज्झिम-देश) को देखा। मध्य क्षेत्र ऐसा है कि इसके पूर्व दिशा में गजांगला नामक एक जिला (निगम) है; इसके पश्चिम में विशाल साल का वृक्ष है; इसके आगे मध्य में सीमावर्ती बड़ा जिला है; दक्षिण-पूर्व दिशा में सल्लावती नामक नदी है; इसके आगे मध्य में सीमावर्ती बड़ा जिला है; दक्षिण दिशा में सेतकन्निका नामक जिला है; इसके आगे मध्य में सीमावर्ती बड़ा जिला है; पश्चिम दिशा में थून नामक जिला है; इसके आगे मध्य में सीमावर्ती बड़ा जिला है; उत्तर में पर्वत है जिसे "उशीरांज के रूप में; उससे आगे सीमावर्ती बड़ा जिला है, जो इस ओर केंद्र में स्थित है।" विनय पिटक में यही संकेत (उपदेश) दिया गया है। इसकी लंबाई तीन सौ योजन, चौड़ाई ढाई योजन और परिधि नौ सौ योजन है। इस क्षेत्र में बुद्ध, मौन बुद्ध, प्रमुख शिष्य, अस्सी प्रमुख शिष्य (महासावक), विश्व-राजा और अन्य योद्धा-राजा (क्षत्रिय), ब्राह्मण, साथ ही धनी और शक्तिशाली गृहस्थ जन्म लेते हैं। यहीं पर कपिलवस्तु नगर का नाम है। उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला: "मुझे वहीं पुनर्जन्म लेना चाहिए।"

2.5. इसके बाद, परिवार पर विचार करते हुए उन्होंने कहा, "बुद्ध न तो व्यापारी परिवार में जन्म लेते हैं और न ही निम्न सामाजिक श्रेणी (शुद्ध) के परिवार में। संसार के लोगों के मत के अनुसार, बुद्ध या तो क्षत्रिय (खत्तीय) परिवार में जन्म लेते हैं या ब्राह्मण परिवार में। परन्तु संसार के लोगों द्वारा खत्तीय परिवार को मान्यता प्राप्त है, इसलिए मैं उसी परिवार में जन्म लूँगा; मेरे पिता का नाम सुद्धोदन होगा;" इस प्रकार उन्होंने परिवार का अवलोकन किया।

2.6. इसके बाद, माता के बारे में चिंतन करते हुए उन्होंने कहा, "बुद्ध की माता कभी लोभ में लिप्त नहीं होतीं, कभी मादक पेय की आदी नहीं होतीं; एक लाख युगों (कप्पा) तक उन्होंने सिद्धियों का पालन किया है; जन्म से ही वे निरंतर पाँच उपदेशों का पालन करती रही हैं। यह रानी महामाया भी ऐसी ही हैं। मेरी माता यही रानी होंगी। उनका जीवनकाल कितना होगा?" "दस माह से सात दिन अधिक;" इस प्रकार उन्होंने अपनी होने वाली माता को देखा।

2.7. इन पाँच गहन चिंतन के बाद, उन्होंने उन स्वर्गवासियों को अनुग्रह करने का वचन दिया, जो आकर उन्हें सूचित करने आए थे कि उनके बुद्ध बनने का समय आ गया है। उन्होंने उन स्वर्गवासियों को यह कहकर विदा किया, 'तुम सब जाओ', और तुषिता देवताओं से घिरे तुषिता स्वर्ग के रमणीय उद्यान, नंदनवन में प्रवेश किया। समस्त स्वर्गलोकों में वास्तव में एक रमणीय उद्यान (नंदनवन) विद्यमान है। वहाँ, उस रमणीय उद्यान में, देवता उनके पूर्व में किए गए अच्छे कर्मों की याद दिलाते हुए कहते हैं, 'यहाँ से विदा होकर, अच्छे लोक में जाओ! यहाँ से विदा होकर, अच्छे धाम में जाओ!' देवताओं द्वारा उनके अच्छे कर्मों की याद दिलाए जाने और उनके बीच घिरे रहने के कारण, वे वहाँ से विदा हो गए और घूमते-घूमते रानी महामाया के गर्भ में गर्भ धारण किया।

रानी महामाया का स्वप्न

2.8 उस घटना को स्पष्ट करने के उद्देश्य से यह प्रवचन अपने उचित क्रम में है:- कहा जाता है कि उस समय कपिलवस्तु नगर में आसली नक्खत्त उत्सव की घोषणा की गई थी; बड़ी संख्या में लोगों ने उत्सव का आनंद लिया। रानी महामाया ने भी पूर्णिमा से सात दिन पहले शुरू होने वाले उत्सवों का आनंद लेते हुए, जो पुष्पमालाओं और सुगंधित इत्रों से परिपूर्ण थे, मादक पेय पदार्थों का सेवन नहीं किया। उन्होंने सातवें दिन सुबह जल्दी उठकर सुगंधित जल से स्नान किया, चार लाख रुपये खर्च करके बड़ा दान दिया, सभी आभूषणों से सुसज्जित होकर उत्तम भोजन किया, प्रार्थना के तत्वों का दृढ़तापूर्वक पालन करने का संकल्प लिया, अपने सुशोभित शाही कक्ष में प्रवेश किया, अपने सुंदर पलंग पर लेट गईं और सो गईं। उन्हें यह स्वप्न दिखाई दिया: ऐसा प्रतीत हुआ कि चार महान दिव्य राजाओं ने उन्हें पलंग सहित उठाकर हिमालय ले गए, उन्हें साठ योजन (लगभग 11 किमी) लंबी लाल आर्सेनिक पत्थर की शिला (मनोशिला) पर सात योजन ऊँचे विशाल साल के वृक्ष के नीचे रख दिया और एक तरफ खड़े हो गए। इसके बाद उनकी रानियाँ आईं, रानी को अनोत्तट्टा झील तक ले गईं, उन्हें स्नान कराकर मानवीय अशुद्धियों को दूर किया, उन्हें दिव्य वस्त्र पहनाए, सुगंध से सुगंधित किया, उनके बालों में फूल लगाए और फिर उन्हें पास ही स्थित एक चांदी के पर्वत के भीतर, पूर्व दिशा की ओर मुख किए हुए स्वर्ण महल में बने दिव्य बिस्तर

पर लिटा दिया। उस समय बोधिसत एक उत्कृष्ट सफेद हाथी थे। वहाँ से कुछ ही दूरी पर एक स्वर्ण पर्वत था। वह वहाँ विचरण करते हुए वहाँ से उतरकर चांदी के पर्वत पर चढ़ गए, उत्तर दिशा से आए, अपनी चांदी की रस्सी के रंग की सूंड से एक सफेद कमल को पकड़ा, बगुले की तरह रोए, स्वर्ण महल में प्रवेश किया, अपनी माता के पलंग की तीन परिक्रमाएँ कीं, उनका दाहिना भाग चीरकर मानो उनके गर्भ में प्रवेश कर गया। इस प्रकार, बोधिसत ने उत्तरासाल्हनक्खत्त के अधीन गर्भ धारण किया।

2.9 अगले दिन जब रानी जागी, तो उसने राजा को उस सपने के बारे में बताया। राजा ने लगभग चौंसठ ब्राह्मण विद्वानों को बुलवाया, ज़मीन पर कीमती आसन तैयार करवाए, उन्हें हरे गोबर से अच्छी तरह लेपकर और भुने हुए अनाज बिखेरकर आतिथ्य सत्कार योग्य बनाया। वहाँ बैठे ब्राह्मणों को राजा ने घी, शहद और चीनी से बना उत्तम दूध का शोरबा सोने और चाँदी के कटोरे भरकर, उन पर सोने और चाँदी के ढक्कन लगाकर परोसा। उन्हें नए वस्त्र, भूरी गायें आदि उपहार देकर भी तृप्त किया गया। इसके बाद, सभी प्रकार के इंद्रिय सुखों में तृप्त हो चुके उन ब्राह्मणों को वह सपना बताया गया और पूछा गया, "आगे क्या होगा?" ब्राह्मणों ने उत्तर दिया, “हे महाराज! चिंता न करें। आपकी रानी के गर्भ में गर्भ धारण हो चुका है। यह गर्भ वास्तव में एक पुत्र का है, स्त्री का नहीं। महाराज को पुत्र जन्म लेगा। यदि वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करे, तो वह विश्वराज बनेगा। यदि वह गृहस्थ जीवन त्यागकर संन्यासी बन जाए, तो वह बुद्ध बनेगा, जो संसार से पर्दा हटाएगा।”

2.10. जिस क्षण बोधिसत्व ने अपनी माता के गर्भ में गर्भ धारण किया, उसी क्षण इस घटना के साथ ही, संपूर्ण दस हजार लोक-तत्व (लोकधातु) स्वतः ही कांप उठे। बत्तीस अशुभ संकेत (पुब्बानिमित्त) प्रकट हुए: दस हजार समुच्चयों (चक्कवा) में असीम प्रकाश व्याप्त हो गया। मानो उनकी उस महिमा को देखने की इच्छा से, अंधों को उनकी दृष्टि वापस मिल गई; बहरे सुनने लगे; गूंगे स्वयं बोलने लगे; कुबड़ा सीधा हो गया; लंगड़े फिर से चलने लगे; सभी जीवित प्राणी, जो सलाखों के पीछे थे, कारागारों, बंधनों आदि से मुक्त हो गए; सभी नरकों में आग बुझ गई; पेटों के क्षेत्र में भूख और प्यास चरम पर पहुंच गई, जानवरों को कोई खतरा नहीं रहा; सभी जीवित प्राणियों के रोग दूर हो गए। सभी प्राणी मधुर वक्ता बन गए; घोड़े मधुरता से हंसने लगे; हाथियों ने चिंघाड़ भरी; सभी वाद्ययंत्रों ने अपनी-अपनी मधुर ध्वनि उत्पन्न की; मनुष्यों के हाथों आदि को सुशोभित करने वाले आभूषण आपस में टकराए बिना खड़खड़ाहट कर रहे थे; सभी दिशाएँ स्पष्ट और सुखद थीं; कोमल और ठंडी हवाएँ बह रही थीं जो जीवों को प्रसन्न कर रही थीं; बेमौसम बारिश हो रही थी; धरती से जल फूटकर (उब्भिज्जित्वा) बह रहा था (विस्संडी); पक्षी आकाश में उड़ने से बच रहे थे; नदियाँ बहना बंद हो गईं; विशाल सागर ने ताज़ा पानी उपलब्ध कराया; हर जगह, अपने उचित क्रम में, जल-सतहें पाँच रंगों के कमलों से ढकी हुई थीं; सभी प्रकार के शुष्क भूमि के फूल और जलीय फूल खिले; वृक्षों के तनों पर, तना-कमल, उनकी शाखाओं पर, शाखा कमल, लताओं पर, लता-लता कमल खिले और फूले; ठोस पत्थर की पटियाँ टूट गईं, एक के ऊपर एक सौ परतें बन गईं और कमल के फूल, जिन्हें कमल की डंठल, दण्ड पद्म के नाम से जाना जाता है, बाहर आ गए। आकाश में, लटकते हुए (ओलाम्बाका) कमल के पौधे उग आए; चारों ओर फूलों की वर्षा हुई; आकाश में दिव्य वाद्ययंत्रों ने अपना संगीत बजाया; दस हजार विश्व-तत्व एक मुक्त गोलाकार माला की तरह घूम रहे थे, पिरोई हुई मालाओं के गुच्छे की तरह भगदड़ मचा रहे थे, और एक कुशलता से सजाई गई माला-आसन की तरह, यह एक एकल पुष्प-माला, याक की पूंछ के कंपनशील पंखे में बदल गया, फूलों की सुगंध और मीठी खुशबू से चारों ओर महक रहा था, अपनी सर्वोच्च सुंदरता को प्राप्त कर रहा था।

2.11 जब बोधिसात ने इस प्रकार गर्भ धारण किया, तो चार युवा देवता, तलवारों से सुसज्जित, बोधिसात और उनकी माता दोनों की गर्भ धारण के समय से ही रक्षा करते रहे, ताकि उन दोनों पर कोई विपत्ति न आए। बोधिसात की माता के मन में पुरुषों के प्रति कोई मानसिक आसक्ति नहीं थी। वे सुखी और शारीरिक थकान से मुक्त होने के साथ-साथ अपनी समृद्धि और प्रतिष्ठा के चरम पर थीं। वे अपने गर्भ में आए बोधिसात को भी एक विशेष रूप से शांत रत्न के चारों ओर लिपटे पीले धागे की तरह देख सकती थीं। बोधिसात के गर्भ में होने के कारण, वह गर्भ किसी मंदिर के कक्ष के समान माना जाता था; किसी अन्य जीव के लिए वहाँ निवास करना या पूर्ण लाभ प्राप्त करना संभव नहीं था; अत: बोधिसात के जन्म के सात दिन बाद उनकी माता का निधन हो गया और उनका पुनर्जन्म तुषिता नामक स्वर्ग नगर में हुआ। इसके अलावा, जिस प्रकार अन्य स्त्रियाँ दस महीने से कम या अधिक समय के बाद बैठकर और लेटकर भी अपने बच्चों को जन्म देती हैं, बोधिसात की माता के मामले में ऐसा नहीं था। उन्होंने दस महीने तक बोधिसात को उचित रूप से गर्भ में धारण किया और खड़े होकर अपने पुत्र को जन्म दिया (पृष्ठ 95)। यही बोधिसात की माता का सामान्य आचरण (धम्मता) है।

सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) का जन्म

2.12. रानी महामाया भी गर्भावस्था में पूर्णतः परिपक्व हो चुकी थीं, जब उन्होंने बोधिसत्व को दस महीने तक अपने गर्भ में इस प्रकार धारण किया जैसे वे कटोरे में तेल लिए हों। अपने रिश्तेदारों के घर जाने की इच्छा से उन्होंने महान राजा सुद्धोदन को सूचित किया: "महाराज! मैं देव नगर जाना चाहती हूँ, जो मेरे कुल का है।" राजा ने 'ठीक है' कहते हुए सहमति दी, कपिलवस्तु और देवदहा के बीच की सड़क को समतल करवाया, उसे केले के वृक्षों, जल से भरे कलशों, झंडों और मालाओं आदि से सजाया, अपनी रानी को सोने की पालकी में बिठाया जिसे एक हजार मंत्रियों द्वारा उठाया जा सकता था और उन्हें एक विशाल दल के साथ विदा किया। उस समय दोनों नगरों के बीच एक शुभ साल वन था, जिसे दोनों नगरों के निवासियों का लुम्बिनी वन कहा जाता था (पृष्ठ 96)। उस अवसर पर साल के वृक्षों के सभी फल जड़ से लेकर शीर्ष शाखाओं तक एक साथ खिल उठे थे। पांच रंगों की मधुमक्खियों के झुंड और विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों के समूह शाखाओं और फूलों के बीच मधुर गीत गाते हुए विचरण कर रहे थे। तब पूरा लुम्बिनी उद्यान स्वर्ग के चित्तलता उद्यान जैसा प्रतीत हो रहा था। यह किसी शक्तिशाली सम्राट के सुव्यवस्थित खरीदारी केंद्र की तरह था। लुम्बिनी उद्यान को देखकर रानी के मन में साल के उद्यान में भोग लगाने की इच्छा जागी। मंत्री रानी को लेकर साल के उद्यान में प्रवेश कर गए। वह शुभ साल के वृक्ष के आधार की ओर गईं और उसकी शाखा को पकड़ने की इच्छा हुई। साल की शाखा भीगी हुई बेंत की तरह झुककर रानी के हाथ की ओर आ गई। उन्होंने अपना हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया। तभी रानी को प्रसव पीड़ा (अर्थात कर्मों से उत्पन्न वायु) होने का अहसास हुआ। इसके बाद उनके चारों ओर एक पर्दा लगा दिया गया और अधिकांश लोग वहां से चले गए। रानी ने साल की शाखा को पकड़े हुए खड़े-खड़े ही अपने बच्चे को जन्म दिया। ठीक उसी क्षण चार शुद्ध स्वभाव वाले महान ब्रह्मा वहाँ एक सोने का जाल लेकर आए। उन्होंने उस सोने के जाल में बोधिसत्व को विधिपूर्वक ग्रहण किया, माता के सामने खड़े हुए और कहा: "हे रानी! कृपया अपने मूल स्वरूप में रहें; आपने एक शक्तिशाली पुत्र को जन्म दिया है।"

2.13. अन्य शिशुओं के मामले में, जब वे अपनी माताओं के गर्भ से बाहर आते हैं, तो वे घृणित अशुद्धियों से सने होते हैं; बोधिसात के मामले में ऐसा नहीं था। वे (यद्यपि) अपनी माता के गर्भ से ऐसे चमकते हुए निकले जैसे काशिक शुद्ध सफेद वस्त्र पर फेंका गया रत्न, वे

खड़े हुए थे, अपने दोनों हाथ और दोनों पैर फैलाए हुए, शुद्ध, निर्मल और किसी भी अशुद्धता से रहित, क्योंकि वे अपनी माता के गर्भ में ऐसे रहे थे जैसे धर्म का उपदेशक उपदेश मंच से उतरता है या सीढ़ी से नीचे आता है। इसके बावजूद, बोधिसात और उनकी माता का सम्मान करने के उद्देश्य से, आकाश से जल की दो वर्षाएँ आईं और माता और शिशु दोनों के शरीर को स्नान कराकर उन्हें तरोताजा कर दिया।

2.14. इसके बाद, ब्रह्माओं के हाथों से, जो शिशु को सोने के जाल में धारण करके खड़े थे, चारों महान स्वर्गिक राजाओं ने शिशु को सुख प्रदान करने, आरामदेह संपर्क और पारंपरिक शुभता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, पलंग के आकार के हिरण की खाल के वस्त्र (अजिनप्पवेणी) में लपेटकर ग्रहण किया। उनके हाथों से, मनुष्य अत्यंत महीन वस्त्र (दुकुल) के तकियों पर शिशु को ग्रहण करने लगे। जब शिशु को मनुष्यों के हाथों से मुक्त करके जमीन पर रखा गया, तो उसने पूर्व दिशा की ओर देखा। हजारों ब्रह्मांड (चक्कवाला) एक इकाई बन गए। वहाँ उपस्थित देवताओं और मनुष्यों ने उन्हें इत्र, माला आदि से सम्मानित करते हुए कहा, "हे पराक्रमी! इस संसार में आपके समान कोई नहीं है। भला आपसे श्रेष्ठ कौन हो सकता है?" इस प्रकार, उन्होंने दस दिशाओं में, अर्थात् चारों दिशाओं, चारों कोनों, हेष्ठा और उपरि की ओर क्रमानुसार देखा और अपने समतुल्य किसी को न पाकर, सात कदम चलकर कहा, "यह उत्तर दिशा है।" उनके ऊपर महा ब्रह्मा सफेद छत्र धारण किए हुए थे, सूर्यम याक की पूंछ का पंखा (वालबीजनी) धारण किए हुए थे और अन्य दिव्य प्राणी भी अपने हाथों में शेष राजचिह्न लिए उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। इसके बाद, सातवें पायदान पर खड़े होकर, उन्होंने सिंह की गर्जना करते हुए, साहसपूर्वक कहा, "मैं जगत का सर्वोच्च हूँ।"

2.15. बोधिसत्व ने अपनी माता के गर्भ से प्रकट होते ही तीन रूपों में शब्द कहे: महोषद रूप में, वेस्सन्तरा रूप में और इस रूप में। कहा जाता है कि महोषद रूप में, जब वे अपनी माता के गर्भ से प्रकट हो रहे थे, उसी क्षण देवों के राजा सक्का आए और उनके हाथ में चंदन का सार रखकर चले गए। उन्होंने चंदन को मुट्ठी में कसकर पकड़ लिया और प्रकट हुए। तब उनकी माता ने उनसे पूछा, "मेरे प्रिय पुत्र! तुमने क्या लिया है और आए हो?" "औषधि, माता!" इस प्रकार, औषधि लेकर आने के कारण उनका नाम "औषधि बालक" (सोधा दारक) रखा गया। उन्होंने वह औषधि ली और उसे एक पात्र में रख दिया। यह सचमुच सभी प्रकार के रोगों के सफल उपचार का औषध बन गया, जो सभी को प्रभावित करते थे, चाहे वे अंधे हों, बहरे हों, आदि। इसके बाद, "यह औषधि महान है! यह औषधि शक्तिशाली है" इस कथन के उत्पन्न होने पर, उनका नाम 'महोषद' भी पड़ा। वेस्सन्तर के रूप में, जैसे ही वे अपनी माता के गर्भ से बाहर आए, उन्होंने अपना दाहिना हाथ बढ़ाकर यह प्रार्थना की: "माँ! क्या घर में कुछ है? मैं दान करूँगा," और उन्होंने ऐसा ही किया। तब उनकी माता ने अपने पुत्र के हाथ की हथेली पर एक हजार सिक्कों से भरा पर्स रख दिया, जिसे उन्होंने पहले अपनी हथेली पर रखा था, और कहा: "मेरे पुत्र! तुम धनवान परिवार में जन्मे हो।" अपने इस जन्म में, उन्होंने सिंह की दहाड़ लगाई। इस प्रकार, बोधिसत्व ने अपनी माता के गर्भ से बाहर आते ही स्पष्ट शब्दों का उच्चारण किया। जिस प्रकार उनके गर्भ धारण के समय घटित हुआ था, उसी प्रकार उनके जन्म के समय भी बत्तीस अशुभ संकेत (पुब्बानिमित्तानि) प्रकट हुए। जब हमारे भावी बुद्ध (बोधिसत्त) का जन्म लुम्बिनी वन में हुआ, उसी समय राहुल की भावी माता, भावी थेरा आनंद, भावी मंत्री चन्ना, भावी मंत्री कालुदवी, राजसी अश्व कंठक, विशाल बोधि वृक्ष और खजाने के चार स्वर्णमय कलश भी प्रकट हुए। इनमें से एक कलश बैल की दहाड़ के आकार का (गावूत) था; दूसरा आधा मील (योजन) के आकार का; तीसरा तीन गावूत के आकार का और चौथा एक मील (योजन) के आकार का था। उनकी गहराई पृथ्वी के सबसे निचले स्तर तक थी। इन सातों को सत्त सहजता के रूप में जाना जाता है। (पृष्ठ 99)

साधु शिशु सिद्धार्थ को देखने आता है

2.16. दोनों नगरों के निवासी बोधिसत्व को लेकर कपिलवस्तु नगर के लिए प्रस्थान कर गए। उसी दिन, तावतिंसा स्वर्ग में स्थित देवमंडल अत्यंत प्रसन्न हुआ और कहने लगा, "कपिलवस्तु नगर में महान राजा सुद्धोदन के पुत्र का जन्म हुआ है; यह राजकुमार बोधि वृक्ष के आधार पर विराजमान बुद्ध बनेगा।" उन्होंने अपने वस्त्रों को लहराकर और अन्य प्रकार के अभिनंदन कार्य करके आनंद मनाया। उसी अवसर पर, महान राजा सुद्धोदन के परिवार के मित्र, आठ प्रकार के ध्यान (अष्टसमापत्ति) प्राप्त करने वाले कालदेवल नामक ऋषि ने भोजन करने के बाद तावतिंसा स्वर्ग में दिन व्यतीत करने के लिए प्रस्थान किया और वहाँ विराजमान हो गए। जब उन्होंने उन दिव्य प्राणियों को इस प्रकार क्रीड़ा करते देखा, तो उन्होंने पूछा, "आप सब इतने प्रसन्न मन से क्रीड़ा क्यों कर रहे हैं? मुझे इसके बारे में बताइए।" देवताओं ने उत्तर दिया, "मित्र! महान राजा सुद्धोदन के पुत्र का जन्म हुआ है; वह बुद्ध बनेंगे, बोधि वृक्ष की वेदी पर विराजमान होंगे और धर्मचक्र चलाएंगे; हमें इस अवसर पर बुद्ध की असीम कृपा के साक्षी बनने और उनके धर्मोपदेश सुनने का अवसर मिलेगा, हम सब अत्यंत प्रसन्न हैं।" उनकी बातें सुनकर, ऋषि तुरंत स्वर्गलोक से नीचे उतरे, राजमहल में प्रवेश किया, अपने लिए तैयार स्थान पर बैठे और बोले, "महाराज! मुझे बताया गया है कि आपके पुत्र का जन्म हुआ है; क्या मैं उन्हें देख सकता हूँ?" राजा ने सुशोभित और आभूषणों से सुसज्जित राजकुमार को बुलवाया और उन्हें ऋषि को प्रणाम करने के लिए कहा। बोधिसत्व के चरण पूरी तरह घूमकर ऋषि की गुंथी हुई जटाओं पर स्थापित हो गए। बोधिसत्व के लिए वास्तव में कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो उनके जैसे व्यक्ति द्वारा पूजे जाने योग्य हो। यदि अनजाने में भी वे बोधिसत्व का सिर तपस्वी के चरणों में रख देते, तो उनका सिर सात टुकड़ों में बिखर जाता। तपस्वी ने मन ही मन कहा, "मेरे लिए स्वयं को नष्ट करना उचित नहीं है", और अपने आसन से उठकर बोधिसत्व के प्रति श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़ लिए। उस चमत्कार को देखकर राजा ने अपने पुत्र को प्रणाम किया।

2.17. संन्यासी को अस्सी युगों (कप्पा) का स्मरण था: बीते चालीस युग (कप्पा) और आने वाले चालीस युग (कप्पा)। बोधिसत्व को उत्तम गुणों से परिपूर्ण देखकर, उन्होंने मन ही मन सोचा, "क्या वे सचमुच बुद्ध बनेंगे या नहीं?" उन्हें यह ज्ञान हुआ कि वे निस्संदेह बुद्ध बनेंगे और मन ही मन कहते हुए, "यह तो अद्‌भुत युवक है", वे मुस्कुराए। इसके बाद, यह सोचते हुए, "क्या मुझे इस अद्‌भुत युवक को बुद्ध बनते देखने का अवसर मिलेगा या नहीं?", उन्होंने देखा कि उन्हें ऐसा अवसर नहीं मिलेगा, क्योंकि वे बीच में ही परलोक धारण कर लेंगे और ब्रह्मा के निराकार लोक में पुनर्जन्म लेंगे, जहाँ सौ बुद्ध ही नहीं, बल्कि हजार बुद्ध भी जाकर उन्हें ज्ञान प्रदान नहीं कर सकेंगे; इसलिए, मन ही मन कहते हुए, "मुझे ऐसे अद्‌भुत युवक को बुद्ध बनते देखने का अवसर नहीं मिलेगा", वे रो पड़े।

2.18 लोगों ने यह देखा और पूछा, "हमारे प्रभु अभी हँसे और फिर रोने लगे; हे पूज्यवर, वास्तव में क्या बात है? क्या हमारे राजा के पुत्र को कोई हानि हो रही है?" उन्होंने उत्तर दिया, "इस मामले में उन्हें कोई खतरा नहीं है; वे निःसंदेह बुद्ध बनेंगे।" यह पूछे जाने पर कि पूज्यवर क्यों रो रहे थे, ऋषि ने उत्तर दिया, "मैं इसलिए रो रहा हूँ क्योंकि मुझे इस बात का बहुत दुख है कि मुझे इस तरह के युवक को बुद्ध बनते देखने का अवसर नहीं मिलेगा।" इसके बाद, उस ऋषि ने यह सोचते हुए कि "क्या मेरे किसी रिश्तेदार को इस बालक को बुद्ध बनते देखने का अवसर मिलेगा?", अपने भतीजे, युवक नालक को देखा। उन्हें बताया गया कि उनका पुत्र घर पर है। क्योंकि उन्हें अपने पुत्र को बुलवाने के लिए कहा गया था, इसलिए उन्होंने ऐसा किया और ऋषि ने अपने पास आए युवक से कहा, "मेरे प्रिय! महान राजा सुद्धोदन के परिवार में एक पुत्र का जन्म हुआ है; यह पुत्र बुद्ध का नवजात रूप है; पैंतीस वर्ष की आयु में वह बुद्ध बन जाएगा; आपको

उसे देखने का अवसर मिलेगा; "आज ही के दिन संसार का त्याग करके संन्यासी बन जाऊँगा।" यद्यपि वह युवक सत्तासी करोड़ की संपत्ति वाले परिवार में जन्मा था, उसने मन ही मन सोचा कि उसके चाचा ने उसे बिना किसी लाभ के संन्यास लेने के लिए प्रेरित नहीं किया होगा; उसी क्षण, उसने बाजार से वस्त्र और मिट्टी का भिक्षापात्र मंगवाया, अपने बाल और दाढ़ी मुंडवा ली, पीले वस्त्र धारण किए, पंचपतिष्टि मुद्रा में पृथ्वी को स्पर्श करते हुए हाथ जोड़कर बोधिसत्व की दिशा में मुख करके प्रणाम किया और कहा: 'मेरा संन्यास और संन्यासी बनना उन्हें समर्पित है, जो संसार के सबसे श्रेष्ठ पुरुष हैं', उसने अपना भिक्षापात्र थैली में रखा, उसे अपने कंधे पर लटकाया, हिमालय में प्रवेश किया और भिक्षु के कर्म (धर्म) किए। वह तथागत के पास पहुँचा, जिन्होंने अंततः पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया था, उसने बुद्ध से नालक साधना (पतिपदा) का उपदेश देने का अनुरोध किया, और फिर से हिमालय में प्रवेश किया। हिमालय में, अरहत की अवस्था तक पहुँचकर, साधना के उच्चतम रूप को सिद्ध किया, केवल सात महीने का जीवनकाल जिया और निर्वाण तत्व के माध्यम से अमर आनंद में पूर्णतः विलीन हो गए, उपाधि का कोई निशान नहीं छोड़ा, जबकि वे अभी भी एक स्वर्ण पर्वत के पास खड़े थे।

2.19. जन्म के पाँचवें दिन, बोधिसत्व ने अपना सिर धोया और राजपरिवार के लोगों ने आपस में कहा, "हम नामकरण संस्कार करेंगे।" इसलिए उन्होंने राजमहल को चार प्रकार के प्राकृतिक सुगंधों से सुगंधित किया, पाँचवें प्रकार के लाजा सहित फूलों के गुच्छे बिखेरे, शुद्ध (असंभिन्न) दूध-चावल के भोजन की व्यवस्था की, तीनों वेदों में पारंगत एक सौ आठ ब्राह्मणों को आमंत्रित किया, उन्हें राजमहल में बैठाया, उन्हें अच्छा भोजन कराया, सम्मान के बड़े-बड़े दान दिए और उनसे संकेतों का अध्ययन और विश्लेषण करने को कहा, "वास्तव में क्या होगा?" उनमें से,

"राम, धजा, लक्खाना और साथ ही मांटी
यान्या, सुभोज, सुयामा और सुदत्त; इन,
फिर आठ ब्राह्मण थे। उन्होंने प्रदर्शन किया।
वह मंत्र, जिसके छह खंड थे।

ये आठ ब्राह्मण ही लक्षणों (लक्खण) के ज्ञाता थे। गर्भाधान के दिन देखे गए स्वप्न का भी उन्होंने ही विश्लेषण किया। उनमें से सात ने दो उंगलियां उठाकर दो प्रकार की घटनाओं की भविष्यवाणी की: "जिस किसी में ये लक्षण (लक्खण) होंगे, वह गृहस्थ जीवन व्यतीत करने पर विश्वराज बनेगा; यदि वह संसार का त्याग करके संन्यासी बन जाए, तो वह बुद्ध बनेगा।" ऐसा कहकर उन्होंने विश्वराज के समस्त वैभव का वर्णन किया। उन सब में सबसे छोटे, युवा ब्राह्मण, जो अपने कुल कोण्डाञ्ञ के नाम से जाने जाते थे, ने बोधिसत्व के उत्तम लक्षणों (लक्खण) की महिमा को देखकर केवल एक उंगली उठाई और निश्चित भविष्यवाणी करते हुए कहा: “गृहस्थ जीवन के बीच इस बालक के लिए कोई उपयुक्त कर्म नहीं है। निश्चय ही यह बालक बुद्ध बनेगा, पर्दों को हटाने वाला, नेत्र खोलने वाला।” यह युवा ब्राह्मण वास्तव में वह था जिसने अपने अंतिम जन्म में आकांक्षा को त्याग दिया था, और इसलिए ज्ञान में अन्य सात ब्राह्मणों से श्रेष्ठ था, और इस प्रकार उसने बोधिसत्व के लिए केवल एक ही नियति देखी, जिसे निश्चित बुद्धत्व के रूप में जाना जाता है, जो ऐसे लक्षणों (लक्खण) से संपन्न थे। परिणामस्वरूप, उसने केवल एक उंगली उठाकर तदनुसार भविष्यवाणी की। फिर, उनका नाम जानने के बाद, ब्राह्मणों ने उन्हें सिद्धार्थ नाम दिया, क्योंकि वे समस्त विश्व के कल्याण के लिए कार्य करेंगे।

2.20 तब वे ब्राह्मण अपने-अपने घर लौट गए और अपने पुत्रों को इस प्रकार संबोधित किया: “प्रिय पुत्रों! हम बूढ़े हो चुके हैं; हम शायद ही देख पाएं कि महान राजा सुद्धोदन के पुत्र को सर्वज्ञता प्राप्त हो रही है या न देख पाएं; जब वह युवा राजकुमार सर्वज्ञता प्राप्त कर ले, तो तुम उसके मार्गदर्शन में संन्यासी बन जाना।” वे सातों व्यक्ति अपने जीवन काल तक जीवित रहे और अपने कर्मों के अनुसार उनका निधन हो गया। केवल युवा ब्राह्मण कोण्डाञ्च ही किसी भी रोग से मुक्त रहे। जब महान पुरुष बड़े हुए, तो उन्होंने महान वैराग्य ग्रहण किया, संन्यासी बन गए, समय आने पर उरुवेला गए और यह निश्चय किया: “यह भूमि वास्तव में रमणीय है; यह वास्तव में गहन ध्यान करने के इच्छुक युवक के लिए परिश्रम करने हेतु उपयुक्त स्थान है।” वहाँ निवास करते समय, उन्होंने सुना कि उस महान पुरुष ने संसार त्याग कर संन्यासी बन गए हैं। वे उन सात ब्राह्मणों के पुत्रों के पास गए और बोले, "लोग कहते हैं कि राजकुमार सिद्धार्थ ने संसार त्याग कर संन्यासी बन गए हैं; वे निश्चित रूप से बुद्ध बनेंगे; यदि तुम्हारे पिता रोगमुक्त हैं, तो उन्हें भी आज ही संसार त्याग कर संन्यासी बन जाना चाहिए; यदि तुम सब भी ऐसा करने के इच्छुक हो, तो आओ! हम सब उस महान ऋषि के संन्यास का अनुसरण करेंगे।" उनमें से सभी एक ही इच्छा पर नहीं टिक सके। उनमें से तीन ने संसार का त्याग नहीं किया। अन्य चार ने संसार त्याग कर ब्राह्मण कंदञ्ञ को अपना नेता बनाया। वे पाँचों व्यक्ति पंचवग्गिव थेरा के नाम से जाने गए।

2.21 उस समय, राजा सुद्धोदन ने पूछा, "क्या देखकर मेरा पुत्र भिक्षु बनेगा?" उत्तर था, "चार अशुभ संकेत।" जब पूछा गया कि कौन से, तो उत्तर था: वृद्ध, बीमार, मृत और भिक्षु। राजा ने कहा, "अब से, ऐसे लोगों को, जो अशुभ संकेत हों, मेरे पुत्र के पास न आने दें; मेरे पुत्र का बुद्ध बनना उचित नहीं है; मैं अपने पुत्र को विश्व-राजा के रूप में देखना चाहता हूँ, जो चार महान द्वीपों और उनके आसपास के दो हजार द्वीपों पर सर्वोच्च संप्रभुता का प्रयोग करे और छत्तीस योजन (लीग) के क्षेत्र में फैले विशाल दल के साथ आकाश में भ्रमण करे।" ऐसा कहने के बाद, ********(पृष्ठ 104), राजा ने युवा राजकुमार की दृष्टि में इन चार प्रकार के शकुनों को आने से रोकने के उद्देश्य से चारों दिशाओं में हर जगह एक बैल-कहाहट (गावुता) की दूरी पर सतर्क रक्षकों को नियुक्त और तैनात किया। उसी दिन, नामकरण समारोह के शुभ स्थान पर एकत्रित हुए अस्सी हजार रिश्तेदारों के परिवारों में से प्रत्येक ने पुत्र को जन्म दिया और वे सब आपस में कहने लगे: "यह बालक बुद्ध या सम्राट बने; हम सब अपने-अपने पुत्रों को इसमें अर्पित करते हैं; यदि वह बुद्ध बने, तो वह खत्तिया वंश के भिक्षुओं के समूह से घिरे हुए विचरण करेंगे; यदि वह सर्वशक्तिमान सम्राट बने, तो वह केवल खत्तिया वंश के युवकों के दल से घिरे हुए और उनका नेतृत्व करते हुए भ्रमण करेंगे।" राजा ने बोधिसत्व की सेवा के लिए सभी दोषों से मुक्त और अत्यंत सुंदर दाइयों को नियुक्त किया। बोधिसत्व अपने चारों ओर बड़ी संख्या में परिचारकों के साथ और अत्यंत कृपा और वैभव के साथ पले-बढ़े।

बालक सिद्धार्थ ध्यान की ओर प्रवृत्त है

2.22. फिर एक दिन, राजा के लिए राजसभा का समारोह (वप्पमंगल) था। उस दिन लोगों ने अपने शहर को स्वर्गिक नगर की तरह सजाया। सभी दास और सेवक नए वस्त्र पहनकर, इत्र और मालाओं आदि से सुसज्जित होकर राजमहल में एकत्रित हुए। राजसभा के समारोह में, ********(पृष्ठ 105), आमतौर पर एक हजार हल इस्तेमाल किए जाते थे। लेकिन उस दिन, आठ सौ हल एक कम थे, हल और बैल, उनकी लगाम और रस्सियाँ चाँदी की बनी थीं; यहाँ तक कि हल चलाने वाली छड़ें भी सोने की चमक से जगमगा रही थीं क्योंकि वे सोने की बनी थीं। राजा अपने विशाल दल से घिरे हुए समारोह में गए, और अपने पुत्र को भी साथ ले गए। समारोह स्थल पर

एक विशाल पत्तों और घनी छाया वाला यूजेनिया का वृक्ष था। उस वृक्ष के नीचे बालक-राजकुमार के लिए पलंग तैयार किया गया था; उसके ऊपर, सोने के तारों से सजा हुआ एक चंदवा लगाया गया; उसके चारों ओर एक परदे की दीवार बनाई गई; पहरेदार तैनात किए गए और बालक राजकुमार को पलंग पर लिटा दिया गया। राजा ने सज-धज कर अपने सेवकों के दल के साथ खेत जोतने के स्थान पर गए। वहाँ राजा ने सोने का हल उठाया; 799 सेवकों ने चाँदी के हल उठाए; और किसानों ने शेष हल उठाए। सभी ने हल उठाए और इधर-उधर जुताई की। राजा कभी इधर तो कभी उधर जाते रहे, और कभी इधर तो कभी इधर। एक ही स्थान पर महान कार्य संपन्न हुआ। बोधिसत्व के चारों ओर बैठी दाइयाँ राजा की इस उपलब्धि को देखने के लिए पर्दे के भीतर से बाहर आईं। दूसरी ओर, शिशु बोधिसात इधर-उधर देखते हुए, क्योंकि उन्हें कोई दिखाई नहीं दिया, जल्दी से उठ खड़े हुए, पालथी मारकर बैठ गए, श्वास लेने और छोड़ने में तल्लीन हो गए और अपने भीतर प्रथम ध्यान का अनुभव किया। दाइयाँ अपना भोजन लेने गई थीं, *******(पृष्ठ 106), इसलिए वे थोड़ी देर रुक गईं। अन्य वृक्षों की छाया दूसरी ओर मुड़ गई थी। परन्तु उस युजेनिया वृक्ष की छाया चारों ओर वृत्ताकार होकर वहीं टिकी रही। दाइयों ने मन ही मन कहा, "हमारे प्रभु के पुत्र अकेले हैं", और जल्दी से पर्दा उठाया और जैसे ही वे अंदर आईं, उन्होंने बोधिसात को पालथी मारकर अपने पलंग पर बैठे हुए और उस अद्भुत चमत्कार को देखा। इसलिए वे गए और राजा को सूचना दी: "महाराज! शिशु राजकुमार इस प्रकार बैठा है; अन्य वृक्षों की छाया दूसरी ओर मुड़ गई है; परन्तु यूजेनिया वृक्ष की छाया स्वयं वृक्ष को घेरे हुए है।" राजा जल्दी से आया, इस अद्भुत चमत्कार को देखा और अपने पुत्र को प्रणाम करते हुए कहा: "मेरे प्रिय पुत्र! यह मेरा तुम्हें दिया गया दूसरा प्रणाम है।"

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.2बी ऐश्वर्य; दु:ख; पुत्र का जन्म
स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

अपदाना भाग - 1.2 - गौतम बुद्ध

1.2b ऐश्वर्यमय जीवन; संसार में दुख देखना; पुत्र राहुल का जन्म

2.23. फिर, समय के साथ, बोधिसत्व सोलह वर्ष के हो गए। राजा ने वर्ष के तीन ऋतुओं के अनुसार बोधिसत्व के लिए तीन महल बनवाए। एक महल नौ मंज़िला, दूसरा सात मंज़िला और तीसरा पाँच मंज़िला था। राजा ने उनकी सेवा के लिए चौरासी हज़ार महिला नर्तकियों और संगीतकारों को भी नियुक्त किया। एक देवता (देव) की तरह, अप्सराओं से घिरे, बोधिसत्व, महान महिमा का आनंद लेते हुए, महिला संगीतकारों द्वारा मनोरंजन करते हुए और सुशोभित और अलंकृत नर्तकियों से घिरे हुए, वर्ष की नियमित ऋतुओं के अनुसार बारी-बारी से तीनों महलों में रहते थे। हालाँकि, राहुल की माता, रानी राहुलमाता, उनकी मुख्य रानी थीं

राजकुमार सिद्धार्थ (बुद्ध) अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं

2.24. जब वे इस प्रकार उत्कृष्ट महिमा का अनुभव कर रहे थे, एक दिन उनके सगे-संबंधियों की सभा में यह कानाफूसी होने लगी: "राजकुमार सिद्धार्थ तो खेल-कूद में ही मग्न रहते हैं, कोई कला नहीं सीखते। जब युद्ध छिड़ेगा और लड़ाई होगी, तब वे क्या करेंगे?" राजा ने बोधिसत्व को बुलवाया और कहा: "मेरे प्रिय पुत्र! तुम्हारे रिश्तेदार कह रहे हैं कि 'राजकुमार सिद्धार्थ तो बिना कोई कला सीखे ही मनोरंजन में लगे रहते हैं'। हे मेरे प्रिय, इस विषय में, शत्रु के आने पर क्या होगा?" उनका उत्तर था: "महाराज! मुझे कोई कला सीखने की

आवश्यकता नहीं है; शहर में ढोल बजाकर यह घोषणा की जाए कि मैं कला में निपुण हूँ, और सभी लोग मेरी कला का प्रदर्शन करेंगे।" राजा ने ऐसा ही किया।

बोधिसत्व ने सभी कुशल और निपुण तीरंदाजों को एकत्रित किया और अपने सगे संबंधियों को बारह प्रकार की कलाएँ सिखाईं। उन्होंने लोगों की एक विशाल सभा के समक्ष ऐसी कला का प्रदर्शन किया जो अन्य तीरंदाजों की क्षमता से परे थी। उनकी इस कला को सरभंग की जन्म कथा (जातक) के संदर्भ में समझना चाहिए। इसके बाद उनके सगे संबंधियों का संशय दूर हो गया।

दुनिया के दुख को देखकर

2.25. फिर एक दिन, बोधिसत्व को उद्यान जाने की इच्छा हुई, तो उन्होंने अपने सारथी को बुलवाया और उसे अपना रथ तैयार करने का निर्देश दिया। सारथी ने कहा, "ठीक है," और उसने उत्तम और बहुमूल्य रथ को सभी प्रकार के अलंकरणों से सजाया और उसमें सफेद कमल की पंखुड़ियों के रंग के चार शुभ घोड़े जोते। फिर वह बोधिसत्व के पास लौट आया। बोधिसत्व उस रथ पर सवार हुए, जो किसी दिव्य महल जैसा लग रहा था, और राजमहल की ओर चल दिए। देवताओं ने आपस में कहा, "युवा राजकुमार सिद्धार्थ के पूर्ण ज्ञानोदय का समय निकट आ रहा है; हम उन्हें अशुभ संकेत दिखाएंगे।" तदनुसार, उन्होंने एक युवा देवता को दिखाया, और उसे बूढ़ा, टूटे दांतों वाला, भूरे बालों वाला, टेढ़ा-मेढ़ा शरीर वाला, हाथ में छड़ी लिए और कांपता हुआ दिखाया। बोधिसत्व और सारथी दोनों ने यह देखा। इसके फलस्वरूप, बोधिसत्व ने महापदना सुत्तंत में वर्णित शैली में सारथी से पूछा, "मेरे मित्र! यह कौन है, हे *******(पृष्ठ 108)? इसके बाल भी अन्यों के समान नहीं हैं।" जब उन्होंने सारथी का उत्तर सुना, तो वे पश्चाताप से भर उठे और बोले, "अफ़सोस, यह कितना लज्जाजनक है! हे जन्म! यह तो सचमुच बुढ़ापा उस व्यक्ति को भी स्पष्ट हो जाता है, हे ******(108), जो कहीं भी जन्मा हो!", और वे वहाँ से मुड़कर अपने महल में चले गए। राजा ने पूछा, "मेरा पुत्र इतनी जल्दी क्यों लौट आया?" उत्तर था, "महाराज! वह इसलिए लौटा क्योंकि उसने एक वृद्ध व्यक्ति को देखा।" लोगों ने यह भी कहा कि वृद्ध व्यक्ति को देखकर वह संसार का त्याग कर देगा। राजा ने कहा: "तुम सब मुझे क्यों बर्बाद कर रहे हो; मेरे बेटे के लिए जल्दी से नाचने वाली युवतियों को तैयार करो; वह राजसी वैभव का आनंद लेते हुए त्याग के बारे में नहीं सोचेगा", उसने पहरे के लिए पहरेदारों की संख्या बढ़ा दी और हर दिशा में आधे मील (योजन) की दूरी पर पहरेदार तैनात कर दिए।

2.26. एक दिन, जब बोधिसत्व पहले की तरह राजमहल की ओर जा रहे थे, तो उन्होंने देवताओं द्वारा विधिवत निर्मित एक बीमार व्यक्ति को देखा। उन्होंने पूछताछ की, हृदय में पश्चाताप हुआ, वापस लौट आए और विधिवत अपने महल में चले गए। राजा ने भी पूछताछ की, पहले बताए अनुसार व्यवस्थाएँ करवाईं, फिर से पहरेदारों की संख्या बढ़ा दी और चारों ओर तीन गाऊटा (गाऊता) की दूरी पर पहरा दिया। इसके बाद, एक दिन, बोधिसत्व पहले की तरह राजमहल की ओर जा रहे थे, तो उन्होंने देवताओं द्वारा विधिवत निर्मित एक मृत व्यक्ति को देखा, पहले की तरह ही पूछताछ की, हृदय में पश्चाताप हुआ, फिर लौट आए और विधिवत अपने महल में चले गए। राजा ने भी पूछताछ की, पहले बताए अनुसार तत्काल किए जाने वाले कार्य की व्यवस्था की, फिर से पहरेदारों की संख्या बढ़ा दी और चारों ओर एक मील (योजन) की दूरी पर पहरा दिया। बाद में, एक दिन, जब बोधिसत्व राजमहल की ओर जा रहे थे, तो उन्होंने पहले की तरह ही एक भिक्षु को उचित वस्त्रों में देखा, जो देवताओं द्वारा विधिवत निर्मित थे। उन्होंने सारथी से पूछा, "मेरे मित्र! यह कौन हैं?" क्योंकि बुद्धों के प्रकट होने जैसी कोई बात नहीं थी, इसलिए सारथी भिक्षु या भिक्षु के गुणों के बारे में कुछ नहीं जानता था; फिर भी, देवताओं के प्रभाव से उसने उत्तर दिया, "हे प्रभु! यह भिक्षु हैं" और भिक्षु के गुणों की प्रशंसा की। बोधिसत्व ने भिक्षु बनने की अपनी इच्छा को जागृत किया और उसी दिन राजमहल की ओर चल पड़े। बोधिसत्व ने कहा, "उन्होंने एक ही दिन में चारों शगुन देख लिए थे।"

उनके पुत्र राहुल का जन्म

2.27. उन्होंने दिन भर वहीं विश्राम किया, शुभ कमल सरोवर में स्नान किया, और सूर्यास्त के समय शुभ पत्थर की शिला पर विराजमान हुए, क्योंकि वे सजने-संवरने की इच्छा रखते थे। तब उनके सेवक विभिन्न रंगों के वस्त्र, आभूषण, मालाएँ, इत्र और श्रृंगार सामग्री लेकर आए और उनके चारों ओर खड़े हो गए। उसी क्षण, सक्का का (बैठने का) आसन गर्म हो गया। उस दिव्य सम्राट ने मन ही मन सोचा, "अत्यंत कौन चाहता है कि मैं इस स्थान से चला जाऊँ?", और जब उन्हें बोधिसत्व की सजने-संवरने की इच्छा का ज्ञान हुआ, तो उन्होंने दिव्य वास्तुकार विस्सकम्मा से कहा, "हे प्रिय विस्सकम्मा! युवा राजकुमार सिद्धार्थ आज मध्यरात्रि को महान संन्यास लेंगे; यह उनका अंतिम श्रृंगार है; आप राजमहल में जाइए और उस महान पुरुष को दिव्य आभूषणों से सजाइए।" उन्होंने "बहुत अच्छा" कहते हुए उत्तर दिया और उसी क्षण दिव्य शक्ति के बल पर बोधिसत्व के पास पहुँचे, स्वयं को उनके नाई के समान रूप में प्रस्तुत किया और बोधिसत्व के सिर को दिव्य वस्त्र से ढक दिया। बोधिसत्व ने उनके हाथ के स्पर्श से ही जान लिया, "यह मनुष्य नहीं, बल्कि युवा देवता हैं।" जैसे ही उनका सिर वस्त्र से ढका गया, उनके जूड़े में रत्न-जड़ित गुणों वाले हजार टुकड़े उठ खड़े हुए। जब उनका सिर दोबारा लपेटा गया, तो दूसरे हजार टुकड़े उठ खड़े हुए। इस प्रकार, दस बार सिर लपेटने पर दस हजार टुकड़े उठ खड़े हुए। इस पर विचार इस प्रकार किया जाना चाहिए: "उनका सिर छोटा है; इतने सारे वस्त्र हैं; फिर भी वे उनके जूड़े में कैसे उठ खड़े होते हैं?" उन सभी वस्त्रों में सबसे बड़ा वस्त्र आंवले के फूल के आकार का था। बाकी सभी छोटे सुगंधित नारंगी रंग के अकादंबका फूलों के आकार के थे। बोधिसत्व का सिर एक 'कुय्या' फूल बन गया, जो रथ के सोने के जाल जैसा दिखता था? (किंचकगवच्छिता)।

2.28. फिर, जब वे अच्छी तरह से सज-धज कर सभी प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित हो गए, तो वे उत्तम रथ पर सवार हुए, जो सभी प्रकार के अलंकरणों से सुशोभित था। उस समय सभी संगीतज्ञ अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे थे, और ब्राह्मण भी "जयानंद" से शुरू होने वाले मंत्रों का जाप करते हुए, प्रशंसा और आशीर्वाद के नारों के साथ, कानों को सुहाने विभिन्न प्रकार के शुभ शब्दों का उच्चारण करते हुए एकत्रित हुए थे। उसी समय, अपनी बहू के पुत्र के जन्म की खबर सुनकर, महान राजा सुद्धोदन ने संदेश भेजा: "आप सभी को यह खबर अवश्य सुना देनी चाहिए ताकि मेरा पुत्र प्रसन्न और आनंदित हो जाए।" बोधिसत्व ने यह सुनकर कहा: "राहु का जन्म हुआ है; बंधन उत्पन्न हो गया है।" राजा ने अपने पुत्र की टिप्पणी के बारे में पूछा और यह सुनकर आदेश दिया: "अब से मेरे पोते को राजकुमार राहुल के नाम से जाना जाएगा।"

2.29. बोधिसत्व भी उत्कृष्ट रथ पर सवार होकर, अपने विशाल दल, अत्यंत प्रसन्न हृदय और मनमोहक सौंदर्य के साथ नगर में प्रवेश किया। उस समय, किसागोतमी नाम की एक युवती, जो अपने आलीशान महल के शिखर पर गई हुई थी, नगर की परिक्रमा कर रहे बोधिसत्व के सुंदर शरीर को देखकर उत्साह से भर उठी और उसने आनंदपूर्वक यह कहा:-

"निश्चित रूप से, वह माँ बहुत खुश होगी;"
वह पिता निश्चित रूप से खुश है।
वह महिला निश्चित रूप से खुश है।
इस तरह का पति किसका है?

2.30. यह सुनकर बोधिसत्व ने मन में यह विचार किया: "इस महिला ने ऐसा कहा: 'ऐसे व्यक्तित्व को देखकर माता का हृदय शांत हो जाता है; पिता का हृदय शीतल हो जाता है और पत्नी का हृदय प्रसन्न हो जाता है।' वास्तव में, जब क्या बुझ जाता है, तब हृदय शीतल कहलाता है?" तब जब उनका मन विकारों (किलेसा) से मुक्त हुआ, तो उन्हें यह विचार आया: "जब काम (राग) की अग्नि बुझ जाती है, तब हृदय शीतल कहलाता है; जब क्रोध (दोष) की अग्नि बुझ जाती है, तब हृदय शांत कहलाता है; जब मोह (मोह) की अग्नि बुझ जाती है, तब हृदय प्रसन्न कहलाता है; जब अहंकार, गलत विचारों आदि जैसे सभी विकारों (किलेसा) की ज्वाला बुझ जाती है, तब हृदय शीतल और प्रसन्न कहलाता है।" मन ही मन कहते हुए, “इस महिला ने मुझे अपनी शुभ सूचना सुनने दी; मैं वास्तव में निर्वाण की खोज में निकला हूँ; आज ही मेरे लिए गृहस्थ जीवन त्यागकर संन्यास लेना और निर्वाण की प्राप्ति करना उचित है; यही मेरी ओर से इस महिला को भेंट है।” उन्होंने अपने गले से एक लाख मूल्य का मोतियों का हार उतारकर किसागोतमी को भेज दिया। वह मन ही मन प्रसन्न हुई और बोली, “राजकुमार सिद्धार्थ मुझसे प्रेम करते हुए यह उपहार लाए हैं।”

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.2 सी सांसारिक जीवन का त्याग

स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

अपदाना भाग - 1.2 : गौतम बुद्ध

1.2सी सांसारिक जीवन का त्याग करके संन्यासी बनना

पृष्ठभूमि: वह मानव शरीर की कुरूपता की सच्चाई देखता है

2.31. बोधिसत्व ******(पृष्ठ 112) अत्यंत वैभव और सौंदर्य से परिपूर्ण अपने आलीशान महल में गए और अपने शानदार पलंग पर लेट गए। वहीं, सभी प्रकार के अलंकरणों से सुसज्जित, नृत्य और गायन की कला में प्रशिक्षित और दिव्य कन्याओं के समान सुगठित शारीरिक रूप और सौंदर्य प्राप्त कर चुकी नर्तकियाँ सभी प्रकार के वाद्ययंत्र लेकर आईं, बोधिसत्व के चारों ओर उचित रूप से बैठ गईं और उन्हें प्रसन्न करने और उनका मनोरंजन करने के लिए नृत्य, गायन और संगीत वादन का प्रदर्शन किया। बोधिसत्व को नृत्य आदि में कोई आनंद नहीं था, क्योंकि उनका मन विकृति (किलेसा) से विरक्त था, इसलिए वे बहुत जल्द सो गए। वे स्त्रियाँ भी लेट गईं और बोलीं, "जिनके लिए हम नृत्य आदि करते हैं, वे सो गए हैं; अब हमें क्यों मेहनत करनी चाहिए?" और उन्होंने अपने हाथों से वाद्ययंत्रों को इधर-उधर बिखेर दिया। सुगंधित तेल के दीपक जल रहे थे। बोधिसत्व जागे, अपने पलंग पर पालथी मारकर बैठ गए और उन स्त्रियों को देखा जो अपने वाद्ययंत्रों को बिखेर कर सो रही थीं - कुछ के मुंह से लार बह रही थी जिससे उनके शरीर गंदे हो गए थे, कुछ दांत पीस रही थीं, कुछ खर्राटे ले रही थीं, कुछ बड़बड़ा रही थीं और बातें कर रही थीं, कुछ के मुंह खुले थे, कुछ के कपड़े उतर गए थे जिससे उनके गुप्तांग दिख रहे थे। उन स्त्रियों की इस कुरूप स्थिति को देखकर बोधिसत्व का मन कामुक सुखों से और भी विरक्त हो गया। उनके महल का वह सुशोभित विशाल कक्ष, जो देवों के राजा सक्का के महल जैसा दिखता था, उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह कच्चे मांस का कब्रिस्तान हो, जहाँ तरह-तरह के शव पड़े हों। उनके तीनों आलीशान महल जलते हुए घर जैसे दिखने लगे। उसने यह चेतावनी जारी की: "वास्तव में खतरनाक, हाय! वास्तव में कष्टदायक, हाय! उसका मन अत्यधिक त्याग की ओर झुका हुआ था।"

राजकुमार सांसारिक जीवन त्याग देता है

2.32. बोधिसत्व ने मन ही मन कहा, "अभी भी मेरे लिए महान त्याग करना उचित है।" वे अपने पलंग से उठे, द्वार के पास गए और पूछा, "यहाँ कौन है?" चन्ना, जो दहलीज पर सिर रखकर लेटा हुआ था, ने उत्तर दिया, "हे प्रभु! मैं चन्ना हूँ।" बोधिसत्व ने कहा, "मैं अब महान त्याग करने का इच्छुक हूँ, मेरे लिए एक घोड़ा तैयार कीजिए।" उसने उत्तर दिया, "ठीक है, हे प्रभु!" और घोड़े के सामान के साथ अश्वशाला की ओर गया। वहाँ उसने कान्थक को मन ही मन कहते देखा, "अब तो मुझे इसी घोड़े पर काठी कसनी चाहिए।" जैसे ही घोड़े पर काठी कसी गई, घोड़े को समझ आ गया, "यह काठी बहुत कसी हुई है। यह वैसी नहीं है जैसी अन्य दिनों में बगीचे आदि में

खेल-कूद के समय कसी जाती थी; अवश्य ही मेरे स्वामी अब महान त्याग करने के इच्छुक हैं।" परिणामस्वरूप, घोड़ा बहुत प्रसन्न हुआ और ज़ोर से हँसने लगा। उसकी हिनहिनाहट की आवाज़ पूरे शहर में फैल सकती थी। लेकिन देवताओं ने उस आवाज़ को दबा दिया और किसी को भी उसे सुनने नहीं दिया।

2.33. बोधिसत्व ने चन्ना को विदा करने के तुरंत बाद, अपने पुत्र को देखने का मन बनाया और पालथी मारकर बैठे हुए अपनी मुद्रा से उठकर राहुल की माता के आवास पर गए और उनके कमरे का दरवाजा खोला। उस समय कमरे में एक सुगंधित तेल का दीपक जल रहा था और प्रकाश दे रहा था। राहुल की माता अपने पलंग पर सो रही थीं, जहाँ चमेली और सुमनमल्लिका के फूल आदि एक अंबना (या अम्मना) मात्रा में बिछे हुए थे, और उन्होंने अपना हाथ अपने शिशु पुत्र के सिर पर रखा हुआ था। बोधिसत्व ने द्वार की दहलीज पर पैर रखा, खड़े-खड़े ही एक नजर डाली और मन ही मन कहा, "यदि मैं महारानी का हाथ हटाकर अपने पुत्र को पकड़ लूँ, तो महारानी जाग जाएँगी; इस प्रकार मेरे जाने में खतरा होगा; केवल बुद्ध बनने के बाद ही मैं आकर अपने पुत्र को देखूँगा।" इसके बाद वे उस आलीशान महल से नीचे उतर गए। हालाँकि, जातक टीका में जो कहा गया है, अर्थात्: "उस समय बालक-राजकुमार राहुल अपने जन्म के सातवें दिन पर थे;" ऐसा कथन अन्य टीकाओं में नहीं मिलता। इसलिए केवल इसी को स्वीकार किया जाना चाहिए।

2.34. इस प्रकार, बोधिसत्व अपने महल के ऊपरी तल से नीचे उतरे, घोड़े के पास गए और बोले: "मेरे प्रिय कांठक! मुझे अब रात के पार न जाने दो, मैं तुम पर निर्भर रहकर बुद्ध बनूँगा और मनुष्य जगत के साथ-साथ देव जगत को भी अमर शांति की ओर ले जाऊँगा।" इसके बाद वे उछलकर कांठक की पीठ पर चढ़ गए। कांठक घोड़ा गर्दन से अठारह हाथ लंबा था; उसकी लंबाई के अनुपात में उसकी चौड़ाई थी; वह बलवान और तेज था, उसका रंग पूरी तरह सफेद था, मानो एक अच्छी तरह से धुले और पॉलिश किए हुए शंख जैसा। यदि वह हिनहिनाता या खुरों की आवाज करता, तो शोर पूरे शहर में फैल जाता; इसलिए, देवताओं ने अपनी दिव्य शक्ति से उसकी हिनहिनाहट को इतना दबा दिया कि कोई उसे सुन न सके और हर बार जब वह कदम रखता, तो उसके सभी कदम उनके हाथों की हथेलियों पर पड़ते। बोधिसत्व पहुँच गए। आधी रात को विशाल द्वार के पास, केंद्र में स्थित उत्कृष्ट घोड़े की पीठ पर सवार होकर, चन्ना घोड़े की पूंछ पकड़े हुए था। उस समय, राजा ने मन ही मन सोचा, "मेरा पुत्र किसी भी स्थिति में नगर द्वार खोलकर बाहर नहीं जा पाएगा", और इस प्रकार व्यवस्था की कि विशाल नगर द्वार के दोनों पल्ले केवल एक हजार पुरुषों द्वारा ही खोले जा सकें। हालांकि, बोधिसत्व में एक हजार करोड़ हाथियों के बराबर शक्ति थी, जैसा कि हाथियों की संख्या से बल और सामर्थ्य की गणना की जाती है। पुरुषों की संख्या के अनुसार, उनमें दस हजार करोड़ पुरुषों के बराबर शक्ति थी। बोधिसत्व ने इस प्रकार सोचा, "यदि द्वार नहीं खुलेगा, तो मैं अठारह हाथ ऊँची नगर की दीवार को फांदकर आगे बढ़ जाऊँगा, अपने सामान से घोड़े (कंठक) को दबाते हुए, जबकि मैं अभी भी उसकी पीठ पर बैठा हूँ, और चन्ना भी उसकी पूंछ पकड़े हुए है।" "यदि द्वार बंद ही रहे, तो मैं दीवार फांदकर आगे बढ़ जाऊँगा, अपने स्वामी राजकुमार को अपने कंधे पर बिठाकर, अपने दाहिने हाथ से घोड़े कांठक को पेट से पकड़कर, उसे अपनी कमर के पास रखकर। घोड़े कांठक ने भी यही सोचा, "यदि द्वार न खुले, तो मैं दीवार फांदकर आगे बढ़ जाऊँगा, अपने स्वामी को अपनी पीठ पर उठाकर, जबकि वे स्वयं को कांठक के साथ बैठाए रखेंगे, और कांठक मेरी पूंछ पकड़कर खड़ा रहेगा।" यदि द्वार बंद ही रहता, तो तीनों में से कोई न कोई अपनी योजना के अनुसार कार्य पूरा कर लेता। परन्तु उस दिन विराजमान दिव्य सत्ता ने द्वार खोल दिया।

2.35 उसी क्षण, दुष्ट मारा ने मन ही मन कहा, 'मैं बोधिसत्व को वापस भेज दूँगा', और आकाश में खड़े होकर बोला, “हे मेरे मित्र, त्याग मत करो! आज से सातवें दिन तुम्हें चक्र रत्न प्रकट होगा। तुम दो हजार छोटे द्वीपों से घिरे चार बड़े द्वीपों पर शासन करोगे, इसलिए वापस लौट आओ, मेरे मित्र!” जब बोधिसत्व ने पूछा कि वह कौन है, तो मारा ने उत्तर दिया कि वह वासवत्ती है। तब बोधिसत्व ने कहा, “हे मारा! मैं जानता हूँ कि मुझे चक्र रत्न प्रकट होगा; मैं प्रभुत्व की इच्छा नहीं रखता; मैं दस हजार विश्व तत्वों में गूंजने वाला बुद्ध बनूँगा।” मारा बोधिसत्व का पीछा करते हुए, परछाई की तरह उनके पीछे-पीछे चल रहा था, अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, और बोला, “अब से, जब भी तुम इंद्रिय सुखों, घृणा या अत्याचार के विचारों में लीन होगे, मुझे पता चल जाएगा।”

2.36. बोधिसत्व ने अपने हाथों में आ चुके विश्वराज के प्रभुत्व को अनादरपूर्वक त्यागकर, थूक की तरह, उच्च सम्मान के साथ नगर से प्रस्थान किया। आषाढ़ माह की पूर्णिमा की रात को, जब उत्तरासाल नक्षत्र चल रहा था, वे नगर से निकले और अपने नगर को पुनः देखने की इच्छा हुई। ठीक उसी क्षण जब उनके मन में ऐसी इच्छा जागी, तो विशाल पृथ्वी कुम्हार के चाक की तरह घूम गई, मानो कह रही हो: "हे महानुभाव! आपको स्वयं पीछे मुड़कर देखने की आवश्यकता नहीं है।" बोधिसत्व नगर की ओर मुख करके खड़े हुए, नगर

को देखा, उस भूमि पर कंठक के वापस लौटने की स्मृति में एक मंदिर स्थापित करने का स्थान दिखाया, कंठक को उस मार्ग की ओर अग्रसर किया जिस पर उसे जाना चाहिए और उच्च सम्मान, अनुग्रह और सुंदरता के साथ आगे बढ़े। ऐसा कहा जाता है कि उस समय दिव्य प्राणियों ने उनके सामने साठ हजार मशालें धारण की हुई थीं - साठ पीछे से, साठ दाहिनी ओर से और साठ बाईं ओर से। इसके अतिरिक्त, ब्रह्मांड की परिधि (चक्कवाला) के चारों ओर अन्य दिव्य प्राणियों ने भी असंख्य मशालें धारण की हुई थीं। इनके बाद, अन्य देवता, नाग, गरुड़ (सुप्पण) आदि उनके पीछे-पीछे दिव्य सुगंध, माला, सुगंधित पाउडर और धूप से उनका सम्मान करते हुए चल रहे थे। आकाश निरंतर परिच्छत्तक और मंदारव के मूंगा फूलों से ऐसे भरा हुआ था जैसे भारी वर्षा ऋतु में घने बादल होते हैं। दिव्य गीतों का सामूहिक गायन हो रहा था। चारों ओर आठ वाद्ययंत्रों, साठ वाद्ययंत्रों और अड़सठ लाख वाद्ययंत्रों की ध्वनियाँ गूंज रही थीं। उनकी आवाज़ तूफ़ानी मौसम के भारी बारिश वाले बादलों से अशांत समुद्र के पानी जैसी और युगंधरा पर्वत की गोद में समुद्र की गर्जना जैसी प्रतीत हुई।

2.37. बोधिसत्व तीस योजन की दूरी तय करके, एक ही रात में तीन राज्यों को पार करते हुए, अनोमा नदी के तट पर पहुँचे। उनका सफर ऊपर वर्णित सुंदरता और भव्यता से भरा था। लेकिन ऐसा क्यों? क्या घोड़ा उस गंतव्य से आगे नहीं जा सकता था? ऐसा नहीं था कि वह नहीं जा सकता था। वास्तव में, घोड़ा अपने अक्ष पर स्थित एक पूरे ब्रह्मांड की परिक्रमा कर सकता था, मानो उसकी सीमा पर चल रहा हो, और सुबह के भोजन से पहले ही लौट आता, ताकि वह स्वयं द्वारा प्राप्त भोजन खा सके। लेकिन उस समय, आकाश में विराजमान देवताओं, नागों और गरुड़ पक्षियों आदि द्वारा भेजे गए सुगंधित फूलों की मालाओं के उलझे हुए जाल को काटने और जांघों तक पूरी तरह से ढके शरीर को उनसे अलग करने में बहुत समय लग रहा था। इसीलिए घोड़ा केवल तीस योजन की दूरी तय कर पाया। तब बोधिसत्व नदी के किनारे खड़े होकर चन्ना से इस प्रकार पूछा, "इस नदी का नाम क्या है?" उत्तर मिला, "हे महाराज, इसका नाम अनोमा है!" बोधिसत्व ने घोड़े को अपनी एड़ी से छूते हुए संकेत दिया, "हमारा त्याग भी सर्वोच्च (अनोमा) होगा।" तब घोड़ा उछलकर नदी के उस किनारे पर खड़ा हो गया जो आठ उसभा चौड़ा था।

वह अपने बाल और दाढ़ी काटता है

2.38. बोधिसत्व घोड़े की पीठ से उतरे, चांदी की पंखुड़ियों जैसी दिखने वाली रेत की सतह पर खड़े हुए और चन्ना को इस प्रकार संबोधित किया: "मेरे प्रिय मित्र चन्ना! तुम मेरे आभूषण और मेरे घोड़े कंठक को अपने साथ घर ले जाओ, मैं भिक्षु बनने जा रहा हूँ।" बोधिसत्व ने कहा, "तुम्हें भिक्षु बनने की अनुमति नहीं है, तुम घर जाओ," और उसे तीन बार मना किया, अपने आभूषण और घोड़े कंठक को उसे सौंप दिया और इस प्रकार सोचा: "मेरे ये बाल भिक्षु के लिए उपयुक्त नहीं हैं; किसी अन्य व्यक्ति द्वारा बोधिसत्व के बाल काटना उचित नहीं है। इसके बाद, उन्होंने मन ही मन कहा, "मैं स्वयं अपनी तलवार से अपने बाल काट लूँगा।" उन्होंने अपने दाहिने हाथ से तलवार पकड़ी, अपने बाएं हाथ से अपने बालों की चोटी और लट को पकड़ा और अपने बाल काट डाले। उनके बाल दो उंगलियों की लंबाई के छह हिस्सों में बंट गए, दाहिनी ओर से मुड़कर उनके सिर से चिपक गए। अपने पूरे जीवन में, उनके बालों की लंबाई इतनी ही रही। उनकी दाढ़ी भी उसी रूप और स्वरूप की थी। बाल और दाढ़ी मुंडवाने की कोई आवश्यकता नहीं थी। बोधिसत्व ने अपनी लट और पगड़ी को पकड़कर आकाश में उछाल दिया और कहा, "यदि मैं सर्वज्ञ बुद्ध बन जाऊँ, तो ये आकाश में ही रहें; यदि नहीं, तो ये पृथ्वी पर गिर जाएँ।" वह लट इतनी ऊँचाई तक उठी।
एक लीग (योजन) के आकार का केश-गुच्छा आकाश में बना रहा। देवों के राजा सक्का ने अपनी दिव्य दृष्टि से उन्हें देखा, रत्नजड़ित एक लीग (योजन) के आकार के ताबूत में केश-गुच्छा प्राप्त किया और तावतिंस स्वर्ग में एक मंदिर स्थापित किया, जिसे चुलामणि मंदिर के नाम से जाना जाता है।

सुगंधित बालों के इस शीर्ष भाग को काटकर
बेहतरीन इत्र, शाक्य वंश के नायक ने इसे फेंक दिया।
आकाश में ऊपर। हजार आंखों वाला देवों का राजा
उसने इसे अपने सिर पर एक उत्कृष्ट रत्नजड़ित वस्त्र में स्वीकार किया।
ताबूत।

2.39. फिर, बोधिसत्व ने सोचा: "ये काशी वस्त्र मेरे भिक्षुत्व के साथ ठीक नहीं लगते।" तब, महान ब्रह्मा घटिकार, जो बुद्ध कस्सपा के समय उनके पुराने सहयोगी थे, दो बुद्धों (बुद्धंतर) के बीच के अंतराल में वृद्धावस्था प्राप्त न करने के कारण, और उनके मित्र होने के कारण, विचार किया: "आज, मेरे सहयोगी ने महान त्याग किया है; मैं उनके पास एक भिक्षु की आवश्यक वस्तुएँ लेकर जाऊँगा।"

"तीन वस्त्रों का एक सेट और एक भिक्षापात्र,"
एक रेज़र, सुई और एक बेल्ट, जो एक साथ
पानी छानने वाली छलनी के साथ, उन आठों की तरह बन जाओ
जो एक भिक्षु के लिए बिल्कुल उपयुक्त हैं।"

महान ब्रह्मा ने ये आठ आवश्यक वस्तुएँ लाकर उन्हें प्रदान कीं। बोधिसत्व ने अरहत के वस्त्र धारण किए, परम श्रेष्ठ भिक्षु का रूप धारण किया और चन्ना से कहा, "प्रिय चन्ना! मेरी ओर से, कृपया मेरे माता-पिता को मेरे अच्छे स्वास्थ्य के बारे में सूचित करें," और उन्हें विदा किया। चन्ना ने बोधिसत्व को प्रणाम किया, उनकी परिक्रमा की और प्रस्थान किया। परन्तु घोड़ा कंठक, जैसे ही उसने चन्ना से परामर्श कर रहे बोधिसत्व के शब्द सुने, उसने सोचा, "अब मुझे अपने स्वामी को पुनः देखने का कोई अवसर नहीं मिलेगा," और अपने दुःख को सहन न कर पाने के कारण बोधिसत्व की दृष्टि से ओझल होते ही हृदय विदारक हो गया और तावतिंसा स्वर्गलोक में कंठक नामक एक युवा देवता के रूप में पुनर्जन्म लिया। सबसे पहले तो चन्ना को ही एक ही दुःख था। हालांकि, कांठका की मृत्यु के कारण उन्हें दूसरा दुख हुआ और वे रोते-बिलखते अपने गृह नगर लौट गए।

मगध के राजा बिंबिसार उससे वचन लेते हैं
अब भिक्षु बन चुके बोधिसत् ने उसी क्षेत्र में स्थित औनपिया नामक आम के बाग में सात दिन त्याग का आनंद लिया। फिर वे पैदल ही एक दिन में तीस मील (योजन) की दूरी तय करके राजगृह में प्रवेश कर गए। नगर में प्रवेश करने के बाद वे एक के बाद एक घरों की कतार में भिक्षा मांगने लगे। बोधिसत् के सुंदर रूप को देखकर पूरे नगर में हलचल मच गई, ठीक वैसे ही जैसे धनपालक के राजगृह में प्रवेश करने पर और असुरों के देवताओं के नगर में प्रवेश करने पर हुई थी। राजपत्रकार राजा के पास गए और उन्हें सूचना दी: "महाराज! ऐसा व्यक्ति *******(पृष्ठ 120) शहर में भिक्षा मांगने के लिए घूम रहा है; हमें नहीं पता कि यह व्यक्ति देवता है, मनुष्य है, नाग है, गरुड़ है या कुछ और है।" राजा ने अपने महल की छत पर खड़े उस महान व्यक्ति को देखा, वे आश्चर्यचकित और विस्मित हो गए और अपने सैनिकों को आदेश दिया: "हे मेरे सैनिकों! तुम सब जाओ और जाँच करो; यदि वह व्यक्ति अमानव है, तो वह शहर से बाहर जाकर गायब हो जाएगा; यदि वह देवता है, तो वह आकाश में चला जाएगा; यदि वह नाग है, तो वह पृथ्वी में समा जाएगा; यदि वह मनुष्य है, तो वह भीख मांगकर प्राप्त भोजन का आनंद लेगा।"

2.41. महान पुरुष ने मिश्रित अनाज इकट्ठा किया और यह जानकर कि "इतना मेरे जीवनयापन के लिए पर्याप्त है", वे उसी द्वार से नगर से बाहर निकल गए जिससे वे प्रवेश किए थे। वे पाण्डव पर्वत की छाया में पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ गए और भोजन करने लगे। तभी वे बीमार पड़ गए, उनकी आंतें मानो मुड़ गईं और मुँह से बाहर निकलने के संकेत देने लगीं। इसके बाद, यद्यपि वे उस घृणित भिक्षाभोजन से व्याकुल थे क्योंकि उन्होंने अपने जीवनकाल में कभी ऐसा भोजन नहीं देखा था, फिर भी उन्होंने स्वयं को इस प्रकार समझाया: "हे सिद्धार्थ! यद्यपि आप ऐसे परिवार में जन्मे हैं जहाँ भोजन और पेय आसानी से उपलब्ध हैं, और जहाँ तीन साल पुराने सुगंधित जौ (साली) का भोजन सभी प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ खाया जाता है, फिर भी फटे-पुराने वस्त्र पहने एक संन्यासी को देखकर आपने मन में सोचा, 'मैं भी कब ऐसा होऊंगा, भिक्षा मांगने जाऊंगा और भोजन करूंगा? मुझे वह अवसर कब मिलेगा?' और आपने संन्यास ले लिया; अब आप यह (उल्टी) क्यों कर रहे हैं?" इस प्रकार स्वयं को समझाने के बाद, वे सामान्य हो गए और उन्होंने अपने भोजन का भरपूर आनंद लिया।

2.42. उस घटना को देखकर राजपत्रकार वहाँ गए और राजा को सूचना दी। दूतों की सूचना सुनकर राजा शीघ्र ही नगर छोड़कर बोधिसत्व के समक्ष उपस्थित हुए, उनके आशय से प्रसन्न हुए और अपना समस्त प्रभुत्व बोधिसत्व को समर्पित कर दिया। बोधिसत्व ने कहा, "हे महाराज! मुझे भौतिक सुख-सुविधाओं और इंद्रिय सुखों की कोई इच्छा नहीं है; मैंने परम और पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति के लिए वैराग्य का मार्ग अपनाया है।" राजा ने अनेक तरीकों से बार-बार विनती की, फिर भी वे बोधिसत्व को वश में नहीं कर सके, अतः उन्होंने

उनसे यह वचन लिया: “निश्चिततः आप बुद्ध बनेंगे; बुद्ध बनने के बाद सर्वप्रथम मेरे राज्य में आना।” यहाँ इसका संक्षिप्त विवरण दिया गया है। हालांकि, विस्तार से कहें तो, इस मामले को पब्बज्जासुत्त को देखकर समझा जा सकता है, जो इस प्रकार शुरू होता है: "मैं आध्यात्मिक दृष्टि (चक्खुमा) के स्वामी द्वारा किए गए त्याग और भिक्षु बनने की घोषणा करूंगा", साथ ही इसकी व्याख्या भी।

पहले शिक्षक अलारकलम और फिर दूसरे शिक्षक उद्दक रामपुत्ता

2.43. बोधिसत्व ने राजा को वचन देकर स्वयं विचरण किया, आलारा कालामा और राम के पुत्र उदक के पास पहुँचे, प्रभावी ध्यान (समापत्ति) की क्रमिक ऊँचाइयों को प्राप्त किया, परन्तु उन्होंने समापत्ति की उस उपलब्धि को यह कहते हुए नहीं रखा: "यह बुद्धत्व का मार्ग नहीं है," बल्कि महान प्रयास (महापधान) करने की इच्छा से, अपनी शक्ति और ऊर्जा को देवताओं के निवास सहित संसार को प्रदर्शित करने के लिए, उरुवेला गए और स्वयं से यह कहते हुए: "यह भूमि वास्तव में रमणीय है," वहाँ भी निवास किया और अपना महान प्रयास (महापधान) किया।

वह अत्यधिक तपस्या और संयम का पालन शुरू करता है।

कोण्डञ्ञ के नेतृत्व में पंचवग्गी समूह के वे सदस्य, जो भिक्षा मांगने के लिए गांवों, जिलों और राजनगरों में भटक रहे थे, बोधिसत्व के पास पहुंचे। तब वे बोधिसत्व के निकट पड़ोसी बन गए और उनकी सेवा में लग गए, जैसे कि मठ परिसर की सफाई करना आदि। बोधिसत्व छह वर्षों तक महापधान करते रहे और मन ही मन कहते रहे, "वे अब बुद्ध बनेंगे! वे अभी बुद्ध बनेंगे!" वास्तव में, बोधिसत्व ने अपना जीवन केवल एक तिल या चावल के दाने पर व्यतीत किया और मन ही मन कहते रहे, "मैं कठिन कर्म (दुक्कार) को उसकी चरम सीमा तक करूंगा।" उन्होंने सभी प्रकार के पोषण का त्याग कर दिया। देवताओं ने उनके शरीर के बालों के छिद्रों के माध्यम से दिव्य पोषण भेजकर अपना योगदान दिया।

2.44. फिर पोषण की कमी और अत्यधिक पीड़ादायक स्थिति के कारण उनके शरीर का सुनहरा रंग भी काला पड़ गया। एक महान व्यक्तित्व के सभी बत्तीस प्रमुख लक्षण मिट गए। एक बार जब वे श्वास ध्यान में लीन थे, तो तीव्र पीड़ा से व्याकुल होकर वे बेहोश हो गए और मठ के अंतिम छोर पर गिर पड़े। तब कुछ देवताओं ने उनके बारे में कहा, "भिक्षु गौतम मर गए हैं।" अन्य ने टिप्पणी की, "ये तो केवल अरहतत्व में ही हैं।" उस समय, जिन देवताओं को लगा कि वे मर गए हैं, उन्होंने जाकर महान राजा सुद्धोदन को सूचित किया, "आपका पुत्र मर गया है।" राजा ने पूछा, "क्या मेरे पुत्र की मृत्यु बुद्ध बनने के बाद हुई या बुद्ध बने बिना?" उनका उत्तर था, "वे बुद्ध बनने वाले नहीं थे; वे उस स्थान पर गिर पड़े जहाँ वे गहन परिश्रम (पधाना) कर रहे थे।" यह सुनकर राजा ने कहा, "मुझे तुम्हारी कहानी पर विश्वास नहीं है; मेरे पुत्र की मृत्यु बोधि प्राप्त किए बिना और बुद्ध बने बिना संभव नहीं है।" ऐसा कहकर उन्होंने इस खबर को नकार दिया। लेकिन राजा ने इस खबर पर विश्वास क्यों नहीं किया? क्योंकि उन्होंने कालदेवल नामक ऋषि को प्रणाम करने के दिन और युजेनिया वृक्ष के चरणों में हुए चमत्कारों को स्वयं देखा था।

उन्हें उनके साथी संन्यासियों ने त्याग दिया

2.45 फिर जब बोधिसत्व होश में आने के बाद उठे, तो उन्हीं देवताओं ने जाकर राजा सुद्धोदन को सूचित किया: “महाराज! आपका पुत्र रोगमुक्त है।” राजा ने उनसे कहा: “मैं जानता हूँ कि मेरा पुत्र नहीं मरा।” जब महापुरुष लगातार छह वर्षों तक कठिन कर्म करते रहे, तब आकाश में एक ऐसी घटना घटी जो गांठदार वस्तुएँ बनाते समय की तरह थी। मन ही मन यह कहते हुए कि “यह कठिन कर्म बुद्धत्व की ओर ले जाने वाला मार्ग नहीं है,” बोधिसत्व छोटे-बड़े गाँवों में भिक्षा मांगने गए और पर्याप्त भोजन लेकर लौटे। इसके बाद, उनके महापुरुषत्व के बत्तीस लक्षण प्रकट हुए। उनका शरीर भी स्वर्णिम रंग का हो गया। पांच भिक्षुओं के समूह ने यह टिप्पणी करते हुए कहा, “छह वर्षों तक कठिन कर्म करने के बावजूद भी यह व्यक्ति सर्वज्ञता को ठीक से प्राप्त नहीं कर सका; अब जब यह छोटे-बड़े गांवों में भिक्षा मांगने के लिए भटक रहा है, तो क्या यह सर्वज्ञता प्राप्त कर पाएगा? यह व्यक्ति अब भरपूर जीवन जी रहा है और इसने कठिन परिश्रम का त्याग कर दिया है; हमारे लिए तो यह व्यक्ति ओस की बूंद के समान है, जैसे सिर धोने की इच्छा रखने वाले के लिए; इससे हमें क्या लाभ है?” इस समूह ने उस महान व्यक्ति को त्याग दिया, अपने-अपने भिक्षापात्र और वस्त्र लिए, अठारह मील (योजना) की लंबी यात्रा पर निकल पड़े और इसिपताना (बनारस के निकट) में प्रवेश किया।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.2डी ज्ञानोदय

स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान भाग - 1.2 : गौतम बुद्ध

1.2डी ज्ञानोदय, मारा (शैतान स्वामी) पराजित

2.46. उस समय, उरुवेला के बड़े सेनानी गाँव में सेनानी नाम के एक गृहस्थ के घर में सुजाता नाम की एक युवती का जन्म हुआ। जब वह वयस्क हुई, तो उसने निग्रोध बरगद के वृक्ष के सामने यह मनोकामना की, "यदि मैं अपने समान सामाजिक प्रतिष्ठा वाले किसी परिवार में जाऊं और पहली ही गर्भावस्था में पुत्र प्राप्त कर लूं, तो मैं अगले वर्ष एक लाख (कहापना) बलि चढ़ाऊंगी।" उसकी यह मनोकामना पूरी हुई। विशाखा माह की पूर्णिमा के दिन, जब परमेश्वर की कृपा से छह वर्ष के कठिन कर्म पूरे हो चुके थे, तब उस स्त्री ने अपने हजार दूध देने वाली गायों को गन्ने और मुलेठी के वन में चरने के लिए छोड़ दिया। इससे पहले उसने अपनी पाँच सौ गायों को दूध पिलाया, फिर ढाई सौ गायों को दूध पिलाया। इस प्रकार उसने दूध से बनी मिठाई (खीरापरिवत्तना) तैयार की, जिसका उद्देश्य दूध को गाढ़ा, मीठा और स्वादिष्ट बनाना था, जब तक कि उसकी आठ गायें सोलह गायों का दूध न पी लें। विशाखा माह की पूर्णिमा के दिन, उस स्त्री ने मन ही मन कहा, "मैं सुबह जल्दी ही बलि चढ़ाऊँगी", और रात ढलने के बाद जब वह पल भर के लिए पल रही थी, तब उसने अपने आठों गायों का दूध दुहा। दूध पीने वाले बछड़े अपनी दूध देने वाली गायों के थनों के पास नहीं आए। जैसे ही थनों के नीचे नए बर्तन रखे गए, दूध की धाराएँ स्वतः ही बहने लगीं। ऐसा चमत्कार देखकर सुजाता ने अपने हाथों से दूध ग्रहण किया, उसे एक नए बर्तन में इकट्ठा किया, अपने हाथों से आग जलाई और दूध को उबालना शुरू कर दिया।

2.47. जब वह दूध-चावल पका रही थी, तब बड़े-बड़े बुलबुले उठे और परिक्रमा करने लगे। एक बूँद भी बाहर नहीं गिरी। चूल्हे से जरा सा भी धुआँ नहीं निकला। उस समय जगत के चार दिव्य रक्षक आए और चूल्हे की रखवाली करने लगे। महान ब्रह्मा ने उस पर छत्र धारण किया। सक्का अपने साथ मशाल लाकर आग प्रज्वलित कर रहे थे। चारों महान द्वीपों और आसपास के दो हजार छोटे द्वीपों के देवता अपने साथ मनुष्यों और देवताओं का लाभकारी पोषक तत्व (ओझा) अपनी दिव्य शक्ति से लाए, जैसे मधुमक्खी के छत्ते से शहद निचोड़कर निकाला जाता है, और उसे दूध-चावल पकाने के बर्तन में डाल दिया। अन्य अवसरों पर, देवताओं ने प्रत्येक निवाले में पोषक तत्व का योगदान दिया। परन्तु पूर्ण बुद्धत्व प्राप्ति के दिन और उनके महान परलोकवास के दिन, उन्होंने पोषक तत्व सीधे उबलते हुए बर्तन में डाल दिया। एक ही दिन में वहां इतने सारे अद्भुत चमत्कार होते देख सुजाता ने अपनी दासी पुन्णा से कहा, "प्यारी पुन्णा! आज हमारे देवता अत्यंत प्रसन्न हैं। मैंने पहले कभी इतने लंबे समय में ऐसा अद्भुत चमत्कार नहीं देखा। जल्दी जाओ और देवलोक में उपस्थित हो जाओ।" दासी ने अपनी बात मानते हुए कहा, "ठीक है, मेरी स्वामिनी," और जल्दी से वृक्ष के चरणों की ओर चल पड़ी।

लाइफ ऑफ बुद्धा 017
लाइफ ऑफ बुद्धा 018
बुद्ध का जीवन 019
बुद्ध का जीवन 020
बुद्ध का जीवन 021

2.48. उस रात बोधिसत्व ने पाँच महान स्वप्न देखे और उनका अध्ययन करते हुए उन्होंने निश्चय किया: "निःसंदेह, मैं आज बुद्ध बनूँगा।" उस रात के अंत में, स्नान करने के बाद, भिक्षाटन के समय की प्रतीक्षा करते हुए, वे उस वृक्ष के चरणों में आकर बैठ गए और अपनी किरणों से पूरे क्षेत्र को प्रकाशित कर दिया। तभी, दासी पुन्णा वहाँ पहुँची और उसने बोधिसत्व को वृक्ष के चरणों में पूर्व दिशा को प्रकाशित करते हुए देखा; उनके शरीर से निकलने वाली किरणों से पूरा वृक्ष स्वर्ण रंग का हो गया। ऐसा दृश्य देखकर उसके मन में यह विचार आया: "आज हमारे देवत्व वृक्ष से अवतरित हुए हैं और मुझे लगता है कि वे अपने हाथों से बलि का अर्पण ग्रहण करने के लिए बैठे हैं," और भावविभोर होकर वह शीघ्र ही वापस गई और अपनी स्वामिनी सुजाता को यह बात बताई।

बुद्ध का जीवन 022

2.49. सुजाता की बात सुनकर वह प्रसन्न हो उठी और अपनी दासी को पुत्री के योग्य सभी प्रकार के आभूषण भेंट करते हुए बोली, "आज से ही तुम मेरी सबसे बड़ी पुत्री का दर्जा ग्रहण कर लो।" यद्यपि बुद्धत्व प्राप्ति के दिन एक लाख मूल्य का स्वर्ण पात्र प्राप्त करना उचित था, इसलिए उसके मन में यह विचार आया कि वह अपना दूध-चावल स्वर्ण पात्र में अर्पित करे। उसने एक लाख मूल्य का स्वर्ण

पात्र मंगवाया और उसमें दूध-चावल डालने की इच्छा से उसने बर्तन को झुकाया। सारा दूध-चावल कमल के पत्ते से जल की तरह नीचे बहकर पात्र में गिर गया। केवल एक ही पात्र भर पाया। उसने उस कटोरे को दूसरे कटोरे से ढक दिया, उसे सफेद कपड़े से लपेट दिया, खुद को तरह-तरह के आभूषणों से सजाया, उस कटोरे को अपने सिर पर रखा, धूमधाम से निग्रोध बरगद के पेड़ की तलहटी में गई, बोधिसत्व के दर्शन किए, अत्यंत प्रसन्न हुई, उन्हें वृक्ष देवता मानकर, जहाँ से उसने उन्हें देखा था, वहाँ से झुकते-झुकते हुए कटोरा अपने सिर से नीचे उतारा, उसे खोला, सुगंधित फूलों से महकता हुआ जल सोने के पात्र में निकाला, और बोधिसत्व के पास जाकर खड़ी हो गई। महान ब्रह्मा घटिकार द्वारा दिया गया मिट्टी का कटोरा, जो इतने लंबे समय तक बोधिसत्व का साथ नहीं छोड़ा था, उसी क्षण दृष्टि से ओझल हो गया। मिट्टी का कटोरा न देखकर, बोधिसत्व ने अपना दाहिना हाथ बढ़ाया और जल ग्रहण किया। सुजाता ने दूध-चावल और सोने का कटोरा बोधिसत्व के हाथ में रख दिया। उस महान पुरुष ने सुजाता की ओर देखा। उसने ध्यानपूर्वक समझा कि क्या करना आवश्यक है और प्रणाम करते हुए कहा, "हे प्रभु! मैं अपना सारा बलिदान आपको अर्पित करती हूँ; कृपया इसे स्वीकार करें और जो चाहें करें।" वह वहाँ से विदा हो गई, एक लाख (कहापन) मूल्य के सोने के कटोरे को एक सूखे पत्ते की तरह त्यागते हुए बोली, "जिस प्रकार मेरी इच्छा पूरी हुई है, उसी प्रकार आपकी भी पूरी हो।"

2.50. बोधिसत्व अपने स्थान से उठे, वृक्ष की परिक्रमा की, नेरंजारा नदी के तट पर गए, अपने साथ स्वर्ण का प्याला लेकर। वहाँ सुपतिष्टि नामक एक स्नानस्थल था, जहाँ लाखों बोधिसत्व स्नान करते थे, जिन्होंने बुद्ध बनने के लिए पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के दिन स्नान किया था। बोधिसत्व ने स्वर्ण का प्याला उस स्नानस्थल के तट पर रखा, सुस्थापित घाट से नीचे उतरे, स्नान किया, लाखों बुद्धों के अर्हत के प्रतीक माने जाने वाले वस्त्र को धारण किया, पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठ गए, और दूध-चावल को एक पके ताड़ के फल के आकार के उनतालीस टुकड़ों में बाँटकर सारा मीठा अर्ध-तरल दूध-चावल खा लिया। बुद्ध बनने के बाद, जब वे बोधि वृक्ष की छत पर सात सप्ताह तक रहे, तब उस दूध-चावल ने उनतालीस दिनों तक उनका पोषण किया। इतने लंबे समय तक उन्होंने किसी अन्य प्रकार का भोजन नहीं लिया। न स्नान किया, न मुख धोया, न ही शरीर को शुद्ध किया। उन्होंने अपना समय ध्यान के आनंद और निर्वाण की ओर ले जाने वाले मार्ग की सफलता की प्राप्ति के सुख में व्यतीत किया। दूध-चावल का भोजन करने के बाद, उन्होंने अपने हाथ में सोने का कटोरा लिया और कहा: "यदि मैं आज बुद्ध बनूँ, तो इस कटोरे को नदी के विपरीत दिशा में जाने दो; यदि मैं बुद्ध न बनूँ, तो इसे नदी के विपरीत दिशा में जाने दो।" उन्होंने कटोरे को नदी में फेंक दिया। वह कटोरा नदी की धारा से अलग होकर नदी के मध्य में गया, फिर नदी के मध्य में एक तेज टट्टू की तरह अस्सी हाथ की दूरी तक ऊपर की ओर गया, नदी के एक मोड़ पर डूब गया, नागराज काल के निवास स्थान पर पहुँचा, तीनों बुद्धों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कटोरे से टकराया और "किली, किली" जैसी चरमराहट भरी झनझनाहट की आवाज़ करते हुए उन तीनों के नीचे धंस गया। नागराज काल ने वह आवाज़ सुनकर मन ही मन कहा, "कल एक बुद्ध का जन्म हुआ था; "आज एक और बुद्ध का जन्म हुआ है," उन्होंने सैकड़ों शब्दों की प्रशंसा करते हुए कहा। कहा जाता है कि जब वे एक योजन और तीन गावूत के बराबर समय में पृथ्वी पर विराजमान हुए, तो उन्हें वह समय आज या कल जैसा लगा।

2.51. बोधिसत्व ने नदी के किनारे खिले हुए साल के वन में दिन बिताया और शाम को जब फूल अपनी डंठलों से गिरने लगे, तो वे देवताओं द्वारा सजे आठ उशब चौड़े मार्ग से सिंह के समान प्रज्वलित होकर बोधि वृक्ष की ओर चल पड़े। नाग, राक्षस और गरुड़ आदि ने उन्हें इत्र, फूल आदि भेंट करके उनका सम्मान किया। वहाँ दिव्य गायन हुआ। दस हजार जगत तत्व एक ही सुगंध, एक ही फूलों की माला और एक ही बधाई के रूप में प्रकट हुए। उसी समय, सोत्थिया नामक एक घास इकट्ठा करने वाला विपरीत दिशा से अपने द्वारा एकत्रित घास लेकर आ रहा था। उसने बोधिसत्व के इस स्वरूप को देखा और उन्हें आठ मुट्ठी घास भेंट की। बोधिसत्व ने घास की भेंट स्वीकार की, बोधि वृक्ष के चबूतरे पर चढ़े और उसके दक्षिण की ओर उत्तर की ओर मुख करके खड़े हो गए। उस क्षण, दक्षिणी ब्रह्मांड (चक्कवाल्ला) डूब गया और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह नीचे अविचि नरक में पहुँच रहा हो। उत्तरी ब्रह्मांड ऊपर उठ गया और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह ऊपर ब्रह्मा के सर्वोच्च लोक में पहुँच रहा हो। बोधिसत् ने कहा, "मुझे लगता है, यह स्थान बुद्धत्व (संबोधि) प्राप्त करने का स्थान नहीं है।" वे वृक्ष की परिक्रमा करते हुए पश्चिम दिशा की ओर गए और पूर्व की ओर मुख करके खड़े हो गए। इसके परिणामस्वरूप, पश्चिमी ब्रह्मांड धंस गया और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह अविची नरक में पहुँच रहा हो। पूर्वी ब्रह्मांड ऊपर उठ गया और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह ब्रह्मा के सर्वोच्च लोक में पहुँच रहा हो। कहा जाता है कि जहाँ भी वे खड़े हुए, विशाल पृथ्वी एक बड़ी गाड़ी के पहिए की तरह ऊपर-नीचे होने लगी, जो परिधि के किनारे पर टिकी हो और उसके केंद्रक पर खड़ी हो। बोधिसत् ने कहा, "मुझे लगता है, यह स्थान बुद्धत्व (संबोधि) प्राप्त करने का स्थान नहीं है।" वे वृक्ष की परिक्रमा करते हुए उत्तर दिशा की ओर गए और दक्षिण की ओर मुख करके खड़े हो गए। इसके फलस्वरूप, उत्तरी ब्रह्मांड धंस गया और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह अविची नरक में पहुँच रहा हो। दक्षिणी ब्रह्मांड ऊपर की ओर उठा और ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह ब्रह्मा के सर्वोच्च लोक तक पहुँच रहा हो। बोधिसत्व ने कहा, "मुझे

लगता है कि यह स्थान बुद्धत्व (संबोधि) प्राप्ति का स्थान नहीं हो सकता," और वृक्ष की परिक्रमा करते हुए पूर्व दिशा की ओर चले गए और पश्चिम की ओर मुख करके खड़े हो गए। लेकिन वृक्ष के पूर्व की ओर सभी बुद्धों के पद्मासन का स्थान था। वह स्थान न तो काँपा और न ही हिल रहा था। बोधिसत्व को यह जानकर आश्चर्य हुआ, "यह सभी बुद्धों का अपरिहार्य स्थिर स्थान है, जहाँ दुराचार (किलेसा) का पिंजरा नष्ट हुआ था," और उन्होंने घास की उन मुट्ठियों को उनके सिरों से पकड़कर हिलाया। वहीं, चौदह हाथ ऊँचा एक सिंहासन अस्तित्व में आया। वास्तव में, घास की वे मुट्ठियाँ इस प्रकार व्यवस्थित हो गईं कि वे एक उपयुक्त आसन बन गईं। घास किस प्रकार एक उपयुक्त आसन बनी, यह प्रश्न उठता है।किसी अच्छे विशेषज्ञ के लिए भी इसे अपने मन में कल्पना करना, इस पर कोई ग्रंथ लिखना या इसे लिखित रूप में दर्ज करना असंभव था और आज भी असंभव है। बोधिसत्व ने बोधि वृक्ष के तने को अपना आधार बनाया, पूर्व दिशा की ओर मुख किया और दृढ़ निश्चय करते हुए कहा:

"अपनी त्वचा और नसों को ही स्वेच्छा से रहने दो और

हड्डियाँ बनी रहें; मेरे शरीर में मांस और रक्त रहने दो

शरीर पूरी तरह से सूख जाए, बिना कोई निशान छोड़े।

निशान; मैं अपने इस क्रूस को नहीं तोड़ूंगा-

जब तक और जब तक पैरों की मुद्रा

मुझे पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया है।

पूर्ण बुद्ध बनने के लिए।"

और हार न मानने की मुद्रा में अडिग होकर पालथी मारकर बैठ गया, सौ वज्रपात होने पर भी अविचलित ********(पृष्ठ 130)

बुद्ध का जीवन 023
2.52. उस समय, दुष्ट मारा ने मन ही मन कहा, "राजकुमार सिद्धार्थ मेरे प्रभाव से बाहर जाना चाहते हैं; अब मैं उन्हें अपनी शक्ति से बाहर नहीं जाने दूँगा।" वह मारा की सेना के पास गया, उन्हें इस मामले की सूचना दी, मारा का उद्घोष करवाया और अपनी सेना को साथ लेकर निकल पड़ा। मारा की सेना उसके आगे बारह योजन, उसके दाहिनी और बाईं ओर बारह योजन तक फैली हुई थी; उसकी पीठ पर उसकी सेना ब्रह्मांड की सीमा को समाहित करते हुए खड़ी थी; उसके ऊपर उसकी सेना नौ योजन ऊँची थी। उसकी भयानक सेना की गूँज हज़ार योजन दूर से सुनाई देने लगी, मानो पृथ्वी काँप रही हो। फिर, युवा देवता मारा ने डेढ़ सौ योजन ऊँचे गिरिमेखला नामक हाथी पर सवार होकर, अपने हाथों के रूप में एक हज़ार भुजाएँ बनाईं और उनमें विभिन्न शस्त्र धारण किए। शेष दल के लिए... मारा की सेना में भी कोई दो व्यक्ति एक जैसे नहीं थे और न ही उनके पास एक ही हथियार थे। मारा की सेना के सभी सदस्य अलग-अलग रंग-रूप और चेहरे की विभिन्न किस्मों के थे और वे अलग-अलग प्रकार के हथियारों से लैस होकर बोधिसत्व पर भारी पड़े थे।

बुद्ध 16

2.53. दस हजार ब्रह्मांडों के देवता (चक्कवाल) महापुरुष की स्तुति कर रहे थे। देवों के राजा सक्का अपने उत्कृष्ट विजय शंख को बजा रहे थे। कहा जाता है कि उनका शंख बीस सौ हाथ जितना बड़ा था। एक बार जब उन्होंने अपनी श्वास से शंख बजाया, तो वह चार महीने तक लगातार बजता रहा, फिर शांत हो गया। नागराज महाकाल सैकड़ों शब्दों में बोधिसत्व की स्तुति कर रहे थे। महान ब्रह्मा सफेद छत्र धारण किए खड़े थे। लेकिन जब मारा की सेना बोधि वृक्ष के चबूतरे के पास पहुँची, तो उनमें से एक भी वहाँ नहीं टिक सका। वे सब

अपनी-अपनी दिशा में भाग गए। काल नामक नागराज भी पृथ्वी में समा गए, अपने पाँच सौ योजन विशाल पुष्पमय नाग महल में गए और अपने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढककर लेट गए। देवों के राजा सक्का ने भी अपने विजय शंख को पीठ पर लादकर चक्कवाल्ला पर्वत के किनारे पर खड़े हो गए। महान ब्रह्मा ने सफेद छत्र को उसके अंतिम छोर से पकड़ लिया और अपने ब्रह्मालोक में लौट गए। कोई भी देवता वहाँ ठहर नहीं सका। महान ब्रह्मा अकेले ही बैठे रहे।

बुद्ध 18

2.54. मारा ने अपने दल से कहा, “मेरे प्रिय साथियों! शुद्धोदन के पुत्र सिद्धार्थ के समान कोई दूसरा पुरुष नहीं है। हम उनसे आमने-सामने युद्ध नहीं कर पाएंगे; हम उनकी पीठ पीछे से ही युद्ध करेंगे।” उस महान पुरुष ने अपने तीनों ओर देखा, पर कुछ भी दिखाई नहीं दिया क्योंकि सभी देवता भाग गए थे। फिर उत्तर दिशा की ओर देखकर उन्होंने मन ही मन कहा, “इतनी बड़ी सेना अकेले मुझ पर बल प्रयोग कर रही है; इस स्थान पर न मेरी माता है, न पिता, न भाई, न ही कोई अन्य रिश्तेदार; परन्तु ये दस सिद्धियाँ ही दीर्घकाल से मेरे पालनहारों के समान रही हैं; इसलिए मुझे केवल अपनी सिद्धियों को ही उच्चतम स्तर तक बल देना चाहिए, अपनी एकमात्र सिद्धियों के शस्त्र से इस बलवान सेना पर आक्रमण करना चाहिए और उन्हें कुचल देना चाहिए।” वे वहीं बैठकर अपनी सिद्धियों पर चिंतन करने लगे।

2.55. तब, युवा देवता मारा ने मन ही मन कहा, "मैं सिद्धार्थ को बवंडर (वातमंडलम) के द्वारा भगा दूँगा," और ऐसा ही बवंडर उत्पन्न किया। उसी क्षण, पूर्व दिशा से भयंकर हवाएँ चलीं, जो आधा योजन, एक योजन, दो योजन और तीन योजन ऊँची पहाड़ियों की चोटियों को गिरा दिया, वनों आदि को उलट दिया, और आसपास के बड़े-छोटे गाँवों को चूर-चूर कर दिया। यद्यपि वह प्रचंड हवा इतनी तबाही मचाने में सक्षम थी, बोधिसत्व के पुण्य बल के कारण वह हवा उन पर बिना किसी शक्ति के आ पड़ी और उनके वस्त्रों के किनारे को भी हिला नहीं सकी। इसके बाद, मारा ने मन ही मन कहा, "मैं उसे जल से डुबोकर मार डालूँगा," और भारी वर्षा उत्पन्न की। मारा की शक्ति से आकाश में और ऊपर उठते ही, सौ ढेर, हज़ार परतों आदि प्रकार के वर्षा-बादल उठे और मूसलाधार वर्षा हुई। वर्षा की तीव्रता के कारण पृथ्वी अत्यधिक अपरदित होकर जगह-जगह गड्ढे बन गए। प्रचंड वर्षा वन वृक्षों आदि के ऊपर से आई, परन्तु महापुरुष के वस्त्रों को ओस की एक बूंद तक भी गीला नहीं कर सकी। इसके बाद मारा ने चट्टानों की वर्षा (पासनवस्सम) की। धधकते और धुंआ छोड़ते विशाल पर्वतों और पहाड़ियों की चोटियाँ आकाश से आईं और बोधिसत्व के पास पहुँचते ही दिव्य मालाओं के कोमल गोलों में परिवर्तित हो गईं। बाद में, मारा ने आक्रमणों की वर्षा की। ज्वाला और धुंआ छोड़ते एकतरफा और दोनोंतरफा तलवारें, भाले, तेज धार वाले यंत्र आदि आकाश से आए, बोधिसत्व तक पहुँचे और दिव्य फूल बन गए। इसके बाद मारा ने अंगारों की वर्षा की। (अंगारवस्सम)। किंसुका रंग के अंगारे आकाश से आए, बोधिसत्व के चरणों में दिव्य फूल बनकर बिखर गए। बाद में, मारा ने गर्म राख की वर्षा की। अत्यंत गर्म, अग्नि-रंग की राख आकाश से आई, चंदन पाउडर बनकर बोधिसत्व के चरणों में गिरी। इसके बाद मारा ने रेत की वर्षा की (वालुकावस्सम)। धधकते और धुंआ छोड़ते अत्यंत महीन रेत के कण आकाश से आए और दिव्य फूल बनकर बोधिसत्व के चरणों में गिरी। इसके बाद मारा ने कीचड़ की वर्षा की (कललवस्सम)। कीचड़ की वह वर्षा धधकती और धुंआ छोड़ती हुई आकाश से आई और दिव्य मरहम बनकर बोधिसत्व के चरणों में गिरी। अंत में, मारा ने अंधकार की (अंधकारम) रचना की, और मन ही मन कहा, "मैं सिद्धार्थ को इससे डराकर भगा दूंगा।" चार भागों से बने अंधकार के समान, अंधेरा बेहद घना हो गया, लेकिन जैसे ही सूर्य की किरणें बोधिसत्व तक पहुंचीं, वह मानो गायब हो गया; मानो सूर्य की किरणें उसे दूर कर रही हों।

2.56. इस प्रकार, जब मारा नौ प्रकार की वर्षाओं (हवा, बारिश, पत्थर, आक्रमण, अंगारे, गर्म राख, रेत, कीचड़ और अंधकार) से बोधिसत्व को भगाने में असमर्थ रहा, तो उसने अपने दल को आदेश दिया: "देखो मेरे सैनिकों! तुम सब उठो; इस राजकुमार सिद्धार्थ को पकड़ो, मार डालो और भगा दो।" स्वयं मारा, हाथी गिरिमेखला के शरीर पर सवार होकर, अपने साथ परिक्रमा करने वाला शस्त्र लिए बोधिसत्व के पास पहुँचा और इस प्रकार कहा: "हे सिद्धार्थ! इस आसन (पल्लंक) से उठो। यह तुम्हारे लिए यहाँ नहीं आया है। यह मेरे लिए यहाँ आया है।" उनके वचन सुनकर उस महान सत्ता ने उत्तर दिया, "हे मारा! न तो तुमने दस सिद्धियों को सिद्ध किया है, न ही तुमने पाँच महा यज्ञ किए हैं; न ही तुमने अपने सगे संबंधियों के हित में साधना की है, न संसार के हित में, न ही बुद्ध बनने के हित में; ये सभी कर्म मैंने पूर्णतः किए हैं; अतः यह पल्लंका तुम्हारे लिए नहीं, बल्कि केवल मेरे लिए ही यहाँ आया है।"

2.57. क्रोधित मारा, क्रोध की शक्ति सहन न कर पाने के कारण, अपना घूमता हुआ अस्त्र उस महान पुरुष की ओर छोड़ दिया। वह अस्त्र पुष्पमालाओं के छत्र में तब्दील हो गया और उनके ऊपर स्थिर हो गया, जो उस समय दस सिद्धियों का ध्यान कर रहे थे। कहा जाता है कि अन्य अवसरों पर, क्रोध में छोड़े जाने पर, वह प्रज्वलित घूमता हुआ अस्त्र बड़े-बड़े ठोस पत्थर के स्तंभों को ऐसे काटता हुआ चला गया मानो वे बांस की ऊपरी शाखाएँ हों। लेकिन मारा और बोधिसत् के इस युद्ध में, जब वह पुष्पमालाओं के छत्र में तब्दील होकर स्थिर हो गया, तो मारा के शेष अनुयायियों ने मन ही मन कहा, "अब सिद्धार्थ आसन (पल्लंका) से उठकर भाग जाएँगे," और उन पर कई विशाल चट्टानी पहाड़ियों की चोटियाँ फेंकीं। वे भी पुष्पमालाओं के हॉल में तब्दील हो गईं और दस सिद्धियों का ध्यान कर रहे उस महान पुरुष के लिए जमीन पर गिर पड़ीं। चक्कवाला के मुख के किनारे पर खड़े देवताओं ने अपनी गर्दनें लंबी कीं, सिर ऊपर उठाए और एक-दूसरे से कहते हुए देखा: "हे मित्रों! राजकुमार सिद्धार्थ का सुंदर शरीर तो सचमुच नष्ट हो गया है; अब वह क्या करेगा?"

2.58. इसके बाद, बोधिसत्व ने कहा, "वह आसन (पल्लंका), जो सिद्धि प्राप्त कर चुके बोधिसत्वों के पूर्ण ज्ञानोदय के दिन प्रकट होता था, मेरे लिए प्रकट हुआ है," और खड़े हुए मारा से इस प्रकार कहा, "हे मारा! आपके दान का साक्षी कौन है?" मारा ने अपना हाथ अपनी सेना की ओर करके बढ़ाया और उत्तर दिया, "इनमें से अनेक देवता मेरे साक्षी हैं।" उस समय, मारा के अनुयायियों द्वारा "मैं आपका साक्षी हूँ" कहने से पृथ्वी के गर्जन जैसी ध्वनि उत्पन्न हुई। फिर मारा ने महान पुरुष से इस प्रकार कहा, "हे सिद्धार्थ! आपके द्वारा दिए गए दान का साक्षी कौन है?" महान पुरुष ने उत्तर दिया, "आपके द्वारा दिए गए दान के साक्षी सजीव हैं; परन्तु इस समय मेरे पास कोई सजीव साक्षी नहीं है, जिसका मैं उल्लेख कर सकूँ; फिलहाल, मेरे शेष जन्मों में दिए गए दान को छोड़ दें; लेकिन जब मैं वेसंतारा के रूप में था और मैंने दान दिया था, तब यह ठोस पृथ्वी, भले ही निर्जीव हो, साक्षी है। ऐसा कहकर उन्होंने अपने वस्त्रों के भीतर से अपना दाहिना हाथ बाहर निकाला और विशाल पृथ्वी की ओर बढ़ाते हुए कहा, "क्या तुम इस बात की साक्षी हो कि जब मैं वेसंतारा के रूप में था, तब मैंने सात सौ श्रेणियों के सात सौ दान दिए थे?" विशाल पृथ्वी सौ गर्जना, हजार गर्जना और एक लाख गर्जना के साथ गूंज उठी, मानो मारा की सेना को तितर-बितर कर रही हो।

2.59. इसके बाद, जब महान पुरुष वेसंतरा के दान का ध्यान कर रहे थे, "सिद्धार्थ! आपका विशाल दान सबसे उत्तम भेंट है", तभी डेढ़ सौ योजन के बराबर विशाल हाथी गिरिमेखला जमीन पर घुटने टेककर गिर पड़ा। मारा का दल चारों दिशाओं और चारों मध्यवर्ती बिंदुओं में भाग गया। उनमें से कोई भी एक ही मार्ग से नहीं गया। अपने सिर के मुकुट और वस्त्र उतारकर वे सब उस दिशा में भाग गए जिस दिशा में वे स्वयं मुख किए हुए थे। इसके बाद, मारा की सेना को देखकर देवताओं का जमावड़ा हुआ; राजकुमार सिद्धार्थ की विजय हुई; हम उनकी विजय का सम्मान करेंगे।" ऐसा कहकर देवताओं ने अपने साथी देवताओं को, ड्रैगनों ने अपने साथी ड्रैगनों को, गरुड़ों ने अपने साथी गरुड़ों को, ब्रह्माओं ने अपने साथी ब्रह्माओं को सूचित किया और वे सभी अपने हाथों में इत्र, फूलों की माला आदि लिए बोधि-पल्लंक पर विराजमान महान पुरुष के समक्ष उपस्थित हुए।

लेकिन जब वे इस तरह चले गए,

"वास्तव में, यह बुद्ध की विजय है, जो इस शक्ति के स्वामी हैं।"

शुभ महिमा का; यह भी हार है

मारा, दुष्ट आत्मा। उस समय,

देवताओं की प्रसन्न सभा ने घोषणा की

महान ऋषि की विजय, चबूतरे पर

बोधि वृक्ष। आनंदित ड्रैगनों की भीड़।

(नागों) ने भी तब विजय की घोषणा की।

बोधि वृक्ष की छत पर विराजमान महान ऋषि:

यह वास्तव में गौरवशाली की विजय है।

बुद्ध का यह भी मारा की पराजय है।

हे दुष्ट! प्रसन्न हुए गरुड़ों का समूह भी...

उस समय, महान की विजय की घोषणा की गई।

बोधि वृक्ष की छत पर बैठे ऋषि ने कहा, "यह सचमुच,

यह गौरवशाली बुद्ध की विजय है; यह भी है

"दुष्ट देवता मारा की पराजय"। प्रसन्न

ब्रह्माओं के समूह ने भी; उस समय घोषणा की

महान ऋषि की विजय, चबूतरे पर।

बोधि वृक्ष: "यही तो वास्तव में विजय है।"

हे गौरवशाली बुद्ध; यह भी मारा की पराजय है।

दस हजार चक्रवलों में विराजमान अन्य देवता विभिन्न प्रकार की स्तुतियाँ गाते हुए और उन्हें पुष्पों, इत्रों और मलहमों की मालाएँ अर्पित करके सम्मान प्रकट कर रहे थे। इस प्रकार, सूर्य के प्रकाश में ही उस महान पुरुष ने मारा की सेना का नाश कर दिया। फिर उन्होंने रात्रि के प्रथम पहर में अपने पूर्व जन्मों का चिंतन किया, मध्य पहर में अपनी दिव्य आँखों को शुद्ध किया और रात्रि के अंतिम पहर में प्रतीत्यसमुत्पाद का ज्ञान प्राप्त किया। इसके बाद, जब वे बारह प्रकार के कारणों का प्रत्यक्ष और विपरीत क्रम में ध्यान कर रहे थे, तब जल से घिरी हुई दस हजार लोकधातु, आगे-पीछे घूमने की तरह बारह बार काँपी।

2.60. जब सूर्योदय के समय महान पुरुष ने सर्वज्ञ ज्ञान प्राप्त किया और दस हजार विश्व तत्वों (लोकधातु) को ध्वनिमान किया, तो समस्त दस हजार विश्व तत्व सुशोभित हो गए। चक्कवाळा के पूर्वी प्रवेश द्वार (या मुख) के किनारे पर फहराए गए ध्वज और मालाएँ चक्कवाळा के पश्चिमी प्रवेश द्वार (या मुख) के किनारे से टकरा गईं। इसी प्रकार चक्कवाळा के पश्चिमी प्रवेश द्वार (या मुख) के किनारे पर फहराए गए ध्वज स्तंभ चक्कवाळा के पूर्वी प्रवेश द्वार (या मुख) के किनारे से टकरा गए; चक्कवाळा के दक्षिणी मुख के किनारे पर फहराए गए ध्वज स्तंभ चक्कवाळा के उत्तरी मुख के किनारे से टकरा गए; चक्कवाल के उत्तरी मुख पर फहराए गए ध्वज दक्षिणी मुख पर जा गिरे। पृथ्वी की सतह पर फहराए गए ध्वज ब्रह्मा जगत को थामते हुए स्थिर हो गए; ब्रह्मा जगत में बंधे ध्वज पृथ्वी की सतह पर स्थापित हो गए। दस हजार ब्रह्मांडों (चक्कवालों) में पुष्पयुक्त वृक्षों पर फूल खिले और फलयुक्त वृक्षों पर फलों के गुच्छे लगे, जिससे वे लाभकारी हुए। वृक्षों के तनों पर कमल खिले और शाखाओं पर कमल, जबकि लताओं में कमल खिले; आकाश में कमल खिले; ठोस पत्थरों की सतहें टूटकर सौ परतों में विभाजित हो गईं और उन पर दण्डक-पौधे उग आए। दस हजार विश्व तत्व घूमकर फूलों में पूरी तरह से मिल गए, मानो फूलों की माला से बनी कोई खुली गेंद हो और फैली हुई फूलों की चादर जैसी लग रही हो। आठ हजार योजन में फैले हुए लोकंतरणिरय (लोकंतरणिरय), जो ब्रह्मांडों (चक्कवाल) के बीच स्थित थे और जो हमेशा अंधकारमय रहते थे और सात सूर्यों के प्रकाश से भी कभी प्रकाशित नहीं हो पाते थे, उस समय एक साथ प्रकाशित हो गए। चौरासी हजार योजन गहरा विशाल सागर मीठे

पानी का हो गया। नदियाँ बहना बंद हो गईं। जन्म से अंधे लोग दृश्य वस्तुएँ देखने लगे। जन्म से गूंगे लोग आवाजें सुनने लगे। जन्म से लंगड़े लोग कुर्सी के सहारे रेंगने के बजाय पैदल चलने लगे। बंधी हुई बेड़ियाँ, जंजीरें आदि टूटकर गिर गईं।

2.61. इस प्रकार अपार यश से सम्मानित होकर, महान पुरुष ने सर्वज्ञ ज्ञान प्राप्त किया, जबकि अनेक प्रकार की अद्भुत घटनाएँ स्पष्ट रूप से प्रकट हो रही थीं, और उन्होंने ऐसा आनंदमय वचन कहा जो सभी बुद्धों द्वारा कभी नहीं कहा गया था:

बुद्ध का जीवन 024

क्योंकि बार-बार पुनर्जन्म लेना कष्टदायी होता है, इसलिए मैंने

मैं खुद कई चक्करों में घूमता रहा हूँ

एक जन्म, जिसके वास्तुकार को खोजने का प्रयास किया जा रहा है।

घर। हे घर बनाने वाले! अब तुम...

ढका हुआ; तुम फिर से घर नहीं बनाओगे।

आपकी छत की कड़ियाँ टूटी हुई हैं; घर का शिखर

नष्ट हो चुका था; मन उस सीमा से परे चला गया था।

संखार, सांसारिक वस्तुएँ; मैंने प्राप्त कर लिया है

सभी लालसाओं और इच्छाओं के नाश की अवस्था।

2.62. इस प्रकार, तुषिता के स्वर्गलोक से लेकर बोधि वृक्ष के शिखर पर सर्वज्ञता की प्राप्ति तक जो कुछ घटित हुआ, वह इसी प्रकार है। इस घटना के इतने भाग को 'अस्पष्ट प्रस्तावना' के नाम से समझा जा सकता है।

दूरस्थ प्रस्तावना पर चर्चा समाप्त हो गई है।

. . . . टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.2e बुद्ध बनना

स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान भाग - 1.2 : गौतम बुद्ध

1.2ई बुद्ध बनना और कामुकता पर विजय प्राप्त करना
बुद्ध21

3. "प्रारंभिक प्रस्तावना को इन संदर्भों में इस प्रकार समझा जाना चाहिए: 'एक अवसर पर, प्रतापी भगवान सावत्थी में, जेतवन में, अनाथपिंडिका के मठ में निवास कर रहे थे। वे वेसाली में विशाल वन में शिखर-छत वाले मठ (कुटगारशाला) में निवास कर रहे थे।' इस प्रकार, ऐसा कहा गया है, इसलिए उस शुरुआत से शुरू करते हुए, इसे इस संदर्भ में समझा जाना चाहिए।" विजयपीठ (पल्लंका) पर विराजमान परम पूज्य बुद्ध को, अपने आनंदमय उच्चारण के बाद, यह विचार आया: "मैंने इस पल्लंका के लिए लाखों कल्पों के अतिरिक्त एक लाख कल्पों का भी निर्वाह किया है; अनेक अवसरों पर, इसी पल्लंका के लिए, मैंने अपना सुशोभित सिर गर्दन से काटकर दान कर दिया; अपनी काजल से सनी हुई आँखें और हृदय-मांस दान में दे दिए; मेरे पुत्र जैसे युवा राजकुमार जाली, मेरी पुत्रियाँ जैसे युवा राजकुमारी कन्याजिना और मेरी पत्नियाँ जैसे रानी मद्दी दूसरों को दास के रूप में दे दी गईं; मेरा यह पल्लंका ही मेरी विजयपीठ है, मेरा दृढ़ पल्लंका ही मेरी विजयपीठ है, मेरा दृढ़ पल्लंका; यहाँ विराजमान होकर मेरे सभी संकल्प पूर्ण हो गए।" मैं फिलहाल यहाँ से नहीं उठूँगा।" इसलिए वे सात दिनों तक वहीं बैठे रहे और वास्तव में कई लाख करोड़ ध्यान अवस्थाएँ प्राप्त कीं। इसी संदर्भ में यह कहा गया है: "तो वास्तव में, तेजस्वी बुद्ध सात दिनों तक एक ही पाँव-पाँव मुद्रा में बैठे रहे और मुक्ति के आनंद का अनुभव करते रहे।"

3.1. तब कुछ देवताओं के मन में यह विचार आया: "सिद्धार्थ के लिए आज भी कोई उचित कर्म अवश्य किया जाना चाहिए; वे तो पल्लंका से अपना लगाव नहीं छोड़ते।" गुरुदेव ने देवताओं के विचारों को जानकर आकाश में जाकर उनकी चिंताओं को दूर करने के लिए दो चमत्कार दिखाए। वास्तव में, बोधि वृक्ष की छत पर किया गया दो चमत्कार, उनके सगे संबंधियों की सभा में किया गया दो चमत्कार और पथिका के पुत्रों के मिलन में किया गया दो चमत्कार, ये सभी कांड के आम के वृक्ष की तलहटी में किए गए दो चमत्कार के समान थे।

बुद्ध 19

3.2. इस चमत्कार के द्वारा देवताओं की चिंता दूर करने के बाद, गुरुजी उत्तर दिशा में थोड़ा पूर्व की ओर खड़े हुए और सात दिनों तक बिना पलक झपकाए पल्लंका और बोधि वृक्ष को निहारते रहे, क्योंकि वे उन सिद्धियों के लिए बल का स्रोत थे जो एक लाख कल्पों के अतिरिक्त चार असंख्य कल्पों में पूर्ण की गई थीं। उन्होंने कहा: "वास्तव में, इसी पल्लंका में मुझे सर्वज्ञ ज्ञान प्राप्त हुआ था।" उस स्थान पर अविचलित आँखों का मंदिर (अनिमिसा) स्थापित हुआ। फिर गुरुजी ने पल्लंका और अपने स्थान के बीच एक गलियारा बनाया और सात दिनों तक उस रत्नजड़ित गलियारे पर चलते रहे जो पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ था। उस स्थान पर रत्नजड़ित गलियारे (रतनचंकमा) के नाम से जाना जाने वाला एक मंदिर स्थापित हुआ।

3.3. चौथे सप्ताह में, देवताओं ने बोधि वृक्ष के उत्तर-पश्चिम दिशा में एक रत्न-आभूषण से बना घर बनवाया। वहाँ, तेजस्वी बुद्ध पालथी मारकर बैठे और सात दिन अभिधम्म पिटक, विशेषकर उसमें निहित पट्ठान, और उससे प्राप्त होने के अनंत मार्गों का अध्ययन करने में व्यतीत किए। अभिधम्म के पाठियों ने कहा: "रतनघर नाम सात प्रकार के रत्नों से बने घर का नाम नहीं है; बल्कि वह स्थान जहाँ अभिधम्म के सात ग्रंथों का ध्यान किया गया था, उसे 'रतनघर' कहा जाता है। चूँकि यहाँ ये दोनों व्याख्याएँ लागू होती हैं, इसलिए दोनों को ही स्वीकार किया जाना चाहिए। उसी समय से उस स्थान पर रतनघरचेतिवा नामक एक मंदिर स्थापित हुआ। इस प्रकार, बुद्ध ने बोधि वृक्ष के पास, बरगद के वृक्ष (अजपाल-निग्रोध) के निकट चार सप्ताह व्यतीत किए। वहाँ भी वे धम्म का अध्ययन करने और मोक्ष के आनंद का अनुभव करने के लिए बैठे।

3.4. उस अवसर पर, दुष्ट मारा हृदय से दुखी होकर बोला, "इतने लंबे समय तक उनके पीछे-पीछे चलने के बावजूद, मुझे उनमें कोई दोष नहीं मिला, यद्यपि मैंने उनकी कमियाँ ढूँढीं।" वह सड़क पर बैठ गया और सोलह कारणों पर विचार करते हुए उसने ज़मीन पर सोलह रेखाएँ इस प्रकार खींचीं: "मैंने इस व्यक्ति के समान दान देने की पूर्णता प्राप्त नहीं की थी; इसलिए मैं इस व्यक्ति के समान जन्म नहीं लिया था।" ऐसा कहकर उसने एक रेखा खींची। उसी प्रकार, मारा ने दसवीं रेखा तक रेखा खींचते हुए कहा: "मैंने इस व्यक्ति के समान उपदेशों में पूर्णता, त्याग में पूर्णता, ज्ञान में पूर्णता, परिश्रम में पूर्णता, अधीरता में पूर्णता, सत्य में पूर्णता, संकल्प में पूर्णता, प्रेम में पूर्णता, समभाव में पूर्णता प्राप्त नहीं की थी; इसलिए मैं इस व्यक्ति के समान जन्म नहीं लिया था।" इसी प्रकार, मारा ने ग्यारहवीं पंक्ति

खींचते हुए कहा: "मैंने इस व्यक्ति के समान दस सिद्धियों को पूर्ण नहीं किया था, जो इंद्रियों (संयम) की परिपक्वता या अपरिपक्वता का निदान करने के ज्ञान को समझने में सहायक होती हैं, जो छह प्रकार के अद्वितीय ज्ञान में से एक है।" इसी प्रकार, उन्होंने अंततः सोलहवीं पंक्ति खींचते हुए कहा: "मैंने उन दस सिद्धियों को पूर्ण नहीं किया था जो जीवों के झुकाव, लालसा और स्वभाव के ज्ञान को समझने में सहायक होती हैं, जो छह प्रकार के अद्वितीय ज्ञान में से एक है - महान दया पर आधारित ध्यान की प्राप्ति का ज्ञान, दो चमत्कार करने का ज्ञान, अवरोध के अभाव का ज्ञान और सर्वज्ञता का ज्ञान; इसलिए, मैं इस व्यक्ति के समान जन्म नहीं लिया था।" इस प्रकार, मारा ने इन परिस्थितियों में राजमार्ग पर सोलह रेखाएँ खींचीं और बैठ गए।

3.5. उस समय भी, मारा की तीन पुत्रियाँ, तन्हा, आरती और रागा, मन ही मन कहने लगीं, “हमारे पिता कहीं दिखाई नहीं दे रहे; आखिर वे कहाँ हैं?” और अपने पिता की खोज करते हुए, उन्होंने देखा कि वे दुखी मन से जमीन पर बैठकर लिख रहे हैं। वे अपने पिता के पास गईं और पूछा, “प्रिय पिता! आप इतने दुखी और निराश क्यों हैं?” उन्होंने उत्तर दिया, “प्रिय पुत्रियों! यह महान भिक्षु मेरे प्रभाव से बच गए; मैं इतने लंबे समय तक खोज करने के बावजूद उनकी कमजोरी नहीं ढूंढ पाया; इसी कारण मैं दुखी और निराश हूँ।” पुत्रियों ने कहा, “यदि ऐसा है, तो चिंता न करें, हम स्वयं उन्हें वश में कर लेंगी और उन्हें आपके पास वापस ले आएंगी।” मारा ने उत्तर दिया, “प्रिय पुत्रियों! कोई भी उन्हें अपने वश में नहीं कर सकता; यह व्यक्ति अटूट विश्वास में स्थापित है।” उन्होंने कहा, “प्रिय पिता! कृपया चिंता न करें; हम स्त्रियाँ उन्हें कामवासना के फंदों (राग) से तुरंत अपने पास ले आएँगी। ऐसा कहकर वे तेजस्वी बुद्ध के पास गईं और उनसे कहा, "हे भिक्षु! हम आपकी पत्नियाँ बनेंगी, जो आपके चरणों की परिक्रमा करेंगी।" तेजस्वी बुद्ध बैठे रहे, अस्तित्व के आधार के अतुलनीय विनाश से मुक्ति पाने के लिए एकांत के आनंद में लीन रहे, लेकिन उन्होंने उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया; न ही उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और उनकी ओर देखा।

बुद्ध 17

3.6. फिर मारा की पुत्रियों ने मन ही मन कहा, “पुरुषों की इच्छाएँ ऊँच-नीच होती हैं; युवतियों के बाल सचमुच सुंदर होते हैं; जीवन के प्रथम चरण में स्थापित युवतियों के बाल सचमुच सुंदर होते हैं; मध्य आयु की स्त्रियों के बाल सचमुच सुंदर होते हैं; जीवन के अंतिम चरण की स्त्रियों के बाल सचमुच सुंदर होते हैं। क्या यह अच्छा नहीं होगा कि हम उन्हें हर तरह के सौंदर्य से लुभाकर अपना बना लें?” उन्होंने एक के बाद एक युवतियों का वेश धारण किया और युवतियों, बांझ स्त्रियों, बच्चे की माँ, दो बच्चों की माँ, मध्य आयु की स्त्रियों और वृद्ध स्त्रियों का रूप धारण करके छह बार तेजस्वी बुद्ध के पास गईं और कहा, “हे भिक्षु! हम आपकी पत्नियों के रूप में आपके चरणों में सेवा करती हैं।” तेजस्वी बुद्ध ने इस पर भी कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वे अस्तित्व के सभी आधारों के अतुलनीय विनाश के माध्यम से मुक्त हो चुके थे। कुछ विद्वान-शिक्षकों ने कहा: "जब उन्होंने उन्हें बड़ी स्त्रियों के वेश में अपने पास आते देखा, तो तेजस्वी बुद्ध ने स्वयं से कहा: 'उन्हें टूटे दांत और सफेद बालों वाली बना दो।' इसे उस रूप में नहीं लेना चाहिए। वास्तव में, तेजस्वी बुद्ध ने ऐसी कोई इच्छा नहीं की थी। हालांकि, तेजस्वी बुद्ध ने अपने स्वयं के दुराचार (किलेसा) के त्याग को ध्यान में रखते हुए कहा: "तुम सब कहीं और जाओ; किसलिए देखकर तुम यह प्रयास कर रहे हो? ऐसा कार्य उन लोगों के समक्ष किया जाना चाहिए जो कामवासना (राग) आदि से रहित नहीं हैं, जहां तक तथागत की बात है, उन्होंने कामवासना (राग) का त्याग किया है, घृणा (दोष) को त्याग दिया है और मोह (मोह) को दूर कर दिया है।"

आप सब किस तरह का पदचिह्न छोड़ने जा रहे हैं?

उस बुद्ध का पता लगाइए जो अपने पदचिह्न नहीं छोड़ते।

जिसका प्रभाव क्षेत्र असीमित है, जिसका

विजय को पलटा नहीं जा सकता था और जिसका

ऐसी जीत जिसकी बराबरी दुनिया में कोई नहीं कर सकता।

आप सब किस पदचिह्न के साथ जा रहे हैं?

उस बुद्ध का पता लगाइए जो अपने पदचिह्न नहीं छोड़ते।

जिसका प्रभाव क्षेत्र असीमित है, जिसका

उलझनें सुलझ गई हैं और जिनके

उसे राह दिखाने के लिए लालसा (तन्हा) का अस्तित्व ही नहीं है।

कहीं भी, वास्तव में।"

धम्मपद के बुद्ध अध्याय में निहित इन दो श्लोकों का पाठ करते हुए, प्रतापी ने धम्म का उपदेश दिया। वे, मारा की पुत्रियाँ, मन ही मन कह रही थीं: "हमारे पिता, हमें कहना चाहिए, सत्य बोले थे जब उन्होंने कहा: 'योग्य, सुगता, बुद्ध हैं; वे आसानी से कामवासना (राग) से प्रभावित नहीं होते, आदि।" अपने पिता (राक्षस स्वामी मारा) की उपस्थिति में लौट आईं

3.7. बुद्ध ने वहाँ एक सप्ताह, सात दिन व्यतीत करने के बाद, मुचलिन्द पर्वत की तलहटी में प्रस्थान किया। वहाँ बुद्ध ने सात दिन मोक्ष के आनंद का अनुभव करते हुए बिताए, मानो वे मुचलिन्द नामक नागराज द्वारा शीत आदि से बचाव के लिए बनाई गई कुंडलियों के भीतर एक असीमित सुगंधित कक्ष में निवास कर रहे हों। तभी एक सप्ताह तक चलने वाली वर्षा हुई, और वे राज्यायतन की ओर प्रस्थान कर गए, जहाँ उन्होंने सात दिन मोक्ष के सुख का अनुभव किया। इस प्रकार, सात सप्ताह पूर्णतः संपन्न हुए। इस दौरान उन्होंने न तो मुख (या मुख) धोया, न ही शरीर का स्नान किया, न ही भोजन किया; उन्होंने अपना समय ध्यान की प्राप्ति के आनंद में व्यतीत किया।

3.8. फिर, इन सात सप्ताहों की समाप्ति पर, उनतालीसवें दिन, उन्हें अपना मुख और मुख धोने का विचार आया। देवों के राजा सक्का एक नई औषधि लाए और उन्हें दी। गुरु ने उसका सेवन किया। इस कारण उनका शारीरिक स्नान हो गया। फिर, सक्का ने उन्हें नागलता से बनी एक छड़ी, नाग लता से बनी एक दांतेदार तीली और मुख एवं मुख धोने के लिए जल दिया। गुरु ने उस छड़ी को चबाया, अपने दांत साफ किए, अनोटत्ता झील के जल से अपना मुख धोया और राज्यायतन वृक्ष के चरणों में बैठ गए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाका निकाय >> अपादान >> 1.2एफ भिक्षुओं के आदेश की शुरुआत

स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान भाग - 1.2 : गौतम बुद्ध

1.2f संघ (भिक्षुओं का संप्रदाय) का आरंभ

Lifeofbuddha026

3.9. उस अवसर पर, तपस्सा और भल्लिका नामक दो व्यापारी, जब उक्कला जिले से मध्य देश (मज्झिमा देश) की ओर पाँच सौ रथ लेकर जा रहे थे, तो उनके रथों को एक देवता ने रोक लिया, जो पूर्व में उनका सगा-संबंधी था। देवता द्वारा गुरु को भोजन प्रदान करने के लिए प्रेरित किए जाने पर, वे अपने साथ चावल की रोटी (मन्था) और शहद से बना भोजन (मधुपिंडिका) ले गए और कहा: "आदरणीय महोदय! कृपा करके, हम पर दया करते हुए, इस भोजन-अर्पण को स्वीकार करें," और गुरु को वही भोजन अर्पित कर वहीं खड़े हो गए। गुरु ने सोचा: "तथागत अपने हाथों में भेंट स्वीकार नहीं करते; “मुझे ये उपहार कहाँ से मिलेंगे?” क्योंकि जिस दिन उन्होंने दूध-चावल का प्रसाद ग्रहण किया, उसी दिन उनका कटोरा गायब हो गया था। तब, उनके इस विचार को जानकर, चारों दिशाओं से चार दिव्य राजा आए और नीलम रत्न से बने कटोरे भेंट किए। तेजस्वी बुद्ध ने उन्हें अस्वीकार कर दिया। बाद में, उन्होंने सेम के रंग के पत्थर से बने चार भिक्षापात्र भेंट किए। चारों महान दिव्य राजाओं की आस्था का सम्मान करते हुए, तेजस्वी बुद्ध ने चारों कटोरे स्वीकार किए, उन्हें एक के ऊपर एक रखा और इस प्रकार इच्छा व्यक्त की: “ये एक हो जाएँ।” चारों कटोरे एक मध्यम आकार के एक कटोरे में बदल गए, जिसके किनारे पर स्पष्ट दरारें दिखाई दे रही थीं। उस नए पत्थर के कटोरे में, तेजस्वी बुद्ध ने भोजन ग्रहण किया, उसे खाया और धन्यवाद व्यक्त किया। वे दोनों व्यापारी भाई बुद्ध और धर्म की शरण में गए और दो प्रकार के नियमों का पालन करते हुए गृहस्थ भक्त बन गए। तब, तेजस्वी बुद्ध ने अपने दाहिने हाथ से अपने सिर को छुआ और जिन्होंने भी अपने केश-अवशेष मांगे थे, उन्हें दान कर दिए। पूजा की वस्तु। उन्होंने उन अवशेषों को सोने के ताबूत में रखा और उन्हें एक मंदिर (चेतिया) में स्थापित किया।
बुद्ध22

3.10. सर्वज्ञ बुद्ध वहाँ से उठे, फिर उसी बरगद के वृक्ष के पास गए और निग्रोध वृक्ष की तलहटी में बैठ गए। वहाँ बैठे-बैठे वे स्वयं द्वारा प्राप्त और समझे गए धर्म की गहनता पर चिंतन कर रहे थे, तभी उनके मन में उपदेश देने की इच्छा न होने का विचार उत्पन्न हुआ और उन्होंने कहा: "मैंने अत्यंत कठिनाइयों से इस धर्म को प्राप्त और समझा है", जो कि सभी बुद्धों का नियमित अभ्यास था। तब ब्रह्मा सहमपति ने मन ही मन कहा, "सचमुच! हाय! संसार का विनाश हो गया! सचमुच! हाय! संसार का विनाश हो गया!", और अपने साथ सक्का, सुयामा, संतुसिता, निम्मानारति, वासवत्ती और दस हजार चक्रवालों में से ब्रह्माओं को लेकर गुरु के समक्ष गए और उनसे इस प्रकार धर्म का प्रचार करने का निवेदन किया, "हे पूज्यवर! हे प्रतापी बुद्ध धर्म का प्रचार करें।"
बुद्ध का जीवन027
बुद्ध का जीवन028

3.11. गुरु ने उन्हें वचन देने के बाद मन में यह विचार किया: “मैं सबसे पहले किसे धर्म का उपदेश दूँ?” और उनके मन में यह विचार आया: “आलारा विद्वान हैं; वे इस धर्म को शीघ्र ही समझ लेंगे।” पुनः विचार करने पर उन्हें पता चला कि उदका का सात दिनों से देहांत हो चुका है और उन्होंने उदका के बारे में सोचा। जब उन्हें पता चला कि उदका का भी पिछली रात देहांत हो गया है, तो उन्होंने पाँच भिक्षुओं के समूह (पंचवग्गिया) पर ध्यान केंद्रित किया: “सचमुच, पाँच भिक्षुओं के समूह ने मेरी बहुत सहायता की” और उनके बारे में सोचते हुए उन्होंने यह विचार किया: “वे इस समय कहाँ रह रहे हैं?”, तब उन्हें पता चला कि वे बनारस के इसिपताना में मिगदा वन में रह रहे हैं। बुद्ध कुछ दिनों तक बोधि वृक्ष के प्रांगण के आसपास भिक्षा-भोजन की तलाश में विचरण करते रहे और मन ही मन कहते रहे: "मैं बनारस जाऊंगा और आषाढ़ महीने की पूर्णिमा के दिन धर्मचक्र घुमाऊंगा।" चौदहवें शुक्ल पक्ष की सुबह जब रात से दिन हुआ तो उन्होंने समय रहते अपना कुंड और वस्त्र धारण किया और अठारह योजन की यात्रा पर निकल पड़े। रास्ते में उनकी मुलाकात उपका नामक एक नग्न तपस्वी (अजीवक) से हुई, जिन्होंने उन्हें अपने बुद्ध बनने की सूचना दी और उसी दिन वे इसिपताना पहुंचे।

3.12. पांच भिक्षुओं के समूह ने तथागत को दूर से आते हुए देखकर आपस में यह प्रतिज्ञा की: “मित्रों! यह भिक्षु गौतम आ रहे हैं; आवश्यकताओं की प्रचुरता की ओर लौटने से उनका शरीर पूर्ण रूप से भरा हुआ, सुडौल अंगों वाला और सुनहरे रंग का हो गया है; हम उन्हें प्रणाम आदि जैसा कोई सम्मान नहीं देंगे; परन्तु, क्योंकि वे एक महान परिवार के पुत्र हैं, इसलिए वे आसन ग्रहण करने के योग्य हैं; अतः हम उनके लिए आसन तैयार करेंगे।” तेजस्वी बुद्ध, जो संसार और देवलोक के लोगों के मन और व्यवहार को जानने की क्षमता रखते थे, उन्होंने उनके विचारों पर चिंतन किया और उनकी मानसिक योजनाओं को जान लिया। फिर, उन्होंने प्रेम और करुणा के उन विचारों को एकत्रित किया जो सभी देवताओं और मनुष्यों में व्याप्त होने में सक्षम हैं और पांच भिक्षुओं के समूह पर अपना प्रेम और

करुणा बरसा दिया। (पृष्ठ 147) वे परम पूज्य बुद्ध की प्रेममयी कृपा के विचारों से ओतप्रोत होकर, तथागत के उनके निकट आने, उनका स्वागत करने और उन्हें प्रणाम करने आदि जैसे सभी प्रकार के कर्तव्यों का पालन करने पर अपने व्यक्तिगत दायित्वों पर दृढ़ रहने में असमर्थ हो गए। यद्यपि वे इस तथ्य से अनभिज्ञ थे कि तथागत सर्वज्ञ बुद्ध बन चुके हैं, इसलिए वे उन्हें नाम से और मित्र (आवुसा) कहकर संबोधित करते रहे।

3.13. तब प्रतापी बुद्ध ने उन्हें अपने बुद्ध बनने की सूचना देते हुए कहा: "हे भिक्षुओं! तथागत को मेरे नाम से या मित्र कहकर संबोधित करने की आदत न डालें; हे भिक्षुओं! तथागत अब एक योग्य, स्वयंसिद्ध बुद्ध बन चुके हैं, उन्होंने अपने लिए तैयार किए गए उत्तम बुद्ध-आसन पर अठारह करोड़ ब्रह्माओं से घिरे हुए विराजमान होकर अतुलनीय धम्मचक्क-पवत्तना सूत्र का उपदेश दिया, जो अपने त्रिगुणीय चक्र और बारह गुणों के साथ छह प्रकार के ज्ञान की गतिविधि को जागृत करता है, और उत्तरासाल नक्षत्र के संयोग के समय पाँच तेरों (पंचवग्गिया) के समूह को संबोधित किया। उनमें से, तेर कोण्डञ्ञ ने बुद्ध के उपदेशों के क्रम में अपनी बुद्धि का प्रसार करते हुए, अठारह करोड़ ब्रह्माओं के साथ बुद्धत्व के मार्ग के प्रथम चरण की सिद्धि प्राप्त की।" सूत्र के अंत में निर्वाण प्राप्त हुआ। गुरु ने अपना उपवास इसिपताना में बिताया और अगले दिन उसी मठ में बैठकर वप्पा थेरा को धार्मिक शिक्षा दी। शेष चार थेरा भिक्षा-भंडार के लिए इधर-उधर भटकते रहे। थेरा वप्पा ने अगली सुबह ही सोतापत्ति (धारा-प्रवर्तक) का फल प्राप्त कर लिया। इसी व्यवस्था के माध्यम से, अगले दिन थेरा भद्दिया, चौथे दिन थेरा महानामा और अंत में पाँचवें दिन थेरा असज्जी, सभी सोतापत्ति (धारा-प्रवर्तक) के फल को प्राप्त कर चुके थे। घटते चंद्रमा के पाँचवें दिन बुद्ध ने सभी पाँचों थेराओं को एकत्रित किया और उन्हें अनात्तलक्खाण सूत्र का उपदेश दिया, जिसमें अनात्त के गुणों पर प्रवचन दिया गया था। प्रवचन के समापन पर पाँचों थेरा अरहतत्व में स्थापित हो गए। तब गुरु ने उपनिषय (दुख भोग रहे व्यक्ति) को देखकर अच्छे कुल के पुत्र यासा को, जो उस रात अपने घर से घृणापूर्वक विदा होकर लौट आया था, बुद्ध ने यह कहकर बुलाया: "आओ यासा।" उसी रात, बुद्ध ने यासा को सोताप्पत्ती (प्रवेश करने वाला भिक्षु) के सिद्ध जीवन में स्थापित किया और अगले दिन उन्हें अरहत पद प्राप्त कराया। इसके बाद, बुद्ध ने यासा के 54 साथियों को भी "आओ! भिक्षुओं!" कहकर भिक्षु बनने का आदेश दिया और उन्हें अरहत पद प्राप्त कराया।

बुद्ध का जीवन 031

3.14. इस प्रकार, जब संसार में अरहतों की संख्या बढ़कर इकसठ हो गई, तो गुरु ने अपने उपवास (वर्षाकाल) के बाद पश्चात्ताप और क्षमादान का पवारणा अनुष्ठान किया और साठ भिक्षुओं को सभी दिशाओं में यह कहते हुए विदा किया: "हे भिक्षुओं! अपनी यात्राओं पर निकल पड़ो!" और स्वयं उरुवेला जाकर, रास्ते में घने कपास के जंगल में तीस राजकुमार युवकों को उनके उत्तम समूह, भद्दावग्गी में परिवर्तित किया। उनमें से अंतिम भिक्षु सोतापन्न (धारा-संग्रही) बन गया; और सबसे श्रेष्ठ भिक्षु अनागामी (अनगामी) बन गया।

बुद्ध का जीवन 032
बुद्ध का जीवन 033
बुद्ध का जीवन 034
बुद्ध का जीवन 035

उन सभी को भी "आओ! भिक्षुओं!" कहकर भिक्षु बनाया गया और सभी दिशाओं में भेजा गया, लेकिन वह स्वयं उरुवेला गए, साढ़े तीन हजार चमत्कार दिखाए, तीन जटिल भिक्षु भाइयों को, जिनके साथ एक हजार जटिल भिक्षुओं का दल था, परिवर्तित किया, उन्हें "आओ! भिक्षुओं! गयासीसा के शीर्ष पर बैठो" कहकर भिक्षु बनाया, उन्हें अपने प्रज्वलित उपदेश (आदित्तपरिवाय) से अर्हत पदवी दिलाई, और फिर उन हजार अर्हतों के दल से घिरे हुए, राजगृह नगर के बाहरी इलाके में स्थित लट्ठीवन उद्यान में गए, और मन ही मन कहा: "मैं बिम्बिसार को वचन देकर छुड़ाऊंगा।" बाग के रखवाले से गुरु के आगमन की सूचना पाकर राजा, बारह नहुतों ब्राह्मणों (पुजारियों) और धनी गृहस्थों से घिरे हुए, गुरु के पास पहुँचे। जब उनका प्रकाश, जो एक बहुरंगी वृत्ताकार स्वर्ण-चादर के समान था, प्रकट हो रहा था, तब उन्होंने तथागत (बुद्ध) के चरणों में सिर रखकर स्वयं को उनके साथ एक तरफ गिरा दिया और अपने दल के साथ बैठ गए।

3.15. तब ब्राह्मणों और धनी गृहस्थों के मन में यह विचार आया: "अंततः क्या है? क्या महान भिक्षु उरुवेला कस्सपा के अधीन पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं या उरुवेला कस्सपा महान भिक्षु के अधीन पवित्र जीवन व्यतीत करते हैं?" बुद्ध ने अपने मन के माध्यम से उनके मन में उठ रहे इस विचार को जान लिया और एक श्लोक के माध्यम से उरुवेला कस्सपा को संबोधित किया:-

"हे उरुवेला में रहने वाले! यह देखकर,

क्या आपने आग को पीछे छोड़कर उसका अनुसरण किया?

किसके निर्देश पर? मैं आपसे यह प्रश्न पूछता हूँ।

हे कस्सपा! तुम्हारा अग्नि-यज्ञ क्यों विफल हो गया?

त्यागा हुआ?

थेरा ने भी, महिमावान की इच्छा को जानते हुए, इस श्लोक का पाठ किया:

दृश्य वस्तुएँ, श्रव्य वस्तुएँ और फिर

स्वादिष्ट वस्तुएं, साथ ही कामुक सुख और स्त्री

इन्हें ब्राह्मण यज्ञ (यज्ञ) कहा जाता है।

इसे जड़ों में मौजूद कलंकपूर्ण अशुद्धि के रूप में जानते हुए

दुःख (उपाधि) के कारण, मैं कोई कार्य नहीं करता।

अशुद्धता से मुक्त होने के लिए त्याग करना।"

इस श्लोक का पाठ करने के बाद, उन्होंने तथागत के चरणों में अपना सिर रखकर यह प्रदर्शित किया कि वे तथागत के शिष्य हैं। उन्होंने कहा, "आदरणीय गुरुदेव! परम पूज्य बुद्ध मेरे गुरु हैं; मैं आपका शिष्य हूँ।" वे तीन ताड़ के पेड़ों से लेकर सात ताड़ के पेड़ों की ऊँचाई तक चढ़े, नीचे उतरे, तथागत को प्रणाम किया और उनके बगल में बैठ गए। इस चमत्कार को देखकर, वहाँ मौजूद लोगों के विशाल समूह ने गुरु के गुणों की ही प्रशंसा करते हुए कहा, "वास्तव में बुद्ध अत्यंत शक्तिशाली हैं; इस प्रकार, उरुवेलकस्सपा जैसे तपस्वी भी, जो अपने प्रबल विचारों के कारण स्वयं को अरहत समझते थे, तथागत द्वारा अपने गलत विचारों के जाल को तोड़कर परिवर्तित हो गए।" परम पूज्य बुद्ध ने कहा, "मैंने न केवल उरुवेला कस्सपा को परिवर्तित किया है, बल्कि बहुत पहले भी मैंने इन्हें परिवर्तित किया था।" उन्होंने महानारदकस्सपा की जन्म कथा (जातक) सुनाई, जिसमें उनकी जीवनी थी और चार आर्य सत्यों का प्रतिपादन किया। राजा अपने ग्यारह नहुत अनुयायियों के साथ सोतापत्ति की अवस्था में सिद्ध हो गए। उन्होंने अपने एक नहुत अनुयायी को सूचित किया कि वे सब भक्त बन गए हैं। गुरु के समक्ष बैठे-बैठे ही राजा ने पाँच सुखों (अस्ससक) की घोषणा की, बुद्ध की शरण ली, गुरु को अगले दिन के भोज में आमंत्रित किया, अपने आसन से उठे, परम पूज्य बुद्ध की परिक्रमा की और प्रस्थान किया।

3.16. अगले दिन, वे सभी जिन्होंने पिछले दिन प्रतापी बुद्ध के दर्शन किए थे, और वे भी जिन्होंने उन्हें नहीं देखा था, वे सभी राजगृह नगर के नागरिक, जिनकी संख्या अठारह करोड़ थी, तथागत के दर्शन की इच्छा से राजगृह नगर से सुबह-सुबह लाठी वन में गए। तीन गावटा का मार्ग भी उन सभी के लिए पर्याप्त नहीं था। बीच में कोई स्थान न होने के कारण, पूरा लाठी वन उन लोगों से भर गया था। इतनी बड़ी भीड़ इस तथ्य के बावजूद संतुष्ट नहीं हो सकी कि उन्होंने दशबल के उस शरीर को देखा था जो उचित अनुपात और उत्कृष्ट सौंदर्य की ऊँचाई पर था। उनके लिए, उन्होंने जो बुद्ध देखे वे सौंदर्य के साक्षात स्वरूप थे, प्रशंसा के योग्य थे। वास्तव में, ऐसे स्थानों में, प्रतापी बुद्ध के शारीरिक रूप की संपूर्ण महिमा, उनके प्रमुख और गौण गुणों का स्पष्ट रूप से वर्णन करते हुए, प्रशंसा की जानी चाहिए। जब इस प्रकार उद्यान और सड़क दोनों ही विशाल जनसमूह से भरे हुए थे, जो सुगठित और उत्कृष्ट सौंदर्य प्राप्त दशाबल के दर्शन करने आए थे, तो वहाँ से किसी भिक्षु के निकलने का भी रास्ता नहीं था। कहा जाता है कि उस दिन परम पूज्य बुद्ध का भोजन बाधित हो गया होगा। इसलिए, ऐसी स्थिति से बचने के लिए सक्का के दिव्य आसन पर गर्मी का आभास हुआ। घटना पर विचार करते हुए, सक्का को इसका कारण ज्ञात हुआ, उन्होंने स्वयं को एक युवक के रूप में रूपांतरित किया और बुद्ध, धम्म और संघ से उचित रूप से संबंधित स्तुतिगान करते हुए दशाबल के सामने अवतरित हुए, अपनी दिव्य शक्ति से स्थान बनाया और आगे बढ़कर गुरु की स्तुति इन श्लोकों में की:-

वह महान, वह वश में करने वाला, वह रूपांतरित करने वाला, साथ मिलकर

बुने हुए पूर्व तपस्वियों के परिवर्तित सदस्यों के साथ

बाल, पूर्णतः मुक्त, साथ में

उन्होंने जिन्हें पूर्णतः मुक्ति दिलाने में सहायता की,

शुद्ध स्वर्णमय रंग के साथ प्रवेश किया

राजगृह नगर। मुक्त व्यक्ति

उन लोगों के साथ जिन्हें उन्होंने प्राप्त करने में मदद की

मुक्त :P: एक साथ पार कर गए

जिनके साथ उन्होंने पार करने में मदद की

ऊपर :P:.

शांतिपूर्ण लोग, साथ ही वे लोग जिन्हें उन्होंने

शांतिपूर्ण बनने में मदद की :P:

उस महानुभाव ने राजागृह नगर में प्रवेश किया।

वह महिमावान, दस निवासों का स्वामी

(दासवासो) दस शक्तियों वाला, दस धर्मों का ज्ञाता,

दस गुणों से संपन्न होने के कारण, बुद्ध ने उन्हें घेर लिया।

दस सौ सैनिकों के दल के साथ शहर में प्रवेश किया।

राजगृह।

तब लोगों के विशाल समूह ने उस युवक की मनमोहक सुंदरता को देखकर ऐसा सोचा: "सचमुच, यह युवक अत्यंत सुंदर है; हमने सचमुच कभी ऐसा नहीं देखा," और पूछा: "यह युवक कहाँ से है? या यह किसका है?" उनका प्रश्न सुनकर, युवक ने इस प्रकार एक श्लोक सुनाया:-

मैं उस व्यक्ति का सेवक हूँ

जो बुद्धिमान है, हर तरह से संयमी है, जो पवित्र है।

एक, अद्वितीय, पूजा के योग्य,

उत्कृष्ट शब्दों का वक्ता जो अनुकूल हो

संसार में निर्वाण प्राप्त करना।

3.17. गुरु ने सक्का द्वारा संभव हुई यात्रा शुरू की और एक हजार भिक्षुओं से घिरे राजगृह नगर में प्रवेश किया। राजा ने बुद्ध के नेतृत्व में पुरोहितों को बड़ा दान देते हुए कहा, "हे पूज्यवर! मैं तीन रत्नों के बिना नहीं रह सकता; उचित समय आने पर मैं परम पूज्य बुद्ध के दर्शन करना चाहता हूँ; लाठी वन बहुत दूर है; हमारा यह बाँस वन न तो बहुत दूर है और न ही बहुत पास; इसमें बुद्ध के मठ बनने के योग्य प्रवेश और निकास मार्ग हैं; हे पूज्यवर! परम पूज्य बुद्ध इसे स्वीकार करें।" इसके बाद वे एक स्वर्णमय पात्र में बहुमूल्य सुगंधित फूलों से सुगंधित रत्नमय जल लाए और दासबाला के हाथों पर आहुति जल अर्पित करते हुए बाँस वन को बुद्ध को भेंट के रूप में समर्पित किया। जब बुद्ध ने उद्यान-मठ को स्वीकार किया, तो एक भीषण भूकंप आया, जो यह दर्शाता था कि "बुद्ध के उपदेश की जड़ें जड़ पकड़ चुकी हैं।" वास्तव में, जंबू द्वीप की सतह पर, वेलुवन मठ के अलावा किसी अन्य मठ को स्वीकार किए जाने पर ही भीषण भूकंप आया था। तांबदीप द्वीप में भी, महाविहार मठ के अलावा किसी अन्य मठ को स्वीकार किए जाने पर ही भूकंप आया था। गुरु ने वेलुवन (बांस के वन) के मठ का दान स्वीकार किया, राजा को धन्यवाद दिया, अपने आसन से उठे और भिक्षुओं के समूह से घिरे हुए वेलुवन चले गए।

बुद्ध का जीवन 036

3.18. उस समय, दो परिब्बाजक तपस्वी, सारिपुत्त और मोग्गलाना, अमरत्व की खोज में राजगृह नगर में निवास कर रहे थे। थेरा असज्जी को भिक्षा मांगने नगर में प्रवेश करते देख, सारिपुत्त श्रद्धा से भर उठे, थेरा के पास गए और "सभी घटनाओं की उत्पत्ति उनके कारणों से होती है" से शुरू होने वाली गाथा सुनकर सोतापत्ति प्राप्त कर ली और वही गाथा अपने साथी मोग्गलाना को भी सुनाई। मोग्गलाना भी सोतापत्ति प्राप्त कर चुके थे। दोनों ने संजय को दर्शन दिए और अपने अनुयायियों के साथ भगवान संजय के समक्ष भिक्षु बन गए। उनमें से मोग्गलान ने सात दिनों में अर्हत पद प्राप्त कर लिया। सारिपुत्त ने आधे महीने में यही पद प्राप्त किया। गुरु ने उन दोनों को अपने प्रमुख शिष्यों का स्थान दिया। जिस दिन सारिपुत्त ने अर्हत पद प्राप्त किया, उसी दिन उन्होंने थेरा सारिपुत्त के साथ एक सभा बुलाई।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.2 ग्राम बुद्ध की घर वापसी

स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान भाग - 1.2 : गौतम बुद्ध
1.2 ग्राम बुद्ध अपने पिता के राज्य में लौटते हैं और अपने पुत्र राहुल को दीक्षा देते हैं
बुद्ध24

3.19. जब तथागत उसी बाँस के बाग में निवास कर रहे थे, तब महान राजा सुद्धोदन ने यह सुना: "सुना है कि मेरे पुत्र ने छह वर्ष तक कठिन कर्म करके बुद्ध बनकर सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया है, उसने धर्म का उत्कृष्ट चक्र चलाया है और वह बाँस के बाग (वेलुवन) में है।" उन्होंने एक मंत्री से कहा: "आओ, मेरे सेवक! तुम एक हजार पुरुषों से घिरे हुए राजगृह जाओ और मेरी ओर से कहो: 'तुम्हारे पिता, महान राजा सुद्धोदन अपने पुत्र से मिलना चाहते हैं' और मेरे पुत्र को लेकर वापस आओ।" उस मंत्री ने सिर झुकाकर राजआदेश ग्रहण किया और कहा, "हे महाराज!" फिर वह साठ योजन लंबी यात्रा पर, एक हजार पुरुषों से घिरे हुए, शीघ्र ही आगे बढ़े और दासबाला की चार सभाओं के बीच बैठ गए। उसी समय दासबाला धर्मोपदेश के समय मठ में प्रवेश कर गए। उस मंत्री ने मन ही मन कहा, "राजा द्वारा भेजा गया राजसंदेश अभी के लिए स्थगित कर दिया जाए", और सभा के अंतिम छोर पर खड़े होकर गुरु के धर्मोपदेश को सुना। खड़े-खड़े ही उन्होंने अपने हजार पुरुषों के साथ अर्हतत्व प्राप्त किया और भिक्षु बनने की इच्छा व्यक्त की। भगवान ने हाथ बढ़ाकर आह्वान किया, "आओ! भिक्षुओं!" उसी क्षण वे सभी जादुई रूप से प्रकट हुए और साठ वर्ष के थेरों के समान हो गए। अर्हतत्व प्राप्त करने के समय से ही उस मंत्री ने मन ही मन कहा, "हे संतों (आर्यों), समभाव बनाए रखें" और उन्होंने दासबाला को भेजे गए राजसंदेश के बारे में कुछ नहीं कहा। राजा ने ऐसा किया। राजा ने उसी उद्देश्य से एक और मंत्री को भेजा और कहा: "जो गया था, वह न तो लौटा है और न ही उसके लौटने का कोई संदेश आया है।" वह दूसरा मंत्री भी बुद्ध के पास गया, अपने दल के साथ अर्हतत्व प्राप्त किया, लेकिन मौन रहा। फिर राजा ने उसी उद्देश्य से सात और मंत्रियों को भेजा और कहा: "आओ! मेरे सेवकों! तुम भी जाओ!" वे सभी नौ मंत्री, अपने नौ हजार पुरुषों के साथ, अपने कर्तव्य पूरे करने के बाद, मौन हो गए और वहीं रुके रहे।

3.20. राजा को कोई सूचना न मिलने पर, जो उन्हें संदेश के माध्यम से भेजी जानी थी, उन्होंने सोचा, "मेरे इतने सारे सैनिक, मेरे प्रति स्नेह की कमी के कारण, कोई सूचना संदेश के माध्यम से नहीं लाए; अब भला मेरा दूत कौन बनेगा?" और पूरी राजसेना का सर्वेक्षण करते हुए उन्होंने कालुदायी को देखा। कहा जाता है कि उन्होंने राजा के लिए सभी प्रकार के लाभ किए, वे एक विश्वासयोग्य, अत्यंत विश्वसनीय मंत्री थे, जिनका जन्म बोधिसत्व के साथ एक ही दिन हुआ था, और वे बोधिसत्व के साथ कोमल मिट्टी से खेलने वाले सहयोगी थे। तब राजा ने उनसे इस प्रकार कहा: "प्रिय कालुदाई! क्योंकि मैं अपने पुत्र को देखने की इच्छा रखता हूँ, इसलिए मैंने नौ मंत्रियों को नौ हजार सैनिकों के साथ भेजा था; उनमें से एक भी वापस नहीं आया; कोई भी आकर मुझे कोई खबर नहीं देता, यहाँ तक कि वह खबर भी नहीं जो मेरे जीवन के लिए खतरे के बारे में हो; मैं अपने जीवित रहते अपने पुत्र को देखना चाहता हूँ; क्या आप सचमुच मुझे मेरे पुत्र से मिलवा सकते हैं?" कालुदाई ने उत्तर दिया: "महाराज! मैं ऐसा कर सकता हूँ, यदि मुझे भिक्षु बनने की अनुमति मिल जाए।" राजा ने कहा: "मेरे प्रिय! चाहे तुम भिक्षु बनो या न बनो, कृपया मुझे मेरे पुत्र से मिलवा दो।" कालुदायी ने "बहुत अच्छा! महाराज!" कहते हुए राजा से राजसंदेश लिया, राजगृह गए, गुरु द्वारा धर्मोपदेश के समय सभा के अंतिम छोर पर खड़े होकर धर्म का प्रवचन सुना, अपने साथियों के साथ अर्हतत्व प्राप्त किया, "आओ! भिक्षु!" कहकर भिक्षु बन गए और वहीं निवास करने लगे।

3.21. गुरु बुद्ध बनने के बाद, प्रथम वर्षा ऋतु के पूरे समय इसिपताना में रहे और उपवास की समाप्ति पर पवाराना समारोह संपन्न किया, फिर उरुवेला गए, जहाँ तीन माह रहकर उन्होंने गुंथे हुए बालों वाले तीन तपस्वी भाइयों को परिवर्तित किया, और फुस्सा माह की पूर्णिमा के दिन एक हजार भिक्षुओं के दल से घिरे हुए राजगृह गए और वहाँ दो माह रहे। बनारस से प्रस्थान के बाद अब तक पाँच माह बीत चुके थे। शीत ऋतु का पूरा समय बीत चुका था। थेरा कलुदयी के आगमन के बाद से सात-आठ दिन बीत चुके थे। फाग्गुन माह की पूर्णिमा के

दिन, थेरा ने सोचा: "सर्दी समाप्त हो गई है; वसंत ऋतु आ गई है। फसल कटाई के बाद मनुष्यों ने चारों ओर यात्रा के लिए सड़कें बना दी हैं; धरती हरी घास से ढकी हुई है; घने जंगल सुंदर फूलों से खिले हुए हैं; सड़कें अब यात्रा के योग्य हैं; अब दशाबल के लिए अपने सगे-संबंधियों पर कृपा करने का समय आ गया है।" तब थेरा परमेश्वर के पास गए और दशाबल के कुल नगर की यात्रा की प्रशंसा में कम से कम साठ श्लोकों में बोले:

बुद्ध 28

"चूंकि पेड़ पूरी तरह से खिल चुके हैं, इसलिए अब

हे पूज्यवर, गहरे लाल रंग का!

अपने पत्तों के आवरण को त्यागकर वे शुरुआत कर रहे हैं

फल देने के लिए। मानो वे आग की लपटों से चमक रहे हों।

हे महान नायक! अब समय आ गया है कि वे अपने अनुभव साझा करें।

स्वाद। मौसम न तो बहुत ठंडा है और न ही बहुत ठंडा।

गर्म; न तो दान की अत्यधिक कमी है और न ही

अकाल; ज़मीन घास से भरी और हरी है। यह है

हे महान ऋषि, वह समय!

तब गुरु ने उनसे कहा, "हे उदयि! तुम अपनी मधुर वाणी में यात्रा की इतनी प्रशंसा क्यों कर रहे हो?" उदयि ने उत्तर दिया, "आदरणीय! आपके पिता, महान राजा सुद्धोदन, आपसे मिलना चाहते हैं, कृपया अपने सगे संबंधियों पर कृपा कीजिए।" बुद्ध ने सहमति जताते हुए कहा, "उदयि! मैं अपने सगे संबंधियों पर कृपा करूंगा; भिक्षुओं के समूह को सूचित कर दीजिए, वे यात्रा के सभी कर्तव्यों का पूर्ण पालन करेंगे।" बुद्ध का उत्तर सुनकर गुरु उदयि ने कहा, "आदरणीय! ठीक है, आदरणीय," और भिक्षुओं को तदनुसार सूचित कर दिया।

3.22. बुद्ध ने अंग और मगध के दस हजार निवासियों और कपिलवस्तु के दस हजार निवासियों, कुल मिलाकर बीस हजार भिक्षुओं (जिन्होंने अपने आसवों को नष्ट कर दिया था और अरहत बन गए थे) से घिरे हुए राजगृह को छोड़कर प्रतिदिन एक योजन की दूरी तय करते हुए अपनी यात्रा पर प्रस्थान किया। उन्होंने मन ही मन कहा, "राजगृह से कपिलवस्तु साठ योजन दूर है, मैं दो महीने में वहाँ पहुँच जाऊँगा।" इस प्रकार बुद्ध ने विश्राम यात्रा पर प्रस्थान किया। थेरा कालुदयी ने भी मन ही मन कहा, "मैं महाराज के प्रस्थान की सूचना राजा को दे दूँगा।" वे आकाश में गए और राजमहल में दर्शन दिए। राजा ने थेरा को देखा, उनका हृदय प्रसन्न हुआ, उन्होंने उन्हें पालकी पर बैठने का निमंत्रण दिया और अपने लिए तैयार किए गए विभिन्न प्रकार के उत्तम स्वाद वाले भोजन से भरा एक कटोरा भेंट किया। थेरा अपने आसन से उठे और प्रस्थान के संकेत दिए। राजा ने निवेदन करते हुए कहा, "कृपया बैठिए और भोजन कीजिए, महाराज।" थेरा ने उत्तर दिया, "हे महाराज! मैं गुरु के पास जाकर भोजन करता हूँ।" राजा ने पूछा, "गुरु कहाँ हैं, महाराज?" थेरा ने उत्तर दिया, "हे महाराज! वे आपसे मिलने के उद्देश्य से बीस हजार भिक्षुओं से घिरे हुए अपनी यात्रा पर निकले हैं।" राजा प्रसन्न होकर बोले, "कृपया इस

भोजन का आनंद लीजिए; जब तक मेरा पुत्र इस नगर में न पहुँच जाए, तब तक कृपया यहीं से उसके लिए भिक्षापात्र एकत्र करें।" थेरा मान गए। राजा ने थेरा का आतिथ्य सत्कार किया, भिक्षापात्र को सुगंधित पाउडर से शुद्ध किया, उसमें उत्तम भोजन सामग्री भरी और थेरा को सौंपते हुए कहा: "कृपा करके इसे तथागत को अर्पित करें।" सभी उपस्थित लोगों के देखते ही थेरा ने कटोरा आकाश में उछाल दिया, स्वयं वायुमंडल में ऊपर गए, भिक्षापात्र लाए और उसे गुरु के हाथों में रख दिया। गुरु ने भोजन का आनंद लिया। इसी प्रकार थेरा प्रतिदिन भिक्षापात्र लाते रहे। गुरु ने भी अपनी पूरी यात्रा के दौरान राजा द्वारा भिक्षा के रूप में दिए गए भोजन को ही ग्रहण किया। थेरा प्रतिदिन भोजन के अंत में यह सूचना देते थे: "आज प्रतापी इतने योजन निकट आ गए हैं; अब, उन्होंने इतनी दूरी तय कर ली है: और बुद्ध के गुणों से संबंधित विषयों पर अपने धार्मिक प्रवचनों से, बिना उन्हें देखे ही, पूरे राजपरिवार को गुरु के प्रति पूर्ण श्रद्धा से भर दिया है। इसी कारण परमेश्वर ने उन्हें सर्वोच्च पदों में से एक प्रदान करते हुए कहा: "हे भिक्षुओं! कालुदायी वह हैं, जो मेरे शिष्य भिक्षुओं में सर्वोच्च स्थान रखते हैं और मेरे परिवार के सदस्यों को मुझमें श्रद्धा दिलाते हैं।"

3.23. जब भगवान बुद्ध आए, तो शाक्यों ने भी मन ही मन कहा, "हम अपने सबसे अच्छे रिश्तेदार का स्वागत करेंगे", और वे सब एकत्रित हुए। भगवान बुद्ध के निवास स्थान पर विचार करने के बाद, उन्होंने शाक्यों के निग्रोध वन को रमणीय मानते हुए चुना। उन्होंने सभी तैयारियाँ करवाईं, सुगंधित फूल लिए और सबसे पहले युवा बालक-बच्चियों को, जो हर प्रकार के आभूषणों से सुशोभित थे, उनका स्वागत करने के लिए आगे भेजा। बाद में, उन्होंने राजकुमारियों और राजकुमारियों को आगे भेजा। उनके बीच, उन्होंने स्वयं भगवान बुद्ध को इत्र, फूल आदि से सम्मानित करते हुए, उन्हें अपने साथ निग्रोध वन ले गए। वहाँ, भगवान बुद्ध दो हजार अरहतों से घिरे हुए, बुद्ध के लिए तैयार किए गए उत्तम आसन पर विराजमान हुए। शाक्य जन्मजात अभिमानी और अत्यधिक घमंडी थे। उन्होंने इस प्रकार विचार किया: "राजकुमार सिद्धार्थ हमसे छोटे हैं; वे हमारे सबसे छोटे चचेरे भाई, भतीजे, पुत्र, पोते हैं" और उन्होंने युवा और कनिष्ठ राजकुमारों से इस प्रकार कहा: "आप सभी उन्हें प्रणाम करें; हम आप सभी के पीछे बैठेंगे।"

3.24. जब वे इस प्रकार बिना उनकी आराधना किए बैठे रहे, तब प्रतापी प्रभु ने उनका इरादा जान लिया और कहा, "मेरे सगे-संबंधी मुझे प्रणाम नहीं करते; देखो! मैं अब उन्हें अपनी आराधना करने पर मजबूर करूँगा", फिर चौथे ध्यान में प्रवेश किया, वहाँ से उठे, आकाश में गए और कंद के आम के वृक्ष के नीचे किए गए दो चमत्कारों के समान एक चमत्कार किया, मानो अपने चरणों की धूल उनके सिर पर बिखेर दी हो। उस अद्भुत घटना को देखकर राजा ने कहा, "हे पूज्यवर! आपके जन्मदिन पर, जैसे ही मैंने आपके चरणों को दूसरी दिशा में घूमते देखा, मैंने आपके चरणों में प्रणाम किया और जब कालदेवल की पूजा करने के लिए आपको आपके चरणों में बुलाया गया, तो मैं ब्राह्मण ऋषि के सिर पर विराजमान हो गया। यह मेरी पहली प्रणाम थी। हल चलाने के दिन भी, जैसे ही मैंने आपके युजेनिया वृक्ष की स्थिर छाया को देखा, जब आप ******** (पृष्ठ 159) के नीचे शुभ पलंग पर सो रहे थे, मैंने आपके चरणों की पूजा की। यह मेरी दूसरी प्रणाम थी। अब, जब मैं ऐसा चमत्कार देख रहा हूँ जो मैंने पहले कभी नहीं देखा, तो मैं आपके चरणों की पूजा कर रहा हूँ। यह मेरी तीसरी प्रणाम है।" जब राजा ने प्रतापी बुद्ध की पूजा की, तो एक भी शाक्य ऐसा नहीं बचा जो उनकी पूजा किए बिना रह सके। सभी ने स्वाभाविक रूप से उन्हें अपना-अपना सम्मान दिया।

3.25. इस प्रकार अपने सगे-संबंधियों से आराधना करवाने के बाद, भगवान आकाश से अवतरित हुए और अपने लिए तैयार किए गए आसन पर बैठ गए। जब भगवान बैठे, तो उनके व्याकुल सगे-संबंधी एकत्रित हो गए। वे सब एकाग्रचित्त होकर बैठ गए। इसके बाद एक विशाल वर्षा-बादल से कमल-वर्षा हुई। तांबे के रंग की वर्षा ध्वनि उत्पन्न करती हुई गिरी। इसने केवल उन्हीं को भीगा जो भीगना चाहते थे। जो भीगना नहीं चाहते थे, उनके शरीर पर एक बूंद भी नहीं गिरी। इस घटना को देखकर सभी हृदय और आत्मा से विस्मित हो गए और कहने लगे, "सचमुच, यह अद्भुत है! सचमुच, यह विचित्र है!" गुरु ने उत्तर दिया, "केवल अब ही नहीं, मेरे सगे-संबंधियों की सभा पर कमल-वर्षा हुई है, पहले भी वर्षा हुई थी", और इस कथन को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने वेस्सन्तरा जन्म-कथा (जातक) सुनाई। धर्म का उपदेश सुनकर सभी शाक्य पुरुष उठे, प्रणाम किया और चले गए। राजा और उनके मंत्रियों में से एक भी ऐसा नहीं था जिसने जाने से पहले कहा हो: "कल कृपया हमारा भोजन-अर्पण स्वीकार करें।"

3.26. अगले दिन, गुरुजी बीस हजार भिक्षुओं के दल के साथ भिक्षा मांगने के लिए कपिलवस्तु नगर में प्रवेश किया। उन्हें न तो किसी ने आमंत्रित किया और न ही किसी ने उनका भिक्षापात्र ग्रहण किया। गुरुजी नगर के द्वार के स्तंभ के पास खड़े होकर मन ही मन सोचने लगे, "पूर्ववर्ती बुद्ध अपने कुल नगर में भिक्षा मांगने के लिए कैसे विचरण करते थे? क्या वे शासकों के घरों में वरीयता क्रम से जाते थे? या फिर क्या वे घर-घर जाकर भिक्षा मांगने का धुतंग अभ्यास करते थे?" इसके बाद, यह देखकर कि पूर्ववर्ती बुद्धों में से कोई भी अपने शाही रिश्तेदारों के पास भोजन के लिए नहीं गया, उन्होंने मन ही मन कहा, "मुझे भी अब उनकी इस परंपरा का पालन करना चाहिए; भविष्य में भी, मेरे शिष्य मेरे ही उदाहरण का अनुसरण करते हुए भिक्षा मांगने के कर्तव्य को पूर्णतः निभाएंगे", और वे स्वयं उस घर से भिक्षा मांगने के लिए निकल पड़े जहाँ से वे प्रवेश कर चुके थे। दो मंजिला, तीन मंजिला आदि आलीशान अपार्टमेंटों में शेर के पिंजरे जैसी खिड़कियां खोलकर बड़ी संख्या में लोग उन्हें ध्यान से देखने में व्यस्त थे और आपस में कह रहे थे: "लोग कहते हैं कि हमारे स्वामी राजकुमार सिद्धार्थ भिक्षा मांगने के लिए घूमते हैं।"

बुद्ध का जीवन 041

3.27. राहुल की माता ने भी अपने कमरे की खिड़की खोली और मन ही मन कहा, "कहा जाता है कि हमारे युवा स्वामी पहले इसी नगर में राजसी वैभव के साथ सोने की पालकियों आदि पर विचरण करते थे, अब भिक्षा मांगने के लिए बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, पीले वस्त्र धारण करके, हाथों में भिक्षापात्र लिए घूम रहे हैं; क्या यह वाकई शोभा देता है?" उन्होंने बाहर देखा और पाया कि प्रतापी बुद्ध, अतुलनीय महिमा से जगमगाते हुए, एक महान व्यक्तित्व के बत्तीस गुणों से सुशोभित, अपने अस्सी छोटे अंगों से दीप्तिमान, अपनी एक-दस मीटर लंबी किरणों को भलीभांति प्रदर्शित करते हुए, शहर की सड़कों को अपने रागों (या हर प्रकार की कामुकता से रहित, या विभिन्न रंगों (विराग) से दीप्तिमान शरीर की चमक से रोशन कर रहे थे, इसलिए उन्होंने अपने सिर के मुकुट से लेकर पैरों के तलवों तक दस स्वरों से प्रतापी की स्तुति की। नर-सिंह श्लोक (नरसिहगाथा) इस प्रकार:-

शेर मनमोहक नीले मुलायम बालों वाला है

लहराते बाल; उसका माथा बेदाग जैसा दिखता है

सूर्य की सतह, उसकी नाक आनुपातिक रूप से है

प्रमुख, कोमल और लंबा; उसकी किरणों की चमक

व्यापक रूप से विकिरण करना,

और राजा को इस प्रकार सूचित किया: "आपका पुत्र अपना भिक्षा-भोजन इकट्ठा करने जा रहा है"।

बुद्ध का जीवन 039

राजा का मन व्याकुल हो गया, उन्होंने अपने वस्त्र स्वयं ठीक किए, अपने महल से शीघ्रता से बाहर निकले और तेजस्वी के पास पहुँचकर उनके सामने खड़े होकर पूछा, "हे पूज्यवर! आप हमें कब अपमानित कर रहे हैं? आप भिक्षा क्यों माँग रहे हैं? आपने हमें यह क्यों नहीं बताया कि इतने भिक्षुओं के लिए भोजन जुटाना संभव नहीं है?" उत्तर था, "हे महाराज! यह भिक्षा माँगना हमारी खानदानी परंपरा है।" राजा ने उत्तर दिया, "हे पूज्यवर! क्या हमारा वंश महासम्मत क्षत्रिय के नाम से नहीं जाना जाता? हमारी परंपरा में ऐसा कोई क्षत्रिय नहीं है

जो भिक्षा माँगता हो।" बुद्ध सड़क पर खड़े-खड़े ही उत्तर देने लगे: "हे महान राजा! आपका कुल, अर्थात्, यह क्षत्रिय वंश है; परन्तु हमारा वंश, जिसमें 'दीपांकर, कोण्डञ्ञ, कस्सपा' शामिल हैं, यही है, अर्थात् बुद्ध का वंश; ये और हजारों अन्य बुद्ध भी भिक्षा मांगकर ही अपना जीवन यापन करते थे", और उन्होंने यह श्लोक पढ़ा:-

आपको प्रयास करना होगा; आपको निष्क्रिय नहीं रहना चाहिए।

लापरवाही; आपको धर्म का अभ्यास इस प्रकार करना चाहिए ताकि यह

अच्छा अभ्यास; जो धम्म का अभ्यास करता है, वह जीवन यापन करता है।

(सेती) इस दुनिया में और अपनी दुनिया में भी खुशी से

बाद का अस्तित्व।"

श्लोक के पाठ के अंत में, राजा सोतापत्ति के फल (समाधि/तंद्रा) में स्थापित हो गए। यह सुनकर एक और श्लोक:

धम्म का अभ्यास इस प्रकार करो कि वह अच्छा अभ्यास बन जाए;

इसका अभ्यास इस प्रकार नहीं किया जाना चाहिए कि यह एक बुरी आदत बन जाए।

अभ्यास; जो धम्म का अभ्यास करता है, वह जीवन यापन करता है।

इस जीवन में और यहाँ भी प्रसन्नतापूर्वक रहना-

बाद में,"

राजा सकदागामी समाधि (सम्मोहन) में स्थापित हो गए, जो केवल एक बार ही मानव जन्म लेंगे। महा-धम्म-पाल-जातक जन्म-कथा 447 सुनकर, राजा अनागामी (जो कभी मानवलोक में नहीं लौटेंगे) की समाधि में स्थापित हो गए। मृत्यु के निकट, राजा सफेद छत्र के नीचे अपने सुंदर शाही पलंग पर लेटे हुए ही अर्हतत्व प्राप्त कर लिया। राजा ने वन में रहकर गहन ध्यान में लीन होने का कोई आडंबर नहीं किया। जैसे ही उन्होंने मोक्ष की प्रथम अवस्था (सोतापत्ति समाधि) को प्राप्त किया, राजा ने बुद्ध का कटोरा उठाया, उन्हें और उनके अनुयायियों को अपने महल में आमंत्रित किया और उन सभी को उत्तम भोजन से दावत दी। भोजन समाप्त होने के बाद, राजमहल की माता को छोड़कर सभी स्त्रियाँ राजमहल से आकर प्रभु को प्रणाम करने लगीं। यद्यपि उनके आसपास के लोग उनसे कह रहे थे, "कृपया जाइए; प्रभु को प्रणाम कीजिए", फिर भी वे नहीं गईं और बोलीं, "यदि मुझमें योग्यता है, तो प्रभु स्वयं मेरे पास आएँगे; उनके आने पर ही मैं उन्हें प्रणाम करूँगी।"

3.28. प्रतापी प्रभु ने अपना भिक्षापात्र राजा को सौंप दिया, अपने दो प्रमुख शिष्यों के साथ राजसी राजकुमारी के सुंदर कक्ष में गए और अपने लिए तैयार आसन पर बैठते हुए कहा: "जब राजकुमारी अपनी इच्छा अनुसार प्रणाम करे, तब कुछ न कहा जाए।" वह शीघ्र ही आई, उनके टखनों को पकड़ा, अपना सिर उनके चरणों में रखा और अपनी इच्छा अनुसार उनकी आराधना की। राजा ने राजकुमारी की उन योग्यताओं के बारे में बताया जो उन्होंने भगवान के प्रति स्नेह और श्रद्धा के रूप में प्राप्त की थीं: "हे पूज्यवर! मेरी पुत्री ने जब सुना कि आपने पीले वस्त्र, ऊपर और नीचे, पहने हैं, तब से वह भी पीले वस्त्र पहनने लगी; जब उसने सुना कि आप केवल एक बार भोजन करते हैं, तो वह भी उसी प्रकार एक बार भोजन करने लगी; जब उसने सुना कि आपने सोने के लिए आलीशान पलंग का त्याग कर दिया है, तो वह भी केवल एक कपड़े की पट्टी वाले पलंग पर सोने लगी; जब उसे पता चला कि आप मालाओं, इत्र आदि का त्याग करते हैं, तो वह भी मालाओं और इत्र का त्याग करने लगी; यद्यपि उसके अपने रिश्तेदारों ने संदेश भेजकर कहा: "हम आपकी देखभाल करेंगे", फिर भी उसने उनमें से किसी की ओर देखा तक नहीं; हे पूज्यवर! इस प्रकार मेरी पुत्री ने अपनी योग्यता प्राप्त कर ली है।" बुद्ध ने उत्तर दिया: "महाराज! यह बात विचित्र नहीं है, क्योंकि अब आपकी देखरेख में, जब राजकुमारी की बुद्धि परिपक्व हो गई है, तो वह अपना ध्यान स्वयं रख सकती है; पहले तो यह राजकुमारी, यद्यपि उसे पहाड़ी की तलहटी में असुरक्षित भटकना पड़ता था और उसकी बुद्धि अभी परिपक्व नहीं हुई थी, फिर भी वह अपना ध्यान स्वयं रखती थी।" ऐसा कहकर, बुद्ध ने किन्नरा की जन्म कथा (चंदा-किन्नरा-जातक) 485 सुनाई, अपने आसन से उठे और चले गए।

3.29. अगले दिन, जब राजकुमार नंदा के नए घर में प्रवेश और विवाह समारोह के उपलक्ष्य में भोज आयोजित किए जा रहे थे, बुद्ध उनके घर गए, उन्हें भिक्षु बनाने की इच्छा से उन्हें अपना भिक्षापात्र पकड़ने को कहा, औपचारिक भाषण दिया, अपने आसन से उठे और चले गए। राजकुमार को जाते देख राजकुमारी जनपद कल्याणी ने उनसे कहा, "हे मेरे स्वामी, जल्दी लौट आइए!" और गर्दन उठाकर उनकी ओर देखने लगीं। भगवान से "कृपया अपना भिक्षापात्र वापस ले लीजिए" कहने में असमर्थ होने के कारण, वे मठ पहुँचने तक उनके साथ चले गए। उनकी इच्छा के विरुद्ध ही, भगवान ने उन्हें भिक्षु बना दिया। इस प्रकार, कपिलवस्तु नगर में आगमन के तीसरे दिन, भगवान ने राजकुमार नंदा को भिक्षु बना दिया।

बुद्ध का जीवन 042

3.30. सातवें दिन, राहुल की माता ने भी युवा राजकुमार को सजाया-संवारा और उसे इन शब्दों के साथ भगवान के समक्ष भेजा: "मेरे प्रिय पुत्र! इस भिक्षु को देखो, जिनका रंग ब्रह्मा के समान है, जो स्वर्ण रंग के हैं, बीस हजार भिक्षुओं से घिरे हुए हैं; वे तुम्हारे पिता हैं; उनके पास सोने का अपार खजाना है; हमने उन्हें उनके संन्यास के समय से नहीं देखा है; जाओ और उनसे अपना उत्तराधिकार मांगो, 'मेरे प्रिय पिता! मैं, आपका राजकुमार, अभिषेक प्राप्त करके विश्वराज बनूंगा; मुझे धन की आवश्यकता है; कृपया मुझे धन दीजिए; वास्तव में, पुत्र ही पिता की संपत्ति का स्वामी होता है।'" युवा राजकुमार जैसे ही भगवान के समक्ष पहुंचा, उसे पिता तुल्य स्नेह प्राप्त हुआ, वह प्रसन्न हुआ और बोला: "हे भिक्षु! आपकी परछाई धन्य है" और अपने विषय के अनुरूप अनेक अन्य बातें कहने लगा। भोजन समाप्त करने के बाद, परम पूज्य गुरु ने धन्यवाद भाषण दिया, अपने आसन से उठे और प्रस्थान किया। युवा राजकुमार भी परम पूज्य गुरु के पीछे-पीछे यह कहते हुए चले: "हे भिक्षु! कृपया मुझे मेरा उत्तराधिकार प्रदान करें; कृपया मुझे मेरा उत्तराधिकार प्रदान करें; कृपया मुझे मेरी विरासत प्रदान करें।" परम पूज्य गुरु ने युवा राजकुमार को वापस नहीं लौटने दिया। आसपास के लोगों ने भी युवा राजकुमार को, जो परम पूज्य गुरु के साथ जा रहे थे, वापस नहीं लौटने दिया। इस प्रकार, युवा राजकुमार परम पूज्य गुरु के साथ सीधे मठ चले गए।

बुद्ध 26

3.31. इसके बाद, भगवान ने मन ही मन सोचा, "पिता के पास जो भी धन है, यह व्यक्ति उसे पाने की इच्छा रखता है, जो पुनर्जन्मों के चक्र में बांधता है और विनाश लाता है; अब मैं इसे वह सात प्रकार का पवित्र धन दूंगा जो मैंने बोधि वृक्ष के प्रांगण में प्राप्त किया था; मैं इसे अलौकिक उत्तराधिकार का स्वामी बना दूंगा," और आदरणीय सारिपुत्त से कहा, "तो फिर, सारिपुत्त! राहुल को भिक्षु संघ में शामिल

होने दो।" थेरा ने उन्हें नवोदित भिक्षु बना दिया। जब युवा राजकुमार नवोदित भिक्षु बन गया, तो राजा को घोर कष्ट भोगना पड़ा। उस पीड़ा को सहन न कर पाने के कारण राजा परम पूज्य के समक्ष गए और उनसे एक वरदान मांगा: "हे पूज्य! यह अच्छा होगा यदि मेरे प्रभु माता-पिता की सहमति के बिना पुत्र का विवाह न कराएं।" परम पूज्य ने उन्हें वरदान दिया और अगले दिन, राजमहल में भोजन करने के बाद, जब राजा, जो एक तरफ बैठे थे, ने कहा: "हे पूज्य! जब आप कठिन कर्म कर रहे थे, तभी एक देवता मेरे पास आए और बोले: 'आपका पुत्र मर गया है'।" उनकी बातों पर विश्वास न करते हुए, मैंने उनकी खबर को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया: 'मेरा पुत्र बुद्ध बनकर पूर्ण ज्ञान प्राप्त किए बिना नहीं मरेगा'। इस पर प्रतापी ने उत्तर दिया: "अब तुम ऐसी कहानी पर कैसे विश्वास कर सकते हो, जबकि पहले भी तुमने उन लोगों पर विश्वास नहीं किया था जिन्होंने तुम्हारे पुत्र की मृत्यु की कहानी सुनाते हुए हड्डियाँ दिखाई थीं?" और इस घटना के लिए महादम्मपालों की जन्म-कथा (447 जातक कथा) सुनाई। प्रवचन के अंत में, राजा अनागामी (अनागामी) के फल में स्थापित हो गए।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.2 घंटे कई मठों की स्थापना

स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान भाग - 1.2 : गौतम बुद्ध

1.2h मठों की स्थापना

Lifeofbuddha045

3.32. जब उन्होंने इस प्रकार अपने पिता को तीनों गुणों में स्थापित कर दिया, तो प्रतापी बुद्ध अगले दिन राजगृह गए और शीतल वन (जीतवन) में निवास करने लगे। उस अवसर पर, एक धनी गृहस्थ, अनाथपिंडिका, पाँच सौ गाड़ियों में माल लेकर राजगृह गए और अपने प्रिय सहयोगी, एक बैंकर के घर पहुँचे। वहाँ उन्होंने यह समाचार सुना कि बुद्ध का पुनरुत्थान हुआ है, वे सुबह बहुत जल्दी, देवताओं की शक्ति से खुले नगर द्वार से होकर गुरु के पास गए, धर्म सुना, पवित्रता के प्रथम चरण (सोतापत्ति) के गुण में स्थापित हुए, और दूसरे दिन बुद्ध के नेतृत्व में पुरोहितों को दान का एक बड़ा दान दिया; उन्होंने गुरु की अनुमति से सावत्थी आने का मार्ग अपनाया, वापसी में 45 योजन दूर एक स्थान पर एक लाख का दान दिया, प्रत्येक योजन पर मठ बनवाए, 18 करोड़ सोने के सिक्कों की कीमत पर जेतवन खरीदा और करोड़ों सोने को जेतवन की भूमि पर सोने के सिक्कों की एक बड़ी चादर की तरह फैलाकर उस पर नौ श्रेणियों के नवनिर्मित भवन बनवाए। जेतवन के केंद्र में उन्होंने दशबल (दस शक्तियों वाले बुद्ध) के लिए एक सुगंधित मंदिर बनवाया। इसके चारों ओर उनके 80 प्रमुख शिष्यों के लिए अलग-अलग आवासीय मठ बनवाए गए। शेष मठ एकल कुटिया, दोहरी कुटिया, हंस के आकार की गोलाकार संरचना, लंबे और छोटे हॉल, पंडाल आदि के रूप में थे, जिनमें कमल का तालाब, गलियारे, रात्रि विश्राम स्थल और दिन विश्राम स्थल भी शामिल थे। इस प्रकार अठारह करोड़ स्वर्ण सिक्कों का बलिदान देकर एक रमणीय भूमि पर एक सुंदर मठ का निर्माण करवाकर अनाथपिंडिका ने दसबल (बुद्ध) को आमंत्रित करने के लिए एक दूत भेजा। उनका संदेश सुनकर, गुरु, भिक्षुओं के एक विशाल समूह से घिरे हुए, राजगृह से चले आए और अंततः सावत्थी नगर पहुँचे।

3.33. महान धनदाता ने विशाल मठ को तैयार करवाया और जिस दिन तथागत जेतवन मठ में प्रवेश किया, उस दिन उन्होंने अपने पुत्र को, जो उत्तम वस्त्रों से सुसज्जित था, पाँच सौ युवतियों के साथ भेजा, जो समान रूप से सुसज्जित और अलंकृत थे। धनदाता के पुत्र और उनके दल ने पाँच रंगों के चमकीले वस्त्रों से बने पाँच सौ झंडे लिए और दशाबल के सामने विराजमान हो गए। उनके पीछे धनदाता की दो पुत्रियाँ, महासुभाद्धा और चूलासुभाद्धा, पाँच सौ युवतियों के साथ हाथों में जल से भरे घड़े लिए गुरु से मिलने गईं। इन दोनों पुत्रियों और उनके दल के पीछे धनदाता की पत्नी, उत्तम वस्त्रों से सुसज्जित, पाँच सौ स्त्रियों के साथ हाथों में भोजन से भरे कटोरे लिए निकलीं। उन सबके पीछे, नए वस्त्र पहने हुए महान बैंकर, अपने पाँच सौ साथी बैंकरों के साथ, जो समान रूप से नए वस्त्र पहने हुए थे, परम पूज्य बुद्ध से मिलने के लिए निकले। भक्तों की इस सभा को अपने आगे रखते हुए, परम पूज्य बुद्ध, भिक्षुओं के एक विशाल समूह से घिरे हुए, जेतवन मठ में प्रवेश कर गए। उनकी असीम महिमा और अनंत कृपा से, उनके शरीर की किरणों के माध्यम से, वन का भीतरी भाग मानो स्वर्णमय सार से अभिषेक और विरक्त हो गया था।

3.34. तब अनाथपिंडिका ने विनम्रतापूर्वक उनसे पूछा: "हे धनी गृहस्थ! मुझे इस मठ में क्या विधि अपनानी चाहिए?" बुद्ध ने उत्तर दिया, "हे धनी गृहस्थ! यह मठ चारों दिशाओं से आने वाले और अभी तक न आने वाले भिक्षुओं के लिए समर्पित रहे।" यह कहते हुए, "बहुत अच्छा, हे आदरणीय!" महान धनी अपने साथ सोने का जलपात्र लाए, दशबल (बुद्ध) के हाथों में जल डाला और इस प्रकार भेंट की: "मैं इस जेतवन मठ को बुद्ध के नेतृत्व में चारों दिशाओं से आने वाले भिक्षुओं के संगठन को भेंट करता हूँ, चाहे वे आ चुके हों या न आए हों।" गुरु ने मठ का कार्यभार संभाला और धन्यवाद करते हुए मठ दान करने के लाभों के बारे में इस प्रकार बताया:

"यह मठ सर्दी और गर्मी से बचाव करता है।"

इसके अलावा, यह जंगली जानवरों से भी सुरक्षा प्रदान करता है;

रेंगने वाले जीव और मच्छर,

यह ओस की बूंदों के साथ-साथ बारिश की बौछारों को भी रोकता है।

इसके अलावा, यह हिंसक विद्रोह को बाधित करता है।

तूफान और गर्मी। यह आश्रय के लिए उपयुक्त है।

और आराम, ध्यान में प्रवेश करने और करने के लिए

विपश्यना ध्यान।

धर्मार्थ रूप से मठ का दान

पुरोहितों द्वारा सर्वश्रेष्ठ के रूप में सराहा गया है

इसलिए, वास्तव में, एक बुद्धिमान व्यक्ति, यह देखकर

अपने स्वयं के लाभ के लिए उसे रमणीय मठों का निर्माण करना चाहिए।

टेरीज़ और अत्यधिक विद्वान भिक्षुओं को

उनमें रहते हैं। भोजन और पेय पदार्थ, कपड़े और

जो लोग

शुद्ध निष्ठा के साथ सीधा-सादा रवैया।

वे उसे धर्म का उपदेश देते, जिससे...

सभी कष्टों को दूर करने वाला। एक मठ का दानकर्ता

इस धर्म को जानने से मुक्ति मिलेगी।

आसव (कैंकर) से मुक्त होकर निर्वाण में प्रवेश करें।

दूसरे दिन से ही अनाथपिंडिका ने विशाल मठ की देखरेख शुरू कर दी। विशाखा का विशाल मठ चार महीनों में बनकर तैयार हो गया। वहीं, अनाथपिंडिका का विशाल मठ नौ महीनों में बनकर तैयार हुआ। अठारह करोड़ रुपये की उतनी ही राशि दान के रूप में विशाल मठ के निर्माण में भी खर्च हुई। इस प्रकार, अनाथपिंडिका ने केवल एक ही मठ पर अपनी संपत्ति चौवन करोड़ रुपये दान में खर्च कर दी।

3.35. बहुत समय पहले, परम पूज्य विपस्सी (पूर्व बुद्ध) के समय, पुनब्बासुमित्त नामक एक धनाढ्य व्यापारी ने पूरी भूमि पर सोने की ईंटें बिछाकर उसे खरीदा और उसी स्थान पर पुरोहितों का एक मठ (संघराम) बनवाया, जिसका क्षेत्रफल एक योजन था। परम पूज्य सिखि (पूर्व बुद्ध) के समय, श्रीवाद्ध नामक एक धनाढ्य व्यापारी ने एक भूमि को सोने के हल के फालों से ढककर खरीदा और उसी स्थान पर पुरोहितों का एक मठ बनवाया, जिसका क्षेत्रफल तीन गावूत था। परम पूज्य वेसभु (पूर्व बुद्ध) के समय, सोत्थिया नामक एक धनाढ्य व्यापारी ने एक भूमि को सोने के हाथी के चरणों से ढककर खरीदा और उसी स्थान पर पुरोहितों का एक मठ बनवाया, जिसका क्षेत्रफल आधा योजन था। परम पूज्य काकुसंध (पूर्व बुद्ध) के समय, अच्चुत नामक एक धनाढ्य ने पूरे क्षेत्र में सोने की ईंटें बिछाकर एक भूमि खरीदी और उसी स्थान पर गावुता क्षेत्रफल में पुरोहितों के लिए एक मठ का निर्माण किया। परम पूज्य कोनागमना (पूर्व बुद्ध) के समय, उगा नामक एक धनाढ्य ने पूरे क्षेत्र में सोने के कछुए बिछाकर एक भूमि खरीदी और उसी स्थान पर सोलह एकड़ (करीसा) क्षेत्रफल में पुरोहितों के लिए एक मठ का निर्माण किया। परन्तु हमारे परम पूज्य बुद्ध के समय, अनाथपिंडिका नामक धनाढ्य ने वह भूमि खरीदी जो समस्त बुद्धों का पवित्र स्थान है।

3.36. इस प्रकार, परम पूज्य भगवान ने महान बोधि वृक्ष की छत पर सर्वज्ञता प्राप्त करने के समय से लेकर पूर्णतम अमर शांति (परिनिर्वाण) की ओर प्रस्थान करने के लिए शयनगृह में जाने तक अमुक स्थान पर निवास किया। इसे सन्तिक निदान (निकटवर्ती प्रस्तावना) के रूप में जाना जाता है।

प्रस्तावनाओं पर चर्चा यहीं समाप्त होती है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> 1.2i बुद्ध अपने बारे में बताते हैं
स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

1.3.1अतीत की महिमा
1.3.2दान और पुण्य संचय
1.3.3दान, शील, त्याग, संबोधि और निर्वाण में पूर्णता
1.4पिछले जन्मों में किए गए अक्षम्य गलत कर्मों की सूची
1.4.1पूर्व बुद्ध कश्यप के विरुद्ध अहंकारवश अनुचित वाणी का प्रयोग करने के कारण, अब बुद्ध बनने के लिए लंबे और कठिन मार्ग पर कष्ट भोग रहे हैं।
1.4.2मौन बुद्ध पर झूठा आरोप लगाने के पिछले कर्म, फिर नरक में कष्ट भोगने और अब विरोध पर
1.4.3बुद्ध के शिष्यों द्वारा प्रदर्शित उड़ने की जादुई शक्ति
1.4.4पल भर में उगने वाले और कभी न खत्म होने वाले फलों से भरपूर आम के पेड़ की जादुई शक्ति का प्रदर्शन।
1.4.5स्वर्ग में जादुई शक्तियों का प्रदर्शन करना और वहाँ अपनी माँ को शिक्षा देना
1.4.6एक पूर्व बुद्ध शिष्य पर यौन दुराचार का झूठा आरोप लगाने के पूर्व कर्म के फल पर, अब झूठे आरोप का सामना कर रही महिला सिंका-मनविका द्वारा लिखित लेख
1.4.7मौन बुद्ध पर यौन दुराचार का झूठा आरोप लगाने के पिछले कर्म पर, अब लेडी सुंदरिका द्वारा झूठे आरोप की बदनामी का सामना करना पड़ रहा है
1.4.8यौन दुराचार के लिए एक तपस्वी पर झूठा आरोप लगाने के पिछले कर्म पर, अब मठ में सुंदरिका का मृत शरीर मिलने के घोटाले का सामना करना पड़ रहा है
1.4.9अपने भाई को पत्थर से मारने के पिछले कर्मों के कारण, अब चचेरे भाई द्वारा फेंके गए पत्थर से घायल हो रहा है
1.4.10मौन बुद्ध पर पत्थर फेंकने के पिछले कर्म के कारण, अब पत्थर के टुकड़े से चोट लग रही है
1.4.11मौन बुद्ध को हाथी से मारने के पिछले कर्म पर, अब नालगिरी हाथी द्वारा हमला किया जा रहा है
1.4.12तलवार से लोगों को मारने के पिछले कर्मों के कारण, अब पैर में चोट लगी है और उसकी सर्जरी हो रही है
1.4.13मछलियों को मारने का आनंद लेने के पिछले कर्मों के कारण, अब लगातार सिरदर्द हो रहा है
1.4.14पिछले बुद्ध को अच्छा भोजन देने से इनकार करने के पिछले कर्म पर, अब घोड़ों का चारा खाना पड़ रहा है
1.4.15पहलवान की पीठ तोड़ने के पिछले कर्म के कारण, अब लगातार पीठ दर्द हो रहा है
1.4.16चिकित्सक के रूप में गलत इलाज के पिछले कर्मों के कारण, अब निर्वाण से पहले पेचिश हो रही है

1.2i बुद्ध अपने बारे में बोलते हैं: अतीत की महिमा, अच्छे कर्म और बुरे कर्म

परिचय
थेरापदान

बुद्ध पर अध्याय

आंतरिक प्रस्तावना पर टिप्पणी
5. "अब, बुद्धों की जीवनियाँ सुनें"
शुद्ध हृदय से। असंख्य हैं
धर्म के सम्राट, जो स्वयं
तीस सिद्धियों को पूरा किया।
5.1. इस श्लोक में पाली शब्द 'अथ' एक क्रियाविशेषण कण (निपात) है, जिसका अर्थ है कि यह रूप के सिद्धांत को इंगित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। दो प्रकारों में से, एक वर्गीकरण योग्य और दूसरा जो वर्गीकरण योग्य नहीं है, यह क्रियाविशेषण कण वर्गीकरण योग्य है। (पृष्ठ 171)
व्याकरण में 'अथा' शब्द का प्रयोग किस स्थिति में होता है?
सेवा और भाग्य (मांगला) का, उपलब्धि का-

निरंतर उल्लेख और पुष्टि या जोर
होना और चले जाना।
तो वास्तव में, भी,-
"यह एक विशेष क्रिया, एक विशेष को दर्शाता है
परिस्थिति और विशेष उद्देश्य।
सर्वश्रेष्ठ और वरिष्ठतम व्यक्ति को ही सेवा सौंपी जाती है।"

इस प्रकार कहे जाने के कारण, बुद्धों के विशिष्ट कार्यों, उनके द्वारा तीसों सिद्धियों को पूर्ण करने हेतु किए गए कर्मों, और सर्वोत्कृष्ट एवं वरिष्ठतम सेवा के संदर्भ में, जीवनियों के लिए उपयुक्त शब्द 'अथ' का प्रयोग उचित है। तीनों प्रकार के बोधिसत्वों की पूजा के मंगला आशीर्वाद के स्वरूप के कारण, जैसे कि: "जिनका सम्मान करना उचित है, उनका सम्मान करो; यही सर्वश्रेष्ठ आशीर्वाद है", जीवनियों के लिए उपयुक्त शब्द 'अथ' (आशीर्वाद) का प्रयोग उचित है। बुद्धों आदि सहित तेजस्वी पुरुषों द्वारा अंतिम अवस्था (अरहत्तमग्ग) के माध्यम से उचित उपलब्धियों को प्राप्त करने के कारण, जीवनियों के लिए उपयुक्त शब्द 'अथ' (सिद्धि) का प्रयोग उचित है। बुद्धों आदि के लिए अरहत बनने के मार्ग आदि जैसे पुण्य कर्मों के अलावा किसी अन्य पुण्य कर्म के अभाव में, पुष्टि और अस्वीकृति को दर्शाने वाले व्याकरणिक शब्द 'अथ' का प्रयोग ही जीवनियों के लिए उचित है। चूंकि इसे खुद्दकपाठ संग्रह के ठीक बाद समूहीकृत किया जाना है, इसलिए निरंतरता को दर्शाने वाले व्याकरणिक शब्द 'अथ' का प्रयोग ही जीवनियों के लिए उचित है। चूंकि यह कहा गया है कि इसके बाद खुद्दकपाठ से प्रारंभ होकर, 'अथ' का प्रयोग ही जीवनियों के लिए उचित है, जिसका अर्थ है दूर जाना।

5.2. यहाँ पाली शब्द बुद्ध की व्याख्या इस प्रकार की जानी है: वे बुद्ध हैं क्योंकि उन्होंने आर्य सत्यों को समझा; क्योंकि वे जीवों को ज्ञान प्रदान करते हैं, वे बुद्ध हैं; वे बुद्ध हैं क्योंकि वे सर्वज्ञ हैं; क्योंकि वे सब कुछ देखते हैं, वे बुद्ध हैं; वे बुद्ध हैं क्योंकि उनका नेतृत्व कोई अन्य मनुष्य नहीं कर सकता; वे बुद्ध हैं क्योंकि वे विषरहित हैं; क्योंकि उन्हें आसव का नाश करने वाला माना जा सकता है, वे बुद्ध हैं; क्योंकि उन्हें कुष्ठ रोग से रहित माना जाता है, वे बुद्ध हैं; क्योंकि उन्हें संन्यासी माना जाता है, वे बुद्ध हैं; क्योंकि वे अद्वितीय, अकेले खड़े थे, वे बुद्ध हैं; क्योंकि उन्होंने भोग-विलास का त्याग किया, वे बुद्ध हैं; बुद्ध वे हैं जिन्होंने एकमात्र सही मार्ग का अनुसरण किया; वे बुद्ध हैं क्योंकि वे अकेले ही अतुलनीय पूर्ण ज्ञान (संबोधि) प्राप्त करने के बाद स्वयंभू बुद्ध बन गए। अज्ञान के नाश और उचित ज्ञान प्राप्ति के कारण ही वे बुद्ध हैं; पाली भाषा के इन शब्दों - बुद्धि, बुद्धम् और बोधो - में कोई भेद नहीं है। जैसे नीले रंग आदि से जुड़ाव के कारण किसी वस्त्र को "नीला वस्त्र और लाल वस्त्र" कहा जाता है, वैसे ही बुद्ध के गुणों से जुड़ाव के कारण वे बुद्ध हैं। दूसरे शब्दों में, चार सही मार्गों का ज्ञान ही "बोधि" कहलाता है। पंद्रह सौ प्रकार के पापमय दुराचारों (किलेसा) से बने शत्रुओं के समूह को पराजित करने पर निर्वाण प्राप्ति का ज्ञान उत्पन्न होता है; ऐसा ज्ञान ही "बोधि" कहलाता है। जो व्यक्ति उस ज्ञान से उचित रूप से जुड़ा हुआ (संपयुत्त) है और उसे प्राप्त करता है, वह बुद्ध है। उसी ज्ञान के माध्यम से, मौन बुद्ध (पच्चेकबुद्ध) भी सभी किलेसाओं को पराजित करके निर्वाण प्राप्त करते हैं। लेकिन बुद्धों के मामले में, इस तथ्य के कारण कि उन्होंने स्वयं ही छह प्रकार के अद्वितीय ज्ञान प्राप्त किए, जैसे: इंद्रियों (इन्द्रिय) की परिपक्वता या अपरिपक्वता का ज्ञान, योग्य लोगों के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करने का ज्ञान, जुड़वां चमत्कार करने का ज्ञान, सर्वज्ञता का ज्ञान, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि में बाधा के अभाव (अनावरण) का ज्ञान, अपनी इच्छा को तुरंत पूर्ण करने का ज्ञान (आसयनसय), आदि; इस तथ्य के कारण कि उन्होंने धर्म के एक ही उपदेश के माध्यम से असंख्य प्राणियों को धर्म का अमर जल पिलाया और उन्हें निर्वाण प्राप्त कराया; और इस तथ्य के कारण कि ये छह प्रकार के ज्ञान केवल बुद्धों द्वारा ही प्राप्त किए गए थे, अनगिनत कल्पों के चार बहुत लंबे कालों के अलावा एक लाख कल्पों में पूर्णता प्राप्त करने के बाद, केवल उन सर्वज्ञ बुद्धों की जीवनियों का अभिलेखन ही बुद्धों की जीवनियाँ, बुद्धपादन है। गुण-दोष के आधार पर वह जीवनी दो प्रकार की होती है। मौन बुद्ध (पच्चेकबुद्ध) सर्वज्ञ बुद्धों के समान कार्य करने में सक्षम नहीं होते हैं। (पृष्ठ 173)भोजन आदि जैसी आवश्यक वस्तुओं के दानदाताओं को लाभकारी सहायता प्रदान करने में, मौन बुद्धों ने केवल इन दो श्लोकों के माध्यम से ही धम्म का उपदेश दिया:

आपकी सभी इच्छाएं और आकांक्षाएं शीघ्र पूरी हों।
पूर्ण हुआ। पंद्रहवीं बढ़ती हुई राशि की तरह-
शुभ दिन, आपके मनोकामनाएं साकार हों।
आपकी सभी इच्छाएं और आकांक्षाएं पूरी हों।
ज्योतिरसमानी रत्न की तरह शीघ्रता से,
आपकी मनोकामनाएं साकार हों।

उपदेश देने के बावजूद, मौन बुद्ध असंख्य प्राणियों को ज्ञान प्रदान करने में सक्षम नहीं होते। इसलिए, सर्वज्ञ बुद्ध के समान न होने के कारण, मौन बुद्ध (पच्चेक बुद्ध) ऐसे हैं जो एक-एक करके स्वयं बुद्ध बन जाते हैं। उनके जीवन वृत्तांत को मौन बुद्धों का जीवन वृत्तांत (पच्चेकबुद्धपादन) कहा जाता है।

5.3. थेरा वे हैं जो लंबे समय तक भिक्षु रहे हों। दूसरे शब्दों में, थेरा वे भिक्षु हैं जो उपदेश, अभ्यास, सौम्यता आदि गुणों से दृढ़तापूर्वक जुड़े होते हैं। दूसरे शब्दों में, थेरा वे भिक्षु हैं जो ठोस रूप से उत्कृष्ट उपदेश, एकाग्रता, ज्ञान, मुक्ति और बौद्धिक अंतर्दृष्टि जैसे गुणों से जुड़े होते हैं। दूसरे शब्दों में, थेरा वे भिक्षु हैं जिन्होंने ठोस उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, अर्थात् सबसे श्रेष्ठ और अतुलनीय शांतिपूर्ण निर्वाण की प्राप्ति। थेराओं की जीवनियों को थेरापदान कहा जाता है। इसी प्रकार, थेरी वे भिक्षुणी हैं जो थेराओं के समान गुणों से जुड़ी होती हैं। थेरियों की जीवनियों को थेरियों की जीवनियाँ कहा जाता है। इनमें से, बुद्धों की जीवनी (अपदान) में पाँच जीवनियाँ और पाँच सूत्र हैं। इसलिए, प्राचीन विद्वानों ने कहा:

"पापादना पाँच हैं, जिनमें से..."
पांच सुत्तंत भी हैं। यह जीवनी है।
बुद्धों के बारे में, सर्वप्रथम, उचित क्रम में
अनुक्रम।"

5.4. मौन बुद्धों (पच्चेकबुद्ध) के अपदान में भी पाँच अपदान और पाँच सूत्र हैं। इसलिए, प्राचीन ऋषियों ने कहा:

"पापदनाएँ पाँच हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं..."
पांच सुत्तंत भी हैं। यह जीवनी है।
मौन बुद्धों (पच्चेकबुद्ध) में दूसरे स्थान पर
अनुक्रम का उचित क्रम।"

5.5. तेरों की जीवनियों में पाँच सौ अपदानों के अतिरिक्त दस अपदान हैं; अध्यायों की संख्या इक्यावन है। इसलिए प्राचीन ऋषियों ने कहा:

"पापदान पाँच सौ दस हैं;
इसमें इक्यावन अध्याय हैं। यह है
थेरों की जीवनी, श्रृंखला में तीसरी
उचित क्रम का क्रम।"

5.6. थेरी की जीवनियों में चालीस अपदान हैं; अध्यायों की बात करें तो उनमें चार अध्याय हैं। इसलिए, प्राचीन ऋषियों ने कहा:

चालीस अपदान हैं, जिनके अध्याय हैं
संख्या में चार। यह जीवनी है
थेरिस, उचित क्रम में चौथा
अनुक्रम।"

5.7. 'अपदान' शब्द का प्रयोग करते समय, यहाँ व्याकरणिक शब्द 'अपदान' का अर्थ करना, पकड़ना, चले जाना, क्रमबद्धता, गाली देना आदि के रूप में देखा जाता है। वास्तव में, 'अपदान' शब्द का प्रयोग 'करने' के रूप में ही ऐसे उदाहरणों में भी होता है जैसे:- "क्षुदियों का करना, ब्राह्मणों का करना" आदि। 'भक्तों को ले जाना' आदि उदाहरणों में, 'अपदान' का अर्थ पकड़ना होता है। 'व्यापारियों का चले जाना, कृषक वर्ग (शुद्र) के लोगों का चले जाना' आदि उदाहरणों में, इसका अर्थ 'चले जाना' होता है। उदाहरण से तात्पर्य उनके उस स्थान से वहाँ जाने से है। इसे क्रमबद्ध रूप में देखा जाता है, जैसे उदाहरणों में: "भिक्षा ग्रहण करने के धुतंग नियम का पालन करने वाला भिक्षु, क्रमानुसार घरों में ठहरकर भिक्षा ग्रहण करता है", आदि। यहाँ इसका अर्थ है कि भिक्षु क्रमानुसार घरों की कतार में जाता है। इसे अपशब्दों के संदर्भ में देखा जाता है, जैसे उदाहरणों में: "इन्होंने भिक्षुत्व का अपशब्द किया है; इन्होंने ब्राह्मणत्व का अपशब्द किया है", आदि। यहाँ इसका अर्थ है अपशब्द और निंदा करना। हालाँकि, यहाँ व्याकरणिक शब्द 'अपदान' को कर्मों के रूप में देखा जाता है। इसलिए, बुद्धों द्वारा किए गए कर्म बुद्धों के अपदान हैं। इसका अर्थ है बुद्धों के कर्म। इसे कुल तीस सिद्धियों के प्रदर्शन के रूप में देखा जाना चाहिए, जिसकी शुरुआत गंगा नदी के किनारे रेत के कणों के समान असंख्य बुद्धों द्वारा दान की सिद्धि से होती है। अब, इसका संबंध यह है कि आप सभी को सेवा (अधिकार) आदि से संबंधित कार्यों को करते समय शुद्ध मन से जीवन व्यतीत करना चाहिए।

5.8 वहाँ, उस संदर्भ में, शुद्धमांसा शब्द का अर्थ इस प्रकार है: हे पाँच सौ दोषरहित अरहतों (खीणासव), जो इस सभा में एकत्रित हैं, और जिन्होंने परम पवित्रता के मार्ग (अरहत्तमग्ग) के ज्ञान के द्वारा पंद्रह सौ प्रकार के पापी विकारों (किलेसा) का त्याग करके स्वयं को ऐसा

स्थापित किया है, और जो पूर्णतः शुद्ध मन और निर्मल हृदय वाले हैं, शुद्ध मन से सुनो। इसका अर्थ है: तुम सब एकाग्रचित्त होकर ध्यान दो।

5.9. हालांकि, यहां "अपदान" का उल्लेख किए बिना, मौन बुद्धों (पच्चेकबुद्ध) के अपदान, साथ ही थेरों और थेरियों के अपदान के अस्तित्व के बावजूद, "बुद्धों के अपदान" कथन को "मूल यमक" कथन के समान बना दिया गया है, प्रधानता और आरंभिकता के कारण, समुच्चय यमक (खन्ध यमक), इंद्रियों, तत्वों, सत्य, कर्मों और अव्यक्त यमक के निवास के अस्तित्व के बावजूद। साथ ही, "अनुशासनात्मक नियमों पर अध्याय, जिसका उल्लंघन पुरोहित वर्ग से निष्कासन (पाराजिककण्ड) के दंडनीय है," कथन को प्रधानता और आरंभिकता के कारण, तेरह अनुशासनात्मक नियमों के अस्तित्व के बावजूद, जिनका उल्लंघन करने वाले को निलंबित किया जाना है, के समान बना दिया गया है। आदेश, जिस पर निर्णय केवल एक औपचारिक संघ कर्म (संघदिसेसा) द्वारा लिया जा सकता है, दो अनुशासनात्मक नियम जो अपराधी को उसके द्वारा प्राप्त की गई वस्तु (निसग्गिया) को त्यागने के लिए बाध्य करते हैं; यहाँ भी, पाली अभिव्यक्ति "अथ बुद्धपदनानी" को उसी संदर्भ में देखा जाना चाहिए।

5.10. इसे "बुद्ध के कर्म (बुद्धापदनानी)" कहा गया है, जबकि इसे "सम्मासंबुद्धापदनानी, पूर्णतः आत्मप्रबुद्ध बुद्ध के कर्म (या जीवनी)" कहा जाना चाहिए। काव्य की सुगमता के लिए, तीसरे महत्वपूर्ण शब्द, क्रियाविशेषण 'सम्मा' और स्वयं को दर्शाने वाले उपसर्ग (उपसग्गपद) को हटाकर, केवल 'बुद्ध' शब्द को स्वीकार करते हुए, तीसरे महत्वपूर्ण शब्द 'सम्मा' और 'स्वयं द्वारा' का अर्थ बताने वाले शब्द 'उपसग्गपद' को हटाकर, केवल 'बुद्ध' शब्द को ही मानकर, व्याकरणिक विधि (निरुत्तिनय) का पालन किया गया है, जो कहती है: "वह नियम जो इंगित करता है (आदेश), कि उनमें दीर्घीकरण (वृद्धि), लोप (लोप), सम्मिलन (आगम), विकृति (विकार), प्रतिवर्तन (विपरीत) हो सकते हैं।" अतः, वास्तव में इसका अर्थ है: "पूर्णतः आत्मप्रबुद्ध बुद्ध के कर्म (या जीवनी)।"

इस प्रकार आंतरिक भाग पर टिप्पणी समाप्त होती है।

टीका की प्रस्तावना (अब्बन्तरानिदान)

जीवनी पर अपदानत्ष्टकथा, वैभव के लिए
पवित्र लोगों का।

....

बुद्ध अपने बारे में बोलते हैं

1 - बुद्ध की जीवनी पर टिप्पणी

1. (बुद्ध अपादान वंशना)

5.11 अब, मैं आंतरिक प्रस्तावना (अभंतर निदान) के तुरंत बाद अपादान पर टिप्पणी के बारे में बात करना चाहता हूँ।

"अवरुद्ध जीवनी (सपदान अपदान)"
विभिन्न तरीकों से उपदेश देना, जो महान
उस छोटे से समूह में ऋषियों ने एक साथ गीत गाए।
(खुद्दक निकाय); समय के लिए) अब आ गया है
पूर्व के क्रमिक क्रम में टिप्पणी करना-
स्थितिगत टिप्पणी।

5.12. जैसा कि वहां कहा गया है: "बुद्ध की संपूर्ण शिक्षा केवल एक ही सार है, जो मुक्ति (विमुक्तिरस) का सार है", इसलिए अपदान को एक ही सार की श्रेणी में रखा गया है। बुद्ध के प्रथम, मध्य और अंतिम वचनों में अपदान को बुद्ध की मध्य शिक्षा की श्रेणी में रखा गया है। तीन पिटकों - विनय, अभिधम्म और सूत्र - में इसे सूत्र की श्रेणी में रखा गया है। पांच निकायों (निकायों) में - दीर्घ प्रवचन (दीघ निकाय), मध्यम लंबाई (मज्जिमा), सम्युत्त, अंकीय कथन (अंगुत्तरा) और लघु कथनों (खुद्दकनिकाय) - में इसे खुद्दक निकाय की श्रेणी में रखा गया है। विषयवस्तु के अनुसार व्यवस्था की नौ विशेषताओं में से, 'विवेचनात्मक' वर्णन (सुत्त), मिश्रित गद्य और पद्य साहित्य (गेय्या), व्याख्या (वेय्याकरण), छंद (गाथा), आनंदमय वाणी (उदान), उद्धरणों की पुस्तक (इतिवुत्तक), जन्म कथाएँ (जातक), अलौकिक कथन (अब्भूत) और उपदेशात्मक प्रवचन (वेदल्ल), इसे गाथा की श्रेणी में वर्गीकृत किया जाना है।

"बयासी मैंने बुद्ध से लिए थे;
भिक्षु से दो हजार; ये
लाभकारी धर्मों में क्रमांकन जैसे सिद्धांत शामिल हैं।

चौरासी हजार।

5.13. अब, यह अभिव्यक्ति: "अनगिनत आध्यात्मिक सम्राट हैं, जिन्होंने तीस सिद्धियों (तिम्सपारमीसम्पुन्ना, धम्मराजा असंखिया) को ठीक से पूरा किया है", यह दिखाने के लिए है कि अपदान। वहाँ, वही दस सिद्धियाँ निम्नतम (पच्चिमा), मध्यम (मज्झिमा) और उच्चतम (उक्कत्था) के माध्यम से कुल मिलाकर तीस सिद्धियाँ बन जाती हैं। उनसे उत्तम रूप से परिपूर्ण, अच्छी तरह से परिपूर्ण, उनसे युक्त, उनसे सुसज्जित (सम्युत्त); इस प्रकार, तिम्सपारमीसम्पुन्ना है राजा (राजानो) वे हैं जो तीनों लोकों में रहने वाले प्राणियों के विशाल समूह का निर्माण करते हैं, और जो एकमत होकर या निर्वाण के मार्ग पर चलकर फल प्राप्ति का जीवन व्यतीत करके या प्रेम, सहानुभूति, दूसरों के सौभाग्य पर प्रसन्नता और शत्रुओं के प्रति समभाव जैसे चार श्रेष्ठ गुणों की ध्यान संबंधी उपलब्धियों के माध्यम से अपने शरीर को प्रसन्न और प्रियतम बनाते हैं। धम्मराजा, धर्मात्मा राजा वे राजा होते हैं जो धम्म (धर्म) से परिपूर्ण होते हैं। बुद्धों का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि उनकी गिनती दस, सौ, हजार, दस हजार, एक लाख, दस लाख, करोड़ (कोटि), दस करोड़ (पकोटि), एक हजार करोड़ (कोटि-पकोटि), दस हजार करोड़ (नहुत), एक लाख करोड़ (निन्नहुत), अक्खोभिनी, बिंदु, अब्बुद, निरब्बुद, अहहा, अबबा, अतत, सोगंधिका, उप्पला, कुमुद, पुन्दरिका, पद्म, कथन, मककथाना तक नहीं की जा सकती। बुद्ध, धम्म के राजा, गणना से परे हैं; इसका अर्थ है: वे अतीत में हैं, चले गए हैं, समाप्त हो गए हैं और लुप्त हो गए हैं।

बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए प्राप्त सिद्धियों और अच्छे कर्मों के कारण अतीत की महिमा

अतीत की महिमा

6. जब थेरा आनंद ने पूर्ववर्तियों बुद्धों को दी गई उनकी समर्पित सेवा (अधिकार) और विश्वराज के रूप में बोधिसत्व रहते हुए स्वयं द्वारा अर्जित ज्ञान (संभार) के बारे में पूछा, तो प्रतापी बुद्ध ने कहा, "सर्वोत्तम बुद्धों का आत्मबोध (संबोधि)", इत्यादि। "हे आनंद! मेरी जीवनी (अपदान) सुनो; यही इसका अर्थ है। हे आनंद! पूर्व में, उस समय, मैंने सर्वज्ञ, प्रशंसनीय और सर्वज्ञ बुद्धों के ज्ञान (संबोधि) की आराधना की, जो सर्वज्ञ और सर्वज्ञ हैं; यही संबंध है। 'ससमघे' शब्द का प्रयोग 'सम्घा' के साथ मिलकर इस प्रकार किया जाना चाहिए: शिष्यों के संगठन के साथ। लोकनायके का अर्थ है संसार के सबसे वरिष्ठ व्यक्ति, बुद्ध; नमसित्वा का अर्थ है दोनों हाथों को जोड़कर और दस उंगलियों से प्रणाम करना (वंदित्वा)। सिरसा का अर्थ है सिर से प्रणाम करना (सिसेना)। अभिवादये का अर्थ है: "मैं आदरपूर्वक आराधना करता हूँ, स्तुति करता हूँ।"

7. "यावता बुद्धखेत्तेसु (बुद्ध के क्षेत्र तक)" अभिव्यक्ति का अर्थ है: बुद्ध के क्षेत्र के दस हजार (चक्कवा) में। आकाशस्थ (आकाश पर स्थित) का अर्थ है आकाश में चले जाना। भूमत्था (पृथ्वी पर स्थित) का अर्थ है पृथ्वी की सतह पर चले जाना। रत्न (या बेरिल) आदि, सात रत्न (रत्न), असंख्य (असंख्य) का अर्थ है गणना से परे। यावता (तक) का अर्थ है इतनी सीमा तक; विज्यंति (अस्तित्व में)। मनसा समाहरे का अर्थ है: मैं उचित निर्णय लेने के बाद उन सभी को लाऊंगा। इसका मतलब यह है कि मैं अपने महल के आसपास ढेर सारी चीजें बनाता हूँ।

8. वहाँ "तत्थ रूपिया भूमियम" अभिव्यक्ति का अर्थ है: वहाँ चांदी (रूपिया) और चांदी (रजत) से निर्मित असंख्य भूमि और महल बनाए गए हैं। "अहम्रतनमयं पासादं मपायिं" अभिव्यक्ति का अर्थ है: मैंने सात प्रकार के रत्नों से निर्मित सैकड़ों मंजिला महल बनाया; "उब्बिद्धम्" (ऊंचाई) का अर्थ है ऊपर जाना (उग्गत), और "नबमुग्गतम्" (आकाश में ऊपर जाना) का अर्थ है आकाश में तेज से चमकना।

9. उसी महल की प्रशंसा करते हुए, यह कथन किया गया है: विचित्र स्तंभ (बहुरंगी स्तंभ) आदि। व्याख्या यह है: अनगिनत रंगों के खंभों पर स्थापित, जिसे सुत्तु कटम् कहा गया है; ऊँचाई और परिधि जैसी विशेषताओं से युक्त होने के कारण उचित रूप से वितरित (विभत्त) है। महारहम (अत्यंत महंगा), क्योंकि इसका निर्माण कई सौ करोड़ के द्वारों के साथ किया गया था। फिर, यह किस प्रकार विशिष्ट है? कनकमयसंघटम् (सोने से बना उलझा हुआ पिंड) की व्याख्या इस प्रकार की गई है: सोने के तराजू, उलझे हुए पिंड और कंगन से बना। यहाँ संबंध (संबंध) यह है: यह मंदितम है, अर्थात् अलंकृत, सुंदर और आकर्षक है, जिसमें ध्वज और छतरियाँ भी लगी हैं।

10. फिर उसी महल की भव्यता का गुणगान करते हुए कहा गया है: "पथममा वेलुरिया भूमि (प्रथम तल बेरिल रत्न का बना है) इत्यादि।" इसका अर्थ इस प्रकार है: उस महल का प्रथम तल, जिसमें सैकड़ों तल थे, निर्मल बादल के समान रमणीय (सुभरा) था, जो बेरिल रत्न से बना था और नीलम के रंग का था। यहाँ अर्थ है: आकिञ्ञ, जल के ढेर पर फैले कमलों के समान एकरूप, और कंचन भूमिया, स्वर्ण महल के समान सुंदर।

11. काचिभूमिपवालम्सा, उसी महल के समतल का कुछ मूंगा भाग, उसका मूंगा भाग पवालवण्णा, मूंगा के रंग का है। कुछ समतल जो सुभा (मनोरम) हैं, मन को उत्तेजित करते हैं; अन्य जो इंदगोपकवण्णाभा, लाल भृंग (इंडागोपक) के चमकदार रंग के हैं, किरणें उत्सर्जित करते हैं; कुछ समतल दिशाओभासति दस दिशाओं में दिशात्मक रूप से विकिरण करते हैं; यही इसका तात्पर्य है।

12. उसी महल में, निय्युबा, बुर्ज (या शिखर), उभरा हुआ अग्रभाग भी सुविभट्टा है, यानी सुव्यवस्थित, उचित रूप से विभाजित, प्रत्येक वस्तु को वितरण में हिस्सेदारी के दृष्टिकोण से अलग-अलग बनाया गया है। सिंहपंजरा (शेर का पिंजरा) का अर्थ सिंह द्वार है। चतुरोवेदिका (चारों कंगनी या रेलिंग) शब्द का अर्थ बाड़े की रेलिंग और जालीदार बाड़ों से लगाया जाना चाहिए। मनोरमा (मन को प्रसन्न करने वाली) का अर्थ है: मन को भाने वाली; और गंधवेला (सुगंधित माला) शब्द का अर्थ है कि सुगंधित मालाएँ भी लटक रही हैं।

13. उसी महल में, सात रत्नों से सुशोभित (सत्तररतन भूसीता) छत वाले घर हैं जो सात प्रकार के रत्नों से जगमगाते हैं। यह कैसे संभव हुआ? नीता (नीलम-नीला) नीला रंग, पीता (सुनहरा) पीला रंग, सुनहरा रंग; लोहितका (खून जैसा लाल), खून जैसा लाल रंग; ओआता (साफ रंग), सफेद रंग; शुद्धकालका (शुद्ध काला), बिना मिलावट वाला काला रंग; कुटागारवरूपेटा (उत्कृष्ट छत वाले घरों से सुसज्जित) का अर्थ है: वह महल उत्कृष्ट छतों से सुसज्जित है।

14. उसी महल में, सुंदर (ओलोकमय) और आकर्षक, ऊपर की ओर मुख किए हुए, कमल के आकार के खिले हुए पद्म कमल बहुत सुंदर लगते हैं। इसका अर्थ यह है कि वह महल हंस, बगुले, मोर आदि जैसे पंखों वाले प्राणियों के झुंडों से भी जगमगा रहा है। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि वह महल सूर्य और चंद्रमा से सुशोभित है, मानो सूर्य और चंद्रमा तारों, ग्रहों और नक्षत्रों के साथ मिश्रित हों, क्योंकि वह इतना ऊँचा था कि आकाश तक पहुँचता था।

15. विश्वराज का वही महल हेमाजालेन (स्वर्ण की चमक) स्वर्ण जाल (या ज्वाला) से परिपूर्ण था; संचन्नो (स्वर्ण जाल से पूर्णतः ढका हुआ); सोञ्ञकिंकनिकायुतो (स्वर्ण कंगन से जुड़ा हुआ); मन को भाने वाला; सोञ्ञमाला (स्वर्ण पुष्प की पंक्तियाँ); वातवेगेन (पवन गति से); हवा के चलने से; कुंजन्ति (कूकना); इस प्रकार, अर्थ है।

16. मंजेत्तुकम (लाल) गहरा लाल रंग; लोहितकम (लाल) रक्त लाल रंग; पीतकम् (पीला) सुनहरा पीला रंग; हरिपिंजरम (पीला ढेर) जंबोनादा स्वर्ण रंग का ध्वज और स्वर्ण रंग का ढेर; नानारंगेहि (विभिन्न रंगों से रंगा हुआ) अनेक रंगों से रंगा हुआ। सम्पितम (ठीक से पीला) रंगा हुआ ध्वज; उसितम (फहराया हुआ) उस महल में ध्वज फहराया गया था; अभिव्यक्ति: धजमालिनी (मालाओं से सजे ध्वज) लिंग विकृति के कारण बनाई गई है; इसका अर्थ है: वह महल मालाओं से सजे ध्वजों से भरा हुआ था।

17. उस महल में बिछी चटाइयों आदि का वर्णन करते हुए, इस प्रकार का कथन किया जाता है: नानम बहु (यह बहुत नहीं है) इत्यादि। इसका अर्थ है: उस महल में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो बहुतायत में न हो। नानासयनविचित्त (विभिन्न प्रकार के अनेक विश्राम स्थल), अनेक विश्राम स्थल जिनमें पलंग, कुर्सी इत्यादि शामिल थे, जो अनेक चादरों और बिछी हुई चमकती और अनेक प्रकार की थीं; अनेकसत (सैकड़ों) संख्या में। यह कैसे संभव हुआ? फलिका (क्रिस्टल) जो क्रिस्टल रत्न से बनी है, क्रिस्टल से निर्मित; रजतमय (चांदी से निर्मित) जो चांदी से बनी है; मणिमय (रत्न से निर्मित) जो नीलमणि रत्न से निर्मित है; लोहितांग (रक्त-लाल माणिक) सामान्य लाल माणिक से बना हुआ; मसारगल्लामय (मसारगल्ला कैट्स आई रत्न से बना हुआ) धब्बेदार रंग के रत्न से बना हुआ; संहकासिकसंथाता (कोमल बनारस मलमल से ढका हुआ) महीन, नाजुक काशी कपड़े से ढके होने की स्थिति।

18. पावुरा, पावुराण (चादर) के समान है; यह कैसा दिखता है? कम्बल (कपड़ा) ऐसा कपड़ा है जो सूत से बुना गया हो; दुकुता (रेशम) रेशमी कपड़े से बना; चीनी (चीनी) चीनी कपड़े से बना; पट्टुण्ण (एक स्थान का नाम, कपड़े से बना) पट्टुण्ण क्षेत्र का उत्पाद; पंडु, पीला, हल्का पीला रंग; विचित्रत्तृणम् (बहुरंगी फैलाव) अनेक चादरों और चादरों से भरा अद्भुत; सब्बम् (सभी) प्रत्येक विश्राम स्थल; मनसा (मानसिक रूप से) मन (या हृदय) से; अहम् पन्नापेसिम (मैंने वही व्यवस्था करवाई) मैंने उन्हें तैयार करवाया। यही अर्थ है।

19. उसी महल का वर्णन करते हुए, इस प्रकार कहा गया है: "तासु तास्वेव भूमिसु (उन सभी मंजिलों में)" इत्यादि। वहाँ, रत्नकूटलंचतम (आभूषणों से जड़ा हुआ शीर्ष) का अर्थ है रत्नों से बने शीर्षों और रत्नों से सजे कोनों से सुशोभित और सुंदर। मणिवेरोचनौक्का (सूर्य की रोशनी बिखेरने वाली रत्न मशाल) सूर्य की रोशनी बिखेरने वाले रत्नों, लाल रत्नों से बनी है; उक्का (मशाल) दीपकदान हैं; धारयंता सुत्त्ठारे (अच्छी तरह से धारण करके खड़े होना) का अर्थ है सैकड़ों लोग अच्छी तरह से धारण करके सावधानीपूर्वक आकाश की ओर उठा रहे हैं।

20. फिर उसी महल का वर्णन करते हुए, इस प्रकार कहा गया है: "शोभन्तीसिका थम्भा (स्तंभ और खंभे सुंदर हैं)" इत्यादि। वहाँ, एसिका थम्भा (स्तंभ और खंभे), अर्थात् चीजों को सुंदर बनाने के लिए, नगर द्वार पर खंभे गाड़े गए थे; सुभा (सुखद) वांछनीय; कंचनतोराणा (सुनहरे द्वार) सोने के बने; जंबोनादा (यूजीन नदी का उत्पाद) भी जंबोनादा गुणवत्ता वाले सोने के बने; सारमाया (सार से

बना) भी बबूल के पेड़ के सार से बना; रजतमाया (चांदी से बना) द्वार सुंदर दिखते हैं; इसका अर्थ है कि स्तंभ और द्वार दोनों ही उस महल को सुंदर बनाते हैं।

21. इसका अर्थ है: उस महल में, सुविभट्टा अनेका संधि (अनेक जोड़ अच्छी तरह से व्यवस्थित हैं) दरवाजों के पैनलों और बोल्टों (या चौखटों) के साथ; चित्तिता (चमकदार) से सुशोभित, जोड़ और आसपास का वातावरण सुंदर बनाया गया है। उभतो (दोनों ओर) का अर्थ है: उस महल के दोनों ओर; पुण्णघाटा, भरे हुए कलश, अनेक लाल कमल (पदुम) और अनेक सफेद कमल (उप्पला) से भरे हुए, संयुत (अच्छी तरह से सुसज्जित) पात्र उस महल को सुशोभित बनाते हैं।

22-3. इस प्रकार महल की शोभा का वर्णन करने के बाद, यह कथन इस प्रकार है: "अतीते सब्बाबुद्धे च (सभी पूर्व बुद्ध भी)" और इसी प्रकार, सम्मान के बारे में जानकारी देने के लिए। वहाँ, अतीत में, जब समय बीत गया और चला गया, तब जन्म हुआ और अस्तित्व में आया; शिष्यों की सभा के साथ पुरोहितों के साथ ससमघे (सभी पुरोहितों के साथ) बुद्ध; प्राकृतिक और सामान्य रंग-रूप के साथ परिपक्व हुए; शिष्यों के साथ ससावके बुद्ध अपने शिष्यों के साथ; निम्मिनित्वा (सृजित) जिस भी द्वार से महल में प्रवेश किया जाना चाहिए, उस द्वार से प्रवेश करके ससावका सब्बे बुद्ध (सभी बुद्ध अपने शिष्यों के साथ); sabbasoṇṇamaye (पूरी तरह से सोने से बना); pīṭhe nisinnā (कुर्सियों पर बैठ गए); ariyamaṇ̄dalā (पवित्र लोगों का एक समूह बन गया)। यही इसका अर्थ है।

24-5. एतरही (अब) वर्तमान समय में; अनुत्तरा (कोई श्रेष्ठ नहीं) किसी श्रेष्ठ से रहित; ये च बुद्धा अत्थि (जो भी बुद्ध अस्तित्व में रहे हैं) अस्तित्व में आए हैं; वे पच्चेकबुद्धे अनेकासते सयंभू (मौन बुद्ध, सैकड़ों आत्मनिर्भर) जो बिना किसी अन्य गुरु की सहायता के स्वयं ही अरहत बने; अपराजित (अन्य से अजेय) पाँच प्रकार के मारों, जैसे कि समूह (खन्ध), दुराचार (किलेसा), कर्मों का संचय (अभिसंखार), मृत्यु और युवावस्था के देवत्व से अजेय; इसका अर्थ है कि वे विजय प्राप्त करने से संतुष्ट थे। भवनम् (महल), मेरा महल अतीत में भी और वर्तमान में भी; सब्बे-बुद्धा समारुहुम (सभी बुद्ध अच्छी तरह से चढ़े), जो ठीक से आरोहित हुए, यही अर्थ है।

26. ये दिब्बा (जो भी दिव्य हैं) दिव्य अस्तित्व के कारण, वे दिव्य हैं, दिव्य प्राणियों के लोक में जन्म लेते हैं। ये च बहु कप्परुक्खा अत्थि (सभी प्रकार के अनेक विश्व वृक्ष विद्यमान हैं)। ये च मानुसा (जो भी मनुष्य हैं) मनुष्यों के लिए, सभी प्रकार के अनेक विश्व वृक्ष उत्पन्न हुए। इसके बाद, सब्बम दुस्सम् समाहन्त्वा (उचित वस्त्र लाकर) उचित वस्त्र लाकर, तीन वस्त्रों का एक सेट बनवाया और अच्छदेमि (मैंने उन्हें ढका) उन मौन बुद्धों को तीन वस्त्रों का सेट भेंट किया; इस प्रकार, संबंध स्थापित होता है।

27. इस प्रकार मैंने तीन वस्त्रों के समुच्चय उन मौन बैठे बुद्धों को अर्पित किए, जिन्हें वे धारण करके ओढ़ सकें; उन्होंने निम्नलिखित भेंटें दीं: संपन्नम (अच्छी तरह से पका हुआ) मिठाई, खज्जम (कठोर खाने योग्य) जिसे चबाया जाना चाहिए, केक आदि; मीठा भोजन (नरम खाने योग्य) जिसे खाया जाना चाहिए; मीठा सायनीयम (स्वादिष्ट) जिसे चाटा जाना चाहिए; संपन्नम (अच्छी तरह से तैयार) आठ प्रकार के मीठे पेय जो पीने योग्य हैं; भोजनम (नरम भोजन) जिसे खाया जाना चाहिए; सुभ (सुखद) अच्छा; मणिमय (पत्थर से बना); पट्टे (भिक्षापात्र में) सम (ठीक से) अच्छी तरह; पुरेत्वा अदासिम (भरा और अर्पित किया) और उन्हें स्वीकार करवाया; यही इसका अर्थ है।

28. सब्बे ते अरियामंडला (वे सभी पवित्र जनों के समूह) वे सभी पवित्र जनों के समूह; दिब्बचक्खु समा हुत्वा मत्था (जिन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि को निखारा है), दिव्य दृष्टियों के स्वामी, जो निरंतर चमकती और स्थिर रहती हैं, और निखारी हुई हैं क्योंकि उनका भ्रष्टता (किलेसा) से कोई संबंध नहीं है; चीवरसम्युता (वस्त्रों से सुसज्जित) तीन वस्त्रों के जोड़े धारण किए हुए; इसका अर्थ है कि वे तपित (संतृप्त) थे, और परमन्नेन (सर्वोत्तम भोजन) सर्वोत्कृष्ट भोजन से पूर्णतः तृप्त थे, जो मीठी चीनी, तेल और मीठे (या शहद) गुड़ से बना था।

29. उन पवित्र जनों के समूह, इस प्रकार अपनी संतुष्टि के लिए भोजन प्राप्त करने के बाद, सात प्रकार के रत्नों से निर्मित निवास और कक्ष, रत्नगम्भम (रत्नयुक्त कक्ष) में प्रवेश किया; केसरीव (शेर के समान) बालों वाले शेर के समान, गुहासय (मांद में लेटना) मांद (गुफा) में लेटना (या रहना); महरहमहि सयाने (अति मूल्यवान विश्राम स्थल में) अमूल्य पलंग पर, सीहसेय्यामकप्पयुम (शेर की तरह लेटना) जैसे कि पशुओं का राजा शेर, अपने दाहिने करवट लेटकर, अपने पैर को अपने पैर पर करीने से रखकर, अपने दाहिने हाथ को अपने सिर के लिए तकिया बनाकर, अपने बाएं हाथ को सीधा रखकर, अपनी पूंछ को जांघों के बीच रखकर, बिना कांपे सोता है; इस प्रकार वे लेट गए; यही अर्थ है।

30. वे इस प्रकार सिंह के लेटने के समान लेट गए, संपजाना (सचेत रूप से) जागरूकता और ध्यान से युक्त होकर; समुत्थाया (अच्छी तरह से उठकर) विधिपूर्वक उठ गए, सायने पल्लंकमाभुजुम (चारे पर पालथी मारकर) अपनी जांघों को बांधकर बैठ गए; यही अर्थ है।

31. गोचरम सब्बाबुद्धानम् (सभी बुद्धों का भिक्षा चक्र) वह कर्मक्षेत्र है, जो भूतपूर्व और भविष्य के सभी बुद्धों के संचालन का आधार बना है; झानरतिसमप्पिता (झान के आनंद पर केंद्रित) का अर्थ है: वे ध्यान संबंधी उपलब्धियों के आनंद से परिपूर्ण और उस पर उचित

रूप से केंद्रित थे। अञ्ञेधम्मानि देसेन्ति (अन्य धर्म का प्रचार करते हैं) उन मौन बुद्धों में से कुछ धर्म का प्रचार करते हैं; अञ्ञे (अन्य) कुछ, इद्धिया (शक्ति से) प्रथम ज्ञान के प्रदर्शन से और इसी प्रकार; किलन्ती (खेल) मनोरंजन करते हैं।

32. आञ्ञे (अन्य) उनमें से कुछ; अभिञ्ञा (अतिज्ञान) पाँच प्रकार के अतिज्ञान; वसिभावित (विकसित निपुणता) निपुणता प्राप्त की; पाँच प्रकार के अतिज्ञान में, पाँच प्रकार की निपुणता के साथ, इस प्रकार गिने जाते हैं: (i) समझना (आवज्जन) (ii) उचित उत्पादन (समापज्जन), (iii) उठना (वुट्ठान) (iv) हल करना (आदिट्ठान) (v) चिंतन करना (पच्चवेक्खम); चला गया, की ओर अग्रसर, निपुणता की अवस्था प्राप्त की; अप्पेन्ति (प्राप्त कराया गया) पाँच प्रकार के अतिज्ञान को उचित रूप से प्राप्त किया। आञ्ञे (अन्य) उनमें से कुछ; अनेकसहस्सियो विकुभानानि, कई हजार कर्मों से, एक होते हुए भी, वह अनेक हो जाता है; हालांकि अनेक हो जाने पर भी वही अनेक एक हो सकते हैं; विकुब्बानित, (प्रदर्शन) इस तरह और इसी तरह, वे शक्तियों के प्रदर्शन (अभिव्यक्तियों के) करते हैं।

33. बुद्धा पि बुद्धे पुच्छन्ति (बुद्ध बुद्धों से पूछते हैं): जब मौन बुद्ध इस प्रकार एकत्रित होते हैं, तो मौन बुद्ध सर्वज्ञ ज्ञान के चिंतन के विषय (क्षेत्र या सीमा) के संबंध में पूर्ण बुद्धों से प्रश्न पूछते हैं; यही अर्थ है। बुद्ध उन्हें ज्ञान से प्रबुद्ध करते हैं, उन्हें अपने ज्ञान के माध्यम से विशिष्ट और पूर्ण रूप से समझाते हैं, गंभीरं निपुणं थानं (गहन और सूक्ष्म विषय), गहन और सूक्ष्म अर्थ।

34. तब, मेरे महल में एकत्रित हुए सावकों (शिष्यों) ने भी बुद्धों से प्रश्न पूछे। बुद्धों ने अपने शिष्यों से प्रश्न पूछे। उन्होंने और बुद्धों तथा शिष्यों ने एक दूसरे से प्रश्न पूछकर उत्तर दिए।

35. फिर, इन सबको एक साथ दर्शाने के लिए, इस प्रकार कहा जाता है: "बुद्धा पच्चेकबुद्धाच" इत्यादि। यहाँ, बुद्धा (बुद्धों) का अर्थ सर्वज्ञ बुद्ध हैं; पच्चेकबुद्धा, मौन बुद्ध; सावका (शिष्य) विद्यार्थी; परिचारक (सेवक) ये सभी आश्रित; सकाया (व्यक्ति), स्वयं; रतिवा (आनंद के साथ) आनंदित; पासादे अभिरामन्ति (वे मेरे महल में अत्यंत प्रसन्न होते हैं) और उससे आसक्त हो जाते हैं।

36. इस प्रकार, अपनी शक्ति प्रकट करने के लिए, उस विश्वराज, तीनों लोकों के विजेता ने उचित साधना विधि का उल्लेख करते हुए कहा: "चट्टा तिष्ठानुत् रत्ना" इत्यादि। वहाँ, रत्ना (सात प्रकार के रत्नों से बने); चट्टा कंचनवेल्लपंतिका (धूपदान) सोने की विशाल पंक्तियों से बने, सोने के जालों से लटके हुए; तिष्ठानुत्, उन्हें खड़ा रहने दो; मुत्तजालपरिक्खित्ता (मोतियों के जालों से घिरे हुए); सब्बे, सभी छतरियाँ (या धूपदान); मत्थके (मेरे सिर पर); धारेन्ति (उन्हें धारण करने दो); जैसे ही ऐसा सोचा गया, छतरियाँ प्रकट हो गईं; यही अर्थ है।

37. स्वर्ण तारों से जगमगाता हुआ चित्तिता (विविध स्वर्ण तारे); सेलाविताना (कपड़े का शामियाना); भवन्तु (होने दो) उत्पन्न होने दो। विचित्र (विविध) अनेक रंगों का हो; माल्यवितता (फूलों से सुशोभित) फूलों से ढका हो; सब्बे (सभी) अनेक शामियाने हों; मत्थके (सिर के ऊपर), बैठने की जगह के ऊपरी भाग पर, धारेंतु, धारण किया जाए; यही अर्थ है।

38-40. माल्यदामेही (सुगंधित पुष्पों की मालाओं से युक्त); वितताा (प्रसारित) पूरी तरह मिश्रित; गंधदामेही (सुगंधित मालाओं से युक्त) चंदन, केसर, धूप आदि की सुगंधित मालाओं से युक्त; शोभिता (चमकता हुआ) कमल का सरोवर; इस प्रकार संबंध है। दुस्सादामेही (कपड़े की मालाओं से युक्त) पक्षियों के पंखों, ऊन, चीनी आदि के अनमोल कपड़े की मालाओं से युक्त; परिकिञ्ञा (पूरी तरह मिश्रित) कमल का सरोवर सात प्रकार के रत्नों की मालाओं से सुशोभित है। पुप्फाभिकिष्णा (फूलों से भरपूर) सुगंधित पीले चंपक, मीठी सुगंध वाले सलला, सफेद कमल (सोगंधिका) आदि जैसे मधुर सुगंध वाले फूलों से; अभिकिष्णा (फूलों से भरपूर) विविध और चमकदार; फिर, कमल का सरोवर कैसा है? यह सुगंधित और उपयुक्त इत्र से सुशोभित है। चारों ओर गंधपंचांगुललंकटा (पांच उंगलियों के माप के इत्र से सुशोभित) पांच उंगलियों से लेप किए गए इत्र से सुशोभित; हेमच्छदनचादिता (सोने के आवरण से ढका हुआ) सोने के चादरों और सोने की छतरियों से ढका हुआ; चतुद्दिसा (चार दिशाएँ) महल की चारों दिशाओं में; खायन्तु (प्रकट हो) कमल के लट्ठे अच्छी तरह से फैले हुए और कमल के फूलों (पदुम) और कमल (उप्पला) से ढके हुए, सुनहरे रंग और रंग के दिखाई दें; padmareṇurajuggatā (कमल के पराग उग्र रूप से ऊपर उठते हैं) कमल के पराग (रेणु) और पंखुड़ियों (धुली) से भरपूर होने के कारण कमल की लताओं को चमकने दें, यही इसका अर्थ है।

41. पाषादास समन्ततो पादपा (महल के चारों ओर जड़ों से पीने वाले) चंपक (चंपक) आदि वृक्ष, मेरे विजय महल के चारों ओर; सब्बे पुप्पन्तु (सब खिलें) ये सभी फूलदार वृक्ष खिलें; सवमेवपुप्फा मुंचित्वा (स्वयं ही फूल छोड़कर) यहाँ तक कि (फूल गिराकर); गन्त्वा भवनम् ओकिरुम् (जाकर महल पर बिखेर दिए) वे पूरे महल पर बिखेर दें; यही अर्थ है।

42. तत्था (वहाँ), मेरे उस विजय महल में; सिखिनो (कलगीदार पक्षी) मोर, नक्कमतु, नाचें; दिब्बाहंसा (दिव्य हंस) दिव्य हंस, पकूजरे (चिल्लाएं) आवाजें निकालें; कराविकाच (कोयल) मधुर आवाज वाली, सुंदर कोयल, कराविका पक्षी, गावंतु (गाएं) गीत गाएं; दिजसंघा (पक्षियों के झुंड) अन्य अवर्णनीय (अनुत्ता), पक्षियों के झुंड; समंततो (चारों ओर) महल के चारों ओर मधुर आवाज में चिल्लाएं।

43. महल के चारों ओर सभी प्रकार के ढोल बजाए जाएँ; सभी प्रकार के ढोल, चाहे एक तरफा बंद हों या दो तरफा बंद हों; सभी प्रकार के वीणा बजाए जाएँ; सभी प्रकार के वीणा, जिनमें कई तार हों, मधुर ध्वनि उत्पन्न करें; सभी प्रकार के गायन एक साथ हों, सभी प्रकार के वीणा महल के चारों ओर सुने जाएँ।

44-5. यावता, जहाँ तक, अमुक स्थान में, बुद्धखेत्तमहि, बुद्ध के क्षेत्र में, दस हजार ब्रह्मांडों (चक्कवा) में; ततो परे चक्कवा, तेज चमकते हुए, अच्चिन्ना, बिना किसी रुकावट के, महल के चारों ओर, महंत रतनमया सोञ्जा पल्लंका तित्तहन्तु, सोने से बने और सात प्रकार के रत्नों से जड़े ऊंचे आसन (पल्लंका) स्थापित हों; महल के चारों ओर, दीपरुक्खा जलन्तु, तेल के दीपक धारण करने वाले वृक्ष तेज रोशनी से जगमगाएं; दस हजार का क्रम, अर्थात् कुल मिलाकर दस हजार दीपक; ekapajjotā bhavantu, वे एक साथ प्रकाश दें जिससे ऐसा प्रतीत हो जैसे एक ही दीपक जल रहा हो; यही अर्थ है।

46. नृत्य और गायन में निपुण गाणिकाएँ, तथा मुख से ध्वनि उत्पन्न करने वाली गायिकाएँ; महल के चारों ओर नृत्य करें; स्वर्ग की कन्याओं का समूह; अनेक रंगों के रंगों से सजी हुई कन्याएँ; महल के चारों ओर नृत्य करें; वे दिखाई दें, स्पष्ट हों; यही अर्थ है।

47. उस समय, मैं तिलोकविजय नामक विश्वराज बना, जो तीनों लोकों का विजेता था; मैं समस्त ब्रह्मांड (कल्लवाला) के वृक्षों के शीर्ष पर, हिमालय और चक्कवाला पर्वतों आदि के शीर्ष पर, तथा सिनेरु पर्वत के शीर्ष पर, सभी स्थानों पर अनेक रंगों से सुशोभित था; मैंने नीले, पीले आदि पाँचों रंगों के ध्वज फहराए; यही अर्थ है। (लोकंतर (लोकंतर) में रहने वाले पुरुष; नाग)

48. नागलोक के नाग (नारच) और नागलोक के नाग (गैंग); देवलोक के गंधर्व देव (गंधर्भ देव) और दिव्य लोक के दिव्य प्राणी (गंधर्व देव); सब्बे उपेंतु, वे सब मेरी उपस्थिति में आएँ। उन पुरुषों आदि को; नमसन्त, जो मेरी आराधना कर रहे हैं; पंजलिका, जो हाथ जोड़कर आहुति अर्पित कर रहे हैं; पासादं परिवारयुम्, मेरे विजय महल को घेरे हुए; यही अर्थ है।

49. उस विश्वराज तिलोकविजय ने महल और अपनी शक्ति की इस प्रकार प्रशंसा करते हुए कहा, "यं किंचि कुसलम् कम्मम्, इत्यादि, ताकि उनके द्वारा किए गए अच्छे कर्मों और प्राप्त उपलब्धियों के फल को जागृत किया जा सके। यं किंचि कुसलकम्मम्, जो भी अच्छे कर्म माने जा सकते हैं, किरियम् कट्टब्बम्, जो भी किया जाना चाहिए, वह सब, मम, मेरे द्वारा, कायेन, चाहे शरीर से हो या वाचाय, शब्दों से, या मनसा, तीन द्वारों (द्वार) के माध्यम से, कटम् तिदसे सुकटम् (उचित रूप से किया गया), जो तावतिंस स्वर्गिक महल में पुनर्जन्म के योग्य हो, यही अर्थ है।"

50. फिर उन्होंने कहा: "ये सत्ता सञ्ञिनो" इत्यादि, ताकि उनके अच्छे कर्मों को प्रेरित किया जा सके। वहाँ, वे सत्ता, चाहे मनुष्य हों, देवता हों या ब्रह्मा, सञ्ञिनो, जो भी बोध (सञ्ञा) से युक्त हैं; अत्ति, वहाँ हैं; ये च सत्ता असञ्ञिनो, जो भी प्राणी बोधहीन (सञ्ञा), स्मृतिहीन (सञ्ञा) हैं; ते सब्बे, वे सभी जीव; कटमपुञ्ञफलम् भागी भवन्तु, उन्हें उनके द्वारा किए गए कर्मों का हिस्सा मिले (या वे हिस्सेदार बनें); यही अर्थ है।

51. बोधिसत्व ने अपने पुण्य कर्मों को पुनः जागृत करने के लिए "येसम कातम" और इसी प्रकार के अन्य शब्दों का प्रयोग किया। मेरे द्वारा किए गए पुण्य कर्म, कातम, सुविदितम, मनुष्यों, ड्रैगनों, गंधर्वों और देवताओं जैसे प्राणियों को भली-भांति ज्ञात हैं; मवा दिन्नम पुण्यफलम, उन्हें मेरे द्वारा किए गए पुण्य कर्मों का फल प्राप्त हुआ है; हे मनुष्यों, आदि; न जानन्ति, न जानते; देवा गन्त्वा, देवताओं ने जाकर निवेदयम, उन्हें इसके बारे में सूचित किया; यही इसका अर्थ है।

दान और पुण्य संचय

52. सब्बलोकंबी ये सत्ता, समस्त लोक में जितने भी जीव हैं, जीवन्ति, वे पोषण पर निर्भर होकर जीते हैं; मनुञ्ञम् भोजनम् सब्बम् मम चेतसा लभन्तु, मेरे अच्छे कर्मों की शक्ति से उन सभी को स्वादिष्ट भोजन प्राप्त हो, यही अर्थ है।

53. मनसा, प्रसन्न मन से; दानम् मया दिन्नाम्, मेरे द्वारा दी गई किसी भी भेंट से; पसादम् आगतिम्, मेरे द्वारा दिए गए उस दान से मुझे परम आनंद प्राप्त हुआ, अर्थात् मेरे मन ने मुझे परम आनंद दिया। सम्मासंबुद्धा, सर्वज्ञ बुद्धों को भी, पच्चेका (एक-एक करके) व्यक्तिगत रूप से, जिनासावका, विजेता के शिष्यों को, और पूजिता को, विश्वराज के द्वारा सम्मानित और पूजा की गई है।

54. सुकतेन तेन कम्मेना, उस अच्छे कर्म के फलस्वरूप, अर्थात् विश्वास के साथ किए गए अच्छे कर्म के कारण; चेतनापणिधी च, इच्छाशक्ति से, अर्थात् मन द्वारा की गई आकांक्षा से, मानुसम् देहम् जहित्वा, मनुष्य शरीर को त्यागकर, अहं तावतिंसम् अगचेहिम्, मैं स्वर्गलोक गया, अर्थात् मैं नींद से जागकर वहाँ प्रकट हुआ, यही अर्थ है।

55. इसके बाद, विश्वराज तिलोकविजय का देहांत हो गया; उस समय से, मैं दिव्य अस्तित्व को जानता हूँ; और मनुष्य अस्तित्व को भी। इन दो पुनर्जन्मों के बाद, मैं अन्य उत्पत्ति को नहीं देखता; मन से, मन के माध्यम से, आकांक्षा का फल प्राप्त होता है; यही अर्थ है।

56. देवानम अधिको होमि, मैं देवताओं का मुखिया हूँ (देव), यदि मेरा पुनर्जन्म देवताओं के बीच हुआ, तो मैं आयु, रंग, बल और सामर्थ्य के कारण देवताओं में सबसे श्रेष्ठ और प्रमुख था; यही अर्थ है। यदि मेरा जन्म मनुष्यों के बीच हुआ, मनुजाधिपो भवमि, तो मैं मनुष्यों का मुखिया और शासक बना। संपन्नो (समृद्ध) अर्थात् राजा के समान होकर, मैं सुंदर सौंदर्य, शारीरिक योग्यता, कद, कमर आदि गुणों से पूर्णतः सुसज्जित था; भावे, प्रत्येक जन्म में।
मैं जन्म से ही परम महत्व को समझने के ज्ञान से परिपूर्ण हूँ; अद्वितीय (अद्वितीय) हूँ, मेरे समान कोई नहीं है। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है: "मेरे समान कोई नहीं है"।
57. मेरे द्वारा किए गए अच्छे कर्मों और अर्जित पुण्य के फलस्वरूप, मैं अपने प्रत्येक जन्म में जहाँ कहीं भी जन्मा, वहाँ मैं सबसे उत्तम, महान और मधुर था; अनेक प्रकार का था; बहुत से स्वादिष्ट और मीठे खाद्य पदार्थों का भी था; सात प्रकार के रत्नों का भी था; ऊनी चादरें, रेशमी चादरें आदि अनेक प्रकार के वस्त्रों का भी था; आकाश से आया था; मेरी उपस्थिति में जल्दी से पास आ जाता था।
58-66. पथब्या, ज़मीन पर; पब्बते, पहाड़ी पर; आकाशे, आकाश में भी; उदके, पानी में; वेन, जंगल में भी; यम यम, जहाँ कहीं भी और हर जगह; हत्थम पसारेमि, मैं अपना हाथ फैलाता (या फेंकता) हूँ; वहाँ से और वहाँ तक, दिब्बा भक्खा (स्वर्गीय भोजन) दिव्य पोषण; मम, मेरी उपस्थिति में; उपेंति (निकट आओ) पास आओ; इसका अर्थ है: "वे स्वयं को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं"। इसी प्रकार, क्रमानुसार, सब्बे रत्ना, सभी रत्न; सब्बे गंधा, चंदन आदि जैसी सभी सुगंध; याना, सभी वाहन; सब्बे माला, चंपक, नाग, पुन्नाग आदि जैसे सभी फूल; अलंकारा, सभी आभूषण; सब्बा दिब्बा काञ्ञा, सभी दिव्य अप्सराएँ; मधुसक्खरा, सभी शहद-चीनी; सब्बे खज्जा, केक आदि जैसे कठोर चबाने योग्य भोजन; माम, मेरी उपस्थिति में; उपेंति, पास आओ।
67-68. संबोधिवरपत्तिया, उत्तम संबोधि की प्राप्ति के लिए, निर्वाण की ओर ले जाने वाले चारों मार्गों के सर्वोच्च ज्ञान की प्राप्ति के लिए; पब्बत्तम, पर्वत, मेरे द्वारा किए गए और पूर्ण किए गए किसी भी उत्तम दान से पर्वत चट्टान के समान माना गया; बहलम गिरम, एक ही गूंजती ध्वनि उत्पन्न करते हुए; गज्जेनतो, अत्यंत ऊँची आवाज उत्पन्न करते हुए; सदेवकम, मनुष्य जगत सहित दिव्य जगत; हंसयन्तो, उन्हें हृदय सुख प्राप्त कराते हुए; लोके, तीनों लोकों का समूह; बुद्धो अहम् भवामि, मैं बुद्ध हूँ, जिसने बार-बार जन्म लेने के चक्र को काट दिया और उससे परे चला गया।
69. दिसा दसविधा लोके, इस विश्व में दस प्रकार और दस दिशाओं के विभाजन हैं। ययतो, मेरे लिए जो वहाँ सभी दिशाओं में विचरण कर रहा हूँ; अंतकम नत्थि (कोई अंत नहीं, कोई मृत्यु नहीं); यही अर्थ है। या जब मैं विश्वराज था, तस्मीम, वहाँ, जहाँ भी मैं गया और गया, उस दिशा के भाग में; बुद्धखेत्ता, बुद्ध के प्रभाव क्षेत्र; असांशिया, गणना से परे।
70. पाभा पकित्तिता, किरणें प्रकट हुईं, फिर, जब मैं विश्व-राजा था, तब मयहम (मेरी प्रकाश किरणें) मेरे ऐसे खजानों की प्रकाश किरणें जैसे चक्र खजाना, रत्न खजाना इत्यादि; यमक, जोड़ियों में आकर; रामसिवाहना (किरणों के वाहक) किरणें छोड़ते हुए, स्पष्ट और निर्मल हो गए; एत्थंतरे, यहाँ भीतर, दस हजार ब्रह्मांडों (चक्कवाला) के भीतर; रामसिजालम (किरणों का जाल) किरणों का एकत्रित समूह; आलोको विपुलो भावे (वहाँ प्रचुर प्रकाश आया) वहाँ बहुत अधिक प्रकाश था; इस प्रकार, अर्थ है।
71. एत्तके लोकधातुम्हि दस हज़ार ब्रह्मांडों में (चक्कवा;), सब्बे जाना माम पसन्तु, सभी लोग मुझे देखें; यही मतलब है। सब्बे, सभी दिव्य-प्राणियों; याव ब्रह्मा निवेशना, ब्रह्मा की दुनिया तक; माम अनुवत्तन्तु (मुझसे) वे मुझे प्रसन्न करें।
72. विशिष्टमधुनादेन, स्पष्ट और सुस्पष्ट मधुर ध्वनि के साथ; अमाता भरिमाहनिम, मैंने दिव्य अमर ढोल बजाया; एत्थंतरे (यहाँ) इन दस हजार ब्रह्मांडों (चक्कवाल) में; सब्बे जना मधुरं गिरं सुनन्तु, सभी लोग मेरी मधुर आवाज सुनें और ध्यान दें।
73. जब धर्म की वर्षा हुई, धर्म के उपदेशों की ध्वनि के साथ; दूसरे शब्दों में, जब सर्वज्ञ बुद्ध की सामर्थ्य से सर्वोपरि, गहन, मधुर और सूक्ष्म अर्थों की वर्षा हुई; सभी भिक्षुओं, भाइयों और बहनों, आदि; उन्हें दोषमुक्त और निर्मल बनाया जाए। इन समूहों और श्रेणियों में, प्राणियों की चार प्रकार की सभाओं में, जो भी गुण की दृष्टि से सबसे निचले और निम्नतम हैं; वे सभी को मोक्ष की प्रथम अवस्था प्राप्त हो।

दान, शील, त्याग, संबोधि और निर्वाण में पूर्णता

74. फिर, जब मैं विश्वराज था, तिलोकविजय, दाताब्बम् दानम्, मैंने दान करने योग्य सभी चीजों का दान किया; असेसतो (बिना कुछ शेष छोड़े); सीलम् पुरेत्वा, उपदेशों में पूर्णता प्राप्त की; नेक्खम्मे पारमिम्, त्याग में पूर्णता की चरम सीमा तक पहुंचा; उत्तमम् सम्बोधिम पत्तो, सबसे उत्तम सम्बोधि प्राप्त की, मैंने निर्वाण की ओर जाने वाले चारों सही मार्गों का ज्ञान प्राप्त किया।

75. पाण्डिते परिपुच्छित्वा (ज्ञानियों से गहनतापूर्वक प्रश्न पूछकर) मैंने ज्ञानी और विद्वान लोगों से ऐसे प्रश्न पूछे, जैसे: "आदरणीय महोदय! क्या करना चाहिए? क्या नहीं करना चाहिए? अच्छा कर्म क्या है? बुरा कर्म क्या है? क्या करने से दो लाभ, अर्थात् स्वर्ग और मोक्ष, प्राप्त होते हैं?" इस प्रकार मैंने ज्ञान की पूर्णता प्राप्त की; यही इसका अर्थ है। कत्वा वीरमत्तमम् (सर्वोत्तम प्रयास करके) मैंने उन विषयों, स्थानों और आसनों में निरंतर प्रयास करके प्रयास की पूर्णता प्राप्त की जो सबसे उत्तम और श्रेष्ठ हैं; यही इसका अर्थ है। खन्तिया पारमिम गन्त्वा (धैर्य की पूर्णता प्राप्त करके) मैंने धैर्य की पूर्णता की चरम सीमा तक पहुँचकर, विरोध में समस्त जनसमूह द्वारा किए गए अपमान को सहन किया; उत्तमम संबोधिम पत्तो, (मैंने उच्चतम संबोधि प्राप्त की) मैं सबसे उत्कृष्ट सर्वज्ञ बुद्ध बन गया।
76. मैंने दृढ़ संकल्प लेकर आत्म-संकल्प की पूर्णता प्राप्त की और अविचल होकर कहा: "यद्यपि मेरे शरीर और प्राण नष्ट हो जाएं तब भी मैं पुण्य कर्मों के निष्पादन से विमुख नहीं होऊंगा।" मैंने सत्य की पूर्णता का अभ्यास किया और स्वयं से कहा: "यद्यपि मेरे सिर काटे जाने पर भी मैं असत्य नहीं बोलूंगा।" प्रेम और करुणा की पूर्णता की चरम सीमा तक पहुंचकर, मैंने बुद्ध बनकर परम श्रेष्ठ संबोधि प्राप्त की; यही इसका अर्थ है।
77. लाभ (प्राप्ति में) सजीव और निर्जीव, जीवित और निर्जीव वस्तुओं या चीजों की प्राप्ति में, अलाभ (प्राप्ति में) उनकी प्राप्ति न होने में, सुख (सुख में) शारीरिक और मानसिक आनंद में, दुःख (दुख में) शारीरिक और मानसिक कष्ट में, सम्मान (आदर करने वाले लोगों द्वारा की गई प्रशंसा में) और अपमान (अपमान करने वाले लोगों द्वारा निंदा) में, च, साथ ही, सब्बत्थ समाको (हर जगह समान) मैं सदा समभावी हूं, समभाव की पूर्णता को प्राप्त कर चुका हूं, उत्तमं सम्बोधिम पत्तो, मैंने बुद्ध बनकर सर्वश्रेष्ठ सम्बोधि प्राप्त की; यही अर्थ है।
78. कोसज्जम् (आलस्य); भयतो, खतरे की दृष्टि से, दिस्वा (देखकर) जानते हुए: "इसका परिणाम नरक में कष्ट भोगने की ओर होता है", इसलिए आलस्य और सुस्ती से मुक्त होकर विवेकपूर्ण आचरण करना चाहिए; विरियम् खेमातो, सुरक्षा के लिए प्रयास; दिस्वा, यह देखकर (या जानकर) कि प्रयास निर्वाण की ओर ले जाता है; आरद्ध वीरिवा होथा, सदा प्रयास के लिए तत्पर रहना चाहिए। अतः बुद्धानुसासनी, यही बुद्धों की नसीहत, सलाह है।
79. विवादम भयतो दिस्वा, यानी विवाद और कलह को खतरे की दृष्टि से देखना और यह जानना कि यह नरक की ओर ले जाता है; अविवादम खेमातो दिस्वा, यानी यह देखना (या जानना) कि विवाद (या कलह) से परहेज सुरक्षा, निर्वाण की प्राप्ति की ओर ले जाता है; समाग्गा, यानी एकाग्र मन से रहना, विचारों में एकरूपता रखना; सखिला होथा, यानी तुम सब वाणी में सौहार्दपूर्ण (या दयालु) रहो, एक दूसरे के प्रति प्रेम और करुणा का भाव रखो, और आगे बढ़कर प्रकाशमान हो; यही अर्थ है। एस्सा (यह) प्रवचन (परामर्श या कथन), अनुसानी, बुद्धों के परामर्श का उपहार है।
80. पामादम् (लापरवाही/आलस्य) स्थान, आसन आदि जैसी चीजों में बिना ध्यान दिए रहने के कारण होने वाली हानि; भयतो दिस्वा, खतरे के दृष्टिकोण से देखते हुए, यह जानते हुए कि "प्रत्येक जन्म में जहाँ भी व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है, दुख, कुरूपता, भोजन और पानी की कमी आदि जैसी विपत्तियाँ स्वतः घटित होती हैं, साथ ही नरक में जाना आदि भी होता है"; अपमादम् खेमातो दिस्वा (सभी सुरक्षा के दृष्टिकोण से परिश्रम को देखते हुए), व्यक्तिगत अनुभव से जानते हुए, समृद्धि के दृष्टिकोण से सचेतनतापूर्वक किए गए कार्य, अर्थात् निर्वाण की निश्चित प्राप्ति। अत्थांगिकम् मग्गम् भावेथा (आठ गुना श्रेष्ठ मार्ग का विकास करो) - आत्म-प्राप्त बुद्धत्व की यात्रा के साधनों के प्रति सचेत रहते हुए, आठ श्रेणियों, अर्थात्: सही दृष्टि, सही इरादा, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही जागरूकता और सही ध्यान, का अभ्यास और ध्यान करो। एसा बुद्धानुसासनी (यह बुद्धों की नसीहत है) - यह बुद्धों का प्रवचन, उपदेश, कथन और निर्देश है; यही इसका अर्थ है।
81. समागत बहु बुद्ध (अनेक बुद्ध एकत्रित हुए) मौन बुद्ध, लाखों की संख्या में एकत्रित होकर एक विशाल समूह बन गए; सब्बसो अरहंता (सभी ओर अरहत) लाखों अरहत, सभी प्रकार से दोषरहित (खीणासवा) एकत्रित होकर एक विशाल समूह बन गए। अतः, अरहन्ते वन्द-माने नमस्सथा (अरहतों को प्रणाम करो) अपने सभी प्रमुख और गौण शारीरिक लक्षणों के साथ झुककर उन बुद्धों और अरहतों को प्रणाम करो, जो पूजा के योग्य हैं।
82. एवम् अचिंतिया बुद्धा (इस प्रकार बुद्ध अकल्पनीय हैं) जैसा कि मैंने समझाया है, बुद्ध ऐसे हैं जिनके बारे में सोचना असंभव है। बुद्धधम्म, बुद्धों का धम्म, ध्यान के चार प्रतिष्ठान, अष्टांगिक आर्य मार्ग, पाँच खंध, आश्रित (पच्चय), आश्रित इंद्रिय-विषय (आरम्मण पच्चय) आदि जो बुद्धों द्वारा प्रचारित धम्मों का निर्माण करते हैं। बुद्धों का स्वरूप (सभाव) अकल्पनीय है, जिसके बारे में सोचना संभव नहीं है; अचिंतिये (अकल्पनीय) चिंतन के दायरे से परे है; pasannanam vipāko hoti (यह विवेकपूर्ण आनंद का परिणाम है), ईश्वरीय और मानवीय स्पष्ट और विवेकपूर्ण आस्था का लाभकारी परिणाम गणना से परे है, ईश्वरीय और मानवीय महिमा की मात्रा और निर्वाण की महिमा (सम्पेत्ति) के बारे में सोचना असंभव है।

पिछले जन्मों में किए गए अक्षम्य गलत कर्मों की सूची

82.1 इस प्रकार, ठीक उसी प्रकार जैसे यात्रा पर जाने वाले लोग, "हमें मार्ग बताइए" पूछने पर, "दाएँ मार्ग को छोड़कर दाएँ मार्ग से जाइए" कहे जाने पर, उस मार्ग से चले और गाँवों, नगर निगमों और राजमहलों में जो भी कार्य करना था, उसे पूरा किया; और फिर जब वे दूसरे मार्ग, अर्थात् बाएँ मार्ग से गए, जिसे उन्होंने त्याग दिया था, तो उन्होंने गाँवों, नगर निगमों और राजाओं की राजधानियों में जो भी कार्य करना था, उसे पूरा किया, ठीक उसी प्रकार, बुद्ध के अच्छे कर्मों के रूप में जीवन चक्र पूरा करने के बाद, यह प्रश्न पूछना इसलिए आवश्यक था ताकि उसी जीवन चक्र को बुरे कर्मों के दृष्टिकोण से विस्तार से बताया जा सके:

कठिन कर्म (दुक्कारम) और निंदा
एक और निंदा, निंदनीय आरोप,
पत्थर लगने से चोट आई और छर्रे से दर्द हुआ।
नालागिरी हाथी, चाकू से कटा हुआ, सिर में पीड़ा,
मक्का खाना, पीठ दर्द, दस्त: ये
ये बुरे कर्मों को अंजाम देने के समान हैं।"

पूर्व बुद्ध कश्यप के विरुद्ध अहंकारवश अनुचित वाणी का प्रयोग करने के कारण, अब बुद्ध बनने के लिए लंबे और कठिन मार्ग पर कष्ट भोग रहे हैं।

82.2 पहले प्रश्न में दुक्कारा (संस्कृत-दुश्कर) का अर्थ है छह वर्षों तक कठिन कर्म करना। बहुत समय पहले, सर्वज्ञ बुद्ध कस्सपा के समय में, बोधिसत्व ने ज्योतिपाल नामक ब्राह्मण युवक के रूप में पुनर्जन्म लिया। ब्राह्मण होने के कारण, उन्हें उस परम पूज्य (तत्कालीन बुद्ध कस्सपा) के उपदेशों में स्पष्ट आस्था नहीं थी। उस परम पूज्य के प्रति किए गए बंधन कर्मों के फल के कारण, "कस्सपा, परम पूज्य" का नाम सुनकर उन्होंने कहा, "इस गंजे भिक्षु को बुद्ध बनने की बोधि कहाँ से मिली? बुद्धत्व प्राप्त करना तो अत्यंत कठिन है।" उस कर्म के फलस्वरूप, उन्होंने अपने सैकड़ों जन्मों में नरक और इसी प्रकार के कष्ट भोगे। उस तेजस्वी पुरुष के मार्ग पर चलते हुए और उसी बुद्ध द्वारा की गई भविष्यवाणी से, उनके पुनर्जन्मों का निरंतर चक्र समाप्त हो गया (खेपेत्व) और अंत में उन्होंने वेसंतारा की अवस्था प्राप्त की। वहाँ से परलोक जाने पर, उनका पुनर्जन्म तुषिता देवलोक में हुआ। देवताओं के अनुरोध पर, उनका वहाँ से परलोक हो गया और उनका पुनर्जन्म शाकियान परिवार में हुआ। अपने ज्ञान की पूर्ण परिपक्वता के कारण, उन्होंने अनोमा नदी के तट पर अपनी तेज धार वाली तलवार से पूरे जंबू पर प्रभुत्व का त्याग कर दिया, और ब्रह्मा द्वारा अपनी जादुई शक्ति से लाए गए, कमल की कली में उत्पन्न हुए आठ संन्यास-आवश्यकताओं को स्वीकार किया, जो कल्प के पुनरुत्थान के समय उत्पन्न हुई थीं, और भिक्षु बन गए। और चूंकि प्रारंभ में, बुद्ध बनने के बोधि-ज्ञान में उनकी अंतर्दृष्टि अभी पूरी तरह से परिपक्व नहीं हुई थी, इसलिए वे बुद्ध बनने के सही या गलत मार्ग को नहीं जानते थे, और उन्होंने उरुवेला क्षेत्र में छह वर्षों तक, पदानसुत्त में वर्णित विधि के अनुसार, कठोर परिश्रम (पधान), विशाल प्रयास और कठिन कर्म (दुक्करा कारिका) किया, जिसमें केवल एक बार भोजन करना, केवल एक निवाला खाना, एक ही व्यक्ति के साथ, एक ही यात्रा पर, एक ही बैठक में एक ही भोजन करना शामिल था, जब तक कि उनका शरीर पेटा के आकार का नहीं हो गया, जिसमें मांस और रक्त नहीं था। उन्होंने यह विचार किया कि कठिन कर्म पूर्ण ज्ञान प्राप्ति और बुद्ध बनने का सही मार्ग नहीं है, उन्होंने गांवों, बाजार कस्बों (निगम) और राजसी शहरों में उत्तम पोषण का आनंद लिया, अपनी इंद्रियों के नियंत्रण में सुंदर बन गए, एक महान व्यक्तित्व के बत्तीस गुणों से पूर्ण रूप से परिपूर्ण हो गए, उचित समय पर बोधि वृक्ष की ओर गए, पांचों मारों पर विजय प्राप्त की और बुद्ध बन गए।
मैंने, ज्योतिपाला ने, तब सुगत के बारे में बात की।
कस्सपा; बुद्धत्व कहाँ से प्राप्त होता है?
गंजा। बुद्धत्व बिल्कुल

हासिल करना मुश्किल है।
उस कर्म के परिणाम स्वरूप, मुझे
बहुत कठिन कर्मों का अभ्यास करना पड़ा
उरुवेला में छह साल और उसके बाद मैं
उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया और बुद्ध बन गए।
मैंने बोधि की सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त नहीं किया।
उस सही मार्ग का साधन; अवरुद्ध होना
अपने पूर्व कर्म के अनुसार, मैं खोज में था
उस उपलब्धि को गलत रास्ते से हासिल करना।
मैं उस व्यक्ति के रूप में निर्वाण में प्रवेश करूंगा, जिसने यह किया था
सभी गुणों और दोषों को दूर करते हुए, जो
जिसने सभी चिंताओं का त्याग कर दिया था,
चिंता और उथल-पुथल से मुक्त हो जाओ
साथ ही साथ कैंकर (आसवा) भी।

मौन बुद्ध पर झूठा आरोप लगाने के पिछले कर्म, फिर नरक में कष्ट भोगने और अब विरोध पर

82.3 दूसरे प्रश्न में, 'अब्भक्खानाम्' अभिव्यक्ति का अर्थ चुगली, गाली-गलौज और निंदा बढ़ाना है। कहा जाता है कि बहुत समय पहले, बोधिसत्व का जन्म निम्न सामाजिक श्रेणी (शुद्ध) के परिवार में हुआ था। वे प्रसिद्ध नहीं थे; उनकी योग्यताएँ अल्प थीं; और वे मुनाली नामक एक दुष्ट व्यक्ति के रूप में जीवन व्यतीत करते थे। उसी समय, उच्च जादुई शक्तियों और महान प्रभाव वाले एक मौन बुद्ध, सुरभि, किसी कार्य के सिलसिले में उनके पड़ोस में आए। मौन बुद्ध को देखते ही उन्होंने उन पर इस प्रकार के अपमानजनक शब्दों से आरोप लगाया: "यह भिक्षु उपदेशों में दुष्ट है और बुरे धर्म की ओर प्रवृत्त है" इत्यादि। उस पाप कर्म के फलस्वरूप, उन्होंने हजारों वर्षों तक नरक में कष्ट भोगा, और इसी प्रकार इस अंतिम जन्म में, जब विधर्मी (तित्तिया) सर्वप्रथम प्रसिद्ध और लोकप्रिय हुए, उस समय जब परम पूज्य बुद्ध तुषिता के दिव्य महल में निवास कर रहे थे और अपने बासठ मतों का प्रदर्शन करते हुए समस्त जनसमूह को भ्रमित कर रहे थे; तब वे तुषिता के स्वर्ग नगर से विदा हुए, शाक्य वंश में जन्म लिया और अंततः बुद्ध बन गए।

बुद्ध के शिष्यों द्वारा प्रदर्शित उड़ने की जादुई शक्ति

विधर्मी सूर्योदय के समय जुगनुओं की तरह लाभ और यश से वंचित हो गए, और इसलिए बुद्ध के प्रति द्वेष रखते हुए इधर-उधर भटकने लगे। उसी अवसर पर, राजगृह के धनदाता गंगा नदी में स्नान करते हुए, जाल बिछाकर लाल चंदन का एक पात्र देखकर यह विचार करने लगे: "हमारे घर में चंदन बहुतायत में है; इसे खराद पर रखकर कारीगरों द्वारा इसी लकड़ी का एक भिक्षापात्र बनाया जाए और उसे बांस की अलग-अलग ऊँचाइयों पर लटकाया जाए।" उन्होंने ऐसा ही किया और ढोल बजाकर यह घोषणा की, "जो कोई भी अपनी जादुई शक्ति से यहाँ आकर यह पात्र ले जाए, मैं उसका भोजन कराने वाला बनूँगा।"

82.4 तब विधर्मी आपस में बुदबुदाए: "अब तो हम बर्बाद हो गए! अब तो हम बर्बाद हो गए!" जैन नेता नाता के पुत्र निगंठ ने अपनी सभा से कहा: "मैं बांस के पास जाकर आकाश में उड़ने का करतब दिखाऊंगा: तुम सब मुझे कमर से पकड़कर मना करो और कहो: 'कृपया तुच्छ लकड़ी के कटोरे के कारण चमत्कार न करो'।" वे उसी के अनुसार गए और वैसा ही किया।

82.5 उस समय, पिन्दोलाभारद्वाज और मोग्गलाना थेरा, तीन गावट आकार की एक पथरीली पहाड़ी पर खड़े थे, भिक्षापात्रों में भोजन एकत्र करने के उद्देश्य से अपने ऊपरी वस्त्र धारण किए हुए थे, और उन्होंने उस घोषणा (कोलाहला) के बारे में सुना। मोग्गलाना ने पिन्दोलाभारद्वाज से कहा, "आप हवा में जाइए और वह कटोरा ले आइए।" पिन्दोलाभारद्वाज ने उत्तर दिया, "आदरणीय महोदय! आपको स्वयं भगवान ने अपने शक्तिशाली शिष्यों में सर्वोच्च स्थान दिया है, इसलिए कृपया इसे स्वयं ही ग्रहण करें।" ऐसे उत्तर के बावजूद, पिन्दोला को आदेश दिया गया, "मैं आपको आदेश देता हूँ। आपको बस इसे ग्रहण करना है।" आदेश के अधीन, पिन्दोला ने तीन गावटों की चट्टानी पहाड़ी, जिस पर वह स्वयं खड़ा था, को अपने पैरों के तलवों से चावल उबालने वाले बर्तन के ढक्कन की तरह चिपका लिया और रागगृह नगर को ढक लिया। तब नगरवासियों ने उस थेरे को रत्न-धागे की तरह किसी पहाड़ी के चारों ओर लिपटा हुआ देखकर

जोर से पुकारा, "आदरणीय भारद्वाज! कृपया हमारी रक्षा करें।" भयभीत होकर उन्होंने अपने सिर सूप से ढक लिए। तब थेरे ने उस पहाड़ी को उसी स्थान पर छोड़ दिया, अपनी जादुई शक्ति से आकाश में गए और वह कटोरा ले आए। इस अवसर पर नगरवासियों ने बहुत शोर मचाया।

82.6 बांस के वन में स्थित मठ में बैठे हुए, भगवान बुद्ध ने वह शोरगुल सुना और आनंद से पूछा, "यह कैसी आवाज है?" आनंद ने उत्तर दिया, "हे पूज्यवर! भारद्वाज द्वारा कटोरा ले लिए जाने के कारण, नागरिक बहुत प्रसन्न हुए और शोर मचाने लगे।" तब भगवान बुद्ध ने उस कटोरे को अपने पास मंगवाया, उसे तुड़वाया, आँखों के लिए एक चूर्ण बनाया और भिक्षुओं को दे दिया, ताकि भविष्य में कोई दूसरों की आलोचना न करे। हालाँकि, इसे देने के बाद, बुद्ध ने एक नियम बनाया: "हे भिक्षुओं! जादू-टोने का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। जो कोई भी ऐसा करता है, वह दुक्कड़ कर्म का दोषी है।"

पल भर में उगने वाले और कभी न खत्म होने वाले फलों से भरपूर आम के पेड़ की जादुई शक्ति का प्रदर्शन।

82.7 परिणामस्वरूप, विधर्मी आपस में कहने लगे, "हमें बताया गया है कि भिक्षु गौतम ने अपने शिष्यों के लिए अनुशासन का नियम निर्धारित किया था; उन्हें उस नियम का उल्लंघन नहीं करना चाहिए क्योंकि उनके जीवन को खतरा है; हम अपनी जादुई शक्तियों का प्रदर्शन करेंगे।" वे समूह बनाकर यहाँ जमा हो गए और शोर मचाने लगे। तब राजा बिम्बिसार ने इसके बारे में सुना, वे बुद्ध के समक्ष गए, उन्हें प्रणाम किया, एक तरफ बैठ गए और बुद्ध से इस प्रकार कहा, "हे प्रभु! विधर्मी शोर मचा रहे हैं और कह रहे हैं कि वे अपनी जादुई शक्तियों का प्रदर्शन करेंगे।" बुद्ध ने उत्तर दिया, "हे महान राजा! मैं भी ऐसा ही करूँगा।" राजा ने पूछा, "हे प्रभु! क्या बुद्ध ने शिष्यों के लिए अनुशासन का नियम निर्धारित नहीं किया था?" बुद्ध ने एक प्रतिप्रश्न पूछा: "हे महाराज! मैं आपसे ही पूछ सकता हूँ कि जब आप अपने राज उद्यान में आम आदि खाने के दोषी लोगों के लिए दंड का नियम बनाते हैं, तो क्या आप स्वयं को भी इस अपराध और दंड में शामिल करते हैं?" राजा ने उत्तर दिया: "हे महाराज! मेरे लिए कोई दंड नहीं है।" बुद्ध ने निष्कर्ष निकाला: "हे महाराज! उसी प्रकार, मेरे लिए कोई अनुशासनात्मक नियम बनाने की भी आवश्यकता नहीं है।" तब राजा ने पूछा: "हे महाराज! आपका प्रदर्शन कहाँ होगा?" बुद्ध ने उत्तर दिया: "हे महाराज! यह सावत्थी के पास कंद के आम के वृक्ष के नीचे होगा।" राजा बिम्बिसार ने कहा: "बहुत अच्छा, हे महाराज!" हम इसे देखेंगे।" परिणामस्वरूप, विधर्मियों ने यह सुनकर कि "कंड के आम के वृक्ष के नीचे चमत्कार होने वाला है", शहर के चारों ओर आम के वृक्ष कटवा दिए। नागरिकों ने आंगन के विशाल क्षेत्र में एक के ऊपर एक पलंग और ऊंचे चबूतरे आदि बनाकर उन्हें निगरानी मीनारों के रूप में इस्तेमाल किया। पूरे भारत (जम्बू द्वीप) के निवासी समूहों में संगठित होकर पूर्व दिशा में बारह योजन की दूरी तक फैल गए। शेष दिशाओं में भी वे इसी प्रकार एकत्रित हुए।

82.8 जब समय आ गया, आषाढ़ माह की पूर्णिमा की सुबह, जब सारा काम पूरा हो चुका था, तब परम पूज्य भगवान उस स्थान पर गए और बैठ गए। उसी क्षण, कंद नामक माली ने चींटियों के घोंसले में एक पका हुआ आम देखा और मन ही मन कहा, "यदि मैं यह आम राजा को दे दूं, तो मुझे सोने के सिक्के (कहापण) आदि जैसे आवश्यक पुरस्कार प्राप्त होंगे; दूसरी ओर, जब इसे परम पूज्य को अर्पित किया जाएगा, तो मुझे इस लोक और परलोक दोनों में समृद्धि प्राप्त होगी।" उसने वह आम परम पूज्य को अर्पित कर दिया। परम पूज्य भगवान ने उसे ग्रहण किया और थेरा आनंद को आदेश दिया, "इस फल को मसलकर इसका रस मुझे पीने को दो।" थेरा ने वैसा ही किया। परम पूज्य भगवान ने आम का रस पिया, आम की गुठली बाग के रखवाले को लौटा दी और कहा: "इस बीज को बो दो।" माली ने रेत की परत हटाई और बीज बो दिया। थेरा आनंद ने प्याले से पानी छिड़का। उसी क्षण आम का पौधा उग आया और जब वहाँ मौजूद लोगों का विशाल समूह देख रहा था, तभी एक पूर्ण विकसित आम का वृक्ष प्रकट हुआ, जिसकी शाखाएँ, अंकुर और टहनियाँ फूलों और फलों से लदी हुई थीं। गिरे हुए आमों को खाकर भी जंबू द्वीप के सभी निवासी तृप्त नहीं हो पाए।

स्वर्ग में जादुई शक्तियों का प्रदर्शन करना और वहाँ अपनी माँ को शिक्षा देना

82.9 इसके बाद, प्रतापी बुद्ध ने पूर्वी ब्रह्मांड (चक्कवाला) से लेकर पश्चिमी ब्रह्मांड तक, हमारे ब्रह्मांड (चक्कवाला) में, शक्तिशाली मेरु के शीर्ष पर एक रत्नजड़ित सैरगाह बनाई, धम्मपद की टीका में वर्णित तरीके से अपनी जादुई शक्ति का भव्य प्रदर्शन किया, अनेक सभाओं के समक्ष सिंह के समान गर्जना करते हुए, विधर्मियों को कुचल दिया, उन्हें भ्रम और अव्यवस्था में डाल दिया, अपने चमत्कार के अंत में पूर्व बुद्धों की प्रथा के अनुरूप तावतिंसा के दिव्य महल में गए, वहाँ उपवास का समय बिताया, तीन महीनों तक बिना किसी अंतराल के अभिधम्म का उपदेश दिया, अपनी माता के नेतृत्व में अनेक देवताओं को पवित्रता की प्रथम अवस्था (सोतापत्ति) की प्राप्ति कराई, वर्षा ऋतु (उपवास) बिताने के बाद स्वर्ग से अवतरित होने की व्यवस्था की, अनेक देवताओं के समूहों से घिरे हुए नीचे उतरे। ब्रह्माओं ने संकस्सा नगर के द्वार पर जाकर विश्वलोक का उत्थान किया। उस समय तक, प्रतापी भगवान को प्राप्त लाभ और सम्मान ने जंबू द्वीप को पाँच महान नदियों के समान भर दिया था।

एक पूर्व बुद्ध शिष्य पर यौन दुराचार का झूठा आरोप लगाने के पूर्व कर्म के फल पर, अब झूठे आरोप का सामना कर रही महिला सिंका-मनविका द्वारा लिखित लेख

82.10 परिणामस्वरूप, विधर्मी धन-संपत्ति और मान-सम्मान में क्षीण हो गए, व्यथित, निराश और हताश हो गए और उदास चेहरे के साथ बैठ गए। तब उनकी अत्यंत सुंदर भक्त सिंकामानविका ने उन्हें इस प्रकार बैठे देखकर पूछा, “आदरणीय महोदय! आप सब इतने व्यथित और निराश क्यों बैठे हैं?” उन्होंने उत्तर दिया, “हे बहन! आप इतनी उदासीन क्यों हैं?” उसने पूछा, “आदरणीय महोदय! क्या बात है?” उन्होंने शिकायत की, “हे बहन! जब से गौतम भिक्षु प्रकट हुए हैं, तब से हमने अपना धन-संपत्ति खो दी है; नागरिक हमारा अनादर करते हैं।” युवती ने पूछा, “इस मामले में हमें क्या करना चाहिए?” उन्होंने सुझाव दिया, “आपको गौतम भिक्षु के विरुद्ध बवाल खड़ा करना चाहिए।” उसने कहा, “यह मेरे लिए बोझिल नहीं है।” इस कार्य में प्रयास करते हुए, वह एक अजीब समय पर जेतवन गई, विधर्मियों के आश्रम में ठहरी और सुबह मानो स्वयं जेतवन से ही नागरिकों के आगमन के समय इत्र आदि भेंट लेकर परमेश्वर को प्रणाम करने के लिए बाहर आई। जब उससे पूछा गया: "तुम कहाँ सोई थीं?" उसने उत्तर दिया: "मेरे सोने की जगह का आप लोगों को क्या उपयोग है?" और चली गई। धीरे-धीरे, समय बीतने के साथ, जब उससे दोबारा पूछा गया तो उसने अंततः उत्तर दिया: "मैं भिक्षु गौतम के साथ एक ही सुगंधित कक्ष में सोने के बाद आई हूँ।" मूर्ख और सामान्य लोग (पुथुज्जन) उसकी कहानी पर विश्वास कर गए। बुद्धिमान लोग, जो धारा के विजेता (सोतापन्न) आदि थे, ने उस पर विश्वास नहीं किया। एक दिन, उसने अपने पेट पर एक लकड़ी की डिस्क बाँधी, जिसके ऊपर उसने चारों ओर एक लाल कपड़ा (पटा) रखा, और जाकर धर्म का उपदेश देने के उद्देश्य से बैठे हुए भगवान से, श्रोताओं की सभा में, जिसमें स्वयं राजा भी शामिल थे, इस प्रकार कहा: "हे भिक्षु! आप धर्म का उपदेश देते हैं; लेकिन आप मेरे गर्भ में पल रहे अपने होने वाले पुत्र की देखभाल लहसुन, काली मिर्च आदि से नहीं करते हैं, जो आपके कारण ही गर्भ में आया है।" भगवान ने प्रतिक्रिया दी: "बहन! आप स्वयं भी, और मैं भी, ऐसी स्थिति को जानते हैं!" उसने कहा: "बिल्कुल; केवल दो ही लोग यौन संबंध के समय को जानते हैं; किसी अन्य व्यक्ति को नहीं।

82.11 उसी क्षण, सक्का का हल्का पीला मखमली पत्थर का आसन गर्म होने लगा। जाँच करने पर सक्का को इस बात का पता चला और उन्होंने दो युवा देवताओं को आदेश दिया: "तुम दोनों में से एक चूहे का रूप धारण करके उसके लकड़ी के चक्र का बंधन काट दे। दूसरा बवंडर उत्पन्न करके उसके वस्त्र को उसके शरीर से उड़ा दे।" वे गए और उन्होंने वैसा ही किया। लकड़ी का चक्र नीचे गिरते ही उसके पैर के तलवे को तोड़ गया। धम्मसभा में एकत्रित सभी आम लोग (पुथुज्जन) उठ खड़े हुए और बोले: "देखो, दुष्ट चोर! तुमने तीनों लोकों के स्वामी पर ऐसा आरोप लगाया है!" उन्होंने मुक्कों से वार किया और उसे सभा से बाहर घसीट लिया। उसके इस दृश्य के समाप्त होते ही पृथ्वी में एक प्रतिध्वनि उत्पन्न हुई। उसी क्षण, नरक (अविसी/नरक) से ज्वालाएँ उठीं, उन्हें परिवार द्वारा उपहार में दिए गए लाल मखमल सहित ढक लिया और नरक (अविसी) में फेंक दिया। परम पूज्य ईश्वर के प्रति अत्यधिक श्रद्धा और सम्मान था। इसलिए ऐसा कहा गया है:

बुद्ध का एक शिष्य था, जो सर्वधर्मवादी था...
मैं नंदा नामक व्यक्ति से प्रश्न करता हूँ। क्योंकि मैं
मैंने उसकी बदनामी की, मुझे बार-बार पुनर्जन्म लेना पड़ा।

लंबे समय तक निरयण (शुद्धिकरण) में रहना।
दस हजार वर्षों तक,
मैंने नरक में बार-बार पुनर्जन्म का अनुभव किया।
(निरया), जब अंततः मैं एक इंसान बन गया
मुझे बहुत बदनामी का सामना करना पड़ा।
उस कृत्य के परिणामों के अवशेषों के रूप में
मेरे आरोप के संबंध में, युवती, सिन्का,
एक बड़े समूह के सामने मुझ पर झूठा आरोप लगाया गया
लोगों का।

मौन बुद्ध पर यौन दुराचार का झूठा आरोप लगाने के पिछले कर्म पर, अब लेडी सुंदरिका द्वारा झूठे आरोप की बदनामी का सामना करना पड़ रहा है

82.12. तीसरे प्रश्न में:- अभिव्यक्ति: अब्बक्खानाम् का अर्थ है विरोध में घोषणा, अपमान। कहा जाता है कि बहुत समय पहले बोधिसत्व का जन्म एक महत्वहीन परिवार में हुआ था। उनका नाम मुनाली था, जो बुरे लोगों की संगति के कारण दुष्ट बन गए और मौन बुद्ध सुरभि का अपमान करते हुए बोले: "यह भिक्षु दुष्ट कर्म और बुरे धर्म का अनुयायी है। इसी कर्म के फल के कारण वह हजारों वर्षों तक नरक (निरय) में पले-बढ़े, और अपने इस अंतिम जन्म में दस सिद्धियों को पूर्ण करने के कारण वे बुद्ध बन गए और सर्वोच्च लाभ और प्रसिद्धि प्राप्त की।" फिर विधर्मी दुखी और निराश होकर बैठ गए और आपस में कहने लगे, "अब हम गौतम भिक्षु का अपमान कैसे करें?" तभी सुंदरी नाम की एक साध्वी उनके पास आईं और जब वे उन्हें प्रणाम कर रही थीं, तो उन्होंने देखा कि वे सब मौन हैं। इसलिए उन्होंने पूछा, "आप सब मुझसे क्यों क्रोधित हैं? मेरी क्या गलती है?" उन्होंने उत्तर दिया: "जब हम भिक्षु गौतम द्वारा सताए जा रहे थे, तब आप हमारे लिए निश्चिंत होकर रह रही थीं; यही आपकी गलती है।" उन्होंने पूछा: "यदि ऐसा है, तो मैं इस मामले में क्या करूँ?" उन्होंने कहा: "क्या आप भिक्षु गौतम की बदनामी कर पाएँगी?" उन्होंने उत्तर दिया: "हे प्रभु! मैं ऐसा कर पाऊँगी।" इसके बाद, जैसा कि पहले बताया गया है, उन्होंने बुद्ध को अपशब्द कहे और हर किसी को बताया कि वह कहाँ हैं, इस प्रकार: "मैं भिक्षु गौतम के साथ एक सुगंधित कक्ष में सोने के बाद बाहर आई हूँ।" विधर्मियों ने भी निंदा और अपशब्द कहते हुए कहा: "ओह! भिक्षु गौतम का यह काम देखो।" वास्तव में, ऐसा कहा गया है:

मैं मुनाली नाम का एक बदमाश था, जो पहले अपने
अन्य पुनर्जन्म; मैंने निर्दोष मौन को बदनाम किया
बुद्ध सुरभि. उस कृत्य के परिणामस्वरूप, मैं
उसे नरक (निरय) में पुनर्जन्म का सामना करना पड़ा।
हजारों वर्षों तक, मैंने अनुभव किया
असहनीय अनुभूति। अवशेष के कारण
उस कृत्य का, मेरे अंतिम जीवन में,
मुझे सुंदरिका द्वारा लगाए गए झूठे आरोपों का सामना करना पड़ा।

यौन दुराचार के लिए एक तपस्वी पर झूठा आरोप लगाने के पिछले कर्म पर, अब मठ में सुंदरिका का मृत शरीर मिलने के घोटाले का सामना करना पड़ रहा है

82.13. चौथे प्रश्न में, 'अभक्खानाम्' शब्द का अर्थ है: बढ़ती हुई तीव्रता से निंदा और अपशब्द बोलना। कहा जाता है कि बहुत समय पहले, एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे बोधिसत्व, जो अत्यंत विद्वान थे और अनेक पुरुषों द्वारा व्यक्तिगत रूप से सम्मानित (सक्कतो) थे, ने संसार त्याग दिया, तपस्वी बन गए और हिमालय में निवास करने लगे, जहाँ वे वन की जड़ों और फलों से अपना पोषण करते थे और अनेक युवकों को मंत्रों का उपदेश देते थे। पाँच प्रकार के उच्च ज्ञान (अभिज्ञा) और आठ प्रकार की ध्यान संबंधी उपलब्धियाँ (समापत्ति) प्राप्त कर चुके एक तपस्वी उनके समक्ष आए। जैसे ही उन्होंने उस तपस्वी को देखा, वे ईर्ष्यालु हो गए और उस निर्दोष तपस्वी पर यह आरोप लगाया: "यह तपस्वी पाखंडी है, जो इंद्रिय सुखों में लिप्त रहता है।" उन्होंने अपने शिष्यों से भी कहा: "यह तपस्वी दुराचार का उत्पादक है।" उन्होंने भी उसी प्रकार से निंदा और अपशब्द बोले। उस कर्म के फलस्वरूप, उन्होंने एक हजार वर्षों तक निरयण में कष्ट भोगा, और अपने अंतिम जन्म में बुद्ध बने, जिन्होंने आकाश में पूर्णिमा के समान सर्वोच्च यश और ख्याति प्राप्त की और प्रसिद्ध हुए। विधर्मी इतने कम समय में भी संतुष्ट नहीं हुए, और उन्होंने सुंदरी नामक स्त्री के साथ एक और कलंक लगाया। उन्होंने कुछ शराबी बुलाए, रिश्वत दी और उन्हें आदेश दिया: "तुम सब सुंदरी की हत्या करो और उसके शव को जेतवन द्वार के पास मालाओं के ढेर से ढक दो।" उन्होंने वैसा ही किया। इसके बाद, विधर्मियों ने राजा को सूचित किया कि सुंदरी कहीं दिखाई नहीं दे रही है और लापता है। राजा ने आदेश दिया: "तुम सब उसकी खोज करो?" उन्होंने सुंदरी के शव को उस स्थान से निकाला जहाँ उन्होंने उसे रखा था, उसे एक पलंग पर रखा, राजा को दिखाया, और पूरे शहर में घूम-घूम कर बुद्ध और भिक्षुओं के समूह के बारे में अपमानजनक शब्द चिल्लाते हुए कहा: "हाय! "देखो, गौतम भिक्षुओं के शिष्यों ने क्या किया है।" उन्होंने सुंदरी के शव को कच्चे मांस के कब्रिस्तान में एक चबूतरे पर रख दिया। राजा ने आदेश दिया: "सुंदरी के हत्यारों की तलाश करो।" तब, वे बदमाश शराब पीते हुए आपस में झगड़ने लगे: "तुमने सुंदरी को मारा है। तुम ही हत्यारे हो।" राज अधिकारी ने उन बदमाशों को गिरफ्तार कर राजा के सामने पेश किया। राजा ने पूछा: "तुम लोगों! कैसे? क्या सुंदरी की हत्या तुमने की है?" उन्होंने उत्तर दिया: "जी महाराज।" यह पूछे जाने पर कि उन्हें किसने मारने का आदेश दिया था, उन्होंने उत्तर दिया कि उन्हें विधर्मियों ने निर्देश दिया था। राजा ने विधर्मियों को अपने समक्ष बुलवाया, उन्हें बंधवाया और आदेश दिया: "जाओ, तुम लोगों! और यह शोर मचाओ कि 'सुंदरी की हत्या हमने खुद बुद्ध को बदनाम करने के लिए करवाई है।'" परमेश्वर और उनके शिष्य दोनों ही निर्दोष हैं। उन्होंने वैसा ही किया। पूरे शहर के निवासी संदेह से मुक्त हो गए।राजा ने विधर्मियों और दुष्ट शराबी लोगों को मृत्युदंड देकर उनके शवों को फेंकवा दिया। इसके बाद, परमेश्वर की महिमा और आदर और भी अधिक बढ़ गया। इसलिए, यह कहा गया है:-

मैं एक विद्वान ब्राह्मण बन गया, सम्मानित
मैंने व्यक्तिगत रूप से सभी को मंत्र सिखाए।
विशाल जंगल में पाँच सौ युवकों के लिए।
एक भयानक तपस्वी, जो उच्च जादुई शक्ति से परिपूर्ण था।
उनके पास पांच प्रकार के अलौकिक ज्ञान (अभिज्ञा) थे।
वहाँ आया। उसे आते देख मैंने भी निंदा की।
उस निर्दोष तपस्वी से। उसके बाद, मैंने बात की।
मेरे शिष्य: 'यह तपस्वी कामुक सुखों में लिप्त है'
सुख। जब मैंने यह भी कहा, तो युवाओं ने
उन्होंने मानहानि करने में मेरा सहर्ष समर्थन किया।
इसके बाद, मेरे सभी युवा शिष्य, जैसे-जैसे वे
वे कई लोगों के बीच भीख मांगने के लिए चक्कर लगाने लगे।
परिवार ने जनता के विशाल जनसमूह से कहा: 'यह
तपस्वी वह है जो इंद्रिय सुखों में लिप्त रहता है!
उस कृत्य के फलस्वरूप, ये सभी पाँच सौ
विधर्मी भिक्षुओं ने मुझ पर कलंक का पहाड़ खड़ा कर दिया।
सुंदरिका से संबंध

अपने भाई को पत्थर से मारने के पिछले कर्मों के कारण, अब चचेरे भाई द्वारा फेंके गए पत्थर से घायल हो रहा है

82.14 पाँचवें प्रश्न में, 'सिलावेदो' (पत्थर से भेदा हुआ) अभिव्यक्ति का अर्थ इस प्रकार लगाया जाना चाहिए: घायल मन ने पत्थर फेंका। कहा जाता है कि बहुत समय पहले, बोधिसत्व और उनके छोटे भाई एक ही पिता के पुत्र थे। अपने पिता की मृत्यु के बाद, वे दासों के कारण आपस में झगड़ पड़े और एक-दूसरे के शत्रु बन गए। स्वयं बलवान होने के कारण, बोधिसत्व ने अपने छोटे भाई को पराजित किया और उस पर पत्थर फेंका। उस कर्म के फलस्वरूप, उसे कई हजार वर्षों तक कई नरकों में कष्ट भोगना पड़ा और इस अंतिम जन्म में वह बुद्ध बन गया। युवा राजकुमार राहुल के चाचा देवदत्त, जो पहले काँच की गेंदों (सेरी) के व्यापारी थे, बोधिसत्व के साथ भी व्यापार करते थे। वे एक बंदरगाह गाँव पहुँचे और दोनों व्यापारी एक साथ गाँव में यह कहते हुए प्रवेश कर गए: "तुम एक गली से जाओ, मैं दूसरी गली से जाता हूँ।" दोनों में से; देवदत्त जिस गली में दाखिल हुए, वहाँ एक घर में केवल दो लोग रहते थे - एक बैंकर की बूढ़ी पत्नी और उसकी पोती। बर्तनों के बीच उनका एक बड़ा सोने का कटोरा रखा था, जो अशुद्धियों से सना हुआ था। बूढ़ी औरत को पता नहीं था कि यह सोने का कटोरा है, इसलिए उसने कहा, "यह कटोरा ले लो और हमें कुछ आभूषण (पिलन्धना) दे दो।" देवदत्त ने उस कटोरे को उठाया, सुई से उस पर एक रेखा खींची, तब उसे पता चला कि यह सोने का कटोरा है, और यह सोचकर चला गया, "मैं थोड़ा सा देकर कटोरा ले लूँगा।" बाद में, बोधिसत्व को दरवाजे के पास आते देख, पोती ने कहा, "दादी! कृपया मुझे आभूषणों से भरी एक टोकरी (पिलन्धना) दे दीजिए।" बूढ़ी औरत ने उसे बुलवाया, उसे बिठाया, वह कटोरा उसे दिया और कहा, "यह ले लो और मेरी पोती को आभूषणों से भरी एक टोकरी दे दो।" बोधिसत्व ने उसे पकड़ लिया, पहचान लिया कि यह सोने का कटोरा है, और समझ गए कि दूसरे व्यापारी ने उन्हें धोखा दिया है। उन्होंने दादी को आठ सोने के सिक्के (कहापण) और बचा हुआ सामान दे दिया, युवती के हाथों को गहनों से भरी टोकरी से सजाया और चले गए। वह व्यापारी फिर लौटा और पूछताछ की। दादी ने कहा, "मेरे बेटे! तुमने मेरा कटोरा स्वीकार नहीं किया; मेरे बेटे जैसे व्यापारी ने यह और वह भेंट किया, कटोरा स्वीकार किया और चला गया।" दादी की बात सुनते ही वह दौड़ा और बोधिसत्व का पीछा किया मानो उसका दिल टूट गया हो। बोधिसत्व नाव पर सवार होकर चले गए। वह व्यापारी बोधिसत्व को बार-बार रुकने और न भागने के लिए चिल्लाता रहा और बाद में प्रार्थना की, "हर जन्म में, मैं उसे नष्ट कर सकूँ।"

82.15. उस प्रार्थना के फलस्वरूप, उन्होंने कई लाख जन्मों तक एक-दूसरे को सताया और इस जन्म में उनका जन्म शाक्य परिवार में हुआ और अंततः वे सर्वज्ञता प्राप्त करके भगवान बुद्ध के रूप में विख्यात हुए। जब वे राजगृह में निवास कर रहे थे, तब देवदत्त, अनिरुद्ध और अन्य लोग भगवान बुद्ध के समक्ष गए, भिक्षु बने, ध्यान प्राप्त किया, प्रसिद्ध हुए और उनसे यह वरदान मांगा: "हे पूज्यवर! सभी भिक्षुओं को भिक्षा-भोजन संग्रह आदि तेरह कठोर (धूतंग) विधियों का पालन करने का दायित्व लेना चाहिए; समस्त पुरोहितों की जिम्मेदारी मेरी हो।" भगवान बुद्ध ने यह स्वीकार नहीं किया। देवदत्त ने शत्रुता पाल रखी थी, उसका ध्यान पूरी तरह से समाप्त हो गया था और वह प्रतापी को जान से मारने की इच्छा से वेभारा पर्वत की तलहटी में खड़े प्रतापी के ऊपर खड़ा हो गया और उस पर एक शिलाखंड फेंका। प्रतापी की शक्ति के कारण एक अन्य शिलाखंड ने उस गिरते हुए शिलाखंड को रोक दिया। हालाँकि, उनके टकराने से एक शिलाखंड उछला और प्रतापी के कदम पर जा लगा। इसलिए यह कहा गया है:-

"मैंने अपने अलग भाई की हत्या कर दी।"
माँ, पहले पैसों की कमी के कारण मैंने फेंक दिया था
उसे पहाड़ों की घाटी में ले जाकर उसकी पिटाई की।
पत्थर से भी। इसके परिणामस्वरूप
उस घटना पर देवदत्त ने मुझ पर पत्थर फेंका।
पत्थर के टुकड़े मेरे पैर के अंगूठे पर चुभ गए।
पैर।"

मौन बुद्ध पर पत्थर फेंकने के पिछले कर्म के कारण, अब पत्थर के टुकड़े से चोट लग रही है

82.16. छठे प्रश्न में: 'सकलिकावेदो' (तिरछी लकड़ी से छेदा हुआ) अभिव्यक्ति का अर्थ है किरछी लकड़ी से चोट लगी है। बहुत समय पहले, ऐसा कहा जाता है कि बोधिसत्व का एक परिवार में पुनर्जन्म हुआ था। अपने बचपन में, जब वे एक राजमार्ग पर खेल रहे थे, उन्होंने एक मौन बुद्ध को भिक्षा मांगते हुए देखा और मन ही मन कहा, "यह मुंडा हुआ भिक्षु कहाँ जाता है?", तो उन्होंने एक पत्थर की किरछी पकड़ी और उसे अपने पैर के तलवे पर फेंक दिया। खून निकला और उनके पैर के पिछले हिस्से की त्वचा कट गई। उस बुरे कर्म के कारण, उन्होंने कई हजार वर्षों तक नरक (निरय) में घोर कष्ट सहा और यद्यपि वे बुद्ध बन गए थे, फिर भी उन्हें अपने बुरे कर्म के अवशेष के रूप में पैर के पिछले हिस्से पर पत्थर की किरछी लगने से रक्तपात का कष्ट सहना पड़ा। इसलिए, यह कहा गया है:-

"पहले मैं एक छोटा लड़का था, जो खेलता था।"
राजमार्ग पर चलते हुए, मैंने एक शांत बुद्ध की प्रतिमा देखी।
सड़क पर जाकर उसने उस पर एक लकड़ी का टुकड़ा फेंक दिया।
उस बुरे कर्म के फलस्वरूप, देवदत्त ने
मुझे जान से मारने की कोशिश
मुझे इस तरह मौत के घाट उतारने का उद्देश्य क्या है?
मेरा अंतिम अस्तित्व।

मौन बुद्ध को हाथी से मारने के पिछले कर्म पर, अब नालगिरी हाथी द्वारा हमला किया जा रहा है

82.17. सातवें प्रश्न में, 'नालागिरि' अभिव्यक्ति का अर्थ इस प्रकार है: धन के रक्षक, धनपालक हाथी को बुद्ध की हत्या के उद्देश्य से भेजा गया था। कहा जाता है कि बहुत समय पहले, बोधिसत्व का जन्म एक हाथीपालक के रूप में हुआ था। जब वे हाथी पर सवार होकर घूम रहे थे, तो उन्होंने एक ऊँची सड़क पर एक शांत बुद्ध को देखा और आक्रामक स्वभाव के कारण, मानसिक रूप से अवरुद्ध होकर, अपने हाथी से उन्हें स्पर्श किया और कहा, "यह गंजा सिर कहाँ से आया है?" उस बुरे कर्म के कारण, उन्होंने कई हज़ार वर्षों तक नरक में कष्ट भोगा और अपने अंतिम जन्म में बुद्ध बने। देवदत्त ने राजा अजातसत्तु से मित्रता की और उन्हें इस प्रकार निर्देश दिया: "हे महान राजा! आप अपने पिता को मारकर राजा बनें; मैं बुद्ध को मारकर बुद्ध बनूँगा।" एक दिन, राजा की अनुमति से, देवदत्त हाथी के बाड़े में गए और हाथी पालकों को आदेश दिया: "कल हाथी नालागिरि को सोलह घड़े मदिरा पिलाकर बुद्ध के भिक्षा मांगने के समय उसे बाहर भेज देना।" पूरे शहर में यह शोर मच गया: "हम हाथी और बुद्ध-हाथी का युद्ध देखेंगे।" सभी लोग सुबह-सुबह राजमार्ग के दोनों ओर पलंग बिछाकर एकत्र हो गए। बुद्ध ने भी स्नान करके भिक्षुओं के समूह से घिरे हुए राजगृह में भिक्षा मांगने के लिए प्रवेश किया। उसी क्षण उन्होंने नालागिरि को बताए गए तरीके से छोड़ दिया। हाथी सड़कों, चौराहों आदि को तोड़ता हुआ आगे बढ़ा। उसी समय एक स्त्री अपने बच्चे को साथ लेकर गली-गली घूम रही थी। उस स्त्री को देखकर हाथी ने उसका पीछा किया। भगवान बुद्ध ने कहा, "हे नालदगिरि! तुम्हें मारने के लिए नहीं भेजा गया है; इधर आओ।" यह वाणी सुनकर वह भगवान बुद्ध की ओर दौड़ पड़ा। बुद्ध ने केवल नालदगिरि पर ही ऐसा प्रेम बरसाया जो असीम ब्रह्मांड के असंख्य प्राणियों में व्याप्त होने योग्य था (चक्कवा)। भगवान बुद्ध के प्रेम से परिपूर्ण होकर वह निर्धन हो गया और उनके चरणों में झुक गया। बुद्ध ने अपना हाथ उसके सिर पर रखा। उस समय, देवता और ब्रह्मा आश्चर्यचकित और विस्मयचकित हो गए और उन्होंने रंग-बिरंगे फूलों आदि से भगवान बुद्ध का सम्मान किया। पूरे नगर में घुटनों तक धन के ढेर लग गए। राजा ने घंटा बजाकर पूरे शहर में घोषणा की: "पश्चिम द्वार पर जो भी धन है, वह नागरिकों के लिए है; पूर्व द्वार पर जो भी धन है, वह राजकोष में जमा कर दिया जाए।" सभी नागरिकों ने ऐसा ही किया। तब नालगिरि धनपाल, धन के रक्षक के रूप में प्रसिद्ध हुए। वे वेलुवन मठ चले गए। इसलिए, यह कहा गया है:-

मैं पहले हाथी की सवारी करता था।
मेरे हाथी से छुआ जो सबसे पूर्व-
उत्कृष्ट मौन बुद्ध जो भिक्षा मांग रहे थे
भिक्षा-भोजन के लिए चक्कर लगाना। परिणामस्वरूप
दुष्ट कर्म, आवारा क्रूर हाथी नाला-
गिरी उस शानदार शहर में मेरी ओर दौड़ी।

गिरिब्बाज का।

तलवार से लोगों को मारने के पिछले कर्मों पर, अब पैर में चोट और उसकी सर्जरी

आठवें प्रश्न में अनुच्छेद 82.18: 'सत्थच्छेद' शब्द का अर्थ है किसी घाव को शल्य चिकित्सा छुरी से चीरना; कुष्ठ रोग (कुथाराय) के घावों को छेनी से काटना। कहा जाता है कि बहुत समय पहले, बोधिसत एक सीमावर्ती क्षेत्र में राजा थे। सीमावर्ती क्षेत्र में रहने और दुष्ट लोगों के साथ संगति के कारण वे कठोर और क्रूर हो गए थे। एक दिन तलवार से लैस होकर वे अपने शहर में पैदल ही घूमने लगे और निर्दोष लोगों को अपनी तलवार से चीरते चले गए। उस बुरे कर्म के फलस्वरूप वे कई हजार वर्षों तक नरक में रहे, पशु रूप में अनेक जन्म लिए, और इसी प्रकार अन्य कष्ट भोगे। लेकिन परिपक्वता की ओर बढ़ते हुए, यद्यपि वे अपने अंतिम जन्म में बुद्ध बन गए, जैसा कि नीचे वर्णित है, देवदत्त द्वारा फेंके गए पत्थर के टुकड़े से उन्हें एक पीड़ादायक घाव हो गया। जीवक ने प्रेम और करुणा के भाव से उस पीड़ादायक घाव का शल्य चिकित्सा किया। शत्रु हृदय वाले देवदत्त ने बुद्ध का रक्त बहाकर एक जघन्य पाप किया, जिसका तत्काल और निरंतर परिणाम भुगतना पड़ा। पुण्य केवल जीवक को मिला, जिसने दयालु हृदय से बुद्ध के घाव को चीर दिया। इसलिए, यह कहा गया है:-

मैं एक राजा था, एक राहगीर। मैंने हत्या की।
मेरे चाकू से लोगों को। परिणामस्वरूप
मैंने जो बुरा कर्म किया, उसके लिए मुझे नरक में बुरी तरह पकाया गया।
जब उस बुरे कर्म का अवशेष अब मेरे सामने आया
मेरे पैर की त्वचा पूरी तरह से ठीक हो गई थी; वास्तव में
वह (बुरा) कर्म नष्ट नहीं होता।

1. कुथारया शब्द पीटीएस शब्दकोश में नहीं है। मैं इसे स्वीकार करता हूँ।
इसे कुत्थारुया के लिए एक संपादकीय त्रुटि माना जाता है।
कुष्ठ और अरुया में से; पहला कुष्ठ रोगी को दर्शाता है और
बाद वाला शब्द 'घाव का' दर्शाता है। इसलिए मेरा अनुवाद यह है।
अंग्रेजी में इसका अर्थ है कुष्ठ रोग का घाव।

मछलियों को मारने का आनंद लेने के पिछले कर्मों के कारण, अब लगातार सिरदर्द हो रहा है

82.19. नौवें प्रश्न में: 'सीसादुक्खा' अभिव्यक्ति का अर्थ सिर का रोग, सिर का कष्ट है। कहा जाता है कि बहुत समय पहले, बोधसात का जन्म मछुआरों के गाँव में हुआ था और वे वहीं मछुआरे बन गए थे। एक दिन, वे कुछ मछुआरों के साथ उस स्थान पर गए जहाँ मछलियाँ मारी जाती थीं और वहाँ मछलियों को मरते देखकर उन्हें मानसिक सुख प्राप्त हुआ। उनके साथ गए अन्य लोगों को भी ऐसा ही सुख प्राप्त हुआ। उस अपाय के कारण, उन्हें नरक के चारों रूपों में कष्ट भोगना पड़ा, इस अंतिम जन्म में उनका जन्म शाकीय परिवार में उन्हीं पुरुषों के साथ हुआ और यद्यपि अंततः उन्होंने बुद्धत्व प्राप्त किया, फिर भी उन्हें स्वयं सिर के कष्ट का सामना करना पड़ा। वे सभी शाकीय राजा भी विददूभा के युद्ध में धम्मपद की टीका में वर्णित तरीके से नष्ट हो गए। इसलिए, यह कहा गया है:

मैं गांव में एक मछुआरे का बच्चा बन गया।
मछुआरों का। मछलियों को मरते हुए देखकर, मैं
इससे मुझे आनंद मिला। परिणाम के कारण
उस बुरे कर्म के कारण सिर में पीड़ा उत्पन्न हुई
मेरे लिए। जब विततुभा ने नरसंहार किया, तो सभी
साकियान भी मारे गए।

पिछले बुद्ध को अच्छा भोजन देने से इनकार करने के पिछले कर्म पर, अब घोड़ों का चारा खाना पड़ रहा है

82.20. दसवें प्रश्न में यवखादना शब्द का अर्थ वेरांजय में अनाज-चावल खाना है। कहा जाता है कि बहुत समय पहले बोधिसत्व का एक परिवार में पुनर्जन्म हुआ था। अपने जन्म और अपनी अज्ञानता के कारण, जब उन्होंने परम पूज्य फुस्सा के शिष्यों को उत्तम चावल के भोजन आदि जैसे मीठे भोजन और पेय पदार्थों का आनंद लेते देखा, तो उन्होंने इस प्रकार कहा: "देखो! हे गंजे भिक्षुओं! तुम्हें अनाज खाना चाहिए; उत्तम चावल (साली) के नरम भोजन का आनंद मत लो।" उस बुरे कर्म के फलस्वरूप, उन्होंने हजारों वर्षों तक चारों प्रकार के नरकों में कष्ट भोगा, अंततः अपने अंतिम जन्म में बुद्धत्व प्राप्त किया और छोटे-बड़े गांवों तथा राजसी नगरों में विचरण करते हुए संसार के उत्थान का कार्य किया। एक बार वे वेरांजा ब्राह्मण के गांव के पास स्थित, शाखाओं, टहनियों और पत्तों से लदे पुचिमांडा वृक्ष की तलहटी में पहुंचे। ब्राह्मण वेरांजा बुद्ध के पास पहुंचे और उन्हें वश में करने का अनेक प्रयास किए, परन्तु असफल होकर वे सोतापन्न अवस्था में आसीन हुए और उनसे निवेदन किया, “हे पूज्यवर! यह उचित है कि बुद्ध वर्षा ऋतु में यहीं विश्राम करें।” बुद्ध मौन रहकर सहमत हो गए। फिर अगले दिन से ही दुष्ट मारा ने वेरांजा ब्राह्मण गांव के निवासियों पर अपने प्रभाव का प्रलोभन दिया। मारा के प्रलोभन के कारण, भिक्षा मांगने के लिए ग्राम में प्रवेश करने वाले भगवान को किसी ने एक चम्मच तक भिक्षा नहीं दी। भगवान को भिक्षुओं के समूह से घिरे खाली पात्र के साथ ही लौटना पड़ा। जब वे इस प्रकार लौटे, तो वहाँ ठहरे घोड़े व्यापारियों ने भी उस दिन दान दिया और फिर आगे से भगवान और उनके पाँच सौ अनुयायियों को आमंत्रित किया। उन्होंने पाँच सौ घोड़ों के भोजन में से अनाज को कूटकर उन्हीं पात्रों में डाला, जैसा कि उन्होंने सुजाता के दूध-चावल पकाने के दिन किया था। भगवान ने भोजन किया। इस प्रकार उन्हें तीन महीने तक अनाज खाना पड़ा। तीन महीने बीत जाने के बाद, जब मारा का प्रलोभन समाप्त हो गया, तो आत्म-स्वीकृति और परालोचना के निमंत्रण के दिन (पवाराणा), ब्राह्मण वेरांजा को घटना याद आई, उन्हें गहरा पश्चाताप हुआ, उन्होंने बुद्ध के नेतृत्व वाले भिक्षु-पुजारियों को बड़ा दान दिया, उन्हें प्रणाम किया और क्षमा मांगी। इसलिए, यह इस प्रकार कहा गया है:

बुद्ध फुस्सा के युग में, मैं
उन्होंने अपने शिष्यों को फटकारते हुए कहा: चबाओ और
मक्का खाएं; नरम साली न खाएं।
उस बुरे काम के परिणामस्वरूप, मुझे यह करना पड़ा
तीन महीने तक मक्का चबाकर खाएं;
उस समय मैं वेरांजा में रुका था, मुझे आमंत्रित किया गया था।

पहलवान की पीठ तोड़ने के पिछले कर्म के कारण, अब लगातार पीठ दर्द हो रहा है

82.21. ग्यारहवें प्रश्न में पिष्टिदुक्खम (पीठ दर्द) अभिव्यक्ति का अर्थ पीठ का दर्द है। कहा जाता है कि बहुत समय पहले, बोधिसत्व का पुनर्जन्म एक धनी गृहस्थ परिवार में हुआ था। वे शारीरिक रूप से बलवान थे, परन्तु स्वभाव से कद में कुछ छोटे थे। उस समय, जंबू द्वीप के गांवों, जिलों और राजमहलों में कुश्ती प्रतियोगिताएं आयोजित करने वाला एक पेशेवर पहलवान लोगों को हराकर विजय प्राप्त करता हुआ अंततः उस नगर में पहुंचा जहां बोधिसत्व रहते थे। वहां भी पहलवान ने अपने प्रतिद्वंद्वी पहलवानों को गिरा दिया और जाने लगा। तभी बोधिसत्व प्रतियोगिता स्थल पर पहुंचे, अपनी बाहें जोड़कर बोले: "इसने मेरे नगर में विजय प्राप्त की है और जाने वाला है। आओ, मुझसे कुश्ती लड़कर ही जाओ।" उस पेशेवर पहलवान ने हंसते हुए कहा, "मैंने बड़े-बड़े आदमियों को गिराया है। यह बौना, जो स्वभाव से ही छोटा है, मेरे एक हाथ के भी लायक नहीं है।" उसने ताली बजाई और दहाड़ते हुए आगे बढ़ा। दोनों ने एक-दूसरे का हाथ छुआ। बोधिसत्व ने उसे उठाया, आकाश में गोल-गोल घुमाया और नीचे गिरा दिया, जिससे उसकी धड़ की हड्डियाँ टूट गईं। शहर के सभी निवासियों ने जयजयकार की, तालियाँ बजाईं और बोधिसत्व को वस्त्र, आभूषण आदि भेंट किए। बोधिसत्व ने उस पेशेवर पहलवान को सीधा लेटने दिया, उसकी धड़ की हड्डियों को सीधा किया और उसे यह कहते हुए विदा किया: "चले जाओ; अब से ऐसे काम मत करना।" उस कर्म के फलस्वरूप, प्रत्येक जन्म में उन्हें शरीर और सिर में दर्द आदि जैसी पीड़ा सहनी पड़ी, और यद्यपि वे अपने अंतिम जन्म में बुद्ध बन गए, फिर भी उन्हें पीठ में चोट आदि जैसी पीड़ा सहनी पड़ी। इसलिए, कभी-कभी जब उनकी पीठ में दर्द होता, तो वे सारिपुत्त और मोग्गलाना से कहते, “अब से तुम दोनों धर्म का प्रचार करो,” और स्वयं सुगत का वस्त्र बिछाकर लेट जाते। बुरे कर्मों का फल इतना भयानक होता है कि बुद्ध भी उससे बच नहीं सकते। वास्तव में, यह कहा जा चुका है:

"जब कुश्ती का मुकाबला होता था, तो मैं परेशान करता था
युवा पहलवान। इसके परिणामस्वरूप
उस क्रिया के कारण मुझे पीठ में दर्द हो गया।

चिकित्सक के रूप में गलत इलाज के पिछले कर्मों के कारण, अब निर्वाण से पहले पेचिश हो रही है

82.22. बारहवें प्रश्न में अतिसार शब्द का अर्थ रक्तपात के साथ दस्त होना है। कहा जाता है कि बहुत समय पहले, बोधिसत्व एक धनी गृहस्थ परिवार में पुनर्जन्म लेकर चिकित्सक के रूप में अपना जीवन यापन करते थे। एक धनाढ्य के पुत्र को रोग होने पर, उन्होंने उसका इलाज करने के लिए एक औषधि बनाई और उसका उपचार किया, लेकिन रोगी द्वारा निर्धारित शुल्क का भुगतान न करने के कारण, चिकित्सक ने उसे दूसरी प्रकार की औषधि दी, जिससे उसे उल्टी और दस्त हो गए। धनाढ्य ने उन्हें काफी भुगतान किया। इस कर्म के फलस्वरूप, उन्हें हर जन्म में पेचिश हो जाती थी। यहां तक कि अपने अंतिम अस्तित्व में भी, जब वे पूर्णतः निर्वाण में लीन हो रहे थे, उसी क्षण जब उन्होंने एक लोहार के पुत्र चुंडा द्वारा पकाए गए कोमल सूअर का मांस (या मशरूम) और समस्त ब्रह्मांड के देवताओं द्वारा प्रदत्त दिव्य सार (चक्कवाला) का सेवन किया, तो उन्हें रक्तस्रावी पेचिश हो गई। उनकी एक लाख करोड़ हाथियों के बराबर शक्ति भी समाप्त हो गई। विशाखा की पूर्णिमा के दिन पूर्णतः निर्वाण में लीन होने के लिए कुशीनार जाते हुए, प्रतापी को अनेक स्थानों पर बैठना पड़ा, प्यास के कारण जल पीना पड़ा, अत्यंत कष्ट सहते हुए कुशीनार पहुंचे और भोर होते ही पूर्णतः निर्वाण में लीन हो गए। यहां तक कि तीनों लोकों के स्वामी जैसे व्यक्ति को भी बुरे कर्मों का फल बख्शता नहीं है। इसलिए यह कहा गया है:-

मैं एक चिकित्सक था और मैंने बैंकर के बेटे को बनाया
शुद्धिकरण। उस कृत्य के परिणामों के कारण,
मुझे पेचिश हो गई। इस प्रकार,
विजेता, जिसने शक्ति प्राप्त कर ली थी
प्रधान को प्रतिपादित सभी प्रकार के उच्च ज्ञान
अनोटत्ता में भिक्षुओं के पुरोहितों का
झील।"

82.23. इस प्रकार यह कहा गया है कि प्रश्नों की संक्षिप्त सामग्री लिखने के रूप में अवगुण का कर्म, जिसका वादा किया गया था, समाप्त हो गया है। अभिव्यक्ति इत्तम सुदम की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए: वांछनीय रूप से इस साधन द्वारा, नीचे बताए गए तरीके से। सुदम एक क्रियाविशेषण (निपात) है, यह एक शब्द को भरने के लिए आया है। भगवान को उस महान सत्ता के रूप में समझाया जाना चाहिए, जो शक्तिशाली शक्ति से संपन्न है, और जिसने पूर्णता को पूर्ण किया है

"सौभाग्यशाली व्यक्ति से जुड़ा हुआ, और
उदात्तता से भरपूर; सौभाग्य से भरे विवरणों से परिपूर्ण
इसके अलावा; आदर भाव रखते हुए, जो चला गया था
अस्तित्व के संबंध में त्याग दिया; फलस्वरूप
वह महिमावान हैं, परम श्रेष्ठता के स्वामी हैं।

हे महिमावान, जो ऐसे गुणों से परिपूर्ण हैं, देवताओं के देव, सक्कों के सक्क, ब्रह्माओं के ब्रह्मा, बुद्धों के बुद्ध, अत्यंत दयालु, अपने स्वयं के (अत्तनो) बुद्धचर्यम (बुद्ध व्यवहार) को उचित रूप से विकसित (संभव्यमांस) करने के लिए, बुद्ध के कर्मों को प्रकट करने के लिए, बुद्धपादम्यम नाम, जिसे बुद्ध की जीवनी के रूप में जाना जाता है, आभासित्त, उन्होंने धम्म परियायम का वर्णन और प्रचार किया, जो धम्म का सूत्र उपदेश है, अर्थात् बुद्ध के कर्मों को प्रकट करने के लिए।

इस प्रकार विषय पर उचित टिप्पणी समाप्त हुई।

बुद्ध की जीवनी, बुद्ध अपदान
टीका (अष्टकथा) का

जीवनी (अपदान), प्रकाशमान के लिए
पवित्र लोगों की शान।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान-2.1 पचेकबुद्धस
स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

अपदाना 2: मौन बुद्ध (पच्चेकबुद्ध)-भाग 2.1

2- जीवनी पर टिप्पणी,
अपदान, मौन बुद्धों का
अत: जब निरंतर रूप से एक साथ जीवनी (अपदान) का गायन किया जा रहा था और पूछा गया: "मित्र आनंद! मौन बुद्धों (पच्चेक बुद्ध) की जीवनी (अपदान) कहाँ प्रचारित की गई थी?" तो पूज्य आनंद ने कहा:-
आनंद बुद्ध से पच्चेकबुद्धों के बारे में और वे कैसे उत्पन्न होते हैं, पूछते हैं
83. 'सुनाथ' अभिव्यक्ति को अस्तित्व में आने और जन्म लेने के माध्यम से प्रकट करने वाले शब्द के रूप में समझा जाना चाहिए, कथन इस प्रकार है: "तथागतं जेतवने वसंतं" इत्यादि। यहाँ 'वसंतं' का अर्थ है: चार प्रकार की मुद्राओं में निवास करना और देवताओं, ब्रह्माओं और अरहतों की तरह जेत राजकुमार के नाम से जाने जाने वाले मठ में रहना; जिस प्रकार विपस्सी से प्रारंभ होने वाले पूर्वोक्त बुद्धों ने कुल तीस सिद्धियों को पूर्ण करने के बाद जन्म लिया, उसी प्रकार हमारे प्रतापी बुद्ध ने जन्म लिया है और इसलिए वे तथागत हैं। जेतवन में निवास करने वाले तथागत; इस प्रकार संबंध स्थापित होता है। वेदेहमुनि को इस प्रकार समझा जाना चाहिए: वे वेदेही हैं, विदेह की निवासी हैं, क्योंकि उनका जन्म विदेह राज्य में हुआ था; क्योंकि वे वेदेही के पुत्र हैं, इसलिए वे वेदेहीपुत्त हैं; हालाँकि इसे इस प्रकार कहा जाना चाहिए 'वेदहीपुत्तमुनि' इसलिए क्योंकि वे न केवल विदेह देवी के पुत्र हैं बल्कि एक ऋषि (मुनि) भी हैं; व्याकरण के नियम के अनुसार, "वण्णगामो" से शुरू होकर, किसी अक्षर (या वर्णमाला) के आगमन पर, न केवल स्वर 'इ' का लोप होता है बल्कि उसके अर्थ, अर्थात् 'पुत्त', पुत्र शब्द का भी लोप हो जाता है; और कथन इस प्रकार है: 'वेदहीमुनि, विदेह के ऋषि। आदरणीय आनंद, सर्वोच्च (एतदग्ग) स्थान पर विराजमान, इस प्रकार कहते हैं: "हे भिक्षुओं! मेरे सभी शिष्यों में, जो सती, दृढ़ता, गति, बहुसुत और कर्तव्यनिष्ठा (उपाष्टक) रखते हैं, उनमें आनंद प्रमुख हैं;" नटंगो को शरीर के किसी अंग के मुड़े होने के रूप में समझा जाना चाहिए और हाथ जोड़कर, अपुच्ची ने पूछा: "आदरणीय महोदय! हे पच्चेकबुद्धा नाम, यानी मौन बुद्ध, किस प्रकार के संन्यासी के समान हैं? यही संबंध है। हे मौन बुद्ध, केहिहेतुभि, किन कारणों से, किन परिस्थितियों में भवन्ति (होते हैं)? हे वीर! इस प्रकार प्रतापी को संबोधित किया गया।
बुद्ध का उत्तर:
84-85. इसके बाद, उत्तर का संकेत देने के लिए, उन्होंने कहा: "तदाहम सब्भ ... पूर्वज बुद्ध; कटाधिकारा (सेवा करने के बाद) अच्छे कर्मों का संचय करने के बाद; जिनाससानेसु अलद्ध मोक्खा (विजयियों के शासन में मुक्ति प्राप्त किए बिना) निर्वाण प्राप्त नहीं कर सके;

ते धीरा (वे) सभी मौन बुद्ध; इधा (यहाँ) इस लोक में; समवेगमुखेन (पश्चातापपूर्ण मुख के साथ) अकेले ही अथक प्रयास करने के बाद मौन बुद्ध बन गए; यही अर्थ है। सुतिक्खपञ्ञा को उचित रूप से तीक्ष्ण ज्ञान के रूप में समझा जाना चाहिए। विना पि बुद्धेहि का अर्थ है: यद्यपि बुद्धों की सलाह और उपदेशों से वंचित; परित्तकेनापि, यहाँ तक कि थोड़ी मात्रा में भी; आरम्मनेन पच्चेकबोधिम, ध्यान के साथ मौन बुद्धत्व, अनुपापुणन्ति (उन्होंने तदनुसार) ज्ञान (बोधि) में प्रवेश किया। बुद्धों के प्रकट होने के बीच, प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए, जैसे कि व्यक्तिगत रूप से ज्ञानोदय (बोधि) प्राप्त करता है।

86. सब्बमहि लोकमहि (सारे विश्व में), तीनों लोकों में; ममम थपेत्वा (मेरे सिवा) मुझे छोड़कर: नत्थि, कोई नहीं है, पच्चेक बुद्धेहि समोव, यहाँ तक कि मौन बुद्धों के समर्थ भी नहीं; तेसम महाउनीहम उन महान ऋषियों में, मौन बुद्धों में; इमामवण्णम, यह वर्णन, यह योग्यता; पदेशमत्तम (संक्षेप में) संक्षेपण की सीमा तक; अहम् साधु वक्खामि (मैं कहता हूँ) मैं तुमसे उचित रूप से बात करूँगा; यही अर्थ है।

87. बिना गुरुओं के, सयमेव बुद्धानम्, स्वयं ही मौन बुद्ध बनने वाले, महेसीम्, उन तपस्वियों में जो स्वयं ही बुद्धत्व प्राप्त कर चुके; मधु व खुद्दम्, मधु के छत्ते के समान; साधुनी वाक्यानि (अच्छे वाक्य) मधुर आनंदमय अभिव्यक्तियाँ; अनुत्तरम् भेषज्जम् पत्थयन्ता (अतुलनीय औषधि की आकांक्षा रखने वाला) औषधि के समान निर्वाण की इच्छा रखने वाला जो किसी श्रेष्ठ से रहित है; सब्बे (सभी) आप सभी; सुपसन्नचित्त, प्रसन्न मन वाला; सुनाथा (सुनो) इसे अपने मन में रखो; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

88-89. पचेकबुद्धानं समागतानम् (मूक बुद्धों में से, जो एक साथ आए हैं) वे मौन बुद्ध जो प्रकट हुए हैं और एक समूह बन गए हैं: अरीषा, उपरीषा, तगारसिखी, यासासि, सुदस्ना, पियादस्सी, गांधार, पिंडडोला, उपसभा, निथा, तथा, सुतवा, भावितत्त, सुंभ, सुभा, मेथुला, अश्शामा, सुमेधा, अनिघ, सुदाशा, हिन्गु, हिन्गा, दो जालिना, अश्शाका, कोशल, सुबाबु, उपनेमिसा, नेमिसा, संताचित्त, सक्का, तथा, विरजा, पंडिता, काला, उपकला, विजिता, जिता, अंग, पंगा, गुत्तिजिता, पासि, जही, उपाधि, दुक्खमूल, अपराजिता, सरभंगा, लोमहंस, उचांगमौआ, असिता, अनासव, मनोमाया, मनाचिदा, बंधुमा, तदाधिमुत्ता, विमला, केतुमा, कोटुंबरंगा, मातंगा, अरीसा, एकुटा, एकुटागामी, बयामाका, सुमंगला, डिब्बिला, इत्यादि। यानी सौ मूक बुद्धों की जीवनियां (अपादान), परम्परा, क्रम से, एक के बाद एक; ब्याकरणानि, जीवनियाँ, जिनमें आदिनवो यञ्च विरागवत्थुम, दोष और वैराग्य की कहानियाँ, निःलोभ के कर्म शामिल हैं; यथा, किसी भी तरह से, किसी भी परिस्थिति (या कारण) से, बोधिम अनुपापुणिमसु, तदनुसार बोधि प्राप्त की, मौन बुद्धत्व प्राप्त करके निर्वाण के चार सही मार्गों का ज्ञान व्यक्तिगत रूप से प्रकट किया। सारगवत्थुसु, आसक्ति से युक्त वस्तुओं में, भौतिक (वत्थु) इंद्रिय सुखों और पापी इंद्रिय सुखों (किलेसा) से युक्त इंद्रिय सुखों में, उन वस्तुओं में जो अत्यधिक लालसा उत्पन्न करने वाली होती हैं, विरागसंञ्ञी (अनासक्ति का भाव रखने वाला), रत्तम्हि लोकम्हि (आसक्ति के संसार में) लालच के प्राकृतिक संसार में, विरत्तचित्त (अनासक्ति का भाव रखने वाला) लालच रहित, हित्वा पापन्चे पापन्चे (पापन्चे) पापन्चे का त्याग करने वाला, पापन्चे का त्याग करने वाला, पापन्चे का त्याग करने वाला, पापन्चे का त्याग करने वाला, पापन्चे (किलेसा) का त्याग करने वाला, पापन्चे माना जाने वाला, जन्मों की वृद्धि (या बार-बार पुनर्जन्म) के कारक, जिसमें कामवासना (राग पापन्चे), क्रोध (दोसपपन्चे), सभी प्रकार के पापन्चे (सब्बकिलेसा पापन्चे) शामिल हैं; जिया फंदितानि (होने वाला) गलत विचारों के 62 विचलित मार्गों को पराजित करके; तथाव (इस प्रकार) ऐसा करके; बोधिम औनपापुणिंसु (तदनुसार बोधि प्राप्त की), उन्होंने मौन बुद्धों के ज्ञान को अपने दृष्टि में प्रकट किया; यही अर्थ है।

उनका स्वभाव अहिंसा (अर्थात करुणा) है

90-91. सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डम्, सभी जीवों के प्रति लाठी (या हथियार/हिंसा) रखकर , धमकी देने, चीरने और मारने के साजो-सामान को त्यागकर; तेसम (उनका) सभी जीवों के बीच; अविहेतयम बिना परेशान किए, बिना अत्याचार किए और बिना दुखी किए; मेत्तेना चित्तेना, प्रेममय मन से, प्रेम और दया से परिपूर्ण मन से इस प्रकार सोचते हुए: "सभी प्राणी सुखी हों; हितानुकम्पी (कल्याणकारी) कल्याण की भावना से युक्त सहानुभूति का स्वभाव। दूसरे शब्दों में, सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डम का अर्थ इस प्रकार लगाया जा सकता है: सब्बेसु (सभी में) यह शब्द पूर्णतः सभी को समाहित करता है, बिना किसी शेष के, क्योंकि यह समग्रता और सब कुछ पूर्णतः है; भूतेसु, भूतों में, भूतों को लघु (तसा) और वृहद (थावरा), क्षणिक और स्थायी कहा जाता है; जिनकी प्यास, लालसा और इच्छा का त्याग नहीं हुआ है; जिनके खतरे और भय का त्याग नहीं हुआ है; वे क्षणिक (तसा) हैं। उन्हें तसा क्यों कहा जाता है? वे प्यासे हैं, वे चिंतित हैं, वे पीड़ा में हैं, वे भयभीत हैं और वे सदमे में हैं; इसी कारण उन्हें तसा कहा जाता है। जिनकी भी प्यास और लालसा जिन लोगों को त्याग दिया गया है, जिनके सारे खतरे और भय भी दूर हो गए हैं, वे स्थायी (थावरा) हैं; उन्हें स्थायी (थावरा) क्यों कहा जाता है? वे दृढ़ हैं, वे डगमगाते नहीं, वे भयभीत नहीं होते, वे परेशान नहीं होते, वे डरते नहीं, वे चौंकते नहीं; इसलिए वे स्थिर (थावरा) हैं।

कभी किसी हथियार का इस्तेमाल नहीं करता, दुनिया की पसंद-नापसंद से मुक्त, वह अविवाहित और एक भिक्षु है

91.1. तीन हथियार हैं: शारीरिक हथियार, मौखिक हथियार और मानसिक हथियार । तीन प्रकार के शारीरिक दुराचार शारीरिक हथियार हैं; चार प्रकार के मौखिक दुराचार मौखिक हथियार हैं; तीन प्रकार के मानसिक दुराचार मानसिक हथियार हैं। "सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डम्" अभिव्यक्ति का अर्थ है: इन तीनों प्रकार के हथियारों को नीचे रखना, गिरा देना, उन्हें फेंककर सुरक्षित रूप से पहुंच से बाहर कर देना, सभी जीवित प्राणियों और जीवों को शांत करना, और किसी भी जीवित प्राणी को परेशान करने के उद्देश्य से हथियारों का उपयोग न करना। "अविहेतौम् अञ्ञतर्म् तेसम्" अभिव्यक्ति का अर्थ इस प्रकार है: किसी भी जीवित प्राणी को, चाहे हथेली से हो, मिट्टी के ढेले से हो, लाठी से हो, चाकू से हो, हथकड़ी से हो या रस्सी से हो, चोट न पहुंचाना। किसी भी जीव को , चाहे हथेली से, मिट्टी के ढेले से, लाठी से, चाकू से, जंजीर से या रस्सी से, सताना नहीं चाहिए। पाली मुहावरे में: ना पुत्तमिच्चेय्या कुतो सहायम्, 'ना' शब्द अस्वीकृति का संकेत देता है, जबकि 'पुत्तम्' (पुत्र) चार प्रकार के पुत्रों को संदर्भित करता है: स्वयं से जन्मा पुत्र; अपने खेत का पुत्र; दूसरों द्वारा दिया गया पुत्र, और घर में रहने वाला पुत्र। 'सहायम्' का अर्थ है साथी, और 'सहाय' का अर्थ है वह जिसके साथ चलना अनुकूल हो; अनुकूल रूप से चलना (फासु), अनुकूल रूप से खड़े होना, अनुकूल रूप से बैठना, अनुकूल रूप से पुकारना, अनुकूल रूप से बातचीत करना, अनुकूल रूप से आवाज देना। यह कथन कि "जिससे साथी मिले, पुत्र की इच्छा नहीं करनी चाहिए", का तात्पर्य है: पुत्र की कामना नहीं करनी चाहिए, न ही उसे स्वीकार करना चाहिए; पुत्र की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए; पुत्र की लालसा नहीं करनी चाहिए; जिससे मित्र, या मित्र साथ देखे या भोजन करते हों, या कोई सहयोगी (या साथी) हो, उसकी इच्छा नहीं करनी चाहिए; अतः, जिससे साथी मिले, पुत्र की इच्छा नहीं करनी चाहिए। अभिव्यक्ति: "ekocare khaggavisāṇkappo" को इस प्रकार समझा जाना चाहिए: वह मौन बुद्ध, क्योंकि उन्हें भिक्षु बनकर त्याग करने वाला माना जाता है, वे एकल हैं; क्योंकि वे अकेले खड़े हैं, उनका कोई दूसरा नहीं है, वे एक हैं; क्योंकि इसका अर्थ है कि उन्होंने तृष्णा (तन्हा) का त्याग कर दिया है, वे एकल हैं ; निश्चित रूप से वे कामवासना (राग) से मुक्त हैं , इसलिए वे एकल हैं; निश्चित रूप से वे घृणा (दोष) से मुक्त हैं , इसलिए वे एकल हैं। निःसंदेह वह मोह से मुक्त है , अतः वह एक और अकेला है; निःसंदेह वह कुटिलता से मुक्त है, अतः वह एक और अकेला है; उसने एकल दृष्टिकोण का सही मार्ग अपनाया है, अतः वह एक और अकेला है; उसने पूर्णतः प्रबुद्ध होकर अतुलनीय मौन बुद्धत्व प्राप्त कर लिया है , अतः वह एक और अकेला है।

91.2 वह मौन बुद्ध, जो संन्यास लेकर भिक्षु बन गए हैं, अविवाहित कैसे हैं? वास्तव में, वह मौन बुद्ध गृहस्थ जीवन के सभी बंधनों (या कमियों) को दूर करके, पत्नी और बच्चों के बंधन को तोड़कर, रिश्तेदारों, मित्रों और संचय के अवरोधों को दूर करके, अपने बाल और दाढ़ी मुंडवाकर, पीले वस्त्रों से शरीर को ढककर, घर छोड़कर, संसार का त्याग करके गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए, निर्धनता की अवस्था की ओर अग्रसर हुए, अकेले ही विचरण करते हैं, अकेले ही रहते हैं, अकेले ही चलते हैं, अकेले ही कार्य करते हैं, अकेले ही अपना ध्यान रखते हैं, अकेले ही अपना जीवन यापन करते हैं। इस प्रकार, वह मौन बुद्ध अविवाहित हैं, क्योंकि वे संन्यास लेकर भिक्षु बन गए हैं ।

91.3. वह मौन बुद्ध एक और अद्वितीय कैसे हैं, क्या इसलिए कि वे अकेले खड़े हैं या इसलिए कि उनका कोई दूसरा नहीं है? जब वे इस प्रकार भिक्षु बन जाते हैं, तो वे घने जंगलों, वनमार्गों या एकांत मठों में अकेले ही ध्यान लगाते हैं, जहाँ बहुत कम ध्वनियाँ होती हैं, जो शोरहीन होते हैं, लोगों की साँसों से मुक्त होते हैं (जनवाता), मनुष्यों से अनजान (या गुप्त रूप से) स्थित होते हैं, और एकांत के लिए उपयुक्त होते हैं। वे अकेले खड़े होते हैं, अकेले चलते हैं, अकेले बैठते हैं, अकेले लेटते हैं, अकेले ही भिक्षा मांगने के लिए गाँव में प्रवेश करते हैं, अकेले ही प्रस्थान करते हैं, अकेले ही एकांत में बैठते हैं, अकेले ही चलते हैं, अकेले ही विचरण करते हैं, अकेले ही जीवन यापन करते हैं, अकेले ही चलते हैं, कार्य करते हैं, देखभाल करते हैं, अपना काम करते हैं और अकेले ही अपना जीवन यापन करते हैं । इस प्रकार, वे इस तरह से एक और अद्वितीय हैं, उनका कोई दूसरा नहीं है।

91.4. वह मौन बुद्ध, तृष्णा (तन्हा) के त्याग से एक या अद्वितीय कैसे हैं ? वे अकेले ही, बिना किसी दूसरे के, लगन से जीवन व्यतीत करते हुए, अपने दुराचार (किलेसा) को जलाते हुए , निर्वाण की ओर मन लगाकर, महान प्रयास करते हुए, लापरवाही के सगे, किसी को न बख्शने वाले (नमुचि) घोर शत्रु, मारा को उसकी सेना सहित कुचलते हुए, दूरगामी (विसरितम्) और आसक्त (विसत्तिका) तृष्णा (तन्हा) को त्यागकर, दूर करके और समाप्त कर देते हैं।

लंबे समय तक बार-बार पुनर्जन्मों से गुजरना
समय की लालसा (तन्हा) दूसरी है
मनुष्य। कोई भी उसे पराजित (या समाप्त) नहीं कर सकता।
बार-बार पुनर्जन्म होना, एक होने की स्थिति
चाहे वांछनीय हो या नहीं। यह जानकर
दोष, लालसा, इच्छा (तन्हा) उत्पादक के रूप में

दुःख से मुक्त होने पर, भिक्षु दुख से मुक्त हो जाता है।
इच्छा (तन्हा) की तीव्र लालसा, बिना उसे अपनाए
स्वयं, और पूरी तरह सचेत होकर, त्याग करता है
इसे।
इस तरह मौन बुद्ध एक (या एकल) हैं क्योंकि वे लालसा इच्छा (तन्हा) का त्याग करके खड़े हैं
91.5. वह मौन बुद्ध एक (या एकल) कैसे हैं क्योंकि वे निश्चित रूप से कामवासना (राग) से मुक्त हैं ? क्योंकि वे कामवासना (राग) से रहित हो गए थे, इसलिए वे निश्चित रूप से कामवासना (राग) से मुक्त हैं और इस प्रकार वे एक (या एकल) हैं। क्योंकि वे घृणा (दोष) से रहित हो गए थे , इसलिए वे निश्चित रूप से घृणा (दोष) से मुक्त हैं और इस प्रकार वे एक (या एकल) हैं। क्योंकि वे मोह (मोह) से रहित हो गए थे , इसलिए वे निश्चित रूप से मोह (मोह) से मुक्त हैं और इस प्रकार वे एक (या एकल) हैं। क्योंकि वे कुकर्म (किलेष) से रहित हो गए थे , इसलिए वे निश्चित रूप से कुकर्म (किलेष) से मुक्त हैं और इस प्रकार वे एक (या एकल) हैं। इस प्रकार वह मौन बुद्ध निश्चित रूप से कामवासना (राग) से रहित हैं और इस प्रकार वे एक (या एकल) हैं।
91.6. वह मौन बुद्ध, जिसने एकल दृष्टिकोण का सही मार्ग अपनाया, इस प्रकार एक (या एकल) कैसे है? एकल दृष्टिकोण का सही मार्ग इस प्रकार बताया गया है: चार प्रकार की सजगता, चार प्रकार का अच्छा परिश्रम, चार जादुई शक्ति के आधार, पाँच नियंत्रण शक्तियाँ, पाँच प्रकार की शक्ति, ज्ञान के सात तत्व, अष्टांगिक मार्ग।
जो जन्म-जाति के विनाश को देखता है,
जो लाभ के प्रति सहानुभूति रखता है, वह समझता है
एकल दृष्टिकोण का सही मार्ग; के माध्यम से
यह सही रास्ता, लोग, पहले पार करते थे
वे पार करेंगे और अब वे पार कर रहे हैं
बाढ़।
इस तरह, वह एकल दृष्टिकोण के सही मार्ग पर चला गया और इस प्रकार एक (या एकल) हो गया

उनका ज्ञानोदय और आश्रित उत्पत्ति के चक्र का ज्ञान , (पटिच्चसमुप्पाद)
91.7. वह मौन बुद्ध अकेले ही अतुलनीय मौन बुद्धत्व और पूर्ण ज्ञान को कैसे प्राप्त कर सके और इस प्रकार एक (या एकल) हो गए? ज्ञान (बोधि) को निर्वाण की ओर ले जाने वाले चार सही मार्गों का ज्ञान कहा जाता है। ज्ञान (पञ्ञा) ज्ञान की नियंत्रक शक्ति, ज्ञान की सामर्थ्य, धम्म की खोज, ज्ञान का तत्व, विमंसा, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और सही दृष्टिकोण है। उस मौन बुद्ध को व्यक्तिगत ज्ञान (पच्चेकबोधि) का ज्ञान प्राप्त हुआ और उन्हें यह अहसास हुआ कि "सभी कर्म (संस्कार) अनित्य हैं; उन्हें यह अहसास हुआ कि "सभी कर्म (संस्कार) दुखदायी (दुःख) हैं"; उन्हें यह अहसास हुआ कि "सभी घटनाएँ (धम्म) अनात्म रहित (अनात्म) हैं।" उन्हें यह अहसास हुआ कि: "अज्ञान (अविज्जा) के कारण कर्म (संस्कार) उत्पन्न होते हैं"; उन्हें यह अहसास हुआ कि: "कर्मों के कारण चेतना (विज्ञाना) उत्पन्न होती है"; उन्हें यह अहसास हुआ कि: "चेतना (विज्ञाना) के कारण नाम और रूप (नामरूप) उत्पन्न होते हैं"; उन्हें यह अहसास हुआ कि: "नाम और रूप के कारण छह इंद्रियां (सलायतन) उत्पन्न होती हैं"; उन्हें यह अहसास हुआ कि "छह इंद्रियों के कारण स्पर्श (फस्सा) उत्पन्न होता है"; उन्हें यह अहसास हुआ कि "संपर्क (फस्सा) के कारण संवेदना (वेदना) उत्पन्न होती है"; उन्हें यह अहसास हुआ कि: "संवेदना के कारण तृष्णा (तन्हा) उत्पन्न होती है"; उन्हें यह अहसास हुआ कि "तृष्णा (तन्हा) के कारण आसक्ति (उपादान) उत्पन्न होती है"; उन्होंने यह अहसास किया कि "उपादान के कारण ही भव उत्पन्न होता है"; उन्होंने यह अहसास किया कि "उत्पत्ति के कारण ही जन्म होता है"; उन्होंने यह अहसास किया कि "जन्म के कारण ही वृद्धावस्था और मृत्यु होती है" । उन्होंने यह अहसास किया कि: "अज्ञान के निवारण से कर्मों (संस्कार) का निवारण होता है; उन्होंने यह अहसास किया कि "कर्मों (संस्कार) के निवारण से चेतना (विज्ञान) का निवारण होता है"; उन्होंने यह अहसास किया कि "भाव (अस्तित्व) के निवारण से जन्म (जाति) का निवारण होता है"; उन्होंने यह अहसास किया कि "जन्म (जाति) के निवारण से वृद्धावस्था और मृत्यु का निवारण होता है"। उन्हें यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि "यही दुःख (दुक्खा) है"; उन्होंने यह समझा कि "यही दुःख (दुक्खा) का मूल है"; उन्होंने यह बोध किया कि "यह दुःख (दुक्खा) का निवारण है"; उन्होंने यह अहसास किया कि "यह दुःख (दुक्खा) के निवारण की ओर ले जाने वाला व्यावहारिक मार्ग है"। उन्हें यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि "आसव (कैंसर) हैं"; उन्होंने यह अहसास किया कि "यही आसव का मूल है"; :P: उन्हें इस प्रकार अहसास हुआ: "निर्वाण (पटिपदा) की ओर ले जाने वाला व्यावहारिक मार्गउन्हें यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि "इन घटनाओं (धर्म) को उच्चतर ज्ञान से जानना

चाहिए"; उन्हें यह अहसास हुआ कि "इन घटनाओं (धर्म) का त्याग करना चाहिए"; उन्हें यह समझ आया कि "इन घटनाओं (धर्म) को स्वयं देखना चाहिए"; उन्हें यह अहसास हुआ कि "इन घटनाओं (धर्म) का विकास करना चाहिए।" उन्हें इस बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ।स्पर्श के छह क्षेत्रों (आयतन) के प्रकट होने और लुप्त होने, शून्यता और दोषों के साथ-साथ उनसे मुक्ति का ज्ञान उन्हें प्राप्त हुआ; उन्होंने आसक्ति के पाँच समूहों (उपदानक्खन्ध) के प्रकट होने और उनसे मुक्ति का ज्ञान प्राप्त किया; उन्होंने चार महा तत्वों के प्रकट होने और लुप्त होने, शून्यता और दोषों के साथ-साथ उनसे मुक्ति का ज्ञान प्राप्त किया; उन्हें इस प्रकार ज्ञान प्राप्त हुआ: "जो कुछ भी आरंभ (समुदय) के अधीन है, वह सब अंत (निरोध) के अधीन है।"

91.8. दूसरे शब्दों में: जिस भी विषय में ज्ञान प्राप्त करना हो, तदनुसार अनुभव करना हो, उचित रूप से अनुभव करना हो, विशेष रूप से आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना हो, उसे स्पर्श करना चाहिए, स्वयं अपनी आँखों से देखना चाहिए; वह सब कुछ जिसका उसने मौन बुद्धत्व के ज्ञान के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया, तदनुसार अनुभव किया, आत्म-साक्षात्कार प्राप्त किया, विशेष रूप से प्राप्त किया, स्पर्श कराया, स्वयं अपनी आँखों से देखा; इस प्रकार, वह मौन बुद्ध स्वयं इस प्रकार मौन बुद्धत्व को प्राप्त करके विशेष रूप से ज्ञानी हो गया; इस प्रकार, वह एक (या एकल) है।

91.9. 'देखभाल' शब्द को आठ अभ्यासों के रूप में समझा जाना चाहिए: शारीरिक गतिविधियों का अभ्यास, इंद्रियों का अभ्यास, सजगता का अभ्यास, ध्यान का अभ्यास, ज्ञान का अभ्यास, सही मार्ग का अभ्यास, प्राप्ति का अभ्यास और विश्व-कल्याण का अभ्यास। गति का अभ्यास (इरियुयापथ) इस प्रकार है: गति के चार तरीकों में; इंद्रियों का अभ्यास इस प्रकार है: छह आंतरिक और बाह्य इंद्रियों में; सजगता का अभ्यास इस प्रकार है: सजगता के चार प्रकारों में; एकाग्रता (समाधि) का अभ्यास इस प्रकार है: चार प्रकार के ध्यान में; ज्ञान का अभ्यास इस प्रकार है: चार आर्य सत्यों में; सही मार्ग का अभ्यास इस प्रकार है: तथागतों में, अरहतों में, सर्वज्ञ बुद्धों में, सीमित दृष्टि से, मौन बुद्धों में और सीमित दृष्टि से बुद्ध के शिष्यों में।

91.10. शारीरिक गतिविधियों का अभ्यास उन लोगों का अभ्यास है जो आत्म-निर्णय (पानिधि) से संपन्न हैं; इंद्रियों का अभ्यास उन लोगों का अभ्यास है जिनकी नियंत्रण क्षमताएं सुरक्षित हैं; सजगता का अभ्यास उन लोगों का अभ्यास है जो परिश्रमपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं; एकाग्रता (समाधि) का अभ्यास उन लोगों का अभ्यास है जो उच्च विचारों से जुड़े हुए हैं; ज्ञान का अभ्यास उन लोगों का अभ्यास है जो बुद्धि (बुद्धि) से संपन्न हैं; सही मार्ग का अभ्यास उन लोगों का अभ्यास है जिन्होंने सही प्रक्रिया का अनुसरण किया है; प्राप्ति का अभ्यास उन लोगों का अभ्यास है जिन्होंने फल (फल) प्राप्त किया है; सांसारिक लाभ का अभ्यास तथागतों, अरहतों, सर्वज्ञ बुद्धों, मौन बुद्धों (सीमित रूप से) और बुद्ध के शिष्यों (सीमित रूप से) का अभ्यास है। ये आठ अभ्यास हैं।

91.11. इसके बाद भी, जब आठों साधनाओं में पूर्ण निपुणता प्राप्त हो जाती है (अधिमुच्चन्तो), तो वह श्रद्धापूर्वक साधना करता है (सद्धा); उत्थानकारी साधना (पग्गाणहन्तो), तो वह परिश्रमपूर्वक साधना करता है; निकट रखकर साधना (उपाष्ठपन्तो), तो वह ध्यानपूर्वक साधना करता है; संतुलन बनाकर साधना (समाधि), तो वह एकाग्रतापूर्वक साधना करता है; उचित ज्ञान के साथ साधना करता है; भली-भांति जानकर वह चेतना के अभ्यास से साधना करता है; यह कहते हुए: इस प्रकार पुण्य कर्म प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार साधना करता है; वह इंद्रियों के अभ्यास से साधना करता है; यह कहते हुए: "जिसने इस प्रकार सिद्धि प्राप्त कर ली है, विशिष्टता प्राप्त कर ली है, वह विशिष्ट साधना से साधना करता है। ये आठ साधनाएँ हैं।"

91.12. इसके बाद भी, आठ अभ्यासों में सही दृष्टि (सम्मादिष्ठी) शामिल है, जो देखने का अभ्यास है; सही इरादे (सम्मासंकप्प) का अभ्यास, जो मन के अनुप्रयोग का अभ्यास है; सही वाणी (सम्मावाचा) का अभ्यास, जो ग्रहण करने (परिग्हः) का अभ्यास है; सही कर्म (सम्माकम्मन्त) का अभ्यास, जो स्वयं-क्रिया (समुष्ठान) का अभ्यास है; सही जीवन शैली (सम्माआजीव) का अभ्यास, जो शुद्धि का अभ्यास है; सही परिश्रम (सम्मावायाम) का अभ्यास, जो उत्थान का अभ्यास है; सही जागरूकता (सम्मासति) का अभ्यास, जो निकट रहने (उपष्ठान) का अभ्यास है; सही एकाग्रता (सम्मा समाधि) का अभ्यास, जो स्थिरता (अविक्खेप) का अभ्यास है। ये आठ अभ्यास हैं।

91.13. 'खग्गविसानकप्पो' अभिव्यक्ति को इस प्रकार समझा जाना चाहिए: जिस प्रकार गैंडे का सींग एक ही होता है, दूसरा उसी प्रकार मौन बुद्ध भी उसी के समान, उसी के समरूप, उसी के प्रतिरूप हैं। जिस प्रकार अधिक नमक को नमक के समान, अत्यधिक कड़वाहट को कड़वाहट के समान, अधिक मिठास को मिठास के समान, अत्यधिक गर्मी को आग के समान, अत्यधिक ठंड को बर्फ के समान, जल के विशाल भंडार को सागर के समान कहा जाता है, उसी प्रकार परम ज्ञान प्राप्त शिष्य को गुरु के समान कहा जाता है, ठीक उसी प्रकार मौन बुद्ध गैंडे के सींग के समान, उसके समरूप, गैंडे के सींग के प्रतिरूप, अकेले, बिना किसी दूसरे के, बंधनों से मुक्त होकर संसार में उचित रूप से विचरण करते हैं, जीवन यापन करते हैं, गति करते हैं, कार्य करते हैं, रक्षा करते हैं और स्वयं को संचालित रखते हैं। इस प्रकार, वह गैंडे के सींग की तरह अकेला भटकता रहेगा। इसलिए, मौन बुद्धों ने कहा:

"अपने हथियार डाल देने के बाद"
सभी जीवित प्राणियों को हानि नहीं पहुंचानी चाहिए।
उनमें से कोई भी। किसी को नहीं करना चाहिए
पुत्र की इच्छा क्यों हो?
साथी बनना? अकेले ही घूमना चाहिए
जैसे गैंडे का सींग।
जो भी इसके संपर्क में आता है, उसे पता चलता है कि...
स्नेह बनना; परिणामी
इस पीड़ा (दुक्खा) के प्रति स्नेह रखना
अस्तित्व में आना; उदय को देखते हुए
स्नेह (स्नेह), एक हानि के रूप में
(आद्दीनव), व्यक्ति को अकेले घूमना चाहिए जैसे एक
गैंडे का सींग।
मित्रों और परिचितों के प्रति सहानुभूति
व्यक्ति उनसे बंध जाता है (पटिबद्धचित्तो)।
मानसिक रूप से और उसके कल्याण को त्याग देता है।
सहजीवन में इस खतरे को देखते हुए,
किसी को गैंडे की तरह अकेले घूमना चाहिए।
सींग।
जैसे ही बांस की झाड़ी उलझ जाती है
जैसे ही यह विस्तृत हो जाती है, वैसे ही-
बच्चों के प्रति जो भी स्नेह होता है और
पत्नियाँ। अनासक्त, खाने योग्य बांस की तरह
बांस की झाड़ी में अंकुरित होने पर, किसी को घूमना चाहिए
अकेले, गैंडे के सींग की तरह।
ठीक वैसे ही जैसे जंगल में एक खुला हिरण।
यह अपने चरागाह के लिए अपनी इच्छानुसार घूमता रहता है।
एक बुद्धिमान व्यक्ति, जो अपनी स्वतंत्रता का ध्यान रखता है,
उसे गैंडे की तरह अकेले घूमना चाहिए
सींग।
साथियों के बीच खेलकूद और आनंद का माहौल है।
बच्चों के प्रति प्रेम भी प्रचुर मात्रा में है।
स्नेही लोगों से बिछड़ने का दर्द
उसे गैंडे के सींग की तरह अकेले भटकना चाहिए।
चारों दिशाओं में कहीं भी क्रोध नहीं है
इसके अलावा; दोनों में से किसी एक में सामग्री है-
दुखों के बावजूद अडिग रहना।
किसी को गैंडे की तरह अकेले घूमना चाहिए।
सींग।
कुछ की देखभाल करना मुश्किल होता है, हालांकि वे
भिक्षु तो हैं ही; गृहस्थ तो और भी अधिक।
घरों में रहना। चिंताओं से मुक्त होना।

दूसरों के बच्चों के ऊपर, किसी को भटकना चाहिए
दूसरों के बच्चों के ऊपर, किसी को भटकना चाहिए
गैंडे के सींग की तरह अकेला।
गृहस्थ होने के चिन्हों को त्यागकर, जैसे
पत्तियों को पूरी तरह से काटकर बनाया गया मूंगा वृक्ष
नायक ने सभी बंधनों को काटकर,
घर में रहने वाले व्यक्ति को गैंडे की तरह अकेले घूमना चाहिए।
सींग।
यदि किसी को परिपक्व मानसिकता वाला साथी मिल जाए,
जो उसके साथ चलता है, और जो दृढ़ बुद्धिमान है,
एक सुखी जीवन जीना, सभी खतरों पर विजय प्राप्त करना,
उसके साथ आत्मसंतुष्टि के साथ घूमना चाहिए।
और सचेतनता।
यदि किसी को परिपक्व मन वाला साथी नहीं मिलता,
जो दृढ़ बुद्धिमान हो और भटकने के लिए अच्छा जीवन जीता हो
साथ में रहते हुए, किसी को अकेले राजा की तरह घूमना चाहिए।
अपने जीते हुए राज्य को त्यागना और इसी तरह
जंगल में हाथी को मतंगा करना।
हम वास्तव में इस उपलब्धि की सराहना करते हैं।
साथ; सर्वोत्तम और समान साथी
इसके साथ जुड़ा होना चाहिए। जब इस तरह की com-
साथी नहीं मिलते, जो आनंद लेता है
मासूमियत को अकेले भटकना चाहिए जैसे एक
गैंडे का सींग।
सोने की चमक को अच्छी तरह से देखकर
एक युवा सुनार द्वारा बनाया गया, खटखटाते हुए
दोनों भुजाओं पर एक दूसरे के विरुद्ध, एक
उसे गैंडे के सींग की तरह अकेले भटकना चाहिए।
या तो व्यर्थ की बातें (vācābhiāpo) होती हैं या
मेरे मन में दुर्भावना (अभिसज्जना) है
इस मामले में दूसरे के कारण साथी
इस तरह। भविष्य में इस खतरे को देखते हुए एक
उसे गैंडे के सींग की तरह अकेले भटकना चाहिए।
वास्तव में, इंद्रिय सुख विविध प्रकार के होते हैं।
मन को मधुर और आनंददायक बनाने वाले। वे उत्तेजित करते हैं।
मन विभिन्न रूपों और आकारों के साथ।
इंद्रिय सुखों में निहित हानि को देखते हुए,
मनुष्य को गैंडे के सींग की तरह घूमना चाहिए।
यह बीमारी (ītī) भी है और घाव (gando) भी।
साथ ही विपत्ति, बीमारी, कांटा और खतरा
साथ ही, कामुक आनंद में इस खतरे को देखते हुए-
निश्चित रूप से, किसी को अकेले ही घूमना चाहिए जैसे कि

गैंडे का सींग।
ठंड और गर्मी, भूख और प्यास,
जलती हुई हवा, मच्छर और रेंगने वाले
रेंगने वाले जीव भी; अभिभूत कर देने वाले
इन सभी के साथ-साथ, अकेले ही घूमना चाहिए।
जैसे गैंडे का सींग।
जैसे एक विशाल हाथी, कमल के समान,
बड़े शरीर के साथ पैदा हुआ, इससे बच निकलने के कारण
झुंड, जंगल में अपनी इच्छानुसार रहता है।
इसलिए, गैंडे की तरह अकेले ही घूमना चाहिए।
सींग।
जो समय पर संपर्क में आएगा
मुक्ति के मामले में, यह उचित नहीं है कि वह इसे ग्रहण करे।
समाज में आनंद लेना। बुद्ध के वचनों का पालन करना।
सूर्य के सगे-संबंधी, अकेले ही भटकना चाहिए जैसे
गैंडे का सींग।
मुक्त रूप से रेंगने वाला विधर्म, प्राप्त कर लिया है
सही मार्ग, और तदनुसार प्राप्त किया
निर्वाण के सही मार्ग पर, मैं वह व्यक्ति हूँ जिसका ज्ञान
एक व्यक्ति का उदय हुआ है और वह किसी के नेतृत्व में नहीं चलेगा।
उसे गैंडे के सींग की तरह अकेले भटकना चाहिए।
न तो लालची, न कपटी, न प्यासा,
पाखंड और कठोर भ्रम से मुक्त होना,
(कासावमोह), और झुकाव से मुक्त होकर-
(आसया), समस्त संसार में भटकना चाहिए
अकेले, गैंडे के सींग की तरह।
किसी भी व्यक्ति को बुरे साथी से पूरी तरह बचना चाहिए।
जो कुछ भी लाभकारी नहीं देखता, बल्कि समर्पित है
(निवित्थम) दुराचरण (विसमे)। स्वयं को चाहिए
लापरवाही भरे कार्यों का सहारा न लें, झोपड़ी में भटकना चाहिए
अकेले, गैंडे के सींग की तरह।
धर्म के प्रचारक के साथ संगति बनाए रखें।
बहुत ज्ञान, एक महान शक्ति वाला मित्र और तत्पर
बुद्धि (या ज्ञान), लाभ और हानि को जानना-
शंकाओं को दूर करते हुए, व्यक्ति को अकेले ही भटकना चाहिए।
गैंडे का सींग।
अपने आप को सजाना नहीं और लालच नहीं करना
दुनिया में खेल, आनंद और कामुक सुख,
साथ ही बोलते समय अलंकारिक भाषा का प्रयोग करने से बचना चाहिए।
यह भी सच है कि व्यक्ति को अकेले ही घूमना चाहिए।
गैंडे का सींग।
बच्चों और पत्नी को त्यागकर, पिता

और माता, धन और अनाज भी।
रिश्तेदारों और कामुक सुखों के अनुसार
सीमाओं तक, व्यक्ति को अकेले भटकना चाहिए जैसे कि एक
गैंडे का सींग।
एक बुद्धिमान व्यक्ति, जो इस प्रकार जानता है:
यह मछली पकड़ने का कांटा है, यह आसक्ति है, खुशी है।
यहां बहुत कम है, यह अप्रिय है, और भी ज्यादा।
यहाँ केवल दुःख ही है,
गैंडे के सींग की तरह अकेले भटको।
सभी बंधनों को तोड़कर
आसक्ति (संयोजन), जैसे जलीय
भटकते हुए जीव मछली पकड़ने वालों को छीन लेते हैं
जाल, जलती हुई आग की तरह पीछे नहीं हट रहा, एक
उसे गैंडे के सींग की तरह अकेले भटकना चाहिए।
निगाहें झुकाए, व्यभिचारी न होते हुए
नियंत्रण करने वाली शक्तियों से सुरक्षित पैरों के साथ,
मन सुरक्षित, कामुक न होना, उत्तेजित न होना
हर तरफ, गैंडे की तरह अकेले ही घूमना चाहिए।
सेरोस का सींग।
घर के सभी चिह्नों और प्रतीकों को हटाना-
धारक, जैसे पत्तेदार फूलों की छंटाई करना
केसरिया वस्त्र धारण किए हुए मूंगा वृक्ष और
जिसने महान त्याग किया हो, उसे अकेले ही विचरण करना चाहिए।
जैसे गैंडे का सींग।
स्वादिष्ट पोषण में उत्सुक इच्छा न पैदा करना-
मानसिक रूप से अस्थिर न होना, पोषित न होना
दूसरों द्वारा नहीं, बल्कि भिक्षा-भोजन संग्राहक होने के नाते
घर-घर क्रमानुसार (सपदान) बिना
किसी भी परिवार के प्रति मानसिक रूप से आकर्षित होना,
किसी को गैंडे के सींग की तरह अकेले ही घूमना चाहिए।
पांच बाधाओं को मानसिक रूप से त्यागकर,
सभी दुराचारों (उपक्किलेसा) को जड़ से उखाड़ फेंककर।
स्नेहपूर्ण प्रेम की गलती से बाहर निकलकर और
स्वतंत्र होकर, व्यक्ति को अकेले ही घूमना चाहिए जैसे
एक गैंडे का सींग।
आनंद और दुःख को पीछे छोड़ते हुए और पहले
यहाँ तक कि मानसिक सुख और दुःख को भी,
समभाव, शांति और पवित्रता प्राप्त करने वाला, एक
उसे गैंडे के सींग की तरह अकेले भटकना चाहिए।
लक्ष्य प्राप्ति के लिए ऊर्जा से हमेशा तत्पर रहना
सबसे अधिक लाभ (निर्वाण) प्राप्त करने के लिए, अनासक्त रहना आवश्यक है।
सचेत (alīacitto), आलसी आदतों से रहित,

दृढ़ निश्चय के साथ प्रयास करना, वरदान प्राप्त होना
शक्ति और जोश के साथ, व्यक्ति को अकेले ही घूमना चाहिए।
जैसे गैंडे का सींग।
एकांत में ध्यान अभ्यास का भ्रम पैदा करना,
सभी धर्मों का सदा विधिपूर्वक पालन करते हुए,
जीवन में मौजूद कमियों की जांच करना,
किसी को गैंडे की तरह अकेले घूमना चाहिए।
सींग।
विनाश की आकांक्षा के बाद परिश्रमी होना-
लालसा इच्छा (तांख्खय) का विनाश, नहीं
बहरे और गूंगे होने के बावजूद ज्ञान से भरपूर होना
और सचेतनता, एक ऐसा व्यक्ति बनना जिसने पहचान लिया है
सत्य (धम्म), जो स्थायी रूप से विद्यमान है
कठिन परिश्रम के बाद, व्यक्ति को अकेले ही भटकना चाहिए जैसे
एक गैंडे का सींग।
शेर की तरह, थका हुआ नहीं बल्कि शांत
आवाज़ों के बीच, हवा की तरह उलझा हुआ नहीं
एक जाल में, और कमल के फूल की तरह, बिना किसी दाग के।
पानी के साथ, गैंडे की तरह अकेले घूमना चाहिए।
सेरोस का सींग।
वन सड़कों और वन आवासों का उपयोग करते हुए जैसे
एक शेर जानवरों के राजा के रूप में घूमता है, ऊपर-
उन्हें अपनी प्रबल शक्ति से जबरदस्ती पराजित करते हुए
इसके नुकीले दांतों वाले जबड़े के बारे में सोचते हुए, किसी को भटकना चाहिए।
अकेले, गैंडे के सींग की तरह।
प्रेम और करुणा में लिप्त रहना,
दया, मुक्ति और कभी-कभी आनंद भी।
पूरी दुनिया के साथ शत्रुतापूर्ण संबंध स्थापित किए बिना,
किसी को गैंडे की तरह अकेले घूमना चाहिए।
सींग।
कामवासना (राग), घृणा (दोष) और
मोह (भ्रम), जिसने तोड़ दिया है
जीवन के बंधन (संयोजन), प्राप्त न करना
जीवन के अंतिम क्षणों में व्याकुल होकर, व्यक्ति को चाहिए कि
गैंडे के सींग की तरह अकेले भटकना।
जिन दोस्तों का कोई निजी स्वार्थ नहीं होता, उनसे दोस्ती करना मुश्किल होता है।
आज मिल जाएंगे। लोग आपकी ओर ध्यान देंगे और
किसी तरह का संबंध रखने के लिए आपके साथ जुड़ना-
तुम्हारे साथ करने के लिए कुछ नहीं है। अपवित्र लोगों के पास
केवल अपने स्वयं के लाभों का ज्ञान।
उसे गैंडे की तरह अकेले घूमना चाहिए।
सींग।

91.14. वहाँ, यह कथन है: सब्बेसु भूतेसु, सभी प्राणियों में, एक प्रवचन (सूत्र) है, जो गैंडे के सींग नामक मौन बुद्ध की जीवनी (या कर्मों) पर आधारित है। इसकी उत्पत्ति क्या है? सभी प्रवचनों (सूत्रों) की उत्पत्ति चार प्रकार की होती है: स्वयं की इच्छा से, दूसरों की इच्छा से, कथा के कारण, और अनुत्तरित प्रश्न के कारण। वहाँ गैंडे के सींग पर आधारित प्रवचन, खग्गविशाण सूत्र, की उत्पत्ति सामान्यतः अनुत्तरित प्रश्न के कारण होती है। यद्यपि यहाँ जो भी श्लोक हैं, अमुक मौन बुद्ध द्वारा पूछे गए किसी श्लोक का उत्तर दिया गया है। बिना किसी प्रश्न के पूछे, केवल अपने आनंदमय उच्चारण के माध्यम से, स्वयं निर्वाण के सही मार्ग की प्राप्ति के तरीके से; इसलिए उत्पत्ति या तो किसी श्लोक-प्रश्न से होती है जिसका उत्तर दिया गया हो, या फिर व्यक्ति की स्वयं की इच्छा से। वहाँ, प्रश्न के कारण जो भी उत्पत्ति हो, सामान्यतः उस उत्पत्ति को इस प्रकार जानना चाहिए, सर्वप्रथम, आरंभ से:-

91.15. एक समय, परम पूज्य बुद्ध सावत्थी में निवास कर रहे थे। तब एकांतवास में गए पूज्य आनंद के मन में यह विचार आया: "उनकी आकांक्षाएँ और प्रयास तो स्पष्ट हैं, उनके शिष्यों के भी; परन्तु मौन बुद्धों के तो दिखाई नहीं देते। अच्छा होगा यदि मैं परम पूज्य बुद्ध के पास जाकर उनसे यह प्रश्न पूछूँ।" वे एकांतवास से उठे, परम पूज्य बुद्ध के पास गए और उनसे क्रमानुसार यह प्रश्न पूछा। तब परम पूज्य बुद्ध ने उन्हें पुब्बयोग-वचर सूत्र नामक प्रवचन दिया।

"आनंद! जीवन में पाँच प्रकार के लाभ होते हैं।"
जो उसके पिछले संबंधों से परिचित हो:
वह इस मामले में भी दूसरों को बड़ी सावधानी से प्रसन्न करता है।
वर्तमान अस्तित्व; यदि वह सावधानीपूर्वक प्रसन्न नहीं करता है
तो, इसी वर्तमान अस्तित्व में एक और व्यक्ति,
अपनी मृत्यु के समय वह किसी और को प्रसन्न करता है। फिर,
एक युवा देवता बनकर वह दूसरे को प्रसन्न करता है। फिर,
फिर वह उच्चतर ज्ञान को शीघ्रता से ग्रहण करने लगता है।
बुद्धों की उपस्थिति में एक चबूतरे पर। फिर अंत में
वह एक मौन बुद्ध बन जाता है।"
ऐसा कहकर उन्होंने फिर कहा:-

"आनंद! मौन बुद्ध, अर्थात्, वरदानों से संपन्न होते हैं।"
प्रयास के साथ और उनके पिछले अनुभवों से परिचित
संबंध। इसलिए, आकांक्षा और
सभी मौन बुद्धों और शिष्यों का प्रयास
बुद्ध की आकांक्षा की जानी चाहिए।"

91.16. आनंद ने पूछा: "आदरणीय महोदय! बुद्धों की आकांक्षा कब तक होनी चाहिए?" बुद्ध ने उत्तर दिया: "आनंद! बुद्धों की न्यूनतम सीमा चार असंख्य कालों के अतिरिक्त एक लाख कल्प है; मध्य सीमा आठ असंख्य कालों के अतिरिक्त एक लाख कल्प है; उच्चतम सीमा सोलह असंख्य कालों के अतिरिक्त एक लाख कल्प है। उनकी विविधता को भी असाधारण ज्ञान वाले बुद्धों, असाधारण आस्था वाले बुद्धों और श्रेष्ठ परिश्रम करने वाले बुद्धों के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। वास्तव में, श्रेष्ठ ज्ञान वाले बुद्धों की आस्था अल्प होती है, परन्तु उनका ज्ञान तीव्र होता है। श्रेष्ठ आस्था वाले बुद्धों का ज्ञान मध्यम होता है, परन्तु उनकी आस्था प्रबल होती है। असाधारण परिश्रम करने वाले बुद्धों की आस्था और ज्ञान अल्प होते हैं, परन्तु उनका परिश्रम अत्यंत तीव्र होता है। यद्यपि वेसंतारा के दान के समान प्रतिदिन दान करते रहें, यद्यपि वे उपदेश (शील) आदि जैसी अन्य आध्यात्मिक सिद्धियाँ प्राप्त करते रहें, फिर भी चार असंख्य कालों के अतिरिक्त एक लाख कल्प की अधिकतम सीमा तक नहीं पहुँच सकते, भले ही वेसंतारा के दान के समान प्रतिदिन दान करते रहें, भले ही वे उसी उद्देश्य के अनुरूप अन्य आध्यात्मिक सिद्धियाँ प्राप्त करते रहें। इस हद तक, इस बीच की अवधि में बुद्ध बनने जैसी कोई बात नहीं है। क्यों? ज्ञान गर्भ धारण नहीं करता; वह समृद्धि तक नहीं पहुँचता; वह पूर्ण परिपक्वता की ओर नहीं बढ़ता। जैसे, तीन महीने, चार महीने और पाँच महीने बाद काटी जाने वाली फसल, उस समय से पहले, चाहे उसे प्रतिदिन सौ बार या हज़ार बार सहलाया जाए, चाहे उस पर पानी छिड़का जाए, फिर भी पखवाड़े भर या एक महीने के भीतर फसल का पक जाना संभव नहीं होता। क्यों? फसल गर्भ धारण नहीं करती; वह समृद्धि तक नहीं बढ़ती; वह पूर्ण परिपक्वता की ओर नहीं बढ़ती। ठीक इसी तरह, चार असंख्य कालों के बाद एक लाख कल्पों की अंतिम सीमा तक पहुँचे बिना, इस बीच की अवधि में बुद्ध बनने जैसी कोई बात नहीं है। इसलिए, ज्ञान की पूर्ण परिपक्वता के

लिए पहले बताए गए समय के दौरान सिद्धियों को पूरा करना चाहिए। इतने समय में, बुद्धत्व की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति को आठ उत्तम उपलब्धियाँ प्राप्त करनी चाहिए। इस प्रयास को सफल बनाने के लिए ये आवश्यक हैं। वास्तव में, ये हैं:-

मानवता, उत्कृष्ट यौन उपलब्धि, कारण,
सभा देखना, भिक्षुत्व, प्राप्ति
उत्कृष्ट गुणवत्ता, प्रबंधन, और काम करने की इच्छा।
आठ योग्यताओं के संयोजन के आधार पर
यह प्रयास सफल हो जाता है।

91. 17. यह अभिव्यक्ति 'अब्बिनीहारा' मूल आत्म-संकल्प के लिए प्रयुक्त होती है। यहाँ 'मनुस्सत्तम्' मनुष्य के रूप में जन्म को दर्शाता है। वास्तव में, मनुष्य जन्म के अतिरिक्त, शेष जन्मों में, यहाँ तक कि जो व्यक्ति दिव्यलोक में स्थापित हो जाता है, उसका संकल्प साकार नहीं होता। परन्तु, दिव्यलोक में बुद्धत्व की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति को दान आदि जैसे पुण्य कर्म करने के बाद भी मनुष्यत्व की आकांक्षा रखनी चाहिए। मनुष्यत्व में रहते हुए संकल्प करना चाहिए। इस प्रकार, वास्तव में, यह पूर्ण हो जाता है। लिंगसंपत्ति पुरुष होने की अवस्था है। स्त्री, लिंगहीन और दोनों लिंगों के व्यक्तियों का संकल्प मनुष्य के रूप में जन्म लेने के बावजूद साकार नहीं होता। परन्तु वहाँ स्थापित होने के बाद, बुद्ध बनने की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति को दान आदि जैसे पुण्य कर्म करने के बाद ही पुरुष बनने की आकांक्षा रखनी चाहिए। वहाँ पुरुष के रूप में स्थापित होने के बाद, संकल्प लेना चाहिए। इस प्रकार, वास्तव में, यह पूर्ण हो जाता है। हेतु शब्द का अर्थ है: वह योग्यता, जो अर्हतत्व प्राप्त करने के लिए पर्याप्त शर्त है। जो कोई भी, वास्तव में, अपने उस जीवन में प्रयास करके अर्हतत्व प्राप्त करने में सक्षम है; उसका संकल्प साकार होता है; न कि दूसरे का, जैसा कि बुद्धिमान सुमेधा के मामले में हुआ। सुमेधा, वास्तव में, बुद्ध दीपांकर के चरणों में भिक्षु बनकर, उसी जीवन में अर्हतत्व प्राप्त करने में सक्षम हो गया था। सत्तारादस्सनम् शब्द का अर्थ है बुद्धों की उपस्थिति में दर्शन करना। इस प्रकार, वास्तव में, वहाँ पूर्णता प्राप्त होती है; किसी अन्य तरीके से नहीं, जैसा कि बुद्धिमान सुमेधा के मामले में हुआ। उन्होंने, वास्तव में, बुद्ध दीपांकर की उपस्थिति में दर्शन करके संकल्प लिया। पभज्जा का अर्थ है गृहस्थ संन्यासी बनना। वह वास्तव में बुद्ध के मार्ग पर भिक्षु के रूप में, या संन्यासियों के संगठन में, या भ्रमणशील तपस्वियों के रूप में हो सकता है, जिनका सिद्धांत कर्म और प्रतिक्रिया (क्रिया), कर्म और परिणाम (क्रिया) है, जैसा कि बुद्धिमान सुमेधा के मामले में, उन्होंने संकल्प लिया था। गुणसंपत्ति का अर्थ है ध्यान आदि गुणों की प्राप्ति। वास्तव में, भिक्षु के मामले में भी, जो गुण संपन्न है, वह साकार होता है; न कि दूसरे के मामले में, जैसा कि बुद्धिमान सुमेधा के मामले में है। वास्तव में, पाँच प्रकार के उच्च ज्ञान और आठ प्रकार की ध्यान संबंधी उपलब्धियों (ध्यान) के साथ एक होकर, उन्होंने संकल्प लिया। अधिकारो का अर्थ है असामान्य कर्म, पूर्ण बलिदान। अपने प्राण आदि जैसे सर्वोच्च बलिदान करने के बाद ही, किया गया संकल्प साकार होता है; न कि दूसरे के मामले में, जैसा कि बुद्धिमान सुमेधा के मामले में है। वास्तव में, उन्होंने इस प्रकार स्वयं का बलिदान किया:-

बुद्ध अपने शिष्यों के साथ,
मुझे रौंदने मत जाओ; उसे मुझे रौंदने मत दो
मिट्टी। इससे मुझे फायदा होगा।

संकल्प लिया। चंदता का अर्थ है करने की इच्छा। जिसकी इच्छा प्रबल होती है, उसका संकल्प साकार हो जाता है। यही कारण है कि जो कोई इस प्रकार कहे: "चार असंख्य कालों के अतिरिक्त एक लाख कल्पों तक नरक में तपने के बाद कौन बुद्धत्व प्राप्त करना चाहता है?" जो कोई ऐसी घोषणा सुनकर "मैं करता हूँ" कहने में सक्षम हो, उसकी इच्छा प्रबल समझी जानी चाहिए। इसी प्रकार, यदि कोई कहे: "बुद्धिहीन अंगारों के क्षेत्र में कदम रखने के बाद कौन बुद्धत्व प्राप्त करना चाहता है? भाले और कांटों से भरे क्षेत्र को पार करने के बाद कौन बुद्धत्व प्राप्त करना चाहता है? जल से भरे हुए संपूर्ण ब्रह्मांड (चक्कवाल) को पार करने के बाद कौन बुद्धत्व प्राप्त करना चाहता है?" "सारे ब्रह्मांड को, जो निरंतर बांस की झाड़ियों से ढका हुआ है, पार करने के बाद कौन बुद्धत्व प्राप्त करना चाहता है?" यह घोषणा सुनकर जो भी साहसपूर्वक कहे, "मैं चाहता/चाहती हूँ," उसकी इच्छा प्रबल मानी जानी चाहिए। ऐसे ही दृढ़ संकल्प से परिपूर्ण बुद्धिमान सुमेधा ने यह निश्चय किया।

91. 18. इस प्रकार अपने सिद्धिपूर्ण प्रयास करने वाले बोधिसत्व को अठारह दोषों के निकट भी नहीं जाना पड़ता। वास्तव में, अपने संकल्प के समय से ही, वह जन्मजात अंधा नहीं होता; जन्मजात बहरा नहीं होता, पागल नहीं होता, बहरा और गूंगा नहीं होता, इतना लंगड़ा नहीं होता कि कुर्सी के सहारे रेंगना पड़े या बैसाखी के सहारे चलना पड़े, विधर्मियों के परिवार में पुनर्जन्म नहीं लेता, दासी की कोख में जन्म नहीं लेता, गलत विचारों का प्रचार करने वाला पुष्ट विधर्मी नहीं बनता, उसके जननांग विकृत नहीं होते, वह पाँच अपूरणीय अपराध (अनंतरीय कर्म) नहीं करता; वह कुष्ठ रोगी नहीं बनता; विकास के कारण उसे किसी जानवर की कोख में नहीं जाना

पड़ता, बल्कि हाथी के संबंध में यह उसका अंतिम जन्म होता है और वह एक श्रेष्ठ प्राणी बन जाता है; वह प्यास से ग्रस्त (निज्जामतनहिका) पेटों में, भूख और प्यास से पीड़ित, न ही कालकांचिक असुर नामक दैत्यों के बीच, न ही अवीचि निरय में, और न ही लोकान्तर में जन्म लेता है। वह कामावचर जगत में मार नहीं बनता, रूपावचर जगत में अज्ञानी ब्रह्मा नहीं बनता; न ही शुद्ध ब्रह्माओं के बीच जन्म लेता है; न ही निराकार ब्रह्माओं के बीच जन्म लेता है; और न ही चक्कवाल में जाता है।

91. 19. उन्हें बुद्धत्व के चार आधारों से संपन्न किया गया है: प्रयास, ज्ञान (उम्मंग), आत्म-संकल्प (अवत्थाना), और लाभकारी आचरण (हित चरिया)। यहाँ इसे इस प्रकार समझा जाना चाहिए:-

उस्साहा को प्रयास कहा जाता है, उमंग को भी यही कहा जाता है।

अवत्थाना को ज्ञान कहा जाता है, इसे स्वयं का ज्ञान माना जाता है।

संकल्प, हितकारिया विकसित हो रहा है

प्रिय दयालुपना।

ये सभी प्रवृत्तियाँ, अर्थात्, त्याग की तीव्र इच्छा, एकांतवास की तीव्र इच्छा, लोभहीनता की तीव्र इच्छा, क्रोध के अभाव की तीव्र इच्छा, भ्रम से मुक्त होने की तीव्र इच्छा और निर्वाण की प्राप्ति की तीव्र इच्छा, छह प्रकार से पूर्ण ज्ञानोदय (बोधि) के लिए प्रबल प्रवृत्तियाँ हैं। इन तीव्र प्रवृत्तियों से युक्त होने के कारण, वे बोधिसत्व जो त्याग की तीव्र इच्छा रखते हैं, इंद्रिय सुखों में दोषों के द्रष्टा होते हैं; वे बोधिसत्व जो एकांतवास की तीव्र इच्छा रखते हैं, समाज में दोषों के द्रष्टा होते हैं; वे बोधिसत्व जो लोभहीनता की तीव्र इच्छा रखते हैं, लोभ में दोषों के द्रष्टा होते हैं; वे बोधिसत्व जो क्रोध के अभाव की तीव्र इच्छा रखते हैं और भ्रम से मुक्त होने के लिए तल्लीन रहते हैं, भ्रम में दोषों के द्रष्टा होते हैं; वे बोधिसत्व जो निर्वाण की ओर अग्रसर होने की तीव्र इच्छा रखते हैं, समस्त अस्तित्वों में दोषों के द्रष्टा कहलाते हैं। वह इन गुणों से भी संपन्न है।

91.20. मौन बुद्धों की आकांक्षाएँ कितनी लंबी होनी चाहिए? मौन बुद्धों के लिए दो असंख्य कालों से भी अधिक एक लाख कल्प काल निर्धारित हैं। इससे कम नहीं हो सकता। यहाँ विषय को पहले बताए गए तरीके से ही समझना चाहिए। इतने लंबे समय में भी, मौन बुद्धत्व की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति के लिए प्रयास करते समय पाँच योग्यताएँ आवश्यक हैं। उनके लिए, वास्तव में:-

मानवता, पुरुष लिंग का गुण, देखना

जिनके घाव (आसव) हो गए थे

थकावट, सेवा और इच्छा। ये

ये प्रयास से संबंधित मामले हैं।

91.21. वहाँ, विगतासव दस्सना अभिव्यक्ति का अर्थ इस प्रकार है: बुद्धों, मौन बुद्धों और बुद्ध के शिष्यों के रूप में किसी भी व्यक्ति को देखना। शेष का विवरण पहले ही दिया जा चुका है।

91.22. तो फिर, "बुद्ध के शिष्य बनने की आकांक्षा कितने समय तक रहनी चाहिए? दो शीर्ष शिष्यों के लिए एक असंख्य काल से भी अधिक एक लाख कल्प। बुद्ध के अस्सी प्रमुख शिष्यों में से एक बनने के लिए एक लाख कल्प। इसी प्रकार बुद्ध के माता-पिता का सेवक बनने के लिए भी। इससे कम नहीं हो सकती। यहाँ, मामला पहले ही बताए गए तरीके से स्पष्ट है। न केवल इन सभी के लिए, बल्कि सभी प्रयासों में दो गुण होते हैं: सेवा (अधिकार) और इच्छा (चंदता)।"

91.23. इस प्रकार, इस आकांक्षा और इस प्रयास के कारण, जैसा कि पहले ही बताया गया है, समय के विभिन्न विभाजनों के लिए सिद्धियाँ प्राप्त करने के बाद, बुद्ध संसार में प्रकट होते हैं और उनका पुनर्जन्म योद्धा राजकुमारों या ब्राह्मणों के परिवार में होता है; मौन बुद्ध योद्धा राजकुमारों, ब्राह्मणों या धनी गृहस्थों में से किसी एक परिवार में जन्म लेते हैं; बुद्ध के श्रेष्ठ शिष्य बुद्ध के समान योद्धा राजकुमारों या ब्राह्मणों के परिवार में ही पुनर्जन्म लेते हैं। सभी बुद्ध संवत्तकप्पा में, विनाश के काल में, प्रकट नहीं होते; वे विकास के काल में, विवत्तकप्पा में प्रकट होते हैं। मौन बुद्ध भी ऐसा ही करते हैं। यद्यपि वे बुद्धों के प्रकट होने के समय प्रकट नहीं होते। बुद्ध स्वयं प्रबुद्ध होते हैं; वे दूसरों को भी प्रबुद्ध करते हैं। मौन बुद्ध स्वयं प्रबुद्ध होते हैं, परन्तु दूसरों को प्रबुद्ध नहीं करते । वे केवल अर्थ के सार में प्रवेश करते हैं, धम्म (सत्य का स्वरूप) के सार में नहीं । वास्तव में, वे पारलौकिक सत्य (लोकउत्तर धम्म) का उपदेश देने में सक्षम नहीं हैं, क्योंकि वे इसे अभिव्यक्तियों (पञ्जत्ति) पर आधारित (या उनके संदर्भ में) करते हैं। जैसे गूंगे को स्वप्न दिखाई देता है, जैसे वन में भटकने वाले को शहर में स्वादिष्ट करी का आनंद मिलता है, वैसे ही उन्हें सत्य की पूर्ण समझ (धम्मभिशमय) प्राप्त नहीं होती। सभी अलग-अलग उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं जैसे जादुई शक्ति, ध्यान की उपलब्धि (ज्ञान), और विश्लेषणात्मक ज्ञान (पटिसंभिदा)। गुणों में वे बुद्धों से नीचे हैं, लेकिन बुद्ध के शिष्यों से ऊपर हैं। वे किसी को दीक्षा नहीं देते और अच्छे व्यवहार के लिए अनुशासन (आभिसमाचारिक) लागू करते हैं। वे उपवास दिवस को संक्षेप में इस कथन से मनाते हैं: "मानसिक तपस्या करनी चाहिए। लापरवाही

नहीं करनी चाहिए," या केवल यह कहकर: 'आज उपवास दिवस (उपोसथ) है।' उपोसथा व्रत करते हुए, वे सुगंधित मंजूसक दिव्य वृक्ष की तलहटी में स्थित रत्नजड़ित पंडाल (माला) में एकत्रित होकर ऐसा करते हैं। इस प्रकार, प्रतापी बुद्ध ने आदरणीय आनंद को मौन बुद्धों की सिद्धि, आकांक्षाओं और प्रयासों के सर्वांगीण गुणों का वर्णन किया। इसके बाद, प्रतापी बुद्ध ने गैंडे के सींग पर प्रवचन (खग्गविसांसुत्त) की शुरुआत "सब्बेसु भूतेसु निधाव दण्डम, सभी प्राणियों के प्रति शस्त्र-छड़ी त्यागकर" से की, ताकि इस आकांक्षा और इस प्रयास के कारण उत्पन्न हुए अमुक मौन बुद्धों की कथा का वर्णन किया जा सके। यही गैंडे के सींग पर प्रवचन, खग्गविसांसुत्त का उद्‌गम है, सामान्यतः प्रश्न के कारण।

91.24. अब, इसे स्पष्ट रूप से कहा जाना चाहिए। इस श्लोक से उत्पत्ति को इस प्रकार समझा जाना चाहिए:- कहा जाता है कि मौन बोधिसत्व के क्षेत्र में लीन होकर, इस मौन बुद्ध ने दो असंख्य कालों से भी अधिक एक लाख कल्पों तक सिद्धियाँ प्राप्त कीं, बुद्ध कस्सपा के युग में भिक्षु बने, वनवासी बने और भिक्षु के कर्तव्य (समणधम्म) का पालन किया, जिसे 'गटपेच्चा-गतवत्त' कहा जाता है। कहा जाता है कि इस कर्तव्य का पालन किए बिना मौन बुद्धत्व प्राप्त करना संभव नहीं है। परन्तु इस गटपेच्चागतवत्त का नाम क्या है? यह लेना (हरण) और वापस लाना (पच्चाहरण) है। हम इसे इस प्रकार कहेंगे कि यह स्पष्ट हो जाए (विभूत)।

91.25. यहाँ, कोई भिक्षु लेता तो है पर वापस नहीं लाता; कोई वापस लाता है पर नहीं लेता; कोई न लेता है न वापस लाता है; कोई लेता भी है और वापस लाता भी है। वहाँ जो भी भिक्षु सबसे पहले उठकर बोधि वृक्ष के चारों ओर और चबूतरे पर पूजा-अर्चना करता है, बोधि वृक्ष पर जल छिड़कता है, पीने के पानी से पात्र भरता है, उसे पीने के आसन पर रखता है, अपने गुरु और आध्यात्मिक उपदेशक के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करता है (उपाज्जाया), और आगे बढ़ता है, विनय खंडक में वर्णित बयासी कर्तव्यों और चौदह प्रमुख कर्तव्यों का पालन करता है। उन्होंने शारीरिक स्नान करने के बाद मठ में प्रवेश किया, एकांत स्थान पर कुछ समय व्यतीत किया जब तक कि भिक्षा मांगने का समय नहीं आ गया। जब उन्हें पता चला कि समय आ गया है, तो उन्होंने अपना निचला वस्त्र पहना, उसे कमरबंद से बांधा, ऊपरी वस्त्र लपेटा, अपने धड़ पर दोहरा वस्त्र (संघाती) रखा, अपना भिक्षापात्र कंधे पर लटकाया और मंदिर परिसर में गए। मन में कर्माध्य साधना (कम्मत्ताना) करते हुए, उन्होंने मंदिर और बोधि वृक्ष को प्रणाम किया, गांव के पास विधिपूर्वक अपना वस्त्र पहना, हाथों में भिक्षापात्र धारण किया और भिक्षा मांगने के लिए गांव में प्रवेश किया। इस प्रकार प्रवेश करने पर, पुण्यवान भिक्षु को लाभ हुआ, और भक्तों द्वारा उन्हें आदरणीय और सम्मानित किया गया। वह परिवार के पास लौट आते, जो उनकी सेवा करते थे, या ध्यान के लिए हॉल में चले जाते, और जब उनके भक्त उनसे यह या वह प्रश्न पूछते, तो वे उनके प्रश्नों का उत्तर देने की परवाह किए बिना, धर्म के उपदेश की उलझन में उलझकर चले जाते। जब वे मठ लौटते, और भिक्षुओं द्वारा प्रश्न पूछे जाते, तो वे बोलते, धर्म का पाठ करते और किसी न किसी काम में लग जाते। दोपहर के भोजन के बाद, साथ ही रात के पहले और मध्य पहर में, भिक्षुओं के साथ इस प्रकार बहुत बातें करने के बाद, वे रात के अंतिम पहर में भी शारीरिक कमजोरी के कारण सो जाते; न ही वे अपने मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) पर ध्यान देते। ऐसे व्यक्ति को "हरति न पच्चाहरति" कहा जाता है, यानी वह लेता तो है, लेकिन वापस नहीं लाता।

91.26. जिस किसी को भी अत्यधिक कष्ट हो, सुबह जो कुछ भी उसने खाया हो, वह ठीक से पच न पाए; सुबह जल्दी उठकर वह अपने कर्तव्यों का पालन नहीं कर सका, न ही अपने मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) पर ध्यान दे सका; फिर भी, चावल का दलिया या कुछ खाने की इच्छा से, या दवा या भोजन की इच्छा से वह सुबह-सुबह ही अपना कटोरा और वस्त्र लेकर गाँव में प्रवेश करता है; वहाँ चावल का दलिया, या कुछ खाने की वस्तु, या दवा या भोजन प्राप्त करके, अपना कटोरा निकालता है, भोजन समाप्त करता है, अपने लिए तैयार की गई कुर्सी पर बैठता है, अपने मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) पर ध्यान देता है, मठ लौट आता है, चाहे वह ध्यान में किसी विशिष्ट विचार पर पहुँचा हो या न पहुँचा हो, और उसी मनन के साथ वहाँ रहता है। ऐसे व्यक्ति को "पच्चाहारति न हरति, वह वापस लाता है लेकिन लेता नहीं" कहा जाता है। बुद्ध के युग में ऐसे भिक्षु, जिन्होंने चावल का दलिया पीकर आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) प्राप्त की और अर्हतत्व प्राप्त किया, उनकी संख्या इतनी अधिक थी कि उनकी गणना करना असंभव हो गया। यहाँ तक कि सीहाला द्वीप (श्रीलंका) के इन और उन गाँवों में भी, आसनशाला में ऐसा कोई आसन नहीं है, जहाँ बैठे भिक्षुओं ने चावल का दलिया पीने के बाद अर्हतत्व प्राप्त न किया हो।

91.27. जो कोई भी अपने दायित्व का त्याग करके, अपने सभी कर्तव्यों का उल्लंघन करके, पाँच प्रकार की मानसिक बाधाओं से बंधे मन से, कभी भी अपने मानसिक अभ्यास में न तल्लीन होकर, गाँव में प्रवेश करता है और गृहस्थों के साथ बहुत बातचीत करने के बाद भी खाली हाथ लौटता है, उसे "नेवा हरति न पच्चाहरति" कहा जाता है, यानी वह न तो कुछ लेता है और न ही कुछ वापस लाता है।

91.28. जो कोई भी सबसे पहले उठकर, पहले की तरह सभी वस्त्र धारण करके, भिक्षा मांगने का समय आने तक पालथी मारकर बैठ जाता है और मानसिक साधना करता है (कम्मत्थाना)। मानसिक साधना दो प्रकार की होती है: एक सब कुछ से संबंधित (सब्बत्तक) और दूसरी संरक्षण (परिहार्य)। इसमें सर्वोत्कृष्ट प्रेम और मृत्यु का ध्यान है; वास्तव में इसे सर्वोत्कृष्ट कहा जाता है क्योंकि यह हर जगह

वांछनीय और आवश्यक है। प्रेम, अर्थात्, निवासों आदि में हर जगह वांछनीय है। वास्तव में, निवासों में, प्रेम से रहने वाला भिक्षु, साथ में श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करने वाले भिक्षुओं द्वारा प्रेम और प्रसन्न (मनपो) किया जाता है। इसी कारण वह किसी को क्रोधित किए बिना सुखमय जीवन व्यतीत करता है। जो व्यक्ति देवताओं के प्रति प्रेम भाव रखता है, वह देवताओं की शरण में रहकर सुखी जीवन व्यतीत करता है। जो व्यक्ति राजाओं और उनके महान मंत्रियों के प्रति प्रेम भाव रखता है, वह उनसे प्रेम पाकर सुखी जीवन व्यतीत करता है। जो व्यक्ति छोटे-बड़े सभी गांवों के प्रति प्रेम भाव रखता है, वह भिक्षा मांगने आदि कार्यों में भी सर्वत्र आदर और सम्मान पाकर सुखी जीवन व्यतीत करता है। मृत्यु का ध्यान लगाकर व्यक्ति जीवन की लालसा को त्यागकर लगन से जीवन व्यतीत करता है।

91.29. जो कुछ भी सदा संरक्षित रखा जाना चाहिए (परिहारितब्बा), उसे अनुकूल माना जाता है; अर्थात् दस अप्रिय वस्तुओं में से एक, कर्मत्स्थान में सहायक तत्वों का ध्यान रखना या यहाँ तक कि चार तत्वों (धातु) का विश्लेषण करना, इसे परिहार्य (संरक्षण) कहा जाता है, इस दृष्टि से कि सदा किसका पोषण किया जाना चाहिए, सदा किसकी रक्षा की जानी चाहिए और सदा किसका विकास किया जाना चाहिए। यही मूलभूत मानसिक अभ्यास (कर्मत्स्थान) है। वास्तव में, अच्छे परिवारों के पुत्र, जो कल्याण की इच्छा रखते थे, बुद्ध के युग में भिक्षु बने। वे दस, बीस, तीस, चालीस, पचास और सौ के समूह में एक साथ रहते थे, आपस में यह प्रतिज्ञा करके: "मित्रों! तुम सब भिक्षु इसलिए नहीं बने हो कि तुम ऋण से व्याकुल हो, न ही खतरे से परेशान हो, न ही जीविका कमाने के लिए, बल्कि तुम सब इस जीवन से मुक्ति पाने की इच्छा से भिक्षु बने हो। इसलिए, चलते समय जो दुराचार उत्पन्न हुआ था, उसे चलते समय भी रोको। खड़े, बैठे और लेटे हुए जो भी दुराचार उत्पन्न हुआ हो, उसे खड़े, बैठे या लेटे हुए ही रोक लो।"

91.30. इस प्रकार आपसी प्रतिज्ञा करके, वे भिक्षा मांगने के लिए निकलते हैं, तो हर आधे उशब या आधे गावत्र पर पथरीले पत्थर मिलते हैं। इस विचार के साथ वे अपने मन को कर्मत्त्व में लगाए रखते हुए आगे बढ़ते हैं। यदि किसी के मन में चलते समय कोई दुराचार उत्पन्न होता है, तो वह उसे वहीं रोक लेता है। ऐसा न कर पाने पर वह खड़ा हो जाता है। फिर, यद्यपि कोई दूसरा भिक्षु उसके पीछे से आता है, वह खड़ा ही रहता है। मन ही मन कहता है, "यह भिक्षु तुम्हारे मन में उत्पन्न हुए इस विचार को जानता है; यह तुम्हारे लिए उचित नहीं है," वह स्वयं को दोष देता है, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित करता है, और वहीं पर श्रेष्ठ (आर्य) भूमि पर उतरता है। ऐसा न कर पाने पर वह बैठ जाता है। फिर, यद्यपि कोई दूसरा भिक्षु उसके पीछे से आता है, वह बैठा ही रहता है; इस प्रकार वह ऐसा ही करता है। यदि वह श्रेष्ठ (आरिया) भूमि पर उतरने में असमर्थ भी हो, तो भी वह उस दुराचार को निष्क्रिय कर देता है और अपने मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) के प्रति सचेत रहते हुए आगे बढ़ता है। वह मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) से विमुख होकर अपना पैर नहीं उठाता। यदि वह पैर उठाता है, या उठा चुका है, तो वह वापस मुड़कर पहले वाले स्थान पर ही खड़ा हो जाता है। वह आलिन्दकवासी महाफुस्सदेवत्तेरा के समान है, जो आलिन्दक में रहने वाले महान थेरा फुस्सदेव थे।

91.31. कहा जाता है कि उन्होंने उन्नीस वर्षों तक केवल आने-जाने का कर्तव्य निभाते हुए निवास किया। लोग भी हल चलाते, बीज बोते और अपना काम करते हुए, थेरा को इस प्रकार जाते हुए देखकर आपस में कहने लगे, “यह थेरा बार-बार जाते हुए दिखाई देते हैं। क्या वे सचमुच अपना मार्ग भटक गए हैं? या फिर वे कुछ भूल गए हैं?” उन्होंने इस पर ध्यान नहीं दिया, बल्कि एक भिक्षु के कर्म (धम्म) का पालन करते रहे, अपने मन को मानसिक साधना (कम्मत्थाना) में लगाए रखा और बीस वर्षों के भीतर अर्हतत्व प्राप्त कर लिया। जिस दिन उन्होंने अर्हतत्व प्राप्त किया, उसी दिन उनके आश्रम के अंतिम छोर पर विराजमान देवता ने अपनी उंगलियों से दीपक जलाया। चारों महान देवराज, देवों के राजा सक्का और ब्रह्मा सहमपति उनकी सेवा में उपस्थित हुए। उस प्रकाश को देखकर वनवासी थेरा महातिस्सा ने दूसरे दिन उनसे पूछा, "रात में आपके पास प्रकाश था; वह क्या है?" भ्रम पैदा करते हुए थेरा ने कहा, "प्रकाश, अर्थात्, दीपक का प्रकाश हो सकता है; यह रत्न का प्रकाश भी हो सकता है" इत्यादि। जब उनसे कहा गया कि "आपको इसे ढक देना चाहिए", तो उन्होंने "हाँ" कहकर उनकी बात मान ली और उन्हें सूचित किया।

91.32. कालवल्लीमण्डपवासी महानागथेरा के समान, थेरा महानाग, जो कालवल्ली (काली लता) के मंडप में निवास करते थे। कहा जाता है कि उन्होंने भी आने-जाने का कर्तव्य निभाते हुए, सात वर्षों तक खड़े होकर और इधर-उधर चलकर समय बिताने का संकल्प लिया और कहा: "सबसे पहले, अब मैं महापधान के लिए अपना आदर अर्पित करूँगा।" फिर, सोलह वर्षों तक उन्होंने आने-जाने का कर्तव्य निभाया और अर्हतत्व प्राप्त किया। इस प्रकार गाँव के आसपास जाकर, अपने मन को मानसिक अभ्यास (कम्मत्थान) में लगाकर, पैर उठाकर और फिर मन को विवश करके, पैर वापस रखते हुए, वे अपने संदेह के संकेत के रूप में खड़े हुए: 'क्या गाय सचमुच बाहर चली गई है?' क्या सचमुच ऐसा है?” उन्होंने अपना दोहरा वस्त्र पहना, अपना कटोरा लिया, गाँव के द्वार पर पहुँचे, अंजीर के पेड़ के भीतर से पानी लिया, एक घूँट पिया और यह सोचते हुए गाँव में प्रवेश किया: “जब लोग मेरे पास भिक्षा देने या मुझे प्रणाम करने के लिए आएँ, तो चाहे मुझे केवल इतना ही कहना पड़े: 'आप सभी दीर्घायु हों', मेरे मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) में कोई कमी न हो।” यदि वे उनसे तिथि के बारे में इस प्रकार पूछें: “आदरणीय महोदय! आज क्या तिथि है? सातवीं है या आठवीं?” तो वे पानी पीकर

उन्हें तिथि बता देते। यदि तिथि के बारे में कोई प्रश्नकर्ता न हो, तो गाँव छोड़ते समय वे गाँव के द्वार पर पानी थूक देते और अपने मार्ग पर चल पड़ते।

91.33. सीहाला द्वीप (सीलोन) में, लगभग पचास भिक्षुओं ने, जिन्होंने अपना व्रत (वस्सूपागत) कोलंबो के स्नान घाट कलाम्बा तीर्थ मठ में बिताया, कहा जाता है कि उन्होंने वर्षा से बचने और व्रत रखने के उपोसथ (उपोसथ) के दिन आपस में यह वचन लिया: "हम अर्हतत्व प्राप्त किए बिना एक-दूसरे से बात नहीं करेंगे।" गाँव में प्रवेश करते समय भी, उन्होंने गाँव के द्वार पर अपने मुँह पानी से भर लिए। जब उनसे तिथि के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने मुँह का पानी निगलकर तिथि बताई। जब नहीं पूछा गया, तो उन्होंने गाँव के द्वार पर पानी थूक दिया और अपने मठ चले गए। वहाँ के लोगों ने थूक के निशान देखकर यह जान लिया: "आज केवल एक आया था; आज दो।" इस तरह भी उन्होंने सोचा, “यह कैसी बात है कि ये भिक्षु हमसे या आपस में भी बात नहीं करते? यदि वे आपस में बात नहीं करते, तो अवश्य ही वे किसी विवाद में हैं। आओ! हम उन्हें आपस में क्षमा मांगवाते हैं।” वे सब मठ गए। वहाँ उन्होंने पचास भिक्षुओं में से, जो उपवास कर रहे थे, एक भी दो भिक्षु एक ही स्थान पर नहीं देखे। इसके बाद, उनमें से एक दूरदर्शी ने कहा, “हे मित्रों! विवाद करने वालों का निवास स्थान ऐसा नहीं है; पैगोडा का परिसर और बोधि वृक्ष के चारों ओर का क्षेत्र अच्छी तरह समतल है; झाड़ू का सही उपयोग किया गया है और उन्हें दूर रखा गया है; प्यास बुझाने के लिए पीने का पानी पात्र में ठीक से रखा गया है।” इसके बाद वे धीरे-धीरे चले गए। उन भिक्षुओं ने भी उपवास के दौरान आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की, अर्हतत्व प्राप्त किया, और आलोचना के महान निमंत्रण (पवारना) के दिन, उन्होंने पारस्परिक आलोचना (विशुद्धि-पवारना) का स्वच्छ और शुद्ध समारोह आयोजित किया।

91.34. इस प्रकार, कालवल्लीमण्डपा में निवास करने वाले महानाग की तरह, और कलांबतीत्त मठ में उपवास रखने वाले भिक्षुओं की तरह, गाँव के आसपास जाकर, मन को चिंतन में लीन रखते हुए, एक घूँट पानी पीकर, गाँव की सड़कों का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करते हुए, जिस भी सड़क पर हाथी, घोड़े आदि जैसे हिंसक जानवर न हों, उस सड़क पर वे चल पड़ते थे। वहाँ भिक्षा माँगते समय वे जल्दबाजी नहीं करते थे; क्योंकि धुतंग जैसा कोई कठोर अभ्यास नहीं था, जिसमें भिक्षा जल्दी माँगने का नियम हो। फिर भी, जब वे किसी ऊबड़-खाबड़ भूमि पर पहुँचते थे, तो वे पानी से भरी गाड़ी की तरह स्थिर और बिना काँपे चलते थे। जब वह गाँव में घर-घर जाकर प्रवेश करता, तो वह कुछ समय तक रुकता ताकि दानदाता का पता लगा सके, दान देने की इच्छा का पता लगा सके, भिक्षा ग्रहण कर सके, किसी उपयुक्त स्थान पर बैठ सके, भोजन के प्रति अरुचि उत्पन्न कर मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) कर सके, आठ गुणों से युक्त भोजन ग्रहण कर सके और उसका उदाहरण देते हुए उस पर चिंतन कर सके, जिसमें धुरी को टूटने से बचाने के लिए चिकनाई लगाना, घाव पर मरहम लगाना और घाव के घाव की मालिश करना शामिल था। यह सब वह मनोरंजन के लिए या नशे के लिए नहीं करता था। भोजन करने के बाद, वह पानी से स्नान करता, भोजन की थकान को क्षण भर के लिए दूर करता और भोजन के बाद, रात के पहले और आखिरी पहर में, ठीक उसी तरह मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) करता जैसे भोजन से पहले करता था। इसे "हरति च पच्चाहरति च" कहा जाता है, यानी वह लेता है और वापस लाता है। इस प्रकार इसे "ले जाने और वापस लाने का कर्तव्य और जाने और वापस आने का कर्तव्य" कहा जाता है।

91.35. यदि वह इन शर्तों को पूरा करता है और उसमें अर्हत पद के लिए पर्याप्त योग्यता है, तो वह अपने जीवन के प्रथम चरण में ही अर्हत पद प्राप्त कर लेगा। यदि वह अपने जीवन के प्रथम चरण में अर्हत पद प्राप्त नहीं कर पाता है, तो वह अपने जीवन के मध्य चरण में अर्हत पद प्राप्त करेगा। यदि वह अपने जीवन के मध्य चरण में भी अर्हत पद प्राप्त नहीं कर पाता है, तो वह अपनी मृत्यु के समय अर्हत पद प्राप्त करेगा। यदि वह अपनी मृत्यु के समय भी अर्हत पद प्राप्त नहीं कर पाता है, तो वह एक मौन बुद्ध बन जाएगा और पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर लेगा। यदि वह मौन बुद्ध बनने के बाद भी पूर्णतः निर्वाण प्राप्त नहीं कर पाता है, तो वह थेरा बाहिया के समान बुद्धों की उपस्थिति में उच्च ज्ञान का शीघ्र ज्ञाता बन जाएगा, या वह थेरा सारिपुत्त के समान अत्यधिक विद्वान बन जाएगा।

मौन बुद्ध का उदय

91.36. यह मौन बोधिसत्व बुद्ध कश्यप के युग में भिक्षु बन गए, वन में निवास किया, बीस वर्षों तक आने-जाने का यह कर्तव्य निभाया, मृत्यु को प्राप्त हुए और कामावकारदेव के स्वर्गलोक में अवतरित हुए। वहाँ से विदा होकर उन्होंने बनारस के राजा की प्रधान रानी के गर्भ में गर्भ धारण किया। कुशल स्त्रियाँ गर्भावस्था के दिन ही अपनी स्थिति जान लेती हैं; वह और अन्य स्त्रियाँ भी ऐसा ही करती थीं; इसलिए उन्होंने राजा को अपनी गर्भावस्था के बारे में सूचित किया। यह प्रथा है। जब भी किसी स्त्री के गर्भ में कोई पुण्यमय प्राणी जन्म लेता है, तो उसे गर्भावस्था की उचित सुरक्षा प्रदान की जाती है। इसलिए राजा ने उनकी गर्भावस्था को हर तरह से उचित सुरक्षा प्रदान की। उस दिन से ही उन्होंने न तो कोई अत्यधिक गर्म, न ही अत्यधिक कड़वा और न ही अत्यधिक तीखा भोजन ग्रहण किया। वास्तव में, जब कोई गर्भवती महिला अत्यधिक गर्म भोजन ग्रहण करती है, तो गर्भावस्था के दौरान ऐसा लगता है जैसे वह उबलते तांबे के बर्तन में

रह रही हो। यदि बहुत ठंड हो तो ऐसा लगता है मानो लोकांत्रिक अवस्था में रह रहे हों; जब बहुत खट्टा, नमकीन, कड़वा और तीखा भोजन किया जाता है, तो गर्भस्थ शिशु के अंगों में तेज दर्द होता है, मानो उन्हें चाकू से चीर कर खट्टा तरल पदार्थ छिड़क दिया गया हो। गर्भवती महिला को बहुत अधिक चलने-फिरने, खड़े होने, बैठने और लेटने से मना किया जाता है और कहा जाता है: "गर्भ में शिशु को कंपकंपी का दर्द न हो।" गर्भवती महिला को नरम बिछी हुई ज़मीन पर थोड़ा-बहुत चलने-फिरने की अनुमति होती है। वह अपनी पसंद का और स्वादिष्ट भोजन और पेय ले सकती है। केवल एक सहायक के सहारे ही उसे चलने-फिरने, बैठने और उठने की अनुमति होती है।

91.37. इस प्रकार सभी प्रकार से देखभाल प्राप्त करने के बाद, गर्भावस्था के पूर्ण परिपक्व होने पर वह प्रसूति कक्ष में प्रवेश कर गई और भोर होते ही उसने एक पुत्र को जन्म दिया, जो मन को शीतलता प्रदान करने वाले पत्थर (मनोशीला) के ढेले के समान था, मानो उसे तेल में भिगोकर दबाया गया हो, और वह अन्न-संपत्ति और पुण्य के गुणों से परिपूर्ण था। इसके बाद पाँचवें दिन उसे उचित वस्त्रों और अलंकरणों के साथ राजा के समक्ष प्रस्तुत किया गया। राजा उससे अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने अपने पुत्र की देखभाल के लिए छियासठ दाइयों को नियुक्त किया। सभी प्रकार के विलासितापूर्ण जीवन में पलते-बढ़ते वह शीघ्र ही बुद्धिवान हो गया। राजा ने सोलह वर्ष की आयु में उसका राज्याभिषेक किया; उसकी सेवा में अनेक प्रकार की नर्तकियाँ भी उपस्थित रहती थीं। राज्याभिषेक प्राप्त युवा राजा ब्रह्मा-दत्त के नाम से संपूर्ण जंबूद्वीप में, बीस हजार नगरों में फैले अपने राज्य पर शासन करता था। कहा जाता है कि पूर्व में चौरासी लाख नगर थे। जब उनकी संख्या घटी तो साठ (एक लाख) रह गई, फिर जब उनकी संख्या दोबारा घटी तो चालीस रह गई। लेकिन पूर्णतः घटने के समय बीस हजार रह गए थे। यह राजा ब्रह्मदत्त पूर्णतः घटने के समय ही सत्ता में आया था। इसलिए, बीस हजार नगर, बीस हजार महल, बीस हजार हाथी, बीस हजार घोड़े, बीस हजार रथ, बीस हजार पैदल सैनिक, बीस हजार महिलाओं के हरम, नर्तकियां और बीस हजार मंत्री थे।

91.38. एक महान सम्राट के रूप में शासन करते हुए, उन्होंने ध्यान के विषयों के साथ ध्यान का अभ्यास किया और पाँच प्रकार के उच्च ज्ञान (अभिज्ञा) और ध्यान में आठ प्रकार की सिद्धियाँ (समापत्ति) प्राप्त कीं। क्योंकि राज्याभिषेक प्राप्त सम्राट को मुकदमों का फैसला करने के लिए अदालत में उपस्थित रहना आवश्यक था, इसलिए एक दिन उन्होंने अपना सुबह का भोजन सामान्य से बहुत पहले किया और फैसले के लिए अदालत में बैठ गए। वहाँ एक बहुत शोरगुल हुआ। राजा ने मन ही मन कहा, "यह शोर ध्यान में सिद्धि में बाधक है," और अपने महल के तल पर ऊपर गए और ध्यान में सिद्धि (समापत्ति) प्राप्त करने के लिए बैठ गए। इसके बाद वे सोचते रहे, "कैसे? कौन सा बेहतर है? संप्रभुता या भिक्षु का धर्म?" इसके बाद उन्हें यह ज्ञान हुआ: "एक सम्राट का आनंद सूक्ष्म और दोषों से भरा होता है; जबकि भिक्षु के धर्म का सुख समृद्ध और अनेक लाभों से भरपूर होता है, और इसमें अत्यंत उत्तम लोग भी भागीदार होते हैं। उन्होंने एक मंत्री को आदेश दिया, "तुम इस राज्य का प्रशासन न्याय और निष्पक्षता से करो; किसी को भी किसी प्रकार का अन्याय न करने दो।" उस मंत्री को संपूर्ण प्रशासन सौंपकर वे महल में चले गए और अपनी उपलब्धि के सुख का आनंद लेते हुए ध्यान (समापत्ति) में समय व्यतीत किया। उनके लिए स्नानारण जल, दंत-कढ़ाई, भोजन आदि लाने और देने वालों के अलावा किसी को भी उनके निकट जाने की अनुमति नहीं थी।

91.39. इसके बाद जब लगभग आधा महीना बीत गया, तो मुख्य रानी ने इस प्रकार पूछा: "राजा राजमहल में शक्ति प्रदर्शन (सैन्य परेड), नृत्य प्रदर्शन आदि देखने नहीं जाते; वे कहाँ चले गए हैं?" उन्हें इस मामले की सूचना दी गई। उन्होंने मंत्री को बुलवाया और कहा, "जब आपने संप्रभुता ग्रहण की, तो इसका अर्थ है कि मुझे भी ग्रहण कर लिया गया है; उन्हें आने दें और मेरे साथ सहवास करें।" मंत्री ने अपने दोनों कान ढँक लिए और यह कहते हुए उनका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया: "यह सुनने योग्य नहीं है।" फिर भी उन्होंने मंत्री को दो-तीन बार बुलवाया और उनकी अनिच्छा के लिए उन्हें धमकी दी: "यदि तुम मेरी इच्छा के अनुसार नहीं करोगे, तो मैं तुम्हें तुम्हारे पद से हटा दूँगी और तुम्हारा जीवन भी छीन लूँगी।" वह डर गया और बोला: "एक स्त्री, अर्थात्, दृढ़ निश्चयी होती है; कभी न कभी वह मुझे इस तरह कष्ट दे सकती है। एक दिन मंत्री चुपके से गया और उसके शाही पलंग पर उसके साथ सहवास किया। वह गुणों से परिपूर्ण थी और उसका स्पर्श आनंदमय था। मंत्री उसके प्रति आसक्ति से आकर्षित होकर बार-बार संशय और चिंता के साथ उसे छूने लगा। धीरे-धीरे वह बिना किसी संशय के उसके शयनकक्ष में प्रवेश करने लगा, मानो वह स्वयं उसके घर का स्वामी हो।

91.40. तब राजसी सेवकों ने राजा को इस बात की सूचना दी। राजा ने इस पर विश्वास नहीं किया। दूसरी और तीसरी बार भी उन्होंने राजा को इस बारे में बताया। बाद में राजा ने घात लगाकर बैठे हुए स्वयं यह सब देखा, सभी मंत्रियों को इकट्ठा किया और उन्हें इस बारे में बताया। मंत्रियों ने कहा, "इस राजसी अपराधी के हाथ काट दिए जाने चाहिए; इसके पैर काट दिए जाने चाहिए" और इसे सूली पर चढ़ाने तक की सजा दी जानी चाहिए। राजा ने कहा, "इसे कोड़े मारना, बांधना और चाबुक मारना मेरे लिए इसके साथ दुर्व्यवहार करने के समान होगा; इसकी जान लेना मेरे लिए हत्या का पाप होगा; इसकी संपत्ति जब्त करना मेरे लिए चोरी का पाप होगा; इस तरह की सजाएँ

देना बंद करो; इस मंत्री को मेरे राज्य से बाहर निकालो।" मंत्रियों ने उसे निर्वासित कर दिया। वह अपनी सारी संपत्ति, पत्नी और बच्चों को लेकर एक विदेशी राज्य में चला गया। वहाँ उस देश के राजा को उसके आने की सूचना मिली और उसने पूछा कि वह क्यों आया है। उसने उत्तर दिया, "महाराज! मैं आपकी सेवा करना चाहता हूँ।" उस राजा ने उसे स्वीकार कर लिया। कुछ दिनों के भीतर, मंत्री को राजा का अनुग्रह प्राप्त हो गया और उसने राजा से कहा, "हे महाराज! मुझे बिना मधुमक्खियों वाला शहद मिला है; इसका आनंद लेने वाला कोई नहीं है।" राजा ने उसकी बात अनसुनी करते हुए कहा, "तुम ऐसा मज़ाक उड़ाने के लिए क्यों कह रहे हो?" मौका पाकर उसने फिर से वही बात कही, इस बार और भी विस्तार से। राजा ने पूछा, "यह क्या है?" मंत्री ने उत्तर दिया, "महाराजा, बनारस का राज्य!" राजा ने पूछा, "तुम मुझे वहाँ ले जाकर क्यों मारना चाहते हो?" उसने उत्तर दिया, "महाराजा! कृपया ऐसा न कहें; यदि आपको मुझ पर विश्वास नहीं है, तो कृपया अपने आदमियों को भेज दें।" राजा ने अपने आदमियों को वहाँ भेजा। वे वहाँ गए, शहर का द्वार खोदकर उसे राजमहल में सोने के लिए लगा दिया।

91.41. राजा ने यह देखा और पूछा, “यह किसने किया है?” चोरों ने कहा कि यह उनका काम है। राजा ने उन्हें धन देकर कहा, “फिर कभी ऐसा मत करना।” उन्हें चेतावनी देकर राजा ने उन्हें मुक्त कर दिया। वे वापस गए और अपने राजा को इस मामले की सूचना दी। राजा ने फिर उसी तरह से दो-तीन बार जाँच-पड़ताल की और आश्वस्त हो गया कि बनारस का राजा सदाचारी है। उसने अपनी चार गुना सेना जुटाई, बनारस की सीमा के भीतर एक नगर में पहुँचा और वहाँ से एक दूत को यह चेतावनी देकर भेजा, “या तो नगर दो या युद्ध।” दूत ने राजा ब्रह्मदत्त को इस बारे में सूचित करते हुए कहा, “महाराज, आदेश दें कि युद्ध दिया जाए या नगर।” राजा ने दूत को वापस भेज दिया, “युद्ध न हो; नगर दे दो और वापस आ जाओ।” दूत ने वैसा ही किया। प्रतिद्वंद्वी राजा ने भी उस नगर पर कब्जा कर लिया और शेष नगरों में भी उसने उसी तरह दूत भेजे। उन मंत्रियों ने भी राजा ब्रह्मदत्त को उसी प्रकार सूचित किया और जब उनके राजा ने आदेश दिया: "युद्ध नहीं लड़ा जाना चाहिए; उन्हें भी बनारस शहर आना चाहिए," तो वे सभी बनारस लौट गए।

91.42. अतः मंत्रियों ने राजा ब्रह्मदत्त से कहा, “हे महाराज! हम उससे युद्ध करना चाहते हैं।” राजा ने उन्हें यह कहकर मना किया, “ऐसा करने से मेरे ऊपर वध का पाप लगेगा।” मंत्रियों ने अनेक प्रकार से राजा को मनाते हुए कहा, “हे महाराज! हम उसे जीवित पकड़कर यहीं लाएँगे; कृपया आइए, हे महाराज!” और वे चल पड़े। राजा ने उनसे कहा, “यदि तुम सब लूटपाट, मारपीट और प्राणियों की हत्या नहीं करोगे, तो मैं चला जाऊँगा।” मंत्रियों ने उत्तर दिया, “महाराज! हम ऐसा नहीं करेंगे, हम उन्हें उनका खतरा दिखाएँगे और उन्हें भगा देंगे।” उन्होंने अपनी चार प्रकार की सेना तैयार की, कलशों में जलते दीपक रखे और रात में निकल पड़े। उस दिन प्रतिद्वंद्वी राजा ने बनारस के पास एक शहर पर कब्जा कर लिया और मन ही मन सोचने लगा, "अब क्या? अब!", उसने अपने कवच उतार दिए और अपनी विशाल सेना के साथ लापरवाही से सो गया। इसके बाद, मंत्री राजा ब्रह्मदत्त को लेकर प्रतिद्वंद्वी राजा के शिविर (खंडावर) में गए, कलशों से जलते हुए दीपक निकाले, एक चमकदार प्रकाश का समूह बनाया और जोर-जोर से जयघोष किया। प्रतिद्वंद्वी राजा के मंत्री ने विशाल सेना को देखकर भयभीत होकर अपने राजा के पास जाकर जोर से कहा, "कृपया उठिए और बिना मक्खियों वाला शहद खाइए।" दूसरे और तीसरे मंत्री ने भी ऐसा ही किया। उस आवाज से प्रतिद्वंद्वी राजा जाग उठा और खतरे और यातना का सामना करना पड़ा। सैकड़ों जयघोष हुए। प्रतिद्वंद्वी राजा पूरी रात उलझन में इधर-उधर की बातें करता रहा और कहता रहा, "दूसरे की बात मानकर मैं अब शत्रु के हाथ में पहुँच गया हूँ।" अगले दिन उसने सोचा, “धर्मी राजा कोई विनाश नहीं करेंगे, मैं जाकर उनसे क्षमा मांगूंगा।” वह राजा के पास पहुंचा, घुटनों के बल बैठ गया और बोला, “हे महान राजा! कृपया मेरे अपराध को क्षमा कर दीजिए।” राजा ने उसे डांटते हुए कहा, “उठो, मैं तुम्हें क्षमा करता हूं।” राजा के ऐसा कहते ही वह अत्यंत राहत महसूस करने लगा और उसे बनारस के राजा के पड़ोस में एक जिले की संप्रभुता प्राप्त हो गई।

91.43. तब राजा ब्रह्मदत्त ने दोनों सेनाओं को सौहार्दपूर्ण एकता में खड़े देखकर यह कहा: "अपने एकाकी मन की रक्षा के कारण, इस विशाल सशस्त्र सेना में एक बूंद भी रक्त नहीं बहा है, यहाँ तक कि एक छोटी मक्खी के पीने योग्य भी नहीं। अद्‌भुत! अद्‌भुत! सभी प्राणी सुखी हों! वे शत्रुता से मुक्त हों! वे हानि से मुक्त हों।" इसके बाद उन्होंने प्रेम और करुणा का सफल ध्यान (झान) किया और उसी ध्यान को आधार बनाकर कर्मों का अध्ययन (संस्कार) किया, मौन बुद्धत्व के ज्ञान की कल्पना की और स्वयंभू, एक आत्मनिर्भर मौन बुद्ध की अवस्था प्राप्त की। अपने राजसी हाथी की पीठ पर विराजमान, धर्म के मार्ग और उसके फल की प्राप्ति के आनंद में डूबे उस राजा को, मंत्रियों ने प्रणाम करते हुए कहा: “हे महाराज! विजयी सेना के जाने का समय हो गया है; उसे व्यक्तिगत सम्मान दिया जाना चाहिए; पराजित सेना को भोजन-सामग्री दी जानी चाहिए।” राजा ने उत्तर दिया: “हे मंत्रियों! मैं अब राजा नहीं हूँ; मुझे मौन बुद्ध के रूप में जाना जाना चाहिए।” मंत्रियों ने उत्तर दिया: “महाराज, आप क्या कहते हैं? मौन बुद्ध ऐसे नहीं होते।” राजा ने पूछा: “मेरे प्रिय मित्रों! "मौन बुद्ध कैसे दिखते हैं?" उनका उत्तर था: "मौन बुद्ध दो उंगली के बराबर बाल और दाढ़ी वाले होते हैं और आठ आवश्यक तत्वों (परिक्खारा) से सुसज्जित होते हैं।" उन्होंने अपने दाहिने हाथ से अपना सिर रगड़ा; उसी क्षण उनका गृहस्थ रूप गायब हो गया; एक भिक्षु का रूप प्रकट

हुआ। वे सौ वर्ष के थेरा के समान हो गए, जो आठ आवश्यक तत्वों से सुसज्जित थे और दो उंगली के बराबर बाल और दाढ़ी धारण किए हुए थे। उन्होंने चौथे ध्यान में प्रवेश किया, हाथी की पीठ से आकाश में गए और कमल पर बैठ गए। मंत्रियों ने उनका प्रणाम किया और पूछा: "आदरणीय महोदय! मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) क्या है?" आपने इसे कैसे प्राप्त किया?: उन्होंने उत्तर दिया: "चूंकि मेरे लिए प्रेम और करुणा के ध्यान का मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) था, इसलिए मैंने इसे अपनी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से स्पष्ट रूप से देखने का प्रयास किया और इसे प्राप्त किया।" अतः, उस विषय को प्रदर्शित करने के लिए उन्होंने आनंदमय वाणी और व्याख्यात्मक वाणी दोनों का पाठ किया और यही श्लोक बोला: "सब्बेसु भूतेसु निधाय दण्डम्, सभी प्राणियों के प्रति लाठी-हथौड़ा त्याग दो।"

91.44. यहाँ सब्बेसु का अर्थ है, बिना किसी शेष के पूर्णतः; भूतेसु का अर्थ है, सजीव प्राणियों में। यह संक्षेप में है। हालाँकि, इसका विस्तृत वर्णन हम रत्नसूत्र की व्याख्या, तीन रत्नों पर प्रवचन में करेंगे। निधाय का अर्थ है नीचे फेंक देना। दंड शरीर, वाणी और मन का हथियार है; यह शारीरिक दुराचार आदि की अभिव्यक्ति है। वास्तव में, शारीरिक दुराचार को एक हथियार (दण्ड) के रूप में समझा जाना चाहिए, क्योंकि यह दंड देता है; यह एक लाठी का हथियार है क्योंकि यह दुर्भाग्य और कष्ट पहुँचाता है। इसी प्रकार मौखिक दुराचार और मानसिक दुराचार भी हैं। प्रहार करने वाली लाठी स्वयं एक लाठी का हथियार है। कथन इस प्रकार भी है: इसे नीचे गिरा देना। अविहेतवम् का अर्थ है परेशान न करना। अञ्ञतर्म् का अर्थ है, कोई भी व्यक्ति, यहाँ तक कि एक अकेला भी। तेसम का अर्थ है सभी जीवित प्राणियों के लिए। नापुत्तमिचेय्या का अर्थ है कि इन चार प्रकार के पुत्रों में से किसी भी पुत्र की इच्छा नहीं करनी चाहिए: स्वयं की संतान, अपने देश में जन्मा पुत्र, उपहार में मिला पुत्र, दूसरों द्वारा दिया गया पुत्र और घर में रहने वाला शिष्य पुत्र। कुतोसहावम् का अर्थ है: यदि कोई कहे कि साथी वांछनीय है, तो वह साथी कहाँ से आएगा?

91.45. इसे इस प्रकार समझा जाना चाहिए: एक संन्यासी के रूप में गिनने पर वह एकाकी, बिलकुल अकेला है; वह एकाकी इसलिए है क्योंकि उसका कोई दूसरा साथी नहीं है; वह एकाकी इसलिए है क्योंकि उसने तृष्णा (तन्हा) का त्याग कर रखा है; वह एकाकी इसलिए है क्योंकि वह निश्चय ही दुराचार (किलेसा) से रहित है; वह एकाकी इसलिए है क्योंकि वह एकाकी मौन बुद्ध बनकर पूर्णतः प्रबुद्ध हो गया है; वह एकाकी इसलिए है क्योंकि उसने गृहस्थ जीवन के बंधनों को तोड़ दिया है, भले ही वह वास्तव में हजारों भिक्षुओं के बीच विचरण करता हो। इस प्रकार वह एकाकी है, एक संन्यासी के रूप में गिने जाने पर वह अकेला है, पब्बज्जसमखातेन। वह अकेला खड़ा रहता है; वह अकेले चलता है; वह अकेले बैठता है; वह अकेले लेटता है। बिलकुल अकेला ही वह चलता-फिरता और कार्य करता है; इस प्रकार, वह अपने एकाकी होने के कारण अकेला है, अदुतियात्तेन।

बार-बार पुनर्जन्मों के चक्कर में भटकते हुए, इच्छाओं की लालसा में डूबा हुआ।
(तन्हा), दूसरे आदमी का, और कोई नहीं
पुनर्जन्मों के चक्र को पार करना जिसमें शामिल हैं
यह अस्तित्व और दूसरा अस्तित्व।
इस हानि को जानते हुए भी लालसा और इच्छा में कमी आती है।
(तन्हा), दुःख (दुक्खा) का कारण है।
एक भिक्षु को सर्वांगीण त्याग कर स्वयं ही सभी प्रकार के बंधनों का त्याग करना चाहिए।
लालसा और इच्छा से मुक्त, (taṇhā), बिना
इसे अपनाना और सचेत रहना।

इस प्रकार, वह भोग-विलास (तन्हा) के त्याग से एकाकी हो जाता है, तन्हापहानत्थेन। इस प्रकार, वह एकाकी है: एकांतविगत किलेष, निश्चय ही दुराचार से मुक्त होकर, वह ऐसा है जिसने समस्त दुराचार को त्याग दिया है, समस्त दुराचार को जड़ से काट दिया है, ताड़ के पेड़ के ठूंठ के समान समस्त दुराचार को इस प्रकार मिटा दिया है कि वे भविष्य में पुनः उत्पन्न न हो सकें। वह एकाकी है: एको पच्चेक सम्बोधिम अभिसंबुद्धो, एकाकी मौन बुद्ध बनकर, इस प्रकार बिना गुरु के, वह आत्म-निर्भर हो जाता है; (सयम्भु), वह स्वयं ही उच्चतर और पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके मौन बुद्ध बन जाता है।

91.46. 'देखभाल' अभिव्यक्ति से इस प्रकार समझा जाना चाहिए:- ऐसे आठ प्रकार के व्यवहार, अर्थात्: आत्म-संकल्प (पाणिधि) से संपन्न लोगों की चार गतिशील मुद्राएँ (इरियापथ), गतिशील मुद्रा का व्यवहार (इरियापथ); इंद्रियों पर नियंत्रण रखने वाले लोगों के छह आंतरिक इंद्रियों में से इंद्रियों का व्यवहार (इंद्रिय); लगन से रहने वाले लोगों की चार सचेतनता की अवस्थाओं में से जागरूकता का व्यवहार; मन को स्थिर करने वाले लोगों के चार ध्यानों में से ध्यान का व्यवहार (अधिचित्त); ज्ञान से संपन्न लोगों के चार आर्य सत्यों में से ज्ञान का व्यवहार; सही अभ्यास में प्रवेश करने वाले लोगों के चार आर्य सत्यों में से मार्ग का व्यवहार (मार्ग); भिक्षुत्व के चार फलों में से फल प्राप्ति का व्यवहार (फल); सभी जीवों में, तीन प्रकार के बुद्धों में से, लोक के कल्याण के लिए आचरण करना सर्वोपरि है; मौन बुद्धों

और बुद्ध के शिष्यों का भी यही अंश है। तदनुसार, हम कहते हैं: "चरीय, आचरण का अर्थ है आठ प्रकार के आचरण, जिनमें चलने-फिरने की मुद्रा भी शामिल है।" व्यक्ति को इन आचरणों से परिपूर्ण होना चाहिए; यही इसका अर्थ है। दूसरे शब्दों में, इन आचरणों को विशेष रूप से भलीभांति जानकर, व्यक्ति श्रद्धा (सद्धा) से आचरण करता है; इन्हें ऊपर उठाकर परिश्रम से आचरण करता है; इन पर ध्यान देकर सचेतनता से आचरण करता है; विचलित न होकर ध्यान से आचरण करता है; आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से जानकर ज्ञान से आचरण करता है; इस प्रकार अभ्यास में संलग्न होकर, व्यक्ति विशिष्टता प्राप्त करता है; इस प्रकार, वह विशिष्टता के आचरण के लिए आचरण करता है; इस प्रकार, अन्य आठ आचरणों का भी उल्लेख किया गया है। व्यक्ति को इन आचरणों से भी परिपूर्ण होना चाहिए; यही इसका अर्थ है। अभिव्यक्ति: खग्गविसानकप्पो को इस प्रकार समझा जाना चाहिए:- यहाँ गैंडे का सींग, अर्थात् खग्गमिगा नामक छुरीनुमा जानवर का सींग है। मंगल-सूत्र की व्याख्या में मैं कप्पा शब्द के अर्थ को विस्तार से स्पष्ट करूँगा। यद्यपि यहाँ, इस समानता को इस संदर्भ में समझा जाना चाहिए: "अरे! ऐसा कहा जाता है कि गुरु के समान दिखने वाले शिष्य से परामर्श करना" इत्यादि। इस प्रकार, खग्गविसानकप्पो को खग्गविसानसादिसो अभिव्यक्ति के समान माना जाता है, जो गैंडे के सींग के समान है। यहाँ तक, व्याख्या शब्दशः यही है।

91.47. क्रमानुसार अर्थ को इस प्रकार समझा जाना चाहिए:- उक्त हथियार को जीवों पर चलाने से कोई लाभ नहीं होता; उस हथियार को जीवों पर न चलाने से, उसके विपरीत प्रेम भाव से, और दूसरों का भला करने से, ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति ने अपने हथियार को सभी जीवों के प्रति हानिरहित रूप से त्याग दिया है; हथियार त्याग दिए जाने के कारण, व्यक्ति उन प्राणियों की तरह उत्पीड़न नहीं करेगा, जिन्होंने अपने हथियार नहीं त्यागे हैं और जो जीवों को या तो हथियार से, या तलवार से, या हथेली से, या मिट्टी के ढेले से उत्पीड़ित करते हैं; मैंने यह मौन बुद्धत्व प्राप्त किया, अपनी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि से उनमें से एक को स्पष्ट रूप से देखकर, जिसने वहाँ संवेदना, बोध, क्रिया और चेतना प्राप्त कर ली थी, और साथ ही उस घटना और उसके भौतिकीकरण और अन्य चीजों को भी, प्रेम भाव के इस मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) के कारण। अतः, अब तक यही इसका महत्व है।

91.48. क्रम कुछ इस प्रकार है—जब ऐसा कहा गया, तो उन मंत्रियों ने पूछा, “आदरणीय महोदय! आप कहाँ जा रहे हैं?” इसके बाद, जब उन्हें उनसे यह उत्तर मिला कि “जहाँ पूर्व मौन बुद्ध निवास करते थे”, जिसका उन्होंने मानसिक जाँच के बाद “गंधमादन पर्वत” के रूप में पता लगाया, तो उन्होंने फिर कहा, “आदरणीय महोदय! क्या अब आप हमें त्याग रहे हैं? क्या आप हमें नहीं चाहते?” तब मौन बुद्ध ने कहा, “पुत्र की इच्छा नहीं करनी चाहिए” इत्यादि। इसका अर्थ यह है कि मैं अपनी संतानों में से किसी भी प्रकार का पुत्र नहीं चाहता, इत्यादि। तो फिर आप जैसे साथी की क्या आवश्यकता है? इसलिए, आप में से जो कोई भी मेरे समान बनना चाहता है और मेरे साथ जाना चाहता है, उसे गैंडे के सींग की तरह अकेले ही साधना करनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, उनके द्वारा यह कहे जाने पर: “आदरणीय महोदय! क्या अब आप हमें त्याग रहे हैं? क्या आप हमें नहीं चाहते?” उस मौन बुद्ध ने उनसे उत्तर देते हुए कहा, "पुत्र की इच्छा न होने पर साथी की आवश्यकता ही क्या है?" उन्होंने उस परिस्थिति के अनुसार अकेले साधना करने और आनंदित तथा विनोदपूर्ण मानसिक प्रसन्नता से परिपूर्ण होने के गुण को देखकर यह आनंदमयी वचन दिया, "गैंडे के सींग की तरह अकेले साधना करनी चाहिए।" ऐसा कहकर वे आकाश में विचरण करने लगे, जबकि जनसमूह केवल उन्हें देखता रहा, और गंधमादन की ओर चल दिए।

91.49. गंधमादन, अर्थात्, बर्फ से ढका हुआ है और सात पहाड़ियों के पार स्थित है: चूलाकाला (छोटी काली) पहाड़ी; महाकाला (बड़ी काली) पहाड़ी; नागपालीवेदन (कुंडलीदार अजगर) पहाड़ी; चंदा (चंद्रमा) पहाड़ी; सूर्य (सूर्य) पहाड़ी; सुवन्नपस्सा (स्वर्ण पक्ष) पहाड़ी; हिमवंता (बर्फ से ढकी) पहाड़ी। वहाँ, नंदमूलक नामक गुफा मौन बुद्धों का निवास स्थान है; गुफाएँ तीन हैं: स्वर्ण गुफा, रत्न गुफा और रजत गुफा। वहाँ, रत्न गुफा के द्वार पर, मंजूसाका नामक एक वृक्ष है, जिसकी ऊँचाई और चौड़ाई एक योजन है। जल में हो या भूमि पर, जितने भी फूल खिलते हैं, वह वृक्ष उन सभी से अधिक खिलता है, विशेषकर मौन बुद्ध के आगमन के दिन। उस वृक्ष के ऊपर रत्नों से बना एक मंडप है। वहाँ बहती हवा कचरे को उड़ा ले जाती है; समतल करने वाली हवा सभी प्रकार के रत्नों से बनी रेत को समतल कर देती है। फुहारने वाली हवा अनोत्तट्टा झील से जल लाकर छिड़कती है। सुगंधित हवा हिमवंता पर्वत से सभी सुगंधित वृक्षों की खुशबू लाती है। तोड़ने वाली हवा फूलों को तोड़ती है। फैलाने वाली हवा फूलों को चारों ओर फैला देती है। वहाँ हमेशा सुसज्जित आसन भी होते हैं, जहाँ मौन बुद्ध के प्रकट होने के दिन और उपोसथ व्रत के दिन सभी मौन बुद्ध एकत्रित होकर बैठते हैं। यह वहाँ बिल्कुल सामान्य है। यह मौन बुद्ध वहाँ गए और सुसज्जित आसन पर बैठ गए। इसके बाद, यदि उस समय अन्य मौन बुद्ध वहाँ उपस्थित होते, तो वे भी उसी क्षण एकत्रित होकर तैयार आसनों पर बैठ जाते। बैठने के बाद वे किसी सफल ध्यान (समापत्ति) में लीन हो जाते और उठ खड़े होते। इसके बाद सभा के वरिष्ठ सदस्य सभी अन्य लोगों के अभिनंदन के लिए नवगठित मौन बुद्ध से उनके मानसिक अभ्यास (कम्मत्थान) के बारे में पूछते: "आपने यह उपलब्धि कैसे प्राप्त की?" उस अवसर पर भी उन्होंने अपने आनंदमय कथन और उसकी व्याख्या वाली वही कविता सुनाई। थेरा आनंद ने भी साथ में गाया (आनंदो पि संगीत्यम)। इसी प्रकार, मौन बुद्धत्व प्राप्ति स्थल पर, मंजूसाका के मंडप में,

थेरा आनंद द्वारा पूछे जाने पर प्रत्येक श्लोक को साथ में गाया गया। पाठ चार बार किया गया।

यहीं पर टिप्पणी समाप्त होती है।
पहला श्लोक।

राइज़न कनेक्शन (संसग्गजातस्सा)

92. उस श्लोक का उद्गम क्या है जो इस प्रकार शुरू होता है: संसग्गजातस्स (संस्कृत..संसर्ग), जो आसक्त हो गया है? यह मौन बोधिसत्व भी, भिक्षु के कर्तव्यों का पालन करते हुए, पहले की तरह ही, बीस हजार वर्षों तक, बुद्ध कस्सपा के विधान में, कसिणा साधना द्वारा मानसिक अभ्यास करते रहे, प्रथम ध्यान की प्राप्ति की, नामरूप का निर्धारण किया, लक्खणा में निपुणता प्राप्त की, परन्तु श्रेष्ठ अरहतों के मार्ग पर न पहुँचकर ब्रह्मालोक में पुनर्जन्म लिया। वहाँ से विदा होकर, वे बनारस के राजा की प्रधान रानी के गर्भ में उत्पन्न हुए, और पहले की तरह ही बड़े होते हुए, जब से उन्होंने यह भेद जाना: “यह स्त्री है, यह पुरुष है,” तब से वे अपने उस ज्ञान के कारण कभी भी स्त्रियों के हाथों में प्रसन्न नहीं रहे। उन्हें स्नान कराना, वस्त्र पहनाना, श्रृंगार करना और सजाना भी अच्छा नहीं लगता था। केवल पुरुष ही उनकी देखभाल करते थे। दूध पिलाते समय, धायियाँ तंग चोली पहनकर पुरुषों का वेश धारण करके उन्हें दूध पिलाती थीं। वे स्त्रियों की गंध और आवाज़ सुनकर रोने लगते थे। यद्यपि वे समझदार हो चुके थे, फिर भी उन्हें स्त्रियों को देखने की इच्छा नहीं होती थी। इसलिए लोग उन्हें केवल अनिष्टिगंधा (स्त्री की गंध से रहित) के नाम से ही जानते थे।
जब राजकुमार सोलह वर्ष का हुआ, तो उसने मन ही मन सोचा, “मैं वंश को आगे बढ़ाता रहूंगा”, और विभिन्न परिवारों से उसके लिए उपयुक्त कन्याओं को लाया तथा एक मंत्री को आदेश दिया, “तुम्हें राजकुमार का मनोरंजन करना चाहिए।” मंत्री ने उसे एक चाल से लुभाने की इच्छा से, उसके पास ही एक दीवार खड़ी करवा दी और नाचती हुई कन्याओं को अपना नृत्य प्रदर्शन करने को कहा। राजकुमार ने गीत और संगीत की ध्वनि सुनी और पूछा, “यह किसकी ध्वनि है?”
मंत्री ने उत्तर दिया: “महामहिम! यह ध्वनि आपकी नृत्य करती युवतियों की है। गुणवान लोगों को ऐसी ही नृत्य करती युवतियाँ मिलती हैं। महाराज! कृपया आनंद लें, आप स्वयं भी महान गुणवान हैं।”
युवा राजकुमार ने मंत्री को लाठी से पिटवाया और उसे घसीटकर ले गया। मंत्री ने यह बात राजा को बताई। राजा राजकुमार की माता के साथ गए, उससे माफी मंगवाई और मंत्री को फिर आदेश दिया। युवा राजकुमार, उनके अत्याचारों से बहुत ग्रस्त होकर, उत्तम गुणवत्ता का सोना देकर सुनारों को आदेश दिया: “एक सुंदर कन्या की मूर्ति बनाओ।”
उन्होंने दिव्य वास्तुकार और मूर्तिकार बिस्साकम्मा (संस्कृत: विश्वकर्मा) द्वारा निर्मित कृति के समान, सभी प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित एक स्त्री की प्रतिमा बनाई और राजकुमार को दिखाई। राजकुमार ने सोने की प्रतिमा देखी, आश्चर्य से अपना सिर हिलाया और अपने माता-पिता को यह कहते हुए भेजा: "यदि मुझे ऐसी युवती प्राप्त हो, तो मैं उसे ले आऊंगा।"
माता-पिता ने मन ही मन कहा, “हमारा पुत्र बहुत गुणी है; निश्चय ही संसार में कोई ऐसी कन्या अवश्य जन्मी होगी जिसने उसके साथ अच्छे कर्म किए हों।” उन्होंने उस सोने की मूर्ति को रथ पर विराजमान कराया और मंत्रियों को सौंपते हुए कहा, “जाओ और ऐसी ही एक युवती को खोजो।”
मंत्रियों ने उसे लिया और सोलह देशों (जनपद) में घूमते हुए, इधर-उधर के गाँवों में गए, और जल संग्रहण स्थलों आदि पर, जहाँ भी लोगों की भीड़ दिखाई देती थी, वहाँ उस सोने की प्रतिमा को देवी-देवता की तरह स्थापित किया। उन्होंने प्रतिमा को कई प्रकार के फूलों, वस्त्रों और आभूषणों से सजाया, फिर एक पर्दा लगाया और उपयुक्त स्थान पर खड़े हो गए, इस विचार के साथ कि “यदि किसी ने पहले ऐसी सुंदरता देखी हो, तो वह स्वयं ही इसकी चर्चा करेगा।” इस प्रकार, मद्दा राज्य को दरकिनार करते हुए, उन्होंने सभी देशों (जनपद) का भ्रमण किया, और मद्दा को एक छोटा राज्य मानकर, वहाँ पहले गए बिना ही आगे बढ़ गए।
92.1 इसके बाद उनके मन में यह विचार आया: “अब हमें मद्दा राज्य भी जाना चाहिए; जब हम बनारस लौटें और वहाँ पुनः प्रवेश करें तो हमारे राजा हमें फिर से बाहर न भेजें”, और वे मद्दा राज्य के सागल नगर में चले गए। सागल नगर में राजा का नाम मद्दावा था। उनकी सोलह वर्षीय पुत्री अत्यंत सुंदर थी। उसकी सुंदर दासियाँ स्नान करने और जल लाने के उद्देश्य से स्नान घाट पर गईं। वहाँ उन्होंने मंत्रियों द्वारा स्थापित सोने की मूर्ति देखी और उसके पास जाकर कहा: “हमें जल लाने के लिए बाहर भेजने के बाद हमारे राजा की पुत्री स्वयं ही आ गई हैं।” सोने की मूर्ति को ध्यान से देखकर उन्होंने फिर कहा: “यह हमारी स्वामिनी नहीं है; हमारी स्वामिनी इससे कहीं अधिक सुंदर हैं।” मंत्रियों ने उनकी बात सुनी और राजा के पास जाकर उचित तरीके से राजकुमारी को माँग लिया। राजा ने अपनी पुत्री को उन्हें सौंप

दिया। उन्होंने बनारस के राजा को यह संदेश भेजा: "महाराज! एक युवती का विवाह हुआ है; क्या आप स्वयं आ रहे हैं, या हमें उसे स्वयं लाना पड़ेगा?" राजा ने उत्तर में यह निर्देश भेजा: "मेरे आने तक आसपास के क्षेत्र (जनपद) में लूटपाट हो सकती है, आप स्वयं उसे ले आइए।"

92.2. मंत्री राजकुमारी को लेकर नगर छोड़कर राजकुमार को यह संदेश लेकर गए: "स्वर्ण प्रतिमा के समान एक राजकुमारी प्राप्त हुई है।" यह खबर सुनते ही राजकुमार कामवासना (राग) में डूब गया और उसका ध्यान पहले से ही कमजोर हो गया। उसने एक के बाद एक कई दूतों को यह संदेश देकर भेजा: "उसे जल्दी लाओ; उसे जल्दी लाओ।" वे रास्ते में केवल एक रात रुकते हुए बनारस पहुँचे, नगर के बाहर डेरा डाला और राजा को यह संदेश भेजा: "क्या हमें आज ही नगर में प्रवेश करना चाहिए या नहीं?" राजा ने कहा: "यह युवती अत्यंत उत्तम परिवार से आई है, उसने शुभ कर्म किए हैं, हम उसे उच्च सम्मान के साथ राज नगर में प्रवेश करने देंगे; फिलहाल उसे राज उद्यान में ले चलो।" उन्होंने वैसा ही किया। वह अत्यंत नाजुक राजकुमारी थी और यात्रा की थकान से व्याकुल होकर वायु रोग के कारण मुरझाए फूल की तरह हो गई और रात में उसकी मृत्यु हो गई। मंत्रियों ने विलाप करते हुए कहा, "हम सम्मान से गिर गए हैं।" राजा और नागरिक दोनों रोते हुए बोले, "हमारे वंश का कलंक मिट गया है।" पूरे शहर में हंगामा मच गया। युवा राजकुमार को यह दुखद समाचार सुनते ही गहरी चिंता सताने लगी।

92.3. इसके बाद, युवा राजकुमार ने अपनी चिंता की जड़ को खोजना शुरू किया। उन्होंने इस प्रकार सोचा: "यह चिंता अजन्मे व्यक्ति की नहीं है; यह तो जन्म लेने वाले व्यक्ति की है। इसलिए, जन्म के कारण चिंता होती है; लेकिन जन्म किसलिए होता है?" उन्होंने निष्कर्ष निकाला: "अस्तित्व (भाव) के कारण जन्म होता है।" इस प्रकार, पूर्व में प्राप्त ध्यान साधना की शक्ति से उचित ध्यान लगाकर, उन्होंने प्रतीत्यसमुत्पाद (पटिच्चसमुप्पाद) को उसके नियमित और विपरीत क्रम में देखा और फिर, प्राकृतिक क्रम में उपयुक्त कर्मों के समूह का मानसिक रूप से अध्ययन करते हुए, वे वहीं बैठे-बैठे मौन बुद्धत्व को प्राप्त कर लिया। मंत्रियों ने उन्हें शांत मन और संयमित इंद्रियों के साथ, सही मार्ग और उसके फल के आनंद से प्रसन्न देखकर, प्रणाम किया और कहा: "महाराज! कृपया चिंता न करें, जंबुदीप विशाल है; हम इससे बेहतर एक और युवती लाएंगे।" राजकुमार ने उत्तर दिया: "मैं चिंतित नहीं हूँ। मैं एक शांत बुद्ध हूँ, निश्चिंत।" इस श्लोक की व्याख्या को छोड़कर, इसके आगे की घटनाओं का पूरा क्रम पिछले श्लोक के समान ही है।

92.4. श्लोक की व्याख्या के संदर्भ में, इसे इस प्रकार समझा जाना चाहिए: संसग्ग जातस्स का अर्थ है उत्पन्न संबंध। वहाँ पाँच प्रकार के संबंध विद्यमान हैं: देखना, सुनना, शारीरिक आकर्षण, साथ रहना और संपर्क। वहाँ, एक-दूसरे को देखने के बाद, दृष्टि-चेतना की प्रक्रिया (वीथी) से उत्पन्न कामवासना (राग) को दस्सनसंसग्ग (दृष्टि संपर्क) के रूप में जाना जाता है। वहाँ एक उदाहरण है: कल्याण मठ में रहने वाले, लंबे प्रवचन देने वाले (दीघा) एक युवा भिक्षु को, जो सीहल द्वीप (सीलोन) के कालादीघवापी गाँव में भिक्षा माँगने के लिए घूम रहे थे, देखकर एक गृहस्थ की पुत्री को उनसे प्रेम हो गया और किसी भी तरह से उन्हें न पाकर वह मर गई। दूसरा उदाहरण है: उसी युवक का, जो उस स्त्री के फटे हुए अंतर्वस्त्र को देखकर हृदय विदारक हो गया और बोला: "मुझे ऐसी स्त्री के साथ सहवास करने का अवसर नहीं मिला जो ऐसा वस्त्र पहनती हो।"

92.5. सौंदर्य आदि उपलब्धियों के बारे में सुनकर, चाहे वह दूसरों द्वारा बताया गया हो या स्वयं द्वारा, साथ ही हँसने, बोलने और गाने की आवाज़ सुनकर, श्रवण चेतना की प्रक्रिया (वीथी) के माध्यम से उत्पन्न कामवासना (राग) को श्रवण संपर्क कहा जाता है। इसका उदाहरण भी यही है: पाँच द्वार-कुत्तों वाली गुफा में रहने वाला युवक तिस्सा, जो कामवासना (राग) के कारण अपंग होकर निष्कलंक हो गया, आकाश में जाते समय उसने पहाड़ी गाँव (सीरिगामा) में रहने वाली सुनार की पुत्री को पाँच युवतियों के साथ ऊँची आवाज़ में गाते हुए सुना। वे एक कमल सरोवर में गईं, स्नान किया और अपने सिर पर मालाएँ पहनीं।

92.6. हालांकि, अंगों के परस्पर स्पर्श से उत्पन्न होने वाली कामवासना (राग) को कायसम्संग्ग (शारीरिक संपर्क) कहा जाता है। इसका उदाहरण धम्म प्रवचन देने वाले एक युवा भिक्षु और राजा की पुत्री का है। महाविहार में कहा गया है कि एक युवा भिक्षु धम्म प्रवचन दे रहा था। वहां लोगों का एक बड़ा समूह इकट्ठा हुआ। राजा भी अपनी रानी और पुत्री के साथ वहां गए। बाद में, उनके सौंदर्य और मधुर वाणी के कारण, राजा की पुत्री और उस युवा भिक्षु दोनों को तीव्र रोग हो गया। यह देखकर राजा को बात समझ में आ गई और उन्होंने चारों ओर एक परदे की दीवार बनवा दी। उन्होंने एक-दूसरे को स्पर्श किया और आलिंगन किया। परदा हटाकर दोबारा देखने पर उन्होंने पाया कि दोनों मृत थे।

92.7. आपसी बातचीत और प्रलोभन से उत्पन्न होने वाली कामवासना (राग) को सम्लुल्लापना सम्सग्ग (स्वयं को लुभाने वाला संपर्क) कहा जाता है। भिक्षुओं और भिक्षुणियों द्वारा भोजन का आनंद लेने से उत्पन्न होने वाली कामवासना (राग) को संभोग सम्सग्ग (भोजन का आनंद लेने वाला संपर्क) कहा जाता है। इन दोनों मामलों में भी उदाहरण भिक्षु और भिक्षुणी का है, जो संघ से निष्कासन (पाराजिक) के पात्र हैं। कहा जाता है कि राजा दुत्थगामणि अभय ने मारीकावत्ती के महान मठ के उत्सव में एक बड़ा दान किया और दोनों लिंगों के

पुरोहितों का सत्कार किया। वहाँ, जब गरमा गरम चावल का दलिया परोसा गया, तो एक युवा महिला भिक्षुणी ने एक युवा पुरुष भिक्षुणी को हाथीदांत का कंगन देकर प्रलोभन दिया। दोनों ने भिक्षु और भिक्षुणी के रूप में दीक्षा ली, साठ वर्ष के हो गए, और जब वे नदी के दूसरे किनारे पर गए, तो आपसी आकर्षण के कारण उन्हें अपनी पूर्व चेतना वापस मिल गई, वे वहीं पर अत्यधिक स्नेह से भर गए, बुनियादी अनुशासन का उल्लंघन किया और संघ से निष्कासन (पाराजिक) के पात्र हो गए। इस प्रकार, भवति *****(पृष्ठ 276), पाँच प्रकार के संपर्कों में से किसी एक से संपर्क उत्पन्न होने पर स्नेह उत्पन्न होता है। पूर्व कामवासना के फलस्वरूप, तीव्र कामवासना (राग) उत्पन्न होती है। परिणामस्वरूप, स्नेहन्वयं दुःखं इदं पहोति , उसी स्नेह के बाद, यह दुख, इस जन्म में और अगले जन्म में भी घटित होता है।

92.8. अन्य विद्वान कहते हैं: "संपर्क (संज्ञा) इंद्रिय-विषय (आरम्मण) पर मन का विश्राम है। इसके फलस्वरूप आसक्ति उत्पन्न होती है; आसक्ति का दुख यही है।" व्याख्या के लिए अर्थों की विविधता के संबंध में इस आधे श्लोक का पाठ करने के बाद, उस मौन बुद्ध ने कहा: "इस प्रकार की आसक्ति के कारण चिंता आदि जैसे दुख उत्पन्न होते हैं; उसी आसक्ति के फलस्वरूप उत्पन्न हुए दुख (दुक्खा) की जड़ को उखाड़कर मैंने मौन बुद्धत्व प्राप्त किया है।"

92.9. जब ऐसा कहा गया, तो उन मंत्रियों ने पूछा, "आदरणीय महोदय! अब हम क्या करें?" तब उन्होंने कहा, "जो कोई भी, चाहे आप हों या कोई और, इस दुःख (दुक्खा) से मुक्ति पाना चाहता हो, उसे गैंडे के सींग की तरह अकेले भटकना चाहिए, और आसक्ति से उत्पन्न होने वाले सभी दुःखों को भी देखना चाहिए। ādīnavam snebajam pekkhamāno, eko care khaggavisāṇakappo ।" यहाँ भी, "यह दुःख (दुक्खा) आसक्ति के फलस्वरूप उत्पन्न होता है" ऐसा कथन भी किया गया। इसके संदर्भ में भी, यह कथन किया गया: "आहक्ति से उत्पन्न दुःख को देखकर", इसे इस प्रकार समझा जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, उपर्युक्त संपर्क के कारण, जिसके साथ संपर्क होता है, उसमें आसक्ति उत्पन्न होती है। आसक्ति के फलस्वरूप यह दुःख (दुक्खा) उत्पन्न होता है। आसक्ति से उत्पन्न दुःख को देखकर, सत्य के अनुसार, मैंने अपनी प्राप्ति की है। इस प्रकार जुड़ने के बाद, श्लोक की चौथी पंक्ति को पहले की ही तरह स्नेहपूर्वक व्यक्त किया गया है; इसे इसी प्रकार समझा जाना चाहिए। इसके बाद, सब कुछ पहले श्लोक में कही गई बातों के समान ही है।
संपर्क संबंधी श्लोक पर टिप्पणी समाप्त होती है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान-2.2 पचेकबुद्धस
स्रोत: संभवतः पीटीएस

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

1.14शीत (सीतांच)
1.15हाथी (Nāgo va)
1.16अनुपयुक्त स्थान (Aṭṭhāna Tama)
1.17राय का भटकना (दित्तिविसुकानि)
1.18लोभ से मुक्त (निल-लोलुपा)
1.19पापम सहायम (बुरा साथी)
1.20बहुसुतम (बहुत ज्ञान)
1.21खेलकूद का आनंद (खीददम रति)...(विभूषा) अलंकरण
1.22पुत्र (पुत्तंच दारम्)
1.23आसक्ति (सांगो एसो)
1.24जलता हुआ जंगल (संडालयित्वाना)
1.25झुकी हुई आँखें (ओक्खित्त-चक्खु)
1.26कटे हुए (ओहारयित्वा) ... परिच्छत्तक (अच्छी तरह से पत्तेदार)
1.27रसेसु
1.28पाँच बाधाओं का त्याग (पहया पंचवरणानि)
1.29त्याग करने के बाद (विपित्तिकतावन)
1.30परिश्रम का प्रारंभ (आरद्ध-वीर्यो)
1.31एकांत (पतीसल्लना)
1.32लालसा का अंत (तन्ह-क्खया)
1.33सिंह (सीहोवा)...शील (नैतिकता)
1.34सिंह की तरह (सीहो यथा) ... दात्हबली (शक्तिशाली बल)
1.35प्रेमपूर्ण दयालुता समभाव (मेत्तम उपेक्खम)
1.36पसंद-नापसंद (रागंच दोषंच)... जीवनसंख्या (जीवन का अंत)
1.37परोसें (भजंती)
अपदाना 2: मौन बुद्ध (पच्चेकबुद्ध)-भाग 2.2
मित्र और अच्छे हृदय वाले पुरुष (Mitte Suhajje)

93. " मित्ते सुहज्जे " से शुरू होने वाले श्लोक का उद्गम क्या है ? यह मौन बोधिसत्व उसी प्रकार उत्पन्न हुए जैसे पिछले श्लोक में वर्णित है। उन्होंने बनारस पर शासन करते हुए प्रथम ध्यान किया, यह कहते हुए शोध किया, "कौन अधिक श्रेष्ठ है? भिक्षु का जीवन या संप्रभुता?", उन्होंने अपनी संप्रभुता अपने मंत्रियों को सौंप दी और भिक्षु के कर्तव्यों (धर्म) का पालन किया। यद्यपि राजा ने उन्हें आदेश दिया था: "अपने प्रशासनिक कर्तव्यों का पालन धर्म और निष्पक्षता से करो", फिर भी उन्होंने रिश्वत ली और अधर्म किया। रिश्वत लेकर वे वैध स्वामियों को हानि पहुँचा रहे थे, एक बार उन्होंने एक शाही परिचित को भी हानि पहुँचाई। वह व्यक्ति शाही रसोइयों के साथ राजा के समक्ष गया और राजा को सब कुछ बता दिया। अगले दिन, राजा स्वयं दरबार में गए जहाँ कानूनी निर्णय लिए जाते थे। तब, लोगों की एक बड़ी भीड़ ने शोर मचाते हुए कहा, "महाराज! मंत्रियों ने स्वामियों को उनकी संपत्ति से वंचित कर दिया है," मानो वे किसी बड़े युद्ध में लड़ने जा रहे हों। तब राजा न्यायिक निर्णयों के स्थान से उठे, महल में गए, समापत्ति पर ध्यान लगाने के लिए बैठ गए, परन्तु शोरगुल के कारण उनका मन विचलित हो गया, जिससे वे ऐसा नहीं कर सके। उन्होंने मन ही मन कहा, "मेरे लिए संप्रभुता का क्या लाभ; भिक्षु का जीवन (धम्म) उत्तम है।" उन्होंने संप्रभुता के सुख का त्याग कर पुनः समापत्ति पर ध्यान लगाया, पूर्वोक्त विधि से आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की और मौन बुद्धत्व को प्राप्त किया। जब उनसे उनके मानसिक अभ्यास (कम्मत्थान) के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने यह कविता सुनाई।

93.1. वहाँ, प्रेम और करुणा की ओर ले जाने के द्वारा मित्रता (मित्ता) प्राप्त होती है। यह अच्छे हृदय के कारण सुहज्जा (सद्गुण) है। कुछ विद्वानों का मत है कि वे केवल इसलिए मित्र (मित्ता) हैं क्योंकि वे पूर्णतः लाभ चाहते हैं, न कि अच्छे हृदय वाले (सुहज्जा)। कुछ विद्वानों के अनुसार, आने-जाने, खड़े होने, बैठने और आत्म-प्रलोभन आदि के मामलों में, हृदय से प्रसन्न होने के कारण, वे केवल अच्छे

हृदय वाले (सुहज्जा) हैं, मित्र (मित्ता) नहीं। कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि दोनों के कारण, वे न केवल अच्छे हृदय वाले (सुहज्जा) हैं, बल्कि मित्र (मित्ता) भी हैं। वे दो प्रकार के होते हैं: गृहस्थ और बेघर। वहाँ, गृहस्थ तीन प्रकार के होते हैं: एक सहायक परोपकारी, सुख और दुःख में समान रूप से सहानुभूति रखने वाला। बेघर केवल वे हैं जो विशेष रूप से लाभप्रद बातें दर्शाते हैं। वे चार गुणों (अंग) से संपन्न होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि:-

"हे गृहस्थ! वास्तव में, एक सहायक (उपकार) और दयालु मित्र को चार गुणों से समझना चाहिए । वह भूलने की अवस्था में आपकी देखभाल करता है ; आपकी संपत्ति की देखभाल करता है; भयभीत होने पर आपका आश्रय देता है; दान करते समय दुगुना धन प्रदान करता है।"

इसी प्रकार:-

"हे गृहस्थ! वास्तव में, आपके सुख-दुख में आपका साथी, एक नेक दिल दोस्त, को चार कारकों से समझा जाना चाहिए: वह आपको अपने रहस्य बताता है; वह आपके रहस्य छुपाता है; जब आप संकट में होते हैं तो वह आपको नहीं छोड़ता ; आपके कल्याण के लिए वह अपने जीवन को जोखिम में डालता है।"

इसी प्रकार:-

"हे युवा गृहस्थ! वास्तव में, एक दयालु और नेक हृदय मित्र की पहचान चार लक्षणों से होती है: वह आपकी अनुपस्थिति पर प्रसन्न नहीं होता; वह आपकी उपस्थिति पर प्रसन्न होता है; वह आपके विरुद्ध निंदा किए जाने से रोकता है; वह आपके बारे में प्रशंसा किए जाने को प्रोत्साहित करता है।"

इसी प्रकार:-

"हे गृहस्थ! निश्चय ही, आपके कल्याण का वचन देने वाला, दयालु मित्र, चार गुणों से पहचाना जा सकता है: वह आपको बुराई करने से रोकता है; वह आपको भलाई करने के लिए प्रोत्साहित करता है; वह आपको वह बातें सुनाता है जो आपने पहले नहीं सुनीं; वह आपको स्वर्ग का मार्ग दिखाता है।"

93.2. यहाँ, इनमें गृहस्थों का तात्पर्य है; परिस्थिति की दृष्टि से सभी आपस में जुड़े हुए हैं। Mitte suhajje anukampamāno का अर्थ यह है: वे अपने मित्रों के प्रति सहानुभूति रखते हुए, उनके लिए सुख लाने और उनके दुःख (दुक्खा) को दूर करने की इच्छा रखते हैं।

93.3. अभिव्यक्ति: हापेति अत्थम को इस प्रकार समझा जाना चाहिए: कल्याण (अत्थ) तीन प्रकार का होता है: वर्तमान जीवन का कल्याण, अगले जीवन का कल्याण और परम कल्याण; इसी प्रकार, कल्याण तीन प्रकार का होता है: स्वयं का कल्याण, दूसरों का कल्याण और दोनों का कल्याण; त्याग कराना (हापेति), दो प्रकार से विनाश करना भी है: जो कुछ अर्जित किया है उसे नष्ट करके और अपार्जन उत्पन्न करके।
'पटिबद्धचित्त' अभिव्यक्ति का अर्थ इस प्रकार है: "इसके बिना मैं जीवित नहीं रह सकता; यही मेरा मार्ग है; यही मेरा अंतिम लक्ष्य (परायण) है"; यहाँ तक कि जब कोई स्वयं को इस प्रकार निम्न स्थान पर रखता है, तब भी यह (पटिबद्धचित्त) है, यानी प्रेम से ग्रस्त हृदय। यहाँ तक कि जब आप स्वयं को इस प्रकार उच्च स्थान पर रखते हैं, तब भी इसे प्रेम से ग्रस्त हृदय (पटिबद्धचित्त) कहा जाता है; "ये लोग मेरे बिना जीवित नहीं रह सकते; मैं ही उनका मार्ग हूँ; मैं ही उनका अंतिम लक्ष्य (परायण) हूँ"। यहाँ, हालांकि, 'पटिबद्धचित्त' शब्द का अर्थ है 'मोहित'। 'एतं भयम्' (यह खतरा) का अर्थ है कल्याण के परित्याग का खतरा। यह बात ध्यान प्राप्ति में कमी के संबंध में कही गई है। संथाव से तात्पर्य संगति (संथाव) के विभिन्न प्रकारों से है, जैसे कि तृष्णा (गंहा), गलत दृष्टि (दिष्टि) और मित्र। तृष्णा (संहा) के एक सौ आठ प्रकार हैं और तृष्णा (संहाव) से संगति होती है; गलत दृष्टि (दिष्टि) के बासठ प्रकार हैं और गलत दृष्टियों से संगति होती है; हृदय के बंधन में बंधे होने के कारण मित्रों के प्रति सहानुभूति और मित्रों के साथ संगति होती है। इन सब में यही अर्थ निहित है।

वास्तव में, इसी कारण ध्यान प्राप्ति में कमी आती है। इसीलिए मौन बुद्ध ने कहा: "सन्थाव (संथाव) में इस खतरे को देखकर मैंने इसे प्राप्त किया है।" शेष वही है जो पहले कहा गया है।

मित्रों पर लिखी कविता पर टिप्पणी

और अच्छे दिल वाले लोगों का अंत हो गया है।

. . . . .

बांस का व्यापक क्षेत्र (Vaŋso Visālo)

94. "vaŋso visālo" से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? ऐसा कहा जाता है कि परम पूज्य कस्सपा के युग में, तीन मौन बोधिसत्वों ने संन्यासी बन गए, बीस वर्षों तक आने-जाने का कर्तव्य पूरा किया और देवलोक में पुनर्जन्म लिया। वहाँ से देहान्त होकर, उनमें से सबसे बड़े का जन्म बनारस के राजपरिवार में हुआ; अन्य दो का जन्म सीमावर्ती देशों के राजपरिवारों में हुआ। बाद के दोनों मौन बोधिसत्वों ने मानसिक साधना (कम्मत्थाना) की, अपने प्रभुत्व का त्याग किया, संन्यासी बनकर संसार का त्याग किया, धीरे-धीरे मौन बुद्ध बन गए, नंदमूल पर्वत की गुफा में निवास किया, अपनी प्रभावी ध्यान साधना (समापत्ति) से उठे, और एक दिन उन्होंने स्वयं से यह प्रश्न पूछा: "हमने ऐसा कौन सा कर्म किया है जिसके फलस्वरूप हमें ऐसा दिव्य सुख प्राप्त हुआ है?" उन्होंने बुद्ध कश्यप के समय में अपनी व्यक्तिगत साधना पर ध्यान दिया। इसके बाद चिंतन करते हुए उन्होंने अपने तीसरे गुरु के स्थान का पता लगाया और उन्हें बनारस के राजा के रूप में शासन करते हुए पाया। उन्होंने उनके गुणों का वर्णन इस प्रकार किया: "स्वभाविक रूप से ही वे संयमी आदि गुणों से संपन्न हैं; वे हमारे सलाहकार हैं; बोलने पर वे हमारी बातों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं और वे बुराई की निंदा करते हैं। आइए, हम उन्हें ध्यान का विषय दिखाएँ और उन्हें सूचित करते रहें।" एक अवसर की तलाश में, उन्होंने एक दिन उन्हें पूर्ण रूप से सजे-धजे और सभी आभूषणों से सुसज्जित अपने राजमहल की ओर जाते हुए देखा और आकाश में उड़ते हुए उनके पास पहुँचे और राजमहल के द्वार पर एक बाँस की झाड़ी के नीचे खड़े हो गए। अपने राजा के दर्शन से तृप्त न होकर, लोगों का विशाल समूह राजा को देखने लगा। इसके बाद, राजा ने यह देखने के लिए इधर-उधर देखा कि क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जो उन्हें देखने में व्यस्त नहीं है, तो उनकी नज़र मौन बुद्धों पर पड़ी। उन्हें देखकर राजा के मन में उनके प्रति स्नेह उत्पन्न हुआ। वे अपने राजसी हाथी की पीठ से उतरे, शांत भाव से उनके पास गए और पूछा, "आदरणीय महोदय! आप क्या हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "हे महाराज, हम अनासक्त हैं।" राजा ने पूछा, "आदरणीय महोदय! अनासक्त (असज्जमान) शब्द का क्या अर्थ है?" उन्होंने उत्तर दिया, "हे महाराज, इस शब्द का अर्थ है आसक्ति न रखना।" इसके बाद, उन्होंने एक बांस की झाड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा: "हे महान राजा! उदाहरण के लिए, यदि कोई तलवारधारी व्यक्ति इस बांस की झाड़ी को, जो जड़ों, तनों और शाखाओं से पूरी तरह लिपटी हुई है, जड़ से काटकर घुमाए, तो वह फिर से उग नहीं पाएगी, ठीक उसी प्रकार, आप जो भीतर और बाहर दोनों ओर से उलझे हुए हैं, उस उलझन से जुड़े हुए हैं और वहीं अटके हुए हैं। या, उदाहरण के लिए, यदि इस बांस के अंकुर को बीच से काट दिया जाए, तो वह बिना किसी सहारे के खड़ा रहता है, क्योंकि उसमें शाखाएँ नहीं निकली हैं। लेकिन, यदि इसे ऊपर से या जड़ से काट दिया जाए, तो यह उग सकता है।"ठीक इसी प्रकार, हम कहीं भी बंधित हुए बिना, सभी दिशाओं में विचरण करते हैं।" इतना कहकर, दोनों मौन बुद्ध उसी क्षण चौथे ध्यान में प्रवेश कर गए और राजा के देखते ही देखते आकाश में मंडराते हुए नंदमूल गुफा की ओर चले गए। इस घटना के बाद राजा ने सोचा, "मैं भी कब इस प्रकार अनासक्त हो पाऊंगा?" वे वहीं खड़े रहे, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए ध्यान किया और मौन बुद्धत्व का दर्शन किया। जब उनसे उनके मानसिक अभ्यास (कम्मत्थान) के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने पहले की ही तरह इस श्लोक का पाठ किया।

94.1. वॅ ॅस का अर्थ है बांस। विसालो का अर्थ है फैला हुआ, विस्तृत। यहाँ 'वा' अक्षर पर ज़ोर देने के लिए है। दूसरे शब्दों में, यह 'वा' मूल रूप से 'एव' है; लेकिन संधि के कारण, 'ए' अक्षर लोप हो गया है; इसका संबंध किसी अन्य शब्द से है। हम इसे बाद में जोड़ेंगे। यथा का अर्थ है प्रतिरूप (या समानता)। विसात्तो का अर्थ है चिपका हुआ, उलझा हुआ, गुंथा हुआ। पुत्तेसु दारेसु च का अर्थ है पुत्र, पुत्री और पत्नी में। या अपेक्खा का अर्थ है ऐसी तीव्र इच्छा (तन्हा), ऐसा स्नेह (सिनेह)। वमसाक्कलीरोवा असज्जमानो, मोत बांस के अंकुर की तरह चिपका हुआ। यह क्या कथन है? जैसे बांस विस्तृत होता है, वह हमेशा घना होता जाता है। पुत्रों और पत्नियों के प्रति ऐसा स्नेह भी इसी प्रकार है, क्योंकि वे हमेशा गुंथा हुआ और जुड़ा हुआ रहता है। मैं, इसके प्रति आसक्ति के कारण, आसक्ति से ग्रस्त होकर, घने बाँस के झाड़ की तरह उलझ जाता हूँ; इस प्रकार, आसक्ति के नुकसान को देखकर, सही मार्ग (मग्ग) के ज्ञान द्वारा उस आसक्ति को काटकर, अब बाँस के अंकुर के समान हो जाता हूँ और लालसा (तन्हा), अभिमान (मान) और विधर्म (दिष्टि) से अनासक्त होकर, जैसे

कि रूप की सुंदरता आदि इंद्रिय-संबंधी वस्तुओं, लाभ आदि पदार्थों, या इंद्रिय-संबंधी जन्म आदि पुनर्जन्मों से, मैंने मौन बुद्धत्व प्राप्त कर लिया है। शेष को पहले की तरह ही समझना चाहिए।

श्लोक पर टिप्पणी

बांस के अंकुर से संबंधित है

समाप्त हो गया।

वन का हिरण (मिगो अरञ्ञम्ही)

95. "मिगो अरञ्ञम्ही" से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बुद्ध कश्यप के युग में, एक भिक्षु, जो आध्यात्मिक साधना का गंभीर छात्र था, की मृत्यु हो गई और वह एक धनी और समृद्ध बैंकर के परिवार में जन्मा। वह भाग्यशाली था। फलस्वरूप, उसने व्यभिचार किया और मृत्यु के बाद निरयलोक में पुनर्जन्म लिया। वहाँ परिपक्वता के अवशेषों के कारण, वह बैंकर की पत्नी के गर्भ में स्त्री के रूप में गर्भ धारण कर लिया। निरयलोक से आने वाले प्राणियों का शरीर गर्म होता है। इसी कारण, बैंकर की पत्नी को अपने जलते हुए पेट के साथ बड़ी कठिनाई और असुविधा के साथ गर्भावस्था सहनी पड़ी और अंततः उसने एक लड़की को जन्म दिया। जन्म के दिन से ही वह अपने माता-पिता, शेष रिश्तेदारों और आसपास के लोगों के लिए घृणास्पद हो गई। जब वह यौवन प्राप्त कर चुकी थी, तब भी जिस परिवार में उसे रखा गया था, उस परिवार में भी वह अपने पति, सास और ससुर के लिए घृणित, अवांछित और अप्रिय थी। फिर, जब नए महीने की घोषणा हुई और उत्सव की घोषणा की गई, तो बैंकर का पुत्र, उसके साथ उत्सव मनाने की इच्छा न रखते हुए, एक वेश्या को ले आया और उसके साथ अय्याशी करने लगा। उसने अपनी दासियों से यह सुना, अपने पति, बैंकर के पुत्र के पास गई, उसे कई तरह से मनाकर बोली: "मेरे स्वामी! स्त्री, चाहे वह दस राजाओं की सबसे छोटी बहन हो या विश्वराज की पुत्री, फिर भी वह अपने पति की दासी ही होती है; जब उसका पति उससे बात करना बंद कर देता है, तो वह इतनी पीड़ा सहती है मानो उसे सूली पर चढ़ाया गया हो; यदि मैं कृपा के योग्य हूँ तो मुझे आपकी कृपा प्राप्त होनी चाहिए; यदि नहीं तो मुझे भेज दिया जाए; मैं अपने परिवार के पास लौट जाऊँगी।" बैंकर के बेटे ने कहा, "मेरी प्यारी! रहने दो; चिंता मत करो; उत्सवों का आनंद लेने के लिए तैयार रहो; चलो आकाशीय पिंडों के रात्रि उत्सव (नक्खत्त) में शामिल हों।" बैंकर की बेटी, इतनी सुखद बातचीत से उत्साहित होकर, मन ही मन बोली, "कल मैं आकाशीय पिंडों के उत्सव (नक्खत्त) में शामिल होऊंगी।" और उसने खूब सारे सख्त और नरम खाने-पीने का सामान तैयार किया। बैंकर का बेटा अगले दिन उसे बिना बताए ही उत्सव स्थल पर चला गया। वह मन ही मन सोच रही थी, "अब वह मुझे बुलाएगा," और सड़क की ओर देखती हुई बैठी रही, लेकिन उगते सूरज को देखकर उसने अपने आदमियों को अपने पति के पास भेजा। वे गए और लौटकर उसे बताया कि बैंकर का बेटा, उसका पति, चला गया है। अपना सारा सामान लेकर वह अपने रथ पर सवार हुई और बगीचे की ओर चल पड़ी।

95.1. उस समय, सातवें दिन, नंदमूल गुफा में एक मौन बुद्ध, अमर आनंद (निरोध) की अपनी ध्यान साधना से उठे, अपने दाँतों को शुद्ध करने के लिए नाग लता (नागलतादंतकत्था) चबाई, अनातोत्त (गहरे ठंडे) झील में अपना चेहरा धोया, इस बात पर विचार किया कि वे उस दिन भिक्षा मांगने के लिए कहाँ जाएँगे, उन्होंने उस धनाढ्य की पुत्री को देखा, उन्हें यह ज्ञान प्राप्त हुआ कि वे उससे निष्ठापूर्वक प्रणाम करवाएँगे और उसके पूर्व के बुरे कर्म का फल पूर्णतः समाप्त हो जाएगा, वे उस पर्वत-गुफा के निकट स्थित साठ योजन आकार के मानसोइला पत्थर की सतह पर खड़े हुए, अपना कुंड और वस्त्र लिया, उच्च ज्ञान (अभिज्ञा) पर आधारित ऐसी ध्यान साधना (ज्ञान) में प्रवेश किया, आकाश में गए, उसके सामने सड़क पर उस स्थान पर उतरे और बनारस की ओर मुख करके चले गए। उन्हें देखकर, उनकी दासियों ने इसकी सूचना बैंकर की पुत्री को दी। वह अपने वाहन से उतरीं, आदरपूर्वक उन्हें प्रणाम किया, उनके भिक्षापात्र को हर प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों से भर दिया, उसे कमल के फूल से ढक दिया, उसके नीचे भी एक कमल का फूल रखवाया, हाथों में फूलों का गुलदस्ता लेकर कटोरा मौन बुद्ध के हाथों में अर्पित किया, हाथों में फूलों का गुलदस्ता लिए उनकी आराधना की और इस प्रकार प्रार्थना की: "हे पूज्यवर! मैं जिन भी जन्मों में पुनर्जन्म लूँ, उन जन्मों में इस फूल के समान बनूँ, जो अनेक जनसमूहों को प्रिय और प्रिय हो।" इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद, उन्होंने दूसरी बार भी इस प्रकार प्रार्थना की: "हे पूज्यवर! माता के गर्भ में जन्म लेना कितना कष्टदायी होता है; उस कष्ट से गुजरे बिना, मैं कमल में ही जन्म लूँ।" उन्होंने तीसरी बार भी इस प्रकार प्रार्थना की: "हे पूज्यवर! नारीत्व तुच्छ है; विश्वराज की पुत्री को भी दूसरों की इच्छा के वश में होना पड़ता है; इसलिए, नारीत्व के निकट आए बिना ही मैं पुरुष बन जाऊं।" उन्होंने चौथी बार भी इस प्रकार प्रार्थना की: "हे पूज्यवर! इस कष्टदायक पुनर्जन्म चक्र से मुक्त होकर, अंत में, मैं आपके द्वारा प्राप्त अमरत्व

(निर्वाण) प्राप्त कर सकूं।" इस प्रकार अपनी चार दृढ़ प्रार्थनाएँ करने के बाद, उन्होंने कमल के फूलों का वह गुलदस्ता अर्पित किया, पाँच चरणों (पंच पतिच्छित) से आराधना की, और यह पाँचवीं दृढ़ प्रार्थना की: "मेरी सुगंध और रंग इस फूल के समान हो।"

95.2. इसके बाद, मौन बुद्ध ने अपना कटोरा और फूलों का गुलदस्ता लिया, आकाश में खड़े होकर, इस श्लोक के साथ बैंकर की पुत्री को धन्यवाद दिया:

आपकी मनोकामना और प्रार्थना शीघ्र ही पूरी हो।
यहां तक कि; पंद्रहवें बढ़ते चंद्रमा के समान
शुभ रात्रि, आपकी सभी मनोकामनाएं पूरी हों।

फिर उन्होंने मन ही मन यह संकल्प लिया, "धनिक की पुत्री मुझे जाते हुए देखे", और आकाश से होते हुए नंदमूल गुफा में लौट गए। उन्हें जाते हुए देखकर धनिक की पुत्री के हृदय में अत्यंत उत्साह भर गया। पिछले जन्मों में किए गए उनके बुरे कर्मों का फल उन्हें न मिलने के कारण पूरी तरह से नष्ट हो गया और वे खट्टी पकी इमली से धोए और शुद्ध किए गए तांबे के पात्र के समान शुद्ध और निर्मल हो गईं। तब उनके परिवार के सभी लोग और उनके पति का परिवार भी उनसे प्रसन्न हो गया। उन्होंने उन्हें प्रेम भरे संदेश और उपहार भेजे और पूछा, "हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?" उनके पति ने भी अपने आदमियों को यह कहते हुए भेजा, "मेरी पत्नी, धनिक की पुत्री को लाओ; मैं उसे भूलकर बगीचे में आ गया हूँ।" तब से ही वे उन्हें स्नेहपूर्वक गले लगाते रहे, मानो उन्होंने चंदन लगाया हो, मोतियों का हार पहना हो या फूलों की माला पहनी हो। वहाँ उन्होंने जीवन भर धन-संपन्नता के सुख का आनंद लिया, उनका प्राण त्याग दिया गया और दिव्य लोक में एक कमल के रूप में पुरुष देवता के रूप में उनका पुनर्जन्म हुआ। वह युवा देवता, जब भी आते-जाते, कमल के भीतर ही निवास करते थे। जब वे खड़े होते, बैठते या लेटते, तो वे कमल के कक्ष में ही रहते थे। देवताओं ने उन्हें महापदुमदेवपुत्त (बड़े कमल के युवा देवता) कहा। इस प्रकार, उस शक्ति के कारण, वे छह दिव्य लोकों में प्रत्यक्ष और विपरीत क्रम में, एक के बाद एक, पुनर्जन्म लेते रहे।

95.3. उस समय बनारस के राजा की बीस हजार पत्नियाँ थीं। उनमें से एक भी पत्नी संतानहीन नहीं थी। मंत्रियों ने राजा को बताया, "महाराज! राजवंश को आगे बढ़ाने वाला पुत्र अत्यंत आवश्यक है; जब अपना पुत्र न हो, तो राजभूमि में जन्मा पुत्र भी राजवंश को आगे बढ़ा सकता है।" तब राजा ने कहा, "मुख्य रानी को छोड़कर, मेरी शेष पत्नियाँ सात दिनों तक नृत्य करें।" वे बाहर अपनी इच्छा अनुसार व्यवहार करें। इस प्रकार भी उन्हें कोई संतान नहीं हुई। मंत्रियों ने फिर कहा, "हे महाराज! मुख्य रानी सभी पत्नियों में गुण और ज्ञान दोनों में श्रेष्ठ हैं। शायद महाराज मुख्य रानी के गर्भ से पुत्र प्राप्त कर सकें।" राजा ने मुख्य रानी को इस विषय की सूचना दी। उन्होंने इस प्रकार उत्तर दिया। "हे महान राजा! जिस भी स्त्री में धार्मिक संस्कार होते हैं और जो सत्य बोलने की आदत रखती है, उसे पुत्र प्राप्ति होती है; लज्जा और पाप के भय से रहित स्त्री को पुत्र कैसे प्राप्त हो सकता है?" ऐसा कहकर वह महल में गई और बार-बार इस बात का चिंतन करने लगी। जब वह गुणी रानी पाँचों धर्मों का चिंतन कर रही थी, तभी उसके मन में पुत्र प्राप्ति की इच्छा जागी और सक्का का सिंहासन काँप उठा।

95.4. तब, विचार करने पर, सक्का को इस बात का ज्ञान हुआ, उसने मन ही मन कहा कि वह गुणी मुख्य रानी को पुत्र का वरदान देगा, आकाश में गया, रानी के सामने खड़ा हुआ और पूछा, "तुमने क्या वरदान माँगा था?" रानी ने उत्तर दिया कि उसने पुत्र का वरदान माँगा था। सक्का ने रानी से कहा कि चिंता न करें क्योंकि वह उसे पुत्र दे रहा है, वह अपने दिव्य लोक में लौट आया और यह जानने के लिए पूछताछ की, "क्या यहाँ वास्तव में कोई ऐसा देवता है जिसका जीवनकाल समाप्त हो गया हो?" उसे यह ज्ञान हुआ: "यह महान कमल (महापदुम) उच्चतर दिव्य लोक में जाना चाहता होगा।" वह अपने महल में गया और उससे यह निवेदन किया, "प्रिय महापदुम! कृपया ऐसा न कहें; मानव लोक तुच्छ है।" सक्का ने उससे आग्रह किया, "मेरे प्रिय! तुमने मानव लोक में अच्छे कर्म किए और फलस्वरूप तुम्हारा यहाँ पुनर्जन्म हुआ, वहाँ भी जन्म लेकर तुम्हें पूर्णता प्राप्त करनी चाहिए; कृपया जाओ, मेरे प्रिय!" देवता ने उत्तर दिया: "हे महान राजा! माता के गर्भ में रहना कष्टदायी है; मैं वहाँ नहीं रह सकता।" बार-बार यही कहने पर कि "हे मेरे प्रिय! तुम्हारे लिए माता के गर्भ में

रहना संभव नहीं है; तुमने वास्तव में ऐसा पुण्य कर्म किया है कि तुम्हारा पुनर्जन्म कमल के कक्ष में होगा; कृपया जाओ, हे मेरे प्रिय!" अंततः उन्होंने अपनी सहमति दे दी।

95.5. वह स्वर्गलोक से विदा होकर बनारस के राजा के राजमहल में स्थित शिलापट्टा नामक पत्थर की झील में कमल के फूलों से बने कक्ष में जन्म लिया। उसी रात तड़के, राजा की बीस हजार स्त्रियों से घिरी हुई मुख्य रानी को स्वप्न में ऐसा लगा मानो उसे उसी शिलापट्टा नामक झील में कमल के फूलों से बने कक्ष में पुत्र प्राप्ति हुई हो। जब रात ढलकर भोर हुई, तो वह अपने नियमों का पालन करते हुए वहाँ गई और उसे एक कमल दिखाई दिया। वह फूल न तो किनारे पर था और न ही गहराई में। उस कमल को देखते ही उसके मन में पुत्र के प्रति मातृत्व भाव जागृत हुआ। वह स्वयं झील में उतरी और उस फूल को उठा लिया। फूल को उठाते ही उसकी पंखुड़ियाँ खिल उठीं और वह पूर्णतः खिल गया। वहाँ उसने सोने की प्रतिमा के समान एक शिशु पुत्र को देखा। उसे देखते ही उसने कहा, "मुझे पुत्र प्राप्ति हुई है।" जनसमूह ने उसे हजारों बधाईयाँ दीं। राजा को भी संदेश भेजा गया। राजा ने यह सुना, पूछा कि बच्चा कहाँ से आया है, प्राप्ति स्थान का पता लगाया और कहा: "यह उद्यान, कमल का सरोवर और कमल का फूल सब हमारे ही हैं; इसलिए, यह पुत्र, अर्थात्, मेरा जन्मा हुआ पुत्र (खेत्तजा), क्योंकि यह मेरे ही खेत में पैदा हुआ है"; बच्चे को नगर में प्रवेश करने दिया और बीस हजार राजस्त्रियों को उसका दूध पिलाने का आदेश दिया। जिसने भी राजकुमार की इच्छा को समझा और उसे मनचाहा भोजन खिलाया, उसे हजार का इनाम मिला। बनारस नगर में हलचल मच गई। जनसमूह ने राजकुमार को हजारों उपहार भेजे। राजकुमार को जब बार-बार यह और वह भोजन परोसा गया, तो वह कठोर और नरम भोजन खाने से असंतुष्ट और परेशान हो गया। ऐसा महसूस करके वह नगर द्वार पर जाकर लाख की गेंद से खेलने लगता था।

95.6. उस समय, बनारस पर निर्भर इसिपताना में एक मौन बुद्ध निवास कर रहे थे। वे सुबह जल्दी उठकर अपने सभी कर्तव्य जैसे निवास संबंधी कार्य, शारीरिक स्नान, आध्यात्मिक ध्यान आदि करते हुए एकांतवास से उठे और मनन करते हुए पूछा, "आज मैं भिक्षा कहाँ से प्राप्त करूँ?", उन्होंने युवा राजकुमार की महिमा देखी, उनके पूर्व कार्यों का पता लगाया और उन्हें यह जानकारी मिली: "उन्होंने मुझ जैसे एक व्यक्ति को भिक्षा दी थी और चार प्रार्थनाएँ की थीं; उनमें से तीन पूरी हो चुकी हैं; चौथी का अभी तक कोई फल नहीं मिला है; मैं उन्हें किसी प्रकार से ध्यान करने के लिए कोई इंद्रिय-विषय दिखाऊँगा।" वे भिक्षा मांगने के अपने भ्रमण के दौरान युवा राजकुमार के पास गए। युवा राजकुमार ने उन्हें देखकर कहा, "हे भिक्षु! यहाँ मत आइए; ये स्त्रियाँ भी आपसे यही कहेंगी: 'यह कठोर भोजन खाइए, यह नरम भोजन खाइए'।" वह केवल इतना कहकर वहाँ से चले गए और अपने निवास स्थान पर लौट आए। युवा राजकुमार ने अपने आस-पास के लोगों से कहा, "यह भिक्षु मुझसे बात करते ही तुरंत चले गए; क्या वे मुझसे नाराज़ हो गए हैं?" यद्यपि लोगों ने उन्हें उत्तर दिया, "सन्यासी आमतौर पर क्रोधित नहीं होते; जो कुछ भी उन्हें प्रसन्नतापूर्वक दिया जाता है, वे उसी से अपना जीवन यापन करते हैं," फिर भी उन्होंने कहा, "मैंने ऐसे भिक्षु को नाराज़ कर दिया है; मैं उनसे क्षमा माँगूँगा।" उन्होंने अपने माता-पिता को सूचित किया, राजसी हाथी पर सवार होकर भव्य शान से इसिपताना गए, वहाँ उन्होंने हिरणों का एक झुंड देखा और पूछा, "इन प्राणियों का क्या नाम है?" उत्तर मिला, "महाराज! इन्हें हिरण कहते हैं।" युवा राजकुमार ने पूछा, "क्या कोई रखवाले उनकी देखभाल करते हुए कहते हैं, 'यह कठोर भोजन खाओ; यह नरम भोजन खाओ'?" उत्तर मिला, "महाराज! कोई नहीं; जहाँ घास और पानी आसानी से उपलब्ध होते हैं, वहीं वे रहते हैं।"

95.7. युवा राजकुमार ने इस विषय पर चिंतन करते हुए कहा, "जिस प्रकार इन प्राणियों की देखभाल भी न होने पर भी वे अपनी इच्छानुसार स्थानों पर रहते हैं, तो क्या मैं भी इसी प्रकार रहूँ?" मौन बुद्ध को जब उनके आने का आभास हुआ, तो उन्होंने मठ तक जाने वाली सड़क और सैरगाह को साफ किया, प्रवेश करते समय अपने पदचिह्न छोड़े, लेकिन प्रस्थान करते समय कोई पदचिह्न नहीं छोड़ा और कहीं और चले गए। युवा राजकुमार वहाँ गए, उस स्थान को साफ-सुथरा देखकर, अपने आसपास के लोगों को यह कहते हुए सुना, "हम सोचते हैं कि मौन बुद्ध यहाँ निवास करते हैं", और उन्होंने कहा, "सुबह-सुबह भी वह भिक्षु नाराज थे; अब जब उन्होंने अपने ही स्थान को हाथियों, घोड़ों आदि द्वारा रौंदा हुआ देखा है, तो वे और भी नाराज हो गए होंगे; आप सब तो यहाँ खड़े भी हैं।" फिर वह अपने शाही हाथी की पीठ से उतरे, अकेले ही मठ में प्रवेश किया, वहाँ उन्होंने मौन बुद्ध द्वारा कर्तव्य के नाम पर साफ किए गए पदचिह्न देखे और मन ही मन कहा: "वह भिक्षु, जो अब यहाँ इधर-उधर घूम रहा है, मुझे लगता है कि उसने व्यापार आदि के बारे में नहीं सोचा होगा; निश्चित रूप से, वह केवल अपने कल्याण के बारे में सोच रहा होगा।" मन में प्रसन्न होकर वे सैरगाह पर चले गए, अपने चिंतन को व्यापक रूप से करते हुए (दुरिकतपुथुवितक्का) एक पत्थर की पटिया पर बैठ गए, एकाग्रचित्त हो गए (एकग्गा), पत्ति-पत्ती की कुटिया में

प्रवेश किया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करने का प्रयास किया (विपस्सन्तो), मौन बुद्धत्व प्राप्त किया और जब निजी पुरोहित ने उनसे उनके मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) के बारे में पूछा, तो पहले की तरह ही उन्होंने खुले आकाश में बैठकर इस श्लोक का पाठ किया।

95.8. मिगो, यहाँ, दो प्रकार के हिरणों को दर्शाता है: मैदानी मृग और चित्तीदार मृग। फिर भी यह सभी वन चौपायों के लिए प्रयुक्त शब्द है। हालाँकि, यहाँ चित्तीदार मृग का अर्थ है। इस प्रकार, वे कहते हैं। अरञ्ञ, वन, का अर्थ है: गाँव और गाँव के आसपास के क्षेत्र को छोड़कर, शेष वन है, (अरञ्ञ)'। हालाँकि, यहाँ उद्यान या उद्यान का अर्थ है; इसीलिए यह कथन है: "उद्यान में"। यथा का अर्थ है समानता। अबद्धो रस्सियों, बंधनों आदि से बंधा हुआ नहीं है; इस अभिव्यक्ति से पाठ अनसुलझे (अभ्यास या) व्यवहार को स्पष्ट करता है। येनिच्चकम गच्छति गोचराय का अर्थ है: जिस भी दिशा में वह जाना चाहता है, उसी दिशा में वह भोजन के लिए जाता है। यह भी प्रतापी ने कहा है:-

“हे भिक्षुओं! उदाहरण के लिए, जैसे एक वन हिरण,
एक घने जंगल में भटकते हुए, आगे बढ़ता है-
उलझा हुआ, सुलझा हुआ खड़ा है, सुलझा हुआ बैठा है, लेटा हुआ है
यह अपने आप ही सुलझ गया; इसका कारण क्या है?
हे भिक्षुओं! हिरण अभी तक नहीं गया है, इसलिए यह समस्या है।
शिकारी के दायरे में, ठीक स्वयं में-
हे भिक्षुओं! उसी प्रकार, एक भिक्षु स्वयं को अलग कर लेता है।
इंद्रिय सुखों से दूर रहकर, :P:
वह प्रथम ध्यान अवस्था में प्रवेश करने के बाद निवास करता है।
ऐसा कहा जाता है, हे भिक्षुओं! कि इसने एक
पथहीन (अपदा) का अंत, मारा; हत्या करने के बाद,
वह दुष्ट से दूर, मारा के पास चला गया।
आँखें देख नहीं पा रही थीं। यह एक विस्तृत कथन है।

सरितम, स्वतंत्रता वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपने मन से आचरण करता है, यानी दूसरों पर निर्भर नहीं रहता। यही कहा गया है: जिस प्रकार हिरण जंगल में अपनी इच्छा अनुसार चरने के लिए स्वतंत्र रूप से विचरण करता है, तो मैं भी भोग-विलास के बंधन से मुक्त होकर हिरण की तरह कब विचरण करूँगा? विष्णु एक ज्ञानी पुरुष हैं, स्वतंत्रता प्राप्त करने के उद्देश्य से वे एकाकी विचरण करते हैं।
श्लोक की शुरुआत पर टिप्पणी
Migo araññamhi के साथ, वन-हिरण के पास है
समाप्त हो गया।
संबोधित (अमंतना होती)
96. “अमंतना होती” से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि मंत्री एक बड़ी सभा के अवसर पर बनारस के राजा के पास पहुँचे। उनमें से एक मंत्री ने एक उपयुक्त स्थान पर जाने का अनुरोध करते हुए कहा: “महाराज! कुछ ऐसा है जो सुना जाना चाहिए।” राजा अपनी सीट से उठे और चले गए। फिर, एक अन्य मंत्री ने राजा से बड़ी सभा में बैठने का अनुरोध किया; एक अन्य ने शाही हाथी की पीठ पर बैठने का; एक अन्य ने शाही घोड़े की पीठ पर बैठने का; एक अन्य ने शाही सोने के रथ में बैठने का; एक अन्य ने उनसे पालकी में बैठने के बाद शाही उद्यान जाने का अनुरोध किया। राजा वहाँ से उतरे और चले गए। एक अन्य मंत्री ने अनुरोध किया कि उन्हें अपने पूरे जिले में अपने चक्कर पर जाना चाहिए। उनकी बात सुनकर भी, राजा अपने शाही हाथी की पीठ से उतरे और एक उपयुक्त स्थान पर चले गए इस प्रकार उन मंत्रियों से व्याकुल होकर राजा ने राज्य त्याग दिया और संन्यासी बन गए। मंत्रियों ने उनके शासनकाल में खूब तरक्की की। उनमें से एक ने राजा से कहा, “हे महाराज! कृपया मुझे फलां-फलां जिले का नाम बता दीजिए।” राजा ने उससे कहा, “इस जिले का शासक वही व्यक्ति है।” राजा की बात माने बिना वह वहां गया और बोला, “आप जाइए; मैं जिला ले लेता हूं और उस पर शासन करूंगा।” उसने पूर्व शासक से झगड़ा किया; फिर दोनों राजा के समक्ष आए और एक-दूसरे की कमियां बताईं। राजा

ने मन ही मन कहा, “इन लोगों को संतुष्ट करना असंभव है।” उसने उनके लालच का परिणाम देखा, उसे आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई और उसने मौन बुद्धत्व का दर्शन किया। उसने पहले की तरह ही आनंदमयी वाणी दोहराई।

96.1. इसका अर्थ इस प्रकार है:- वासे का अर्थ है वह स्थान जिसे दिन के समय साथियों के बीच लेटने के लिए विश्राम स्थल माना जाता है। थाने का अर्थ है वह स्थान जिसे बड़ी सभाओं का स्थान माना जाता है। गारिकाया का अर्थ है क्षेत्र में घूमना-फिरना। मुझे इस या उस प्रकार से संबोधित किया जा रहा है, जैसे: "कृपया मेरे मन की यह बात सुनें; कृपया मुझे यह दें" इत्यादि। इसलिए, मैं वहाँ से चला गया; और ऐसा त्याग और संन्यासी बनना है, जिसकी सभी लोभ से ग्रस्त दुष्टों द्वारा तीव्र इच्छा नहीं की जाती, इस तथ्य के बावजूद कि यह संन्यासी जीवन कई लाभों के साथ (आर्य) श्रेष्ठ लोगों द्वारा भोगा जाता है, और निश्चित रूप से सुखदायी होता है; यह अनाब्जिज्जितम है, दूसरों द्वारा इसकी लालसा नहीं की जाती, क्योंकि इस पर कोई नियंत्रण नहीं होता, क्योंकि यह उच्च सत्यों और मोक्ष के लिए अनुपयुक्त व्यक्ति होता है; सेरिताच पेक्खमानो ने भी स्वतंत्रता का पालन करते हुए आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित करना शुरू किया, और समय के साथ मैं मौन बुद्धत्व प्राप्त करने वाला बन गया। बाकी सब तो पहले ही बताया जा चुका है।

श्लोक की शुरुआत पर टिप्पणी

āmantana, address, has ended.

खेल और आनंद (खीड्डा-रती)

97. "खीड्डारती" (आनंदमय संतुष्टि) से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में ब्रह्मदत्त नाम का एक राजा था, जिसका एक ही पुत्र था। वह राजा अपने इकलौते पुत्र को बहुत प्रिय था, जो उसे प्रियतम था और उसके जीवन के समान था। राजा जहाँ भी जाता, अपने पुत्र को ही साथ ले जाता था। एक दिन, अपने राजमहल जाते समय, राजा अपने पुत्र को वहीं छोड़कर चला गया। उसी दिन युवा राजकुमार की भी एक बीमारी से मृत्यु हो गई। मंत्रियों ने मन ही मन सोचा, "पुत्र के प्रति प्रेम के कारण कहीं राजा का हृदय भी न टूट जाए", और राजा को सूचित किए बिना ही उसका अंतिम संस्कार कर दिया। राजमहल में, राजा मादक पेय के नशे में चूर था, इसलिए उसे अपने पुत्र की याद नहीं आई। अगले दिन भी स्नान और भोजन करते समय उसे अपने पुत्र की याद नहीं आई। बाद में, भोजन करने के बाद, वह लेट गया, अपने पुत्र के बारे में सोचा और कहा, "मेरे पुत्र को मेरे पास लाओ।" मंत्रियों ने उचित व्यवस्था के साथ राजा को उस घटना की सूचना दी। परिणामस्वरूप, चिंता से व्याकुल होकर राजा बैठ गए और इस प्रकार बुद्धिमानी से चिंतन करने लगे: “जब यह अस्तित्व में होता है, तब यह घटित होता है; इसके उद्भव से यह उत्पन्न होता है।” इस प्रकार, प्रतीत्यसमुत्पाद (पटिच्च समुत्पाद) का प्रत्यक्ष और विपरीत क्रम में चिंतन करते हुए, राजा ने मौन बुद्धत्व की कल्पना की। श्लोक की महत्वपूर्ण व्याख्या को छोड़ दें तो शेष भाग समग्ग (सहयोग) से प्रारंभ होने वाले श्लोक की व्याख्या में कही गई बातों के समान ही है।

97.1. महत्वपूर्ण व्याख्या इस प्रकार है: खीड्डा (खेल) का अर्थ है खेलना; यह खेल दो प्रकार का होता है: शारीरिक और मौखिक। शारीरिक खेलों में, वे हाथियों, घोड़ों, रथों, धनुष-बाण और तलवारों से खेलते हैं; इसी प्रकार आगे भी। मौखिक खेलों में, गायन, कविता पाठ, मुख-ढोल, ढोल बजाना; इसी प्रकार आगे भी। रति, पांच प्रकार के इंद्रिय सुखों में आनंदमय संतुष्टि है। विपुल (प्रचुर) का अर्थ है अपने पूरे शरीर को हड्डियों के मज्जा तक भर लेना। बाकी सब स्पष्ट है। क्रम की व्याख्या के संदर्भ में भी, यहाँ इसे उसी प्रकार समझा जाना चाहिए जैसा कि साथ रहने (संसग्ग) वाले श्लोक में कहा गया है; उसके बाद अन्य सभी श्लोकों में भी।

श्लोक की शुरुआत पर टिप्पणी

खिड्डारती, खेल और आनंद के साथ, है

समाप्त हो गया।

चारों दिशाओं का (चतुद्दिसो)

98. cātuddiso से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है?

ऐसा कहा जाता है कि पूर्व में, प्रतापी कस्सपा के युग में, पाँच मौन बोधिसत्वों ने संसार त्याग दिया, संन्यासी बन गए, बीस हजार वर्षों तक आने-जाने का कर्तव्य पूरा किया और दिव्य लोक में पुनर्जन्म लिया। वहाँ से देह त्यागने पर, उनमें से सबसे बड़े बनारस के राजा बने; शेष साधारण राजा बने। उन चारों ने भी मानसिक साधना (कम्मत्थाना) सीखी, राजत्व त्याग दिया, संसार त्याग दिया, संन्यासी बन गए, समय आने पर मौन बुद्ध बन गए, नंदमूल गुफा में रहने लगे, एक दिन समाधि से जागे (समापत्ति), अपने कर्मों और अपने सहोदर के कर्मों पर चिंतन किया, ठीक उसी प्रकार जैसे बांस के अंकुर के संबंध में श्लोक में वर्णित है, उन्हें बनारस के राजा के बारे में पता चला, और उन्होंने किसी न किसी माध्यम से उन्हें ध्यान के लिए एक इंद्रिय-विषय दिखाने का अवसर तलाशा। दूसरी ओर, वह राजा उस रात

तीन बार बेचैन हो गया; डर के मारे उसने चीख मारी; वह अपने विशाल प्रांगण में इधर-उधर भागने लगा। जब उसके निजी पुरोहित (पुरोहित) ने, जो सुबह जल्दी उठ गया था, उससे पूछा कि क्या वह अच्छी तरह सोया था, तो राजा ने उसे पूरी घटना बताते हुए कहा, "गुरुजी! मेरी खुशी कहाँ से आई?" निजी पुरोहित ने मन ही मन सोचा, "इस बीमारी का इलाज उल्टी लाने वाली दवा या अन्य औषधियों से तो संभव नहीं है; लेकिन मुझे कुछ ठोस खाने (अर्थात धन कमाने) का अवसर मिला है।" यह सुनकर राजा और भी भयभीत हो गए और उन्होंने कहा, "हे महाराज! यह तो अपशगुन है, जो आपकी संप्रभुता में कमी, आपके जीवन को खतरे आदि जैसी किसी घटना का संकेत है।" पुरोहित ने यज्ञ करने का निश्चय करते हुए कहा, "इस रोग के निवारण के लिए इतने हाथियों, इतने घोड़ों, रथों आदि के साथ-साथ चमकता हुआ सोना दान में देना चाहिए।"

98.1. तब मौन बुद्धों ने देखा कि हजारों जीवों को बलि के लिए एकत्रित किया जा रहा है, तो उन्होंने आपस में कहा: "जब यह कार्य हो जाएगा, तो राजा को ज्ञान प्राप्त कराना कठिन हो जाएगा; चलो! हम पहले ही उनके पास जाकर उनसे मिलें।" वे बांस के अंकुर (वंशक्कलीरा) से शुरू होने वाले श्लोक में वर्णित तरीके से उनके पास गए और भिक्षा-भंडारण के लिए महल परिसर में एक पंक्ति में चलने लगे। राजा, जो सिंह-पिंजरे जैसी खिड़की पर खड़े होकर अपने राजमहल के प्रांगण को देख रहे थे, उनकी नज़र मौन बुद्धों पर पड़ी। उन्हें देखते ही उनके हृदय में उनके प्रति राजसी स्नेह उत्पन्न हो गया। इसके बाद, राजा ने मौन बुद्धों को बुलवाया, उनसे खुले में उनके लिए तैयार की गई सीटों पर बैठने का अनुरोध किया, उन्हें आदरपूर्वक भोजन कराया और जब उन्होंने भोजन कर लिया, तो राजा ने पूछा: "तुम कौन हो?" उन्होंने उत्तर दिया: "हे महाराज! हमारा नाम चार दिशाएँ है।" राजा ने पूछा: "आदरणीय महाराज! इस नाम (चतुद्दिसा) चार दिशाओं का क्या अर्थ है?" उन्होंने उत्तर दिया: "हे महाराज! चारों दिशाओं में हमें न तो कोई खतरा है और न ही कोई भय।" राजा ने पूछा: "आपको कोई खतरा क्यों नहीं होता?" उन्होंने उत्तर दिया: "हे महाराज! हम प्रेम और दया का भाव रखते हैं; हम दयालु बनने का प्रयास करते हैं; हम दूसरों के सुख-समृद्धि पर प्रसन्न होते हैं; हम समभाव का अभ्यास करते हैं। इसी कारण हमें कोई खतरा नहीं है।" इतना कहकर वे अपने आसनों से उठे और अपने निवास स्थान की ओर चल दिए।

98.2. इसके बाद राजा ने सोचा, "ये भिक्षु कहते हैं कि 'प्रेम-कृपा आदि जैसे गुणों से कोई खतरा नहीं होता'; जबकि ब्राह्मण हजारों जीवों की हत्या की प्रशंसा करते हैं; वास्तव में किसका कथन सत्य है?" तब राजा के मन में यह विचार आया: "भिक्षु अपनी अशुद्धियों को शुद्धि से धोते हैं; जबकि ब्राह्मण अशुद्ध को अशुद्धि से धोते हैं। वास्तव में, अशुद्ध को अशुद्धि से धोना संभव नहीं है; केवल संन्यासी संन्यासियों का कथन ही सत्य है।" राजा ने प्रेम-कृपा से प्रारंभ करते हुए चार श्रेष्ठ जीवन (ब्रह्मविहार) का भी विकास किया, इस प्रकार कि "सभी जीव सुखी हों" इत्यादि, और सर्वव्यापी कल्याण की भावना से मंत्रियों को आदेश दिया: "सभी जीवों को मुक्त करो; उन्हें ठंडा जल पिलाओ; उन्हें हरी घास खिलाओ; उन पर ठंडी हवा चलने दो।" मंत्रियों ने तदनुसार किया।

98.3. इसके बाद राजा ने मन ही मन कहा, "मैं अच्छे मित्रों के वचनों के कारण बुरे कर्मों से बच गया हूँ", वहीं बैठे-बैठे ही उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया और मौन बुद्धत्व की कल्पना की। भोजन के समय जब मंत्रियों ने उनसे कहा, "हे महान राजा, समय हो गया है! कृपया भोजन कर लीजिए", तो उन्होंने उत्तर दिया, "मैं राजा नहीं हूँ"। पहले की तरह ही सब कुछ कहने के बाद, उन्होंने आनंदमयी वाणी का यह श्लोक पढ़ा।

98.4. चतुद्दिसो (चार दिशाओं में से एक) यहाँ उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो चारों दिशाओं में निवास करता है; वह चार दिशाओं का व्यक्ति इस प्रकार है: "वह व्यक्ति जिसके लिए चारों दिशाएँ श्रेष्ठ जीवन (ब्रह्मविहार) से व्याप्त हैं, सुविकसित हैं, इस प्रकार: 'वह एक दिशा में व्याप्त रहता है', इत्यादि।" वह अप्पतिघा है, द्वेष रहित है, इस प्रकार: "वह उन चारों दिशाओं में कहीं भी जीवित प्राणियों या प्राणियों के समूहों (संस्कार) को खतरे में नहीं डालता।" संतुष्टुस्सामानो, संतुष्ट रहना, बारह प्रकार के संतोष से संतुष्ट होना। इतरितारेन, उच्च या निम्न कारण से किसी एक या दूसरे से। परिश्यानां सहिता अचम्भी (कष्ट सहने पर भयभीत न होना) का अर्थ है:- यहाँ, परिश्याम का अर्थ है या तो शरीर और मन को कम किया जाता है या उनकी उपलब्धियों को कम किया जाता है; वैकल्पिक रूप से, खतरे (परिस्या) उनके कारण के रूप में उन पर निर्भर रहना या उनसे समर्थित होना है; यह बाहरी रूप से शेर का खतरा, बाघ का खतरा आदि जैसी शारीरिक और मानसिक विपत्तियों और आंतरिक रूप से इंद्रिय सुखों की इच्छा आदि के लिए शब्दावली है; इन कष्टों को धैर्यपूर्वक सहन करना और परिश्रम आदि जैसे कर्मों से सहन करना; इस प्रकार कष्टों को सहन करना है। खतरे के दूर होने पर अविचलित रहना और स्थिर रहना। क्या कहा गया है: जैसे वे चार भिक्षु; इस प्रकार, चाहे किसी भी कारण से कोई यहाँ संतुष्ट हो जाए, सिद्धि के लिए सही

अभ्यास के मूल स्थान पर संतोष में स्थापित होकर, वह प्राणियों और कर्मों के प्रति प्रेम आदि जैसे विकास (भावना) द्वारा चार दिशाओं में से एक हो जाता है, वह विनाशकारी खतरे की अनुपस्थिति के कारण द्वेष से भी मुक्त हो जाता है। वह, चार दिशाओं में से एक होने के कारण, उपर्युक्त विभिन्न प्रकार के कष्टों को सहन करने वाला है; द्वेष से मुक्त होने के कारण वह अविचल भी है; अत: इस प्रकार सिद्धि के लिए साधना के गुण को देखकर, मैंने उस साधना को जारी रखते हुए मौन बुद्धत्व प्राप्त किया है। दूसरे शब्दों में, यह जानकर कि "उन भिक्षुओं के समान संतुष्ट रहकर, उपर्युक्त विधि से किसी भी प्रकार से, व्यक्ति चारों दिशाओं का स्वामी बन जाता है", चारों दिशाओं का स्वामी बनने की आकांक्षा रखते हुए, मैंने बुद्धिमानी से उस साधना को जारी रखा और यह सिद्धि प्राप्त की। इसलिए, इस प्रकार की स्थिति की आकांक्षा रखने वाला कोई भी व्यक्ति, अविचलित होकर, द्वेष रहित होकर, चारों दिशाओं के कष्टों को सहन करते हुए, गैंडे के सींग के समान एकाकी विचरण करे। शेष का तरीका पहले ही बताया जा चुका है।

श्लोक की शुरुआत पर टिप्पणी

catuddisa के साथ काम खत्म हो गया है।

देखभाल करना कठिन (दुस्सांगह)

99. 'दुस्सांगहा' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस के राजा की मुख्य रानी का निधन हो गया। शोक के दिन समाप्त होने पर, मंत्रियों ने एक दिन उनसे निवेदन किया, "मुख्य रानी उन सभी शाही कार्यों में वांछनीय होती हैं, अर्थात् राजाओं के लिए; महाराज, कृपया एक और रानी भी लाएँ।" राजा ने उत्तर दिया, "हे मंत्रियों! ठीक है, तो मुझे बताएँ।" मंत्री एक उपयुक्त भावी मुख्य रानी की खोज में निकल पड़े; एक सीमावर्ती राज्य में, राजा का निधन हो गया था; उनकी रानी राज्य का प्रशासन संभाल रही थीं; हालाँकि, वह गर्भवती थीं; मंत्रियों को पता चला कि वर्तमान रानी उनके राजा के लिए उपयुक्त हैं और उन्होंने उनका हाथ मांगा। उन्होंने उत्तर दिया, "गर्भवती स्त्री पुरुषों को प्रसन्न नहीं करती; यदि आप मेरे प्रसव तक प्रतीक्षा करें, तो यह ठीक है; यदि नहीं, तो कृपया दूसरी रानी खोजें।" मंत्रियों ने यह बात भी राजा को बता दी। राजा ने कहा, "उसे गर्भवती होने दो, उसे लाओ।" वे उसे ले आए। राजा ने रानी का राज्याभिषेक किया और उन्हें मुख्य रानी के सभी साजो-सामान दिए; उन्हें हर तरह के उपहार दिए गए और उनकी सेवा के लिए स्त्रियों का एक दल भी दिया गया। कुछ समय बाद उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया। राजा अपना सारा जीवन बच्चे को अपनी कमर या छाती पर उठाकर, चाहे कहीं भी जाते या बैठते या खड़े होते, ऐसे ही ले जाते रहे, मानो वह उनका अपना बेटा हो। तब रानी के दल ने सोचा, "राजा हमारी रानी और उनके पुत्र का बहुत सम्मान करते हैं; वे राजकुमार के साथ बहुत ज्यादा घुलमिल जाते हैं; चलो! हम उन्हें अलग कर देते हैं।"

99.1 इसके बाद उन्होंने युवा राजकुमार से इस प्रकार कहा, "मेरे प्रिय! तुम हमारे राजा के पुत्र हो; इस राजा के पुत्र नहीं; इस पर भरोसा मत करो।" बाद में, यद्यपि राजा ने युवा राजकुमार से कहा, "आओ, मेरे पुत्र!" और यद्यपि राजा ने उसे हाथ पकड़कर खींचा, फिर भी वह राजा से लिपटा नहीं। कारण जानने पर राजा को इस बात का पता चला, तो वह क्रोधित होकर बोला, "यद्यपि मैं इनकी देखभाल करता हूँ, फिर भी ये लोग इतना घृणित व्यवहार कर रहे हैं।" उसने अपना राज्य त्याग दिया, संसार का त्याग कर संन्यासी बन गया। कई मंत्रियों और राजकवि ने यह कहते हुए कि "राजा संन्यासी बन गया है", स्वयं भी संसार का त्याग कर संन्यासी बन गए। यद्यपि राजा और उसके दल ने संसार का त्याग कर संन्यासी बन गए थे, फिर भी लोग उसके लिए उत्कृष्ट धार्मिक सामग्री लाते रहे। राजा ने अपने साथी भिक्षुओं को उनकी उम्र के अनुसार उत्तम वस्तुएँ प्रदान कीं। इस मामले में, जिन्हें अच्छी वस्तुएँ प्राप्त हुईं, वे संतुष्ट थे; जबकि अन्य शिकायत करते हुए कहते थे: "हम मठों की कोठरियों की सफाई आदि सब कुछ करते हैं, पर हमें कम भोजन और पुराने वस्त्र मिलते हैं।" राजा को जब यह भी पता चला, तो उन्होंने मन ही मन कहा: "ये भिक्षु उम्र के अनुसार वस्तुएँ मिलने पर भी शिकायत करते हैं; वास्तव में, अनुचरों की देखभाल करना कठिन है।" उन्होंने अपना भिक्षापात्र और वस्त्र उठाया, अकेले ही वन में चले गए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित करने लगे और मौन बुद्धत्व की कल्पना की। जब वहाँ आए लोगों ने उनसे उनके मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) के बारे में पूछा, तो उन्होंने यह श्लोक सुनाया। यह श्लोक अर्थ की दृष्टि से स्पष्ट है। हालांकि, व्याख्या (योजना) इस प्रकार है:- "भिक्षु होने के बावजूद, कुछ लोगों की देखभाल करना कठिन होता है, जो असंतोष से ग्रस्त होते हैं; इसी श्रेणी में गृहस्थ लोग भी आते हैं। देखभाल करने में आने वाली इस कठिनाई से तंग आकर, मैंने आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करना शुरू किया और यह उपलब्धि प्राप्त की।" शेष को पहले की तरह ही समझना है।

श्लोक की शुरुआत पर टिप्पणी

दुस्सांगहा के साथ, देखभाल करना मुश्किल,
समाप्त हो गया है।
. . . . . .

अवतरित होने का कारण (ओरोपवित्वा)

100. 'ओरोपवित्वा' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में ब्रह्मदत्त नाम का एक राजा था, जिसकी आयु चार माह (चातुमासिका) थी। वह ग्रीष्म ऋतु के पहले माह में अपने राजमहल में गया। वहाँ उसने एक हरे-भरे पत्तों से लदे कोविलारा वृक्ष को रमणीय भूमि पर देखा और कहा, "इस कोविलारा वृक्ष के चरणों में मेरी पलंग तैयार करो।" उसने राजमहल में समय बिताया और शाम को वहीं लेट गया। फिर ग्रीष्म ऋतु के मध्य माह में वह अपने राजमहल में गया। तब तक कोविलारा वृक्ष फूलों से खिल चुका था। उस समय भी उसने ऐसा ही किया। फिर ग्रीष्म ऋतु के अंतिम माह में वह गया। उस समय पत्तों से भरा कोविलारा वृक्ष सूखकर मुरझा गया था। उस समय भी राजा ने उस वृक्ष को देखे बिना ही, अपनी पूर्व परिचितता के कारण, उसी स्थान पर अपना पलंग तैयार करने का आदेश दिया। यह जानते हुए भी, मंत्रियों ने राज आदेशानुसार वहीं पर पलंग तैयार किया। राजा उद्यान में व्याकुल थे, और शाम को जब वे अपने शाही पलंग पर लेटे, तो उन्होंने उस वृक्ष को देखा और सोचा: "देखो! पहले यह वृक्ष पत्तों से भरा और अत्यंत सुंदर था, मानो हरे रत्नों से बना हो। इसके अलावा, इसकी शाखाओं के बीच, जो फूलों से ढकी थीं, मानो मूंगे के अंकुरों के समान हों, दृश्य अत्यंत भव्य था; इसके अलावा, उस वृक्ष के नीचे की भूमि, जो मोतियों के जाल के समान रेत से भरी थी और बिखरे हुए फूलों से ढकी थी, मानो लाल मखमल से ढकी हो; अब, वह वृक्ष, अर्थात्, एक सूखे वृक्ष के समान हो गया है और केवल कुछ शाखाओं के साथ खड़ा है। वास्तव में, मूंगे का वृक्ष (कोविलारा) वृद्धावस्था से ग्रस्त हो गया है" और अनित्यता का आभास करते हुए कहा: "निरर्थक (अनुपादिष्ण) भी वृद्धावस्था से ग्रस्त हो जाता है; तो सजीव (अनुपादिष्ण) कितना अधिक वृषण से ग्रस्त होगा?" "क्या?" इसके अनुसार ही, राजा ने दुख और अनात्म दोनों दृष्टियों से सभी सजीव और निर्जीव वस्तुओं (संस्कार) को स्पष्ट रूप से देखते हुए, यह इच्छा व्यक्त की: "हाय! मैं भी उस मूंगा वृक्ष (कोविलारा) के समान गृहस्थ गुणों से रहित हो जाऊँगा, जिसके पत्ते पूरी तरह झड़ गए हों।" उन्होंने समय आने पर आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) प्राप्त की, और उसी शाही पलंग पर दाहिनी ओर लेटे हुए ही मौन बुद्धत्व को प्राप्त कर लिया। इसके बाद, जब उनके मंत्रियों ने उन्हें जाने के लिए कहा: "महाराज! जाने का समय हो गया है", तो उन्होंने कहा: "मैं आपका राजा नहीं हूँ," और इसी प्रकार, पहले की ही तरह, उन्होंने इस श्लोक का पाठ किया।

100.1. ओरोपयित्वा (उतरने का कारण बनना) का अर्थ है दूर ले जाना। गिहिब्यंजनानि (गृहस्थ के लक्षण) का अर्थ है सिर के बाल, दाढ़ी, सफेद वस्त्र, आभूषण, फूलों की माला, इत्र, मलहम, पुत्र, पत्नी, पुरुष और स्त्री दास आदि। ये गृहस्थ की स्थिति को दर्शाते हैं, इसलिए इन्हें गृहस्थ लक्षण कहा जाता है। संछिन्नपत्तो (पत्तों से पूरी तरह रहित) का अर्थ है पत्तों के साथ त्यागा हुआ; चेत्वाना (काटना) का अर्थ है सही मार्ग के ज्ञान (मग्गाणा) से अलग होना; वीर (वीर) का अर्थ है सही मार्ग के प्रयास (मग्गवीर्य) से संपन्न होना; गिहिबंधनानि (गृहस्थ के बंधन) का अर्थ है काम (काम) गृहस्थों का बंधन। यह अब तक का सांसारिक अर्थ है। लेकिन इसका यही अर्थ है (अधिप्पायो):- "हाय! मैं भी गृहस्थ के लक्षणों को त्यागकर, पत्तों से रहित कोविलार वृक्ष के समान हो गया था"; ऐसा सोचते हुए, मैंने आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करना शुरू किया और यह उपलब्धि प्राप्त की। शेष को पहले की तरह ही समझना चाहिए।
श्लोक पर टिप्पणी,
koviḷāra से शुरू होकर, है
समाप्त हो गया।
पहला अध्याय समाप्त हो गया है
. . . . . .

सत्य प्राप्ति (सचे लबेथा)

101.2. 'सचे लबेथा' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? ऐसा कहा जाता है कि पूर्व में, प्रतापी कस्सपा के युग में, दो मौन बोधिसत्वों ने संसार का त्याग कर संन्यासी बन गए, बीस हजार वर्षों तक आने-जाने का कर्तव्य पूरा किया और देवलोक में पुनर्जन्म

लिया। वहाँ से देह त्यागने पर, उनमें से बड़े बनारस के राजा के पुत्र बने और छोटे पुरोहित के पुत्र। दोनों एक ही दिन गर्भ धारण किए, एक ही दिन अपनी माता के गर्भ से बाहर आए और साथ-साथ पृथ्वी क्रीड़ा करने लगे। पुरोहित के पुत्र में ज्ञान और बुद्धि थी; उन्होंने राजा के पुत्र से कहा, "मेरे मित्र! तुम्हारे पिता के देहांत के बाद, तुम राज्य के उत्तराधिकारी बनोगे; मैं पुरोहित का पदभार ग्रहण करूँगा; राज्य का संचालन केवल सुशिक्षित व्यक्ति ही कर सकता है; आओ, हम विद्या प्राप्त करें।" इसके बाद, दोनों को यज्ञ-आहुति देकर सम्मानित किया गया और वे भिक्षा मांगने के लिए छोटे-बड़े गाँवों में विचरण करते हुए सीमावर्ती जिले के एक गाँव में गए। उसी गाँव में, भिक्षा मांगने के दौरान, पाँच मौन बुद्ध प्रवेश कर गए। वहाँ के लोगों ने मौन बुद्धों को देखकर उत्साह से भर गए, उनके लिए आसन तैयार किए, और उन्हें आदरपूर्वक उत्तम पौष्टिक भोजन अर्पित किया। उन दोनों के मन में यह विचार आया: "हमारे जैसे उच्च कुल का कोई नहीं है; फिर भी, ये लोग चाहें तो हमें भिक्षा देते हैं, लेकिन न चाहें तो कुछ नहीं देते; वहीं दूसरी ओर, ये भिक्षु इतना आदरपूर्वक दान करते हैं; निःसंदेह, इन्हें किसी प्रकार का ज्ञान अवश्य होगा; आइए! हम इनके समक्ष ही यह ज्ञान सीखें।" जब लोग चले गए, तो उन्हें अवसर मिला और उन्होंने इस प्रकार निवेदन किया: "आदरणीय महोदय! आप जो भी ज्ञान जानते हैं, कृपया हमें सिखाएँ।" मौन बुद्धों ने उत्तर दिया: जो भिक्षु नहीं है, उसके लिए सीखना संभव नहीं है। उन दोनों ने संन्यास का वचन दिया और भिक्षु बन गए। इसके बाद, मौन बुद्धों ने उन दोनों को अच्छे आचरण का प्राथमिक नियम इस प्रकार समझाया: "तुम्हें अपने वस्त्र इस प्रकार पहनने चाहिए;" और इसी प्रकार, उन्होंने उन्हें अलग-अलग पत्तों की झोपड़ी देते हुए कहा: "इस विद्या की सिद्धि के लिए एकांत में गहन आनंद होना आवश्यक है; इसलिए तुम्हें अकेले बैठना चाहिए; अकेले घूमना चाहिए; अकेले खड़े रहना चाहिए; अकेले सोना चाहिए।" बाद में, वे सब अपनी-अपनी पत्तों की झोपड़ी में प्रवेश करके बैठ गए। पुरोहित के पुत्र ने बैठते ही अपने मन को उचित रूप से एकाग्र कर लिया और ध्यान प्राप्त कर लिया। राजा का पुत्र कुछ ही क्षणों में ऊबकर उनके पास आया। पुरोहित के पुत्र ने उससे पूछा: "मित्र! क्या बात है?" उत्तर मिला कि वह ऊब गया है। पुरोहित के पुत्र ने उसे सलाह दी: "तो फिर,"यहाँ बैठ जाओ।" राजा का पुत्र एक क्षण के लिए बैठ गया और बोला, "मेरे मित्र! कहते हैं कि इस विद्या की सिद्धि एकांत में गहन आनंद है।" पादरी के पुत्र ने उत्तर दिया, "हाँ, मेरे मित्र! तो तुम वापस अपनी जगह पर बैठ जाओ; मैं इस विद्या की सिद्धि प्राप्त कर लूँगा।" राजा का पुत्र वापस चला गया और फिर एक क्षण में ऊब गया और पहले की तरह तीन बार अपने मित्र के पास गया।

102.1. तब पादरी के बेटे ने भी उसे वापस भेज दिया और जब वह चला गया, तो उसने सोचा:- "यह तो अपने और मेरे दोनों के कर्मों को कम कर रहा है; यह यहाँ बार-बार आता है"; वह अपनी पत्तों की झोपड़ी से बाहर निकला और जंगल में चला गया। दूसरा व्यक्ति, जो अपनी पत्तियाँ-पत्थर की कुटिया में बैठा था, पल भर में ही ऊब गया। वह अपने मित्र के पास गया, इधर-उधर भटकने पर भी उसे नहीं देखा। उसने मन ही मन सोचा, "ऐसा व्यक्ति जो गृहस्थ रहते हुए भी उपहार लेकर आने पर भी मुझे देखने का अवसर नहीं पाता था, वह तो मेरे आने पर मुझे देखने का मौका न देने की इच्छा से चला गया। हाय! हे मन! क्या तुझे शर्म नहीं आती कि तू मुझे चौथी बार यहाँ ले आया? मैं तेरे प्रभाव में नहीं आऊँगा; बल्कि तुझे मेरी इच्छा का पालन करना होगा।" वह अपने निवास में लौट आया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करने लगा, मौन बुद्धत्व का दर्शन किया और आकाश के मार्ग से नन्दमूल गुफा में चला गया। दूसरा व्यक्ति भी वन में जाकर आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करने लगा, मौन बुद्धत्व का दर्शन किया और वहाँ भी चला गया। दोनों बैठ गए और इन मंत्रों का पाठ किया। आनंदमय अभिव्यक्ति के छंद, प्रत्येक एक के लिए।

102.2. निपाक (विवेकपूर्ण) स्वभावतः बुद्धिमान, समझदार और ध्यान के विषयों पर एकाग्रता जैसे कार्यों में निपुण होता है। साधुविहारी (सभ्य जीवन) का अर्थ है: मानसिक स्थिरता (ज्ञान अप्पना) की प्राप्ति या एकाग्रता (उपचार) की प्राप्ति से संपन्न होना; धीरम् (दृढ़ता से बुद्धिमान) का अर्थ है: दृढ़ता से संपन्न होना; यहाँ विवेकपूर्ण होने के कारण दृढ़ता की प्राप्ति का उल्लेख किया गया है; इस प्रकार, यही अर्थ है। दृढ़ता, अर्थात्, निरंतर प्रयास करना। इस प्रकार प्रयास करने की शब्दावली है: "इच्छापूर्वक (कामम्); त्वचा, नसें और (हड्डियाँ) बनी रहेंगी।" इसी प्रकार, बुराई की निंदा करने वाला दृढ़ बुद्धि वाला व्यक्ति (धीर) होता है। राजावा रत्त्वं विजितं पहावा (जिस राजा ने अपने जीते हुए राज्य का त्याग कर दिया) का अर्थ है: "जीता हुआ राज्य किसी काम का नहीं होता", उसने अपना राज्य त्याग दिया और अकेला भटकने लगा; इस प्रकार, मूर्ख साथियों को छोड़कर, व्यक्ति को अकेले भटकना चाहिए। दूसरे शब्दों में, राजावा तत्त्वं का अर्थ है, राजा सुतसोमा की तरह, जिसने अपना जीता हुआ राज्य त्याग कर अकेला भटकना शुरू कर दिया; या फिर राजा महाजनक की तरह, जो इस प्रकार अकेले भटकने लगा; यही उस अभिव्यक्ति का अर्थ है। शेष का अर्थ पहले ही स्पष्ट किया जा चुका है; विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है।
सहाय से शुरू होने वाले श्लोक की व्याख्या समाप्त हो गई है।

. . . .

निश्चित रूप से प्रशंसा (अद्धा पसमसामा)

103. 'अद्धा पसंसामा' से शुरू होने वाले इस श्लोक की उत्पत्ति, 'चतुद्दिसा' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति के समान ही है, जो आकाश के खुले वातावरण में मौन बुद्धों के अपने तैयार आसनों पर बैठने तक की कहानी को समेटे हुए है। हालांकि, अंतर यह है कि जिस प्रकार राजा रात में तीन बार भयभीत हुआ था, वैसा इसमें नहीं है; और न ही यह यज्ञ का अर्पण था। राजा ने आकाश के खुले वातावरण में मौन बुद्धों को उनके तैयार आसनों पर बैठाकर पूछा, "आप कौन हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "हे महाराज! हम वे हैं जो निष्पापता से अपना पोषण करते हैं।" राजा ने पूछा, "आदरणीय महोदय! 'अनवज्जभोजी' (निष्पापता से पोषित) अभिव्यक्ति का क्या अर्थ है?" उनका उत्तर था, "हे महाराज! हम जो कुछ भी प्राप्त करते हैं, चाहे अच्छा हो या बुरा, उसे अपरिवर्तित रूप से ग्रहण करते हैं।" यह सुनकर राजा के मन में यह विचार आया: “क्या मैं यह जानने के लिए कुछ धारण करूँ कि वे ऐसे हैं या नहीं?” उस दिन राजा ने उन्हें टूटे हुए चावल की दलिया और खट्टी खिचड़ी खिलाकर उनका सत्कार किया। मौन बुद्धों ने उसे ऐसे ग्रहण किया मानो वह अमृत (अमरता का जल) हो। राजा ने मन ही मन कहा, “ये मौन बुद्ध अपनी प्रतिज्ञा के कारण एक दिन के लिए अपरिवर्तित रहे; मुझे कल फिर पता चल जाएगा।” और उन्होंने उन्हें अगले दिन भोजन के लिए आमंत्रित किया। दूसरे दिन भी उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने तब भी उसी प्रकार भरपेट भोजन किया। फिर राजा ने मन ही मन कहा, “मैं उन्हें अच्छा भोजन कराने के बाद उनकी परीक्षा लूँगा।” उन्होंने उन्हें फिर से आमंत्रित किया, दो दिनों तक उनका भव्य आदर किया और उन्हें उत्तम और अत्यंत विविध प्रकार के कठोर और नरम भोजन से सत्कार किया। मौन बुद्धों ने तब भी उसी प्रकार भरपेट भोजन किया, राजा के लिए शुभ शब्द बोलकर उन्हें आशीर्वाद दिया और प्रस्थान किया। उनके जाने के कुछ ही समय बाद, राजा ने ऐसा सोचा: “ये मौन बुद्ध निष्पाप भोज करने वाले हैं; यदि मैं भी निष्पाप भोज करने वाला बन जाऊं तो कितना उत्तम होगा”, उन्होंने महान संप्रभुता का त्याग कर भिक्षुत्व ग्रहण किया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करना शुरू किया, मौन बुद्ध बन गए, और सुगंधित मंजूसाक वृक्ष की तलहटी में मौन बुद्धों के बीच अपने ध्यान के विषय को स्पष्ट करने के लिए इस श्लोक का पाठ किया। सांसारिक दृष्टि से वह श्लोक बिल्कुल स्पष्ट है। हालांकि, यहां सहायसंपदाम का अर्थ यह समझा जाना चाहिए: सिद्ध पुरुषों, असेख (असेख) के समान सद्‌गुणों आदि से संपन्न होने की उचित प्राप्ति; केवल ऐसे साथी को ही सहायसंपदा कहा जाता है, जो साथियों से परिपूर्ण हो।

103.1. यहाँ व्याख्या इस प्रकार है: जो कुछ भी कहा गया है कि यह संगति का सौभाग्य है, उस संगति के सौभाग्य की हम निश्चित रूप से प्रशंसा करते हैं, तो यह इस प्रकार कहा गया है: हम केवल एकतरफा प्रशंसा कर रहे हैं। कैसे? उत्कृष्ट और समान रूप से सेवा की जानी चाहिए। क्यों? जब अपने स्वयं के उपदेशों आदि के साथ उत्कृष्ट रूप से अभ्यास किया जाता है, तो उपदेश आदि जैसे अजन्मे गुण उत्पन्न होते हैं। उत्पन्न हुए गुण भी वृद्धि, विकास और समृद्धि प्राप्त करते हैं। समान रूप से अभ्यास करने वाले व्यक्ति के लाभ, परस्पर समान होने और चिंता दूर होने के कारण, कम नहीं होते। लेकिन जब उत्तम और समतुल्य साथी न मिलें, तो अच्छे परिवार का वह युवक जो कल्याण चाहता है, पाखंड (कुहना) आदि जैसे कुटिल जीवन शैली को त्यागकर, धर्म (धम्मेना) और समता (समेना) से उत्पन्न भोजन का सेवन करके, घृणा की भावना को उत्पन्न न होने देकर, निष्पाप हो जाए (पृष्ठ 309), और गैंडे के सींग की तरह अकेले विचरण करे। मैंने भी इसी प्रकार विचरण करते हुए यह यश प्राप्त किया।

श्लोक पर टिप्पणी,
अद्धापसंसा से शुरू
(निश्चित रूप से स्तुति) समाप्त हो गई है।

. . . . . .

सोना देखकर (दिस्वा-सुवन्नस्स)

104. 'दिसवासुवन्नस्स' (सोना देखकर) से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस का एक राजा था, जो गर्मी के मौसम में दिनभर आराम करने के लिए लेटने गया था। उसके पास ही एक वेश्या ठंडी चंदन की लकड़ी पीस रही थी। उसकी एक भुजा में सोने का कंगन था; दूसरी भुजा में दो कंगन थे। वे आपस में टकरा रहे थे; तीसरा नहीं टकरा रहा था। राजा ने यह देखा और

सोचा, "जिस प्रकार भीड़ में रहने वाले लोग आपस में टकराते हैं; अकेले रहने में कोई टकराव नहीं होता," और उसने उस सुंदरी को बार-बार देखा। उस समय भी, सभी आभूषणों से सजी रानी वहाँ राजा को पंखा झल रही थी। उसने सोचा, "मुझे लगता है कि राजा उस वेश्या पर मोहित हो गया है," उसने उस वेश्या को उठाया और स्वयं चंदन की लकड़ी पीसने लगी। उस समय उसकी दोनों भुजाओं में कई सोने के कंगन थे; आपस में टकराने पर उनसे बहुत ध्वनि उत्पन्न हो रही थी। राजा अत्यंत क्रोधित हो गए, दाहिनी ओर लेटे हुए ही उन्हें आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त होने लगी और उन्होंने मौन बुद्धत्व का दर्शन किया। चंदन की पिसी हुई सामग्री हाथ में लिए रानी, परमानंद में डूबे राजा के पास आईं और बोलीं, “हे महाराज! मैं आपको लेप लगाने जा रही हूँ।” राजा ने उत्तर दिया, “चली जाइए; मुझे मत लेप लगाइए।” रानी ने पूछा, “क्यों? हे महाराज!” राजा ने कहा, “मैं अब राजा नहीं हूँ।” जब मंत्रियों ने उन दोनों के बीच की बातचीत सुनी, तो वे उनके पास आए। जब उन्होंने भी राजा को “हे मंत्रियों! मैं अब राजा नहीं हूँ” कहकर संबोधित किया, तो राजा ने कहा, “हे मंत्रियों! मैं अब राजा नहीं हूँ।” शेष वही है जो पहले श्लोक में कहा गया है।

104.1. हालाँकि, श्लोक की व्याख्या इस प्रकार है: - दिस्वा (देखकर) का अर्थ है: देखा हुआ; सुवन्नस (सुंदर रंग का) का अर्थ है सोने का। वलयनी पाली लिपि का वह शब्द है जो पढ़ा नहीं गया (या लिखा नहीं गया)। वास्तव में, यही शेष सांसारिक अर्थ है; यही अभिप्राय है। पभसरानी (चमक) का अर्थ है: दीप्तिमान चरित्र, तेज से युक्त; यही कथन है। शेष का सांसारिक अर्थ स्पष्ट है। हालाँकि, व्याख्या यह है - उसकी भुजा में सोने की चूड़ियाँ देखकर, मैंने ऐसा सोचा: “यदि संगति में रहते हैं, तो टकराव (आपसी टक्कर) होता है; अकेले रहने पर कोई टक्कर (या टकराव) नहीं होता” - आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित होने लगी और मैंने अपनी उपलब्धि प्राप्त की।
श्लोक पर टिप्पणी,
सुवन्नवलाय से शुरू
(सोने की चूड़ी) समाप्त हो गई है।
. . . .

एवम्दुतियाना...आयतिभया (भविष्य का खतरा)

105. एवम्दुतियाना से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस के एक राजा, जो कम उम्र में ही भिक्षु बनना चाहते थे, ने अपने मंत्रियों को आदेश दिया: “रानी को ले जाओ और मेरे राज्य पर शासन करो; मैं संसार त्याग कर संन्यासी बन जाऊंगा।” मंत्रियों ने सुझाव दिया: “हे महाराज! हमारे लिए राजाविहीन राज्य की देखभाल करना संभव नहीं है; आसपास के राजा आकर लूटपाट करेंगे; जब तक एक पुत्र का जन्म न हो जाए, तब तक कृपया प्रतीक्षा करें।” कोमल हृदय वाले राजा ने सहमति दे दी। बाद में, रानी गर्भवती हो गईं। राजा ने फिर मंत्रियों को आदेश दिया: “रानी गर्भवती हैं; मेरे पुत्र के जन्म के बाद उसका अभिषेक करो और मेरे राज्य की देखभाल करो, मैं राज्य त्याग कर भिक्षु बन जाऊंगा।” मंत्रियों ने राजा को फिर से सुझाव दिया: “हे महाराज! यह जानना कठिन है कि रानी पुत्र को जन्म देंगी या पुत्री को; कृपया प्रसव तक प्रतीक्षा करें।” तब उन्होंने पुत्र को जन्म दिया। उस समय भी राजा ने अपने मंत्रियों को पहले की तरह ही आदेश दिए। मंत्रियों ने भी अनेक कारण बताते हुए राजा से कहा, “हे महाराज! कृपया अपने पुत्र के पूर्णतः बलवान होने तक प्रतीक्षा कीजिए।” जब युवा राजकुमार पूर्णतः बलवान हो गया, तो राजा ने मंत्रियों को एकत्रित किया और आदेश देते हुए कहा, “यह अब पूर्णतः बलवान हो गया है, इसे राजा बनाइए और मेरे राज्य की देखभाल करने दीजिए।” राजा ने मंत्रियों को अवसर दिए बिना ही बाज़ार से भिक्षुओं के सभी आवश्यक सामान, पीले वस्त्र आदि मंगवाए, अपने ही महल में भिक्षु बन गए, राजा महाजनक के समान संसार का त्याग कर चले गए। उनके सभी अनुयायी विलाप करते हुए राजा के पीछे-पीछे बेतरतीब ढंग से दौड़े। राजा अपने राज्य की सीमा तक गए, अपनी छड़ी से एक रेखा खींची और कहा, “इस रेखा को पार नहीं किया जाना चाहिए।” लोगों का विशाल समूह ज़मीन पर लेटकर विलाप करने लगा, अपना सिर कतार की ओर झुकाए हुए, और राजकुमार से कतार के पार जाने का अनुरोध करते हुए बोला, “प्रिय राजकुमार! अब राजा के आदेश का तुम पर क्या असर होगा?” राजकुमार “पिताजी, पिताजी” कहते हुए उनके पीछे दौड़ा और राजा के पास पहुँच गया। राजा ने राजकुमार को देखा और मन ही मन कहा, “मैंने इतने बड़े जनसमूह की देखभाल करते हुए अपने राज्य पर शासन किया है; अब मैं एक बालक की देखभाल क्यों नहीं कर सकता?”, फिर राजकुमार को लेकर जंगल में चला गया, वहाँ उसने पूर्व मौन बुद्धों की पत्तों की कुटिया देखी और अपने पुत्र के साथ वहीं निवास करने लगा।

105.1. इसके बाद, राजकुमार उत्तम बिस्तर आदि का आदी होने के कारण रस्सी के पलंग पर सोने पर रोने लगा। ठंडी हवा आदि से पीड़ित होकर वह कहता, “पिताजी, ठंड है! पिताजी, गर्मी है! पिताजी, मच्छर काट रहे हैं! मुझे भूख लगी है; पिताजी, मुझे प्यास लगी है।” राजा ने उसे शांत करके रात गुजार दी। दिन में भी उसके पिता भिक्षा के लिए भोजन एकत्र करते और उसे भोजन कराते। बाजरा, सेम और राजमा आदि से युक्त मिश्रित भोजन खाकर राजकुमार अपनी भूख मिटाता था, और कुछ दिनों में ही वह गर्मी से मुरझाए कमल के फूल की तरह सूख गया। फिर भी, राजा ने अपने विवेक (पटिसंखाह) के बल पर भोजन नहीं बदला। इसके बाद, राजकुमार को शांत करने के लिए उसके पिता ने कहा, “प्रिय पुत्र! शहर में उत्तम भोजन उपलब्ध है; चलो वहाँ चलें।” राजकुमार ने उत्तर दिया, “जी पिताजी!” इसके बाद पिता उसी रास्ते से वापस लौट गए जिससे वे आए थे, और अपने बेटे को आगे चलने को कहा। राजकुमार की माता, रानी ने सोचा, “राजा राजकुमार को ले गए हैं, इसलिए वे जंगल में ज्यादा देर नहीं रुकेंगे; कुछ ही दिनों में लौट आएंगे।” उन्होंने ठीक उसी जगह पर बाड़ बनवाई जहाँ राजा ने अपनी छड़ी से रेखा खींची थी और वहीं रहने लगीं। राजा उनकी बाड़ से कुछ ही दूरी पर खड़े रहे और अपने बेटे को वहाँ भेजते हुए कहा, “प्यारे बेटे! तुम्हारी माँ यहाँ लेटी हैं; तुम्हें जाना चाहिए।” राजा तब तक देखते रहे जब तक उनका बेटा वहाँ नहीं पहुँच गया, उन्हें लगा कि कोई उन्हें परेशान नहीं कर रहा है। राजकुमार दौड़कर अपनी माँ के पास पहुँच गए।

105.2. राजकुमार को आते देख पहरेदार ने रानी को सूचना दी। बीस हजार नृत्य करती युवतियों से घिरी रानी राजकुमार से मिलने आगे बढ़ी और उनका स्वागत किया। उसने राजकुमार से राजा के बारे में भी पूछा। राजा के अपने पुत्र के पीछे आने की सूचना पाकर रानी ने अपने सैनिकों को भेजा। दूसरी ओर, राजा उसी क्षण अपने निवास स्थान पर लौट गए। राजा को न पाकर वे वापस चले गए। इसके बाद रानी ने आशा छोड़ दी, अपने पुत्र को लेकर अपने नगर लौट गईं और उनका राज्याभिषेक किया। राजा अपने निवास स्थान पर बैठ गए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की, मौन बुद्धत्व को प्राप्त किया और सुगंधित मंजूसाका वृक्ष की तलहटी में मौन बुद्धत्व की अवस्था में आनंदमय इस श्लोक का पाठ किया। यह श्लोक अर्थ की दृष्टि से बिल्कुल स्पष्ट है।

105.3. यहाँ मुख्य बात यह है --- इस प्रकार, अकेले में, अपने साथी राजकुमार द्वारा उसकी सर्दी, गर्मी आदि के बारे में दी गई रिपोर्ट के साथ, उसके साथ रहने के कारण, मेरे मन में वाचाभिलापो (अपमानजनक वाणी के व्यर्थ शब्द) उत्पन्न हुए; या मैं अभिसज्जनावा (उसके प्रति अपने स्नेह के कारण चिड़चिड़ा) हो गया। यदि मैं इसे त्याग नहीं देता, तो परिणामस्वरूप, भविष्य में भी यह अभी के समान ही होता। एवम् दुतिवेना सह मनस्स वाचाभिलापो अभिसज्जनावा, इस प्रकार मेरे मन में भी आपत्तिजनक वाणी (या शाप) उत्पन्न हो सकते हैं यदि मैं किसी साथी के साथ रहूँ। यह कहते हुए: "ये दोनों भी विशिष्ट उपलब्धि के हानि-सूचक हैं", तदनुसार एतम् भयम् आयतिम् पेक्खमानो (भविष्य में इस खतरे को देखते हुए) मैंने इसे त्याग दिया, अपने जीवन को बुद्धिमानी से व्यवस्थित किया और इस प्रकार, मैंने मौन बुद्धत्व प्राप्त किया। बाकी सब तो पहले ही बताए गए तरीके से ही है।
श्लोक पर टिप्पणी,
आयतिभय (भविष्य) से शुरू
खतरा) समाप्त हो गया है।

. . . .

इच्छा विविध (कामा ही चित्रा)

106. 'कामा हि चित्रा' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में एक बैंकर के पुत्र को कम उम्र में ही बैंकर का पद मिल गया। उसके पास वर्ष के तीन ऋतुओं के लिए उपयुक्त तीन आलीशान महल थे। वह अपनी सारी समृद्धि से एक दिव्य युवक की तरह आनंदित रहता था। फिर, हालांकि वह अभी भी युवा था, उसने अपने माता-पिता से इस प्रकार निवेदन किया: "मैं संन्यास लेकर संन्यासी बनना चाहता हूँ।" उन्होंने उसे मना किया। उसने फिर भी आग्रह किया। उसके माता-पिता ने उसे कई तरह से मना किया: "प्रिय पुत्र! तुम अभी नाज़ुक हो; संन्यास लेना कठिन है; यह किसी तरकश पर चलने के समान है।" उसने फिर भी आग्रह किया। उसके माता-पिता ने सोचा: "यदि हमारा पुत्र संन्यास लेकर संन्यासी बन जाए, तो हमें अप्रसन्नता होगी; यदि हम उसे मना करें, तो मुझे अप्रसन्नता होगी। फिर भी, अप्रसन्नता हमें हो, मुझे नहीं," और उसे अनुमति दे दी। इसके बाद, विलाप कर रहे अपने सभी साथियों की परवाह किए बिना, वह इसिपताना चले गए और मौन बुद्धों की उपस्थिति में भिक्षु बन गए। वे मुख्य मठ में नहीं पहुँचे, बल्कि एक पलंग पर चटाई बिछाकर सो गए। उत्तम बिस्तर पर आराम करने के बाद, वे पूरी रात अत्यंत दुखी रहे। भोर होते ही, उन्होंने स्नान किया, भिक्षापात्र और वस्त्र धारण किया और मौन बुद्धों के साथ भिक्षा मांगने के लिए भिक्षालय में प्रवेश किया। वहाँ वरिष्ठ भिक्षुओं को मुख्य आसन और मुख्य भिक्षापात्र प्राप्त होता था; नवदीक्षित भिक्षुओं को जो भी साधारण आसन और हल्का भोजन मिलता था, वही मिलता था। वे कम

पोषण से अत्यंत व्याकुल थे। इसलिए, कुछ ही दिनों में वे दुबले-पतले और पीले पड़ गए और निराश हो गए, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति भिक्षु बनने से पहले भिक्षुओं के कार्यों में पूर्णतः परिपक्व नहीं हो पाता। इसके बाद, उन्होंने अपने माता-पिता को संदेश भेजा और भिक्षु जीवन त्याग कर अपना वस्त्र उतार दिया। कुछ ही दिनों में वे फिर से स्वस्थ हो गए और पुनः भिक्षु बनने की इच्छा रखने लगे। इसके बाद, वे दूसरी बार भिक्षु बने और फिर से भिक्षुत्व त्याग दिया। तीसरी बार भिक्षु बनने पर उन्होंने अपने जीवन को सही ढंग से व्यवस्थित किया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित की, मौन बुद्धत्व का दर्शन किया, आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ किया और मौन बुद्धों के बीच फिर से इसी व्याख्यात्मक श्लोक का पाठ किया।

106.1. काम में दो प्रकार के इंद्रिय सुख शामिल हैं: एक इंद्रिय सुख जो आधारभूत, अर्थात् भौतिक अंग (या बाह्य वस्तु) और इच्छा से संबंधित है, जिसे व्यक्तिपरक रूप से माना जाता है। यहाँ वत्थुकमा, आधारभूत (वत्थु) से संबंधित सुख है, अर्थात् ऐसे धर्म में जो चिंतन का विषय है, जिसमें प्रेममय रूप आदि शामिल हैं; व्यक्तिपरक रूप से मानी जाने वाली इच्छा (किलेसा काम), अर्थात् सभी प्रकार की कामवासना (राग)। यहाँ, हालांकि, आधारभूत (वत्थु काम) से संबंधित सुख का तात्पर्य है। अनेक प्रकार के रूपों आदि से युक्त काम को चित्रा (बहुरंगी) कहा जाता है। सांसारिक स्वाद को मधुर (मधुर) कहा जाता है। ये मूर्ख सामान्य लोगों (पुथुज्जन) के मन को प्रसन्न करते हैं; इस प्रकार मनोरमा (मन को आनंदित करने वाली) है। विरूपरूपेण का अर्थ है: विभिन्न प्रकार के रूपों से युक्त; यह कथन इस प्रकार है: अनेक प्रकार के चरित्रों (या व्यवहार) के साथ। वास्तव में, वे रूप आदि के अनुसार विविधतापूर्ण हैं; रूपों आदि में वे नीले रंग आदि के कारण विभिन्न रूपों में हैं। इस प्रकार, उन कुरूप और सुंदर रूपों के माध्यम से इस प्रकार और उस प्रकार स्वाद (या मिठास) प्रदर्शित करके, वे मन को विचलित करते हैं; वे त्याग में गहन आनंदित होने नहीं देते। शेष यहाँ स्पष्ट है। निष्कर्ष की व्याख्या भी दो या तीन शब्दों में की जाए तो उसे पूर्व श्लोकों में वर्णित तरीके से समझा जाना चाहिए।
श्लोक पर टिप्पणी,
काम (इच्छा) से शुरू होकर
समाप्त हो गया है
. . . .

107. ईतिका से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में राजा को एक घाव हो गया। बहुत दर्द होने लगा। चिकित्सकों ने कहा: "बिना शल्यक्रिया के कोई इलाज नहीं है"। राजा ने उन चिकित्सकों को सुरक्षा दी और उन्हें शल्यक्रिया करने की अनुमति दी। उन्होंने घाव को चीरकर उसमें से मवाद और खराब खून निकाला, रोगी को दर्द से राहत दी और घाव पर कपड़े की पट्टी बाँध दी। उन्होंने उसे कम मांस के पोषण के संबंध में उचित चिकित्सा सलाह दी। कम आहार के कारण राजा दुबला हो गया। हालाँकि, उसका घाव ठीक हो गया। जब उसे इलाज और आराम का एहसास हुआ, तो राजा ने वसायुक्त भोजन खाया। इसके कारण मजबूत होकर, राजा ने इसे और भी अधिक मात्रा में खाया। उसका घाव फिर से अपनी पिछली स्थिति में पहुँच गया इस प्रकार, उन्होंने स्वयं तीन बार ऑपरेशन करवाया और जब डॉक्टरों ने उनका इलाज करने से इनकार कर दिया, तो राजा निराश हो गए, उन्होंने अपनी उच्च संप्रभुता का त्याग कर दिया, एकांतवासी बन गए, जंगल में प्रवेश किया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करना शुरू किया, सात वर्षों के भीतर मौन बुद्धत्व की कल्पना की, आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ किया और नानदामूलक गुफा में चले गए।

107.1. ईति, वहाँ, का अर्थ है: वह आता है। यह शब्द उन अतिथियों के लिए प्रयोग किया जाता है जो बुरे कर्मों में भागीदार होते हैं और विनाश के लिए जिम्मेदार होते हैं। वहाँ कामुक सुख (कामगुण) के धागे भी ईति (वह आता है) कहे जा सकते हैं क्योंकि यह बहुत विनाश और विपत्तियों के संचय को बढ़ावा देता है। घाव भी अशुद्धता उत्पन्न करता है; यह सूज जाता है, पूरी तरह पक जाता है और पूरी तरह फट जाता है। इसलिए, ये घाव अशुद्ध दुराचार (किलेसा) के निकलने के कारण, साथ ही वृद्धावस्था के कारण सूजकर पूरी तरह पकने के बाद पूरी तरह फट जाने के कारण संधो (घाव) होते हैं। यह कष्टदायी होता है; इस प्रकार, यह उपद्दव (दुर्भाग्य) है जो हानि को बढ़ावा देता है, यह हावी हो जाता है और व्याप्त हो जाता है; यही इसका अर्थ है। यह काम आदि के घावों के लिए प्रयुक्त शब्द है। क्यों? ये इंद्रिय सुखों के सूत्र दुर्भाग्य (उपाद्दव) हैं, क्योंकि ये निर्वाण के कल्याण में बाधक हैं और सभी कष्टदायी कार्यों का मूल कारण हैं। यद्यपि ये दुराचार (किलेष) की स्थिति उत्पन्न करते हैं या नैतिक उपदेश माने जाने वाले स्वास्थ्य को बार-बार हानि पहुँचाते हैं, जिससे सामान्य स्वास्थ्य भी नष्ट हो जाता है। अतः, स्वास्थ्य को नष्ट करने के अर्थ में यह रोग (बीमारी) है। वहीं, भीतर तक प्रवेश करने और चुभने के

अर्थ में यह सल्ला (काँटा) है, जिसे निकालना कठिन है। वर्तमान और भविष्य में भय से ग्रस्त होने के कारण यह भव (खतरा) है; मेतम का अर्थ है: यह मेरे लिए। शेष यहाँ स्पष्ट है। निष्कर्ष को भी पहले बताए गए तरीके से ही समझना चाहिए।
श्लोक पर टिप्पणी
इति से शुरू होकर, यह समाप्त हो चुका है।

शीत (सीतांच)

108. सीतांच से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में ब्रह्मदत्त नाम का एक राजा था, जिसे सर्दी-जुकाम बहुत होता था। उसने संसार त्याग दिया, संन्यासी बन गया और जंगल में घास-फूस की कुटिया में रहने लगा। लेकिन वह स्थान खुले में होने के कारण शीत ऋतु में ठंडा और ग्रीष्म ऋतु में गर्म रहता था। जिस गाँव में वह भिक्षा माँगता था, वहाँ उसे अपनी आवश्यकता के अनुसार भिक्षा नहीं मिल पाती थी। पीने का पानी भी मुश्किल से मिलता था। हवा, गर्मी, मक्खियाँ और रेंगने वाले जीव भी उसे परेशान करते थे। तभी उसके मन में यह विचार आया: "यहाँ से लगभग आधा योजन दूर एक समृद्ध स्थान है; वहाँ ये सभी खतरे नहीं हैं। मुझे वहीं जाना चाहिए। आराम से रहकर मैं सुख प्राप्त कर सकूँगा।" फिर उन्होंने मन ही मन सोचा, "भिक्षु ऐसे होते हैं कि वे वस्तुओं के प्रति लोभी नहीं होते। उनके जैसा मन होता है, जिसे वे अपने वश में रखते हैं। वे मन के वश में नहीं आते। मैं नहीं जाऊँगा।" इस प्रकार बुद्धिमानी से विचार करने के बाद वे नहीं गए। इस प्रकार उन्होंने तीसरी बार तक जागृत मन पर बुद्धिमानी से विचार किया और चले गए। इसके बाद वे वहाँ सात वर्ष तक रहे, सही मार्ग पर चलते हुए, मौन बुद्धत्व का ध्यान किया, आनंदमय वाणी का यह श्लोक पढ़ा और नंदकमूल गुफा में चले गए।

108.1. सीतांच की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए: शीत दो प्रकार का होता है: एक आंतरिक तत्वों के आघात से और दूसरा बाहरी तत्वों के आघात से। इसी प्रकार ऊष्मा भी होती है। दांश का अर्थ है मक्खियाँ। सरीसपा उन प्राणियों को कहते हैं जो लंबे समय तक जीवित रहते हैं; वे चलते-फिरते रहते हैं। शेष तो स्पष्ट है। निष्कर्ष को भी उसी प्रकार समझा जाना चाहिए जैसा कि बताया गया है।
श्लोक पर टिप्पणी,
सीतालुका (संवेदनशील) से शुरू
ठंड) समाप्त हो गई है।

हाथी (Nāgo va)

109. 'नागो वा' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में एक राजा ने बीस वर्षों तक अपने राज्य पर शासन किया, उसकी मृत्यु हो गई, उसे बीस वर्षों तक निरयण में रखा गया, वह एक हाथी के गर्भ से उत्पन्न हुआ, उसका शरीर कमल के रंग का, विशाल और गठीला हो गया, उसका सिर एक विशाल हाथी जैसा था। हाथी के बच्चे उसके द्वारा तोड़ी और गिराई गई शाखाओं के टुकड़ों को खा जाते थे। जब वह पानी में कूदता था तो मादा हाथी उसे कीचड़ से लपेट देती थीं। सब कुछ पालीलेय्यक हाथी जैसा था। वह अपने झुंड से विरक्त हो गया और वहां से चला गया। इसके बाद, उसका झुंड उसके पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए उसके पीछे गया; यद्यपि उसने तीसरी बार तक प्रयास किया, फिर भी वे उसका पीछा करते रहे। बाद में उन्होंने सोचा, "मेरा पोता बनारस पर राज कर रहा है, क्या यह अच्छा नहीं होगा कि मैं अपने पिछले जन्म के बगीचे में चला जाऊं? वहां वह राजा मेरी देखभाल करेगा।" इसके बाद, रात में, जब उनके हाथियों का झुंड सो गया, तो उन्होंने अपने झुंड को वहीं छोड़ दिया और उसी बगीचे में प्रवेश किया। बगीचे के रखवाले ने उन्हें देखा और राजा को हाथी के बारे में बताया; राजा ने कहा, 'मैं हाथी को पकड़ लूंगा' और अपनी सेना से उसे घेर लिया। हाथी राजा की दिशा में ही चल पड़ा। राजा ने कहा, "हाथी मेरी ओर आ रहा है", और एक तीर तैयार करके खड़े हो गए। तब हाथी ने मन ही मन कहा, "यह राजा मुझे तीर मार देगा" और मनुष्य भाषा में कहा, "हे ब्रह्मदत्त! मुझे तीर मत मारो; मैं तुम्हारा दादा हूं।" राजा ने सब कुछ पूछा, "तुम क्या कहते हो?" हाथी ने राजा को अपने पिछले राज्य, नरक में अपने कष्टों और हाथी के गर्भ में अपने जन्म के बारे में भी सब कुछ बताया। राजा ने कहा, "अच्छा है, डरो मत; किसी को भी भयभीत मत होने दो", और हाथी के लिए बाड़ा बनवाया; साथ ही रक्षक और हाथियों के लिए आवश्यक सभी चीजें भी उपलब्ध कराई गईं।

109.1. फिर एक दिन राजा हाथियों के शिविर में गए और सोचने लगे: “इसने बीस वर्षों तक राज किया, नरक में कष्ट भोगा और परिपक्वता के अवशेष के कारण पशु के गर्भ में पुनर्जन्म लिया। वहाँ भी, अपने झुंड में सहवास के संघर्ष को और सहन न कर पाने के कारण, यह यहाँ आ गया। हाय! समाज में सहवास तो केवल दुख है। केवल एकांत ही परमानंद है।” इसके बाद राजा आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करने लगे और मौन बुद्धत्व का दर्शन करने लगे। जब वे दिव्य आनंद में लीन थे, तब मंत्री उनके पास आए, प्रणाम किया और कहा: “हे महान राजा! अब जाने का समय हो गया है।” तब उन्होंने उत्तर दिया: “मैं अब राजा नहीं हूँ,” और पहले की तरह ही इस श्लोक का पाठ किया। यह श्लोक सांसारिक अर्थ के संदर्भ में स्पष्ट है।

109.2. हालांकि, महत्वपूर्ण व्याख्या यह है:- व्याख्या वास्तव में अर्थ की शुद्धता पर आधारित है, न कि सुनी-सुनाई बातों पर। जिस प्रकार यह हाथी, कुलीन लोगों (आरिया) को प्रसन्न करने वाली प्रथाओं में प्रशिक्षित होकर वश में हो जाता है, जंगली मैदान में नहीं जाता; यही व्याख्या है; वैकल्पिक रूप से, यह जानवर नाग (हाथी) है क्योंकि इसका शरीर बड़ा है। इस प्रकार, निश्चित रूप से, मैं भी, श्रेष्ठ लोगों (आरिया) को प्रसन्न करने वाले उपदेशों में विनम्रतापूर्वक प्रशिक्षित होकर, जंगली मैदान में न जाकर, अपराध न करके, इस पृथ्वी पर फिर से न आकर, या गुणमय शरीर की महानता के कारण, हाथियों के झुंड से बचकर, अकेले विचरण के सुख के साथ, यथाभिरन्तं विहारम् अरञ्ञे एके केरे खग्गविसाणकप्पो (जंगल में जब तक चाहे, गैंडे के सींग की तरह अकेले विचरण करना चाहिए); निश्चित रूप से, मैं भी, इस प्रकार समाज से बचकर, गैंडे के सींग की तरह अकेले विचरण करता हूँ, जब तक चाहे जंगल में अकेले रहने के आनंद के साथ; जिस भी प्रकार से मुझे सुख मिलता है, मैं उसी प्रकार से इच्छा करता हूँ, या जितना मुझे सुख मिलता है, उतना ही जंगल में रहने की इच्छा करता हूँ; इस प्रकार, यही अर्थ है। जिस प्रकार यह व्यक्ति, अपनी सुस्थापित पीठ के कारण, निश्चित रूप से संजातक्खन्ध (उचित रूप से निर्मित पीठ) है, उसी प्रकार मैं भी अपने असेख (उत्तर-शिक्षार्थी धारा-विजेता) के उपदेशों के विशाल भंडार के कारण संजातक्खन्ध (उचित रूप से निर्मित पीठ) बनूँगा। जिस प्रकार यह व्यक्ति पद्म (कमल के समान) है, या तो अपने शरीर के कमल के समान होने के कारण या कमल (पदुम) प्रजाति के हाथी के परिवार में जन्म लेने के कारण। निश्चित रूप से, मैं भी इसी प्रकार कमल के समान (पदुम) बनूँगा, या तो कमल (पदुम) के समान सरल स्वभाव से, या श्रेष्ठ (आर्य) जन्म के कमल (पदुम) में जन्म लेने के कारण। जिस प्रकार यह व्यक्ति अपने सामर्थ्य, शक्ति आदि से असीम (उलारा) है, उसी प्रकार मैं भी असीम (उलाराका) बन जाऊँगा, चाहे शुद्ध शारीरिक आचरण आदि से, या उपदेश, मानसिक दृढ़ता (समाधि), गहन ज्ञान आदि से। ऐसा सोचते हुए, मैंने आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करना शुरू किया और मौन बुद्धत्व प्राप्त किया।
श्लोक पर टिप्पणी,
नाग (हाथी) से शुरू होने वाला
समाप्त हो गया है।

. . . .

अनुपयुक्त स्थान (Aṭṭhāna Tama)

110. 'अत्थाना तम' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस के राजा का पुत्र, यद्यपि वह अभी छोटा ही था, संन्यास लेने की इच्छा से अपने माता-पिता से अनुमति माँगी। उसके माता-पिता ने उसे मना कर दिया। मना किए जाने के बावजूद, उसने लगातार आग्रह किया और कहा, "मैं संन्यास लेकर संन्यासी बनूँगा।" तब उसके माता-पिता ने उसे वही सब बताया जो पहले एक धनाढ्य के पुत्र को बताया गया था, और अपनी सहमति दे दी। उन्होंने उसे यह भी बताया कि संन्यासी बनने के बाद उसे केवल राज उद्यान में ही रहना चाहिए। पुत्र ने वैसा ही किया। उसकी माता, बीस हजार नर्तकियों से घिरी हुई, सुबह-सुबह राज उद्यान जाती, अपने पुत्र को चावल का दलिया, समय-समय पर ठोस भोजन आदि पीने को देती, दोपहर तक उससे बातचीत करती और फिर शहर में प्रवेश करती। उसके पिता दोपहर में आते, उसे नरम भोजन देते, स्वयं भी खाते, दिन भर उससे बातें करते, शाम को उसकी देखभाल के लिए लोगों को नियुक्त करते और फिर शहर चले जाते। इस प्रकार, राजा का पुत्र दिन-रात बिना किसी एकांतवास के रहता था।

110.1. उस समय, वास्तव में, नन्दमूल गुफा में आदिचबंधु (सूर्य के संबंधी) नामक एक मौन बुद्ध निवास करते थे। चिंतन करने पर, उस मौन बुद्ध ने उन्हें इस प्रकार देखा: “यह युवक त्याग नहीं कर सका; यह अपने बंधनों से मुक्त नहीं हो सका।” इसके बाद उन्होंने आगे विचार किया: “क्या वह वास्तव में अपने स्वभाव से ही विरक्ति प्राप्त करेगा या नहीं?” तब, जब मौन बुद्ध को यह ज्ञान हुआ कि स्वाभाविक रूप से विरक्ति प्राप्त करने में अत्यंत समय लगेगा, तो उन्होंने मन ही मन कहा: “मैं उसे चिंतन का विषय दूंगा

(आरम्मणम्)", और पत्थर की शिला (मनोशिला) से उठकर बगीचे में खड़े हो गए। राजचरित्रियों ने उन्हें देखा और राजा को इस प्रकार सूचित किया: "हे महाराज! मौन बुद्ध आ गए हैं।" राजा ने मन ही मन कहा, "अब मेरा पुत्र मौन बुद्ध के साथ बिना ऊबे रहेगा।" यह सुनकर राजा प्रसन्न हो गया और आदरपूर्वक मौन बुद्ध की सेवा करने लगा। उसने मौन बुद्ध से वहाँ रहने का अनुरोध किया और उनके लिए एक झोपड़ी, दिन का निवास, सैरगाह आदि बनवाकर उन्हें रहने के लिए भेंट कर दी। वहाँ रहते हुए, एक दिन मौन बुद्ध को अवसर मिला और उन्होंने युवा राजकुमार से पूछा, "तुम कौन हो?" राजकुमार ने उत्तर दिया, "मैं संन्यासी हूँ।" तब राजकुमार ने कहा, "क्या संन्यासी ऐसे नहीं होते?" फिर जब उन्होंने पूछा, "आदरणीय महोदय! वे कैसे हैं? मैं उनके लिए उपयुक्त क्यों नहीं हूँ?", तो मौन बुद्ध ने उत्तर दिया, "तुम्हें अपनी अनुपयुक्तता का एहसास नहीं है; क्या तुम्हारी माता सुबह-सुबह बीस हज़ार स्त्रियों के साथ आकर बगीचे को अपवित्र नहीं कर देतीं? क्या तुम्हारे पिता भी दोपहर में बड़ी संख्या में सैनिकों के साथ और रात भर अपने सेवकों के दल के साथ ऐसा ही नहीं करते? संन्यासी, अर्थात्, तुम्हारे जैसे नहीं होते; वे ऐसे ही होते हैं।" इस प्रकार उत्तर देने के बाद, मौन बुद्ध ने अपनी जादुई शक्ति से उन्हें वहीं खड़े-खड़े हिमवंता (हिमालय) क्षेत्र में एक और मठ दिखाया। वहाँ उन्होंने मौन बुद्धों को देखा, कुछ रेलिंग के पास खड़े थे, कुछ इधर-उधर टहल रहे थे, कुछ रंगाई कर रहे थे, कुछ सिलाई कर रहे थे इत्यादि। उन्होंने पूछा, "आप उस मठ में क्यों नहीं जाते? भिक्षु भी आपसे सहमत हैं।" मौन बुद्ध ने उत्तर दिया, "जी हाँ! भिक्षु सहमत हैं; त्याग के समय से ही भिक्षुओं को अपने उद्धार के लिए प्रयास करने और अपनी इच्छानुसार किसी भी स्थान पर जाने का अवसर प्राप्त होता है; यही उचित है।" ऐसा उत्तर देकर मौन बुद्ध आकाश में खड़े हो गए और लगभग आधा श्लोक पढ़ा, "अत्थाना तं संगणिकारतस्स, यं फस्सये समयिकं विमुत्तं", और देखते ही देखते आकाश से नन्दमूल गुफा की ओर चले गए। मौन बुद्ध के जाने के बाद, वे अपनी पत्तियाँ-कुटिया में प्रवेश कर लेट गए। पहरेदार भी मन ही मन सोचने लगा, "युवक राजकुमार सो रहा है; अब वह कहाँ जाएगा?", और वह भी लापरवाह होकर सो गया। पहरेदार की लापरवाही की स्थिति को जानते हुए,उन्होंने अपना कुंड और वस्त्र लिया और जंगल में प्रवेश किया। वहाँ रहकर, उन्होंने आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करना शुरू किया, मौन बुद्धत्व की कल्पना की और मौन बुद्धों के स्थान पर गए। वहाँ, जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने यह उपलब्धि कैसे प्राप्त की, तो उन्होंने मौन बुद्ध आदिच्चबंधु द्वारा कहे गए लगभग आधे श्लोक को पूर्ण रूप में रचित करके सुनाया।

110.2. उस श्लोक का अर्थ इस प्रकार है:- अट्ठान तम का अर्थ है कि वह स्थान उचित नहीं है; वह उचित नहीं है; वह नहीं किया जाना चाहिए; यही कथन है। "अरिया-सच्चान दस्सनम्" आदि अभिव्यक्तियों की तरह, यहाँ भी संगत अनुनासिक (या निग्घिता) का लोप किया गया है। संगणिकारतस्स का अर्थ है वह व्यक्ति जो समाज में आनंद लेता है। यम यहाँ एक साधनवाचक शब्द है, जैसे कि "यम हिरीयति हिरीयितब्बेना" आदि। फस्सये का अर्थ है: प्राप्त करेगा। सामयिकम् विमुत्तम् का अर्थ है सांसारिक समाधि की प्राप्ति। वास्तव में, उस प्राप्ति को सामयिक विमुक्ति (स्वयं द्वारा मुक्ति) कहा जाता है क्योंकि बार-बार एकाग्रता के समय भी संबंधित व्यक्ति स्वयं ही इससे मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं। वह मुक्ति स्वयं द्वारा प्राप्त की जाती है। वह स्थान नहीं है; जो समाज में आनंद लेता है, उसके लिए वह कारण नहीं होता जिससे वह मुक्ति प्राप्त कर सके; अतः मौन बुद्ध आदिच्चबंधु के इस कथन का पालन करते हुए, मैंने समाज में आनंद का त्याग किया, अपने जीवन को विवेकपूर्ण ढंग से व्यवस्थित किया और अपनी मुक्ति प्राप्त की; इस प्रकार मौन बुद्ध ने उत्तर दिया। शेष बात तो इसी प्रकार है।
श्लोक पर टिप्पणी,
अत्हाना से शुरू होकर
समाप्त हो गया। दूसरा अध्याय समाप्त हो गया है।
. . . .

राय का भटकना (दित्तिविसुकानि)
111. "दिष्टिविसुकानि" से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस के एक राजा, जो एकांतवास में गए थे, ने इस प्रकार सोचा: "जिस प्रकार शीतलता के प्रतिकर्षण के रूप में गर्म और इसी प्रकार की वस्तुएँ होती हैं, क्या वास्तव में इसी प्रकार विकास (या पुनर्जन्म के चक्र) के प्रति घृणा के रूप में अवक्रमण होता है या नहीं?" उन्होंने अपने मंत्रियों से पूछा: "क्या आप अवक्रमण (या पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति) (विवत) को जानते हैं?" उन्होंने उत्तर दिया: "हे महाराज, हम इसे जानते हैं।" राजा ने पूछा कि यह क्या है। तब मंत्रियों ने शाश्वतवाद (ससता) और शून्यवाद (उच्छेद) जैसे विचारों पर उसी प्रकार चर्चा की, जैसे "संसार सीमित है, इत्यादि।" राजा ने मन ही मन कहा, "ये लोग नहीं जानते; ये सब झूठे सिद्धांत हैं।" उसने स्वयं ही इनकी अनुचितता और अनुपयुक्तता को देखा और सोचा, "पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति (या अवरोहण) है, जो विकास (या पुनर्जन्म के चक्रों) का विपरीत है; इसे खोजना चाहिए।" उसने

अपना प्रभुत्व त्याग दिया, संन्यासी बन गया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की और मौन बुद्धत्व की कल्पना की। उसने मौन बुद्धों के बीच आनंदमय वाणी के इस श्लोक और व्याख्यात्मक श्लोक का पाठ किया।

111.1. इसका अर्थ यह है:- दिष्टिविसुकानि (विचारों का टेढ़ापन) है: बासठ विधर्मी विचार। वे टेढ़े-मेढ़े हैं क्योंकि उनका उद्देश्य सही मार्ग और सही दृष्टिकोण को विकृत करना, भेदना और उसके विरुद्ध होना है; इस प्रकार, ये मतों का भटकाव (या दृष्टिकोण का विकृति; या स्वयं दृष्टिकोण ही विकृति है और इसलिए यह मतों का भटकाव है)। उपतिवत्तो का अर्थ है: अंतर्दृष्टि के मार्ग से पार हो जाना। पत्तो नियम का अर्थ है नरक में दंड के लिए उत्तरदायी न होने और मौन बुद्धत्व के पूर्ण ज्ञान में अपना लक्ष्य (या उद्देश्य) प्राप्त करने के कारण निश्चित अवस्था प्राप्त करना; या मोक्ष का पहला चरण (पठम मार्ग), जिसे मोक्ष का धर्मी मार्ग माना जाता है। इस हद तक पहले मार्ग की प्राप्ति के लिए जो कुछ भी किया जाना है और उसके फलस्वरूप प्राप्त होने की बात की गई है। अब पठिलद्धमग्ग का अर्थ है: इससे, यह मोक्ष के शेष चरणों (मार्ग) के फलस्वरूप प्राप्त होने की ओर इशारा करता है। उपपन्ननोम्ही का अर्थ है: मैं एक हूँ, मौन बुद्धत्व के ज्ञान से उत्पन्न। इससे फल (फल) दिखाया गया है। अनञ्ञनेय्यो का अर्थ है: एक दूसरों के यह कहने पर कि 'यही सत्य है', हमें उनका मार्गदर्शन नहीं लेना चाहिए। इससे आत्मज्ञान या मौन बुद्धत्व की अवस्था प्रकट होती है। या, यह दर्शाता है कि जब मौन बुद्धत्व का ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तब दूसरों के मार्गदर्शन जैसी कोई बात नहीं रह जाती, और मन की शांति (समथा) तथा आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) के माध्यम से स्वयं ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है। दिष्टिविसुकानि उपातिवत्तो इस नियमम् पत्तो, आरंभिक मार्ग से सिद्ध अवस्था प्राप्त करना; फल के ज्ञान से फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, फलान्गगो, स्वयं द्वारा प्राप्त ज्ञान; यह सब स्वयं द्वारा ही सिद्ध हुआ; इस प्रकार, व्यक्ति अनञ्ञनेय्यो था, दूसरों द्वारा निर्देशित नहीं।

बाकी बातों को भी इसी तरह समझना होगा।
श्लोक पर टिप्पणी,
दित्थिविसुका से शुरू होकर,
समाप्त हो गया है।
लोभ से मुक्त (निल-लोलुपा)
112. निलोलूपा से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस के राजा के शाही रसोइए ने एक स्वादिष्ट, मीठा और देखने में सुंदर व्यंजन बनाया और राजा को परोसते हुए मन ही मन कहा, "शायद राजा मुझे इनाम में कुछ देंगे।" उस व्यंजन की महज़ सुगंध ने ही राजा के मन में खाने की इच्छा जगा दी; उसके मुँह में लार आ गई। जैसे ही व्यंजन का पहला निवाला राजा के मुँह में गया, उसकी सात हज़ार नसें अमृत से भर उठीं। रसोइए ने सोचा, "अब राजा मुझे देंगे; अब राजा मुझे देंगे।" राजा ने भी सोचा कि रसोइया सम्मान का पात्र है। व्यंजन का स्वाद चखने के बाद भी राजा ने कुछ नहीं कहा, कहीं ऐसा न हो कि रसोइए को इनाम देने से उसकी बदनामी हो जाए और यह धारणा बन जाए कि राजा लालची है और भोग-विलास में डूबा हुआ है। इस तरह रसोइए ने राजा के भोजन समाप्त होने तक सोचा, “राजा अब देंगे, अब देंगे।” लेकिन राजा ने फटकार के डर से कुछ नहीं कहा। तब रसोइए ने टिप्पणी की, “मुझे लगता है, इस राजा को खाने-पीने की समझ नहीं है।” अगले दिन रसोइए ने एक अप्रिय व्यंजन परोसा। उसे खाने पर, यद्यपि राजा को यह पता था, “अरे! आज तो रसोइए को बर्खास्त कर देना चाहिए”, फिर भी उसने पहले की तरह ही इस मामले पर विचार किया, लेकिन फटकार के डर से कुछ नहीं कहा। तब रसोइए ने सोचा, “राजा को न तो अच्छे का ज्ञान है, न बुरे का”, और उसने अपने सारे खर्चे (परिब्बगम) लगाकर, जो कुछ भी पकाया, राजा को भेंट कर दिया। राजा को घृणा हुई और उसने मन ही मन कहा, “सचमुच! लालच तो लाजवाब है! मैं, जो बीस हजार नगरों का शासक हूँ, इस रसोइए के लालच के कारण एक वक्त का भरपेट भोजन भी नहीं कर पाता।” उसने अपना राज्य त्याग दिया, संन्यासी बन गया, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया और मौन बुद्धत्व की कल्पना की। उसने उपरोक्त शैली में इस श्लोक का पाठ किया।

112.1. निल्लोलुपो का अर्थ है लोभ रहित होना। जो कोई भी स्वाद की लालसा से ग्रस्त होता है, वह अत्यधिक लोभी होता है और बार-बार लोभ करता है; इसलिए उसे बहुत लोभी (लोलुपा) कहा जाता है। अतः, इसे त्यागने से वह लोभ से मुक्त (निल्लोलुपो) हो जाता है; ऐसा कहा गया है। निक्कुहा का अर्थ है: जिसके पास छल के तीनों अवसरों में से कोई भी नहीं है, उसे पाखंड से मुक्त (निक्कुहा) कहा जाता है। इस श्लोक में, हालांकि, स्वादिष्ट भोजन आदि पर आश्चर्यचकित होने के कारण छल से मुक्ति का अर्थ है। निप्पिपासा का

अर्थ है: पीने की इच्छा प्यास (पिपासा) है; इसका न होना प्यास से मुक्ति (निप्पिपासा) है; मीठे व्यंजन के लोभ के साथ खाने की इच्छा से परहेज करना; ऐसा अर्थ है। निम्मक्खो का अर्थ यहाँ इस प्रकार है: पाखंड (मक्खा) दूसरों के गुणों को नष्ट करने से पहचाना जाता है; इसके अभाव के कारण व्यक्ति पाखंड से मुक्त (निम्मक्खो) हो जाता है। उन्होंने यह बात रसोइए के पाखंड के संदर्भ में कही, जबकि वे स्वयं गृहस्थ थे। निद्धान्त***(पृष्ठ 328) का अर्थ यहाँ इस प्रकार है: अपने स्वयं के कर्मों में आनंद न होने के कारण, जिनमें से तीन काम (राग) से शुरू होते हैं और तीन शारीरिक बुरे कर्मों से शुरू होते हैं, दूसरों के कर्मों में आनंद न मिलने के कारण और साथ ही अत्यंत घृणित होने के कारण, यह मूलभूत दोष (कसव) उत्पन्न करता है; इस प्रकार इसे समझा जाना चाहिए। जैसा कि बुद्ध ने कहा:

तो, वे तीन मूलभूत दोष क्या हैं?
(कसाव)? कामवासना का मूल दोष (राग)
नफरत का मूल दोष, मूल दोष
भ्रम की कमियाँ। ये तीन मूलभूत कमियाँ हैं।
क्या दोष भी? शरीर का मूल दोष,
भाषण की मूलभूत त्रुटि, मूलभूत त्रुटि
मन का"।

112.2. पाँच मूलभूत दोषों के निष्कासन के कारण, और उन सभी मूलभूत दोषों के मूल भ्रम के निष्कासन के कारण, वह व्यक्ति है जिसने स्वयं को भ्रम के मूलभूत दोष से शुद्ध कर लिया है। दूसरों में, लोभ से मुक्त होकर, कामवासना (राग) के मूलभूत दोष का निष्कासन, पाखंड से मुक्त होकर, घृणा के मूलभूत दोष का निष्कासन भी पूर्ण हो जाता है। निरासयो वह है, जिसकी लालसा (तन्हा) अनुपस्थित है। सब्बलोक भावित्या पूरे विश्व में है: तीनों लोकों में, या इंद्रियों के बारह निवासों में, अस्तित्व और गैर-अस्तित्व की लालसा से रहित होकर, इस प्रकार, इसका अर्थ है। शेष को भी उपरोक्त तरीके से ही समझा जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में, श्लोक के तीन चरणों का पाठ करने के बाद भी, एको चारो, व्यक्ति को अकेले घूमने में सक्षम होना चाहिए अत: इस तरह से भी यहाँ संबंध स्थापित किया जाना चाहिए।
श्लोक पर टिप्पणी,
निलोलूपा से शुरू होकर, इसमें
समाप्त हो गया।
पापम सहायम (बुरा साथी)
113. 'पापम सहायम' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस के एक राजा अपने भव्य राजसी वैभव और सामर्थ्य के साथ अपने शहर की परिक्रमा कर रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि लोग पुराने धान, अनाज आदि को अन्न भंडार से बाहर निकाल रहे हैं। उन्होंने अपने मंत्रियों से पूछा, "हे मंत्रियों! यह क्या है?" मंत्रियों ने उत्तर दिया, "हे महाराज! अब धान आदि की नई फसलें उगेंगी; उनके लिए जगह बनाने के लिए ये लोग धान आदि की पुरानी फसलें फेंक रहे हैं।" राजा ने फिर पूछा, "हे मंत्रियों! यह कैसे है? क्या महिलाओं के निवास (इत्थागार), सेना (बालकाय) आदि के प्रति कर्तव्य पूर्ण रूप से निभाए गए हैं?" उत्तर मिला, "हे महाराज! हाँ, यह पूर्ण रूप से निभाया गया है।" राजा ने आदेश दिया, "तो फिर, हे मंत्रियों! दानघर बनवाओ; मैं दान दूंगा; इन धान को सड़ने और बर्बाद होने न दो।" तब एक मंत्री, जो विधर्म में लिप्त था, ने राजा को यह कहते हुए मना किया: "हे महाराज! दान देना जैसी कोई बात नहीं होती" और अंत में कहा: "मूर्ख और बुद्धिमान, दोनों ही जन्म-जन्म के चक्र में लीन होकर दुखों का अंत करते हैं।" दूसरी और तीसरी बार भी, जब राजा ने अन्न भंडार को लूटा जाते देखा, तो उसने वैसा ही आदेश दिया। उस मंत्री ने तीसरी बार भी राजा को मना करते हुए कहा: "हे महाराज! दान देना मूर्खों का सिद्धांत है" इत्यादि। राजा व्याकुल होकर बोला: "हाय! मैं अपनी संपत्ति भी दान नहीं कर सकता; इन दुष्ट साथियों का मेरे लिए क्या लाभ?", उसने अपना राज्य त्याग दिया, संन्यासी बन गया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की और मौन बुद्धत्व का दर्शन किया। उसने उस दुष्ट साथी को फटकारते हुए आनंदमय उद्घोषणा का यह श्लोक पढ़ा।

113.1. इस श्लोक का संक्षिप्त अर्थ यह है:- एक व्यक्ति दुष्ट है, क्योंकि वह दस प्रकार के बुरे दुराचारों से ग्रस्त है; एक व्यक्ति दूसरों का भी नुकसान देखता है; शारीरिक दुराचार आदि में वह बुराई पर तुला रहता है; अच्छे परिवार के युवक को उससे पूरी तरह बचना चाहिए, क्योंकि वह बुरा साथी है; क्योंकि वह दूसरों का नुकसान देखता है और बुराई पर तुला रहता है। उससे किसी भी प्रकार से संगति नहीं

रखनी चाहिए। यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के प्रभाव में है, तो पूछा जाता है: 'क्या किया जा सकता है?' 'परमंत' का अर्थ है: 'परमंत', यानी दुराचार के प्रभाव में इधर-उधर भटकना; यही अर्थ है। पमत्तम वह है जिसका मन इंद्रिय सुखों में लीन (वोस्सत्था) हो, या जो पुण्य कर्मों से रहित हो। ऐसे साथी की सेवा नहीं करनी चाहिए, उसके साथ संगति नहीं रखनी चाहिए, उसकी सेवा नहीं करनी चाहिए। किसी भी हालत में, गैंडे के सींग की तरह अकेले ही भटकना चाहिए।

पापसहाय से शुरू होने वाले श्लोक की व्याख्या समाप्त हो गई है।

बहुसुतम (बहुत ज्ञान)

114. बहुसुतम से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? ऐसा कहा जाता है कि पूर्व में, बुद्ध कस्सपा के युग में, आठ मौन बोधिसत्व संन्यासी बन गए, उन्होंने आने-जाने का कर्तव्य पूरा किया और स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लिया; इस प्रकार, यह आरंभ है, शेष सब कुछ अनवज्जभोजी से शुरू होने वाले श्लोक के संबंध में कही गई बातों के समान ही है। हालाँकि, अंतर यह है: राजा ने मौन बुद्धों को बैठने के लिए कहकर पूछा: "आप सब कौन हैं?" उन्होंने उत्तर दिया: "हे महाराज! हम बहुसुतम (महज्ञ) कहलाते हैं।" राजा प्रसन्न हो उठा और मन ही मन कहने लगा, "मेरा नाम सूत ब्रह्मदत्त है; मैं विद्या से संतुष्ट नहीं होता; अब मैं इनके समक्ष विभिन्न विधियों से धर्म का उपदेश सुनूंगा।" उसने उन्हें अर्पण किया, उनका सत्कार किया और भोजन ग्रहण कराया। भोजन समाप्त होने पर वह उन भिक्षुओं में सबसे वरिष्ठ के समक्ष बैठ गया और उनसे निवेदन किया, "आदरणीय महोदय! कृपया धार्मिक प्रवचन दीजिए।" वरिष्ठ मौन बुद्ध ने यह कहते हुए उठ खड़े हुए, "हे महाराज! आप सुखी हों; आप कामवासना से मुक्त हों।" राजा ने मौन बुद्धों को अगले दिन के भोजन के लिए आमंत्रित करते हुए मन ही मन कहा, "यह थेरा अधिक विद्वान नहीं है; दूसरा थेरा शायद अधिक विद्वान हो; कल मैं उनके विविध धर्म उपदेश सुनूंगा।" इस प्रकार राजा ने एक-एक करके सभी को आमंत्रित किया, जब तक कि अंतिम मौन बुद्ध के उपदेश देने का समय नहीं आ गया। वे सभी भी अलग-अलग तरीके से एक-एक श्लोक का एक-एक चरण पढ़कर उठ खड़े हुए और शेष भाग, पहले मौन बुद्ध के समान, इस प्रकार पढ़ा: "आप क्रोध से मुक्त हों; आप भ्रम से रहित हों; आपका कोई आवागमन न हो; आपका कोई अस्तित्व न रहे; आपके पुनर्जन्म के चक्र समाप्त हो जाएं; आपका पुनर्जन्म का कोई आधार न रहे; आपकी तृष्णा (तन्हा) का नाश हो जाए।"

114.1. तब राजा ने उनके कथन का कारण जानने का प्रयास किया और कहा, "ये थेरा कहते हैं कि 'हम बहुत विद्वान हैं', लेकिन उनका प्रवचन इतना विविध है; इन थेराओं का क्या अर्थ है?" फिर, उनके कथन "तुम्हारी कामवासना (राग) का नाश हो" की जाँच करने पर राजा को यह ज्ञान हुआ: "जब कामवासना नष्ट हो जाती है, तो घृणा, मोह और अन्य प्रकार के दुराचार भी नष्ट हो जाते हैं" और वह प्रसन्न होकर मन ही मन कहने लगा, "ये भिक्षु बिना किसी व्याख्या के भी बहुत विद्वान हैं। जैसे, जब कोई व्यक्ति अपनी उंगली से विशाल पृथ्वी या आकाश की ओर इशारा करता है, तो वह केवल उंगली के आकार का स्थान ही नहीं होता; वहीं दूसरी ओर, वास्तव में, पूरी पृथ्वी और पूरा आकाश ही दिखाया जाता है; उसी प्रकार, जब ये थेरा क्रमशः किसी एक पदार्थ की ओर इशारा करते हैं, तो ऐसा होता है कि असीमित पदार्थ की ओर इशारा किया जाता है।" इसके बाद, राजा ने मन ही मन कहा: निश्चय ही, मैं भी उन्हीं के समान बहुत विद्वान बनूंगा, उन थेरों के समान विद्वान बनने की इच्छा रखते हुए, उन्होंने अपनी संप्रभुता त्याग दी, संन्यासी बन गए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित की, मौन बुद्धत्व की कल्पना की और आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ किया।

114.2. इस श्लोक का संक्षिप्त अर्थ यह है: बहुस्सुतम, अत्यधिक ज्ञान; अत्यधिक ज्ञान दो प्रकार का होता है: सैद्धांतिक साहित्य में अत्यधिक ज्ञान, तीनों पिटकों के अर्थ को भलीभांति समझना, और सही मार्ग, उनके फल और उच्चतर ज्ञान को प्राप्त करके गहन अनुभूति प्राप्त करना। धम्मधरो, धर्मग्रंथों में वर्णित सिद्धांतों का ज्ञाता होता है। उलारा, महान (या श्रेष्ठ) वह होता है जो श्रेष्ठ शारीरिक, वाणी और मानसिक क्रियाओं से संपन्न होता है। पाटिभानवा, बुद्धिवान, पिटकों के ज्ञान में निपुणता और अतिशयता दोनों रखता है। वह प्रश्न-प्रबंध में भी निपुण होता है, यदि अर्थ और ज्ञान, विशेषताओं, औचित्य और अनुचितता पर प्रश्न करने की क्षमता उसमें निपुण हो। यदि उसने दृष्टि मार्गों आदि का गहन ज्ञान प्राप्त कर लिया है, तो वह सिद्धि में तत्परता का स्वामी है। बहुस्सुतम धम्मधरम भजेत मित्तम उलारम पटिभाणन्तम का अर्थ है: ऐसे महान (या श्रेष्ठ) मित्र की सेवा करनी चाहिए, जो बहुत विद्वान, धर्म का श्रोता और तत्परता का स्वामी हो। इसके बाद, अनेक पहलुओं में अनेक कल्याण प्राप्त करने के बाद, जैसे कि:

स्वयं का कल्याण, दूसरों का कल्याण और दोनों का कल्याण, या उस शक्ति के कारण वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए उच्च कल्याण के दृष्टिकोण से। फलस्वरूप, "क्या मैं वास्तव में अतीत में विद्यमान था?" आदि जैसे संदेहों को दूर करके, व्यक्ति वह बन जाता है जिसने संदेह के नाश के बाद जो करना चाहिए वह किया है, यानी गैंडे के सींग की तरह अकेले भटकना चाहिए।

श्लोक पर टिप्पणी,

बहुसुतम से शुरू होकर, है
समाप्त हो गया।
खेलकूद का आनंद (खीददम रति)...(विभूषा) अलंकरण
115. खीदम रति से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? ऐसा कहा जाता है कि बनारस में, विभूषाक ब्रह्मदत्त नामक राजा ने सुबह जल्दी चावल का दलिया (या चावल का आटा) खाने के बाद, विभिन्न प्रकार के आभूषणों से खुद को सजाया, अपने बड़े दर्पण में अपने पूरे शरीर को देखा, जो भी आभूषण उसे पसंद नहीं था उसे हटा दिया, और दूसरे आभूषण से खुद को सजाया। एक दिन जब राजा इस प्रकार आभूषण पहन रहा था, उसके भोजन का समय दोपहर हो गया। अपने शारीरिक अलंकरण के अधूरे होने के कारण, उसने अपने सिर को कपड़े की चादर से लपेटा, अपना भोजन किया और दिन भर के लिए अपने विश्राम की ओर चल पड़ा। फिर से, वह उठा और जैसा वह पहले कर रहा था, सूर्य अस्त होने लगा। इसी प्रकार उसने दूसरे और तीसरे दिन भी किया फिर, जब वह इस प्रकार श्रृंगार में लीन थे, तो उन्हें पीठ में दर्द हो गया। उनके मन में यह विचार आया: "अफ़सोस! अपनी पूरी शक्ति से स्वयं को सजाते हुए भी, मैं इस श्रृंगार से संतुष्ट नहीं था और मैंने अपने लालच को हावी होने दिया; इसके अलावा, यह, अर्थात् लालच, एक बुरी चीज (धर्म) है, जो व्यक्ति को नरक (अपाय) की ओर ले जाती है; मुझे अब अपने लालच पर नियंत्रण रखना चाहिए।" तब राजा ने अपना राज्य त्याग दिया, संन्यासी बन गए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की, मौन बुद्धत्व की कल्पना की और इस श्लोक का पाठ किया:-

115.1. वहाँ, खिद्दा और रति दोनों शब्दों की व्याख्या पहले ही की जा चुकी थी। काम (पृष्ठ 334) मूलभूत इंद्रिय सुख का आनंद है। मूलभूत इंद्रिय सुख भी, वास्तव में, आनंद के क्षेत्र में होने के कारण आनंदमय कहे जाते हैं। इस प्रकार, अनलंचरित्वा (बिना सजावट के), इस संसार में क्रीड़ा के आनंद को उचित (या उपयुक्त) न बनाकर; इसे न तो संतोष (तप्पक) मानकर और न ही उत्कृष्ट (सारभूत) मानकर। अनपेक्खमान वह है जिसका स्वभाव लालसा रहित है, जो लोभ रहित है और लालसा से मुक्त है क्योंकि वह इसे धारण नहीं करता। विभूषष्ठाना विरतो सच्चवादी की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए: (विभूष) अलंकरण दो प्रकार के होते हैं: गृहस्थ अलंकरण और गृहस्थ अलंकरण। वस्त्र, सिर का आभूषण, माला, इत्र आदि जैसे आभूषण गृहस्थ के आभूषण कहलाते हैं। भिक्षापात्र आदि जैसे आभूषण बेघर के आभूषण कहलाते हैं। आभूषण स्वयं ही आभूषण का क्षेत्र है। इसलिए, तीन प्रकार से आभूषणों से परहेज करके व्यक्ति आभूषण रहित बन सकता है। जो सत्य नहीं है, उसे न कहने के कारण ही व्यक्ति सत्य का वक्ता कहलाता है। अतः, अर्थ को इसी प्रकार समझना चाहिए।
श्लोक पर टिप्पणी,
विभूसत्थाना से शुरू होकर,
समाप्त हो गया है।
पुत्र (पुत्तंच दारम्)
116. पुत्तंचदारम् से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? ऐसा कहा जाता है कि बनारस में, राजा के पुत्र का राज्याभिषेक कम उम्र में ही हो गया था, और उसने अपने राज्य पर शासन किया। पहले श्लोक के मौन बोधिसत्व की कहानी की तरह संप्रभुता के गौरव का आनंद लेते हुए, एक दिन उसने सोचा: "अपने राज्य पर शासन करते हुए, मैंने बहुतों को कष्ट दिया है; केवल एक आत्मा के भोजन के लिए इस बुरे कर्म से मुझे क्या लाभ है? अब मैं सुख को बढ़ावा देने जा रहा हूँ", उसने संप्रभुता का त्याग कर दिया, संन्यासी बन गया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित की, मौन बुद्धत्व की कल्पना की और आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ किया

धनाणी (धन) में मोती, माणिक, बेरिल, शंख, क्वाट्र्ज, मूंगा, चांदी, सोना आदि जैसे खजाने शामिल हैं। धनाणी (धान) में सात प्रकार के धान (साली), धान (विही), जौ (यव), गेहूं (गोधुमा), बाजरा (कंगु), सेम (वरक) और कुद्रूसक अनाज, साथ ही दालें और मक्का जैसे अन्य अनाज शामिल हैं। बंधवानी (रिश्तेदार) में चार प्रकार के रिश्तेदार शामिल हैं: सगोत्र संबंधी, कुल संबंधी, मित्र संबंधी और वैज्ञानिक संबंधी। यथाधिकानी (सीमाओं के अनुसार) वे हैं जो प्रत्येक व्यक्ति की सीमा के अनुसार खड़े रहे; शेष का वर्णन ऊपर दिए गए अनुसार ही है।
श्लोक पर टिप्पणी,
puttadāra से शुरू होकर, है
समाप्त हो गया।
आसक्ति (सांगो एसो)

117. सांगो एको से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में पादलोला ब्रह्मदत्त नाम का एक राजा था। वह राजा सुबह-सुबह चावल का दलिया या चावल का आटा खाने के बाद अपने तीन महलों में तीन प्रकार की नर्तकियों को देखता था। तीन प्रकार की नर्तकियां थीं: एक राजा के आने से पहले आती थी, दूसरी राजा के साथ आती थी और तीसरी अपने समय पर आती थी। एक दिन राजा सुबह-सुबह ही युवा नर्तकियों के महल में गया। उन नर्तकियों ने मन ही मन कहा, “चलो राजा का मनोरंजन करें”, और उन्होंने इतना मनमोहक नृत्य, गायन और संगीत प्रस्तुत किया जो देवताओं के राजा सक्का की अप्सराओं के समान था। राजा संतुष्ट नहीं हुआ और बोला, “युवा नर्तकियों का यह प्रदर्शन आश्चर्यजनक नहीं है”, और वह अधेड़ उम्र की नर्तकियों के महल में गया। उन नर्तकियों ने भी वैसा ही प्रदर्शन किया। राजा को यहाँ भी संतोष नहीं हुआ, इसलिए वह बूढ़ी नर्तकियों के महल में गया। वहाँ भी उन्होंने वही किया। राजा ने देखा कि बुढ़ापे के कारण उनका नृत्य हड्डियों के खेल जैसा लग रहा था, क्योंकि वे उसके दो-तीन राजमंडलों के चक्कर लगा रही थीं। उसने उनका गायन भी सुना जो उसे मधुर नहीं लगा। वह फिर से युवा नर्तकियों के महल में गया और फिर से अधेड़ उम्र की नर्तकियों के महल में गया। वह इसी तरह घूमता रहा, लेकिन कहीं भी संतुष्ट नहीं हुआ और सोचने लगा: “ये नर्तकियाँ मुझे मोहित करने की इच्छा से, देवताओं के राजा सक्का की तरह, पूरी ऊर्जा से नृत्य, गायन और संगीत कर रही हैं। लेकिन फिर भी मुझे कहीं भी संतोष नहीं मिला, बल्कि मेरा लोभ और बढ़ गया। यह लोभ फिर से नरक में जाने का कारण बनेगा (अपायगमनीयो धाम्मो)। अब मैं अपने लोभ पर नियंत्रण करने जा रहा हूँ।” ऐसा सोचकर राजा ने अपनी संप्रभुता का त्याग कर दिया, संन्यासी बन गए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की, मौन बुद्धत्व की कल्पना की और आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ किया।

117.1. इसका अर्थ है:- "सांगो एसो" अभिव्यक्ति से अपने स्वयं के आनंद की ओर इशारा किया जाता है। वास्तव में, यही आसक्ति है, जहाँ जीव उस हाथी की तरह आसक्त हो जाते हैं जो कीचड़ में फंस गया हो। परित्तमेत्थ सोख्यम् (यहाँ सुख अल्प है) यहाँ पाँच प्रकार के इंद्रिय सुखों के भोग के समय, सुख अल्प है क्योंकि यह निम्न (या नगण्य) है, या तो विपरीत बोध की संभावना के कारण या इंद्रिय अनुभवों के क्षेत्र से संबंधित क्रियाओं में शामिल होने के कारण। यह बिजली की चमक से चमकते बदलते प्रकाश में नृत्य देखने के आनंद की तरह क्षणिक है; इस प्रकार कहा गया है: "अस्थायी (या क्षण भर के लिए)"। अप्पासादो दुःखमेवत्था भिय्यो की व्याख्या यहाँ इस प्रकार की जानी चाहिए: “हे भिक्षुओं! वास्तव में, इन पाँच प्रकार के इंद्रिय सुखों से उत्पन्न होने वाला यह आनंद सुखद है; यही इंद्रिय सुखों का आनंद या तृप्ति है”; इस प्रकार कहा गया है; अर्थात्: “हे भिक्षुओं! इंद्रिय सुखों का क्या दोष है? हे भिक्षुओं! यहाँ, एक अच्छे परिवार का युवक गणना जैसे शिल्प से अपनी जीविका कमाता है”; इस प्रकार, यहाँ दुख इस प्रकार से शुरू हुआ है; इसकी तुलना में, यह पानी की एक बूँद के समान है; फिर, वास्तव में, दुख तो उससे भी कहीं अधिक है, पानी के समान; फिर, चारों महामहासागरों के समान। अतः यह कथन है: “थोड़ा सा सुख देने वाला, परन्तु यहाँ दुख उससे भी कहीं अधिक है” । गालो इत्यादि (यह मछली का कांटा है) आनंद या संतुष्टि को दर्शाते हुए, यह मछली के कांटे की तरह खींचने या बाहर निकालने जैसा है, ये पांच प्रकार के इंद्रिय सुख ऐसे ही हैं। इति ञत्वा मतिमा, ऐसा जानकर, जो बुद्धिमान और ज्ञानी है, वह इस प्रकार जानकर, एको करे खग्गविसानकप्पो, गैंडे के सींग की तरह अकेले भटकना चाहिए, इन सब का त्याग करके।

श्लोक पर टिप्पणी,

संगा से शुरू होकर, समाप्त हो गया है।

जलता हुआ जंगल (संडालयित्वाना)

118. संदालयित्वाना से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में अनिवत्त ब्रह्मदत्त नाम का एक राजा था। वह युद्ध में घिर गया, पराजित हुआ, कोई और काम शुरू किया, उसे पूरा नहीं कर पाया और पीछे नहीं हटा। इसलिए लोग उसे इस रूप में भली-भांति जानते थे। एक दिन वह अपने राजमहल में गया। उस समय वहाँ आग लग गई। वह आग सूखी और हरी घास आदि को जलाती हुई लगातार जलती रही। इसे देखकर राजा ने इसकी स्मृति (पटिभागनिमित्त) में स्मरण किया, “जिस प्रकार यह जलती हुई अग्नि है, ठीक उसी प्रकार ग्यारह प्रकार की अग्नियाँ निरंतर जलती हुई सभी प्राणियों को भस्म कर भयंकर पीड़ा उत्पन्न करती हैं; ठीक उसी प्रकार मैं भी इस अग्नि के समान ही, अपने समस्त पापों (किलेष) को भस्म कर, श्रेष्ठ (आठ प्रकार के) मार्ग के ज्ञान की अग्नि से, इस पीड़ा (दुक्खा) को दूर करने के उद्देश्य से, निरंतर जलता हुआ आगे बढ़ूँगा।” इसके बाद राजा कुछ देर के लिए बाहर गए और उन्होंने नदी में मछुआरों को मछली पकड़ते देखा। एक बड़ी मछली उनके जाल में घुस गई और जाल फाड़कर भाग गई। मछुआरे चिल्ला उठे, “मछली जाल तोड़कर भाग गई।” राजा ने वह आवाज भी सुनी और स्मृति (पटिभाग निमित्त) में स्मरण करते हुए कहा, “निश्चित रूप से, मैं भी श्रेष्ठ मार्ग के ज्ञान से तृप्ति और विधर्म के जाल को फाड़ कर निर्लज्ज होकर आगे बढ़ूँगा।” परिणामस्वरूप, राजा ने अपनी

संप्रभुता का त्याग कर दिया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करना शुरू कर दिया, मौन बुद्धत्व की कल्पना की और आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ भी किया।

118.1. उस श्लोक के दूसरे चरण में 'जाला' को धागे से बना जाल कहा गया है। 'अंबु' जल है; क्योंकि यह वहाँ विचरण करता है, इसलिए यह जल-विचरण करने वाला है; यह मछली के लिए प्रयुक्त शब्द है। 'सलिलम्बुचारी' बहते जल में मछली है, या नदी के उस बहते जल में, 'जाल को फाड़कर' (जाल को फाड़कर), जो मछली चली गई थी; इस प्रकार कहा गया है। तीसरे चरण में 'दाद्धम्' को जला हुआ स्थान कहा गया है। जिस प्रकार अग्नि जले हुए स्थान पर वापस नहीं जाती और वहाँ से आगे नहीं बढ़ती, उसी प्रकार श्रेष्ठ मार्ग के ज्ञान की अग्नि भी है; यह इंद्रिय सुखों के जले हुए स्थानों पर वापस नहीं जाती, वहाँ से आगे नहीं बढ़ती; इस प्रकार कहा गया है। शेष इसी प्रकार है।

श्लोक पर टिप्पणी,
संदाला से शुरू होकर, है
समाप्त हो गया।

झुकी हुई आँखें (ओक्खित्त-चक्खु)

119. ओक्खित्त-चक्खु से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में चक्खुलोला ब्रह्मदत्त नामक एक राजा, पादोलाला ब्रह्मदत्त की तरह ही नाचती हुई युवतियों को देखने में लीन रहता था। लेकिन अंतर यह था कि असंतुष्ट होकर राजा इधर-उधर भटकता रहता था। किसी नाचती हुई युवती को देखकर वह अत्यंत प्रसन्न हो जाता था और नाचती हुई युवतियों को देखकर अपनी वासना (तन्हा) को बढ़ाता रहता था। कहा जाता है कि नृत्य देखने आई एक गृहस्थ की पत्नी को देखकर राजा की वासना (राग) और भी बढ़ गई। बाद में राजा को पश्चाताप हुआ और उसने मन ही मन कहा, "हाय! इस वासना (तन्हा) को बढ़ाकर मैं नरक में जाऊँगा; अब मैं अपनी इस वासना को वश में करूँगा।" इसके बाद राजा एकांतवासी हो गए, उन्होंने आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित की, अपने पूर्व के आचरण की निंदा की और उस निंदनीय आचरण के विपरीत गुण प्रदर्शित किए।

119.1. ओक्खित्त-चक्खु, यहाँ, आँख नीचे की ओर झुकी हुई है; सात गर्दन की हड्डियों को क्रमानुसार एक के ऊपर एक रखकर, केवल एक जुए की लंबाई तक आगे देखते हुए, यह देखने के उद्देश्य से कि क्या अस्वीकार करना है और क्या स्वीकार करना है; इस प्रकार, यह कथन किया जाता है। जबड़े की हड्डी से हृदय की हड्डी को न टकराना। वास्तव में, इस प्रकार नीचे झुकी हुई आँखों के साथ रहना एक भिक्षु के लिए उचित नहीं है। न च पदलोलो ऐसा उचित नहीं है जैसे किसी का पैर (या टांग) समाज के केंद्र में प्रवेश करने की इच्छा से खुजली कर रहा हो, इस प्रकार: दूसरे से पहले और तीसरे से दूसरे; लंबी यात्रा पर भटकने से परहेज और बिना पीछे हटे भटकना। गुट्टिन्द्रिय छह नियंत्रण शक्तियों (इन्द्रिय) में से है, क्योंकि मन की नियंत्रण शक्ति का यहाँ अलग से उल्लेख किया गया है, शेष बातों के प्रकाश में यह अच्छी तरह से संरक्षित नियंत्रण शक्ति है। रक्खितमानसानो का अर्थ इस प्रकार है: मानस और मानसानो एक ही हैं; ये सचेत मन का प्रतिनिधित्व करते हैं; जिसका मन अच्छी तरह से सँभाला हुआ हो, उसे रक्खितमानसानो कहा जाता है, जिसका सक्रिय मन अच्छी तरह से सँभाला हुआ हो। इस कारण वह किसी भी प्रकार के दुराचार (किलेसा) से प्रभावित नहीं होता, इसलिए उसे रक्खित चित्त (वह व्यक्ति जिसका मन अच्छी तरह से सँभाला हुआ हो) कहा जाता है। अनवस्सुत (कामवासना से मुक्त) का अर्थ है इस अभ्यास के माध्यम से इंद्रियों के इन या उन विषयों (आरम्मण) में दुराचार (किलेसा) से परहेज करना। अपरीदयहमानो, पूरी तरह से न जलने का अर्थ है दुराचार (किलेसा) की आग से पूरी तरह से न जलना। दूसरे शब्दों में, बाहरी रूप से कामवासना का रिसाव न होना और आंतरिक रूप से पूरी तरह से न जलना। शेष जैसा कि ऊपर कहा गया है।

श्लोक पर टिप्पणी,
ओक्खित्तचक्खु से शुरू होकर,
समाप्त हो गया है।

कटे हुए (ओहारयित्वा) ... परिच्छत्तक (अच्छी तरह से पत्तेदार)

120. ओहरायित्वा से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में चातुमासिका ब्रह्मदत्त नाम का एक और राजा था। वह राजा हर चार महीने में अपने राजमहल में आनंद मनाने जाता था। एक दिन, ग्रीष्म ॠतु के मध्य माह में, अपने राजमहल में प्रवेश करते समय, राजा ने द्वार पर एक मूंगा वृक्ष (पारिच्छत्तक कोविलारा) देखा, जो पत्तों और फूलों से लदा हुआ था। उसने एक फूल तोड़ा और अपने राजमहल में चला गया। इसके बाद, मन ही मन सोचते हुए कि "पहला फूल तो राजा ने तोड़ लिया है", एक मंत्री ने भी

फूल तोड़ना शुरू कर दिया। जो लोग फूलों से संतुष्ट नहीं हुए, उन्होंने पत्ते भी तोड़ लिए। वह वृक्ष फूलों और पत्तों से रहित हो गया, और उसका तना नंगा रह गया। शाम को अपने शाही उद्यान से निकलते समय राजा ने उस पत्तेविहीन पेड़ को देखा और मन ही मन सोचा, “इस पेड़ के साथ क्या हुआ है? जब मैं आया था, तब यह पेड़ मूंगे जैसे फूलों से सजा था, और इसकी शाखाएँ हरे-भरे पत्तों से घिरी थीं; अब तो यह फूलहीन हो गया है।” उस ठूंठनुमा पेड़ से कुछ ही दूरी पर राजा ने एक और फूलविहीन पेड़ देखा जो पूरी तरह पत्तों से ढका हुआ था। यह देखकर राजा के मन में यह विचार आया: “यह वृक्ष अपने पुष्पयुक्त शाखाओं के कारण अनेक लोगों के लोभ का शिकार हो गया। इसी कारण यह क्षण भर में ही नष्ट हो गया। परन्तु यह दूसरा वृक्ष लोभ उत्पन्न न करने के कारण यथावत खड़ा है। यह प्रभुत्व भी पुष्पयुक्त वृक्ष के समान ही वांछनीय है। वहीं, संन्यास निर्वस्त्र वृक्ष के समान लोभ उत्पन्न नहीं करता। अतः जब तक यह (पुष्पयुक्त वृक्ष) भी इस निर्वस्त्र वृक्ष की तरह लूटा न जाए, तब तक यह मूंगा वृक्ष भी अपने पत्तों से परिपूर्ण बना रहे; उसी प्रकार मैं भी पीले वस्त्र धारण करके संन्यासी बन जाऊं।” तब राजा ने अपना प्रभुत्व त्याग दिया, संन्यासी बन गए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की, मौन बुद्धत्व का दर्शन किया और आनंदमय इस श्लोक का पाठ किया।

120.1. श्लोक के इस भाग का अर्थ, अर्थात्: कासायवच्छो अभिनिक्खमित्वा, घर से बाहर निकलकर पीले वस्त्र धारण करना है; इस प्रकार इसका अर्थ इसी प्रकार समझा जाना चाहिए। शेष भाग भी पहले ही कहा जा चुका है; इसे समझना संभव है; इसे विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है।

श्लोक पर टिप्पणी,
परिच्छत्तक से शुरू होकर,
समाप्त हो गया है।
रसेसु
121. रसेसु से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस का एक राजा अपने राजमहल में स्थित पत्थर की पटिया से बने कमल के सरोवर पर युवा मंत्रियों से घिरा हुआ आनंद ले रहा था। उसके राजमहल के रसोइए ने सभी प्रकार के मांस का सार लेकर एक अत्यंत उत्तम और दिव्य भोजन बनाया और राजा को परोसा। उस भोजन को देखकर राजा को ललचाहट हुई और उसने किसी को कुछ दिए बिना उसे स्वयं खा लिया। सरोवर के पानी में खेलते हुए वह एक अत्यंत विचित्र समय पर बाहर निकला और जल्दी-जल्दी भोजन किया। ऐसा करते समय राजा को अपने साथ भोजन करने वाले किसी भी व्यक्ति की याद नहीं आई। बाद में राजा ने इस प्रकार चिंतन किया: “हाय! मुझसे एक बुरा कर्म हुआ है, क्योंकि मैंने स्वादिष्ट भोजन की लालसा में अकेले ही भोजन किया, सभी लोगों को याद नहीं किया; अब मैं उस लालसा को नियंत्रित करने जा रहा हूँ (इरसतन्हा)।” तब राजा ने अपनी संप्रभुता का त्याग कर दिया, भिक्षु बन गए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित की, मौन बुद्धत्व की कल्पना की और आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ किया, जिसमें उन्होंने अपने पूर्व अभ्यास की निंदा की और उसके विपरीत गुणों को उजागर किया।

121.1. रसेसु, वहाँ, स्वादों में, विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों को दर्शाता है, जैसे: खट्टा, मीठा, कड़वा, तीखा, नमकीन, क्षारीय, कसैला इत्यादि। गेधम अकारम का अर्थ है लोभ न करना, (या) अपनी लालसा न जगाना; तान्हा (लालच) को न भड़काना; यही कथन है। अलोलो (लालच से रहित) का अर्थ है विभिन्न स्वादों में इस प्रकार अविचलित रहना: “मैं इसका स्वाद लूँगा; मैं उसका स्वाद लूँगा”। अनञ्ञपोसी (दूसरों का पोषण न करने वाला) का अर्थ है उन लोगों से छुटकारा पाना जिनका पोषण किया जाना चाहिए, सह-निवासियों इत्यादि; केवल अपने शरीर का भरण-पोषण करने से संतुष्ट रहना; यही कथन है। दूसरे शब्दों में, जैसे पहले राजमहल में राजा स्वादिष्ट भोजन के लिए स्वयं को लोभित करके दूसरों का पोषण करता था; ऐसा न होने पर राजा लालची हो गया और स्वादिष्ट भोजन के प्रति लोभ करने लगा; उस लालसा (तन्हा) का त्याग करके और भविष्य में लालसा पर आधारित किसी अन्य जीव का पालन-पोषण न करके, वह दूसरों का पोषण न करने वाला बन जाता है; यही कथन है। दूसरे शब्दों में, सभी प्रकार के दुराचार (किलेसा) लाभ के टूटने के कारण उत्पन्न होते हैं; उन किलेसाओं का पोषण न करके, वह दूसरों का पोषण न करने वाला बन जाता है; यही यहाँ अर्थ है। सपादानचारी (क्रमिक रूप से घर-घर घूमना) का अर्थ है बिना विचलित हुए, निरंतर घूमना; घरों के क्रम को छोड़े बिना, बिना किसी अंतराल के भिक्षा-भोजन प्राप्त करने के लिए अमीर और गरीब दोनों परिवारों में प्रवेश करना; यही अर्थ है। Kule Kule appaṭibaddhacitto (मन का किसी परिवार से बंधित न होना) का अर्थ है, राजसी परिवारों आदि में, मन का किसी परिवार से व्यथावश चिपके न रहना; चंद्रमा के समान सदा नवस्थित रहना; यही अर्थ है। शेष का अर्थ उपरोक्त रूप में है।

श्लोक पर टिप्पणी,
रसगेधा से शुरू करते हुए,
समाप्त हो गया।
पाँच बाधाओं का त्याग (पहया पंचवरणानि)
122. 'पहाय पंचवरणानि' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? ऐसा कहा जाता है कि बनारस में एक राजा था जिसने ध्यान की पहली सफल अवस्था (झान) प्राप्त कर ली थी। अपने झान को विधिवत बनाए रखने के लिए, उस राजा ने अपनी संप्रभुता का त्याग कर दिया, भिक्षु बन गया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित की, मौन बुद्धत्व प्राप्त किया, और उपलब्धि की ओर अपने स्वयं के अभ्यास को प्रकाशित करने वाले आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ किया

122.1. पंचवरनानि, यहाँ केवल पाँच प्रकार की बाधाएँ हैं। उरग सूत्र में इनका विशेष वर्णन है। यद्यपि ये मन को उसी प्रकार अवरुद्ध करती हैं जैसे बादल आदि चंद्रमा और सूर्य को ढक लेते हैं, इसलिए इन्हें मानसिक बाधाएँ कहा गया है; पहाय, इन्हें गहन ध्यान (उपचार) या पूर्ण चिंतन (अप्पना) द्वारा त्याग दिया गया है; यही अर्थ है। उपक्किलेसे का अर्थ है बुरे कर्म जो मन को विभिन्न कष्टों से ग्रसित करते हैं; वतथोपमादिसु, उक्त लोभ इत्यादि। ब्यापनुज्ज का अर्थ है जड़ से उखाड़ दिया गया; स्पष्ट आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के सही मार्ग से त्याग दिया गया; यही अर्थ है। सब्बे का अर्थ है कोई शेष नहीं। अनिस्सितो का कारण निर्वाण के सही मार्ग के प्रथम चरण के द्वारा विधर्म पर निर्भरता का त्याग करना है, जिससे मन की शांति (समथा) और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) प्राप्त होती है। निर्वाण के सही मार्ग के शेष चरणों द्वारा उन प्राथमिक स्नेहदोषों, आसक्ति दोषों; कामवासना आदि को दूर कर दिया जाता है; यही कथन है। वास्तव में, इसी आसक्ति को आसक्ति दोष कहा गया है, जो सद्गुण के विपरीत है। शेष का वर्णन पूर्वोक्त तरीके से किया गया है।
श्लोक पर टिप्पणी,
āvaraṇa से शुरू होकर, है
समाप्त हो गया।
त्याग करने के बाद (विपित्तिकतावन)
123. विपित्तिकत्वन से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? ऐसा कहा जाता है कि बनारस में एक राजा ने चौथा ध्यान प्राप्त किया था। अपने ध्यान की रक्षा के लिए, उस राजा ने अपनी संप्रभुता का त्याग कर दिया, भिक्षु बन गया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित की, मौन बुद्धत्व की कल्पना की और अपनी उपलब्धि की दिशा में अपने उचित अभ्यास को प्रकाशित करने के लिए आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ किया

123.1. विपित्तिकत्वन, वहाँ, का अर्थ है पीछे की ओर ले जाना, त्याग देना, छोड़ देना; यही इसका अर्थ है। सुखम् दुःखम् शारीरिक सुख और दुःख है। सोमनसदोमनसम् मानसिक सुख और दुःख है। उपेक्खम्, समभाव, चौथे ध्यान का समभाव है। समथा (सेसतिन) चौथे ध्यान की मानसिक एकाग्रता है। विशुद्धम् नौ विपरीत धम्मों से मुक्त होने के कारण अत्यंत शुद्ध है, जिन्हें पाँच अवरोधों - विचार, खोज, उत्साह और आनंद - के रूप में गिना जाता है; यह अशुद्धता (उपक्किलेसा) से रहित है, शुद्ध सोने के समान; यही इसका अर्थ है।

123.2. इसका अर्थ यह है:- सर्वप्रथम, सुख और दुःख को पीछे छोड़ते हुए; प्रथम ध्यान का आगमन ही दुःख (दुक्खा) है; तृतीय ध्यान का आगमन ही सुख (सुख) है; यही इसका अर्थ है। फिर, पूर्व से पश्चात तक 'च' अक्षर को ले जाते हुए, "सेमनस्सम् देमनस्सन् च विपिष्ठि कट्वाना पुब्बे व, सर्वप्रथम मानसिक सुख और मानसिक दुःख को पीछे छोड़ते हुए"; यही इसका सार है। इसी कारण, चतुर्थ ध्यान के आगमन पर मानसिक सुख और द्वितीय ध्यान के आगमन पर मानसिक दुःख; यही इसका स्पष्टीकरण है। वास्तव में, ये परिस्थितियाँ या विषय अपने स्वभाव (परियया) की दृष्टि से त्यागने योग्य हैं। लेकिन अपरिवर्तनीय दृष्टि से, दुख का पहला ध्यान (दुक्खा), मानसिक अप्रसन्नता का दूसरा ध्यान (मनोबल), आनंद का तीसरा ध्यान (मनोबल), और मानसिक सुख का चौथा ध्यान (मनोबल) त्यागने योग्य विषय हैं। तदनुसार बुद्ध ने कहा: "वह पहले ध्यान में लीन रहता है; यहाँ, दुख की भावना (दुक्खिन्द्रिय) पूरी तरह समाप्त हो जाती है"; इस प्रकार प्रारंभ करते हुए, अभिधम्म के सात ग्रंथों में से पहले ग्रंथ धम्मसंग्रह की टीका अष्टशालिनी (व्याख्याता) में संपूर्ण सत्ता का वर्णन किया गया है। यथा पुब्बे वा (जैसा कि पहले भी कहा गया है): तीनों में, अर्थात् पहले ध्यान में, दुख, मानसिक असंतोष और आनंद को पीछे छोड़ते हुए, उसी प्रकार चौथे ध्यान में मानसिक सुख को पीछे छोड़ते हुए, इस उचित अभ्यास के माध्यम से समभाव, शांति और पवित्रता प्राप्त हुई और वह अकेले विचरण करता रहा; शेष का वर्णन पूर्वोक्त तरीके से ही है।

श्लोक पर टिप्पणी,
vipiṭṭhi से शुरू होकर, है
समाप्त हो गया।
परिश्रम का प्रारंभ (आरद्ध-वीर्यो)

124. 'आरद्ध-वीर्यो' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि एक सीमावर्ती राजा ज्ञान में तो महान था, लेकिन सामर्थ्य में छोटा था और उसकी सेना में केवल एक हजार सैनिक थे। एक दिन उस राजा ने सोचा, "यद्यपि मैं छोटा राजा हूँ, फिर भी अपने ज्ञान के बल पर मैं जंबू द्वीप पर कब्जा कर सकता हूँ।" उसने आसपास के राजा को दूत भेजा और कहा, "सात दिनों के भीतर या तो अपना राज्य मुझे दे दो या मुझसे युद्ध करो।" इसके बाद उस राजा ने अपने मंत्रियों को बुलाया और कहा, "तुमसे परामर्श किए बिना ही मैंने जल्दबाजी में कार्य किया; ऐसे राजा को ऐसा संदेश भेज दिया; अब क्या किया जाए?" मंत्रियों ने पूछा, "हे महाराज! क्या उस दूत को वापस लौटने के लिए कहना संभव है?" राजा ने उत्तर दिया, "यह संभव नहीं है; वह अवश्य चला गया होगा।" मंत्रियों ने सुझाव दिया, "यदि ऐसा ही है और हमें भी आपके साथ ही नष्ट होना है, तो वास्तव में शत्रु के हथियार से मरना बहुत ही दयनीय होगा; अब, चलो हम एक-दूसरे को मारते हुए मरें; चलो हम खुद को मार डालें और मर जाएं; चलो हम खुद को गला घोंट लें; चलो हम जहर खा लें।" इस प्रकार, सभी मंत्री मृत्यु को गले लगा रहे थे। तब राजा ने कहा, "इन मंत्रियों से मुझे क्या लाभ है? हे मंत्रियों! क्या ये मेरे सैनिक हैं?" तब हजार सैनिक खड़े होकर बोले, "हे महाराज! मैं ही सैनिक हूँ; मैं ही सैनिक हूँ।"

124.1. राजा ने मन ही मन कहा, "मैं इन सैनिकों की परीक्षा लूँगा", और एक विशाल चिता खड़ी करके बोला, "हे मेरे मित्रों! यह मैंने जल्दबाजी में किया है। मेरे मंत्री इसकी निंदा करते हैं; इसलिए मैं स्वयं चिता में प्रवेश करूँगा; मेरे साथ कौन प्रवेश करेगा? किसके साथ मैं अपना प्राण बलिदान करूँगा?" यह सुनकर पाँच सौ सैनिक खड़े हो गए और बोले, "हे महान राजा! हम अग्नि में प्रवेश करेंगे।" तब राजा ने अन्य पाँच सौ सैनिकों से कहा, "मेरे प्रियो! यह पुरुषोचित कार्य नहीं है; यह स्त्रीत्वपूर्ण आचरण है; इसके अतिरिक्त, हमारे महान राजा ने प्रतिद्वंद्वी राजा के पास एक दूत भेजा है। हममें से जो हैं वे उस राजा से लड़ेंगे और उसे मार डालेंगे।" तब राजा ने कहा, "मेरे लिए तुमने अपने प्राण जोखिम में डाले हैं", और चार टुकड़ियों की युद्ध पंक्ति बनाकर स्वयं को सुसज्जित किया, एक हजार सैनिकों की उस सेना से घिरे हुए आगे बढ़े और अपने राज्य की सीमा पर बैठ गए।

124.2. उस प्रतिद्वंद्वी राजा ने भी यह बात सुनकर क्रोधित होकर मन ही मन कहा, "अरे! वह छोटा सा राजा तो मेरे दास का वंशज भी नहीं है।" उसने अपनी सारी सेना लेकर युद्ध करने के लिए प्रस्थान किया। उस छोटे राजा ने अपने प्रतिद्वंद्वी राजा को अपने विरुद्ध आते देखा और अपनी बलवान सेना से कहा, "मेरे पुत्रों! तुम संख्या में कम हो; तुम सब एकजुट हो जाओ, अपनी तलवारें और ढालें उठाओ और सीधे इस राजा के सामने शीघ्रता से अग्रसर हो जाओ।" उन्होंने वैसा ही किया। तब उसकी सेना दो भागों में बँट गई और उन्हें मौका मिल गया। उन्होंने उस राजा को जीवित ही पकड़ लिया और अपने राजा को सौंप दिया, जो वहाँ पहुँच चुका था। राजा ने कहा कि वह स्वयं अपने प्रतिद्वंद्वी को मार डालेगा। प्रतिद्वंद्वी राजा ने उस छोटे राजा से अपने जीवन को बख्शने की विनती की। उस छोटे राजा ने अपने प्रतिद्वंद्वी राजा का जीवन बख्श दिया, उससे अपने प्रति निष्ठा की शपथ ली, उसे अपने वश में कर लिया और उसके साथ दूसरे राजा के पास अग्रसर हुआ। वह उसके राज्य की सीमा पर खड़ा हुआ और यह संदेश भेजा, "या तो अपना राज्य मुझे दे दो या फिर युद्ध।" उस राजा ने यह कहते हुए अपना राज्य त्याग दिया: "मैं एक भी युद्ध लड़ने में सक्षम नहीं हूँ।" इस प्रकार उस छोटे से शासक ने सभी राजाओं को बंदी बना लिया और अंत में बनारस के राजा को भी अपने अधीन करने में सफल रहा।

124.3. एक सौ एक राजाओं से घिरे और जंबू द्वीप के संपूर्ण राज्याभिषेक में राज-प्रशासन करते हुए, पूर्व लघु राजा ने इस प्रकार विचार किया: "पूर्व में, मैं एक लघु राजा था, जो अब अपनी बुद्धि के बल पर जंबूद्वीप के संपूर्ण क्षेत्र का राजा बन गया हूँ? परन्तु मेरी यह बुद्धि तो भौतिक परिश्रम से ही जुड़ी है; यह किसी भी प्रकार से विरक्ति और कामवासना से मुक्ति (विराग) की ओर उन्मुख नहीं है; यदि मैं इस बुद्धि से पारलौकिक सत्य (लोकउत्तर धम्म) की खोज करूँ तो क्या होगा?" इसके बाद, उन्होंने अपना राज्य बनारस के राजा को सौंप दिया, अपनी पत्नी, बच्चों और यहाँ तक कि अपने जिले को भी उनके संरक्षण में सौंप दिया, सब कुछ त्याग दिया, भिक्षु बन गए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करने लगे, मौन बुद्धत्व का दर्शन किया और अपने परिश्रम की प्राप्ति को प्रकाशित करते हुए आनंदमयी वाणी का यह श्लोक कहा।

124.4. āraddhavīriyo, वहाँ, का अर्थ है: वह व्यक्ति जिसका परिश्रम फल देने लगा है। इससे उन्होंने अपने स्वयं के महान परिश्रम की स्थिति की ओर इशारा किया। निर्वाण को परम लाभ (परमत्थ) कहा जाता है; परमत्थपत्तिया, उस परमत्थ (निर्वाण) की प्राप्ति के लिए; सर्वोत्तम लाभ, परम लाभ की प्राप्ति, परमत्थपत्ति (निर्वाण की प्राप्ति) है। इससे उन्होंने परिश्रम के माध्यम से प्राप्त होने वाले फल को दर्शाया। अलिनाचित्टो (सच्चे मन वाला) का अर्थ है: इसके माध्यम से उन्होंने परिश्रम द्वारा समर्थित अपने मन और मानसिक गुणों की सच्चाई को दर्शाया। अकुसितवुत्ति (कभी आलसी न होने की आदत) से उन्होंने खड़े होने, चलने आदि जैसी मुद्राओं में अपनी शारीरिक दोषरहितता को दर्शाया। दल्हनिकमो (दृढ़ परिश्रम या सहनशीलता); इससे उन्होंने अपने परिश्रम को दर्शाया, जो इस प्रकार प्रकट हुआ: “आदर्श त्वचा और नसें”; क्रमिक प्रशिक्षण या अनुशासन में इस या उस परिश्रम को करते हुए, “उन्होंने उदात्त महान सत्य को शारीरिक रूप से भी देखा”; ऐसा कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, इससे उन्होंने निर्वाण के सही मार्ग से जुड़े अपने परिश्रम को दर्शाया। वह परिश्रम भी दृढ़ था, क्योंकि ध्यान विकास (भावना) पूर्ण हो चुका था, और सहनशीलता भी, क्योंकि सभी पहलुओं में विपरीतताओं (या उलटफेरों) का निवारण हो गया था; इसलिए, जिस व्यक्ति में दृढ़ सहनशीलता हो, उसे “दलनिकामा” कहा जा सकता है। थामबलूपपन्नो वह है जिसने मार्ग के समय शारीरिक शक्ति और बौद्धिक शक्ति प्राप्त कर ली हो। दूसरे शब्दों में, वह बलवान शक्ति का स्वामी बन गया; जिसने स्थिर ज्ञान की शक्ति प्राप्त कर ली हो; इस प्रकार, कथन है। इससे उन्होंने परिश्रम के प्रति अपने जुड़ाव को सिद्ध किया, और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के साथ अपने परिश्रम के संबंध को स्पष्ट किया। श्लोक के तीनों चरणों की व्याख्या भी पूर्व, मध्य और उच्चतम परिश्रम के संदर्भ में की जानी चाहिए। शेष भाग उपरोक्त प्रकार से है।

श्लोक पर टिप्पणी,
āraddhavīriya से शुरू होकर,
समाप्त हो गया है।

एकांत (पतीसल्लना)

125. पटिसल्लाना से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? इस श्लोक की उत्पत्ति अवरण से शुरू होने वाले श्लोक के समान ही है। इनमें कोई अंतर नहीं है। हालाँकि, इसके अर्थ पर टिप्पणी इस प्रकार है: पटिसल्लाना (एकांतवास) का अर्थ है सत्तसंखार (जीव-जंतुओं के समूह) से दूर होकर एकांतवास करना; एक तरफ जाकर अकेले और शारीरिक रूप से एकांत में रहना; यही इसका अर्थ है। शत्रु को जलाने और इंद्रिय-विषयों के गुणों पर ध्यान करने के कारण ही ध्यान (मानसिक एकांतवास) को ध्यान कहा जाता है। वहाँ, आठ ध्यान संबंधी उपलब्धियों (समापत्ति) को 'ज्ञान' भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें बाधाओं आदि जैसे शत्रुओं को जलाकर नष्ट करना, साथ ही कसिणा आदि जैसे कर्मष्ठान के चिंतन और ध्यान करना शामिल है। हालाँकि, यहाँ इंद्रिय-विषय पर चिंतन का तात्पर्य है। अरिंचमानो (त्याग न करना) का अर्थ है इस एकांत या ज्ञान को इस प्रकार न छोड़ना। धम्मेसु का अर्थ है पाँच स्कंध (खन्ध) आदि जैसे धर्म, जो आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि तक ले जाते हैं; निच्चम (स्थायित्व) का अर्थ है निरंतर, सदा, स्थिर। अनुधम्मचारी का अर्थ है उन कर्मों (धर्म) से संबंधित घटनाओं के साथ या उनसे प्रभावित होकर आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के धर्म का अभ्यास करना। दूसरे शब्दों में, यहाँ धम्म (कर्मों में) का अर्थ है:- धम्म नौ पारलौकिक धम्मों को संदर्भित करता है; जो धम्म उन धम्मों के प्रत्यक्ष क्रम में आता है, वह इस प्रकार निषेध (कानून के अनुसार) है; यह शब्द आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) को दर्शाता है। यद्यपि इसे इस प्रकार कहा जाना चाहिए: "धम्मानं निच्चम् अनुधम्मचारी, सत्यों के सत्य (धम्म) का पालन करने वाला, सदा", श्लोक की रचना में सुगमता के लिए, विभक्ति के अनुभव के कारण, इसे "धम्म (सत्यों में)" कहा जा सकता था। आदिनवं सम्मसिताभवेषु (जन्मों में हानि का चिंतन किया गया है) का अर्थ है तीनों जन्मों में अनित्यता आदि के लक्षणों का उचित अवलोकन करना, उस आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) के माध्यम से, जिसे धम्म के अनुसार अभ्यास माना जाता है; इस प्रकार, उचित अभ्यास के माध्यम से प्राप्त की गई उपलब्धि, जिसे आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) माना जाता है, जो शारीरिक और मानसिक एकांत के शिखर तक पहुँच चुकी है; अतः, यह कहा जाना चाहिए; एको केयर, यानी अकेले घूमना; इस प्रकार, व्याख्या को समझा जाना चाहिए।

श्लोक पर टिप्पणी,
paṭisallāna से शुरू होकर, है
समाप्त हो गया।

लालसा का अंत (तन्ह-क्खया)

126. तांह-क्खया से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस के एक राजा ने अपने भव्य राजसी वैभव और सामर्थ्य के साथ नगर की परिक्रमा की। राजा के वैभव को निहारने वाले लोग, यद्यपि वे उनके आगे चल रहे थे, फिर भी मुड़कर उन्हें देखते रहे; यद्यपि वे उनके पीछे चल रहे थे और यद्यपि वे उनके दोनों ओर चल रहे थे, फिर भी उन्होंने ऐसा ही किया। वास्तव में, मनुष्य

बुद्ध के दर्शन से, पूर्णिमा के चंद्रमा के दर्शन से, विशाल सागर के दर्शन से और राजा के दर्शन से कभी तृप्त नहीं होते। उसी अवसर पर, एक गृहस्थ की पत्नी भी अपने महल की सबसे ऊँची इमारत पर गई, अपनी खिड़की खोली और देखने लगी। राजा ने उसे देखा, उस पर मोहित हो गया और एक मंत्री को आदेश दिया: "हे मंत्री! अब पता लगाओ कि यह महिला अपने पति के साथ है या नहीं।" मंत्री ने पता लगाया कि वह विवाहित है और राजा को सूचित किया: "महाराज! यह महिला अपने पति के साथ है।" तब राजा ने मन ही मन सोचा, "ये बीस हजार नृत्य करती युवतियाँ, जो अप्सराओं के समान थीं, केवल मुझे ही मोहित कर पाईं; फिर भी, इतनी संख्या से संतुष्ट न होकर, मेरे मन में किसी और पुरुष की प्रेमिका के लिए लालसा उत्पन्न हो गई; यह लालसा मुझे नरक (अपाय) तक ले जाएगी।" इस प्रकार लालसा की हानि को देखकर, राजा ने मन ही मन कहा, "मैं अब इस लालसा को नियंत्रित करने जा रहा हूँ।" उसने अपना राज्य त्याग दिया, भिक्षु बन गया, आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया, मौन बुद्धत्व की कल्पना की और आनंदमयी इस श्लोक का पाठ किया।

126.1. तांख्य (इच्छा का निवारण) वहाँ निर्वाण है; या इच्छा (तांहा) के दोषों को जानते हुए भी उसका न होना। अप्पमत्तो (परिश्रमी, लापरवाह नहीं) वह है जो दृढ़ निश्चयी और नियमित रूप से अच्छे कर्म करता है। अनेलमूगो (स्पष्ट स्वर वाला, मूक नहीं) का अर्थ है मुख का लललल न होना या मूक न होना; दूसरे शब्दों में, मूक नहीं बल्कि स्पष्टवादी; बुद्धिमान, चतुर; इस प्रकार कथन है। वह व्यक्ति जिसके पास ऐसा ज्ञान है जो कल्याण और सुख को बढ़ावा देता है; इस प्रकार, वह सुतवा (ज्ञानवान) है, जो प्रामाणिक ग्रंथों के ज्ञान से संपन्न है; इस प्रकार कथन है। सतिमा (सचेतनता रखने वाला) बहुत पहले किए गए कर्मों आदि जैसी घटनाओं का स्मरण है। संखतधम्मो (अच्छी तरह से संपन्न होने का स्वभाव) वह है जिसने धम्म को भली-भांति समझा हो, धम्म के अध्ययन के लिए। नियतो (स्थिर या आश्वस्त) वह है जिसने निर्वाण के श्रेष्ठ मार्ग के माध्यम से आश्वस्त होने की अवस्था प्राप्त की हो। पधानवा (कठोर प्रयास, पधान) वह है जो उचित प्रयास से संपन्न हो। इस पाठ या संदर्भ की व्याख्या क्रमबद्ध तरीके से की जानी चाहिए। इसी प्रकार, परिश्रम आदि गुणों से संपन्न होकर, व्यक्ति कठोर प्रयास (पधान) का स्वामी बन जाता है, और प्रेरित अभ्यास द्वारा उचित रूप से प्रोत्साहित किए गए कठोर प्रयास (पधान) के माध्यम से यह निरंतर बना रहता है; परिणामस्वरूप, व्यक्ति स्वयं निर्मित वस्तुओं के सत्य (संखतधम्म) में भली-भांति पारंगत हो जाता है। अरहतों को ही स्व-सृजित वस्तुओं के सत्य (संखतधम्म) में पूर्णतः पारंगत कहा जाता है, क्योंकि उन्हें इसी रूप में गिना जाता है; जैसा कि बुद्ध ने कहा था: "यहाँ अनेक ऐसे लोग हैं जो अरहत या (संखतधम्म) हैं, साथ ही वे भी हैं जो धारा-प्रवर्तक (सेक्ख) हैं।" शेष बात उपरोक्त प्रकार से है।
श्लोक पर टिप्पणी,
taṇhakkhaya से शुरू होकर, है
समाप्त हो गया।
सिंह (सीहोवा)...शील (नैतिकता)
127. 'सीहोवा' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस के राजा का एक दूर स्थित राजमहल था। राजा सुबह जल्दी उठे, अपने राजमहल गए, अपने वाहन से उतरे और रास्ते में जल स्रोत के पास जाकर मन ही मन बोले, "मैं अपना चेहरा धो लूँगा।" संयोग से उसी स्थान पर एक शेरनी ने बच्चे को जन्म दिया और भोजन की तलाश में बाहर गई थी। राजमहल के सेवकों ने उसे देखा और राजा को सूचित किया, "महाराज! यहाँ एक शेर का बच्चा है।" राजा ने मन ही मन कहा, "कहते हैं कि शेर किसी से नहीं डरता।" और यह जानने के लिए उन्होंने ढोल आदि बजाने का आदेश दिया। हालाँकि शेर के बच्चे ने वह आवाज़ सुनी, फिर भी वह वहीं सोता रहा। फिर ढोल तीसरी बार तक बजाए गए; उस नन्हे शेर ने तीसरी बार अपना सिर उठाया, लोगों की भीड़ को देखा और उसी तरह सो गया। तब राजा ने कहा, "चलो, जब तक उसकी माता वापस न आ जाए, तब तक उसके पास चलते हैं।" वह उसके पास गया और सोचने लगा, "यद्यपि अभी जन्मा ही है, फिर भी छोटा शेर न तो कांपता है और न ही डरता है; निश्चय ही, मैं भी, व्यथा (तन्हा) और विधर्म (दिष्टि) का त्याग करके, न तो चिंतित होता हूँ और न ही भयभीत।" इस विचार को मन में लिए राजा आगे बढ़ा और उसने फिर मछुआरों को देखा, जिन्होंने मछलियाँ पकड़ी थीं और पेड़ों की शाखाओं पर जाल बाँध रखे थे, और उस जाल में से निर्लक्त हवा बह रही थी। उसने फिर से उसमें एक विशिष्ट लक्षण देखा और सोचा, "निःसंदेह, मैं भी, व्यथा (तन्हा), विधर्म (दिष्टि) और मोह (मोह) के जाल को तोड़कर, उसी प्रकार निर्लक्त होकर चलता हूँ।"

127.1. बाद में, राजा अपने राजमहल में गए, पत्थर की पटिया से बने कमल-कुंड के किनारे बैठ गए, हवा से हिलते हुए कमलों को झुकते और पानी को छूते हुए देखा, और हवा थमने के बाद उन्हीं कमलों को फिर से पानी से अछूता अपनी मूल स्थिति में खड़ा देखा। उन्होंने मन ही मन यह विचार किया: "निश्चित रूप से, जिस प्रकार ये कमल, जो पानी में उगे हैं, पानी से अछूते खड़े हैं, उसी प्रकार मैं

भी, संसार में जन्मा, संसार से अछूता रहूँ।" राजा बार-बार यही सोचते रहे: "जिस प्रकार छोटा सिंह, हवा और कमल हैं, उसी प्रकार मैं भी निर्भय, अनासक्त और निर्मल रहूँ।" उन्होंने अपना प्रभुत्व त्याग दिया, भिक्षु बन गए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की, मौन बुद्धत्व का दर्शन किया, और आनंदमय इस श्लोक का पाठ किया।

127.2. यहाँ 'सीहा' (शेर) शब्द चार प्रकार के शेरों को दर्शाता है: घास (तिना) शेर; पीला (पंडु) शेर; काला (काला) शेर और केसर (बालों वाला) शेर। इनमें से बालों वाले शेर को प्रधान कहा जाता है; यहाँ उसी केसर वाले शेर का उल्लेख है। 'वातो' (पवन) पूर्व दिशा से बहने वाली कई प्रकार की होती है, इत्यादि। 'पदुम' (कमल) लाल, सफेद आदि रंगों में पाया जाता है।
उनमें हर प्रकार की हवा और हर प्रकार का कमल उपयुक्त है। इसलिए, जहाँ भी भय उत्पन्न होता है, वह आत्म-आसक्ति के कारण होता है। आत्म-आसक्ति ही लालसा का दाग है। यह भी लोभ के कारण होता है, चाहे वह विधर्म या अटकलों से जुड़ा हो या न हो। वह लोभ भी लालसा (तन्हा) ही है। वहीं, अच्छे लोगों के मामले में, यह अज्ञान आदि के अभाव में, भ्रम के कारण होता है; भ्रम ही अज्ञान (अविज्जा) है। वहाँ लालसा (तन्हा) का निवारण संयम या ध्यान द्वारा होता है; अज्ञान (अविज्जा) का निवारण आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि द्वारा होता है। इसलिए, ध्यान (समाथा) के माध्यम से आत्म-आसक्ति का त्याग करके, अनित्यता, दुःख आदि के बीच ध्वनियों के बीच सद्देसु (सुनाई ध्वनियों के बीच), आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के माध्यम से मोह का त्याग करके, छोटे शेर की तरह निर्भय होकर; खन्ध, आयतन आदि के क्षेत्रों में जाल में हवा की तरह, उसी समाथा के माध्यम से लोभ और लोभ से जुड़े विधर्म का त्याग करके, अनासक्त होकर; समस्त प्राणियों के धन के लोभ से अछूते रहकर, जल से लथपथ कमल की तरह। यहाँ भी, शील (समाथा) का निकटतम कारण शील है। शांति (समाथा) एकाग्रता (समाधि) का निकटतम कारण है, एकाग्रता आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) का निकटतम कारण है; इस प्रकार, जब इस तरह दो कर्म (धम्म) पूर्ण हो जाते हैं, तो तीन स्कंध (खंड) स्वतः ही पूर्ण हो जाते हैं। वहाँ, शील के समूह के कारण, वह साहसी हो जाता है। छोटे शेर की तरह, शोर के बीच भी, वह द्वेषपूर्ण आधारों पर क्रोधित होने की इच्छा से नहीं डरता। जाल में हवा की तरह, भेदन की प्रकृति के कारण, ज्ञान के समूह के माध्यम से वह द्वेषपूर्ण आधारों पर क्रोधित होने की इच्छा से नहीं डरता। जाल में हवा की तरह, भेदन की प्रकृति के कारण, ज्ञान के समूह के माध्यम से वह धम्म, स्कंध आदि जैसी विभिन्न वस्तुओं से अनासक्त हो जाता है। जैसे कमल जल से भरा रहता है, वैसे ही वह कामवासना (राग) से रहित होकर, समाधि की एकाग्रता के कारण कामवासना (राग) से अछूता रहता है। इसी प्रकार, इसे निर्भय, अनासक्त और निर्मल समझा जाना चाहिए, क्योंकि वह तीन प्रकार के बुरे कर्मों, जैसे कि लालसा और अज्ञान (तन्हविज्जा), का त्याग कर लेता है, जब भी वे उत्पन्न हों, शमन और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के माध्यम से, साथ ही शील, समाधि और ज्ञान के समूह के माध्यम से। शेष का अर्थ पूर्वोक्त है।
श्लोक पर टिप्पणी,
सीला से शुरू होने वाला, समाप्त हो गया है।
सिंह की तरह (सीहो यथा) ... दात्हबली (शक्तिशाली बल)
128. 'सीहो यथा' से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस का एक राजा अपनी विशाल सेना के साथ सीमावर्ती विद्रोह को दबाने के लिए वन मार्ग से गया, जहाँ उसने बड़े-छोटे गाँवों के मार्गों से परहेज किया। उसी समय, एक पहाड़ी की तलहटी में, एक शेर उगते सूरज की धूप सेंकते हुए लेट गया। उसे देखकर राजा के सेवकों ने राजा को सूचना दी। राजा ने मन ही मन कहा, "कहते हैं शेर निर्भीक होता है," और बड़े-छोटे ढोल बजाने का आदेश दिया; शेर पहले की तरह ही लेटा रहा। दूसरी बार ढोल बजाने का आदेश दिया गया, लेकिन शेर पहले की तरह ही सोता रहा। तीसरी बार ढोल बजाने का आदेश दिया गया। तब शेर खड़ा हो गया, अपने चारों पैरों पर मजबूती से खड़ा हुआ और शेर की गर्जना करते हुए मन ही मन बोला, "मेरा शत्रु अवश्य ही मेरे विरुद्ध है।" शेर की दहाड़ सुनकर सेना के हाथी सवार और अन्य लोग अपने हाथियों से उतरकर घास, बांस और जंगलों में चले गए; हाथियों और घोड़ों के झुंड अलग-अलग दिशाओं में भाग गए। राज हाथी भी राजा को लेकर जंगल और झाड़ियों को रौंदता हुआ भाग गया। राजा अपने हाथी को काबू में नहीं रख सका, इसलिए वह एक पेड़ की शाखा से लटक गया, फिर नीचे जमीन पर उतरा और एक पगडंडी पर चलते हुए मौन बुद्ध के निवास पर पहुंचा। वहां राजा ने मौन बुद्धों से पूछा, "आदरणीय महोदय! क्या आपने कोई आवाज सुनी थी?" उनका उत्तर हां में था। राजा ने पूछा कि वे कैसी आवाजें थीं। उत्तर था, "पहले ढोल, शंख आदि की आवाज; फिर शेर की दहाड़।" राजा ने पूछा, "आदरणीय महोदय! क्या आप डरे नहीं?" उनका उत्तर था, "हे महाराज! हम किसी की आवाज से नहीं डरते।" राजा ने पूछा, "आदरणीय महोदय! क्या आप मेरे लिए भी ऐसा कर सकते हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "हे महान राजा! यह संभव है, यदि आप भिक्षु बन जाएँ।" राजा ने भिक्षु बनने का वचन दिया। इसके बाद, मौन बुद्धों ने राजा को भिक्षु बनाया और उन्हें उचित आचरण (अभिसमाचारिका) का प्रशिक्षण

दिया। उस राजा ने भी, पहले बताए गए तरीके से, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की, मौन बुद्धत्व का दर्शन किया और आनंदमय वाणी के इस श्लोक का पाठ किया।

128.1. यहाँ 'सीहा' (शेर) शब्द सहनशक्ति, वध क्षमता और तीव्र गति के कारण 'सीहा' है। यहाँ केवल घने बालों वाले शेर का ही अर्थ है। शेर दाठबली है, क्योंकि उसके दाँतों में प्रबल शक्ति होती है। 'पसयह अभिभुय्या' (बलपूर्वक पराजित और पराजित) अभिव्यक्ति की व्याख्या व्याकरणिक शब्द 'चारी' के साथ की जानी चाहिए, जिसका अर्थ है अभ्यास करने वाला, यानी पसयहचारी अभिभुय्या चारी, बलपूर्वक पराजित करने वाला और पराजित करने वाला। इस संदर्भ में, बलपूर्वक पराजित करने वाला पसयहचारी है, क्योंकि बलपूर्वक पराजित करने के बाद वह नियंत्रण में रहता है। पराजित करने वाला अभिभुय्याचारी है, क्योंकि डराकर पराजित करने के बाद वह वश में हो जाता है। यह वह व्यक्ति है जो शारीरिक बल से विजय प्राप्त करने में निपुण है, शारीरिक बल के कारण पसायहाचारी; अपनी शक्ति के कारण विजय प्राप्त करने में निपुण है, अभिभुय्यचारी। यदि कोई पूछे, “विजय प्राप्त करने का अभ्यासी कौन होता है?” तो उत्तर इस प्रकार दिया जाना चाहिए: “वह व्यक्ति जो हिरण (या शिकारी पशुओं) पर विजय प्राप्त करने और उन्हें पराजित करने का अभ्यस्त है”, इसके बाद कर्म कारक शब्द 'मिगानम्' को हटाकर (या कर्म कारक) प्रयोग करें। पंतनि (दूर) का अर्थ है बहुत दूर (दूरानि)। सेनासननि (मठ) का अर्थ है निवास स्थान। शेष का अर्थ भी उपरोक्त के समान है और यह ज्ञात है, इसलिए इसे विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है।
श्लोक पर टिप्पणी,
dāṭhābalī से शुरू होकर, है
समाप्त हो गया।

प्रेमपूर्ण दयालुता समभाव (मेत्तम उपेक्खम)
129. मेत्तम उपेक्खम से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? ऐसा कहा जाता है कि एक राजा ने प्रेमपूर्ण दया आदि का ध्यान प्राप्त किया था। उस राजा ने अपने मन में कहा: "संप्रभुता ध्यान के आनंद के लिए हानिकारक है", और वह भिक्षु बन गया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित की, मौन बुद्धत्व की कल्पना की, और आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ किया

129.1. मेट्टा (प्रेम-कृपा) वह अवस्था है जिसमें सभी प्राणियों के कल्याण और सुख की कामना इस प्रकार की जाती है: “सभी प्राणी सुखी हों!”, इत्यादि। करुणा (सहानुभूति) वह अवस्था है जिसमें सभी प्राणियों के दुखों को दूर करने की कामना इस प्रकार की जाती है: “हाय! वास्तव में! वे सभी इस दुख से मुक्त हों”, इत्यादि। मुदिता (आनंद) वह अवस्था है जिसमें सभी प्राणियों के कल्याण और सुख से विरक्ति न होने की कामना इस प्रकार की जाती है: “हे सभी प्राणियों! आप वास्तव में आनंद से परिपूर्ण हैं। आप पूरी तरह से प्रसन्न हैं!” इत्यादि। उपेक्षा (समभाव) वह अवस्था है जिसमें सुख और दुख के प्रति पूर्णतः उदासीन रहते हुए इस प्रकार कहा जाता है: “वे अपने-अपने कर्मों से स्वयं को प्रकट करेंगे”। हालाँकि, श्लोक की रचना में सुगमता के लिए, प्रेम (मेत्ता) की बात करने के बाद, समभाव और आनंद (मुदिता) का उल्लेख फिर से किया गया है। विमुक्ति (मुक्ति) यह है कि ये चारों प्रकार भी मुक्ति (विमुक्तिये) का हिस्सा हैं, क्योंकि इनमें व्यक्ति अपने ही कर्मों (पेच्चनिकधम्म) से मुक्त हो जाता है। इसलिए कहा गया है: “प्रेम, समभाव और सहानुभूति का त्याग; साथ ही आनंद (मुदिता) में लिप्त होना।”

129.2. आसेवमानो का अर्थ है: त्रिक या चतुर्भुज ध्यान द्वारा तीनों का अभ्यास करना; और चौथे ध्यान के प्रभाव से समभाव विकसित करना। काले (एक समय में) का अर्थ है प्रेम-कृपा का अभ्यास करना, और बिना उत्साह (पीति) के ध्यान से उठकर समभाव का अभ्यास करना, इसे "एक समय में (काले आसेवमान)" या किसी भी सुविधाजनक समय में अभ्यास करना कहा जाता है। सब्बेना लोकेन अविरुज्जमानो (संपूर्ण जगत से अबाधित) का अर्थ है दस दिशाओं में सजीव प्राणियों के संपूर्ण जगत से अबाधित। वास्तव में, प्रेम-कृपा आदि के विकास की अवस्था के कारण, सजीव प्राणी अनिच्छुक नहीं होते; जीवित प्राणियों के प्रति अवरोध और शत्रुता समाप्त हो जाती है। इसलिए, यह कहा गया है कि “संपूर्ण जगत द्वारा अवरोध रहित (सब्बेना लोकेना अविरुज्जमाहो)” यह यहाँ संक्षिप्त रूप है। हालाँकि, विस्तृत रूप से यह बात अभिधम्म के सात ग्रंथों में से प्रथम ग्रंथ धम्मसंग्रह की टीका अत्थसालिनी (व्याख्याता) के प्रेम-कृपा (मेत्ता) आदि पर प्रवचन में कही गई है। शेष लगभग इसी प्रकार है।
श्लोक पर टिप्पणी,

मेट्टम उपेखम से शुरू करते हुए, है
समाप्त हो गया।
पसंद-नापसंद (रागंच दोषंच)... जीवनसंख्या (जीवन का अंत)
130. रागंच दोसांच से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? ऐसा कहा जाता है कि राजगृह के पड़ोस में मातंग नाम के एक मौन बुद्ध रहते थे, जो सभी मौन बुद्धों में अंतिम थे। उस समय, जब हमारे बोधिसत्व प्रकट हुए, तो बोधिसत्व को आदर अर्पित करने आए देवताओं ने उन्हें देखा और कहा: "हे साथियों! साथियों! बुद्ध संसार में प्रकट हुए हैं।" निरोध समाधि से उठते ही उस मौन बुद्ध ने इसके बारे में सुना, अपने जीवनकाल की समाप्ति को देखा, आकाश में उस स्थान पर गए जहाँ मौन बुद्धों को पूर्णतः निर्वाण प्राप्त होता है, जो हिमवंत पर्वत में एक बड़ी चट्टान के नाम से जानी जाने वाली पहाड़ी थी, उन्होंने पिछले दिवंगत मौन बुद्ध की अस्थियों का ढेर चट्टान से नीचे फेंक दिया, स्वयं उस पत्थर की सतह पर बैठ गए और आनंदमय उच्चारण के इस श्लोक का पाठ किया।

130.1. उस श्लोक में, कामवासना, घृणा और मोह (राग, दोष, मोह) का उल्लेख केवल उरग सूत्र (सर्प उपदेश) में किया गया है। सम्योजनानि (बंधन) आसक्ति के सात बंधनों को दर्शाता है; ये भी इस और उस सही मार्ग (मार्ग) द्वारा पूर्णतः काट दिए गए हैं। असन्तसम जीवितसंख्यमहि, जीवन के पूर्ण अंत में निर्भय; (जीवितसंख्य) का अर्थ है मरते हुए मन (चुतिचित्त) का टुकड़े-टुकड़े हो जाना। जीवन के उस पूर्ण अंत में भी वह निर्भय है क्योंकि उसने जीवन की लालसा को त्याग दिया है। इस हद तक, अपने स्वयं के निर्वाण तत्व को अस्तित्व के मूल (उपादि) के अवशेष के साथ प्रदर्शित करने के बाद, श्लोक के पाठ के अंत में वे अस्तित्व के मूल (उपादि) के किसी भी अवशेष के बिना पूर्णतः निर्वाण में विलीन हो गए।
श्लोक पर टिप्पणी,
जीवितसंखया से शुरू होकर,
समाप्त हो गया है।
परोसें (भजंती)
131. भजनती से शुरू होने वाले श्लोक की उत्पत्ति क्या है? कहा जाता है कि बनारस में एक राजा अपने समृद्ध राज्य पर ठीक उसी प्रकार शासन करता था जैसा कि श्लोक के प्रारंभ में वर्णित है। उसे भयंकर रोग हो गया। असहनीय पीड़ा हुई। बीस हजार स्त्रियाँ उसके चारों ओर जमा हो गईं और उसके हाथों और पैरों की धुलाई करने लगीं। उसके मंत्रियों ने सोचा, "अब तो यह राजा जीवित नहीं रहेगा; हमें भी कहीं शरण लेनी चाहिए।" वे दूसरे राजा के पास गए और रोजगार की तलाश में अपनी सेवाएँ दीं। उन्होंने वहाँ सेवा तो की, पर कुछ नहीं मिला। राजा रोग से उबरकर वापस आया और पूछा, "फलां नाम की वे कहाँ हैं?" इसके बाद, राजा ने इस घटना के बारे में सुना, अपना सिर हिलाया और चुप रहा। उन मंत्रियों ने भी सुना कि उनका राजा रोग से ठीक हो गया है; वहाँ कुछ न मिलने पर, घोर गरीबी से व्याकुल होकर (परमेना परिजुन्नेन), वापस आ गए, लेकिन फिर से अपने राजा को प्रणाम किया और एक तरफ खड़े हो गए। जब राजा ने उनसे पूछा, "मेरे प्यारे पुत्रों! तुम सब कहाँ चले गए थे?", तो उन्होंने उत्तर दिया, "महाराज की दुर्बलता देखकर, हम जीविका के खतरे से बचने के लिए उस नाम के एक जिले में चले गए थे।" राजा ने अपना सिर हिलाया और मन ही मन सोचने लगे, "यदि मैं उन्हें वही बीमारी दिखा दूँ तो क्या होगा? क्या वे फिर से ऐसा करेंगे या नहीं?" राजा ने बीमार होने का नाटक किया और दर्द का प्रदर्शन किया, मानो उन्हें अपनी पिछली बीमारी फिर से हो गई हो। स्त्रियाँ राजा के चारों ओर जमा हो गईं और उन्होंने ठीक वैसा ही किया जैसा उन्होंने पहले किया था। वे मंत्री भी पहले की तरह कई और पुरुषों को लेकर चले गए। इस प्रकार तीसरी बार तक राजा ने सब कुछ पहले जैसा ही किया। वे मंत्री भी उसी तरह से चले गए। इसके बाद, अपने मंत्रियों को चौथी बार भी आते देख राजा क्रोधित हो गया और बोला: "हाय! इन मंत्रियों ने बुरा काम किया है, क्योंकि इन्होंने मुझे बीमार छोड़कर बिना मेरी परवाह किए ही विदा ले ली।" उसने अपना प्रभुत्व त्याग दिया, भिक्षु बन गया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की, मौन बुद्धत्व की कल्पना की और आनंदमयी वाणी का यह श्लोक पढ़ा।

131.1. भजंति (सेवा करना, साथ देना) का अर्थ है कि वे राजा के शरीर से लिपटकर उनकी सेवा करते हैं। सेवंती (सेवा करना) का अर्थ है कि वे बदले में कुछ पाने की अपेक्षा करते हुए विनम्रतापूर्वक हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं। कारण (परिस्थितियों के कारण) का अर्थ है कि जिन्हें आवश्यकता (या कारण) है, उनके लिए सेवा करने के अलावा कोई अन्य कारण नहीं है: उनकी आवश्यकता ही उनका कारण है; वे अपनी आवश्यकता (या इच्छा) के कारण सेवा करते हैं; यही कथन है। निक्कारणा दुल्लभा अज्जा मित्ता, अब बिना किसी आवश्यकता (या कारण) के मित्र मिलना कठिन है, जो इस प्रकार कहते हैं: "क्या इसके आगे हमें कुछ मिलेगा?", बिना किसी कारण (या कारण) के अपने लाभ के लिए; केवल (या पूरी तरह से)।

एक ऐसा मित्र जो मददगार हो, एक ऐसा मित्र जो
सुख-दुख में, एक ऐसा मित्र जो
पारस्परिक लाभ और सहानुभूति की बात करता है
मित्र"।

ऐसा कहने से, अब महान मित्रता से संपन्न मित्र प्राप्त करना कठिन हो गया है। अत्तत्थपञ्ञा (स्वयं-स्थायी ज्ञान) इन लोगों का ज्ञान या बुद्धि जो स्वयं में विद्यमान थी। वह केवल अपनी आवश्यकता को देखता है, दूसरे को नहीं; यही अर्थ है। पाठ 'अत्तत्थपञ्ञा' भी है; वह केवल अपनी आवश्यकता (या इच्छा) को देखता है, दूसरों की आवश्यकता को नहीं; यही उसका अर्थ है। "दित्तत्थपञ्ञा, देखी गई आवश्यकता का ज्ञान", यह भी, वे कहते हैं, एक पुराना पाठ है। उनका ज्ञान वर्तमान आवश्यकता (या इच्छा) में है, जो केवल देखी जाती है; लेकिन भविष्य की नहीं; यही उसका अर्थ है। वह केवल वर्तमान अस्तित्व की आवश्यकता या कल्याण को देखता है, भविष्य के अस्तित्व के कल्याण को नहीं, यही कथन है। असुचि (अशुद्धता) वह प्राणी है जो अशुद्ध, नीच, शारीरिक, मौखिक और मानसिक कर्मों से संपन्न है

131.2. खग्गविसाणकप्पो (गैंडे के सींग के समान) इस प्रकार है:- तलवार से पेड़ों आदि को काटने के समान, यह अपने ही सींग से पहाड़ियों आदि को टुकड़े-टुकड़े कर चूर-चूर कर देता है; इस प्रकार, खग्गविसाण (गैंडे का सींग) है। विष के समान अधिकार इस प्रकार (विसाण) सींग है। तलवार के समान; इस प्रकार (खग्ग) तलवार के समान सींग है। जिस जानवर का सींग तलवार के समान हो या जिसके सींग तलवार के समान हों, वह जानवर खग्गविसाण (गैंडा) है; गैंडे के उस सींग के समान खग्गविसाणकप्पो (गैंडे के सींग के समान) है। मौन बुद्ध गैंडे के सींग के समान हैं, एको (अकेला), बिना किसी साथी के, अकेले, उन्हें घूमना चाहिए, जीना चाहिए, निकलना चाहिए, आगे बढ़ना चाहिए और चलते रहना चाहिए; अतः, यही अर्थ है।

132. विशुद्धशीला (शुद्ध उपदेश) का अर्थ है: विशिष्ट रूप से शुद्ध सद्गुण; सर्वांगीण शुद्धता का शुद्ध उपदेश। सुविशुद्धपज्ञा (अच्छी तरह से शुद्ध किया गया ज्ञान) उचित रूप से शुद्ध की गई बुद्धि है; ऐसा ज्ञान जैसे सर्वांगीण शुद्ध मार्ग, फल प्राप्ति, विश्लेषणात्मक ज्ञान आदि, क्योंकि कामवासना आदि से परहेज किया गया है। समाहित (अच्छी तरह से स्थापित, सम, अच्छी तरह से, उचित रूप से लाया गया) मन जो स्वयं के समक्ष रखा गया है। जागृत (सतर्कता के प्रति समर्पित), जागृति सतर्कता है; नींद से परे जाना; इस प्रकार, इसका अर्थ है; जागृत अवस्था सतर्कता है; तदनुसार सतर्कता से जुड़े रहना जागृति के प्रति समर्पित होना है। विपस्सक (स्पष्ट रूप से देखने वाला) विशिष्ट रूप से देखने का उपदेश (या आदत) इस प्रकार है: "अनित्यता, दुख (दुक्खा), अहंकार रहित (अनत्ता)"; वे आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) को बढ़ावा देते हुए जीवन जीते हैं; अतः, इसका अर्थ है। धम्मविशेषादस्सी (जो विशिष्ट धम्म या अच्छे कर्मों को देखता है) दस पुण्य कर्मों, चार आर्य सत्यों या नौ दिव्य धम्मों को विशिष्ट रूप से देखने का उपदेश या आदत है। मग्गांग बोज्झंग गेट (आठ गुना आर्य मार्ग और ज्ञान के तत्वों की ओर अग्रसर), सही दृष्टि आदि जैसे आर्य मार्गों और सजगता आदि जैसे ज्ञान के तत्वों के साथ, आर्य धम्म से उचित रूप से जुड़ा हुआ। विज्ञा (समझा हुआ) भेद के साथ जानना, जानना या समझना है; अतः, इसका अर्थ है।

133. सुन्नतापणिहितंचनिमित्तम् (शून्य, अविभाजित और चिह्नरहित), अहंकारहीनता (अनत्ता) के स्पष्ट अंतर्दृष्टि के प्रभाव में आत्मा-शून्य मुक्ति, दु:ख (दुक्खा) के स्पष्ट अंतर्दृष्टि के प्रभाव में अविभाजित मुक्ति, अनित्यता के स्पष्ट अंतर्दृष्टि के प्रभाव में चिह्नरहित मुक्ति। आसेववित्वा (अभ्यास करने वाले) वृद्धि का कारण। ये धीरा (जो बुद्धिमान लोग हैं), जिन्होंने संचय या तैयारी की थी; जिनासासनंहि सावकत्तम् (विजेता के विधान में शिष्यत्व) शिष्य होने की अवस्था, न वजंति (मत जाओ), प्राप्त मत करो; वे बुद्धिमान पुरुष जिन्होंने अपनी तैयारी कर ली थी, भवन्ति (हो गए) स्वयंभू पच्चेकजिना (स्वयं उत्पन्न मौन विजेता) मौन बुद्ध जो इस प्रकार स्वयं ही बन गए।

134. क्या हुआ था? महान धम्म (महान सत्य) ने महान तैयारियों को पूरा किया, बहुधम्मकाय (सत्य के अनेक शरीर) ने धर्म के अनेक प्राकृतिक शरीरों को पूरा किया। फिर, क्या हुआ था? चित्तिस्सरा (सदामंती मन) मानसिक मार्ग के ध्यान से युक्त हो गया; यही अर्थ है। सब्बदुक्खोघटिन्ना (संपूर्ण दु:ख के सैलाब को पार कर चुका, पुनर्जन्मों के चक्रों के सैलाब से परे जा चुका), उदग्गचित्त (प्रफुल्लित मन

का) शांत मन का होना, क्रोध, अभिमान आदि जैसे दुराचारों के अभाव के कारण मानसिक रूप से सुखद होना। परमत्त्वदस्सी (परम अर्थ का द्रष्टा) परम अर्थ को देखने का उपदेश या आदत रखने वाला, पाँच स्कंधों (खंध), बारह इंद्रिय-स्थलों (आयतन), बत्तीस गुणों (आकार), सत्यों (सच्च), प्रतीत्यसमुत्पाद (पटिच्चसमुप्पाद) आदि के माध्यम से सर्वोत्तम अर्थ। सीहोपना (सिंह का उदाहरण) क्योंकि यह अडिग और निर्भय खड़ा रहा, सिंह के समान; यही अर्थ है। खग्गविसानकप्प (गैंडे के सींग के समान) विषैले के समान। संगठन और समाज के अभाव के कारण तलवार-पशु का सींग; यही इसका अर्थ है।

135. शांतिन्द्रिय (शांत नियंत्रण शक्ति) स्वभाव से शांत नियंत्रण शक्ति, क्योंकि आँख आदि जैसी नियंत्रण शक्तियों के लिए कोई व्यक्तिगत इंद्रिय-वस्तु नहीं होती। शांत मन (शांत मन, स्वभाव से शांत, क्योंकि वह दुराचार (किलेसा) से रहित है); यही अर्थ है। समाधि (एकाग्रता); उचित रूप से एकाग्र मन होना। पच्चन्तसत्तेषु पतिप्पचार (सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले जीवों के प्रति उचित अभ्यास या कर्म) सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले जीवों के प्रति दया, सहानुभूति आदि भावों के साथ उचित अभ्यास का नियम या आदत। दीप परत्थ इधा विजयलन्ता (यहाँ और अन्यत्र जलते हुए दीपक) इस लोक और परलोक में जलते हुए दीपकों के समान, समस्त विश्व के कल्याण के कर्म करना; यही अर्थ है। पच्चेक बुद्धा सततम् हितै मे (ये मौन बुद्ध निरंतर लाभदायी हैं) ये मौन बुद्ध, हर समय समस्त विश्व के कल्याण के लिए निरंतर अभ्यास करते हैं; यही अर्थ है।

136. पाहीनसब्बावरणा जनिंदा (वे शासक जिन्होंने सभी बाधाओं का त्याग कर दिया है) वे मौन बुद्ध हैं जिन्होंने सभी बाधाओं का त्याग कर दिया है, क्योंकि उन्होंने इंद्रिय सुख आदि पाँचों बाधाओं का त्याग कर दिया है, इसलिए वे सर्वोच्च शासक हैं। घनकंचनाभा (ठोस सोने की चमक) वे जम्बू नदी (जम्बेनदा) से उत्पन्न लाल सोने की चमक के समान हो जाते हैं। निस्सांसयम लोकसुदक्खिणेय्या (निस्संदेह संसार द्वारा दिए गए उपहारों के योग्य) निश्चित रूप से, संसार के लोगों द्वारा दिए गए सर्वोत्तम उपहार को स्वीकार करने के योग्य; दुराचार (किलेसा) से रहित होने के कारण उत्कृष्ट उपहार स्वीकार करने के योग्य; यही अर्थ है। पच्चेकबुद्धा सततप्पिता मे (ये मौन बुद्ध सदा तृप्त रहते हैं) ये बुद्ध जिन्होंने मौन बुद्धत्व का ज्ञान प्राप्त कर लिया है, वे सदा तृप्त रहकर लाभान्वित होते हैं और पूर्णतः सिद्ध रहते हैं; सात दिनों तक बिना किसी पोषण के रहने के बावजूद, वे फल प्राप्ति और निरोध समाधि (या समाधि, निरोधसमापत्ति) की उचित प्राप्ति के कारण पूर्णतः सिद्ध हैं।

137. पच्चेकबुद्ध (मौन बुद्ध) अकेले हैं, सर्वज्ञ बुद्ध से भिन्न हैं, अन्य अद्वितीय बुद्धों से भिन्न हैं। दूसरे शब्दों में, क्योंकि ऐसा कहा गया है:-
उपसर्ग, अविकारी शब्द और प्रत्यय या
अंत के लिहाज से, इन तीनों में से किसी के पास भी गुंजाइश नहीं है।
न तो एक और न ही अनेक अर्थ; इस प्रकार, व्याकरणविदों
कहना;"
पति शब्द मुख्य शब्द बन गया क्योंकि पति एक ही उपसर्ग है, जिसका अर्थ है स्वामी, क्योंकि उन्होंने कई दानदाताओं से थोड़ी मात्रा में भी भोजन ग्रहण करके स्वर्गिक स्वतंत्रता प्राप्त की थी। इसी प्रकार, वास्तव में, उन्होंने भोजन के भार (या भोजन = भालू) में से अपना हिस्सा ग्रहण किया, दानदाता के देखते हुए ही भोजन का आनंद लिया, दानदाता को देवताओं द्वारा बधाई दी गई, और उन्होंने उसी दिन करोड़ों की संपत्ति उत्पन्न करके संकट में पड़े गरीब व्यक्ति को बैंकर का पद प्राप्त कराया; खदिरांगा के जन्म-कथा में, उन्होंने मारा द्वारा निर्मित बबूल की जलती हुई लकड़ियों के गड्ढे के ऊपर उगे कमल की पंखुड़ियों पर पैर रखकर बोधिसत्व द्वारा दिए गए भिक्षा-भोजन को ग्रहण किया, और बोधिसत्व दानदाता के देखते हुए आकाश में विचरण करते हुए मन को आनंदित किया। गंधमादन पर्वत से आकाश से आकर, राजा महाजनक की रानी और मुख्य रानी पद्मावती के पुत्रों को प्रसन्न करने के लिए भेंट स्वीकार करके, बोधिसत्व महाजनक और उनकी रानी दोनों को मानसिक आनंदित किया; इसी प्रकार, जब जंबूद्वीप में अकाल का खतरा मंडरा रहा था और बुद्ध प्रकट नहीं हुए थे, तब बनारस के धनदाता ने न केवल अपने साठ हजार अन्न भंडारों में रखे धान को, जो अकाल के खतरे को टालने (या उससे बचने) के लिए पूरी तरह से भरे और सुरक्षित रखे गए थे, बल्कि जमीन में गाड़े गए सभी धान के दानों को, हजार घड़ों में भरे हुए धान के दानों को और अपने महलनुमा घरों की सभी दीवारों पर मिट्टी से मलकर लगाए गए धान के दानों को भी समाप्त कर दिया; तब केवल नारियल के खोल की एक माप ही शेष बची थी। तब, "आज इसे खाने के बाद ही मर जाएँ" यह विचार मन में आया और बैंकर लेट गया। तभी गंधमादन पर्वत से एक मौन बुद्ध प्रकट हुए और बैंकर के घर के द्वार पर खड़े हो गए। बैंकर ने मौन बुद्ध को देखा, उनकी श्रद्धा जागृत हुई और उन्होंने अपने प्राण जोखिम में डालकर अपना भोजन मौन बुद्ध के भिक्षापात्र में बिखेर दिया। मौन बुद्ध अपने निवास स्थान

पर लौट गए और अपनी शक्ति से बैंकर के भिक्षापात्र का आनंद लिया, जो पाँच सौ मौन बुद्धों के साथ वहीं उपस्थित थे। उस समय चावल पकाने का बर्तन बंद रखा गया था। जब बैंकर को भूख लगी और वह सो गया, तो वह उठा और अपनी पत्नी से कहा, "कृपया भिक्षापात्र में पके हुए चावल की एक बूंद देख लो।" उस अनुशासित महिला ने "क्या तुमने सब कुछ नहीं दे दिया?" का उत्तर दिए बिना ही बर्तन का ढक्कन खोल दिया। वह चावल का बर्तन तुरंत ही चमेली की कली की तरह मीठी सुगंध वाले साली चावल से लबालब भर गया। जब उसने और बैंकर ने अपनी भूख मिटाई, तो उनके घर के सभी लोग और पूरे शहर के निवासी भी भोजन करने लगे। जहाँ-जहाँ करछी से पका हुआ चावल निकाला जाता, वह फिर से भर जाता। सभी साठ हज़ार अन्न भंडार मीठी सुगंध वाले साली चावल से भर गए।जंबुद्वीप के सभी निवासियों ने केवल साहूकार के घर से धान के पौधे लिए और प्रसन्न हुए। इसी प्रकार, अनेक जीवों के विशाल शरीरों में, जिन्हें उन्होंने स्वर्गिक मुक्ति दिलाई, उनकी चारों ओर से उचित रक्षा करते हुए और उन्हें सुखी बनाते हुए, वह एक बुद्ध हैं जो स्वामी और स्वामी बन गए हैं; इस प्रकार, मौन बुद्ध हैं। पच्चेकबुद्धानम सुभाषितानि (मौन बुद्धों के सुविचारित वचन) का अर्थ है: मौन बुद्धों द्वारा उपदेश और सलाह के रूप में उचित रूप से बोले गए वचन। चरन्ति लोकंहि सदेवंहि (दिव्य जगत सहित संसार में विचरण किया) का अर्थ है: जीवों के जगत के साथ-साथ दिव्य प्राणियों के जगत में भी उन्होंने विचरण किया; यही अर्थ है। Sutvā tathā ve na karonti bālā (वे मूर्ख जिन्होंने सुनकर भी वैसा ही नहीं किया) का अर्थ इस प्रकार है: वे मूर्ख लोग जिन्होंने मौन बुद्धों द्वारा कहे गए अच्छे वचनों को न माना और न ही उनका पालन किया; te (वे) मूर्ख लोग, dukkhesu (बहुत दुख), बार-बार जन्म-जन्म के दुख में; pumappunam (बार-बार) उत्पन्न होकर, caranti (इधर-उधर भटकते रहे); यही अर्थ है।

138. पच्चेकबुद्धान, सुभासितानि (मौन बुद्धों के सुस्पष्ट वचन) का अर्थ है: चार प्रकार के नरक (अपाय) से मुक्ति पाने के उद्देश्य से उचित रूप से बोले गए वचन। क्या हुआ? अवसवन्तम् (बहते हुए) मीठे वचन शहद की छोटी-छोटी बूंदों की तरह बह निकले; यही इसका अर्थ है। ये पटिपत्तियुत्ता (जो भी साधना में लगे हों) का अर्थ है: ज्ञानी लोग भी, जो उन्हें बताए गए उपदेशों का पालन करते हुए उचित साधना में लगे थे, ऐसे मधुर वचन सुनकर सलाह के द्वार बन गए; वे ज्ञानी लोग सच्चदसा (सत्य के द्रष्टा) जिन्होंने चार आर्य सत्यों को देखा था, सपञ्ञा (ज्ञान से युक्त) ज्ञान से युक्त थे; यही इसका अर्थ है।

139. पच्चेकबुद्धेहि जिनेहि भासिता (मौन बुद्ध रहे विजेताओं द्वारा वर्णित) की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए:- वे विजेता हैं क्योंकि उन्होंने सभी प्रकार के दुराचार (किलेसा) पर विजय प्राप्त की और अभी भी विजय प्राप्त कर रहे हैं; उन विजेताओं द्वारा कहा, बताया और प्रचारित किया गया, जो मौन बुद्ध रहे; कथा उलारा (महान उपदेश) की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए:- प्रकट हुआ और स्पष्ट (या स्पष्ट) हो गया और सार से युक्त हो गया। ता (वह) वह उपदेश, शाक्यसीहेना (शाक्य सिंह द्वारा) तथागत गौतम द्वारा, शाही शाक्य वंश (या वंश) के सिंह द्वारा, अभिनिक्खमित्वा (महान त्याग करके) बुद्ध बनकर; नरुत्तमेन (पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ द्वारा) पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ और सर्वोच्च द्वारा, पकासिता (स्पष्ट किया) इंगित किया और स्पष्ट किया; इस प्रकार, संबंध स्थापित होता है। उन्होंने ऐसा क्यों कहा?; "धम्म-विजानन्तम", (सत्य की समझ के लिए), नौ प्रकार के पारलौकिक सत्य (धम्म) को विशिष्ट रूप से प्रकट करने के लिए; इस प्रकार, अर्थ है।

140. लोकानुकम्पकाय इमानितेसम् (उन्हें, इन्हें, जगत के प्रति दया के कारण) जगत के प्रति सहानुभूति के कारण, जगत के प्रति सहानुभूति के फलस्वरूप, उन्हें ये शब्द, ये श्लोक; पच्चेकबुद्धानम् विकुब्बितानि (विशेष रूप से मौन बुद्धों के लिए किया गया) विशिष्ट रूप से किया और कहा गया; यही अर्थ है। सम्वेगसंगमतिवादधनत्थम (पश्चाताप और वियोग को अत्यधिक बढ़ाने के उद्देश्य से) की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए: पश्चाताप बढ़ाने के उद्देश्य से, साथ ही बुद्धिमानों के वैराग्य को बढ़ाने के उद्देश्य से, उनके एकांत की अवस्था को बढ़ाने के उद्देश्य से, उनकी बुद्धि बढ़ाने के उद्देश्य से, साथ ही उनके ज्ञान या बुद्धि को बढ़ाने के उद्देश्य से; स्वयंभूसीहेना (बुद्ध-सिंह द्वारा) की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए: बिना किसी गुरु के, जन्म लेकर और बनकर, केवल स्वयं से ही भेदन प्राप्त करना; निर्भीक सिंह, सर्वज्ञ बुद्ध गौतम, इन शब्दों ने पाकासितानि (स्पष्ट, स्पष्ट या प्रत्यक्ष) किया; इन श्लोकों को स्पष्ट किया गया, खोला गया और प्रत्यक्ष बनाया गया; इस प्रकार, यही अर्थ है। इति (इस प्रकार) अविकारी क्रियाविशेषण है जिसका अर्थ है पूर्ण निष्कर्ष। इस प्रकार, टीका का समापन होता है।
मौन बुद्धों की जीवनी,
अपादानशकथा (अपादान) में
टिप्पणी), प्रकट हो रही भव्यता के लिए

उन अत्यंत पवित्र लोगों में से।

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स
अध्याय 1

थेरों की कथाएँ

अब थेरों की कथाएँ सुनें:

---

1. सारिपुत्त

हिमालय श्रृंखला के निकट, लंबका नामक पर्वत पर,1 मेरा आश्रम बहुत अच्छी तरह से बना हुआ है, पत्तों से बना एक सुव्यवस्थित हॉल। (1) (140)
मेरे आश्रम से कुछ ही दूरी पर एक नदी है, जिसके किनारे शांत हैं, सुव्यवस्थित हैं, मन को प्रसन्न करने वाली हैं और चमकीली सफेद रेत से भरी हुई हैं। (2) (141)
कंकड़-पत्थर रहित (और) ढलान रहित, उत्कृष्ट, दुर्गंध रहित, नदी उस स्थान के ठीक बगल से बहती है, जिससे मेरा आश्रम सुंदर दिखता है। (3) (142)
मगरमच्छ2 और लेविथन3, घड़ियाल4 और कछुए;

---

1. {बड़े कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 2. "शुभ", एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
3. कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई: यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह: कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह: रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 4. रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

नदी उस स्थान के ठीक बगल से बहती है, जिससे मेरा आश्रम सुंदर दिखता है। (4) (143)

शीटफिश,5 पावुसा,6 वलजा,7 रीडफिश,8 रेडफिश9 और मगगुरा10 (धारा के साथ)11 (वहाँ) बह रही हैं, जिससे मेरा आश्रम सुंदर हो रहा है। (5) (144)

उस नदी के दोनों किनारों पर फूल और फल देने वाले वृक्ष खड़े हैं, जो दोनों ओर से नदी पर छाए हुए हैं, जिससे मेरा आश्रम सुंदर दिखता है। (6) (145)

आम, साल12 और कोरल-बीन का पेड़,13 तुरही-फूल,14 चीनी पवित्र वृक्ष,15 दिव्य सुगंध वाले फूलों से लदे पेड़ मेरे आश्रम को (तब) सुगंधित कर रहे हैं। (7) (146)

चंदन, सलाल,16 चीज़वुड17 आयरनवुड,18 लॉरेल19 और स्क्रू-पाइन20 के वृक्ष दिव्य सुगंधों से भरे हुए मेरे आश्रम को महका रहे हैं (तब)। (8) (147)

हिप्टेज21 लताएँ और अशोक वृक्ष,22 भगिनीमाल पुष्पन, ऋषि-पत्ती अलंगियम,23 और लाल

---

5 शाब्दिक अर्थ, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित 6 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान कर रहा है" "चिंतन कर रहा है" "सोच रहा है;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ 7 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल) 8 शाब्दिक अर्थ, "गया" 9 PTS sañjālesi के लिए BJTS के साथ sañcālesi पढ़ना 10 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया" 11 शाब्दिक अर्थ, "पुण्यशाली" 12 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु (लंबा? मोटा?)।" 13 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में गेंडु लिखा है। कम से कम प्रसारण के समय, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी। 14 येनिच्चका, बीजेटीएस सिंहली व्याख्या कामाती तनक के अनुसार। 15 °विकुटी°; मेरा मानना है कि यह घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) को दर्शाता है (आरडी., एसवी देखें)। 16 पीटीएस उद्दलोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ उद्दलोमिका° का पाठ (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)। 17 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"। 18 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़? 19 खिड्डारतिया 20 तिदास, अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में 21 व्यम्ह-म-उत्तम, शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में" 22 नव, वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" किया गया है 23 शाब्दिक अर्थ, "पूजा"

मेरे आश्रम में बिम्बिजाल24 खिलते हैं। (9) (148)

केतका,25 कंदली26 फूल, केबुका और अरबी चमेली27 दिव्य सुगंध बिखेर रहे हैं जिससे मेरा आश्रम सुंदर बन रहा है। (10) (149)

डिनर-प्लेट वृक्ष28 और कणिका सिल्वर ग्रेवुड,29 अनेक काले वृक्ष30 दिव्य सुगंध बिखेर रहे हैं, जिससे मेरा आश्रम सुंदर बन रहा है। (11) (150)

लॉरेल31 और माउंटेन लॉरेल32 के पेड़, और आबनूस33, सभी खिल रहे हैं, दिव्य सुगंध बिखेर रहे हैं जिससे मेरा आश्रम सुंदर बन रहा है। (12) (151)

गोल्डन शावर,34 विंटर चेरी,35 कदम36 और स्पैनिश चेरी37 के पेड़ दिव्य सुगंध बिखेर रहे हैं जिससे मेरा आश्रम सुंदर बन रहा है। (13) (152)

आलका और इसिमुग्गा, केला,38 और नींबू39 के पेड़ जो मीठी सुगंध वाले पानी पर परिपक्व हुए हैं, वहाँ अपने फूल उगा रहे हैं। (14) (153)

कुछ गुलाबी कमल खिल रहे हैं, कुछ पराग उत्पन्न कर रहे हैं, कुछ गुलाबी कमलों में कलियाँ निकल रही हैं।

---

24 महापक्खो, शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति," 25 या "मैं नहीं जानता," न जानामि 26 परिङ् ... 34 बोज्झांगारतन'इसारो, पहिया घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (पहिया, आदि) पर एक नाटक 35 महाभिसक्कसंकासो 36 दोसाव्याधितिकिचाको 37 °विफलको, शाब्दिक, "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। ग्लोस सिंदुना 38 दिथिगंड° 39 लोकापज्जोतो 40 सनारामरसक्कतो 22 बौद्ध संतों की कथाएँ

टैंक में हमेशा फूल खिलते रहते हैं।41 (15) (154)
गुलाबी कमल अंकुरित होते हैं (वहाँ);42 कमल की जड़ों43 को साफ किया जा रहा है।44 सिंहाटी45 के पत्ते बिखरे हुए हैं, जिससे वह तालाब इतना सुंदर लग रहा है। (16) (155)
नायिता झाड़ियाँ, अम्बागंधी, उत्टुली, बन्धुजीवाका46 सभी खिले हुए हैं फिर टैंक में (वहाँ) स्वर्गीय सुगंध फैल रही है। (17) (156)
शीटफिश,47 और पावुसा48 मछली, वलजा,49 रीड-फिश50 (और) रेड-फिश51 और संकुला52 और मगगुरा53 उस टैंक में रहते हैं (वहाँ) तब। (18) (157)
उस टैंक में मगरमच्छ और घड़ियाल, तंतिगगाह और रक्खासा, ओगाहा54 और अजगर55 भी रहते हैं। (19) (158)
कबूतर56 और रवि-हंस57, साथ ही रूडी गीज़58 और नादिकारा, कोयल59, तोते60 और मैना पक्षी61 भी उस झील पर रहते हैं। (20) (159)

41 narādicco 42 शाब्दिक रूप से, "में" 43 sugatūpago, शाब्दिक रूप से, "कल्याण के करीब"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से सुशोभित व्यक्ति के पास पहुँचते हुए 44 निब्बाति, या "वह शांत हो जाता है" 45 महास्सादं 46 महारसं 47 शाब्दिक रूप से, "सुशोभित व्यक्ति के लिए" 48 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ मासे अट्ठदिनेस्व-अहं पढ़ना मासे अट्ठदिने स्वहा 49 पणिधाय, या "दृढ़ संकल्प", सिंहली प्रार्थनाव 50 पीटीएस यहिं ताहिं; बीजेटीएस ताहिं ताहिं 51 शाब्दिक रूप से, "मेरी माँ अपने पूरे शरीर से सुगंधित थी" 52 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से श्लोक 66-71 (3648-3653) 53 या "शिक्षा में (उन) चारों का पालन-पोषण करना" 54 शाब्दिक रूप से, "प्रवाहों का विनाश" 55 या "जो आगे बढ़ गया था": पब्बजितो 56 यह श्लोक बारह अक्षरों वाले अधिक जटिल छंद में है। 57 शाब्दिक रूप से, "यहाँ" 58 बीजेटीएस इन दो अंतिम पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस अपूर्ण सौ (सातकम्) के लिए इन अध्याय सारांश श्लोकों को शामिल करता है। 59 बीजेटीएस इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है। 60 धारेथा, शाब्दिक रूप से, "ले जाना" "स्मरण करना" "याद रखना" "ध्यान रखना" 61 सम्पहंसिता

जंगल में जंगली मुर्गे,62 सुनहरे केकड़े,63 झील निगलने वाले पक्षी64 (भी), लैपविंग65 और सीलोन लोरिकेट66 उस झील पर रहते हैं (वहाँ तब)। (21) (160)
हंस67 (और) कर्ल्यू68 और मोर69 भी, कोयल70 और जंगली मुर्गे71 भी, छोटे बंदर72 और तीतर73 भी उस झील पर रहते हैं (वहाँ तब)। (22) (161)
उल्लू74 और पोट्ठसीसा75 (भी), कई बाज,76 साथ ही ओस्प्रे,77 और महाकाल पक्षी भी उस झील पर रहते हैं (वहाँ तब)। (23) (162)
चित्तीदार हिरण78 और जंगली सूअर79, और असंख्य भेड़िये80 और सियार81, रोहिका-हिरण82, सुग्गापोटा उस झील पर रहते हैं (वहाँ तब)। (24) (163)
शेर और बाघ और तेंदुए, भालू83 (और) भेड़िये,84 करा बाना भालू,85 और तीन बार संभोग करने वाले86 मातंग87 (भी)

62 भोट्टा, बीजेटीएस इसे भेट्टा ("तोड़ने वाला") पढ़ता है 63 चेट्टा 64 सोता 65 पसंसिता 66 अखिलो 67 विसालो। बीजेटीएस इसे विसालो ("दर्द से मुक्त") पढ़ता है 68 अनिघो 69 अकथंकथी, इल्त. "'क्यों' नहीं कह रहा?" 70 अनेजो 71 विराजो 72 खट्टा। बीजेटीएस खंता ("विनम्र" "आज्ञाकारी") पढ़ता है, 73 बीजेटीएस के अनुसार गंता पढ़ता है, पीटीएस के अनुसार गंधा ("सुगंधित") पढ़ता है, 74 बीजेटीएस के अनुसार वट्टा पढ़ता है, पीटीएस के अनुसार मेट्टा ("प्रेम") पढ़ता है, 75 पकासिता पढ़ता है, 76 तारेता पढ़ता है, 77 बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के अनुसार अत्थकारेता पढ़ता है, पीटीएस में तारेता ("घुसपैठिया") का पुनरावर्तन है, 78 करेता पढ़ता है, 79 संपदालेता पढ़ता है, बीजेटीएस संपदालिता पढ़ता है, 80 पापेता पढ़ता है, 81 साहित्य, या "सहनशील" पढ़ता है, बीजेटीएस के अनुसार कांटा पढ़ता है, पीटीएस में हंता का पुनरावर्तन है, जिसे दोनों ग्रंथ श्लोक में अगले शब्द के रूप में पढ़ते हैं, 83 हंता पढ़ता है, 84 बीजेटीएस के अनुसार आतापी पढ़ता है। पीटीएस तातापी ("रक्षक भी") 85 तापासो के लिए, इससे पंक्ति में नौ अक्षर बनते हैं, जिसे "स्लेयर" को "स्लेयर" में संकुचित करके आठ अक्षरों के रूप में उच्चारित करने की आवश्यकता है 86 समासित्टो 87 'समासामो, (बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस के अनुसार; इसका संक्षिप्त रूप समासामो, "हमेशा एक जैसा" भी हो सकता है) 24 बौद्ध संतों की किंवदंतियाँ

वे उस झील पर (वहाँ तब) रह रहे हैं। (25) (164)

वहाँ सेंटॉर88 और बंदर89 भी हैं और जंगल में काम करने वाले लोग,90 नौकर-लड़के91 और शिकारी,92 भी उस झील पर रहते हैं (वहाँ तब)। (26) (165)

जंगली मैंगोस्टीन,93 चिराउली-नट,94 महुआ,95 कासुमारिया96 मेरे आश्रम से बहुत दूर नहीं, कभी न खत्म होने वाले फल दे रहे हैं। (27) (166)

मार्गोसा,97 सलाल,98 पीले पनीर के पेड़99 ऐसे उत्कृष्ट फल के साथ लगातार मेरे आश्रम से कुछ ही दूरी पर फल दे रहे हैं। (28) (167)

मायरोबलन100 और आंवला,101 आम, गुलाब-सेब,102 बहेरा,103 बेर,104 मार्किंगनट,105 बेल106 — ये लगातार फल देते रहते हैं। (29) (168)

---

88 असहायो, शाब्दिक अर्थ, "मित्रहीन" 89 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ दयासयो (और निम्नलिखित व्याख्या) का पाठ दयासो ("दयालुता के लिए प्रसिद्ध" "दयालुता-प्रसिद्ध") 90 अच्चेरसन्तो 91 अकुहो, शाब्दिक अर्थ, "धोखे से मुक्त" "ईमानदार" 92 कतावी, अर्थात् एक अरहंत, जिसने वह किया है जो किया जाना चाहिए 93 इसिसत्तमो 94 नित्तिण्णकङ्खो 95 निम्मानो 96 अप्पमेय्या, शाब्दिक अर्थ, "मापा नहीं जा सकता" 97 अनुपमा, शाब्दिक अर्थ, "जिसके लिए कोई रूपक नहीं है" 98 सब्बवाक्यपथातीतो, शाब्दिक अर्थ, "जिसके लिए सभी कथनों के मार्ग अतीत में हैं" 99 सच्चनेय्यन्तगो, शाब्दिक अर्थ, "वह जो सत्यों के अंत तक गया है जिसे समझा जाना है (या निर्देश दिया, नेतृत्व किया, ले जाया, मार्गदर्शन किया (नेति का क्रियापद))" 100 जिनो 101 सत्तसारवरे। बीजेटीएस इसे महल को संशोधित करने के रूप में व्याख्या करता है, लेकिन पाली मुझे इससे अधिक अस्पष्ट लगती है। तुलना करें। श्लोक (5887) और (6287) में बुद्ध-विशेषण के रूप में sattasāra° का प्रयोग। 102 में akaṃ dhammakathaṃ ahaṃ का पाठ BJTS द्वारा PTS ahaŋ dhammakathaŋ ahaŋ ("मैं धम्म-प्रचारक मैं") के स्थान पर किया गया है। 103 में nissāso का पाठ BJTS की व्याख्या māgē piṭatața heḷana vātaya ("वह हवा जिसे मैं नीचे फेंकता/अपने बाहरी भाग में निकालता हूँ") के अनुसार किया गया है। 104 में sabbagandhe 'tiseti (= atisayati) का पाठ BJTS द्वारा PTS sabbagandho ti seti ("यह 'सभी अच्छी सुगंध' फैलाता है") के स्थान पर किया गया है और BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण किया गया है। 105 में BJTS atisanto के स्थान पर ādisanto ("घोषणा करते हुए") का पाठ करता है। 106 में guṇatthavassa का पाठ किया गया है। sabbaṃ taṃ phalaṃ tu paramambhūtaṃ with BJTS for PTS guṇatthavassapupphan tan phalan tu param abbhutaŋ ("वह फल जो सद्गुण के अर्थ में अत्यंत चमत्कारी रूप से खिलता है" (?)), और BJTS व्याख्या का अनुसरण किया: buddha guṇakitiyāge ē siyalu vipāka atiśaya vismayajanaka ya.

मेरे आश्रम में बिंदवीड, 107 टाइटन अरुम, 108 बिलानी, 109 तक्कादानी (बल्ब) जीवक और सहक110 (पौधे) प्रचुर मात्रा में हैं। (30) (169)

आश्रम से कुछ ही दूरी पर वह सुव्यवस्थित तालाब है, जिसमें स्वच्छ जल है, जो पीने के लिए ठंडा है, अच्छी तरह से स्थिर है और मन को आनंदित करता है। (31) (170)

गुलाबी और नीले कमलों से ढका हुआ, सफेद कमल के फूलों के साथ मिश्रित और फिर से मंडलक111 से ढका हुआ, यह एक दिव्य सुगंध बिखेरता है। (32) (171)

उस समय मैं उस सुंदर, सुव्यवस्थित आश्रम में रह रहा था जो हरे-भरे जंगलों में स्थित था और फल-फूलों से भरा हुआ था तथा सभी सुविधाओं से परिपूर्ण था। (33) (172)

मैं नेक आचरण वाला तपस्वी सरुची था, व्रत लेने वाला, ध्यान करने वाला, समाधि-प्रेमी, पाँच विशेष ज्ञानों में निपुण112।113 (34) (173)

उस समय चौबीस हजार विद्यार्थी मेरी सेवा में लगे हुए थे। वे सभी ब्राह्मण जाति के थे, कुलीन और गौरवशाली वंश के थे। (35) (174)

उन्होंने व्याकरण और शब्दावली, पर्यायवाची और छंदशास्त्र, संकेतों को पढ़ने और इतिहास के मेरे शिक्षण में पूर्णता प्राप्त कर ली थी। (36) (175)

वे घटनाओं, शकुनों और संकेतों की व्याख्या करने में कुशल थे।

---

107 पाठ का चौथा (अनुवाद में तीसरा) पद त्रुटिपूर्ण प्रतीत होता है। आईपीटीएस में rasaddhovisamāyuto लिखा है, जिसका अर्थ है "शुद्ध स्वाद से जुड़ा हुआ"। बीजेटीएस में (टाइपोग्राफिकल त्रुटि?) saradvadhanisamāyuto (= rasad- hvanisaāmyuto?) लिखा है। दोनों ही मामलों में वैकल्पिक अनुवाद और भी अनिश्चित हैं। मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुवाद करता हूँ, mad- hura svaradhvani yukta vūyem (- mihirihaddha ättem), "मैं मधुर ध्वनि से बंध जाता हूँ (मेरे पास एक मधुर ध्वनि है)" 108 BJTS के साथ khīṇe ayusi का पाठ PTS khīṇ' ev' āyu pi ("जीवन भी निश्चित रूप से नष्ट हो जाता है") 109 शाब्दिक रूप से, "आप सभी इसे सुनें" (द्वितीय पुरुष बहुवचन क्रिया) 110 yasassī 111 शाब्दिक रूप से, "इसलिए (मैं) खुश हूँ" 112 dukkhantakaraṇaŋ Buddhaŋ, शाब्दिक रूप से "दुखों का अंत करने वाला बुद्ध" 113 dhammaŋ, या "शिक्षा"

धरती और ज़मीन पर, आकाश में; मेरे छात्र बहुत अच्छी तरह से प्रशिक्षित थे। (37) (176)
वे संतुष्ट और विवेकशील थे; कम भोजन करते थे, उनकी कोई इच्छा नहीं थी। चाहे उन्हें कुछ मिले या न मिले, वे हमेशा मेरे आस-पास एकत्रित रहते थे। (38) (177)
ध्यान करने वाले, समाधि-प्रेमी, बुद्धिमान, एकाग्र, शांत मन वाले, और कुछ भी न चाहने वाले, वे हमेशा मेरे चारों ओर एकत्रित होते थे। (39) (178)
114 विशेष ज्ञान के स्वामी, अपने ब्राह्मण रीति-रिवाजों में आनंदित, 115 आकाश में उड़ने में सक्षम, अत्यंत बुद्धिमान, वे हमेशा मेरे चारों ओर एकत्रित होते थे। (40) (179)
उन्होंने छह इंद्रिय द्वार अच्छी तरह बंद रखे, कामवासना से मुक्त थे, इंद्रियों को सुरक्षित रखते थे, (अत्यंत) बुद्धिमान थे, और घर में बंधे नहीं थे:116 कोई भी मेरे छात्रों के करीब नहीं आया।117 (41) (180)
रात में वे हमेशा पालथी मारकर बैठकर या एक ही जगह पर आगे-पीछे चलकर (ध्यान करते हुए) समय बिताते थे; कोई भी मेरे छात्रों के पास नहीं आता था। (42) (181)
उत्तेजित करने वाली चीजों से उत्तेजित नहीं, न ही अपवित्र करने वाली चीजों से अपवित्र; मूर्खतापूर्ण बातों में स्वयं को मूर्ख नहीं बनाना: कोई भी मेरे छात्रों के करीब नहीं आया। (43) (182)
उन्होंने अपना सारा समय चमत्कारिक शक्तियों का अध्ययन करने में व्यतीत किया। वे अपने अहंकार से पृथ्वी को कंपा सकते थे, जिसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता था। (44) (183)
जब वे छात्र खेल खेल रहे थे, तो वे परिवर्तित अवस्थाओं में खेल रहे थे, (दूर के) पेड़ों से गुलाब-सेब लाए;118 कोई भी मेरे छात्रों के पास नहीं आया। (45) (184)

---

114 जनयं, शाब्दिक अर्थ, "मैंने उत्पन्न किया" 115 या "विधर्मी": कुतित्थिये 116 पीटीएस तित्थिकाकिणो ("मैं प्रतिद्वंद्वियों से घिरा हुआ हूँ") के स्थान पर बीजेटीएस के साथ तित्थिकाकिण्णे का पाठ 117 वदन्तो, शाब्दिक अर्थ, "कहना," "बताना" 118 पीटीएस वरण् ("उत्कृष्ट") के स्थान पर बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ वदं का पाठ

कुछ लोग गोयाना जाते थे, कुछ पब्बविदेह और कुछ उत्तुरुकुरु: कोई भी मेरे छात्रों के करीब नहीं आ सका। (46) (185)
वे अपनी आवश्यक वस्तुएँ 119 पहले भेज देते और फिर वे उनके पीछे चलते; आकाश चौबीस हजार (छात्रों) से पूरी तरह ढका हुआ था। (47) (186)
कुछ ने पका हुआ भोजन खाया और कुछ ने कच्चा, कुछ ने दाँतों से पीसा, कुछ ने ओखली से। कुछ ने पत्थर पर पीसा हुआ भोजन खाया, कुछ ने केवल गिरे हुए फल खाए। (48) (187)
कुछ लोग पानी में नहा रहे थे, कुछ को शाम की शुद्ध बारिश पसंद थी, जबकि कुछ पानी छिड़ककर नहा रहे थे: कोई भी मेरे छात्रों के पास नहीं आया। (49) (188)
लंबे नाखून और बगल के बाल, दांतों में मैल, सिर मिट्टी से सने हुए और केवल उपदेशों से सुगंधित:120 कोई भी मेरे छात्रों के करीब नहीं आया। (50) (189)
वे प्रसिद्ध जटाधारी तपस्वी सुबह एकत्रित होते, जो कुछ उन्हें प्राप्त हुआ था और जो नहीं, उसे बताते, फिर हवा में उड़ते हुए निकल पड़ते। (51) (190)

उनके उड़ान भरते समय उनसे एक भयंकर शोर निकलता था। देवता उनके हिरण की खाल से बने वस्त्रों की उस ध्वनि से अत्यंत प्रसन्न होते थे। (52) (191)
वे ऋषि सभी दिशाओं में यात्रा करते हुए, आकाश में उड़ते हुए, अपनी (विशाल) शक्ति के बल पर जहाँ भी जाना चाहते थे, वहाँ चले जाते थे। (53) (192)
वे धरती को हिला सकते थे; वे सभी आकाश-यात्री थे। प्रसिद्ध तपस्वी, जिन्हें जीतना कठिन था, वे सागर की तरह स्थिर थे। (54) (193)

---

119 पीटीएस °jinassa ("विजेता का") के लिए BJTS (और पीटीएस विकल्प) के साथ janassa का पाठ 120 पीटीएस saraŋ divasasanko 'haŋ ("मैं झील के लिए दिन में चंद्रमा हूँ" (?)) के लिए BJTS के साथ sarado va sasaṅko 'haṃ का पाठ

कुछ लोग ध्यान करते हुए इधर-उधर टहलते थे, कुछ ऋषि बैठकर ध्यान करते थे, कुछ गिरे हुए फलों पर जीवन यापन करते थे; कोई भी मेरे छात्रों के पास नहीं आया। (55) (194)
वे सदा प्रेम की अवस्था में रहते थे और सभी प्राणियों के प्रति दयालु थे। उनमें से किसी ने भी अपने आप को श्रेष्ठ नहीं समझा और उन्होंने किसी के प्रति घृणा नहीं रखी। (56) (195)
शेरों के राजा की तरह निडर, हाथियों के राजा की तरह शक्तिशाली, बाघ की तरह दुर्गम, वे मेरी उपस्थिति में आएंगे। (57) (196)
जादूगर121 और (उनके) देवता,122 नाग-देवता,123 संगीत-अप्सराएँ,124 राक्षस,125 परियाँ,126 टाइटन127 (और) गरूला उस झील पर निवास करते हैं। (58) (197)
वे जटाधारी आवश्यक-वाहक128 उत्कृष्ट हिरण-चमड़े (वस्त्र) पहने हुए, वे सभी ऋषि, आकाश-यात्री, उस झील पर (वहाँ) रह रहे हैं। (59) (198)
हमेशा की तरह, उन्होंने एक दूसरे का सम्मान किया। चौबीस हजार छात्रों में से किसी ने छींक भी नहीं मारी। (60) (199)
एक पैर के बाद दूसरा पैर रखते हुए, 130 कम आवाज करते हुए, आत्म-नियंत्रित, वे सभी, पास आने के बाद, अपने सिर झुकाकर मेरी पूजा कर रहे हैं। (61) (200)
इस प्रकार शांतिपूर्ण ढंग से तपस्या कर रहे उन छात्रों से घिरे हुए,

---

121 शाब्दिक अर्थ, "मैं था" 122 शाब्दिक अर्थ, "सुन्न-स्वर्गीय," सुगतं 123 यथासत्तिवसेन 124 वागीसो, "(मैं एक हूँ) वाणी पर निपुणता रखने वाला" 125 पीटीएस विमतिं पट्टा के लिए बीजेटीएस के साथ विमतिपट्टा का पाठ, हालांकि बाद वाला (व्याकरणिक रूप से कुछ हद तक गलत) समान अर्थ व्यक्त करता है 126 पीटीएस अपनिं (समान अर्थ, अपनेति से) के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ अपदेस' अहं का पाठ 127 तिण्णसमसारसागरो 128 बीजेटीएस में इसे मंचाडो ("मंचाडा") पढ़ा जाता है 129 बीजेटीएस में इसे सुपाटो ("सुपाटा") पढ़ा जाता है 130 यह पीटीएस के लिए बीजेटीएस पाठ है बोधिसम्मजको ("बोधिसम्मजका")

मैं (तब) उस आश्रम में ध्यान करने वाले, समाधि-प्रेमी के रूप में निवास करता था। (62) (201)
मेरा आश्रम हमेशा उन ऋषियों की नैतिकता और खिलते फूलों और वहाँ उगने वाले विभिन्न फलों की सुगंध से महकता रहता था। (63) (202)
दिन-रात मुझे कभी दुःख नहीं होता, न ही दुःख मुझ तक पहुँचता है। अपने छात्रों को शिक्षा देते हुए मैं निरंतर आनंद से भरा रहता हूँ।131 (64) (203)
अनेक फूलों का खिलना और अनेक फलों का पकना132 दिव्य सुगंध बिखेर रहे हैं, जिससे मेरा आश्रम सुंदर बन रहा है। (65) (204)
ध्यान से उत्पन्न होकर133 मैं उत्साही और बुद्धिमान हूँ। तपस्वियों की आवश्यक वस्तुएँ लेकर मैं जंगल में चला गया। (66) (205)
मुझे जन्म और अपशकुनों से जुड़े संकेतों को पढ़ने का अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त था। उस समय मैंने सभी मंत्रों पर पूर्णतः महारत हासिल कर ली थी।134 (67) (206)
अनोमादस्सी, हे भगवान, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों में श्रेष्ठ, बुद्ध, एकांत की तलाश में हिमालय में प्रवेश कर गए (तब)। (68) (207)
हिमालय में जाकर परम दयालु ऋषि, कमल मुद्रा में बैठ गए, वे परम पुरुष थे। (69) (208)
(तब) मैंने वहाँ उस संबुद्ध को देखा, जो प्रकाश से जगमगा रहा था, एक मानसिक आनंद, नीले कमल के फूल की तरह उज्ज्वल।136

---

131 रक्खसा = राक्षसा 132 पन्नागा 133 महानुभावा इसयो 134 कमण्डलु-धरा। यह विशेष पात्र गैर-बौद्ध तपस्वियों की पहचान है। 135 जटा-भार-भरित, शाब्दिक अर्थ, "गुंथी हुई चोटी और भार/भारी बोझ से भरा हुआ"। 136 युगमत्तं च पेक्खंता, शाब्दिक अर्थ, "हल की लंबाई तक आगे देखना," अर्थात्, बस थोड़ा सा, अपनी आँखें सामने की जमीन पर टिकाए हुए।

अग्नि-वेदी की तरह धधक रहा है। (70) (209)
मैंने विश्व के नेता को खिले हुए राजसी साल के वृक्ष की तरह देखा; दीपों के वृक्ष की तरह प्रज्वलित; बादलों के समूह में चमकती बिजली की तरह। (71) (210)
“यह नाग महान वीर है, वह ऋषि जिसने दुखों का अंत किया;” इसके दर्शन करने के बाद सभी दुख दूर हो गए। (72) (211)
शुभ चिह्नों से सुशोभित उस देवदेव को देखकर मैंने सोचा, “क्या वह बुद्ध हैं या नहीं? निश्चित रूप से मैं आँखों वाले किसी एक को देख रहा हूँ।” (73) (212)
उसके अद्वितीय (सुंदर) पैर पर एक हजार पहियों के निशान दिखाई देते हैं। मैंने उसके उन निशानों को देखकर यह निष्कर्ष निकाला कि वह वही है जो इस दुनिया से चला गया है। (74) (213)
मैंने झाड़ू लगाने के लिए झाड़ू लाई और झाड़ू लगाने के बाद मैंने उस श्रेष्ठ बुद्ध की पूजा के लिए आठ खिले हुए फूल एकत्र किए। (75) (214)
उस बुद्ध, जलप्रपात पार करने वाले, निष्कलंक बुद्ध की पूजा करने के बाद, मैंने एक कंधे पर हिरण की खाल रखकर जगत के मुखिया की पूजा की। (76) (215)
“जिस ज्ञान से बुद्ध बिना किसी दोष के निवास करते हैं—वह ज्ञान मैं अब घोषित करूँगा; आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें! (77) (216)
हे प्रभु, इस संसार को सही राह पर उठाओ, स्वयं एक हो जाओ, असीम वृद्धि हो!137 आपकी दृष्टि में आते ही वे संदेह की प्रचंड धारा को पार कर जाते हैं। (78) (217)
आप सांस लेने वालों के शिक्षक हैं, ध्वज, झंडा और ध्रुव हैं; आप लक्ष्य हैं, ठोस आधार हैं, द्वीप हैं,138 दो पैरों वाले प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। (79) (218)

---

137 गच्चन्ति, लिट., "जा रहा है" 138 पीटीएस अयम च उपसम्पन्नो के लिए बीजेटीएस के साथ सयान च उपसम्पन्ना पढ़ना ("और यह आपूर्ति की गई है"

समुद्र के पानी को गैलन में मापना संभव है139, लेकिन हे सर्वज्ञ, आपके ज्ञान को कभी नहीं मापा जा सकता। (80) (219)
पृथ्वी को एक तुलनीय गोले पर उठाना संभव है, लेकिन हे सर्वज्ञ, आपके ज्ञान को कभी मापा नहीं जा सकता। (81) (220)
रस्सी से या इंच-इंच से (सभी) अंतरिक्ष को मापना संभव है, लेकिन हे सर्वज्ञ, आपके ज्ञान को कभी नहीं मापा जा सकता। (82) (221)
कोई चाहे तो पूरी पृथ्वी और समुद्र का सारा पानी भी समाप्त कर दे, फिर भी जो उपमाएँ उत्पन्न होंगी वे बुद्ध के ज्ञान के अनुरूप नहीं होंगी। (83) (222)
हे दृष्टिवान, इस संसार के प्राणियों और देवताओं के मन में जो कुछ भी चलता है, वह सब कुछ आपके ज्ञान-जल में समाहित है। (84) (223)
जिस ज्ञान से आपने सर्वोच्च पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया: हे सर्वज्ञ, उसी ज्ञान से आप प्रतिद्वंद्वियों और विधर्मियों को कुचल देते हैं।” (85) (224)
इन (नौ) श्लोकों से स्तुति करने के बाद, सुरुचि नामक तपस्वी ने अपने हिरण के चमड़े के वस्त्र को फैलाकर वहीं धरती पर बैठ गया। (86) (225)
“वे कहते हैं कि पर्वतों का राजा चौरासी हजार युगों तक विशाल सागर में डूबे रहने के बाद उस ऊँचाई तक उठा। (87) (226)
और मेरु, इस प्रकार उत्पन्न होकर, इतनी लंबी और इतनी फैली हुई होने के कारण, धीरे-धीरे दो लाख140 (छोटे कंकड़ों) में टूट जाती है। (88) (227)
यदि इसकी जांच की जाए,

139 पातिहिरास इदान फलां 140 लोहादोनीं गहेतवना

लाखों की गिनती करते हुए भी, हे सर्वज्ञ, वह आपके ज्ञान को कभी माप नहीं सकता। (89) (228)
जो भी जल, जल छिद्रों से घिरा हुआ है, चाहे वे कितने भी छोटे क्यों न हों, जल में रहने वाले सभी जीव वहाँ डूबे हुए होंगे। (90) (229)
ठीक इसी तरह, हे महान नायक, ये साधारण विधर्मी जो सिद्धांतों के चंगुल में फंस जाते हैं, वे जिस चीज को छूते हैं उससे भ्रमित हो जाते हैं। (91) (230)
ये (विधर्मी) आपके शुद्ध ज्ञान द्वारा पानी के नीचे खींच लिए जाते हैं, जो बिना किसी बाधा के दिखाई देता है, और कभी भी आपके ज्ञान से आगे नहीं बढ़ पाते हैं। (92) (231)
उस समय (वह), धन्य अनोमादस्सी, महान ख्यातिप्राप्त, अपनी ध्यान अवस्था से उठकर, (संपूर्ण) संसार का अवलोकन किया,142 वह विजेता। (93) (232)
निसाभा उस ऋषि अनोमदस्सी के अनुयायी थे। वे अपने जैसे एक लाख शांतिप्रिय लोगों से घिरे हुए थे (94) (233)
जिन्होंने दोषों का नाश किया था, जो शुद्ध थे और जिनके पास छह विशेष ज्ञान थे। बुद्ध की इच्छाओं को जानकर उन्होंने उस विश्व नेता से संपर्क किया। (95) (234)
वहीं हवा में खड़े होकर उन्होंने उनकी परिक्रमा की और दस उंगलियों को जोड़कर स्तुति करते हुए बुद्ध के समक्ष आ गिरे। (96) (235)
अनोमादस्सी, हे भगवान, संसार के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के सांड, भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए (उसी समय) मुस्कुराए। (97) (236)
वरुण सर्वज्ञानी, महान ऋषि के सेवक थे।

141 वनमज्जे, शाब्दिक रूप से, "जंगल के बीच में" 142 पी.टी.एस. ने अपास्सिता पढ़ा, बी.जे.टी. ने अवस्सिटा पढ़ा; ये शब्द समानार्थी हैं, और विनिमेय हैं।

अपना वस्त्र एक कंधे पर रखते हुए उसने फिर विश्व नेता से प्रश्न किया: (98) (237)
“हे भगवान, गुरु के मुस्कुराने का कारण क्या है? बुद्धों के मुस्कुराने का कोई कारण अवश्य होता है।” (99) (238)
अनोमादस्सी, हे भगवान, संसार के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के सांड, भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए (तब) उन्होंने ये श्लोक कहे (उत्तर में): (100) (239)
“जिसने मुझे फूलों से सम्मानित किया और मेरे ज्ञान की प्रशंसा भी की, मैं उसके बारे में विस्तार से बताऊंगा; आप सब मेरी बात ध्यान से सुनें।” (101) (240)
यह जानकर कि बुद्ध बोलेंगे,144 सभी देवता वहाँ एकत्रित हुए। महान उपदेश सुनने की इच्छा से,145 वे संबुद्ध के पास पहुँचे। (102) (241)
दस विश्व-प्रणालियों में विख्यात शक्तियों से युक्त छोटे देवता भी महान शिक्षा सुनने की इच्छा से संबुद्ध के पास आए। (103) (242)
(उन्होंने कहा), “चार भागों वाली सेना— हाथी, सैनिक, रथ, घोड़ा— निरंतर इसकी सेवा करेगी; यही बुद्ध-पूजा का फल है। (104) (243)
साठ हजार वाद्ययंत्र146 (और) अच्छी तरह से सजाए गए ढोल147 सदा उन्हें सम्मान देंगे; यही बुद्ध-पूजा का फल है। (105) (244)
सोलह हजार महिलाएं, सभी प्रकार के आभूषणों से सजी हुई, विभिन्न प्रकार के वस्त्र और गहने पहने हुए और रत्नों से बनी बालियां पहने हुए (106)

143 बीजेटीएस के साथ uggatejāna का पाठ (पीटीएस uggatejana के लिए) 144 °saddena, शाब्दिक रूप से, "ध्वनि के साथ" 145 या "प्रशिक्षित": vinītā 146 appamaññāsu kovidā, अर्थात्, "ईश्वरीय अवस्थाओं" (ब्रह्मविहारा) के अभ्यास में कुशल, अर्थात् प्रेम, करुणा, सहानुभूतिपूर्ण आनंद और समभाव। 147 बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ abhilāsino का पाठ (पीटीएस abhilābhino के लिए), "प्राप्त करना"

लंबी पलकों, प्यारी मुस्कान148 और पतली कमर वाली, देखने में मनमोहक,149 इस एक की निरंतर सेवा करेगी: यही बुद्ध-पूजा का फल है। (107) (246)
वह एक लाख युगों तक देवताओं की दुनिया में आनंदित रहेगा। वह हज़ार बार किसी देश का चक्र-घुमाने वाला राजा बनेगा। (108) (247)
हजार गुना देवताओं का राजा, वह दिव्य शासन करेगा, (और उसका) अनगिनत स्थानीय शासन होगा। (109) (248)
जब वह अपना अंतिम जन्म प्राप्त करेगा तो वह मनुष्य रूप धारण करेगा। वह ब्राह्मण स्त्री सारी के गर्भ से जन्म लेगा। (110) (249)
इसके बाद यह व्यक्ति अपने मातृ कुल के नाम से जाना जाएगा: उसका नाम सारिपुत्त होगा; वह तीक्ष्ण बुद्धि वाला होगा। (111) (250)
आठ सौ मिलियन150 का त्याग करके वह सब कुछ त्याग देगा, उसके पास कुछ भी शेष नहीं बचेगा,151 और शांति के मार्ग की खोज में यह महान व्यक्ति (दूर) भटकने वाला है। (112) (251)
अब से अनगिनत युगों बाद, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति संसार का गुरु होगा। (113) (252)
उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी, धर्म की वैध संतान,152 सारिपुत्त नाम से वह प्रमुख अनुयायी होगा। (114) (253)
यह नदी, भागीरथी,153 हिमालय से पोषित होती है,

---

148 समयं संविदित्वाना 149 अतापी, लिट., "जलना" 150 सस्विग्गमानसो 151 अगलुम, सिंह। एगिल, अगरु, अगरु 152 पीटीएस वंसांडे वा गंधिकाओ ("वन उपवन में सुगंधित") 153 या "हाथी के ललाट जितना बड़ा:" कुंभमत्तन के लिए बीजेटीएस के साथ पनासां देवगंधिकां पढ़ना

विशाल समुद्र में प्रवेश करता है, (फिर) विशाल महासागर को संतुष्ट करता है। (115) (254)
इसी प्रकार, साकेतों में ज्ञानी सारिपुत्त नामक यह पुरुष, ज्ञान की पूर्णता प्राप्त करके, सभी प्राणियों को संतुष्ट करेगा। (116) (255)
हिमालय से लेकर विशाल महासागर तक, बीच में फैली रेत की मात्रा को गिनकर भी नहीं मापा जा सकता। (117) (256)
शेषफल के बिना वह इस प्रकार गिनकर इसे समझ सकेगा; परन्तु सारिपुत्त की (स्वयं की) बुद्धि की कोई ऊपरी सीमा नहीं होगी। (118) (257)
लाखों की गिनती करने पर गंगा की रेत समाप्त हो जाएगी; लेकिन सारिपुत्त की बुद्धि की कोई ऊपरी सीमा नहीं होगी। (119) (258)
विशाल सागर की लहरों को गिनकर नहीं मापा जा सकता; वह भी (वह कर दिखाएगा)! सारिपुत्त की बुद्धि की कोई सीमा नहीं होगी। (120) (259)
शाक्यों के सांड, संबुद्ध गौतम को संतुष्ट करके, वह ज्ञान की पूर्णता प्राप्त करेगा और अग्रणी अनुयायी होगा। (121) (260)
वह पूरी तरह से धम्म-चक्र का अनुसरण करेगा जिसे शाक्य पुत्र, तटस्थ व्यक्ति,158 द्वारा घुमाया जाएगा, जो धम्म-वर्षा की तरह बरसेगा। (122) (261)
इन सब बातों को भली-भांति समझते हुए, हे शाक्यों के श्रेष्ठ गौतम,

---

154 चित्तंग, शाब्दिक अर्थ, "विचार" या "मन" 155 शाब्दिक अर्थ, "वह बन गया है जो" 156 शाब्दिक अर्थ, "अविचलित" "अविचलित" 157 शाब्दिक अर्थ, "के लिए अस्तित्व में आना" 158 अदंतदमको का अर्थ या तो "अनियंत्रित को वश में करने वाला" या "नियंत्रित को वश में करने वाला" हो सकता है; मैं हाइफ़न के साथ अस्पष्टता को खुला छोड़ देता हूँ, यहाँ "अनियंत्रित को वश में करने वाला" के लिए अपनी प्राथमिकता स्वीकार करता हूँ (जो कि बीजेटीएस पाठ भी है, दमेटर पर आरडी देखें), और जप में उच्चारण की अनुशंसा करता हूँ जो यौगिक में पहले शब्द पर जोर और स्वर के माध्यम से इस बात पर जोर दे सकता है कि बुद्ध वह हैं जो अनियंत्रित/जंगली लोगों को वश में करते हैं।

भिक्षुओं की सभा में बैठने से वह सबसे आगे के स्थान पर आसीन होगा।" (123) (262)
ओह, देखो मैंने शिक्षक अनोमादस्सी के लिए कितना अच्छा काम किया। मैंने उनकी हर अपेक्षा पूरी की और हर जगह उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। (124) (263)

असंख्य कर्मों का फल (युगों पहले) मुझे यहाँ मिला: पूर्णतः मुक्त, तीर की तरह तेज,161 मैंने अपने दोषों को नष्ट कर दिया है। (125) (264)

निर्वाण, उस अप्रतिबंधित और अविचल अवस्था की खोज में, सभी विधर्मियों को परखते हुए, मैं अस्तित्वों के बीच घूमता रहा।162 (126) (265)

जैसे कोई व्यक्ति, बीमारी से पीड़ित होकर, अपनी बीमारी से छुटकारा पाने के लिए औषधीय जड़ी-बूटियों की तलाश में सभी जंगलों की छानबीन करता है, (127) (266)

बिना किसी रुकावट के, अमरता की निःशर्त अवस्था, निर्वाण की खोज में,163 पाँच सौ बार मैं ऋषिमय जीवन में निकला।164 (128) (267)

जटाधारी बालों का भार ढोते हुए165 मैंने हिरण के चमड़े का वस्त्र धारण किया; विशेष ज्ञान प्राप्त करते हुए मैं ब्रह्मा के लोक में गया। (129) (268)

व्यवस्था में निर्धारित ज्ञान के बाहर कुछ भी नहीं है।166 जो भी प्राणी बुद्धिमान होगा वह व्यवस्था को समझ लेगा।167 (130) (269)

फिर मैंने सोचा, "यही तरीका है।"

---

159 bodhento bodhapakkhiye, जिसे BJTS जागृति या ज्ञानोदय के (37) पहलुओं या गुणों के रूप में व्याख्यायित करता है (बोध, यहाँ = बोधि, आरडी एसवी देखें) 160 ācāra-upacāraññū 161 dhammanucchavasaŋvaraŋ (BJTS इसे dhammanucchavi° पढ़ता है) 162 pade padaŋ nikkhipantā, शाब्दिक अर्थ, "धीरे-धीरे (अपने पैर) रखते हुए" 163 pade padaŋ nikkhipantā, शाब्दिक अर्थ, "धीरे-धीरे (अपने पैर) रखते हुए" 164 durūpansaṅkamā 165 appasaddā 166 PTS yāvâhaŋ के लिए BJTS के साथ yadā 'haṃ पढ़ना, "जहाँ तक" मैं…" 167 munibhutā va, ie, silently

---

उस लक्ष्य की चाहत में, मैं "अशर्त की खोज में कठिन घाटों पर भटकता रहा।" (131) (270)

जैसे कोई व्यक्ति, जो उसका गूदा चाहता है, केले के पेड़ को काटता और फाड़ता है, तो वह उस गूदे को प्राप्त नहीं करेगा बल्कि उस गूदे से वंचित रहेगा, (132) (271)

इसी प्रकार, दुनिया के विधर्मी, अपने विविध विचारों और बड़ी भीड़ के साथ, उस सहजता से वंचित हैं, जैसे केले के पेड़ में गूदा नहीं होता। (133) (272)

जब मैं अपने अंतिम जन्म में पहुँचा, तब मैं ब्रह्मा का संबंधी था।168 एक अरब को त्यागकर169 मैं बेघर हो गया।170 (134) (273)

प्रथम पाठ भाग। एक विद्वान मंत्र-ज्ञानी थे, जिन्होंने तीनों वेदों में महारत हासिल कर ली थी, वे संजय नाम के एक ब्राह्मण थे। मैं उनके आसपास रहता था। (135) (274)

हे महान वीर, आपका अनुयायी, अस्सजी नाम का ब्राह्मण, दुर्गम, अपार शक्तियों से युक्त, वहाँ भिक्षा माँगने के लिए घूमता रहता था। (136) (275)

मैंने उस बुद्धिमान व्यक्ति को देखा, एक ऐसा ऋषि जो शांति का आदी था, एक शांत हृदय वाला हाथी, खिले हुए कमल के फूल के समान। (137) (276)

उसे देखकर मुझे अहसास हुआ172 "यह आदमी एक योग्य, सुसंस्कृत, शुद्ध मन वाला, एक बैल, अत्यंत उत्कृष्ट, एक नायक होगा। (138) (277)

अपने व्यवहार में मनमोहक, सुंदर और संयमी,

---

168 पीटीएस देसेसी के लिए बीजेटीएस के साथ देसेति पढ़ना, "आप उपदेश देते हैं" 169 निसामेथा 170 शाब्दिक रूप से, "महान शिक्षा," सद्धम्मसवनां सुखं 171 कथां वीतिसारेत्वा 172 अर्थात्, महापुरुष के शरीर पर बत्तीस शुभ चिह्न, जो संकेत देते हैं कि वह या तो बुद्ध होगा या चक्र-घुमाने वाला सम्राट।

अंतिम वशीकरण में वश में किया गया, वह अमरता का द्रष्टा होगा। (139) (278)

तो फिर मैं उस खुशहाल व्यक्ति से लक्ष्य के बारे में क्यों नहीं पूछता?173 मेरे द्वारा पूछे जाने पर वह उत्तर देगा! फिर मैं उससे प्रश्न पूछ रहा हूँ। (140) (279)
मैं उसके पीछे-पीछे भिक्षा मांगने के लिए भटकता रहा; मुझे अमरता के बारे में पूछने की अनुमति देकर सम्मानित किया गया। (141) (280)
सड़क पर चलते हुए उसके पास पहुँचकर मैंने उससे इस प्रकार प्रश्न किया: "हे ज्ञानी, तुम किस कुल के हो? हे सुखी, तुम किसके शिष्य हो?174 (142) (281)
एक निडर शेर की तरह, उसने मेरे द्वारा पूछे जाने पर इस प्रकार उत्तर दिया: "संसार में एक बुद्ध का उदय हुआ है; मैं उनका शिष्य, उनका अनुयायी हूँ।" (143) (282)
"हे ज्ञानी, हे प्रसिद्ध, हे (बुद्ध के) पुत्र, यह उत्कृष्ट होगा यदि आप कृपया मुझे बताएँ, महोदय,175 कि बुद्ध किस प्रकार की शिक्षा देते हैं।" (144) (283)
मेरे द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने (तब) उस संपूर्ण गहन और सूक्ष्म अवस्था की घोषणा की जिसमें समस्त दुख नष्ट हो जाते हैं और भोग का तीर निकल जाता है। (145) (284)
"तथाभूत ने समस्त वस्तुओं के मूल कारणों और उन कारणों के अंत के बारे में बात की थी; यही बात महान भिक्षु ने घोषित की है।" (146) (285)
जब मेरे प्रश्न का उत्तर मिल गया, तो मैंने प्रथम मार्ग-फल प्राप्त कर लिया।176 उपदेश सुनकर,177 मैं कलंक और दोष से मुक्त हो गया। (147) (286)

173 iddhiyā* का पाठ BJTS द्वारा PTS itthiyā ("एक स्त्री को," sic!)* के स्थान पर किया गया है। 174 kosohitaŋ vatthaguyhaŋ, BJTS द्वारा kosohitavatthaguyhaŋ पढ़ा जाता है। 175 kaṇṇasote, "उसके श्रवण अंग पर"। 176 patamasi nalāṭantaṃ का पाठ BJTS द्वारा PTS paṭtimasanalāṭaŋ taŋ के स्थान पर किया गया है। 177 niṭṭhaŋ gantvā, शाब्दिक रूप से, "निष्कर्ष पर पहुँचकर"

ऋषि का भाषण सुनने के बाद, उत्कृष्ट शिक्षा को देखकर, उस महान शिक्षा में पूरी तरह से लीन होकर मैंने ये श्लोक (ज़ोर से) कहे: (148) (287)
"यद्यपि यह शिक्षा केवल यहीं तक सीमित है, तो आप सभी को इसकी दु:खरहित अवस्था को समझना चाहिए, जो अनेक यज्ञ करने के बाद भी अतीत में नहीं देखी गई।178 (149) (288)179 धर्म की खोज में (पूर्व में) मैं कठिन जलमार्गों पर भटकता रहा। वह अर्थ अब मुझे प्राप्त हो चुका है; उपेक्षा करने का समय नहीं है।" (150) (289)
(भिक्षु) असाजी से अत्यंत प्रसन्न होकर, उस शांत अवस्था को प्राप्त करके, मैं अपने सह-त्यागी की खोज करते हुए आश्रम लौट आया। (151) (290)
दूर से मुझे देखकर, मेरे साथी,180 जो अच्छी तरह से प्रशिक्षित थे, जिन्होंने ध्यान मुद्राएँ सीखी थीं,181 (आश्चर्यचकित होकर), मुझसे ये शब्द बोले: (152) (291)
"हे ऋषि, आपका चेहरा और आंखें प्रसन्न हैं और आप ऋषिमय आभा प्रकट करते हैं। आपने अमरता, शाश्वत अवस्था, निर्वाण कैसे प्राप्त किया?" (153) (292)
तुम अच्छे के अनुरूप आते हो, मानो तुम शांत हो गए हो। और तुम मेरे पास आए हो, हे ब्राह्मण, परम संयम में संयमित होकर। (154) (293)
"मैंने वह अमर अवस्था प्राप्त कर ली है जहाँ तृष्णा का तीर नष्ट हो जाता है। तुम्हें भी (वह) अवस्था प्राप्त करनी चाहिए; चलो गुरु के पास चलते हैं।" (155) (294)
मेरे साथी, जो अच्छी तरह से प्रशिक्षित थे, ने "उत्कृष्ट!" कहते हुए सहमति व्यक्त की। उनका हाथ पकड़कर हम शिक्षक के समक्ष गए। (156) (295)

178 sabbe patt' amha nibbutiŋ 179 ekato, शाब्दिक अर्थ, "एक के रूप में" 180 शाब्दिक अर्थ, "देने के बाद" 181 PTS gopānasī के लिए BJTS के साथ gopānasīyo पढ़ना

"हे शाक्य पुत्र, हम दोनों अब आपकी उपस्थिति में चलेंगे। आपकी शिक्षा प्राप्त करके हम दोषरहित जीवन व्यतीत करेंगे।" (157) (296)

कोलिता जादुई शक्तियों में सबसे श्रेष्ठ है; मैं ज्ञान में सबसे आगे हूँ। हम दोनों एक होकर इस व्यवस्था को और भी सुंदर बनाते हैं। (158) (297)

जब मेरा विचार अभी अधूरा था, तब मैं कठिन जलमार्गों पर भटकता रहा। आपके दर्शन को प्राप्त करने के बाद मेरा विचार अब पूर्णतः परिपक्व हो चुका है। (159) (298)

धरती में रोपे जाने पर वृक्ष अपने-अपने मौसम में खिल उठते हैं। वे अपनी दिव्य सुगंध बिखेरते हैं और सभी जीवित प्राणियों को आनंदित करते हैं। (160) (299)

हे महान वीर, हे महान प्रसिद्धिवान, शाक्यों के पुत्र, ठीक इसी प्रकार, आपकी शिक्षाओं में रोपित होकर मैं मौसम के अनुसार फूल खिलाना चाहता हूँ। (161) (300)

मैं मुक्ति-पुष्प की तलाश में हूँ, इस चक्र-पुष्प से मुक्ति चाहता हूँ।182 उस मुक्ति-पुष्प को पाकर मैं सभी प्राणियों को प्रसन्न करूँगा। (162) (301)

इस संपूर्ण बुद्ध-क्षेत्र में स्वयं महान ऋषि को छोड़कर, ज्ञान में आपका कोई प्रतिद्वंदी नहीं है, हे नेत्रपूर्ण, आपके पुत्र। (163) (302)

आपके छात्र अच्छी तरह से शिक्षित हैं; आपका दल बहुत अच्छी तरह से प्रशिक्षित है। वे पूरी तरह से वश में हैं और हमेशा आपके चारों ओर इकट्ठा होते हैं। (164) (303)

ध्यान करने वाले, समाधि-प्रेमी, बुद्धिमान, एकाग्र, शांत मन वाले, ऋषि-मुनि, वे सब हमेशा आपके आसपास एकत्रित होते हैं। (165) (304)

कम चाहने वाले, 183 चतुर और बुद्धिमान,

---

182 पीटीएस वासिन के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ वासी पढ़ना 183 पूगधम्मे

कम खाते हुए, बिना किसी इच्छा के, प्राप्त हो या न हो, प्रसन्न रहते हुए, वे हमेशा आपके चारों ओर एकत्रित होते हैं। (166) (305)

वनवासी जिनकी इच्छाएँ समाप्त हो चुकी हैं,184 फटेहाल वस्त्रों में ध्यान करने वाले,185 जो अकेले रहने में आनंद लेते हैं,186 वे हमेशा आपके चारों ओर इकट्ठा होते हैं। (167) (306)

आठ पथ-फलों को प्राप्त करने वाले (और) जो अभी भी आकांक्षी हैं,187 अंतिम लक्ष्य की खोज में लगे हुए हैं, वे हमेशा आपके चारों ओर एकत्रित होते हैं। (168) (307)

धारा में निर्मल प्रवेश करने वाले और कुछ जो एक बार लौटते हैं; न लौटने वाले और अरहंत भी, वे हमेशा आपके चारों ओर एकत्रित होते हैं। (169) (308)

ध्यान बनाए रखने में कुशल,188 ज्ञान के अंशों को केंद्र बिंदु के रूप में पसंद करने वाले,189 आपके सभी अनुयायी, और असंख्य, वे हमेशा आपके चारों ओर एकत्रित होते हैं। (170) (309)

(सभी) महाशक्तियों में कुशल, शांत ध्यान के शौकीन,190 उपयुक्त परिश्रम करने वाले191 वे हमेशा आपके चारों ओर इकट्ठा होते हैं। (171) (310)

तीनों ज्ञानों को परिपूर्ण करना, विशेष ज्ञान, महाशक्तियाँ, बुद्धि की पूर्णता प्राप्त करना - वे हमेशा आपके चारों ओर एकत्रित होते हैं। (172) (311)

हे महान नायक, आपके छात्र वास्तव में ऐसे ही हैं, जो इतने कुशल हैं, जिनसे संपर्क करना कठिन है, और जो अपार शक्तियों से संपन्न हैं।

184 हेतु, शाब्दिक अर्थ, कारण; मैं बीजेटीएस की व्याख्या का अनुसरण करते हुए इन्हें आनिसंस (सिंह. अनुसस अतक लबमि) समझता हूँ। बीजेटीएस हेतु (जो शायद मेट्रिक कारण हो) के प्रयोग की व्याख्या इस प्रकार करता है: "उस अच्छे कर्म को, (अर्थात) उस कर्म को, कारण बनाना।" मैं यहाँ आठ को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) सर्वत्र पूजित, (2) अमृतमय भोजन, (3) सभी द्वारा समर्थित, (4) कोई भय नहीं, (5) कोई रोग नहीं, (6) दीर्घायु, (7) उत्तम त्वचा, (8) चुने हुए या वांछित निवास स्थान।

185 पूजितो 186 पीटीएस patiṭṭhā bhosiŋ sabbesaŋ के स्थान पर BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ patiṭṭhā homi sabbesaṃ का पाठ 187 शाब्दिक अर्थ, "होना," "पाना" 188 tāso 189 āvāse patthite vase 190 पीटीएस vasiŋ के स्थान पर BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ vasī का पाठ 191 pūgadhamme

वे हमेशा आपके चारों ओर इकट्ठा होते हैं। (173) (312)

उन सभी विद्यार्थी तपस्वियों से घिरे हुए जिन्हें अच्छी तरह से शिक्षित किया गया है, एक निडर शेर की तरह तुम तारों के राजा की तरह चमकते हो।192 (174) (313)

मिट्टी में रोपे जाने के बाद, कठोर लकड़ी के पेड़ (मजबूत और लंबे) हो जाते हैं। वे अपनी पूरी उपज प्राप्त करते हैं और (मौसम के अनुसार) अपने फल प्रदर्शित करते हैं। (175) (314)

हे शाक्य पुत्र, हे महान यशारण, आप पृथ्वी के समान हैं; आपके (महान) उपदेश में स्थिर होकर, वे (वृक्षों के समान) अमर फल उत्पन्न करते हैं। (176) (315)

सिंधु और सरस्वती नदियाँ, चंदाभागा, गंगा और यमुना, सरभु और माही नदियों की तरह ही हैं। (177) (316)

जब वे नदियाँ बहना बंद कर देती हैं, तो विशाल सागर उन सभी को स्वीकार कर लेता है। अपने पुराने नामों को त्यागकर, वे सभी "विशाल सागर" के नाम से जानी जाती हैं। (178) (317)

इसी प्रकार, चारों जातियों के ये लोग, जो अपने पूर्व नामों को त्यागकर आपकी उपस्थिति में आए हैं, वे सभी “बुद्ध के पुत्र” कहलाते हैं। (179) (318)

जैसे कि निर्मल चंद्रमा आकाश में विचरण करते हुए संसार पर अपना प्रकाश डालता है और तारों के पूरे समूह को भी मात देता है, (180) (319)

इसलिए हे महान वीर, आप भी देवताओं और मनुष्यों से घिरे हुए, बुद्ध-क्षेत्र में निरंतर चमकते रहते हैं। (181) (320)

गहराई से उठने वाली लहरें समुद्र तट से आगे नहीं जातीं; जब वे तट पर आती हैं, तो वे चूर-चूर होकर बिखर जाती हैं।193 (182) (321)

192 शाब्दिक रूप से, "देने के बाद" 193 या, "उन आठ के अतिरिक्त"

ताकि दुनिया के विधर्मी, अपने विविध विचारों और शिक्षा को प्राप्त करने की इच्छा रखने वाली बड़ी भीड़ के साथ, कभी भी ऋषि से आगे न बढ़ सकें। (183) (322)

हे दृष्टिवान, यदि वे वाद-विवाद के द्वारा उसे प्राप्त करने का प्रयास करें, तो आपके समक्ष आकर वे आपके द्वारा पूरी तरह कुचल दिए जाएँगे। (184) (323)

जैसे कई सफेद कमल194 और मंडलक के फूल,195 जो पानी से पैदा होते हैं, पानी और कीचड़ और मिट्टी से भी सने होते हैं, (185) (324)

इसी प्रकार, संसार में जन्म लेने और बड़े होने वाले अनेक प्राणी भी कीचड़ में खिले श्वेत कमल की तरह अपनी कामवासना और क्रोध से व्यथित होते हैं। (186) (325)

जैसे गुलाबी कमल,196 जल में उत्पन्न होकर, जल के बीच में उगता है, वह जल से मैला नहीं होता बल्कि वह कमल निर्मल होता है, (187) (326)

हे महान वीर, संसार में जन्म लेने के बावजूद, हे महान ऋषि, आप भी संसार से अछूते हैं। आप गुलाबी कमल की तरह जल से अछूते हैं। (188) (327)

इसी प्रकार, कई कमल के फूल अप्रैल 197 के महीने में खिलते हैं (पर) उस महीने के बाद नहीं टिकते; यही उनके खिलने का समय है। (189) (328)

हे शाक्य पुत्र, तुम भी अपनी मुक्ति में खिल रहे हो। जल में खिले कमलों के समान तुम्हारी व्यवस्था अतुलनीय है। (190) (329)

खिले हुए साल के पेड़ों का राजा एक दिव्य सुगंध बिखेरता है।

194 paṭisambhidā, अर्थात् (चार) विश्लेषणात्मक तरीकों में निपुणता, अरहंतत्व का एक लक्षण 195 शाब्दिक अर्थ, "और"। यहाँ ca दो अलग-अलग ānisaṃsa को एक में जोड़ता है, जिसे अंतिम पद में एकवचन सर्वनाम etaŋ से संदर्भित किया गया है 196 sabbavositavosāno, शाब्दिक अर्थ, "वह जिसने सभी सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हों," "अरहंत होना" 197 katakicco, अर्थात्, "अरहंत होना"

अन्य साल के पेड़ों से घिरा हुआ, साल के पेड़ों का राजा सुंदर है। (191) (330)
हे महान वीर, आप भी बुद्ध के ज्ञान से परिपूर्ण हैं। भिक्षुओं की सभा से घिरे हुए, आप साल-राजा की तरह सुंदर हैं। (192) (331)
जैसे हिमालयी पत्थर जीवित प्राणियों के लिए औषधि है और छोटे देवताओं, नागों और असुरों का भी निवास स्थान है, (193) (332)
हे महान नायक, आप भी जीवित प्राणियों के लिए औषधि हैं; आपने तीन ज्ञान, विशेष ज्ञान, महान शक्तियों में महारत हासिल कर ली है। (194) (333)
हे महान वीर, आप उन्हें अत्यंत करुणा के साथ उपदेश देते हैं। वे धर्म के प्रेम में लीन होकर आपके विधान में निवास करते हैं। (195) (334)
इसी प्रकार, पशुओं का राजा शेर, अपनी इच्छा अनुसार चलता हुआ, चारों दिशाओं का अवलोकन करता है (फिर) तीन बार दहाड़ता है (अपनी शक्तिशाली गर्जना)। (196) (335)
उस शेर की दहाड़ से सभी जानवर बहुत भयभीत हैं। इस प्रकार, केवल एक ही जानवर, जो कुलीन वंश का है, हमेशा (बाकी सभी को) डराता है। (197) (336)
हे महान नायक, तुम्हारी गर्जना के कारण पृथ्वी (स्वयं) कांपने लगती है। बुद्धिमान लोग इसे समझ लेते हैं, जिससे मृत्यु के समर्थकों में भय उत्पन्न होता है।199 (198) (337)
हे महान ऋषि, विधर्मी सब आपकी वाणी से भयभीत हैं। कौवों का वह झुंड शेर-राजा के साथ जानवरों की तरह घबराया हुआ है।200 (199) (338)
जिनके दुनिया भर में अनुयायी होते हैं, उन्हें "शिक्षक" की उपाधि से जाना जाता है।

198 अनासवो, अर्थात्, "अरहंत होना" 199 अट्ठगोपानसी नाम 200 पीटीएस वासिंग के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ वसी पढ़ना

वे अपने समुदाय को परंपरा द्वारा प्रदत्त सिद्धांतों की शिक्षा देते हैं। (200) (339)
हे महान वीर, आप ऐसा नहीं करते, आप अपने उपदेशों का प्रचार स्वयं करते हैं। स्वयं सत्यों को समझते हुए201 (आप प्रचार करते हैं) समस्त जागृति।202 (201) (340)
इच्छाओं और गहरी कल्पनाओं को समझते हुए,203 इंद्रियों की शक्तियों और कमजोरियों को पहचानते हुए,204 यह जानते हुए कि कौन सक्षम है और कौन नहीं, तुम एक विशाल बादल की तरह गर्जना करते हो। (202) (341)
ब्रह्मांड के छोर तक, बैठे हुए अनुयायियों के समूह अपने विविध सिद्धांतों पर विचार कर रहे हैं, अपने सभी संदेहों को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं। (203) (342)
हे ऋषि, आप सबका मन पढ़ लेते हैं, उपमाओं में निपुण हैं, एकल प्रश्नों पर चर्चा करके आप प्राणियों के संदेह दूर कर देते हैं। (204) (343)
इस दुनिया में धरती उन लोगों से भरी पड़ी है जिनका मैंने जिक्र किया है। उन सभी को, श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़कर, विश्व नेता की प्रशंसा में गीत गाने चाहिए।207 (205) (344)
युग भर उनकी प्रशंसा करते हुए, उनके विविध गुणों का बखान करते हुए, उन्हें कभी भी पूरी तरह से मापा नहीं जा सकता; तथागत का कोई माप नहीं है। (206) (345)
इस प्रकार, अपनी पूरी शक्ति से विजेता की प्रशंसा करते हुए, वे दस करोड़ युगों तक ऐसी बातें कहते रहेंगे जो अनकही ही रहेंगी। (207) (346)

यदि कोई प्राणी, चाहे वह देवता हो या मनुष्य,

201 पूगधम्मे 202 थम्हानि 203 शाब्दिक अर्थ, "देने वाला" 204 हेतु, शाब्दिक अर्थ, कारण; मैं बीजेटीएस का अनुसरण करते हुए इन्हें आनिसंस (सिंह. अनुसस पहक लबामि) के रूप में समझता हूँ। मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) प्रेम से अविचलित, (2) धनी, (3) जिसके वचन सुने जाते हैं, जिससे कोई अपराध नहीं होता, (4) मन अनियंत्रित नहीं, अविचलित, और (5) अरहंतत्व (निर्मल, आदरणीय, आज्ञाकारी, कर्तव्य पूर्ण, बुद्ध का निष्कलंक अनुयायी)। 205 अचलो होमि मेट्टाया 206 अनुनभोगवा 207 आदेय्यावचनो होमि

भले ही वह (बहुत) अच्छी तरह से प्रशिक्षित हो, अगर वह पूरे (समुद्र के पानी) को खींचने की कोशिश करता है, तो वह निश्चित रूप से मुसीबत में पड़ जाएगा।208 (209) (347)

(अब) हे शाक्य पुत्र, हे महान ख्यातिप्राप्त, आपके विधान में स्थिर होकर, मैं ज्ञान की पूर्णता प्राप्त कर चुका हूँ और दोषरहित जीवन जी रहा हूँ। (209) (348)

प्रतिद्वंद्वी विधर्मियों को पराजित करके मैं धर्म का प्रचार करता हूँ।210 आज मैं बुद्ध के धर्म में धम्म का सेनापति हूँ।2112 (210) (349)

असंख्य कर्मों का फल (युगों पहले) मुझे यहाँ मिला: पूर्णतः मुक्त, तीर की तरह तेज,213 मैंने अपने दोषों को नष्ट कर दिया है। (211) (350)

जो भी व्यक्ति प्रतिदिन अपने सिर पर बोझ ढोता है, वह उस बोझ के कारण पीड़ित होता है, और वह बोझ भारी होता है। (212) (351)

मैं जन्मों में पुनर्जन्म लेता रहा,214 तीन अग्नियों से जलता रहा,215 मानो मैं पहाड़ों को उठा रहा हूँ। (213) (352)

मेरा बोझ (अब) उतार दिया गया है और मैंने पुनर्जन्म को नष्ट कर दिया है।216 मैंने वे सभी कार्य किए हैं जो बुद्ध के विधान में किए जाने चाहिए।217 (214) (353)

इस संपूर्ण बुद्ध-क्षेत्र के माध्यम से,

208 na dhaŋsemi yathā ahaŋ 209 BJTS के साथ abhantù� mānasaź� mama पढ़ना (भंता = मुड़ना, डगमगाना, अस्थिर, एक गाड़ी के लिए प्रयुक्त जो नियंत्रण से बाहर है) PTS के लिए āgataŋ mānasaŋ mamaŋ (वैकल्पिक mama), "मेरा मन आ गया है"। पीटीएस असन्तं (शांति का अभाव, अशांत) को एक वैकल्पिक पाठ के रूप में भी देता है, जो आगतं 210 विमलो होमी सासाने 211 सागरवो 212 सप्पतिसो 213 कटकिच्चो, यानी "अरहंत होना" 214 अनासवो, यानी "अरहंत होना" 215 भिक्खु तन वन्दते, शाब्दिक रूप से, "एक पूजनीय भिक्षु" 216 पञ्चेप्स' अहं 217 हेतु, शाब्दिक रूप से, कारण; मैं बीजेटीएस का अनुसरण करते हुए इन्हें आनिसंस (सिंह. अनुसस पहक लबामि) के रूप में समझता हूँ। मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) अच्छा जन्म, (2) अपार धन, (3) सर्वोपरि सफलता, (4) कंजूसी या लोभ का अभाव, (5) जादुई पालकी।

शाक्य बैल को छोड़कर, ज्ञान के मामले में मैं सर्वोच्च हूँ; मेरा कोई प्रतिद्वंदी नहीं है। (215) (354)

ध्यान में इतना कुशल218, महाशक्तियों में निपुण, आज मेरी एकमात्र इच्छा हजार जादुई रचनाएँ करना है।219 (216) (355)

वहाँ निवास करने वाले मुझमें से कुछ समय बाद महान ऋषि (महान) शिक्षक बने। उन्होंने मुझे विधान बताया; लेटे-लेटे ही समाप्ति हुई। (217) (356)

मेरी दिव्य दृष्टि शुद्ध है और मैं एकाग्रता में कुशल हूँ। उचित प्रयास किया जाता है; मैं ज्ञान के अंशों को केंद्रबिंदु के रूप में पसंद करता हूँ। (218) (357)

मेरे द्वारा वह सब कुछ किया जाता है जो अनुयायियों को प्राप्त करना चाहिए। विश्व नेता के सिवा मेरा कोई प्रतिद्वंदी नहीं है। (219) (358)

ज्ञान और अनुशासन में निपुण होकर, परिवर्तित अवस्थाओं के माध्यम से मैंने शीघ्र मुक्ति प्राप्त की। ज्ञान के अंशों को केंद्र में रखकर मैंने अनुयायियों के गुणों में उत्कृष्टता प्राप्त की। (220) (359)221 अनुयायियों के गुणों को प्राप्त करके मुझे श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा सम्मानित किया गया है। मेरा मन हमेशा साथी धार्मिक छात्रों में विश्वास से भरा रहता है। (221) (360)

जैसे किसी साँप का विष नष्ट हो गया हो,222 जैसे किसी बैल के सींग टूट गए हों, मैं अपने अभिमान और अहंकार से मुक्त होकर अत्यंत श्रद्धा के साथ उसके पास जाता हूँ।223 (222) (361)
अगर मेरी बुद्धि एक खूबसूरत लड़की होती तो वह धरती के शासकों से प्रेम कर लेती। यही मेरे द्वारा प्रशंसा करने का फल है।

---

218 ucce kule 219 mahābhogo bhavāmi 220 reading sabbasampattiko homi with BJTS for PTS sabbasampāttiko 221 lit., “not found for me” “I do not know” “I do not experience” 222 maccheraŋ = macchariyaŋ2 223 upatiṭṭhati, lit., “stands (there),” “comes to stand fast”

अनोमादस्सी बुद्ध का ज्ञान।224 (223) (362)225 मैं धम्म-चक्र को पूर्णतः घुमाने में सहायता करता हूँ जिसे शाक्य पुत्र, तटस्थ पुरुष ने घुमाया था: यही ज्ञान की प्रशंसा का फल है। (224) (363)
मुझे कभी भी, कहीं भी, ऐसे व्यक्ति से न मिलना पड़े जिसके विचार शुद्ध न हों, जो आलसी हो या ऊर्जाहीन हो, अज्ञानी हो या अनैतिक हो। (225) (364)
केवल वही व्यक्ति मेरे सामने आए जो विद्वान, बुद्धिमान, नैतिक उपदेशों में सुस्थापित और मानसिक शांति में स्थिर हो।226 (226) (365)
हे भिक्षुओं, जो यहाँ एकत्रित होकर भीख मांग रहे हो, मैं तुमसे यही कह रहा हूँ: सदा प्रसन्न रहो, कम इच्छाओं वाले, ध्यान करने वाले, समाधि-प्रेमी। (227) (366)
जिसे मैंने सबसे पहले देखा, वह कामवासना से मुक्त और निष्कलंक था। वह मेरा गुरु है, वह मेरा नायक है, वह असाजी नाम का मेरा अनुयायी है। (228) (367)
उन्हीं की कृपा से मैं आज धम्म का सेनापति हूँ। हर जगह श्रेष्ठता प्राप्त करके मैं दोषरहित जीवन जी रहा हूँ। (229) (368)
मैं उस क्षेत्र के प्रति श्रद्धापूर्वक सिर झुकाता हूँ जहाँ वह है, वह जो मेरा स्वयं का गुरु था, असाजी नामक अनुयायी। (230) (369)
मेरे कर्मों को याद करके, शाक्यों के श्रेष्ठ गौतम ने भिक्षुओं की सभा में बैठकर मुझे सबसे आगे बिठाया। (231) (370)
मेरे सारे दोष (अब) जलकर राख हो गए हैं; समस्त (नया) अस्तित्व नष्ट हो गया है।

---

224 थेरो, “बुजुर्ग” 225 सब्बाभिञ्ञा-बलपत्टो 226 परा-किच्चत्त-किच्चानि, “वे कर्तव्य जो दूसरों द्वारा किए जाने हैं”। मैं इस संयुक्त शब्द को पढ़ने में बीजेटीएस की व्याख्या का अनुसरण करता हूँ; इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उसने अपने स्वयं के कर्तव्यों का पालन किया, जिसमें दूसरों की सेवा से संबंधित कर्तव्य भी शामिल थे।

टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,227 मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ।228 (371)
मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।229 तीनों ज्ञान प्राप्त हो चुके हैं; (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (372)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (232) (373)
इस प्रकार पूज्य सारिपुत्त थेरा ने ये श्लोक कहे। सारिपुत्त थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
3-1- थेरा सारिपुत्त की जीवनी पर टिप्पणी ।
3.1. इसके तुरंत बाद थेरों की जीवनी से संबंधित श्लोकों के संग्रह पर टिप्पणी करने के लिए, यह इस प्रकार कहा गया है: - "अथा थेरपदानं सुनाथा, अब आप सभी को थेरा की जीवनी सुननी चाहिए", हालांकि, यह कई अर्थों में प्रचलित है, जैसे: समय, दृढ़ता, पदनाम, नाम-निर्धारण, वरिष्ठ इत्यादि। तदनुसार, वास्तव में, ऐसे संदर्भ में जैसे: "थेरोवस्सिकानी पूतिनी चुन्नकजातानी, कई वर्षाओं (या वर्षों) के

वरिष्ठ भिक्षु, सड़ी हुई चीजें, चूर्ण में परिवर्तित", इत्यादि में, थेरा समय को संदर्भित करता है; थेरोवस्सिकानी उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने लंबे समय तक अपना उपवास (या वर्षा) बिताया है; इस प्रकार, अर्थ है। ऐसे संदर्भ में जैसे "थेरे पि ताव महा, वरिष्ठ भिक्षु भी अब महान हैं", इत्यादि में, दृढ़ता, दृढ़ अभ्यासी या दृढ़ उपदेशों में; इस प्रकार, यही अर्थ है। ऐसे संदर्भ में जैसे: "थेराको अयमायस्मा महल्लको, यह वरिष्ठ भिक्षु, आदरणीय, वृद्ध है" इत्यादि, थेरा पदनाम को संदर्भित करता है; यह केवल एक सांसारिक पदनाम है; इस प्रकार, यही अर्थ है। ऐसे संदर्भ में जैसे: "चुंडत्थेरे फुस्सात्थेरो, थेरा चुंडा और थेरा फुस्सा," इत्यादि, थेरा शब्द नामकरण को संदर्भित करता है, इस प्रकार नाम दिया गया; इस प्रकार, यही अर्थ है। ऐसे संदर्भ में जैसे: "थेरो चायं कुमारो मम पुत्तेसु, मेरे पुत्रों में, यह युवक फिर से सबसे वरिष्ठ है", इत्यादि, थेरा शब्द सबसे बड़े, सबसे बड़े युवक को संदर्भित करता है; इस प्रकार, यही अर्थ है। हालांकि, यहां यह शब्द थेरा समय और दृढ़ता के साथ उचित हो जाता है। इसलिए, जो लंबे समय तक स्थिर रहा है, वह थेरा, वरिष्ठ भिक्षु है; या उन्हें थेरा, वरिष्ठ भिक्षु कहा जाता है, जो उपदेश, आचरण, नम्रता आदि गुणों से घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं। थेरा (वरिष्ठ भिक्षु) में थेरा (वरिष्ठ भिक्षु) और थेरा (वरिष्ठ भिक्षु) शामिल हैं। थेराओं (वरिष्ठ भिक्षुओं) द्वारा किए गए कर्मों को थेरापदाना (वरिष्ठ भिक्षुओं की जीवनी) कहा जाता है; आप सभी उस थेरापदाना (वरिष्ठ भिक्षुओं की जीवनी) को सुनें; इस प्रकार, यह संबंध है। हिमवन्तस्स अविदुरे, लंबको नाम पब्बतो (हिमवंत पर्वत से कुछ ही दूरी पर स्थित लंबक हांगर नामक एक पहाड़ी) से शुरू होने वाले श्लोक थेरा सारिपुत्त के कर्मों या जीवनी का वर्णन करते हैं। उस पूजनीय भिक्षु और थेरा महामोग्गलाना की कहानी को इस प्रकार समझा जाना चाहिए:

3.2. बहुत समय पहले, ऐसा कहा जाता है कि इस कल्प (युग) से एक लाख कल्प और एक असंख्य काल (असांशेय्या) पूर्व, पूज्य सारिपुत्त का जन्म एक अत्यंत धनी ब्राह्मण परिवार में हुआ था और वे शारद नामक बालक के रूप में जाने जाते थे। महामोग्गलाना का जन्म एक अत्यंत धनी गृहस्थ परिवार में हुआ था और वे श्रीवादन नामक गृहस्थ के रूप में जाने जाते थे। दोनों बचपन में मिट्टी के चूर्ण से खेलते थे। पिता के देहांत के बाद, शारद बालक ने परिवार की संपत्ति (पृष्ठ 372) का कार्यभार संभाला और एक दिन एकांतवास में चले गए और इस प्रकार चिंतन किया: "जीवों के लिए मृत्यु निश्चित है; इसलिए (यह उचित है कि) एक संन्यासी के पास जाकर मुझे मोक्ष का मार्ग खोजना चाहिए।" फिर वह अपने मित्र के पास गए और बोले, "मेरे मित्र! मैं संन्यासी बनना चाहता हूँ; तुम्हारा क्या विचार है? क्या तुम संन्यासी बन पाओगे?" जब उनके मित्र ने कहा कि वह ऐसा नहीं कर सकते, तो उन्होंने मन ही मन कहा, "छोड़ो, मैं ही संन्यासी बनूँगा"; उन्होंने अपने रत्नों और अन्य खजानों के भंडार खुलवाए, दरिद्रों और यात्रियों को बड़ी मात्रा में दान दिया, एक पहाड़ी की तलहटी में गए और संन्यास धारण कर लिया। उनके संन्यास के बाद चौहत्तर हजार ब्राह्मण पुत्रों ने संसार का त्याग कर संन्यासी बन गए। उन्होंने अपने भीतर पाँच प्रकार के उच्च ज्ञान और आठ प्रकार की ध्यान प्राप्ति (समापत्ति) उत्पन्न की और उन जटाधारी संन्यासियों को भी एकाग्रता के लिए कसिणा (कसीना) पर ध्यान लगाने के अभ्यासों के बारे में बताया। उन सभी ने भी पाँच प्रकार के उच्च ज्ञान और आठ प्रकार की ध्यान प्राप्ति (समापत्ति) प्राप्त की।

3.3. उस समय, सर्वज्ञ बुद्ध, जिनका नाम अनोमदस्सी था, संसार में प्रकट हुए, उन्होंने अपने उत्कृष्ट धर्मचक्र का संचालन किया; जीवों को पुनर्जन्मों के भयंकर चक्रों से पार कराया। एक दिन, ऋषि सारदा और उनके शिष्यों की सहायता करने की इच्छा से (संघः कम्मं कट्टुकमो), वे अकेले ही, बिना किसी साथी के, अपने कुंड और वस्त्र धारण करके आकाश से अवतरित हुए, जबकि ऋषि उन्हें देख रहे थे, ताकि वे उन्हें बुद्ध के रूप में पहचान सकें और पृथ्वी पर विराजमान हो सकें। ऋषि सारदा ने गुरु के शरीर में एक महान व्यक्तित्व के लक्षण देखे और यह निर्णय लिया, "यह तो सर्वज्ञ बुद्ध ही हैं", वे उनसे मिलने के लिए आगे बढ़े, एक आसन तैयार किया और उन्हें दिया। प्रतापी बुद्ध उस आसन पर विराजमान हुए। ऋषि सारदा गुरु की उपस्थिति में एक छोर पर बैठ गए।

3.4. उस समय, उनके लगभग चौहत्तर हजार शिष्य, जो उत्तम स्वाद वाले उत्कृष्ट फल लेकर लौटे थे, ने गुरु को देखा और उनके बैठने के तरीके को देखकर कहा, "आपसे बड़ा कोई नहीं है; परन्तु हम मानते हैं कि यह व्यक्ति आपसे श्रेष्ठ है।" उनके गुरु ने उत्तर दिया, "मेरे शिष्यों! तुम सब क्या कहते हो? क्या तुम सब साठ हजार योजन ऊंचे मेरु पर्वत, सिनेरु को राई के दाने के बराबर मानना चाहते हो? मुझे सर्वज्ञ बुद्ध के समान मत मानो।" तब उन तपस्वियों ने गुरु के वचन सुनकर मन ही मन कहा, "सचमुच यह व्यक्ति अत्यंत श्रेष्ठ है।" वे सब गुरु के चरणों में गिर पड़े और उन्हें प्रणाम किया।

3.5. तब उनके गुरु ने उनसे कहा, "मेरे प्रिय शिष्यों! गुरु के योग्य कोई भी धार्मिक अर्पण हमारे लिए उपयुक्त नहीं है; गुरु स्वयं भिक्षा मांगने के समय यहाँ आए थे; आओ, अब हम अपनी सामर्थ्य के अनुसार धार्मिक अर्पण करें।" यह कहते हुए कि "तुम्हारे पास जो भी उत्तम फल या अन्य वस्तुएँ हों, उन्हें ले आओ", गुरु-सन्यासी ने उन्हें मंगवाया, अपने हाथ धोए और स्वयं उन फलों को तथागत के भिक्षापात्र में डाल दिया। जिस क्षण गुरु ने फल (या अन्य वस्तुएँ) ग्रहण किए, उसी क्षण देवताओं ने अमृत (या दिव्य सार) उसमें डाल दिया। साधु ने स्वयं पीने का जल भी छानकर बुद्ध को अर्पित किया। इसके बाद, जब भोजन समाप्त हो गया और गुरु बैठ गए, तो उनके गुरु ने अपने सभी शिष्यों को बुलवाया और स्वयं गुरु के समक्ष बैठकर यादगार विषयों पर चर्चा करने लगे। गुरु ने मन ही मन सोचा,

"मेरे दो प्रमुख शिष्य भिक्षुओं के समूह के साथ आएँ।" ठीक उसी क्षण, प्रमुख शिष्य एक लाख अरहतों से घिरे हुए आए, उन्होंने प्रतापी को प्रणाम किया और एक तरफ खड़े हो गए।

3.6. तब ऋषि सारदा ने अपने शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा, "प्रिय शिष्यों! गुरु और भिक्षुओं के समूह को पुष्पों की वेदी अर्पित करके आदर करना चाहिए; अतः पुष्प लाओ।" उसी क्षण, उन्होंने अपनी जादुई शक्ति से उत्तम रंग और सुगंध वाले पुष्प लाकर बुद्ध के लिए एक योजन आकार की पुष्प वेदी, प्रमुख शिष्यों के लिए तीन गावूत आकार की पुष्प वेदी, शेष भिक्षुओं के लिए आधा योजन आदि आकार की पुष्प वेदी और नवदीक्षित भिक्षुओं के लिए एक उषभ आकार की पुष्प वेदी तैयार की। वेदी तैयार हो जाने पर, ऋषि सारदा ने तथागत के सामने हाथ जोड़कर कहा, "आदरणीय महोदय! कृपया मुझे आशीर्वाद देने के लिए इस पुष्प वेदी पर विराजमान हों।" प्रतापी बुद्ध स्वयं पुष्प वेदी पर विराजमान हो गए। जब गुरुजी बैठ गए, तो उनके दो प्रमुख शिष्यों और शेष भिक्षुओं ने भी अपने-अपने द्वारा लाए गए (या व्यवस्थित किए गए) आसनों पर बैठ गए। गुरुजी ने उन संन्यासियों के कल्याण के लिए निरोध ध्यान की अवस्था में प्रवेश किया। गुरुजी के समाधि में प्रवेश करने का ज्ञान प्राप्त होने पर, दोनों प्रमुख शिष्यों और शेष भिक्षुओं ने भी निरोध समाधि में प्रवेश किया। संन्यासी सात दिनों तक बिना किसी अंतराल के गुरुजी के ऊपर पुष्पों का छत्र धारण किए खड़े रहे। अन्य संन्यासी वन की जड़-जड़ियाँ और फल खाकर शेष समय तक हाथ जोड़कर खड़े रहे। सात दिनों की समाप्ति पर, गुरुजी निरोध समाधि से जागे और अपने प्रमुख शिष्य, थेरा निसाभा को संबोधित करते हुए कहा, "आप संन्यासियों को पुष्पों के आसन अर्पित करने के लिए धन्यवाद दें।" थेरा ने शिष्यों की सिद्धियों के ज्ञान पर विराजमान होकर उनके पुष्प-आसनों के दान के लिए उनका आभार व्यक्त किया। अपने धार्मिक प्रवचन (देशना) के अंत में, गुरु ने अपने दूसरे प्रमुख शिष्य, थेरा अनोमा को संबोधित करते हुए कहा, "तुम भी इन संन्यासियों को धर्म का उपदेश दो।" उन्होंने भी बुद्ध के उपदेशों का चिंतनपूर्वक अध्ययन किया, जिनमें तीन पितक शामिल थे, और उन्हें धर्म का उपदेश दिया। फिर भी, उन दोनों के उपदेशों से धर्म का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ। तब, गुरु ने बुद्ध के क्षेत्र में विराजमान होकर धर्म का उपदेश देना शुरू किया। अपने धार्मिक प्रवचन के अंत में, ऋषि सारदा को छोड़कर, शेष चौहत्तर हजार जटाधारी संन्यासियों ने अर्हतत्व प्राप्त किया। गुरु ने उनकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा: "आओ, हे भिक्षुओं।" उसी क्षण, वे सभी साठ वर्ष के वरिष्ठ भिक्षुओं के समान हो गए, जो अपने आठ धार्मिक वस्त्र धारण किए हुए थे और उनके तपस्वी स्वरूप का कोई अंश नहीं बचा था।

3.7. ऋषि सारदा ने मन ही मन कहा, "यदि भविष्य में मैं इस थेरा निसाभा के समान किसी बुद्ध का शिष्य बन सकूँ तो कितना अद्भुत होगा", और चिंतनशील विचारों के कारण वे ज्ञानहीन हो गए तथा उचित मार्ग और फल को ठीक से नहीं समझ पाए। तब उन्होंने गुरु को प्रणाम किया और इस प्रकार अपनी मनोकामना व्यक्त की। गुरु ने उनकी इस अवस्था को निर्बाध रूप से देखा और भविष्यवाणी की, "इसके बाद, जब एक लाख युग (कप्पा) और असंख्य काल (असंख्य) बीत जाएँगे, तब वे सर्वज्ञ बुद्ध गौतम के प्रमुख शिष्य बनेंगे, जिन्हें सारिपुत्त के नाम से जाना जाता है", और उपदेश देकर अपने भिक्षुओं के समूह से घिरे आकाश में विलीन हो गए। ऋषि सारदा भी अपने सहयोगी श्रीवाद्ध के पास गए और उनसे कहा, "प्रिय मित्र! मैंने सर्वज्ञ बुद्ध गौतम के प्रमुख शिष्य का पद पाने की इच्छा रखी है, जो भविष्य में तेजस्वी अनोमदेस्सी के चरणों में प्रकट होंगे; आप भी उस बुद्ध के द्वितीय प्रमुख शिष्य का पद पाने की इच्छा रखें।" यह सलाह सुनकर, श्रीवाद्ध ने अपने निवास के द्वार पर आठ 'करीसा' वर्ग मीटर भूमि को समतल करवाया, उस पर लाजा और भुट्टे के फूल बिखेरे, पाँचवें के रूप में नीले कमल की छत वाला एक मंडप बनवाया, बुद्ध का आसन तैयार करवाया, भिक्षुओं के लिए भी आसन तैयार करवाए, भव्य आतिथ्य सत्कार की व्यवस्था की, गुरु को ऋषि सारदा के साथ आमंत्रित किया, सात दिनों तक एक बड़ा दान-पुण्य करवाया, और बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के समूह को वस्त्रों से आच्छादित करवाया। श्रीवाद ने अत्यंत मूल्यवान ज्ञान प्राप्त किया और द्वितीय प्रमुख शिष्य बनने की दृढ़ इच्छा रखी। गुरु ने शिष्य द्वारा इस इच्छा के शीघ्र साकार होने को देखा, और उपर्युक्त तरीके से अपनी भविष्यवाणी की, भोज प्रसाद पर धन्यवाद अर्पित किया और प्रस्थान किया। श्रीवाद प्रसन्न और आनंदित हुआ, जीवन भर पुण्य कर्म किए और अपने दूसरे मानसिक अनुभव (चित्तवार) में इंद्रियलोक में पुनर्जन्म लिया। ऋषि सारद ने चार प्रकार के उच्च जीवन, ब्रह्म विहार को प्राप्त किया और ब्रह्माओं के लोक में पुनर्जन्म लिया।

3.8. उस समय से आगे उन दोनों के बीच के कर्मों का वर्णन नहीं किया जाएगा। हमारे प्रतापी प्रभु के प्रकट होने से पहले ही, ऋषि सारदा ने राजगृह से कुछ ही दूरी पर स्थित उपतिस्सा गाँव में ब्राह्मण स्त्री रूपसारी के गर्भ में जन्म लिया। उसी दिन, उनके सहोदी ने भी राजगृह से कुछ ही दूरी पर स्थित कोलिता गाँव में ब्राह्मण स्त्री मोग्गली के गर्भ में जन्म लिया। अत:, वे मोग्गलाना कहलाए; वे ब्राह्मण स्त्री मोग्गली के पुत्र थे; इस प्रकार, वे मोग्गलाना कहलाए। या, वे मोग्गली वंश में जन्मे थे; इस प्रकार, वे मोग्गलाना कहलाए। दूसरे शब्दों में, जब उनकी माता छोटी थीं, तब उनके माता-पिता ने उनसे कहा था: "थूकना मत; थूकना मत", इसी कारण उनका नाम 'मुग्गली' पड़ा; क्योंकि वे मुग्गली नाम की महिला के पुत्र हैं; इस प्रकार उनका नाम मोग्गलाना पड़ा। दूसरे शब्दों में, वे सोतापत्ति से शुरू होने वाले सही मार्ग को प्राप्त करने, उस पर चलने और उसमें पूर्णतः प्रवेश करने में सक्षम थे; इस प्रकार उनका नाम मोग्गलाना पड़ा। कहा जाता है कि

वे दोनों परिवार सातवीं पीढ़ी तक घनिष्ठ मित्र थे। उन्होंने दोनों को एक ही दिन गर्भाधान कराया। दस महीने बाद जब उनका जन्म हुआ, तब उन्होंने उन्हें छियासठ दाइयाँ उपलब्ध कराईं। उनके नामकरण के दिन, ब्राह्मण महिला रूपसारी के पुत्र होने के कारण, उनका नाम उपतिस्सा रखा गया। दूसरे को, कोलिता गाँव के सबसे बड़े परिवार का पुत्र होने के कारण, कोलिता नाम दिया गया। दोनों ही अपने-अपने परिवार के साथ पले-बढ़े और वयस्क होने पर सभी प्रकार के विज्ञानों में निपुण हो गए।

3.9. फिर एक दिन, उन्होंने राजगृह में पहाड़ी की चोटी पर आयोजित उत्सव में एकत्रित लोगों की विशाल भीड़ को देखा। ज्ञान की पूर्ण परिपक्वता प्राप्त कर चुके वे बुद्धिमानी से उभरे और बोले: "ये सभी लोग सौ वर्ष के जीवनकाल से पहले ही मृत्यु के मुंह में प्रवेश कर रहे हैं।" पश्चाताप से भर कर उन्होंने यह संकल्प लिया: "हमें मुक्ति के धर्म का अनुसरण करना चाहिए; वास्तव में, उसी की खोज में, अकेले ही भिक्षुत्व प्राप्त करना उचित है।" वे पाँच सौ युवकों के साथ भ्रमणशील तपस्वी संजय की उपस्थिति में संन्यासी बन गए। उनके त्याग के समय से ही संजय लाभ और प्रसिद्धि में सर्वोच्च स्थान पर पहुँच गए। कुछ ही दिनों में उन्होंने संजय के संपूर्ण धर्म का सार नष्ट कर दिया। बाद वाले लोग पूछे गए किसी भी प्रश्न का संतोषजनक उत्तर नहीं दे सके। दूसरी ओर, उन्होंने स्वयं दूसरों की समस्याओं का समाधान किया। इस प्रकार मुक्ति की खोज में उन्होंने यह आपसी सहमति बनाई: "हममें से जो भी पहले अमरत्व प्राप्त करे, वही दूसरे को सूचित करे (या उसे सूचित करने दे)।" उस समय तक, हमारे गुरु, बुद्धत्व की सर्वोच्च ज्ञान प्राप्ति कर, सर्वप्रथम धर्म के उत्कृष्ट चक्र का संचालन कर रहे थे, धीरे-धीरे उरुवेलकस्सपा के नेतृत्व में हजार जटाधारी तपस्वियों को वश में कर लिया था, और राजगृह में निवास कर रहे थे। तभी एक दिन, भ्रमणशील तपस्वी उपतिस्सा, भ्रमणशील तपस्वियों के आश्रम (परिब्बाजकारम) जाते समय, आदरणीय थेरा असज्जी को राजगृह में भिक्षा के लिए भटकते हुए देखकर, भक्ति से प्रेरित होकर मन ही मन कहने लगे, "ऐसा आचरणशील भिक्षु मैंने पहले कभी नहीं देखा; यहाँ अवश्य ही ऐसा कोई होना चाहिए, अर्थात् शांत सत्य (संतधम्म) से युक्त।" वे आदरणीय थेरा से ईर्ष्या करते हुए, उनसे प्रश्न पूछने के लिए उनके पीछे-पीछे चलने लगे। थेरा ने भी भिक्षा प्राप्त कर ली और एक उपयुक्त स्थान (या स्थल) पर चले गए। घुमंतू तपस्वी ने अपना परिब्बाजकपीठ (घूमते तपस्वी का आसन) तैयार किया और उसे थेरा को भेंट किया। थेरा के भोजन के बाद, उन्होंने अपने प्याले से थेरा को जल पिलाया। इस प्रकार एक गुरु के रूप में अपने कर्तव्यों का पालन करने के बाद, उन्होंने भोजन कर चुके थेरा से वार्तालाप किया और पूछा, "आपके गुरु कौन हैं? या किसका सिद्धांत (धम्म) आपको प्रसन्न करता है?" थेरा ने सर्वज्ञ बुद्ध का उल्लेख किया। जब थेरा ने उनसे फिर पूछा, "आपके आदरणीय गुरु कौन हैं?", तो थेरा ने मन ही मन कहा, "मैं इसे बुद्ध के शासन (शासन) की गहनता दिखाऊंगा", और उन्हें स्वयं के नए होने की बात बताई, तथा संक्षेप में उन्हें शासन (धम्म) का उपदेश दिया और यह श्लोक सुनाया: "जो भी घटनाएँ (धम्म) प्रमुख कारण से उत्पन्न होती हैं", इत्यादि।श्लोक के पहले दो चरण सुनकर ही विचरण करने वाले तपस्वी ने मोक्ष के प्रथम चरण (सोतापत्ति) की प्राप्ति कर हजार विधियों का ज्ञान प्राप्त कर लिया। श्लोक के शेष दो चरण उस समय समाप्त हुए जब श्रोता सोतापन्न (स्रोत-मार्गदर्शक) बन चुका था। श्लोक के पूर्ण अंत में, सोतापन्न (स्रोत-मार्गदर्शक) बनने के बाद, जब आगे कोई विशिष्ट उपदेश नहीं दिया गया, तो विचरण करने वाले तपस्वी ने ध्यानपूर्वक कहा, "यहाँ अवश्य ही कोई कारण होगा", और थेरा से पूछा, "आदरणीय गुरुदेव! कृपया अपने सत्य (धम्म) के उपदेश को और आगे न बढ़ाएँ; इतना ही पर्याप्त है, हमारे गुरु कहाँ निवास करते हैं?" उत्तर था, "बाँस के वन (वेलुवन) में।" घुमंतू तपस्वी ने पांच प्रकार की मुद्राओं में थेरा को प्रणाम करते हुए कहा: "आदरणीय महोदय! आप कृपया आगे बढ़ें, मैं अपने साथी से किया वचन पूरा करूंगा और उसे अपने साथ लेकर आऊंगा", थेरा की परिक्रमा की, उसे विदा किया और स्वयं घुमंतू तपस्वियों के आश्रम (परिब्बाजकारम) की ओर चल दिया।

3.10. घुमंतू तपस्वी कोलिता ने उन्हें दूर से आते हुए देखा और मन ही मन कहा, "इनका चेहरा तो आम दिनों जैसा नहीं है; निश्चय ही इन्होंने अमरत्व (अमता) प्राप्त कर लिया है।" उन्होंने उपतिस्सा से पूछा कि इतनी विशिष्ट उपलब्धि को विधिवत विकसित करने के बाद भी उन्होंने अमरत्व कैसे प्राप्त किया। उपतिस्सा ने भी अपने मित्र से कहा, "प्रिय मित्र! अमरत्व (अमता) प्राप्त हो गया है।" उन्होंने वही श्लोक सुनाया। श्लोक के अंत में, कोलिता ने मोक्ष की प्रथम अवस्था की सिद्धि प्राप्त कर ली और पूछा, "हमारे गुरु कहाँ हैं?" उत्तर मिला, "बांस के वन (वेलुवन) में।" कोलिता ने कहा, "अच्छा, मित्र! चलो चलते हैं; हम गुरु के दर्शन करेंगे।" उपतिस्सा अपने गुरु का सदा आदर करते थे; इसलिए, अपने गुरु संजय के गुणों को प्रकट करते हुए, वे उन्हें भी गुरु के दर्शन कराना चाहते थे। लेकिन उनके गुरु, लाभ की लालसा के कारण, उनके शिष्य बनने की इच्छा न रखते हुए, उनके साथ जाने से इनकार कर दिया और कहा: "जलदान बनकर मैं जल छिड़कने वाला नहीं बन सकता।" वे दोनों उन्हें अनेक कारण बताकर भी समझाने में असमर्थ रहे और अपने साथ आए ढाई हजार शिष्यों को लेकर बाँस के वन (वेलुवन) चले गए। गुरु ने उन्हें दूर से ही आते देखा और मन ही मन कहा: "ये दोनों मेरे शिष्यों की जोड़ी बनेंगे; श्रेष्ठ और उत्तम जोड़ी।" उन्होंने उनके समूह को अभ्यास के रूप में सत्य (धम्म) का उपदेश दिया, उन्हें अर्हत पद पर स्थापित किया और उन्हें भिक्षु श्रेणी का भिक्षु बनाकर पूर्ण दीक्षा दी। जैसे उन्हें मिली, वैसे ही उनके श्रेष्ठ शिष्यों को भी, जो उच्च जादुई

शक्तियों से प्राप्त हुए थे, साधारण रूप से ही प्राप्त हुए थे। यद्यपि तीन उच्चतर मार्गों का कार्य पूर्ण नहीं हुआ। क्यों? क्योंकि शिष्य की पूर्णता के ज्ञान की महानता के कारण।

3.11. उन दो में से, पूज्य महामोग्गलाना, भिक्षु बनने के सातवें दिन, मगध राज्य के कल्लावाला गाँव में अपने भिक्षु कर्तव्यों (समणधम्म) का पालन करते हुए, जब वे आलस्य और उन्मत्तता से पीड़ित थे, तो उन्हें गुरु द्वारा जागृत किया गया, जिन्होंने उनके आलस्य और उन्मत्तता को दूर किया, तत्वों पर ध्यान अभ्यास (धातुकम्मत्थान) सुनते हुए तीन उच्चतर सही मार्ग प्राप्त किए, और शिष्य की पूर्णता से संबंधित ज्ञान के शीर्ष को प्राप्त किया। आदरणीय सारिपुत्त ने भिक्षु बनने के बाद आधा महीना राजगृह में सूअरों द्वारा खोदी गई गुफा में गुरु के साथ बिताया, जहाँ वे अपने भतीजे, लंबे नाखूनों वाले विचरणशील तपस्वी (दीघनाखापरिब्बाजक) को उपदेश दे रहे थे। इस दौरान उन्होंने अपने उपदेश के अनुरूप अपनी बुद्धि का उपयोग किया और शिष्य की पूर्णता से संबंधित ज्ञान की सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त किया, मानो किसी अन्य व्यक्ति द्वारा तैयार किया गया भोजन ग्रहण किया हो। इस प्रकार, दो प्रमुख शिष्यों ने गुरु के निकट रहकर भी शिष्य की पूर्णता से संबंधित ज्ञान की सर्वोच्च अवस्था को प्राप्त किया।

3.12. इस प्रकार, शिष्य की पूर्णता से संबंधित ज्ञान के स्वामी, पूज्य सारिपुत्त ने इस प्रकार चिंतन करते हुए कि "यह उपलब्धि किस कर्म से प्राप्त हुई?", इसका ज्ञान प्राप्त किया और उत्साह और मानसिक आनंद से प्रेरित होकर, "हिमवंतास्सा अविदुरे, हिमवंता पर्वत श्रृंखलाओं से अधिक दूर नहीं" से शुरू होने वाले इस श्लोक का पाठ किया। अतः कहा गया है:

141.

असमो सुकातो मयहम, पंससाला सुमापिति"

हिमावंता पहाड़ी से कुछ ही दूरी पर एक पहाड़ी स्थित थी।

नाम से लंबका;

मेरे लिए एक आश्रम अच्छी तरह से बना हुआ था, पत्तों की

झोपड़ी अच्छी तरह से बनाई गई थी

141.1. हिमवंतस्सः, वहाँ, का अर्थ है: वहाँ बर्फ है; अतः, हिम का स्वामी (हीनवा), अविदुरे (निकट) उस हिमवंता के निकट है; बर्फ से ढका पाला वन; यही अर्थ है। लंबको नाम पब्बतो (लंबका नामक पर्वत) मिट्टी से मिश्रित पर्वत है, इसलिए इसका नाम ऐसा रखा गया है। उस लंबका पर्वत में (मेरे उद्देश्य के लिए बनाया गया मेरा वन-निवास मेरे लिए बनाया गया था) मेरे लिए सुकून भरा आश्रम है, जो चारों ओर से शांत है; यही आश्रम (अस्समा) है। या, यहाँ प्रवेश करने वालों को कोई थकान या थकावट नहीं होती; यही आश्रम (अस्समो) है; वह सुखद वन-निवास विधिवत बनाया गया है; इसे रात्रि विश्राम, दिन का विश्राम, शौचालय, पंडाल आदि जैसी उत्कृष्ट विशेषताओं के साथ बनाया गया है; यही अर्थ है। पन्नासाला (पत्तों की झोपड़ी) का अर्थ है पत्तों और सुगंधित सरकंडों से ढकी हुई आवासीय झोपड़ी; इस प्रकार इसका अर्थ है।

142. उत्तानकुल नदीका, सुपतिषा मनोरमा

सुसुद्धपुलिनाकिन्ना, अविदुरे ममस्सामम।

मेरे आश्रम से ज़्यादा दूर नहीं, एक नदी है जिसके साथ

उसका तटबंध दूर तक फैला हुआ, मनमोहक

रेत से भरा हुआ, शुद्ध और समतल उतरने का स्थान।

साफ।

142.1. उत्तानाकूला (तटीय किनारा) एक उथली नदी है। सुपतिष्ठा (अच्छा घाट) एक उत्कृष्ट तटबंध है। मनोरमा (मन को भाने वाली) मन को प्रसन्न करने वाली, हृदय को प्रिय लगने वाली है। सुषुद्धपुलिनाकिन्ना (स्वच्छ, शुद्ध रेत से भरी हुई) का अर्थ है: चमकदार सफेद मोतियों के टुकड़ों के समान साफ की गई रेत से भरी हुई; यही अर्थ है। वह सुखद नदीका (छोटी नदी) ममस्समम (पास थी) मेरे आश्रम से ज्यादा दूर नहीं थी; यही अर्थ है। 'अस्समम' को स्थानवाचक अर्थ में सातवें कारक के अंत के साथ लोप (या संक्षिप्त अभिव्यक्ति) के रूप में समझा जाना चाहिए।

143. असक्खरा ए पब्भरा, सदु अप्पशिगंधिका

संदति नादिकत्थ, सोभयंता ममस्सामम्

बजरी नहीं, ढलान नहीं, अच्छी और गंधहीन सतह।

वहाँ एक छोटी नदी बहती है, जो मेरे आश्रम को बनाती है।

आनंददायक।

143.1. असक्खरा (कंकड़ रहित) का अर्थ है कंकड़ (या रेत) रहित, क्योंकि इसे "पुलिनाकिन्ना, रेत से बिखरा हुआ" कहा गया है। अपभरा (ढलान रहित) का अर्थ है अचानक ढलान, उथला किनारा; इस प्रकार, इसका अर्थ है। सादुअप्पतिगंधिका (सुगंध रहित) का अर्थ है अच्छा स्वाद वाला पानी, बुरी गंध से रहित, मेरे आश्रम की शोभा बढ़ाए; नादिका (छोटी नदी) का अर्थ है छोटी नदी; संदति (बहती है) का अर्थ है ऐसा होना; इस प्रकार, इसका अर्थ है

144, कुंभिलामकारा चेत्था, सुसुमरा च कक्कपा,
संदतिनादिका तथा, सोभयंता मम'समम्।
यहां मगरमच्छ, शार्क (मकारा) थे।
मगरमच्छ और कछुए;
वहाँ छोटी नदियाँ बहती थीं, जिससे मेरा
आश्रम सुखद था

144.1. कुंभिला (मगरमच्छ) वहाँ मछली है; मकरा (शार्क) मछली है और सुसुमारा (बाल वध करने वाली) क्रूर मछली है, कच्छपा (कछुआ) भी मछली है; एत्था (यहाँ) इस नदी में हैं, जो खेल रहे थे; इस प्रकार, संबंध है। मेरे आश्रम को सुशोभित करती हुई नादिका (छोटी नदी); संदति (बहती) है; इस प्रकार, संबंध है।

145. पशिना पावुसा मच्छा, बालाजा मुंजरोहिता।
वग्गगा पपतायन्ता, सोभयन्ति मम'सम्म्।
मछली की ऐसी किस्में जैसे पाशिना, पावुसा
बालाजा, मुंजा, रोहिता, वाग्गागा तैरते रहते हैं
और मेरे आश्रम को सुशोभित करें।

145.1. पाठीना, पावुसा मच्छा, बलजा, मुंज रोहिता और वग्गला मछलियों और जलीय जीवों की किस्में हैं; यहाँ-वहाँ से, मछली की ये सभी प्रजातियाँ पापतूयोन्ता (गिरती और बहती हुई) नदी के साथ बहकर मेरे आश्रम को सुशोभित करती हैं; यही अर्थ है।

146. उभोकुलेसु (दोनों किनारों पर) वहाँ, है: उस नदी के दोनों किनारों पर, स्थायी रूप से फूल देने वाले और बारहमासी फल देने वाले वृक्ष, नदी के दोनों किनारों पर झुके हुए, मेरे आश्रम की शोभा बढ़ाते हैं; यही अर्थ है।

147. अम्बा शाला च तिलका, पाटलि, सिन्दुनारका;
दिब्बागंधा संपवंती, पुप्फिटा मामा-
असम।
आम (अंबा) साल (साला) जैसे पेड़
तिलक, पाटली और सिंधुवारक, खिलते हुए
फूलों के साथ दिव्य मधुरता प्रवाहित होती है
मेरी कुटिया की ओर आती हुई सुगंध।

147.1. वहाँ आम (अंबा) हैं: मीठे, गुठलीदार आम; साल (साल) है: साल का पेड़; तिलका का पेड़, पाटली का पेड़ और सिंधीवारक का पेड़; ये पेड़ हमेशा फूलते रहते हैं। मेरे आश्रम में, चारों ओर से मधुर, दिव्य सुगंध से मिलती-जुलती हवा आती है; यही इसका अर्थ है।

148. चंपका सलाला निपा, नागा पुन्नागा केतका;
दिब्बागंधा संपावन्ति, पुप्फिटा मम अस्समे।
कैम्पाका, सलाला, नीपा, नागा जैसे वृक्ष।
पुन्नाग और केतका वृक्ष से भी मधुरस निकलता है
दिव्य सुगंध, खिले हुए फूलों के साथ
मेरा आश्रम।

148.1. चंपक वृक्ष, वहाँ, साललला वृक्ष, नीपा वृक्ष, जिसके फूल सोने की अंगूठियों जैसे दिखते हैं, नाग वृक्ष, पुन्नागा वृक्ष, और मीठी सुगंध वाला केतका वृक्ष, ये सभी वृक्ष, पुफ्फीता, दिव्य सुगंध के समान सुगंध वाले फूलों से खिलते हैं, संपवंती (अच्छी तरह से बहते हैं) मीठी सुगंध की अच्छी हवा भेजते हैं

149. अधिमुत्ता अशोक च, भगिनीमला च पप्तिता;
अनलोला बिम्बिजाला च, पुप्फिटा मम अस्समे।

अधिमुत्तका जैसे फूल वाले वृक्ष,
अशोक, भगिनीमाला, अंकोला और बिम्बिजाला
मेरे आश्रम में खिल उठें।
149.1. वहाँ, पुष्पयुक्त अधिमुत्तक वृक्ष, पुष्पयुक्त अशोक वृक्ष, पुष्पयुक्त भगिनामाला वृक्ष, पुष्पयुक्त अंकोला वृक्ष और पुष्पयुक्त बिम्बिजाला वृक्ष हैं; ये वृक्ष ऐसे फूल धारण करते हैं जो मेरे आश्रम की शोभा बढ़ाते हैं; इस प्रकार, संबंध है।
150. केतका कंडाली सेवा, गोधुका तिनासूलिका;
दिब्बागंधं संपवंता, सोब्बयंति मम'स्समम्
वहाँ केतका एक मीठी सुगंधित केतका झाड़ी है,
और कंदली का पेड़, साथ ही गोधुका का पेड़ भी।
और साथ ही तिनसूलिका नामक झाड़ी, जो उत्सर्जित करती है
दिव्य सुगंध से महक, मेरे आश्रम को सुशोभित करो।
150.1. वहाँ, सुगंधित केतका झाड़ी, कंदली और गोधुका वृक्ष तथा तिन सूलिका झाड़ी, ये सभी वृक्ष प्रजातियाँ, दिव्य सुगंध उत्सर्जित करते हुए, मेरे पूरे आश्रम को समाहित कर देती हैं; यही अर्थ है।
151. कणिकारा कणिका च, आसन अज्जुना बाहु
दिब्बागंधम संपवंता सोभयंती मम'
समम।
कणिकारा, कणिका जैसे कई वृक्ष,
आसन और अज्जुना दिव्य सुगंध उत्सर्जित करते हैं
मेरे आश्रम की शोभा बढ़ाएँ।
151.1. काणिकारा से शुरू होकर, मेरे पूरे आश्रम की शोभा बढ़ाने वाले ये वृक्ष दिव्य सुगंध उत्सर्जित करते हैं; इस प्रकार, संबंध है
152. पुन्नागा गिरीपन्नागा, कोवियारा च पफिता
दिब्बागंधम संपवंता, सोभयंती मां'
समम।
पुष्पधारी पुन्नागा, गिरिपुन्नागा
और कोविलारा (कोरल वृक्ष), उत्सर्जित करते हुए
दिव्य सुगंध, मेरे आश्रम को सुशोभित करो;
152.1. पुन्नागा से शुरू होने वाले और इसी तरह आगे आने वाले वृक्ष, दिव्य सुगंध बिखेरते हुए, मेरे आश्रम की शोभा बढ़ाते हैं; यही अर्थ है।
153. उद्दालका च कुशजा, कदंब वकुला बाहु;
दिब्बागंधम संपवंता, सोभयंती मां'
समम।
उद्दालक, कुटज जैसे कई पेड़
लाडाबा और वकुला, दिव्य ऊर्जा उत्सर्जित करते हुए
सुगंध, मेरे आश्रम को सुशोभित करो।
153.1. उद्दालका से शुरू होकर आगे बढ़ते हुए, दिव्य सुगंध बिखेरने वाले वृक्ष मेरे आश्रम की शोभा बढ़ाते हैं; इस प्रकार, संबंध है।
154. अकाका इसिमुग्गा सीए, कदली मातुलुंगियो
गंधोदेकेन संवादधा, फलानिधारयन्ति ते।
ऐसी झाड़ियाँ, जैसे आका, इसिमुग्गा, कदली और
मातुलुंगी, सुगंधित पानी विकसित करते हैं और
उनके प्रतिफल निश्चित रूप से उत्पन्न होते हैं।
154.1. वहाँ, आलक से शुरू होने वाली ये झाड़ियाँ, चंदन के पानी जैसी मीठी सुगंध से परिपूर्ण होकर, सुनहरे फल धारण करती हैं, जो मेरे आश्रम की शोभा बढ़ाती हैं; यही इसका अर्थ है।

155. अण्णे पुप्फन्ति पदुमा, अण्णे जयंती केसरी
अण्णे ओपुप्पा पदुमा, पुफ़िता तायके तदा।
उस समय तालाब में फूल खिले थे
जैसे पद्मा, केसरी और कुछ कमल।
पुप्पा।
155.1. वहाँ, अञ्ञे पुप्पन्ति पदुमा है: मेरे आश्रम के पास तालाब में कुछ पद्म कमल खिलते हैं; कुछ केसरी पद्म कमल; जयंती उगते हैं और अस्तित्व में आते हैं; कुछ ओपुप्पा, पद्म कमल अपनी पंखुड़ियाँ और रोएँदार पराग गिराते हैं; इस प्रकार, इसका अर्थ है
156. गब्बम गंशांति पदुम, निद्धवंति
मूलालियो।
सिंहतिपट्टमाकिन्ना, सोभन्ति तलके
तदा।
पद्मा कमल के पौधे अपनी कलियों को पकड़ लेते हैं;
पद्मा कमल के पौधों की जड़ें नीचे की ओर बढ़ती हैं
गहरा; सुगंधित पंखुड़ियों से भरा हुआ;
उस समय वे झील की शोभा बढ़ाते हैं।
156.1. वहाँ, गभम गंहंति पदुमा की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए:- जब मैं अपने आश्रम में निवास कर रहा था और संन्यासी बन गया था, तब झील के भीतर कुछ पदुमा कमलों में कलियाँ, फूल आदि खिलने लगे। मूलालियो का अर्थ है: पदुमा कमल के पौधों की जड़ें; निद्धावंति का अर्थ है, वे यहाँ से निकल जाते हैं, अर्थात् हाथियों के दांतों की तरह कीचड़ के भीतर से निकलते हैं; इस प्रकार, इसका अर्थ है।
157. नैयिता अंबगंधी च, उत्तलि बंधुजीवका;
दिब्बागंधा संपावन्ति, पुप्फिटा ताउके
तदा।
फिर झील पर फूल खिले और
ऐसी झाड़ियाँ दिव्य सुगंध बिखेरती थीं।
नायिता, अब्बागंधी और उत्तरालि के रूप में भी
बंधुजीवका के रूप में।
157.1. तदा (उस समय) का अर्थ है जब मैं वहाँ निवास कर रहा था; झील के पास नयिता, अंबगंधी, च, उत्तली और बंधुजीवका, पुप्फीता जैसी सभी झाड़ियाँ खिल उठीं और अच्छी सुगंध बिखेरकर उसे सुशोभित कर दिया; यही इसका अर्थ है
158. पाशिना पावुसा मच्छा, बालाजा मुंजरोहिता
समगुला मग्गुरा सेवा, वासंती ताअके तदा।
उस समय, ये झील में रहते थे।
पशिना, पावुसा, बालाजा, मुंजारो जैसी मछलियाँ-
हिटा, समगुला और मग्गुरा भी।
158.1. तदा (तब) है: मेरे वहाँ निवास करने के समय, पाथिना और इसी प्रकार की निर्भीक मछलियाँ रहती थीं, तलके (झील में)।
159. कुंबिला सुसुमरा च, तंतीगाहा च रक्खसा;
ओगुहा अजगरा च, वसंती ताउके तदा।
उस समय झील में ऐसे जीव रहते थे, जैसे
जलीय जीव जैसे मगरमच्छ, घड़ियाल,
और तांतीगाहा, रक्खासा, ओगुहा जैसी मछलियाँ
और अजगरा।
159.1. तदा (तब) जब मैं वहाँ निवास करता था, मेरे आश्रम के पास झील में, वहाँ मगरमच्छ, मछली आदि जैसे जलीय जीव बिना किसी भय और खतरे के रहते थे

160. पारेवत रविहंसा, चक्कवाका नादिकारा;
कोकिला सुका सईका, उपजीवन्ति तम सारं।
वहाँ के लोग उस झील पर निर्भर होकर रहते थे,
पारेवत, रविहंसा (गायन) जैसे पक्षी
हंस), नादिकारा चक्कवका (लाल रंग का हंस),
हंस, नदियों के किनारे घूमता हुआ), कोकिला
(कोयल), सुका (तोते) और सालिका
(मैना)।

160.1. वहाँ, मेरे आश्रम के पास, झील के किनारे, परेवत (कबूतर), रविहंस (गायन हंस), नदी में घूमने वाला लाल हंस, कोकिला (कोयल), सुका (तोते) और सालिका (मैना) जैसे पक्षी रहते थे। ये पंख वाले जीव उस झील के पास रहते थे।

161. कुकुशाशाका कुइरका, वेने पोक्खराशाका;
डिंडीभा सुवपोता च, उपजीवन्ति तम सरं।
उस झील के पास ऐसे पक्षी रहते थे जैसे
जिनका नाम कुकुत्त्हका (केकड़ा-पक्षी), कुलीराका है
(केकड़ा-पक्षी), पोक्खरसातका (एक प्रजाति)
जंगल में सारस), दिंडीभा नामक पक्षी, और
सुवापोता (छोटे तोते)।

161.1. वहाँ, कुकुष्ठक (केकड़ा खाने वाले पक्षी) नामक पंख वाले जीव, कुलीरका (केकड़ा पक्षी) नामक पंख वाले जीव, जंगल में पोक्खरसातका (कमल वस्त्र वाला सारस), दिंडीमा, पंख वाले जीव और सुवापोता (छोटे तोते); ये सभी पंख वाले जीव मेरे आश्रम के पास उस झील पर निर्भर रहते थे, इस प्रकार, संबंध है

162. हम्सा कोनचा मयूरा सीए, कोकिला तम्बाकुलका;
पम्मका जीवमजीवा च, उपजीवन्ति तम सारम्।
हंस, बगुला, मोर जैसे पक्षी,
कोयल, तांबे के रंग की कलगी वाली चिड़िया,
(तम्बाकुलक), प्सम्माका नाम के पक्षी,
और तीतर (जीवमजीव) रहते थे
उस झील के पास।

162.1. हंसों आदि से शुरू होकर ये सभी पंख वाले जीव उस झील पर निर्भर रहते हुए अपना जीवन यापन करते थे; यही इसका अर्थ है

163. कोसिका पोशहसीसा च कुरारा सेनका बाहु;
महाकाल च सकुना, उपजीवन्ति तम सरं।
ऐसे कई पक्षी जैसे उल्लू (कोसिका), पौशासीसा,
ओस्प्रे (कुरारा), बाज (सेनाका), और
उस झील के पास एक बड़ा काला पक्षी (महाकाला) रहता था।

163.1. वहाँ, पंख वाले प्राणी कोसिका (उल्लू), पोत्थासीसा, कुरारा (ओस्प्रे), सेनाका (बाज), महाकाला (बड़े काले पक्षी) जो भूमि पर बहुतायत में थे, जीवन्ती (रहते थे), उस झील के पास अपना जीवन यापन करते थे।

164. पसादा च वराह च, कैमरा गंडका बाहु;
रोहिच्चा सुकपोता च, उपजीवन्ति तम सरं।
पसाद (चित्तीदार) जैसे कई प्रकार के जानवर
मृग), वराह (जंगली सूअर) कैमरा (याक)।
बैल) और खेल जानवर (अंडका),
रोहिका और सुकापोटा नाम के हिरण उस जगह के पास रहते थे।
झील।

164.1. वहाँ, चित्तीदार हिरण जैसे शिकारी जानवर, उस झील के पास, (यह शब्द भूमि के अर्थ से जुड़ा है) रहते थे, अपने जीवन की देखभाल करते हुए; इस प्रकार, इसका अर्थ है
165. सिहब्यग्घा च दीपक, अच्चकोकटराच्चरा;
तिधा पभिन्नमतांग, उपजीवन्ति तम सारम्।
शेर, बाघ और तेंदुआ, भालू, भेड़िये,
लकड़बग्घे, तीन अलग-अलग प्रकार के माटांगा हाथी
विभिन्न प्रकार के तीव्र संभोग (तिधा पभिन्ना) में रहने वाले लोग
उस झील के पास।
165.1. शेर आदि जैसे चौपाये झील के पास रहते थे, खतरे से मुक्त; इस प्रकार, संबंध है।
166. किन्नरा वानर कोवा, अथो पि वनकम्मिका;
चेता च लुडका सीएव, उपजीवन्ति तम सारम्।
मानव सिर वाले पक्षी (किन्नारा) और बंदर
साथ ही, और इसके अलावा, जंगलों में काम करने वाले मजदूर,
(वनकम्मिका), डिकॉय-पक्षी (सीटा) और
शिकारी (लुद्दका) भी पास में ही रहते थे।
वह झील।
166.1. यहाँ, ऐसे और इसी नाम के प्राणी जैसे मानव-सिर वाले पक्षी (किन्नारा) इत्यादि उस झील के पास रहते थे; इस प्रकार, इसका अर्थ है
167. तिन्दुकानि पियालानि, मधुके कासुमरियो;
धुवमफलानी धारेन्ति, अविदुरे ममअसमम्।
मेरे आश्रम से कुछ ही दूरी पर, ऐसे फल देने वाले पेड़
पेड़ जैसे: तिन्दुका, (अंजीर), पियाला, मधुका, और
कासुमारी, बारहमासी (या स्थायी रूप से) जन्म देती है
फल।
167.1. वहाँ, ये पेड़, तिन्दुका से शुरू होकर, और इसी तरह, मेरे आश्रम से कुछ ही दूरी पर उगते हुए, तीनों ऋतुओं के दौरान हर समय मीठे फल देते थे, जिन्हें बर्फीली, धूप वाली और बरसात की ऋतुएँ माना जाता है; इस प्रकार, यह संबंध है
168. कोसंबा साउला निम्मा, सादु फलसामायुता;
धुवं फलानि धारेन्ति, अविदुरे ममस्सामम्।
कोसोम्बा जैसे पेड़, मीठी सुगंध वाले
सालाला और निम्मा अच्छे से जुते हुए
फल, स्थायी रूप से फल देने वाले, दूर नहीं
मेरे आश्रम से।
168.1. वहाँ, कोसंबा से शुरू होने वाले ये वृक्ष, जिनके फल स्वादिष्ट, मीठे और अत्यंत उत्कृष्ट हैं, समायुता (सम, अच्छी तरह से, ठीक से आयुत, जुड़ा हुआ) गठित या अच्छी तरह से आपूर्ति की गई है, हमेशा फल देते थे, मेरे आश्रम के पड़ोस को सुशोभित करते थे; इस प्रकार, इसका अर्थ है
169. हरितका आमलका, अम्बजम्बुविभीतक;
कोला भल्लाटका भिल्ला, फलानि धरतन्ति ते।
ऐसे वृक्ष जैसे: पीला मायरोबालन वृक्ष
(हरितक), एम्बोलिक हरड़ वृक्ष (अमलका),
आम का पेड़ (अंबा), यूजेनिया का पेड़
(जम्बू), बेलेरिक मायरोबालन वृक्ष (विभीतक),
जुजुलह फल वृक्ष (कोला), चिह्नांकन

अखरोट का पेड़ (भल्लाटक), बिल्व का पेड़ (भिल्ला),
फल लगे।
169.1. वे पेड़, पीले मायरोबालन आदि से शुरू होकर, जो मेरे आश्रम के पास उगते थे, लगातार फल देते थे; इस प्रकार, संबंध है
170. अलुवा च कलंबा च बिआलि तक्कानि च;
जीवका सुतका सीव, बाहुका मम असमे।
मेरे आश्रम में ऐसे कई पौधे थे।
जैसे: बल्बनुमा पौधा (अलुवा), मूली (काअंबा),
कंद पौधा (बियाली), रजनीगंधा (तक्काआ)
और जीवक का पौधा तथा सूतक का पौधा भी।
170.1. आलुवा आदि से शुरू होने वाले ये थोड़े मीठे जड़ वाले फल मेरे आश्रम के पास प्रचुर मात्रा में थे; इस प्रकार, यह संबंध है।
171. असमस्सविदुरमहि, ताकाकासुम सुनिम्मिता;
अच्छोदका सीताजला, सुपतिषा मनोरमा।
मेरे आश्रम से ज्यादा दूर नहीं, वहाँ
वे ठंडे पानी वाली सुव्यवस्थित झीलें थीं।
एकदम स्पष्ट, मन को आनंदित करने वाला,
उनके उत्कृष्ट लैंडिंग स्पॉट के साथ।
171.1. वहाँ, असमससाविदूरम्ही (आश्रम से दूर नहीं) आश्रम के पास, सुनिमित्ता (सुगठित) (अर्थात रचनात्मक रूप से निर्मित) जो आरोहण और अवरोहण में सुगम हो; अच्छोदका (स्वच्छ जल) पारदर्शी रूप से स्वच्छ जल; सीताजला (शीत जल) ठंडा जल; सुपतिष्ठा (अच्छा घाट) उत्कृष्ट तटबंध; मनोरमा (मन को प्रसन्न करने वाली) झीलें जो मन को प्रसन्न करती हैं; आसुम (हो गए) हो गए; इस प्रकार, अर्थ है।
172. Padumuppalasañchannā; puṇḍarikasamāyutā;
Mandālakehisañchannā, dibbagandho pavāyati
ये झीलें, लाल और सफेद रंग से ढकी हुई हैं
कमल के फूल, और एक साथ जुड़े हुए
पुन्दरिका कमल, साथ ही ढका हुआ
मंडलक फूलों के साथ, दिव्य प्रकाश उत्सर्जित करें
महक।
172.1. वहाँ, संचन्ना (अच्छी तरह से ढका हुआ) चारों ओर पद्म कमल और उप्पला कमल के फूलों से भरा हुआ; पुन्द्रिकेहि, पुन्द्रिका कमल के फूलों से भरा हुआ, समायुता (अच्छी तरह से जुड़ा हुआ) से युक्त; मंडालाकेहि च संचन्ना (मंडालक फूलों से भी अच्छी तरह से ढका हुआ) फूलों के जंगल से भरा हुआ, झीलों से दिव्य हवाएँ चारों ओर से बह रही थीं; इस प्रकार, इसका अर्थ है।
173. एवम सब्बांगसम्पन्ने, पुफाइटे फालाइट वेन;
सुकते असमेरम्मे, विहारामि अहं तदा।
उस समय, मैं आनंददायक वातावरण में निवास करता था।
जंगल में बना हुआ एक सुगठित आश्रम
फूल और फल सभी गुणों से परिपूर्ण हैं
इस प्रकार से विशेषताओं का वर्णन किया गया है।
173.1. वहाँ, एवम सब्बांग संपन्ने, इस प्रकार सभी विशेषताओं से युक्त, सभी विवरणों से परिपूर्ण और पूर्ण, जैसे छोटी नदियाँ आदि, फूलों से लदे, फलदार वृक्षों से भरा, घना जंगल बन जाता है, तो, वेन सुकते सुगठित वन में, रमणीय; असमे (शरणस्थल में) वन निवास में; तदा (तब) जब मैं संन्यासी था, तब मैं रहता था; इस प्रकार, अर्थ है।
173.2. अब तक अपने आश्रम के सुख-सुविधाओं का वर्णन करने के बाद, उपदेशों आदि जैसी अपनी उपलब्धियों को दर्शाने के लिए उन्होंने इस प्रकार कहा:-
174.

पञ्चाभिन्नाबलपट्टो, सुरुचिनाम तपसो।" ती,
सुरुचि नामक तपस्वी वास्तव में वरदान प्राप्त थे।
नियमों (शील) और कर्तव्यों (व्रत) के साथ;
ध्यान से युक्त होने के कारण, वह हमेशा आनंदित रहता था।
ध्यान (ध्यान में प्राप्त उपलब्धि); उसे
पाँच प्रकार की शक्ति प्राप्त की
उच्च ज्ञान।

174.1. वहाँ, शीलवा (उपदेशों का धारक) की व्याख्या इस प्रकार की जानी है:- "पाँच उपदेशों से परिपूर्ण जो ध्यान से जुड़े चार अद्वितीय शुद्ध उपदेशों के समान हैं"; यही अर्थ है। व्रतसंपन्नो की व्याख्या इस प्रकार की जानी है: वह व्यक्ति जो स्वयं पर कर्तव्यों के पालन का वचन लेकर कहता है: "अब से, मैं गृहस्थ जीवन के पाँच इंद्रिय सुखों में लिप्त नहीं होऊँगा"। झायाद (ध्यान करने वाला) वह व्यक्ति जिसे ध्यान का उपदेश (या आदत) है, ध्यान का धारक, गुणों (लक्खण) और चिंतन के विषयों (आरम्मण) की व्यापक अंतर्दृष्टि के साथ। झानारतो (जो ध्यान में आनंद लेता है) वह व्यक्ति जो इन ध्यान में आनंदपूर्वक लगा रहता है; सदा (हमेशा) उचित रूप से परिपूर्ण पंचभिञ्ञबलपट्टो (पांच प्रकार के उच्च ज्ञान की शक्ति प्राप्त करने वाला) विशिष्ट ज्ञान की शक्ति से परिपूर्ण और संपन्न, जो पांच प्रकार के उच्च ज्ञान हैं: जादूई शक्ति, दिव्य श्रवण, दूसरों के विचारों का ज्ञान, पूर्व निवासों का स्मरण, दिव्य दृष्टि; यही इसका अर्थ है। सुरुचि नाम (सुरुचि नाम से) का अर्थ है: सुरुचि नाम से तपस्वी बनकर मैं देह धारण किया; यही इसका संबंध है।

174.2. अपनी उपलब्धि का उल्लेख करने के बाद, उन्होंने सभा में अपनी शान दिखाने के लिए यह श्लोक और इसी प्रकार के अन्य श्लोक पढ़े, इस प्रकार:-

175. "चतुविससहसानि सिस्सा मयहं उपशहुम्;
सब्बे माम ब्राह्मणा आदि जातिमंतो यस्स्सिनो," ति.
चौबीस हजार छात्र मेरी शिक्षाओं में शामिल हुए;
मेरे इन सभी ब्राह्मणों का खानदानी तौर पर अच्छा था।
और उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी।

175.1. वहाँ, मेरे ये सभी शिष्य, चौबीस हजार ब्राह्मण जातिमंतो (जन्मजात) थे, अच्छे संस्कार वाले, उच्च कुल से संपन्न; यशस्सिनो (सुप्रसिद्ध) अनुचरों से युक्त, मेरी सेवा करते थे; इस प्रकार, संबंध है।

176. लक्खाने इतिहासे च, सनिघंदु साकेशुभे;
पकाका वेय्यकुराना, सद्धम्मे परानुंगता।
उन्होंने ब्राह्मण धर्म में स्वयं को पूर्ण कर लिया था।
विद्या (सद्धम्मे), पंक्तियों में पारंगत हो गया
और वेदों के वचन (पादपथ),
व्याकरणिक स्पष्टीकरणों के साथ,
हथेलियों पर मौजूद चिह्न और विशेषताएं (लक्खणा), जैसे
साथ ही पारंपरिक अभिलेखों (लितिहासा) में भी, एक साथ
चमक के साथ, (निघांडु), और अनुष्ठानों के साथ,
(केतुभ)।

176.1. वहाँ, लक्खणे (चिह्नों में) की व्याख्या हस्तरेखा शास्त्र के रूप में की जानी है। वह सभी सांसारिक पुरुषों और महिलाओं के चिह्नों और विशेषताओं को इस प्रकार जानता है: - "इन चिह्नों से संपन्न होने पर वे दुखी या दरिद्र हो जाते हैं; इन चिह्नों से वे सुखी या खुशहाल होते हैं"। वह ग्रंथ जो इसे स्पष्ट करता है, लक्खण है। चिह्नों के उस ग्रंथ (लक्खण) में, इतिहासे, पारंपरिक अभिलेखों की व्याख्या इस प्रकार की जानी है: - उस ग्रंथ में जो उचित रूप से बताए गए शब्दों को स्पष्ट करता है: "इस प्रकार, इस भाग ने कहा; इस प्रकार, इस भाग ने कहा"। पारमिं गता (पूर्णता तक पहुँच गया) का अर्थ है: चिह्नों पर ग्रंथ (लक्खण) और पारंपरिक अभिलेखों पर ग्रंथ (इतिहास) के अंत तक पहुँच गया वृक्षों, पहाड़ियों आदि के नामों की व्याख्या करने वाले ग्रंथ को 'निघण्ड' (शब्दावली) कहा जाता है। 'केतुभे' (अनुष्ठान) वह ग्रंथ है जो विद्वानों को उनके उपयुक्त या अनुपयुक्त कार्यों में सहायता प्रदान करता है। यह निघण्डु के साथ मिलकर सन्निघण्डु कहलाता है; यह केतुभ के साथ मिलकर सके तो सकेतुभ कहलाता है। उन्होंने निघण्डु और केतुभ तीनों वेदों में सिद्धि

प्राप्त की; यही संबंध है। पादका (शब्दों में पारंगत) का अर्थ है: संज्ञा, संयुक्त शब्द, तद्धित कृदंत, परिमित क्रिया, कित या कितक कृदंत आदि शब्दों में निपुण। वेय्याकरणानि (व्याकरणिक व्याख्याएँ) का अर्थ है कि वे चंद, पाणिनी, कलाप आदि व्याकरण ग्रंथों के ज्ञाता हैं। सधम्मेपारमिं गता (उन्होंने अपने ज्ञान में पूर्णता प्राप्त कर ली थी) का अर्थ है: उन्होंने तीनों वेदों, ब्राह्मण ज्ञान और अपने स्वयं के धर्म में भी पूर्णता प्राप्त कर ली थी; यही इसका अर्थ है।

177. उप्पतेसु निमित्तेसु, लक्खानेसा च कोविदा;
पथब्या भूमन्तलिक्खा, मम सिस्सा सुसिक्खिता।
मेरे विद्यार्थियों को विज्ञान की अच्छी शिक्षा दी गई थी।
पृथ्वी, जमीन और आकाश के; वे बन गए थे
उभरे हुए लक्षणों और विशेषताओं के विशेषज्ञ।

177.1. वहाँ uppātesu nimittesu (उदय संकेत) का अर्थ है: तारों के अस्त होने, भूकंप आदि संकेतों में, साथ ही सुखद और अप्रिय संकेतों (nimitta) में, स्त्री, पुरुष और महान व्यक्तियों के गुणों में; kovidā (चतुर) का ज्ञान होना चाहिए। Pathabyābhūmantalikkhe (पृथ्वी, जमीन और आकाश में) का अर्थ है पृथ्वी पर, जमीन पर, और साथ ही पूरे विश्व और आकाश में भी; इस प्रकार, मेरे शिष्यों को हर जगह, हर तरह से अच्छी तरह से प्रशिक्षित (या शिक्षित) किया गया था।

178. अप्पिच्चा निपका आदि, अप्पाहारा अलोलुपाल
लाभालाभेण सन्तुषा, परिवारेन्ति मम सदा।
उनकी ज़रूरतें कम थीं, वे परिपक्व थे।
उनका ज्ञान अपर्याप्त था, पोषण भी कम था;
वे लालच रहित और संतुष्ट थे चाहे कुछ भी हो।
उन्हें लाभ हुआ या नहीं। वे लगातार थे।
मेरे चारों ओर।

178.1. वहाँ, अप्पिच्छा (कम आवश्यकताएँ) का अर्थ है कि वे इन्पया, परिपक्व, थोड़े ज्ञान या बुद्धि से संपन्न, जिसे परिपक्वता माना जाता है, के साथ भी आगे बढ़ते रहेंगे। अप्पाहारा (कम पोषण) का अर्थ है एक ही भोजन, केवल एक बार भोजन करना; इस प्रकार, इसका अर्थ है। अलोलूपा (लालच रहित) का अर्थ है लालची वासना का न होना। लाभालेहेन (लाभ के साथ या अन्यथा) लाभप्रदता या हानिहीनता के साथ; संतुष्ट, संतुष्ट, मेरे ये शिष्य, मन से प्रसन्न; सदा, (हमेशा) हर समय, स्थायी रूप से; परिवारेन्ति (मुझे घेरे हुए) मेरी सेवा की या मेरी देखभाल की; इस प्रकार, इसका अर्थ है

179. झायि झानरता धीरा, संतचित्त समाहिता;
अकिंचनं पथयंता, परिवारेन्ति मम सदा।
वे ध्यान में लीन थे, ध्यान में आनंदित थे।
और वे दृढ़ बुद्धिमान थे; उनका मन शांत था।
और ध्यान की अवस्थाओं में लीन; शून्यता की आकांक्षा रखते हुए, वे हमेशा आसपास मंडराते रहते थे।
मेरी सेवा करने के लिए।

179.1. वहाँ झाई (ज्ञान के साथ) का अर्थ है विशेषताओं में अंतर्दृष्टिपूर्ण भोग (लक्खण) और इंद्रिय-विषय चिंतन; या झान में उपदेश अभ्यास। झानरता (झान का पालन करना और उसमें आनंद लेना) साथ ही उनमें भी। (धीरा (दृढ़ता से बुद्धिमान) दृढ़ता से संपन्न। शांतचित्त (शांत मन) शांत मन है। समाहिता (एकाग्र) एकाग्र मन है। अकिंचञ्ञम् (शून्यता) कोई परेशानी न होने की स्थिति (पालिबोध)। पथवन्त (आकांक्षी) इच्छा करना। मेरे शिष्य सुखद थे जो हमेशा मेरी सेवा करने और मेरी देखभाल करने के लिए मेरे आस-पास रहते थे; इस प्रकार, संबंध है

180. अभिन्या परमिपत्ता, पेटिके गोकरे रता;
अंतलिक्खाचारा धीरा, परिवारेन्ति मम सदा।
उन्होंने उच्चतर स्तर पर पूर्णता प्राप्त कर ली थी।
ज्ञान, पैतृक चरागाह में आनंदित थे,
आकाश में विचरण करने वाले और दृढ़ बुद्धिमान; वे लटके रहे
मेरे आस-पास लगातार।

180.1. वहाँ, अभिञ्ञापारमीप्पत्ता (उच्च ज्ञान में सिद्धि प्राप्त करना) का अर्थ है: पाँच प्रकार के उच्च ज्ञान में सिद्धि के संपूर्ण लक्ष्य को पूर्ण करना और प्राप्त करना; यही इसका अर्थ है। पेट्टिके गोचरे रता (पितृसत्तात्मक चरागाह में आनंदित होना) का अर्थ इस प्रकार है: बुद्ध द्वारा अनुमोदित, बिना किसी शारीरिक या शाब्दिक संकेत के प्राप्त पोषण में आनंद लेना; यही इसका अर्थ है। अंतलिक्खचरा (आकाश में विचरण करने वाले) का अर्थ है वायुमंडलीय आकाश में आना-जाना; यही इसका अर्थ है। धीरा (दृढ़ता से बुद्धिमान होना) का अर्थ है: दृढ़ होना; शेर, बाघ आदि जैसे खतरों के बीच भी न कांपने का स्वभाव रखना; यही इसका अर्थ है। मेरे वे तपस्वी भी ऐसे ही हो गए थे, जो मेरे चारों ओर मंडराते रहते थे और हमेशा मेरी सेवा करते थे; यही इसका अर्थ है।

181. संवुता चसु द्वारेसु, अनेजा रक्खितिन्द्रिया;
असमसाषा च ते धीरा, मम सिसा दुरसादा।
छह दरवाजों पर उन्होंने काफी संयम बरता।
उनकी नियंत्रणकारी लालसा से मुक्त
अच्छी तरह से संरक्षित संकाय, उन्हें कभी नहीं मिला
उलझन में थे, लेकिन दृढ़ निश्चयी और बुद्धिमान थे; मेरे छात्र थे
हमला करना और जीत हासिल करना कठिन है।

181.1. वहाँ, संवुता (अच्छी तरह से संयमित) का अर्थ इस प्रकार है: संरक्षित और सुरक्षित द्वार, ढके और बंद द्वार या ऐसे छह द्वार जैसे आँखें आदि, और ऐसे छह इंद्रिय-विषयों (आरम्मणा) के संबंध में, जैसे दृश्य रूप आदि; यही अर्थ है। अनेजा लालसा (तन्हा) से मुक्त है; रक्खितिंद्रिया, ऐसी नियंत्रण शक्तियाँ जैसे आँखें आदि, संरक्षित; असमसत्था (अमिश्रित) का अर्थ है: गृहस्थों के साथ मिश्रित न होना; यही अर्थ है। दुरासाद (हमले में कठिन) का अर्थ है: हमले या विजय के लिए कठिन, टकराव, आक्रमण और विजय में असमर्थ; बंधनमुक्त; यही अर्थ है।

182. पल्लंकेण निसज्जया, शहानाचंकामानेन च;
वितिनामेंटि ते रत्तिम, मम सिस्सा दुरसादा।
मेरे छात्र रात भर पालथी मारकर बैठे रहते थे।
पैरों पर खड़े होकर इधर-उधर चलना।
वे अजेय थे, उन पर विजय पाना कठिन था।

182.1. वहाँ, पल्लांकेना (पालकी-पैरों वाला) की व्याख्या इस प्रकार की जानी है:- मेरे शिष्य, पालथी मारकर बैठे हुए, चीजों को बांधकर बैठे हुए, लेटने से बचते हुए, खड़े होकर और इधर-उधर चलते हुए, अतिनामेंटी (व्यर्थ) होकर, विशिष्ट रूप से, पूरी रात गुजारते हैं; इस प्रकार, संबंध है।

183. राजनिये न राज्जन्ति, दुस्सानिये न दुस्सारे;
मोहनिये न मुयहंति, मम सिस्सा दुरसादा।
कामुकता को उत्तेजित करने वाले मामलों में वे नहीं थे
कामुक; क्रोध भड़काने वाली चीजों में, वे
वे क्रोधित नहीं थे; भ्रामक मामले में वे
वे भ्रमित नहीं थे; मेरे छात्र कठिन थे।
आक्रमण और विजय का।

183.1. मेरे वे प्रिय शिष्य जो संन्यासी थे, रजनीये (रंगने योग्य वस्तुओं में) यानी कामुक वस्तुओं में, न रजंजन्ति (रंगे नहीं) और उन्होंने कलंकित कामुकता उत्पन्न नहीं की। दुस्सानीये (घृणास्पद वस्तुओं में) यानी उन वस्तुओं में जिनसे क्रोध उत्पन्न होना चाहिए, यानी उन मूलभूत वस्तुओं में जिनसे घृणा या क्रोध उत्पन्न होना चाहिए, न दुस्सारे (अपमानित नहीं) और उन्होंने क्रोध या घृणा उत्पन्न नहीं की। मोहनीये (अविभाज्य वस्तुओं में) यानी उन मूलभूत वस्तुओं में जिनसे भ्रम उत्पन्न होना चाहिए, न मुयहंति (वे भ्रमित नहीं हुए) और उन्होंने भ्रम नहीं किया; वे ज्ञान या बुद्धि से जुड़े रहे; यही अर्थ है।

184. इद्धिम विमंसमना ते, वत्तन्ति निककालिकम्;
पथविम् ते पकम्पेन्ति, सरंभेण दुरासदा।
अपनी जादुई शक्ति का परीक्षण करते हुए, वे
अंततः यह हमेशा के लिए स्थायी साबित हुआ;

उन्होंने धरती को हिला दिया; वे बहुत कठोर थे।
झगड़े के द्वारा पराजित होना।
184.1. मेरे शिष्य, निच्चाकालिकम विमंसमामा, निरंतर, हर समय (या लगातार) विभिन्न चमत्कारों का प्रदर्शन करके परीक्षा में डालते रहे, जैसे कि "एक और एकल होकर अनेक हो गए; अनेक होने के बाद, ******(पृष्ठ 401) एक और एकल हो गए", इस प्रकार वे सिद्ध हुए; यही संबंध है। मेरे शिष्यों ने आकाश और जल में पृथ्वी की रचना की, और अपनी मुद्राओं (इरियापथ) को हिलाया (या गतिमान किया)। आरम्भेण की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए: प्रभुत्व और कलह करके, उन पर आक्रमण या विजय नहीं की जा सकती; यही अर्थ है।
185. किआमना च ते सिस्सा, किआंति झनकिइतम;
जंबुतो फलमणेन्ति, मम सिस्सा दुरसादा।
खेलकूद के दौरान, उन विद्यार्थियों ने निम्नलिखित पहनावा पहना था।
झाना का खेल; वे युजेनिया लाए
जांबू के पेड़ का फल; मेरे छात्र थे
हमले की कठिनाई।
185.1. मेरे वे शिष्य, कीलमाना (खेलकूद) प्रथम झाना आदि जैसे खेलों में भाग लेते थे; वे इस प्रकार समय बिताते और अपना मनोरंजन करते थे; यही अर्थ है। जंबुतो फलमानेंति (वे जंबु वृक्ष से यूजेनिया फल लाए) की व्याख्या इस प्रकार की जानी चाहिए:- वे अपनी जादुई शक्तियों के माध्यम से गए और हिमवंता पर्वत श्रृंखलाओं में सौ योजन ऊँचे जंबु (या यूजेनिया) वृक्ष से जार के आकार का जंबु (या यूजेनिया) फल लाए; यही अर्थ है
186. अण्णे गच्छन्ति गोयणं अण्णे पुब्बानिदेहकम;
अण्णे च उत्तरकुरा, एसानया दुरासदा।
कुछ लोग पश्चिमी द्वीप गए; कुछ लोग गए
पूर्वी द्वीप; कुछ लोग उत्तरी द्वीप चले गए;
मेरे शिष्य, जिन्हें जीतना मुश्किल था, अंदर चले गए।
(आवश्यकताओं की) खोज।
186.1. मेरे उन शिष्यों में से, कुछ (कुछ) गोयाना (पश्चिमी द्वीप) अपरागोयाना द्वीप गए; उनमें से कुछ पुब्बाविदेहकम् (पूर्वी द्वीप) पुब्बाविदेह द्वीप गए; उनमें से कुछ उत्तरकुरुम (उत्तर द्वीप) उत्तरकुरु द्वीप गए। इन स्थानों में उन्हें जीतना कठिन होने के कारण, वे अपनी आवश्यकताओं (या ज़रूरतों) की तलाश में गए; इस प्रकार, संबंध है
187. पुरतो पेसेन्ति ख़त्म, पच्चतो च वजन्ति ते;
चतुविसा सहस्सानि चादितम होति अम्बरम्।
उन्होंने अपने सामान को आगे भेज दिया।
खंभे के पीछे चला गया; आकाश ढका हुआ था
चौबीस हजार संन्यासियों द्वारा।
187.1. मेरे वे शिष्य आकाश में जाते समय, खारीम (ढेर) ने अपने आगे अपना वह ढाँचा भेजा जो तपस्वी सामग्री को ले जाकर वापस लाता था, और पहले ढाँचा आगे भेजने के बाद, वे स्वयं उस ढाँचे के पीछे चले। इस प्रकार, चौबीस हजार संन्यासियों के इस मार्ग से जाने पर, अंबरम (आकाश), स्वर्गीय सतह, चादितम (ढककर) छिप गई; यही संबंध है।
188. अग्गिपाकी अनाग्गिका, दन्तो-कुक्खलिकापि च।
अस्मेना कोशिता केचि, पवत्तफलाभोजन।
कुछ लोगों ने अपना खाना आग पर पकाया;
कुछ लोगों ने बिना आग का इस्तेमाल किए कच्चा ही खा लिया;
कुछ लोग दांतों का इस्तेमाल करके खाते थे, जैसे ओखली और मूसल का इस्तेमाल करते हैं;
कुछ लोगों ने पत्थर से पीसकर खाया;
कुछ लोगों ने गिरे हुए फल खाए।

188.1. वहाँ, केची (कुछ) का अर्थ है: मेरे कुछ शिष्य; अग्गिपाकी (आग पर पकाने वाले) फल और मांसाहारी फल, पत्ते आदि पकाकर खाते थे; कुछ अनाग्गी (बिना आग के) बिना पकाए कच्चा ही खाते थे; कुछ दाँतों का प्रयोग करने वाले थे; वे छिलके दाँतों से छीलकर खाते थे। कुछ उडुक्खलिका (मूसल और मूसल के समान) थे; वे मूसल से कूटकर खाते थे। कुछ अस्मेना कोट्टिता (पत्थर से कुचलने वाले) थे; वे पत्थर से कूटकर खाते थे। कुछ स्वयं गिरे हुए फलों से अपना पोषण करते थे; यही संबंध है।

189. उदाकोरोहाना केचि, सयं पतो सुचिरता;
तोयाभिसेकनकारा, मम सिसा दुरसादा।
कुछ लोग पानी में उतरने वाले थे।
शाम और सुबह आनंदित होते हुए
स्वयं को शुद्ध करने में; अन्य लोग थे
पानी छिड़कने वाले निर्माता
शरीर; मेरे छात्र भी वैसे ही थे, जो थे
हमले की कठिनाई।

189.1. मेरे कुछ शिष्य, जो आक्रमण में कठिन थे, सुचिरता (स्वच्छता में आनंद लेने वाले) शुद्धता के इच्छुक, शाम के साथ-साथ सुबह भी, उदाकोरोहना (जल में उतरने वाले) उन्होंने जल में प्रवेश किया; यही अर्थ है। कुछ तोवाभिषेकनकरा (जल छिड़काव के द्वार) ने अपने ऊपर जल का छिड़काव किया; यही अर्थ है

190. पारुइहकच्चनखलोमा, पंक-दंता राजसीरा
गंधिता सिलगंधेन, मम सिसा दुरसादा।
बगलों में बाल उग आए और नाखून लंबे हो गए;
दांतों पर मैल जम गया था और सिर
धूल भरी। लेकिन मेरे विद्यार्थियों पर हमला करना मुश्किल है।
उपदेशों की सुगंध से महक रहे थे
(सीला).

190.1. वहाँ, मेरे वे शिष्य, जिन पर आक्रमण करना कठिन था, दोनों बगलों के साथ-साथ हाथों और पैरों पर भी कच्छेसु (बगलों में) थे; वहाँ परूल्हा (घुमावदार) उग आए थे, लंबे नाखून और बाल; यही अर्थ है। उस्तरे के काम के अभाव में, बिना सजावट और अलंकरण के; यही तात्पर्य है। पंकदंत (दांतों पर मैलापन), दांतों में गंदगी जमा हो गई थी, क्योंकि ईंट-पिसा हुआ पाउडर, दूध-पत्थर का पाउडर आदि जैसे दंत शोधक से सफाई नहीं की गई थी; यही अर्थ है। राजस्सिरा (धूल से सना हुआ सिर), उनके सिर धूल (धुलीहि) से सने हुए थे, क्योंकि तेल आदि से लेप नहीं किया गया था; यही अर्थ है। गांधीता सीलागन्धेना (उपदेशों की सुगंध से महकते हुए), (सीला), वे हर तरह से सांसारिक उपदेशों की सुगंध से मधुर हो गए थे क्योंकि वे ध्यान, एकाग्रता और ध्यान संबंधी उपलब्धियों से युक्त उपदेशों से संपन्न थे; यही अर्थ है। मामा सिस्सा दु आसदा (मेरे शिष्य आक्रमण में कठिन थे) मेरे शिष्यों पर आक्रमण करने या उन्हें चोट पहुँचाने में असमर्थ थे, क्योंकि वे इन विशिष्ट गुणों से संपन्न थे; यही संबंध है।

*****

191. पातो वा सन्निपतित्वा, जतिला उग्गतापना;
लाभालाभम पकित्तेत्वा गच्छन्ति अम्बारे तदा
सुबह-सुबह ही इकट्ठा होकर, चोटीदार बालों वाले उस तपस्वी ने, जिसकी कठोर साधनाएँ स्पष्ट थीं, अपने बड़े और छोटे लाभों की घोषणा की और फिर आकाश की ओर चल दिए।

191.1. वहाँ, पातो व सन्निपतित्वा, सुबह-सुबह एकत्रित होकर, यहाँ 'तो' क्रिया का प्रयोग सातवें पद की स्थिति को व्यक्त करने के लिए किया गया है, सूर्योदय के समय भी, वे मेरी उपस्थिति में एकत्रित हो गए। उग्गतापना (सर्वोच्च तपस्या के अभ्यासी) स्पष्ट तपस्या-अभ्यासी, फैला हुआ या विस्तृत तपस्या-भक्त। जतिला (गुंथे हुए बालों वाले तपस्वी) गुंथे हुए बालों वाले संन्यासी। लाभालभं पकित्तेत्वा (छोटे और बड़े लाभों को स्पष्ट करते हुए; तदा (तब) उस समय; अम्बारे (आकाश में) वे स्वर्गीय सतह पर गए; इस प्रकार, संबंध है।

192. उनके गुणों को और भी स्पष्ट रूप से प्रकट करते हुए, उन्होंने एतेसम पक्कमन्तानम् से शुरू होने वाले श्लोक का पाठ किया। आकाश में या सूखी भूमि पर, पक्कमन्तानम् (प्रस्थान करते हुए) जाते हुए; एतेसम (उनके) संन्यासियों के; तपस्वियों के सरकंडों के वस्त्रों

से एक बड़ा शोर उत्पन्न हुआ; यही अर्थ है। मुदिता होन्ति देवता (देवता प्रसन्न हुए) उन संन्यासियों के हिरणों की खालों से उत्पन्न शोर से संतुष्ट होकर, देवता मन ही मन प्रसन्न हुए और बोले: “शाबाश, शाबाश, हे प्रभु!”, मुदिता (प्रसन्न) संतुष्ट हुए; यही संबंध है।

193. उन संन्यासियों में दिशाएँ और उप-दिशाएँ थीं; आकाश में विचरण करने वाले अंतलिक्खचरा (आकाश में विचरण करने वाले) दक्षिण दिशा और उप-दिशा की ओर गए; यही संबंध है। अपने शारीरिक बल या ध्यान की शक्ति से युक्त होकर, वे जहाँ भी जाना चाहते थे, वहाँ गए; यही संबंध है।

194. अपनी शक्ति को और भी प्रकट करने के लिए, उन्होंने पथवी कंपक आदि से शुरू होने वाले श्लोक का पाठ किया। उस समय एते (ये) जो जहाँ चाहते वहाँ विचरण करते थे, पथवी कंपक (भूकंप लाने वाले) जो पृथ्वी को हिला सकते थे, नभचारिनो (आकाश में विचरण करने वाले) जो आकाश में विचरण करते थे। उग्गतेजा (उच्च शक्ति वाले लोग) बढ़ती हुई शक्ति, फैली हुई शक्ति; दुप्पसह (पराजित करना कठिन) पराजित और अभिभूत करने के बाद भी पराजित नहीं हो सकते; इस प्रकार, दुप्पसह, पराजित करना कठिन लोग हैं। सागरो व अखोभिया (समुद्र के समान अविचलित) जल के विशाल विस्तार के समान, विशाल समुद्र जो दूसरों द्वारा विचलित या परेशान नहीं होता, वे दूसरों द्वारा विचलित या विचलित नहीं होंगे; इस प्रकार, संबंध है।

195. Ṭhānacaṅkamino keci (कुछ खड़े रहने वाले और टहलने वाले थे) मेरे उन शिष्यों में से कुछ संन्यासी खड़े होने और इधर-उधर चलने जैसी मुद्राओं से संपन्न थे; कुछ संन्यासी बैठने की मुद्रा में सजे हुए Nesajjikā (बैठे रहने वाले) थे; कुछ संन्यासी pavattabhojanā (जो कुछ भी मिलता था उसे खाने वाले) थे, जो स्वयं गिरे हुए पत्तों से अपना पोषण करते थे; क्योंकि वे उक्त गुणों से जुड़े थे, इसलिए उन्हें हराना कठिन था; इस प्रकार, यह संबंध है।

196. उन सभी की प्रशंसा करते हुए, उन्होंने मेत्तविहारिनो श्लोक से शुरू करते हुए श्लोक का पाठ किया। वहाँ, मेत्तविहारिनो का अर्थ इस प्रकार है: वे स्वयं ही ऐसे बन गए, वे प्रेम और करुणा से परिपूर्ण होकर जीवन व्यतीत करते थे, स्नेह का प्रतीक यह कहते हुए: “सैकड़ों ब्रह्मांडों (या अनगिनत चक्रवाल) में असंख्य जीव सुखी हों”, इत्यादि, मेरे वे शिष्य; यही अर्थ है। वे सभी ऋषि हितेसी (कल्याणकारी) थे, सभी जीवों (सबबापाणिनम) के प्रति उपकार करने वाले थे। वे अनात्तुक्कमसाका (स्वयं की प्रशंसा न करने वाले) थे, अभिमान से मुक्त थे और स्वयं की प्रशंसा नहीं करते थे; नवम्भेन्ति (वे निंदा नहीं करते थे) किसी को भी नीचा नहीं समझते थे; यही अर्थ है।

197. मेरे वे शिष्य, उपदेश, एकाग्रता और ध्यान संबंधी उपलब्धियों (समापत्ति) जैसे गुणों से युक्त होने के कारण, अचम्भिता (अविचलित) थे, खतरे से मुक्त थे, सिंहराज के समान थे; गजराज इव (हाथीराज के समान) थे, हाथीराज के समान थे। वे बलवान (बलमबा) थे, अपने शरीर की शक्ति और ध्यान की शक्ति से संपन्न थे; बाघराज के समान, वे दुर्रासाद (पराजित करना कठिन) थे, जिन्हें पराजित नहीं किया जा सकता था; वे मेरे समक्ष आए; इस प्रकार, संबंध स्थापित हुआ।

198. इसके बाद, अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के बहाने, उसने विजयधरा से शुरू होने वाले श्लोक का पाठ किया। वहाँ, मंत्रों के ज्ञाता और पाठ करने वाले, जादूगर (विज्याधरा), वृक्षों और पहाड़ियों पर निवास करने वाले पृथ्वी के देवता, पृथ्वी और शुष्क भूमि पर स्थित नाग (ड्रैगन), गंधब्बा (स्वर्गीय संगीतकार), भयंकर राक्षस (राक्षस), कुंभण्ड (संरक्षक देवता), दानव (विशालकाय) जो अपनी इच्छा अनुसार कुछ भी बना सकते हैं और गरुड़ा (बड़े पक्षी) उस झील पर निर्भर रहते थे; इस प्रकार, संबंध स्थापित होता है।

199. फिर से, उन्हीं संन्यासियों के गुणों की प्रशंसा करते हुए, जो उनके स्वयं के शिष्य थे, उन्होंने इन श्लोकों का पाठ किया, जो इस प्रकार प्रारंभ होते हैं: तेजता खारिभारिता। वह सब कुछ जो स्पष्ट रूप से अर्थ में स्पष्ट है। खारिभार से तात्पर्य कुएँ से पानी निकालने के लिए बाल्टी, लंबी टोंटी वाला मटका आदि तपस्वी वस्तुओं से है।

207. फिर से, अपने गुणों को प्रकट करते हुए, उन्होंने 'उप्पते सुपिने च पि' से शुरू होने वाले श्लोक का पाठ किया। वहाँ व्याख्या इस प्रकार है:- उस समय, जब मैं संन्यास में था, मैं जंबूद्वीप में प्रचलित सभी मंत्रों, चिन्हों और प्रतीकों, ज्ञान के सभी वर्गों का भंडार था, क्योंकि मैं सभी पुरुषों और महिलाओं के हाथों और पैरों की हथेलियों पर अंकित चिन्हों और प्रतीकों की भविष्यवाणी करने में, और स्वप्नों और उनके प्रभावों की भविष्यवाणी करने में भी निपुण था, क्योंकि मैं नक्षत्रों और ग्रहों को पढ़ने में कुशल था और ब्राह्मण विज्ञान में निपुण था, इसलिए:- "इस राजकुमार का उदय नक्षत्र शुभ है या अशुभ", और उदय चिन्ह या प्रतीक और स्वप्न में घटित होने के संबंध में पूछे जाने पर, इस प्रकार: "यह स्वप्न शुभ है; यह स्वप्न अशुभ है;" इस प्रकार, संबंध है।

208. बुद्ध के गुणों पर आधारित अपने स्वयं के उपदेश को प्रकट करते हुए, उन्होंने अनोमदस्सी से शुरू होने वाले श्लोक का उच्चारण किया। वहाँ, अनोमा नीच (या हीन) नहीं है। वह महिमावान अनोमदस्सी हैं, क्योंकि उनकी दृष्टि श्रेष्ठ है, अर्थात् वे सभी जीवित प्राणियों को अपनी ऐसी आँखों से देखते हैं जैसे: भौतिक आँख, दिव्य आँख, सार्वभौमिक आँख, आध्यात्मिक आँख और बुद्ध की आँख। वे भगवान (महिमावान) हैं क्योंकि वे सौभाग्यशाली (या सौभाग्यशाली) हैं, इत्यादि। वे लोकजेष्टो (विश्व के सबसे बड़े) हैं क्योंकि वे विश्व

में सबसे बड़े और श्रेष्ठ हैं; इस प्रकार तीन सबसे बड़े बैल हैं: उषाभा बैल, निषाभा बैल और आसभा बैल। इनमें से, सौ बैलों में सबसे बड़ा उषाभा है; हजार बैलों में सबसे बड़ा निषाभा है; एक लाख बैलों में सबसे बड़ा आसभा है; नरसाभो, पुरुषों के आसभ-बैल; सम्बुद्ध वह हैं जिन्होंने प्रत्येक धर्म में पूर्णतः प्रवेश किया; विवेककामो (एकांतप्रिय) एकाकी होना चाहते थे। हिमवंतम, हिमालय पर्वतमाला की ओर गए; इस प्रकार, संबंध स्थापित होता है।

209. अज्जोगाहेत्वा हिमवंतम् (हिमवंत में विलीन हो गया) हिमालय के आसपास गहराई में जाकर उसमें प्रवेश किया; यही अर्थ है। बाकी तो स्पष्ट है।

210.1. जलितम् (जलना) नीली जल-लिली की तरह प्रज्वलित या दीप्तिमान; हूतासनम्, पवित्र यज्ञ का स्थान; आदित्तम् (जलना) प्रकाश से जुड़े अग्नि के समूह की तरह; गगने (आकाश में) बिजली की तरह चमकता हुआ, राजसी साल वृक्ष की तरह उचित रूप से खिले हुए, मैंने जगत के संरक्षक को बैठे हुए देखा; इस प्रकार, संबंध है।

213. (212-13?) दिव्य प्राणियों के दिव्य स्वरूप देवदेव हैं, जो देवताओं के देव हैं; देवदेव, देवताओं के देव, बुद्ध, लक्खणमुपधारेसिम को देखकर, मैंने उनके गुणों का गहन अवलोकन किया और उनके बत्तीस चिह्नों, प्रतीकों या महान व्यक्तित्व के गुणों को जानकर यह ज्ञात किया कि वे बुद्ध हैं या नहीं। उस क्रिया (या परिस्थिति) से मैंने विजेता, चक्खुमम (दृष्टिकोण धारक), पाँच प्रकार की आँखों के स्वामी को देखा; इस प्रकार, संबंध स्थापित हुआ।

214. करानुत्तमे (सर्वोत्तम चरणों पर) (करण), उनके चरणों के सर्वोत्तम तलवों पर। सहस्रणी, वृत्ताकार चिह्न या चक्र चिह्न दिखाई देते हैं; जब मैंने तथागत में उस महिमावान के उन गुणों को देखा, नित्त्हम गच्छिम (मैं अपने निष्कर्ष पर पहुँचा) मैं आत्म-निर्णय की ओर बढ़ा और निःसंदेह हो गया, यही अर्थ है। शेष का अर्थ स्पष्ट है।

218. स्वयंभू (स्वयं एक हो जाना) स्वयं ही उत्पन्न हुए। अमितोदय (उत्पत्ति का स्थान) असीम और अतुलनीय गुणों का उदय; ये दोनों शब्द केवल संबोधन (अलपना) हैं। इमां लोकं, प्राणियों का यह संसार; सम (ठीक से) ठीक; उद्धारसि (बाहर निकाला या घसीटा), पुनर्जन्मों के चक्र से बाहर निकालकर, उन्हें निर्वाण की सूखी भूमि पर पहुंचाना; यही अर्थ है। वे सभी प्राणी आगम्म, आपको देखने के लिए आए, और कंखसोतं तरन्ति (संदेह की धारा पार करना) संशय की महान बाढ़ के पार चले गए; यही संबंध है।

219. परम पूज्य बुद्ध की स्तुति करते हुए, ऋषि ने तुवम् सत्था से शुरू होने वाले श्लोक का पाठ किया: हे सर्वज्ञ बुद्ध! आप इस संसार और स्वर्गलोक के गुरु सत्था (स्वामी) हैं; आप स्वयं सर्वोच्च रूप से स्थापित होकर उच्च केतु (झंडा) हैं; आप स्वयं धजो (झंडा) हैं, क्योंकि आप स्पष्ट रूप से समस्त संसार में स्थापित हैं; आप स्वयं खड़े स्तंभ के समान युपो (यज्ञ स्तंभ) हैं, क्योंकि आप तीनों लोकों में विराजमान हुए हैं; (पाणिनम् (जीवों के लिए), आप स्वयं ही परायनो (अंतिम लक्ष्य) हैं, सर्वोच्च या सबसे उत्तम प्राप्य स्थान। आप स्वयं ही पटिष्ठा (स्थिर स्थान), रक्षा का स्थान हैं; आप स्वयं ही दीप (दीपक) हैं, तेल के दीपक के समान, क्योंकि आपने संसार के भ्रमकारी अंधकार को दूर किया है; द्विपदुत्तमो (सर्वोत्तम पुरुष), देवताओं, ब्रह्माओं और मनुष्यों जैसे दो पैरों वाले प्राणियों में सबसे उत्तम और श्रेष्ठ; इस प्रकार, संबंध है।

220. फिर से, परम पूज्य बुद्ध की स्तुति करते हुए, उन्होंने यह श्लोक कहा, जो 'सक्का समुद्दे उदकम' से शुरू होता है: "वहाँ चौरासी हजार योजन गहरे सागर के जल को भी खूंटी से नापना संभव होगा; हे सर्वज्ञ बुद्ध! आपके ज्ञान से इतनी मात्रा को नापना भी असंभव है।" यही इसका अर्थ है।

221. तुलमण्डले को नापने वाले कक्ष, तौलने वाले पिंजरे में रखने से पृथ्वी का भार वहन करना संभव है; हे सर्वज्ञ बुद्ध! आपके ज्ञान का वजन करना बिलकुल भी संभव नहीं है।

222. आदरणीय सर्वज्ञ बुद्ध! आकाश (सारा खुला स्थान) को रस्सी या उंगली से नापा जा सकता है, परन्तु आपका आकाश के समान ज्ञान और बुद्धि किसी भी प्रकार से मापी नहीं जा सकती; यही अर्थ है।

223. महासमुद्दे उदकम, महान सागर का जल, चौरासी हजार योजन गहरा सागर। अखिलम उदकंच, निर्मल जल, दो लाख योजन से भी अधिक विस्तार में चार नहुत; अखिलम; अखिलम पथविम, बंजर भूमि; जहे (त्याग देगा), छोड़ देगा, आगे बढ़ जाएगा, बराबर कर देगा, बुद्ध का ज्ञान, उपादाव (ध्यान रखते हुए), लेकर तौल देगा, संतुलित करेगा। उपमतो (उदाहरण के रूप में), दृष्टांत के रूप में; न युज्जरे (जोड़ा नहीं जाना चाहिए), साथ नहीं रखा जाना चाहिए; उनका ज्ञान इससे कहीं अधिक है; यही अर्थ है।

224. चक्खुमा (हे नेत्रों के स्वामी!) हे पांच प्रकार के नेत्रों के स्वामी! यह संबोधन है। सहदेवेही, इस संसार के सभी प्राणियों सहित; यह स्थानवाचक शब्द है; संसार के भीतर, स्वर्गलोक सहित; येसम, इन प्राणियों में से जिसके मन में यह भाव उत्पन्न होता है (पवत्तति)। इत्यादि, ये सभी प्राणी अपने मन से, आपके ज्ञान में, अंतोजालागत, ज्ञान के जाल में प्रवेश कर चुके हैं; यही संबंध है; आप अपने ज्ञान के जाल से सभी प्राणियों को देखते हैं; यही अर्थ है।

225. आदरणीय सब्बाञ्ञु। सर्वज्ञ बुद्ध! येन ञाणेन (जिस ज्ञान से) चार सही और श्रेष्ठ मार्गों के उचित संगति से, बोधिम पत्टो (जागरूकता प्राप्त करके) निर्वाण, सर्वोत्कृष्टतम अवस्था प्राप्त की, असि (हो गए); उस ज्ञान से, परतित्थिये मद्दसि (आपने अन्य विधर्मियों को कुचल दिया) अन्य धार्मिक नेताओं को पराजित किया; इस प्रकार, संबंध है।

226. उस ऋषि द्वारा की गई स्तुति को स्पष्ट करने के लिए, धर्म के संकलनकर्ता थेरों, प्रथम बौद्ध परिषद के थेरों ने इस प्रकार कहा: इमा गाथा थवित्वाना। यहाँ, इमा गाथा (ये श्लोक) इतने श्लोकों के साथ है; थवित्वाना (स्तुति करते हुए) ऋषि, सुरुचि का नाम लेकर, उनकी प्रशंसा की गई है; हालाँकि, अन्य टीकाओं में शेषत्त्वकथासु में इस प्रकार लिखा है: "सारदलमानवो, बालक सारदा"। यह शब्द माप या सीमा है, जो कि अष्टकथानय, टीका पद्धति के अनुसार पठन (या पाठक) है। दूसरे शब्दों में, वह व्यक्ति जिसकी निर्वाण को अपना विश्राम स्थान बनाने की अच्छी, आनंददायक या सुखद इच्छा हो; वह सुरुचि (सुखद) है। जो व्यक्ति अपनी इंद्रियों को वश में रखते हुए आगे बढ़ता है, जाता है और लौटता है, वही सारदा (वश में रहने वाला मार्ग) है। इस प्रकार, ये दोनों ही उसके नाम हैं। उस ऋषि सुरुचि ने हिरण की खाल बिछाकर बैठ गए; बैठने के छह दोषों, जैसे कि बहुत पास बैठना आदि से बचते हुए, सारदा ने अपना स्थान ग्रहण किया; यही इसका अर्थ है।

227. वहाँ बैठे हुए उस ऋषि ने, उस महिमावान के उसी ज्ञान की प्रशंसा करते हुए, 'कुल्लासीतिसहस्सानि' से शुरू होने वाला श्लोक बोला। यहाँ 'कुल्लासीतिसहस्सानि' का अर्थ चौरासी हजार है; 'गिरिराज' (पर्वतों के राजा) पर्वत-राजा मेरु हैं; 'महाञ्नवे' सागर में हैं; 'अज्जोगब्लो' (में गोता लगाया) का अर्थ है: गहराई से गोता लगाया, प्रवेश किया; 'तावदेव' (इतना अधिक) चौरासी हजार के बराबर; 'अच्चुग्गतो' (अत्यधिक ऊपर गया) का अर्थ है अत्यधिक ऊपर जाना; इस प्रकार, संबंध है।

228. ताव अच्चुग्गतो, जैसे वह नेरु या मेरु पर्वत अत्यधिक ऊँचाई तक बढ़ गया था; वह महान नेरु या शक्तिशाली मेरु आयतो ऊँचाई और चौड़ाई दोनों में इस प्रकार विस्तारित हुआ था, महान नेरु राजा गणना की विविधता के अनुसार एक लाख करोड़ है; कुन्नितो (टुकड़ों और चूर्ण में बदल गया)।

229. पूज्य सर्वज्ञ बुद्ध! जब आपका ज्ञान लाख की उच्च संख्या में समाहित हो, जब आप अपने ज्ञान को एक-एक करके सौ, हजार या एक लाख के रूप में त्यागते हैं, तो महान नेहरू का वह पाउडर भी समाप्त हो सकता है; आपके ज्ञान की मात्रा का अनुमान लगाना (पामेटावे) जरा भी संभव नहीं है; यही संबंध है।

230. सुखुमच्चिकेना (सुंदर मछली) जो कोई भी परिक्खिपे (घेर कर) करे, यानी पूरे विशाल सागर के पानी को चारों ओर से बहुत सारे छोटे-छोटे छेदों से घेर ले, तो जब ऐसा किया जाएगा, तो पानी में पैदा होने वाले सभी जीव, वे सभी जलीय प्राणी, सियम (होंगे), जाल में चले जाएंगे; यही अर्थ है।

231. उस दृष्टांतपूर्ण तुलना की ओर इशारा करते हुए, उन्होंने तथाएव हि से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा। वहाँ, जैसे जलीय जीव जाल में फँस जाते हैं, वैसे ही, हे महान वीर! महावीर (महान वीर! महान बुद्धत्व की प्राप्ति के लिए परिश्रम करने वाले! जो भी पुथु, अनेक, तित्थिवा (विधर्मी), गलत मतों के निर्माता, दिष्टिघहनपक्खंदा, विधर्म माने जाने वाले वन-जंगल में प्रवेश कर गए, परमसेन, ईमानदारी या अन्यथा के दृष्टिकोण से विशिष्ट व्यवहार के कारण, मोहिता, भ्रमित या व्याकुल हो गए।

232. शुद्धन (पवित्रता सहित) का अर्थ है आपके ज्ञान से अशुद्धता (किलेसा) से मुक्त; अनावरणदास्सिना (अवरुद्ध द्रष्टा द्वारा) का अर्थ है वह व्यक्ति जिसे सभी सत्यों (धम्म) को बिना किसी अवरोध के देखने का उपदेश या आदत है; इत्यादि, सभी विधर्मी; अंतोजालगत (जाल में फँसे हुए), या जिन्हें ज्ञान के जाल में फँसाया गया था; यही संबंध है। नाणम् तो नातिवत्तरे (वे आपके ज्ञान से आगे नहीं बढ़ सके) का अर्थ है वे विधर्मी आपके ज्ञान से आगे नहीं बढ़ सके।

233. इस प्रकार प्रतापी की स्तुति करने के बाद, उन्होंने अपने स्वयं के स्पष्टीकरण के प्रयास को दर्शाने के लिए, भगवा ताम्हि समये से शुरू होने वाले इस श्लोक का पाठ किया। वहाँ, जिस समय भी ऋषि ने प्रतापी की स्तुति की, स्तुति की समाप्ति के समय, प्रतापी अनोमदस्सी, जो किलेसा, मारा आदि के पराक्रम पर विजय प्राप्त करने के कारण असंख्य अनुयायियों से युक्त माने जाते थे, जिन, विजेता हैं। समाधि से उठकर, उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टि से संपूर्ण जंबू द्वीप का अवलोकन किया; इस प्रकार संबंध स्थापित होता है।

234.5. उस ऋषि के शिष्य निसाबा, जिनका नाम अनोमदस्सी था, जो ऐसे ज्ञान से संपन्न थे, जिन्हें मोना, शांतचित्तेहि (शांत विचारों वाले), भ्रष्टता रहित मन वाले (किलेसा), तादिहि, अरहतों के साथ, जिन्होंने अपने आसव (आसव) को समाप्त कर लिया था, वांछनीय और अवांछनीय के बीच अपने अविचलित स्वभाव के कारण; शुद्धि (शुद्ध वस्तुओं के साथ), पूर्णतः शुद्ध शारीरिक क्रियाओं से सजे हुए, छह प्रकार के उच्च ज्ञान की उपलब्धियों वाले, जीवन के आठ प्रकार के उतार-चढ़ावों (लोकधम्म) से विचलित या व्याकुल न होने वाले स्वभाव वाले, एक लाख से घिरे हुए; अञ्ञाय (जानकर), बुद्ध के मन को जानकर, उपेषी (पहुंचे), जगत के संरक्षक के निकट गए, ठीक उसी समय; इस प्रकार, संबंध है।

236. वे उस प्रकार तथा (वहाँ) प्रतापी के निकट आकर, अंतलिक्खे (वायुमंडल में) आकाश में खड़े होकर प्रतापी की परिक्रमा करने लगे। वे सब, पांजलिका (हाथ जोड़कर) आकाश से प्रणाम करते हुए और ओतारुम (उतरकर) बुद्ध की उपस्थिति में आ गए; इस प्रकार, संबंध है।

237. फिर, व्याख्या देने के प्रारंभिक भाग को स्पष्ट करने के लिए, उन्होंने यह श्लोक कहा, जिसकी शुरुआत "सीतम पातुकारी" से होती है। सब कुछ स्पष्ट है।

241. योमम पुप्पेना, वह साधु जिसका मन मुझसे प्रसन्न हुआ या जिसने मुझमें भक्ति भाव जगाया, उसने मुझे अनेक फूल भेंट करके सम्मानित किया; अनुथवी, उसने बार-बार मेरे ज्ञान की प्रशंसा की; तमाहं कित्तयिसामि, मैं उस साधु का स्पष्ट उल्लेख करूँगा; मम भासतो सुनोथा (अपने मन को मेरे द्वारा बोले गए शब्दों से अवगत कराओ)।

250. "पच्चिमे भावसंपत्ते," इस प्रकार, प्रतापी ने अपनी व्याख्या (या अपनी भविष्यवाणी) देते हुए कहा। "वहाँ, पच्चिमे (अंततः), जब अंतिम अवस्था प्राप्त हो गई, तो मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मनुष्य जगत में पुनर्जन्म लेगा; यही अर्थ है। ब्राह्मण स्त्री सारी, जो सौंदर्य, धन, आयु, परिवार, विलासिता, पुण्य आदि गुणों से परिपूर्ण होने के कारण इस नाम से जानी जाती हैं, अपने गर्भ में गर्भ धारण करेंगी।"

253. अपारिमेय्ये इतो कप्पे, असीम कप्पे अतः, इस प्रकार, उन्होंने अपनी भविष्यवाणी (ब्याकरण) का मूल आरंभ किया। यहाँ, दो प्रमुख शिष्यों की पूर्णता एक असंख्य युगों और एक लाख युगों (कप्पे) की लंबी अवधि में पूर्ण होती है; ऐसा होने के बावजूद, श्लोक की काव्य रचना में सुगमता के लिए, मध्यवर्ती युगों (अंतरा कप्पे) के संदर्भ में ऐसा कहा गया है; इस प्रकार, इसे देखा जाना चाहिए।

254. भविष्यवाणी (ब्याकरण) इस प्रकार दी गई है:- "वह सारिपुत्त नाम से प्रमुख शिष्य होगा।" भविष्यवाणी (ब्याकरण) देते हुए, उसकी प्रशंसा करते हुए, उस तेजस्वी ने इस प्रकार कहा: "आयम् भागीरथी" इत्यादि; यह पाँच नदियों में से पहली महान नदी, भागीरथी के नाम से जानी जाती है, अर्थात् गंगा, (गंगा), (जमुना), यमुना, सरभू, माही और अचिरवती। हिमवंता पभाविता (हिमवंता से उत्पन्न) अनोटत्त झील से उत्पन्न हुई और हिमालय से नीचे आई थी। महोदधिम (महान सागर) जल का विशाल भंडार; अप्पयनित (पहुँचना) पहुँचना; महासमुद्दम, विशाल सागर; अप्पेति, जैसे ही वे पास या की ओर जाते हैं; इसी प्रकार, यह सारिपुत्त, अपने तीनों वेदों में दृढ़ विश्वास रखते हुए, ऐसा व्यक्ति होगा जिसका ज्ञान या बुद्धि बिना किसी बाधा के फैलेगी, और वह अपने परिवार में प्रचलित तीनों वेदों में पूर्णतः पारंगत होगा। अपने शिष्य ज्ञान के चरम तक पहुँचकर, वह सभी जीवों को संतुष्ट करेगा और उनका उत्तम कल्याण करेगा।

257. हिमवंतमुपादाय, हिमालय पर्वत को आरंभिक बनाकर; महोदधिम, महान सागर, सागरम, जल वाहक, को अंतिम लक्ष्य बनाकर; एत्थंतरे (इसके भीतर), इन दोनों के मध्य में, पर्वत और सागर; यंपुलिनम, रेत के ढेर और संग्रह के बराबर; गणना या गिनती के अनुसार, असंख्य (असंख्य), गणना या गिनती से परे; असंख्य।

258. ताम्पि सक्का असेसेना, यहाँ तक कि शेष न रहने वाले रेत के ढेर भी, संखातुम (गिनना), गिनना संभव हो सकता है, क्योंकि इतनी संख्या में इतने ही कुल योग हैं; यही संबंध है। इसी प्रकार, अंत (अंत), सारिपुत्त के ज्ञान का अंतिम अंत (भविस्सति) बिल्कुल नहीं होगा; यही अर्थ है।

259. लक्खे; :P: भविस्सति; यहाँ, लक्खे (लिखित या लाख में) का अर्थ है: ज्ञान में लिखित या लाख, ज्ञान का एक अंश; तपियमानाम्ही (रखा जाने पर), का अर्थ है: यदि इसे रखा जाए, तो गंगा की रेत; खिये (समाप्त), पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी; इस प्रकार, यही अर्थ है।

260. महासमुद्दे (विशाल सागर में), का अर्थ है: चौरासी हजार योजन गहरे चार महा सागरों में। उमियो (लहरें), गावुता आदि जैसी लहरों के अनेक प्रकार। गणनातो असंखिया (गणना से परे) का अर्थ है: जैसे वे गणना से परे हैं, वैसे ही सारिपुत्त के ज्ञान का विस्तार भी, अंत (अंत), चरम अंत, न हेस्सति (नहीं होगा) नहीं होगा; यही संबंध है।

261. इस प्रकार, वह सारिपुत्त विद्वान या ज्ञानवान था; गौतम वंश का होने के कारण (गौतमम, गौतम, शाक्य परिवार में सबसे बड़ा, शाक्यों का बैल-पुरुष, स्वयं-प्रबुद्ध (या आत्मजागृत) बुद्ध); आराध्यित्वा (प्रसन्न करना), उचित कर्तव्यों, अच्छे उपदेशों और अच्छे आचरण आदि के अभ्यास से मन को प्रसन्न करना, पञ्ञाया (ज्ञान का), शिष्य के ज्ञान का, पारमिम् (परिपूर्णता), पूर्णता प्राप्त करना; इस प्रकार, संबंध है।

262. इस प्रकार प्रधान शिष्य का पद प्राप्त करके, धम्मचक्कम अनुवत्तेस्साति (बाद में धर्म का चक्र चलाएगा) और उस उत्तम धर्म को बनाए रखने का भार वहन करेगा, जिसे शाक्य पुत्र, तेजस्वी पुरुष ने वांछनीय और अवांछनीय के बीच विचलित हुए बिना प्रकट किया और निरंतर प्रसारित रखा है। धम्मवुत्तिओ (धर्म की वर्षा) को महान सत्यों के उपदेश के रूप में गिना जाता है; वसन्तो (वर्षा) वर्षा (या उपदेश), स्पष्टीकरण, प्रकटीकरण, साझाकरण, सरलीकरण करने वाला वह व्यक्ति होगा; यही अर्थ है।

263. हे प्रतापी गौतम, शाक्यों वंश के बैल-पुरुष, ने अपने विशिष्ट ज्ञान से इन सभी गुणों को जानकर (उच्च ज्ञान के माध्यम से) भिक्षु संघ में विराजमान होकर, श्रेष्ठ (आर्य) व्यक्तियों के बीच बैठकर, उन्हें सर्वोच्च स्थान पर स्थापित किया है; इस प्रकार यह संबंध है।

264. इस प्रकार भविष्यवाणी प्राप्त करके, वह प्रसन्न हो गया और उत्साह और आनंद से भरे भाव से उसने यह श्लोक बोला, जिसकी शुरुआत इस प्रकार है: अहो मे सुकटम कम्मम इत्यादि। यहाँ, अहो विस्मय व्यक्त करने वाला एक अविभक्ति शब्द है; सत्तुनो (गुरु का), महिमावान अनोमदस्सी का, गुरु का; सुकटम (अच्छी तरह से किया गया) ठीक से किया गया, विश्वास करके और बनाया गया; कम्मम (कर्म) वास्तव में पुण्य का अंश है, हाय! आश्चर्यजनक रूप से शक्तिशाली, अकल्पनीय; इस प्रकार, इसका अर्थ है यस्सा (जिसका) महिमावान का; अहं करम (मैं, बनाते हुए) पुण्य का संचय किया; सब्बत्था (हर जगह), सभी गुणों के समूह में; पारमिम (पूर्णता) संपूर्ण अंत; गतो (गया) परम सीमा प्राप्त की; हे वास्तव में! वह महिमावान अद्भुत है! इस प्रकार, संबंध स्थापित होता है।
265. अपारिमेयो (असीमित) वह पुण्य कर्म जो अनंत काल में किया गया; मे (मेरा) इधा, अपने अंतिम जन्म में; फलम (फल) ने परिणाम दिखाया। सुमुत्तो (अच्छी तरह से मुक्त) उचित रूप से मुक्त, झपायिम (मैंने जलाया), मैंने अपने सभी दुराचारों (किलेसा) को आग लगा दी, उस पुण्य के फल से जो एक कुशल धनुर्धर द्वारा छोड़े गए तीर की गति के समान है; यही अर्थ है।
266. अपने स्वयं के परिश्रम को प्रकट करते हुए, उन्होंने असांशतंग से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया। यहाँ, असांशतंग (अजन्मा) स्वयं निर्मित नहीं है; कारणों से नहीं हुआ है; यही अर्थ है। अचलम् पदम् गवेसन्तो (अडिग मार्ग का बीज बोते हुए), उस अजन्मे निर्वाण की खोज में, दुराचार के अंधकार के अभाव और संचित अच्छे कर्मों की स्थापना की भावना से; सब्बे तित्तिये (सभी विधर्मी) वे सभी व्यक्ति, जिन्होंने विधर्म स्थापित किया और गलत विचार उत्पन्न किए; विचिनम् (जांच करते हुए), बारीकी से जाँच करते हुए, एषाहम् (यह मैं); भावे (अस्तित्व) ऐसे अस्तित्व जैसे कि इंद्रिय जगत इत्यादि; संसारिं (पुनर्जन्मों से गुजरा) मैं पूरी तरह से घूम गया; यही संबंध है।
267.8 अपने अर्थ को स्पष्ट करते हुए, उन्होंने इस श्लोक का उच्चारण किया, जिसकी शुरुआत इस प्रकार है: यथा पि ब्याधितो पोसो। यहाँ, ब्याधितो (रोगी) का अर्थ है रोग से पीड़ित; पोसो (मनुष्य) का अर्थ है व्यक्ति, जैसे एक बीमार व्यक्ति औषधि की तलाश करता है, वैसे ही मैं भी निर्वाण, अमरता के अजन्मे मार्ग की खोज करते हुए, अब्बोकिञ्ञम् (मिश्रित नहीं) बिना किसी रुकावट के, निरंतर, बिना अंतराल के, पंचसतम (पाँच सौ) मैंने अपने पाँच सौ जन्मों या अस्तित्वों में संन्यास का त्याग किया; इस प्रकार, संबंध है।
271. kuttitthe sañcarim ahaŋ (मैं एक बुरे लैंडिंग स्थान पर पुनर्जन्म के दौर से गुजरा) मैं पापी लैंडिंग स्थान पर यात्रा मार्ग पर भटकता रहा।
272. सारत्थिको पोसो (सार की इच्छा रखने वाला मनुष्य) वह मनुष्य जो सार का साधक है। कदलिम चेत्वान फालये (केला काटकर वह फट जाएगा) केले के पेड़ का तना काटकर वह उसे दो भागों में बाँट देगा; न तत्थ सारम विन्देय्य (उसे वहाँ सार प्राप्त नहीं होगा) उसे बाँटकर भी वह केले के तने में सार प्राप्त नहीं करेगा, परन्तु वह मनुष्य रित्टो (सार से रहित) है, इस प्रकार संबंध है।
273. जिस प्रकार केले का तना सारहीन होता है, उसी प्रकार संसार में अनेक लोग जो विभिन्न गलत मतों का अनुसरण करते हैं, वे निर्वाण से रहित होते हैं; यही संबंध है। शब्द 'से' एक अविकारी कण है।
274. पच्चिमभवे (अंतिम जन्म में), अंतिम जन्म में, ब्रह्मबंधु (ब्रह्मा का संबंधी), मेरा जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ था; यही अर्थ है; महाभोगमछादेत्वान (विशाल धन का त्याग करके), धन के विशाल भंडार को लार के ढेले के समान फेंक दिया; अनागारियम (गृहस्थ जीवन), हल चलाने, व्यापार आदि जैसे व्यवसायों से रहित, पब्बजिं (मैं संन्यासी बन गया), संन्यास का मार्ग अपनाया; यही अर्थ है।
प्रथम प्रस्तुति पर टिप्पणी
अवसर समाप्त हो गया है।
275.7. अज्झायको:- :P: मुनिम मोने समाहितम्, पाठकर्ता.. आदि.... वह ऋषि जिसका मन ज्ञान में ठीक से या तल्लीनता से केंद्रित है। मोना को ज्ञान या बुद्धि (ज्ञान) कहा जाता है; (मोना) मन अच्छी तरह से केंद्रित, उस ज्ञान (मोना) में ठीक से स्थित; इस प्रकार, अर्थ है। एक नाग (हाथी) है क्योंकि वह अपराध (आगु) के रूप में मानी जाने वाली बुराई नहीं करता है; थेरा असजी; वह महान हाथी (महानाग), खिलते हुए कमल के समान सुंदर रूप से चमकता हुआ, ठीक से खिलता हुआ; इस प्रकार, अर्थ है
278-281. Disvā me :P: pucchitum amotam padam, मेरे द्वारा देखकर... इत्यादि... अमर मार्ग के बारे में पूछना। अर्थ स्पष्ट है।
282. विथिंटारे है: विथी अंतारे, गली के अंदर; अनुप्पट्टम (बाद में पहुंचा), वह थेरा जो पास गया और पहुंचा; उपगन्त्वाना (पास आकर), मैं पास गया और पूछा; इस प्रकार, संबंध है।

284. कीदिसम ते महावीर (हे महान वीर! वे कैसे हैं?) हे महान वीर, आप जिन्होंने धर्मचक्र के प्रारंभ में अरहतों के बीच, उस युग में अरहतत्व प्राप्त किया; हे परम दृढ़ पुरुष! महायसा ते (आपकी महान प्रसिद्धि हो) क्योंकि आपके अनेक अनुयायी और दल हैं, जिनमें आप बुद्ध के समान हैं! शासनं धम्मं (धर्मप्रधान सिद्धांत) धर्म के उपदेश के रूप में माना जाने वाला धर्म; इस प्रकार संबंध है। भो, मित्र! शुभ मुख! भद्रमुख! मे, मेरे; साधु, अच्छा, अच्छा धर्मप्रधान या शिक्षा; कथयस्सु, कथेहि, कृपया बोलें (या कहें); इस प्रकार अर्थ है।
285. इसके बाद, वाणी या उपदेश के स्वरूप को दर्शाने के लिए, उन्होंने इस श्लोक का उच्चारण किया, जिसकी शुरुआत "सो मे पुच्छो" से होती है। वहाँ सो (वे) थेरा अस्सजी हैं; मे, मे द्वारा, पुच्छो (ने पूछा), जब उनसे इस प्रकार पूछा गया: "यह उपदेश या शिक्षा कैसी है?", तो उन्होंने संपूर्ण शिक्षा (या प्रवचन) का उपदेश दिया। गंभीरम् (गहरा), संपूर्ण उपदेश या शिक्षा अर्थ में गहन है; गंभीरम् (गहरा), क्योंकि बुद्ध द्वारा प्रचारित धम्म में प्रवेश करने की गहराई है; निपुणम्पदम् (सूक्ष्म मार्ग, निर्वाण), जो पूर्णतः सार्थक आर्य सत्य आदि के निर्धारण के माध्यम से सूक्ष्म है; हन्तारम् (हत्या), तृष्णा इच्छा के काँटे और पुनर्जन्म के चक्रों के संपूर्ण दुख का नाश करना; अपानुदनम् (उखाड़ फेंकना), जिसका स्वभाव (धम्म) फेंके जाने का है; इस प्रकार, संबंध है।
286. उनके उपदेश के स्वरूप को दर्शाने के लिए, उन्होंने ये श्लोक कहा, जो इस प्रकार प्रारंभ होता है: हेतुप्पभावा (कारण से उत्पत्ति) जो विशेष रूप से उत्पन्न हुआ, सामान्यतः उत्पन्न हुआ, उचित रूप से उत्पन्न हुआ, हो गया, घटित हुआ, कारण और परिस्थिति से उत्पन्न हुआ; धम्मा (जो भी वस्तुएँ) जो भी, प्रकृति की वस्तुएँ कारणों सहित, उपस्थित हैं, विद्यमान हैं, प्राप्त होती हैं; इस प्रकार, संबंध है। तेसम (उनका) धम्मा का, हेतुम, कारण परिस्थिति; आहा (कहा) तथागत ने उपदेश दिया। तेसंच यो निरोधो, (जो भी समाप्ति हो, वह भी) जो भी समाप्ति हो, उन वस्तुओं के अंत की प्रकृति जो कारण के अधीन हैं; एवं वादी महासमनो (महान भिक्षु ऐसे वक्ता हैं) प्रतापी महासमनो महान भिक्षु महासमनो थे, क्योंकि उनके अनुयायियों में शील, समाधि, ज्ञान आदि गुणों की महानता थी, उनके पापों का निवारण और पूर्ण विनाश हुआ था, इसलिए वे इस प्रकार वक्ता थे, क्योंकि वे कारणों के पूर्ण निवारण आदि जैसे वचन बोलने के आदी थे; यही अर्थ है।
287. इसके बाद, उन्हें जो धर्म का उपदेश दिया गया था, उसे सुनकर उन्होंने सोहम से शुरू होने वाले इस श्लोक का पाठ किया, ताकि उस समय उनके द्वारा किए गए कार्य का स्वरूप स्पष्ट हो सके। यह तो स्पष्ट है।
289. एसेवा धम्मो यदितावदेव (यदि यही धम्म इतना ही है) तो इससे आगे कुछ न हो, इस हद तक, प्रथम श्रेष्ठ धार्मिक मार्ग (सोतापत्ति) का यही फल प्राप्त होना चाहिए। इसी प्रकार यही धम्म है; यही अर्थ है। पच्चव्यथा, पदम्, मार्ग, तुम सब चिंतामुक्त निर्वाण में प्रवेश करो। यह मार्ग नहुत काल से, अर्थात् हमारे द्वारा, अनेक युगों (कप्प) से देखा गया है।
290. Y'āham dhammam gavesento is: yo ahaŋ, मैं, धर्म की खोज में, शांत मार्ग के धर्म की खोज में; kutitthe (बुरे स्थान पर), घृणित स्थान पर, निंदनीय स्थान पर; sañcarim (मैं भटक गया था), गोल-गोल घूम गया था; यही अर्थ है। So me attho anuppatto (मेरी वह इच्छा पूरी हो गई थी), वह कल्याण (या लाभ) जिसकी खोज की जानी चाहिए थी, मुझे उचित रूप से प्राप्त हो गया था; अब, मुझे, मेरे, nappamajjitum (लापरवाह न होने के लिए) अब समय आ गया है कि मैं सजग हो जाऊं; यही अर्थ है।
291. तोसितो (प्रसन्न) मैं थेरा अस्सजी से प्रसन्न हुआ, अचलम् पट्वाना (अविचल प्राप्त करके) निर्वाण, जो कभी न डगमगाने वाला है, प्राप्त करके; सहायकम, साथी, बालक कोलिता; गेवेसन्तो (खोजते हुए) मैं मूल संन्यासियों के निवास पर खोज में गया; इस प्रकार, इसका अर्थ है।
292. दूरतो व ममम् दिस्वा (मुझे दूर से भी देखकर) मुझे अपने आदिम संन्यासी निवास से भी दूर से आते हुए देखकर; मुझे (मेरे) मेरे अनुशासित साथी; सम्पन्नो (से संपन्न) खड़े होने, बैठने आदि जैसी मुद्राओं से परिपूर्ण; इदम् (यह), उपरोक्त कहे जाने वाले शब्द, अब्रवी (कहे), कहे; इस प्रकार, अर्थ है।
293. हे सहोदी! पसन्ना मुखनेत्तोसि (आप निर्मल मुख और नेत्रों से सुशोभित हैं) आप सुंदर, आकर्षक और तेजस्वी मुख और नेत्रों से संपन्न हैं। दिस्साति (देखने पर), आपमें ऋषि के समान गुण प्रकट होते हैं; अमरताधिगतो (अमरता प्राप्त कर ली है), निश्चित रूप से आपने निर्वाण, अमर शांति प्राप्त कर ली होगी; कच्चि अच्चुतं पदम् क्या आपने किसी भी प्रकार से अमर मार्ग की ओर अग्रसर हुए हैं?, मैं आपसे इस प्रकार पूछता हूँ: “क्या आपने निर्वाण, अमर मार्ग प्राप्त कर लिया है?” -यही अर्थ है।
294. Xubhānurūpo āyāsi (आप सुंदर दिखते हुए आए हैं) सुंदर और मनमोहक रंगत वाले व्यक्ति के समान होकर आप यहाँ आए और पहुँचे हैं। Āneñjakārito viya, मानो अविचलित हाथी के समान, हाथी के सारथी के भाले आदि के कारण शांत हो गए हों; danto va (परन्तु वश में) मानो तीन महीने तक अनुशासित रहे हों; brāhmaṇa danto damatho (वश में और वश में ब्राह्मण) बुराई को भगाने के कारण, वह अनुशासन में प्रशिक्षित ब्राह्मण है, उसने पूछा: क्या आप निर्वाण के मार्ग में अच्छी तरह से शांत हैं?
295. जब उनसे पूछा गया, तो सारिपुत्त ने उत्तर दिया: अमतम् मया, मेरे द्वारा अमरता, इत्यादि। यह तो स्पष्ट है।

299. अपरियोसितसांकप्पो (अपूर्ण रूप से समाप्त हुआ इरादा) वह इरादा जो अभी तक साकार नहीं हुआ है, आकांक्षा का चरम बिंदु, इस प्रकार आकांक्षा की गई: "भविष्य में मैं किसी बुद्ध का प्रधान शिष्य बनूँ।" यही अर्थ है। कुतित्ते (गलत पड़ाव) वह यात्रा या मार्ग जिस पर नहीं जाना चाहिए था; अहं संचरिम (मैं भटक गया) अपने चारों ओर लुढ़क गया। आदरणीय गौतम! हे जगत के सबसे बड़े! आगम्म (आओ) मैं आपसे मिलने यहाँ आया हूँ, और आकर, मम सं ंकप्पो (मेरा इरादा) मेरी आकांक्षा; पुरितो (पूर्ण) मैं अब शिष्यों के ज्ञान की प्राप्ति, श्रेष्ठ अरहतत्व के सही मार्ग की प्राप्ति से पूर्णतः परिपूर्ण हूँ; यही अर्थ है।

300. पथवियम् पतित्त्याय (पृथ्वी पर स्थापित) पृथ्वी पर जन्म लेने वाले, समये (उस समय) शीत ऋतु में, पुप्पन्ति (खिलना) फूल; दिब्बगंधा (दिव्य सुगंध) अच्छी और उत्कृष्ट सुगंध; पावन्ति (बहना) हवा लाना, उत्सर्जित करना; सब्बपाणिनम् (सभी प्राणियों को) सभी मनुष्य और दिव्य प्राणी; तोसेन्ति (आनंदित करना), मानो उन्हें मानसिक आनंद से जोड़ना।

301. तथावाहं महावीर (इसी प्रकार मैं भी, हे महान वीर!) हे महान अनुचरों वाले, शाक्य वंश के पुत्र, अपार परिश्रम से संपन्न! ते (आपके) विधान में; पतित्याय (स्वयं को स्थापित करके) मैं खड़ा रहा; पुप्पितुम (प्रज्वलित होना) श्रेष्ठ अरहतत्व के धर्म मार्ग के ज्ञान से; समयम्, समय, एस्सामि (मैं खोजता हूँ) इसी प्रकार, मैं भी खोज में जाऊँगा; इस प्रकार, संबंध है।

302. विमुक्तिपुप्पम (मुक्ति का फूल) वह फूल है जिसे धार्मिक श्रेष्ठ अरहतत्व के फल की मुक्ति माना जाता है, क्योंकि सभी प्रकार के दुराचार (किलेसा) से मुक्त होकर व्यक्ति को मुक्ति (विमुक्ति) प्राप्त होती है; एसन्तो (खोज) उसकी खोज में जाना, वास्तव में, भवसंसारमोचनम् (पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति) इंद्रियजन्य अस्तित्व आदि जैसे अस्तित्वों में भटकना है: अस्तित्वों में भटकना (भवसंसार) इससे मुक्ति है: पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति; विमुक्तिपुप्पलाभेन (मुक्ति या मोक्ष के फल की प्राप्ति के साथ) या तो मुक्ति से मुक्ति, या इससे प्राप्त संचय, है: मुक्ति या मुक्ति, सर्वोच्च फल; इस प्रकार, इसके द्वारा निर्देशित (या नेतृत्व योग्य) खिलना और फूल, फूल है; स्वतंत्रता का फूल भी मुक्ति का फूल है; प्राप्ति ही लाभ है, स्वतंत्रता के फूल की प्राप्ति ही मुक्ति के फूल की प्राप्ति है; उस स्वतंत्रता के फूल और उपलब्धि की प्राप्ति के साथ, मैं सभी प्राणियों को आनंदित करता हूँ; यही अर्थ है।

303. "यावता बुद्धखेत्तमहि" (बुद्ध के क्षेत्र तक) और इसी प्रकार आगे। हे चक्खुमा (हे नेत्रों के स्वामी) हे पंच प्रकार के नेत्रों के स्वामी! बुद्ध के क्षेत्र में, जहाँ परित्त, सुरक्षात्मक मंत्र, रत्न सूत्र, रत्न-समान प्रवचन आदि की शक्ति और प्रभाव एक लाख करोड़ ब्रह्मांडों (चक्कवा) के रूप में गिने जाते हैं, वहाँ तक पहुँचते हैं; तपेत्वान महामुनिम् (महान ऋषि को एक तरफ रखकर), आत्मप्रबुद्ध या सर्वज्ञ बुद्ध से दूर रहकर, शेष प्राणियों में से कोई भी नहीं; तव पुत्तस्स (आपके पुत्र का) मेरे साथ, आपके पुत्र के साथ; पञ्ञाय सदिसो (ज्ञान में समान) कोई नहीं; इस प्रकार संबंध है। शेष तो सरल और स्पष्ट है।

308. पाटीपन्ना (उचित रूप से प्राप्त) चार सही श्रेष्ठ मार्गों (मग्ग) से परिपूर्ण, फलात्था (फल में स्थापित), अरहतत्व के फल में स्थापित; सेखफलसमंगिनो (दीक्षित और फल से संपन्न), तीन निम्न फलों से संपन्न, ये आठ श्रेणियों के श्रेष्ठ भिक्षु हैं; उत्तमत्म (सर्वोत्तम लाभ) निर्वाण; आसीसता (लक्ष्य से) खोज; तम (वह) ज्ञान का स्वामी; परिवारेन्ति सदा (सदा घिरे रहने वाले) वे हर समय उनके पास आते हैं, उनकी सेवा करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं; इस प्रकार, अर्थ है।

310. कुशल (चतुर) आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के साथ शरीर, संवेदना, मन और धम्म को देखते हुए, ध्यान के चार आधारों में विशेषज्ञ; भावनाय (विकसित करके) आत्म-ज्ञान के सात तत्वों को बढ़ाकर, आत्म-ज्ञान के तत्व के रूप में ध्यान से शुरू करते हुए; रता (प्रसन्न) पालन किया।

314. उलुराजावा (तारा-सम्राट के समान) यह तारों और ग्रहों के राजा के समान भी चमकता है।

315. धरणीरुहा (भूमि पर सवार) वृक्ष, पृथ्वी या भूमि धरणी है, क्योंकि यह वृक्षों, पहाड़ियों, रत्नों, जीवों आदि को धारण करती है; पृथ्वी या भूमि पर सवार, बढ़ते, विकसित होते या समृद्ध होते हुए धरणीरुहा वृक्ष हैं; रुहंति (सवार) भूमि पर ठीक से स्थापित या खड़े होकर, वे बढ़ते हैं और विकसित होते हैं; वेपुल्लतम (समृद्धि की अवस्था) सर्वांगीण परिपूर्णता की अवस्था, पापुन्ति, प्राप्त होती है; ते (वे) वे वृक्ष, क्रमानुसार, फलम् दसयन्ति (फल दिखाते हैं) फल देने वाले बन जाते हैं।

317.9. फिर उसी प्रकार महिमावान ईश्वर की स्तुति करते हुए, सिंधु सरसती से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया गया: वहाँ सिंधु आदि नाम की नदियाँ हैं, गंगा और सरसती जैसे नाम हैं, और गंगा और यमुना जैसे नाम हैं; संदशमाननम् (बहना) जा रही हैं; एतसम (इनमें से) नदियों की; सागरो व (सागर के समान) सागर के समान; सम्पतीच्छति (स्वीकार करता है) स्वीकार करता है, धारण करता है; उस समय, तब, ये सभी नदियाँ; पुरिमम् नामम् (पूर्व नाम) सिंधु आदि, गंगा आदि जैसे पूर्व नाम, पदनाम, शब्दावली; जहंति (त्यागना) छोड़ देना; सागरो तेव (सागर के समान) सागर के समान; ज्ञाति (ज्ञात) जैसे ही स्पष्ट हो जाते हैं। ततेवा (इसी प्रकार) उस समय चतुब्बान्ना (चार रंग) चार परिवारों को माना जाता था, जिनमें राजसी योद्धा, ब्राह्मण, व्यापारी और सामान्य किसान शामिल थे; तवंतिके (आपकी उपस्थिति में) आपके आसपास, निकट; पब्बजित्वा (भिक्षु बनकर) भिक्षापात्र और पीले वस्त्र धारण करके घूमते थे;

पुरिमम नामम (पूर्व नाम) पदनाम शब्द, जिनमें राजसी योद्धा आदि नाम शामिल थे; जहंती (त्यागना) छोड़ देना; बुद्धपुत्त (बुद्ध के पुत्र) बुद्ध के सगे पुत्र; नारये, ज्ञात, स्पष्ट रूप से स्पष्ट हो जाएगा।

320.4. चंदो (चंद्रमा) चंद्रमा का चक्र; विमलो (निर्मल) अशुद्धियों से मुक्त, मैल रहित, क्योंकि इसने पाँच आसक्तिकारी विकारों (किलेसा) जैसे बादल, पृथ्वी की धुएँ, धूल, धुआँ, शनि या ग्रहण से छुटकारा पा लिया है; आकाश धातुया (आकाश-तत्व में) आकाश के गर्भ में; गच्छम (जाना) यात्रा करना; सब्बे (सभी) तारों का समूह, अतिरोचति (चमकता है) जैसे यह दुनिया में अपनी चमक से जगमगाता है, अपने प्रकाश से रौंदता या अभिभूत करता है; तथेव (इसी प्रकार) तुम भी वैसे ही हो।

325.7. उदके जाता (जल में उत्पन्न) कुमुद और मंडालक कमल के फूल जो जल में स्वयं विकसित होते हैं; बहु (अनेक) अनगिनत; तोयेन (जल के साथ) मटमैले पानी से सना हुआ; उपलिम्पन्ति (लेपना) जैसे वे चिपकते हैं या चिपक जाते हैं; वैसे ही बहुकासत्ता (अनेक जीव) संसार में अनगिनत जीव; जाता (उत्पन्न) विकसित या बढ़े हुए; अत्तिता (हमला या परेशान) कामवासना और क्रोध से बंधे हुए; विरुहरे (सवारी) सवार होना; जैसे कमल का फूल कीचड़ में स्वयं उगता है; केसरी (कमल) लिली का नाम।

329.30. कट्टिका माह में राममके मास (राममका माह), क्योंकि ऐसा कहा गया है, "कुमुद कमलों का चार माह का काल"। वारिजा (जल से उत्पन्न) पद्म कमल आदि; बहु (अनेक) फूल; पुप्पन्ति (खिलने वाला) फूल; तम मासम् (उस माह) जल से उत्पन्न कमल उस कट्टिका माह से आगे नहीं खिलते; इस प्रकार, संबंध है। समयो पुप्पनाया सो (वही फूल खिलने का समय है) वह कट्टिका माह, खिलने का समय और ऋतु है, जैसे कमल खिलते हैं, वैसे ही, हे शाक्यन पुत्र! तुम खिल उठे। पुप्पितो ते विमुत्तिया (आपके उद्धार के लिए खिले): आपके वे शिष्य, भिक्षु जिन्होंने मुक्ति के लिए साधन संचित किए थे, अरहतत्व की प्राप्ति के ज्ञान से खिल उठे। नातिवत्तन्ति (आगे न बढ़ें): आपके उपदेश या मार्गदर्शन में दी गई नसीहत और सलाह से आगे न बढ़ें, ठीक उसी प्रकार जैसे जल में उगा पद्म कमल अपने फूलने के मौसम से आगे नहीं बढ़ता; यही अर्थ है।

33.4. यथा पि सेलो हिमवा (जैसे कि पथरीली हिमवा पर्वत) हिमवा नाम की पत्थर से बनी पर्वत; सभी प्राणियों का, सभी रोगग्रस्त प्राणियों का; औषधि (औषध) सभी ड्रैगनों, सभी टाइटनों, सभी देवताओं का, जिनके पास औषधि है; आलयो (विश्राम स्थल) जैसे कि वह घर बन गया है; उसी प्रकार, हे महान वीर! आप औषधि के समान हैं क्योंकि आपने सभी प्राणियों को वृद्धावस्था, रोग, मृत्यु आदि जैसी बीमारियों से मुक्ति दिलाई है; जैसे कि वह हिमवा पर्वत ड्रैगनों आदि का विश्राम स्थल या घर है, उसी प्रकार, पारमिं गता (पूर्णता प्राप्त करके) तीन प्रकार के ज्ञान (विज्जा), छह प्रकार के उच्च ज्ञान (अभिज्ञा) और जादुई शक्तियों (इद्धि) को प्राप्त करके, आप पर निर्भर रहते हैं; इस प्रकार, संबंध है। नीचे हो या ऊपर, छंदों को जोड़ने की विधियों को उपमाओं और उदाहरणों के माध्यम से अच्छी तरह से जानना चाहिए।

342. आसयानुसयम् ञत्वा; यहाँ, आसया (इच्छा) तीव्र इच्छा, अभ्यास है; अनुसया (दीर्घकालिक स्थिति) वह दुराचार है जो प्रबल हो गया है। सामान्य इच्छा, दीर्घकालिक इच्छा और दुराचार की घटना को जानते हुए, इस प्रकार टिप्पणी की जाती है: "यह व्यक्ति कामवासना का आदी है", यही अर्थ है। इंद्रियानम् बलबलम् (नियंत्रण शक्तियों की शक्ति और दुर्बलता) शक्ति और दुर्बलता को इस प्रकार जानते हुए कि क्या विद्यार्थी को आसानी से समझाया जा सकता है या नहीं, अर्थात् कठिनाई, पांच नियंत्रण या विकसित होने योग्य शक्तियों जैसे स्पष्ट भक्ति (सद्धा) आदि में तीव्र या कोमल शक्तियों के अच्छे या बुरे लक्षणों की। भब्बाभब्बे विदिवना (संभव और असंभव को जानकर) स्वयं को इस प्रकार जानकर: "यह व्यक्ति संभवतः मेरे द्वारा प्रचारित सत्य (धम्म) को ठीक से समझ सकता है, यह व्यक्ति संभव नहीं है", हे सर्वज्ञ बुद्ध! चार द्वीपों की महान वर्षा की तरह, आपने गज्जसी (गर्जन) किया, एक महान गर्जना की, जो पूरे ब्रह्मांड (चक्कवाला) में सर्वसम्मति से गूंज उठी, निर्भीक गर्जना के साथ, सत्य (धम्म) का प्रचार करने वाले सिंह की गर्जना के साथ।

343.4. चक्कवाङपरियन्ता (ब्रह्मांड की चरम सीमा) पर श्रोता चारों ओर से ब्रह्मांड के गर्भ या सतह (चक्कवाङ) को भरते हुए बैठे होंगे। नाना दिष्टि (विभिन्न विधर्मी) इस प्रकार बैठकर, अनेक मत रखने वाले, विवाद करते हुए, दो गुटों या विभाजनों (द्वेल्हक) में विभाजित हो गए; विमतीछेदनाय (संदेह को दूर करने के लिए) उनकी उस बुरी बुद्धि को काटने के उद्देश्य से; सब्बेसम (सभी का) सभी जीवित प्राणियों का, चित्तमञ्ञाय (मन को जानने वाला) उनके मन की प्रवृत्ति को जानने वाला; ओपम्मकुसला (उदाहरणों में चतुर) उपमाओं और उदाहरणों का विशेषज्ञ; एकम पण्हम कथेन्टो वा (केवल एक समस्या की बात करते हुए) केवल एक प्रश्न का उत्तर देकर, विमतिम चिन्दति (संदेह दूर कर दिया) ने संपूर्ण ब्रह्मांड (चक्कवळा) की सतह पर बैठे जीवों के संदेह को निःसंदेह दूर कर दिया, इस प्रकार, यही अर्थ है।

345. उपदिसादिसेहेव, वास्तव में जलीय पौधे या काई (उपदिसा) के समान; यहाँ, जल के ऊपर स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं; इस प्रकार, यह काई (उपदिसा), जलीय पौधा (सेवला) है; काई के समान मनुष्य, काई (उपदिसा) के समान हैं; जैसे, वास्तव में, काई और जलीय पौधे जल पर फैलकर जल को अदृश्य बना देते हैं, वैसे ही वसुधा (पृथ्वी) उन मनुष्यों द्वारा बिना किसी अंतराल के फैलकर या विस्तारित

होकर भर जाती है, जो उन काई के समान हैं; पंजलिका (हाथ जोड़कर) सिर पर हाथ उठाकर; कित्तयुम लोकनायकम् (विश्व संरक्षक की स्तुति करते हुए) विश्व के रक्षक बुद्ध के गुणों का वर्णन करते हैं।

346. ते (वे) सभी मनुष्य और दिव्य प्राणी; कप्पम्य (संसार या), संपूर्ण विश्व-काल (कप्प); कित्तयन्त, गुण-वर्णों की स्तुति करते हुए; नानावञ्जेहि (विभिन्न रंगों के साथ) उन्होंने विभिन्न प्रकार के गुणों की स्तुति की; इसके बावजूद भी, वे सभी परिमितम् (मापने के लिए) गुणों की मात्रा की बात करते हैं, नापप्पेयुम (पहुँच नहीं पाएँगे) अच्छी तरह से नहीं पहुँच पाएँगे, सक्षम नहीं होंगे; अप्पमेय्यो तथागतो (तथागत अतुलनीय हैं) आत्मप्रबुद्ध सर्वज्ञ बुद्ध सर्वव्यापी अतुलनीय हैं, उनमें अनेक गुण हैं; इससे वे बुद्ध के गुणों की महानता को प्रकाशित करते हैं।

347. सकेन थामेना (अपनी शक्ति से) अपने बल के बल पर, उपमाओं और उदाहरणों के माध्यम से, नीचे; जिनो (विजेता) बुद्ध जिन्होंने दुराचार (किलेसा) पर विजय प्राप्त की, मया कित्तियो (मेरे द्वारा स्तुति की गई) जैसे कि मैंने उनकी स्तुति की थी, कित्तिट्टा पकित्तयुम (प्रशंसा में स्तुति करेंगे) ठीक उसी प्रकार, सभी देवता और मनुष्य करोड़ों युगों और करोड़ों विश्व चक्रों तक उनकी प्रशंसा करेंगे; यही अर्थ है।

348. बुद्ध के गुणों की असीमता को उजागर करने के लिए उन्होंने यह श्लोक कहा, जिसकी शुरुआत इस प्रकार है: Sace hi koci devo vā, pūritam parikāḋḋheyya (भरा हुआ और चारों ओर खिंचा हुआ, जैसे विशाल सागर का भरा हुआ जल अपने आप को चारों ओर खींच लेता है; वैसे ही वह व्यक्ति, मृत्यु, दुःख (दुक्खा), यहाँ तक कि, लभेय्य, भी प्राप्त कर लेता है; यही अर्थ है।

350. वत्तेमि जिनासासनम् (मैं विजेता के उपदेश (या प्रवचन) का निरंतर अनुसरण करता हूँ) मैं निरंतर अनुसरण करता हूँ और विजेता द्वारा प्रचारित तीनों पिटकों की देखरेख करता हूँ; यही इसका अर्थ है। धम्मसेनापति (सत्य के सेनापति) वे सभा के प्रमुख स्वामी हैं, जिन्हें सत्य (धम्म) के ज्ञान के कारण प्रतापी बुद्ध की चार प्रकार की सभा (या श्रोतागण) माना जाता है; इस प्रकार, वे प्रतापी बुद्ध के प्रवचन या उपदेश में सत्य के सेनापति (धम्मसेनापति), शाक्यपुत्तस (शाक्य के पुत्र) हैं; अब (वर्तमान में) मैं विश्व-राजा के सबसे बड़े पुत्र के समान बुद्ध के संपूर्ण प्रवचन की रक्षा करता हूँ।

352.3. अपने बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों के चक्र को दर्शाने के लिए, उन्होंने यह कहा (पृष्ठ 431): यो कोचिमनुजो भारम्। मनुजो (मनुष्य) कोई भी भारम् (भार) सिर पर रखा हुआ भार; मत्थके (सिर पर) उसके सिर पर रखा हुआ भार; धारेय्या (सहेगा) लेगा; सदा (पृष्ठ 431) हर समय भारेण दुक्खितो (भार से व्याकुल) वह मनुष्य, उस भार (या बोझ) से दबा हुआ और अभिभूत; अस्सा (होगा) भार, उठाया हुआ भार, बोझिल; अत्यधिक बोझिल। तथा (उस प्रकार) मैं, काम, क्रोध और मोह की अग्नि से झुलसकर, गिरिं उद्धरितो यथा (जैसे पर्वत को उठाया गया था) मैंने विशाल मेरु पर्वत को अपने सिर पर उठाया, थामे रखा; भावभारण (अस्तित्व के बोझ से) जन्म-जन्म के चक्र में उत्पन्न होने के बोझ से; भारित (बोझ से) जन्म-जन्म के चक्रों में व्याकुल होकर, संसारिं (मैंने पुनर्जन्मों का चक्र पूरा किया) मैंने अपने आप को घुमाया; इस प्रकार संबंध है।

354. ओरोपितो च मे भारो (मेरा बोझ भी उतार दिया गया था) अब, मेरे भिक्षु बनने के समय से ही, अस्तित्व का वह बोझ उतारकर फेंक दिया गया था। भवा उग्घातिता मया (मेरे द्वारा अस्तित्व नष्ट कर दिए गए थे) सभी नए अस्तित्व मेरे द्वारा कुचल दिए गए थे; शाक्यपुत्तस्स (शाक्य पुत्र का) प्रतापी के विधान में करणीयम (जो किया जाना चाहिए) जो कुछ भी सही श्रेष्ठ मार्गों (मग्ग) की श्रृंखला द्वारा किया जाना चाहिए, उसमें दुराचार (किलेसा) को नष्ट करने का कार्य है, वह सब मेरे द्वारा किया गया था; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

355. फिर, अपनी विशिष्टता दर्शाने के लिए, उन्होंने इस श्लोक का उच्चारण किया, जिसकी शुरुआत इस प्रकार होती है: यावता बुद्धखेत्तमहि। वहाँ, यावता (जहाँ तक) बुद्ध के क्षेत्र में फैले दस हजार ब्रह्मांडों (चक्कवा) के समान, शाक्य पुरुष-बैल ने, शाक्य वंश में श्रेष्ठ, तेजस्वी बुद्ध को स्थान दिया (या अलग रखा), शेष प्राणियों में से कोई भी ज्ञान या बुद्धि में मेरे समान नहीं है; इस प्रकार, वह प्रकाशमान होते हैं। अतः बुद्ध ने कहा: "मैं ज्ञान में सर्वोच्च हूँ; मेरे समान कोई नहीं है।"

356. फिर से, अपनी शक्ति या प्रभाव को स्पष्ट करने के लिए, उन्होंने समाधिंहि से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा। इससे ही अच्छी तरह समझा जा सकेगा।

360. झानविमोक्खानाखिप्पपटिलाभी (झान और मुक्ति का शीघ्र प्राप्तकर्ता) वह है जो सफल, प्रभावी ध्यान की पहली अवस्था, आदि जैसे झानों को शीघ्रता से प्राप्त करता है, और साथ ही उन आठ प्रकार की पारलौकिक मुक्ति को भी प्राप्त करता है जिन्हें सांसारिक दुनिया से मुक्ति के कारण विमोक्खा माना जाता है।

362. अपने साथी साधु-संतों के प्रति अपार आदर प्रकट करने के लिए, अपनी अपार शक्ति और प्रभाव के बावजूद, उन्होंने 'उद्धतविसो वा' से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा। वहाँ, उद्धतविसो (विष निकाला हुआ) जैसे विषैले साँप का विष निकाल लिया गया हो; चिन्नविसाणोव (सींग कटा हुआ) जैसे सांड के सींग काट दिए गए हों, मैं अब निक्खित्तमानदप्पो वा (अहंकार और अहंकार या अय्याशी

को त्यागकर) कुल-अभिमान आदि को त्यागकर, गणम् (समूह) पुरोहितों की उपस्थिति में; गरुगारवेन (गंभीर आदर के साथ), अत्यंत श्रद्धा के साथ; उपेमि (मैं पास जाता हूँ)।

363. अब, अपने ज्ञान की महानता को स्पष्ट रूप से प्रकट करने के लिए, उन्होंने 'यदि रूपिणी' से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा: मेरा ज्ञान इतना महान है कि यद्यपि यह निराकार है, यदि यह साकार हो जाए, तो मेरे संसार का वह ज्ञान पृथ्वी के राजा वसुपतिनं समेय्य (धरती के स्वामी के समान) होगा; यही इसका अर्थ है। इस प्रकार अपने ज्ञान की महानता प्रकट करने के बाद, अपने स्वरूप को याद करते हुए, उन्होंने 'अनोमदस्सिस्सा' से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा: वहाँ, मेरे ज्ञान की यह महानता, महिमावान अनोमदस्सि के ज्ञान की मेरे द्वारा की गई स्तुति का परिणाम या फल है; यही इसका अर्थ है।

364. पावत्तितं धम्मचक्कम् (सत्य (धम्म) का पहिया घुमाया गया) यहाँ, यह शब्द चक्का, हालांकि, ऐसे वाहन या परिवहन के संबंध में प्रकट होता है जैसे: "चतुचक्कयान, चार पहिया रथ", इत्यादि; यह बुद्ध का ऐसा उपदेश है जैसे: "पावत्तिते च पाना भगवता धम्मचक्के, जब सत्य का पहिया, हालांकि, महिमावान द्वारा घुमाया गया", इत्यादि; ऐसे संदर्भों में जैसे: "चक्कमवत्तया सब्बपाणीनम्, पहिया घुमाना, या सभी जीवित प्राणियों को (भोजन) वितरित करने का चक्र", इत्यादि, यह शब्द चक्का दान से किया गया पुण्य कर्म है; ऐसे संदर्भों में जैसे: "चक्कमवत्तेति अहोरत्तम्, दिन-रात पहिया घुमाना", इत्यादि, यह मुद्राओं में आता है; (इरियापथे); "इच्छाहतस्स पोसस्स, चक्कम भामति मत्थके, इच्छा से प्रेरित व्यक्ति के सिर पर पहिया घूमता है", इत्यादि संदर्भों में यह खुरचक्क (रंजक-पहिया) के रूप में आता है; "राजाचक्कवत्ति चक्कानुभवन वत्तनको, अपने पहिये की शक्ति से विश्वराज बनने वाला", इत्यादि संदर्भों में यह रत्नचक्क (रतनचक्क) के रूप में आता है; हालांकि, यहां यह शब्द बुद्ध के उपदेश (देसन) के संदर्भ में है। तादिना (ऐसे) उस बुद्धिमान द्वारा! ऐसे गुणों से संपन्न व्यक्ति द्वारा (तादि); शाक्यपुत्तेन (शाक्य का पुत्र) आत्मप्रबुद्ध सर्वज्ञ बुद्ध गौतम द्वारा; पवत्तितम् (मोड़ा) उपदेश दिया या बताया; धम्मचक्कम (सत्य का चक्र) तीन पितकों के रूप में गिना जाता है, सम्मा (कुआँ) बिना विकृति के; अनुवत्तेमि (मैं बुद्ध के पीछे मुड़ता हूँ) मैं अनुसरण करता हूँ और मुड़ता हूँ, इंगित करता हूँ और उपदेश देता हूँ; इदम् (यह) अनुगामी मोड़, उपदेश के बाद, बाद में उपदेश देना, जो पूर्व बुद्धों के ज्ञान की प्रशंसा करने के मेरे प्रदर्शन का परिणाम या फल है; इस प्रकार, संबंध है।

365. इसके बाद, भले लोगों पर भरोसा, बुद्धिमान मानसिक ध्यान आदि जैसे पुण्य के परिणाम या फल को दर्शाने के लिए, उन्होंने 'मा मे कदाचि पापिच्छो' से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा। वहाँ, पापिच्छो (बुरी इच्छा रखने वाला) निम्न या पापी इच्छा से ग्रस्त; विभिन्न प्रकार के कर्तव्यों के पालन में, और खड़े होने, बैठने आदि जैसी मुद्राओं में भी, बुरे आचरण वाला व्यक्ति; कुसितो (आलसी) ध्यान (प्रभावी ध्यान), एकाग्रता, सही मार्ग के विकास आदि जैसे कार्यों में, हीनवीरियो (प्रयास छोड़ देने वाला) क्योंकि ग्रंथों के अध्ययन और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करने के भारी कर्तव्य का अभाव है, अप्पस्सुतो (कम ज्ञानी) क्योंकि शिक्षक, गुरु (उपाज्जक) आदि जैसे व्यक्तियों के बीच अच्छे आचरण या अभ्यास से वंचित है; वह अनाचार है, उचित अभ्यास से रहित व्यक्ति भी है; kadāci (कभी-कभी), katthaci (कहीं भी), स्थानों में; me (मेरे द्वारा) मेरे साथ; sameto (अच्छे से आओ) साथ आओ, mā ahu (ऐसा न हो) ऐसा न होने दो; इस प्रकार, संबंध है।

366. बहुस्सुतो (अत्यंत विद्वान): दो प्रकार के अत्यंत विद्वान पुरुष होते हैं: एक वे जो शिक्षा के ग्रंथों में पारंगत हों और उपदेशित सत्यों में उचित अंतर्दृष्टि रखते हों; मेधावी (बुद्धिमान) वह व्यक्ति जो ज्ञान से संपन्न हो; सीलेसु सुसमाहितो (उपदेशों में एकाग्रचित्त): वह व्यक्ति जिसका मन चार पूर्णतः शुद्ध उपदेशों, सही श्रेष्ठ मार्ग से जुड़े उपदेश, उपवास के आठ गुना उपदेशों आदि में सुस्थापित और स्थिर हो; चेतोसमथानुयुत्तो (मन को शांत करने में समर्पित): वह व्यक्ति जो एक ही मन की अवस्था में समर्पित हो; अप्पमुद्धनि तित्ततु (वह मेरे सिर पर भी खड़ा हो): वह व्यक्ति मेरे सिर के ऊपर भी खड़ा हो; यही अर्थ है।

367. स्वयं द्वारा प्राप्त लाभों या फायदों के बारे में बोलने के बाद, उन्होंने "तम वो वदामि भद्दन्ते" से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा, और वहाँ मौजूद अन्य लोगों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित किया।

368-9. यमहंग, मैं, पाठमम् (प्रथम) मैं, थेरा असजी को पहली बार (या पहले अवसर पर) देखकर; निर्मल (निष्कलंक) अशुद्धियों से रहित, क्योंकि मैंने आत्म-विधर्म (सक्काया-दिष्ठी) आदि जैसे दुराचारों (किलेसा) का त्याग कर दिया था, और पवित्रता (सोतापत्ति) के प्रथम चरण के अच्छे लाभ के कारण, मैं अहुम (था) मैं बन गया; थेरा असजी, मैं (मेरा), मेरा; आचार्य (गुरु) वे मेरे पारलौकिक सत्य (धम्म) के प्रशिक्षक थे; मैं अब, उनके उचित उपदेश के कारण, उनके उपदेश को सुनकर, सत्य (धम्म) का सेनापति बन गया; सब्त (सर्वत्र) सभी गुणों में; पारमिम् पत्टो (पूर्णता प्राप्त की) चरम सीमा को प्राप्त किया; मैं (कैंसर से मुक्त) अनासावो (मैं दुराचार से रहित रहता हूँ, (किलेसा)।

370. अपने गुरु के प्रति आदर (या श्रद्धा) प्रकट करने के लिए उन्होंने यह श्लोक कहा, जिसकी शुरुआत इस प्रकार है: यो मे आचरियो। यो (यह) गुरु अस्सजी नामक थेरा, गुरु के शिष्य; मे (मेरा) मेरे गुरु; असि (था) वह बन गया; यस्सम् दिसायम (जिस भी दिशा में) वह

थेरा निवास करता है, उस्सीसम्हि (मैंने अपना सिर रखा) मैंने उस दिशा (या भाग) को अपने सिर के लिए ऊँचा (या शीर्ष) भाग बनाया; इस प्रकार संबंध है।

371. इसके बाद, अपनी उच्च पदवी की प्राप्ति दर्शाने के लिए, उन्होंने इस श्लोक का पाठ किया, जो इस प्रकार शुरू होता है: मम कम्मम गोतमो, हे महिमावान; शाक्य पुंगवो (सांड शाक्य) शाक्य परिवार का ध्वज; सरित्वाण (**********पृष्ठ 436) अपने सर्वज्ञ ज्ञान से मेरे पूर्व कर्मों को जानकर, भिक्षुओं की सभा के बीच में विराजमान होकर, अग्गत्थाने (सर्वोच्च स्थान पर) ने मुझे अपना प्रधान शिष्य बनाया; इस प्रकार, संबंध स्थापित हुआ।

374. पातिसंभिदामग्गे (विश्लेषणात्मक ज्ञान के सही श्रेष्ठ मार्ग में) ये चार प्रकार के विश्लेषणात्मक ज्ञान, अर्थात्: अत्थापातिसंभिदा (अर्थ का विश्लेषणात्मक ज्ञान), धम्मपातिसंभिदा (पाठ का विश्लेषणात्मक ज्ञान), निरुत्तिपतिसंभिदा (भाषा विज्ञान का विश्लेषणात्मक ज्ञान), पातिभाण पातिसंभिदा (तत्काल उत्तर का विश्लेषणात्मक ज्ञान) इनकी विविधता का केवल उल्लेख किया गया है; सच्चिकता (कल्पना की गई) ने स्वयं को देखा है, आठ प्रकार के उत्कृष्ट मुक्ति (विमोक्ष) और कर्म (धम्म), जो पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति की ओर ले जाते हैं, साथ ही छह प्रकार के उच्च ज्ञान, सभी प्रकार की जादुई शक्तियों (इद्धिविधा) से शुरू होकर, या तो चार सही श्रेष्ठ मार्गों और चार श्रेष्ठ फलों के माध्यम से या रूप-ज्ञान और निराकार-ज्ञान के माध्यम से। katam Buddhassa sāsanam (मैंने बुद्ध के निर्देश का पालन किया था) मैंने अरहत के श्रेष्ठ मार्ग के अपने ज्ञान के माध्यम से बुद्ध की उपदेशात्मक सलाह के रूप में मानी जाने वाली व्यवस्था का पालन और उसे पूरा किया था; यही इसका अर्थ है।

इत्तम सुदम, इस प्रकार; यहाँ, इत्तम एक अविकारी कृदंत है जिसका अर्थ है इंगित करना, इस विविधता के साथ; इस प्रकार, अर्थ है। सुदम, शब्द को पूरा करने वाला एक अविकारी कृदंत है; आयस्मा (आदरणीय) आदर और सम्मान का शब्द है; सारिपुत्तो, उस थेरा का नाम है जिसका नामकरण माता के नाम से हुआ था; इमा गाथायो (ये श्लोक) उन्होंने उच्चारित किए, थेरा सारिपुत्त की जीवनी के इन सभी श्लोकों का पाठ किया। इति (इस प्रकार) शब्द श्रोताओं को आकर्षित करने के अर्थ में एक अविकारी कृदंत है, सारिपुत्त की संपूर्ण जीवनी समाप्त हो गई है; इस प्रकार, अर्थ है।

जीवनी पर टिप्पणी

सारिपुत्त समाप्त हो गया है।

. . . .

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.1 >> 2. थेरा महामोग्गलाना

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

2. महा-मोग्गल्लाना

अनोमादस्सी, हे धन्य, संसार के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के सांड, हिमालय में निवास करते थे, जिन्हें देवताओं की सभा द्वारा सम्मानित किया जाता था। (1) (374)

मैं तब नागदेवों का राजा था,230 और वरुण नाम से जाना जाता था।231 कामदेव का रूप धारण करके232 मैं सागर में निवास करता था। (2) (375)

एक संगीत समूह में होने के नाते, मैंने ताल वाद्य प्रदान किया।233 संबुद्ध की सेवा करने के बाद, दिव्य अप्सराओं234 ने फिर (अपने गीत) गाए। (3) (376)

---

227 पाविसिम अभयं पुरां, अर्थात् निर्वाण। 228 पीटीएस सेठ्ठन तां के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ सेठ् ... 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

232 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 233 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 234 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

जब ढोल बज रहे थे, तब देवताओं ने भी ढोल बजाए। दोनों की आवाज़ सुनकर स्वयं बुद्ध ने भी सुना। (4) (377)

मैंने संबुद्ध को अपने घर आने का निमंत्रण दिया और उनके लिए एक विशेष आसन की व्यवस्था की। मैंने घोषणा की कि अब समय आ गया है। (5) (378)

एक हजार निर्दोष अरहंतों235 के पीछे चलते हुए, वह विश्व-प्रमुख,236 सभी दिशाओं में प्रकाश बिखेरते हुए मेरे घर आया (तब)। (6) (379)

मैंने भोजन और पेय से उस महान नायक को तृप्त किया जो आ गया था, देवताओं का देवदूत, मनुष्यों का बैल, भिक्षुओं की सभा के साथ। (7) (380)

महान नायक प्रसन्न हुए, स्वयंभू, सर्वोच्च मनुष्य; भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए उन्होंने ये श्लोक कहे (मेरे बारे में): (8) (381)

"जिसने सभा और विश्व-प्रमुख बुद्ध की पूजा की,237 अपने हृदय में उत्पन्न प्रसन्नता के कारण, वह देवताओं के लोक में जाएगा। (9) (382)

वह सत्तरह (अलग-अलग) बार दिव्य शासन करेगा। वह पृथ्वी पर निवास करेगा, (और) आठ सौ सांसारिक शासन करेगा। (10) (383)

और वह पचास बार एक चक्र-घुमाने वाला राजा होगा। हर बार वे उसके लिए अनगिनत धन लाएंगे। (11) (384)

अब से अनगिनत युगों बाद, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति संसार का गुरु होगा। (12) (385)

---

235 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 236 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल) 237 शाब्दिक अर्थ, "गया"

नरक से बाहर आने के बाद वह मनुष्य रूप धारण करेगा। कोलिता नाम से जाना जाने वाला वह ब्रह्मा का संबंधी होगा।238 (13) (386)

इसके बाद वह अपने पुण्य कर्मों से प्रेरित होकर, सब कुछ त्याग कर आगे बढ़ेगा। वह भगवान गौतम का दूसरा प्रमुख अनुयायी होगा। (14) (387)

दृढ़ निश्चय से,239 अथक प्रयास से,240 वह महाशक्तियों में उत्कृष्टता प्राप्त करेगा। सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए वह निर्वाण प्राप्त करेगा, निर्दोश होकर।" (15) (388)

कुछ दुष्ट मित्रों पर निर्भर होकर, कामवासना और क्रोध से ग्रस्त होकर, निर्मम मन से मैंने अपनी माँ और अपने पिता की भी हत्या कर दी। (16) (389)

मैं चाहे जिस भी गर्भ में नरक में या मनुष्यों के बीच पुनर्जन्म लूँ, क्योंकि 241 मेरे पास वह बुरा कर्म है, मेरी हत्या कर दी जाएगी, 242 मेरा सिर चीर दिया जाएगा। (17) (390)

यह मेरे लिए अंतिम समय है; (मेरा) अंतिम पुनर्जन्म हो रहा है।243 और यहाँ भी, उसी तरह, मेरे लिए मारे जाने का समय होगा। (18) (391)

एकांतवास में बंधे हुए, समाधि-ध्यान के प्रेमी, समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए, मैं (अब) निर्दोश जीवन जी रहा हूँ। (19) (392)
महाशक्तियों में निपुण होकर मैं केवल अपने बाएं अंगूठे से इस गहरी धरती को हिला देता हूँ।

---

238 सांचेलेसी का पाठ, पीटीएस सांजलेसी के लिए बीजेटीएस के साथ। 239 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"। 240 शाब्दिक अर्थ, "गुणी"। 241 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में, मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, अंश, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु (लंबा? मोटा?)"। 242 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस कई रूपों में गेंदु पढ़ता है। कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक स्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी। 243 येनिच्चका, बीजेटीएस सिंहली व्याख्या कामाती तनका के अनुसार।

मोटा और नष्ट करना मुश्किल। (20) (393)
मुझे "मैं हूँ" का कोई गर्व नहीं है; मुझमें बिल्कुल भी गर्व नहीं है। नौसिखियों के प्रति भी मैं हृदय में आदर भाव रखता हूँ। (21) (394)
मैंने युगों पहले किए गए कर्मों को आगे बढ़ाया है।244 अब मैंने पृथ्वी को प्राप्त कर लिया है;245 मैं दोषों के अंत तक पहुँच गया हूँ। (22) (395)
मेरे सारे दोष (अब) जलकर राख हो गए हैं; समस्त (नया) अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह, मैं बंधनमुक्त होकर जी रहा हूँ। (396)
मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था। तीनों ज्ञान प्राप्त हो गए हैं; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (397)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (23) (398)
इस प्रकार पूज्य महामोग्गलाना थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
महामोग्गलाना थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
3-2. थेरा महामोग्गलाना की जीवनी पर टीका
आदरणीय थेरा मोग्गलाना की जीवनी अनोमदस्सी भगवा से शुरू होती है। इस थेरा ने भी पूर्व बुद्धों की सेवा की, पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति पाने के उद्देश्य से पुण्य कर्म संचित किए, यहाँ-वहाँ के जन्मों में, प्रतापी अनोमदस्सी के समय से लेकर यहाँ तक, उनका उल्लेख धर्म के सेनापति थेरा सारिपुत्त की कथा में किया गया है। वास्तव में, अपने भिक्षु बनने के दिन से सातवें दिन, मगध राज्य के कल्लावाला गाँव में अपने भिक्षु कर्तव्यों का पालन करते हुए, जब वे गहरी नींद में लीन होने लगे, तो गुरु ने उनसे पश्चाताप करते हुए कहा: "हे मोग्गलाना! अपने परिश्रम को व्यर्थ न जाने दो", इत्यादि; फिर, नींद की उन्मत्तता से छुटकारा पाकर, यहाँ तक कि तत्वों (धातु) पर मानसिक (अभ्यास या) चिंतन के तत्व को भी, जैसा कि महिमावान द्वारा बताया गया था, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के क्रमिक विकास के माध्यम से तीन उच्चतर श्रेष्ठ मार्गों को प्राप्त किया, और सर्वोच्च फल (फल) की विशेषता में शिष्य के ज्ञान के शिखर को प्राप्त किया।
375. इस प्रकार द्वितीय (प्रमुख) शिष्य की अवस्था प्राप्त करने के बाद, पूज्य थेरा महा मोग्गल्लाना ने अपने पूर्व कर्मों को स्मरण करते हुए, अपने पूर्व अभ्यास के कर्मों को प्रकट करने के उद्देश्य से, मानसिक आनंद के लिए, अनोमदस्सी भगवान से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया। वहाँ, उनके लिए कुछ भी नीच और निम्न नहीं था; इस प्रकार, वे अनोमदस्सी थे; उनका शरीर वास्तव में एक महान व्यक्तित्व के बत्तीस विशिष्ट लक्षणों से सुशोभित था, इसलिए वे दिन भर, महीने भर, वर्ष भर, यहाँ तक कि एक लाख वर्षों तक भी, सभी दिव्य और मानव प्राणियों को देखकर संतुष्ट या तृप्त नहीं हो सकते थे; इस प्रकार, या निर्वाण को देखने की आदत होने के कारण, जो नीच या निम्न नहीं है; इस प्रकार, या "अनोमदस्सी, उत्कृष्ट द्रष्टा" नाम प्राप्त होने के कारण। महिमा आदि से युक्त होने के कारण, वे भगवान, महिमामय हैं। लोकाजेष्टो, संसार में सबसे बड़े, समस्त सजीव जगत के प्रमुख और सबसे बड़े। नरसाभो (बैल-पुरुष), मनुष्यों के बैल, क्योंकि वे एक बड़े बैल के समान हैं, वे आसभ (बड़ा बैल) हैं; संसार के सबसे बड़े, बैल-पुरुष, महिमावान

अनोमदस्सी; देवसंघपुराक्खतो (दिव्य प्राणियों के समूह के सामने निर्मित), दिव्य प्राणियों के समूह से घिरे हुए, हिमवंत में निवास करते थे; इस प्रकार, संबंध है।

376. जब मैंने दूसरी बार दूसरे शिष्यत्व की आकांक्षा की, तब मेरा जन्म वरुण नाम से जाने जाने वाले ड्रैगन राजा के रूप में हुआ; यही अर्थ है; इसलिए यह कहा गया है: "उस समय मैं वरुण नाम से जाने जाने वाला ड्रैगन राजा था"। कामरूपी (इच्छानुसार रूप धारण करना) मेरी पसंद के वांछित रूप को बनाने की प्रवृत्ति रखता था; विकुब्बामि (मैं बनाता हूँ) मैं विभिन्न प्रकार की जादुई शक्तियों का प्रदर्शन करता हूँ; महोदधिनिवासहं (मैं विशाल सागर में रहने वाला) ऐसे नागों के बीच, जैसे अंकुरित मणहेरिका नाग, भूमि पर चलने वाला (भूमिगत) नाग, पहाड़ी पर खड़ा या स्थिर (पब्बतत्थ) नाग, नदी को ढोने वाला (गंगावाहेय) नाग, सागर में रहने वाला (सामुद्दिका) नाग, मैं सागर में रहने वाले प्रकार का हूँ; मैं विशाल सागर में रहता था; मैंने वहाँ अपना निवास स्थान बनाया; यही अर्थ है।

377. संगनीयं गणं हित्वा (समाज के समूह को त्यागकर) - अपने अनुचरों के समूह को त्यागकर, जो मेरा स्थायी परिवेश बन गया था; तुरियम् पट्ठेषें (संगीत की व्यवस्था करके) - मैंने संगीत की व्यवस्था की, संगीत को मुक्त किया; यही अर्थ है। सम्बुद्धं परिवारेत्वा (आत्मप्रबुद्ध सर्वज्ञ बुद्ध को घेरकर) - सर्वज्ञ बुद्ध अनोमदस्सी की चारों ओर से सेवा करते हुए; अच्छरा (अप्सराएँ) - अजगर-कन्याएँ; वादेसुम (ध्वनि उत्पन्न की) - उन्होंने दिव्य वाद्ययंत्रों से संगीत की ध्वनियाँ उत्पन्न कीं, गीत गाए, इत्यादि; उस समय उन्होंने अपने लाभ या प्राप्त राशि के अनुपात में संगीत दिया; यही अर्थ है।

378. वज्जमानेसु तुरेसु (जब संगीत मुक्त हुआ) जब पाँच प्रकार के मानव और ड्रैगन वाद्य यंत्रों को मुक्त किया गया; देवा तुरानि वज्जयुम (देवताओं ने अपना संगीत मुक्त किया) चार महान राजाओं के दिव्य लोक के देवताओं ने अपना संगीत मुक्त किया और अपने दिव्य वाद्य यंत्रों को बजाया; यही अर्थ है; उभिन्नम सद्दाम सुत्वना (दोनों ध्वनियों को सुनकर) दिव्य और मानव दोनों प्राणियों की ढोल की ध्वनि सुनकर; सम्पबुज्जथा (पूरी तरह से जागृत) तीनों लोकों द्वारा पूजनीय होने के बावजूद बुद्ध ने इसे जाना और सुना; यही अर्थ है।

379. निमन्तेत्वाना सम्बुद्धम् (सर्वज्ञ बुद्ध को आमंत्रित करके) सर्वज्ञ बुद्ध और उनके शिष्यों को घेरकर अगले दिन के भोज के लिए आमंत्रित करने के बाद; सकभवनम् (अपने निवास स्थान) मैं अपने निवास स्थान की ओर गया; आसनम् पञ्ञापेत्वा (आसन तैयार करके) जाकर मैंने रात्रि विश्राम स्थल, दिन के प्रवास स्थल, शौचालय, हॉल (या पंडाल), सोने और बैठने के स्थान तैयार किए; यही अर्थ है; कालमारोकयिम अहं (मैंने समय की सूचना दी) इस प्रकार पूर्व व्यवस्था करके मैंने समय की सूचना स्पष्ट रूप से इस प्रकार दी: "आदरणीय महोदय! समय हो गया है; भोजन तैयार है।"

380. खीणासवसहस्सेहि (हजारों दोषरहित अरहतों के साथ) उस समय, वह प्रतापी, जगत के संरक्षक, हजार अरहतों से घिरे हुए, सभी दिशाओं को प्रकाशित करते हुए, उपागामी (की ओर आए) मेरे महल में पहुँचे; यही अर्थ है।

381. भगवान के अपने महल में प्रवेश करने के बाद भोजन करने की क्रिया को दर्शाने के लिए, उन्होंने उपविट्ठं महावीर से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया। यह आसानी से समझ में आ जाता है।

386. ओक्काककुलसंभवो (ओक्काका परिवार में जन्मा) राजा ओक्काका के वंश से पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे राजपरिवार में जन्मा; या जंबू द्वीप के सर्वथा प्रसिद्ध राजा के परिवार में जन्मा; गौतम (वंश से) मानव जगत में एक गुरु होगा, जो नाम से गौतम होगा और वंश से भी गौतम होगा।

388. सो पच्चा पब्बजित्वाना (वह बाद में भिक्षु बन गया) वह ड्रैगन राजा अपने अंतिम जन्म में; कुसलमूलेन (पुण्य के मूल के कारण) पुण्य संचय के कारण; कोदितो (प्रेरित होकर) उकसाए जाने पर, शासन (सासन) में भिक्षु बन गया, और वह प्रतापी गौतम का दूसरा प्रमुख शिष्य बनेगा।

389. Āraddhavīriyo (प्रयास शुरू किया) खड़े होने, बैठने आदि जैसी मुद्राओं में परिश्रम करने वाला; pahitatto (स्वयं-प्रेरित) निर्वाण की ओर तत्पर मन वाला; iddhiyā pāramim gato (जादुई शक्ति में परिपूर्णता प्राप्त की) चरम सीमा तक पहुँचकर ऐसी जादुई शक्तियाँ प्राप्त कीं जैसे: स्वयं के संकल्प के अनुसार जादुई शक्ति का प्रदर्शन, क्रिया और प्रतिक्रिया से उत्पन्न जादुई शक्ति इत्यादि। इस प्रकार: "हे भिक्षुओं! मेरे भिक्षु शिष्यों में, जादुई शक्तियों के धारकों में, यह एक, अर्थात् महामोग्गल्लाना, प्रमुख या सर्वोपरि है"; Sabbāsave (सभी दोष) यहाँ, ā, है; सभी दिशाओं से, सवा, है: बहने के कारण, इस प्रकार, 'आसवा (कैंसर)' नाम से प्राप्त, इस विषय (धम्म) में, कामुक इच्छा, अस्तित्व, विधर्म और अज्ञान, सब कुछ; परिञ्ञाय (चारों ओर से जानने वाला) सभी दिशाओं से जानकर, समझकर त्याग दिया; अनासवो (कैंसर से मुक्त) दुराचार से रहित; निब्बायिस्सति (निर्वाण में प्रवेश करेगा) दुराचार (किलेस्का) और समूह (खंड) के पूर्ण निवारण से निर्वाण में प्रवेश करेगा; इस प्रकार, संबंध है।

390. अपने पुण्य कर्मों से प्राप्त भविष्यवाणी के बारे में इस प्रकार बोलने के बाद, थेरा ने अपने बुरे आचरण को प्रकट करने के लिए फिर से इस श्लोक का पाठ किया, जिसकी शुरुआत 'पापमित्टोपनिस्साया' से होती है। यहाँ, 'पापमित्ते (बुरे मित्र)' का अर्थ है दुष्ट, निम्नतर मित्र; 'उपनिस्साया' (पर निर्भर) का अर्थ है उन पर भरोसा करना और उनसे घनिष्ठ रूप से जुड़ जाना; यही इसका अर्थ है।

390.1. यहाँ, यह क्रमिक प्रवचन है:-

एक समय विधर्मी एकत्रित हुए और आपस में इस प्रकार परामर्श करने लगे: "मित्र! क्या तुम जानते हो कि किस कारण से भिक्षु गौतम की प्रसिद्धि इतनी व्यापक और प्रचलित हुई?" "हम नहीं जानते; तुम भी नहीं जानते।" "जी हाँ, हम जानते हैं। यह प्रसिद्धि मोग्गलाना नामक एक भिक्षु के कारण उत्पन्न हुई थी। वास्तव में, वह स्वर्गलोक गए, वहाँ के देवताओं से उनके कर्मों के बारे में पूछा, वापस आए और मनुष्यों को उनके बारे में इस प्रकार बताया: 'यह कर्म करने से उन्हें इस रूप की प्राप्ति हुई।' नरक में जन्म का कारण बनने वाले कर्म के बारे में पूछने के बाद, वे वापस आए और मनुष्यों को इस प्रकार उपदेश दिया: 'यह कर्म करने से उन्हें इस रूप का कष्ट भोगना पड़ता है।' यह उपदेश सुनकर मनुष्य, जिसने उसे महान लाभ और प्रसिद्धि दिलाई, मन ही मन सोचने लगा, "यदि हम उसे मार डालें, तो हमें भी वही लाभ और प्रसिद्धि प्राप्त होगी; यही उपाय है।" उन सभी की एक ही इच्छा थी और वे आपस में कहने लगे, "सब कुछ करने के बाद, हम उसे मार डालेंगे।" उन्होंने अपने भक्तों को यह कार्य सौंपा, एक हजार कहपान प्राप्त किए, लुटेरों, यानी हत्यारों को बुलवाया और उन्हें वह हजार कहपान देते हुए निर्देश दिया: "भिक्षु गौतम के शिष्य, महामोग्गलाना, काले पत्थर की पहाड़ी (कालशिला) में निवास करते हैं; तुम सब वहाँ जाओ और उन्हें मार डालो।" धन की प्राप्ति के कारण लुटेरों ने यह कहते हुए सहमति दी, "हम थेरा की हत्या करेंगे"; वे चले गए और उनके निवास स्थान को घेर लिया। थेरा, अपने चारों ओर घिरे होने की स्थिति को जानते हुए, पहाड़ी की गुफा के छेद से बाहर निकल गए और चले गए। लुटेरों ने उस दिन थेरा को न देखकर, एक दिन फिर उनके निवास स्थान पर जाकर उसे घेर लिया। जब थेरा को इसकी भनक लगी, तो उसने अपने घर की छत का एक हिस्सा तोड़ दिया और खतरे से बच निकला। इस तरह, पहले और मध्य महीने में भी वे थेरा को पकड़ नहीं पाए। लेकिन जब आखिरी महीना आया, तो थेरा अपने किए गए कृत्य के गंभीर परिणामों को जानते हुए बाहर नहीं निकला। लुटेरों ने उसे पीट-पीटकर उसकी हड्डियाँ तोड़ दीं, जिससे वे चावल के दाने के आकार के टुकड़े हो गए। फिर उन्होंने उसे मरा हुआ समझकर एक झाड़ी के ऊपर फेंक दिया।

390.2. थेरा ने मन ही मन कहा कि वे गुरु के दर्शन और आराधना करने के बाद पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर लेंगे। उन्होंने अपने शरीर को ध्यान के आवरण में लपेट लिया और आकाश के मार्ग से गुरु के पास जाकर उन्हें प्रणाम किया और कहा, "हे पूज्यवर! मैं पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर रहा हूँ।" बुद्ध ने पूछा, "मोग्गलाना! क्या तुम पूर्णतः निर्वाण प्राप्त करने जा रहे हो? कहाँ जाकर तुम पूर्णतः निर्वाण प्राप्त करोगे?" थेरा ने उत्तर दिया, "हे पूज्यवर! मैं काले पत्थर की पहाड़ी (या स्थान) पर गया हूँ।" बुद्ध ने कहा, "तो फिर, हे मोग्गलाना, तुम्हें मुझे धर्म का उपदेश देने के बाद जाना चाहिए; वास्तव में, मुझे अब तुम्हारे जैसा शिष्य नहीं दिखता।" उस थेरा ने कहा, "आदरणीय गुरुदेव! मैं ऐसा ही करूंगा", और गुरु को प्रणाम करके आकाश में आसीन हुए, निर्वाण प्राप्ति के दिन सारिपुत्त थेरा के समान अनेक प्रकार की जादुई शक्तियों का प्रदर्शन किया, धर्म का उपदेश दिया, गुरु की आराधना की, कालशिला गए और पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर लिया। यह बात जंबूद्वीप में इस प्रकार फैल गई: "कहा जाता है कि लुटेरों ने थेरा की हत्या कर दी।"

390.3. राजा अजातसत्तु ने लुटेरों को पकड़ने के लिए जासूसों (या घुमंतू लोगों) को भेजा। जब वे लुटेरे शराब की दुकान पर शराब पी रहे थे और नशे में चूर हो गए, तो एक ने दूसरे की पीठ पर प्रहार किया और उसे गिरा दिया। पहले वाले को धमकाते हुए, दूसरे ने कहा, "तुमने मुझे बुरी तरह गुमराह किया! तुमने मेरी पीठ पर प्रहार करके मुझे क्यों गिराया? देखो! दोषी (या दुष्ट) लुटेरे! लेकिन क्या? थेरा महामोग्गल्लाना को सबसे पहले तुमने ही पीटा था।" पहले वाले ने पलटकर कहा, "यह कैसे, तुम्हें पता है कि पहला प्रहार मैंने ही किया था?" उन्हें यह कहते हुए सुनकर कि "हमने ही मारा, हमने ही पीटा", उन जासूसों ने सभी लुटेरों को पकड़ लिया और राजा को सूचना दी। राजा ने उन लुटेरों को बुलवाया और पूछा, "क्या थेरा की हत्या तुम सबने की थी?" उत्तर था, "जी महाराज!" राजा ने फिर पूछा, "तुम्हें किसने उकसाया था?" उत्तर था: "महाराज! हमें नग्न भिक्षुओं ने उकसाया था।" राजा ने पाँच सौ नग्न भिक्षुओं को गिरफ्तार करवाया, उन्हें और पाँच सौ लुटेरों को राजमहल में नाभि तक गहरा गड्ढा खोदने के लिए मजबूर किया, फिर उन्हें पुआल से ढककर आग लगा दी। जब राजा को उनकी जली हुई हालत का पता चला, तो उसने लोहे के हल से उन्हें जोतकर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। उस अवसर पर भिक्षुओं ने अपने धार्मिक अनुष्ठान कक्ष में यह चर्चा की: "थेरा महामोग्गलाना की मृत्यु उनके लिए उचित नहीं थी।" गुरुदेव ने आकर पूछा, "हे भिक्षुओं! आप सब यहाँ किस विषय पर चर्चा करने के लिए एकत्रित हुए हैं?" यह जानकर कि वे फलाँ विषय पर चर्चा कर रहे हैं, बुद्ध ने उत्तर दिया, "हे भिक्षुओं! केवल मोग्गलाना के इस जन्म में ही उनकी मृत्यु उनके पद के अनुरूप नहीं है; परन्तु उनके पूर्व कर्म के लिए यह बिल्कुल उपयुक्त है।" जब उनसे पूछा गया, "आदरणीय महोदय! उनका पूर्व कर्म क्या था?" तो बुद्ध ने उसका विस्तृत वर्णन किया।

391. हे भिक्षुओं! बहुत समय पहले, बनारस में एक परिवार का पुत्र अपने माता-पिता का भरण-पोषण स्वयं ही करता था, जैसे अनाज कूटना, खाना पकाना आदि। तब उसके माता-पिता ने कहा, "प्रिय पुत्र! तुम जंगल और घर दोनों जगह अकेले काम करते-करते थक जाते हो; हम तुम्हारे लिए एक कन्या लाएँगे।" यद्यपि उसने यह कहते हुए मना कर दिया, "प्रिय माता-पिता! जब तक आप दोनों जीवित रहेंगे, मैं अपने हाथों से आपकी सेवा करता रहूँगा," फिर भी उसके माता-पिता ने बार-बार यही अनुरोध किया और अपने पुत्र के लिए एक युवती ले आए। कुछ ही दिनों तक उसने उनकी सेवा की और बाद में, उनसे मिलना भी न चाहते हुए, उसने शिकायत की, "मैं आपके माता-पिता के साथ एक ही स्थान पर नहीं रह सकती।" जब उसके पति ने उसकी बात नहीं मानी, तो उसने टूटे हुए चावल के दलिया के टुकड़े उठाए और पति के घर से बाहर जाने पर उन्हें इधर-उधर बिखेर दिया। जब उसके पति ने घर आकर उससे पूछा कि उनका घर इतना गंदा क्यों है, तो उसने कहा, "यह सब उन अंधे बूढ़े लोगों का काम है; ये पूरे घर को गंदा करते फिरते हैं; मैं अब इनके साथ एक ही जगह पर नहीं रह सकती।" बार-बार ऐसा सुनने से, यहाँ तक कि अपने सारे गुण प्राप्त कर चुके प्राणी का भी अपने माता-पिता से विमुखता हो गई। उसने कहा, "छोड़ो, मैं जान लूँगा कि इनके साथ क्या करना चाहिए", और अपने माता-पिता को भोजन कराया और उन्हें एक गाड़ी में बिठाकर कहा, "प्यारे माता-पिता! फलाँ जगह पर आपके रिश्तेदार आपका बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं; चलिए वहाँ चलते हैं।" अपने माता-पिता को साथ लेकर जाते समय, जब वे जंगल के बीचोंबीच पहुँचे, तो उसने बैलों की लगाम अपने पिता के हाथों में देते हुए कहा, "प्रिय पिताजी! कृपया लगाम पकड़ लीजिए, बैल लाठी के इशारे से चलेंगे; इस जगह डाकू रहते हैं; मैं गाड़ी से उतरकर पैदल चलता हूँ।" ऐसा कहकर वह गाड़ी से उतर गया और चलते हुए उसने बाहर मुड़ने का संकेत दिया, मानो डाकू उठ खड़े हुए हों। उसके माता-पिता ने आवाज़ सुनी, उन्हें लगा कि डाकू उठ खड़े हुए हैं और उन्होंने कहा, "प्रिय पुत्र! डाकू उठ खड़े हुए हैं; हम बूढ़े हैं; तुम केवल अपनी ही देखभाल कर लो।" जब उसके माता-पिता इस तरह रो रहे थे, तब उसने डाकुओं का संकेत दिया, उन्हें कुचला, मार डाला, जंगल में फेंक दिया और घर लौट आया।

392. गुरु ने अपने पूर्व कर्म के बारे में बताते हुए आगे कहा, "हे भिक्षुओं! मोग्गलाना ने इतना कर्म किया, जिसके फलस्वरूप वह कई लाख वर्षों तक नरक में रहा और अपनी परिपक्वता के शेष भाग के कारण सौ जन्मों तक पीसा और चूर्ण-चूर्ण में परिवर्तित होता रहा; इस प्रकार मोग्गलाना को अपने कर्मों के अनुसार मृत्यु प्राप्त हुई। पाँच सौ विधर्मी और पाँच सौ लुटेरों ने भी मेरे निर्दोष पुत्र का अपमान किया और उन्हें उचित ही मृत्यु प्राप्त हुई। निश्चय ही निर्दोष लोगों के प्रति अपराध करने वाले को दस प्रकार के कष्टों के साथ विनाश का सामना करना पड़ता है।" इस प्रकार क्रम जोड़कर बुद्ध ने धर्म का उपदेश देते हुए ये श्लोक पढ़े:-

"जो कोई भी निहत्थे और निर्दोष लोगों पर हथियार से हमला करता है, उसे दस परिणामों में से किसी एक का सामना करना पड़ता है, और वह भी शीघ्र ही। उसे घोर पीड़ा, दरिद्रता, शरीर के अंगों का विच्छेदन, यहाँ तक कि गंभीर बीमारी और पागलपन की स्थिति तक पहुँचना पड़ता है; राजा द्वारा अभियोग या घोर बदनामी, यहाँ तक कि रिश्तेदारों का पूर्ण निष्कासन, समृद्ध धन का विनाश। इसके अलावा, साधारण आग और आगजनी से उसके घर जल जाते हैं; शरीर के नष्ट होने पर उस दुष्ट व्यक्ति को नरक में पुनर्जन्म लेना पड़ता है।"

393. पाविवेकमनुयुत्तो (एकांतवास में लीन), एकाग्र होकर, एकाग्र होकर, एकांत में रहने में लीन, स्वभावतः समाधिभावना रतो (एकाग्रता विकसित करने में प्रसन्न), प्रथम ध्यान आदि जैसे विकास में संलग्न और प्रसन्न; सब्बासवे परिञ्ञाय (चारों ओर के सभी दोषों को जानकर), सभी प्रकार के दुराचारों (किलेसा) को जानकर और त्यागकर; अनासवो (दोषों से मुक्त), मैं दुराचार से रहित निवास करता हूँ; इस प्रकार, संबंध है।

394. अब, अपने पूर्व आचरण के फल को अपने पुण्य कर्मों के संचय के माध्यम से दिखाने के लिए, उन्होंने इस श्लोक का उच्चारण किया जो इस प्रकार शुरू होता है: वरनिम्पि सुगमभीरम्।

394.1. वहाँ, यह क्रमिक प्रवचन है:- बुद्धेन कोदितो (बुद्ध द्वारा प्रेरित होकर) सर्वज्ञ बुद्ध द्वारा तर्क और पूछे जाने पर; भिक्खुसंगस्स पेक्खतो (भिक्षुओं के समूह द्वारा देखे जाने पर) जब भिक्षुओं का महान समूह देख रहा था; मिगारमातुपासादम पादंगुत्थेन कम्पायिम (मैंने मिगारा की माता के महल को अपने पैर के अंगूठे से हिला दिया) मैंने अपने पैर के अंगूठे से पूर्वी आश्रम (पुब्बाराम) में महान भक्त विशाखा द्वारा निर्मित हजार स्तंभों से सुशोभित महान महल को हिला दिया। एक समय की बात है, जब परम पूज्य बुद्ध पूर्वी आश्रम (पुब्बाराम) के उपर्युक्त महल में निवास कर रहे थे, तब कई युवा भिक्षु महल की ऊपरी मंजिल पर बैठ गए और गुरु की अवहेलना करते हुए पशु-संबंधी बातें करने लगे। यह सुनकर परम पूज्य बुद्ध ने उन्हें पश्चाताप कराने और अपने धर्म उपदेशों का प्रसार करने की इच्छा से पूज्य थेरा महामोग्गलाना से कहा, "हे मोग्गलाना! क्या आपने देखा है कि युवा भिक्षु पशु-संबंधी बातें कर रहे हैं?" बुद्ध की बात सुनकर, उन्होंने गुरु के उद्देश्य का पता लगाने के लिए, जल-विषय (कसीना) पर ध्यान केंद्रित करने के बाद, अपने उच्च ज्ञान के आधार पर, चौथे

ध्यान में प्रवेश किया और अपने संकल्प के साथ महल के शिखर पर प्रहार करते हुए कहा, "जिस स्थान पर यह महल स्थापित है, वहां जल उत्पन्न हो।" महल झुक गया और एक तरफ झुक गया। फिर उन्होंने प्रहार किया; और वह दूसरी तरफ से फिर खड़ा हो गया। वे भिक्षु भयभीत हो गए, पश्चाताप करने लगे, महल के गिरने के खतरे को पार करते हुए बाहर आ गए और प्रतापी के पास खड़े हो गए। गुरु ने उनकी आंतरिक प्रवृत्ति को देखकर धर्म का उपदेश दिया। उस उपदेश को सुनकर, उनमें से कुछ ने पवित्रता की प्रथम अवस्था, कुछ ने द्वितीय, कुछ ने तृतीय अवस्था (अनगामी-फल) और कुछ ने अरहंतत्व की सिद्धि प्राप्त कर ली। इसका अर्थ पासादकम्पन सूत्र नामक प्रवचन से समझा जा सकता है।

394.2. वेजयंतपासादम् (विजय का महल) वह विजय का महल (वेजयंतपासाद) है जिसे विजय के कारण "वेयंत, विजय" नाम मिला; यह तब अस्तित्व में आया जब देवताओं के राजा सक्का ने असुर को परास्त करने के बाद, देवताओं और राक्षसों के युद्धक्षेत्र में, अपने नगर के केंद्र में विराजमान हुए; यह महल तावतिंस स्वर्ग में स्थित है और हज़ारों बुर्जों और शिखरों से सुशोभित है, जिसकी ऊँचाई सौ योजन है। इसके संदर्भ में बुद्ध ने कहा: "वेजयंतपासादम्, विजय का महल"। इस थेरा ने भी अपने पैर के अंगूठे से इसे हिला दिया था। दरअसल, एक बार देवताओं के राजा सक्का, पूर्वी आश्रम (पुब्बाराम) में निवास कर रहे प्रतापी बुद्ध के पास गए और उनसे तृष्णा (तन्हा) के उचित नाश के बाद मोक्ष के बारे में पूछा। प्रतापी बुद्ध ने उनके प्रश्नों का उत्तर दिया। उत्तर सुनकर वे प्रसन्न हो गए, उनकी पूजा की, उनकी परिक्रमा की और अपने स्वर्गलोक लौट गए। तब पूज्य महामोग्गलाना ने सोचा, "इस सक्का ने प्रतापी बुद्ध के पास जाकर ऐसे प्रश्न पूछे, जिनका उत्तर प्रतापी बुद्ध ने दे दिया; यह कैसे संभव है? क्या वे सत्य को जानकर लौटे हैं या बिना जाने? क्या होगा यदि मैं स्वर्गलोक जाकर इस विषय का पता लगाऊं?" उसी क्षण वे तावतिंसा भवन गए और देवताओं के राजा सक्का से इस विषय के बारे में पूछा। दिव्य आनंद में डूबे होने के कारण सक्का ने विस्मृतिवश एक भ्रामक कथन कर दिया। थेरा ने उसे पश्चाताप कराने के लिए विजयमहल (वेजयंतपासादा) को अपने पैर के अंगूठे से हिला दिया। अतः यह कहा गया है:-

"ऐसे थेरा ने अपने पैर के अंगूठे से विजय महल (वेजयंतपासादा) को हिला दिया, अपनी जादुई शक्ति के बल पर उन्होंने देवताओं को भी पश्चाताप से भर दिया।"

394.3. इस श्लोक का अर्थ चुलतन्हादंखयविमुक्ति-सुत्त के माध्यम से स्पष्ट किया जाना चाहिए। कंपन (हेत्षा) की विशेषता का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है। "सक्कम सो परिपुच्छति, उसने सक्का से चारों ओर पूछा," जैसा कि कहा गया है; यह कथन तृष्णा (तन्हा) के उचित विनाश (या समाप्ति) के बाद मुक्ति के बारे में थेरा के प्रश्न के संदर्भ में किया गया है; इसलिए थेरा ने कहा: "शायद! मेरे मित्र को तृष्णा (तन्हा) के अंत के बाद मुक्ति के बारे में पता है?" सक्का ने उनके प्रश्न का उत्तर दिया। यह महल के कंपन के दौरान प्रश्न का उत्तर देने के संबंध में कहा गया है, सक्का ने पश्चाताप से भरे हृदय से अपनी इस भूल को त्याग दिया; अपने मन को बुद्धिमान बनाकर प्रश्न का सही उत्तर दिया। तब थेरा ने वास्तव में उसी प्रकार उपदेश दिया जैसे बुद्ध ने दिया था। अतः, थेरा ने कहा:- "जब इस प्रकार प्रश्न पूछा गया, तो वहाँ, सक्कॅ ... उन्होंने सूत्र में तन्हा के उचित निवारण और मुक्ति या व्यथा और पलायन के विनाश के बारे में शिक्षाओं के बारे में पूछा।

394.4 ब्रह्मानां (ब्रह्माओं का) महान ब्रह्माओं का; सुधम्मयाभितो सभाम (सुधम्म के सभाघर में) यह ब्रह्मा जगत का सुधम्म हॉल है, न कि तावतिंगस महल वाला। अर्थात्, सुधम्म हॉल के बिना कोई दिव्य जगत नहीं है। "मित्रों! क्या वह दृष्टिकोण (दिष्टि), जो पहले आपका था, अब भी आपके पास है? अर्थात्, कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है, चाहे वह भिक्षु हो या ब्राह्मण, जो ब्रह्मा के इस लोक में प्रवेश करने में सक्षम हो? गुरु के यहाँ आने से पहले, आपका जो भी दृष्टिकोण (दिष्टि) था, वह अब कैसा है? क्या आज भी, अभी भी, वह दृष्टिकोण दूर नहीं हो गया है? क्या आप ब्रह्मा लोक में चमक से भी अधिक प्रकाश देखते हैं? क्या आप ब्रह्मा के लोक में महाकप्पिन, महाकस्सपा आदि शिष्यों से घिरे, अपने शिष्यों के साथ बैठे हुए, महिमावान बुद्ध के आकाश (लोक) या (प्रकाश?) को ब्रह्मा के लोक में चमकते हुए देखते हैं? यही अर्थ है। वास्तव में, एक अवसर पर, महिमावान बुद्ध ने मन को जान लिया..." ब्रह्मा, जो ब्रह्मा-लोक में सुधम्म के सभा-महल में सभा कर रहे थे और विचार कर रहे थे, "क्या वास्तव में कोई ऐसा व्यक्ति है, चाहे भिक्षु हो या ब्राह्मण, जिसके पास इतनी उच्च जादुई शक्ति हो कि वह यहाँ आ सके?", वे वहाँ गए, ब्रह्मा के ऊपर आकाश में बैठ गए, ऊष्मा तत्व (तेजोधातु) में विधिवत प्रवेश किया और ब्रह्मा के सिर के ऊपर महामोग्गलाना आदि अपने शिष्यों के आगमन और प्रकाश की किरणें फैलाने का चिंतन किया। बुद्ध के विचार से प्रेरित होकर वे भी वहाँ गए, गुरु को प्रणाम किया, बुद्ध के आंतरिक भाव को जाना, ऊष्मा तत्व (तेजोधातु) में विधिवत प्रवेश किया, अपनी-अपनी दिशाओं में बैठ गए और प्रकाश की किरणें फैलाईं। संपूर्ण ब्रह्मा-लोक प्रकाश की एक ठोस किरण में तब्दील हो गया। गुरु को ब्रह्मा के मन की अनुकूल स्थिति का ज्ञान हुआ और उन्होंने चार श्रेष्ठ धर्मों का उपदेश दिया। सत्य स्पष्ट रूप से प्रकट हुए। उपदेश के अंत में, हजारों ब्रह्मा सही श्रेष्ठ मार्गों और उनके फल (मग्गफल) में स्थापित हो गए। उन्होंने इस श्लोक का पाठ किया जिसमें

लिखा है: अजजपिते आवुसो सा दिष्टि, ताकि इस विषय में तर्क और प्रश्न किया जा सके। इस अर्थ को बकाब्रह्मासुत्त के माध्यम से स्पष्ट किया जाना चाहिए। वास्तव में! यह कहा गया है:-

“एक समय भगवान जेतवन में अनाथपिंडिका के मठ में निवास कर रहे थे। उस समय, एक ब्रह्मा के मन में ऐसा बुरा विचार आया, “यहाँ न तो कोई भिक्षु है और न ही कोई ब्राह्मण।” तब, भगवान ने अपने मन से उस ब्रह्मा के मन की बात जान ली और जेतवन मठ से उतने ही क्षण में विलीन हो गए जितने क्षण में कोई बलवान व्यक्ति अपनी भुजा को फैलाकर या समेटकर विलीन हो जाता है, और ब्रह्मालोक में प्रकट हो गए। तब, भगवान ने ऊष्मा तत्व में पूर्णतः प्रवेश करने के बाद उस ब्रह्मा के ऊपर हवा में पालथी मारकर बैठ गए। तब, पूज्य महामोग्गलाना के मन में यह विचार आया, “भगवान अब कहाँ निवास कर रहे हैं?” पूज्य महामोग्गलाना ने देखा, वास्तव में, अपनी दिव्य दृष्टियों से, तेजस्वी बुद्ध को ब्रह्मा के ऊपर, आकाश में पांव बैठे हुए, ऊष्मा तत्व (तेजोधातु) में प्रवेश करते हुए देखा। उन्हें देखकर, थेरा ने स्वयं जेतवन से विलीन होकर ब्रह्मा लोक में पल भर में प्रकट हो गए, मानो कोई बलवान व्यक्ति अपनी मुड़ी हुई भुजा को फैला रहा हो या मोड़ रहा हो। फिर, पूज्य महा मोग्गलाना ने पूर्व दिशा पर भरोसा करते हुए, ब्रह्मा के ऊपर, ब्रह्मा के आसन से नीचे, ऊष्मा तत्व में प्रवेश करने के बाद पांव बैठे।

तब पूज्य महाकस्सपा के मन में यह विचार आया: "इस समय प्रतापी कहाँ विराजमान हैं?" पूज्य महाकस्सपा ने अपनी दिव्य, निर्मल और मानवीय आँखों से श्रेष्ठ दृष्टि से प्रतापी को ब्रह्मा के ऊपर, पांव-पांव बैठे हुए देखा, वे ऊष्मा तत्व (तेजोधातु) में प्रवेश कर चुके थे। उन्हें देखकर, ठीक उसी प्रकार, जैसे कोई बलवान पुरुष हो... थेरा जेतवन मठ से अंतर्धान हो गए और ब्रह्मलोक में प्रकट हुए। तब पूज्य महाकस्सपा ने दक्षिण दिशा की ओर देखते हुए, ब्रह्मा के आसन से नीचे, ब्रह्मा के ऊपर, पांव-पांव बैठकर, ऊष्मा तत्व में प्रवेश कर चुके थे।

तब पूज्य महाकप्पिन के मन में यह विचार आया: "इस समय प्रतापी कहाँ विराजमान हैं?" पूज्य महाकप्पिन ने अपने दिव्य नेत्रों से, जो मनुष्य के नेत्रों से श्रेष्ठ और निर्मल थे, प्रतापी को ब्रह्मा के ऊपर, ऊष्मा तत्व (तेजोधातु) में प्रवेश करने के बाद, पांव-पांव बैठे हुए देखा। उन्हें देखकर, ठीक उसी प्रकार, जैसे कोई बलवान पुरुष... ठीक उसी तरह, थेरा जेतवन मठ से अंतर्धान हो गए और ब्रह्मा लोक में प्रकट हुए। तब पूज्य महाकप्पिन ने पश्चिम दिशा की ओर देखते हुए, ऊष्मा तत्व (तेजोधातु) में प्रवेश करने के बाद, ब्रह्मा के ऊपर, परन्तु प्रतापी के आसन से नीचे, पांव-पांव बैठे।

तब पूज्य अनुराधा के मन में यह विचार आया: “इस समय प्रतापी कहाँ विराजमान हैं?” पूज्य अनुराधा ने अपने दिव्य नेत्रों से, जो मनुष्य के नेत्रों से श्रेष्ठ और निर्मल थे, प्रतापी को ब्रह्मा के ऊपर, ऊष्मा तत्व (तेजोधातु) में प्रवेश करने के बाद, पांव-पांव बैठे हुए देखा। उन्हें देखकर, ठीक उसी प्रकार, जैसे कोई बलवान पुरुष..., वे जेतवन मठ से अंतर्धान हो गए और ब्रह्मा लोक में प्रकट हुए। तब पूज्य अनुराधा ने उत्तर दिशा की ओर देखते हुए, ब्रह्मा के ऊपर, परन्तु प्रतापी के आसन से नीचे, ऊष्मा तत्व (तेजोधातु) में प्रवेश करने के बाद, पांव-पांव बैठ गए।

394.5. तब, वास्तव में, पूज्य महामोग्गलाना ने उस ब्रह्मा को एक श्लोक के माध्यम से संबोधित किया:-

“अब भी, हे मित्र! क्या तुम्हारा वह दृष्टिकोण, जो पहले तुम्हारा दृष्टिकोण था, अब भी कायम है? क्या तुम ब्रह्मा जगत में प्रकाश की उत्कृष्ट किरणें देख पाते हो?”

ब्रह्मा ने इस प्रकार उत्तर दिया:-

“मित्र! मेरा जो पूर्व विचार था, वह अब नहीं रहा; मैं ब्रह्मा-जगत में प्रकाश की चमकती किरण देख रहा हूँ। अब मुझे अहसास हो गया है कि वह बात गलत थी, अर्थात् मैं शाश्वत और अमर हूँ।”

फिर, उस ब्रह्मा को, ठीक उसी प्रकार पश्चात्ताप से ग्रसित करके, जैसे कि एक बलवान पुरुष, ठीक उसी प्रकार, प्रतापी भगवान उस ब्रह्मा-लोक से अंतर्धान हो गए और जेतवन में प्रकट हुए। फिर, उस ब्रह्मा ने एक ब्रह्मा सलाहकार (ब्रह्मा पारिसाज्जा) को संबोधित करते हुए कहा: "आओ, मेरे मित्र! आदरणीय महामोग्गलाना के पास जाओ; उनके पास पहुँचकर महामोग्गलाना से इस प्रकार कहो: "मित्र मोग्गलाना! क्या उस प्रतापी भगवान के अन्य शिष्य भी हैं जो आदरणीय मोग्गलाना, कस्सपा, कप्पिन और अनुराधा के समान उच्च जादुई शक्तियों और महान प्रभाव वाले हैं?" उस ब्रह्मा सलाहकार ने उस ब्रह्मा को उत्तर देते हुए कहा, "बहुत खूब, मेरे मित्र!", और फिर वे पूज्य महामोग्गलाना की ओर गए और उनसे कहा, "क्या सचमुच, मेरे मित्र! उस तेजस्वी के अन्य शिष्य भी हैं जो पूज्य मोग्गलाना, कस्सपा, कप्पिना और अनुराधा के समान उच्च जादुई शक्तियों और महान प्रभाव वाले हैं?"

तब, पूज्य महामोग्गलाना ने उस ब्रह्मा सलाहकार को एक श्लोक के माध्यम से उत्तर देते हुए कहा:-

"बुद्ध के कई शिष्य दोषरहित (खीणासव), अरहंत हैं, जो तीन प्रकार के पारलौकिक ज्ञान में पारंगत हैं, उन्होंने जादुई शक्तियां प्राप्त कर ली हैं, और दूसरों के विचारों को समझने में विशेषज्ञ बन गए हैं।"

तब, वास्तव में, उस ब्रह्मा सलाहकार को पूज्य महामोग्गलाना का कथन सुनकर प्रसन्नता हुई, उसने उन्हें बधाई दी और उस ब्रह्मा की ओर वापस चला गया; उनके पास पहुँचकर ब्रह्मा सलाहकार ने उनसे यह कहा:- 'मित्र! पूज्य महामोग्गलाना ने ऐसा कहा:-

"बुद्ध के कई शिष्य हैं, जो दोष रहित (खीणासव) हैं, अरहंत हैं, जो तीन प्रकार के पारलौकिक ज्ञान में पारंगत हैं, जादुई शक्ति की ऊँचाई तक पहुँच चुके हैं और दूसरों के मन में गहराई से उतरने में विशेषज्ञ बन चुके हैं।"

394.6. उस ब्रह्मा सलाहकार ने यह कहा और वह ब्रह्मा भी आत्म-इच्छुक (अत्तमना) हो गया, और उस ब्रह्मा सलाहकार के कथन को पूरी तरह से समझ गया।

इस संबंध में यह कहा गया है: "इस अर्थ को ब्रह्मा बक पर लिखे गए प्रवचन बकाब्रह्मसुत्त के माध्यम से स्पष्ट किया जाना चाहिए।"

394.7. महानेरुनो कुतम (महान नेरु का शिखर) शिखर-शीर्ष के साथ, उन्होंने सिनेरु के संपूर्ण पर्वत-राजा की भी बात की; विमोक्खेना अपसयि (मुक्ति के माध्यम से देखा) उन्होंने ज्ञान द्वारा मुक्ति पर निर्भर होकर और उच्च ज्ञान के माध्यम से देखा; यही इसका अर्थ है; वन (जंगल) जम्बू द्वीप है; वास्तव में, उस जम्बू द्वीप को "वन, जंगल" कहा गया है, क्योंकि वह जंगलों से भरपूर है; इसलिए उन्होंने कहा: "जम्बूमन्दस्सा इस्सारो, यूजेनिया सार का शासक"; पुब्बविदेहानम् (पूर्वी द्वीप) पूर्वी द्वीप का स्थान भी पूर्वी द्वीप (पुब्बविदेह) है; यही इसका अर्थ है। ये च भूमिसया नारा (जो भी लोग जमीन पर लेटते हैं) पश्चिम (अपरागोयान) और उत्तर (उत्तरकुरु) के द्वीपवासी मनुष्य जमीन पर सोने वाले कहलाते हैं; क्योंकि वास्तव में उनका कोई घर नहीं है, इसलिए उन्हें "भूमिसया" कहा जाता है; उन्होंने उन सभी को भी देखा; इस प्रकार, यह संबंध है। हालाँकि, इस अर्थ को नंदोपानंद के वशीकरण के माध्यम से स्पष्ट किया जाना चाहिए। कहा जाता है कि एक बार, गृहस्थ अनाथपिंडिका ने भगवान के धर्म उपदेश को सुनकर उन्हें आमंत्रित करते हुए कहा: "आदरणीय महोदय! कल कृपया पाँच सौ भिक्षुओं के साथ मेरे घर पर भोजन करें" और वे प्रस्थान कर गए। उस दिन भी, जब प्रतापी भगवान दस हजार विश्व तत्वों का अवलोकन कर रहे थे, भोर में, नंदोपानंद नामक नागराज उनकी ज्ञान-दृष्टि के केंद्र में आ गया। यह सोचते हुए कि: "यह नागराज मेरी ज्ञान-दृष्टि के केंद्र में आ गया है; अब क्या होने वाला है?", प्रतापी भगवान ने नागराज के शरण लेने (शरणगमन) का अवसर देखा और इस प्रकार विचार किया: "इस विधर्मी नागराज को तीन रत्नों में कोई सच्ची आस्था नहीं है; "अत्यंत, इस अजगर को इसके विधर्म से कौन प्रभावी रूप से मुक्त करेगा?", थेरा महामोग्गलाना ने पूछा। इसके बाद, जब रात ढलकर सुबह हुई, तो प्रतापी बुद्ध ने स्नान किया और पूज्य आनंद को इस प्रकार संबोधित किया: - हे आनंद! पाँच सौ भिक्षुओं को सूचित करो कि उसी दिन अजगरों ने नंदोपानंद के लिए भोज कक्ष तैयार किया। वह अजगर-राजा रत्नजड़ित दिव्य सिंहासन पर बैठा था, अजगरों की सभा से घिरा हुआ था, साथ ही तीन प्रकार के नृत्य-राजाओं ने उसे देखा और पाँच सौ भिक्षुओं के साथ अपने महल के ऊपर आकाश में तावतिंसा के दिव्य लोक की ओर चल पड़े।

394.8. उस अवसर पर, वास्तव में, ड्रैगन राजा के मन में ऐसा दुष्ट और विधर्मी विचार उत्पन्न हुआ: "ये गंजे भिक्षु हमारे महल के ऊपर से हवा में उड़कर तैंतीस (तावतिंस) देवताओं के महल में प्रवेश करते हैं और बाहर आते हैं; अब से मैं उन्हें अपने चरणों की धूल हमारे सिर पर बिखेरते हुए जाने नहीं दूंगा।" इस दुष्ट विचार पर, ड्रैगन राजा अपने आसन से उठा, सिनेरु के चरणों में गया, अपना सामान्य शरीर त्याग दिया, सिनेरु के चारों ओर अपनी कुंडलियाँ सात बार लपेटीं, सिनेरु के ऊपर अपना फन फैलाया और अपने फैले हुए फन से तावतिंस के निवास को अदृश्य कर दिया।

394.9. तब, पूज्य रत्त्वपाल ने उस तेजस्वी बुद्ध से यह कहा: "हे पूज्यवर! पहले यहाँ खड़े होकर मैं सिनेरु पर्वत देखता था; मैं सिनेरु के आसपास का क्षेत्र देखता था; मैं तावतिंस देखता था; मैं वेजयंत (विजय महल) देखता था; मैं विजय महल (वेजयंत) के ऊपर ध्वज देखता था; हे पूज्यवर! वास्तव में इसका क्या कारण है, क्या वजह है कि अब मुझे न तो सिनेरु दिखाई देता है, ... और न ही विजय महल के ऊपर ध्वज?" बुद्ध ने उत्तर दिया: "हे रत्त्वपाल! नंदोपानंद नामक इस नागराज ने तुमसे क्रोधित होकर अपने लंबे कुंडलित शरीर से सिनेरु को सात बार घेर लिया था और अंधकार उत्पन्न करके शिखर को अपने फन से ढक कर खड़ा हो गया था।" रत्त्वपाल ने कहा: "हे पूज्यवर! क्या मैं इसे वश में कर सकता हूँ?" भगवान ने थेरा को ऐसा करने की अनुमति नहीं दी। फिर, पूज्य भद्दिया, पूज्य राहुल; इस प्रकार, एक-एक करके, सभी भिक्षु भी उठ खड़े हुए। भगवान ने उन सभी को भी ऐसा करने की अनुमति नहीं दी।

394.10. अंत में, थेरा महामोग्गलाना ने कहा: "आदरणीय महोदय! क्या मैं इसे वश में कर सकता हूँ?" भगवान ने सहमति देते हुए कहा: "मोग्गलाना! तुम्हें इसे वश में करना चाहिए।" थेरा ने अपना सामान्य मानव शरीर त्याग दिया, एक विशाल और राजसी नाग का रूप धारण किया, अपने लंबे शरीर के कुंडलियों से नंदोपानंद को चौदह बार घेरा, अपना फन उस नाग के फन के ऊपर रखा और अजगर को सिनेरु पर मजबूती से दबा दिया। अजगर-राजा ने धुआँ छोड़ा; थेरा ने भी धुआँ छोड़ते हुए कहा: "केवल तुम्हारे शरीर में ही धुआँ नहीं है, मेरे शरीर में भी है।" अजगर-राजा के धुएँ से थेरा बीमार नहीं हुए; परन्तु थेरा के धुएँ से अजगर-राजा बीमार हो गए। इसके बाद अजगर-राजा ने स्वयं को अग्नि में प्रज्वलित कर लिया; थेरा ने यह भी कहा, "यह केवल तुम्हारे शरीर में ही नहीं है, अग्नि मेरे शरीर में भी है"

और अग्नि प्रज्वलित कर दी। ड्रैगन-राजा की ऊष्मा से थेरा नहीं जला, परन्तु थेरा की ऊष्मा ने ड्रैगन-राजा को जला दिया। ड्रैगन-राजा ने मन ही मन सोचा, "इस थेरा ने मुझे सिनेरु के विरुद्ध दबाया, धुआँ और ज्वालाएँ भी निकालीं", और ठीक से पूछा, "मित्र! तुम कौन हो?" उत्तर मिला, "हे नंदा! मैं वास्तव में मोग्गलाना हूँ।" ड्रैगन-राजा ने इस प्रकार निवेदन किया, "आदरणीय महोदय, कृपया अपनी भिक्षु अवस्था में खड़े हो जाइए।"

394.11. थेरा ने उस अजगर के शरीर को त्याग दिया, उसके दाहिने कान के छिद्र से उसके शरीर में प्रवेश किया और बाएं कान के छिद्र से बाहर निकल गया; बाएं कान के छिद्र से प्रवेश करने के बाद वह दाहिने कान के छिद्र से बाहर निकल गया। इसके बाद, अजगर राजा ने अपना मुख खोला; थेरा उसके मुख से प्रवेश करके उसके पेट के भीतर पूर्व से पश्चिम और पश्चिम से पूर्व की ओर विचरण करता रहा। प्रतापी ने कहा: "हे मोग्गल्लाना, सावधान रहो; अजगर अत्यंत शक्तिशाली है।" थेरा ने कहा! "आदरणीय महोदय! मुझमें वास्तव में जादुई शक्ति के चार आधार विकसित हुए हैं, प्रचुर मात्रा में हैं, मेरे वाहन के रूप में स्थापित हैं, आधारभूत हैं, अजेय हैं, पूर्णतः अनुभवी हैं और आसानी से आरंभ किए जा सकते हैं; आदरणीय महोदय! इस नंदोपानंद को छोड़ दें, मैं नंदोपानंद प्रकार के सौ और हजार अजगर राजाओं को वश में कर लूंगा," और इसी प्रकार।

394.12. नागराज ने मन ही मन सोचा: "अब तक तो मुझे उसके प्रवेश का पता ही नहीं चला; अब जब वह निकलेगा, तो मैं उसे अपने दाँतों के बीच में डालकर खा जाऊँगा", और ऐसा सोचकर उसने कहा: "आदरणीय महोदय! कृपया बाहर आइए; कृपया मेरे पेट के भीतर इधर-उधर भटककर मुझसे विनती न कीजिए"। थेरा बाहर निकला और बाहर खड़ा हो गया। नागराज ने उसे देखा और मन ही मन कहा: "यही है", और अपनी नाक से श्वास छोड़ी। थेरा चौथे ध्यान में प्रवेश कर गया; नागराज की नाक से निकली हवा उसके रोमछिद्रों को भी हिला नहीं सकी। कहा जाता है कि बाकी भिक्षु शुरुआत से ही सभी प्रकार के चमत्कार करने में सक्षम होंगे; लेकिन इस अवस्था में पहुँचने के बाद, इस प्रकार शीघ्र और सावधानीपूर्वक ध्यान करने के बाद कोई अन्य भिक्षु ध्यान में प्रवेश नहीं कर पाएगा; अत: उन्हें, परमेश्वर ने अजगर राजा को वश में करने की अनुमति नहीं दी।

394.13. नागराज ने इस प्रकार विचार किया:- "मैं अपनी नाक की श्वास (या हवा) से इस भिक्षु के बाल छिद्रों (या रोमछिद्रों) को भी हिला नहीं सका; वह समण उच्च जादुई शक्तियों वाला है।" थेरा ने अपना रूप त्याग दिया, गरुड़ पक्षी का रूप धारण किया और गरुड़ पक्षी की गति (या हवा) दिखाते हुए नागराज का पीछा किया। नागराज ने अपना रूप त्याग दिया, एक बालक का रूप धारण किया और थेरा के चरणों में प्रणाम करते हुए कहा: "आदरणीय गुरुजी! मैं आपकी शरण में आता हूँ।" थेरा ने कहा: "हे नंदा! गुरुजी आ गए हैं; मेरे साथ आओ; चलो उनके पास चलें।" उन्होंने नागराज को वश में किया, उसे विषमुक्त किया, उसे ले गए और उस तेजस्वी के समक्ष गए। नागराज ने उस तेजस्वी को प्रणाम किया और कहा, "आदरणीय गुरुजी! मैं आपकी शरण लेता हूँ।" उस महान देवता ने कहा: "हे ड्रैगन-राजा! आप प्रसन्न हों"; और अनाथपिंडिका के निवास स्थान पर चले गए।

394.14. अनाथपिंडिक ने पूछा, “हे पूज्यवर! आप दिन में देर से क्यों आए?” बुद्ध ने उत्तर दिया, “मोग्गलाना और नंदोपानंद के बीच युद्ध हुआ था।” अनाथपिंडिक ने फिर पूछा, “हे पूज्यवर! विजय किसकी हुई और पराजय किसकी?” बुद्ध ने उत्तर दिया, “विजय मोग्गलाना की हुई; पराजय नंदा की हुई।”

अनाथपिंडिका ने बुद्ध से कहा, "हे पूज्यवर! मैं स्वयं एक ही बार में लगातार सात दिनों तक भोजन करके थेरा को आदर दूंगा; कृपया बुद्ध अपनी सहमति (या स्वीकृति) दें और सात दिनों तक बुद्ध के नेतृत्व में पाँच सौ भिक्षुओं को महान भेंट अर्पित करें। इसीलिए यह कहा गया है: "नन्दोपानंद को वश में करने के साथ ही इसे प्रकट किया जाना चाहिए।"

394.15. वास्तव में, एक बार जब प्रतापी भगवान पुब्बाराम में महान भक्त विशाखा के भव्य महल में निवास कर रहे थे, जो कि हजार कक्षों से सुसज्जित था, तब उन्होंने देवताओं को भी पश्चाताप कराया। इसलिए, ऐसा कहा गया है:-

"जादुई शक्तियों में पूर्णता प्राप्त करने के बाद, मैं अपने बाएं पैर के अंगूठे से पृथ्वी को भी हिला सकता था, जो अत्यंत गहरी और आक्रमण करने में बेहद कठिन है।"

वहाँ, इद्दिया पारमिम गतो (जादुई शक्ति में पूर्णता प्राप्त कर चुके) ने जादू द्वारा रूपांतरण करने जैसी जादुई शक्ति में चरम सीमा प्राप्त कर ली थी।

395. अस्मिमानम् ('मैं हूँ' अभिमान) मैं ज्ञान, उपदेश और एकाग्रता आदि से संपन्न हूँ, जो 'मैं हूँ' अभिमान का निर्माण करते हैं; न पस्सामि (मैं नहीं देखता) मैं नहीं पाता; यही अर्थ है। इस बात को भी प्रकाश में लाते हुए उन्होंने कहा: "मानो मयम् न विज्जति, मुझमें अभिमान नहीं है"। सामणेरे उपाध्याय (शिष्यों को निकट से ग्रहण करना) भिक्षुओं को भिक्षुओं के संपूर्ण समुदाय का आरंभिक मानकर; गरुचित्तम् (आदरपूर्ण) मैं अपने मन को आदरपूर्ण बनाता हूँ और बहुत श्रद्धा रखता हूँ; यही अर्थ है।

396. अपा इमेय्य इतो कप्पे (अब से अनगिनत युगों तक) हमारे उत्थान के इस कल्प से, एक लाख युगों (कल्प) के शीर्ष पर, एक असंख्य असीम काल से भी अधिक; यही अर्थ है। यम कम्ममभिनीहरिम (जो भी कर्म मैंने किया) मैंने पुण्य की समृद्धि, जो कि प्रमुख शिष्यत्व का मूल आधार है, को पूर्ण किया; ताहम भूमिमानुपत्टो (मैं तदनुसार उस आधार पर पहुँच गया हूँ) मैंने निर्वाण प्राप्त किया है, जिसे आसव (कैंसर) के नाश के रूप में गिना जाता है, शिष्यत्व के उस आधार पर पहुँचकर; यही अर्थ है।
397. मैंने स्वयं ये चार प्रकार के विश्लेषणात्मक ज्ञान देखे हैं: अर्थ का विश्लेषणात्मक ज्ञान, आठ प्रकार की मुक्ति जो पवित्रता की प्रथम अवस्था है (सोतापत्ति-मग्ग), और छह प्रकार के उच्च ज्ञान जो जादुई शक्ति है (इद्धिविद्धा)।
397.1. इत्थान् ने, जैसा कि पहले ही क्रम में कहा गया है, (हेत्था) इस प्रकार से, इस विविधता के द्वारा, उन्होंने केवल एक बुद्ध अनोमदस्सी की उपस्थिति में दो बार भविष्यवाणी प्राप्त की, जब वे उस समय एक बैंकर थे; वहाँ से प्रस्थान करके, उन्होंने समुद्र से संबंधित ड्रैगन के घर में पुनर्जन्म लिया, उसी महिमावान को उनकी दीर्घायु के कारण भेंट अर्पित की, उन्हें आमंत्रित किया, उन्हें भोजन कराया और उनके सम्मान में एक बड़ी भेंट दी। उस समय भी महिमावान ने भविष्यवाणी की। सुदम् एक अविकारी कृदंत है जो शब्द-पूर्ण करने के लिए प्रयुक्त होता है। आयस्मा, आदरणीय, एक स्नेहपूर्ण उच्चारण है, आदर और श्रद्धा का शब्द है; अभासित्तम् (उच्चारित) थेरा महामोग्गल्लाना ने अपने जीवन के इन श्लोकों का उच्चारण किया; इति (इस प्रकार) एक अविकारी कृदंत है जिसका अर्थ है पूर्ण अंत।
महामोग्गलाना थेरा की जीवनी पर की गई टीका समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.1 >> 3. थेरा महाकस्सप

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

3. महाकस्सपा

जब विश्व-प्रमुख का देहांत हो गया,246 तब लोगों ने उदात्त मन से, आनंद से मदहोश होकर, तटस्थ, गुरु, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, धन्य, पद्ममुत्तरा की पूजा की। (1) (399, 400ए-बी)

---

244 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (आरडी., एसवी देखें) 245 पीटीएस उद्धालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ उद्दालोमिका° का पाठ (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें) 246 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

जब उनकी धार्मिक भावना247 का जन्म हुआ, तो मुझमें बहुत खुशी248 उत्पन्न हुई। अपने परिवार और दोस्तों को इकट्ठा करके मैंने (उन सभी से) ये शब्द कहे: “महान नायक का देहांत हो गया है;249 हमें निश्चित रूप से पूजा करनी चाहिए!” (2) (400c-d, 401)
उन्होंने सहमति जताते हुए कहा, “उत्कृष्ट!” जिससे मुझे और भी ज़्यादा मुस्कान आ गई। “हम विश्व-प्रमुख बुद्ध के ऊपर पुण्य का चिता बनाएंगे।”250 (3) (402)

हमने एक अच्छी तरह से बनाया हुआ मालानुमा काम किया जो सौ हाथ ऊँचा था, और हमने पचास हाथ ऊँचा एक महल आकाश में खड़ा किया।251 (4) (403)
वहाँ उस माला को काम में लाकर, जो धारियों की पंक्तियों से सजी थी, जिससे मेरे मन को आनंद मिला, मैंने उस उत्कृष्ट मंदिर की पूजा की। (5) (404)
जैसे आग का धधकता स्तंभ, जैसे खिलता हुआ राजसी साल का पेड़, जैसे आकाश में इंद्र का स्तंभ, यह चारों दिशाओं में चमक रहा था। (6) (405)
वहाँ (अपने) मन को प्रसन्न करने के बाद252 और बहुत से अच्छे कर्म करने के बाद, अतीत के कर्मों को याद करते हुए, मैं तीस (देवताओं) के साथ पैदा हुआ था।253 (7) (406)
मेरे पास एक दिव्य रथ था जिसमें एक हजार (उत्कृष्ट) घोड़े जुते हुए थे। मेरा वह ऊँचा निवास (वहाँ) सात मंजिला (ऊँचा) था। (8) (407)

---

247 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
248 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 249 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 250 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 251 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ 252 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल) 253 शाब्दिक अर्थ, "गया"

इसमें एक हजार छज्जेदार कमरे थे; सभी (वे) सोने के बने थे। यह अपनी शक्ति से हर दिशा को रोशन करते हुए चमक रहा था। (9) (408)
उस समय अन्य द्वार भी थे जो सभी माणिक्य से बने थे। उनकी रोशनी से चारों दिशाएँ पूर्णतः प्रकाशित हो जाती थीं। (10) (409)
मेरे पिछले अच्छे कर्मों से निर्मित वे सुव्यवस्थित छज्जेदार कक्ष254 और सभी रत्न (द्वार) तब चारों ओर दस दिशाओं में चमकते थे। (11) (410)
जब वे सब इस प्रकार प्रकाशमान थे, तब एक विशाल प्रकाश उत्पन्न हुआ। मैंने सभी देवताओं को पीछे छोड़ दिया; यही अच्छे कर्मों का फल है। (12) (411)
साठ हजार युग पहले मैं राजा था, जिसका नाम उबिद्धा था। चारों ओर से विजयी होकर मैंने पृथ्वी को अपना निवास स्थान बनाया। (13) (412)
उस सबसे शुभ युग में, मैं पूरे तीस बार अपने कर्मों से प्राप्त महान शक्ति से युक्त एक चक्र-घुमाने वाला राजा था। (14) (413)
सात रत्नों का स्वामी, मैं चारों महाद्वीपों का स्वामी हूँ। और उस स्थान पर मेरा निवास इंद्र के वृक्ष जितना ऊँचा था।256 (15) (413-414)
इसकी लंबाई चौबीस (लीग)257 थी, और चौड़ाई बारह (लीग) थी। मेरे शहर का नाम राममका था; इसमें मजबूत प्राचीरें और द्वार थे। (16) (414-415)
इसकी लंबाई पाँच सौ (लीग) थी।

---

254 बीजेटीएस के साथ संचलेसी का पाठ पीटीएस संजलेसी के लिए 255 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया" 256 शाब्दिक अर्थ, "गुणी" 257 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंड (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु (लंबा? मोटा?)।"

चौड़ाई में ढाई सौ (लीग) ।258 यह तैंतीस देवताओं के शहर की तरह ही पुरुषों के समूहों से भरा हुआ था। (17) (415)

जैसे सुई के डिब्बे में सुइयाँ259 बीस (अलग-अलग) बाज़ार260 थे (जहाँ) वे एक दूसरे से मिलते थे; (शहर) बहुत भीड़भाड़ वाला था। (18) (416)

मेरा नगर कुछ इस प्रकार का था, हाथियों, घोड़ों, रथों से भरा हुआ और लोगों से (बहुत) खचाखच भरा हुआ: राममका, उत्कृष्ट नगर। (19) (417)

वहाँ रहने और वहाँ से निकल जाने के बाद मैं देवताओं की दुनिया में लौट आया। इस, मेरे अंतिम अस्तित्व में, मैं एक प्रतिष्ठित कुल में जन्म लेता हूँ ।261 (20) (418)

ब्राह्मण परिवार में जन्म लेकर मेरे पास रत्नों का विशाल भंडार था। आठ सौ मिलियन262 (मूल्य का) सोना263 त्यागकर, मैं त्याग की ओर चल पड़ा। (21) (419)

मेरे सारे दोष (अब) जलकर राख हो गए हैं; समस्त (नया) अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह, मैं बंधनमुक्त होकर जी रहा हूँ। (420)

मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था। तीनों ज्ञान प्राप्त हो गए हैं; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (421)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (22) (422)

---

258 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में गेंडु लिखा है। कम से कम प्रसारण के समय, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी। 259 येनिच्चका, बीजेटीएस सिंहली व्याख्या कामाती तनक के अनुसार। 260 °विकुटी°; मेरा मानना है कि यह घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) को दर्शाता है (आरडी., एसवी देखें)। 261 पीटीएस उद्धालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ उद्दालोमिका° का पाठ (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)। 262 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"। 263 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

इस प्रकार पूज्य महाकस्सपा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

महाकस्सपा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

3-3 थेरा महाकस्सपा की जीवनी पर टीका

3-3,1. पद्ममुत्तरस्सा भगवतो (महान पद्ममुत्तरा) से शुरू होने वाले श्लोक और आगे के श्लोक, पूज्य थेरा महाकस्सपा की जीवनी का वर्णन करते हैं। इन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा और परिचारण करते हुए, जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य अर्जित किए और इस-उस जन्म में, महान पद्ममुत्तरा के समय में, हंसवती नगर में वेदेह नामक अस्सी करोड़ की संपत्ति वाले एक धनी गृहस्थ बन गए। वे बुद्ध, धर्म और संघ के भक्त बन गए और इस प्रकार जीवन व्यतीत करते हुए, एक व्रत के दिन सुबह जल्दी ही भोजन किया, दृढ़ निश्चय के साथ शुद्ध नियमों का व्रत रखा, इत्र, फूल आदि भेंट धारण किए और मठ में चले गए। उन्होंने उन्हें गुरु को अर्पित किया, उनके सम्मान में उन्हें प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए।

3-3.2. उसी क्षण, गुरु ने अपने तीसरे शिष्य, महानिसभा नामक थेरा को उस स्थान पर स्थापित किया जहाँ उन्होंने कहा: "हे भिक्षुओं! मेरे शिष्य-भिक्षुओं में यह महानिसभा प्रमुख है, जिसका पंथ तपस्या (धूत) है।" भक्त ने यह सुनकर प्रसन्नतापूर्वक श्रद्धा से भर गया और गुरु को प्रणाम किया। जब सत्य (धम्म) के उपदेश के अंत में लोगों का विशाल समूह उठ खड़ा हुआ और चला गया, तो उन्होंने गुरु को इस प्रकार आमंत्रित किया: "आदरणीय गुरुदेव! कल कृपया मेरा भिक्षा ग्रहण करें।" बुद्ध ने कहा: "हे भक्त! भिक्षुओं का समूह वास्तव में बहुत बड़ा है।" भक्त ने पूछा: "आदरणीय गुरुदेव! वे कितने हैं?" उत्तर था अड़सठ लाख। भक्त ने इस प्रकार निवेदन किया: "आदरणीय गुरुदेव! "मठ में एक भी नौसिखिए (सामणेर) को छोड़े बिना, सभी निवासी शिष्य मेरे साथ भोजन करें।" गुरु ने अपनी सहमति दे दी।

बुद्ध की स्वीकृति पाकर भक्त घर गया, बड़ा दान तैयार किया और गुरु को अगले दिन भोजन के समय की सूचना दी। गुरु ने अपना कुंड और वस्त्र लिया, भिक्षुओं के समूह से घिरे हुए भक्त के घर गए, अपने लिए तैयार आसन पर बैठे, अर्पण के अंत में चावल का दलिया आदि प्रसाद ग्रहण किया और भोजन संपन्न कराया। भक्त भी गुरु के पास बैठ गया।

3-3,3. उसी दौरान, भिक्षापात्र की तलाश में भटकते हुए थेरा महानिसभा उसी मार्ग पर आ गए। भक्त ने थेरा को देखा, अपनी सीट से उठे, उनके पास गए, उन्हें प्रणाम किया और कहा: "आदरणीय महोदय! कृपया मुझे अपना भिक्षापात्र दीजिए।" थेरा ने उत्तर दिया: "हे भक्त! यह उचित नहीं होगा।" भक्त ने थेरा का भिक्षापात्र लिया, उसे भिक्षापात्र से भरा और थेरा को अर्पित कर दिया। इसके बाद, भक्त थेरा के पीछे-पीछे चले, पीछे हटे, गुरु के समक्ष बैठे और इस प्रकार कहा: "आदरणीय महोदय! थेरा महानिसभा ने यहाँ प्रवेश करने की इच्छा नहीं जताई, यद्यपि उन्हें बताया गया था कि गुरु इस भवन में विराजमान हैं; क्या वास्तव में उनमें आपके गुणों से बढ़कर कोई गुण है? बुद्धों के लिए दूसरों की प्रशंसा करने में ईर्ष्या जैसी कोई बात नहीं होती; इसलिए, गुरु ने इस प्रकार कहा: "हे भक्त! हम भिक्षापात्र की प्रतीक्षा में घर में बैठते हैं; वह भिक्षु इस प्रकार बैठकर भिक्षापात्र की प्रतीक्षा नहीं करता; हम गाँव के भीतर स्थित मठ में रहते हैं, जबकि वह जंगल में रहता है; हम छत के नीचे रहते हैं, जबकि वह खुले आकाश में रहता है।" भगवान ने उस भिक्षु के गुणों का वर्णन इस प्रकार किया मानो विशाल सागर को भरते हुए कहा हो: "ये और वो भी उसके गुण हैं।"

3-3,4. वह भक्त, जो स्वभाव से ही तेल में भीगे हुए जलते दीपक के समान था, और भी अधिक प्रसन्नतापूर्वक धार्मिक हो गया और सोचने लगा: "अब निर्वाण के ज्ञान की प्राप्ति से मुझे क्या लाभ है? क्या मेरे लिए यह बेहतर नहीं होगा कि मैं भविष्य में किसी बुद्ध की उपस्थिति में तपस्या (धूत) के अभ्यास में सर्वोच्च शिष्य बनने की आकांक्षा रखूँ?" उस भक्त ने गुरु को एक बार फिर आमंत्रित किया, उसी प्रकार सात दिनों तक महान दान दिया, सातवें दिन बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के विशाल समूह को तीन-तीन वस्त्र भेंट किए, गुरु के चरणों में लेट गया और कहा: "आदरणीय गुरुदेव! जब मैंने सात दिनों तक यह दान दिया, तब मेरे शारीरिक प्रेम, वाणी के प्रेम और मन के प्रेम का प्रभाव उत्पन्न हुआ; इस पुण्य कर्म से मैं दिव्य महिमा या सक्का, मार और ब्रह्मा की महिमा जैसी कोई अन्य उपलब्धि नहीं चाहता; परन्तु मेरा यह कर्म ऐसा हो कि तेरह प्रकार की तपस्याओं का उत्तरदायित्व धारण करने वालों में सर्वोच्च बनने और भविष्य में किसी बुद्ध की उपस्थिति में थेरा महानिसाभ द्वारा प्राप्त पद की प्राप्ति में सहायक हो। गुरु ने मन ही मन कहा: "इस भक्त ने एक महान पद की कामना की है; क्या वह इसे प्राप्त कर पाएगा या नहीं?", फिर आगे देखा, उसकी उपलब्धि की संभावना देखी और कहा: "तुम्हारे द्वारा इस प्रिय पद की कामना की गई है; आने वाले एक लाख युगों (कप्पा) के अंत में, गौतम नामक एक बुद्ध प्रकट होंगे; "तुम उनके तीसरे प्रमुख शिष्य बनोगे, जो थेरा महाकस्सपा के नाम से जाने जाओगे।" इस प्रकार उन्होंने भविष्यवाणी की। यह भविष्यवाणी सुनकर भक्त ने मन ही मन कहा, "बुद्धों के उपदेश (या घोषणा) दो प्रकार के नहीं होते," और उसने यह मान लिया कि वह इसे कल ही प्राप्त कर लेगा। उस भक्त ने अपने जीवनकाल में दान किया, नियमों का पालन किया, अनेक प्रकार के पुण्य कर्म किए और मृत्यु के बाद स्वर्ग में पुनर्जन्म लिया।

3-3.5. उस पुनर्जन्म से आरंभ होकर, उन्होंने दिव्य और मानव लोकों में समृद्धि का आनंद लिया, और जब सर्वज्ञ बुद्ध विपस्सी बंधुनती नगर के सुरक्षित और संरक्षित हिरण-पार्क के निकट निवास कर रहे थे, तब 91 युग (कप्पा) पूर्व, दिव्य लोक से विदा होने के बाद, उनका पुनर्जन्म एक प्राचीन, जीर्ण-शीर्ण ब्राह्मण परिवार में हुआ। उस अवसर पर भी, तेजस्वी विपस्सी ने सातवें वर्ष में सत्य (धम्म) का उपदेश दिया; वहाँ एक बड़ा कोलाहल हुआ। समस्त जंबुद्वीप में देवताओं ने इस प्रकार घोषणा की: "गुरु सत्य (धम्म) का उपदेश देंगे।" ब्राह्मण ने वह घोषणा सुनी। उनके पास केवल एक ही वस्त्र था; उनकी पत्नी, ब्राह्मण स्त्री के पास भी। ऊपरी वस्त्र के बारे में, पति-पत्नी के लिए केवल एक ही वस्त्र था। पूरे शहर में वे "एक वस्त्रधारी ब्राह्मण" के नाम से प्रसिद्ध थे। जब भी ब्राह्मणों की किसी कार्य-विमर्श के लिए सभा होती थी, वे स्वयं वही ऊपरी वस्त्र पहनकर जाते थे और अपनी पत्नी को घर पर ही छोड़ देते थे; जब ब्राह्मण महिलाओं की सभा होती थी, तो वे स्वयं घर पर ही रहते थे; उनकी पत्नी, जो ब्राह्मण महिला थीं, वही ऊपरी वस्त्र पहनकर सभा में जाती थीं। उस दिन, उस ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से पूछा, "प्रिय! क्या तुम रात में या दिन में धर्म का प्रवचन सुनोगी? तुम्हारा क्या कहना है?" उसने उत्तर दिया, "हे स्वामी! मैं रात में प्रवचन सुनने नहीं जा सकती; मैं दिन के समय सुनूँगी।" उसने अपने पति को घर पर छोड़ा, वह ऊपरी वस्त्र पहना, महिला भक्तों के साथ मठ गई, गुरु को प्रणाम किया, एक तरफ बैठ गई, धर्म का उपदेश सुना और गृहस्थ भक्तों के साथ वापस आ गई। फिर, उसके ब्राह्मण पति ने उसे घर पर छोड़ा, वह ऊपरी वस्त्र पहना और मठ चला गया।

3-3,6. उस अवसर पर भी, उपस्थित श्रोताओं के बीच में, अलंकृत उपदेश आसन पर विराजमान गुरु ने अपना बहुरंगी पंखा थामकर सत्य (धम्म) का उपदेश इस प्रकार दिया मानो स्वर्ग की नदी बह रही हो या सिनरु को मथनी बनाकर सागर का मंथन किया जा रहा हो। जब श्रोताओं के अंतिम छोर पर बैठे ब्राह्मण सत्य (धम्म) का उपदेश सुन रहे थे, तो रात्रि के प्रथम पहर में ही उनके पूरे शरीर में पाँचों प्रकार की पीति (उत्साह) उत्पन्न हो गई। उन्होंने अपना वस्त्र समेटा और दशाबल को अर्पित करने का निश्चय किया। बाद में, उनके मन

में हज़ार प्रकार की दुर्भावना उत्पन्न हुई। उन्होंने मन ही मन कहा, "तुम्हारे और तुम्हारी पत्नी, ब्राह्मण स्त्री के लिए केवल एक ही वस्त्र है; कोई दूसरा वस्त्र नहीं है; मैं अपना वस्त्र पहने बिना बाहर नहीं घूम सकता।" इस प्रकार वे किसी भी प्रकार से अर्पण करने के लिए अनिच्छुक हो गए। फिर, जब पहला पहर बीत गया और रात के मध्य पहर में भी, उन्हें उसी प्रकार उत्साह उत्पन्न हुआ। उन्होंने उसी प्रकार विचार किया और उसी प्रकार से इसे अर्पित करने की अनिच्छा व्यक्त की। फिर जब मध्य पहर बीत गया और रात के अंतिम पहर में भी, उन्हें उत्साह (पाति) उत्पन्न हुआ। उस समय, उन्होंने अपनी दुर्भावना पर विजय प्राप्त की, अपना ऊपरी वस्त्र उठाया और उसे बुद्ध के चरणों में रख दिया। इसके बाद, उन्होंने अपनी बाईं भुजा को मोड़कर, अपने दाहिने हाथ की हथेली से ताली बजाई और तीन बार इस प्रकार गर्जना (या चिल्लाया): "मेरे द्वारा पराजित; मेरे द्वारा परास्त!"

3-3,7. उस अवसर पर, राजा बंधुमा धर्मोपदेश सुन रहे थे, वे प्रवचन पीठ के पीछे एक पर्दे के भीतर बैठे थे। राजाओं को, विशेष रूप से, "मैंने विजय प्राप्त कर ली है" की वाणी सुखद नहीं लगती। राजा ने अपने दूत को आदेश दिया: "देखो! जाओ और उससे पूछो कि उसने क्या कहा था।" जब उस दूत ने उनसे पूछा, तो ब्राह्मण ने उत्तर दिया: "राजा के सैनिकों ने हाथी, रथ आदि जैसे वाहनों पर सवार होकर, तलवारों, ढालों आदि से लैस होकर, दूसरी सेना को पूरी तरह से पराजित कर दिया; वह विजय कोई आश्चर्य की बात नहीं है; परन्तु मैंने अपने मन की दुर्भावना पर विजय प्राप्त कर ली, मानो मैंने अपने पीछे से आए सींग वाले बैल का सिर गदा से फोड़कर उसे भगा दिया हो, और अपना ऊपरी वस्त्र दशाबल को अर्पित कर दिया; मेरे द्वारा अपनी दुर्भावना पर यह विजय वास्तव में आश्चर्य की बात है।" राजा का दूत वापस आया और उसने राजा को इस घटना की सूचना दी। उस ब्राह्मण से प्रसन्न होकर राजा ने कहा, "मेरे मित्र! हम सब दशाबल को ठीक से नहीं जानते; ब्राह्मण ही जानता है।" उन्होंने दशाबल को वस्त्रों का एक जोड़ा भेजा। उसे देखकर ब्राह्मण ने सोचा, "जब मैं पहले मौन बैठा था, तब राजा ने मुझे कुछ नहीं दिया; परन्तु जब मैंने गुरु के गुणों का वर्णन किया, तब उन्होंने मुझे दिया; यह दान गुरु के गुणों के कारण ही उत्पन्न हुआ है; अतः यह केवल गुरु के लिए ही उपयुक्त है।" उन्होंने वह वस्त्र भी दशाबल को अर्पित कर दिया। राजा ने पूछा, "ब्राह्मण ने क्या किया?" और यह जानकर कि वह वस्त्र भी तथागत को अर्पित कर दिया गया है, उन्होंने ब्राह्मण को वस्त्रों के दो और जोड़े भेजे। उन्होंने उन्हें भी गुरु को अर्पित कर दिया। फिर राजा ने वस्त्रों के चार और जोड़े भेजे और इस प्रकार तीस जोड़े वस्त्र अर्पित किए। तब ब्राह्मण ने मन ही मन कहा, "यह वस्त्रों का जोड़ा बढ़ता ही जा रहा है, मानो यह वस्त्रों का जंगल बन गया हो।" उसने अपने लिए और अपनी ब्राह्मण पत्नी के लिए दो जोड़े वस्त्र लिए और तथागत को तीस जोड़े अर्पित किए। तब से वह ब्राह्मण गुरु का प्रिय बन गया।

3-3,8. फिर राजा ने देखा कि वह शीत ऋतु में गुरु के समक्ष धर्म का प्रवचन सुन रहा है, तो उसने ब्राह्मण को वह लाल मखमल भेंट किया जिसे राजा ने स्वयं धारण किया था और जिसकी कीमत एक लाख थी। उसने ब्राह्मण से कहा, "अब से कृपया इस वस्त्र को पहनकर ही धर्म का प्रवचन सुनें।" ब्राह्मण ने सोचा, "इस सड़े हुए शरीर पर इस मखमल को अपने पास रखने का क्या लाभ है?" उसने तथागत के सुगंधित कक्ष में उनके पलंग के ऊपर एक चंदवा बनाया और चला गया। फिर एक दिन राजा सुबह-सुबह मठ गया और सुगंधित कक्ष में गुरु के पास बैठ गया। उसी क्षण बुद्ध की छह रंगों वाली किरणें मखमल पर पड़ीं जिससे वह अत्यंत सुंदर हो गया। राजा ने ऊपर देखकर यह भलीभांति जान लिया और कहा, "आदरणीय महोदय! यह मखमल हमारा है; हमने इसे एक वस्त्रधारी ब्राह्मण को भेंट किया था।" बुद्ध ने उत्तर दिया, "हे महाराज! आपने ब्राह्मण का सम्मान किया और ब्राह्मण द्वारा हमें भेंट देकर हमारा भी सम्मान किया गया है।" राजा प्रसन्न हुए और बोले, "ब्राह्मण को उचित ज्ञान था, पर हमें नहीं।" मनुष्य के हित में जो कुछ भी था, राजा ने उसे आठ बार आठ बार अर्पित किया, जिसे सर्वव्यापी या विद्यमान भेंट कहा जाता है, और ब्राह्मण को अपना निजी पुरोहित नियुक्त किया। ब्राह्मण ने मन ही मन कहा, "आठ बार आठ, अर्थात् चौंसठ", और चौंसठ बार भोजन की व्यवस्था की, जीवन भर दान दिया, नैतिक नियमों का पालन किया और इस दुनिया से विदा होकर स्वर्ग में पुनर्जन्म लिया।

3-3,9. फिर, इस युग (कप्पा) में, बुद्धों के बीच, तेजस्वी कोणागमना और तेजस्वी कस्सपा, वहाँ से पुनर्जन्म लेकर बनारस के एक गृहस्थ परिवार में पैदा हुए। अपने बचपन के दौरान, गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए, वे एक दिन जंगल में पैदल घूमने निकले। उसी समय, नदी किनारे अपने वस्त्र धोते हुए एक मौन बुद्ध ने वस्त्र समेटने के बाद उसे रखने की कोशिश की, तभी "हे प्रभु! आप इसे क्यों समेटकर रख रहे हैं?" उत्तर मिला कि अनुकूल हवा पर्याप्त नहीं है। उन्होंने अपना ऊपरी वस्त्र अर्पित करते हुए कहा, "हे प्रभु! इसे ही धारण कीजिए", और यह कामना की: "मैं जहाँ कहीं भी पुनर्जन्म लूँ, मुझे कोई कष्ट (या विपत्ति) न हो।"

3-3.10. उनके घर में भी, उनकी बहन उनकी पत्नी से झगड़ रही थी, तभी एक मौन बुद्ध भिक्षा मांगने आए। तब उनकी बहन ने मौन बुद्ध को भिक्षा दी और उस पत्नी के संबंध में अपनी इच्छा व्यक्त करते हुए कहा: "मैं ऐसे मूर्ख से सौ योजन की दूरी पर ही रहूँ।" पत्नी ने अपने घर के प्रांगण में खड़े-खड़े ही यह इच्छा सुनी, भिक्षापात्र को पकड़ लिया और मन ही मन कहा: "यह मौन बुद्ध उसके द्वारा दिया गया भोजन न खाएँ", उसने भोजन त्याग दिया, पात्र में मिट्टी भर दी और वापस दे दिया। दूसरी ने यह देखा और कहा: "हे मूर्ख! तुम मुझे गाली दे सकती हो या मार सकती हो; परन्तु ऐसे मौन बुद्ध के भिक्षापात्र को फेंककर मिट्टी चढ़ाना उचित नहीं है, जिन्होंने अनगिनत युगों तक

सिद्धियाँ प्राप्त की हैं।" तब उस पत्नी में विवेक जागा। उसने कहा: "आदरणीय महोदय! "कृपया प्रतीक्षा करें"; उसने मिट्टी फेंक दी, भिक्षापात्र धोया, उसके भीतर सुगंधित पाउडर मला, उसमें उत्तम भोजन और चार प्रकार की मिठाई और शहद भरकर मौन बुद्ध के हाथों में रख दिया, कमल के रंग के घी से चमकता हुआ भिक्षापात्र उसके ऊपर छिड़का और इस प्रकार भिक्षा मांगी: "जैसे यह भिक्षापात्र प्रकाशमान हो गया है, वैसे ही मेरा शरीर भी प्रकाशमान हो जाए।" मौन बुद्ध ने धन्यवाद देते हुए 'शाबाश' कहा और आकाश में चले गए। ये दोनों पति-पत्नी जीवन भर जीवित रहे और वहां से मृत्यु के बाद स्वर्ग में पुनर्जन्म लिया। वहां से मृत्यु के बाद, भक्त का जन्म सर्वज्ञ बुद्ध कश्यप के समय बनारस में अस्सी करोड़ की संपत्ति वाले परिवार में हुआ; दूसरा भी, उन्हीं की तरह, एक पुत्री के रूप में पुनर्जन्म लिया। एक बैंकर। जब वह बालिग हुआ तो उसी बैंकर की बेटी को उसके पास लाया गया। उसके पिछले बुरे कर्म के बुरे परिणाम के कारण, जैसे ही वह अपने सास-ससुर के घर में दाखिल हुई, दहलीज से लेकर पूरा घर दुर्गंधयुक्त हो गया, मानो किसी गंदगी के ढेर को हिलाकर रख दिया गया हो। युवक ने पूछा, "यह दुर्गंध किसकी है?" और यह जानकर कि यह दुर्गंध बैंकर की बेटी की है, उसने उसे वापस उसके माता-पिता के घर यह कहकर भेज दिया, "इसे बाहर निकाल दो।" उसे सात बार घर से बाहर निकाला गया।

3-3.11. उस समय तक, दशाबल कस्सपा पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर चुके थे। उनके लिए लोगों ने एक योजन ऊँचा मंदिर बनवाना शुरू किया, जिसमें एक लाख मूल्य की सोने की ईंटें लगी थीं। जब वह मंदिर बन रहा था, तब उस धनाढ्य की पुत्री ने सोचा, "मुझे सात स्थानों से पीछे हटना पड़ा; मेरे जीवन का क्या लाभ?", उसने अपने आभूषणों का खजाना तुड़वाकर उनसे सोने की ईंटें बनवाईं: उसके आभूषणों की लंबाई एक हाथ (रतन) थी, चौड़ाई बारह उंगलियों के बराबर और ऊँचाई चार उंगलियों के बराबर थी। इसके बाद, वह पीले रंग के अरुगदी के एक टुकड़े और आर्सेनिक तथा आठ मुट्ठी सफेद कमल के फूल लेकर मंदिर निर्माण स्थल पर गई। ठीक उसी समय, चारों ओर बिछाई जा रही ईंटों की एक पंक्ति में पूर्णता के लिए ईंटों की कमी हो गई। धनाढ्य की पुत्री ने वास्तुकार-निर्माता से कहा, "कृपया मेरी यह सोने की ईंट यहाँ लगा दीजिए।" निर्माता ने उत्तर दिया; "मेरी प्यारी! तुम सही समय पर आई हो, बिलकुल सही समय पर: तुम स्वयं अपनी ईंट रखो।" वह ऊपर चढ़ी, पीले ऑर्पिमेंट और आर्सेनिक के टुकड़े को तेल में मिलाया, उस गोंद से अपनी ईंट को अच्छी तरह से जमाया, उसके ऊपर आठ मुट्ठी सफेद कमल के फूल रखकर श्रद्धापूर्वक मंदिर को प्रणाम किया, अपनी मनोकामना व्यक्त करते हुए कहा: "जहाँ भी मेरा पुनर्जन्म हो, मेरे शरीर से चंदन की मीठी सुगंध हवा की तरह निकले और मेरे मुख से सफेद कमल की मीठी सुगंध निकले।" उसने मंदिर की पूजा की, परिक्रमा की और घर चली गई।

3-3,12. उसी क्षण, उस धनाढ्य के पुत्र को उसके बारे में सूचना मिली, जिसके घर उसे सबसे पहले लाया गया था। शहर में भी एक उत्सव की घोषणा की गई थी। उसने अपने सेवकों से पूछा, "यहाँ लाई गई धनाढ्य की पुत्री कहाँ है?" उत्तर मिला, "हे प्रभु! वह अपने माता-पिता के घर पर है।" धनाढ्य के पुत्र ने कहा, "उसे ले आओ, मैं उत्सव में आनंद लूँगा।" वे गए और उसे प्रणाम किया। जब उसने पूछा, "प्रियजनों! आप लोगों के आने का क्या कारण है?", तो उन सभी ने उसे घटी हुई घटना के बारे में बताया। उसने उत्तर दिया, "प्रियजनों! मैंने अपने आभूषणों के खजाने से मंदिर को आच्छादित किया है; मेरे पास कोई आभूषण नहीं है।" वे गए और धनाढ्य के पुत्र को इसकी सूचना दी। धनाढ्य के पुत्र ने कहा, "उसे ले आओ; उसे उसके आभूषण मिल जाएँगे।" वे उसे ले आए। उसके घर में प्रवेश करते ही चंदन और सफेद कमल की मीठी सुगंध पूरे घर में फैल गई। बैंकर के बेटे ने उससे पूछा, "मेरी प्रिय! पहले तो तुम्हारे शरीर से दुर्गंध आती थी; अब तुम्हारे शरीर से चंदन की मीठी सुगंध आती है और तुम्हारे मुख से सफेद कमल की मीठी खुशबू आती है। यह क्या है?" उसने अपने पति को अपने द्वारा किए गए कार्य की पूरी कहानी बताई। बैंकर का बेटा प्रसन्न होकर बोला, "सचमुच! बुद्ध की व्यवस्था (शासन) लाभकारी है।" उसने एक योजन का स्वर्ण मंदिर बनवाया, जो मखमली आवरण से ढका हुआ था और उस पर रथ के पहिये के आकार के स्वर्ण कमल स्थान-स्थान पर सजे हुए थे। उनके परदे बारह हाथ (या हाथ) लंबे थे।

3-3,13. वह अपने जीवन के अंत तक वहीं रहे, फिर उनका निधन हो गया, उनका स्वर्ग में पुनर्जन्म हुआ और फिर उनका वहाँ से भी पुनर्जन्म हुआ, उनका पुनर्जन्म बनारस से एक योजन दूर एक मंत्री के परिवार में हुआ; उनकी पत्नी का निधन हो जाने के बाद, उनका पुनर्जन्म एक राजा के परिवार में हुआ और वे सबसे बड़ी राजपुत्री बनीं। जब वे वयस्क हुए, तो उस युवक के गाँव में एक उत्सव की घोषणा की गई। उसने अपनी माँ से कहा, "प्रिय माँ! कृपया मुझे मेरा वस्त्र दीजिए; मैं उत्सव में आनंद लूँगा।" माँ ने धुला हुआ वस्त्र निकाला और अपने पुत्र को दिया। पुत्र ने कहा, "प्रिय माँ! यह वस्त्र मोटा है।" माँ ने दूसरा वस्त्र निकाला और उसे दिया। उसने उसे भी अस्वीकार कर दिया। तब उसकी माँ ने उससे कहा, "मेरे प्रिय पुत्र! हम ऐसे घर में पैदा हुए हैं कि हमारे लिए इससे अधिक उत्तम वस्त्र प्राप्त करने का सौभाग्य नहीं रहा।" पुत्र ने कहा, "ठीक है, प्रिय माँ! मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ यह वस्त्र उपलब्ध है।" माता ने उत्तर दिया, "मेरे पुत्र! मेरी यही कामना है कि तुम आज ही, इसी क्षण, बनारस नगर की संप्रभुता प्राप्त कर लो।" उसने माता को प्रणाम किया और उन्हें

जाने की सूचना दी। माता ने पुत्र को जाने दिया। परन्तु अपने पुण्य के फलस्वरूप वह घर छोड़कर बनारस गया और राजमहल के बगीचे में स्थित पवित्र शिलाखंड पर सिर ढककर लेट गया। वह दिन बनारस के राजा की मृत्यु का सातवाँ दिन था।

3-3,14. राजा के पार्थिव शरीर के साथ जो उचित अनुष्ठान करना चाहिए था, उसे पूरा करने के बाद मंत्री राजमहल में बैठ गए और आपस में विचार-विमर्श करने लगे: "राजा की केवल एक ही पुत्री है; कोई पुत्र नहीं है; राजाविहीन राज्य का विनाश हो जाएगा; राजा बनने के योग्य कौन है?" उन्होंने आपस में कहा: "आप योग्य हैं; आप योग्य हैं।" पुरोहित ने सुझाव दिया: "बहुत से लोगों को ढूंढना उचित नहीं है; हम राजमहल को अपने आप चलने देंगे।" उन्होंने कुमुद कमल के रंग के चार सिंधी घोड़े जोते और उन्हें राजमहल में रखा; पाँच प्रकार के राजचिह्नों और सफेद छतरी के साथ, उन्होंने रथ को चलने दिया और पीछे से संगीत बजाकर उसे सहारा दिया। रथ पूर्वी द्वार से शहर से बाहर निकला और राजमहल की ओर मुख करके आगे बढ़ा। कुछ लोगों ने कहा: "यह तो अपने निरंतर अनुभव से हमेशा की तरह राजमहल की ओर ही मुख करके जा रहा है, चलो इसे वापस मोड़ देते हैं।" निजी पुरोहित ने इसके विपरीत सलाह दी। रथ आगे बढ़ा, युवक की परिक्रमा की और रुक गया, ताकि वह सवार हो सके। पुरोहित ने अपने ऊपरी वस्त्र का किनारा हटाया, सोए हुए युवक के पैरों के तलवों की जाँच की और मन ही मन कहा: "इस द्वीप को छोड़ दो; चार बड़े द्वीपों और दो हज़ार छोटे द्वीपों में से, यह द्वीप शासन करने के लिए उपयुक्त है", और तीन बार संगीत की गूँज की।

3-3,15. तब उस युवक ने अपना मुख खोला, चारों ओर देखा और पूछा, "आप सब यहाँ किसलिए आए हैं?" मंत्रियों ने उत्तर दिया, "हे प्रभु! आपको प्रभुत्व प्राप्त हुआ है।" युवक ने पूछा, "आपका राजा कहाँ है?" उनका उत्तर था कि उनका राजा स्वर्गलोक चला गया है। युवक ने पूछा, "कितने दिन बीत गए हैं?" उत्तर था कि सात दिन बीत चुके हैं। युवक ने आगे पूछा, "क्या आपका कोई पुत्र या पुत्री नहीं है?" उत्तर था, "हे प्रभु! पुत्री है; पर पुत्र नहीं है।" तब युवक ने कहा, "ठीक है, तो मैं ही प्रभुत्व स्थापित करूँगा।" मंत्रियों ने तुरंत राज्याभिषेक का मंडप बनवाया, राजा की पुत्री को हर प्रकार के आभूषणों से सजाया-संवारा, उसे उद्यान में ले आए और उस युवक का राज्याभिषेक किया। फिर जब उसका अभिषेक हो गया, तो वे उसके लिए एक लाख रुपये का वस्त्र लाए। उन्होंने पूछा: "प्यारे बच्चों! यह क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया: "महाराज! यह पहनने का वस्त्र है।" राजा ने पूछा: "हे प्यारे बच्चों! क्या यह मोटा नहीं है?" उत्तर था: "महाराज! मनुष्यों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों में इससे अधिक मुलायम कोई वस्त्र नहीं है।" राजा ने कहा: "मुझे लगता है कि तुम्हारे राजा में कोई गुण नहीं था; औपचारिक स्वर्ण पात्र लाओ।" मैं वस्त्र लाऊंगा।" उन्होंने सोने का पवित्र पात्र मंगवाया, उठे, हाथ धोए, मुँह साफ किया, हाथ में जल लेकर पूर्व दिशा में छिड़का। धरती फट गई और आठ विश्व वृक्ष (कप्परुक्खा) उग आए। फिर उन्होंने जल लेकर चारों दिशाओं में छिड़का, इस प्रकार: दक्षिण, पश्चिम और उत्तर। इस प्रकार सभी दिशाओं में आठ-आठ करके बत्तीस विश्व वृक्ष (कप्परुक्खा) उग आए। उस राजा ने एक दिव्य वस्त्र को अपने निचले वस्त्र के रूप में और दूसरे को अपने ऊपरी वस्त्र के रूप में धारण किया और आदेश दिया: "राजा नंदा के राज्य में कोई भी सूत न बुने; इस प्रकार, राज ढोल बजाकर मेरी घोषणा करो।" उन्होंने अपने ऊपर छत्र उठवाया, उचित वस्त्र धारण किए और अलंकृत हुए, उत्तम राज हाथी की पीठ पर सवार हुए, नगर में प्रवेश किया, राज महल गए और समृद्धि से महान वैभव का आनंद लिया।

3-3,16. इस प्रकार, समय बीतने के साथ, रानी ने राजा की महिमा को देखकर अपनी सहानुभूति इस प्रकार प्रकट की: "सत्यतः अद्भुत है तपस्या, जिसमें इंद्रियों पर नियंत्रण शामिल है!" जब पूछा गया: "हे रानी! यह क्या है?", तो उन्होंने उत्तर दिया: "महाराज! आपकी वैभवशाली समृद्धि अत्यंत विशाल है; यह अतीत में किए गए अच्छे कर्मों का फल है, बुद्ध में आस्था रखते हुए; अब आप भविष्य में अपने ऊपर निर्भर रहने के लिए पुण्य कर्म नहीं कर रहे हैं।" जब पूछा गया: "हम कब दान करें? यहाँ अच्छे नैतिक उपदेशों वाले लोग नहीं हैं।" रानी ने उत्तर दिया: "महाराज! जंबू द्वीप अरहंतों से रहित नहीं है; महाराज! आप स्वयं दान करें; मैं दान के लिए अरहंतों को बुला लूंगी।" अगले दिन, राजा ने पूर्वी नगर द्वार पर दान तैयार करवाया। रानी ने सुबह तड़के ही पवित्र नियमों का पालन करते हुए, अपने महल के ऊपर पूर्व दिशा की ओर मुख करके सीने के बल लेटकर कहा, "यदि इस दिशा में कोई अरहंत हों, तो वे कल यहाँ आकर हमारा भिक्षादान ग्रहण करें।" उस दिशा में कोई अरहंत नहीं थे; उन्होंने वह भिक्षापात्र निर्धनों को दे दिया।

3-3,17. अगले दिन राजा ने दक्षिणी द्वार पर भेंट तैयार रखी; फिर भी उन्हें कोई योग्य प्राप्तकर्ता नहीं मिला; अगले दिन भी पश्चिम द्वार पर यही स्थिति रही। लेकिन जिस दिन उत्तरी द्वार पर भेंट तैयार रखी गई थी और रानी ने भी निमंत्रण दिया, उसी दिन हिमवंत में रहने वाले पद्मावती के पुत्रों, पाँच सौ मौन बुद्धों में से सबसे बड़े ने अपने छोटे भाइयों से कहा: "हे भाइयों! राजा नंदा ने आप सभी को आमंत्रित किया है; कृपया उनके निमंत्रण का उत्तर दें।" वे सहमत हुए, अगले दिन अनोतत्ता झील में स्नान किया, आकाश से होते हुए उत्तरी द्वार पर उतरे। लोगों ने उन्हें देखा और राजा को सूचना दी: "महाराज! पाँच सौ मौन बुद्ध आए हैं।" राजा अपनी रानी के साथ गए, उन्हें प्रणाम किया, मौन बुद्धों से अपने महल में आने का अनुरोध किया, जहाँ उन्होंने उन्हें दान दिया, और भोजन के अंत में, राजा ने सबसे वरिष्ठ मौन बुद्ध के चरणों में और रानी ने सबसे कनिष्ठ मौन बुद्ध के चरणों में नतमस्तक होकर उनसे यह वचन लिया: "आदरणीय महोदय!

हमारे स्वामियों को अपनी आवश्यकताओं से परेशान नहीं होना पड़ेगा; हमारे पुण्य कर्मों के कारण हमें विपत्ति का भी सामना नहीं करना पड़ेगा; कृपया हमें जीवन भर यहीं रहने का वचन दें", और उनके लिए उद्यान में पाँच सौ पत्तों की झोपड़ियाँ, पाँच सौ गलियारे और इसी प्रकार सभी प्रकार की सुविधाओं से युक्त आवासीय आवास उपलब्ध कराए, और उन्हें वहाँ रहने दिया।

3-3,18. इस प्रकार समय बीतने पर, जब राजा के सीमावर्ती क्षेत्र में विद्रोह हुआ, तो राजा ने अपनी रानी को यह निर्देश देकर प्रस्थान किया: "मैं अपने सीमावर्ती नगरों में शांति स्थापित करने जा रहा हूँ; कृपया मौन बुद्धों को भूलकर उनकी उपेक्षा न करें।" राजा के लौटने से पहले ही मौन बुद्धों का जीवनकाल समाप्त हो गया। मौन बुद्ध महापदुमा ने रात के तीनों पहरों में ध्यान का आनंद लिया और सूर्योदय के समय रेलिंग को पकड़े खड़े-खड़े ही निर्वाण प्राप्त कर लिया। इसी प्रकार शेष मौन बुद्धों ने भी निर्वाण प्राप्त किया; इस प्रकार, सभी मौन बुद्धों ने पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर लिया। अगले दिन, रानी ने मौन बुद्धों के लिए बैठने की जगहें तैयार कीं, फूल बिखेरे, उन जगहों को सुगंधित किया, स्वयं बैठकर उनके आने की प्रतीक्षा करने लगीं। जब वे नहीं आए, तो उन्होंने अपने सेवकों को यह कहते हुए भेजा: "मेरे प्रियों! आप जाइए; पता लगाइए कि हमारे स्वामियों को क्या असुविधा है।" वे गए, महापदुमा की पत्तियाँ-पत्थर की कुटिया का द्वार खोला; उन्हें वहाँ न पाकर वे मठ में गए, उन्हें रेलिंग पर झुके हुए देखा और इस प्रकार कहा: "आदरणीय महोदय! समय हो गया है"; उन्हें प्रणाम करने के बाद। पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर चुके मौन बुद्ध का शरीर क्या कहेगा? उन्होंने मन ही मन कहा: "मुझे लगता है कि वे सो रहे हैं", उनके पैरों के पिछले हिस्से को अपने हाथों से छुआ, न केवल ठंडक से बल्कि उनके पैरों की अकड़न से भी उनके पूर्णतः निर्वाण प्राप्त करने की स्थिति का पता चला; दूसरे मौन बुद्ध के पास गए, वहाँ भी उन्हें यही पता चला; फिर तीसरे के पास गए; और इस प्रकार उन्हें पता चला कि सभी मौन बुद्ध भी पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं और राजपरिवार में लौट आए हैं। जब उनसे पूछा गया, "हे रानी! मौन बुद्ध कहाँ हैं?", तो उन्होंने उत्तर दिया, "हे रानी! वे पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं।" रानी रोईं, विलाप किया, अपने महल से बाहर निकलीं, नागरिकों के साथ उस स्थान पर गईं, पवित्र उत्सव (साधुकीलिता) मनाया, मौन बुद्धों के शरीरों का दाह संस्कार किया, उनके अवशेषों को निकाला और उन्हें एक मंदिर में स्थापित करवाया।

3-3,19. राजा अपने सीमावर्ती नगरों में शांति स्थापित करके लौटे और उनसे मिलने के लिए आगे आईं रानी से पूछा, "मेरी प्रिय! क्या बात है? आशा है आप मौन बुद्धों के प्रति उदासीन नहीं हैं; क्या हमारे स्वामी रोगमुक्त हैं?" रानी ने उत्तर दिया, "महाराज! वे पूर्णतः निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं।" यह सुनकर राजा ने विचार किया, "इस प्रकार के बुद्धिमान लोगों की मृत्यु होती है; हमारे लिए क्या उपाय है?" वे नगर में प्रवेश नहीं किए, बल्कि सीधे उद्यान में गए, अपने बड़े पुत्र को बुलवाया, उन्हें सत्ता सौंप दी और स्वयं संन्यासी बनने के लिए उसका त्याग कर दिया। रानी ने भी मन ही मन कहा, "जब राजा संन्यासी बन गए हैं, तो मैं क्या करूँ?" और वे भी उसी उद्यान में संन्यासी बन गईं। दोनों ने भी ध्यान साधना की और वहाँ से देह त्याग कर ब्रह्मालोक में पुनर्जन्म लिया।

3-3,20. जब वे ब्रह्मा लोक में रह रहे थे, तब हमारे गुरुदेव का जन्म हुआ और वे उत्तम धर्म के चक्र को निरंतर घुमाते हुए समय के साथ राजगृह पहुंचे। जब गुरुदेव वहां विधिवत निवास कर रहे थे, तब यह बालक पिप्पली महातीथ के गांव में कपिल ब्राह्मण की पत्नी के गर्भ से पुनर्जन्म लिया। यह भद्दाकपिलानी मद्दा राज्य के सागल नगर में कोसिया वंश के ब्राह्मण की पत्नी के गर्भ से पुनर्जन्म लिया। जब वे धीरे-धीरे बड़े हुए और बालक पिप्पली बीस वर्ष और भद्दा सोलह वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके, तब माता-पिता ने अपने पुत्र को देखकर उस पर अत्यधिक दबाव डाला और कहा: "प्रिय पुत्र! तुम वयस्क हो गए हो; अब हमारे वंश की स्थापना करना तुम्हारा कर्तव्य है।" उस लड़के ने उत्तर दिया, "कृपया मेरे सामने ऐसी बातें न करें; जब तक आप दोनों जीवित हैं, मैं आपका सहारा और देखभाल करता रहूंगा; आप दोनों के चले जाने पर मैं संन्यास लेकर भिक्षु बन जाऊंगा।" उन्होंने कुछ दिन बीतने दिए और फिर उससे बात की। लेकिन उसने फिर से उनकी विनती ठुकरा दी। तब से माँ लगातार इस बारे में बोलती रही।

3-3,21. बालक ने मन ही मन कहा, "मैं अपनी माताजी को समझा दूंगा", और उसने एक हजार निक्खा माप लाल चमकता सोना दिया, सुनारों से एक स्त्री-समान मूर्ति बनवाई, और जब सोने को पीटने, पीटने, साफ करने और पॉलिश करने आदि का काम पूरा हो गया, तो उस सोने की मूर्ति को लाल वस्त्र पहनाए, उसे सोने के फूलों और सभी प्रकार के आभूषणों से सजाया और कहा, "प्रिय माताजी! इस सोने की मूर्ति जैसी मनमोहक वस्तु पाकर मैं घर पर ही रहूंगा; अन्यथा नहीं।" बुद्धिमान ब्राह्मण स्त्री ने इस प्रकार विचार किया, "मेरा पुत्र पुण्यवान है, जिसने दान दिया है; उसने अच्छे कर्म करने की इच्छा अवश्य ही रखी होगी; पहले वह अकेले अच्छे कर्म नहीं करता था; निश्चय ही, मेरे पुत्र के साथ अच्छे कर्मों में उसकी साथी एक सुडौल, सुनहरे रंग की युवती अवश्य होनी चाहिए।" उसने आठ ब्राह्मणों को बुलवाया, उन्हें सभी शिष्टाचारों के साथ संतुष्ट किया, सोने की मूर्ति को रथ पर चढ़ाया और उन्हें यह कहते हुए भेजा: "मेरे प्रियो! तुम सब जाओ; जहाँ कहीं भी तुम्हें हमारे समान जन्म, कुल, समृद्धि आदि वाले किसी परिवार में इस जैसी युवती दिखाई दे, वहाँ इस सोने की मूर्ति को गिरवी रखकर दे दो।"

3-3,22. उन्होंने सहमति जताते हुए कहा, "यह काम हमारा है"; वे उसके घर से निकलकर आपस में कहने लगे, "हम उसे कहाँ पाएँगे? मद्दा का राज्य, यानी महिलाओं का हरम; चलो मद्दा के राज्य चलते हैं", और वे मद्दा के राज्य में पूरे शहर में घूमने लगे। वहाँ उन्होंने उस सोने की मूर्ति को स्नानघर के किनारे रख दिया और एक तरफ खड़े हो गए। फिर भद्दा की धाय ने भद्दा को नहलाया, उसे कपड़े पहनाए और सजाया-संवारा और खुद स्नान करने के लिए स्नानघर चली गई। सोने की मूर्ति को देखकर, "यह बिना किसी के साथ यहाँ आकर क्यों खड़ी है?" उसने सोने की मूर्ति की पीठ पर प्रहार किया और उसके निर्जीव होने का पता लगाया, लेकिन उसने यह कहते हुए कहा, "मेरे स्वामी की पुत्री, मेरी पुत्री, उसने ऐसा कहा; लेकिन यह सोने की मूर्ति मेरे स्वामी की पुत्री के घर की स्वागत करने वाली के बराबर नहीं है।" तब उन ब्राह्मणों ने उससे पूछा, "हमें बताया गया है कि आपके स्वामी की पुत्री ऐसी है; क्या यह सच है?" उसने उत्तर दिया, "मेरे स्वामी की पुत्री इस सोने की मूर्ति से सौ गुना और हज़ार गुना अधिक सुंदर है; वास्तव में, वह बिना किसी दीपक के भी, जब बारह हाथ चौड़े कमरे में बैठती है, तो अपने शरीर से निकलने वाली प्रकाश की किरणों से अंधकार को दूर कर देती है।" यह कहते हुए, "तो चलिए, उसके माता-पिता के पास चलते हैं", उसने सोने की मूर्ति को रथ पर विराजमान किया, उस धाय के पीछे-पीछे चली, कोसिया कुल के एक व्यक्ति के घर के द्वार पर खड़ी हुई और उनके आने की सूचना दी।

3-3,23. ब्राह्मण ने उनसे बातचीत की और पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "हम मगध राज्य के महातीथ्य ग्राम के ब्राह्मण कपिल के घर से आए हैं।" उन्होंने उपहार लेते हुए कहा, "अच्छी बात है, बच्चों! वह ब्राह्मण हमारे समान कुल, वंश और धनवान है; हम अपनी बेटी उन्हें दे देंगे।" उन्होंने कपिल ब्राह्मण को संदेश भेजा, "हमें भद्दा नाम की एक लड़की मिली है; कृपया पता करें कि क्या करना चाहिए।" यह संदेश सुनकर उन्होंने पिप्पली को बताया, "लड़की मिल गई है।" पिप्पली नामक बालक ने मन ही मन कहा, "मैंने सोचा था कि उन्हें नहीं मिलेगा; लेकिन उन्होंने मुझे ऐसा संदेश भेजा है कि उन्हें मिल गया है; मैं एक पत्र भेजूंगा कि मुझे वह नहीं चाहिए।" वह एकांतवास में चला गया और उसने एक पत्र लिखा: "भद्दा को उसके कुल, वंश और धन के अनुरूप पति मिले; मैं संसार त्यागकर संन्यासी बन जाऊंगा; बाद में निराश मत होना।" भद्दा ने भी यह सुनकर एकांतवास में जाकर एक पत्र लिखा: "भगवान के पुत्र को उसके कुल, वंश और धन के अनुरूप कन्या मिले; मैं संसार त्याग दूंगी; बाद में निराश मत होना।" यात्रा के बीच में दोनों पत्र आपस में मिल गए। उन्होंने एक-दूसरे से पूछा, "यह पत्र किसका है?" उत्तर मिला, "यह पिप्पली नामक बालक ने भद्दा को भेजा है।" दूसरे पत्र के बारे में पूछे जाने पर, "यह पत्र किसका है?" जब उत्तर मिला, "यह भद्दा ने बालक पिप्पली को भेजा है," तो उन सभी ने दोनों पत्र पढ़े, उन्हें फाड़कर जंगल में फेंक दिया और कहा, "देखो इस युवक ने क्या कर दिया!" फिर उन्होंने भी अपने पत्रों की तरह ही एक-एक पत्र लिखा और यहाँ से भी भेज दिया। इस प्रकार, यद्यपि दोनों युवकों और युवतियों के एक जैसे पत्रों में यही लिखा था कि वे सांसारिक सुख-सुविधाओं से विमुख हैं, जिनकी उन्हें इच्छा भी नहीं है, फिर भी उन दोनों का मिलन हो गया।

3-3,24. उसी दिन, बालक पप्पली ने भद्दा को फूलों की माला पकड़वाई। बुद्ध ने उन्हें उनके सोने के स्थान (या पलंग) के बीच में रख दिया। जब दोनों ने अपना रात्रि भोज ग्रहण कर लिया, तो वे अपने पलंग पर लेटने लगे। दोनों में से, बालक दाहिनी ओर से पलंग पर चढ़ा; भद्दा बाईं ओर से पलंग पर चढ़ी और बोली, "जिस भी ओर फूल मुरझाते हैं, उस ओर कामुक मन उत्पन्न होता है; इसलिए, हमें यह स्पष्ट रूप से जान लेना चाहिए; इस फूलों की माला को नहीं पकड़ना चाहिए।" यद्यपि, वे एक-दूसरे के शरीर को छूने के भय से पूरी रात सोए बिना रहे। दिन के समय, वे एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए तक नहीं और न ही हँसे। जब तक उनके माता-पिता जीवित थे, तब तक उन्होंने उनकी संपत्ति का प्रबंधन नहीं किया क्योंकि वे सांसारिक सुख-सुविधाओं से दूर रहना चाहते थे; परन्तु उनके मरने के बाद, उन्होंने संपत्ति की देखभाल की। बालक की समृद्धि बहुत अधिक थी। एक दिन अपने शरीर को शैम्पू करने के बाद, यहाँ तक कि वह सोने की शक्ति भी जिसे फेंक देना चाहिए, मगध मानक शंख के अनुसार बारह नारियल के खोल के माप तक पहुँच जानी चाहिए; वहाँ मशीनों से घिरी (या मशीनों से जुड़ी) साठ बड़ी झीलें थीं; उसका कार्यक्षेत्र बारह योजन तक फैला हुआ था; उसके पास अनुराधापुरा के आकार के चौदह गाँव थे; उसके पास चौदह हाथियों की सेना, चौदह घोड़ों की सेना और चौदह रथों की सेना थी।

3-3,25. एक दिन, एक सजे-धजे घोड़े पर सवार होकर और लोगों के एक बड़े दल से घिरे हुए, वह अपने खेत में गए, और खेत के एक छोर पर खड़े होकर उन्होंने देखा कि कौवे और अन्य पक्षी हल से जोते गए स्थानों से मिट्टी के ढेलों में मिले केंचुए जैसे छोटे जीवों को खा रहे थे। उन्होंने पूछा, "हे प्यारे! ये पक्षी क्या खा रहे हैं?" उत्तर मिला, "हे प्रभु! वे केंचुए खा रहे हैं।" पिप्पली बालक ने पूछा, "इन पक्षियों द्वारा किए गए ये बुरे कर्म यदि मेरे होते, तो मेरी ये सत्तासी करोड़ की संपत्ति मेरा क्या बिगाड़ पाती? बारह योजन तक फैले मेरे खेत मेरा क्या बिगाड़ पाते? मशीनों से चलने वाली ये झीलें मेरा क्या बिगाड़ पातीं? ये चौदह गाँव मेरा क्या बिगाड़ पाते? मैं ये सब कपिल की पुत्री भद्दा को सौंपकर संसार का त्याग कर देता।"

3-3,26. उस समय ब्राह्मण कपिल की पुत्री भद्दा अपनी दाइयों से घिरी बैठी थीं, उन्होंने अपने घर के प्रांगण में तिल के तीन घड़े फैला रखे थे; उन्होंने कौवों को तिल के कीड़े खाते देखा और पूछा, "हे मेरी प्यारी! ये कौवे क्या खा रहे हैं?" उत्तर मिला, "हे देवी! ये कीड़े खा रहे

हैं।" उन्होंने पूछा, "यह किसका दोष है?" उनका उत्तर था, "यह दोष आपका है, हे देवी!" उन्होंने सोचा, "मेरे चार हाथ के वस्त्र में तो मुश्किल से नारियल-चावल ही आ पाते हैं; लेकिन अगर इन कौवों द्वारा किया गया यह दोष मेरा होता, तो मैं हजार जन्मों में भी पुनर्जन्म के चक्र से सिर नहीं उठा पाती; जैसे ही मेरे पति, भगवान के पुत्र लौटेंगे, मैं सब कुछ उन्हें सौंप दूंगी, संसार त्याग दूंगी और भिक्षुणी बन जाऊंगी।"

3-3,27. वह लड़का वापस आया, स्नान किया, अपने आलीशान महल में चढ़ा और एक बहुमूल्य सिंहासन जैसी सीट पर बैठ गया। फिर उसके सेवकों ने उसके लिए विश्वराज के योग्य भोजन लाया। उनमें से दो ने भी भोजन किया और जब उनके सेवक बाहर चले गए, तो वे एकांत में चले गए और एक उपयुक्त आरामदायक स्थान पर बैठ गए। इसके बाद, लड़के ने भद्दा से पूछा, "मेरी प्रिय! जब तुम इस घर में आई, तो तुम कितना धन लाईं?" उसने उत्तर दिया, "मेरे स्वामी! पचपन हजार बैलगाड़ियाँ।" लड़के ने कहा, "मैं केवल तुम्हें ही वह सब कुछ और अस्सी-सात करोड़, साठ मशीनी झीलें, और इसी प्रकार की अपनी सारी संपत्ति सौंपता हूँ।" जब पूछा गया, "मेरे स्वामी! आप कहाँ जा रहे हैं?" लड़के ने उत्तर दिया कि वह भिक्षु बनेगा। युवती ने उत्तर दिया, "मेरे स्वामी! मैं भी आपके लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी; मैं भी भिक्षुणी बन रहा हूँ। तीनों प्रकार के प्राणी उनके पास जलते हुए पत्तों के आश्रय की तरह खड़े थे। उन्होंने आपस में संसार त्यागने का निश्चय किया, पीले रंग से रंगे वस्त्र और घर के बाज़ार से लाए मिट्टी के भिक्षापात्र धारण किए, एक साथ अपने बाल मुंडवाए और संसार त्यागते हुए कहा, "इस संसार में जितने भी अरहंत हैं, हम अपना यह त्याग उन्हें समर्पित करते हैं।" इस प्रकार संन्यासी बनकर उन्होंने अपने भिक्षापात्र अपने थैलों में रखे, उन्हें अपने कंधों पर लटकाया और अपने महल से नीचे उतर गए। उनके घर में उनके दासों और सेवकों में से किसी को भी इस बात की जानकारी नहीं है।

3-3.28. फिर वे ब्राह्मणों के गाँव से निकल गए, और जब वे अपने दास-गाँव के द्वार से प्रवेश कर रहे थे, तो उस दास-गाँव के निवासियों ने उनके व्यवहार और आकर्षक आचरण से उन्हें पहचान लिया। उनके दास उनके चरणों में गिरकर रोने लगे और उनसे कहने लगे, "हे स्वामी और स्वामिनी! आप हमें असहाय क्यों बना रहे हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "हमने अपने आप को त्याग दिया है क्योंकि हे मित्रों! हमने तीनों प्रकार के जन्मों को जलते हुए पत्तों के समान समझा; यदि हम तुम सबको एक-एक करके दासता से मुक्त करें, तो सौ वर्ष भी पर्याप्त नहीं होंगे; तुम स्वयं अपने सिर धोकर स्वतंत्र हो जाओ और अपना जीवन व्यतीत करो।" फिर वे वहाँ से विदा हो गए, जबकि उनके दास अभी भी रो रहे थे।

3-3.29. आगे बढ़ते हुए, थेरा ने पीछे मुड़कर देखा और विचार किया: "यह भद्दा कपिलानी, जो समस्त जंबू द्वीप की शोभा है, मेरे पीछे आ रही है; वास्तव में, यह विचार मन में उठता है: यदि कोई भी, चाहे कोई भी, ऐसा सोचे: 'ये व्यक्ति, भले ही संन्यासी हों, स्त्री के बिना स्वयं को सक्षम नहीं बना पाते, वे अनुचित कार्य कर रहे हैं'; इस प्रकार कोई भी बुरे कर्मों से मानसिक रूप से अपराध करने के बाद नरक का पात्र बन सकता है; मेरे लिए इसे छोड़कर चले जाना ही उचित है।" इस प्रकार मन में विचार आने पर, उसने आगे बढ़ते हुए एक दो-मार्ग देखा और चौराहे के शीर्ष पर खड़ा हो गया। भद्दा भी आई, उसने उसे प्रणाम किया और खड़ी हो गई। तब उसने उससे कहा:- "मेरी प्रिय! मेरे पीछे आप जैसी महिला को आते देख लोगों (या जनता) की बड़ी भीड़ मन ही मन नाराज़ हो सकती है और कह सकती है: 'ये लोग, एकांतवासी होने के बावजूद, एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते; ये तो नरक के पात्र बन जाएँगे; इन दो रास्तों में से आपको एक रास्ता चुनना चाहिए; मैं दूसरा रास्ता चुनूँगी।' उसने उत्तर दिया: 'जी! महाराज! स्त्री एकांतवासियों के लिए बाधा है;' वे हमारी कमी बताते हुए कहतीं, 'यद्यपि वे संन्यासी हैं, फिर भी वे स्त्रीविहीन नहीं होतीं', तीन बार परिक्रमा करतीं, पाँच प्रकार की स्थापनाओं (पंचपतिष्टिता) से चार स्थानों पर उनका आदर करतीं, अपने दस नाखूनों को आपस में जोड़कर तेजस्वी हाथों को ऊपर उठातीं और प्रणाम करतीं, "हमारी घनिष्ठ मित्रता, जो एक लाख विश्व-चक्रों (कप्पा) के बराबर समय तक चली आ रही थी, आज टूट जाती है; आप तो केवल दाहिना हाथ हैं; दाहिना मार्ग आपके लिए उपयुक्त है; हम, स्त्री, जन्म से ही बाएँ हाथ हैं; बायाँ मार्ग हमारे लिए उपयुक्त है", और अपनी यात्रा जारी रखतीं। जिस समय वे दोनों अलग-अलग यात्री बन गईं, उस समय यह विशाल पृथ्वी काँप उठी और ऐसा लगा मानो कह रही हो, "यद्यपि मैं ब्रह्मांड पर्वत (चक्कवला), सिनेरु पर्वत आदि जैसे पर्वतों का भार सहन कर सकती हूँ, फिर भी तुम्हारे गुणों का भार सहन नहीं कर सकती।" आकाश में बिजली जैसी ध्वनियाँ सुनाई दीं। ब्रह्मांड की पहाड़ी (cakkavaḷa-pabbata) से गूंजती हुई ध्वनि निकली।

3-3.30. सर्वज्ञ बुद्ध, जो वेलुवन के महान मठ के कक्ष में विराजमान थे, ने भी भूकंप की आवाज सुनी और यह जानने के लिए छानबीन की कि वास्तव में पृथ्वी क्यों कांपी, तो उन्होंने पाया और कहा: "लड़के पिपली और भद्दा कपिलाणी ने भी मुझे समर्पित करते हुए अपार समृद्धि का त्याग कर संसार का त्याग कर दिया था; उनके वियोग स्थल पर, दोनों के गुणों की प्रबलता के कारण, यह भूकंप आया था; इसलिए मेरा भी इन दोनों की सहायता करना उचित है।" इसके बाद, बुद्ध अपने सुगंधित कक्ष से बाहर निकले, अपना कुंड और वस्त्र स्वयं लेकर अस्सी प्रमुख थेरों को बिना बताए तीन गावूत की दूरी तय करके राजगृह और नालंदा के बीच स्थित बहुपुत्रों के वृक्ष निग्रोध के नीचे पालथी मारकर बैठ गए। बैठने के समय, वे किसी साधारण से वस्त्रधारी (पंगसुकूलिका) की तरह नहीं बैठे, बल्कि बुद्ध का रूप

धारण करके बैठे और बुद्ध की प्रकाशमयी किरणें अस्सी हाथ की दूरी तक फैल गईं। इस प्रकार, उस क्षण, पत्तों की छतरी, बैलगाड़ी के पहिए, शिखर वाले घर आदि के समान विशाल बुद्ध की प्रकाशमयी किरणें चारों ओर फैल गईं, इधर-उधर दौड़ती रहीं और उस जंगल में प्रकाश के एक विशाल पिंड में विलीन हो गईं, मानो हजार चंद्रमा और हजार सूर्य उदय हो रहे हों। जंगल का क्षेत्र उनके बत्तीस गुणों की महिमा से जगमगा उठा, जैसे आकाश अपने असंख्य चमकते तारों से जगमगाता है और जलक्षेत्र खिले हुए कमलों और जल लिली से मिलता-जुलता है। निग्रोध बरगद का तना स्वभाव से सफेद होता है; इसके पत्ते नीले-हरे होते हैं; पके फल लाल होते हैं। लेकिन उस दिन, पूरा निग्रोधा वृक्ष सुनहरे रंग का था।

3-3.31. थेरा महाकस्सपा (पिप्पली?) ने यह देखकर मन ही मन कहा, "यही हमारे गुरु होंगे; मैं इस गुरु को समर्पित होकर संसार का त्याग करता हूँ।" वे वहाँ से झुककर तीन स्थानों पर प्रणाम करते हुए बोले, "आदरणीय गुरु! प्रतापी मेरे गुरु हैं; मैं आपका शिष्य हूँ; आदरणीय गुरु! प्रतापी मेरे गुरु हैं; मैं आपका शिष्य हूँ।" तब प्रतापी ने उनसे कहा, "हे कस्सपा! (पिप्पली?) यदि तुम इस महान पृथ्वी को भी यह नम्रतापूर्वक प्रणाम करोगे, तो वह पृथ्वी भी इसे सहन नहीं कर पाएगी; तथागत के इस मार्ग में गुणों की महानता के ज्ञान के कारण तुमने जो नम्रतापूर्वक प्रणाम किया है, वह मेरे रोंगटे भी नहीं झटक सकती; हे कस्सपा! बैठ जाइए; मैं आपको उत्तराधिकार दूंगा।" तब भगवान ने तीन प्रकार की सलाह देकर उन्हें पूर्ण दीक्षा प्रदान की। इस प्रकार सलाह देने के बाद, भगवान बहुपुत्र निग्रोध वृक्ष के चरणों से निकलकर अपनी यात्रा पर चल पड़े और थेरा को अपना अनुयायी-सेवक-भिक्षु बना लिया। गुरु का शरीर एक महान व्यक्तित्व के बत्तीस लक्षणों से सुशोभित था; महाकस्सपा (पिप्पली) का शरीर एक महान व्यक्तित्व के सात लक्षणों से सुशोभित था। वह गुरु के पीछे-पीछे एक-एक कदम ऐसे चल रहे थे मानो किसी सोने की नाव से बंधे हों। गुरु ने थोड़ी दूर यात्रा करके सड़क से नीचे उतरकर एक वृक्ष के नीचे बैठने का संकेत दिया। थेरा को जब पता चला कि गुरु बैठना चाहते हैं, तो उन्होंने अपने फटे हुए कपड़े (पातापिलोतिका) के दोहरे वस्त्र को चार तहों में मोड़कर आसन तैयार किया।

3-3.32. गुरुजी वहाँ बैठ गए और अपने हाथों से वस्त्र को अच्छी तरह मलते हुए बोले, "हे कस्सपा! तुम्हारा यह दोहरा वस्त्र वास्तव में कोमल है।" कस्सपा समझ गया, "गुरुजी ने मेरे दोहरे वस्त्र की कोमलता की बात की है; अवश्य ही वे इसे पहनना चाहते हैं।" उसने गुरुजी से कहा, "आदरणीय गुरुजी! कृपया मेरा दोहरा वस्त्र पहन लें।" बुद्ध ने पूछा, "हे कस्सपा! (पिप्पली!) तुम ऊपरी वस्त्र के रूप में क्या पहनोगे?" कस्सपा ने उत्तर दिया, "आदरणीय गुरुजी! मैं आपका निचला वस्त्र पहनूँगा।" बुद्ध ने कहा: "हे कस्सपा! (पिप्पली!) भला तुम यह फटा-पुराना वस्त्र (पांशुकूल) कैसे पहन सकते हो, जो कि भिक्षुओं का पुराना वस्त्र है? सचमुच, जिस दिन मैंने यह फटा-पुराना वस्त्र पहना, उस दिन जल से घिरी पृथ्वी कांप उठी; तुच्छ व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह बुद्ध द्वारा पहने गए इस पुराने वस्त्र को पहने; यह वस्त्र तो केवल एक सच्चे फटे-पुराने वस्त्र (पांशुकूल) पहनने वाले के लिए ही उपयुक्त है, जो सिद्धि की उचित साधना करने में सक्षम हो।" इतना कहकर बुद्ध ने थेरा के साथ अपना वस्त्र बदल लिया।

3-3.33. इस प्रकार वस्त्रों का आदान-प्रदान करने के बाद, बुद्ध ने थेरा का वस्त्र धारण किया; थेरा ने गुरु का वस्त्र धारण किया। उसी क्षण, यद्यपि अनैच्छिक रूप से (अचेतना), यह विशाल पृथ्वी जल से घिरी हुई, मानो कह रही हो: "आदरणीय गुरुदेव! आपने बड़ा कठिन कार्य किया है! इससे पहले कभी ऐसा अवसर नहीं आया जब बुद्ध ने अपना, जिसे वे धारण करते थे, किसी शिष्य के वस्त्र से बदला हो; मैं आपके गुणों का भार सहन करने में असमर्थ हूँ।" थेरा ने भी मन ही मन कहा: "बुद्ध द्वारा धारण किया गया वस्त्र मुझे प्राप्त हो गया है; अब मुझे इसके अतिरिक्त क्या करना है?", उन्होंने स्वयं को उच्च पद पर नहीं बिठाया, तेरह कठोर साधनाओं (धूत) का पालन किया और केवल सात दिनों के लिए ही पुथुज्जन (साधारण भिक्षु) रहे। आठवें दिन, उन्होंने विश्लेषणात्मक ज्ञान के साथ अरहंत पद प्राप्त किया। तब गुरु ने उनकी प्रशंसा करते हुए कहा: "हे भिक्षुओं! कस्सपा परिवारों के पास चंद्रमा के समान जाते हैं; वे शरीर से तो छोटे हैं, पर मन से अलग हैं, वे परिवारों में दखल नहीं देते"; और इसी प्रकार आगे, श्रेष्ठ भिक्षुओं (आर्य) के समूह के बीच में बैठकर, बुद्ध ने उन्हें तपस्या के मार्ग पर चलने वाले भिक्षुओं में सर्वोच्च स्थान देते हुए कहा: "हे भिक्षुओं! मेरे उन भिक्षुओं में जो कठोर साधना (धूत) में लीन हैं, यह महान कस्सपा प्रमुख हैं।"

398. पूज्य महाकस्सपा को जब भगवान ने सर्वोच्च पद प्रदान किया, तो वे उनके प्रमुख शिष्यों में से एक बन गए। अपने पूर्व कर्मों को याद करते हुए उन्होंने "पदमुत्तरस्स भगवतो" श्लोक का उच्चारण किया, ताकि वे मन में प्रसन्न होकर अपने पूर्व कर्मों को प्रकट कर सकें। वहाँ, पद्ममुत्तरस्स (पदमुत्तरा) के बारे में कहा गया है कि जब भगवान अपनी माता के गर्भ से निकले और अपने चरण पटके, तब से उनके हर कदम पर पृथ्वी फटकर एक लाख पंखुड़ियों वाले कमल उग आए। अतः उनका यह नाम पड़ा। जब समस्त प्राणियों में से प्रत्येक ने एक सौ-सौ अच्छे कर्म किए, तो भगवान के सौ गुना अच्छे कर्म करने के कारण उनका यह नाम पड़ा। लोकजेत्थस्स तादिनो, जगत के ऐसे ही सबसे बड़े, उन्हें तादिनो, ऐसे ही के नाम से जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने इच्छा और अनचाही चीजों से विचलित न होने की अवस्था प्राप्त कर ली थी, और जीव जगत के प्रमुख को अर्पित किया था। निब्बूते लोकनाथंहि, जब जगत के संरक्षक ने निर्वाण प्राप्त

कर लिया, जब जीव जगत के उचित आश्रय बन चुके महिमावान, अपने सभी स्कंधों (समूहों) के पूर्ण रूप से समाप्त होने से निर्वाण में विलीन हो गए; और अदृश्य हो गए; यही अर्थ है; पूजां कुब्बन्ति सत्तुनो (गुरु को अर्पण किया), उन्होंने सम्मान के अर्पण किए, महिमावान के लिए पवित्र उत्सव को बढ़ावा दिया, जिन्होंने इस मानव जगत के साथ-साथ दिव्य जगत को भी अपने उपदेशों के कारण "सत्था, गुरु" नाम प्राप्त किया; यही संबंध है।

399. अग्गिम चिनन्ति जनता (लोगों का समूह आग इकट्ठा करता है) दाह संस्कार के लिए आग इकट्ठा करने के लिए लोगों की भीड़ ने चारों ओर से ढेर बनाए, वे प्रसन्न, संतुष्ट और आनंदित हुए, कई लोग प्रसन्न हुए और सम्मान की भेंट चढ़ाई; इस प्रकार संबंध है। तेसु सांग्वेग झतेसु, जब वे पश्चाताप से भर गए, जब लोगों के उन समूहों ने पश्चाताप किया और भय उत्पन्न हुआ; मे, मेरा; पीति (आनंद) उत्साह या हंसी; उदा पज्जथा (उत्पन्न हुआ) प्रकट हुआ; इस प्रकार अर्थ है।

400. Ñātimitte samānetvā (रिश्तेदारों और मित्रों को उचित रूप से एकत्रित करना) मैंने स्वयं, अपने रिश्तेदारों और साथियों को एकत्रित करके एक समूह बनाया; Mahavīro (महान नायक) महिमावान, paninibbuto. (पूर्णतः निर्वाण में विलीन हो गए) अदृश्य हो गए; abravim (मैंने बोला) मैंने बताया; इस प्रकार, संबंध है। Handa pūjam karomase, आओ! हम भेंट चढ़ाएँ, Handa एक अविकारी कृदंत है, जिसका अर्थ है त्याग (या दान के रूप में सौंपना); इस प्रकार, हम सब एकत्रित हुए और आदर की भेंट चढ़ाई; इस प्रकार, अर्थ है; यह एक अविकारी कृदंत है

401. साधु ति ते पटिससुत्वा (उन्होंने बहुत अच्छा उत्तर दिया!) उन्होंने मेरे रिश्तेदारों और दोस्तों को बदले में सुनाया, जैसे साधु (बहुत अच्छा) उत्कृष्ट और अच्छा, मेरी बात को ठीक से स्वीकार किया; मी (मेरा) मेरा; भिय्यो, एक से अधिक; हासम (हंसना) आनंद या उत्साह; जानिमसु (उत्पन्न) उत्पन्न किया; इस प्रकार, अर्थ है।

402. इसके बाद, अपने द्वारा किए गए पुण्य कर्मों के संचय को दर्शाने के लिए, उन्होंने यह श्लोक कहा, जिसकी शुरुआत "बुद्धस्मिं लोकनाथंहि" से होती है। "उग्गतम (ऊपर जाने वाला) सौ हाथ (या हाथ) ऊँचा और एक सौ पचास हाथ (या हाथ) चौड़ा; विमानं नभसि (आकाश में महल) जो आकाश में ऊपर गया और जो योग्य था; सुकटम् (सुगठित) अच्छे गुणों से बना; कत्वा (किया हुआ) बनाया भी; पुण्य संचयम् (पुण्य का संचय) अच्छे कर्मों का ढेर; कहासिम (मैंने बनाया) मैंने किया था; इस प्रकार, संबंध है।"

403. उस मंदिर में अर्पण करते हुए (वहाँ योग्य व्यक्ति को अर्पित करके); ताड़ के पेड़ों की कतारों से युक्त; चित्तितम (विविध रंगों वाला) रमणीय और योग्य बनाया; कट्वान (बनाया) भी किया; सकम चित्तम (अपना मन) अपने मन को सुखद रूप से पवित्र बनाकर; चेतियम पूजयुत्तमम (मंदिर को दी जाने वाली सर्वश्रेष्ठ भेंट) मैंने उस मंदिर को अर्पित की जहाँ बुद्ध के उत्कृष्ट अवशेष विराजमान थे; इस प्रकार, संबंध है।

404. उस तीर्थस्थल की महानता (महिमा) दर्शाने के लिए उन्होंने अग्गिक्खन्धो वा से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा। वहाँ, अग्गिक्खन्धो वा (अग्नि के ढेर की तरह) आकाश में अग्नि के ढेर की तरह चमक रहा था, अग्नि-चिट्टा के समान, वह तीर्थस्थल सात प्रकार के रत्नों से जगमगा रहा था; फूल से खिले हुए साल के वृक्ष-राजा के समान फूल (फूलों से खिल रहा था); इंद्र के धनुष के समान इंद्र के डंडे की तरह; चारों दिशाओं में चतुद्दिसा (चारों दिशाओं में); अभासति (प्रकाशित कर रहा था) वह चमक रहा था; इस प्रकार, संबंध है।

405. तत्थ चित्तं पसादेत्वा (मन को प्रसन्नतापूर्वक पवित्र बनाते हुए) उस तेजस्वी अवशेष-कक्ष में मन को प्रसन्नतापूर्वक पवित्र बनाकर, मैंने मन को प्रसन्न किया और उस प्रसन्नतापूर्वक पवित्र मन से; बहुं (बहुत) अनेक प्रकार के; कुसलं (पुण्य) अच्छे कर्म; कट्वाना (करने के बाद) "अवशेष-कक्ष में और बुद्ध के उपदेश में, मैंने इतने अच्छे कर्म किए हैं", इस प्रकार, सरित्वाना (स्मरण करने के बाद) इस प्रकार, अपने अच्छे कर्मों को इस प्रकार याद करके, तैंतीस (तैंतीस) की मृत्यु हुई और उपपज्जिम, मैं तावतिंस महल में पुनर्जन्म लिया, मानो नींद से जागा हो; इस प्रकार, संबंध है।

406. अपने जन्मस्थान, दिव्य लोक में प्राप्त समृद्धि को दर्शाने के लिए उन्होंने सहस्स युत्त से शुरू होने वाले इस श्लोक का पाठ किया। वहाँ, हजार सिंधी घोड़ों से जुता हुआ दिव्य रथ (हयवाहिम) खड़ा था; मेरा भवनम (निवास) सात मंजिला ऊँचा था; यही इसका अर्थ है।

407. उस महल में, अहुम (वहाँ) सबसोवञ्ञमय (पूरी तरह से सोने से निर्मित) एक हजार शिखर वाली छत वाली संरचनाएँ थीं, जो पूरी तरह से सोने से बनी थीं; यही अर्थ है। सकतेजेना (अपनी शक्ति से) अपने प्रभाव से, सभी दस दिशाएँ प्रकाश उत्पन्न करती हुई जलन्ति (जलती हुई) तेज चमक उठीं; यही संबंध है।

408. उस महल में जो मुझे प्रकट हुआ, वहाँ सन्ती (थे); निय्युहा (बुर्ज) और अन्य अलंकृत कक्ष थे। क्या हुआ? उस समय माणिक्य से निर्मित लोहितंगमय (लाल रत्न से निर्मित), वे बुर्ज (या शिखर) भी, आभय (प्रकाश से) चारों दिशाओं में प्रकाश की किरणों से जगमगा रहे थे; इस प्रकार, संबंध है।

410. सब्बे देवे (सभी देवता) छहों लोकों में विराजमान सभी दिव्य प्राणियों को मैंने अभिभूत कर दिया। यदि पूछा जाए कि यह किसका फल है? तो यही मेरे द्वारा किए गए पुण्य कर्म का परिणाम है; यही इसका अर्थ है।
411. इसके बाद, मानव समृद्धि को दर्शाने के लिए, उन्होंने साठिकप्पसहस्सानी से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा: वहाँ, इस विश्व-चक्र (कप्पा) से नीचे, साठ हजार विश्व-चक्र (कप्पा) आगे, चतुरंतो (चारों छोरों पर समाप्त) चार महान द्वीपों से मिलकर बना था; विजयावी (विजय प्राप्त करके) सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके, मैं विश्व-राजा बनकर उब्बिदा नाम से जाना गया; पथविम आवासिम (पृथ्वी पर शासन किया) संप्रभुता का प्रदर्शन किया, प्रभुत्व स्थापित किया; इस प्रकार, संबंध है।
412-4. तथाएव भद्दके कप्पे उसी उत्तम (भद्द) लोक (कप्पा) में, भद्दक नामक कप्पा में, पाँच बुद्धों से सुशोभित; तिमसाक्खत्तुम (तीस बार) तीस जन्मों तक मैं चारों द्वीपों का प्रमुख शासक था, सात प्रकार के रत्नों से परिपूर्ण, जैसे: चक्र-रत्न इत्यादि; सककम्माभिरद्धो (अपना काम शुरू करके) अपने दस राजधर्मों (राजधम्म) के प्रति निष्ठापूर्वक समर्पित होकर, अम्ही, मैं विश्वराज बन गया; इस प्रकार, संबंध है। विश्वराज रहते हुए अपने द्वारा प्राप्त गौरवशाली समृद्धि को दर्शाने के लिए, उन्होंने इस श्लोक का उच्चारण किया, जिसकी शुरुआत इस प्रकार है: "तत्था पि भवनम्मयम्", इत्यादि। तथा (वहाँ) उस विश्वराज के राज्य में; मयम् भवनम् (मेरा निवास) मेरा महल; indalaṭṭhi va uggatam (इन्द के धनुष के समान ऊपर उठा) आकाश में ऊपर उठा, बिजली की लताओं के समान चमकता हुआ, सात मंजिलों जितनी ऊँचाई का था; āyāmato (लंबाई से) लंबाई और ऊँचाई दोनों में चौबीस योजन और चौड़ाई में बारह योजन था; यही इसका संबंध है। नगर का नाम राममाना था, क्योंकि सभी लोगों का मन इससे जुड़ा हुआ था; यही इसका अर्थ है; नगर की दीवारें और द्वार मजबूत थे और बारह हाथ (या क्यूबिट) या तीस हाथ (या क्यूबिट) ऊँचे थे; इस प्रकार उन्होंने दर्शाया।
415.20. तदाद्धकम (वह आधा) वहाँ से आधा, अर्थात् एक हजार दो सौ पचास योजन; यही अर्थ है। पद्दित्ता पण्णवीसति (बीस बाजार बिखरे हुए थे) बीस खुली हुई दुकानें लगातार गली की सीमा बनाती थीं; यही अर्थ है। ब्राह्मण कुलसंभूतो (ब्राह्मण परिवार के योग्य) ब्राह्मण परिवार में जन्मा; शेष बातें ऊपर बताए गए तरीके से (या पहले ही कहे गए तरीके से) आसानी से समझ में आ जानी चाहिए।
थेरा महाकस्सपा की जीवनी पर की गई टीका समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.1 >> 4. थेरा अनुरुद्ध

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

4. अनुरुद्ध

मैंने विश्व-प्रमुख, धन्य सुमेधा, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के बैल, के दर्शन किए, जब वे एकांत में निवास कर रहे थे।264 (1) (423)
अतः मैं उस संबुद्ध, सुमेधा, विश्व के प्रमुख के पास पहुँचा और हाथ जोड़कर मैंने (उनसे) कहा, हे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध: (2) (424)
“आपकी अनुमति से,265 महान नायक, हे विश्व के सर्वश्रेष्ठ पुरुष, हे पुरुषों के सांड, मैं उस वृक्ष के नीचे ध्यान करते समय आपके लिए एक दीपक जलाऊंगा।” (3) (425)
उस ज्ञानी ने अपनी सहमति का संकेत दिया266 स्वयंभू, सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता।267 फिर मैंने कुछ पेड़ों (वहाँ तनों) को छेदकर एक तंत्र तैयार किया। (4) (426)
मैंने विश्व के सगे-संबंधी बुद्ध के लिए एक हजार बत्तियाँ जलाईं। मैंने उन्हें एक सप्ताह तक जलाए रखा (और फिर) वे दीपक बुझ गए। (5) (427)

मेरे हृदय में मौजूद आनंद और उस इरादे एवं संकल्प के कारण, अपने मानव शरीर का त्याग करके मैं एक दिव्य महल में जन्म लेता हूँ। (6) (428)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 264 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 265 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

266 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 267 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

वहाँ एक स्तंभ था, जो उस दिव्य अवस्था में जन्मे मेरे लिए सुगठित था। वह चारों ओर से प्रकाशमान था (तब): यही दीपक जलाने का फल है। (7) (429)

उस समय मैं (स्वयं) चारों ओर एक पूरे मील तक प्रकाशमान रहा। मैं सभी (अन्य) देवताओं से श्रेष्ठ था: यही दीपक देने का फल है। (8) (430)

हे देवताओं के राजा, मैंने तीस युगों तक दिव्य शासन किया। किसी ने भी मेरी उपेक्षा नहीं की: यही दीपक देने का फल है। (9) (431)

और अट्ठाईस बार मैं एक पहिया घुमाने वाला सम्राट था। दिन और रात दोनों समय मैं अपने चारों ओर एक पूरी लीग देख सकता था। (10) (432)

हजार लोकों के ज्ञान से, मैं व्यवस्था में देखता हूँ।268 "दिव्य दृष्टि" (अब) प्राप्त हो गई है: यही दीपक देने का फल है। (11) (433)

उस सम्बुद्ध, सुमेधा, का निवास तीस हजार युग पहले था। मैंने उसे एक अत्यंत निर्मल मन से दीपक भेंट किया था। (12) (434)

मेरे सारे दोष (अब) जलकर राख हो गए हैं; समस्त (नया) अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह, मैं बंधनमुक्त होकर जी रहा हूँ। (435)

मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था। तीनों ज्ञान प्राप्त हो गए हैं; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (436)

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) (437)

इस प्रकार पूज्य अनुराधा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

---

268 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

अनुरुद्ध थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

3-4. थेरा अनुरुद्ध की जीवनी पर टीका

3-4.1. सुमेधम भगवंताहम से शुरू होने वाले श्लोक थेरा अनुशुद्ध की जीवनी का वर्णन करते हैं। इस अनुशुद्ध ने भी पूर्व बुद्धों की उपस्थिति में भक्तिपूर्वक सेवा की और पुण्य संचय किया, जिससे उन्हें इस और उस जन्म के चक्र से मुक्ति मिली। वे पद्ममुत्तरा के समय में एक समृद्ध गृहस्थ परिवार में पुनर्जन्म लेकर वयस्क हुए। वयस्क होने पर वे एक दिन मठ गए और गुरु की उपस्थिति में धर्म उपदेश सुनते हुए उन्होंने देखा कि गुरु ने एक भिक्षु को दिव्य दृष्टि वाले भिक्षुओं में सर्वोच्च स्थान दिया है। उन्होंने भी उस पद की आकांक्षा की और सात दिनों तक गुरु और उनके एक लाख भिक्षुओं के समूह को दान दिया। सातवें दिन उन्होंने गुरु और भिक्षुओं के समूह को उत्तम

वस्त्र भेंट किए और अपना संकल्प लिया। गुरु ने भी उनकी सिद्धि की निरंतर स्थिति को देखकर भविष्यवाणी की: "भविष्य में, सर्वज्ञ बुद्ध गौतम के युग में, वे दिव्य दृष्टि प्राप्त करने वालों में प्रमुख होंगे।" उन्होंने वहाँ पुण्य कर्म किए और गुरु के निधन पर, उनके सम्मान में, सात योजन ऊँचे ठोस स्वर्ण मंदिर में जलते हुए दीपों के वृक्षों, जलते हुए दीपों की पंक्तियों और अनेक ताम्रपात्रों से एक विशाल दीप प्रज्ज्वलन अर्पित किया और प्रार्थना की: "यह मुझे दिव्य दृष्टि प्राप्त करने में सहायक हो।" जीवन भर पुण्य कर्म करते हुए, देवताओं और मनुष्यों के बीच बार-बार जन्म लेते हुए, वे प्रतापी कस्सपा के समय बनारस में एक जमींदार के घर में पुनर्जन्म लेकर परिपक्व हुए। जब गुरु का पूर्ण निर्वाण संपन्न हो गया, तो उन्होंने उनके मंदिर के चारों ओर कई ताम्रपात्रों को शुद्ध घी से भरकर, प्रत्येक के मध्य में गुड़ का एक टुकड़ा रख दिया। इसके अलावा, उन्होंने एक योजन ऊँचे स्वर्णमय मंदिर पर, गोल मुखों वाले बर्तनों के ऊपरी हिस्से को किनारे तक छूकर, स्वयं द्वारा लिए गए पीतल के कटोरे को शुद्ध घी से भर दिया, उसमें एक हजार बत्तियाँ जलाईं, उसे अपने सिर पर रखा और पूरी रात लगातार मंदिर के चारों ओर चक्कर लगाते रहे।

3-4.2. इस प्रकार, उस जन्म में भी, अच्छे कर्म करने के कारण, उनका जन्म दिव्य लोक में हुआ; वे वहाँ अपने जीवनकाल तक रहे और वहाँ से मृत्यु के बाद, बुद्ध के प्रकट होने से पहले ही, बनारस के एक गरीब परिवार में उनका पुनर्जन्म हुआ। वे "अन्नभार, यानी भोजन लाने वाले" के नाम से जाने जाते थे। उन्होंने अपना जीवन सुमन नामक धनाढ्य के घर में घरेलू कार्य करते हुए व्यतीत किया। एक दिन, उन्होंने उपरित्त नामक मौन बुद्ध को देखा, जो निरोध-समापत्ति से उठकर गंधमादन पर्वत से आकाश में आए, बनारस के नगर द्वार पर उतरे, अपना वस्त्र धारण किया और भिक्षा मांगने के लिए भटकते हुए अत्यंत श्रद्धा से भर गए, भिक्षापात्र को ग्रहण किया, जिसमें उन्होंने अपने लिए रखा हुआ भोजन डाल दिया और मौन बुद्ध को दान देने की इच्छा करने लगे। उनकी पत्नी ने भी उसी प्रकार कटोरे में अपना भोजन डाला। उन्होंने भरा हुआ कटोरा उठाया और उसे मौन बुद्ध के हाथ में रख दिया। मौन बुद्ध ने कटोरा ग्रहण किया, धन्यवाद किया और चले गए। उस दिन, धनाढ्य सुमना के छत्र में निवास करने वाले देवता ने ऊँची आवाज़ में बधाई देते हुए कहा, "यह उत्कृष्ट दान कितना अद्भुत है!" यह बधाई सुनकर धनाढ्य सुमना ने मन ही मन सोचा, "यही एकमात्र ऐसा दान है, जिसे देवता ने इस प्रकार बधाई दी है, जो सबसे उत्तम दान है," और उन्होंने दान का हिस्सा माँगा। अन्नभार ने अपना दान दिया। प्रसन्न और पुण्य भाव से धनाढ्य सुमना ने उन्हें एक हजार रुपये दिए और कहा, "अब से अपने हाथों से कोई शारीरिक श्रम न करो; एक उपयुक्त घर बनाओ और उसमें सदा के लिए निवास करो।"

3-4.3. निरोध समाधि से उठे मौन बुद्ध को भिक्षा देने के कारण उसी दिन अत्यंत फलदायी हुआ। अतः धनाढ्य सुमन राजा के समक्ष दाता को साथ लेकर गया। राजा ने दाता को आदरपूर्वक देखा। धनाढ्य ने कहा, “हे महाराज! यह तो सम्मान के योग्य है।” फिर उसने दाता के द्वारा किए गए कार्य और स्वयं दाता को एक हजार रुपये दान देने की बात बताई। यह सुनकर राजा उससे प्रसन्न हुआ, उसे एक हजार रुपये दिए और उसके निवास स्थान के विषय में आदेश दिया, “ऐसी जगह पर घर बनाओ और निवास करो।” जब वह निवास स्थान को साफ कर रहा था, तभी सोने के बड़े-बड़े घड़े प्रकट हुए। उन घड़ों को देखकर उसने राजा को सूचित किया। राजा ने सारा दबा हुआ धन खुदवाया, ढेर देखकर पूछा, "इस नगर में किसके घर में इतना धन है?" उत्तर मिला, "महाराज! किसी के घर में नहीं।" उसी दिन राजा ने उनके लिए धनाढ्य का छाता उठाते हुए कहा, "तो फिर! इस नगर में इस अन्नभार को महाधनसेठी के नाम से जाना जाए।"

3-4.4. एक बैंकर बनकर उन्होंने जीवन भर अच्छे कर्म किए और स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लिया। लंबे समय तक उन्होंने देवताओं और मनुष्यों के बीच बार-बार जन्म लिए और अंत में कपिलवस्तु नगर में शाक्य सुद्धोदन के घर में हमारे प्रतापी बुद्ध के प्रकट होने के समय गर्भ धारण किया। जन्म के समय उनका नाम अनुरुद्ध रखा गया। वे शाक्य महानाम के सबसे छोटे भाई थे, जो प्रतापी बुद्ध के चाचा के पुत्र थे; वे अत्यंत कोमल और गुणी थे। उनका भोजन केवल सोने के पात्र में ही प्रकट होता था। तब एक दिन उनकी माता ने सोचा, "मेरा पुत्र 'कुछ नहीं है' जैसी अभिव्यक्ति नहीं जानता; मैं उसे बता दूँगी," और फिर उसे एक खाली सोने का पात्र दूसरे सोने के पात्र से ढककर भेज दिया। इस बीच, देवताओं ने उस खाली पात्र को दिव्य भोज से भर दिया। इस प्रकार, पुण्य के महान स्वामी ने तीनों ऋतुओं में एक देवता के समान, तीन महलों में सुशोभित अप्सराओं से घिरे हुए, वैभवशाली समृद्धि का आनंद लिया।

3-4.5. उस अवसर पर हमारे बोधिसत्व भी तुषिता नामक स्वर्ग नगर से विदा होकर महान राजा सुद्धोदन की मुख्य रानी के गर्भ में पुनर्जन्म लेकर धीरे-धीरे बड़े हुए और वयस्क हुए, उनतीस वर्षों तक गृहस्थी में जीवन व्यतीत किया, महान वैराग्य किया, उचित समय पर सर्वज्ञ ज्ञान को ठीक से प्राप्त किया, बोधि वृक्ष की छत पर सात बार सात दिन बिताए, इसिपताना के हिरण पार्क में धम्म चक्र चलाया, राजगृह गए, संसार की रक्षा की और वेलुवन के बाँस वन में निवास किया। उस समय महान राजा सुद्धोदन ने मन ही मन कहा, "लोग कहते हैं कि मेरा पुत्र राजगृह आ गया है; हे मेरे मंत्रियों! तुम सब जाओ और मेरे पुत्र को ले आओ!" और फिर उन्होंने एक-एक करके दस मंत्रियों को एक-एक हजार सैनिकों के साथ भेजा। वे सब 'आओ! भिक्षु!' दीक्षा के द्वारा भिक्षु बन गए। जब थेरा उदयी ने बुद्ध के भ्रमण पर जाने के लिए उन मंत्रियों में से एक से अनुरोध किया, तो बुद्ध बीस हजार अरहंतों से घिरे राजगृह से निकलकर कपिलवस्तु

नगर गए, रिश्तेदारों के मिलन पर अनेक चमत्कार दिखाए, चमत्कारों से परिपूर्ण सत्य (धर्म) का उपदेश दिया, लोगों की विशाल भीड़ को अमरता का पेय पिलाया, दूसरे दिन अपना पान और वस्त्र लेकर नगर द्वार पर खड़े रहे और यह विचार करते हुए कि "अपने कुल-गृह नगर में आने वाले सभी बुद्धों की नियमित प्रथा क्या है?", उन्हें यह निष्कर्ष निकला कि उनकी प्रथा यह थी कि वे वह भिक्षा मांगने के लिए लगातार (सपदान) घर-घर गए और घर-घर घूमते रहे। राजा ने सुना कि उनका पुत्र भिक्षा मांगने के लिए घूम रहा है, तो वे शीघ्रता से आए, गलियों में ही सत्य (धम्म) सुना, बुद्ध से अपने महल में प्रवेश करने का अनुरोध किया और उन्हें बड़ा आदर और भेंट अर्पित की। बुद्ध ने अपने सगे-संबंधियों के लिए उचित उपकार करने के बाद, युवा राजकुमार राहुल को दीक्षा दी और कुछ समय बाद कपिलवत्थु नगर से मल्ल राज्य की ओर अपनी यात्रा पर निकल पड़े और अनुपिया वन पहुंचे।

3-4.6. उस अवसर पर महान राजा सुद्धोदन ने शाक्यों संघ को एकत्रित किया और कहा: "यदि मेरा पुत्र गृहस्थ जीवन व्यतीत करता, तो वह सात रत्नों से संपन्न विश्वराज होता, शाक्यों संघ के अनुयायियों से घिरा होता; मेरा पोता, राजकुमार राहुल भी, शाक्यों संघ के साथ अपने पिता के चारों ओर विचरण करता; आप सब भी इस विषय से अवगत हैं; परन्तु अब, चूंकि मेरा पुत्र बुद्ध बन गया है, इसलिए उसके अनुयायी केवल और केवल क्षत्रिय वंश के हों; आप सब अपने-अपने परिवारों से एक-एक बालक उसे दें।" उनके ऐसा कहते ही, एक ही क्षण में क्षत्रिय वंश के बयासी हजार युवकों ने संसार त्याग दिया; वे भिक्षु बन गए।

3-4.7. उस अवसर पर, कुल के स्वामी महानाम ने शाक्य पुरुष अनुरुद्ध के पास जाकर कहा: "प्रिय अनुरुद्ध! इस समय, सुप्रसिद्ध और प्रतिष्ठित शाक्य युवक भगवान बुद्ध के संन्यास का अनुसरण करते हुए भिक्षु बन गए हैं; परन्तु हमारे परिवार में ऐसा कोई नहीं है जिसने गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यास लिया हो; तो फिर, या तो तुम भिक्षु बन जाओ या मैं बन जाऊँगा।" यह सुनकर अनुरुद्ध गृहस्थ जीवन से प्रसन्न नहीं हुए, गृहस्थ जीवन छोड़कर संन्यास ले लिया और स्वयं सातवें भिक्षु बने। उनके भिक्षु बनने का यह क्रम संघभेद (भिक्षु संगठन के विघटन) पर मुख्य खंड में ही आता है। इस प्रकार अनुपिया के पास जाकर, जब वे भिक्षु बन चुके थे, उसी वर्षा ऋतु में, थेरा भद्दिया ने अरहंत पद प्राप्त किया; थेरा अनुरुद्ध ने अपने भीतर दिव्य दृष्टि का विकास किया; देवदत्त ने प्रभावी ध्यान (समापत्ति) की आठ आत्म-प्राप्तियाँ प्राप्त कीं; थेरा आनंद ने सोतापत्ति के प्रथम चरण की सिद्धि प्राप्त की; थेरा भगु और थेरा किमिला ने बाद में अरहंत पद प्राप्त किया। उन सभी थेरों की अपने-अपने लिए प्राप्त पदों के लिए पूर्व इच्छा और आकांक्षा भी प्रकट होगी। इस थेरा अनुरुद्ध ने धर्म के सेनापति की उपस्थिति में अपने मानसिक अभ्यास (कम्मत्थान) के लिए मार्गदर्शन लिया, चित्तीय राज्य के पूर्वी बाँस वन में गए, और वहाँ अपने भिक्षु कर्तव्यों का पालन करते हुए, एक महान व्यक्ति के आठवें आरंभ पर चिंतन का एक दृढ़ तरीका अपनाया; वे आठवें चरण में थक गए। गुरु को इस प्रकार पता चला: "अनुरुद्ध एक महान व्यक्ति (महापुरिसवितक्क) के आठवें आरंभ पर थक गए हैं।" मैं उसकी मंशा पूरी करूँगा"; वहाँ गए, उनके लिए तैयार किए गए उत्तम बुद्ध-आसन पर बैठ गए, एक महान व्यक्ति के आठवें आरंभ को पूरा किया, पीढ़ियों के उच्च कुलीन वंश (अरियवांसा) के उचित अभ्यास का उपदेश दिया, आकाश में उठे और सेम के बाग, भेषकालवन, में चले गए।

3-4.8. तथागत के जाते ही, थेरा तीन प्रकार के ज्ञान (विज्जा) से संपन्न एक महान रोगरहित अरहंत बन गए और उन्होंने मन ही मन कहा, "गुरु ने मेरे मन को जान लिया और मेरे पास आकर, उन्होंने मुझे एक महान पुरुष के आठवें आरंभ को पूर्ण करके, मेरी वह इच्छित वस्तु भी अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच गई है।" उन्होंने बुद्ध के धर्म उपदेश और स्वयं के धर्म के गहन ज्ञान के संदर्भ में इन गंभीर कथनों का उच्चारण किया।

"संसार में अद्वितीय गुरु ने मेरी मनोकामना जानकर, जादुई शक्ति से अपने मन से निर्मित शरीर के साथ मेरे पास आए। जब भी मेरी मनोकामना (संकल्प) हुई, उन्होंने मुझे उपदेश दिया। बाधाओं के अभाव में प्रसन्न रहने वाले बुद्ध ने मुझे बाधाओं से मुक्त होने का उपदेश दिया। उनके धर्म को समझकर, मैं उस व्यवस्था (शासन) में प्रसन्नतापूर्वक निवास करने लगा। तदनुसार, मैंने तीन प्रकार के ज्ञान (विज्जा) को प्राप्त किया और बुद्ध के निर्देशों का पालन किया।"

3-4.9. इसके बाद महान जेतवन मठ में निवास करते हुए गुरु ने उन्हें सर्वोच्च स्थान पर इस प्रकार रखा: "अनुरुद्ध उन भिक्षुओं में प्रमुख हैं जिनके पास दिव्य दृष्टि है"।

421. इस प्रकार, दिव्य नेत्रों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके, प्रतापी की उपस्थिति से, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद करते हुए प्रसन्नता के रूप में सुमेधं भगवंताहम से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया। वहाँ, वह प्रतापी, जिन्हें मेधा ज्ञान प्राप्त है, जो भक्ति सेवा के उत्कृष्ट ज्ञान, उचित मार्ग और फलों के ज्ञान, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) के ज्ञान, चार प्रकार के विश्लेषणात्मक ज्ञान आदि से परिपूर्ण माने जाते हैं, वे सुमेध हैं; वह सुमेध अपनी महिमामयी शक्ति के कारण भगवंता हैं; और वे जेष्ठ (वृद्ध), जगत में श्रेष्ठ और प्रधान हैं, जो सबसे पहले पुनर्जन्म के चक्रों से बाहर निकले, जो मनुष्यों में श्रेष्ठ थे और जिन्हें पूर्व अभ्यास का श्रेय प्राप्त था; vūpakaṭṭham

(अकेले खड़े रहे) एकांत में चले गए, मैंने उन्हें भीड़ के साथ संगति के आश्रम (आराम) से बाहर निकलकर रहते हुए देखा; इस प्रकार, संबंध है।

422. सम्बुद्धम् (सर्वज्ञ बुद्ध), स्वयं प्रबुद्ध होकर बुद्ध बने, समस्त सत्यों (धम्म) के ज्ञाता, स्वयं ही; उपगन्त्वाण (निकट आना), निकट आना; यही अर्थ है। अंजलिम् पग्घेत्वाना (हाथ जोड़कर) दस उंगलियों को जोड़कर एक खोखला पात्र बनाकर उसे अपने सिर पर रखना; यही अर्थ है। शेष स्पष्ट है।

430. दिवारत्तिच पासामि (मैं दिन और रात देखता हूँ) उस समय, जब मैं दिव्य जगत और मानव जगत में उत्पन्न हुआ, मैं अपनी मांस-आँखों (या सामान्य आँखों) से चारों ओर एक योजन देख सकता था; यही अर्थ है।

431. सहस्सलकम नाणेन (ज्ञान से हजार जगत) - मैं अपने ज्ञान की दृष्टि से हजार जगतों (चक्कवला) को देख सका; यही इसका अर्थ है। सत्तु सासाने (गुरु के मार्गदर्शन में) - अब, प्रतापी गौतम के मार्गदर्शन में। दीपदानस (दीपक दान का) - यह फल प्रज्वलित दीपों के सम्मान में किए गए अर्पण का परिणाम है; इस फलदायी परिणाम से, दिव्य दृष्टि के उचित लाभ, परिणामी उपलब्धियों को बढ़ावा मिला है; यही इसका अर्थ है।

थेरा अनुरुद्ध की जीवनी पर की गई टीका समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.1 >> 5. थेरा पुण्ण

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

5. पुन्ण-मन्तानीपुत्त

मैं एक विद्वान मंत्र-ज्ञानी था जिसने तीनों वेदों में महारत हासिल कर ली थी। अपने छात्रों के समूह का नेतृत्व करते हुए मैं उनके पास पहुँचा, जो पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ थे। (1) (438)

पद्ममुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, यज्ञ प्राप्तकर्ता, महान ऋषि ने तब मुझे 269 कर्म, व्याख्या सहित घोषित किया। (2) (439)

उपदेश सुनने के बाद, (और) शिक्षक की पूजा करने के बाद मैंने अपने हाथ जोड़कर ऊपर उठाए (फिर) दक्षिण की ओर मुख करके चला गया। (3) (440)

स्पष्टीकरण सुनने के बाद मैंने और विस्तार से उपदेश दिया। सभी छात्र मेरे शब्दों को सुनकर प्रसन्न हुए। (4) (441)

अपनी स्वयं की विचारधारा को त्यागकर मेरा हृदय बुद्ध में प्रसन्न हुआ। फिर मैंने व्याख्या और आगे विस्तार के साथ उपदेश दिया। (5) (442)

अभिधम्म का ज्ञाता, कथावत्थु के बारे में स्पष्ट, सभी को उपदेश देने वाला, मैं दोष रहित जीवन जी रहा हूँ। (6) (443)

उसके पाँच सौ युगों बाद मैं चार महाद्वीपों का स्वामी था, चतुर सुप्पकासक270, सात रत्नों का स्वामी। (7) (444)

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 269 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 270 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

छह विशेष ज्ञान प्राप्त कर लिए हैं, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) (445)
इस प्रकार पूज्य पुन्ण मंताणिपुत्त थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
पुन्ण मंतानिपुत्त थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
3-5. मंतानी के पुत्र पुन्ञ थेरा की जीवनी पर टिप्पणी।
3-5.1. अज्जायको मंतधारो से शुरू होने वाले श्लोक ब्राह्मण महिला मंतानी के पुत्र थेरा पुन्ञा की जीवनी का वर्णन करते हैं। इस पुन्ञा ने भी पूर्व बुद्धों की उपस्थिति में समर्पित सेवा और आकांक्षा की थी, और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति के लिए अनुकूल पुण्य अर्जित किया था। उनका पुनर्जन्म एक अत्यंत धनी ब्राह्मण पद्ममुत्तरा के परिवार में हुआ और समय आने पर वे बुद्धि की आयु प्राप्त कर चुके थे। इसके बाद, जब पद्ममुत्तरा उठे और ज्ञानोदय के योग्य लोगों को धर्म का उपदेश दे रहे थे, तो वे पहले से वर्णित (हेत्ष्ठा) तरीके से बड़ी संख्या में लोगों के साथ मठ गए, श्रोताओं के सबसे अंतिम छोर पर बैठ गए और धर्म सुनते हुए उन्होंने देखा कि गुरु धर्म प्रचारकों में एक भिक्षु को सर्वोच्च स्थान दे रहे हैं; उसने मन ही मन सोचा, "भविष्य में मेरे लिए भी इसी के समान बनना उचित होगा।" प्रवचन समाप्त होने पर जब श्रोता उठ खड़े हुए, तो वह गुरु के पास गया, उन्हें आमंत्रित किया, पूर्वोक्त विधि से आदरपूर्वक भेंट चढ़ाई और प्रार्थना करते हुए कहा, "आदरणीय गुरुदेव! इस सेवा के फलस्वरूप मैं समृद्धि की कोई अन्य प्राप्ति नहीं चाहता, परन्तु जिस प्रकार सात दिन पूर्व आपने उस भिक्षु को धर्म प्रचारकों में सर्वोच्च स्थान दिया, उसी प्रकार भविष्य में बुद्ध के युग में मैं भी धर्म प्रचारकों में प्रमुख बनना चाहता हूँ।" गुरु ने भविष्य की ओर देखा, उसकी इच्छा की पूर्ति देखी और भविष्यवाणी की, "एक लाख युगों (कप्पा) बाद गौतम बुद्ध प्रकट होंगे; उनके युग में भिक्षु बनकर तुम धर्म प्रचारकों में प्रमुख बनोगे।"
3-5.2. अपने जीवनकाल में अच्छे कर्म करते हुए, वे वहाँ से चले गए, और एक लाख युगों (कप्पा) के पुण्य कर्मों का भार अपने ऊपर लादकर, बार-बार पुनर्जन्मों के चक्र में विचरण करते रहे, और हमारे प्रतापी गुरु के समय कपिलवस्तु नगर से कुछ ही दूरी पर स्थित डोनावत्थु नामक ब्राह्मण गाँव में एक धनी और उच्च पदस्थ ब्राह्मण परिवार में अञ्ञासिकोन्दञ्ञ के भतीजे के रूप में पुनर्जन्म लिया। उनका नाम पुन्ञ रखा गया। जब गुरु ने महान आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया और धर्म के उत्कृष्ट चक्र को घुमाते हुए राजगृह पर निर्भर होकर निवास कर रहे थे, तब उन्होंने अञ्ञासिकोन्दञ्ञ की उपस्थिति में भिक्षु दीक्षा ली। उपसंपदा दीक्षा प्राप्त करने के बाद, उन्होंने निरंतर अपने परिश्रमपूर्ण प्रयास (पधान) में स्वयं को समर्पित किया, भिक्षु के सभी कर्तव्यों के निर्वाह में सर्वोच्च दक्षता प्राप्त की, अपने थेरा-चाचा के साथ गुरु के समक्ष पहुंचे और मन ही मन कहा: "मैं दशबल के समक्ष जाऊंगा", कपिलवत्थु के आसपास ही रुके और मानसिक रूप से बुद्धिमान रहते हुए कर्म करते हुए अर्हंतत्व प्राप्त किया, लेकिन कुछ ही समय बाद आध्यात्मिक ज्ञान की ओर अपने अभ्यास में तत्पर हो गए।
3-5.3. उस थेरा पुन्ण की उपस्थिति में, अच्छे परिवारों के पाँच सौ युवक भिक्षु बन चुके थे। थेरा ने उन्हें दस प्रकार के मूलभूत उपदेशों (कथावत्थु) से उपदेश दिया। वे सभी भी, दस मूलभूत उपदेशों (दशकथावत्थु) के माध्यम से उपदेशित होकर, थेरा के मार्गदर्शन में स्थापित हो गए, अरहंत पद प्राप्त किया, यह जान लिया कि वे अपने भिक्षु कर्तव्यों के उच्चतम स्तर तक पहुँच चुके हैं, अपने आध्यात्मिक गुरु के पास गए और इस प्रकार कहा:- "आदरणीय गुरु! हम भिक्षु के रूप में जो कुछ भी करना चाहिए, उसकी उच्चतम सीमा तक पहुँच चुके हैं; हम दस मूलभूत उपदेशों (कथावत्थु) के भी लाभार्थी हैं; अब समय आ गया है कि हम दशबल से मिलें।" उनकी बात सुनकर, थेरा ने इस प्रकार विचार किया: "गुरु मेरे दस मूलभूत उपदेशों (कथावत्थु) के लाभ से अवगत हैं; धर्म का प्रचार करते समय, मैं प्रचार के दस आधारों (कथावत्थु) का पालन करता हूँ; जब मैं जाऊँगा, तो ये सभी भिक्षु भी मेरे साथ चलेंगे; मेरे लिए इस प्रकार बड़ी संख्या में लोगों के साथ जाना और दशबल से मिलना उचित नहीं है। तब उन्होंने उनसे कहा: "मेरे मित्रों! आप सब आगे जाकर दशबल से मिलें; मेरी ओर से आप तथागत के चरणों में प्रणाम करें; मैं भी उसी मार्ग से आऊँगा जिससे आप सब गए हैं।" वे सभी थेरा, जो दशबाला के मूल राज्य के निवासी थे, जो सभी दोषरहित अरहंत थे, जिन्होंने उपदेश के दस आधार (कथावत्थु) प्राप्त कर लिए थे, अपने आध्यात्मिक गुरु की सलाह का पालन करते हुए, अपने थेरा को प्रणाम करते हुए, अपनी परिक्रमा पर निकल पड़े, साठ योजन से अधिक की यात्रा पूरी की, राजगृह के विशाल बाँस-वन मठ में पहुँचे, दशबाला के चरणों में प्रणाम किया और एक तरफ बैठ गए। वास्तव में, बुद्धों, यानी परम पूज्यों का यह निरंतर अभ्यास है कि वे स्वयं अतिथियों को उचित रूप से प्रसन्न करें; परम पूज्य बुद्ध उनसे इस प्रकार

मधुर वार्तालाप करते हैं: "हे भिक्षुओं! आप कैसे हैं? क्या आप कुशल हैं?" और इसी प्रकार, उन्होंने पूछा: "हे भिक्षुओं! आप सब कहाँ से आए हैं?", और जब उन्होंने बताया कि वे उनकी जन्मभूमि, उनकी जन्मभूमि से आए हैं, तो उन्होंने उस भिक्षु के बारे में पूछा जिसने उपदेश के दस आधार प्राप्त कर लिए थे: "हे भिक्षुओं! अपनी जन्मभूमि में, अपने साथी भिक्षुओं के बीच, जो उनकी ही तरह ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करते हैं, वह कौन है जिसने दस आधारभूत सिद्धांतों को इतनी अच्छी तरह से विकसित किया है, 'वह स्वयं कम इच्छाओं वाला है, और भिक्षुओं को कम इच्छाओं का उपदेश देता है'?" उन्होंने बुद्ध को यह भी बताया: "आदरणीय गुरुदेव! वह मंतानी के आदरणीय पुत्र हैं, जो पुन्ष्ण नाम से जाने जाते हैं।"

3-5.4. उनकी बातें सुनकर पूज्य थेरा सारिपुत्त थेरा के दर्शन करने के लिए उत्सुक हो गए। तब गुरु राजगृह से सावत्थी चले गए। थेरा पुन्ञ ने भी दशबल के वहाँ आने की सूचना सुनी, और मन ही मन यह कहते हुए चले गए, "मैं गुरु के दर्शन करूँगा", और उचित समय पर तथागत के पास सुगंधित कक्ष में पहुँच गए। गुरु ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। थेरा ने धर्म को सुना, दशबल को प्रणाम किया, और एकांतवास के लिए घने वन (अंधवन) चले गए और दिन बिताने के लिए एक वृक्ष की तलहटी में बैठ गए। थेरा सारिपुत्त ने भी उनके आने की सूचना सुनकर पुन्ञ थेरा को ध्यानपूर्वक ढूँढ़ना शुरू किया, अवसर देखकर उनके पास पहुँचे, वृक्ष की तलहटी में बैठे थेरा को हार्दिक प्रणाम किया और उनसे पुण्य के क्रम का ज्ञान प्राप्त करने का अनुरोध किया। थेरा पुन्ञा ने थेरा सारिपुत्त के हर प्रश्न का उत्तर देकर उनका दिल अत्यंत जीत लिया, मानो रथों की रिले दौड़ हो।

434. इसके बाद भिक्षुओं की सभा के बीच में बैठकर, गुरु ने उस थेरा को सर्वोच्च स्थान देते हुए कहा: "हे भिक्षुओं! मेरे धर्म प्रचारक भिक्षु शिष्यों में, यह पुण्ण प्रमुख है।" अपने पूर्व कर्मों को याद करते हुए, उन्होंने 'अज्जायको' से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया, जिसमें उन्होंने मानसिक प्रसन्नता से अपने द्वारा किए गए अच्छे कर्मों का स्पष्ट वर्णन किया। यहाँ, 'अज्जायको' (ब्राह्मण ग्रंथों का विद्वान) अनेक ब्राह्मणों का गुरु और प्रशिक्षक है; 'मन्तधारो' (मंत्रों का वाहक) मंत्रों (या मंत्रों) का भंडार है; यही अर्थ है। जो विद्वतापूर्ण अध्ययन, श्रवण और उपदेश के माध्यम से चौथे वेद का ज्ञान धारण (या संरक्षण) करता है; यही कथन है। तिनम् वेदानम् (तीनों वेदों का) ज्ञान तीनों वेदों के ग्रंथों में सर्वांगीण अंत तक और दूसरे तट तक पहुँच गया है, उस ज्ञान में जिसे बुद्धि (या विवेक) के माध्यम से प्राप्त होने के कारण "वेद" नाम मिला है, इरुवेद, यजुर्वेद और सामवेद के रूप में गिने जाने वाले तीनों वेदों का यही अर्थ है। पुरक्खतोऽम्हि सिसेहि (मैं अपने शिष्यों से घिरा हुआ हूँ), मैं अपने शिष्यों से घिरा हुआ हूँ जो मेरे निरंतर साथी हैं। उपगच्छिम नरुत्तमम् (मैं श्रेष्ठ पुरुषों के पास पहुँचा), मैं प्रतापी के पास पहुँचा, उनके निकट गया; यही अर्थ है। शेष भी बहुत सरल है।

438. अभिधम्मनयञ्ञु हम् (मैं अभिधम्म विधि का ज्ञाता था), उस बुद्ध के समय में, मैं अभिधम्म विधि का ज्ञाता था; यही अर्थ है; कथावत्थु विशुद्धिआ (कथावत्थु की शुद्धता में), कथावत्थु नामक ग्रंथ की स्पष्टता के कारण, मैं एक सिद्ध पुरुष था; (या मैं एक विशेषज्ञ हूँ) उपदेश के दस आधारों में, जैसे कि इच्छाओं का अभाव, संतोष का उपदेश आदि; उपदेश के उस स्पष्ट आधार (कथावत्थु) के माध्यम से; सब्बेसम (सभी को), बुद्धिमान भिक्षुओं और मनुष्यों को; विञ्ञापेत्वान (जानकर) प्रबुद्ध (या जागृत) करके; अनासवो (दोषों से रहित) भ्रष्टता से रहित; विहारामि (मैं रहता हूँ) मैंने अपना निवास स्थान बनाया।

439. इतो पंचसते कप्पे (पांच सौ युगों बाद) इस वर्तमान उत्तम युग (भद्दकप्पा) से पांच सौ युगों बाद, पांच बुद्धों से सुशोभित; सुप्पकासका (प्रसिद्ध) जंबूद्वीप के चार द्वीपों आदि में प्रसिद्ध, चक्र रत्न आदि सात प्रकार के रत्नों से संपन्न; इस्सारा (शासक) प्रमुख पुरुष, चतुरो (चार) चार विश्व-राजा; यही अर्थ है। शेष का अर्थ उपरोक्त प्रकार ही है।

मंतानी के पुत्र थेरा पुन्ञ की जीवनी पर की गई टीका समाप्त हो गई है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.1 >> 6. थेरा उपालि

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

6. उपाली

शहर में, सुजाता नाम से जाने जाने वाले ब्राह्मण हंसवती बहुत धनी थे, उनके पास अपार संपत्ति थी, उन्होंने आठ सौ मिलियन की बचत की थी। (1) (446)
मैं वह विद्वान मंत्र-ज्ञानी था जिसने तीनों वेदों में महारत हासिल की थी। मैंने सद्धम्म, संकेतों को पढ़ने और इतिहास में निपुणता प्राप्त की थी। (2) (447)
उस समय बहुत सी महिला संन्यासी, एक चोटी वाली तपस्वी,271 जो ऋषि272 गौतम का अनुसरण करती थीं, इधर-उधर घूम रही थीं। (3) (448)
फिर वे आए और मुझे घेर लिया, यह सोचकर कि "वह एक प्रसिद्ध ब्राह्मण है।" आम लोग मेरी पूजा करते थे, लेकिन मैं किसी की पूजा नहीं करता था। (4) (449)
मुझे पूजा के योग्य कोई नहीं दिखा; उस समय मैं अत्यधिक अभिमानी था। "बुद्ध" शब्द का अस्तित्व ही नहीं था क्योंकि विजेता का जन्म अभी नहीं हुआ था। (5) (450)
जब कई दिन और रातें बीत गईं, तब नेता, पद्ममुत्तरा, नेत्रपूर्ण पुरुष, संसार में प्रकट हुए और इसके समस्त अंधकार को दूर कर दिया। (6) (451)
जब (उनका) उपदेश समझाया गया और बहुत से लोगों में फैल गया, तब (वे), बुद्ध, हंसावती नामक नगर में गए। (7) (452)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 271 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 272 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

दूसरों की सहायता करने के लिए, नेत्रपूर्ण बुद्ध ने धम्म का उपदेश दिया। उस समय उनका (विशाल) दल एक पूरे लीग तक फैला हुआ था। (8) (453)
सुनंदा273 नामक एक तपस्वी, जिसे जनता का स्नेह प्राप्त था, ने प्रसन्न होकर बुद्ध के उस दल में उपस्थित सभी लोगों को फूल भेंट किए। (9) (454)
एक भव्य पुष्पयुक्त मंच पर उन्होंने चार (महान) सत्यों की व्याख्या की। एक खरब (प्राणियों) ने, जिन्होंने उन्हें सुना, धम्म-बोध प्राप्त किया। (10) (455)
सात दिन और सात रातों तक बुद्ध ने धम्म की वर्षा की, (और) जब आठवां दिन भोर हुआ तो विजेता ने सुनंदा के बारे में कहा: (11) (456)
"यह एक, देवताओं के लोक या मनुष्यों के लोक में जन्म-जन्म लेता हुआ, सभी में सबसे उत्कृष्ट होने के कारण अपने जन्म-जन्मों में जन्म-जन्म लेता रहेगा।275 (12) (457)
एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (13) (458)
उस व्यक्ति के धम्म का योग्य उत्तराधिकारी, धम्म की वैध संतान, (वह) उस शिक्षक का अनुयायी होगा जिसका नाम मंताणिपुत्त पुन्ण होगा।"276 (14) (459)
संबुद्ध ने तपस्वी सुनंदा से इस प्रकार बात की, जिससे सभी लोग मुस्कुरा उठे और उन्होंने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। (15) (460)

---

273 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद

किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 274 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 275 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 276 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

हाथ जोड़कर उन्होंने तपस्वी सुनंदा के प्रति श्रद्धा प्रकट की। बुद्ध के अनुरूप कार्य करते हुए उन्होंने अपने भविष्य के स्वरूप को शुद्ध किया। (16) (461)

(और) ऋषि के शब्दों को सुनकर मेरे मन में यह विचार आया: "मैं भी (इसी प्रकार) कार्य करूंगा जब तक कि मैं (भी) गौतम को न देख लूं।" (17) (462)

इस प्रकार सोचने के बाद मैंने उस कर्म पर विचार किया जो मैं करूँगा: "तो फिर मुझे इस अद्वितीय पुण्य क्षेत्र में कौन सा कर्म करना चाहिए? (18) (463)

यह भिक्षु (जिसे) 277 पाठिका के नाम से जाना जाता है, विनय और सभी पाठित शिक्षाओं में प्रथम स्थान पर है; मैं उस स्थिति की आकांक्षा रखूंगा। (19) (464)

मेरे पास सागर के समान असीम धन था।278 उस धन से मैंने (भिक्षुओं और) बुद्ध के लिए एक आश्रम बनवाया। (20) (465)

वह आश्रम, जिसे शोभना279 के नाम से जाना जाता था, शहर के पूर्व में बनाया गया था। मैंने एक लाख (सिक्के) खर्च किए (तब) उस मठवासी आश्रम का निर्माण किया।280 (21) (466)

मैंने ढलानदार कोठरियों, हवेलियों, चबूतरे और (साथ ही) गुफाओं का निर्माण किया और एक सुव्यवस्थित पैदल मार्ग बनाकर उस मठवासी आश्रम का निर्माण किया। (22) (467)

मैंने जल-भंडारण हॉल के नीचे गर्म कमरों और एक अग्नि-कक्ष वाला स्नानघर बनवाया और उसे सभा को दे दिया।281 (23) (468)

मैंने उन्हें वह सब कुछ दिया (जिसकी उन्हें आवश्यकता होगी): बैठने के लिए छोटी कुर्सियाँ और रिक्लाइनर,

---

277 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल) 278 शाब्दिक अर्थ, "गया" 279 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ संकालेसी पढ़ना संजालेसी 280 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया" 281 शाब्दिक अर्थ, "गुणी"

खाना पकाने और खाने के बर्तन, और आश्रम के लिए दवाइयाँ। (24) (469)

(तब) इसकी सुरक्षा के लिए मैंने एक मजबूत प्राचीर बनवाई ताकि कोई इसे नुकसान न पहुंचा सके, (एक स्थान) शांतिपूर्ण ध्यान के लिए। (25) (470)

मैंने भिक्षुओं के लिए लाखों कमरों वाला वह आश्रम बनवाया और उन्हें भरकर (फिर) संबुद्ध के पास गया। (26) (471)

"मैंने आश्रम का निर्माण पूरा कर लिया है; इसलिए कृपया इसे स्वीकार करें। मैं इसे आपको, हे वीर, और यहाँ के निवासियों को, हे नेत्रपूर्ण, भेंट कर रहा हूँ।" (27) (472)

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, बलिदान प्राप्तकर्ता, मेरे विचारों को समझकर (तब) इसे स्वीकार किया, नेता। (28) (473)

भोजन तैयार हो जाने के बाद, सर्वज्ञ ईश्वर, महान ऋषि की सहमति का ज्ञान होने पर, मैंने (दान देने का) समय घोषित किया। (29) (474)

जब समय की घोषणा हो गई, तब नेता पद्ममुत्तरा एक हजार अरहंतों के साथ मेरे (शानदार) आश्रम में आए। (30) (475)

बैठने का समय देखकर मैंने भोजन और पेय से उनका मनोरंजन किया। यह देखकर कि उन्होंने खाना समाप्त कर लिया है, मैंने (तब) उनसे ये शब्द कहे: (31) (476)

"शोभना नामक इस आश्रम की कीमत मुझे एक लाख (सिक्के) पड़ी और इसके निर्माण में इससे कहीं अधिक खर्च आया;283 कृपया इसे स्वीकार करें। (32) (477)

---

282 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में, मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हज़ार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्ताक्षर के अंग्रेज़ी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हज़ार कंढ (भाग, अंश, पिंड, एक छोटा माप), सौ भेण्डु (लंबा?

मोटा?)।" 283 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में गेंदु लिखा है। कम से कम प्रसारण के समय, ये अस्पष्ट माप आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।

इस आश्रम को इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ देने के कारण, मुझे जन्म-जन्मांतर में वह सब कुछ प्राप्त होना चाहिए जिसकी मैं कामना करता हूँ। (33) (478)

बुद्ध ने उस सुनिर्मित मठवासी आश्रम को स्वीकार कर लिया और भिक्षुओं की सभा में बैठकर (तब) मेरे बारे में ये शब्द कहे: (34) (479)

"जिसने बुद्ध को एक सुव्यवस्थित मठवासी आश्रम दिया, मैं उसके बारे में विस्तार से बताऊंगा; आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें: (35) (480)

(उन्होंने कहा), "सेना, जिसके चार भाग हैं— हाथी, सैनिक, रथ, घोड़ा— निरंतर इसकी सेवा करेगी: एक मठवासी आश्रम का फल। (36) (481)

साठ हजार वाद्ययंत्र284 (और) अच्छी तरह से सजाए गए केतली-ढोल285 निरंतर इसकी सेवा करेंगे: एक मठवासी आश्रम का फल। (37) (482)

सोलह हजार महिलाएं, सभी आभूषणों से सजी हुई, विभिन्न प्रकार के कपड़े और गहने पहने हुए और रत्नों से बनी बालियां पहने हुए, (38) (483)

लंबी पलकों, प्यारी मुस्कान286 और पतली कमर वाली, देखने में मनमोहक,287 इस एक की निरंतर सेवा करेगी: एक मठवासी आश्रम का फल। (39) (484)

वह तीस हजार युगों तक देवताओं के संसार में आनंदित रहेगा। हजार गुना देवताओं का राजा, वह दिव्य शासन करेगा। (40) (485)

एक देव-राजा जो कुछ भी प्राप्त करता है, वह भी उसे पूरी तरह से प्राप्त होगा।

---

284 yenicchakā, BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार 285 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें RD., sv) 286 PTS uddhalomikā के लिए BJTS के साथ uddalomika° का पाठ (जिसका अर्थ लगभग समान है, देखें RD, sv) 287 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"

उसे किसी चीज की कमी नहीं होगी और वह दैवीय शासन करेगा। (41) (486)

वह हज़ार बार किसी देश का शासन करने वाला राजा बनेगा। पृथ्वी पर उसका शासन अनेक होगा, गिनती में अनगिनत। (42) (487)

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (43) (488)

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी, धर्म की वैध संतान, (यह) उस गुरु का अनुयायी होगा; उसका नाम उपालि होगा। (44) (489)

विनय में निपुण, सही और गलत निष्कर्षों में पारंगत,288 विजेता की शिक्षा को आगे बढ़ाते हुए वह दोषरहित जीवन व्यतीत करेगा। (45) (490)

इन सब बातों को जानकर, शाक्यों के श्रेष्ठ गौतम, जो भिक्षुओं की सभा में विराजमान हैं, उन्हें सर्वोपरि स्थान देंगे। (46) (491)

आपकी कृपा की असीम लालसा रखते हुए, मैंने (अब पूरी तरह से) उस लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है, जिसमें सभी बंधन नष्ट हो जाते हैं। (47) (492)

जैसे कोई व्यक्ति खंभे से बंधा हुआ, राजा द्वारा दी जाने वाली सजा से भयभीत होकर, उस खंभे में कोई आनंद न पाकर, केवल मुक्त होना चाहेगा, (48) (493)

हे महान वीर, मैं भी पुनर्जन्म के दंड से भयभीत हूँ। कर्म के बंधन में बंधा होने के कारण मैं इच्छाओं से भयभीत हूँ। (49) (494)

मुझे तीनों अग्नियों से जलकर भस्म होने में कोई आनंद नहीं मिलता।289

---

288 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़? 289 khiḍḍāratiyā

मैं राजा द्वारा दंडित व्यक्ति की तरह मुक्ति की तलाश कर रहा हूँ। (50) (495)

जैसे कोई व्यक्ति जिसे जहर दिया गया हो, जो उस वजह से दर्द से व्याकुल हो, वह जहर को नष्ट करने के लिए एक उपाय, एक रास्ता290 खोजेगा; (51) (496)

और यदि उसे कोई ऐसा इलाज मिल जाए जो जहर को नष्ट कर सके, तो उसे पीकर वह उस जहर से मुक्त होकर प्रसन्न होगा। (52) (497)

हे महान वीर, मैं भी उन्हीं की तरह विष से ग्रसित हूँ। अपनी अज्ञानता के कारण दुखी होकर मैं सद्धम्म उपचार के लिए आया हूँ। (53) (498)

उस उपचारकारी धम्म की खोज में मैंने शाक्यन विधि देखी, जो सभी औषधियों में सर्वश्रेष्ठ है, जिससे सभी तीर निकल जाते हैं। (54) (499)

उस धम्म-औषधि को पीकर मैंने हर विष को नष्ट कर दिया है। मैंने शांत निर्वाण को देखा है, जो न बूढ़ा होता है और न मरता है। (55) (500)

जैसे कोई भूत से डरकर, उस (डर) के कारण दर्द से त्रस्त होकर, उस भूत के (हमलों) से मुक्ति पाने के लिए किसी तांत्रिक291 की तलाश करेगा, (56) (501)

और यदि उसे भूत भगाने में कुशल कोई व्यक्ति मिल जाए, तो वह उसके लिए भूत का वध कर देगा और उसे जड़ से मिटा देगा। (57) (502)

हे महान वीर, मैं भी अंधकार में डूबा हुआ हूँ, इसलिए व्यथित हूँ। मैंने ज्ञान के उस संसार की खोज की जो मुझे इस अंधकार से मुक्त कर सके। (58) (503)

और फिर मैंने शाक्य ऋषि को देखा, जो अंधकार और अपवित्रता का निवारण करते हैं।

---

290 तिदासे, अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में 291 व्याम्ह-म-उत्तम, शाब्दिक अर्थ, "(मेरे) परम (या उत्कृष्ट) महल में" 292 नवा, वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" किया गया है

उन्होंने मेरे मानसिक अंधकार को उसी प्रकार दूर भगाया जैसे तांत्रिक भूत को भगाता है। (59) (504)

अस्तित्व की धारा को मोड़ते हुए;293 उसने लालसा के जल को रोक दिया; भूत भगाने वाले की तरह सभी पुनर्जन्म को जड़ से मिटा दिया। (60) (505)

जैसे एक हार्पी जो अपने भोजन के रूप में साँपों पर झपट्टा मारती है, वह प्रत्येक दिशा में सौ मील दूर एक बड़ी झील से हमले शुरू करेगी, (61) (506)

(और) वह एक, एक साँप को उठाकर उसके सिर के ठीक नीचे उसे चोट पहुँचाएगा (फिर) उसे ले जाकर, (फिर से) उड़ान भरेगा, अपनी इच्छा से आकाश में उड़ता रहेगा, (62) (507)

ठीक वैसे ही मैं भी, हे महान वीर, उस वीणा के समान बलवान हूँ। असीम की खोज में मैंने अपने सारे दाग धो डाले। (63) (508)

मैंने उत्कृष्ट शिक्षा, शांतिपूर्ण अवस्था, (इतनी) अद्वितीय देखी है। इसे धारण करते हुए, मैं (अब) सर्प के साथ वीणा की तरह निवास कर रहा हूँ। (64) (509)

इंद्र के बगीचे में आसावती नाम की एक लता उगती है।294 हजार वर्षों के बाद उस पर एक ही फल लगता है। (65) (510)

जब तक फल वहाँ रहता है, देवता उसकी देखभाल करते हैं। इस प्रकार, देवता उस उत्तम लता, आसावती का आनंद लेते हैं। (66) (511)

एक लाख वर्षों तक मैंने उस ऋषि की सेवा की, सुबह-शाम उनकी पूजा की, ठीक वैसे ही जैसे आसावती देवताओं की पूजा की जाती है। (67) (512) ऐसी सेवा जो कभी समाप्त नहीं हुई, (और) ऐसी पूजा जो व्यर्थ नहीं थी;

---

293 शाब्दिक अर्थ, "पूजा" 294 महापक्खो, शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति"

मेरे आने के पूरे समय में उसने एक पल के लिए भी मुझे निराश नहीं किया। (68) (513)

मैं किसी पुनरावलोकन का साक्षी नहीं हूँ;295 मैंने अस्तित्व की खोज की है; इच्छाओं से मुक्त (और) पूरी तरह से मुक्त, शांत, मैं अब इधर-उधर भटक रहा हूँ। (69) (514)

और जैसे सूर्य की किरणों से कमल खिलता है, वैसे ही हे महान वीर, मैं भी बुद्ध की किरणों से खिलता हूँ। (70) (515)

जैसे नर पक्षी हमेशा मादा सारस के साथ संभोग करते हुए नहीं पाए जाते हैं296 (बल्कि केवल) जब बादल गरजते हैं तो वे उन्हें अपने गर्भ में ले जाते हैं, (71) (516)

और काफी समय तक वे गर्भवती रहती हैं297 — जब तक बादल गरजते नहीं — फिर वे उस बोझ से मुक्त हो जाती हैं जब बादल (फिर से) बारिश करते हैं, (72) (517)

(इसलिए) जब पद्ममुत्तरा बुद्ध के धम्म-बादल ने गर्जना की, उस धम्म-बादल की तेज आवाज के कारण मैंने (तब) एक धम्म-गर्भ धारण किया। (73) (518)

एक लाख युगों तक सेवा करते हुए मैंने उस पुण्य-गर्भ को धारण किया। मैं उस बोझ से मुक्त नहीं हुआ; धम्म-बादल गर्जना नहीं किया। (74) (519)

लेकिन जब आपने, शाक्यों के ऋषि, सुंदर कपिलवस्तु में अपने धम्म-बादल से गर्जना की, तो मैं उस बोझ से मुक्त हो गया। (75) (520)

(तब) मैंने संपूर्ण शिक्षा और उसके चार फलों की व्याख्या की, जो हैं: शून्यता, चिह्नों का अभाव, यथार्थता, अभिलाषा। (76) (521)

दूसरा पाठ भाग। असीम सेवा प्रदान करना,

---

295 या "मुझे नहीं पता," न जानामि 296 परिषाहो 297 लिट., "शहर में, श्रावस्ती,"

आपकी कृपा की लालसा में, मैं (अब पूरी तरह से) लक्ष्य तक पहुँच गया हूँ, अद्वितीय शांति की अवस्था तक। (77) (522)

मैंने विनय में उसी प्रकार उत्कृष्टता प्राप्त की है जैसे ऋषि पाठिका ने की थी। मेरा कोई प्रतिद्वंदी नहीं है; मैं आपके विधान को आगे बढ़ाता हूँ। (78) (523)

मुझे विभंगों,298 खंडकों,299 और (परिवार), पाँचवें.300 (79) (524) दोनों के अक्षर और भावना के बारे में कोई संदेह नहीं है।

फटकार लगाने,301 सुधार करने,302 सही और गलत निष्कर्षों, बहाली303 और मिटाने304 में कुशल — मैंने सभी मामलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।305 (80) (525)

विभंगों और खंडकों में प्रासंगिक वाक्य का हवाला देते हुए, (और) उन दोनों को अलग करते हुए मैं उपयुक्त पुनर्स्थापना करता हूँ।306 (81) (526)

पाली भाषा में कुशल,307 सार्थक और निरर्थक में बुद्धिमान, ऐसा कुछ भी नहीं है जो मुझे ज्ञात न हो, गुरु की शिक्षा में सर्वोपरि। (82) (527)

मैं अब शाक्यन309 व्यवस्था में (सभी) मामलों308 में कुशल हूँ। मैं सभी उलझनों का समाधान करता हूँ और हर (एक) संदेह को दूर करता हूँ। (83) (528)

मैं सभी विषयों में कुशल हूं: पूर्ववर्ती वाक्य, अनुवर्ती वाक्य,

---

298 महासाले, धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके, "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है) 299 पंच-काम-गुण, "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले 300 समाधिकुसालो अहं 301 इद्धिपादेसु कोविदो 302 शाब्दिक रूप से, "पूजा की" 303 मारसेनपमद्दनो, बीजेटीएस मारसेनपमद्दनो पढ़ता है 304 बोज्जरातन'इसारो, चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र, आदि) पर एक शब्द-क्रीड़ा 305 महाभिसक्कसंकासो 306 दोसव्याधितिकिच्चको 307 °विफलको, लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। ग्लोस सिंदुना 308 दिथिगंड° 309 लोकापज्जोतो

अक्षरशः और भावना में, आरंभिक फ्रेम, समापन फ्रेम। (84) (529)

जैसे कोई महान शक्ति वाला राजा, जिसने शत्रुओं को फटकार लगाई हो310 और अपने युद्धों में विजय प्राप्त की हो, उस स्थान पर एक नगर का निर्माण कर सकता है, (85) (530)

और वह उस शहर में कई प्राचीरें, और खाइयाँ भी, गढ़ों और स्तंभों वाले द्वार, और विभिन्न प्रकार के ऊँचे निगरानी टावर बनाएगा, (86) (531)
और चौराहों और उन स्थानों पर सुनियोजित बाज़ार जहाँ चार सड़कें मिलती हैं, और वहाँ वह अर्थों और उनकी कमियों को सुलझाने के लिए एक कानून अदालत का निर्माण करेगा। (87) (532)
सभी शत्रुतापूर्ण राजाओं की निंदा करने, उनकी गलतियों और निर्दोषता को उजागर करने और सुरक्षा के लिए वह वहाँ सेना का एक सेनापति नियुक्त करता था। (88) (533)
अपनी संपत्ति की रक्षा के लिए वह एक कोषाध्यक्ष नियुक्त करता था, जो खजाने की रखवाली में कुशल होता था, और आदेश देता था, "मेरी संपत्ति बर्बाद मत करो।" (89) (534)
ताकि प्रक्रियाओं का पालन हो सके, वह प्रशासन अपने एक मित्र, राजा के भक्त को सौंप देगा, ताकि उसकी समृद्धि सुनिश्चित हो सके। (90) (535)
वह अपने सलाहकार के रूप में संकेतों और शकुनों को पढ़ने में (अत्यधिक) कुशल व्यक्ति को नियुक्त करेगा, जो मंत्रों का विद्वान गुरु हो। (91) (536)
(इस प्रकार) इन सभी अंगों से संपन्न होकर वह "क्षत्रिय" कहलाएगा। वे सदा राजा की रक्षा हंस की तरह घायल की रक्षा करेंगे।311 (92) (537)
इस प्रकार, हे महान वीर, आप वास्तव में शत्रुओं को मार गिराने वाले क्षत्रिय हैं।

---

310 सनारामरसक्कतो 311 नारादिक्को

इस संसार में, देवताओं समेत, आपको शिक्षा का राजा कहा जाता है। (93) (538)
विधर्मियों और मारा को अपनी सेना सहित नष्ट करके, अंधकार के उस कारण को दूर भगाकर, आपने धम्म का नगर बनाया। (94) (539)
नैतिकता वहाँ की प्राचीर है; आपका ज्ञान द्वार और गढ़ है; आप पर विश्वास स्तंभ है, हे ज्ञानी; संयम द्वार पर पहरेदार है। (95) (540)
माइंडफुलनेस312 उच्च निगरानी मीनार है; हे ऋषि, आपका ज्ञान चौराहा है; महाशक्तियाँ, जहाँ चार मार्ग मिलते हैं; धम्म-मार्ग अच्छी तरह से निर्मित है। (96) (541)
आपकी विधि-न्यायालय में बुद्ध की नौ प्रकार की शिक्षाएँ, सूत्र और अभिधम्म तथा संपूर्ण विनय शामिल हैं। (97) (542)
शून्यता, चिह्नों का अभाव, बहुत कम चाहत में निवास, इच्छाहीनता और समाप्ति: (ये सभी) आपकी धम्म-झोपड़ी का निर्माण करते हैं। (98) (543)
ज्ञानवान और समझ में निपुण लोगों में सबसे ऊपर, वह व्यक्ति जो सारिपुत्त के धर्म-सेनापति के रूप में जाना जाता है। (99) (544)
चार अचानक घटित घटनाओं में बुद्धिमान, महाशक्तियों में निपुण, कोलिता के नाम से जाने जाने वाले, हे ऋषि, आपके शीर्ष सलाहकार हैं। (100) (545)
प्राचीन वंश के वाहक, दुर्गम, अपार शक्ति वाले, तपस्वी गुणों में अग्रणी, (कस्सपा) के प्रधान मंत्री, ऋषि। (101) (546)
धर्म के विद्वान वाहक,

---

312 शाब्दिक अर्थ, "में" 313 सुगातुपागो, शाब्दिक अर्थ, "कल्याण की ओर अग्रसर"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुकून भरे व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।

सभी शिक्षाओं के पाठकर्ता,314 जो आनंद के नाम से जाने जाते हैं, हे ऋषि, वे आपके धम्म-रक्षक हैं। (102) (547)
उन सभी (भिक्षुओं) को छोड़कर भगवान बुद्ध ने मुझे विनय का सर्वश्रेष्ठ व्याख्याकार माना और मेरे निर्णयों को (अधिकार) दिया। (103) (548)
जब भी कोई बुद्ध-अनुयायी विनय से संबंधित कोई प्रश्न उठाता है, तो मैं बिना सोचे-समझे ही उसका उत्तर दे देता हूँ। (104) (549)

हे महान ऋषि, आपके सिवा (निःसंदेह) संपूर्ण बुद्ध-क्षेत्र में विनय का कोई प्रतिद्वंदी नहीं है; आपसे बेहतर कोई आ कहाँ सकता है? (105) (550)
भिक्षुओं की सभा में बैठे गौतम ने गरजते हुए कहा: "विभंगों317 और खंडकों में उपाली का कोई प्रतिद्वंदी नहीं है।" (106) (551)
शिक्षक की नौ प्रकार की व्यवस्था, जहाँ तक बुद्ध ने इसका उपदेश दिया है, वह सब विनय में उस व्यक्ति के लिए पाया जाता है जो इसे मूल रूप से जानता है।318 (107) (552)
मेरे (भूतकाल के) कर्मों को याद करते हुए, शाक्यों के श्रेष्ठ पुरुष गौतम ने भिक्षुओं की सभा में मुझे सर्वोपरि स्थान दिया। (108) (553)
इस स्थान की लालसा में एक लाख युगों तक सेवा करने के बाद, मैं (अब पूरी तरह से) विनय में निपुण होकर लक्ष्य तक पहुँच गया हूँ। (109) (554)
मैं पूर्व में एक नाई था जो शाक्यों को सुख प्रदान करता था। उस वंश को त्यागने के बाद ही महान ऋषि के पुत्र का जन्म हुआ। (110) (555)

---

314 निब्बाति, या "वह शांत हो जाता है" 315 महास्सादंग 316 महारसंग 317 शाब्दिक रूप से, "अच्छे जाने वाले को" 318 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ māse aṭṭhadinesv-ahaṃ पढ़ना māse aṭṭhadine svaha

---

दूसरे युग पूर्व में असीम शक्ति और अपार प्रसिद्धि वाले क्षत्रिय अंजस319 पृथ्वी के राजा और अत्यंत धनी थे। (111) (556)
मैं (तब) चंदन नामक क्षत्रिय राजा का पुत्र था। मैं अपने कुल के गौरव और अपनी प्रसिद्धि एवं धन-संपत्ति के अभिमान से फूला हुआ था। (112) (557)
सभी आभूषणों से सजे एक लाख हाथी, तीन प्रकार से मदमस्त,320 मातांग,321 हर समय मेरी सेवा में तड़पते रहे। (113) (558)
अपनी सेना से घिरे बगीचे में जाने की इच्छा से, मैं हाथी सिरिका पर सवार होकर शहर से निकल पड़ा। (114) (559)
(एकाकी) बुद्ध देवल, उत्तम आचरण से परिपूर्ण, आत्मसंयमित और अच्छी तरह से संरक्षित द्वारों वाला322, उस समय मेरे नगर के पास आया। (115) (560)
सिरिका हाथी को चलाते हुए मैंने उस बुद्ध का अपमान किया। इसके कारण क्रोधित होकर उसने कभी अपना पैर नहीं उठाया।323 (116) (561)
मेरे हाथी का खराब मिजाज देखकर मुझे बुद्ध पर गुस्सा आ गया। संबुद्ध को परेशान करने के बाद मैं बगीचे में चला गया। (117) (562)
उस क्षण मुझे कोई आनंद नहीं मिला, मानो मेरा सिर आग की लपटों में जल रहा हो। मैं पीड़ा से ऐसे जल रहा था जैसे कोई मछली कांटे में फंस गई हो। (118) (563)
मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे पूरी पृथ्वी समुद्र के किनारे तक जल रही हो।

---

319 paṇidhāya, या "दृढ़ संकल्प", सिंह. prārthanāva 320 PTS yahiŋ tahiŋ; BJTS tahiṃ tahiṃ 321 शाब्दिक अर्थ, "मेरी माता अपने पूरे शरीर से सुगंधित थीं" 322 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से श्लोक 66-71 (3648-3653) 323 या "शिक्षा में (उन) चारों का पालन-पोषण करना"

अपने पिता के पास जाकर मैंने उनसे ये शब्द कहे: (119) (564)
"उस आत्म-एकत्व का मेरा अपमान एक बहुत क्रोधित साँप के समान है, यह आग के एक बड़े गोले के समान है, यह एक नशे में धुत हाथी के समान है। (120) (565)
यह बहुत बुरा है कि मैंने उस बुद्ध, विजेता, अत्यंत शक्तिशाली का अपमान किया है। हम अपने सभी शहरों को बर्बाद कर देंगे; आइए उस ऋषि से क्षमा मांगें। (121) (566)
"यदि हम उसे, उस आत्म-संयमी, आत्म-नियंत्रित व्यक्ति को, यह बात नहीं समझा पाए, तो आज से सातवें दिन मेरा देश (पूरी तरह से) नष्ट हो जाएगा। (122) (567)

सुमेखला, कोसियन और सिगवा, इसलिए सत्तुका, ऋषियों का अपमान करने के बाद शोक में पड़ गए, और उनकी सेनाएँ भी। (123) (568)

जब भी ब्रह्मचारी, सुप्रशिक्षित ऋषि क्रोधित हो जाते हैं, तो वे देवताओं, महासागरों और पर्वतों सहित संसार का विनाश कर देते हैं। (124) (569)

मैंने तीन लाख मील की दूरी में फैले सभी लोगों को इकट्ठा किया। उस अपराध पर चर्चा करने के लिए, मैं स्वयं-एकत्व के पास गया। (125) (570)

गीले कपड़े पहने, गीले सिर लिए, सभी ने हाथ जोड़े। बुद्ध के चरणों में गिरकर मैंने उनसे ये शब्द कहे: (126) (571)

"हे महान नायक, कृपया क्षमा करें; जनता आपसे विनती कर रही है। कृपया इस भयानक आग को बुझा दें; और (पूरे) देश को नष्ट न करें। (127) (572)

सभी देवता, मनुष्य, टाइटन्स324 और आत्माएं325 भी,

---

324 शाब्दिक रूप से, "बहावों का विनाश" 325 या "जो बाहर गया था": पब्बाजितो

वह लोहे के हथौड़े से मेरा सिर लगातार फोड़ता रहता था। (128) (573)

"जल में अग्नि नहीं टिकती (और) चट्टान में बीज नहीं उगते; औषधि में कीड़े नहीं टिकते; बुद्ध में क्रोध नहीं होता। (129) (574)

जैसे पृथ्वी अविचल है, सागर असीम है, और आकाश की कोई सीमा नहीं है, वैसे ही बुद्ध विचलित नहीं हो सकते। (130) (575)

महान नायक जो तपस्वी हैं326 वे धैर्यवान और क्षमाशील (लोग) होते हैं। ऐसे धैर्यवान, क्षमाशील लोग आपके (गलत) मार्ग पर ध्यान नहीं देते।" (131) (576)

यह कहकर संबुद्ध ने उस भयानक आग को बुझा दिया। फिर सबके सामने वे आकाश में उड़ गए। (132) (577)

हे ज्ञानी, उस (बुरे) कर्म के कारण मैंने निम्न जन्म प्राप्त किया;327 (अब) उस स्थान से आगे बढ़कर, मैं निर्भीक नगर में आ गया हूँ। (133) (578)

तब, हे महान वीर, (मुझे देखकर) अच्छी तरह से बसा हुआ (पर) जल रहा था, उस स्वयंभू (अकेले बुद्ध) ने आग बुझाई (और) मुझे क्षमा कर दिया।328 (134) (579)

फिर भी आज, हे महान नायक, आपने तीनों आग बुझा दी हैं,329 और मुझे भी उन्हीं तीन आगों से जलने से बचा लिया है।330 (135) (580)

आपमें से जिनके पास सुनने के लिए कान हैं, आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें: मैं आपके सामने उन तथ्यों को प्रकट कर रहा हूँ कि मैंने इस स्थिति को कैसे देखा। (136) (581)

---

326 यह श्लोक बारह अक्षरों वाले जटिल छंद में है। 327 शाब्दिक अर्थ, "यहाँ" 328 बीजेटीएस इन दो अंतिम पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस अपूर्ण सौ (सातकम्) के लिए इन अध्याय सारांश श्लोकों को शामिल करता है। 329 बीजेटीएस इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है। 330 धारेथा, शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "स्मरण करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"

स्वयं-स्वरूप एकत्ववान, शांत हृदय वाले (और) सजग, आज उस (बुरे) कर्म के कारण, मैं इस नीच जाति के गर्भ में जन्म लेता हूँ। (137) (582)

एक पल भी चूक मत करो; चूके हुए पल पर तुम्हें पछतावा होगा। यह पल तुम्हारे लिए तैयार है: अभी अपने भले के लिए प्रयास करो। (138) (583)

कुछ लोगों में हलाहल नामक विष उल्टी करने से ठीक हो जाता है। कुछ लोगों के लिए दस्त लगाना इसका इलाज है, जबकि अन्य के लिए औषधीय जड़ी-बूटियाँ इसका इलाज हैं। (139) (584)

पुण्य-क्षेत्र-साधकों के संदर्भ में, मार्ग पर चलने वालों के लिए (उपचार) उल्टी है;331 मार्ग-फलों के पीछे चलने वालों के लिए यह शुद्धि है;332 फल प्राप्त करने वालों के लिए, औषधीय जड़ी-बूटियाँ।333 (140) (585)

जो लोग इस शिक्षा का विरोध करेंगे, वे हलाहल:334 साँप के विष से विषग्रस्त हैं; विष खाने से निश्चय ही उस व्यक्ति को हानि होगी।335 (141) (586)
हलाहला केवल एक बार ही किसी के जीवन का अंत करता है। इस शिक्षा का विरोध करने के बाद वह दस करोड़ युगों तक जलता है। (142) (587)
धैर्यपूर्वक और अहिंसक रूप से, अपने हृदय में प्रेम और दया भाव रखते हुए, (बुद्ध) इस संसार और इसके देवताओं की सहायता करते हैं। इसलिए आपको उनका विरोध नहीं करना चाहिए। (143) (588)
चाहे कुछ मिले या न मिले, चाहे सम्मान मिले या अपमान, बुद्ध पृथ्वी के समान स्थिर होते हैं; इसलिए उनका विरोध नहीं करना चाहिए।338 (144) (589)

---

331 संपहंसिता 332 भोट्टा, बीजेटीएस पढ़ता है भेटटा ("द ब्रेकर") 333 चेट्टा 334 सोता 335 पसाहंसिता 336 अखिलो 337 विसालो। BJTS में विसालो ("दर्द से मुक्त") 338 एनीघो लिखा है

ऋषि सभी के प्रति एक समान हैं, चाहे वह हत्यारा देवदत्त हो, चोर अंगुलिमालक हो, धनपाल हो या राहुल।339 (145) (590)
उन्हें क्रोध का अनुभव नहीं होता; उनमें कभी वासना नहीं पाई जाती। बुद्ध सभी के प्रति एक समान हैं, चाहे वह हत्यारा हो या उनका अपना पुत्र। (146) (591)
किसी वृक्ष के शीर्ष पर पड़ा हुआ वस्त्र देखकर—340—त्यागा हुआ, मल से सना हुआ—व्यक्ति को सिर झुकाकर हाथ जोड़ना चाहिए; उस ऋषियों के ध्वज की पूजा करनी चाहिए। (147) (592)
अतीत, वर्तमान और भविष्य के सभी बुद्ध उस ध्वज से स्वयं को शुद्ध करते हैं; इसलिए उनकी पूजा की जानी चाहिए। (148) (593)
मैं अपने हृदय से विनय को लगभग गुरु के समान ही धारण करता हूँ। मैं अपना जीवन हमेशा विनय को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए व्यतीत करूँगा। (149) (594)
विनय ही मेरा झुकाव है; यह मेरी चलती-फिरती ध्यान साधना है। मैं विनय में अपना घर बनाता हूँ; विनय ही मेरा चारागाह है। (150) (595)
मैंने विनय में निपुणता प्राप्त की है, मानसिक शांति में कुशल हूँ। महान वीर, गुरु, उपाली अब आपके चरणों की आराधना कर रहे हैं। (151) (596)
मैं गाँव-गाँव और शहर-शहर घूमकर संबुद्ध और धम्म के अभ्यास को श्रद्धांजलि अर्पित करूँगा। (152) (597)
मेरे सारे दोष (अब) जलकर राख हो गए हैं; समस्त (नया) अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह, मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (153) (598)

---

339 अकाथंकाथि, ilt. "नहीं कह रहा, 'क्यों'?" 340 अनेजो 341 विराजो 342 खट्टा। BJTS खंता पढ़ता है ("नम्र" "विनम्र")

मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था। तीनों ज्ञान प्राप्त हो गए हैं; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (154) (599)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (155) (600)
इस प्रकार पूज्य उपालि थेरा ने ये श्लोक कहे। उपालि थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

टीका अनुवाद: उ लू पे विन

3-6. थेरा उपाली की जीवनी पर टीका

3-6.1. नागरे हंसावतीया से शुरू होने वाले श्लोक थेरा उपाली की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा की थी और इस-उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया था। वे पद्ममुत्तरा के समय

हंसावती नगर के एक समृद्ध ब्राह्मण परिवार में पुनर्जन्म लेकर आए। एक दिन धर्म के उपदेश सुनते हुए उन्होंने गुरु को एक भिक्षु को अनुशासन के धारकों (विनयधार) में सर्वोच्च स्थान देते हुए देखा, स्वयं भी सेवा कर्म किए और उस पद की कामना की।

3-6.2. उन्होंने जीवन भर अच्छे कर्म किए और देवताओं और मनुष्यों के बीच पुनर्जन्मों के चक्रों से गुजरते हुए, इस बुद्ध के प्रकट होने के समय एक नाई के घर में उनका पुनर्जन्म हुआ। उन्हें उपाली नाम दिया गया। वयस्क होने पर, वे अनुरुद्ध आदि छह योद्धा राजकुमारों (क्षुत्तियों) के प्रिय सहयोगी बन गए और तथागत जब अनुपिया वन में निवास कर रहे थे, तब उन्होंने उन छह योद्धा राजकुमारों (क्षुत्तियों) के साथ संसार त्याग दिया, जो उस समय भिक्षु बनने के लिए संसार त्याग रहे थे। उनके भिक्षु बनने की प्रक्रिया का वर्णन केवल पिटक ग्रंथ में मिलता है। उन्होंने संन्यास लिया, उपसंपदा दीक्षा प्राप्त की, गुरु से मानसिक अभ्यास के लिए शिक्षा ली और इस प्रकार कहा: "आदरणीय महोदय! कृपया मुझे वन में निवास करने की अनुमति दें।" बुद्ध ने उत्तर दिया: "हे भिक्षु! वन में रहने वाले को केवल एक ही भक्तिमय कर्तव्य में वृद्धि होती है; परन्तु मेरी उपस्थिति में रहने से तुम्हें विपश्यना और ग्रंथ विद्या, दोनों ही भक्तिमय कर्तव्यों की पूर्ण पूर्ति प्राप्त होगी।" उन्होंने गुरु के वचनों को विधिवत स्वीकार किया, विपश्यना के कर्म किए और अल्पकाल में ही अर्हंतत्व प्राप्त कर लिया। गुरु ने उन्हें स्वयं विनय पिटक का संपूर्ण पाठ पढ़ाया। इसके बाद उन्होंने तीन विवेकपूर्ण निर्णय लिए, अर्थात्: भरुकचेह की कथा (या स्थल), अज्जुक की कथा (या स्थल) और कुमारकस्सपा की कथा। गुरु ने उनके प्रत्येक निर्णय पर उन्हें बधाई दी, तीनों निर्णयों का वर्णन किया और उन्हें विनय विद्या के ज्ञाताओं में सर्वोच्च स्थान दिया।

441. इस प्रकार प्रधान (एतदग्ग) का पद प्राप्त करने पर, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया, प्रसन्न हुए और नागरे हंसवतीया से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया, ताकि वे अपने पूर्व कर्मों को स्पष्ट कर सकें। वहाँ, हंसवतीया, हंसवती में, यह वटी है, परिबद्ध है, जिसमें ब्राह्मणी बत्तखों, हंसों या हंसों (हंस) द्वारा चारों ओर घूमने (या चक्कर लगाने) की विशेषता है, एक ऐसे शहर में जो चारों ओर से एक दीवार से घिरा हुआ है; वह शहर हंसवती है। दूसरे शब्दों में, एक तरफ से बांधे गए झील, कमल के तालाब, बड़े दलदली भूमि आदि में रहने वाले कई हंस इधर-उधर, इधर-उधर, इधर-उधर दौड़ते रहते हैं, इस प्रकार हंसवती, उस हंसवती शहर के भीतर। सुजातो नीमा ब्राह्मणो (सुजाता नाम का ब्राह्मण) सुवंशी रूप से जन्मा; इस प्रकार सुजाता (सुवंशी) का जन्म हुआ, और वह इस कथन से अछूता रहा: "निष्कासित, अप्रतिबंधित"; यही अर्थ है। असितिकोतिनिकयो (अस्सी करोड़ का संचित खजाना) वह जिसके पास अस्सी करोड़ तक का धन था; पाहुतधनधञ्ञावा (अनेक धन और धान के भंडार से युक्त) सुजाता नाम का एक ब्राह्मण था, जिसके पास अथाह धन और धान का भंडार था; यही संबंध है।

442. फिर से, अपनी उसी महानता को दर्शाने के लिए, उन्होंने अज्जायको से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, अज्जायको (सही पाठ करने वाला विद्वान) तीन वेदों आदि के ज्ञान में दूसरों का शिक्षक है; मंतधारो (मंत्र धारण करने वाला) शब्द मंत को ज्ञान (पञ्ञा) कहा गया है; अथब्बनवेद, भाषाशास्त्रीय व्याख्याओं आदि जैसे ग्रंथों को समझने का ज्ञान रखने वाला; इस प्रकार, इसका अर्थ है। तिञ्ञम् वेदाना पारगू (तीनों वेदों के दूसरे तट पर गया) तीन वेदों के सर्वांगीण अंत तक पहुँच गया है, जिन्हें इरुवेद, यजुवेद और सामवेद माना जाता है; इस प्रकार, इसका अर्थ है; लक्खणे (संकेत में) संकेतों और विशेषताओं के ग्रंथ में; साथ ही वे ग्रंथ जिनमें बुद्धों, मौन बुद्धों, विश्व-राजाओं, पुरुषों और स्त्रियों की हथेलियों और तलवों पर दिखाई देने वाले चिह्नों का स्पष्टीकरण दिया गया है; यही अर्थ है; इतिहासे (परंपरागत ज्ञान में), उस ग्रंथ में जो प्राचीन प्रवचनों की स्पष्ट व्याख्या करता है, अर्थात्: "ऐसा ही हुआ है; ऐसा ही हुआ है"। सधम्मे (अपने धर्म में), अपने ब्राह्मण ज्ञान में; पारमिं गतो (पूर्णता प्राप्त कर ली), सर्वांगीण चरम सीमा को प्राप्त कर लिया; यही अर्थ है।

443. परिब्बजा (भ्रमणशील तपस्वी) निगंठ (जैन) के जो भी शिष्य थे, वे सभी सभी प्रकार के विधर्मी विचारों के धारक थे; महिया (पृथ्वी पर) उस समय पृथ्वी की सतह पर विचरण करते थे; इस प्रकार, संबंध है।

445. जब तक विजेता का उदय (या प्रकट होना) नहीं हुआ, तब तक बुद्ध जैसा कोई कथन संभव नहीं था; यही अर्थ है।

446. अच्चयेन अहोरत्तम (दिन और रात के बीतने के साथ अहोरत्तम) अनेक वर्षों के बीतने के साथ, यही अर्थ है। शेष का अर्थ समझना अत्यंत सरल है।

454. मंतानी पुत्तो (मंतानी का पुत्र) नाई की पुत्री मंतानी का पुत्र; माह और दिन की पूर्णता के कारण, पुन्नो, इस प्रकार, नाम प्राप्त करने वाला; यही अर्थ है; उस गुरु का शिष्य; हेस्सति (होगा) हो जाएगा; यही संबंध है।

455. एवम् कित्तयी सो बुद्धो, बुद्ध ने इस प्रकार घोषणा की, इसलिए (उन्होंने) प्रतापी पद्ममुत्तरा, एवम् (इस प्रकार) इस प्रकार; सुनंदम् (अच्छी खुशी) प्रसन्नता देने वाले अच्छे तरीके से; कित्तयी (घोषणा की) अपनी भविष्यवाणी दी; इस प्रकार, अर्थ है। सब्बम् जनम् (सभी लोग) मनुष्यों की पूरी भीड़ को उचित रूप से; हंसायन्तो (उन्हें हंसाना) उन्हें प्रसन्न करना; सकम बलम् (अपनी शक्ति) अपना जोश; दसायन्तो (दिखाना) प्रकट करना; इस प्रकार; संबंध है।

456. इसके बाद, बिना किसी अंतराल के, अपने उच्च ज्ञान के फलस्वरूप अपनी शक्ति (या प्रभाव) प्रदर्शित करने के लिए, उन्होंने कतंजलि से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया। उस समय, उस बुद्ध के प्रकट होने से पहले, सभी लोग अपने हाथों को जोड़कर तपस्वी सुनंदा की आराधना करते थे; यही संबंध है। बुद्ध करं करित्वाना (बुद्ध के लिए जो करना चाहिए वह करके), इस प्रकार, यद्यपि सभी लोगों द्वारा सम्मानित किया गया, उन्होंने यह कहते हुए अहंकार नहीं किया कि "मुझे भेंटों से सम्मानित किया गया है", और बुद्ध के उपदेशों के अनुसार जो करना चाहिए वह करके; गतिं (जाकर) अपने जन्म से, शोधेति (शुद्ध करता है) सर्वांगीण शुद्ध और निर्मल किया; यही अर्थ है।

457. सुत्वना मुनिनो वाचम (ऋषि का वचन सुनकर) सर्वज्ञ बुद्ध के वचन; श्लोक की रचना में सुगमता के लिए दीर्घ स्वर 'आ' को संक्षिप्त करके "वाचम" लिखा गया है। इस ऋषि के वचन सुनकर, "आने वाले समय में, गौतम नाम से जाने जाने वाले गुरु संसार में आएंगे"; यथा (जबकि) जिस प्रकार से मैं तेजस्वी गौतम को देखता हूँ, उसी प्रकार, करम् (कार्य) मुख्य कार्य, पुण्य कर्मों का संचय; कस्सामि (मैं करूँगा) मैं करूँगा; मे (मेरा) संकल्प (इच्छा) इच्छा, बुद्धिमानी से ध्यान रखते हुए; अहु (था) हो गया; इस प्रकार, संबंध है।

458. एवहम चिन्तायित्वाना (इस प्रकार विचार करके) इस प्रकार विचार करने पर, अर्थात्: "मैं वह करूंगा जो किया जाना चाहिए"। किरियम चिन्तायिम ममा, मैंने सोचा कि मुझे क्या करना चाहिए; यही अर्थ है। क्याहम कम्मम आचरामि (मैं कौन सा कार्य करता हूँ?) मैंने किस प्रकार का पुण्य कर्म किया है, क्या मैंने वास्तव में उसे पूरा किया है? यही अर्थ है। पुञ्ञक्खेत्ते अनुत्तरे (पुण्य के अद्वितीय क्षेत्र में) तीन रत्नों में, जो संपूर्ण पुण्य का पात्र बन गया है और किसी से श्रेष्ठ नहीं है; यही अर्थ है।

459. अयं च पात्हिको भिक्खु (यह भिक्षु पात्हिका) इस भिक्षु को "पात्हिका, पाठकर्ता" नाम इसलिए मिला क्योंकि वह पाठकर्ता और ग्रंथ का पाठक था, पाठकर्ताओं के बीच (या उनमें) सरभञ्ञ (पाठक, भिक्षु) की तरह पढ़ने वाला; बुद्ध के विधान में, साथ ही विनय में, सभी पाठकों में; अग्गनिक्खित्टो (मुख्य भंडार) उस स्थान पर रखा गया, वह स्थान, उस भिक्षु द्वारा प्राप्त पद (या स्थिति); पत्थये (मैं आकांक्षा करता हूँ) मैंने इच्छा की (या कामना की); इस प्रकार, अर्थ है।

460. इसके बाद, आगे चलकर, पुण्य कमाने के अपने तरीके को दर्शाने के लिए, उन्होंने एक श्लोक कहा, जिसकी शुरुआत इस प्रकार है: इदं मे अमितं भोगम्: मे ए (मेरा); अमितं (अतुलनीय या असीमित) धन का वह ढेर जिसका कोई माप नहीं है; अक्खोभं (अविचलित) विचलित करने में असमर्थ; सागररूपमं (सागर के समान) सागर के समान; तेन भोगेन (उस धन से) बुद्ध का आश्रम (आराम) उसी धन से बनाया गया था; इस प्रकार, संबंध है।

474. भिक्षुओं की सभा में बैठे सर्वज्ञ बुद्ध ने भिक्षुओं के लिए अपने द्वारा रचनात्मक रूप से निर्मित मठ को स्वीकार किया और उस आश्रम (आराम) के लाभों को बताते हुए ये शब्द कहे; इस प्रकार, संबंध है।

475. कैसे? यो सो (जो कोई भी हो) वह जो तपस्वी है, भिक्षुओं के लिए मठ का दानदाता है; सुमापितम् (सुगठित) बुद्ध का भिक्षुओं का मठ इतनी विधिपूर्वक तैयार किया गया है कि उसमें कक्ष, गुफा, पंडाल, महल, बरामदा, दीवार आदि शामिल हैं; पादासि (अर्पित, या दिया) प्रसन्न हृदय से इस प्रकार अर्पित किया गया है; तमहम कित्तयिसामि (मैं इसकी घोषणा करूँगा) मैं प्रकट करूँगा, मैं स्पष्ट करूँगा, कि वह तपस्वी; यही अर्थ है। सुनाथा मम भासतो (आप सभी मेरी बात सुनें) जब मैं आपसे बोलूँ तो कृपया मेरे शब्दों को सुनें; अपने कान लगाकर, बिना किसी मानसिक भ्रम के, उन्हें अपने मन में रखें; यही अर्थ है।

476. इसलिए, दान के रूप में दिए गए आश्रम (आराम) के परिणाम (या फल) को दर्शाने के लिए, उन्होंने एक श्लोक का उच्चारण किया, जिसकी शुरुआत "हत्थी अस रथा पत्ती" से होती है। यह आसानी से समझ में आ जाता है।

477. संघारामस्सिदम्फलम (यह भिक्षुओं के लिए मठ का परिणाम (या फल) है) यह भिक्षुओं के मठ संघाराम के दान का फल है, वांछनीय फल जिसे समृद्धि या गौरव के रूप में माना जाता है जिसका भविष्य में आनंद लिया जाना चाहिए; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

478. चालासीतिसहस्सानी (छियासी हजार) छह हजार अस्सी हजार; समालंकटा (सुशोभित) ठीक से सजाया और तैयार किया हुआ; नारीयो (स्त्रियाँ) महिलाएँ; विचित्रवत्था भरणा (विविध वस्त्र और आभूषण) अनेक आकृतियों के विविध वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित; आमत्तमणिकुंदला (मोती की बालियाँ) मोती और रत्नों से जड़ी बालियाँ; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

479. उन स्त्रियों की असाधारण सुंदरता का वर्णन करते हुए उन्होंने आलारपम्हः से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा: "जिन स्त्रियों की आँखें बड़ी और घनी होती हैं, रत्नों के समान, उनकी पलकें मधुमक्खियों के समान घनी होती हैं और उनकी आँखें सुंदर होती हैं; यही अर्थ है। "हसुला (मुस्कुराती हुई)" स्वाभाविक हँसी, सुंदर; यही अर्थ है। "सुसञ्ञा (अच्छी समझ) सुगठित शरीर की बारीकियाँ; "तनुमाज्झिमा" (पतला पेट) छोटा पेट; बाकी सब सरल है।"

484. तस्स धम्मेसु दयादो (उनके धम्म के उत्तराधिकारी) गौतम, जो धर्म में आध्यात्मिक हिस्सेदारी के प्राप्तकर्ता हैं; ब्रासो (गोद का पुत्र) जो गर्भ में जन्मा है, क्योंकि वह अरहंत पद में स्थापित हो गया है, और उसने महान मार्ग के प्रथम चरण के रूप में सही मार्ग के प्रथम

चरण के रूप में सभी प्रकार की बुराइयों को त्याग दिया है, और इसी प्रकार धर्म के उपदेशों को सुनकर, गले, तालू, होंठ आदि पाँच स्वर स्थानों पर प्रहार करके; वह व्यंजन में दस प्रकार की चतुराई से युक्त है; यही अर्थ है। धम्मनिम्मितो (धम्म द्वारा सृजित) वह धर्म और समानता से सुप्रसिद्ध होगा, बिना किसी शस्त्र और छुरी के; अतः, यही अर्थ है। उपालि नाम नामेन (उपालि के नाम से जाना जाने वाला), हालाँकि वह मंतानीपुत्त के नाम से, माता के नाम से जाना जाता है, क्योंकि वह अनुरुद्ध आदि के साथ गया और भिक्षु बन गया, इसलिए वह राजसी योद्धाओं के निकट लीन हो गया और उनके देह-मन से परिपूर्ण हो गया; इस प्रकार, गुरु का शिष्य, उपालि के नाम से जाना जाता है; हेस्सति स (होगा), हो जाएगा; अतः, यही अर्थ है।

485. Vinaye pāramim patvā (विनय में सिद्धि प्राप्त करने वाला) विनय पिटक में सर्वांगीण और चरम सीमा तक पहुँचने वाला, ṭhānāṭhāne ca kovido (उचित स्थान पर निपुण या नहीं) परिस्थिति में चतुर और बुद्धिमान या नहीं; यही अर्थ है। Jinasāsanam dhārento (विजयी के उपदेशों का पालन करने वाला) विजयी के तीन पिटकों को, उनके द्वारा दिए गए उपदेश को, झुकने, सुनने, सोचने, याद करने आदि जैसे कर्मों द्वारा स्मरण करने और मन में रखने वाला; यही अर्थ है। Viharissati'nāsavo (विषमुक्त अरहंत जीवित रहेगा) दोषरहित अरहंत, चारों आसनों (इरियापथ) से गिरे बिना अपने शरीर को घुमाकर धारण करेगा; यही अर्थ है।

487. अपारिमेय्युपादाय (असीमित होने के कारण) ने लाखों की संख्या में सृजन किया, आरंभ; पत्तेमि तव शासनम् (मैं आपके मार्गदर्शन की कामना करता हूँ) मैंने आपके मार्गदर्शन की कामना करते हुए कहा: "मैं गौतम बुद्ध के मार्गदर्शन में अनुशासन (विनयधारा) के नियमों का पालन करने वालों में श्रेष्ठ हो जाऊँ।" यही अर्थ है। सो मे अत्थो (मुझे उसकी आवश्यकता है) सर्वोच्च श्रेणी के माने जाने वाले उस लाभ को मैंने प्राप्त कर लिया है; यही अर्थ है। सब्बसमयोजनक्खयो (सांसारिक बंधनों का अंत) मैंने सभी सांसारिक बंधनों (संयोजन) का अंत प्राप्त कर लिया है; यही संबंध है; निर्वाण प्राप्त हो गया है; यही अर्थ है।

488. ताज्जितो (धमकाया गया) शाही दंड से पीड़ित; सूलावुतो (सूली पर चढ़ाया गया) खंभे पर स्थिर (या सूली पर चढ़ाया गया); पोसो (मनुष्य) खंभे पर लटका हुआ व्यक्ति; सातम (आनंद) मधुर सुख; अविन्दन्तो (न प्राप्त करना) अनुभव न करना; परिमुत्तिम वा (संपूर्ण मुक्ति) जैसा वह चाहता है, लेकिन सर्वांगीण मुक्ति; इस प्रकार, संबंध है।

489-90. महावीर (हे महान वीर!) हे वीरों में श्रेष्ठ! भवदण्डेन तज्जितो (जन्म के दंड से ग्रस्त) मैं, जन्म के दंड से पीड़ित होकर; कम्मसूलावुतो (कर्म के दायरे में स्थिर) अच्छे और बुरे कर्मों के दायरे में फंसा हुआ; सन्तो (होना) विद्यमान; पिपासावेदनाय (प्यास के दर्द से) प्यास से पीड़ित होकर; अत्तितो (पीड़ित) अभिभूत और दुखी होकर; भवे सातम् (अस्तित्व में सुख) पुनर्जन्मों के चक्रों में मधुर सुख (संसार) न विंदामि (मुझे नहीं मिलता) मुझे प्राप्त नहीं होता। परिमुत्तिम (सर्वांगीण मुक्ति): तीन ज्वालाओं से जलकर, जिन्हें या तो कामवासना, क्रोध और मोह की अग्नि, या फिर नरक, जगत की उत्पत्ति (कप्पुष्ठान) और दुःख की अग्नि के रूप में गिना जाता है, सर्वांगीण मुक्ति (या स्वतंत्रता) का उचित साधन प्राप्त होता है; गवेसामि (मैं खोजता हूँ): इसी प्रकार मैंने भी अपनी खोज की; यही संबंध है। जिस प्रकार राजा के आदेश से यहाँ से दंड भोगकर आने वाला व्यक्ति सर्वांगीण मुक्ति की खोज करता है, उसी प्रकार मैं भी, जीवन के दंड को प्राप्त करके, अपनी पूर्ण मुक्ति की खोज करता हूँ; यही संबंध है।

491.2. उदाहरण और दृष्टांत के माध्यम से पुनर्जन्मों के चक्रों से मुक्ति दर्शाने के लिए उन्होंने यथाविसादो से शुरू होने वाले श्लोक कहे। वहाँ विषाद (अवसाद या उदासी) का अर्थ है, जो चारों ओर से विषैले साँपों द्वारा काटा गया हो; सर्पों द्वारा काटा गया हो; इस प्रकार, एक ऐसा व्यक्ति जो उदास है, उस और उसके जैसे विष से चारों ओर से पीड़ित है; उस विष के पूर्ण विनाश और उन्मूलन का साधन और मार्ग बनकर, अगदम् (उपचार) औषधि; गवेसय्या (खोज) करे; उसकी खोज में जाकर; विषघातकम् (विषनाशक), विष का नाश करने वाला; अगदम् (उपचार) औषधि; पस्सेय्या (देखना) पाए। विसम्हा (विष से) स्वयं अपनी खोज में प्राप्त औषधि को पीकर, परिमुत्तिया अस्स (सर्वांगीण रूप से मुक्त हो जाएगा) ठीक उसी प्रकार जैसे वह विष से सर्वांगीण मुक्ति के कारण प्रसन्न हो जाएगा; यही संबंध है।

493. तथाएवहम (मैं भी) जिस प्रकार विष से ग्रसित व्यक्ति विषनाशक औषधि पीने से प्रसन्न हो जाता है, उसी प्रकार मैं भी अज्ञान और भ्रम से ग्रस्त होकर, सद्धम्मागदमेसाहम (मैं अच्छे धर्म की औषधि खोजता हूँ), मैं अच्छे धर्म के रूप में गिनी जाने वाली औषधि की खोज करता रहा; यही अर्थ है।

494-5. धम्मगदं गवेसन्तो (धम्म की औषधि की खोज करते हुए), जन्म-जन्म के कष्टों (संसारदुक्ख) के विष के नाश के लिए धम्म की औषधि की खोज करते हुए; अद्दक्खिम सक्यसासनम् (मैंने शाक्यों की विधि देखी), मैंने गौतम की विधि (सासाब) देखी, जो शाक्य वंश से उत्पन्न हुए थे; यही अर्थ है। अग्गम सब्बोसधानम् तम् (यह सभी प्रकार की औषधियों में श्रेष्ठ है), शाक्यों की विधि (सासन) मानी जाने वाली धम्म की वह औषधि सभी प्रकार की औषधियों में श्रेष्ठ और सबसे उत्तम है; यही अर्थ है। सब्बसल्ल विनोदनम् (सभी प्रकार के कांटों को निकालने वाला); कामवासना आदि सभी कांटों को जड़ से उखाड़ने और शांत करने वाला; धम्मोषधम (आध्यात्मिक उपचार): धम्म नामक औषधि का सेवन करके; सब्बं विषम् (सारा विष), जन्म-जन्मों के चक्रों (संसारदुक्ख) के समस्त दुख-विष को; समुहनिम,

मैंने जड़ से उखाड़ फेंका है, मैंने विनाश किया है; यही संबंध है। अजरामरम (वृषण नहीं), और मृत्यु नहीं, दुख के विष को ठीक से निकाल कर, वृद्धावस्था रहित, वृद्धावस्था से मुक्त, मृत्यु रहित, मृत्यु से विमुख; सीतिभावम् (शीतलता की अवस्था): निर्वाण, जो शीतलता की अवस्था है, क्योंकि कामवासना आदि की ज्वाला को त्याग दिया है; फसयिम (मैंने स्पर्श किया) मैंने स्वयं को देखा; यही संबंध है।

496. फिर, दुराचार के निवारण का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए, उन्होंने यथा भूतत्तितो से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा। वहाँ, यथा (जैसे) जिस भी प्रकार से; भूतत्तितो (भूत द्वारा सताया गया) एक शक्तिशाली राक्षस द्वारा सताया और उत्पीड़ित; पोसो (मनुष्य) एक व्यक्ति; भूतग्गहेना (भूत द्वारा पकड़ा गया) एक राक्षस द्वारा बंदी बनाया गया; पिलितो (उत्पीड़ित) व्यथित; भूतस्मा (भूत से) एक राक्षस के बंदी बनाए जाने से; परिमुक्ति (सर्वांगीण मुक्ति के लिए) वह अपनी मुक्ति के लिए किसी तांत्रिक (जादूगर) की शरण लेगा।

497. कोविदम् (विशेषज्ञ) जादू-टोने के उस विशेषज्ञ की तलाश में, वास्तव में, एक चतुर जादूगर को खोजने जैसा था; अतः, वह जादूगर, तस्स (उसकी) उस व्यक्ति के भीतर रहने की स्थिति को, जो एक राक्षस द्वारा जकड़ा हुआ था; विहने (मार डालना चाहिए) नष्ट कर देना चाहिए; समूलंच (जड़ सहित) जड़ के साथ, ऐसा करके कि भविष्य में राक्षस कोई उपद्रव (अनसेवक) न कर सके; विनाशये (नष्ट कर देना चाहिए) कुचल देना चाहिए (या मिटा देना चाहिए); इस प्रकार, संबंध है।

498. महावीर (महान वीर!) सबसे श्रेष्ठ वीर! तमग्गहेना (अंधकार से ग्रस्त) दुराचार के अंधकार में फँसे होने से पीड़ित, तत्'एव (इसी प्रकार) उसी तरह; तमतो (अंधकार से) दुराचार के अंधकार से; परिमुत्तियाद् (सर्वांगीण मुक्ति के लिए) बचने के उद्देश्य से, ज्ञानलोकम् (बुद्धि का प्रकाश, या ज्ञान) मैं ज्ञान के प्रकाश की खोज करूँगा; इस प्रकार, संबंध है।

499. किलेशतमाशोधनम् (दुराचार के अंधकार को दूर करने वाला) तब उस निरंतर समय में, मैंने शाक्यमुनि को देखा, जो दुराचार के अंधकार का नाश करने वाला है; यही अर्थ है; इसलिए (वह) शाक्यमुनि, मुझे (मेरा) मेरा; तमम् (अंधकार) गोधूलि, दुराचार का अंधकार, जादू-टोने के चिकित्सक के समान, भूतकम (ग्रस्त), किसी राक्षस द्वारा बंदी बनाए जाने के समान; विनोदेसी (हटा दिया गया) दूर कर दिया गया; यही संबंध है।

500. संसारसोतम् (संसार की धारा) मैंने इस प्रकार बार-बार जन्म लेने की नदी से बचकर उसे अच्छी तरह से नष्ट कर दिया; चिन्दिम (मैंने काटा) मैंने कटवाया; तन्हासोतम् (इच्छा की धारा) लालसा की महान बाढ़ को; निवारयिम (मैंने रोका) मैंने उसका नाश किया और पुनरावृत्ति को रोका; यही अर्थ है। भावम् उग्घातयिम सब्बम् (मैंने सभी प्रकार के जन्मों का नाश किया) मैंने इंद्रिय सुख आदि सभी नए जन्मों को जड़ से नष्ट कर दिया; यही अर्थ है; जड़ से नष्ट करते हुए, मैंने उसे जादू-टोना करने वाले चिकित्सक की तरह जड़ से ही नष्ट कर दिया।

501. इसके बाद, निर्वाण के सर्वांगीण अंत को इंगित करने (या उसका उदाहरण देने) के लिए, उन्होंने यथा से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा। वहाँ, वह पक्षी जो एक भारी, घृणित अजगर को खाता (या निगलता) है, वह गरुड़ (बड़ा भारी पक्षी) है; वह पक्षी जो किसी भी भारी प्राणी (या अजगर) को पकड़ता है; गरुड़-राजा; अपना भोजन, अपना चारागाह, लेटे हुए चलता है, किसी भी तरह से दूसरों के हाथ में नहीं जाता, इसलिए वह पन्नगो (सांप) है; लेटे हुए चलने वाला; अजगर को पकड़ने के लिए, जिससे उसे यह नाम मिला; ओपताति (गिरता है) नीचे गिरता है; समंता (चारों ओर से); योजनसतम (सौ योजन) सौ योजन के आकार का; महासरम (महान झील) विशाल महासागर है, विक्खोभेति (उथल-पुथल मचाता है) ठीक उसी तरह जैसे यह अपने पंखों की हवा से विशाल महासागर को हिला देता है; इस प्रकार, संबंध है।

502. अतः, आकाश में विचरण करने वाले गरुड़ पक्षी ने, जो आकाश में विचरण करने का आदी है, अजगर को पकड़ लिया, उसे सिर नीचे की ओर लटका दिया; उसे इधर-उधर विभिन्न प्रकार के उत्पीड़न से परेशान करते हुए, दृढ़ता से पकड़कर, वहाँ से चला गया।

503. आदरणीय महोदय! हे महान वीर! जिस प्रकार गरुड़ पक्षी ने बलवान अजगर को पकड़कर उसे भगा दिया, उसी प्रकार मैं भी, जो असंक्षिप्त (निर्जन) हूँ, कारणों से रहित, उचित अभ्यास के मार्ग (या रूप) में खोज करते हुए, एक हजार पाँच सौ प्रकार के दोषों का निवारण करता हूँ; मैंने त्याग के द्वारा, स्वयं को विशिष्ट रूप से अलग करके शुद्धि की; यही संबंध है।

504. जिस प्रकार गरुड़ पक्षी सर्पों को पकड़कर भोजन करते हुए जीवन व्यतीत करता है, उसी प्रकार मैं भी, धम्मवरम् (उत्कृष्ट धम्म) सबसे उत्कृष्ट सत्य, दिष्टो (देखकर) स्पष्ट रूप से देखकर, शांतिपादम् (शांत मार्ग) निर्वाण का यह मार्ग; अनुत्तरम् (अतुलनीय) सही श्रेष्ठ मार्गों और उनके फलों से, जो श्रेष्ठ नहीं हैं, आदाय (लेकर) मैं उसे ग्रहण करके और उसका उपयोग करके (या उसका सहारा लेकर) जीवन व्यतीत करता हूँ; यही संबंध है।

505. अब, निर्वाण प्राप्त करने की कठिनाई को दर्शाने के लिए, उन्होंने आसावती नाम लता से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा। वहाँ, इस लता के लिए सभी देवताओं की इच्छा और झुकाव विद्यमान है, इस प्रकार, आसावती (इच्छा से युक्त) नाम से जानी जाने वाली लता

चित्तलता वन (चित्तलता उपवन में) उस वन उद्यान में जो अनेक प्रकार की लताओं (या लताओं) से झाड़ियों या जंगलों में बदल गया है; जातो (जन्म) उग आई हैं; यही अर्थ है। उस लता का तस्स (उसका) वस्सा सहस्सेन (हजार वर्षों के साथ) हजार वर्षाओं (या वर्षों) के बीतने के साथ; एकं फलं निब्बत्तते (फल को जन्म देता है) फल ग्रहण करता है (या फल धारण करता है)।

506. तामदेवा (दिव्य प्राणी) उस आसावती लता को; ताव दूरफलम् (इतने लंबे समय बाद फल देने वाला); देव (दिव्य प्राणी) तावती ऋषियों; पयिरुपासन्ति (चारों ओर से) ध्यान देते हैं; लतुत्तम (सर्वोत्तम लता) लताओं में वह सर्वोत्कृष्ट लता, जो आसावती के नाम से जानी जाती है; इस प्रकार, वह देवों को प्रिय थी; इस प्रकार, संबंध है।

507. सतसहस्सुपादाय (एक लाख को करीब से लेते हुए) एक लाख वर्षों को आरंभिक बनाकर; ताहम परिकारे मुनि (मैं उस ऋषि की सर्वव्यापी सेवा करता हूँ) मोन को ज्ञान कहा जाता है; हे पूज्य ऋषि, ज्ञान के स्वामी, सर्वज्ञ! मैं उस महिमावान के सर्वव्यापी रूप से निकट आकर उनकी सेवा करता हूँ; सयम पातं नमस्सामि (मैं सुबह और शाम को उनकी पूजा करता हूँ) मैं प्रतिदिन सुबह और शाम को दो बार प्रणाम करता हूँ और उनकी आराधना करता हूँ; यथा देवा (जैसे देवता), जैसे तावतींशा के दिव्य प्राणी दिन-रात आसावती लता की सर्वव्यापी रूप से देखभाल करते हैं; इस प्रकार, संबंध है।

508. अवज्झा परिचर्या (सर्वांगीण साधना व्यर्थ नहीं होती) क्योंकि बुद्ध के दर्शन से निर्वाण प्राप्त हुआ, अतः बुद्ध की परिक्रमा करना (या उनकी सेवा करना) और उचित धार्मिक पालन करना व्यर्थ नहीं होता, न ही निष्फल (या निरर्थक) होता है, नमस्सना (प्रणाम करना) भी निष्फल (अमोघो) नहीं होता। इसी प्रकार, वास्तव में, दूर से आकर (दूर से) जन्म-जन्मों की यात्रा से आकर; सन्त (होना) विद्यमान; खणोयम् (यह क्षण) बुद्ध के प्रकट होने का यह क्षण; न विरोधयि (समाप्त नहीं हुआ) आगे नहीं बढ़ा; मुझसे आगे नहीं बढ़ा; यही अर्थ है।

509. विचिनानितो (चयन) जांच-परख करते हुए, मैं जिसने बुद्ध के दर्शन के कारण निर्वाण प्राप्त कर लिया है, भविष्य में निकटवर्ती कारण स्वरूप अस्तित्व में अपनी धारणा की जांच-परख करते हुए, मैं उसे नहीं देखता; यही संबंध है। निरुपाधि (अस्तित्व का कोई आधार नहीं), स्कंध और किलेस जैसे अस्तित्व के आधारों से रहित, विप्पमुत्तो (स्पष्ट रूप से मुक्त) सभी प्रकार के दोषों से मुक्त हो जाता हूँ; उपसन्तो (शांत) मैं दोष (किलेस) की प्रज्वलित ऊष्मा के अभाव में शांत मन से विचरण करता हूँ; यही संबंध है।

510. फिर से, बुद्ध के दर्शन का उदाहरण देते हुए, उन्होंने यथा पि पदुमम् नाम से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा: सूर्यरामसेन (सूर्य की किरणों से) जैसे कमल, अर्थात् सूर्य की किरणों के प्रवेश से, फूल खिलता है; महावीर (हे महान वीर!) परम श्रेष्ठ वीर! ठीक उसी प्रकार, मैं बुद्ध द्वारा प्रचारित सत्य (धम्म) की किरणों की शक्ति से बुद्धरामसेन (बुद्ध की किरणों के माध्यम से) फूल के रूप में खिल उठा हूँ; यही अर्थ है।

511-12. बुद्ध के दर्शन से निर्वाण की कल्पना को प्रकाश में लाते हुए, उन्होंने यथा बलका से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा। हे बलकायोनिंबी (सारस के गर्भ में) सारस के जन्म में; सदा (हमेशा) हर समय; पुमा (पुरुष) ऐसा कोई पुरुष नहीं है; जब पुरुष नहीं है तो सारसों का गर्भ धारण कैसे होता है, यदि ऐसा है तो? गज्जमानेसु (गरज में) जब वर्षा के बादल ध्वनि करते हैं, गरजते हुए वर्षा के बादल को सुनकर; ता (वे) मादा सारस, सदा (हमेशा) हर समय; गभम गंहंति (गर्भधारण प्राप्त करना) अंडे देती हैं; इस प्रकार, अर्थ है। याव (जब तक) किसी भी समय के लिए; मेघोनगज्जति (वर्षा का बादल गरजता नहीं है) वर्षा का बादल ध्वनि नहीं करता; इतने लंबे समय तक, इतने समय के लिए; लंबे समय तक; गर्भ में अंडा धारण करना। जब भी; जब भी वर्षा होती है; गरजने के बाद वर्षा का बादल बरसता है और वर्षा होती है; तब, उस समय, गर्भ से; अंडा गिर जाता है।

513. इसके बाद, आगे बढ़ते हुए, उदाहरण के फलस्वरूप सफलता (या आशीर्वाद) की ओर इशारा करते हुए, उन्होंने एक श्लोक का उच्चारण किया जो पदुमुत्तरा बुद्धस्स धम्ममेघेना (धम्म के वर्षा-बादल के साथ) से शुरू होता है; वर्षा-बादल के माध्यम से, जिसे बुद्ध पदुमुत्तरा के पूर्ण अर्थ के साथ शिक्षण शब्दावली माना जाता है; गज्जतो (गर्जन का) गर्जन करते हुए, उपदेश देते हुए; धम्ममेघस्स सद्देना (धम्म के वर्षा-बादल की ध्वनि के साथ) ध्वनि के प्रवाह के साथ, धम्मगब्बम (सत्य की गर्भाधान) में, उस समय, दान, नैतिक उपदेश आदि जैसे पुण्य कर्मों के संचय से गर्भवती कोख, पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति की ओर अग्रसर; अगन्हिम (मैंने लिया) इसी प्रकार; इस प्रकार, संबंध है।

514. सतसहस्सुपादात (एक लाख को निकट से धारण करके) एक लाख युगों का सृजन करते हुए, आरंभ; पुण्यगब्बम् (पुण्य का गर्भ) दान, नैतिक उपदेश आदि जैसे अच्छे कर्मों का संचय; धारेमि (मैं धारण करता हूँ) मैं पूरा करता हूँ। जब तक धम्म मेघो (आध्यात्मिक वर्षा-बादल) धम्म का उपदेश; न गज्जति (गर्जन नहीं करता) बुद्ध द्वारा उपदेशित नहीं किया जाता; तब तक, मैं, भरतो (बोझ से) बार-बार जन्मों के चक्र (संसार) के बोझिल गर्भ-भार से न पामुचोआमि (मैं मुक्त नहीं होता) मैं स्वयं को मुक्त नहीं करता, मैं अलग नहीं होता; इस प्रकार, संबंध है।

515. शाक्यमुनि (हे शाक्य ऋषि) आदरणीय महोदय! हे शाक्य वंश के मूल! यदा (जब) उस समय, महान राजा सुद्धोदन, आपके पिता, के समय, रम्मे (सुखद में) रम्मे (आनंद में); कपिलवत्थवे (कपिलवत्थु में) कपिलवत्थु नामक नगर में, गज्जति (गरज) आपने धर्म के वर्षा-बादल की घोषणा की; तब, मैं, भरतो (बोझ से) जन्म-जन्मों के गर्भ-भार (संसार) से; परिमुच्चिम् (मैं चारों ओर से मुक्त हो गया), मैं मुक्त हो गया; इस प्रकार, संबंध है।

516. इसके बाद, आगे चलकर, उन्होंने स्वयं द्वारा प्राप्त किए गए श्रेष्ठ मार्ग और फल (मग्गफल) को दर्शाते हुए, 'सुञ्ञतम' से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा। वहाँ, स्वयं के अभाव और स्वयं से संबंधित होने आदि के कारण, 'सुञ्ञतम' (शून्यता) से स्पष्ट मुक्ति मिली; कामवासना के आत्म-संकल्प के अभाव के कारण, 'अपाणिहितम' (अनिर्देशित) से भी स्पष्ट मुक्ति मिली; मैंने प्रभावी रूप से उस तक पहुँचकर विकास किया; यही संबंध है। 'चतुरो च फले सब्बे' (चारों फल भी) मैंने भिक्षुत्व के चारों फलों की कल्पना की; यही अर्थ है। 'धम्मेवं विजतायम अहम्' (मैंने इस प्रकार धम्म के उलझावों को सुलझाया) इस प्रकार, मैंने संपूर्ण धम्म में उलझे हुए जंगल को सुलझाया और स्पष्ट रूप से नष्ट किया; यही अर्थ है।

पाठ के दूसरे भाग पर टिप्पणी समाप्त हो गई है।

517. इसके बाद, आगे चलकर, स्वयं द्वारा प्राप्त विशिष्टता को दर्शाते हुए, उन्होंने 'अपराइमेयुपादाय' से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा। वहाँ, 'अपराइमेयु (अमापनीय)' का अर्थ है वह जिसे मापा (या तुलना) नहीं किया जा सकता; वर्षों की संख्या के रूप में मापना और गणना करना असंभव है। उपाध्याय (के अनुसार या उसके संदर्भ में) आरंभ करते हुए, उस असीम युग (कप्पा) के संदर्भ में (या उसके अनुसार) तव शासनम् (आपकी व्यवस्था) के लिए मैंने इस प्रकार प्रार्थना की: "अभी आने वाले समय में, प्रतापी गौतम की व्यवस्था के दौरान, मैं अनुशासनात्मक नियमों (विनयधर) के प्रमुख धारक बनूँ।" पत्थेमि वर्तमान काल का शब्द है, जिसका अर्थ भूतकाल पत्थेसिम (मैंने प्रार्थना की) है, इस प्रकार इसका अर्थ है। इसलिए मे अत्थो (वह मेरी इच्छा थी) उस इच्छा को आकांक्षा (या प्रार्थना) के रूप में गिना गया; मे (मेरा) मेरे द्वारा; अनुप्पत्तो (तदनुसार प्राप्त) मेरे द्वारा पूर्ण किया गया; इस प्रकार इसका अर्थ है। शांतिपदम् (शांतिपूर्ण मार्ग) निर्वाण तदनुसार प्राप्त और संपन्न किया गया है; इस प्रकार इसका संबंध है।

518. विनय में, पारमिम् पट्टो (पूर्णता प्राप्त की) कि मैंने अपनी उपलब्धि के कारण विनय पिटक में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया; यथा पि पाथिको इसि (जैसे ऋषि प्रसिद्ध हुए) जैसे प्रतापी पद्ममुत्तरा के उपदेश में अनुशासनात्मक नियमों के धारकों (विनयधर) में श्रेष्ठ तपस्वी भिक्षु लोकप्रिय और प्रसिद्ध हुए, मैं भी उसी प्रकार प्रसिद्ध हुआ; यही अर्थ है। न मे समासमो अत्थि (मेरे समान कोई नहीं) विनय को स्मरण करने में मेरे समान और एकरूप कोई नहीं है; यही अर्थ है; शासनम् (उपदेश) उपदेश और नसीहत के रूप में माना जाने वाला उपदेश (शासन); धारेमि (मैं धारण करता हूँ) मैं उसका पालन करता हूँ; यही अर्थ है।

519. एक बार फिर, अपनी विशिष्टता दर्शाते हुए, उन्होंने विनये खंडके च पि से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, विनये (विनय में) दोनों विभंगों में, विश्लेषण (या विभाजन) करता है; खंडके (खंडकों में) शरीर, महावग्ग (प्रमुख समूह) और चूलवग्ग (लघु समूह) में; तिकच्छे च (तीन गुना में भी) संघदिशेष अपराधों के त्रिक और पाचित्तिय अपराधों के त्रिक आदि में; पंचमे (पाँचवें में) विनय के पाँचवें खंड में, जिसे परिवार पाठ के नाम से जाना जाता है; एत्था (यहाँ) इस संपूर्ण विनय पितक में; विमति (संदेह) मेरा संदेह; नत्थि (कोई नहीं है) अस्तित्व में नहीं है। अक्खरेही (अक्षरों के साथ) वे अक्षर जो स्वर अ से शुरू होते हैं, विनय पितका में शामिल हैं; ब्यांजने (व्यंजन)) या व्यंजन का से शुरू होने वाले व्यंजनों में, विमति (संदेह) मुझमें कोई संदेह नहीं है; इस प्रकार, संबंध है।

520. निग'गहे पाटिकम्मे च (निंदा या दोषारोपण करने के साथ-साथ प्रतिफल देने में) बुरे भिक्षुओं को दोषारोपण या नियंत्रित करना और पाप करने वाले भिक्षुओं को विश्राम अवधि, परीक्षा आदि के रूप में निवारण या प्रायश्चित करना; थानात्हानेच (उचित और अनुचित स्थान पर) अच्छी मुद्रा में; कोविदो (कुशल), चतुर; इस प्रकार, अर्थ है। ओसाराने (पुनःस्थापन) उचित शांति या उपयुक्त विश्राम के माध्यम से, निंदा आदि जैसे कार्यों द्वारा, पुनःस्थापन और प्रवेश की अनुमति देते समय; वुत्थापाने (उठाने में) पाप से उठाने और निष्पाप बनाने में चतुर; इस प्रकार, संबंध है। सब्बथा पारमिं गतो (सर्वत्र पूर्णता प्राप्त कर चुके) विनय से संबंधित सभी प्रक्रियाओं में पूर्ण लक्ष्य प्राप्त कर चुके, निपुण और चतुर; अतः, यही अर्थ है।

521. Vinaya khandhake cā pi (in the vinaya and khandhaka also) in the afore said in the vinaya and as in khandhaka; padam (शब्द) सूत्र शब्द; nikkhipitvā (गिराकर) रखा या जमा किया; ubhato vinivethetvā (दोनों से खोलकर) vinaya और khandhaka दोनों के दृष्टिकोण से, उत्पन्न किया और सुलझाया और विधि लाई; rasato (सार से) जो किया जाना चाहिए; osareyyam (नीचे जाएगा) मैं पुनर्स्थापना करता हूँ।

522. निरुत्तिया च कुसालो (शब्द-व्युत्पत्ति में निपुण) मैं "वृक्ष, वस्त्र, घड़ा, माला, मन" आदि जैसे शब्दों में निपुण हूँ। अत्थानात्थे च कोविदो (लाभ और हानि में निपुण) लाभ बढ़ाने और हानि घटाने में निपुण और कुशल; अनञ्ञातम् मया नत्थि (मेरे लिए कुछ भी

अज्ञात नहीं) ऐसा कुछ भी नहीं है जो मेरे द्वारा ज्ञात, बोधित या स्पष्ट रूप से देखा न गया हो; यही अर्थ है। एकग्ग सत्तु सासाने (गुरु के विधान में एकमात्र प्रमुख) अनुशासनात्मक नियमों (विनयधारा) में निपुण लोगों में मैं ही सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ और सबसे उत्कृष्ट हूँ; यही अर्थ है।

523. रूपाद्धे अहम् अज्जा (वर्तमान में मैं रूप के दर्शन में हूं) वर्तमान समय में, शाक्यपुत्तस्स सासाने (शाक्य पुत्र के युग में) महिमावान के उपदेश के युग में, मैं रूप के दर्शन में हूं, रूप के दर्शन में, अनुशासन (विनय) के संबंध में निर्णय लेते हुए; सब्बम् कंखम् (सभी संदेह) संपूर्ण संदेह; विनोदेमि (मैं दूर करता हूं) मैं विनाश करता हूं; इस प्रकार संबंध है। चिंदामि सब्बसमसेयम (मैं सभी संदेहों को काटता हूं) मैं उन सोलह प्रकार के संदेहों को काटता हूं, समाप्त करता हूं और पूर्णतः मिटा देता हूं जो इन तीन कालखंडों के संबंध में उत्पन्न हुए हैं जैसे: "क्या मैं वास्तव में अतीत में था?" इत्यादि; इस प्रकार अर्थ है।

524. पदम् अनुपदंचापि (शब्द और अनुवर्ती शब्द) यानी पहले आने वाला शब्द, बाद में आने वाला शब्द और अन्य शब्द; अक्खरम (वर्णमाला) एक के बाद एक वर्णमाला। ब्यांजनम् (व्यंजन) यानी दस प्रकार के व्यंजन जैसे मृदु, कठोर आदि; निदाने (प्रस्तावना में) यानी ऐसी प्रस्तावना में जो इस प्रकार शुरू होती है: उस समय, इत्यादि; परियोसाने (अंत में) यानी उपसंहार में; सब्बत्थ कोविदो (हर जगह कुशल) यानी सभी छह स्थानों में निपुण; इस प्रकार, अर्थ है।

525. इसके बाद, आगे चलकर, परमेश्वर के गुणों को प्रकट करने के लिए, उन्होंने राजा बलवा से शुरू होने वाला यह श्लोक कहा। वहाँ बलवा (शक्तिशाली) एक राजा के समान है जो शारीरिक शक्ति या सेना से संपन्न है; परम (अन्य) अन्य शत्रु राजाओं या प्रतिद्वंद्वी राजाओं की सेना; निग्गान्हित्वा (पकड़ लिया) बिना किसी अवशेष के बंदी बना लिया, या उन्हें भगा दिया; ताप (गर्म कर देगा) जला देगा, उन्हें गर्म कर देगा, उन्हें दुखी कर देगा; विजिनित्वाना संगामम् (युद्ध जीत लिया) युद्धक्षेत्र में, जहाँ अन्य लोग एकत्रित हुए थे, युद्ध जीत लिया; सेना, विशिष्ट रूप से जीत लिया, विजय प्राप्त कर ली; नगरम तत्था मापे (वह वहाँ एक शहर बनाएगा) वह विजय स्थल पर बने नए शहर में महल, बरामदा आदि जैसी विशेषताओं से सुसज्जित मेरा निवास स्थान बनाएगा; यही अर्थ है।

526. पाकारं परिखांचापि (दीवार और खाई भी): निर्मित नगर में वह ईंटों और चमकदार सफेद चूने के गारे से बनी एक दीवार बनवाएगा; इस प्रकार संबंध स्थापित होता है। परिखांचापि (और खाई भी): वह मिट्टी की खाई, पानी की खाई और सूखी खाई भी बनवाएगा; एसिकं द्वारकोष्ठकम् (स्तंभ या खंभा और द्वार): वह चार मंजिला आदि द्वार, द्वारों पर बड़े-बड़े गढ़, नगर को सुंदर बनाने के उद्देश्य से ऊंचे खंभे और स्तंभ बनवाएगा। अत्ताहके च विविधे (सभी प्रकार के अत्यंत ऊंचे निगरानी बुर्ज): चार मंजिला आदि; कारये (वह बनवाएगा): वह उन्हें बनवाएगा; इस प्रकार संबंध स्थापित होता है।

527. सिंहाटकम् चच्चातंच (चौराहे और भीतरी गलियाँ): वह न केवल नगर-दीवार आदि का निर्माण करवाएगा, बल्कि ऐसे चौराहे भी बनवाएगा जिनमें चार मुख्य सड़कें आपस में जुड़ती हों और उनके भीतर छोटी सड़कें और गलियाँ हों; यही संबंध है। सुविभट्टंतरापणम् (सुव्यवस्थित घर-दुकानें या बाजार): वह विभिन्न भागों से हिस्सा लेकर हजारों बाजारों का सुव्यवस्थित निर्माण करवाएगा; यही अर्थ है। कारय्य सभाम् तत्था (वहाँ वह एक हॉल बनवाएगा): उस निर्मित नगर में, एक सभा भवन, कानूनी विवादों के लिए एक हॉल; अत्थानत्था विनिच्चयम् (लाभ या हानि के संबंध में निर्णय): वह समृद्धि और विपत्ति पर निर्णय लेने के उद्देश्य से एक निर्णय-कक्ष बनवाएगा; यही संबंध है।

528. निग्घतत्तम ऐमत्तानम् (शत्रुता का वध करने के लिए) शत्रु राजा को विधिवत खदेड़ने के उद्देश्य से; चिद्दचिद्दंच जैनितुम (छील या खुलापन जानने के लिए) दोषों या अन्य बातों की जानकारी प्राप्त करने के लिए; बलकायस्स रक्खाय (बलवान शरीर की रक्षा करने के लिए) सेना के संग्रह, सशस्त्र बल के समूह, जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल सैनिक शामिल हैं, की देखभाल करने के लिए; अतः (वह) राजा, नगर का स्वामी, सेनापच्चम (सेना का पुत्र) मुख्य मंत्री, सेना का नेता, सेना का स्वामी; तपेति (स्थान) पद या स्थिति के भीतर स्थापित करना; इस प्रकार, अर्थ है।

529. Ārakkhatthāya bhaṇḍassa (खजाने की रक्षा के लिए) सोने, चांदी, मोती, रत्न आदि जैसे शाही खजाने की रक्षा के लिए, चारों ओर से सुरक्षा के उद्देश्य से; me (मेरा) मेरा; bhaṇḍam mā vinassi (खजाने को नष्ट न होने दें) nidhānakusalam (खजाने को दफनाने में चतुर) देखभाल करने में चतुर और कुशल; naram (मनुष्य) व्यक्ति; bhaṇḍarakkham (खजाने की रक्षा) उस राजा ने खजाने के रक्षक को खजाने में नियुक्त किया; इस प्रकार, संबंध है।

530. ममत्तो होति यो राञ्ञो (जो राजा के प्रति आत्मप्रेम से ग्रस्त हो जाता है) वह बुद्धिमान व्यक्ति जो आत्मप्रेम से ग्रस्त होकर एक तरफा हो जाता है; वुद्धिम यस्सा च इच्छति (जिसकी उन्नति की कामना करता है) जो अपने राजा की बढ़ती समृद्धि की कामना करता है; तस्सा (उसका) वह बुद्धिमान व्यक्ति जो प्रसन्न हो गया है; अधिकरणम् (विवाद) ने निर्णय लेने के लिए प्रधान स्वामी का पद या ओहदा दिया; मित्तस्सा (मित्र का) मित्रता की ओर उचित रूप से आगे बढ़ना; इस प्रकार, संबंध है।

531. उप्पातसु (शकुनों में) जैसे टूटते तारे, विभिन्न दिशाओं में आग का जलना आदि; निमित्तसु (संकेतों में) जैसे चूहों द्वारा काटे जाने और शरीर के टुकड़े हो जाने जैसे संकेतों में, उन ग्रंथों में जो पाठक को इस प्रकार बताते हैं: "यह संकेत सुखद है, यह संकेत अप्रिय है"; लक्खणेसु च (हस्तरेखा शास्त्र में भी) उन ग्रंथों में जो सीखने वाले को पुरुषों और महिलाओं की हथेलियों और तलवों पर रेखाओं और अन्य संकेतों के बारे में बताते हैं; कोविदम् (विशेषज्ञ) चतुर; अज्जायाकम (ब्राह्मण ग्रंथों का विद्वान) अनेक शिष्यों को व्याकरणिक व्याख्या सिखाने वाला शिक्षक; मंतधरम् (मंत्रों या ताबीजों का वाहक) राजा पोरोहित्ट (निजी पुरोहित के पद या श्रेणी में) उस बुद्धिमान व्यक्ति को, जो तीन वेदों के समान माने जाने वाले मंत्रों को अपने स्मृति में रखता है, अपने निजी पुरोहित के उच्च पद पर नियुक्त करता है।

532. एतेहंगेहि सम्पन्नो (इन विशेषताओं से युक्त) वह राजा जो इन विशेषताओं से युक्त है, इन विशेषताओं से विस्तृत रूप से युक्त हो गया है; पावुच्चति (कहा जाता है), कहा जाता है (या कहा जाता है) कि: खत्तिया, राजसी योद्धा; इस प्रकार, संबंध है। सदा रक्खन्ति राजानम् (वे राजा की सदा रक्षा करते हैं) सेना के ये सेनापति और मंत्री, हर समय निरंतर उस राजा की रक्षा और देखभाल करते हैं (या उसकी रक्षा करते हैं)। कैसे? चक्कवाको व दुक्खितम् (दुखी की रक्षा करने वाले लाल हंस की तरह), संकट में अपने रिश्तेदार की देखभाल करने वाले लाल हंस पक्षी के समान; इस प्रकार, अर्थ है।

533. हे महान वीर! हे परम श्रेष्ठ वीर! जिस प्रकार वह राजा, जो सेनापति आदि गुणों से संपन्न होकर नगरद्वार बंद करके उचित रूप से जीवन व्यतीत करता है, उसी प्रकार तुम भी शत्रुओं को मार गिराकर, उस वीर योद्धा के समान हो जिसका शत्रु पराजित हुआ हो; सद्वकस लोकस (स्वर्गीय जगत सहित लोकस) जो दिव्य प्राणियों के साथ मिलकर बनता है; धर्म और समानता से परिपूर्ण धम्मराया (सत्य का राजा), जो दस सिद्धियों से युक्त धर्म की सर्वांगीण पूर्ति के कारण राजा बना है, वह "धर्मराज, धर्मात्मा राजा" है; पवुच्चति (कहा जाता है) इस प्रकार कहा गया है; यही संबंध है।

534. सत्य (धम्म) के राजा होकर तित्थिये निहारित्वाना (विधर्मियों को उखाड़ फेंककर), विधर्मियों के पूरे समूह को उखाड़ फेंककर, उन्हें बिना किसी अवशेष के ले जाकर, उन्हें अनुयायियों से रहित कर दिया; ससेनकम मारंचापि (मार को भी उसकी सेना सहित), वासवत्ती के दिव्य जगत के मार को भी उसकी सेना सहित उखाड़ फेंककर; तमनधकारम्, अंधा कर देने वाला अंधकार, विधमित्वा (दूर करके), अंधकार के रूप में माने जाने वाले भ्रम के अंधकार को दूर और कुचल कर; धम्मनगरम (आध्यात्मिक शहर) शहर, जिसे या तो सैंतीस बोधिपक्खिया धम्म के रूप में गिना जाता है, या खंड, आयतन, धातु, पशिक्का समुप्पदा, बाला, बोज्झांगा, गहन पद्धति (गंभीरण्य) और सर्वांगीण रूप से स्थापित और स्थापित किया गया है; इस प्रकार, अर्थ है.

535. सीलम्पाकारकम तत्था (वहाँ नैतिक उपदेशों की दीवार है) उस स्थापित आध्यात्मिक नगर में, चार सर्वव्यापी शुद्ध नैतिक उपदेशों की दीवार, ज्ञानम ते द्वारकोष्ठकम (आपका ज्ञान ही द्वार है) आपका सर्वज्ञ ज्ञान, आपकी इच्छाओं और प्रवृत्तियों का ज्ञान (आसयनुसय), आपका भविष्य का ज्ञान, आपका अतीत का ज्ञान, आदि, क्रमानुसार, ज्ञान ही नगर का द्वार है; यही अर्थ है। सद्धा ते एसिका वीरा (हे महान वीर, आपकी आस्था (सद्धा) ही स्तंभ है) आदरणीय महोदय! हे दृढ़ प्रयास! बुद्ध दीपांकर के चरणों के आधार से शुरू होकर, सर्वज्ञ ज्ञान से बनी आपकी दृढ़ आस्था ही अलंकरणों से सुशोभित स्तंभ है; यही अर्थ है। द्वारपालो च सांवरो (और द्वारपाल तुम्हारा आत्मसंयम है) इंद्रियों के छह द्वारों पर तुम्हारा आत्मसंयम ही सुरक्षा और रोकथाम का रक्षक है, द्वारपाल है, द्वार का संरक्षक है; यही अर्थ है।

536. सतिपत्थानामात्तला (मानसिक जागरूकता एक चौकी के समान) आपकी चार प्रकार की मानसिक जागरूकता (सतिपत्थाना) एक चौकी के समान है, चाहे वह खुली हो या छत से ढकी हो; पन्ना ते चच्चरम् मुने (हे ऋषि! आपका ज्ञान (या बुद्धि) सड़कों का मिलन है) हे ज्ञान के स्वामी, आदरणीय ऋषि! चमत्कारों और अन्य अनेक प्रकार के ज्ञान के समान आपका ज्ञान नगर की सड़कें, गलियाँ और चौराहे हैं जहाँ अनेक सड़कें मिलती हैं; यही अर्थ है। इद्धिपादं च सिंहातम (जादुई शक्ति का आधार चार चौराहे) आपकी जादुई शक्तियों के चार आधार, जिन्हें इच्छा, परिश्रम, मन और परीक्षा (विमांस) के रूप में गिना जाता है, चार सड़कों का संगम हैं; धम्म-वीथी-सुमापितम् (अच्छी तरह से निर्मित आध्यात्मिक सड़क) वह आध्यात्मिक नगर तैयार किया गया है, अच्छी तरह से निर्मित है जिसमें सैंतीस बोधिपक्खिया धम्म के रूप में गिनी जाने वाली सड़कें हैं; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

537. सुत्तंतम अभिधम्मन् च, सुत्त और अभिधम्म, यहां आपके आध्यात्मिक शहर में सुत्त, अभिधम्म और विनय हैं; केवलम (संपूर्ण) *****(पृ.533) बुद्ध के ऐसे संपूर्ण नौ अंग जो सुत्त, गेय आदि के रूप में उपदेश देते हैं; धम्मसब्भा (कानून का औपचारिक हॉल) कानूनी विवादों का हॉल; इस प्रकार, अर्थ है.

538. शून्य में उचित रूप से रहना (अनित्य और निराकार), अनात्म के उचित स्पष्ट ज्ञान से प्राप्त होता है, और अनित्यता के उचित स्पष्ट ज्ञान से प्राप्त निराकार में रहना। विहारंचप्पनिहितम् (अविवाहित रहना), दुःख (दुक्खा) के उचित स्पष्ट ज्ञान से प्राप्त होता है, और

दृढ़ता में रहना (स्थिरता), भिक्षुत्व के फल माने जाने वाले दृढ़ निश्चय में रहना, अविचल और शांत रहना; निरोधो च (निरस्त होना), निर्वाण), समस्त दुःख (दुक्खा) का निवारण। एसा धम्मकुटि तव (यह तुम्हारा धम्म कक्ष है), यह तुम्हारा निवास स्थान है, तुम्हारा धम्म-कक्ष है; यही इसका अर्थ है।

539. पाञ्ञाय अग्गो निक्खित्तो (ज्ञान में सर्वोच्च स्थान पर प्रविष्ट) बुद्धि के माध्यम से ज्ञानियों में श्रेष्ठ; इस प्रकार, थेरा को महिमावान द्वारा स्थापित और स्थापित किया गया; पाणिभाणे च (तत्काल उत्तर में) ज्ञान द्वारा किए जाने वाले कार्यों में, या उपयुक्त और मुक्त तत्काल उत्तर में; कोविदो (विशेषज्ञ) निपुण; नामेन सारिपुत्तो (सारिपुत्त, नाम से) सुप्रसिद्ध; तव (आपका) आपका धर्म का सेनापति, क्योंकि उसने आपके द्वारा प्रचारित धर्म के तीन पिटक संग्रह को अपनी स्मृति में रखा है, मुख्य स्वामी बनकर, सेना के अपने कर्तव्य का निर्वाह करता है; इस प्रकार, अर्थ है।

540. हे पूज्य ऋषि! जन्म और मृत्यु में निपुण (कटोपपाताकुसालो)! जन्म और मृत्यु में निपुण (कटोपपाते); इस प्रकार के जादूई शक्तियों में पूर्ण निपुण (इद्धिया पारमिं गतो); जैसा कि आरंभ में कहा गया है: "एक से अनेक रूप धारण करके, अनेक रूप धारण करके, एक रूप धारण करके" और इसी प्रकार, कोलिता नाम से विख्यात थेरा मोग्गल्लाना; यही संबंध है।

541. पोराणक वंशधरो (प्राचीन वंश के वाहक) आदरणीय ऋषि! ज्ञान के स्वामी! प्राचीन वंश के वाहक, परंपरा के निर्माता (परमपरम) उग्गतेजो (शक्तिशाली) स्पष्ट शक्ति; दुरासादो (हमला करना मुश्किल) हमला करना और प्रहार करना असंभव और कष्टदायी होगा; यही अर्थ है। धुतवादिगुणेनग्गो (तपस्या और भक्ति के गुण में सर्वोच्च) थेरा महाकस्सपा, तपस्या के अभ्यासों में सर्वश्रेष्ठ और प्रमुख, केवल तीन वस्त्र धारण करने से शुरू होने वाली तेरह कठोर प्रथाओं के गुण; तव (तेरा) आपका; अक्खादस्सो, शब्दावली बनाने में प्रमुख व्यक्ति; यही अर्थ है।

542. बहुस्सुतो धम्मधारो (धर्म के स्मरण में श्रेष्ठ विद्वान) आदरणीय ऋषि! चौरासी हजार धर्मों के प्रचुर संग्रह को सुनने के कारण, और प्रतापी बुद्ध और भिक्षुओं के पुरोहितों से सीखने के कारण, सर्वथा महत्वपूर्ण धर्मों को स्मरण करने के कारण, छह लाख स्मरणित धर्मों की अनेक गणनाओं के साथ-साथ मानसिक जागरूकता (सतिपत्थान) आदि को धारण करने के कारण, धर्म के वाहक आनंद; सब्बपाठी च सासने (धर्मशास्त्र में सभी को पढ़ें) बुद्ध के धर्मशास्त्र में, भिक्षुओं में श्रेष्ठ और प्रमुख, थेरा आनंद, जो सभी उपदेशों को पढ़ते और दोहराते हैं; अतः, उन्हें सभापथी, सभी का अध्ययन करने वाला, धम्मरक्खो तव (आपके धर्म का रक्षक; संरक्षक) तीन पिटकों के धर्म के रूप में जाने जाने वाले आपके धर्म के खजाने का रक्षक और संरक्षक, धर्म के खजाने का न्यासी कहा जाता है; यही अर्थ है।

543. एते सब्बीटिक्कम्मा, इन सबसे परे जाकर, भगवान (महिमावान) सर्वज्ञ बुद्ध हैं, जिन्होंने सारिपुत्त आदि जैसे महान शक्ति वाले थेरों को भी त्याग दिया; पामेसि (मापा) ने केवल मेरा ही मापन किया, मानसिक ध्यान दिया; यही अर्थ है। विनिच्चयम् मे पादासि (मुझे निर्णय दिया) महिमावान पादासि (मुझे विनय में निर्णय दिया) ने विनय के ज्ञाता बुद्धिमान भिक्षुओं द्वारा दोषों की जाँच के लिए निर्देशित या उपदेशित किया और प्रकट किया, यहाँ तक कि मुझे ही इसका उत्तरदायित्व सौंपा।

544. यो कोचि विनये पण्हम (जो कोई विनय में प्रश्न पूछता है) जो कोई भिक्षु, बुद्ध का शिष्य, मुझसे विनय पर आधारित कोई प्रश्न पूछता है; तत्था (वहाँ) उसके द्वारा पूछे गए प्रश्न में; मुझे (मेरा); चिंता (सोचते हुए) कोई संदेह या शंका नहीं है; मैं उसे पूछे गए लाभकारी विषय का उपदेश देता हूँ; इस प्रकार, संबंध है।

545. यावता बुद्धखेत्तमहि (बुद्ध के क्षेत्र तक) बुद्ध के आदेश के क्षेत्र तक, सर्वज्ञ बुद्ध को छोड़कर, विनय (विनय में) विनय पिटक में या अनुशासनात्मक निर्णय लेने में; मादिसो (मेरे समान) मेरे समान कोई नहीं है; मैं ही प्रमुख था; भिय्यो (अधिक) मेरा श्रेष्ठ कौन होगा; इस प्रकार, संबंध है।

546. भिक्षुसम्घे निसीदित्वा (भिक्षुओं के बीच बैठे हुए) भिक्षुगण के बीच बैठे हुए गौतम ने सिंह की गर्जना की; कैसे? विनय (विनय में) दोनों विभंगों में; खंडकेसु (खंडकों में) महावग् और चूलवग् में, प्रमुख और गौण समूहों में; शब्द-च-इन के साथ, उपालिस्सा (उपालि का), उपालि के साथ समो (समान) कोई समानता नहीं है; इस प्रकार, उन्होंने इस तरह गर्जना की।

547. यावता (जब तक) जिस हद तक; बुद्ध भनीतम् (बुद्ध द्वारा कहा गया) बुद्ध द्वारा उपदेशित; नवांगम् (नौ गुना) गुरु द्वारा प्रकट की गई हर चीज, गुरु के ऐसे निर्देश जैसे सूत्र, गेय्या आदि; विनयोगदम् (विनय में गोता लगाना) इस प्रकार, इस तरह, जिसकी जड़ विनय है, जो विनय के भीतर प्रवेश कर चुका है; पासिनो (देखने वाले को) देखना।

548. मम कम्मम सरित्वाना, मेरे कर्मों को याद करके, शाक्यपुंगवो, गौतम, शाक्य वंश के प्रमुख; मम कम्मम (मेरा कर्म) मेरी पिछली आकांक्षा का कर्म सरित्वाना (याद करके) भूतकाल के अपने ज्ञान के माध्यम से वर्तमान में जानकर, भिक्षुओं के समूह के बीच में गए और मुझे इस प्रकार सर्वोच्च स्थान दिया: "हे भिक्षुओं! यह मेरे शिष्य भिक्षुओं में प्रमुख है, विनय के स्मरण के वाहक, यह है: उपालि; इस प्रकार, संबंध है।"

549. सतसहस्सुपादाव (एक लाख को ध्यान में रखते हुए) एक लाख युगों (कप्पा) में आरंभ करते हुए, अपत्थयिम (मैंने कामना की) मैंने आकांक्षा की; मुझे (मेरी) वह इच्छा; अनुपत्टो (तदनुसार प्राप्त किया गया) प्राप्त किया गया, मेरे द्वारा उचित रूप से प्राप्त किया गया; पारमिं गतो (पूर्णता प्राप्त की) विनय में चरम सीमा प्राप्त की; यही अर्थ है।

550. शाक्य वंश के राजाओं का शाक्यनाम (शाक्यों का); शुद्ध, पूर्व में, आसिम (मैं था) पूर्व में, मैं नाई था, आनंद का निर्माता था; तमजातिम् (वह जन्म) वह परिवार, वह गर्भ; विजहित्वा (त्याग कर) विशिष्ट रूप से त्याग कर; महेसिनो (महान ऋषि का) सर्वज्ञ का; पुत्तो जातो (पुत्र जन्मा), व्यवस्था (शासन) का पालन करने वाला, शाक्य का पुत्र, इस प्रकार गणना हुई है; यही अर्थ है।

551. इसके बाद, आगे चलकर, अपने स्वयं के दास परिवार में पुनर्जन्म के वृत्तांत को दर्शाने के लिए, उन्होंने 'इतो दुतियाके कप्पे' से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा। वहाँ, 'इतो (यहाँ से) भद्दा कप्पा (शुभ संसार) के अधीन दूसरे कप्पा (संसार) में एक राजसी योद्धा वर्ग का राजा, अंजसा नाम से जाना जाता था: अनंत-तेजो (अनंत शक्ति), वह शक्ति जिसकी गणना नहीं की जा सकती; अमितयसो (अतुलनीय प्रतिष्ठा), जिसका दल अतुलनीय था; महाद्धनो (अत्यधिक धनवान), कई हजार करोड़ धन का स्वामी; भूमिपालो (पृथ्वी का रक्षक), वह पृथ्वी का संरक्षक और रक्षक था; इस प्रकार, संबंध स्थापित होता है।

552. तस्सा राञ्ञो (उस राजा का) उस प्रकार के राजा का, मैं चंदन नाम से जाना जाने वाला पुत्र था। खत्तिवो (राजसी योद्धा) मैं एक युवा योद्धा राजकुमार था; इस प्रकार संबंध है। उपत्थद्धो (सहारा दिया गया) कि मैं जन्म के अहंकार, प्रतिष्ठा के पागलपन और धन के नशे से स्तंभित और समर्थित था; इस प्रकार अर्थ है।

553. नागसतसबस्सानी, एक लाख हाथी, मातंग, मातंग परिवार में जन्मा; तिधा पभिन्ना (तीन बार फटा) रस से लबालब, उन्मादी रूप से क्रोधित, तीन स्थानों से जिन्हें आंखें, कान और जननांग (या चमड़ी) (कोसा) माना जाता है, सब्बलंकारा भूसीता (सभी आभूषणों से सुशोभित) हाथी के सभी अलंकरणों से सुशोभित; सदा (हमेशा) हर समय, वे मुझे घेरे रहते हैं; इस प्रकार, संबंध है।

554. सबलेहि परेतोहम (मैं अपनी सेना से घिरा हुआ था) तब, उस समय, परेतो (घिरा हुआ) मैं अपनी शक्तिशाली सेना से चारों ओर से घिरा हुआ था; गंटुकामो (जाने की इच्छा से) बगीचे में जाने की इच्छा से; नागम, हाथी, आरुयह (सवार होकर) मैं सिरिका नाम के हाथी पर सवार होकर शहर से बाहर चला गया; इस प्रकार, संबंध है।

555. Caraṇena ca sampanno (आचरण से परिपूर्ण) पंद्रह धार्मिक आचरणों से परिपूर्ण, जैसे कि नियमों का पालन करके संयम बरतना आदि; suggadvāro (सुरक्षित द्वार) बंद हैं ऐसे छह द्वार जैसे आंखें आदि; susamvuto (संयमित) शरीर और मन उचित रूप से सुरक्षित; sambuddho (आत्मप्रबुद्ध) मौन बुद्ध, जिनका नाम देवल है; mama, मेरे; purato (सामने से) मेरी उपस्थिति में या मेरे सामने; āgacchi (आया) इस प्रकार आया, यही अर्थ है।

556. पेसेत्वा सिरिकम् नागम् (हाथी सिरिका को भेजकर) उस मौन बुद्ध को देखकर, जो आए थे, मैंने सिरिका नामक हाथी को मौन बुद्ध के सामने भेजा; असदयिम् (मैंने आक्रमण किया) मैंने मौन बुद्ध को धक्का दिया और उन्हें नाराज किया; यही अर्थ है। ततो संजातकोपो सो (उससे क्रोधित होकर) इसलिए, मेरे द्वारा अत्यधिक उत्पीड़ित और पराजित किए जाने के कारण, वह हाथी मुझसे क्रोधित हो गया; पदम् (पैर) अपने ही पैर; नुद्धरते (उठाया नहीं) सहन नहीं किया, बल्कि गतिहीन रहा; यही अर्थ है।

557. नागम् दुत्तमनम् दिस्वा (हाथी को क्रोधित देखकर): हाथी को क्रोधित और नाराज़ देखकर, मैंने मौन बुद्ध में क्रोध उत्पन्न किया। (बुद्धे, मौन बुद्ध में, कोपम् अकासिम) (मैं क्रोधित हुआ)। इस प्रकार अर्थ है। विहेसयित्वा सम्बुद्धम् (आत्मज्ञानी को सताने के बाद), मैंने मौन बुद्ध देवल को सताने और उन पर अत्याचार करने के बाद उद्यान में गया। (इस प्रकार संबंध है।)

558. सातमतत्थ न विंदामि (मुझे वहाँ सुख नहीं मिलता) उस आक्रमण में मुझे सुख नहीं मिलता, मुझे अपराध का प्रतीक मधुर सुख प्राप्त नहीं होता; यही अर्थ है। सिरो पज्जलितो यथा (जैसे सिर जल रहा हो) मेरा सिर मानो जल रहा हो; यही अर्थ है। परिणहेना दायीहामि (मैं चारों ओर से ज्वालाओं से जल रहा हूँ) मौन अवस्था में क्रोध करने के कारण मैं उग्र हो जाता हूँ और पश्चात् पश्चात् पश्चाताप की ज्वालाओं से जलने लगता हूँ; यही अर्थ है।

559. उसी बुरे कर्म के बल से, सागर के अंत तक फैली हुई सारी विशाल पृथ्वी, जिसकी चारों ओर की सीमाएँ सागरों में हैं, और उनके सीमावर्ती सागर भी; मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैं जल रहा हूँ; यही अर्थ है। जब इस प्रकार संकट उत्पन्न हुआ, तो मैं अपने पिता राजा के पास गया; मैंने उनसे यह कहा।

560 आसीविसमवा कुपितम (विषैले साँप के समान क्रोधित) सभी क्रोधित विषैले साँपों के समान, जलती हुई अग्नि के समान; मत्तम (पागल) तीन बार फूट पड़ा; दंतिम (दांतों वाला) दाँतों वाला, कुंजरम (हाथी) सबसे उत्तम हाथी; स्वयंभू, आसादयिम (मैंने आक्रमण किया) मैंने उस मौन बुद्ध पर प्रहार किया जो मेरी ओर सबसे उत्तम हाथी के समान आ रहे थे; इस प्रकार, संबंध है।

561. आसादितो मया बुद्धो (मेरे द्वारा अपमानित मौन बुद्ध) वह मौन बुद्ध, मेरे द्वारा अपमानित और चोट पहुँचाया गया; घोरो (भयानक) डरावना, क्योंकि उसे दूसरों द्वारा चोट नहीं पहुँचाई जा सकती थी; उग्गतपो (अत्यंत कठोर) स्पष्ट रूप से नैतिक; जिनो (विजेता) जिसने पाँचों मारों को जीत लिया था; इस प्रकार सिद्धियों से संपन्न मौन बुद्ध, मेरे द्वारा अपमानित किया गया था; यही अर्थ है, पुरा सब्बे विनाशामा (हम सब पहले ही नष्ट हो जाएँगे) क्योंकि मैंने उस मौन बुद्ध का अनादर किया था, हम सब नष्ट हो जाएँगे, हम विभिन्न तरीकों से नष्ट हो जाएँगे; हम राख के समान हो जाएँगे; यही अर्थ है। Khamāpessāma tam munim (हम उस ऋषि से क्षमा मांगेंगे) ताकि हम नष्ट न हों, हम उस ऋषि से क्षमा मांगेंगे; मौन बुद्ध; इस प्रकार, संबंध है।

562. यदि हम उनका अनुग्रह प्राप्त न कर सकें, तो मेरा सारा समृद्ध राज्य नष्ट हो जाएगा।

563. सुमेखालो कोसियो च (सुमेखाला और कोसिया) ये चारों शासक राजा, अर्थात् सुमेखाला और अन्य, आसादयित्वा (हमला करके) टकराए, अनादर किया, सरत्त्वका (अपने राज्यों सहित) नष्ट हो गए, अपने राज्यों और जिलों के निवासियों सहित दुखी हो गए; यही अर्थ है।

564. यदा कुप्पन्ति इसयो (जब तपस्वी क्रोधित होते हैं) जब भी, किसी भी समय, संयम (संयमित) शांत और आत्मसंयमी हों, शरीर पर नियंत्रण आदि रखते हुए; ब्रह्मचारिने (पवित्र) वे संन्यासी जो उत्तम साधना और सर्वोत्तम साधना का अभ्यास करते हैं; कुप्पन्ति (क्रोधित होना) अप्रिय मन वाले हो जाते हैं; तब, संसार, दिव्य जगत, पर्वत और महासागर सब नष्ट हो जाते हैं; यही संबंध है।

565. तीन हजार योजनों में स्थित एक स्थान पर लोगों को एकत्रित किया गया था। तीन हजार योजनों के क्षेत्र में स्थित इस प्रकार, उन ऋषियों की शक्ति का ज्ञान प्राप्त करके, उनके अपराध का क्षमादान करने के लिए, मैंने मौन बुद्ध के निकट जाकर उन्हें क्षमा किया।

566. अल्लावत्था (गीला वस्त्र) - वे सभी लोग जो मेरे साथ मिलकर गीले वस्त्रों से ढके हुए हैं, जिनके वस्त्र और ऊपरी वस्त्र पानी से भीगे हुए हैं; अल्लासिरा (गीला सिर) - गीले बालों वाला; पंजलिकता (जुड़े हुए हाथ) - सिर पर उंगलियों से बना हुआ पात्र; बुद्धस्स - मौन बुद्ध; पादे (पैरों के पास) - उनके पैरों के पास; निपतिवा (गिरकर) - लेटकर; इदम्वाचनम-ब्रवुम (यह शब्द बोला) - "हे महान वीर! कृपया हमें क्षमा करें" जैसे शब्द बोले और कहे; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

567. महावीर (महान वीर!) "आदरणीय परम श्रेष्ठ मौन बुद्ध! कृपया अज्ञानवश किए गए हमारे अपराध को क्षमा करें; कृपया हमारी गलती मिटा दें; कृपया हमारे अपराध को अपने स्मरण में न रखें;" यही अर्थ है। जनो (मनुष्य) लोगों का समूह; तम (वह) वह महिमावान; अभि (विशेष रूप से) विशेष रूप से निवेदन करता है; परिल्लाहम् (जलन) क्रोध और भ्रम से उत्पन्न हमारी मानसिक पीड़ा, विनोदेहि (कृपया दूर करें) कृपया इसे कम करें; नहीं (हमारा) रत्थम (राज्य) पूरे राज्य और जिले के निवासी; मा विनाशाय (कृपया नष्ट न करें) कृपया इसे बर्बाद न करें; यही अर्थ है।

568. Sadevamanusā sabbe (सभी, दिव्य और मनुष्य सहित) sadānavā (टाइटन सहित) टाइटन्स (असुरों) के साथ उनके प्रहार या आक्रमण आदि के साथ; sarakkhasā ayomayena kuṭena (राक्षसों सहित उनके लोहे के कवच के साथ) बड़े गदाओं के साथ; sadā (हमेशा) हर समय, mesiram (मेरा सिर) bhindeyyum (वे तोड़ देंगे) कुचल देंगे।

569. इसके बाद, क्षमा और क्रोध की अनुपस्थिति को प्रकट करने के लिए, उन्होंने 'दके अग्गी न संष्टाति' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, 'न संष्टाति' (ठीक से स्थिर नहीं रहता) जैसे जल में अग्नि ठीक से स्थिर नहीं रहती; 'सेले' (पत्थर पर) जैसे पत्थरों से बनी पहाड़ी पर बीज अंकुरित होकर नहीं उगता; 'अगादे' (औषधि में) 'किमि' (कीट) जैसे औषधि में कीट ठीक से स्थिर नहीं रहते; 'कोपो' (क्रोध) 'बुद्धे' (मौन बुद्ध में) 'न जायति' (उत्पन्न नहीं होता) उसी प्रकार, सत्य को ठीक से जान चुके मौन बुद्ध में मानसिक क्रोध, दुर्भावना उत्पन्न नहीं होती।

570. बुद्धों की शक्ति को प्रकट करने के लिए उन्होंने यथा च भूमि से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा। वहाँ, भूमि का अर्थ है पृथ्वी; अचला (अविचल) का अर्थ है स्थिर; जैसे पृथ्वी स्थिर है, वैसे ही बुद्ध भी स्थिर हैं; यही अर्थ है। सागर (महासागर) अप्पमेय्यो (असीमित) का अर्थ है जैसे विशाल सागर को मापना या उसका आकार ज्ञात करना असंभव है, वैसे ही बुद्ध भी असीम हैं; यही अर्थ है। जैसे आकाश (स्वर्ग) का अर्थ है अछूता आकाश अनंतको (अनंत) है, जिसका कोई अंत नहीं है, वैसे ही बुद्ध अक्खोभियो (अविचलित) हैं, जिन्हें विचलित करना या हिलाना असंभव है; यही अर्थ है।

571. इसके बाद, मौन बुद्ध के क्षमाप्रार्थनापूर्ण शब्दों को दर्शाने के लिए, उन्होंने सदा खन्त महावीर से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। यहाँ महावीर (महान वीर) वे बुद्ध हैं जो अत्यंत उत्कृष्ट परिश्रम से परिपूर्ण हैं, तपस्सिनो (तपस्वी), परिश्रम से युक्त, जिन्हें "तपो, तपस्या" नाम प्राप्त हुआ है, जो बुरे कर्मों को जलाकर नष्ट करते हैं; खन्त (धैर्यवान) वे जो धैर्यवान हैं और दूसरों के अपराध या दोष को क्षमा करते हैं; खमिता (क्षमाकर्ता) वे जो लाभप्रद हैं और जो दूसरों के अपराध या दोष को क्षमा करते हैं; सदा (सदा) हर समय बने रहते हैं; इस प्रकार, संबंध है। खन्तानम् खमितानांच (धैर्यवान (और) क्षमाकर्ताओं के भी) उन बुद्धों के, जो धैर्यवान हैं, धैर्य से युक्त हैं, जो क्षमाकर्ता

हैं, जो दूसरों के दोषों को क्षमा करते हैं, जो लाभप्रद हैं; गमनम् (जाना) में इच्छा आदि जैसे बुरे मार्ग पर जाने का कोई अस्तित्व नहीं है; यही अर्थ है।

572. सम्बुद्धो (स्व-प्रबुद्ध) मौन बुद्ध ने इस प्रकार यह शब्द कहा; परिल्लाहम् (जलते हुए) पाँचों जीवित प्राणियों को; विनोदयम् (निकालते हुए); महाजनस्स पुरतो (मनुष्यों के विशाल समूह के सामने) अपने राजा सहित एकत्रित हुए लोगों के विशाल समूह की उपस्थिति में, तदा (तब) उस समय; नभम्, आकाश, अब्भुग्गमि (ऊपर गया) ऊपर उठा; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

573. हे ज्ञानी! उस कर्म के कारण, हे दृढ़ ज्ञानी! हे दृढ़ता से संपन्न, मैं मौन बुद्ध के प्रति अनादर के कारण, अपने अंतिम जन्म में राजाओं के लिए नाई का निम्न कार्य करने का जन्म प्राप्त किया; उस जन्म से उचित रूप से आगे बढ़कर, दूसरों के लिए अपने अस्तित्व से परे जाकर, मैं निर्वाह नगर में प्रवेश कर गया।

574. तदापिमम महावीर (हे महान वीर!) तब भी, हे परम श्रेष्ठ! तदापि (तब भी), उस मौन बुद्ध पर आक्रमण करते समय भी, परिल्लाहम् (जलते हुए), स्वयंभू मौन बुद्ध ने मेरे आक्रमण से उत्पन्न शारीरिक और मानसिक पीड़ा को दूर किया; दैहमनम्, जलते हुए, सुसंतीतम (सुस्थापित), उसके बाद भी, मौन बुद्ध ने उस अपराध या दोष को सहन किया और मुझे दोष को दोष के रूप में सही ढंग से देखते हुए और मुझे परिणामस्वरूप पश्चाताप और प्रायश्चित से जलते और झुलसते हुए देखकर उसे क्षमा कर दिया; इस प्रकार, संबंध है।

575. अज्जपिमं महावीर (हे महान वीर! अब मैं भी) हे परम श्रेष्ठ वीर! अब, आपके मिलन के समय भी, त्यग्गीभि, तीन प्रकार की अग्नियों से, दैहमानाम् (जलते हुए) काम, क्रोध, मोह, या नरक, पतरस और पुनर्जन्मों की अग्नि के रूप में गिनी जाने वाली तीन प्रकार की अग्नियों से जलते हुए; सीतिभावम्, शीतलता की अवस्था, अपापायी (प्राप्त कराया) प्रतापी ने मुझे, जो पीड़ा से पीड़ित था, अप्रिय मन या मानसिक कष्टों के नाश द्वारा निर्वाण की शीतल अवस्था, यानी शांत शरीर और मन की अवस्था प्राप्त कराई; तयो अग्गी, जैसा कि कहा गया है, तीनों अग्नियों को शांत और बुझने के लिए मजबूर किया गया; इस प्रकार, संबंध है।

576. इस प्रकार, परमेश्वर को अपने हीन कर्मों का दर्शन कराने के बाद, अन्य श्रोताओं को भी प्रेरित करने के बाद, उन्होंने एक श्लोक का उच्चारण किया, जो इस प्रकार प्रारंभ होता है: "यसाम सोतावधान' अत्थि। वहाँ, येसम (जिसे भी) तुम्हें; सोतावधानम् (श्रोताओं को) कान लगाकर, अत्थि (है) विद्यमान; भासतो, बोलते हुए, सुनथा (सुनो) तुम सब सुनो और मेरे शब्दों को ध्यान में रखो जब मैं तुमसे बोल रहा हूँ; अत्थम तुम्हम पावक्खामि, मैं तुम्हें विषय बताता हूँ, यथा (जबकि) जिस भी तरीके से, मम (मेरा) मेरे द्वारा देखा गया; पदम् (मार्ग) निर्वाण; उसी प्रकार, मैं तुम्हें परम विषय या निर्वाण माने जाने वाले लाभ के बारे में बताऊंगा; इस प्रकार, संबंध है।"

577. इसे दर्शाने के लिए उन्होंने 'सयंभूमतम विमानेत्वा' से शुरू होने वाला श्लोक बोला। वहाँ, स्वयंभूम, स्वयं निर्मित, विमानेत्वा (कम करके), मौन बुद्ध का अनादर करने के कारण, जो स्वयं निर्मित थे, जो पवित्र श्रेष्ठ वंश के थे, जो शांत मन वाले और एकाग्रचित्त थे; तेन कम्मेना (उस कर्म से) किए गए दोष के कारण, अज्जा, अब, नीचयोनियम, निम्न गर्भ में, जातो, जन्म, अम्ही (मैं हूँ; इस समय) मैं नाई के रूप में जन्म लिया, ताकि दूसरों का भला कर सकूँ।

578. Mā vo khaṇam virādhetha (किसी भी क्षण को न चूकें) आप सभी बुद्ध के प्रकट होने के क्षण को न चूकें, उसे व्यर्थ न जाने दें; hi (वास्तव में) सत्यतः; khaṇātītā, जो क्षण बीत जाने पर रोते हैं, वे गुजर चुके प्राणियों के लिए शोक करते हैं, बुद्ध के प्रकट होने के क्षण को शोक करने देते हैं; वे इस प्रकार चिंतित हो जाते हैं: "हम दुर्भाग्यशाली और मूर्ख हो जाते हैं"; यही अर्थ है। Sadatthe, अपने कल्याण के लिए, vāyameyyātha (प्रयास करना चाहिए) आप अपने कल्याण या लाभ में वृद्धि के लिए प्रयास करें; Vo, आपके द्वारा, khaṇo moment, paṭipādito (ठीक से प्राप्त) बुद्ध के प्रकट होने का क्षण सिद्ध और प्राप्त हो जाता है; यही अर्थ है।

579. इसके बाद, आगे चलकर, पुनर्जन्मों के चक्र में जाने वालों के नुकसान को उदाहरण के रूप में दर्शाने के लिए, उन्होंने एक श्लोक का उच्चारण किया जो 'एकच्चानंच वामनम्' से शुरू होता है। एकच्चानम् (कुछ को) जिन व्यक्तियों को; वामनम् (उल्टी) ऊपर की ओर बहती है; विरेचनम् (शुद्धिकरण) कुछ लोगों का नीचे की ओर बहता है; एके (कुछ) कुछ का; विषम् (विष) विषैला विष जो विमोचन करता है; ओषधम (औषध) कुछ लोगों की रक्षा का साधन; भगवान ने इस प्रकार क्रमबद्ध रूप से उपदेश दिया; इस प्रकार, यह संबंध है।

580. वामनं पटिपन्नानम् (जिन्होंने विधिपूर्वक गोबर का अभ्यास किया है) - प्रतापी बुद्ध ने उन लोगों को गोबर का उपदेश दिया, जिन्होंने बार-बार जन्म-जन्म के चक्रों (संसार) से मुक्ति पाई है और संस्कार से छुटकारा पाया है, जो विधिपूर्वक अभ्यास करते हैं और आत्म-प्राप्ति (सही मार्ग) के योग्य हैं; इस प्रकार, संबंध स्थापित होता है। फलात्थानम् (जो फल प्राप्त कर चुके हैं) - बुद्ध ने उन लोगों को निर्वाण का उपाय बताया, जिन्होंने श्रेष्ठ फल प्राप्त कर लिया था; गवेसीनम् (साधकों को) - बुद्ध ने उन पुरोहितों के बारे में उपदेश दिया, जो पुण्य के क्षेत्र बन चुके थे, उन लोगों को जो मानव और दिव्य प्राणियों के समृद्ध आनंद के साथ-साथ निर्वाण की खोज करते हैं; इस प्रकार, संबंध स्थापित होता है।

581. सासानेन विरुद्धानम् (धर्मोपदेश के विरोधियों को): बुद्ध ने अपने धर्मोपदेश के विरोधियों को उत्तेजित करते हुए विषैले और हानिकारक कर्मों का उपदेश दिया; इस प्रकार, संबंध है। यथा आसीविसो (विषैले सर्प के समान): जैसे विषैला सर्प, अपने घातक विष के समान, जन्म-जन्म के चक्र में पापी (अविश्वासी या अधर्मी) लोगों को दुख (दुक्खा) देता है जिन्होंने बुरे कर्म किए हैं; (दिष्ठविसो): विष को देखकर ही राख में बदल देता है; झापेटि (जलाता है): सर्प अपने ही दांत जैसे दाँतों से मनुष्य को जलाता है और उसे दुखी या कष्ट (दुक्खा) देता है; बुद्ध ने तम नाराम (उस व्यक्ति) को सुखाकर नरक के चारों रूपों में जला दिया, ठीक उसी प्रकार जैसे विषैला जहर बुरे कर्म करने वाले नास्तिक और पापी व्यक्ति को जला देता है; यही संबंध है।

582. Sakim pitam halāhalam, एक बार पीए गए घातक विष से उपरुन्धति (नष्ट हो जाता है) पीए गए हिंसक विष से जीवन एक बार और केवल एक बार ही नष्ट होता है; sāsanena (व्यवस्था के साथ) व्यवस्था में; virajjhitvā, अपराध करने पर, kappakoṭimhi (करोड़ों कल्पों में) करोड़ों की गणना वाले लोकों में भी; ̄dayhati (जला हुआ) व्यक्ति करोड़ों कल्पों के लिए जल जाता है; इस प्रकार, यह अर्थ है।

503. इस प्रकार नास्तिक और अधर्मी लोगों के बुरे परिणामों को दर्शाने के बाद, अब बुद्धों की शक्ति को दर्शाने के लिए, उन्होंने खन्तिया से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा। उन्होंने कहा, "वह बुद्ध जिन्होंने उल्टी आदि का उपदेश दिया; खन्तिया (धैर्य के साथ) सहनशीलता के साथ; अविहिंसाय (परेशान न करके) जीवों को बिना किसी कष्ट के; मेत्तचित्तवताय (प्रेमपूर्ण स्वभाव के कारण) प्रेममय मन के कारण; सदेवकम (देवताओं के साथ) वह संसार जो दिव्य प्राणियों के साथ होता है; तारेसि (पार करना) पार करने का कारण बनता है, निर्वाण प्राप्त करने का कारण बनता है; तस्मा (इसलिए) इस परिस्थिति में, अविराधिया (अविरोधनीय) यह असंभव है कि आप सभी बुद्धों का विरोध कर सकें; आपको बुद्ध के उपदेशों का उचित रूप से पालन करना चाहिए; यही अर्थ है।"

584. न सज्जन्ति (असंलग्न) लाभ और हानि दोनों में वे अनुसरण नहीं करते, वे आसक्त नहीं रहते; सम्मान करते हुए (अच्छी तरह से मापते हुए); अनादर करते हुए (मापते हुए नहीं), बुद्ध अविचलित रहते हैं, पृथ्वी के समान वे अविचल हैं; तस्मा (इसलिए) इस परिस्थिति में, ते (वे) बुद्ध, न विरोधीय (अप्रतिरोध्य), तुम सब को बुद्धों का विरोध नहीं करना चाहिए; तुम इस प्रकार बुद्धों का विरोध नहीं कर पाओगे, यही अर्थ है।

585. बुद्धों की समता दर्शाने के लिए उन्होंने देवदत्ते से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा। उसमें, समको (समान) सभी प्राणियों के प्रति समान भाव रखने वाला, चाहे वो हत्यारे हों या न हों; मुनि (ऋषि) बुद्ध ऋषि; यही अर्थ है।

586. एतेसम पतिघो नत्थि (इनमें कोई द्वेष नहीं है) इन बुद्धों में किसी प्रकार का द्वेष, क्रूर इच्छा और क्रोध नहीं है। रागो मेसम न विज्जति (इनमें कामवासना नहीं है) इन बुद्धों में कामवासना, कलंक और आसक्ति भी नहीं है; समको (समान) अतः, इस परिस्थिति में बुद्ध सभी के प्रति समान भाव रखते हैं, चाहे वह उनका हत्यारा हो या उनका पुत्र; यही संबंध है।

587. फिर भी, बुद्धों की शक्ति को दर्शाने के लिए, उन्होंने एक श्लोक का उच्चारण किया, जिसकी शुरुआत Panthe disvāna kāsāvam से होती है। वहाँ, mīḷhamakkhitam (मल से सना हुआ) मल से मिला हुआ; kāsāvam (पीला वस्त्र) पीले रंग से रंगा हुआ; isiddhajam (तपस्वी का ध्वज), आवश्यक, श्रेष्ठ भिक्षुओं का ध्वज; panthe (मार्ग पर) मार्ग पर त्यागा हुआ; disvāna, देखकर, añjalim katvā (हाथ जोड़कर) दस उंगलियों को जोड़कर और सिर पर रखकर एक पात्र बनाया; सिरसा, सिर सहित, वंदितब्बम इसिधजम (तपस्वी का ध्वज जिसकी पूजा की जानी चाहिए) वह ध्वज या प्रतीक, जो बुद्ध, मौन बुद्ध और शिष्यों को प्रकाश में लाता है, भिक्षु के वस्त्रों को प्रणाम किया जाना चाहिए, उनका सम्मान और आदर किया जाना चाहिए; यही अर्थ है।

588. अब्भातीता (विशेष रूप से बीत चुके) विशेष रूप से समाप्त, पूर्णतः बुझ चुके। ये च बुद्धा वत्तमाना (जो भी बुद्ध हों) ऐसे बुद्ध जो अभी जन्म ले रहे हैं; अनागता (अभी तक नहीं आए) या भविष्य के बुद्ध जो अभी जन्म नहीं ले चुके हैं, न बने हैं, न प्रकट हुए हैं, न प्रकट हुए हैं। धजेननेन सुझंति (इन बुद्धों ने स्वयं को शुद्ध किया) इस पीले वस्त्र से, इस तपस्वी ध्वज (या प्रतीक) से शुद्ध और सुंदर हो गए; तस्मा (इसलिए) उस परिस्थिति से; इत्यादि (ये) बुद्ध; नमस्सिया नमस्सिटब्बा (प्रणाम करना चाहिए) उन्हें प्रणाम करना चाहिए; यही अर्थ है। पाठ है एतम् नमस्सियाम् (इसे प्रणाम करना चाहिए) उनके इस तपस्वी ध्वज या प्रतीक को प्रणाम (या पूजा) करना चाहिए; यही अर्थ है।

589. इसके बाद, अपनी गुणवत्ता प्रदर्शित करने के लिए, उन्होंने 'सथुकप्पम' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, 'सथुकप्पम' (गुरु के समान), बुद्ध के समान; 'सुविनयम्' (अनुशासित) उचित अनुशासन, तीनों द्वारों को उचित ढंग से वश में करना; 'बदायेन' (हृदय से) मन के द्वारा; 'धारेमि' (मैं सहन करता हूँ) श्रवण द्वारा चिंतन करना, स्मृति में रखना इत्यादि; यही अर्थ है। 'विनयम्' (अनुशासन) विनय पिटक, 'नमसमानो' (प्रणाम करना) विनय को प्रणाम करना, सम्मान देना; 'विहरिसामि सब्बादा' (मैं सदा जीवित रहूँगा) मैं हर समय निवास करता हूँ; यही अर्थ है।

590. विनयो आसयो मयहं (अनुशासन मेरी इच्छा है) विनय पिटक मेरी अनुकूल स्थिति है, यह मेरा घर बन गया है, मेरा स्थान बन गया है, श्रवण, स्मरण, मनन, उत्थान, सर्वांगीण प्रश्न और प्रवचन के माध्यम से; यही इसका अर्थ है। विनयो ठाणचंकमम् (खड़े होने और टहलने का अनुशासन) श्रवण आदि जैसे कर्तव्यों का पालन करने से विनय मेरा स्थान और विश्राम स्थल है; कप्पेमि विनये वासम् (मैं विनय या अनुशासन में निवास करता हूँ) मैं विनय पिटक में अपना शयनकक्ष बनाता हूँ और विनय ग्रंथों को सुनने, स्मरण करने और उनका प्रचार करने के माध्यम से वहाँ निवास करता हूँ; विनयो मम गोचरो (अनुशासन मेरी मुद्रा है) विनय पिटक मेरा चारागाह, मेरा पोषण और मेरा भोजन है, निरंतर स्मरण और मनन के माध्यम से; यही इसका अर्थ है।

591. Vinaye pāramippatto (विनय में सिद्धि प्राप्त) विनय पिटक में सर्वांगीण अंत और सिद्धि प्राप्त कर; Samathe cāpi kovido (निवारण में भी निपुण) पाराजिक, पूर्ण हानि आदि सात प्रकार के अनुशासनात्मक अपराधों के जनसमूह को शांत करने और जगाने में या विवादों के निपटारे में कुशल और निपुण।

"विवाद, निंदा, अपराध को लेकर विवाद, और क्या किया जाना चाहिए, इस पर विवाद, ये सभी चार प्रकार के विवाद कहलाते हैं।"

उपरोक्त विवादों में भी।

"वर्तमान में सचेतनता का अनुशासन, बिना किसी भ्रम के वादा करना, आम तौर पर उससे भी बदतर है, उसी प्रकार विवाद को घास से ढक देना।"

विवादों के सात प्रकार के निपटारे में अत्यंत चतुर और कुशल, जैसा कि इस प्रकार भी वर्णित है; यही अर्थ है। उपालि तम महावीर, हे महान वीर! उपालि आपकी आराधना करते हैं, हे पूजनीय महान वीर! हे सर्वज्ञ ज्ञान की प्राप्ति के लिए लाखों युगों और चार असंख्य युगों (या कल्पों) से भी अधिक परिश्रम करने वाले, सत्तुनो (गुरु) दिव्य और मानव प्राणियों के सलाहकार; तम (आप) आपके, पादे (चरण) आपके, वन्दति (आराधना) भिक्षु उपालि प्रणाम करते हैं, सम्मान व्यक्त करते हैं; यही अर्थ है।

592. नमस्समानो (प्रणाम करते हुए) मैं संसार का त्याग करके भिक्षु बन गया हूँ, आत्मप्रबुद्ध बुद्ध को प्रणाम करता हूँ; धम्मस च (आध्यात्मिक सत्य को भी) उस तेजस्वी द्वारा प्रचारित नौ दिव्य धर्मों को; सुधम्मतम् (अच्छे धर्म की अवस्था) अच्छे धर्म के तथ्य को जानकर, धर्म की आराधना करते हुए, पुरतो पुरम (शहर-शहर) गाँव-गाँव और कस्बे-कस्बे घूमता हूँ; यही संबंध है।

593. किलेसा झपिता मयहम् (मेरे सभी प्रकार के पाप जल गए थे) अरहंतत्व के श्रेष्ठ मार्ग के उचित प्रवेश के ज्ञान के माध्यम से, पंद्रह सौ के बराबर गणना किए गए सभी पाप जलकर भस्म हो गए, पूरी तरह से सूख गए, वाष्पित हो गए और पूर्णतः चूर-चूर हो गए; भावा सब्बे समूहा (सभी अस्तित्व उचित रूप से जड़ से उखाड़ दिए गए थे) इंद्रिय जगत आदि के सभी नौ प्रकार के अस्तित्व उचित रूप से हटा दिए गए थे; सम (उचित रूप से) ऊहता (जड़ से उखाड़ दिया गया) फेंक दिया गया, टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया; सब्बासव परिक्नीणा (सभी दोष चारों ओर से समाप्त या नष्ट हो गए थे) इंद्रिय दोष, अस्तित्व दोष, विधर्म दोष, अज्ञान दोष जैसे सभी चार दोष चारों ओर से नष्ट हो गए थे, उनका पूर्णतः उन्मूलन कर दिया गया था; इस समय अरहंतत्व प्राप्ति के समय, पुनब्बवो (अगले जन्म में) जन्म, बनना, अस्तित्व का अस्तित्व नहीं होता; यही अर्थ है।

594. गहन मानसिक आनंद के लिए, उन्होंने एक गंभीर उच्चारण करते हुए, स्वागतम् से शुरू होने वाला एक श्लोक पढ़ा। वहाँ, बुद्धसेष्टस्स (सर्वोत्तम बुद्ध का), सबसे उत्कृष्ट बुद्ध का, शांतिके (निकट) या किसी नगर में; स्वागतम् (शुभ आगमन) मेरा आगमन, उचित आगमन, शुभ आगमन; वत (वास्तव में) निश्चित रूप से, आसि, था; इस प्रकार, संबंध है। तिसो विज्जा, तीन प्रकार के सर्वोच्च ज्ञान, अर्थात्! पूर्व निवासों का सर्वोच्च ज्ञान, दिव्य दृष्टि और विकारों का निवारण; अनुपत्ता (तदनुसार प्राप्त) अच्छी तरह से प्राप्त; व्यक्तिगत रूप से प्रकट; इस प्रकार, अर्थ है। katam Buddhassa sāsamam (बुद्ध के निर्देश का पालन किया) - बुद्ध, परम पूज्य, द्वारा अनुसन्न किए जाने वाले उपदेश और शासन (शासन) का उचित पालन करते हुए, मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) को ध्यान में रखते हुए, पूर्णतः पालन किया गया है और अरहंतत्व के श्रेष्ठ मार्ग के ज्ञान की प्राप्ति के साथ इसे सिद्ध किया गया है; यही इसका अर्थ है।

595. पातिसंभिदा चतस्सो (चार प्रकार का विश्लेषणात्मक ज्ञान) - अर्थ के विश्लेषणात्मक ज्ञान आदि चार प्रकार के ज्ञान की कल्पना की गई, उन्हें स्वयं-दृश्यमान बनाया गया; विमोक्खा पि च अत्तिमे (चार श्रेष्ठ फलों का ज्ञान) - इस प्रकार, पुनर्जन्मों के चक्रों से मुक्ति दिलाने वाले इन आठ मार्गों की कल्पना की गई; यही संबंध है। चालभिञ्ञा सच्चिकता, छह प्रकार के उच्च ज्ञान की कल्पना की गई।

"जादुई शक्तियों की विविधता, दिव्य श्रवण शक्ति, दूसरों के विचारों का ज्ञान, पूर्व निवासों का ज्ञान, दिव्य दृष्टि और रोगों का निवारण।"

इन छह प्रकार के उच्च ज्ञान का दृश्य निरूपण किया गया और उन्हें स्वयं-दृश्यमान बनाया गया। इन छह प्रकार के उच्च ज्ञान के दृश्य निरूपण के साथ ही बुद्ध के उपदेशों का पालन किया गया; यही इसका अर्थ है।

इत्तम (इस प्रकार) इस तरह से जैसा कि पहले कहा गया है, सुदम एक अविकारी कण है जो शब्द को पूर्ण करता है; थेरो, वरिष्ठ भिक्षु, आभासित्था (कहा) आदरणीय उपाली, दृढ़ नैतिक उपदेशों आदि गुणों से परिपूर्ण शिष्य ने इन श्लोकों का उच्चारण किया जो उनके पूर्व आचरण के कर्मों को प्रकाश में लाते हैं; इस प्रकार, यह अर्थ है।
थेरा उपाली की जीवनी पर की गई टिप्पणी समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.1 >> 7. थेरा अनासि कोस्दान्ना

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

7. अञ्ञाकोण्डञ्ञ्

संबुद्ध पदुमत्तरा विश्व में सर्वश्रेष्ठ, मार्गदर्शक थे।343 मैंने उन्हें सबसे पहले तब देखा था, जब उन्होंने बुद्धत्व की वह अवस्था (अभी-अभी) प्राप्त की थी। (1) (601)
बोधि वृक्ष की जड़ों के चारों ओर आत्माएँ344 एकत्रित होकर संबुद्ध को घेरे हुए थीं, वे हाथ जोड़कर पूजा कर रही थीं। (2) (602)
सभी देवताओं का मन प्रसन्न था; वे आकाश में उड़ते हुए, "यह बुद्ध बन गया है, रात्रि के अंधकार को दूर कर रहा है।"345 (3) (603)
वे हँसी से लोटपोट होकर ज़ोर-ज़ोर से शोर मचा रहे थे,346 "हम संबुद्ध के विधान में अपने दोषों को नष्ट कर देंगे।" (4) (604)
देवताओं के वचन सुनकर, उनके उस महान भाषण को सुनकर,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 343 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 344 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
345 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 346 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

मैंने उसे उसका पहला भोजन प्रसन्नतापूर्वक और प्रसन्न हृदय से दिया। (5) (605)
मेरे मन की बात समझकर, जगत में अद्वितीय गुरु, देवताओं के सभा कक्ष में बैठे हुए (तब) मेरे बारे में ये श्लोक बोले: (6) (606)
"एक सप्ताह पहले दुनिया छोड़कर, आज मैं ज्ञानोदय तक पहुँच गया हूँ। इसने मुझे मेरा पहला चावल दिया है, एक ब्रह्मचारी भिक्षु का जीविका। (7) (607)
मैं उस व्यक्ति का विवरण दूंगा जो तुसिता से यहाँ आकर मुझे यह भिक्षाभोजन भेंट किया; (आप सभी) मेरी बात ध्यान से सुनें: (8) (608)

तीस हजार युगों तक वह दिव्य शासन करेगा। सभी देवताओं पर विजय प्राप्त करके वह स्वर्ग में निवास करेगा (तब) ।347 (9) (609)
देवताओं के लोक से गिरकर वह मानव रूप धारण करेगा। वहाँ वह एक हजार बार चक्र घुमाने वाले के रूप में (लंबे समय तक) शासन करेगा। (10) (610)
एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (11) (611)
स्वर्ग से (पुनः) गिरकर वह मनुष्य रूप धारण करेगा। घर (और संसार) से निकलकर वह बीस वर्ष तक (वहाँ) निवास करेगा। (12) (612)
उसके सातवें वर्ष में बुद्ध सत्य की घोषणा करेंगे। जिसका नाम कोण्डञ्ञ होगा, वह इसे सबसे पहले ग्रहण करेगा। (13) (613)
जब वह प्रस्थान कर रहा था, मैंने भी त्याग कर दिया और मैंने भी अशुद्धियों को नष्ट करने के लिए बहुत प्रयास किया।

---

347 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

मैं बेघर हो गया।348 (14) (614)
सर्वज्ञ ईश्वर के पास पहुँचकर, बुद्ध ने देवताओं के साथ संसार में "इसी" नामक हिरण-वन में अमरता का ढोल बजाया।349 (15) (615)
अब उन्होंने अमरता, अतुलनीय और शांतिपूर्ण अवस्था प्राप्त कर ली है। समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए भी, मैं अब दोषों से मुक्त होकर जीता हूँ। (16) (616)
मेरे सारे दोष (अब) जलकर राख हो गए हैं; समस्त (नया) अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह, मैं बंधनमुक्त होकर जी रहा हूँ। (617)
मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था। तीनों ज्ञान प्राप्त हो गए हैं; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (618)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (17) (619)
इस प्रकार पूज्य अन्नाकोण्डन्ना थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
अञ्ञाकोण्डञ्ञा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवादः यू लू पे विन
3-7 थेरा अन्नासी कोन्दन्ना की जीवनी पर टिप्पणी।
3-7.1. पदुमुत्तरा सम्बुद्धम् से शुरू होने वाले श्लोक थेरा अञ्ञासिकोन्धञ्ञ की जीवनी का वर्णन करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि इस थेरा ने पूर्व बुद्धों की सेवा करते हुए, जन्म-मृत्यु के चक्रों (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस-उस जन्म में, प्रतापी पदुमुत्तरा के समय में, हंसवती नगर के एक धनी गृहस्थ परिवार में पुनर्जन्म लिया। वयस्क होने पर, एक दिन उन्होंने देखा कि गुरु अपने ही संप्रदाय के एक भिक्षु को, धर्म के सर्वप्रथम और दीर्घकालिक ज्ञाताओं में सर्वोच्च स्थान प्रदान कर रहे हैं, जब वह गुरु की उपस्थिति में धर्म का उपदेश सुन रहे थे। स्वयं भी उस पद को प्राप्त करने की इच्छा रखते हुए, उन्होंने सात दिनों तक परम पूज्य गुरु और उनके एक लाख भिक्षुओं के समूह को एक महान दान भेंट कराई और संकल्प लिया। गुरु ने भी अपने निरंतर भाग्य को देखकर आने वाली समृद्धि की भविष्यवाणी की। जीवन भर अच्छे कर्म करते हुए, गुरु के देहांत के समय जब मंदिर की स्थापना हो रही थी, तब उन्होंने मंदिर के भीतर एक रत्नजड़ित घर बनवाया। उन्होंने मंदिर के चारों ओर एक हजार रत्नों के बराबर दान भी चढ़ाया।
3-7.2. इस प्रकार पुण्य कर्म करने के बाद, वे वहाँ से चले गए और दिव्य एवं मानव लोकों में बार-बार जन्म लेते हुए, विपस्सी बुद्ध के समय महाकाल नामक एक जागीरदार बने और बुद्ध के नेतृत्व में पुरोहितों को आठ एकड़ के खेत में साली धान के आंतरिक भाग को चीरकर प्राप्त किए गए साली धान के दानों से विधिवत तैयार किया गया शुद्ध दुग्ध-चावल भेंट किया, जिसमें शहद, घी, चीनी आदि जैसी सामग्रियाँ डाली गई थीं। वे सभी स्थान जहाँ से साली धान के आंतरिक भाग को चीरकर प्राप्त किए गए थे, पुनः भर जाते हैं। बाली में चावल आने के समय (पुथुका), वे बाली में पहला चावल भेंट करते थे; हंसिया से कटाई के समय, पहला कटा हुआ दाना; जब धान की

बालियाँ गुंथी हुई होती हैं, तो अनाज की बालियों की पहली गुंथी हुई माला; जब गुच्छे आदि बनते हैं, तो पहला गुच्छा; पहली (या सर्वोत्तम) फसल नौ बार दी गई; वह फसल भी उत्तरोत्तर अधिक समृद्ध होती गई।

3-7.3. इस प्रकार अपने जीवनकाल में पुण्य कर्म करते हुए, वे वहां से देह त्याग कर दिव्य लोक में पुनर्जन्म हुए; देवताओं और मनुष्यों के बीच पुनर्जन्मों का चक्र पूरा करते हुए, हमारे प्रतापी बुद्ध के प्रकट होने से पहले, कपिलवस्तु नगर से कुछ ही दूरी पर स्थित डोनावत्थु नामक ब्राह्मण ग्राम में एक समृद्ध ब्राह्मण परिवार में उनका पुनर्जन्म हुआ। उनके कुल में उनका नाम कोण्डाञ्ञ पड़ गया। वयस्क होने पर उन्होंने तीनों वेदों का ज्ञान प्राप्त किया और हस्तरेखा शास्त्र में भी निपुणता प्राप्त की। उस समय तक, हमारे बोधिसत्व तुषिता स्वर्ग नगर से देह त्याग कर कपिलवस्तु नगर में महान राजा सुद्धोदन के आलीशान महल में पुनर्जन्म ले चुके थे। उनके नामकरण दिवस पर, जब एक सौ आठ ब्राह्मणों को राजमहल में लाया गया (या उपस्थित कराया गया), तो जिन आठ ब्राह्मणों को उनके गुणों (या विशेषताओं) की जांच के लिए राजमहल के विशाल परिसर में लाया गया, उनमें कोंडञ्च सबसे कम उम्र के थे। एक महान व्यक्तित्व के गुणों की पूर्णता को देखकर उन्होंने यह निर्णय लिया (या निष्कर्ष निकाला) कि "यह निश्चित रूप से बुद्ध बनेगा"। ऐसा निर्णय लेने के बाद, कोंडञ्च महान व्यक्तित्व के महान त्याग की अपेक्षा करते हुए (या उसे इंगित करते हुए) इधर-उधर घूमने लगे।

3-7.4. बोधिसत्व भी, वास्तव में, एक बड़े दल के साथ पले-बढ़े, वयस्कता प्राप्त की, बुद्धि की सर्वांगीण परिपक्वता को प्राप्त किया, उनतीस वर्ष की आयु में महान वैराग्य का त्याग किया, अनोमा नदी के तट पर भिक्षु बन गए, उचित समय पर उरुवेला गए और अपना कठोर परिश्रम किया। फिर, बालक कोण्डाञ्ञ ने यह सुनकर कि महान पुरुष भिक्षु बन गए हैं, ब्राह्मणों के ऐसे पुत्रों के साथ, जिन्होंने संकेतों का अध्ययन किया, जैसे बालक वप्पा आदि, भिक्षु बन गए, और स्वयं को पाँचवाँ भिक्षु बनाया, और उचित समय पर बोधिसत्व के समक्ष उपस्थित हुए, छह वर्षों तक उनकी सेवा की, उनके भरपूर पोषण के सर्वांगीण आनंद से ऊबकर, वे वहाँ से विदा होकर इसिपताना चले गए। तब, बोधिसत्व ने भरपूर पोषण से शारीरिक शक्ति प्राप्त कर ली और वैशाख माह की पूर्णिमा के दिन बोधि वृक्ष के चरणों में स्थित अजेय सिंहासन पर विराजमान होकर तीनों मारों के सिर कुचल दिए, जिससे वे परम प्रबुद्ध बुद्ध बन गए। उन्होंने बोधि वृक्ष के उसी चबूतरे पर सात दिन बिताए, पाँच भिक्षुओं (पंचवग्गी) के सर्वांगीण ज्ञान के बारे में जाना और आसली माह की पूर्णिमा के दिन इसिपताना जाकर उन्हें सत्य के चक्र (धम्मचक्कप्पवत्तना) का उपदेश दिया। उनके उपदेश के सर्वांगीण समापन पर, थेरा कोण्डञ्ञ, अठारह करोड़ ब्रह्माओं सहित, मोक्ष के प्रथम चरण (सोतापत्ति) की प्राप्ति कर स्थापित हुए। फिर, उन्होंने महीने के घटते चंद्रमा (या आधे) के पांचवें दिन अनात्त-लक्खण सूत्र के उपदेश के माध्यम से अरहंत पद की कल्पना की।

596. इस प्रकार, अरहंतत्व प्राप्त करने के बाद, उन्होंने यह खोज करते हुए कि "मैंने कौन सा कर्म करके दिव्य सुख प्राप्त किया है?", अपने पूर्व कर्मों को स्वयं देखा और अपने मन के आनंद को प्रकट करते हुए तथा पूर्व में किए गए कर्मों का गंभीर उच्चारण करते हुए, उन्होंने पदुमुत्तरसंबुद्धम् से शुरू होने वाले श्लोक का उच्चारण किया। उस श्लोक का अर्थ पहले ही बताया जा चुका है (हेष्ठा)। लोकाजेष्ठम् विनायकम् (संसार के मुखिया-सह-वरिष्ठ) समस्त सजीव जगत के मुखिया; यही अर्थ है; विशिष्ट रूप से, विनायको (नेता) वे नेतृत्वीय प्राणियों का नेतृत्व करते हैं और उन्हें उचित रूप से अमर महान निर्वाण प्राप्त कराते हैं, जो संसार सागर का दूसरा किनारा है, इस प्रकार वे नेता हैं; वह नेता; बुद्धभूमि मनुप्पत्तम् (तदनुसार बुद्ध के स्थान को प्राप्त किया); बुद्ध का स्थान, स्थापना स्थल, बुद्धभूमि है; सर्वज्ञता का ज्ञान; उचित रूप से प्रवेश किया और तदनुसार उस तक पहुँचा; इस प्रकार, बुद्ध भूमिमनुप्पत्तो: तदनुसार बुद्ध के स्थान की प्राप्ति, सर्वज्ञता प्राप्त की, बुद्ध बन गए; इस प्रकार, अर्थ है; पथमम् अद्दसम अहम् (मैंने सबसे पहले देखा) मैंने वैशाख माह की पूर्णिमा की रात के बाद सूर्योदय के समय स्वयंप्रबुद्ध बुद्ध पदुमुत्तरा को देखा, जो बुद्ध बन चुके थे।

597. यावता बोधिवा मूले (बोधि वृक्ष की जड़ तक) बोधि वृक्ष के आस-पास जितने भी हों; समागता (एक साथ आना) राक्षस एक समूह बन गए; सम्बुद्धम (स्वयंप्रबुद्ध बुद्ध) वह बुद्ध जो बुद्ध बन गए थे, जागृत हुए; पंजलि कटा (हाथ जोड़े) दस उंगलियों को एक साथ रखने वाले हाथ के पात्र को मेरे सिर पर रखकर; वन्दंती (प्रणाम करना) प्रणाम (या पूजा करना) इस प्रकार, संबंध है।

598. सब्बे देवा तुत्तहमाना (सभी देवता मन से प्रसन्न हुए) - बुद्धत्व प्राप्त करने वाले सभी दिव्य प्राणी मन से प्रसन्न होकर आकाश में विचरण करने लगे; यही संबंध है। अंधकार को दूर करने वाले (अंधकारतमनुदो) - इस प्रकार, यह बुद्ध प्रकट हुए हैं, जिन्होंने भ्रम के अंधकार को अत्यंत व्यापक रूप से दूर किया।

599. तेसम्हासपरेतानम् (हंसी में लीन रहने वालों को) उन दिव्य प्राणियों को जो हंसी, उत्साह और मानसिक आनंद से परिपूर्ण हैं; महानादो (महान गर्जना) बड़ी आवाज (या आवाज) अवत्तथा (कम कर दी गई) घटित हो; क्लेसे (दुराचार) आइए हम आत्म-प्रबुद्ध बुद्ध के युग में दुराचार के कर्मों (धम्म) को जला दें।

600. देवानां गिरमञ्ञाय (देवताओं के वचनों को जानकर) दिव्य प्राणियों की ध्वनि, उनके वचन और उनकी स्तुति के शब्दों को जानकर; हेत्थेन चित्तेन (प्रसन्न मन से) प्रसन्न हृदय से; आदिभिक्खम् (प्रारंभिक भिक्षा) मैंने उन्हें प्रथम पोषण के रूप में अर्पित किया, जो बुद्ध बन चुके थे; इस प्रकार, संबंध है।

602. सात दिनों तक त्याग करने के बाद (सत्तः त्याग करके) मैंने सात दिनों तक घोर त्याग किया और कठोर परिश्रम किया; मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ (बोधिमज्झगमम्) मैंने सर्वज्ञ ज्ञान के मूल कारण (पादात्थान) को प्राप्त किया, जिसे अरहंतत्व के श्रेष्ठ मार्ग का ज्ञान माना जाता है; यही इसका अर्थ है। यह मेरा पहला भोजन है (इदम् मे पात्मम् भत्तम्) यह भोजन मेरे शरीर के पोषण के लिए है; ब्रह्मचर्य के लिए (ब्रह्मचर्य के लिए) यह सबसे उत्तम अभ्यास है; यह मुझे इस युवा दिव्य प्राणी द्वारा सबसे पहले अर्पित किया गया था; यही इसका अर्थ है।

603. तुसिता हि इधा गन्त्वा (यद्यपि तुसिता स्वर्ग से आए हुए) तुसिता स्वर्ग के महल से मनुष्यलोक में आकर; यो (जो) युवा देवता, मे (मेरा) मेरा भिक्षा-भोजन; उपनायी (निकला लाया गया) अर्पित किया; तम (उसे) युवा देवता; कित्तयिसामि (मैं घोषणा करूँगा) मैं बोलूँगा, मैं प्रकट करूँगा; भासतो (बोलते हुए), कृपया मन के शब्दों को सुनें, जो मैं बोल रहा हूँ; इस प्रकार संबंध है। अब से मैं केवल उन्हीं शब्दों पर टिप्पणी करूँगा जो स्पष्ट (या सरल) नहीं हैं।

607. तावतिंगसा का स्वर्गीय निवास, तिदसा (तीस), तैंतीस; गृहस्थ जीवन से निकलकर, जहाँ उसका जन्म हुआ था (या वह उत्पन्न हुआ था), वह ब्राह्मण के घर से निकलकर भिक्षु बन गया, और छह वर्षों तक उस बोधिसत्व के साथ रहेगा जो पूर्ण तपस्या (या कठिन कर्म) (दुक्करकारिका) कर रहा था; इस प्रकार, संबंध है।

608. ततो सत्तमके वस्से (सातवें वर्ष में) भिक्षु बनने के समय से शुरू होने वाले सातवें वर्ष में; बुद्धो सच्चम कथेस्सति (बुद्ध सत्य का उपदेश देंगे), छह वर्षों तक कठोर तपस्या (दुक्कराकारिका) करने के बाद बुद्ध बनने पर, वे चार आर्य सत्यों का उपदेश देंगे, जिन्हें दुख (दुक्खा), दुख का कारण (समुदय), दुख का निवारण (निरोध), और मार्ग (मग्ग) के रूप में गिना जाता है, सत्य के चक्र को घुमाने के धार्मिक प्रवचन (धम्मचक्क पवत्तनसुत्त) के रूप में, बनारस के इसिपताना हिरण उद्यान में; इस प्रकार, इसका अर्थ है। कोण्डाञ्ञ नाम नामेना (कोण्डाञ्ञ नाम से जाना जाता है), कुल के नाम से; paṭhamam sacchikāhi ti (सर्वप्रथम कल्पना करते हुए) वह स्वयं को पवित्रता के प्रथम चरण (सोतापत्ति) के श्रेष्ठ मार्ग के ज्ञान की कल्पना करेगा, उसे प्रकट करेगा, प्रारंभ से ही पंचवग्गी के समूह में सर्वप्रथम। इस प्रकार, यह अर्थ है।

609. निक्खंतेननुपब्बजिम (त्याग के साथ मैंने भिक्षु बन गया) बोधिसत्व के प्रस्थान के साथ ही मैंने त्याग कर उनके बाद भिक्षु बन गया; यही अर्थ है। पदानम्, परिश्रमपूर्वक प्रयास, सुकतम (अच्छी तरह से किया गया) उनके बाद भिक्षु बनने के बाद, उसी प्रकार, आत्मप्रयास (पधान) को उचित रूप से संपन्न किया गया; यही अर्थ है। किलेसेझापनत्थायस (प्रत्येक दोष को जलाने के उद्देश्य से) क्लेश को सुखाने और समाप्त करने के लिए; अनागारियम, गृहस्थ अवस्था, पब्बजिम (मैं बाहर गया) मैंने शासन (शासन) में प्रवेश किया, जो हल चलाने, व्यापार करने आदि जैसे कर्मों से रहित है, जो गृहस्थ के लिए लाभकारी (या कल्याणकारी) नहीं हैं; यही अर्थ है।

610. अभिगन्त्वाना सब्बाञ्ञु, सर्वज्ञ बुद्ध के पास पहुँचकर, मिगारञ्ञम (हिरण-वन) से आगे बढ़कर मिगदाय के मठ में पहुँचकर, बुद्ध, प्राणियों के जगत में, दिव्य प्राणियों के साथ, सभी भूत, भविष्य और वर्तमान को जानने वाले, या ऐसे ज्ञानी विषय को जानने वाले जो संकल्प (संस्कार), परिवर्तन (विकार), विशेषता (लक्खण), अमरता (निर्वाण) और पदनाम (पञ्ञत्ति) के रूप में माने जाते हैं; मेरे द्वारा (मेरे द्वारा) मेरे द्वारा दृष्टि से, इमिना (इसके द्वारा) पवित्रता के प्रथम चरण (सोतापत्ति) के श्रेष्ठ मार्ग के ज्ञान से, अमरभेरिम (अमर ढोल) बुद्ध ने इंगित किया, प्रहार किया, अद्वितीय स्थायी शांति (निर्वाण) के बड़े अमर ढोल को बजाया; इस प्रकार, अर्थ है।

611. सो 'दानी, हे अब, संतम्, शांत, पदम्, पथ, अनुत्तरम्, अतुलनीय, कि मैंने निर्वाण प्राप्त किया, जो उससे श्रेष्ठ नहीं है, जिसे प्राप्त किया जाना चाहिए, शांति की अमर अवस्था, अब अरहंतत्व के ज्ञान के साथ, सर्वप्रथम होकर, पवित्रता की प्रथम अवस्था (सोतापन्न) प्राप्त की है; यही अर्थ है। सब्बासवे परिञ्ञाय (सभी दोषों को सर्वत्र जानकर) कामुक दोष आदि सभी दोषों को त्यागकर, त्याग के सर्वव्यापी ज्ञान के साथ; अनासव (दोष रहित) दुराचार से रहित; विहारामि (मैं रहता हूँ) मैं अपना निवास स्थान बनाता हूँ या मैंने चार मुद्राओं में रहकर (इरियापथ विहार) अपनी जीविका बनाई, पटिसंभिदा चतस्सो (चार प्रकार के विश्लेषणात्मक ज्ञान) जैसे श्लोक पटिसंभिदा चतस्सो से शुरू होते हैं, इत्यादि कहे गए हैं।

611,1. इसके बाद, गुरु ने बुद्ध के लिए तैयार किए गए उत्तम आसन पर, भिक्षुओं के बीच में बैठकर, उन्हें सर्वोच्च पद पर स्थापित किया और सर्वप्रथम धर्म के उनके उचित ज्ञान की शर्त को इस प्रकार रखा: "हे भिक्षुओं! यह भिक्षु मेरे शिष्यों में प्रमुख है, जो अनेक रात्रियों से (या जो वरिष्ठता का दावा करते हैं) इसे जानते हैं, अर्थात्, अञ्ञासि कोन्धञ्ञ।" वह थेरा, अपने दो प्रमुख शिष्यों द्वारा की गई अत्यंत विनम्र सेवा से (परिहरितकामो) और गाँव के एक कोने में स्थित मठ के भीड़भाड़ वाले निवास से स्वयं को बचाने की इच्छा रखते हुए,

और एकांत में विशेष आनंद के साथ रहने की इच्छा रखते हुए, तथा अपने निकट आने वाले गृहस्थों और भिक्षुओं के वार्तालाप को बाधा मानते हुए, गुरु से अनुमति लेकर हिमालय में प्रवेश किया और बारह वर्षों तक छद्दंत नदी के किनारे छद्दंत हाथियों की देखरेख में निवास किया। एक दिन, देवताओं के राजा सक्का, वहाँ निवास कर रहे थेरा के पास इस प्रकार पहुँचे, उन्हें प्रणाम किया, खड़े हुए और उनसे इस प्रकार कहा: "आदरणीय गुरुदेव! यदि मेरे स्वामी मुझे धर्म का उपदेश दें तो अच्छा होगा।" थेरा ने बुद्ध के समान वैभव के साथ, अमर आनंद (अमतोगोधा) की ओर ले जाने वाले धर्म का उपदेश दिया, जो अनेक मार्गों से युक्त था और तीन विशिष्ट गुणों (लक्खणा) से उत्पन्न शून्य (सुञ्ञता) से उचित रूप से जुड़ा हुआ था, जिनमें चार आर्य सत्य समाहित थे। थेरा के उस धर्म उपदेश को सुनकर, सक्का ने थेरा को अपनी पुण्य प्रसन्नता से अवगत कराने के लिए उनकी स्तुति की, इस प्रकार:-

"इस अत्यंत आनंदमय धर्म को सुनकर मैं और भी प्रसन्न हो गया हूँ; कामवासना से रहित और पूरी तरह से आसक्ति से मुक्त, ऐसा धर्म उपदेशित किया गया है।"

बारह वर्षों तक छद्दंता झील के किनारे रहने के बाद, जब थेरा का पूर्ण निर्वाण प्राप्त करने का समय निकट आया, तो वे गुरु के समक्ष गए, उनसे अपने सर्वांगीण निर्वाण में प्रवेश के लिए सहमति देने का अनुरोध किया, उसी छद्दंता झील पर लौट आए और पूर्ण रूप से निर्वाण प्राप्त कर लिया।

थेरा अन्नासी कोन्दन्ना की जीवनी पर टिप्पणी समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.1 >> 8. थेरा पिण्डोला भारद्वाज

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

8. पिंडोला-भारद्वाज

स्वयंभू श्रेष्ठ, सर्वश्रेष्ठ पुरुष, विजय प्राप्त पद्ममुत्तरा, हिमालय के सामने चित्तकूट350 में निवास करते थे। (1) (620)
मैं (तब) वहाँ जानवरों का राजा था, निर्भय होकर चारों पैरों पर चल रहा था। उस (बुद्ध) की आवाज सुनकर बहुत से लोग इकट्ठा हो रहे थे। (2) (621)

---

348 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 349 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)। 350 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपादान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

मैंने एक खिला हुआ कमल उठाया और मनुष्यों के श्रेष्ठ (बलुष) के पास जाकर उसे बुद्ध को दे दिया जब वे ध्यान से उठे थे। (3) (622)
मैंने चारों दिशाओं से सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, परम पुरुष की पूजा की और अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए मैंने शेर की दहाड़ लगाई। (4) (623)
पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, बलिदान प्राप्तकर्ता, अपनी सीट पर बैठकर फिर ये छंद बोले (मेरे बारे में): (5) (624)
यह जानकर कि बुद्ध बोलेंगे,352 सभी देवता एक साथ आए, (यह सोचते हुए), "सर्वोत्तम (बुद्ध) आ गए हैं; आइए हम उनके उपदेश सुनें।" (6) (625)

विश्व-प्रधान, दूरदर्शी, महान ऋषि (बुद्ध) ने तब हँसी से लोटपोट हुए उन देवताओं के सामने मेरी गर्जना का अर्थ समझाया। (7) (626)
"मैं उस व्यक्ति का विवरण दूंगा जिसने मुझे यह कमल का फूल दिया और जिसने शेर की दहाड़ मारी; आप सब मेरी बातें ध्यान से सुनें: (8) (627)
आठ युगों बाद वह चक्र चलाने वाला सम्राट होगा, सात रत्नों का स्वामी होगा, और चारों महाद्वीपों का स्वामी होगा। (9) (628)
वह (तब) साठ से चार अधिक (जीवनकालों) तक पृथ्वी पर शासन करेगा।353 वह पद्म के नाम से जाना जाएगा,354 एक महान शक्ति वाला चक्र घुमाने वाला राजा। (10) (629)

---

351 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
352 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 353 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 354 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का एक व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (11) (630)
जब बुद्ध के वचन प्रसारित होंगे, तब यह ब्राह्मण होगा। अपनी ब्राह्मणता को त्यागकर वह (बौद्ध मार्ग पर) आगे बढ़ेगा। (12) (631)
परिश्रम में लीन होकर, शांत होकर,355 पुनर्जन्म के आधारों से रहित होकर,356 सभी दोषों को भली-भांति जानकर, वह निर्वाण प्राप्त करेगा, दोषरहित होकर। (13) (632)
यद्यपि वह घने जंगल में रहने वाले भयानक पशुओं के कबीले का है, जो सभी अशुद्धियों को भली-भांति जानता है, फिर भी वह निर्वाण प्राप्त करेगा, अछूता। (14) (633)
मेरे सारे दोष (अब) जलकर राख हो गए हैं; समस्त (नया) अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह, मैं बंधनमुक्त होकर जी रहा हूँ। (634)357
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में रहना मेरे लिए बहुत अच्छा अनुभव रहा। तीनों ज्ञान प्राप्त हो गए हैं; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (635)358
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) (636)
इस प्रकार पूज्य पिण्डोल-भारद्वाज थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
पिण्डोला-भारद्वाज थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

355 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ। 356 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (gī tel)। 357 शाब्दिक अर्थ, "गया"। 358 BJTS के साथ PTS sañjālesi के लिए sañcālesi पढ़ना।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
3-8 थेरा पिन्डोला भारद्वाज की जीवनी पर टीका
3-8.1. पद्ममुत्तरो नाम से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य पिन्धोला भारद्वाज की जीवनी का वर्णन करते हैं। इस थेरा ने भी पूर्व बुद्धों के प्रति भक्तिपूर्ण कर्म करके, इस और उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित किए और प्रतापी पद्ममुत्तरा के समय में एक सिंह के गर्भ में पुनर्जन्म लिया तथा एक पहाड़ी की तलहटी में स्थित गुफा में रहने लगे। प्रतापी पद्ममुत्तरा ने उस सिंह की सहायता करने के लिए, जब वह अपने चरागाह के लिए रवाना हुआ था, उस गुफा में प्रवेश किया जहाँ वह सिंह सोता था, और स्वयं निरोध ध्यान में लीन होकर बैठ गए। शेर ने अपने शिकार को पकड़ा, लौटा, अपनी गुफा के प्रवेश द्वार पर खड़ा हुआ, भगवान

बुद्ध को देखा, प्रसन्न और आनंदित हुआ, जल और भूमि से उत्पन्न फूलों को श्रद्धापूर्वक अर्पित किया, और स्वयं बुद्ध की ओर ध्यान लगाकर खड़ा रहा, तीनों पहरों में शेर की दहाड़ मारता रहा ताकि अन्य जंगली जानवर दूर रहें और भगवान बुद्ध की रक्षा कर सकें। पहले दिन की तरह ही, शेर ने सात दिनों तक श्रद्धापूर्वक बुद्ध को अपनी सुरक्षा प्रदान की। सात दिन बीतने पर, भगवान बुद्ध निरोध समाधि से उठे और शेर के देखते ही वे आकाश में विलीन हो गए और आकाश से होते हुए अपने मठ की ओर चले गए, और मन ही मन कहा: "इस शेर के लिए उपनिस्य अर्हंत बनने की इतनी ही पर्याप्त परिस्थितियाँ होंगी।"

3-8.2. बुद्ध से वियोग का दर्द सहन न कर पाने के कारण सिंह की मृत्यु हो गई और वह हांगसावती नगर के एक धनी परिवार में पुनर्जन्म लेकर नगरवासियों के साथ मठ में गया। वयस्क होने पर उसने धर्म का उपदेश सुना, जिससे वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के समूह को सात दिनों तक दान दिया। जीवन भर उसने पुण्य कर्म किए और देवताओं एवं मनुष्यों के बीच बार-बार जन्म लेते हुए कोसंबी में राजा उदेना के निजी पुरोहित के पुत्र के रूप में पुनर्जन्म लिया। उसका नाम भारद्वाज था। वयस्क होने पर उसने तीनों वेदों का ज्ञान प्राप्त किया और पाँच सौ युवकों को मंत्रों का शिक्षण दे रहा था। अपनी स्वाभाविक समृद्धि के अनुरूप आचरण न कर पाने के कारण, वे सभी द्वारा त्याग दिए गए, राजगृह गए, वहाँ उन्होंने बुद्ध और भिक्षुओं के समुदाय की उन्नति और महिमा को देखा, बुद्ध के मार्ग पर चलकर भिक्षु बन गए और भोजन की कोई सीमा जाने बिना जीवन व्यतीत करने लगे। गुरु द्वारा चतुराई से उन्हें भोजन की उचित सीमा का ज्ञान कराया गया, तब थेरा ने आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि में लीन होकर शीघ्र ही छह प्रकार के उच्च ज्ञान प्राप्त कर लिए। छह प्रकार के उच्च ज्ञान प्राप्त करने के बाद, थेरा ने बुद्ध की उपस्थिति में सिंह-गौरव करते हुए कहा: "शिष्यों को जो कुछ प्राप्त होना चाहिए, वह मुझे प्राप्त हो चुका है।" भिक्षुओं के समूह की उपस्थिति में भी थेरा ने चुनौती देते हुए कहा: "यदि किसी को मार्ग (मग्ग) या उसके फल (फल) के बारे में कोई संदेह हो, तो वह मुझसे पूछे।" इस कारण भगवान ने थेरा को सर्वोच्च पद प्रदान करते हुए कहा: "हे भिक्षुओं! मेरे उन भिक्षु शिष्यों में जो सिंह के समान दहाड़ते हैं, यह थेरा पिन्धोल भारद्वाज प्रमुख हैं।"

613. इस प्रकार सर्वोच्च पद (एतदग्ग) प्राप्त करके, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया और मानसिक आनंद के रूप में अपने द्वारा किए गए कर्मों को प्रकट करने के लिए पद्ममुत्तरो से शुरू होने वाले श्लोक का उच्चारण किया। उस श्लोक का अर्थ पहले ही (हेष्ठा) बताया जा चुका है। पुरतो हिमवंतास्सा (हिमवंत के सामने) हिमालय पर्वत से पूर्व दिशा की ओर; यही अर्थ है। चित्तकूते वसी तका (तब चित्तकूत में रहने वाला) जब मैं सिंह, पशुओं का राजा था, तब मैं हिमवंत के पड़ोस में रहता था; तब पद्ममुत्तरा नामक गुरु चित्त पर्वत की चोटी पर, चित्त के शिखर पर, अनेक प्रकार की औषधियों और रत्नों से सुशोभित होने के कारण निवास करते थे; यही संयोजन है।

614. अभितरूपो तत्थासिम (मैं वहाँ भाव से निर्भय था) मैं वहाँ पशु-राजा था, स्वभाव से निर्भय और प्रकृति से खतरे से मुक्त; यही अर्थ है। चतुक्कमो (चारों दिशाओं में जाने वाला) चारों दिशाओं में जाने वाला, चारों दिशाओं में जाने में सक्षम; यस्स सद्दाम सुनित्वाना (जिसकी ध्वनि सुनकर) पशु-राजा की सिंह गर्जना सुनकर; बहुज्जना (अनेक प्राणी) अनेक जीव; विक्खम्भन्ति (भय से अकड़ जाना) स्पष्ट रूप से स्थिर और भयभीत हो जाना।

615. सुफुल्लम पदुमन गया (सुखद कमल ने खिले हुए कमल को पकड़ लिया), प्रतापी बुद्ध की सुखद धार्मिकता के कारण, सुंदर रूप से खिले हुए कमल को काटकर; नरसाभम (वृहद बैल) के पास मैं गया, मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ और सर्वश्रेष्ठ आत्मप्रबुद्ध बुद्ध के पास गया; वुच्छितस्स समाधिम्हा (एकाग्रता से उठे बुद्ध को) मैंने उस फूल को विशेष रूप से स्थापित करके श्रद्धापूर्वक अर्पित किया, जो निरोध की समाधि (समापत्ति) से उठे बुद्ध को अर्पित किया; यही अर्थ है।

616. चतुद्दिसम नमसित्वा (प्रणाम करते हुए) चारों दिशाओं की ओर श्रद्धापूर्वक झुककर; सकम चित्तम (मेरा अपना मन) मेरा अपना मन या हृदय, पसादेत्वा (प्रियतापूर्वक पवित्र बनाते हुए) आदरपूर्वक स्थापित करना; सिहनादम (सिंह गर्जना) निर्भय गर्जना; अनादिम (गर्जना की) मुखर होना; इस प्रकार, अर्थ है।

617. इसके बाद, बुद्ध द्वारा दी गई भविष्यवाणी को प्रकट करते हुए, उन्होंने पदुमुत्तरो ति से शुरू होने वाले श्लोक का उच्चारण किया। यह तो बहुत आसान है।

618. वदतम सेष्टो (वक्ता सर्वोत्कृष्ट) बुद्ध, जो अन्य विधर्मी नेताओं में सर्वोत्कृष्ट और श्रेष्ठ हैं, जो यह कहने का आशंकित रहते हैं: "हम बुद्ध हैं, हम प्रबुद्ध हैं," आ चुके हैं; यही संबंध है। सोस्सामा (सुनें) आइए, उस महिमावान व्यक्ति के धर्म को सुनें जो आ चुके हैं; यही अर्थ है।

619. तेसम हासपरतानम् (हंसी से अभिभूत लोगों को) उन दिव्य और मानवीय प्राणियों को, जो आनंद से परिपूर्ण और प्रसन्न मन वाले थे; लोकनायको (संसार के संरक्षक) संसार के नेता, जिन्होंने लोगों को स्वर्ग और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति दिलाई; मम सद्दाम (मेरी वाणी) मेरी सिंह गर्जना; पकित्तेसी (घोषित) प्रकट और बोले; दीघदस्सी (दूरदर्शी) आने वाले समय के द्रष्टा (या भविष्य के द्रष्टा); महामुनि (महान ऋषि) ऋषियों में महान ऋषि। शेष श्लोक भी आसानी से समझ में आ जाते हैं।

622. इस्सारियम, पद्मा नाम से विश्व-राजा (या सार्वभौमिक सम्राट) बनकर, जन्म से चौंसठवें वर्ष में शासन करेगा; यही अर्थ है।
623. कप्पसतसहस्सम्ही, यह एक स्थलीय शब्द है, जो अधिकारवाचक के अर्थ में, एक लाख विश्व-चक्रों (कप्प) के सर्वव्यापी छोर पर है; इस प्रकार, इसका अर्थ है।
624. पकासिते पावचने (जब बुद्ध का वचन स्पष्ट हुआ) जब तीनों पिटकों का प्रकटीकरण हुआ और उस तेजस्वी गौतम ने उनका उपदेश दिया; यही अर्थ है। ब्रह्मबंधु भविस्सति, वह एक ब्राह्मण का रिश्तेदार बनेगा, और फिर, उस तेजस्वी गौतम के समय में, यह सिंह, पशुओं का राजा, एक ब्राह्मण के परिवार में पुनर्जन्म लेगा; यही अर्थ है। ब्रह्मञ्ञा अभिनिक्खम्मा (ब्राह्मण परिवार से निकलकर) वह ब्राह्मण परिवार से विदा होकर उस तेजस्वी गौतम के मार्गदर्शन में भिक्षु बन जाएगा; यही संबंध है।
625. पाखानपहितत्तो (कठिन परिश्रम की ओर भेजा गया मन) परिश्रम करने के उद्देश्य से भेजा गया मन; निरुपधि (अस्तित्व के आधार से मुक्त, सभी प्रकार के दोषों (किलेसा) के अभाव के कारण; उपसन्तो (शांत) दोषों की प्रज्वलित ऊष्मा के अभाव के कारण। सब्बासवे (सभी दोष) सभी दोषों का; परिञ्ञाय (सब कुछ समझकर) त्याग दिया; अनासवो (दोष रहित) दोषों (किलेसा) से रहित; निब्बायिस्सति (निर्वाण प्राप्त करेगा) सभी दोषों (बंध) के प्रज्वलित होने से शीतल और स्थिर हो जाएगा; यही अर्थ है।
626. विजयने पंतसेय्यम्ही (मनुष्यों से रहित एकांत वन आश्रम में) दूर-दराज के वन-मठ में, मनुष्यों की भीड़ से रहित; यही अर्थ है। वालमिगासमाकुले (हिरणों और पशुओं से पूरी तरह से विचलित) काले शेर आदि जैसे क्रूर पशुओं की भीड़ से स्पष्ट रूप से विचलित; यही अर्थ है। शेष का भी स्पष्टीकरण हो चुका है।
पिन्दोला भारद्वाज थेरा की जीवनी पर टीका का कार्य समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.1 >> 9. थेरा खदिरावनिया

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

9. खदिरावनिया रेवता

भागीरथी359 नामक नदी हिमालय से पोषित होती है। मैं, पास के किनारे पर एक नाविक, उबड़-खाबड़ नदी के पार (लोगों को) ले गया। (1) (637)
"सर्वश्रेष्ठ द्विपाद, पद्ममुत्तरा संबुद्ध भगवान को एक लाख अरहंतों के साथ उफनती धारा को पार करना होगा।" (2) (638)
कई नावों को श्रमिकों द्वारा बहुत सावधानीपूर्वक एक साथ बांधकर (और) एक आवरण बनाकर, मैंने (उन्हें), मनुष्यों के बैल को, सम्मानित किया। (3) (639)
जब संबुद्ध पहुँच गए तो वे उस (बड़ी) नाव पर चढ़ गए।360 नदी के बीच में शिक्षक ने ये श्लोक कहे: (4) (640)
"जिसने संबुद्ध और निष्कलंक सभा को पार कराया, वह अपने हृदय में उत्पन्न प्रसन्नता के कारण देवताओं के लोक में आनंदित होगा। (5) (641)
एक दिव्य महल बनेगा, जो तुम्हारे लिए अच्छी तरह से बनाया गया होगा, एक नाव पर टिका होगा जो हमेशा आकाश में विचरण करेगी, फूलों की छतरी के साथ। (6) (642)
अट्ठावनवें युग में (तब से) वह एक चक्र घुमाने वाला राजा होगा, जो चारों ओर से विजयी होगा, एक क्षत्रिय जिसका नाम ताराण होगा।361 (7) (643)

सत्तावनवें युग में

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 359 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 360 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

361 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

वह कैम्पाका नाम का राजा होगा।3623 ... होगा। वह प्रखर शक्ति के साथ सूर्योदय के समय सूर्य की तरह चमकेगा। (8) (644)

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का एक व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (9) (645)

सर्वोच्च स्वर्ग से गिरकर364 वह मनुष्य रूप धारण करेगा। वह ब्रह्मा का संबंधी होगा;365 वह रेवता के नाम से जाना जाएगा। (10) (646)

अपने उत्तम मूल से प्रेरित होकर, वह घर (और संसार) से निकलकर गौतम बुद्ध की शिक्षाओं का त्याग करेगा। (11) (647)

और बाद में, जब वह त्याग कर लेगा, नियम का पालन करेगा, चिंतनशील होगा, सभी दोषों को भली-भांति जान लेगा, तब वह निर्वाण प्राप्त करेगा, दोषरहित होकर। (12) (648)

बोझ उठाने के मेरे प्रयास ने मुझे आसक्तियों से मुक्ति दिलाई। (अब) मैं परम बुद्ध की शिक्षाओं में अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ।366 (13) (649)

एक लाख युगों पहले किए गए कर्मों का फल मुझे यहाँ मिला: पूर्णतः मुक्त होकर, तीर की तरह तेज होकर, मैंने अपने दोषों को नष्ट कर दिया है। (650)

वनों के प्रति मेरे प्रेम को देखकर, जगत के अंत तक पहुँचने वाले महान ऋषि ने मुझे वनवासी भिक्षुओं में सर्वोपरि स्थान दिया। (651)

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

---

362 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 363 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 364 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 365 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)। 366 शाब्दिक अर्थ, "गया"।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त कर लिए हैं, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) (652)

इस प्रकार पूज्य खदिरावनीय रेवता थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

खदिरावनीय रेवता थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

3-9 थेरा खदिरावनीय की जीवनी पर टीका।

3-9,1. गंगाभागीरथी नाम से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा खदिरवानीया की जीवनी का वर्णन करते हैं। इस थेरा ने पूर्व बुद्धों की भी समर्पित सेवा की थी और पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों को संचित करते हुए, प्रतापी पद्ममुत्तरा के समय में हंसवती नगर में एक नाविक के परिवार में पुनर्जन्म लिया था। परम पूज्य बुद्ध और उनके शिष्यों के साथ गंगा तट के निकट नौकायन करते हुए, वे अत्यंत धर्मपरायण हो गए, नौकाओं का संग्रह करके बुद्ध और उनके शिष्यों को बड़े आदर और श्रद्धा के साथ दूसरे तट तक ले गए।

उन्होंने देखा कि गुरु ने एक भिक्षु को वनवासी भिक्षुओं में सर्वोच्च स्थान दिया है, तो उन्होंने भी वही पद पाने की कामना की, बुद्ध और भिक्षुओं को दान दिया और पाणिधान किया। परम पूज्य बुद्ध ने उनकी इस मनोकामना की पूर्ति की भविष्यवाणी की।

3-9,2. वहीं से आरंभ करते हुए, पुण्य कर्मों का संचय करते हुए, उन्होंने देवताओं और मनुष्यों के बीच पुनर्जन्म लेकर दोनों प्रकार की समृद्धि का आनंद लिया। जब वर्तमान बुद्ध प्रकट हुए, तब उनका पुनर्जन्म मगध राज्य के नालक ग्राम में रूपसारी नामक ब्राह्मण स्त्री के गर्भ में हुआ। माता-पिता ने उन्हें, जो वयस्क हो चुके थे, गृहस्थी में बांधने की इच्छा की और उन्हें इस बारे में सूचित किया। यह सुनकर कि थेरा सारिपुत्त भिक्षु बन गए हैं, उन्होंने मन ही मन कहा: "मेरे बड़े भाई, भगवान उपतिस्सा, ने इस धन का त्याग करके भिक्षु बन गए हैं; मैं उनके द्वारा उगली गई लार के इस टुकड़े का आनंद कैसे उठाऊँगा?" इस प्रकार, उसने पश्चाताप को प्रेरित किया, और एक हिरण की तरह, जो जाल के पास नहीं जाता, रिश्तेदारों से बच निकला। कारण की प्रबलता से प्रेरित होकर, वह भिक्षुओं के समक्ष गया, उन्हें अपने धम्म के सेनापति के सबसे छोटे भाई होने की स्थिति से अवगत कराया और स्वयं भिक्षु बनने की अपनी इच्छा के बारे में बताया। भिक्षुओं ने उसे दीक्षा दी और बीस वर्ष की आयु पूरी होने पर उसे पूर्ण दीक्षा प्रदान की तथा उसे मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) सौंपा। उसने मानसिक अभ्यास (कम्मत्थाना) का पाठ लिया, बबूल के जंगल में प्रवेश किया, थकान से उबरने के लिए, परिश्रम और प्रयास किया, और ज्ञान की सर्वांगीण परिपक्वता प्राप्त करने के कारण, कुछ ही समय बाद, छह प्रकार के उच्च ज्ञान से परिपूर्ण अरहंत बन गया। अरहंत बनने के बाद, उन्होंने अपने मठ का त्याग कर, अपना भिक्षापात्र और वस्त्र धारण किया और बुद्ध तथा धम्म के सेनापति को प्रणाम करने के लिए प्रस्थान किया। उचित समय पर वे सावत्थी पहुँचे, जेतवन मठ में प्रवेश किया, गुरु तथा धम्म के सेनापति को प्रणाम किया और कुछ दिनों तक जेतवन में रहे। फिर, अपने श्रेष्ठ शिष्यों की सभा के बीच में विराजमान होकर, गुरु ने उन्हें वनवासी भिक्षुओं में सर्वोच्च स्थान देते हुए कहा: "हे भिक्षुओं! यह थेरा मेरे वनवासी शिष्य भिक्षुओं में श्रेष्ठ है; अर्थात्, यह रेवता।"

628. इस प्रकार सर्वोच्च पद प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया और अपने उत्साह और मन की प्रसन्नता के फलस्वरूप पूर्व में किए गए कर्मों को प्रकट करने के लिए गंगा भागीरथी से शुरू होने वाले श्लोक का उच्चारण किया। वहाँ गंगा, नदी; जो गाती और वाणी करती बहती है; यही गंगा है; दूसरे शब्दों में, पृथ्वी को 'जाना' कहा गया है, जो उस पृथ्वी पर चली गई है या मुड़ गई है; यही गंगा है; आवत्त गंगा, जिसने अनोटत्त झील की तीन बार परिक्रमा की और बहती रही; बहला गंगा, जो पहाड़ी की चोटी पर बहने के स्थान पर है; उमंग गंगा भी पशु पहाड़ी में प्रवेश करके बहने के स्थान पर है; आकाश गंगा, पाँच योजन तक आकाश में बहने के बाद बहाला पर्वत से टकराती है; भागीरथी, उस नदी के गिरने के स्थान को तोड़कर, पाँच योजन तक फैले कमल के तालाब के किनारे को तोड़कर, वहाँ पाँच उंगलियों के समान पाँच जल-वाहक नदियाँ बन जाती है; गंगा, यमुना, सरभू, माही और अचिरवती जैसे पाँच नामों से जानी जाने वाली, जम्बूद्वीप को पाँच भागों में बाँटकर, नदी बहने लगती है; गंगा और भागीरथी; इस प्रकार, गंगा भागीरथी। यद्यपि इसे "भागीरथी गंगा" कहा जाना चाहिए, श्लोक की रचना में सुगमता के लिए इसे पूर्व प्रचलन के अनुसार ऐसा कहा गया है; अतः इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। हिमवंता पभाविता, हिमवंता से उत्पन्न, क्योंकि यह जीवों के प्रति क्रूर है, प्रहार करती है, परेशान करती है और ठंड से अस्त-व्यस्त कर देती है; अतः यह हिम है, बर्फ; इसमें बर्फ है; अतः हिमवा, बर्फ का स्वामी; उस हिमवंता से ही यह उत्पन्न होती है, बनती है, बहती रहती है; अतः यह हिमवंता से उत्पन्न होती है। कुटित्ते नाविको आसिम (मैं एक खराब घाट पर नाविक था) मैं एक नाविक था और बन गया जो नदी के घुमावदार किनारे पर, नदी के असमान घाट पर, जब गंगा उबड़-खाबड़ धारा में ठीक से पहुँचती थी, तब उत्पन्न हुआ; यही अर्थ है। ओरिमे च तारिमहम (मैं यहाँ से भी पार हुआ) मैं पार हुआ और उन लोगों को पार कराया जो स्वयं आते रहे; उस किनारे से उस किनारे तक; यही इसका अर्थ है।

629. पदुमुत्तरो नायको (नेता पदुमुत्तरा) बुद्ध पदुमुत्तरा, दो पैरों वाले मनुष्यों में श्रेष्ठ, जीवों को निर्वाण तक ले जाने वाले, जहाँ उन्होंने अपने अनुयायियों को पहुँचाया और जिन्होंने पुण्य कर्मों की समृद्धि से सिद्धि प्राप्त की, वसीसतसहस्सेहि (एक लाख शक्तिशाली लोगों के साथ) एक लाख अरहंतों के साथ, जिन्होंने अपने कष्टों को दूर कर लिया था, गंगा नदी पार करने के लिए नदी के किनारे पहुँचे; इस प्रकार, संबंध है।

630. बाहुनावा समनेत्वा (अनेक नौकाओं को एकत्रित करके) ने ज्ञान प्राप्त बुद्ध को आते देखकर, नौका निर्माता बढ़ई द्वारा विधिवत और परिपूर्ण रूप से निर्मित अनेक नौकाओं को एकत्रित किया, प्रत्येक दो नौकाओं के जोड़े को एक में संयोजित किया और उन नौकाओं पर छत वाला पंडाल स्थापित किया; नरसाभम (विशाल बैल-पुरुष) ने ज्ञान प्राप्त बुद्ध पद्ममुत्तरा को अर्पित किया; पतिमानिम (उचित रूप से आदरणीय) सम्मान में अर्पित किया; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

631. आगन्त्वना च सम्बुद्धो (स्वयंप्रबुद्ध बुद्ध, जो वहाँ आए थे) अच्छी तरह से बंधी हुई नौकाओं पर सवार होकर; तम च नावकम (उस नौका पर भी) बुद्ध ने सबसे उत्तम नौका पर सवार होकर यह संबंध स्थापित किया। वारिमज्जे तितो सत्था (गुरु जल के मध्य में खड़े थे)

गंगा नदी के मध्य में स्थित गुरु ने इस श्लोक का उचित उपदेश दिया, जिससे मन को आनंद मिलता है; इस प्रकार यह संबंध स्थापित किया गया है।

632. यो सो तारेसि सम्बुद्धम् (जिसने आत्मज्ञानी बुद्ध को पार भेजा) वह नाविक, जिसने आत्मज्ञानी बुद्ध को बहती गंगा नदी के पार भेजा; संघांचपि अनासवम् (उन पुरोहितों को भी जो दोषरहित थे) मैंने केवल आत्मज्ञानी बुद्ध को ही पार नहीं भेजा, बल्कि दोषरहित और निर्मल पुरोहितों को भी पार भेजा; यही अर्थ है। तेना चित्तपसादेन (उस सुखद पवित्र मन से) उस निर्मल पवित्र मन से, जो मेरे नौका चलाने के समय उत्पन्न हुआ; देवलोक (दिव्य लोक में) छह इंद्रिय लोकों में; रामिस्सति (वह आनंदित होगा) वह तदनुसार दिव्य समृद्धि का अनुभव करेगा; यही अर्थ है।

633. निब्बत्तिस्सति ते ब्याम्हम्, तुम्हारे लिए एक महल उत्पन्न होगा, ते (तुम्हारे लिए) दिव्य लोक में पुनर्जन्म लेने वाले तुम्हारे लिए, ब्याम्हम्, एक महल, सुकतम (सुगठित) विधिवत निर्मित, सुगठित; नाव के आकार का (उपयुक्त रूप से रखा हुआ नाव); निब्बत्तिस्सति (पुनर्जन्म) प्रकट होगा; यही अर्थ है। आकाशे पुप्पह चदनाम (आकाश में, पुष्प छत्र) नाव के ऊपर पंडाल बनाने के फलदायी परिणाम स्वरूप, वह आकाश में अपने सिर पर सदा पुष्प छत्र धारण करेगा; यही क्रम है।

634. पुण्य कर्म करने के इस समय से शुरू होकर (अष्टम युगों (कप्पा) बाद), अष्टम युगों से आगे बढ़कर, तोराका नाम से जाने जाने वाले खत्तिया वंश के एक विश्वराज ने; चतुरंतो (चार सीमाओं) में चार द्वीपों पर शासन करने वाले राजा ने; विजयावी (ने विजय प्राप्त की) विजय प्राप्त की; इस प्रकार, संबंध है। श्लोक का शेष भाग स्पष्ट है।

637. रेवतो नाम नामेन (रेवता नाम से जाना जाता है) रेवती नक्षत्र में जन्म लेने के कारण "रेवता" नाम प्राप्त हुआ; ब्रह्मबंधु (ब्रह्मा का रिश्तेदार) ब्राह्मण का पुत्र बना है; न्हाविस्साति (होगा) ब्राह्मण परिवार में उत्पन्न होगा; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

639. निब्बायिस्सति नासावो (जो दोषरहित है वह निर्वाण में प्रवेश करेगा) वह सर्वांगीण विसर्जित समुच्चयों (खन्ध परिनिर्वाण) के माध्यम से निर्वाण में प्रवेश करेगा।

640. वीरियम मे धुरधोरयम (मेरा परिश्रम, मेरे द्वारा उठाए गए भार (या ज़िम्मेदारी) को वहन करने का मेरा प्रयास कोमल प्रकार का नहीं था; यह एक विशेष और निश्चित ज़िम्मेदारी का वहन था, जिसके साथ सुरक्षित, खतरे से मुक्त निर्वाण की प्राप्ति के लिए मेरा कठोर परिश्रम भी शामिल था; यही अर्थ है। धारेमि अंतिमं देहम् (मैं अपना अंतिम शरीर धारण करता हूँ) अब, मैं आत्मप्रबुद्ध बुद्ध के विधान में अपना सर्वांगीण अंतिम शरीर धारण करता हूँ; यही संबंध है।

640,1. इसके बाद, वह अपने पैतृक गाँव गए, वहाँ से अपनी बहन के तीन पुत्रों, भतीजों और तीन पुत्रियों, कला, उपकला और सीसूपकला को लाए, उन्हें भिक्षु और भिक्षुणी बनाया और उन्हें मानसिक साधना (कम्मत्थान) में लगा दिया। वे इसी प्रकार मानसिक साधना (कम्मत्थान) में लीन होकर जीवन व्यतीत करते रहे।

640,2. उस समय, थेरा को एक विशेष रोग हो गया। इसके बारे में सुनकर, थेरा सारिपुत्त, थेरा के पास गए और मन ही मन कहने लगे, "मैं रेवत के रोग का पता लगाऊंगा और उनकी उपलब्धि के बारे में पूछूंगा।" थेरा रेवत ने दूर से ही धम्म के सेनापति को आते हुए देखकर, अपने भतीजों और भांजियों या उन नौसिखियों को सचेतनता का उपदेश देने के लिए 'काले' से शुरू होने वाला श्लोक बोला। थेरा, काले, उपकाले और सीसूपकाले उनके संबोधन हैं; वे तीनों बालक जिन्होंने स्त्रीलिंग नाम प्राप्त किए, अर्थात्: काला, उपकाला और सीसूपकाला, यद्यपि उन्होंने संन्यास लेकर नौसिखिए बन गए थे, फिर भी उन्हें इसी नाम से पुकारा जाता था। इसके अलावा, लोग उन्हें "काली, उपकाली और शिशुपाली" भी कहते थे। किस उद्देश्य से या किस परिस्थिति में उन्हें "काले" आदि कहकर संबोधित किया जाता था? इसे समझाने के लिए उन्होंने कहा: "पतिसता नु खो विहारथा? क्या तुम सब सचमुच उचित चेतना के साथ निवास करते हो?" उन्होंने इसके कारण का वर्णन इस प्रकार किया: "चूँकि बाल नोचने वाले के समान एक व्यक्ति आया है।" पतिसता, उचित चेतना; खो जोर देने वाला शब्द है (या पुष्टि दर्शाने वाला शब्द); आगतो (आया है) आ गया है; वो, तुम्हें (या तुम्हारे); वाला विय वेधि, बाल नोचने वाले के समान; यहाँ इसका संक्षिप्त अर्थ है - तुम्हारा चाचा थेरा, जो गुरु के समान है, जो अपने तीव्र, त्वरित और गहन ज्ञान के कारण बाल नोचने वाले के समान दिखता है, आया है; अत: आप सभी को संन्यास की अनुभूति जागृत करने के बाद, सचेतनता और आत्मजागरूकता से युक्त होकर जीवन व्यतीत करना चाहिए; आपने जो जीवन प्राप्त किया है, उसमें लापरवाही न बरतें।

604.3. जो कुछ उन्हें कहा गया, उसे सुनकर वे नौसिखिए धम्म के सेनापति से मिलने और उनका स्वागत करने के लिए आगे बढ़े और अपने मामाओं से कुछ ही दूरी पर समाधि में लीन होकर बैठ गए, उस समय दोनों थेरा आपस में बातचीत कर रहे थे। धम्म के सेनापति, थेरा रेवता के साथ बातचीत करने के बाद, अपनी सीट से उठे और उन नौसिखियों (सामणेर) के पास गए। क्योंकि वे भी अनंत काल से एकाग्रता का अभ्यास कर रहे थे, इसलिए थेरा के पास आने पर वे भी उठ खड़े हुए और उन्हें प्रणाम किया। थेरा ने उनसे पूछा, "तुम सब किस प्रकार का जीवन जीते हो?" और जब लड़कों ने बताया कि वे इस और उस तरीके से जीवन यापन कर रहे हैं, तो थेरा सारिपुत्त ने

नौसिखियों को अनुशासित करते हुए और अपने छोटे भाई थेरा की प्रशंसा करते हुए प्रस्थान किया: "सत्य के वक्ता (या सच्चे दृष्टिकोण के धारक) मेरे छोटे भाई, वास्तव में, सत्य (धम्म) के अनुसार एक धर्मनिष्ठ अभ्यासी हैं।" इसके बाद का अर्थ स्पष्ट है।

थेरा खदिरयानिय की जीवनी पर की गई टीका समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.1 >> 10. थेरा आनंद

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

10. आनंद

आश्रम के द्वार से निकलते हुए महान ऋषि पद्ममुत्तरा अमरता की वर्षा कर रहे थे और जनसंख्या की प्यास बुझा रहे थे। (1) (653)

एक लाख वीर (भिक्षु) विशेष ज्ञान से युक्त,367 संबुद्ध को कभी न विदा होने वाली छायाओं की तरह घेरे हुए थे। (2) (654)

मैं एक हाथी की पीठ पर एक शानदार सफेद छाता लिए बैठा था। उसकी सुंदर आकृति देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। (3) (655)

हाथी से उतरकर मैं (उसके पास), मनुष्यों के सांड के पास पहुँचा और सर्वश्रेष्ठ बुद्ध के ऊपर अपना रत्नजड़ित छाता उठाया। (4) (656)

पद्ममुत्तरा, महान ऋषि, मेरे विचारों को समझते हुए, (वे जो बात कह रहे थे) उसे रोककर (फिर) मेरे बारे में ये श्लोक बोले: (5) (657)

"जो सोने के आभूषणों से सजे इस छाते को फहरा रहा है, मैं उसके बारे में विस्तार से बताऊंगा; आप सब मेरी बात ध्यान से सुनें: (6) (658)

यहाँ से आगे बढ़कर यह व्यक्ति तुसिता (स्वर्ग) में निवास करेगा। वह दिव्य अप्सराओं द्वारा सम्मानित होकर सुख का अनुभव करेगा।368 (7) (659)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 367 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 368 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

वह चौंतीस बार दिव्य शासन करेगा। एक सौ आठ बार वह एक शक्तिशाली राजा के रूप में पृथ्वी पर निवास करेगा। (8) (660)

और वह पचास बार चक्र घुमाने वाला राजा होगा। वह पृथ्वी पर अनगिनत क्षेत्रीय शासन करेगा। (9) (661)

ओक्काका (इक्ष्वाकु) वंश में उत्पन्न होने वाले एक लाख युगों में, गौतम नाम का व्यक्ति संसार का गुरु होगा। (10) (662)

वह शाक्यन वंश के उस ध्वज का (निकट) संबंधी होगा। उसका नाम आनंद होगा, जो उस महान ऋषि का सेवक होगा। (11) (663)

उत्साही साधक, बुद्धिमान और अनेक सत्यों के ज्ञान से परिपूर्ण, कर्म में विनम्र और ग्रहणशील, वह सभी (बुद्ध के वचन) सुनाएगा। (12) (664)

परिश्रम में लीन होकर, शांत होकर,369 पुनर्जन्म के आधारों से रहित,370 सभी दोषों को भली-भांति जानकर वह निर्वाण प्राप्त करेगा, निर्दोष रहित होकर।" (13) (665)

जंगलों में हाथी हैं, साठ साल के हाथी, तीन तरह से संभोग करते हुए, रथ-ध्रुव वाले हाथी, राजाओं के वाहन। (14) (666)

(उनकी तरह) लाखों बुद्धिमान पुरुष हैं जिनके पास अपार शक्तियां हैं, और उनमें से कोई भी आश्चर्यचकित नहीं है।

---

369 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 370 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 371 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 372 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ 373 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

बुद्ध-हाथी की (शक्ति) पर। (15) (667)374

मैं आरंभ में, मध्य में और अंत में उपासना करता हूँ। प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से मैं सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की सेवा करता हूँ। (16) (668)

उत्साही प्रयासकर्ता, बुद्धिमान, जो वास्तव में जानता है, सचेत, धारा-प्रवेशकर्ता-फल पर पहुंचा, प्रशिक्षण-आधारों में कुशल, (I) (17) (669)

मैंने वह कर्म उत्पन्न किया जो मैंने एक लाख युग पहले किया था। मैंने अब धम्म में दृढ़, अविचलित वह अवस्था प्राप्त कर ली है।375 (18) (670)

मेरे सारे दोष (अब) जलकर भस्म हो गए हैं; समस्त (नया) अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह, मैं बंधनमुक्त होकर जी रहा हूँ। (671)376 बुद्ध की उपस्थिति में रहना मेरे लिए बहुत अच्छा था। तीनों ज्ञान प्राप्त हो गए हैं; (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (19) (672)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) (673)

इस प्रकार पूज्य आनंद थेरा ने इन श्लोकों का उच्चारण किया।

आनंद थेरा की कथा का अंत हो गया है।

सारांश:

बुद्ध और एकाकी बुद्ध, सारिपुत्त और कोलिता, कस्सपा और अनुरुद्ध, पुन्ण थेरा और उपाली, कोण्डाञ्ञ और पिण्डोला और रेवता, ज्ञानी आनंद, छह सौ पचास श्लोक 377

---

374 शाब्दिक अर्थ, "गया" 375 पाठ sañcālesi BJTS के साथ PTS sañjālesi 376 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया" 377 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

उन सभी को एक साथ जोड़ना।

अपादाना का पहला बुद्ध अध्याय।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

3-10 थेरा आनंद की जीवनी पर टिप्पणी।

3-10,1. आरामदवारा निक्खम्म से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा आनंद की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने और पुण्य कर्मों का संचय करने के कारण, जो पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने में सहायक थे, उन्होंने गुरु के दूसरे माता से जन्मे छोटे भाई के रूप में हांसवती नगर में पद्ममुत्तरा के समय पुनर्जन्म लिया। उनका नाम सुमन रखा गया। उनके पिता राजा नंदा के नाम से जाने जाते थे। जब उनके पुत्र, युवा राजकुमार सुमन वयस्क हुए, तो राजा ने उन्हें हांसवती नगर से बीस योजन की दूरी पर स्थित एक समृद्ध नगर उपहार में दिया। कभी-कभी, युवा राजकुमार गुरु और अपने पिता से मिलने आते थे। उस समय राजा स्वयं और आदरपूर्वक गुरु और लगभग एक लाख भिक्षुओं की सेवा करते थे; वे दूसरों को उनकी सेवा करने की अनुमति नहीं देते थे।

3-10,2. उस समय उनकी सीमा ने राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। युवा राजकुमार ने राजा को उस विद्रोह की स्थिति के बारे में सूचित नहीं किया, परन्तु स्वयं ही उसे दबा दिया। यह सुनकर राजा प्रसन्न हुए और बोले, “मेरे प्रिय पुत्र! मैं तुझे पुरस्कार देता हूँ, ले ले।” युवा राजकुमार ने उत्तर दिया, “मैं तीन माह तक गुरु और उनके भिक्षुओं की भक्तिपूर्वक सेवा करके अपना जीवन निर्वाह करना चाहता हूँ।” राजा ने उत्तर दिया, “यह संभव नहीं है; कोई दूसरा पुरस्कार माँग ले।” युवा राजकुमार ने दृढ़ता से कहा, “महाराज! राजकुमारों के लिए दो अलग-अलग बातें नहीं होतीं; कृपया मुझे यही दें; मुझे कुछ और नहीं चाहिए; यदि गुरु अपनी स्वीकृति दें, तो मुझे वही दिया जाना चाहिए।” युवा राजकुमार मन ही मन कहते हुए मठ की ओर चल पड़े, “मैं स्वयं गुरु के मन को जानूँगा।” उसी समय, प्रतापी प्रभु अपने सुगंधित कक्ष में प्रवेश कर चुके थे। युवा राजकुमार भिक्षुओं के पास गए और बोले, “आदरणीय गुरुदेव! मैं परम पूज्य बुद्ध के दर्शन करने आया हूँ; कृपया मुझे उनके पास ले चलें।” भिक्षुओं ने उत्तर दिया, “सुमना नामक थेरा गुरुदेव के सेवक हैं, कृपया उनके पास जाइए।” युवा राजकुमार थेरा के पास गए और बोले, “आदरणीय गुरुदेव! कृपया मुझे गुरुदेव के पास ले चलें।” वहाँ थेरा युवा राजकुमार के देखते ही पृथ्वी में समा गए, परम पूज्य बुद्ध के पास गए और बोले, “आदरणीय गुरुदेव! राजा का पुत्र आपसे मिलने आया है।” बुद्ध ने उत्तर दिया, “हे भिक्षु! ठीक है, तो मठ के बाहर मेरा आसन तैयार कर दीजिए।” फिर, थेरा ने बुद्ध के आसन को थामकर सुगंधित कक्ष में समा गए, युवा राजकुमार के देखते ही मठ परिसर के बाहर प्रकट हुए और सुगंधित कक्ष में बुद्ध के लिए आसन तैयार किया। यह देखकर युवा राजकुमार के मन में यह विचार आया: "सचमुच! यह भिक्षु महान शक्ति वाला है!"

3-10,3. प्रतापी बुद्ध अपने सुगंधित कक्ष से बाहर आकर अपने लिए तैयार किए गए आसन पर बैठ गए। राजा के पुत्र ने गुरु को प्रणाम किया, उनसे वार्तालाप किया और कहा, “आदरणीय गुरुदेव! मुझे लगता है कि यह गुरुदेव आपके धर्म में प्रिय हैं।” बुद्ध ने उत्तर दिया, “हे राजकुमार! जी हाँ, वे प्रिय हैं।” राजकुमार ने पूछा, “आपने दान-पुण्य जैसे पुण्य कर्म किए हैं।” राजकुमार ने बुद्ध के नेतृत्व में पुरोहितों को सात दिनों तक अपने शिविर में भोजन कराया और कहा, “आदरणीय गुरुदेव! मैं भी भविष्य में इस गुरुदेव के समान किसी बुद्ध के धर्म में प्रिय बनना चाहता हूँ।” सातवें दिन राजकुमार ने कहा, “आदरणीय गुरुदेव! मुझे अपने पिता से तीन महीने तक आपको भोजन कराने का वरदान प्राप्त हुआ है; कृपया वर्षा ऋतु के तीन महीने मेरे साथ बिताने की अनुमति दें।” जब राजकुमार को गुरु की स्वीकृति का पता चला, तो उसने गुरु और उनके अनुयायियों को साथ लेकर प्रत्येक योजन में गुरु और भिक्षुओं के निवास के लिए उपयुक्त मठ बनवाए, उनसे अपने किसी मठ में निवास करने का अनुरोध किया और अपने निवास स्थल के पास, एक लाख रुपये में खरीदे गए शोभना नामक उद्यान में एक लाख रुपये का एक मठ बनवाया और गुरु और उनके भिक्षुओं से उस मठ में प्रवेश करने का अनुरोध किया तथा समर्पण के रूप में जल चढ़ाया:

“मैंने एक लाख की कीमत पर इसे खरीदा; एक लाख के खर्च पर मठ का निर्माण करवाया; हे महान ऋषि! कृपा करके शोभना नामक उद्यान को स्वीकार करें।”

उपवास के प्रारंभ के दिन, राजकुमार ने गुरु को एक बड़ा दान दिया और उस दान से संबंधित सभी कार्यों का दायित्व अपनी पत्नी, बच्चों और मंत्रियों को सौंपते हुए कहा: "आप सभी इस सेवा को करके दान करें।" राजकुमार स्वयं, थेरा सुमना के निवास स्थान के निकट ही रहकर, तीन माह तक अपने निवास स्थान में गुरु की सेवा करते रहे। परन्तु जब आलोचना के निमंत्रण (पवाराण) का दिन निकट आया, तो राजकुमार गाँव में प्रवेश करके सात दिनों तक एक बड़ा दान दिया; सातवें दिन, उन्होंने तीन वस्त्रों के जोड़े गुरु और भिक्षुओं के चरणों में रखे, गुरु को प्रणाम किया और अपनी इच्छा इस प्रकार व्यक्त की: "हे पूज्यवर! मेरे द्वारा अपने शिविर से शुरू किया गया यह पुण्य कर्म सक्का आदि की समृद्धि के लिए नहीं किया गया है; बल्कि, थेरा सुमना की तरह मैं भी भविष्य में किसी बुद्ध का प्रिय सेवक बनना चाहता हूँ।" गुरु ने उनकी निरंतर सक्रियता देखकर भविष्यवाणी की और प्रस्थान कर गए।

3-10,4. उन्होंने बुद्ध के प्रकट काल (बुद्धुप्पाद) में एक लाख वर्षों तक और उसके बाद भी पुण्य कर्म किए; इस और उस जन्म में अपार पुण्य कर्म संचित करने के बाद, वे तेजस्वी कस्सपा के समय में एक परिवार के घर में पुनर्जन्म लेकर देवताओं और मनुष्यों के बीच अपने बार-बार के पुनर्जन्मों (संसार) में विचरण करते रहे। जब वे बुद्धि की आयु प्राप्त कर चुके, तो उन्होंने भिक्षा मांगने वाले एक थेरा के भिक्षापात्र को पकड़ने के उद्देश्य से अपना ऊपरी वस्त्र आदरपूर्वक अर्पित कर दिया। फिर उन्होंने स्वर्ग में पुनर्जन्म लिया और वहाँ से देह त्याग कर बनारस के राजा बने, आठ मौन बुद्धों के दर्शन किए, उन्हें भोजन कराया, अपने शुभ उद्यान में आठ पत्तियाँ बनवाईं, उनके बैठने के लिए सभी प्रकार के रत्नों से बने आठ आसन और एक रत्न आसन तैयार करवाया, और दस हजार वर्षों तक सेवा की; ये सब स्पष्ट हैं।

3-10,5. एक लाख युगों तक पुण्य कर्म संचित करने के बाद, इस और उस जन्म में उनका हमारे बोधिसत्व के साथ तुषिता के स्वर्ग नगर में पुनर्जन्म हुआ, और वहाँ से उनका निधन हो गया, और क्योंकि उनका जन्म सभी संबंधी को प्रसन्न करते हुए हुआ था, इसलिए उन्हें आनंद नाम प्राप्त हुआ। समय आने पर, वे वयस्क हुए और भद्दिया और अन्य लोगों के साथ संसार का त्याग कर दिया, जिन्होंने उस

तेजस्वी बुद्ध के अनुयायी बनने के उद्देश्य से भिक्षु बनने के लिए संन्यास लिया था, जो कपिलवस्तु नगर से प्रस्थान कर रहे थे, जहाँ वे अपने महान त्याग के फलस्वरूप आत्मज्ञान प्राप्त करने के बाद धर्म के उत्कृष्ट चक्र को घुमाते हुए पहली बार गए थे। आनंद ने परम पूज्य की उपस्थिति में भिक्षु दीक्षा ली, ब्राह्मण देवी मंतानी के पुत्र पून्न के समक्ष धम्म का उपदेश सुना और दीक्षा के प्रथम चरण (सोतापत्ति) में स्थापित हो गए।

3-10,6. उस समय, बुद्ध की प्रथम पूर्ण ज्ञान प्राप्ति (बोधि) के बीस वर्षों बाद तक उनका कोई स्थायी सेवक नहीं था। एक समय नागसमाला थेरा अपना कुंड और वस्त्र लेकर बुद्ध की सेवा में इधर-उधर भटकते थे; एक समय नागिता, दूसरे समय उपवन, फिर एक समय सुनक्खत्त, फिर एक समय चुंडा, समनुद्देश, बाद में एक समय सागत, फिर एक समय मेघिया; वे आम तौर पर गुरु का दिल नहीं जीत पाते थे। फिर एक दिन, अपने सुगंधित कक्ष के परिसर में उनके लिए तैयार किए गए उत्तम बुद्ध आसन पर विराजमान, अपने भिक्षुओं से घिरे हुए, भिक्षुओं को संबोधित करते हुए बोले: "हे भिक्षुओं! मैं अब वृद्ध हो रहा हूँ। जब कुछ भिक्षुओं को मैं इस मार्ग से जाने के लिए कहता हूँ, तो वे दूसरे मार्ग से चले जाते हैं; कुछ भिक्षु मेरे भिक्षापात्र और वस्त्र को जमीन पर फेंक देते हैं; आप सभी मेरे लिए एक ऐसे भिक्षु को खोजें और मुझे सूचित करें जो मेरी सेवा में स्थायी रूप से उपस्थित रहे।" यह सुनकर भिक्षुओं के मन में आध्यात्मिक पश्चाताप उत्पन्न हुआ। तब पूज्य आनंद ने कहा, "मैं आपकी सेवा करूँगा।" पूज्य आनंद ने उन्हें अस्वीकार कर दिया। इस प्रकार, सभी प्रमुख शिष्यों ने महामोग्गलाना (प्रारंभ) की शुरुआत करते हुए, पूज्य आनंद को छोड़कर, उठ खड़े हुए और क्रमशः कहा, "मैं आपकी सेवा करने जा रहा हूँ, मैं आपकी सेवा करूँगा।" पूज्य आनंद ने उन्हें भी अस्वीकार कर दिया।

3-10,7. आनंद, हालांकि, चुपचाप बैठे रहे। तब भिक्षुओं ने उनसे कहा, "मित्र! तुम भी गुरु के सेवक पद के लिए आवेदन कर सकते हो।" "आवेदन करने के बाद सेवा प्राप्त करना कैसा होता है? यदि गुरु चाहें तो वे स्वयं ही बोलते हैं"; यह उनका उत्तर था। तब, भगवान ने कहा, "हे भिक्षुओं! आनंद को दूसरों के दबाव में नहीं लाना चाहिए; वह स्वयं ही मुझे जान लेगा और मेरी सेवा करेगा।" इसके बाद, भिक्षुओं ने उन्हें प्रेरित किया, "हे मित्र आनंद! कृपया उठो और गुरु के सेवक पद के लिए अपना आवेदन करो।" थेरा खड़े हुए और इस प्रकार बोले: "आदरणीय महोदय! यदि परमेश्वर मुझे स्वयं द्वारा प्राप्त उत्तम वस्त्र न दें, उत्तम भिक्षाभोजन न दें, एक ही सुगंधित कक्ष में रहने की अनुमति न दें, निमंत्रण स्वीकार न करें; तो भी मैं परमेश्वर की सेवा करूंगा। ये चार निवेदन निंदा से बचने के उद्देश्य से हैं, इस संदर्भ में: "इतने गुणों को प्राप्त करने वाले के लिए गुरु की सेवा करना क्या बोझ है?" आदरणीय महोदय! यदि परमेश्वर मेरे द्वारा स्वीकार किए गए निमंत्रण का उत्तर दें; यदि मुझे विभिन्न स्थानों से आए प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत करने की अनुमति दी जाए; जब मेरे मन में संदेह उत्पन्न हो तो मैं तुरंत परमेश्वर के पास जाकर उनसे प्रश्न पूछने का अवसर प्राप्त कर सकूं; यदि परमेश्वर मेरी अनुपस्थिति में उनके द्वारा प्रचारित सत्य (धर्म) को मुझे पुनः सुनाएं; तो भी मैं परमेश्वर की सेवा करूंगा। ये चार निवेदन केवल निंदा से बचने के उद्देश्य से नहीं हैं, बल्कि इस प्रकार की निंदा से बचने के लिए भी हैं: "वे गुरु की उपस्थिति में भी इतना स्नेहपूर्ण आदर प्राप्त न होने पर भी, सत्य (धम्म) के खजाने के संरक्षक के पद को सर्वांगीण रूप से परिपूर्ण करने के उद्देश्य से, आनंद बुद्ध के स्थायी सेवक बन गए। उन्होंने एक लाख युगों (कप्पा) में पूर्ण की गई सिद्धियों का फल प्राप्त किया, ताकि वे उसी उच्च पद को प्राप्त कर सकें।

3-10,8. जिस दिन से उसने सेवक का पद ग्रहण किया, उसी दिन से वह दासबाला की दो प्रकार के जल, तीन प्रकार के दाँत साफ करने वाले ब्रश से सेवा करता था, हाथों और पैरों की सभी प्रकार की सफाई करता था, बुद्ध की पीठ की सभी प्रकार की सफाई करता था और सुगंधित कक्ष के परिसर की सफाई करता था; इस प्रकार बुद्ध की सेवा करते हुए, और इसी तरह उनके कार्यों में संलग्न रहते हुए, वह दिन के समय उनकी उपस्थिति में इस प्रकार विचरण करने वाला बन गया: "गुरु के लिए यह प्राप्त करना उचित है, अर्थात् यह; उनके लिए यह करना उचित है, अर्थात् यह कर्म।" रात में, वह एक बड़ी जलती हुई छड़ी लेकर सुगंधित कक्ष के परिसर में नौ बार चक्कर लगाता था, ताकि आलस्य और नींद को दूर कर सके और गुरु के बुलावे पर उत्तर दे सके। फिर, जेतवन मठ में कुलीनों की सभा के बीच बैठे हुए, गुरु ने अनेक प्रकार से उनकी प्रशंसा की और उन्हें उन भिक्षुओं में सर्वोच्च स्थान दिया जो बहुत विद्वान थे, सचेत थे, उत्तम आचरण (या अच्छे शब्द बोलने वाले) (गति) में थे, दृढ़ थे और समर्पित सेवकों से युक्त थे।

3-10,9. यह महान थेरा, जो इस प्रकार पाँच सर्वोच्च पदों पर आसीन थे, जो चार अद्भुत और विचित्र घटनाओं (धम्म) से संपन्न थे, जो गुरु के धम्म भंडार के संरक्षक थे, गुरु के परिनिर्वाण में प्रवेश करने के समय केवल प्रथम चरण (सेख) के एक साधक थे; भिक्षुओं द्वारा प्रोत्साहित होकर, और एक दिव्य सत्ता द्वारा पूर्वोक्त तरीके से आत्म-पश्चाताप (हेष्ठा) करवाकर, उन्होंने स्वयं से कहा:- अब, धम्मसंगीति का सामूहिक पाठ किया जाना चाहिए, लेकिन कल तक भी मेरे लिए यह उचित नहीं है कि मैं सभा में जाकर उन थेरों के साथ धम्म का पाठ करूँ जो असेख (अरहंत) बन चुके हैं, जबकि मुझे स्वयं, जो कि प्रथम चरण (सेख) का एक साधक हूँ, यह करना चाहिए; उनकी लगन और परिश्रम से आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का निश्चय हुआ। रात्रि के बहुमूल्य समय में, जब वे मठ में परिश्रम की शांति प्राप्त नहीं कर पा रहे थे, उन्होंने विपश्यना साधना करते हुए आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का निश्चय किया। इसके बाद, वे

मठ में प्रवेश कर गए, अपने पलंग पर बैठ गए और लेटने की इच्छा होने पर उन्होंने करवट बदली। इसी समय, जब उनका सिर तकिये तक नहीं पहुँचा था और उनके पैर जमीन से मुक्त ही हुए थे, उन्होंने आसवों से मुक्त होकर मन की पूर्ण मुक्ति प्राप्त कर ली; वे छह प्रकार के उच्च ज्ञान से संपन्न अरहंत बन गए।

644. इस प्रकार समर्पित सेवक परिचारक जैसे गुणों से सर्वोच्च पद (एतदग्ग) प्राप्त करने के बाद, और शीघ्र ही छह प्रकार के उच्च ज्ञान आदि गुणों से सुशोभित होकर, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया और 'आरामदवारा निक्खम्म' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, जिसमें पूर्व जन्मों में किए गए कर्मों को मानसिक आनंद के रूप में दर्शाया गया है। वहाँ आरामदवारा (आश्रम के द्वार से) सभी जीवों को धर्म का उपदेश देने के उद्देश्य से मठ के द्वार से बाहर आए; महामुनि (महान ऋषि) आत्मप्रबुद्ध बुद्ध, पद्ममुत्तरा, द्वार के बाहर निर्मित पंडाल के मध्य में सुसज्जित उत्कृष्ट बुद्ध आसन पर बैठे थे; vassanto amataṇ vuṭṭhim (अमर शांति की वर्षा करते हुए) (अमता), सत्य (धम्म) के उपदेश के साथ सत्य (धम्म) की वर्षा करते हुए, अमर आनंद (ममता) प्रदान करते हुए, nibbāpesi mahājanam, ने असंख्य लोगों को निर्वाण तक पहुँचाया, nibbāpesi (बुझाकर) ने बड़ी संख्या में लोगों के मन में व्याप्त दुराचार की आग को बुझा दिया, और कई लोगों को अमर पेय के माध्यम से शीतलता और शांति की स्थिति प्राप्त करवाई; यही अर्थ है।

645. सतसहसम ते धीरा, वे दृढ़ ज्ञानी एक लाख, यह उन्होंने अनुयायियों की समृद्धि दर्शाने के लिए कहा; महिद्धिका (उच्च जादुई शक्तियों वाले) वे दृढ़ ज्ञानी एक लाख दोषरहित अरहंत, जो छह प्रकार के उच्च ज्ञान से संपन्न थे, और विभिन्न प्रकार की जादुई शक्तियों आदि जैसे ज्ञान के अंशों से युक्त थे, और जो ऐसी जादुई शक्तियों से संपन्न थे जो उन्हें एक क्षण में कई लाख ब्रह्मांडों (चक्कवला) में विचरण करने में सक्षम बनाती थीं, उच्च जादुई शक्तियों वाले थे; छाया व अनुपायिनी, परछाई के समान अनुयायी, परिवारेन्ति (घेरना) उस आत्मप्रबुद्ध बुद्ध, तेजस्वी पद्ममुत्तरा को एक ऐसी परछाई के समान घेर लिया जो कभी कहीं बाहर नहीं जाती थी, और उनके सत्य (धम्म) के उपदेश को सुना; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

646. हत्थिक्खन्धगतो आसिम, मैं हाथी की पीठ पर सवार था, उस समय जब प्रतापी बुद्ध सत्य (धम्म) का उपदेश दे रहे थे; आसिम, मैं अपने हाथी की पीठ पर बैठा था; यही अर्थ है। सेतच्छत्तम वरुत्तमम्, उत्तम श्वेत छत्र, मैं अपने हाथी की पीठ पर बैठा था और मेरे सिर पर उत्तम श्वेत छत्र था; यही संबंध है। सुसारुरूपम दिस्वाना (सुखद रूप देखकर), आत्मप्रबुद्ध बुद्ध को सत्य (धम्म) का उपदेश देते हुए देखकर, जो अच्छा, आनंददायक और हृदय को भाने वाला रूप है, मुझे; वित्ति, आनंद, उदपज्जत (उत्पन्न हुआ), मेरी संतुष्टि और मानसिक प्रसन्नता उत्पन्न हुई; यही अर्थ है।

647. ओरुयहा हत्थिक्खन्धम्हा, अपने हाथी की पीठ से उतरकर, उस तेजस्वी को बैठे हुए देखकर, ओरुयहा, मैं अपने हाथी की पीठ से उतरा, नरसाभम् उपगच्छिम (मैं उस विशाल बैल-पुरुष के पास गया) मैं उस बैल-पुरुष, बुद्ध के पास गया; यही अर्थ है। रत्नमयचट्टम् मे (मेरा रत्नों से बना छाता) मैंने उस श्रेष्ठ बुद्ध के ऊपर अपना रत्नों से सजा हुआ छाता उठाया; यही संबंध है।

648. मम संकल्पमञ्ञाय (मेरी मंशा जानकर) बुद्ध पद्ममुत्तरा, जो तपस्वियों में महान हो गए थे, मेरी स्पष्ट भक्ति से उत्पन्न मंशा को जानकर; तम कथम तापयित्वाना (उस उपदेश को त्यागकर) स्वयं द्वारा प्रचारित सत्य (धम्म) के उपदेश को त्यागकर, अभासत (कहा) मेरे भविष्य की भविष्यवाणी करने के लिए इस श्लोक का उच्चारण किया; यही अर्थ है।

649. यदि पूछा जाए: कैसे? तो उन्होंने कहा, "यो सो (जो कोई भी = वह) वह राजकुमार, जिसने मेरे सिर के ऊपर सोने के आभूषणों से सजे हुए छाते को धारण किया था; इस प्रकार संबंध है। तमहम कित्तयिस्सामि (मैं उसकी घोषणा करूँगा) मैं उस राजकुमार को प्रकट और स्पष्ट करूँगा; सुनोथा मम भासातो (जब मैं बोल रहा हूँ तो मेरी बात सुनो) कृपया कान नीचे करके सुनो, और जब मैं बोल रहा हूँ तो मेरे शब्दों को ध्यान में रखो: इस प्रकार अर्थ है।"

650. ito gantvā ayam poso (यह पुरुष, यहाँ से चला गया) यह राजकुमार, मनुष्यों के इस संसार से विदा होकर तुषिता स्वर्ग में चला गया; āvasissati (रहेगा) वह वहाँ निवास करेगा; वहाँ वह तुषिता दिव्य महल की समृद्धि का अनुभव करेगा, दिव्य कन्याओं से घिरा और उनके द्वारा अनुसरण किया जाएगा; इस प्रकार, संबंध है।

651. चतुत्तिमसक्खत्तुम (चौंतीस बार) तुषिता लोक से विदा होकर तावतिंस लोक में जन्म लेकर, दिव्य सम्राट चौंतीसवीं बार दिव्य राज्य में शासन करेंगे; यही संबंध है। बलाधिपो अष्टसतम (एक सौ आठ बार, पराक्रमी राजा) तावतिंस स्वर्ग लोक से विदा होकर, मनुष्यलोक में जन्म लेकर, एक सौ आठ जन्मों में क्षेत्रीय सम्राट बनकर, अपनी चार भागों की सेना के प्रमुख सेनापति रहे; वसुधम, पृथ्वी, आवासिस्सति (रहेंगे) वे इस पृथ्वी पर निवास करेंगे जो उन्हें अनेक उत्तम रत्न प्रदान करेगी; यही अर्थ है।

652. अट्ठाप्पञ्ञासक्खट्टुम (अठावन बार) वह अठावन जन्मों में विश्वराज बनेगा; यही अर्थ है। महिया (पृथ्वी पर) संपूर्ण युजेनिया-वृक्ष द्वीप (जंबूद्वीप) की भूमि पर; विपुलम (समृद्ध) वह असंख्य कालखंडों तक क्षेत्रीय संप्रभु के रूप में शासन करेगा।

654. सक्यानम् कुलकेतुस्स (सक्यान परिवार के ध्वज का) वह बुद्ध का रिश्तेदार बन जाएगा, जो सक्यान राजाओं के परिवार का ध्वजवाहक बन गया था; इस प्रकार, इसका अर्थ है।
655. आतापी (जलाने वाला) परिश्रम का स्वामी; निपाको (परिपक्व) ज्ञान या परिपक्वता से युक्त; बहुसच्चेसु (अत्यंत विद्वान) तीनों पिटकों के ज्ञान को धारण करने वालों में से; जो अत्यधिक विद्वान हो चुके हैं; कोविदो (ज्ञाता) चतुर, कुशल; निवाते *****(पृष्ठ 584) (विनम्र स्वभाव का) दिखावटी या अभिमानी नहीं (अनवन्नत्तिको); *****(पृष्ठ 584) (कठोर नहीं) शारीरिक रूप से कठोर (कायपग्गबोहिया) आदि जैसी कठोर अवस्थाओं से दूर रहने वाला; सब्बपाठी (जिसने सब कुछ पढ़ा हो) वह तीनों पिटकों को अपने स्मरण में रखने वाला बन जाएगा; इस प्रकार, संबंध है।
656. पाधानपहितत्तो सो (जिसका मन परिश्रम की ओर निर्देशित हो) वह आनंद, जिसका मन परिश्रम करने की ओर लगा हो; उपसन्तो निरुपधि (वह अस्तित्व के किसी भी आधार से मुक्त होकर शांत हो गया) कामवासना, क्रोध और भ्रम के आधार से रहित होकर वह शारीरिक और मानसिक रूप से शांत हो गया; सोतापत्ति के श्रेष्ठ मार्ग, जो धारा प्राप्ति का पहला चरण है, के माध्यम से सभी प्रकार के दुराचारों से छुटकारा पाकर वह शांत हो गया।
657. संती आराञ्ञका (जंगल में रहने वाले) जंगल में पैदा हुए, घने जंगल में जन्मे; साठ हयाना (साठ वर्ष की आयु में क्षीण होने वाले) साठ वर्ष की आयु में उनकी शक्ति कम हो जाती थी; तिधा पभिन्ना (तीन बार फूट पड़ना) तीन स्थानों से फूट पड़ा उन्माद (या पागलपन) जिन्हें आंखें, कान और लिंग आवरण माना जाता है; मातंग (मातंग प्रजाति) मातंग परिवार में जन्मा; ईसादंता (धुरी के दांत) उसके दांत रथ की धुरी के समान हैं; उरूल्हावा (सवारों का स्वामी) शाही वाहन; जैसे हाथी राजा होते हैं, हाथी कुंजरा माने जाते हैं, वैसे ही (या उसी प्रकार) लाखों की संख्या में उच्च जादुई शक्तियों और ज्ञान से परिपूर्ण हाथी अरहंत होते हैं, जो दोषरहित होते हैं; वे आत्मसंकल्पित नहीं होते। क्यों? क्योंकि वे सभी खतरे से डरते हैं और अपनी स्थिति में ठीक से खड़े नहीं हो पाते; यही अर्थ है। बाकी सब उक्त तरीके से स्पष्ट है।
थेरा आनंद की जीवनी पर की गई टीका का समापन हो गया है।
बुद्ध पर पहली टीका (बुद्ध वग्ग) अब तक पूरी हो चुकी है।
पहला भाग पूरा हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान-3.2-थेरापदान(11-77)

अपदाना 3.2 : प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 11-77
अपदाना में क्रम संख्या 11 से 77 तक के थेरों (वरिष्ठ भिक्षुओं) की सूची यहाँ दी गई है।

11. सिहासन के दाता थेरा
12. थेरा एकथंभिका
13. नंद थेरा
14. थेरा क्यूपंथा
15. थेरा पिलिंडा वाचा
16. थेरा राहुला (बुद्ध के पुत्र)
17. थेरा उपसेन, वांगंता के पुत्र
18. थेरा रशपाल
19. थेरा सोपाका
20. थेरा सुमंगला
21. थेरा सुभूति
22. थेरा उपवन
23. थेरा तिसरनागमानिया
24. थेरा पंचसिलसमादानिया
25. अन्नसमसावका

26. थेरा धूपदायका
27. थेरा पुलिनपूजक
28. थेरा उत्तिया
29. थेरा एकांजलिका
30. थेरा खोमदायका
31. थेरा कुंदधाना
32. थेरा सगाता
33. थेरा महाकच्चन
34. थेरा कौदायि
35. थेरा मोघराजा
36. थेरा अधिमुत्ता
37. थेरा लासुनादायका
38. थेरा अयागदायका
39. थेरा धम्मचक्किका
40. थेरा कप्परुक्खिया
41. थेरा भगिनीयुपाली
42. थेरा सोशाकोइविसा
43. थेरा काइगोधापुत्तभद्दिया
44. थेरा सन्निशापक
45. थेरा पंचहत्थिया
46. थेरा पदुमच्छदानिय
47. थेरा सयानदायका
48. थेरा चंकमानदायका
49. थेरा सुभद्दा
50. थेरा कुंडा
51. थेरा विधुपनदायका
52. थेरा सतारामसी
53. थेरा सयानदायका
54. थेरा गंधोदकिया
55. थेरा ओपावयह
56. थेरा सपरिवारासन
57. थेरा पंचदीपक
58. थेरा धजदायका
59. थेरा पदुमा
60. थेरा आसननबोधिया
61. थेरा साकासिंटेनिया
62. थेरा अवोपुफिया
63. थेरा पक्कगमानिया
64. थेरा परप्पासादका
65. थेरा भिसदायका
66. थेरा सुसिंतिता
67. थेरा वत्थादायका

68. थेरा अम्बादायका
69. थेरा सुमना
70. थेरा पुप्फाचंकोटियाथेरा
71. थेरा नागसामाला
72. थेरा पदसन्नका
73. थेरा बुद्धसन्नका
74. थेरा भिसालुवदायका
75. थेरा एकासनका
76. थेरा तिसंथारादायका
77. थेरा सुचिदायका थेरा

तिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 11. सिहासन का दाता

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

सिहासन अध्याय, द्वितीय

---

11. सिहासनदायक 378

जब विश्व नेता सिद्धार्थ, जो दो पैरों पर चलने वाले सर्वश्रेष्ठ प्राणी थे, निर्वाण प्राप्त कर चुके थे, तब उनके वचन फैल चुके थे; अनेक लोगों ने उनके उपदेशों को अपना लिया था। (1) (674)

प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से मैंने एक सिंह सिंहासन बनवाया। सिंह सिंहासन बनवाने के बाद मैंने एक पायदान बनवाया। (2) (675)

(और फिर) मैंने वहाँ एक घर बनवाया (ताकि) सिंह-सिंहासन को बारिश से बचाया जा सके। मेरे हृदय में उमड़े आनंद के कारण मेरा पुनर्जन्म तुसिता में हुआ। (3) (676)

उस समय मेरे लिए एक सुंदर, भव्य और आलीशान महल मौजूद था। उसकी लंबाई चौबीस मील और चौड़ाई चौदह मील थी। (4) (677)

सात सौ (सुंदर) युवतियाँ हमेशा मेरी सेवा में तत्पश्चात रहती थीं। उस हवेली में सोने का बना एक सुंदर पलंग था। (5) (678)

हाथी और घोड़े की गाड़ियाँ, और दिव्य रथ मेरी सेवा करते थे। महल और पालकी भी।381

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 378 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 379 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

380 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 381 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इच्छा के अनुसार उत्पादित किए गए। (6) (679)
मेरे लिए हमेशा रत्नों और अन्य कई महंगी चीजों से बने सोफे अस्तित्व में आते रहे; यही सिंह-सिंहासन का फल है। (7) (680)
मैं हमेशा सोने और चांदी से बनी, क्रिस्टल से बनी, लैपिस से बनी सीढ़ियों पर चढ़ता रहता हूँ; यही पैर रखने की चौकी का फल है। (8) (681)
उस पुण्य कर्म को करने के बाद से चौरानवे युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ; यही अच्छे कर्मों का फल है। (9) (682)
तिहत्तर युग पहले तीन पुरुष थे (सभी) जिनका नाम इंदा382 था; बहत्तर युग पहले तीन और पुरुष थे जिनका नाम सुमना383 था; (10) (683)
(और) सत्तर युग पहले वरुण नाम के तीन (राजा) थे;384 वे चार महाद्वीपों के स्वामी और सात रत्नों के स्वामी थे। (11) (684)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) (685)
इस प्रकार पूज्य सिहासनदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
सिहासनदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 12. थेरा एकत्थंभिका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

12. एकत्थम्भिका 385

भगवान सिद्धार्थ के बहुत से अनुयायी थे। उन्होंने तथागत बुद्ध में श्रद्धापूर्वक शरण ली थी। (1) (686)

---

382 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 383 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ 384 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल) 385 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपादान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

वे सब एकत्रित हुए और शिक्षक के लिए एक झोपड़ी बनाने का निर्णय लिया।386 अभी भी एक और स्तंभ की आवश्यकता थी।387 वे घने जंगल में खोज रहे थे। (2) (687)
उन्हें जंगल में देखकर मैं उस समूह के पास गया। मैंने अपने दोनों हाथों को आपस में जोड़कर उस समूह से पूछताछ की। (3) (688)
मैंने जिन नैतिक रूप से संयमित आम लोगों से पूछा, उन्होंने तब उत्तर दिया, "हम एक माला बनाना चाहते हैं, लेकिन अभी भी एक स्तंभ कम है।" (4) (689)
"मुझे वह एक स्तंभ (कर्तव्य) दीजिए; मैं उसे शिक्षक को दे दूंगा। मैं वह स्तंभ (उनके पास) ले जाऊंगा, आप सभी कृपया अब निश्चिंत हो जाइए।" (5) (690)
प्रसन्न होकर और आनंद से भरे मन से उन्होंने मेरे लिए वह खंभा गिरा दिया, फिर मुड़कर जाने लगे और अपने-अपने घरों को लौट गए। (6) (691)
उस बड़े समूह के जाने के कुछ ही समय बाद मैंने उसे वह स्तंभ दे दिया। मैं ही वह पहला व्यक्ति था जिसने उसे खुशी-खुशी खड़ा किया। (7) (692)
मेरे हृदय में व्याप्त प्रसन्नता के कारण मेरा जन्म एक ईश्वरीय महल में हुआ। मेरा वह भव्य निवास सौ मंजिला ऊँचा था। (8) (693)
जब ढोल बज रहे होते हैं, तब मेरा मनोरंजन होता है।388 मैं राजा था, यशोदरा,389 पचपनवें युग में (तब से)। (9) (694)

---

386 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
387 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अर्थ अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 388 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 389 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

वहाँ भी मेरा एक निवास था जो सात मंजिला ऊँचा था। सुंदर छज्जे वाली कोठरियों से सुसज्जित, वहाँ एक स्तंभ था, मन का आनंद। (10) (695)
इक्कीसवें युग में (तब से) मैं उदेना नाम से राजा था। वहाँ भी मेरा एक निवास था जो सौ मंजिला ऊँचा था। (11) (696)
मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लेता हूँ, चाहे वह मानव हो या दिव्य, मैं उन सभी का अनुभव करता हूँ; यही एक स्तंभ का फल है। (12) (697)
उस समय जब मैंने उसे वह स्तंभ दिया था, तब से लेकर अब तक के चौरानवे युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा; यही उस एक स्तंभ का फल है। (13) (698)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) (699)
इस प्रकार पूज्य एकात्थंभिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
एकथंभिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
12. थेरा एकत्थम्भिका की जीवनी पर टीका
सिद्धार्थस्सा भगवतो से शुरू होने वाले श्लोक आदरणीय थेरा, स्तंभ दाता एकत्थम्भ की जीवनी हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्म संचित किए, और इस जन्म और उस जन्म में एक समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लेकर, तेजस्वी सिद्धार्थ के समय में वनकर्मी बने। उस समय, सभी धर्मनिष्ठ और प्रसन्न भक्तों का एक ही मत था (या एक ही इच्छा थी): "आइए हम तेजस्वी के लिए एक सेवा कक्ष (या सेवक कक्ष) बनाएँ।" वे भवन निर्माण सामग्री जुटाने के लिए वन में गए, वहाँ उनकी मुलाकात उस भक्त से हुई और उन्होंने उनसे निवेदन किया: "हमें एक स्तंभ दीजिए।" यह सुनकर उन्होंने उनसे कहा: "आप सभी

को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।" उन्होंने उन सभी को वापस भेज दिया, सार सहित एक स्तंभ लिया, उसे गुरु को दिखाया और उन्हें दे दिया। वह इस कारण प्रसन्न हुए, उन्होंने वही दान आधार बनाया, दान-पुण्य आदि अन्य पुण्य कर्म किए, और वहाँ से देह त्याग कर दिव्यलोक में पुनर्जन्म लिया; इसके बाद, समय-समय पर, छह इंद्रियलोकों में दिव्य समृद्धि का आनंद लेते हुए, अनेक समय तक मनुष्यों में प्रधान विश्वराज के सुख का आनंद लेते हुए, और असंख्य कालखंडों तक क्षेत्रीय संप्रभुता की समृद्धि का आनंद लेते हुए, एक ऐसे परिवार में पुनर्जन्म लिया जो इस बुद्ध के जन्म के समय धार्मिक आस्था से परिपूर्ण था। अपने माता-पिता के साथ, प्रतापी बुद्ध की उपस्थिति में सत्य (धम्म) का उपदेश सुनकर, उन्होंने उचित रूप से धार्मिक आस्था प्राप्त की, संसार त्याग कर भिक्षु बन गए, उपसंपदा दीक्षा प्राप्त की, मानसिक साधना (कम्मत्थान) की, और अरहत बन गए, परन्तु शीघ्र ही उन्होंने स्वयं को विवेकपूर्ण रूप से सचेत कर लिया।

13. इस प्रकार, अरहतत्व प्राप्त करने पर, उन्हें अपने पूर्व कर्मों का स्मरण हुआ, वे प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को प्रकट करने के लिए सिद्धार्थस से प्रारंभ करते हुए इस श्लोक का उच्चारण किया। वहाँ, भगवत (महिमावान को) स्वयंप्रबुद्ध बुद्ध सिद्धार्थ को, जो महिमा से परिपूर्ण थे; महापूगगणो (संघों का महान जमावड़ा) भक्तों का एक विशाल समूह; अहु, वहाँ था; इस प्रकार, अर्थ है। शरणं गता च ते बुद्धं (वे बुद्ध की शरण में भी गए) वे भक्त गए, उनकी सेवा की (या उन्हें समझा) कि वे "बुद्ध, शरण" हैं; तथागतं सद्दाहंति (गुरु में श्रद्धापूर्वक विश्वास किया), उन्होंने बुद्ध के गुणों को अपनी चेतना की निरंतरता में स्थापित किया; इस प्रकार, अर्थ है।

14. सब्बे संगम्मा मंतेत्वा, सब एकत्रित होकर परामर्श किया; सब एक साथ आकर एकत्रित हुए, एक दूसरे को उचित रूप से जानकर और एक ही इच्छा से प्रेरित होकर परामर्श किया; मालम् (हॉल) स्वामी के लाभ के लिए एक सेवा कक्ष; कुब्बन्ति, बनाना (निर्माण करना); यही अर्थ है। निर्माण सामग्री के संग्रह से स्तंभ (या खंभा) न मिलने पर, वे घने जंगल में खोज करते हैं; यही संबंध है।

15. तेहम अरञ्ञे दिस्वाना, मैंने उन्हें वन में देखकर, गानम्, समूह, उपगम्मा, उनके पास जाकर, अंजलिम् पग्गहेत्वाना, हाथ जोड़कर, गानम् (समूह) तदा (तब) मैंने उन भक्तों को वन में देखकर, उनके एकत्रित समूह के पास जाकर, अपने सिर पर दस उंगलियों का योग बनाकर, उस समय भक्तों के उस समूह से पूछा, "तुम सब इस वन में किसलिए आए हो?" इस प्रकार, संबंध है।

16. नैतिक उपदेशों से युक्त भक्तों ने, मुझसे पूछे जाने पर, व्याकमसु ने स्पष्ट रूप से उत्तर दिया: "हम एक हॉल बनाना चाहते हैं, लेकिन हमें कोई स्तंभ नहीं मिला है"; यही संबंध है।

17. ममाम (मुझसे) कृपया मुझे स्तंभ दीजिए; ते, वे, अप्पोसुक्का (चिंतामुक्त हो जाते हैं)। मैंने उनसे कहा कि मैं इसे दूंगा, मैं स्तंभ को गुरु के समक्ष लाऊंगा; जब मैं स्तंभ लाऊंगा, तो आप सब चिंतामुक्त हो जाएंगे; इस प्रकार, संबंध है।

24. यम यम योनुपपज्जामि (जिस किसी के भी गर्भ में मैं इस या उस रूप में जन्म लूँ) , चाहे दिव्य गर्भ हो या मानव गर्भ, मैं जिस किसी भी गर्भ में जन्म लूँ; यही अर्थ है; भूमत्ठे वा; (या पृथ्वी पर स्थापित हुआ) ****(पृष्ठ 8); चाहे दिव्य लोक हो या मानव लोक; यही अर्थ है। शेष स्पष्ट और सरल है।

थेरा एकात्थम्भिका की जीवनी पर की गई टीका समाप्त हो गई है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 13. थेरा नंदा

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

13. नंदा

पदुमुत्तरा का खोमा वस्त्र391 मैंने स्वयंभू एक को, महान ऋषि को, धन्य को, संसार में सर्वश्रेष्ठ को, तटस्थ को दिया। (1) (700)
तब बुद्ध, जिनका नाम कमल392 के नाम पर रखा गया है, ने मेरे बारे में यह भविष्यवाणी की: "इस कपड़े का टुकड़ा देने के कारण तुम्हारा रंग स्वर्णमय हो जाएगा। (2) (701)

---

390 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 391 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 392 "शुभ", एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

अपनी पवित्र जड़ों से प्रेरित दोहरे आनंद393 का अनुभव करते हुए, आप भगवान गौतम के छोटे भाई होंगे। (3) (702)
स्वभाव से प्रसन्न, परन्तु कामुक, तुम सुखों के लोभी होगे। बुद्ध द्वारा प्रेरित होकर तुम तब त्याग कर जाओगे। (4) (703)
अपने पवित्र मूलों से प्रेरित होकर, संसार का त्याग करने के बाद, समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए, तुम निर्वाण प्राप्त करोगे, निर्मल होकर।" (5) (704)
सात हज़ार394 युग में सेला नाम के चार थे;395 साठ हज़ार युग (पहले) उपसेला नाम के चार थे;396 (6) (705)
पांच हजार युग पूर्व में चार लोग थे (जिनका नाम) सेला था; वे चार महाद्वीपों के शासक थे और सात रत्नों के स्वामी थे। (7) (706)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) (707)
इस प्रकार पूज्य नंदा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
नंदा थेरा की कथा का अंत हो गया है।

टिप्पणी अनुवाद: यू लू पे विन
13. नंदा थेरा की जीवनी पर टीका।
पद्ममुत्तरस्सा भगवतो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा नंदा की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए और पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया। वे पद्ममुत्तरा के समय हंसवती नगर के एक परिवार में पुनर्जन्म लिए। जब वे बुद्धिवान हुए, तब वे पद्ममुत्तरा की उपस्थिति में सत्य (धम्म) का उपदेश सुन रहे थे, तभी उन्होंने देखा कि गुरु एक भिक्षु को उन लोगों में सर्वोच्च स्थान पर बिठा रहे हैं, जहाँ इंद्रियों (या नियंत्रण शक्तियों) के द्वार अच्छी तरह से सुरक्षित हैं। स्वयं उस उच्च पद की कामना करते हुए उन्होंने एक महान दान-पुण्य किया, जिसमें परम पूज्य बुद्ध और उनके भिक्षुओं को सम्मान के प्रचुर उपहार शामिल थे, और उन्होंने यह संकल्प लिया: "आदरणीय महोदय! मैं भविष्य में आपके समान बुद्ध का शिष्य बनूंगा।"
उस समय से, वे बार-बार जन्म लेकर देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण करते रहे, और अंत में धम्मताया नामक नदी में एक विशाल कछुए के रूप में जन्म लिया। यह जन्म परम पूज्य अत्थादस्सी के समय हुआ। एक दिन कछुए की मुलाकात गुरुदेव से हुई, जो नदी पार करने के लिए किनारे पर खड़े थे। गुरुदेव को नदी पार कराने की इच्छा से कछुआ उनके चरणों में लेट गया। गुरुदेव को कछुआ का इरादा पता चल गया और वे उसकी पीठ पर सवार हो गए। कछुआ प्रसन्न हुआ और तेजी से नदी पार करके उन्हें सामान्य से कहीं अधिक शीघ्रता से दूसरे किनारे पर पहुंचा दिया। कछुआ को धन्यवाद देते हुए, गुरुदेव ने भविष्य की समृद्धि का उपदेश दिया और प्रस्थान किया।
उस पुण्य कर्म के फलस्वरूप, कछुआ अपने जन्मों के चक्र में भटकता हुआ, केवल उत्तम जन्मों में ही जन्म लेता रहा, और बुद्ध के प्रकट होने के समय ही महान राजा सुद्धोदन की मुख्य रानी महाप्रजापति गौतमा के गर्भ में कपिलवत्थु नगर में पुनर्जन्म लिया। उनके नामकरण के दिन उनका नाम "नंदा" रखा गया, क्योंकि उनका जन्म उनके परिजनों को प्रसन्नता प्रदान करते हुए हुआ था। जब वे वयस्क हुए, तो प्रतापी बुद्ध ने धर्म के उत्कृष्ट चक्र को घुमाते हुए, विश्व उत्थान करते हुए, समय आने पर कपिलवस्तु गए, जहाँ उन्होंने कमल वर्षा (पोक्खरवस्सा) की कथा के क्रम में वेस्सन्तरा की जन्म कथा का उपदेश दिया, दूसरे दिन भिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रवेश किया, और "उत्तिते नप्पमज्जेय्या (उठो, लापरवाह मत रहो)" श्लोक के द्वारा अपने पिता को सोतापत्ति के प्रथम चरण की सिद्धि प्राप्त करवाई, फिर

महल के निवास कक्ष में गए, महाप्रजापति गौतमी को प्रथम चरण की सिद्धि प्राप्त करवाई और राजा को सकदागामी के द्वितीय चरण की सिद्धि प्राप्त करवाई, और तीसरे दिन, राज्याभिषेक और औपचारिक प्रवेश के समय, वे भिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रवेश कर गए। राजकुमार नंदा के राजवास और विवाह समारोह का आयोजन हो रहा था। गुरु ने अपना कुंड राजकुमार नंदा के हाथ में दिया, मंगला का पाठ किया और कुंड वापस लिए बिना अपने मठ की ओर चल दिए। बुद्ध ने राजकुमार नंदा को, जो उनके साथ कुंड लेकर मठ आए थे, उनकी इच्छा के विरुद्ध भिक्षु बना दिया। जब उन्हें पता चला कि इस प्रकार भिक्षु बनाए जाने के कारण राजकुमार अप्रसन्न हो गए हैं, तो उन्होंने एक युक्ति से अपने अप्रसन्नता को दूर किया। राजकुमार ने विवेकपूर्ण चिंतन करते हुए आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) में स्वयं को स्थापित किया और कुछ ही समय बाद अर्हतत्व प्राप्त कर लिया। अगले दिन, थेरा ने भगवान के पास जाकर कहा, "आदरणीय महोदय! मैं भगवान को उस प्रतिज्ञा से मुक्त करता हूँ जिसके द्वारा भगवान ने मुझे पाँच सौ कबूतर-पैर वाली अप्सराओं को विधिपूर्वक प्राप्त करने का प्रायोजन दिया था।" भगवान ने उत्तर में कहा, "हे नंदा! क्योंकि तुम्हारा मन आसव (आसव) से मुक्त हो गया है, अनासक्त हो गया है, इसलिए मैं इस प्रतिज्ञा से मुक्त हो गया हूँ।" तब भगवान ने जब जाना कि नंदा के इंद्रिय द्वार (या नियंत्रण शक्तियाँ) विशिष्ट रूप से सुरक्षित हैं, तो उन्होंने उसे सर्वोच्च स्थान पर बिठाते हुए कहा, "हे भिक्षुओं! मेरे शिष्यों में, जिनके इंद्रिय द्वार (या नियंत्रण शक्तियाँ) सुरक्षित हैं, यह नंदा श्रेष्ठ है," ताकि इस गुण का प्रचार किया जा सके। थेरा ने मन ही मन कहा, "मैं इंद्रियों पर आत्म-नियंत्रण के अभाव के कारण इस अव्यवस्था में फंसा हूँ, मैं इसे ठीक से अपने वश में रखूँगा," और अपनी शक्ति को जागृत किया।इससे पाप के कारण अत्यधिक शर्म और भय की भावना उत्पन्न हुई और सर्मपित सेवा कर्म करने के कारण उसने अपनी इंद्रियों (या नियंत्रण करने की क्षमताओं) पर पूर्ण नियंत्रण की पराकाष्ठा प्राप्त कर ली।

27. इस प्रकार सर्वोच्च पद (अतद्ग्ग) प्राप्त करके उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया, प्रसन्न हुए और पद्ममुत्तरस्स भगवतो से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्मों को प्रकट कर सकें। वत्तम खोमं मया दिन्नम् (मेरे द्वारा अर्पित खोम वस्त्र) खोम राज्य में निर्मित वस्त्र; (परम) कोमल वस्त्र मैंने अपने प्रसन्न हृदय और अत्यंत आदरपूर्ण मन से उस महान पुरुष को अर्पित किया; यही अर्थ है। स्वयंभूस (स्वयं को) जो स्वयं ही उत्पन्न हुए, श्रेष्ठ (आर्य) जन्म में जन्मे; महेसिनो (महान ऋषि) वे नैतिक उपदेशों, एकाग्रता, ज्ञान, मुक्ति और मुक्ति के ज्ञान की अंतर्दृष्टि के विशाल समूह की खोज करते हैं और उसमें लगे रहते हैं; इस प्रकार वे महेसी, महान ऋषि हैं। महेसी सयंभू के लिए वस्त्र बनाने के उद्देश्य से मैंने खोमा का कपड़ा भेंट किया था, इस प्रकार यह संबंध स्थापित हुआ।

28. तम मे बुद्धो वियाकासि, बुद्ध ने मेरे लिए इसकी भविष्यवाणी की थी; यहाँ 'तम' शब्द स्वामित्व के अर्थ में लोप का प्रतीक है; बुद्ध ने मेरे दान के फल को प्रकट करने का उपदेश दिया, जो उस वस्त्र का दाता था; इस प्रकार इसका अर्थ है। जलजुत्तमनामाको (जिसका नाम जलज-उत्तम है) सबसे उत्कृष्ट जलीय उत्पाद, जिसका नाम पद्ममुत्तरा है, सबसे श्रेष्ठ कमल; इसका पाठ है: "जलरुत्तमनायाको", साथ ही; जो प्रकाशमान दिव्य प्राणियों और ब्रह्मा के प्रमुख और सबसे उत्कृष्ट नेता थे; इस प्रकार इसका अर्थ है। इमिना वत्थदानेन (इस वस्त्र के दान के कारण) इस वस्त्र के दान के परिणामस्वरूप; हेमवण्णो (स्वर्ण रंग) भविष्य में आपका रंग स्वर्णमय हो जाएगा।

29. द्वे सम्पत्तिम् अनुभोत्वा (दो प्रकार की समृद्धि का आनंद लेते हुए): दिव्य और मानवीय मानी जाने वाली दो प्रकार की समृद्धि का अनुभव करते हुए; कुसलामूलेहि कोदितो (पुण्य के आधारों से प्रेरित): पुण्य के अंशों और अच्छे कर्मों के विवरण द्वारा प्रेरित और भेजा गया; मानो यह कहते हुए भेजा गया हो: "इस पुण्य के माध्यम से, आपको गुरु के परिवार में जन्म लेना चाहिए"; यही अर्थ है। बुद्ध ने भविष्यवाणी की थी: "आप गौतम, महिमावान के सबसे छोटे भाई बनेंगे"; यही संबंध है।

30. रागरत्तो सुखसीलो (कामवासना से दूषित और सुख भोगने वाला) शारीरिक और मानसिक सुख भोगने की प्रवृत्ति से युक्त, कामुक इच्छाओं से ग्रस्त और उनसे आसक्त; कामेसु गेधमायुतो (सुख की लालसा से जकड़ा हुआ) इंद्रियों के भौतिक सुखों के लिए तीव्र इच्छा (गेध) से जकड़ा हुआ; यही अर्थ है। बुद्धेन कोदितो संतो, तदा त्वम्, उस समय, बुद्ध द्वारा प्रेरित होकर, क्योंकि तुम कामुक सुखों के प्रति लालची थे; तदा (तब) इसलिए, अपने सगे भाई गौतम बुद्ध द्वारा प्रेरित होकर और संन्यासी बनने के लिए प्रोत्साहित होकर, तुम उनकी उपस्थिति में संन्यासी बनोगे; यही संबंध है।

31. पब्बजित्वाना त्वं तत्था (वहाँ भिक्षु बनकर) तुम गौतम, महिमावान, के उस युग में भिक्षु बन जाओगे; कुसलमूलेन (अच्छे कर्मों की जड़ से) पुण्य की संरचना से जो (गहराई से) जड़ जमा चुकी थी; कोदितो (उत्तेजित) विकसित ध्यान (भावना) से नियंत्रित; सब्बासवे (सभी दोष) सभी वासनाओं का प्रवाह; परिञ्ञाव (सब कुछ जानकर), जानकर त्याग देना; निब्बाविस्ससि (तुम्हारी अग्नि बुझ जाएगी) स्वस्थ और दु:ख से मुक्त हो जाओगे; तुम स्वयं को अदृश्य प्राप्त करोगे; तुम पदनामहीन अवस्था (या अव्यक्त अवस्था, पञ्ञतिका) में जाओगे; यही अर्थ है।

32. सातकप्पसहस्संहि, एक लाख युगों की अवधि में, इस युग (कप्पा) से गिनते हुए, एक लाखवें युग (कप्पा) में पूर्व में चेला नामक चार विश्वराज थे; यही इसका अर्थ है। साठ हजार युगों में, चार जन्मों में, एक ही युग (कप्पा) के अंतर्गत, एक हजार और साठ युगों (कप्पा) से आगे बढ़कर, उपचेला नामक चार व्यक्ति विश्वराज बने; यही इसका अर्थ है।
33. पंचकप्पसहस्संहि, पाँच हज़ार युगों में, चतुदीपंहि इस्सरा (चार द्वीपों के शासक) चार विश्वराज थे जिनका नाम चेला था, जो सात रत्नों से परिपूर्ण थे; ये चारों द्वीप जंबुदीप (यूजेनिया वृक्ष द्वीप), अपरागोयान (एक अन्य गौ-वाहन द्वीप), उत्तर कुरु (उत्तरी कुरु द्वीप) और पुब्बाविदेह (पूर्व विदेह द्वीप) के प्रमुख शासक बने; यही इसका अर्थ है। शेष का अर्थ पहले से ही यही है।
थेरा नंदा की जीवनी पर की गई टीका का समापन हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 13. थेरा कुल्ल-पंथाका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

14. कुल्ला-पंथक

अग्नि पूजा के प्राप्तकर्ता, विजयी पदुमत्तरा।

---

393 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 394 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 395 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित 396 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

अनुयायियों के समूह को छोड़कर, वे तब हिमालय में रहने लगे। (1) (708)
मैं भी उस समय हिमालय में एक आश्रम में रह रहा था। मैं विश्व नेता, महान नायक के पास गया, जो अभी-अभी वहाँ पहुँचे थे। (2) (709)
फूलों की छतरी लेकर, मैं ध्यान कर रहे पुरुषों के बैल के पास गया;397 मैंने उन्हें कोई व्यवधान नहीं पहुँचाया। (3) (710)
मैंने दोनों हाथों से पुष्पों से बनी छतरी उठाई। तब महान ऋषि पद्ममुत्तरा ने उसे ग्रहण किया। (4) (711)
सभी देवता, जो प्रसन्न हुए, (तब) हिमालय की ओर बढ़े। उन्होंने “साधु”399 “दृष्टिपूर्ण देवता (उन्हें) धन्यवाद देंगे”400 (5) (712) का जयजयकार किया।
यह कहने के बाद (तब) वे देवता उनके पास आए, जो मनुष्यों में श्रेष्ठ थे। वे आकाश में उनका उत्तम कमल-छतरी लिए हुए थे। (6) (713)

"कमल के आकार का छत्र धारण करके, इस तपस्वी ने इसे मुझे दे दिया। मैं उनके बारे में विस्तार से बताऊंगा; आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें: (7) (714)

वह पच्चीस युगों तक दैवीय शासन करेगा। चौंतीस बार वह कानून के पहिये को घुमाने वाला राजा होगा। (8) (715) वह जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लेगा,

---

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 397 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 398 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

399 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 400 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

चाहे वह मानवीय हो या दिव्य, वह उस कमल को खुले आकाश में फैलाकर ले जाएगा। (9) (716)

ओक्काका (इक्ष्वाकु) वंश में उत्पन्न होने वाले एक लाख युगों में, गौतम नाम का व्यक्ति संसार का गुरु होगा। (10) (717)

जब बुद्ध के वचनों का प्रचार हो जाएगा, तब वह मनुष्य अवस्था को प्राप्त करेगा। मन से निर्मित शरीर में वह (सर्वोच्च) होगा। (11) (718)

दो भाई होंगे; वे दोनों पंथा के नाम से जाने जाएंगे। परम लक्ष्य का आनंद लेते हुए वे व्यवस्था को रोशन करेंगे। (12) (719)

मैं बेघर होकर चला गया (परन्तु) अठारह वर्षों के बाद भी मुझे शाक्यन402 व्यवस्था में कोई विशिष्टता प्राप्त नहीं हुई। (13) (720)

मैं एक बेबस स्थिति में था; शहर में मेरी अवहेलना होती थी। यहाँ तक कि मेरे भाई ने भी मुझे यह कहकर टाल दिया: "अब तुम्हारे घर जाने का समय आ गया है।"403 (14) (721)

इस प्रकार बर्खास्त किए जाने के कारण, मैं मठ के भंडार कक्ष में उदास मन से खड़ा था, और एक सच्चा भिक्षु बनने की इच्छा रखता था।404 (15) (722)

फिर शिक्षक उस स्थान पर आए और मेरे सिर को अपने हाथ से छूकर मुझे मेरा हाथ पकड़कर अंदर ले आए।406 (16) (723)

शिक्षक ने मुझ पर दया करके मुझे पैर पोंछने के लिए एक कपड़ा दिया।

---

401 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 402 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ 403 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (gī tel) 404 शाब्दिक अर्थ, "गया" 405 PTS sañjālesi के लिए BJTS के साथ sañcālesi पढ़ना 406 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

इस प्रकार उसने मुझे शुद्ध किया जब मैं एक तरफ खड़ा था। (17) (724)

लाल कमल के समान उस व्यक्ति का हाथ थामकर, वहीं मेरा मन मुक्त हो गया और मैं अरहंत बन गया। (18) (725)

मेरे मन द्वारा निर्मित शरीरों में मैंने पूर्ण उत्कृष्टता प्राप्त की। समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए, मैं अब दोषों से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करता हूँ। (19) (726)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) (727)

इस प्रकार पूज्य कुलपंथक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कुल्लापंथक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

14. थेरा चूलपंथ की जीवनी पर टिप्पणी

पदुमुत्तरो नामे जिनो से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य थेरा चूलपंथ की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म करने और पुनर्जन्मों के चक्रों से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों को संचित करने के कारण, वे भी प्रतापी पद्ममुत्तरा के समय में (आया); (यहाँ उपाख्यान के रूप में जो कुछ भी कहा जाना चाहिए, वह आठवें निपात में महापंथक की कथा में पहले ही बताया जा चुका है। परन्तु अंतर यह है:- थेरा महापंथक ने अर्हतत्व प्राप्त करने के बाद अपना समय अपने फल, फलसमापत्ति की समृद्धि के आनंद में व्यतीत किया और इस प्रकार विचार किया: "मैं चूलपंथक को भी इस आनंद में कैसे उचित रूप से स्थापित कर पाऊँगा?" वह अपने धनी मामा, जो एक धनी बैंकर थे, के पास गए और इस प्रकार कहा: "यदि महान बैंकर सहमत हों, तो मैं चूलपंथक को भिक्षु बना दूँगा।" उत्तर था:- "आदरणीय महोदय! कृपया उन्हें भिक्षु बना दीजिए।" थेरा ने उन्हें भिक्षु बना दिया। दस नैतिक उपदेशों में भली-भांति स्थापित होने के बाद, वे अपने बड़े भाई की उपस्थिति में चार महीनों में निम्नलिखित श्लोक को सीखने के प्रयास में भी नहीं सीख पाए:-

"जैसे सुबह-सुबह सुगंधित कोकनाड़ा कमल खिल उठता है और भरपूर खुशबू बिखेरता है, वैसे ही देखो बुद्ध आकाश में धधकते सूरज की तरह स्पष्ट रूप से चमक रहे हैं।"

यद्यपि उसने श्लोक को याद कर लिया था, फिर भी वह उसके हृदय में नहीं बसा। तब महापंथक ने उससे कहा, "हे चूलपंथक! तुम इस संप्रदाय में रहने के योग्य नहीं हो; तुम चार महीने में भी एक श्लोक नहीं समझ पाते; भला भिक्षु के कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए तुम कैसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करोगे; तुम्हें यहाँ से चले जाना चाहिए।" इस प्रकार, थेरा द्वारा विदा किए जाने पर वह द्वार के पास रोता हुआ खड़ा रहा।

उस समय भी गुरुजी जीवकम्मा वन में निवास कर रहे थे। तब जीवक ने अपने दूत को इस प्रकार भेजा: "तुम जाओ और गुरुजी को पाँच सौ भिक्षुओं के साथ आमंत्रित करो।" उस अवसर पर भी पूज्य महापंथक ही पुरोहितों के भोजन का प्रबंध करने वाले थे। जब उन्हें पाँच सौ भिक्षुओं के लिए भोजन ग्रहण करने को कहा गया, तो उन्होंने उत्तर दिया: "चूलापंथक को छोड़कर, मैं अन्य भिक्षुओं के लिए भोजन ग्रहण करता हूँ।" यह सुनकर चूलापंथक और भी अधिक निराश हो गए। गुरुजी को उनकी मानसिक व्याकुलता का ज्ञान हुआ, तो उन्होंने मन ही मन कहा: "मेरी बनाई एक योजना से चूलापंथक को ज्ञान प्राप्त होगा।" वे उनके पास ही प्रकट हुए और पूछा: "हे पंथक! तुम क्यों रो रहे हो?" उन्होंने उत्तर दिया: "पूज्यवर! मेरे बड़े भाई ने मुझे विदा कर दिया है।" गुरु ने कहा, "पंथक! चिंता मत करो; तुम्हारा भिक्षुत्व मेरे मार्गदर्शन में है; आओ, इसे ग्रहण करो और अपने मन में यह विचार रखो कि 'धूल लेना, धूल ढोना'।" गुरु ने अपनी जादुई शक्तियों से विशेष रूप से एक स्वच्छ वस्त्र बनाकर उसे दिया। चूलपंथक बैठकर गुरु द्वारा दिए गए वस्त्र से अपना हाथ पोंछने लगा, "धूल लेना, धूल ढोना" कहते हुए। जब वह उससे पोंछता रहा, तो वस्त्र स्वाभाविक रूप से गंदा हो गया; दोबारा पोंछने पर वह चावल पकाने के बर्तन के पोंछने वाले कपड़े जैसा हो गया। अपने सर्वांगीण ज्ञान के कारण उसने सोचा, "यह वस्त्र मूल रूप से सर्वांगीण (या स्वच्छ) था; इस व्याकुल शरीर के कारण यह गंदा हो गया है।" अतः, जिस प्रकार यह भी क्षणभंगुर है, उसी प्रकार मेरा मन भी क्षणभंगुर है। उन्होंने अपने मन में क्षीणता और विनाश का विचार स्थापित किया, उसी चिन्ह पर ध्यान लगाया, उसे ध्यान का आधार बनाया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की और विश्लेषणात्मक ज्ञान के साथ-साथ अर्हतत्व प्राप्त किया। अर्हतत्व प्राप्त करते ही उन्हें उच्चतर ज्ञान के साथ-साथ तीनों पिटकों का ज्ञान भी प्राप्त हुआ।

गुरुदेव पाँच सौ भिक्षुओं (एक कम) के साथ जीवक के निवास पर गए और उनके लिए तैयार आसन पर बैठ गए। यद्यपि चूलपंथक उनके साथ नहीं गए क्योंकि उनका भोजन स्वीकार नहीं हुआ था। जीवक ने चावल का दलिया अर्पित करना शुरू किया। गुरुदेव ने अपना कटोरा हाथ से बंद कर लिया। पूछे जाने पर, "आदरणीय गुरुदेव! आप इसे क्यों नहीं ग्रहण करते?", बुद्ध ने उत्तर दिया, "हे जीवक! एक भिक्षु मठ में हैं।" जीवक ने अपने सेवक को यह कहते हुए भेजा, "देखो! तुम मठ जाओ और बैठे हुए गुरुदेव को लेकर वापस आओ।" चूलपंथक भी बैठे रहे और उन्होंने एक हजार भिक्षुओं की रचना की, जो रूप और कर्म दोनों में एक दूसरे से भिन्न थे। उस व्यक्ति ने मठ में अनेक भिक्षुओं की दशा देखकर वापस आकर जीवक से कहा, "इस भिक्षु के अतिरिक्त, मठ में और भी बहुत से भिक्षु हैं; मुझे नहीं पता कि मुझे किस स्वामी से आपके पास आने का अनुरोध करना चाहिए।" जीवक ने गुरु से पूछा, "आदरणीय गुरुदेव! मठ में बैठे भिक्षु का नाम क्या है?" बुद्ध ने कहा, "हे जीवक! उस भिक्षु का नाम चूलपंथक है।" जीवक ने अपने अनुयायी को निर्देश दिया, "देखो! तुम जाओ और पूछो, 'चूलपंथक नाम के भिक्षु का नाम क्या है?' और उन्हें ले आओ।" वह व्यक्ति मठ गया और पूछा, "आदरणीय गुरुदेव! चूलपंथक नाम के भिक्षु का नाम क्या है?" सभी हजार भिक्षुओं ने एक स्वर में कहा, "मैं चूलपंथक हूँ; मैं चूलपंथक हूँ।" वह व्यक्ति वापस आया और उसने जीवक को इस विषय की सूचना दी। जीवक ने आर्य सत्यों का गहन ज्ञान प्राप्त कर

लिया था, इसलिए उसे विधिपूर्वक यह ज्ञान हुआ: "मुझे लगता है कि स्वामी के पास जादुई शक्तियाँ हैं," और उसने अपने साथी से कहा, "मेरे साथी! तुम्हें जाना चाहिए, सबसे पहले बोलने वाले स्वयं स्वामी हैं; उनसे कहना, 'गुरुजी ने तुम्हें बुलाया है', और उनके वस्त्र का किनारा पकड़ लेना।" वह व्यक्ति मठ गया और उसने ऐसा ही किया। उसी क्षण वे सभी भिक्षु विलीन हो गए। वह व्यक्ति थेरा लेकर वापस चला गया।

उस समय गुरु ने चावल का दलिया और अन्य कई प्रकार के भोजन को ठोस भोजन के रूप में ग्रहण किया। भोजन करने के बाद, परम पूज्य गुरु ने पूज्य चूलपंथक को आज्ञा दी: "तुम्हें धन्यवाद करना चाहिए।" गुरु की इच्छा का लाभ उठाते हुए गुरु ने धन्यवाद किया और सिनेरु को मथनी बनाकर बुद्ध के उपदेशों के भंडार को ऐसे मथा जैसे विशाल सागर को मथा जा रहा हो। जब दशबाला भोजन करने के बाद मठ लौटे, तो धर्म सभा में यह चर्चा हुई: "बुद्धों की शक्ति अद्भुत है कि चूलपंथक चार महीनों में एक श्लोक भी आत्मसात नहीं कर पाए, फिर भी उन्होंने क्षण भर में इतनी कुशलता से उच्च कोटि की जादुई शक्तियाँ प्रदर्शित कीं।" इस प्रकार, जीवक के निवास में बैठे हुए, प्रतापी गुरु को यह ज्ञान हुआ: "चूलापंथक का मन इस प्रकार शांत हो गया, उनकी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रगति के मार्ग पर उचित रूप से अग्रसर हो गई, और वे बैठे-बैठे ही स्वयं को प्रकट करते हुए बोले: 'हे पंथक! न केवल यह वस्त्र गंदा होकर धूल से मिल जाता है, बल्कि यहाँ से भी धूल, आत्म-भ्रष्टता और श्रेष्ठ अनुशासन में विकृति उत्पन्न होती है।' गुरु ने इसे इस प्रकार दर्शाने के लिए ये तीन श्लोक कहे:-

"कामवासना (राग) धूल (राज) है, लेकिन साधारण रेणु धूल के कण नहीं; धूल (राज) कामवासना (राग) का रूपक है। वे भिक्षु इस धूल (राज) का त्याग करके, उस एक के मार्गदर्शन में रहते हैं जो धूल रहित है।"

"घृणा (दोष) उस ईश्वर की व्यवस्था में धूल (राज) के समान है जो स्वयं धूल से रहित है।"

"मोह (मोह) उस परमेश्वर की व्यवस्था में धूल (राज) के समान है जो स्वयं धूल से रहित है।"

श्लोक के सर्वांगीण अंत में, चूलपंथक ने विश्लेषणात्मक ज्ञान के साथ-साथ अर्हतत्व प्राप्त किया। धम्म सभा भवन में भिक्षुओं की यही चर्चा चल रही थी। गुरु, उन भिक्षुओं की चर्चा सुनकर आए, बुद्ध के आसन पर बैठ गए, भिक्षुओं से पूछा कि वे किस विषय पर चर्चा कर रहे हैं और जब उन्हें बताया गया कि वे चूलपंथक के बारे में बात कर रहे हैं, तो उन्होंने उन्हें इस प्रकार समझाया: "हे भिक्षुओं! मेरी सलाह का पालन करते हुए, अब चूलपंथक ने पारलौकिक (या अलौकिक) विरासत प्राप्त कर ली है; पहले, उन्होंने सांसारिक (या सांसारिक) विरासत प्राप्त की थी", और अनुरोध किए जाने पर, उन्होंने चूलसेठी की जन्म कथा का उपदेश दिया। इसके बाद, धर्म के आसन पर कई श्रेष्ठ शिष्यों से घिरे बैठे गुरु ने चूलपंथक को उन भिक्षुओं में सर्वोच्च स्थान दिया जो विशेष रूप से मन-निर्मित शरीर बना सकते थे और साथ ही अपने मन को एकाग्र करने में चतुर थे।

35. इस प्रकार सर्वोच्च पद प्राप्त करने के बाद, चूलपंथक थेरा ने अपने पूर्व कर्मों को याद किया और अपने उत्साह और प्रसन्नता के कारण अपने पूर्व कर्मों को प्रकट करने हेतु 'पदमुत्तरो नामो जिनो' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, श्लोक के पहले दो चरणों का अर्थ वही है जो ऊपर बताया गया है: गणमहा वूपकत्थो सो (जिसने भीड़ से खुद को अलग कर लिया था), उस गुरु, पदमुत्तरा ने असंख्य भिक्षुओं के विशाल समूह से खुद को अलग कर लिया, एकांत की ओर चले गए; तदा (उस समय) जब मैं एक संन्यासी था; हिमवन्ते (हिमवंत में) हिमालय पर्वत के निकट; वासी (रहते थे) उन्होंने अपना निवास स्थान बनाया, वे चार प्रकार के आचरणों के साथ रहते थे, यही अर्थ है।

36. अहम्पी :P: तदा, मैं भी :P: (तब) जब वह तेजस्वी परमेश्वर हिमवंत में आकर निवास करने लगे, तो मैंने भी हिमवंत के निकट अपना आश्रम बनाया; आ, (तक) चारों ओर से; यहाँ शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न के रूप में गिने जाने वाले खतरे थम गए; इस प्रकार, इस्म (शरणस्थल) नाम प्राप्त हुआ; ऐसे घने वन में मैं रहा; इस प्रकार, संबंध है। अचिरागतम महावीर; वह महान वीर जो शीघ्र ही आए, वह महान परिश्रमी जो शीघ्र ही आए; लोकनायकम (विश्व के नेता) वह उस प्रमुख तेजस्वी परमेश्वर के निकट गए; इस प्रकार, संबंध है। वे उनके आगमन के ठीक क्षण में उनके पास पहुँचे; इस प्रकार, अर्थ है।

37. पुप्पच्छत्तम् गहेत्वान, इस प्रकार पास आकर, लाल और सफेद कमल आदि से बने फूलों के छाते को पकड़कर; नरासभम्, (सर्वोत्तम पुरुष) उपगच्छिम् (मैं पास आया) मैं पास गया था, यही अर्थ है। समाधिम् समापज्जन्तम्, अच्छी तरह से मन की एकाग्रता में प्रवेश करके, मैंने उस व्यक्ति को बाधा पहुँचाई जो अपनी ध्यान एकाग्रता में लीन बैठा था। यही संबंध है।

38. उभोहत्तेहि पग्गयहा (दोनों हाथों से उठाकर) उस सुसंगठित पुष्प-छाता को दोनों हाथों से उठाकर मैंने उसे परम पूज्य को अर्पित किया, यही इसका अर्थ है। पाटिग्गहेसी (स्वीकार किया) परम पूज्य पद्ममुत्तरा ने मेरे द्वारा अर्पित पुष्प-छाता को स्वीकार किया; मेरी श्रद्धा की सराहना की; यही इसका अर्थ है।

41. सतपत्तचत्तम पग्गयहा (आदरपूर्वक सौ पंखुड़ियों वाला छत्र अर्पित करते हुए) ऋषि ने मुझे आदरपूर्वक लाल पद्म कमलों से सुशोभित एक फूलों का छत्र भेंट किया, जिनमें से प्रत्येक कमल में सौ पंखुड़ियाँ थीं; यही इसका अर्थ है। तमहम कित्तयिसामि (मैं उनका घोष करूंगा) मैं उस ऋषि का घोष करूंगा और उन्हें प्रकट करूंगा; यही इसका अर्थ है। भासतो (बोलते हुए) मेरी वाणी को ध्यानपूर्वक सुनो और उस पर विचार करो।

42. पंचवीसतिकप्पानि, पच्चीस युगों (कप्पा) तक, पुष्प छत्र की इस भेंट के कारण, वह पच्चीस बार तावतिंस महल में सक्का बनेगा और संप्रभुता धारण करेगा; इस प्रकार, संबंध है। चतुत्तिमसक्खत्तुन च, चौंतीस बार; वह मनुष्यों के संसार में विश्व-राजा बनेगा।

43. यम यम योनिम् (जिस भी गर्भ में), मनुष्य के गर्भ आदि जैसे गर्भों में, वह जन्म लेता है; संसारति (पुनर्जन्म के चक्र से गुजरता है) वह इस और उस गर्भ में जन्म लेता है; अब्भोकासे (खुली हवा में), किसी खाली जगह में; पतिष्ठंतम् (खड़ा) चाहे बैठा हो या खड़ा; धारयिस्सति (धारण करेगा), कमल का फूल उसे ढक लेगा; यही अर्थ है।

45. जब बुद्ध के उपदेश स्पष्ट हो जाते हैं, जब तीनों पिटकों का संपूर्ण ज्ञान प्रकट होता है और प्रकाश में आता है, तब मनुष्य का जन्म होता है; जब मनुष्य का जन्म होता है; तब मनुष्य का जन्म होता है; जब मनुष्य का जन्म होता है; तब मनुष्य का जन्म होता है; जब मनुष्य का जन्म होता है; तब मनुष्य का जन्म होता है; जब मनुष्य का जन्म होता है, तब मनुष्य का जन्म होता है; इस प्रकार, मनुष्य का जन्म होता है; जैसे मनुष्य का जन्म होता है, वैसे ही मनुष्य का जन्म होता है; वह मनुष्य के मार्ग का अनुसरण करता है; यही अर्थ है। जब मनुष्य का जन्म होता है, तब मनुष्य का जन्म होता है; जब मनुष्य का जन्म होता है, तब मनुष्य का जन्म होता है; तब मनुष्य का जन्म होता है। ...

52. सारिम कोकनदम अहम (मैंने कमल के फूल को याद किया), भगवान द्वारा निर्मित वस्त्र के चारों ओर पोंछते हुए, मैंने कमल के फूल को याद किया, कोकनद पद्म; यही अर्थ है। तत्था चित्तम विमुच्चि मे (वहाँ मेरा मन मुक्त हो गया), मेरा मन उस कमल में अनासक्त और पूर्णतः मुक्त हो गया, कोकनद पद्म; इसके बाद मैंने अर्हतत्व प्राप्त किया; यही संबंध है।

53. सब्बथा, सर्वत्र; पारमिन (पूर्णता) गतो (चली गई) मन द्वारा नियत और मन द्वारा निर्मित शरीरों में मैंने सर्वांगीण चरम सीमा प्राप्त की; यही संबंध है; शेष तो बस उपरोक्त तरीके से है।

चूलपंथक थेरा की जीवनी पर की गई टीका समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 15. थेरा पिलिंडावच्चा

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

15. पिलिंडावच्चा407

जब विश्व नेता सुमेधा, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, निर्वाण को प्राप्त हुए, तो मैंने प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से उनके स्तूप की पूजा की। (1) (728)

वहाँ मैंने उन लोगों को इकट्ठा किया जिनके दोष नष्ट हो गए थे, विशेष ज्ञान, महाशक्तियाँ, और भिक्षुओं की सभा को भोज दिया। (2) (729)

उस समय मैंने सुमेधा की सेवा की। सुमेधा नाम से जाने जाने वाले उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया। (3) (730)

मेरे हृदय में व्याप्त आनंद के कारण मैं एक दिव्य महल में जन्मा हूँ। छियासी हजार दिव्य अप्सराओं408 ने मुझे उस महल में प्रसन्न किया। (4) (731)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 407 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 408 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

वे केवल मेरे प्रति समर्पित थे, और उन्हें हर प्रकार का सुख निरंतर मिलता था। मैंने अन्य सभी देवताओं को श्रेष्ठ बना दिया; यही अच्छे कर्मों का फल है। (5) (732)
पच्चीसवें युग में (तब से) मैं वरुण नाम का राजा था। मैं तब एक चक्र चलाने वाला राजा था जिसे विशेष भोजन प्राप्त था। (6) (733)
उन्हें न तो बीज बोने की ज़रूरत थी और न ही हल चलाने की; सभी लोग लकड़ी से पकाए गए चावल से अपना पेट भर सकते थे। (7) (734)
वहाँ (उस तरह) शासन करने के बाद मैं दिव्य अवस्था में वापस चला गया। फिर भी उसी तरह से मुझे भोजन में सफलता प्राप्त हुई। (8) (735)
कोई भी प्राणी, मित्र हो या शत्रु, मुझे कोई हानि नहीं पहुँचा रहा है। मैं उन सबका प्रिय हूँ; यही अच्छे कर्मों का फल है। (9) (736)
उस उपहार को प्रदान करने के बाद से तीस हजार युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है; यही सुगंधित मरहम का फल है।411 (10) (737)
इस (वर्तमान) सौभाग्यशाली युग में एक समय मैं मनुष्यों का स्वामी था। मैं (तब) महान वैभव और शक्ति वाला एक चक्र-घुमाने वाला राजा था। (11) (738)
मैंने अनेक लोगों को पाँच नैतिक उपदेशों में स्थापित किया (तब) (और) उन्हें अच्छे पुनर्जन्म प्राप्त करवाए; मैं देवताओं का प्रिय था। (12) (739)
विश्लेषण के चार तरीके,

---

409 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 410 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 411 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

और इन आठ मुक्तियों, छह विशेष ज्ञानों में महारत हासिल करके, मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) (740)
इस प्रकार पूज्य पिलिंडावच्छ थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
पिलिंडावच्छा थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

टिप्पणी अनुवाद: यू लू पे विन
15. थेरा पिलिंडा वच्छा की जीवनी पर टिप्पणी
निब्बुते लोकनाथंहि से शुरू होने वाले श्लोक थेरा पिलिन्दवच्छ की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म करके, जन्म-जन्म के चक्रों से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित किए, और इस-उस जन्म में हंसवती नगर के एक अत्यंत समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लिया। उन्होंने गुरु की उपस्थिति में धर्म उपदेश को उपरोक्त तरीके से सुना और देखा कि गुरु ने एक भिक्षु को सर्वोच्च स्थान दिया है क्योंकि वह देवताओं को प्रिय और प्रसन्न करने वाला था। उन्होंने भी उस स्थान की कामना की, जीवन भर अच्छे

कर्म किए, और वहां से मृत्यु के बाद, देवताओं और मनुष्यों के बीच जन्म-जन्म के चक्रों में विचरण करते हुए, सुमधा नगर के समय में एक परिवार में पुनर्जन्म लिया। जब परम पूज्य बुद्ध पूर्णतः निर्वाण को प्राप्त हुए, तो उनके सम्मान में एक मंदिर स्थापित किया गया, पुरोहितों को दान-पुण्य दिया गया, और वहाँ से देह त्यागने के बाद, उन्होंने देवताओं और मनुष्यों दोनों के बीच समृद्धि का आनंद लिया। जब कोई बुद्ध प्रकट नहीं हुए, तब वे विश्वराज बने, उन्होंने मनुष्यों के विशाल समूह को पंच धर्म का उचित प्रशिक्षण दिया और उन्हें स्वर्ग की ओर अग्रसर किया। परम पूज्य बुद्ध के प्रकट होने से पहले ही उनका पुनर्जन्म सावत्थी में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनका कुल पिलिन्द वच्छ था। बाद में वे पिलिन्द-वच्छ के नाम से प्रसिद्ध हुए। अपने पुनर्जन्मों के चक्र में, अपने पश्चात्ताप की प्रचुरता के कारण, उन्होंने संसार त्याग कर एक विचरणशील तपस्वी का जीवन व्यतीत किया, चूलगंधार नामक महाविज्ञान का अध्ययन पूर्ण किया, आकाश-यात्री और मन-ज्ञानी बने, और सर्वोच्च लाभ और सर्वोच्च प्रसिद्धि प्राप्त करके राजगृह में अपना निवास स्थान ग्रहण किया।

फिर, हमारे परम पूज्य बुद्ध, विधिवत आत्मज्ञान प्राप्त करके, समय आने पर राजगृह पहुंचे। उस समय से, बुद्ध के प्रबल प्रभाव के कारण, वह महाविज्ञान अप्रभावी होने लगा; वह अपना कर्तव्य निभाने में विफल रहा। उन्होंने इस प्रकार चिंतन किया: "यद्यपि, मैंने यह सुना है, अर्थात्: अनेक गुरुओं का यही कथन है: जहाँ कहीं भी महाजात विद्या, गंधार, फलता-फूलता है, वहाँ गौण विद्या (चूल्गंधरविज्जा) अप्रभावी हो जाती है; मेरा विद्या गुरु गौतम के आगमन के समय से ही ठीक से काम नहीं कर रहा है; निःसंदेह, गौतम गुरु महाजात विद्या (महागंधरविज्जा) जानते हैं; यदि मैं उनकी सेवा करूँ और उनकी उपस्थिति में वह महाजात विद्या सीखूँ तो क्या होगा?" वे परम पूज्य बुद्ध के पास गए और ये शब्द कहे:- "हे महान भिक्षु! मैं आपकी उपस्थिति में एक विशेष विद्या सीखना चाहता हूँ; कृपया मेरे लिए एक अवसर प्रदान करें।" भगवान ने उत्तर दिया: "इसीलिए, आपको मेरी उपस्थिति में भिक्षु बनना चाहिए।" उन्होंने यह सोचकर भिक्षु बनने का निश्चय किया: "भिक्षुता विज्ञान के अध्ययन की प्रारंभिक अवस्था है।" भगवान ने उन्हें सत्य (धम्म) का उपदेश दिया और उनके आचरण के अनुरूप उन्हें मानसिक अभ्यास (कम्मत्थान) प्रदान किया। क्योंकि उनमें उचित क्षमता थी, इसलिए आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) में स्थापित होने के बाद उन्होंने शीघ्र ही अर्हतत्व प्राप्त कर लिया।

55. स्वर्ग में जन्म लेने वाले सभी दिव्य प्राणी, अपने पूर्व जन्मों में उनके प्रति प्रचुर कृतज्ञता के कारण, सुबह-शाम उस थेरा की सेवा में जाया करते थे। अतः, देवताओं द्वारा उस थेरा के प्रति अत्यधिक प्रेम और स्नेह के कारण, भगवान ने उन्हें सर्वोच्च स्थान दिया और कहा: "हे भिक्षुओं! मेरे शिष्यों में, देवताओं के प्रिय भिक्षुओं में, यह प्रमुख है, अर्थात्: पिलिन्दवच्छ।" इस प्रकार, सर्वोच्च पद प्राप्त करके, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया और 'निब्बुत लोकनाथंहि' से शुरू होने वाला श्लोक बोला, ताकि वे अपने उत्साह और प्रसन्नता के कारण पूर्व में किए गए कर्मों को प्रकट कर सकें।

वहाँ, लोकनाथ (विश्व के मुखिया), इंद्रिय जगत, सजीव जगत और निराकार जगत के प्रमुख रक्षक; सुमेधो (उत्तम ज्ञान); सर्वज्ञ ज्ञान, असीमित ज्ञान आदि प्रकार के ज्ञान को मेधा कहा जाता है; या उत्तम, उत्कृष्ट ज्ञान, जिसे सुमेधो कहते हैं; अग्गपुग्गला (प्रमुख) सर्वोच्च होने के साथ-साथ एक प्रमुख व्यक्ति भी हैं। जब विश्व के मुखिया सुमेधा, प्रमुख व्यक्ति ने सभी तत्वों (खंडों) के प्रज्वलित होने से निर्वाण प्राप्त किया, तो यह संबंध है। पसन्नचित्तो सुमनो (स्पष्ट रूप से पवित्र मन और अच्छे हृदय से, पवित्र आस्था के साथ), मैं उस महिमावान सुमेधो के प्रति प्रसन्न हृदय से स्पष्ट रूप से पवित्र मन और अच्छे हृदय से प्रेरित हुआ; स्तूपपूजम् (स्तूप को आदरपूर्वक अर्पित करना), मैंने स्तूप को आदरपूर्वक अर्पित किया, यह अर्थ है।

56. ये च खीणासवा तत्था (जो भी वहाँ दोषरहित या दोषमुक्त थे), उस सभा में, जो भी अरहत थे, जो दोषरहित और दुराचार से रहित थे; चालभिञ्ञा (छह प्रकार के उच्च ज्ञान से युक्त), छह प्रकार के उच्च ज्ञान से युक्त; महिद्धिका (उच्च जादुई शक्ति से युक्त), महान जादुई शक्तियों से युक्त; ते (उन्हें), सभी दोषरहित अरहत; समानेत्वा, उचित रूप से एकत्रित करके, संघ भत्तम अकासिम (मैंने पुरोहितों के लिए भोजन बनाया) मैंने सभी दोषरहित अरहतों को आदरपूर्वक वहाँ उचित रूप से एकत्रित किया और उन्हें वह भोजन कराया जो समस्त पुरोहितों को अर्पित किया जाना चाहिए; यही अर्थ है।

57. उपात्थाको तदा अहु (उस समय सेवक था)। जब मैं पुरोहितों को भोजन अर्पित कर रहा था, उस समय सुमेधा नाम के एक सेवक का नाम सुमेधा था; यही इसका अर्थ है। अनुमोदित्था (बधाई देते हुए), उस शिष्य ने मेरे द्वारा धन्यवाद के रूप में अर्पित की गई भेंट के लाभ का उपदेश दिया; यही इसका अर्थ है।

58. तेना चित्तप्पसादेना (उस स्पष्ट रूप से पवित्र मन से), उस सुखद पवित्र मन से जो मंदिर में अर्पण करने के कारण उत्पन्न हुआ था; उपपज्जिम (मैं उत्पन्न हुआ), मैं दिव्य लोक में स्थित स्वर्गलोक में पहुंचा; यही अर्थ है। वहां यह कहा गया है: "मेरा जन्म वहां हुआ था"। चालासीति सहस्सानि (छियासी हजार) मे रामिंसु (मुझे आनंदित किया), उस स्वर्गलोक में छियासी हजार अप्सराओं ने मेरे मन को प्रसन्न किया; यही संबंध है।

59. ममेव अनुवत्तन्ति (वे मेरी इच्छा के अनुसार ही व्यवहार करती हैं) ता (वे) सब्बकामेहि (सभी इंद्रिय सुखों के साथ) सदा (सदा), अप्सराएँ सदा मेरी आज्ञा का पालन करती थीं और मेरी इच्छा के अनुसार ही व्यवहार करती थीं, यहाँ तक कि रूप-रंग आदि भौतिक इंद्रिय सुखों से मेरी सेवा करने में भी; यही अर्थ है। शेष अर्थ तो आसानी से समझ में आ जाता है।
थेरा पिलिन्दवच्छ की जीवनी पर की गई टीका समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 16. थेरा राहुला

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

16. राहुल

मैंने विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ, धन्य पद्ममुत्तरा के सात मंजिला महल में एक दर्पणयुक्त सतह412 भेंट की। (1) (741)
दो पैरों वाले भगवान, मनुष्यों के बैल, महान ऋषि (तब) हजार (अरहंतों) से घिरे हुए निष्कलंक होकर अपनी सुगंधित कुटिया की ओर बढ़े। (2) (742)
भिक्षुओं की सभा में खड़े होकर, (और) उस सुगंधित कुटिया को रोशन करते हुए, देवताओं के देवता, मनुष्यों के बैल, शिक्षक ने ये श्लोक कहे (तब): (3) (743)
मैं उस व्यक्ति का विवरण दूंगा जो इस (महल)413 को अच्छी तरह से फैले हुए दर्पण से चमकाएगा; आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें: (4) (744)
सोने की बनी वस्तुएँ, चाँदी की बनी वस्तुएँ, नीलमणि की बनी वस्तुएँ; जो कुछ भी वह चाहेगा414 वह आकाश में उसके लिए प्रकट होगा। (5) (745)
चौंसठ बार देवताओं का राजा वह दिव्य शासन करेगा; वह एक हजार बार बिना रुके पहिया घुमाएगा। (6) (746)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 412 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 413 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
414 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

इक्कीसवें युग में (इसलिए) विमल415 नामक क्षत्रिय चारों ओर से विजयी होकर चक्र-घुमाने वाला सम्राट होगा। (7) (747)

(उनका) नगर, रेणुवती,416 टाइलों से सुशोभित होगा। (प्रत्येक भुजा) तीन सौ (लीग) लंबाई में आयताकार रूप से जुड़ी होगी। (8) (748)

(उनका) महल जिसका नाम सुदासाना417 है और जिसका निर्माण विस्साकम्मा418 ने करवाया था, उसमें सात प्रकार के रत्नों से जड़े हुए ढलानदार कक्ष होंगे। (9) (749)

दिव्य संगीतकारों से भरा हुआ,419 (और कभी भी) दस ध्वनियों की कमी नहीं होगी; यह सुदासन के समान होगा, वह नगर जहाँ देवता निवास करते हैं।420 (10) (750)

(यहाँ तक कि) जब इसकी चमक मंद पड़ जाती है, मानो सूरज उग रहा हो (तब) यह हर दिशा में आठ मील तक तेज़ी से चमकेगा। (11) (751)

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (12) (752)

तुसिता (स्वर्ग) से गिरकर, अपनी पुण्य जड़ों से प्रेरित होकर, वह भगवान गौतम का वैध पुत्र होगा। (13) (753)

यदि वह घर में ही रहे तो वह चक्र-चालक बन जाएगा। इसी कारण अरहंत घर के भीतर सुख प्राप्त नहीं कर सकता। (14) (754)

---

415 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 416 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 417 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ। 418 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)। 419 शाब्दिक अर्थ, "गया"। 420 BJTS के साथ संकालेसी का पाठ, PTS संजालेसी के लिए। 421 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"।

अच्छी तरह से प्रशिक्षित होकर वह घर से निकलने के बाद त्याग करेगा। वह राहुल के नाम से जाना जाएगा और वह अरहंत बन जाएगा। (15) (755)

"जैसे नीलगाय अपने अंडों की रक्षा करता है (और) जैसे बैल अपनी पूंछ की रक्षा करता है, वैसे ही,422 हे महान ऋषि, मैं बुद्धिमान और नैतिक होते हुए (सद्गुण) की रक्षा करता था। (16) (756)

उनकी शिक्षा को समझते हुए, मैंने उनके विधान से प्रेम करते हुए जीवन व्यतीत किया। समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए, मैं अब दोषों से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करता हूँ। (17) (757)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (18) (758)

इस प्रकार पूज्य राहुल थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आदरणीय राहुल थेरा की कथा का अंत हो गया है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

16. थेरा राहुल (बुद्ध के पुत्र) की जीवनी पर टीका

पद्ममुत्तरा भगवतो से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य थेरा राहुल की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व श्रेष्ठ विजेताओं की सेवा में समर्पित कर्म किए, जिससे उन्हें जन्म-जन्म के चक्र से मुक्ति मिली। वे पद्ममुत्तरा के समय में एक परिवार में पुनर्जन्म लेकर लौटे। जब वे ज्ञानोदय की आयु प्राप्त कर चुके थे, तब उन्होंने गुरु के धर्म उपदेशों को सुना और देखा कि पद्ममुत्तरा एक भिक्षु को अनुशासन की तीव्र इच्छा रखने वालों में सर्वोच्च स्थान दे रहे हैं। स्वयं भी उस स्थान की प्राप्ति की इच्छा रखते हुए उन्होंने मठ की सफाई, उसे चमकाने आदि जैसे अनेक पुण्य कर्म किए और निश्चय किया। वहाँ से देह त्यागने के बाद, उन्होंने अपने बार-बार के पुनर्जन्मों के चक्र में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण किया, दोनों प्रकार की समृद्धि का आनंद लिया, रानी यशोधरा के गर्भ में पुनर्जन्म लिया, जो इस बुद्ध के प्रकट होने के समय हमारे बोधिसत्व पर आश्रित थीं, राहुल नाम प्राप्त किया और क्षत्रिय योद्धाओं के एक बड़े दल के साथ पले-बढ़े। उनके त्याग का विस्तृत वर्णन विनय पिटक के खंडक खंड में ही मिलता है। उन्होंने गुरु की उपस्थिति में संसार का त्याग किया, कई सूत्रों के माध्यम से उनका परामर्श प्राप्त किया, ज्ञान में सर्वांगीण परिपक्व हुए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के प्रति सचेत हुए और अर्हतत्व प्राप्त

किया, उन्होंने अपनी उचित प्राप्ति पर विधिवत विचार किया और अपनी अर्हतत्व (अञ्ञा) की प्राप्ति को स्पष्ट करते हुए, उन्होंने इस प्रकार चार श्लोक कहे:-

"लोग मुझे इस प्रकार जानते हैं: 'राहुल भद्दा या आदरणीय राहुल दोनों गुणों से परिपूर्ण हैं, अर्थात्: मैं बुद्ध का पुत्र हूँ; मुझे सत्यों (धम्म) का ज्ञान है; मेरे सारे दोष दूर हो गए हैं, मेरा कोई परलोक नहीं है; मैं अर्पण ग्रहण करने योग्य अरहत हूँ; मैं अमर (अमत) को देखने वाला त्रिगुणी महावैज्ञानिक हूँ। इंद्रिय सुख अंधकारमय और जालों से ढके हुए हैं, तृष्णा (तन्हा) के छत्र से आच्छादित हैं; लापरवाही के बंधनों से बंधे हुए हैं, जैसे मछली पकड़ने के जाल के मुँह पर मछलियाँ।' उस इंद्रिय सुख (काम) को दूर करके, मैंने तृष्णा (तन्हा) को उसकी जड़ सहित उखाड़ फेंका, और मैं शांत हो गया और मेरी अग्नियाँ भस्म हो गईं, मैंने निर्वाण प्राप्त कर लिया।"

वहाँ, उभये न'एव सम्पन्नो (दोनों प्रकार की समृद्धि से संपन्न) जन्म की समृद्धि और उचित प्राप्ति की समृद्धि से संपन्न; राहुलभद्दो ति माम विदू (मेरे साथी श्रेष्ठ जीवन के नेता मुझे "राहुलभद्ध" के नाम से भलीभांति जानते हैं); वास्तव में, उनके जन्म का संदेश सुनकर बोधिसत्व ने कहा: "राहु का जन्म हुआ है, बंधन उत्पन्न हुआ है"; बोधिसत्व के इन शब्दों के कारण, महान राजा सुद्धोदबा ने "राहुल" नाम धारण किया। वहीं से, पिता द्वारा कहे गए नाम को अपनाते हुए, उन्होंने कहा: "राहुलभद्दो ति माम विदू, वे मुझे राहुलभद्ध के नाम से जानते हैं"। भद्दा, अच्छा, प्रशंसा का एक शब्द मात्र है। इसके बाद, गुरु ने अनुशासन की उनकी इच्छा के कारण उन्हें सर्वोच्च स्थान पर रखते हुए कहा: "हे भिक्षुओं! मेरे शिष्यों में, जो अनुशासन के इच्छुक हैं, उनमें यह एक, अर्थात् राहुल, प्रमुख हैं।

68. इस प्रकार सर्वोच्च पद प्राप्त करने पर, उन्हें अपने पूर्व कर्मों की याद आई, वे प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्मों को प्रकट करने के लिए "पदुमुत्तरस्स भगवतो" से शुरू होने वाला श्लोक बोला। सात मंजिला महल में आनंद और मानसिक प्रसन्नता उत्पन्न होती है; अतः, यह महल है। जिस भी महल में सात मंजिलें एक के ऊपर एक खड़ी हों, वह सात मंजिला महल कहलाता है; दर्पण की सतह बनाकर, मैंने जगत के सबसे बड़े, तेजस्वी पुरुष को उचित रूप से दर्पण अर्पित किया; मैंने उचित रूप से दर्पण बिछाकर उनके सम्मान में अर्पित किया; यही अर्थ है।

69. खीणासवसहस्सेहि (हजारों दोषरहित अरहतों से घिरे हुए) चारों ओर हजार अरहतों से मिश्रित और घिरे हुए; द्विपदिंदो (दो पैरों वाले प्राणियों के स्वामी) उपागामी (पहुंचे या पहुंचे) महान ऋषि, सभी दो पैरों वाले प्राणियों के संप्रभु स्वामी, मनुष्य के विशाल बैल, उनके सुगंधित कक्ष में पहुंचे और प्रवेश किया; यही अर्थ है।

70. विरोसेंटो गंधक उतिम् (सुगंधित कक्ष को दीप्तिमान करते हुए) देवदेवो (दिव्य देवत्व) दिव्य प्राणियों के दिव्य स्वामी; नरसाभो (महान बैल) मनुष्यों के महान बैल; आभासथा (कहा) गुरु, मनुष्यों में सबसे वरिष्ठ, भिक्षुओं के पुरोहितों के बीच बैठ गए और भविष्यवाणी के इन श्लोकों का उच्चारण (या पाठ) किया; इस प्रकार, संबंध है।

71. येन यं जोतिता सेय्या (इससे भी अधिक तेजस्वी) भक्त द्वारा निर्मित इस तथाकथित महल से कहीं अधिक तेजस्वी, प्रकाशमान और चमकीला; आदास्क्व (दर्पण के समान) तांबे के बने दर्पण की सतह के समान; संथात (ठीक से फैला हुआ) ठीक से निर्मित; तम (उसे) भक्त; कित्तयिसामि (मैं घोषणा करूँगा) मैं प्रकट करूँगा; यही अर्थ है। शेष तो आसानी से समझ में आ जाता है।

81. अथनामेतम यमतादि (यह ऐसा है कि यह अनुचित है) तादि वह है जो किसी भी परिस्थिति में, वांछनीय और अवांछनीय जैसी विविधताओं के बीच स्वाभाविक रूप से अविचलित रहता है; अगरे (घर में) गृहस्थ जीवन में; रतिम (आनंद) आसक्ति की अवस्था; अज्जगा (अंदर चला गया) पहुँच गया; एतम (यह) यह कारण अनुचित है, नहीं किया जाना चाहिए, तर्कहीन है; इस प्रकार, अर्थ है।

82. निक्खमित्वा अगरस्मा (गृहस्थी छोड़कर) गृहस्थ जीवन से निकलकर, उसे घास के गुच्छे की तरह पूरी तरह त्यागकर; सुब्बतो (उचित रूप से कर्तव्यनिष्ठ) सुशासित होकर, वह संसार का त्याग करके भिक्षु बन जाएगा; राहुलो नाम नामेन (राहुल के नाम से जाना जाने वाला) महान राजा सुद्धोदन द्वारा भेजे गए राजकुमार के जन्म का संदेश सुनकर, उसके पिता सिद्धार्थ द्वारा बताए गए नाम के कारण, "राहु (शनि) का जन्म हुआ है, एक बंधन उत्पन्न हुआ है", उसका नाम राहुल रखा गया; यही अर्थ है। इस प्रकार ध्यान देना चाहिए: "जैसे राहु (शनि), टाइटनों का राजा, असुरिन्द सूर्य और चंद्रमा के आकाश के प्रकाश को धूमिल करते हुए आगे बढ़ता है, ठीक उसी प्रकार वह मेरे महान वैराग्य में बाधा डालते हुए और भिक्षु बनते हुए प्रकट हुआ।" अरहा सो भविस्सति (वह अरहत बनेगा) वह तुम्हारे समान होगा, अरहत पद के लिए पर्याप्त योग्यताओं से युक्त, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के विकास के लिए तत्पर, और वह दोषरहित अरहत बनेगा; यही अर्थ है।

83. kikīva aṇ̄dam rakkheyya (मुर्गी की तरह, जो अपने अंडों की देखभाल करती है) मुर्गी की तरह, जो अपने अंडे की देखभाल करती है, व्यक्ति को अपने नैतिक उपदेशों का लगन से पालन करना चाहिए; cāmarī viya vāladhi (याक की तरह पूंछ) चामरी की तरह, जो कांटों में उलझी अपनी पूंछ को टूटने के डर से नहीं खींचती, उसकी पूंछ की देखभाल करते हुए, व्यक्ति को अपने नैतिक उपदेशों का पालन करना चाहिए, उसे टूटने या रिसने से बचाते हुए; nipako sīlasampanno (परिपक्व और नैतिक उपदेशों से युक्त)

परिपक्वता को ज्ञान कहा जाता है, उस परिपक्वता से युक्त होना ही निपाक (परिपक्वता) है; नैतिक उपदेशों की देखभाल करने से, उसे टूटने और रिसने की स्थिति तक न पहुंचने देने से, व्यक्ति नैतिक उपदेशों से युक्त हो जाएगा। इस प्रकार, उस महान ईश्वर ने अपनी भविष्यवाणी इस प्रकार की। इस प्रकार अर्हतत्व की सिद्धि प्राप्त करने के बाद, उन्होंने एक दिन एकांत स्थान पर बैठकर यह श्लोक कहा, जो इस प्रकार प्रारंभ होता है: एवम् रक्खिम महामुनि: यह समझना आसान है।
थेरा राहुल की जीवनी पर की गई टीका समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 17. थेरा उपसेन वंगंतपुत्त

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

17. उपसेना वांगंतपुत्त423

मैं परम पुरुष, परम पावन पद्ममुत्तरा, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल के पास पहुँचा, जब वे एक पर्वत ढलान पर बैठे थे। (1) (759)
एक डिनर-प्लेट424 को खिलते हुए देखकर मैंने उसमें से (कई) डंठल तोड़े और एक छतरी को सजाकर उसे बुद्ध के ऊपर उठा दिया। (2) (760)
(और फिर) मैंने दूध-चावल का दान दिया, जो खाने में स्वादिष्ट था। मैंने वहाँ मौजूद आठ भिक्षुओं को भोजन कराया, जिनमें बुद्ध नौवें थे। (3) (761)

---

422 शाब्दिक अर्थ, "पुण्यपूर्ण" 423 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 424 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

महान नायक ने (मुझे) स्वयं-एकत्व प्राप्त, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को धन्यवाद दिया: "इस छाते के उपहार के कारण दूध-चावल की वर्षा होगी। (4) (762)
वह अपने हृदय में उस आनंद के कारण अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करेगा। वह देवताओं के राजा के रूप में तीस बार दिव्य शासन करेगा। (5) (763)
और बीस (अलग-अलग) बार वह एक ऐसा राजा होगा जो (कानून का) पहिया घुमाएगा, (और उसके पास) अनगिनत स्थानीय शासन होगा। (6) (764)
जिसे वे सुमेधा कहते हैं, वह अत्यंत बुद्धिमान है, पृथ्वी के समान बुद्धिमान है। वह एक लाख युगों में बुद्ध बनेगा। (7) (765)
जब ईश्वर का प्रकाश चमकेगा, तब वह मनुष्य रूप धारण करेगा। उपासना नाम से वह गुरु का अनुयायी होगा। (8) (766)
यह मेरा अंतिम अस्तित्व है; (अब) सभी अस्तित्व समाप्त हो गया है। अपनी सेनाओं के साथ मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हुए मैं अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ। (9) (767)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) (768)
इस प्रकार पूज्य उपसेना वांगंतपुत्त थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
उपसेना वांगंतपुत्त थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
पाठ का तीसरा भाग समाप्त हो गया है।

---

425 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 426 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
17. वांगंत के पुत्र थेरा उपसेना की जीवनी पर टीका
पद्ममुत्तराम भगवंतम से शुरू होने वाले श्लोक वांगंत के पुत्र थेरा उपसेना की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, पुण्य कर्म संचित किए, जो पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने में सहायक थे। वे पद्ममुत्तरा के समय हंसवती नगर के एक परिवार में पुनर्जन्म लेकर वयस्क हुए और गुरु के पास जाकर धर्म का उपदेश सुना। तब उन्होंने देखा कि गुरु ने सभी प्रिय भिक्षुओं में एक भिक्षु को सर्वोच्च स्थान दिया है। उन्होंने गुरु की सेवा की, उस पद की कामना की, जीवन भर अच्छे कर्म किए, जन्म-मृत्यु के चक्र में विचरण किया और अंत में इस बुद्ध के प्रकट होने के समय नालक ग्राम में ब्राह्मण स्त्री रूपसारी के गर्भ में पुनर्जन्म लिया। उनका नाम उपसेना तिस्सा था। वयस्क होने पर उन्होंने तीनों वेदों का ज्ञान प्राप्त किया, गुरु की उपस्थिति में धर्म का प्रवचन सुना, विधिवत धार्मिक आस्था धारण की, संसार का त्याग किया, भिक्षु दीक्षा ली और एक वर्ष बाद मन ही मन यह कहते हुए कि "मैं आर्यों के राज्य का विस्तार करूंगा", एक परिवार के पुत्र को अपनी उपस्थिति में उपसंपदा द्वारा भिक्षु बनाया और उसके साथ गुरु के समक्ष गए। यह जानकर कि उनका सहवासी भिक्षु वह है जिसने अभी तक उपवास नहीं रखा है, गुरु ने उन्हें इस प्रकार फटकारा: "हे मूर्ख! तू तो अत्यंत सहजता से समृद्धि की ओर लौट गया है।" उन्होंने मन ही मन कहा: "अब यदि गुरु मुझे अपने अनुयायियों के कारण दोषी ठहराते हैं, तो मैं अपने अनुयायियों के कारण ही गुरु को प्रसन्न करूंगा"; उन्होंने आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के विकास के लिए कर्म किए और कुछ ही समय बाद अर्हतत्व प्राप्त कर लिया। लेकिन अरहत बनने के बाद, उन्होंने स्वयं भी कर्तव्यवश सभी कठोर साधनाओं (धूतंगधम्म) का पालन किया; उन्होंने दूसरों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित किया। इसी कारण भगवान ने उन्हें सभी प्रिय भिक्षुओं (समंतपासादिक) में सर्वोच्च स्थान दिया। एक बार जब कोसंबी में झगड़ा हुआ और भिक्षुओं का समूह दो गुटों में बँट गया, तब एक भिक्षु ने, जो उस झगड़े से पूरी तरह बचना चाहता था, उनसे पूछा, "अभी तो झगड़ा हो गया है; भिक्षुओं का समूह दो भागों में बँट गया है; मुझे उचित आचरण कैसे करना चाहिए?", तब उन्होंने उस भिक्षु को एकांतवास से शुरू करके उचित साधना का उपदेश दिया। इस प्रकार, थेरा ने स्वयं के उचित कर्मों की स्थिति को उजागर करने के लिए, उसी प्रकार उस भिक्षु को सलाह देने के निर्देश का अनुसरण करते हुए, अपने अरहतत्व की प्राप्ति को प्रकट किया।
86. इस प्रकार सर्वोच्च पद प्राप्त करने के बाद, उन्होंने पद्ममुत्तरम भगवंतम से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, जिसमें उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक अपने पूर्व कर्मों का प्रकटीकरण किया। पभारमिनिसीदंतम (ढलान पर बैठा हुआ) भारित, झुका हुआ, आगे की ओर झुका हुआ, इस प्रकार है पभार (ढलान); वन के मध्य में प्राकृतिक पर्वतीय ढलान पर बैठा हुआ, एकांत को सुगम बनाते हुए; नरुत्तमन (सर्वोत्तम पुरुष) महिमावान, उपगच्छिम (मैं पास आया) मैं निकट गया; इस प्रकार है अर्थ।
87. काणिकारापुप्फमदिस्वा (पीले काणिकारा फूल को उस प्रकार आते हुए देखकर), उस स्थान पर अच्छी तरह खिले हुए पीले काणिकारा फूल को देखकर; वन्ते चेत्वान' हम तदा (तना काटकर) तथागत को देखते ही मैंने उस फूल को तना से काट दिया; अलांकरित्वा चत्तम्हि (छतरी पर सजाया) उस फूल से छतरी को ढक दिया; बुद्धस्स अभिरोपायी (बुद्ध के ऊपर चढ़ाया) पहाड़ी ढलान पर बैठे बुद्ध के सिर के ऊपर उसे धारण कराया; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

88. पिन्दपातंच पादसिम (मैंने भिक्षा भी दी) मैंने उसी स्थान पर विराजमान परम पूज्य को भिक्षा दी और भोजन कराया; परमन्नां सुभोजनम् (परम उत्कृष्ट भोजन और उत्तम कोमल भोजन) अत्यंत उत्तम पोषण, उत्तम भोजन जिसे उत्तम कोमल भोजन माना जाता है; बुद्धेन नवमे तत्था (वहाँ बुद्ध के साथ नौवें) उस एकांत स्थान पर, नौवें बुद्ध के साथ, समणे (भिक्षुओं) मैंने आठ भिक्षुओं को भोजन कराया जो रोगमुक्त थे और जिन्होंने बुरे कर्मों का त्याग कर दिया था; यही अर्थ है।
यम वदन्ति सुमेधो (ज्ञानी लोग जो भी कहें) भूरिपञ्ञम् (प्रचुर ज्ञान) सुमेधम (अच्छे ज्ञान वाले) - ज्ञानी लोग इस सर्वज्ञ बुद्ध गौतम के बारे में कहते हैं कि वे पृथ्वी के समान विशाल ज्ञान से परिपूर्ण हैं, सर्वज्ञता आदि से युक्त हैं, और उत्कृष्ट बुद्धि वाले हैं, और यह भी कि यह गौतम इस युग से एक लाख युगों (कप्पा) बाद पूर्णतः आत्मप्रबुद्ध बुद्ध बनेंगे; यही संबंध है। शेष बात तो आसानी से समझ में आ जाती है।
वांगंत के पुत्र थेरा उपसेना की जीवनी पर टीका का कार्य समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 18. थेरा रथपाल

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

18. रट्ठपाल

राजाओं के योग्य एक दुर्लभ हाथी,427 रथ-डंडे जैसे दांतों वाला, मेरे द्वारा विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ, धन्य पद्ममुत्तरा को दिया गया था। (1) (769)
इसमें सभी साज-सामान शामिल थे, 428 सफेद छतरी (और) एक महावत; इन सबका मूल्य लेकर मैंने एक मठ बनवाया। (2) (770)
मैंने वहाँ जो महल बनवाए थे, उनकी संख्या चौवन हजार थी; एक विशाल दान-पुण्य समारोह आयोजित करते हुए, मैंने उसे महान ऋषि को दे दिया। (3) (771)
महान ऋषि ने (तब मुझे) धन्यवाद दिया, स्वयं-एकत्व प्राप्त, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, (तब) उन्होंने सभी मुस्कुराते हुए लोगों को मृत्यु के बाद का मार्ग बताया। (4) (772)
तब बुद्ध, जिनका नाम कमल के नाम पर रखा गया है431 ने मेरे बारे में यह भविष्यवाणी की; भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए उन्होंने ये श्लोक (ज़ोर से) कहे: (5) (773)
"मैं इस व्यक्ति432 के कर्मफल बताऊंगा जिसने (यहाँ) चौवन हजार महलों का निर्माण किया; (आप सभी) मेरी बात सुनो: (6) (774)
उसके भव्य स्वर्गीय महल पर छज्जों वाली अठारह हजार झोपड़ियाँ बनेंगी; वे सभी सोने की बनी होंगी। (7) (775)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 427 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 428 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

429 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 430 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 431 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 432 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

वह पचास बार देवताओं के राजा के रूप में दिव्य शासन करेगा। और अट्ठावन बार वह कानून के पहिये को घुमाने वाला राजा होगा। (8) (776)

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (9) (777)

देवताओं के लोक से गिरकर, अपनी उत्तम जड़ों से प्रेरित होकर, वह हर बार भरपूर भोजन वाले एक समृद्ध कुल में पुनर्जन्म लेगा। (10) (778)

बाद में, अपने अच्छे मूल से प्रेरित होकर, वह संसार छोड़कर गुरु का अनुयायी होगा, जिसे रट्ठपाल के नाम से जाना जाएगा। (11) (779)

परिश्रम में लीन होकर, शांत होकर,433 पुनर्जन्म के आधारों से रहित होकर,434 सभी दोषों को भली-भांति जानकर, वह निर्वाण प्राप्त करेगा, दोषरहित होकर।" (12) (780)

उठकर, संसार को त्यागकर, प्रचुर भोजन का त्याग करके, जैसे किसी के लिए भिक्षा भोजन कफ के समान हो, मुझे किसी भी भोजन में कोई रुचि नहीं है। (13) (781)

बोझ उठाने के मेरे प्रयास ने मुझे आसक्तियों से मुक्ति दिलाई। (अब) मैं बुद्ध के युग में अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ। (14) (782)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) (783)

इस प्रकार पूज्य रट्ठपाल थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

रट्ठपाल थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

433 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल) 434 शाब्दिक अर्थ, "गया" 435 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ संकालेसी पढ़ना

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

18. थेरा रात्थपाल की जीवनी पर टीका

पद्ममुत्तरस्सा भगवतो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा राष्टपाल की जीवनी का वर्णन करते हैं। इस पूज्य थेरा ने भी पूर्व जन्मों में भक्तिपूर्ण सेवा कर्म करके, जन्म-जन्म के चक्रों से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और पद्ममुत्तरा के प्रकट होने से पहले ही हंसवती नगर में एक अत्यंत धनी गृहस्थ परिवार में पुनर्जन्म लिया। वयस्क होने पर, अपने पिता के निधन के बाद उन्होंने गृहस्थ जीवन में कदम रखा। अपने वंश से चली आ रही अपार संपत्ति को देखकर, जिसे उनके रत्नों के भंडार के प्रभारी सेवक ने दिखाया था, उन्होंने सोचा: "मेरे पिता, दादा, परदादा आदि इस संपत्ति का इतना बड़ा हिस्सा अपने साथ नहीं ले जा सके; इसलिए यह उचित है कि मैं उन्हें अपने साथ ले जाऊं और जरूरतमंदों, जैसे दरिद्रों और यात्रियों आदि को विशाल दान दूं।" एक उच्च ज्ञान प्राप्त (अभिज्ञा) ऋषि के पास जाकर और उनके द्वारा दिव्य लोक का शासक बनने के लिए प्रेरित होकर, उन्होंने जीवन भर पुण्य कर्म किए और वहां से देहांत होने पर, उनका पुनर्जन्म दिव्य लोक में हुआ, जहां उन्होंने अपने जीवनकाल में स्वर्ग के आनंद का अनुभव किया और वहां से देहांत होने पर, मानव जगत में विघटित राज्य का पुनर्निर्माण करने में सक्षम एक परिवार के इकलौते पुत्र के रूप में पुनर्जन्म लिया। उस समय, परम पूज्य पद्ममुतारा संसार में अवतरित हुए, धर्म के उत्कृष्ट चक्र का संचालन कर रहे थे और योग्य प्राणियों को निर्वाण नामक महान नगरी के

सुरक्षित गंतव्य तक पहुंचा रहे थे। तब उस कुल के पुत्र ने, उचित समय पर, बुद्धि की आयु प्राप्त कर ली और एक दिन भक्तों के साथ मठ में गए, जहाँ उन्होंने गुरु को धर्म का उपदेश देते हुए देखा, वे अत्यंत श्रद्धावान हो गए और श्रोताओं के बीचोंबीच बैठ गए।

उस अवसर पर, गुरु ने संसार त्यागकर धर्मपरायण भिक्षु बनने वाले भिक्षुओं में एक भिक्षु को सर्वोच्च स्थान दिया। यह देखकर वह भिक्षु अत्यंत प्रसन्न हुआ और सात दिनों तक लाखों भिक्षुओं से घिरे रहकर परम पूज्य बुद्ध को विशाल दान अर्पित किया और उसी पद की कामना की। गुरु ने उसकी सिद्धि को निरंतर देखकर भविष्यवाणी की: "यह भिक्षु निकट भविष्य में आत्मज्ञानी बुद्ध गौतम के युग में धर्मपरायण भिक्षुओं का प्रमुख बनेगा।" गुरु और भिक्षुओं के समूह को प्रणाम करने के बाद वह अपने आसन से उठा और प्रस्थान किया। अपने जीवनकाल में पुण्य कर्म करते हुए, वे वहाँ से चले गए और जन्म-जन्म के चक्रों में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण करते रहे। 92 युग (कप्पा) पूर्व, जब महाराज फुस्सा के समय, राजा के तीन पुत्र, जो गुरु के भिन्न माता से जन्मे तीन भाई थे, गुरु की सेवा कर रहे थे और पुण्य कर्म कर रहे थे, तब उन्होंने उनके साथी (या सहयोगी) के रूप में कार्यभार संभाला। इस प्रकार जन्म-जन्म के चक्रों में उत्तम जन्मों में भी अत्यधिक पुण्य अर्जित करने के बाद, उनका पुनर्जन्म कुरु राज्य के थुल्लकोष्ठिका गाँव में, धनाढक रत्थपाल के घर में, इस बुद्ध के प्रकट होने के समय हुआ। उनका नाम रत्थपाल था, जो उनके वंश के कारण था, क्योंकि उनका जन्म एक विघटित राज्य का पुनर्निर्माण करने में सक्षम परिवार में हुआ था। एक बड़े परिवार के साथ पले-बढ़े, उन्होंने उचित समय पर यौवन प्राप्त किया, अपने माता-पिता द्वारा एक उपयुक्त पत्नी से विधिवत विवाह किया, उच्च प्रतिष्ठा पर विधिवत स्थापित होने में सफल रहे और ऐसी समृद्धि का आनंद लिया जो स्वर्गीय आनंद के समान थी।

फिर, परम पूज्य भगवान अपने क्षेत्र का भ्रमण करते हुए अंततः थुल्लकोष्ठिका पहुँचे। यह सुनकर परिवार के पुत्र रत्थपाल ने गुरु के पास जाकर उनसे धर्म की शिक्षाएँ सुनीं, उनके समक्ष धर्मपरायणता प्राप्त की, भिक्षु बनने की इच्छा की, सात दिनों तक भोजन त्याग कर उपवास रखा, बड़ी कठिनाई से अपने माता-पिता की स्वीकृति प्राप्त की, गुरु के पास जाकर भिक्षु बनने का अनुरोध किया, एक भिक्षु की उपस्थिति में गुरु के आदेशानुसार भिक्षु बने, विपश्यना का ज्ञान प्राप्त किया, सजग मन से अच्छे कर्म किए और अर्हतत्व प्राप्त किया। अरहतत्व प्राप्त करने के बाद, उन्होंने गुरु से अनुमति ली, अपने माता-पिता से मिलने थुल्कोष्ठिका गए, भिक्षा मांगने के लिए घर-घर भटकते रहे (सपदाना), वहाँ अपने पिता के निवास पर बासी उबले हुए चावल प्राप्त किए, उन्हें अमृत के समान खाया (अमता), अपने पिता द्वारा आमंत्रित किए जाने पर अगले दिन भोजन के लिए सहमत हुए, दूसरे दिन अपने पिता के घर पर भिक्षा ग्रहण की, तभी उनके पूर्व हरम की सजी-धजी युवतियाँ उनके पास आईं और उनसे इस प्रकार कहा: "हे युवा स्वामी! वे अप्सराएँ कैसी हैं, जिनके कारण आप यह पवित्र और श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करते हैं?" इत्यादि। जब उन्होंने उन्हें लुभाने का प्रयास शुरू किया, तो उन्होंने उनके इरादे को विफल कर दिया और अनित्यता इत्यादि से संबंधित इन श्लोकों का उच्चारण किया:-

"मन की इस छवि को देखो, रोग और अनेक इरादों से ग्रस्त, स्वयं ही सहारा लिए हुए इस बीमार शरीर को देखो, जहाँ स्थायित्व का अभाव है। रत्नों और बालियों से सजे इस भौतिक रूप को देखो; हड्डियों और चमड़ी से बना यह रूप वस्त्रों के साथ सुंदर प्रतीत होता है। लाख से लाल हुए पैर, सौंदर्य प्रसाधन से सना चेहरा, भ्रमित मूर्खों के लिए उपयुक्त हैं, निर्वाण के पराक्रम की खोज करने वाले के लिए नहीं। आठ चोटियों से गुंथे बाल, नेत्र-रंजक (या नेत्र-रंग) से सने नेत्र, भ्रमित मूर्खों के लिए उपयुक्त हैं, निर्वाण के पराक्रम की खोज करने वाले के लिए नहीं। काजल के समान नए मन और सड़े हुए शरीर, भ्रमित मूर्खों के लिए उपयुक्त हैं, निर्वाण के पराक्रम की खोज करने वाले के लिए नहीं। शिकारी ने हिरण के लिए जाल बिछाया; जबकि हिरण-शिकारी चिल्ला रहा है, चलो हम अपना भोजन करके चलें। शिकारी का फंदा, वह जाल, जो हिरणों का विनाश करता है, काट दिया गया है; चलो हम अपना भोजन करके चले जाएं जबकि हिरण शिकारी शोक में डूबा हुआ है।

इन श्लोकों का उच्चारण करने के बाद, वह आकाश में उड़ गया और राजा कोरब्या के हिरणों और मृगों के बगीचे में स्थित शुभ पत्थर की शिला पर बैठ गया। कहा जाता है कि थेरा के पिता ने सात द्वारों (या फाटकों) पर कुंडी (या क्रॉस-बार) लगवाईं और पहलवानों (या कुलियों, मल्ला) को निर्देश दिया: "थेरा को जाने का मौका मत दो; पीले वस्त्र उतार दो और उसे सफेद वस्त्र पहनने दो।" यही कारण था कि थेरा आकाश में उड़ गया। तब राजा कोरब्य को जब यह पता चला कि थेरा वहाँ विराजमान हैं, तो वे उनके पास गए, उनसे प्रसन्नता भरे स्मरण के शब्दों में वार्तालाप किया और पूछा, "हे राष्टपाल! यहाँ एक व्यक्ति रोग, वृद्धावस्था, धन और सगे-संबंधियों की हानि के कारण हानि (या विनाश) की स्थिति में पहुँचने के बाद भिक्षु बनता है; परन्तु आपको तो कभी किसी प्रकार की हानि (या विनाश) नहीं हुई; आपने भिक्षु क्यों धारण किया?" तब थेरा ने राजा को अपने चार संक्षिप्त सत्यों (उद्देश धम्म) का उपदेश दिया, जिनका ज्ञान उन्हें स्वयं था: "संसार का अंत निकट है, यह स्थिर नहीं है; संसार असुरक्षित है, इसका कोई रक्षक नहीं है; संसार में कोई शरण नहीं है, मनुष्य को सब कुछ त्यागकर ही जाना होगा; संसार अपूर्ण, असंतुष्ट और भोग-विलास में जकड़ा हुआ है।" अपने उपदेश के अनुरूप गीत गाते हुए थेरा ने ये श्लोक कहे:

"मैं संसार में देखता हूँ कि धनवान लोग भ्रम में पड़कर अपनी कमाई का धन दान में नहीं देते। लालच में आकर वे धन का संचय करते हैं। वे इंद्रिय सुखों की और भी अधिक लालसा रखते हैं। युद्धों में विजय प्राप्त करने और महासागरों से घिरी पृथ्वी पर शासन करने वाला राजा भी महासागर के इस किनारे से संतुष्ट नहीं होता; वह महासागर के दूसरे किनारे की भी कामना करता है।"

"राजा और अन्य अनेक पुरुष, तृष्णा (तन्हा) का त्याग किए बिना मृत्यु की ओर अग्रसर होते हैं। संख्या में कम होकर वे अपना शरीर त्याग देते हैं। वास्तव में, संसार में इंद्रिय सुखों से संतुष्टि (या तृप्ति) का कोई अस्तित्व नहीं है।"

"रिश्तेदार अपने बाल बिखेरते हैं और उस पर शोक मनाते हुए कहते हैं: 'अरे! अफसोस! सौभाग्य से हम मरे नहीं।' शव को कपड़ों में लपेटकर एक ढेर में इकट्ठा करने के बाद, वे उसे ले जाते हैं और फिर उसे जला देते हैं।"

"उसे तेज धार वाले औजारों से छेद कर जला दिया गया, उसके पास कोई धन-संपत्ति नहीं थी, केवल एक ही वस्त्र था। उसकी मृत्यु के बाद, उसके रिश्तेदार, मित्र या उसके साथी भी उसकी शरण में नहीं आए।"

उसके वारिस उसकी संपत्ति ले जाते हैं; वह प्राणी,
हालांकि, वह अपने कर्मों के अनुसार ही चलता है; कोई नहीं
उसकी मृत्यु के बाद उसकी जो भी संपत्ति बचेगी;
न तो उसका धन और राज्य और न ही उसका
पुत्र और पत्नी।
लंबी आयु, किसी को इसके माध्यम से प्राप्त नहीं होती
धन; वे बुढ़ापे को दूर नहीं कर सकते।
अपनी संपत्ति के माध्यम से भी; बुद्धिमान लोग कहते हैं
यह सच है कि जीवन छोटा है, कभी नहीं।
स्थायी, उतार-चढ़ाव के अधीन। समृद्धि
और विपत्तियाँ स्पर्श के माध्यम से संपर्क में आ सकती हैं;
मूर्ख और बुद्धिमान दोनों ही समान रूप से प्रभावित होते हैं। वास्तव में, मूर्ख तो ऐसे लेट जाता है मानो मरा हुआ हो।
मूर्खता से; लेकिन बुद्धिमान लोग, जब उनमें व्याप्त हो जाते हैं
स्पर्श करने पर यह हिलता (या कांपता) नहीं है।
इसलिए, वास्तव में, ज्ञान (या बुद्धिमत्ता) भी
ज्ञान धन से श्रेष्ठ है, यह ज्ञान से ही प्राप्त होता है।
यहां उपलब्धि हासिल करता है।
वास्तव में, ज्ञान में अपूर्णता (या ज्ञान की कमी)
लघु और वृहद जन्मों में तथा भ्रम के कारण व्यक्ति बुरे कर्म करता है।
बार-बार पुनर्जन्म के चक्र में प्रवेश करने के बाद
(संसार), क्रमिक रूप से, एक व्यक्ति की ओर जाता है
गर्भ के साथ-साथ दूसरे लोक में भी; वह व्यक्ति जिसके पास है
उस बारे में कम जानकारी होने के कारण, क्योंकि वह आसानी से विश्वास कर लेता था।
यह गर्भ और परलोक दोनों के करीब पहुंचता है।
ठीक वैसे ही जैसे कोई चोर पकड़ा गया हो
घर में सेंधमारी के कारण हुई तोड़फोड़ का खुलासा
स्वयं, बुरा कर्म करने वाले को ही कष्ट देता है।
वह स्वयं, उसी प्रकार, बुराई भी।
किसी व्यक्ति द्वारा किए गए कृत्य के माध्यम से उत्पीड़न किया जाता है।
स्वयं, मृत्यु के बाद का प्राणी, परलोक में।
बिल्कुल! इंद्रिय सुख विविध प्रकार के होते हैं।
किसी के लिए मधुर और मनमोहक (या आनंददायक)
हृदय (या मन); वे मन को उत्तेजित करते हैं

विभिन्न प्रकार की सुंदरताओं को देखकर; कामुक सुखों के दुष्परिणामों को देखकर,
हे राजाओं! इसी कारण मैंने भिक्षु का पद ग्रहण किया है।
लड़के पेड़ों से फलों की तरह गिरते हैं;
युवा और वृद्ध सभी अपने जीवन के विघटन का सामना करते हैं।
शरीर। हे राजा! यह देखकर भी, मैं
भिक्षु बन गए हैं; यहाँ तक कि पत्तों से रहित भिक्षुत्व भी।
बेहतर है। पवित्र आस्था के साथ मैं बन गया हूँ।
भिक्षु; धर्मोपदेश में निपुण
विजेता का; मेरा भिक्षु जीवन निष्फल नहीं है;
मैं बिना कर्ज लिए अपना भोजन करता हूँ।
इंद्रिय सुखों का अवलोकन करने के बाद
जलने और सोने के दृष्टिकोण से
हथियार की नोक पर, मुझे पीड़ादायक कष्ट का सामना करना पड़ा।
गर्भ से बाहर आने और बड़े खतरे के बारे में
नरकों में।
इस हानि को जानने के बाद, मैं
तब मुझे पश्चाताप हुआ; कि मैंने उस समय
शांति में प्रवेश किया और प्राप्त किया
मुझे आसव (कैंकर) की थकावट हो गई है।
मेरे स्वामी मेरी सेवा में हैं, मेरे पास
मैंने बुद्ध के आदेश का पालन किया; मेरा भारी बोझ
बिछाया गया है; जोड़ने वाला प्रकार
जीवन पूरी तरह से विच्छेदित हो गया था।
मुझे भिक्षु बनने से जो भी लाभ हुआ हो, वह यही है।
घर से बाहर आने के बाद
बेघरों को जीवन देना, वह लाभ
तदनुसार, यह उपलब्धि प्राप्त कर ली गई है, अर्थात्:
सभी बंधनों का उन्मूलन।"

इस प्रकार राजा कोरब्या को सत्य (धम्म) का उपदेश देने के बाद, थेरा अपने गुरु के समक्ष लौट आए। इसके बाद, गुरु ने भी कुलीनों (आर्यों) की सभा के बीच में बैठकर उस थेरा को सच्चे मन से भिक्षु बनने वाले लोगों में सर्वोच्च स्थान दिया।

97-8. इस प्रकार प्रमुख पद प्राप्त करके, उस थेरा ने अपने पूर्व कर्मों को याद करते हुए प्रसन्नतापूर्वक पद्ममुत्तरस्सा भगवतो से प्रारंभ होने वाला एक श्लोक कहा, जिससे उनके पूर्व कर्मों का प्रकटीकरण हुआ। वरनागो मया दिन्नो, उत्तम हाथी मैंने अर्पित किया है, ईसादन्तो, धुरी के समान दांत वाला, सेतच्छत्तोपरोभितो, सफेद छत्र चमकता हुआ, सकोप्पनो, उसके आवरण सहित, संघामम्, पुरोहितों का आश्रम, अकारयिम् (मैंने बनाया) उस तेजस्वी के व्यक्तित्व पर श्रद्धा से प्रसन्न होकर, मैंने उन्हें अपना सबसे उत्तम और श्रेष्ठ हाथी अर्पित किया, जिसके दांत रथ की धुरी के समान थे, जो आकार में विशाल, भार ढोने वाला, या राजसी सम्राट के योग्य था, जिसकी पीठ पर एक सफेद छत्र था जो पशु को सुंदर और तेजस्वी बनाता था; और फिर अगर मुझसे पूछा जाए कि उस उत्कृष्ट हाथी की अन्य विशिष्ट विशेषता क्या थी, जो अपने आवरण और अलंकृत साज-सज्जा के साथ था; तो मैंने भिक्षुओं के पुरोहितों के लिए एक मठ का निर्माण करवाया, जिसका नेतृत्व बुद्ध ने किया।

99. चतुपञ्ञासहस्सनि (चौवन हजार), मैंने उस मठ के भीतर चौवन हजार आलीशान इमारतें बनवाईं; यही इसका अर्थ है। महोगदानं करित्वाना (भयंकर बाढ़ के समान दान करके), सभी धार्मिक आवश्यकताओं को समाहित करते हुए, भयंकर बाढ़ के समान विशाल दान अर्पित किया; महेसिनो (महान ऋषि को) मैंने ऋषि को दान के रूप में सौंप दिया।

100. अनुमोदि महावीरो (महान वीर ने मुझे बधाई दी) महान वीर ने अथक परिश्रम किया, जिसका अनुमान चार असंख्य कालों और एक लाख युगों (कप्पा) में निरंतर प्रयास के रूप में लगाया जाता है; स्वयंभू (आत्मनिर्भर) होकर स्वयं ही उत्पन्न हुए और सर्वज्ञ ज्ञान प्राप्त करने वाले सर्वश्रेष्ठ प्रमुख व्यक्ति, अनुमोदि (बधाई देते हुए) ने मेरे मठ के दान पर धन्यवाद दिया; सब्बेजाने बासयन्तो (सभी को प्रसन्न करते हुए) ने समस्त, अनंत, असीम दिव्य और मानव प्राणियों को प्रसन्न किया; कुरुमानो (संतोष प्रदान करते हुए) ने संतोष दिया; देसेसि (स्पष्ट किया) ने चार आर्य सत्यों (धम्म) के उपदेश को स्पष्ट किया, उजागर किया, विश्लेषण किया और प्रकट किया; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

101. तम मे वियकासि (उन्होंने मुझे यह प्रकट किया) उन्होंने मेरे द्वारा किए गए उस पुण्य कर्म की शक्ति को स्पष्ट रूप से प्रकट किया; जलजुत्तमनामको (जलजुत्तम नाम से) जल में उत्पन्न हुआ, जलजनित है; जलज (कमल का फूल) पद्म है; पद्ममुत्तरा नाम से; यही अर्थ है। इसका एक और पाठ इस प्रकार भी है: "जलनुत्तम नायको"। वे अपने प्रकाश से चमकते हैं; इस प्रकार, जलना (चमकते चंद्रमा, सूर्य, देव और ब्रह्मा) उन प्रकाशकों में श्रेष्ठ हैं; इस प्रकार, श्रेष्ठ प्रकाशक, जलनुत्तमो (सभी जीवों के श्रेष्ठ नेता); इस प्रकार, नेता (नायक) या उन्होंने संचय, पुण्य या आवश्यक योग्यता रखने वाले जीवों का नेतृत्व किया और उन्हें निर्वाण तक पहुँचाया; इस प्रकार, वे नेता (नायक) हैं; वे प्रकाशकों में श्रेष्ठ होने के साथ-साथ नेता भी हैं। अतः, सर्वश्रेष्ठ गुरु जलानुत्तमनायको ने भिक्षुओं के बीच बैठकर इन श्लोकों का उच्चारण किया और उपदेश दिया; यही अर्थ है। शेष का अर्थ स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा रात्त्वपाला का
समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 19. थेरा सोपाका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

19. सोपाका

जब मैं एक अत्यंत उत्तम, शानदार पर्वत पर एक आश्रम की सफाई कर रहा था, तब सिद्धार्थ नामक भगवान एक बार मेरे समक्ष आए। आए हुए बुद्ध को देखकर मैंने जगत के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ व्यक्ति के लिए बुनी हुई (घास की) चटाई बिछाई और उन्हें वह पुष्पमय आसन दिया। (2) (785)
पुष्पों के उस आसन पर बैठे हुए विश्व-नेता सिद्धार्थ ने मेरी स्थिति को समझते हुए अनित्यता के बारे में बात की। (3) (786)
"वास्तव में सब कुछ परिवर्तनशील है; जो चीजें उत्पन्न होती हैं और (फिर) नष्ट हो जाती हैं, वे जन्म लेती हैं (और फिर) मर जाती हैं; उनसे मुक्ति पाना सुखद है।" (4) (787)
यह कहते हुए सर्वज्ञ, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, हीरो439 आकाश में हंस-राजा की तरह उड़ गए। (5) (788)
अपने स्वयं के सिद्धांतों को त्यागकर मैंने (तब) अनित्यता को समझा। (केवल) एक (दिन) ध्यान करते हुए, (ठीक उसी समय) मेरा निधन हो गया। (6) (789)

मेरी स्वस्थ जड़ों से प्रेरित होकर मैंने (तब) दोहरे आनंद का अनुभव किया।440 जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ तो मेरा जन्म कुत्ते पकाने वालों के बीच हुआ।441 (7) (790)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 436 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 437 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

438 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 439 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 440 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित 441 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

घर से निकलने के बाद मैं बेघर हो गया। सात वर्षों तक जटाधारी तपस्वी बनकर मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (8) (791)

ऊर्जावान, 442 आत्म-त्यागी, नैतिक नियमों के प्रति सावधान, महान हाथी को प्रसन्न करके मुझे उच्च दीक्षा प्राप्त हुई। (9) (792)

उस समय मैंने जो (अच्छा) कर्म किया था, उसके बाद से चौरानवे युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला; यह एक पुष्प-उपहार का फल है। (10 (793)

उस बोध को प्राप्त करने के बाद चौरानवे युग में, उस इंद्रिय पर ध्यान करते हुए मेरे सभी दोष नष्ट हो गए। (11) (794)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) (795)

इस प्रकार पूज्य सोपाका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आदरणीय सोपाका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

19. थेरा सोपाका की जीवनी पर टीका।

पब्भारम शोधयन्तस्स से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य सोपाक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म करते हुए, उन्होंने इस और उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित किए और तेजस्वी सिद्धार्थ के समय में एक जमींदार के पुत्र के रूप में पुनर्जन्म लिया। एक दिन, उनकी मुलाकात गुरु से हुई और उन्होंने उन्हें अनेक फल भेंट किए। उन पर दया करते हुए, तेजस्वी ने उन्हें ग्रहण किया। वे गुरु और भिक्षुओं के प्रति अत्यंत प्रसन्न और श्रद्धावान हुए, उन्होंने लॉटरी द्वारा भोजन-आहुति का प्रबंध किया और जीवन भर तीन भिक्षुओं को भिक्षुओं के प्रति समर्पण के रूप में पुख-चावल भेंट किए। इन पुण्य कर्मों के कारण, उन्होंने देवताओं और मनुष्यों के बीच समृद्धि का आनंद लिया। कभी-कभार, और एक बार, उनका पुनर्जन्म एक मनुष्य के गर्भ में हुआ, और उन्होंने एक मौन बुद्ध को दूध का भोजन अर्पित किया।

इस प्रकार, इस और उस जन्म में पुण्य कर्म करने के कारण, उन्होंने जन्म-यात्रा के केवल अच्छे मार्ग (सुगति) पर ही अपना जीवन व्यतीत किया और अपने पिछले कर्म के फलस्वरूप, इस बुद्ध के प्रकट होने के समय, सावत्थी में एक दरिद्र स्त्री के गर्भ में गर्भ धारण किया। उस स्त्री ने उन्हें दस माह तक अपने गर्भ में धारण किया और जब गर्भावस्था पूर्ण हो गई, तो नियत समय पर जन्म न दे पाने के कारण वे लंबे समय तक कोमा (या बेहोशी) की अवस्था में मृत मानकर लेट गईं। उनके रिश्तेदारों को लगा कि वे मर गई हैं, इसलिए वे उन्हें श्मशान ले गए, उन्हें चिता पर रखा, लेकिन अग्नि प्रज्वलित किए बिना ही चले गए क्योंकि दैवीय शक्ति के कारण वे प्रसव के लक्षणों के साथ उठ खड़ी हुईं। दैवीय शक्ति के कारण, क्योंकि यह उनका अंतिम जन्म था, बच्चा अपनी माता के गर्भ से स्वस्थ (या रोगमुक्त) रूप में बाहर आया। हालांकि, माता की मृत्यु हो गई। दिव्य प्राणी मनुष्य के वेश में बालक के पास आए, उसे अपने साथ ले गए, उसे कब्रिस्तान के रखवाले के घर में रखा और कुछ दिनों तक उसका उचित पोषण किया। इसके बाद, कब्रिस्तान के रखवाले ने

बालक को अपना लिया और उसे बड़ा होने दिया। इस प्रकार बड़े होकर वह कब्रिस्तान के रखवाले के पुत्र सुप्पिया के साथ खेलने लगा। कब्रिस्तान में जन्म और पालन-पोषण होने के कारण वह कब्रिस्तान के बालक सोपाका के नाम से जाना जाने लगा।

फिर एक दिन, भगवान बुद्ध ने सात वर्षीय उस बालक को देखा, जो सुबह-सुबह अपने उन रिश्तेदारों की तलाश में श्मशान घाट जा रहा था जिन्हें संसार से मुक्ति दिलाई जा सके। उस बालक को ज्ञान का जाल तब लगा जब वह अपने ज्ञान का प्रसार कर रहा था। पूर्व कारणों से प्रेरित होकर, बालक अत्यंत भक्तिमय हो गया, गुरु के पास गया और उन्हें प्रणाम किया। गुरु ने उसे धर्म का उपदेश दिया। उसने धर्म को ध्यान से सुना, भिक्षु बनने की इच्छा व्यक्त की और जब उससे पूछा गया कि क्या उसके पिता इस इच्छा को स्वीकार करते हैं, तो वह अपने पिता को गुरु के समक्ष ले आया। उसके पिता ने गुरु को प्रणाम किया और अपनी सहमति देते हुए कहा, "आदरणीय गुरुदेव! कृपया इस बालक को भिक्षु बना दीजिए।" उसे भिक्षु बनाकर, भगवान बुद्ध ने उसे प्रेम और करुणा के विकास में लगा दिया। उन्होंने प्रेम और करुणा के मानसिक अभ्यास (कम्मत्थान) को अपना मार्ग बनाया, श्मशान में निवास किया, प्रेम और करुणा के ध्यान को अपना आधार बनाया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की और कुछ ही समय बाद अरहतत्व की कल्पना भी कर ली। अरहत बनने के बाद, उन्होंने "यथापि एकपुत्तस्मिम्" से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि श्मशान की तपस्या करने वाले अन्य भिक्षुओं के प्रति प्रेम भाव विकसित करने की उचित प्रक्रिया को दर्शाया जा सके। उन्होंने कहा: "जिस प्रकार माता-पिता पुण्यवान होते हैं और अपने इकलौते प्रेममय पुत्र का कल्याण अवश्य चाहते हैं, उसी प्रकार आपको भी पूर्व दिशा आदि की विविधताओं से लेकर सभी दिशाओं में, या सभी इंद्रियजन्य प्राणियों आदि से लेकर सभी जीवों में, या शिशु आदि से लेकर सभी प्राणियों में, यहाँ तक कि नग्न शरीर वाले प्रत्येक प्राणी में, सभी का कल्याण अवश्य चाहना चाहिए, बिना किसी सीमा भेद किए जैसे 'मित्र, तटस्थ और शत्रु', बल्कि सभी स्थानों पर प्रेम भाव का एक ही सार विकसित करना चाहिए, सीमा के निर्धारण को समाप्त करते हुए।" इस श्लोक को बोलने के बाद, उन्होंने इस प्रकार सलाह दी:- "यदि आप, जो आदरणीय हैं, इस प्रकार प्रेम और दयालुता विकसित करेंगे, तो आप निश्चित रूप से उन ग्यारह प्रकार के परिणामी लाभों के भागीदार (या लाभार्थी) बनेंगे जिनका उल्लेख परमेश्वर ने किया था।"

112. इस प्रकार सिद्धि प्राप्त करने और फल प्राप्ति के बाद, उन्होंने अपने द्वारा किए गए पुण्य कर्मों पर चिंतन किया, मन में प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्मों को दर्शाने के लिए 'पब्भाराम शोधयन्तस्स' से प्रारंभ होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया। वहाँ, पब्भाराम (ढलान), एक पथरीली (या चट्टानी) पहाड़ी का एकांत स्थान है। उन्होंने वहाँ भिक्षु के लिए उपयुक्त ईंट की दीवार बनवाई, एक द्वार-पट्टी लगाई और उसे भिक्षुओं को उनके निवास के लिए अर्पित कर दिया: इस प्रकार, यह पब्भारा (ढलान) है। जब मैं उस ढलान की सफाई कर रहा था, तब सिद्धार्थ नाम के तेजस्वी व्यक्ति आगाच्चि मेरे समक्ष आए।

113. बुद्धं उपगतं दिस्वा (निकट आए बुद्ध को देखकर) बुद्ध को इस प्रकार मेरे समक्ष आते देखकर, तदिनो (ऐसे व्यक्ति का), जो ऐसे-ऐसे गुणों से परिपूर्ण थे, क्योंकि वे वांछनीय और अवांछनीय के बीच अविचलित थे; लोकजेष्ठस (संसार में सबसे बड़े का) बुद्ध का; संथारं (फैला हुआ) घास, पत्तों आदि से फैला हुआ, लकड़ी का फैला हुआ; पन्नापेत्वा (तैयार करवाया) पूरा करवाया; पुप्पासनम् (फूलों का आसन) मैंने फूलों से बना आसन अर्पित किया।

114. पुप्पासन निसीदित्वा (पुष्प-आसन पर बैठकर) जगत के नेता, प्रतापी सिद्धार्थ उस तैयार पुष्प-आसन पर बैठ गए; ममंच गतिमञ्ञाय (अपने भाग्य को भी जानकर) भविष्य में अपनी यात्रा के मार्ग को जानते और जानते हुए, उस स्थान को जहाँ मैं उत्पन्न होऊंगा; अनिच्चतम (अस्थिरता) अस्थिर होने की स्थिति, उदाहारी (पालित-पोषण किया) बोले।

115. अनिच्चा वत संखारा (निःसंदेह अनित्य) निश्चय ही, संखारा (निषेध वस्तुएँ), कारणों (पच्चय) के साथ मिलकर, कर्मों के फलस्वरूप, सभी कारणों (सपच्चय-धम्म) के साथ कर्म बन जाते हैं, क्योंकि उनका अर्थ अनुपस्थिति है, अनित्य हैं; उप्पादवयधम्मिनो (उत्पन्न होने और लुप्त होने के अधीन) उत्पन्न होकर उनका स्वभाव विनाशी है; उप्पजित्वा (उत्पन्न होकर) ये सषित घटनाएँ (संखारा) स्वयं को प्रकट करके, निरुज्जन्ति (समाप्त) हो जाती हैं; यही अर्थ है। तेसम वुपसमो सुखो (उनका शांत होना आनंद है) विशेष रूप से उन संखारों को शांत करना सुख है; यहाँ तक कि स्वयं निर्वाण, जो उन्हें शांत करता है, निश्चय ही सुख है; यही अर्थ है।

116. इदमवत्वान सब्बाञ्ञु (सर्वज्ञ बुद्ध ने यह कहा) हे तेजस्वी, समस्त सत्यों (धम्म) के ज्ञाता, जगत के सबसे बड़े, मनुष्यों में श्रेष्ठ, बैल-पुरुष, ***(पृष्ठ 50) वत्वान (कहकर) सत्य (धम्म) के इस उपदेश का प्रचार करते हुए, अनित्यता से उचित रूप से जुड़ा हुआ, अम्बारे (आकाश में) आकाश के समान, नभम (वायुमंडल) आकाश में ऊपर चला गया; इस प्रकार, संबंध है।

117. सकाम दिष्टिम, अपने स्वयं के विचारों को त्यागकर, जहित्वाना (त्याग कर), अपने द्वारा प्राप्त धैर्यपूर्ण आनंदमय इरादे को त्यागकर, भावयानिच्चसञ्ञा'हम (मैं अनित्यता की अनुभूति के विकास के साथ एक हो जाता हूँ)। मैंने अनित्यता में अनित्यता की अनुभूति को विकसित किया, बढ़ाया और स्वयं को उसके प्रति सचेत किया; तत्त कालम् कातो अहम् (मैं वहाँ मर गया)। उन तीन जन्मों में, उस जन्म (या अस्तित्व) से, मैं मर गया और चला गया।

118. द्वे सम्पत्ति अनुभव्वा (दो प्रकार की समृद्धि का अनुभव करते हुए) मानवीय समृद्धि और दिव्य आनंद के रूप में गिने जाने वाले दो प्रकार के आनंद का अनुभव करते हुए; सुक्कमुलेन कोदितो (प्रकाश आधार द्वारा प्रेरित) पूर्व पुण्य कर्मों (या उन पुण्य कर्मों जो आधार बन गए थे) के मूल द्वारा प्रेरित और प्रज्वलित होकर; पच्चिमे भावे सम्पत्ति (जब अंतिम जन्म अच्छी तरह से हुआ) जब अस्तित्व का सर्वांगीण अंत अच्छी तरह से हुआ; सपाकयनुउपागमि (मैं अपने ही फलस्वरूप गर्भ की ओर बढ़ा) मैं अपने द्वारा परिपक्व गर्भ, अपने द्वारा पकाए गए भोजन की ओर गया; मैं उस कब्र खोदने वाले (चांडाल) के परिवार में पुनर्जन्म लिया जो मेरे द्वारा पकाए गए भोजन का निर्माण करता था; जिसके परिवार का भोजन दूसरों को नहीं खाना चाहिए; इस प्रकार, यही अर्थ है। दूसरे शब्दों में, सा को कुत्ता कहा गया है; मेरा जन्म एक कब्र खोदने वाले (काण्डाला) के परिवार में हुआ था, जिसे कुत्तों द्वारा चीरकर (या खोदकर) निकाला गया भोजन खाना पड़ता था; यही इसका अर्थ है। बाकी का अर्थ तो स्पष्ट है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा सोपाका का,
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 20. थेरा सुमंगला

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

20. सुमंगला

बलिदान करने की इच्छा से मैंने (उस समय) भोजन तैयार करवाया (और) वहाँ ब्राह्मणों का आदर करते हुए एक बड़े मालक443 में खड़ा हुआ। (1) (796)
और फिर मैंने सम्बुद्ध, पियादस्सी, महान ख्यातिप्राप्त, समस्त लोकों के स्वामी, स्वयं स्वरूप, तटस्थ स्वरूप को देखा। (2) (797)

---

442 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल) 443 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 444 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

अपने अनुयायियों के सामने खड़े होकर, वह धन्य पुरुष, वास्तव में चमकते हुए, सूर्य के रथ में प्रवेश करते समय उसी प्रकार प्रज्वलित हो रहे थे। (3) (798)
अपने हाथों को जोड़कर (तब) (और) अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए, मैंने मन से (उन्हें) आमंत्रित किया: "महान ऋषि अब मेरे पास आएं।" (4) (799)
मेरे मन की बात जान कर, जगत में अद्वितीय गुरु, हजार अरहंतों के साथ मेरे द्वार पर आ आए। (5) (800)

"हे श्रेष्ठ पुरुष, आपकी जय हो!445 हे परम पुरुष, आपकी जय हो! कृपया मेरे महल में प्रवेश करके सिंह-सिंहासन पर विराजमान हों।" (6) (801)

पालतू व्यक्ति, अपने पालतू दल के साथ, पार कर गया,446 सर्वश्रेष्ठ नाविक447 मेरे महल में चढ़कर उस शानदार आसन पर बैठ गया। (7) (802)

जो खाद्य पदार्थ भेंट किए गए थे और जो मेरे घर में बचे थे, उन्हें मैंने (अच्छी भावना से) अपने हाथों से बुद्ध को भेंट कर दिया। (8) (803)

प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से, आनंदित होकर, हाथ जोड़कर, मैंने श्रेष्ठ बुद्धों की पूजा की: "हे! बुद्ध की (महान) प्रतिष्ठा! (9) (804)

इन रईसों में से कई अरहंत भोजन कर रहे हैं।449 यही आपकी महान शक्ति है; मैं भी आपकी शरण में जाता हूँ। (10) (805)

---

445 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 446 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 447 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 448 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ 449 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, स्पष्ट मक्खन (गी तेल)

विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के सांड, धन्य पियादस्सी भिक्षुओं की सभा में बैठ गए (और) इन छंदों का उच्चारण (ज़ोर से) किया: (11) (806)

जिसने सभा को भोजन कराया (जो) धर्मी (और) चौकस है और सम्बुद्ध, तथा-त्यागी, (आप सभी) मेरे शब्दों को सुनो: (12) (807)

सत्ताईस बार (एक देव-राजा) वह दैवीय शासन करेगा। अपने कर्मों में प्रसन्न होकर वह देवताओं के लोक में आनंदित होगा। (13) (808)

और अठारह बार वह ऐसा राजा होगा जो (कानून का) पहिया घुमाएगा। वह पृथ्वी पर निवास करेगा और पाँच सौ सांसारिक शासन करेगा।" (14) (809)

जंगल में, बाघों से भरे जंगल में घुसकर, मैंने बहुत मेहनत करके (सभी) अशुद्धियों को नष्ट कर दिया। (15) (810)

उस समय जब मैंने उसे वह उपहार दिया था, तब से अठारह सौ युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा; यही भोजन देने का फल है। (16) (811)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (17) (812)

इस प्रकार पूज्य सुमंगला थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुमंगला थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

सिहासनी और एकत्थंभी, नंदा और चुल्ला-पंथक, पिलिंडा और राहुल, वंगता, रट्ठपालक, शोपाक और मंगल, दस दूसरे अध्याय में हैं और यहाँ एक सौ सैंतीस श्लोक दिए गए हैं

सिहासनी अध्याय, द्वितीय।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

20. थेरा सुमांगला की जीवनी पर टिप्पणी।

आहुतिं यित्तुकामो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा सुमंगला की जीवनी का वर्णन करते हैं। इस पूज्य थेरा ने पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, पुण्य कर्म संचित किए, जिससे उन्हें जन्म-जन्म के चक्र से मुक्ति मिली। वे प्रतापी पियादस्सी के समय वृक्ष देवता के रूप में पुनर्जन्म लिए। एक दिन, स्नान करने के बाद वे गुरु से मिले, जो एक वस्त्र पहने खड़े थे। प्रसन्न होकर उन्होंने ताली बजाई। उस

पुण्य कर्म के कारण, उन्होंने अपने जन्म-जन्मों में स्वर्गवासियों और मनुष्यों के बीच विचरण किया और सावत्थी के निकट एक गाँव में, बुद्ध के प्रकट होने के समय, एक गरीब परिवार में पुनर्जन्म लिया। उनका नाम सुमंगला था। जब वह वयस्क हुआ, तो उसने एक हल और कुड्डा लेकर एक छोटे से खेत (खुज्जा) में हल चलाना शुरू किया और खेती करके अपनी आजीविका कमाने लगा। एक दिन, जब राजा पसेनदी कोसल द्वारा परम पूज्य भगवान और भिक्षुओं के लिए एक विशाल दान दिया जा रहा था, तो उसने दही से भरा एक बर्तन उठाया और दान देने के लिए सामग्री लेकर आ रहे लोगों की भीड़ में शामिल हो गया। उसने देखा कि वे लोग भिक्षुओं के प्रति श्रद्धापूर्वक अपना दान दे रहे हैं, तो उसने सोचा, "शाक्य वंश के भिक्षु उत्तम वस्त्र धारण करते हैं, अच्छा भोजन करते हैं, मठों में रहते हैं; यदि मैं भी भिक्षु बन जाऊं तो क्या होगा?" वह एक प्रमुख थेर के पास गया और उन्हें भिक्षु बनने की अपनी इच्छा के बारे में बताया। उस थेर ने उस पर दया करके उसे भिक्षु बना लिया और उसे मानसिक साधना (कम्मत्थानु) के बारे में बताया। वन में रहते हुए वह अपने एकाकी जीवन से विरक्त हो गया, ऊब गया (उक्कन्तीत) और गृहस्थ जीवन में लौटने की इच्छा से अपने रिश्तेदार के गाँव लौट रहा था। तभी उसने कुछ किसानों को देखा, जो कमर कसकर गंदे वस्त्र पहने, चारों ओर से धूल से सने हुए, गर्मी से सूखे हुए अपने खेतों में हल चला रहे थे। उसे उचित पश्चाताप हुआ और उसने कहा: "ये प्राणी वास्तव में कष्ट भोग रहे हैं, जो उनके जीवन का मूल (निमित्तम) है, और वास्तव में यह बड़ा कष्ट है।" अपने ज्ञान की सर्वांगीण परिपक्वता की ओर अग्रसर होने के कारण, वह अपने द्वारा किए गए ऐसे मानसिक अभ्यास (कम्मष्ठान) में पूरी निष्ठा से लीन हो गया। वह एक विशेष वृक्ष की जड़ के पास गया, एकांत प्राप्त किया, स्वयं को बुद्धिमानी से सचेत किया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की और श्रेष्ठ मार्ग पर चलने के बाद अर्हतत्व प्राप्त किया।

124. इस प्रकार अरहतत्व की प्राप्ति करके, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया, मन में प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्मों को प्रकट करने के लिए 'आहुतिं यित्तुकामो हम्' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ आहुतिं (बलिदान) स्वयं द्वारा किए गए श्रद्धापूर्ण अर्पण की विभिन्न किस्में हैं जिनमें भोजन, पेय आदि शामिल हैं; यित्तुकामो (बलिदान करने की इच्छा रखते हुए) मैं दान देने और यज्ञ करने की इच्छा रखता हूँ; पत्तियादेत्वान भोजनम् (नरम भोजन तैयार करके) भोजन तैयार करके और उसे पूरा करके; ब्राह्मणे पत्तिमानन्तो (ब्राह्मणों को उचित मापकर) सभी शुद्ध भिक्षुओं की खोज करते हुए, जो उचित प्राप्तकर्ता थे; visāle māḷke ṭhito (विस्तृत हॉल में खड़ा था) समृद्ध हॉल में खड़ा था, जो चारों ओर से शुद्ध, पीला (paṇ̄darā) था।

125-7. अथद्दससिम सम्बुद्धम्, तब मैंने आत्म-प्रबुद्ध बुद्ध को देखा; महायसम्, महान प्रसिद्धि, सब्बलोकम्, संपूर्ण विश्व, विनेतारम्, नेतृत्व करने वाले, स्वयंभूम् (स्वयं बनना), आत्मनिर्भर, अग्गपुग्गलम, सर्वोच्च व्यक्ति, जुटिमन्तम्, तेजस्वी तेज से युक्त, पुरक्खतम्, आगे स्थित, आदिच्चमिव, सूर्य के समान, रोकन्तम् चमकते हुए, रथियम, रथ-मार्ग पर, सम्बुद्धम्, आत्म-प्रबुद्ध बुद्ध, अंजलिम् पग्गहेत्वाना, अपने जुड़े हुए हाथों को ऊपर उठाकर, सकम चित्तम्, मेरा अपना मन, पसादयिम, मैं प्रसन्न हुआ। अतद्दससिम सम्बुद्धम् से शुरू होने वाले श्लोकों में, मैंने स्वयंप्रबुद्ध बुद्ध, विपस्सी नाम के, को रथ मार्ग पर प्रवेश करने के बाद सूर्य के समान प्रकाशमान, शिष्यों से घिरे हुए, नीले, सुनहरे आदि प्रकाशमान, महिमामय गुणों से परिपूर्ण, परम श्रेष्ठ पुरुष, तेजस्वी, गुरुहीन परन्तु आत्मनिर्भर बुद्ध को, विशाल अनुचरों के साथ, जिन्होंने समस्त प्राणियों को निर्वाण का मार्ग दिखाकर उन्हें निर्वाण प्राप्त कराया, देखा; मैं प्रसन्न हुआ और अपनी प्रसन्नता को तेजस्वी बुद्ध जैसे वांछनीय पराक्रमी पुरुष के गुणों में प्रकट किया; यही अर्थ है। मनसाव निमनतेसिम (मैंने मन से निमंत्रण दिया); आगच्छतु महामुनि (महान ऋषि आएँ) तेजस्वी, परम आदरणीय, ऋषि मेरे निवास पर आएँ।

128. mama saṅkappamaññāya (मेरे इरादे को जानने के बाद) मेरी मानसिक स्थिति को जानते हुए; loke (संसार में) जीवों के संसार में; anuttaro (अतुलनीय) स्वामी, किसी श्रेष्ठ से रहित; khīṇāsavasahassehi (हजारों अरहतों के साथ) mama dvāram (मेरा द्वार) मेरे घर का द्वार; upāgami (पहुंचा) ठीक से पहुंचा।

129. विधिवत रूप से उपस्थित हुए उस स्वामी को मैंने इस प्रकार प्रणाम किया: - पुरिसाजाञ्ञ (हे श्रेष्ठ कुल के पुरुष!) हे श्रेष्ठतम सुसंस्कृत पुरुष! ते (आपको) अत्थु (होने दो) मेरी प्रणाम आपको ही हो! पुरिसुत्तम (हे श्रेष्ठतम पुरुष!) हे प्रमुख गुणों वाले विशिष्ट पुरुष, श्रेष्ठतम पुरुष! ते (आपको) मेरी प्रणाम आपको ही हो!; पासादम् (महल) अपने महलनुमा निवास पर आसीन होकर, सीहासने (सिंहासन पर) मैंने उनसे विनती की कि वे कृपापूर्वक श्रेष्ठतम आसन पर विराजमान हों; यही अर्थ है।

130. दंतो दंतपरिवारो (सभ्य और उनके साथ सभ्य अनुयायी) स्वयं तीन द्वारों से वश में होकर, चार प्रकार के श्रोताओं से घिरे हुए, जो समान रूप से वश में माने जाते हैं - भिक्षु, भिक्षुणियाँ, पुरुष और स्त्री भक्त; तिण्णो तारयतम वरो (पार ले जाए गए लोगों में श्रेष्ठ, जो स्वयं पार कर चुके हैं) स्वयं पार करके, पार कर चुके और पुनर्जन्मों के चक्रों से बाहर निकल चुके, मेरे निवेदन पर महल में आरोहण करके, पार ले जाए गए और पार किए गए विशिष्ट व्यक्तियों में श्रेष्ठ और सबसे श्रेष्ठ महिमावान; पवारासने (अच्छे आसन पर) सबसे श्रेष्ठ आसन पर मोसीदी (बैठ गए) अपना आसन ग्रहण किया।

131. यम्मे अत्ति सके गेहे (मेरे घर में जो कुछ भी है) मेरे घर में जो भी सामग्री है; पच्चुपत्तितम् (आगे रखा हुआ) उसे अच्छी तरह से व्यवस्थित करके ढेर बनाया गया है; ताहम बुद्धस्स पादासिम (मैंने वह बुद्ध को अर्पित किया) मैंने वह सामग्री बुद्ध को, साथ ही बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के समूह को भी अर्पित की (या मैंने आदरपूर्वक दिया); यही अर्थ है। पसन्नो सेहि पाणिभि (पवित्र भाव से, हथेलियों से) मैंने दोनों हाथों में लेकर, पवित्र भाव से अर्पित किया; यही अर्थ है।

132. पसन्ना चित्तो (पवित्र मन से) मेरा मन प्रसन्न और पवित्र है, और मेरा हृदय अच्छा और उचित है; वेदजातो (भावुक हो जाना) मेरा ज्ञान उत्पन्न हुआ है और मेरा मन प्रसन्न है; कतंजलि (हाथ जोड़कर) मेरे हाथ सिर पर रखे हुए हैं; बुद्धसेष्ठं नमस्सामि (मैं परम श्रेष्ठ बुद्ध को प्रणाम करता हूँ) मैं परम श्रेष्ठ बुद्ध को प्रणाम करता हूँ; यही अर्थ है। अहो बुद्धस्सुलाकता (बुद्ध की महानता अद्भुत है) गुरु की महानता और महानता की अवस्था अद्भुत और विस्मयकारी है, जिन्होंने चार आर्य सत्यों को उचित रूप से समझा है; यही अर्थ है।

133. अट्ठन्नम् पयिरूपासतम (आठों के पास) आठों की सेवा की; भुंजम् (भोजन) आठ श्रेष्ठ व्यक्तियों (आर्य) के बीच जो अपना भोजन कर रहे थे; खीनासवे (कैंसर रहित), अरहत तो अनेक ही थे; तुयहरेसो आनुभवो (यह शक्ति भी तुम्हारी ही है) वायु (या आकाश) में विचरण करने, जल से ऊपर उठने और जल में गोता लगाने जैसी यह शक्ति भी तुम्हारी ही है, दूसरों की नहीं; शरणम्ता, उपेमहम (मैं तुम्हें अपना आश्रय मानकर तुम्हारे पास आता हूँ) मैं तुम्हें अपना आश्रय, सुरक्षा, आश्रय और गंतव्य मानकर तुम्हारे पास जाता हूँ (या मैं उस प्रकार के वांछनीय को जानता हूँ); यही अर्थ है।

134. जगत में सबसे बड़े, पुरुषों के महापुरुष, गौरवशाली पियादस्सी, भिक्षुओं के पुरोहितों के बीच बैठे हुए, उपदेश देते हुए भविष्यवाणी के इन श्लोकों का पाठ करते हैं; यही इसका अर्थ है; शेष आसानी से समझ में आ जाता है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा सुमंगल
समाप्त हो गया है।
दूसरे सिंह-सिंहासन की टीका
अध्याय समाप्त हो गया है।

3. सुभूति पर अध्याय

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 21. थेरा सुभूति

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स
सुभूति अध्याय, तीसरा

---

21. सुभूति

हिमालय श्रृंखला के निकट, निसाभा नामक पर्वत पर मेरा आश्रम बहुत अच्छी तरह से बना हुआ है, पत्तों से बना एक सुव्यवस्थित हॉल। (1) (813)

जटाधारी विख्यात तपस्वी, कोसिया मेरा नाम था (उस समय)। मैं निसाभा पर्वत पर अकेला, बिना किसी साथी के रहता था। (2) (814)

उस समय मैं फल, जड़ और (ताज़ा तोड़ी हुई) पत्तियाँ नहीं खा रहा था। मैं हमेशा उसी चीज़ पर निर्भर रहता था जो मेरे कटोरे में गिरती थी। (3) (815)
मैंने जीवन के किसी भी तरीके को बाधित नहीं किया, यहाँ तक कि मैंने अपना जीवन भी त्याग दिया। मेरा हृदय संतुष्ट था क्योंकि मैंने सभी हानिकारक मार्गों को त्याग दिया था। (4) (816)
जब भी मेरे मन में जुनून से उत्तेजित होकर कोई भावना उत्पन्न होती, तो मैं स्वयं उस पर विचार करके, शांत रहकर उसे वश में कर लेता: (5) (817)
"तुम उत्तेजना पैदा करने वाली चीजों से उत्तेजित होते हो, तुम अपवित्र करने वाली चीजों से अपवित्र होते हो, तुम मूर्खतापूर्ण बातों में खुद को मूर्ख बनाते हो (इसलिए) तुम्हें जंगल छोड़ देना चाहिए (अभी)। (6) (818)
यह शुद्ध और निर्मल तपस्वियों का निवास स्थान है। उस पवित्रता को दूषित मत करो; तुम्हें अब जंगल छोड़ देना चाहिए। (7) (819)
बेघर हो जाने के बाद, आपको हमेशा वही मिलता है जो आपके लिए उपयुक्त होता है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 450 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

तुम उन दोनों के विरुद्ध अपराध मत करो; तुम्हें अब जंगल छोड़ देना चाहिए। (8) (820)
अंत्येष्टि की चिता से बची हुई लकड़ी का कहीं भी उपयोग नहीं किया जाता है: न गाँव में और न ही जंगल में इसे जलाऊ लकड़ी के रूप में अनुमोदित किया जाता है। (9) (821)
तुम उस उग्र व्यक्ति के समान हो, न तो साधारण और न ही बुद्धिमान। आज तुम दोनों से विमुख हो गए हो, इसलिए तुम्हें अब जंगल छोड़ देना चाहिए। (10) (822)
तो इससे आपको क्या लाभ होगा? इससे आपके लिए क्या उत्पन्न होगा? आस्था के अभ्यास को त्यागने से इतनी आलस्य उत्पन्न होती है। (11) (823)
बुद्धिमान लोग तुम्हें गृहस्थ की तरह तुच्छ समझेंगे, जैसे गृहस्थ गंदगी को नापसंद करता है।452 ऋषि, तुम्हें जड़ से उखाड़कर, हमेशा तुम पर दोष लगाएंगे। (12) (824)
बुद्धिमान लोग आपके इस व्यवस्था को छोड़ने के विरुद्ध बोलेंगे। आपको सह-निवास नहीं मिलेगा; तब आप किस पर गुज़ारा करेंगे? (13) (825)
एक शक्तिशाली हाथी तीन बार संभोग कर चुके हाथी के पास जाएगा,453 एक साठ साल के दांत वाले हाथी के पास जाएगा और उसे झुंड से दूर भगा देगा। (14) (826)
झुंड से निर्वासित जीवन जीते हुए वह न तो खुश है और न ही प्रसन्न। अवसादग्रस्त मन से पीड़ित, पश्चाताप से भरा हुआ, वह कांप उठेगा।454 (15) (827)
ठीक उसी प्रकार क्रूर तपस्वियों

---

451 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
452 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अर्थ अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 453 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 454 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

वे (निश्चित रूप से) तुम्हें बाहर निकाल देंगे। उनके द्वारा निर्वासित किए जाने पर तुम्हें कभी सुख या आनंद नहीं मिलेगा। (16) (828)
यदि दिन हो या रात, तुम दुःख के तीर से घायल हो जाओ, तो तुम झुंड से निकाले गए हाथी की तरह पीड़ा से जलोगे। (17) (829)

जैसे किसी सुंदर लोहे के औजार को कहीं भी नहीं ले जाया जाता, वैसे ही नैतिक संयम के बिना आपको कहीं भी आमंत्रित नहीं किया जाएगा। (18) (830)
यदि आप घर पर रह भी रहे हैं तो आप वहाँ किससे अपना जीवन यापन करेंगे? आपके पास अपनी माँ और पिता से कोई धन-संपत्ति नहीं है। (19) (831)
स्वयं (कठिन) काम करने से शरीर से बहुत पसीना बहता है। इस प्रकार घर पर रहकर जीविका कमाना आपको इतना अच्छा नहीं लगेगा।"457 (20) (832)
इस प्रकार मैं वहाँ (जब भी) मेरा मन दूषित होता था, तब अपना काम करता रहा। विभिन्न धर्म-भाषणों से मैं अपने बुरे हृदय को दूर रखता था। (21) (833)
जब मैं इस प्रकार बहुत ही चिंतनशील भाव से रह रहा था, तब मेरे वन (आश्रम) में तीस हजार वर्ष बीत गए। (22) (834)
सर्वोच्च लक्ष्य की खोज में मेरी चिंतनशीलता को देखकर, पद्ममुत्तरा बुद्ध उस स्थान पर आए जहाँ मैं था। (23) (835)
जंगली मैंगोस्टीन का चमकीला रंग,458 अतुलनीय,459 अमापनीय,460

---

455 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 456 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)। 457 शाब्दिक अर्थ, "गया"। 458 BJTS के साथ PTS के लिए संजालेसी का पाठ। 459 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"। 460 शाब्दिक अर्थ, "पुण्यवान"।

रूप में अद्वितीय बुद्ध,461 आकाश में इधर-उधर विचरण करते थे।462 (24) (836)
खिले हुए राजसी साल के पेड़ की तरह, बादल के भीतर बिजली की तरह, ज्ञान में अद्वितीय बुद्ध आकाश में इधर-उधर विचरण करते रहे। (25) (837)
भयभीत नहीं, जैसे पशुओं का राजा; हाथी-राजा की तरह अभिमानी; बाघ-राजा की तरह चंचल, वह आकाश में इधर-उधर विचरण करता रहा। (26) (838)
सोने के सिक्के की तरह चमकता हुआ463 (या यहाँ तक कि) सुलगते अंगारों की तरह, इच्छा पूरी करने वाले रत्न की तरह464 वह आकाश में इधर-उधर चलता रहा। (27) (839)
कैलाश पर्वत की तरह465 पवित्रता में, पंद्रहवें दिन के चंद्रमा की तरह466 दोपहर के (तेज) सूरज की तरह वह आकाश में आगे-पीछे चलता रहा। (28) (840)
उस समय उसे आकाश में चलते हुए देखकर मैंने इस तरह सोचा: "क्या यह प्राणी किसी प्रकार का देवता है? यदि नहीं, तो क्या यह (केवल) एक मनुष्य है? (29) (841)
मैंने इस व्यक्ति के समान महान व्यक्ति के बारे में न तो कभी सुना है और न ही देखा है। निश्चित रूप से वह (गुप्त) मंत्रों को जानता है; (मुझे लगता है) यही गुरु होगा।" (30) (842)
इस प्रकार सोचने पर मैंने अपने हृदय को प्रसन्न किया। और फिर मैंने विभिन्न फूल और सुगंध एकत्रित किए। (31) (843)

---

461 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं मीटर को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली शाब्दिक रूप से है, "एक हजार कंद (भाग, अंश, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु (लंबा? मोटा?)।" 462 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस कई भिन्नताओं में गेंदु पढ़ता है। कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक स्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी। 463 येनिच्चका, बीजेटीएस सिंहली व्याख्या कामाती तनका के अनुसार 464 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी) 465 पीटीएस uddhalomika° के लिए BJTS के साथ uddalomika° का पाठ (जिसका अर्थ लगभग समान है, देखें आरडी, एसवी) 466 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"

फूलों की एक आसन बिछाकर मैंने (तब) ये शब्द (बुद्ध से) कहे, हे दयालु, मन के आनंद, मनुष्यों के सारथी, शीर्ष: (32) (844)
"हे वीर, मैंने यह आसन बिछाया है जो तुम्हारे लिए उपयुक्त है। मेरे हृदय में हँसी लाते हुए, कृपया इस फूलों के आसन पर बैठो।" (33) (845)

भगवान बुद्ध वहाँ सिंहराज की तरह निर्भय होकर बैठ गए, और बुद्ध उस उत्तम पुष्पमय आसन पर एक सप्ताह तक विराजमान रहे। (34) (846)
उनकी उपासना करते हुए मैं उन सातों रातों और दिनों तक वहीं खड़ा रहा। ध्यान से उठकर, गुरु, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, (35) (847)
मेरे कर्मों का फल घोषित करते हुए (तब) उन्होंने मुझसे ये शब्द कहे: "बुद्ध-स्मरण का अभ्यास करो,467 (यह) सर्वोच्च ध्यान है। (36) (848)
इस जागरूकता का अभ्यास मानसिक रूप से संतुष्टिदायक होगा। तीस हजार युगों तक आप देवताओं के संसार में आनंदित रहेंगे। (37) (849)
अस्सी बार आप देवताओं के राजा के रूप में दिव्य शासन करेंगे। हज़ार बार आप किसी देश के शासक राजा बनेंगे। (38) (850)
(और आपको) अनगिनत स्थानीय नियम मिलेंगे। आप उन सभी का अनुभव करेंगे: बुद्ध-स्मरण का फल। (39) (851)
जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए आपको अनेक धन-संपत्ति प्राप्त होगी। धन में कभी कमी नहीं होगी: बुद्ध-स्मरण का फल। (40) (852)
एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,

---

467 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

जिसका नाम गौतम होगा, वही संसार का गुरु होगा। (41) (853)
आठ सौ मिलियन (और) अनेक दासों (और) श्रमिकों (को भी) त्यागकर, तुम भगवान गौतम की महान शिक्षा का त्याग करोगे। (42) (854)
शाक्यों के सांड, गौतम संबुद्ध को संतुष्ट करके, तुम गुरु के अनुयायी सुभूति कहलाओगे। (43) (855)
भिक्षुओं की सभा में बैठा हुआ वह आपको दो प्रमुख स्थानों पर रखेगा: उपहार प्राप्त करने वालों के समूह में, और वनवासियों के समूह में भी। (44) (856)
यह कहते हुए, कमल के फूल के नाम पर नामित संबुद्ध, हीरो468 आकाश में हंस-राजा की तरह उड़ गया। (45) (857)
(इस प्रकार) विश्व-प्रमुख द्वारा निर्देशित (और) तथागत की स्तुति करके, संतुष्ट होकर मैंने हमेशा सर्वोच्च बुद्ध-स्मरण का अभ्यास किया। (46) (858)
उस कर्म के कारण, जो मैंने इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ बहुत अच्छे से किया, मैंने अपना मानव शरीर त्यागकर तावतिंसा (तब) गया। (47) (859)
मैंने देवताओं के राजा के रूप में अस्सी बार दिव्य शासन किया, और (तब) एक हजार बार मैं चक्र चलाने वाला सम्राट था। (48) (860)
(और मेरे पास) अनगिनत स्थानीय शासन था। मैंने सर्वोच्च सफलता का अनुभव किया: बुद्ध-स्मरण का फल। (49) (861)
जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए मैंने अनेक धन-संपत्ति प्राप्त की। धन में कभी कमी नहीं रही: बुद्ध-स्मरण का फल। (50) (862)

---

468 खिड्डारतिया

उस (अच्छे) कर्म को करने के बाद से एक लाख युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ; बुद्ध-स्मरण का फल। (51) (863)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (52) (864)
इस प्रकार पूज्य सुभूति थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
सुभूति थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
21. थेरा सुभूति की जीवनी पर टीका

हिमवन्तस्साविदुरे से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा सुभूति की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म करते हुए, उन्होंने इस और उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित किए और एक लाख युगों (कप्पा) के पूर्व विश्व रक्षक पद्ममुत्तरा के प्रकट होने से पहले, हंसवती नगर में एक धनी ब्राह्मण के इकलौते पुत्र के रूप में पुनर्जन्म लिया। उनका नाम नंदमानव (लड़का नंदा) रखा गया। वयस्क होने पर उन्होंने तीनों वेदों का ज्ञान प्राप्त किया, और उनमें कोई सार न देखकर उन्होंने अपने साथ आए चौवालीस हजार युवकों के साथ संसार त्याग दिया और एक पर्वत की तलहटी में तपस्वी बन गए। उन्होंने ध्यान की आठ सही योग्यताओं के साथ-साथ पांच प्रकार के उच्च ज्ञान की प्राप्ति की। उन्होंने अपने शिष्यों को भी मानसिक अभ्यास (कम्मत्थान) का उपदेश दिया। वे भी शीघ्र ही ध्यान के साधक बन गए।

उस अवसर पर भी प्रतापी पद्ममुत्तरा संसार में अवतरित हुए, हंसवती नगर के निकट निवास किया, जब एक दिन सुबह सवेरे संसार की ओर देखते हुए उन्होंने देखा कि नन्द के शिष्य, जो कि गुंथे हुए बालों वाले तपस्वियों के लिए अरहत (उपनिषय) बनने की पर्याप्त योग्यता रखते हैं, और नन्द के दो गुणों से युक्त शिष्य के पद की आकांक्षा रखते हुए, उन्होंने सुबह-सुबह ही अपने शरीर का स्नान किया, सूर्योदय के समय ही अपना कुंड और वस्त्र ग्रहण किया, किसी और को नहीं बुलाया, सिंह के समान एकाकी विचरण करने वाले बन गए, और नन्द के सामने ही आकाश से अवतरित हुए, ताकि उन्हें यह बता सकें कि वे बुद्ध हैं, जबकि नन्द के शिष्य छोटे-बड़े फल लेने गए हुए थे, और स्वयं पृथ्वी पर अवतरित हुए। तपस्वी नंदा ने बुद्ध की शक्ति और सर्वांगीण गुणों (लक्खण) की परिपूर्णता को देखा और हस्तरेखा शास्त्र (लक्खण मंत्र) का गहन अध्ययन करके यह ज्ञात किया: "ऐसा व्यक्ति, जो इन गुणों (लक्खण) से परिपूर्ण है, गृहस्थ जीवन व्यतीत करने पर विश्वराज बन जाता है, परन्तु संसार का त्याग करने पर सर्वज्ञ बुद्ध बन जाता है, जो बंधनों को तोड़कर निर्वाण (विवतच्छेद) का द्वार खोलता है; यह सुसंस्कृत व्यक्ति निःसंदेह बुद्ध हैं।" वे उनसे मिलने के लिए आगे बढ़े, पंचपतितीत (पंचपतितीत) से प्रणाम किया, आसन तैयार किया और उन्हें अर्पित किया। बुद्ध उस तैयार आसन पर विराजमान हुए। तपस्वी नंदा ने भी अपने लिए उपयुक्त आसन ग्रहण किया और एक ओर बैठ गए। उस समय (या तब तक) चौवालीस हज़ार गुंथे बालों वाले तपस्वी अपने गुरु के समक्ष स्वादिष्ट, छोटे-बड़े, उत्तम गुणवत्ता वाले फल लेकर लौटे। उन्होंने बुद्ध और अपने गुरु दोनों के बैठे हुए चिन्ह (निसिन्काराम) को देखकर कहा, "हे गुरु! हम इस विचार के साथ भटकते हैं कि इस संसार में आपसे बड़ा कोई नहीं है; हम सोचते हैं कि यह व्यक्ति आपसे बड़ा (या उच्चतर) है।" तपस्वी नंदा ने उत्तर दिया, "मेरे पुत्रों! तुम सब क्या कहते हो? तुम अड़सठ लाख योजन ऊँचे सिनेरु की तुलना सरसों के दाने से करना चाहते हो; मुझे सर्वज्ञ बुद्ध के साथ उदाहरण के रूप में मत दो।" तब उन तपस्वियों ने मन ही मन कहा, "यदि यह व्यक्ति अस्तित्वहीन होता, तो हमारे गुरु इस प्रकार का उदाहरण नहीं देते; यह सुसंस्कृत व्यक्ति वास्तव में बहुत शक्तिशाली है", वे सब उनके चरणों में गिर पड़े और सिर झुकाकर उन्हें प्रणाम किया। तब उनके गुरु ने उनसे कहा, "प्रिय पुत्रों! हमारे पास बुद्ध को अर्पित करने के लिए कोई उपयुक्त दान (दय्यधम्म) नहीं है; प्रतापी बुद्ध भी भिक्षा मांगने के समय यहाँ आए हैं; इसलिए, हम अपनी सामर्थ्य के अनुसार उचित दान (दय्यधम्म) अर्पित करें, आप सभी उत्तम फल, छोटे-बड़े, यहाँ लाएँ"; जब आप उन्हें लाएँ,गुरु ने स्वयं अपने हाथों से फल धोए और उन्हें तथागत के पात्र में रखा। जैसे ही गुरु ने छोटे-बड़े सभी फल ग्रहण किए, देवताओं ने उनमें दिव्य सार का संचार किया। तपस्वी ने स्वयं जल छानकर उसे भी अर्पित किया। इसके बाद, जब गुरु ने भोजन करने के बाद आसन ग्रहण किया, तो उन्होंने अपने सभी शिष्यों को बुलाया और गुरु के समक्ष बैठकर प्रवचन देते हुए स्मरण के वचन कहे। गुरु ने इस प्रकार अपनी इच्छा व्यक्त की: "मेरे भिक्षुओं, आओ।" गुरु के मन की बात जानकर, एक लाख तक दोषरहित अरहत आए और गुरु को प्रणाम किया।

तब तपस्वी नंदा ने अपने शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा: "मेरे प्रियो! बुद्ध का आसन भी नीचा है; एक लाख भिक्षुओं के लिए भी आसन नहीं है; आज तुम स्वयं प्रतापी बुद्ध और भिक्षुओं के स्वामी को अत्यंत आदर दो; पर्वत की तलहटी से उत्तम रंग और सुगंध वाले फूल लाओ।" जादुई शक्तियों के अकल्पनीय प्रभाव क्षेत्र के कारण, वे क्षण भर में उत्तम रंग, सुगंध और उत्कृष्ट सार वाले फूल ले आए और बुद्ध के लिए एक योजन के आकार का पुष्प-आसन, मुख्य शिष्यों के लिए तीन गावूत के आकार का, शेष भिक्षुओं के लिए आधे योजन के आकार के विभिन्न आसन, और भिक्षुओं के युवा सदस्यों के लिए एक-एक उषभ के आकार के आसन तैयार किए। जब आसन तैयार हो गए, तो तपस्वी नंदा ने अपने हाथ जोड़कर तथागत के समक्ष खड़े होकर कहा: "आदरणीय महोदय! हमारे दीर्घकालिक कल्याण और सुख के लिए, कृपया आरोहित होकर इस पुष्प-आसन पर विराजमान हों।" गुरुजी पुष्प-आसन पर विराजमान हो गए। जब गुरुजी इस प्रकार विराजमान हो गए, तो भिक्षुओं ने गुरुजी का तरीका जान लिया और स्वयं अपने-अपने स्थानों पर बैठ गए। तपस्वी नंदा ने एक बड़ा पुष्प-छतरी उठाया और उसे तथागत के सिर के ऊपर थामे खड़े हो गए। गुरुजी ने इस विचार के साथ निरोध समाधि में प्रवेश किया: "तपस्वीयों की यह व्यक्तिगत भेंट महान लाभकारी हो।" गुरुजी की समाधि की अवस्था को जानकर, भिक्षुओं ने भी उसी प्रकार की समाधि में प्रवेश किया। तथागत सात दिनों तक निरोध समाधि में बैठे रहे, इस दौरान जब भोजन की तलाश में घूमने का समय आया,

तो उनके शिष्यों ने जंगल से प्राप्त छोटे-बड़े फल खाए, और शेष समय में वे स्वयं खड़े रहे। उनके हाथ बुद्ध की ओर जुड़े हुए थे। तपस्वी नंदा ने भोजन तक नहीं किया, बल्कि सारा समय उत्साह और प्रसन्नता से केवल फूलों की छतरी को थामे हुए बिताया।

गुरु निरोध की समाधि से उठे और दो गुणों से संपन्न शिष्य को आदेश दिया: वनवास (अरणविहार) और दान देने योग्य। उन्होंने कहा, "तपस्वी संघ के पुष्प-आसनों पर धन्यवाद का पाठ करो।" वह शिष्य उस महान योद्धा के समान मानसिक रूप से संतुष्ट हो गया जिसने विश्वराज के दर्शन से बड़ा पुरस्कार प्राप्त किया हो। उसने अपने प्रभाव क्षेत्र में खड़े होकर बुद्ध की शिक्षाओं के तीन पिटकों का अध्ययन किया और धन्यवाद का पाठ किया। अपने धार्मिक प्रवचन के अंत में गुरु ने स्वयं सत्य (धम्म) का उपदेश दिया। बुद्ध के उपदेश के अंत में सभी चौवालीस हजार तपस्वियों ने अर्हतत्व प्राप्त किया। गुरु ने हाथ फैलाकर कहा, "आओ भिक्षुओं!" उसी क्षण उनके बाल और दाढ़ी गायब हो गए। आठ पुरोहितीय आवश्यक वस्तुएँ उनके शरीर से जुड़ गईं (पटिमुक्का)। वे साठ वर्ष के थेरों के समान गुरु के चारों ओर जमा हो गए। परन्तु तपस्वी नन्द, अपने अस्थिर मन के कारण, ख्याति प्राप्त नहीं कर सके। कहा जाता है कि जिस क्षण उन्होंने वनवासी थेरे के सत्य (धम्म) को सुनने का प्रयास किया, उनके मन में यह विचार आया: "यह कितना अद्भुत होगा यदि भविष्य में मुझे भी बुद्ध के स्वरूप में इस थेरे के समान गुण प्राप्त हो जाएँ।" इसी विचार के कारण वे श्रेष्ठ मार्ग की उचित साधना और फल प्राप्ति नहीं कर सके। हालांकि, उन्होंने तथागत को प्रणाम किया, हाथ जोड़कर खड़े हुए, भगवान के सामने खड़े होकर इस प्रकार पूछा: "हे पूज्यवर! आपके युग में, इस भिक्षु का क्या नाम है जिसने भीड़ भरे तपस्वियों के पुष्प-आसनों पर धन्यवाद अर्पित किया?" उत्तर मिला, "यह भिक्षु वह है जिसने वनवासी और दान-पुण्य के गुणों से परिपूर्ण सर्वोच्च पद प्राप्त किया है।" उन्होंने अपनी इच्छा इस प्रकार व्यक्त की: "हे पूज्यवर! सात दिनों तक पुष्प-छाता धारण करने का जो भी व्यक्तिगत आदर मैंने अर्पित किया, उस समर्पित सेवा के फलस्वरूप मैं अन्य किसी योग्यता की कामना नहीं करता, बल्कि भविष्य में किसी बुद्ध के युग में इस थेरा के समान दो गुणों से परिपूर्ण शिष्य बनना चाहता हूँ।"

भविष्य के अपने ज्ञान का प्रयोग करते हुए, गुरु ने यह जानने का प्रयास किया कि तपस्वी की आकांक्षा वास्तव में पूरी होगी या नहीं। उन्होंने एक लाख युगों (कप्पा) के बीत जाने पर सिद्धि की अवस्था प्राप्त की और सत्य (धम्म) का उपदेश देते हुए कहा, "हे तपस्वी! तेरी यह आकांक्षा व्यर्थ नहीं होगी; अभी आने वाले समय में, जब एक लाख युग (कप्पा) बीत चुके होंगे, बुद्ध, गौतम नाम से प्रकट होंगे; तेरी आकांक्षा उनकी उपस्थिति में पूरी होगी।" वे भिक्षुओं के समूह से घिरे हुए आकाश में चले गए। तपस्वी नंदा गुरु और उनके भिक्षुओं के समूह की ओर हाथ जोड़कर तब तक खड़े रहे जब तक वे दृष्टि से ओझल नहीं हो गए। इसके बाद, वे बार-बार गुरु के पास गए, सत्य (धम्म) का श्रवण किया, ध्यान में कभी क्षीण नहीं हुए, उनका प्राण त्याग गया और वे ब्रह्मालोक में पुनर्जन्म लिए। वहाँ से देह त्यागने के बाद, उन्होंने पाँच सौ जन्मों तक भिक्षु का जीवन व्यतीत किया और वनवास में रहे। आत्मज्ञानी बुद्ध कस्सपा के समय में भी, वे वनवासी भिक्षु बने और आने-जाने के कर्तव्य का पालन किया। कहा जाता है कि इस कर्तव्य का पालन किए बिना, प्रमुख शिष्य की अवस्था प्राप्त नहीं की जा सकती। यद्यपि, आने-जाने के कर्तव्य को आगमों और उनकी टीकाओं में वर्णित समान अर्थ में समझा जाना चाहिए। उन्होंने बीस हजार वर्षों तक आने-जाने के कर्तव्य का पालन किया, उनका निधन हुआ और वे तावतिंसा के स्वर्गलोक में पुनर्जन्म हुए।

इस प्रकार वे तावतिंसा लोक में समय-समय पर जन्म लेकर स्वर्गीय समृद्धि का आनंद लेते रहे; वहाँ से मृत्यु के बाद, वे कई सौ बार विश्वराज और क्षेत्रीय शासक बने; मानव जगत में उन्होंने मानवीय समृद्धि का अनुभव किया और अंत में धनाढ्य सुमना के घर में पुनर्जन्म लिया; वे हमारे प्रतापी बुद्ध के प्रकट होने के समय अनाथपिंडिका के सबसे छोटे भाई बने। उनका नाम सुभूति था।

उस अवसर पर भी, हमारे प्रतापी, संसार में अवतरित होकर, उत्कृष्ट धर्म के पहिये को घुमाते रहे, समय आने पर राजगृह गए, वहाँ उन्होंने बांस के वन को स्वीकार करने जैसे संसार के उत्थान के कार्य किए, और राजगृह पर निर्भर रहते हुए सीतावन (शीतवन) में निवास किया। उस समय, धनाढ्य अनाथपिंडिका, सावत्थी में एकत्रित धन को अपने साथ लेकर, अपने सहयोगी राजगृह के धनाढ्य के घर गए। वहाँ उन्होंने बुद्ध के प्रकट होने की सूचना सुनी, सीतावन (शीतवन) में स्थित गुरु के पास पहुँचे, और दीक्षा के प्रथम चरण (सोतापत्ति) की सिद्धि प्राप्त कर गुरु से सावत्थी आने का अनुरोध किया। इसके बाद, उन्होंने प्रत्येक योजन पर एक लाख की लागत से मठ बनवाए। पैंतालीस योजन की यात्रा के दौरान, करोड़ों रुपये खर्च करके उन्होंने एक जेत राजकुमार के आठ एकड़ से अधिक के विशाल उद्यान को सावत्थी में अधिग्रहित किया; वहाँ उन्होंने एक मठ बनवाया और उसे बुद्ध को समर्पित किया। मठ उत्सव के दिन, इस जागीर के स्वामी सुभूति, अनाथपिंडिका के साथ गए, सत्य (धम्म) को ध्यानपूर्वक सुना, धार्मिक आस्था प्राप्त की और भिक्षु बन गए। जब उन्होंने दीक्षा ली, तो उन्होंने दो विषय-सूची (मातिका) को याद किया, मानसिक अभ्यास के बारे में उनसे बात की गई, जंगल में एक भिक्षु के कर्तव्यों का पालन किया, प्रेम और दया की ज्ञान को जागृत किया, इसे अपना आधार बनाया, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की और अरहतत्व प्राप्त किया।

सत्य (धम्म) का प्रचार करते समय, क्योंकि उन्होंने इसे वस्तुनिष्ठ रूप से प्रचारित किया, न कि गुरुओं द्वारा प्रचारित परंपरागत व्यक्तिपरक तरीके से, इसलिए वे अनासक्त निवासियों (अरण) में श्रेष्ठ माने गए। भिक्षा मांगने के दौरान, वे प्रत्येक घर में प्रेममय ध्यान में लीन हो जाते, उठते और भिक्षा ग्रहण करते हुए मन ही मन कहते, "इस प्रकार दानदाताओं को महान फल प्राप्त होगा।" अतः वे समर्पित दान के योग्य लोगों में सर्वोपरि माने गए। अत: भगवान ने उन्हें दो गुणों से युक्त सर्वोच्च पद पर आसीन किया, इस प्रकार: "हे भिक्षुओं! यह मेरे शिष्यों, भिक्षुओं में श्रेष्ठ है, जो अनासक्त (अरण) रहते हैं और समर्पित दान के योग्य हैं, अर्थात् सुभूति। इस प्रकार अर्हतत्व प्राप्त करके, स्वयं सिद्धियों को पूर्ण करने के सर्वोच्च स्थान को प्राप्त करके, यह महान थेरा संसार में अत्यंत प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित हो गए, अनेक मनुष्यों के कल्याण के लिए विभिन्न क्षेत्रों में विचरण किया, और समय आने पर राजगृह चले गए।"

राजा बिम्बिसार ने थेरा के आने की सूचना सुनी, उनके पास गए, उन्हें प्रणाम किया और कहा, "आदरणीय महोदय! कृपया यहीं निवास करें; मैं आपके लिए एक निवास स्थान बनवाऊंगा।" यह कहकर वे चले गए और इस बात को भूल गए। मठ न मिलने के कारण थेरा ने अपना समय खुले में बिताया। थेरा की शक्ति के कारण वर्षा नहीं हुई। वर्षा न होने के कारण लोग पानी की कमी से पीड़ित हो गए और राजमहल के द्वार पर हंगामा करने लगे। वर्षा न होने का कारण जानने के लिए राजा ने निष्कर्ष निकाला कि थेरा के खुले में रहने के कारण वर्षा नहीं हुई। उन्होंने थेरा के लिए एक पत्तियाँ-पत्थर की कुटिया बनवाई, उनसे अनुरोध किया कि वे उसमें निवास करें, थेरा को प्रणाम किया और चले गए। थेरा कुटिया में प्रवेश कर घास पर पालथी मारकर बैठ गए। तब कुछ बूँदें बारिश की बरसीं, लेकिन पर्याप्त पानी नहीं बरसाया। तब थेरा ने संसार के सूखे के खतरे को दूर करने की इच्छा से "चन्ना मे कुटिका (मेरा निवास छत से ढका हुआ है)" से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वह अपने आंतरिक और बाह्य वस्तुओं के लिए खतरे की अनुपस्थिति को स्वीकार कर सके। इस श्लोक का अर्थ केवल थेरागाथा में ही बताया गया है।

लेकिन महान थेरों ने अपने इन गुणों का उल्लेख क्यों किया? उन्होंने स्वयं द्वारा प्राप्त किए गए परम गहन, अत्यंत उत्कृष्ट और शांत दिव्य सत्य (धम्म) पर चिंतन किया, जो उन्होंने पहले कभी प्राप्त नहीं किया था। अत्यंत निर्मल आर्य, अपने परमानंद (उदान) को प्रकट करने के उद्देश्य से, जो उत्साह (पीतिवेग) से उचित रूप से समर्थित था, और बुद्ध की शिक्षा (शासन) की स्थिति को स्पष्ट करने के उद्देश्य से, जो निर्वाण की ओर अग्रसर है, वे अपने गुणों को प्रकट करते थे। ठीक उसी प्रकार जैसे विश्व रक्षक अपने गुणों को इस प्रकार प्रकट करते हैं: "हे भिक्षुओं! तथागत दस प्रकार की शक्तियों, चार प्रकार के आत्मविश्वास आदि से संपन्न हैं, ताकि इस विषय को प्रबुद्ध किया जा सके।" इसी प्रकार, थेरों के अर्हतत्व को दर्शाने वाले श्लोक भी इसी प्रकार हैं।

1. इस प्रकार, अरहतत्व की प्राप्ति और सर्वोच्च पदवी प्राप्त करने पर, थेरा ने अपने पूर्व कर्मों को याद किया, प्रसन्न हुए और हिमवंतसविदूरे से शुरू होने वाले श्लोक का उच्चारण किया, ताकि वे अपने पूर्व कर्मों को प्रकट कर सकें। वहाँ हिमवंतस (हिमवंत का), हिमालय पर्वत का; अविदूरे (दूर नहीं), निकट, पास, पर्वत की तलहटी में, मनुष्यों के आने-जाने में सुगम, सुचारु आचरण के स्थान पर। यही अर्थ है। निसाभो नाम पब्बतो (एक पर्वत, निसाभ नाम से), वहाँ एक पत्थर से बना पर्वत था जो निसाभ के नाम से जाना जाता था क्योंकि वह पर्वतों में सबसे बड़ा था, यही संबंध है। असमो सुकटोमयहम् (मेरे लिए एक आश्रम बनाया गया था), वहाँ, उस पर्वत पर, मेरे निवास के लिए एक वन-आवास, एक आश्रम, विधिवत बनाया गया था; इसका निर्माण एक कक्ष, रात्रि विश्राम स्थल, दिन विश्राम स्थल और चारों ओर बाड़ (और घेरा) आदि के रूप में अच्छे ढंग से किया गया था; यही इसका अर्थ है। पन्नसाला सुमापिता (पत्तों से बना सुशोभित कक्ष) मेरे निवास के लाभ के लिए पत्तों की छत से ढका हुआ कक्ष अच्छी तरह से निर्मित और तैयार किया गया था; यही इसका अर्थ है।

2. कोसियो नाम नामेन (कोसिया नाम से जाना जाने वाला) माता-पिता द्वारा रखा गया कोसिया नाम; उग्गतापनो (अत्यंत तपस्वी), प्रसिद्ध घोर तपस्या; एकाकियो (अकेला), दूसरों की अनुपस्थिति के कारण, मैं अकेला था; अदुतियो (बिना दूसरे के), दूसरे तपस्वी से रहित; जतिलो (गुंथे हुए बाल) गुंथे हुए बाल धारण करने वाला तपस्वी; तदा (तब), उस समय, निसाभे, निसाभ पर्वत पर; वासामि, मैं रहता था; इस प्रकार, संबंध है।

3. फलम् मूलांच पञ्ञांच न भुञ्जामि अहम् तदा (मैंने तब फल, जड़ और पत्ते नहीं खाए), यानी जब मैं निसाभा पर्वत पर निवास कर रहा था, तब मैंने अंजीर आदि फल, या वृक्ष से तोड़े गए आहुति के पत्ते नहीं खाए; यही अर्थ है। यदि ऐसा है, तो वह कैसे जीवित रहे? इसे समझाने के लिए उन्होंने ये शब्द कहे: पावत्तम् व सुपाताहम्। वहाँ, पावत्तम् (स्वयं उत्पन्न होना), स्वतः उत्पन्न होना; सुपात्तम् (स्वयं गिरना), मैंने अपने आप गिरे पत्तों आदि से अपना भरण-पोषण किया; तावदे (तब), उस समय; जीवामि (मैं जीवित रहता हूँ), मैंने अपना जीवन यापन किया, मैंने अपना जीवन निर्वाह किया; यही संबंध है। इसका वैकल्पिक अर्थ यह है: "पावत्तपण्दुपण्णानि, गिरे हुए पीले पत्ते", paṇ̄dupaṇṇāni rukkhapattāni (पेड़ों से गिरे पीले पत्ते); मैं स्वयं गिरे हुए पेड़ों के पत्तों पर निर्भर रहकर जीवन यापन करता हूँ; यही इसका अर्थ है।

4. नाहम कोपेमि आजीवम् (मैं अपनी अच्छी आजीविका को भ्रष्ट नहीं करता), अपने प्राणों का बलिदान करते हुए, अपने सर्वांगीण यज्ञ में, मैंने लालसा (तन्हा) के प्रभाव में फल, जड़ आदि जैसे जीविका की प्राप्ति के लिए अपनी अच्छी, उचित आजीविका को न तो भ्रष्ट किया और न ही नष्ट किया; यही संबंध है। आराधेमि सकम चित्तम् (मैं अपने मन पर विजय प्राप्त करता हूँ), अल्प आवश्यकताओं और संतोष के माध्यम से मैंने अपने मन पर विजय प्राप्त की और अपने मन को स्पष्ट रूप से प्रसन्न किया; विवज्जेमि अनेसनम् (मैं पापमय जीवन शैली से बचता हूँ), मैंने चिकित्सक, संदेशवाहक आदि जैसे अनुचित और अशोभनीय आजीविका के तरीकों से परहेज किया और स्वयं को उनसे दूर रखा।

5. रागूपसम्हितं चित्तम् (कामवासना से ग्रस्त मन) जब कभी मेरे मन में कामवासना का बोध उत्पन्न हुआ, तब मैंने स्वयं उस पर बुद्धिपूर्वक विचार किया और उसका उचित विश्लेषण करके उसे दूर किया; एकगगो तम दमेमहम् (एकाग्रचित्त होकर मैं उसे वश में करता हूँ) अपने मन को एक ही निश्चित मानसिक अभ्यास वस्तु पर एकाग्रचित्त करके (कम्मत्थाना), मैंने उस कामवासनापूर्ण मन को वश में किया और अपने अधीन कर लिया।

6. राज्जसे राज्जनीये च (तुम आसक्त वस्तुओं से भी आसक्त थे) तुम दृश्य वस्तुओं आदि से आसक्त और दूषित हो गए; दुस्सानीये च दुस्सासे (तुम क्रोधित करने वाली बातों से आहत हो गए) तुम क्रोध उत्पन्न करने वाली और आहत होने योग्य बातों पर क्रोधित हो गए; मुयहसेमोहनीये (तुम भ्रमित करने वाली बातों में भ्रमित हो गए) तुम भ्रम उत्पन्न करने वाली और भ्रमित करने वाली बातों पर भ्रमित और गुमराह हो गए; इसलिए, वना निक्खमस्सु (तुम वन से बाहर निकल जाओ) तुम्हें वन-निवास से दूर, वन से बहुत दूर कहीं और चले जाना चाहिए; इस प्रकार, मैंने अपने आप को वश में कर लिया; यही संबंध है।

24. तिंबरुसकवन्नाभो (हे अंजीर के समान रंग वाले!) हे मित्र! तुम्हारा रंग सुनहरे बड़े फल के समान है, तुम्हारा रंग जंबू नदी के स्वर्ण रंग के समान है; यही अर्थ है। शेष अर्थ तो सहजता से समझ में आ जाता है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा सुभूति का
समाप्त हो गया है

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 22. थेरा उपवन

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

<<<< पिछला । अगला >>>>

---

22. उपवान

विजेता, पद्ममुत्तरा, जिसने सब कुछ पार कर लिया था, संबुद्ध पूरी तरह से बाहर निकल गया, जैसे आग बुझ गई हो। (1) (865)

अनेक लोग तथागत का आदर करने के लिए एकत्रित हुए। उन्होंने उनके लिए एक सुव्यवस्थित चिता बनाई।470 (फिर) उनके शरीर को उस पर उठाया। (2) (866)

शव के साथ आवश्यक कार्य करने के बाद उन्होंने वहाँ सभी अवशेषों को एकत्र किया। (फिर) सभी लोगों ने अपने राजाओं सहित बुद्ध का स्तूप बनाया। (3) (867)

पहला (ताबूत)471 सोने का बना था, दूसरा रत्न का बना था। तीसरा चांदी का बना था, चौथा क्रिस्टल का बना था। (4) (868)

वहां निर्मित पांचवां स्तूप कांच में जड़े माणिक्यों से बना था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 469 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 470 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

471 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

छठा सभी रत्नों से बना था जिसके शीर्ष पर एक (बड़ा) बिल्ली की आँख472 थी। (5) (869)
सोने की बनी एक रेलिंग थी; उसके खंभे रत्नों से बने थे। वह स्तूप, जो पूरी तरह सोने से ढका हुआ था, एक लीग (पूरी तरह) ऊँचा था। (6) (870)
तब देवता वहाँ एकत्रित हुए और एक दूसरे को सलाह दी (इस प्रकार): "हम विश्व-प्रमुख, तटस्थ देवता के लिए भी एक स्तूप का निर्माण करेंगे। (7) (871)
(लेकिन) कोई भी अवशेष नहीं बचा है; शरीर अब एक पिंड के रूप में है। हम (उत्कृष्ट) सोने का उपयोग करके बुद्ध के इसी स्तूप का विस्तार करेंगे।" (8) (872)
देवताओं ने सात रत्नों का उपयोग करके इसे एक और लीग (ऊंचा) कर दिया। वह स्तूप, जो दो लीग ऊंचा था, अपनी चमक से अंधकार को दूर कर देता था। (9) (873)
तब नागदेव473 वहाँ एकत्रित हुए और एक दूसरे को सलाह दी (इस प्रकार): "लोगों और देवताओं ने मिलकर बुद्ध का स्तूप बनाया। (10) (874)
हमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए; सावधान रहकर, (और) छोटे देवताओं के साथ, हम भी विश्व-प्रमुख, तटस्थ देवता के इस स्तूप का विस्तार करेंगे।" (11) (875)
उन्होंने एकत्रित होकर बुद्ध के स्तूप को दो प्रकार के नीले नीलमणि474 और ज्योतिरास रत्न475 से ढक दिया। (12) (876)
उस समय बुद्ध का चैत्य पूर्णतः रत्नों से बना था। ऊँचाई में वह तीन 476 लीग (ऊँचा) था और (संपूर्ण ब्रह्मांड) को प्रकाशित करता था। (13) (877)

---

472 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 473 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 474 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 475 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)। 476 शाब्दिक अर्थ, "गया"।

(तब) गरुळ ...
हमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए; सावधान रहकर, (और) छोटे देवताओं के साथ, हम भी विश्व-प्रमुख, तटस्थ देवता के इस स्तूप का विस्तार करेंगे।" (15) (879)
वह स्तूप जो केवल रत्नों से बना था, उन्होंने उसके शीर्ष पर सोने का पानी चढ़ा दिया। उन्होंने बुद्ध के स्तूप की ऊँचाई भी एक (पूरा) लीग बढ़ा दी। (16) (880)
फिर चार मील (ऊंचाई में) ऊपर उठते हुए वह बुद्ध-स्तूप (इतना) चमक उठा। वह उगते हुए सूर्य की किरणों की तरह सभी दिशाओं को प्रकाशित करता था। (17) (881)
(तब) कुंभण्डों ने आपस में इस प्रकार परामर्श किया: "लोग और देवता, नागदेव और गरुड़ (882)
उन्होंने स्वयं उनके लिए, जो बुद्धों में श्रेष्ठ हैं, एक शानदार स्तूप का निर्माण किया। हमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए; सावधान रहना चाहिए, (और) छोटे देवताओं के साथ, (883)
हम भी विश्वप्रमुख, तटस्थ बुद्ध के इस स्तूप का विस्तार करेंगे। हम बुद्ध के स्तूप के संपूर्ण भाग को रत्नों से ढक देंगे। (884)
उन्होंने बुद्ध स्तूप की ऊँचाई भी एक (पूरी) लीग बढ़ा दी। (अब) पाँच लीग (ऊँचाई में) उठकर वह बुद्ध स्तूप (तेज) चमक उठा। (885)
तब आत्माएँ478 वहाँ एकत्रित हुईं और एक दूसरे को सलाह दी (इस प्रकार): "लोग, देवता और नाग-देवता भी, गरूळ और कुंभण्ड (18)479 (886)

---

477 पाठ sañcālesi BJTS के साथ PTS sañjālesi 478 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया" 479 शाब्दिक अर्थ, "गुणी"

उन्होंने स्वयं विश्व-प्रमुख, तटस्थ देवता के लिए एक शानदार स्तूप का निर्माण किया। हमें लापरवाह नहीं होना चाहिए; सावधान रहें, (और) छोटे देवताओं के साथ, (19) (887)
हम भी विश्व-प्रमुख, तटस्थ बुद्ध के इस स्तूप का विस्तार करेंगे। हम बुद्ध के स्तूप के पूरे भाग को क्रिस्टल से ढक देंगे। (20) (888)
उन्होंने बुद्ध स्तूप की ऊँचाई भी एक (पूरी) लीग बढ़ा दी। (अब) छह 480 लीग (ऊँचाई में) उठकर वह बुद्ध स्तूप (तेज) चमक उठा। (21) (889)
तब संगीत अप्सराएँ481 एकत्रित हुईं (जिन्होंने) एक दूसरे को (इस प्रकार) सलाह दी: "मनु से उत्पन्न, और देवता, नागदेव, कुंभण्ड, गुयहक*482 (22) (890)
सभी ने बुद्ध के स्तूप का निर्माण किया; हमने इस संबंध में कुछ नहीं किया। हम भी विश्व-प्रधान, तटस्थ व्यक्ति के इस स्तूप का विस्तार करेंगे।" (23) (891)
उन्होंने सात रेलिंग बनाईं और उसके लिए खंभे भी बनाए। फिर उस स्तूप को संगीत अप्सराओं ने पूर्णतः सोने से मढ़ दिया। (24) (892)
(अब) सात मील ऊँचा वह बुद्ध स्तूप (तेज रोशनी से) जगमगा रहा था। दिन और रात में कोई अंतर नहीं रह जाता था; वहाँ हमेशा (उसकी तेज) रोशनी रहती थी। (25) (893)
इसकी चमक वास्तव में चंद्रमा, सूर्य और तारों को भी मात देती थी। दिन के समय वह दीपक चारों ओर सौ मील तक जगमगाता रहता था। (26) (894)
उस समय, जो भी लोग

---

480 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में, मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हज़ार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेज़ी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हज़ार कंद (भाग, अंश, पिंड, एक छोटा माप), सौ भेंदु (लंबा? मोटा?)।" 481 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई भिन्नताओं के साथ गेंदु लिखा है। कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक स्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी। 482 येनिच्चका, बीजेटीएस सिंहली व्याख्या कामाती तनका के अनुसार।

वे उस स्तूप की पूजा कर रहे थे (वहाँ) उन्हें उस स्तूप पर चढ़ना नहीं पड़ता था; वे (बस) हवा में ही ऊपर उठे हुए थे। (27) (895)
उनके झंडे या फूलों की मालाएँ (वहाँ) देवताओं द्वारा स्थापित आत्मा484 अभिसममाता द्वारा (हवा में) अर्पित की गईं। (28) (896)
वे आत्मा को नहीं देख सके485 (वहाँ); वे केवल उड़ते हुए पुष्पमालाओं को देखते हैं। उन्हें इस तरह जाते हुए देखकर, वे सभी अच्छी अवस्थाओं की ओर बढ़ते हैं। (29) (897)
बुद्ध के वचनों में आस्था रखने वाले और व्यवस्था से प्रसन्न होकर चमत्कार देखने की इच्छा रखने वाले लोग उस स्तूप की पूजा कर रहे हैं। (30) (898)
उस समय मैं एक वक्ता था और मैं हंसवती में रहता था। उन प्रसन्न लोगों को देखकर मेरे मन में यह (अच्छा) विचार आया: (31) (899)
"वह महान हैं, भगवान, जिनके पास इस प्रकार का अवशेष-गर्भ है; ये लोग भक्तिपूर्वक अपने अनुष्ठान करने में बहुत प्रसन्न हैं। (32) (900)
मैं भी विश्व-प्रमुख, तटस्थ व्यक्ति के लिए एक अनुष्ठान करूँगा, और भविष्य में, मैं उनके सिद्धांतों के उत्तराधिकारियों में से एक बनूँगा। (33) (901)
मैंने अपने ऊपरी वस्त्र को कपड़े धोने वाले व्यक्ति से धुलवाया (और) उसे बांस पर टांगकर मैंने आकाश में एक झंडा फहराया। (34) (902)
उसे पकड़कर अभिसममाता ने मेरा झंडा आकाश में उठा दिया।

---

483 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी) 484 पीटीएस उद्धालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ उद्दालोमिका° का पाठ (जिसका अर्थ लगभग समान है, देखें आरडी, एसवी) 485 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर" 486 या शायद फूल? या दोनों, अर्थात् खिले हुए पेड़? 487 खिड्डारतिया

इसे हवा में लहराते हुए देखकर, उन लोगों के बीच मैं बहुत मुस्कुराया। (35) (903)
वहाँ मेरे मन को सुख मिला और फिर मैं एक बौद्ध भिक्षु के पास गया। उस भिक्षु का आदर करते हुए मैंने पूछा कि उस झंडे का क्या परिणाम होगा। (36) (904)
उन्होंने मुझे धार्मिक आनंद के बारे में बताया, जिससे मुझे (महान) परमानंद प्राप्त हुआ। "तुम हमेशा उस झंडे के (उपहार के) फल का अनुभव करोगे।" (37) (905)
(उन्होंने कहा), "सेना, जिसके चार भाग हैं— हाथी, सैनिक, रथ, घोड़ा— सदा आपकी सेवा में रहेगी; यही ध्वज-उपहार का फल है। (38) (906)
साठ हज़ार वाद्ययंत्र489 (और) अच्छी तरह से सजाए गए केटल-ड्रम490 आपकी सेवा में स्थायी रूप से रहेंगे; यह एक ध्वज-उपहार का फल है। (39) (907)
और महिलाएं (भी, सभी) अच्छी तरह से सजी-धजी, जिनकी संख्या छियासी हजार थी, विभिन्न प्रकार के कपड़े और आभूषण पहने हुए, रत्न जड़ित बालियां पहने हुए, (40) (908)
लंबी पलकों, प्यारी मुस्कान491 और पतली कमर वाली, देखने में मनमोहक492 लगातार आपकी सेवा में तत्पर रहेंगी: यही ध्वज-उपहार का फल है। (41) (909)
तुम तीस हजार युगों तक देवताओं के संसार में आनंदित रहोगे। अस्सी बार तुम देवताओं के राजा के रूप में दिव्य शासन करोगे। (42) (910)
आप हज़ार बार ऐसे राजा बनेंगे जो (कानून का) पहिया घुमाते हैं, (और आपके पास) अनगिनत स्थानीय शासन होगा। (43) (911)

488 तिदास, अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में 489 व्याम्ह-म-उत्तम, शाब्दिक अर्थ, "(मेरे) परम (या उत्कृष्ट) महल में" 490 नव, वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है 491 शाब्दिक अर्थ, "पूजा" 492 महापक्खो, शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला"

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (44) (912)
देवताओं के लोक से गिरकर, (तुम्हारे) पुण्य कर्मों से प्रेरित होकर, (और) तुम्हारे अच्छे कर्मों से बंधे हुए तुम ब्रह्मा के संबंधी बनोगे (तब)। (45) (913)
आठ सौ मिलियन (और) अनेक दासों (और) श्रमिकों (को भी) त्यागकर, तुम भगवान गौतम की शिक्षाओं का त्याग करोगे। (46) (914)
शक्यों के सांड, गौतम संबुद्ध को प्रसन्न करके, तुम उपवान कहलाओगे, जो गुरु का अनुयायी होता है। (47) (915)
एक लाख युगों पहले किए गए कर्मों ने मुझे यहाँ अपना फल दिखाया: पूर्णतः मुक्त होकर, तीर की तरह तेज होकर, मैंने अपने दोषों को नष्ट कर दिया है। (48) (916)
जब मैं एक चक्र घुमाने वाला राजा था, चारों महाद्वीपों का स्वामी था, तब मुझे चारों दिशाओं में तीन मील तक झंडे दिखाई देते थे। (49) (917)
उस (अच्छे) कर्म के बाद से एक लाख युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ; यह ध्वज-उपहार का फल है। (50) (918)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (51) (919)
इस प्रकार पूज्य उपवान थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
उपवान थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
22. थेरा उपवान की जीवनी पर टीका।
पदुमुत्तरो नाम जिनो से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य थेरा उपवान की जीवनी का वर्णन करते हैं। इस पूज्य व्यक्ति ने पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, जिससे उन्हें बार-बार जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति मिली। वे पद्ममुत्तरा के समय एक दरिद्र परिवार में पुनर्जन्म लेकर

वयस्क हुए। ज्ञान प्राप्ति के बाद, पद्ममुत्तरा के देहांत (परिनिब्भूत) पर, उनके अवशेष ले जाए गए। जब मनुष्यों और देवताओं, नागों, गरुड़ों, कुंभण्डों, दैत्यों, दैत्यों और गंधबत्तों द्वारा सात प्रकार के रत्नों से निर्मित सात योजन का एक मंदिर स्थापित किया गया, तो उन्होंने उनके सम्मान में एक ध्वज अर्पित किया; जो उन्होंने अपने अच्छी तरह से धुले हुए वस्त्र से बनाया था। उन्होंने इसे बांस के एक लंबे टुकड़े के शीर्ष पर बांधकर विधिपूर्वक धारण किया था। उस ध्वज को धारण करके, देवताओं द्वारा मंदिर में दी जाने वाली भेंटों की देखरेख के लिए वहाँ तैनात राक्षसों के सेनापति अभिसम्मतक ने अपने अदृश्य शरीर से आकाश में ध्वज लहराते हुए मंदिर की तीन परिक्रमाएँ कीं। इसे देखकर, वह उस पुण्य कर्म से अत्यंत प्रसन्न हुआ और देवताओं और मनुष्यों के बीच अपने जन्म-जन्म चक्रों में विचरण करता रहा, और जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तब वह सावत्थी में एक ब्राह्मण परिवार में पुनर्जन्म लिया। उन्होंने उपवान नाम प्राप्त किया और यौवन प्राप्त करने के बाद, जेतवन द्वारा स्वीकार किए जाने पर बुद्ध की शक्ति देखी, उचित रूप से धार्मिक आस्था प्राप्त की, भिक्षु बन गए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) के विकास के लिए कर्म किए, अर्हतत्व प्राप्त किया और छह प्रकार के उच्च ज्ञान से संपन्न हुए। जब भी प्रतापी बुद्ध अस्वस्थ हो जाते, तब थेरा उन्हें गर्म जल और आवश्यक औषधि प्रदान करते थे। इस प्रकार गुरु की बीमारी दूर हो गई। परम पूज्य ने उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया।

52. इस प्रकार अरहतत्व की सिद्धि प्राप्त करके और सर्वोच्च पद पर आसीन होकर, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया और मन में प्रसन्नता उत्पन्न करते हुए अपने पूर्व कर्मों को प्रकट करने हेतु 'पदमुत्तरो नाम जिनो' से प्रारंभ होने वाला श्लोक बोला। वहाँ, पारगू (पार हो गए), निर्वाण प्राप्त किया, जो समस्त सांसारिक और पारलौकिक धर्मों का अंतिम लक्ष्य है। पदमुत्तरो नाम जिनो, विजेता पदमुत्तरा, महिमावान, जिन्होंने पाँच प्रकार के मारों पर विजय प्राप्त की, जिनके पास अग्नि के ठोस पिंड के समान छह रंगों वाली बुद्ध की किरणें थीं, जलित्वा (प्रज्वलित), जिन्होंने धर्म की चमक से समस्त संसार को प्रकाशित किया; संबुद्धो (स्वयं-जागृत), श्रेष्ठ बुद्ध, जो अपने ही सजग प्राणियों (पजाय) के प्रति प्रेम (सवासनाय) के कारण क्लेशा (दुराचार) की नींद से उचित रूप से जागृत (पटिबुद्धो) हुए थे, जो अज्ञान (अविज्जानिद्दूपगताय) की नींद में लीन हो गए थे; वे नेत्र कमल (नेत्तपंकजो) जो खिल चुका था (विकासित); परिनिबुतो (पूर्णतः निर्वाण में विलीन हो गए थे), खन्ध के परिनिभान के कारण बुझ गए थे, और अदृश्यता (अदासनम्) को प्राप्त कर चुके थे (गतो); इस प्रकार, यह संबंध है।

57. जंघा (पैर), सीढ़ियों की एक श्रृंखला जिसे बांधा जाता है ताकि मंदिर के निर्माण के समय ईंटों को एक दूसरे के करीब रखने में सुविधा हो।

88. सुधोतम राजकेनहम (अच्छी तरह से धोया और धूल रहित), वस्त्र धोने वाले से अच्छी तरह से धोया और शुद्ध किया; उत्तरेय्यपातम मम (मेरा ऊपरी वस्त्र), मैंने अपने ऊपरी वस्त्र को बांस के शीर्ष पर लटकाया, एक ध्वज बनाया और उसे फहराया; अम्बारे (आकाश में), मैंने ध्वज को आकाश में फहराया; यही अर्थ है। शेष तो आसानी से समझ में आ जाएगा।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा उपावन का

समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 23. थेरा तिनिसरणागमानिया

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

23. तिणिसारणागमनिया493

चंदवती नगर में, 494 मैं अपने माता-पिता की सेवा कर रहा था। मैं वहाँ अपनी अंधी माँ और पिता की निरंतर देखभाल करता था। (1) (920)
अकेले जाकर बैठते समय मेरे मन में यह विचार आया: “अपने माता-पिता का भरण-पोषण करते हुए मैं (अभी तक) संसार का त्याग नहीं कर सकता।495 (2) (921)
अंधकार में डूबा हुआ, मैं तीन आगों से झुलस रहा हूँ। हालाँकि ऐसी विकट परिस्थितियों में, (और अब) भयभीत, कोई भी मेरा मार्गदर्शन नहीं कर सकता। (3) (922)
बुद्ध का जन्म संसार में हुआ है; विजय का दर्शन प्रकाशमान है। अच्छे कर्म करने वाले लोगों द्वारा आत्मा को (अब) आगे बढ़ाया जा सकता है। (4) (923)
तीनों शरणों को अपनाकर मैं (अब से) उनकी पूर्ण रक्षा करूँगा। अच्छे कर्मों के फलस्वरूप मैं बुरी अवस्थाओं से मुक्त हो जाऊँगा। (5) (924)
बुद्ध के सबसे प्रमुख अनुयायी निसाभा नामक भिक्षु थे। उस (भिक्षु) के पास जाकर मैंने त्रिविध शरण ली।499 (6) (925)
उन दिनों सामान्य जीवनकाल (गिनती में) एक लाख वर्ष था।500

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 493 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 494 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
495 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 496 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 497 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 498 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ 499 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल) 500 शाब्दिक अर्थ, "गया"

उस पूरे समय मैंने शरण लेने की पूरी तरह रक्षा की। (7) (926)
जब मेरी अंतिम सांस चल रही थी, तब मुझे उस शरण की याद आई। उस अच्छे कर्म के फलस्वरूप मैं तावतिंसा गया। (8) (927)
मेरे अच्छे कर्मों के कारण देवताओं के लोक में अच्छी स्थिति में रहने के कारण, मैं जिस भी क्षेत्र में जन्मा, वहाँ मुझे आठ शुभ वस्तुएँ प्राप्त हुईं।501 (9) (928)
हर दिशा से मेरी पूजा की गई, जिससे मुझे तीक्ष्ण बुद्धि प्राप्त हुई। सभी देवता मेरे अधीन हो गए। मुझे अत्यधिक भोजन प्राप्त हुआ। (10) (929)
हर जगह, सुनहरे रंग का, मैं सबका प्रिय था।502 (सभी का)। अपने मित्रों के प्रति दृढ़ रहते हुए, मेरी महिमा ने महान ऊंचाइयों को छुआ। (11) (930)
मैंने देवताओं के राजा के रूप में अस्सी बार दिव्य शासन किया। (तब) दिव्य अप्सराओं द्वारा अभिषेक किए जाने पर मैंने (बहुत) दिव्य आनंद का अनुभव किया। (12) (931)
(पूर्ण) पाँच सौ बार मैंने (तब) एक सम्राट के रूप में शासन किया जो पहिया घुमाता है, (और मेरे पास) अनगिनत स्थानीय शासन था। (13) (932)
जब (मेरा) अंतिम पुनर्जन्म हुआ, तो (मेरे) अच्छे कर्मों के कारण अच्छी स्थिति में, मेरा जन्म श्रावस्ती में एक बड़े घर वाले एक समृद्ध परिवार में हुआ।503 (14) (933)
अन्य बच्चों द्वारा सामने रखे गए उस (महान) शहर से निकलते हुए, मैं एक मठ की ओर बढ़ा (खेल और हंसी की उम्मीद में)।504 (15) (934)

501 पाठ sañcālesi, BJTS के साथ PTS sañjālesi 502 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया" 503 शाब्दिक अर्थ, "गुणी" 504 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार kaṇḍas (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ bheṇḍu (लंबा? मोटा?)।"

वहाँ मैंने एक (बौद्ध) भिक्षु को देखा, जो मुक्त था और जिसकी कोई इच्छा नहीं थी। उसने मुझे शिक्षा समझाई और मुझे (तीन) शरणस्थल बताए। (16) (935)

जब मैंने "शरण" शब्द सुना, तो मुझे अपनी (पूर्व) शरण याद आ गई, और मैं एक आसन पर बैठ गया (और फिर) अरहंत पद प्राप्त कर लिया। (17) (936)

केवल सात वर्ष की आयु में ही मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। सद्गुणों को जानने वाले, नेत्रपूर्ण, संबुद्ध ने मुझे तब दीक्षा दी। (18) (937)

असंख्य युगों बाद मैंने (त्रिविध) शरण ली। उस कर्म का फल मुझे यहाँ दिखाया गया है। (19) (938)

मेरे मन में दृढ़ता से स्थापित मेरा आश्रय अच्छी तरह से सुरक्षित था। इन सब का आनंद लेने के बाद मुझे अपनी स्थिर अवस्था का एहसास हुआ। (20) (939)

आपमें से जिनके कान सुनने को हैं, आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें। मैं आप सबके सामने यह तथ्य के रूप में घोषित कर रहा हूँ कि मैंने स्वयं इस स्थिति को देखा है। (21) (940)

"बुद्ध का जन्म संसार में हुआ है; विजय का विधान प्रकाशमान है। अमरता का ढोल (अब) बजता है, दुःख के बाणों को दूर करता है। (22) (941)

यदि आप सभी (अब) अपनी पूरी शक्ति से इस अतुलनीय पुण्य क्षेत्र में स्वामित्व ग्रहण कर लें,505 (तो) आप सभी निर्वाण प्राप्त करेंगे। (23) (942)

तीन प्रकार की शरण लेकर, पाँच नैतिक नियमों का पालन करके, बुद्ध में अपने हृदय को प्रसन्न करके तुम दुखों का अंत करोगे। (24) (943)

बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में 505 में कई भिन्नताओं के साथ 'गेण्डु' लिखा है। कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।

मुझे आदर्श मानकर, थोड़े समय में सभी नैतिक सिद्धांतों का पालन करते हुए, आप सभी भी अर्हंत पद प्राप्त कर लेंगे। (25) (944)

तीन बार जानने वाला,507 महाशक्तियों से युक्त, मैं मन पढ़ने में कुशल हूँ।508 आपका अनुयायी, ज्ञानी, गुरु की शरण में पूजा करता है। (26) (945)

मैंने असंख्य युगों पहले बुद्ध की शरण ली थी। मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई ज्ञान नहीं है: यही शरण लेने का फल है। (27) (946)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) (947)

इस प्रकार पूज्य तिणिसारणागमनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

टीनिसारणागमनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

23. थेरा तिसारणगमनिया की जीवनी पर टीका।

नागरे बंधुमतिया से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य थेरा तिसारणगमनिया की जीवनी का वर्णन करते हैं। इन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, जिससे पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिली। वे विपस्सी के समय बंधुमती नगर में एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लेकर अपने नेत्रहीन माता-पिता की सेवा करने लगे। एक दिन उन्होंने सोचा, "माता-पिता की सेवा करते-करते मुझे भिक्षु बनने का अवसर नहीं मिलता: यदि मैं तीनों शरणों का सहारा ले लूँ, तो मैं दरिद्रता और इस दुष्ट जीवन से मुक्त हो जाऊँगा।" वे विपस्सी के प्रमुख शिष्य निसाभा के पास गए और तीनों शरणों का सहारा लिया। उन्होंने एक लाख वर्षों तक उनकी सेवा की और इसी कर्म के फलस्वरूप तावतिंसा में पुनर्जन्म लिया। इसके बाद, उन्होंने बार-बार जन्म लेकर देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण किया, दोनों प्रकार की

समृद्धि का आनंद लिया, और इस बुद्ध के प्रकट होने के समय, सावत्थी नगर में एक अत्यंत धनी परिवार में पुनर्जन्म लिया। जब वे सात वर्ष की आयु में ही बुद्धिवान हो गए, तो वे पुरोहितों के एक आश्रम (संघराम) में गए, जो लड़कों से घिरा हुआ था। वहाँ, एक निर्मल थेरेप ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया और शरणासन दिए। उन्होंने शरणासन ग्रहण किए, शरणासनों का स्मरण किया, पूर्व में स्वयं उनकी देखभाल की, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की और अर्हतत्व प्राप्त किया। जब उन्होंने अर्हतत्व प्राप्त किया, तब भगवान बुद्ध ने उन्हें दीक्षा दी।

106. अरहतत्व प्राप्त करने और दीक्षा लेने के बाद, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया और नागरे बंधुमतिया से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि मन में प्रसन्नता प्रकट कर सकें। वहाँ, मातु उपात्थाको अहम (मैं अपनी माता का सहायक था), मैं बंधुमती नगर में अपने माता-पिता की सेवा करने वाला सहायक था; इस प्रकार संबंध स्थापित होता है।

108. तमंधकारविहिता (अंधकार से अंधा) भ्रम के अथाह अंधकार से ढका हुआ; तिविधग्गीहि दयहरे (वे तीन प्रकार की आग से जल गए) सभी प्राणी कामवासना की आग, क्रोध की आग और भ्रम की आग से जलकर झुलस गए; इस प्रकार, संबंध है।

114. अष्टहेतु लभमहम (मुझे आठों कारण प्राप्त होते हैं), मुझे वे आठ परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं जो सुख के कारण थीं; यही इसका अर्थ है। शेष अर्थ तो आसानी से समझ में आ जाता है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा तिसरनागमानिया का
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 24. थेरा पंचशीलसमादानिय

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

24. पंचसीलासमादानिया 509

चंदवती नगर में,510 मैं उस समय एक सेवक था। दूसरों की सेवा में बंधा होने के कारण मैं संसार का त्याग नहीं कर सका (अभी तक): (1) (948)

“घोर अंधता में घिरा होने के कारण मैं तीन अग्नियों से झुलस रहा हूँ।511 मैं किस रणनीति से (इस संसार से) मुक्त हो सकता हूँ? (2) (949)

---

506 येनिच्चका, बीजेटीएस सिंहली व्याख्या कामती तनका के अनुसार 507 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (आरडी., एसवी देखें) 508 पीटीएस उद्धालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ उद्दालोमिका° का पाठ (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें) 509 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 510 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, डीपीपीएन II: 1162 देखें। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

511 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मुझे वे चीजें नहीं दी जा सकतीं; मैं एक दयनीय सेवक हूँ। तो फिर मैं पाँच (बुनियादी) नैतिक उपदेशों की रक्षा और पालन क्यों नहीं करता? (3) (950)

निसाभा ऋषि अनोमदस्सी के अनुयायी हैं। उनसे संपर्क करने के बाद मैं पाँच नैतिक प्रशिक्षण उपदेशों को अपनाऊंगा।” (4) (951)

उन दिनों सामान्य जीवनकाल (पूर्ण) एक लाख वर्ष था। उस पूरे समय मैंने पाँच नैतिक सिद्धांतों का पूर्णतः पालन किया। (5) (952)

जब मेरी मृत्यु का समय आया तो सभी देवताओं ने मुझे इस प्रकार सांत्वना दी: “हे सौभाग्यशाली, इस एक हजार घोड़ों वाले रथ द्वारा तुम्हारी सेवा की जाएगी।” (6) (953)

अपने अंतिम श्वास लेते समय, मेरे हृदय में उन (पाँच) नैतिक नियमों की याद आई। उस अच्छे कर्म के फलस्वरूप मैं तावतिंसा गया। (7) (954)

तीस बार देवताओं के राजा के रूप में मैंने वहाँ दिव्य शासन किया। दिव्य अप्सराओं द्वारा अभिषेक किए जाने पर मैंने बहुत दिव्य आनंद प्राप्त किया। (8) (955)

मैंने (पूरी तरह से) पाँच सौ बार एक सम्राट के रूप में शासन किया जो पहिया घुमाता है, (और मेरे पास) अनगिनत स्थानीय शासन था। (9) (956)

देवताओं की दुनिया से गिरकर, (मेरी) पवित्र जड़ों से प्रेरित होकर, मेरा जन्म वैसली में एक बड़े घर वाले एक समृद्ध परिवार में हुआ।513 (10) (957)

जब बरसात का मौसम शुरू हुआ, तो विजेता का विधान चमक उठा। मेरी माँ और मेरे पिता ने भी पाँच नैतिक उपदेशों को अपनाया। (11) (958)

---

512 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करने वाला," यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े और उससे बने ऊपरी वस्त्र दोनों को संदर्भित करता है। 513 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

और मैंने (उस शब्द को) “नैतिक” सुनकर अपनी (भूतकाल की) नैतिकता को याद किया। मैं एक आसन पर बैठ गया (और) अरहंत पद प्राप्त किया। (12) (959)

यद्यपि मैं (केवल) पाँच वर्ष का था, मैंने (अपना) अरहंत पद प्राप्त किया। सद्गुण को जानने वाले, दृष्टिहीन बुद्ध ने (तब) मुझे वहाँ दीक्षा दी। (13) (960)

उन पाँच (बुनियादी) नैतिक सिद्धांतों की पूर्णतः रक्षा करते हुए, अनगिनत युगों तक मैं किसी भी कष्टदायी स्थान पर नहीं गया। (14) (961)

मुझे उन (पांच) नैतिक उपदेशों के कारण (महान) प्रसिद्धि मिली। दस मिलियन युगों तक बात करने के बाद भी मैं उसका केवल एक अंश ही बता सकता हूँ।514 (15) (962)

पाँच नैतिक सिद्धांतों का पालन करने से मुझे तीन (अच्छे) परिणाम प्राप्त हुए:515 मुझे दीर्घायु, प्रचुर भोजन और तीक्ष्ण बुद्धि प्राप्त हुई। (16) (963)

(मेरा) उत्कृष्ट मानवीय कार्य अब सभी के सामने घोषित किया जाता है। जन्म-जन्मांतर करते हुए मुझे वे (तीन अच्छे परिणाम) प्राप्त होते हैं।516 (17) (964)

यदि विजेता का कोई शिष्य अपने पूरे जीवन भर असीम नैतिक नियमों में आनंदित रहे, तो उसका परिणाम कैसा होगा? (18) (965)

मैंने, एक बुद्धिमान सेवक होने के नाते, पाँच सिद्धांतों517 का भली-भांति पालन किया। उस नैतिक अनुशासन के कारण आज मैं हर बंधन से मुक्त हूँ518। (19) (966)

मैंने असंख्य युगों पहले पाँच नैतिक नियमों की रक्षा की थी।

514 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ। 515 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (gī tel)। 516 शाब्दिक अर्थ, "गया"। 517 BJTS के साथ PTS के लिए sañcālesi पढ़ना sañjālesi। 518 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"।

मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है: यही पाँच उपदेशों का फल है।519 (20) (967)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (21) (968)
इस प्रकार पूज्य पंचशीलसमादानीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
पंचसिलसमदानीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
24. थेरा पंचशीलसमादानिया की जीवनी पर टीका।
नागरे चंदावतीया से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा पंचशीलसमादानिया की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्मों का संचय किया, और इस-उस जन्म में अनोमदस्सी के समय किसी परिवार में पुनर्जन्म लिया। पिछले जन्म में किए गए पाप के कारण वे दरिद्र हो गए, और भोजन-पानी न मिलने पर मजदूरी करके जीवन व्यतीत किया। उन्हें पुनर्जन्मों के चक्र (संसार) का कष्ट अनुभव हुआ, वे भिक्षु बनने की इच्छा रखने लगे, लेकिन भिक्षुत्व प्राप्त न होने पर उन्होंने थेरा निसह, अनोमदस्सी के शिष्य, पांच प्रकार के बुनियादी अनुशासन (सिक्खापाद) का पालन किया। क्योंकि उनका जन्म दीर्घायु काल में हुआ था, इसलिए उन्होंने एक लाख वर्षों तक सर्वांगीण नैतिक उपदेशों का पालन किया। इस पुण्य कर्म के फलस्वरूप, वे जन्म-मृत्यु के चक्र में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण करते रहे और इस बुद्ध के उदय के समय वैशाली के एक अत्यंत समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लिया। अपने माता-पिता को नैतिक उपदेशों का पालन करते देख, उन्हें अपने नैतिक उपदेश का स्मरण हुआ, उन्होंने आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की, अर्हतत्व प्राप्त किया और भिक्षु बन गए।
134. अपने पूर्व कर्मों को याद करके वे प्रसन्न हुए और उन्होंने 'नागरे चंदावतीया' से शुरू होने वाला श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्मों को गंभीर उद्घोषणा (उदान) के माध्यम से प्रकट कर सकें। भातको आसहम तदा (मैं तब मजदूरी करता था) उस समय, जब मैं पुण्य कमा रहा था, मैं मजदूरी करने वाला मजदूर था; परकम्मायने युत्तो (दूसरों के लिए काम करने के कारण) मैंने पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति पाने के उद्देश्य से संन्यास नहीं लिया, क्योंकि मैं दूसरों के लिए मजदूरी करने में लगा हुआ था और उससे बंधा हुआ था।
135. महान्धकारपिहिता (घने अंधकार से आच्छादित), जो किलेसा (दुराचार) के घने अंधकार से अवरुद्ध, अवरुद्ध और आच्छादित थे; तिविधग्गीहि दायीहरे, वे तीन प्रकार की अग्नि से जल गए, जिन्हें इस प्रकार गिना जाता है: नरक की अग्नि, पेट की अग्नि और संसार की अग्नि; परन्तु, किन साधनों से, किन परिस्थितियों में, मैं स्पष्ट रूप से असंबद्ध हो जाऊँगा; यही अर्थ है।
136. देयधाम्मो (दान), मेरे पास दान करने के लिए कुछ भी उपयुक्त नहीं है, जैसे भोजन, पेय आदि; इसके अभाव में, मैं, वराको, दरिद्र, भटको (मजदूर), मजदूरी करने वाला, जीवनयापन करने वाला; यन्नूनहम पंचसीलम रक्खेय्यं परिपूर्णयम् (यदि मैं पाँच नैतिक नियमों का पालन करूँ और उन्हें सर्वथा पूर्ण करूँ तो क्या होगा?), यदि मैं पाँच नैतिक नियमों का पालन करने और उन्हें सर्वथा पूर्ण करने का दायित्व ग्रहण कर लूँ, और उनकी अच्छी तरह देखभाल करूँ और उनकी उचित रक्षा करूँ तो अच्छा होगा; यही अर्थ है।
148. स्वाहम् यसमनुभविम (कि मैंने प्रतिष्ठा प्राप्त की), उन नैतिक उपदेशों को धारण करने की शक्ति के कारण, मैंने देवताओं और मनुष्यों के बीच अपार प्रतिष्ठा प्राप्त की; यही अर्थ है। कित्तये (घोषणा कर सकते हैं), करोड़ों युगों तक भी उन नैतिक उपदेशों के फल की घोषणा करने पर, केवल एक अंश ही प्रकट हो सकता है; यही अर्थ है। शेष तो आसानी से समझ में आ जाता है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा पंचशीलसमादानिया का
समाप्त हो गया है

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 25. थेरा अन्नसांसावका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

25. अन्नसंसावक 520

मैंने बाज़ार में विचरण करते हुए स्वर्णमय संबुद्ध को देखा, मानो वह सोने का कोई दुर्लभ आभूषण हो, बत्तीस महान चिह्नों से सुसज्जित, सिद्धार्थ, जगत का दीपक, अवर्णनीय और अद्वितीय, शांत, तेजस्वी (बुद्ध), और मुझे वहाँ परम आनंद प्राप्त हुआ। (1-2) (969-970)

उनके साथ समय बिताते हुए मैंने महान ऋषि संबुद्ध को भोजन कराया। दयालु और रक्षक ऋषि ने तब मुझे धन्यवाद दिया। (3) (971)

परम करुणावान, परम सांत्वनादाता बुद्ध में अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए, मैं स्वर्ग में युगों तक रोमांचित रहा। (4) (972)

उस समय जब मैंने दान दिया था, तब से लेकर अब तक के चौरानवे युगों में मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है: यही भोजन देने का फल है। (5) (973)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) (974)

इस प्रकार पूज्य अन्नसंसावक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

---

519 शाब्दिक रूप से, "योग्य" 520 अपदान संख्याएँ {फैंसी कोष्ठकों} में दी गई हैं, जो BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं।

अन्नसंसावक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

25. थेरा अन्नसंसावक की जीवनी पर टीका

सुवन्नवन्नम सम्बुद्धम् से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य थेरा अन्नसंसावक की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, पुनर्जन्मों के चक्र (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया, और इस-उस जन्म में एक परिवार में, प्रतापी सिद्धार्थ के समय में पुनर्जन्म लिया। उन्होंने प्रतापी सिद्धार्थ को बत्तीस गुणों से परिपूर्ण, एक फ़ादम लंबी किरणों से जगमगाते हुए और भिक्षा के लिए विचरण करते हुए देखा। वे श्रद्धापूर्वक प्रसन्न हुए, प्रतापी सिद्धार्थ को अपने घर आमंत्रित किया, उन्हें अपने घर ले गए और उन्हें उत्तम भोजन और पेय से संतुष्ट किया। उसी निर्मल आस्था के कारण वे वहाँ से देह त्याग कर गए, दिव्य लोक में पुनर्जन्म लिया, स्वर्गिक समृद्धि का आनंद उठाया और वहाँ से देह त्याग कर मनुष्यलोक में पुनर्जन्म लिया, मनुष्यलोक की समृद्धि का आनंद उठाया और उसके बाद वे समय-समय पर दिव्य और मानवीय समृद्धि का आनंद उठाते हुए, इस बुद्ध के प्रकट होने के समय एक विशेष परिवार में पुनर्जन्म लिया, शासन व्यवस्था से अत्यंत प्रसन्न हुए, भिक्षु बने, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की और अर्हतत्व प्राप्त किया। पूर्व में पुण्य कर्म करने के कारण वे अन्नसंसावक थेरा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

155-6. इसके बाद, उन्हें अपना पूर्व कर्म याद आया, वे प्रसन्न हुए और उन्होंने सुवन्नवन्नम से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्मों का गंभीर उच्चारण (उदान) करके प्रकट कर सकें, और कहा: "इस प्रकार, मेरे द्वारा किए गए इस पुण्य भार की शक्ति से, मैंने अर्हतत्व प्राप्त किया है।" वहाँ, सुवन्नवन्नम सम्बुद्धम् (स्वयंभूष्यम), वह स्वर्ण रंग का तेजस्वी, जिसका रंग सोने के रंग जैसा था;

वह स्वर्ण रंग सोने के रंग जैसा था; वह स्वर्ण रंग का बुद्ध सिद्धार्थ; यही अर्थ है। गच्छन्तम अंतरापने (विक्रय दुकानों के बीच से जाना), व्यापारियों की दुकानों की पंक्तियों के बीच गली में जाना; काञ्चनाग्हियासम्कासम (मूल्यवान स्वर्ण द्वार के समान), स्वर्ण द्वार के समान; बत्तिम्सवरलक्खनम (बत्तीस उत्कृष्ट गुण), बत्तीस शुभ लक्षणों (लक्खन) से युक्त; लोकपज्जोतम (संसार का प्रकाशमान दीपक), जो समस्त संसार का प्रकाशमान दीपक बन गया है; अप्पमेय्यम (असीमित), माप से रहित; अनोपमम (अद्वितीय), उदाहरण रहित; जुटिन्धरम (तेजवान), बुद्ध सिद्धार्थ के दर्शन प्राप्त, किरणों से दीप्तिमान, नीले, सुनहरे पीले आदि छह प्रकार की बुद्ध किरणों के वाहक; परमम (पूर्ण), परम उत्साह, अलत्तम (मैंने प्राप्त किया), मैंने ग्रहण किया; इस प्रकार, यह संबंध है। शेष तो आसानी से समझ में आ जाता है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा अन्नसंसावक का
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 26. थेरा धुपादायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स
26. धूपदायक 521

मैंने विश्व के सर्वश्रेष्ठ, धन्य और तटस्थ सिद्धार्थ की कुटिया के लिए अत्यंत निर्मल मन से धूप दी। (1) (975)
मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूँ, चाहे वह मनुष्य का हो या दिव्य, मैं उन सबका प्रिय हूँ: यही धूप देने का फल है। (2) (976)
उस समय जब मैंने उसे वह धूप दी थी, तब से लेकर अब तक के चौरानवे युगों में मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है: धूप देने का यही फल है। (3) (977)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) (978)
इस प्रकार पूज्य धूपदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
धूपदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
26. धूपदायक की जीवनी पर टीका।
सिद्धार्थस भगवतो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य धूपदायक थेरा की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया, और इस या उस जन्म में, प्रतापी सिद्धार्थ के समय में एक परिवार के घर में पुनर्जन्म लिया, प्रतापी सिद्धार्थ के प्रति श्रद्धावान हुए, और प्रतापी सिद्धार्थ के सुगंधित कक्ष में चंदन, सुगंधित अगरबत्ती (अगरू), गहरे सुगंधित चंदन (कालानुसारी) आदि अनेक प्रकार की धूप अर्पित की। उस पुण्य कर्म के कारण, उन्होंने देवताओं और मनुष्यों दोनों के बीच समृद्धि का आनंद लिया, जिस भी जन्म में वे पैदा हुए, उसमें अर्पण योग्य बने, जब यह बुद्ध प्रकट हुए, तब उनका पुनर्जन्म एक पारिवारिक घर में हुआ, पुण्य के भार के बल पर वे बुद्ध युग में भिक्षु बने, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की,

अर्हतत्व प्राप्त किया, और धूप अर्पण करने के पुण्य के कारण वे थेरा धूपदायक के नाम से सर्वत्र प्रसिद्ध हुए। अर्हतत्व की प्राप्ति पर, उन्होंने अपने पूर्व कर्म को याद किया, प्रसन्न हुए, और अपने पूर्व कर्मों को इंगित करने के लिए सिद्धार्थस भगवतो से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। सिद्धार्थस भगवतो (महिमावान सिद्धार्थः), वे सिद्धार्थस थे, जो महिमावान थे, जो सिद्ध थे, सर्वगुण संपन्न थे, सर्वज्ञ ज्ञान आदि गुणों से युक्त थे, और प्रेरणा देने की इच्छा रखते थे; उस महिमावान सिद्धार्थ को, जो यश और अन्य गुणों से परिपूर्ण हैं, समस्त जगत में सबसे श्रेष्ठ हैं; तादिनो (ऐसे व्यक्ति को), ऐसे व्यक्ति को या उनके द्वारा, जो स्वभाव से सुखी और असुखद दोनों में अविचल हैं; यही अर्थ है। शेष का अर्थ स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा धूपदायाका का

समाप्त हो गया है

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 27. थेरा पुदीनपूजक

---

27. पुलिनपूजक 522

मैंने पुरानी रेत को खोदकर निकाला और विपस्सी भगवान के उत्कृष्ट वृक्ष,523 बोधि वृक्ष के चारों ओर (शुद्ध) साफ रेत बिखेर दी। (1) (979)

उस रेत का दान करने के बाद से 91 युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला; यही रेत दान करने का फल है। (2) (980)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 521 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। {फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 522 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 523 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

तैंतीस युग पहले मैं राजा महापुलिन था,524 लोगों का विजेता, एक चक्र-चालक, महान शक्ति वाला। (3) (981)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) (982)

इस प्रकार पूज्य पुलिनपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पुलिनपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

27. थेरा पुलिनापूजक की जीवनी पर टीका।

विपस्सिस्सा भगवतो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा पुलिनापूजक की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया, और इस-उस जन्म में, तेजस्वी विपस्सी के समय में एक परिवार में पुनर्जन्म लिया। अपने शासन में अत्यंत धर्मपरायण स्वभाव के कारण, उन्होंने मंदिरों और बोधि वृक्षों के परिसर से पुरानी रेत हटाकर मोती के समान हल्के पीले रंग की नई रेत बिखेरी और मंदिर को सुशोभित किया। इस कर्म के कारण, उनका जन्म दिव्य लोक में हुआ; वहाँ उन्होंने कई योजन आकार के, रत्नों से जगमगाते स्वर्ण महल में दिव्य आनंद का अनुभव किया। वहाँ से मृत्यु के बाद, वे मानव जगत में सात प्रकार के रत्नों से संपन्न विश्वराज बने, मानव सुख का आनंद लिया और पुनर्जन्मों के चक्र में विचरण करते हुए एक समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लिया। जब ये बुद्ध प्रकट हुए, तो वे धर्मपरायणता के मार्ग पर चलते हुए भिक्षु बने, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की और अर्हतत्व प्राप्त किया। वे पुलिनापूजक थेरा नाम से प्रसिद्ध हुए, जो उनके द्वारा किए गए पुण्य कर्म के नाम के समान था।

165. अपने पूर्व कर्मों को याद करके वे प्रसन्न हुए और उन्होंने विपस्सिस्सा भगवतो से शुरू करते हुए एक श्लोक का उच्चारण किया, जिसमें उन्होंने अपने पूर्व कर्मों का वर्णन किया। वहाँ उन्होंने अनेक प्रकार के कर्म देखे; इस प्रकार वे विपस्सि थे; या उन्होंने एकांत में (या

अलग-अलग) कर्म देखे; इस प्रकार वे विपस्सि थे; या उन्होंने अपने और दूसरों के लाभ जैसे लाभों को अलग-अलग देखा; इस प्रकार वे विपस्सि थे; या उन्होंने शब्दकोशीय, पूर्णतः आध्यात्मिक आदि महत्वों को अलग-अलग देखा; इस प्रकार वे विपस्सि थे; विपस्सिस्सा बोधिया पादपुत्तमे (विपस्सि के परम श्रेष्ठ बोधि वृक्ष पर), उस विपस्सि बुद्ध के परम श्रेष्ठ बोधि वृक्ष के गोलाकार पंडाल में; पुराणपुलिनम् (पुरानी रेत) आकिरिम (बिखरी हुई), पुरानी रेत को फेंककर मैंने शुद्ध पीली रेत बिछाई। शेष तो आसानी से समझ में आ जाता है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा पुलिनापूजका का

समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 28. थेरा उत्तिया

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

28. उत्तिया

उस समय मैं चंदाभागा नदी के किनारे मगरमच्छ था। भोजन की तलाश में मैं नदी के किनारे चला गया। (1) (983)

उस समय स्वयंभू सिद्धार्थ, जो मनुष्यों में श्रेष्ठ थे, उस नदी को पार करने की इच्छा से नदी के किनारे पहुँचे। (2) (984)

जब संबुद्ध आ गए तो मैं भी उसी स्थान पर गया। वहाँ पहुँचकर मैंने संबुद्ध से ये (कृपापूर्ण) शब्द कहे: (3) (985)

“हे महान वीर, मुझ पर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें नदी पार ले चलूँगा। यह मेरे पूर्वजों का क्षेत्र है; हे महान ऋषि, दया करो।” (4) (986)

मेरी ज़ोर से गुर्राहट सुनकर महान ऋषि (तब) मुझ पर चढ़ गए। हँसी से भरे दिल से मुस्कुराते हुए मैंने विश्व-प्रमुख को पार कराया। (5) (987)

तब सिद्धार्थ नामक वह विश्व प्रमुख नदी के दूसरे किनारे पर चला गया।

---

524 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

वहाँ मुझे सांत्वना दी: “तुम अमरता (अवस्था) प्राप्त करोगे।” (6) (988)

उस शरीर से विदा होने के बाद मैं देवताओं के लोक में गया। अप्सराओं से घिरा हुआ मैंने (बहुत) दिव्य आनंद का अनुभव किया। (6) (989)

मैंने सात बार देवताओं के राजा के रूप में (वहाँ) दिव्य शासन किया। तीन बार चक्र चलाने वाले राजा के रूप में मैं (संपूर्ण) पृथ्वी का स्वामी था। (7) (990)

एकांत में बंधे हुए, मैं चतुर और आत्मसंयमी हूँ। मैं अब संबुद्ध की महान शिक्षाओं में अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ। (8) (991)

जब से मैंने मनुष्यों के बैल को (इस प्रकार) पार कराया है, तब से चौरानवे युगों में मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है; यही पार कराने का फल है। (992)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) (993)

इस प्रकार पूज्य उत्तिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उत्तिया थेरा की कथा का अंत हो गया है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

28. थेरा उत्तिया की जीवनी पर टीका

चंदभागानादी तीरे से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा उत्तिया की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए और पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित किए। इस या उस जन्म में, वे तेजस्वी सिद्धार्थ के समय चंदभागा नदी में मगरमच्छ के रूप में पुनर्जन्म लिए। सिद्धार्थ को नदी के किनारे आते देख, मगरमच्छ प्रसन्न हो गया और उन्हें नदी पार ले जाने की इच्छा से किनारे के पास लेट गया। सिद्धार्थ ने मगरमच्छ पर दया करके उसके पीठ पर पैर रख दिए। मगरमच्छ प्रसन्न और उत्साहित हो गया, जोश से भर गया और धारा को तेजी से पार करते हुए सिद्धार्थ को नदी पार ले गया। भगवान बुद्ध ने इसकी पवित्रता का ज्ञान प्राप्त कर यह भविष्यवाणी करते हुए प्रस्थान किया: "यह मगरमच्छ यहाँ से मरकर देवताओं के लोक में पुनर्जन्म लेगा; वहाँ से यह बार-बार पुनर्जन्मों (संसार) के चक्र में विचरण करेगा और चौरानवे युगों (कप्पा) तक निर्वाण प्राप्त करेगा।"

इस प्रकार, मगरमच्छ अपने बार-बार के पुनर्जन्मों के चक्र में भटकता रहा, केवल उत्तम जन्मों में ही, और इस बुद्ध के प्रकट होने के समय, सावत्थी में एक ब्राह्मण के पुत्र के रूप में पुनर्जन्म लिया। उन्होंने उसका नाम उत्तिया रखा। वयस्क होने पर, वह एक विचरणशील तपस्वी बन गया और मन ही मन कहने लगा, "मैं अमर शांति (अमता) की खोज करूंगा।" एक दिन उसकी मुलाकात प्रतापी बुद्ध से हुई, जिनके पास जाकर उसने उन्हें प्रणाम किया, धर्म का प्रवचन सुना, धार्मिक आस्था का उचित ग्रहण किया, शासन (शासन) में भिक्षु के रूप में दीक्षा ली, लेकिन नैतिक रूप से गलत विचारों से पूर्णतः शुद्ध न होने के कारण वह विशिष्ट पद प्राप्त करने में असमर्थ रहा। एक अन्य भिक्षु को विशिष्टता प्राप्त करते हुए और दूसरे भिक्षु को भविष्यवाणी (व्याख्यान) करते हुए देखकर, उसने गुरु के पास जाकर संक्षेप में सलाह मांगी। गुरु ने उन्हें संक्षेप में यह सलाह भी दी: "हे उत्तिया! अतः, यहाँ तुम्हें प्रारंभ से ही स्वयं को शुद्ध करना चाहिए," और आगे कहा। उन्होंने गुरु की सलाह का पालन किया और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपश्यना) विकसित करना शुरू किया। जब उन्होंने आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि विकसित करना शुरू किया तो उन्हें रोग हो गया। रोग होने पर उन्हें पश्चाताप हुआ, उन्होंने किए गए प्रयास के मूल को जाना, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपश्यना) विकसित की और अर्हतत्व प्राप्त किया।

169. इस प्रकार अपने कर्मों के भार के अनुरूप अर्हतत्व का फल प्राप्त करके, उन्होंने अपने पूर्व कर्म को याद किया, प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए चंदभागनादी तीरे से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया। वहाँ, चंदभागनादी तीरे (संभागा नदी के किनारे, यह गर्जना करती और ध्वनि उत्पन्न करती हुई, चंद्रमा के प्रकाश से जगमगाती हुई, चारों ओर निर्मल स्वच्छ जल से भरी हुई, प्रकाशमान, नदी तल चारों ओर शुद्ध हल्के पीले रंग की रेत से ढका हुआ; इस प्रकार चंदभागा नदी। मैं चंदभागा नदी के किनारे एक मगरमच्छ था; इस प्रकार संबंध है।

वहाँ, सुसुमारो छोटी-छोटी मछलियों के झुंडों को छोटे-बड़े टुकड़ों में काटकर मार डालता है; इस प्रकार सुसुमारा (मगरमच्छ); भयंकर मछली, घड़ियाल; यही अर्थ है। सभोजन-पसुतो (अपने भोजन के प्रति समर्पित), मैं अपने चरागाह में अपने पोषण के प्रति समर्पित और व्यस्त था; नदीतित्थम अगच्छा'हम (मैं नदी के किनारे गया), प्रतापी के आगमन के समय मैं नदी के किनारे गया और वहाँ पहुँचा।

170. सिद्धार्थो ताम्ही समये (उस समय, सिद्धार्थ) उस समय जब मैं तट पर पहुँचा, तो परम पूज्य सिद्धार्थ, जो समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ और सबसे बड़े हैं, स्वयंभू (जो स्वयं ही प्रकट हुए थे), वे परम पूज्य, जो स्वयं ही बुद्ध बनकर अस्तित्व में आए, नदी पार करने की इच्छा से नदी तट की ओर बढ़े।

172. पेट्टिकम विसयम मयहम (मेरे पैतृक प्रभाव क्षेत्र), यह महान शक्ति का पारगमन हर बार उनके आगमन पर (या किसी भी और हर आगमन पर), मेरे पिता, दादा और पीढ़ी दर पीढ़ी द्वारा लाया गया; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

173. मामा उग्गज्जम सुत्व (मेरी पेशकश सुनकर, प्रतापी, महान ऋषि, सवार हुए), मेरी पेशकश सुनकर स्वेच्छा से आगे आए; यही संबंध है। बाकी का अर्थ स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा उत्तिया का
समाप्त हो गया है

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 29. थेरा एकांजलिका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

29. एकंजलिका 525

मैंने सुनहरे संबुद्ध को बाजार से गुजरते हुए देखा, विपस्सी, शीर्ष कारवां नेता, पुरुषों में वीर, (महान) मार्गदर्शक,526 अनभिज्ञ-संरक्षक,527 तटस्थ व्यक्ति।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 525 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 526 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
527 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

हे महान वाद-विवादकर्ता, हे महान ऋषि, (और) प्रसन्न होकर, मन की प्रसन्नता से, मैंने एक बार अपने हाथ जोड़े। (1-2) (994-995)
जब से मैंने एक बार हाथ जोड़े हैं, तब से इक्यावन युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है; यही प्रणाम करने का फल है। (3) (996)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) (997)
इस प्रकार पूज्य एकंजलिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
एकंजलिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टिप्पणी अनुवाद: यू लू पे विन
29. थेरा एकंजलिका की जीवनी पर टीका।
सुवन्नवन्नम् से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा एकंजलिका की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। इन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्म संचित किए, और इस-उस जन्म में एक परिवार में, विपस्सी बुद्ध के समय में, पुनर्जन्म लिया; बुद्धि प्राप्त करने पर, वे तीनों रत्नों के प्रति अत्यंत श्रद्धावान हो गए, भिक्षा मांगने के लिए विपश्यक विपस्सी से मिले

और श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़कर खड़े हो गए। उस पुण्य कर्म के कारण उन्हें जन्म-मृत्यु के चक्र में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण करना पड़ा, और वे सर्वत्र आदर के पात्र हो गए; दोनों प्रकार के सुखों का भोग करने के बाद, जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तब वे एक समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लिए। शासन व्यवस्था से प्रसन्न होकर उन्होंने भिक्षु का दीक्षा ली, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की और अरहत पद पर आसीन हुए। पूर्व में किए गए पुण्य कर्मों के कारण वे थेरा एकंजलिका के नाम से प्रसिद्ध हुए।
180. अपने पूर्व कर्म को याद करके और उसे हथेली पर आंवले के फल के समान देखकर, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को गंभीर उच्चारण (उदान) द्वारा प्रकट करने के लिए सुवन्नवन्नम् से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया: विपस्सिम सत्तवाहग्गम् (विपस्सी, कारवां का मुखिया) वह जो व्यापारियों को रेगिस्तान (कंटार) पार कराता और सहायता करता है; इस प्रकार, सत्तवाहो (कारवां का मुखिया); पार कराता है, पार कराता है, पार कराता है, खींचता है और रेतीले रेगिस्तान, लुटेरों के क्षेत्र, अकाल क्षेत्र, जलहीन रेगिस्तान, राक्षस क्षेत्र और कम भोजन वाले रेगिस्तान से दूर सुरक्षित भूमि तक पहुँचाता है; यही अर्थ है। वह कौन है? वह सबसे बड़ा व्यापारी है। सबसे बड़े व्यापारी, कारवां के मुखिया से समानता के कारण, यह तेजस्वी भी कारवां का मुखिया है। इसी प्रकार, वास्तव में, वह उन प्राणियों को, जो तीन श्रेणियों के ज्ञान (बोधि) की आकांक्षा रखते थे, जिन्होंने अपने पुण्य कर्मों को समेट लिया था, जन्म के रेगिस्तान, वृद्धावस्था के रेगिस्तान, रोग के रेगिस्तान, मृत्यु के रेगिस्तान, चिंता, विलाप, कष्ट, अप्रसन्नता और निराशा के रेगिस्तान और समस्त संसार के रेगिस्तान से पार कराकर निर्वाण की सूखी भूमि तक पहुँचने देते हैं; यही अर्थ है। सत्थवाहाग्गम (सर्वोच्च कारवां नेता) वह प्रमुख, सर्वश्रेष्ठ और मुख्य कारवां नेता भी हैं; इस प्रकार, सत्थवाहाग्गो (प्रमुख कारवां नेता) वह प्रमुख कारवां नेता विपस्सी, आत्मप्रबुद्ध बुद्ध हैं; यही संबंध है। नरवरं विनायकम् (उत्कृष्ट पुरुष, नेता) मनुष्यों में अथक प्रयास करने वाले हैं; इस प्रकार, नरवीर (साहसी पुरुष) उन्हें। वह अपने पुण्य कर्मों से परिपूर्ण प्राणियों को निर्वाण नगर तक विशिष्ट रूप से नेतृत्व करता है और पहुँचाता है; अतः, उसे विनयको (विशेष नेता) कहा जाता है।
181. अदन्तदमनम् तादि (अनियंत्रित प्राणियों को वश में करने वाला) वह उन अनियंत्रित प्राणियों को वश में करता है, जिनके शरीर, मुख और मन के द्वार कामवासना, क्रोध, मोह आदि जैसी विकृतियों से ग्रस्त हैं; इस प्रकार अदन्तदमनम् (अनियंत्रित प्राणियों को वश में करने वाला) वह; वांछनीय और अवांछनीय दोनों ही मामलों में अविचल होने जैसे गुणों से सुसज्जित; इस प्रकार, तादि (ऐसा) वह; महावादिम महामतिम् (महान दृष्टिधारी और महान बुद्धि वाला) अपने और दूसरों के मतधारियों के बीच, क्योंकि वह अपने समान और श्रेष्ठ व्यक्तियों से रहित है, वह अम्हावादी (महान दृष्टिधारी) है; जिसकी बुद्धि मेरु पर्वत के समान विशाल पृथ्वी के समान है, वह अम्हामति (अत्यंत बुद्धि वाला) है; वह महावादिम महामतिम् आत्मप्रबुद्ध बुद्ध, इस प्रकार, विशेष रूप से इसके साथ समानता स्थापित करता है। शेष तो सहजता से समझ में आता है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा एकंजलिका का
समाप्त हो गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 30. थेरा खोमदायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

30. खोमदायका 528

उस समय मैं बंधुमती नगर में व्यापारी के रूप में रहता था। इस प्रकार अपनी पत्नी का भरण-पोषण करते हुए मैंने अपार धन-संपत्ति के बीज बोए। (1) (998)

मैंने पुण्य कमाने के उद्देश्य से विपस्सी (जिन्हें विपस्सी शिक्षक के नाम से जाना जाता है) को एक खोमा वस्त्र दान किया।529 (2) (999)

उस खोमा वस्त्र को देने के बाद से इक्यावन युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला; यही वस्त्र देने का फल है। (3) (1000)

सत्ताईस युग पहले मैं सिंधवासंदना था, 530 सात रत्नों का स्वामी, (और) चारों महाद्वीपों का स्वामी। (4) (1001)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 528 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 529 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

530 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) (1002)

इस प्रकार पूज्य खोमदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

खोमदायक थेरा की कथा समाप्त। सारांश: सुभूति और उपवान, शरण, शीलगाहक, अन्नसंसावक, धूप, पुलिन और उत्तिया। तीसरे समूह में अंजली और खोमदयी, दस हैं। कुल मिलाकर एक सौ पचासी श्लोक कहे गए हैं। सुभूति अध्याय, तीसरा।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

30. थेरा खोमदायक की जीवनी पर टीका।

नागरे बंधुमतिया से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा खोमदायक की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस-उस जन्म में एक पारिवारिक घर में जन्म लिया। वयस्क होने पर, वे शासन के नियमों का पालन करते हुए अत्यंत धर्मनिष्ठ थे, तीनों रत्नों के प्रति समर्पित थे, सत्य को सुनते थे और विपस्सी की उपस्थिति में पवित्र मन से खोम वस्त्र अर्पित करते थे। उसी भेंट को आधार बनाकर, उन्होंने जीवन भर पुण्य कर्म किए और उसके बाद स्वर्गलोक में पुनर्जन्म लिया। छह दिव्य लोकों में बार-बार दिव्य आनंद का अनुभव करने के बाद, उन्होंने वहां से प्रस्थान किया और मानव जगत में विश्वराज आदि अनेक प्रकार की मानवीय समृद्धि का अनुभव किया। जब उनके पुण्य कर्मों का पूर्ण विकास हुआ, तो उनका पुनर्जन्म एक पारिवारिक घर में हुआ, जब इस बुद्ध का जन्म हुआ। वयस्क होने पर, उन्होंने गुरु की उपस्थिति में सत्य (धम्म) का अध्ययन किया, धार्मिक आस्था प्राप्त की, भिक्षु बने, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की और शीघ्र ही अर्हतत्व प्राप्त किया। उनके द्वारा किए गए पुण्य कर्म के नाम पर वे थेरा खोमदायक के नाम से प्रसिद्ध हुए।

184. अपने पूर्व कर्म को याद करके वे प्रसन्न हुए और उन्होंने 'नागरे बंधु मतिया' से शुरू होने वाला श्लोक बोला, जिसमें उन्होंने अपने पूर्व कर्म का वर्णन किया। यहाँ 'बंधु' का अर्थ रिश्तेदार है; जिस नगर में वे रिश्तेदार आपस में रहते हैं, उस नगर को 'बंधुमती' कहा गया है; 'रोपेमि बीजसंपदम्' (मैंने सफल बीज बोया) का अर्थ है: मैंने दान, नैतिक उपदेश आदि जैसे पुण्य के बीजों को बोया और उनकी समृद्धि स्थापित की।

जीवनी पर टिप्पणी

खोमदायका थेरा का समापन हो गया है।

तीसरे अध्याय पर टिप्पणी

सुभूति का समापन हो गया है।
चौथे पाठ पर टिप्पणी
अवसर समाप्त हो गया है।

4. कुण्डधान पर अध्याय

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 31. थेर कुंडधान

<<<< पिछला । अगला >>>>

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स
कुण्डधान अध्याय, चौथा

---

31. कुण्डधान 531

प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से मैं सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, आत्म-एकत्व प्राप्त व्यक्ति, सर्वोच्च पुरुष के पास गया, जिन्होंने एक सप्ताह एकांतवास में बिताया था। (1) (1003)
उनके उठने का समय देखकर, मैं केले के फलों का एक बड़ा गट्ठा लेकर महान ऋषि (तत्कालीन) पद्ममुत्तरा के पास पहुँचा। (2) (1004)
हे भगवान, विश्व-प्रधान, महान ऋषि, उस फल को (जो मैंने उन्हें दिया था) स्वीकार करके, (उस समय) उसे खाकर मेरे हृदय को (अत्यंत) प्रसन्नता हुई। (3) (1005)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 531 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

भोजन करने के बाद, सम्बुद्ध, अद्वितीय, कारवां-नेता, (तब) अपनी सीट पर बैठकर मेरे बारे में ये श्लोक बोले: (4) (1006)
"इस पर्वत पर स्थित जंगल में रहने वाली वे आत्माएँ, साथ ही अतीत और भविष्य की आत्माएँ भी, मेरी बातें सुनें। (5) (1007)
मैं उस व्यक्ति का विवरण दूंगा जिसने बुद्ध की (अच्छी तरह) सेवा की, जैसे शेर, पशुओं का राजा; (आप सभी) मेरी बात सुनो: (6) (1008)
यह (भविष्य में) ग्यारह बार देवताओं का राजा होगा। और चौंतीस बार वह (कानून के) पहिए को घुमाने वाला राजा होगा। (7) (1009)
एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (8) (1010)
कुछ (बौद्ध) भिक्षुओं, जो गुणी अरहंत हैं, को शाप देने के कारण, उस बुरे कर्म के फलस्वरूप उसे (बदनाम) नाम मिलेगा। (9) (1011)
उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी, धर्म की वैध संतान, वह (गौतम का) अनुयायी होगा जो कुण्डधान नाम से जाना जाएगा। (10) (1012)
एकांत में (स्वयं को) बांधकर,533 ध्यान करने वाला, समाधि-प्रेमी, गुरु को संतुष्ट करते हुए, (अब) मैं दोषों से मुक्त जीवन जी रहा हूँ। (11) (1013)
भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित,534

---

532 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
533 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह.

रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 534 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ एक ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

उनके आसपास के शीर्ष अनुयायियों में से, बुद्ध535 उस536 सभा में बैठे (और) मुझे वहाँ का टिकट537 लेने के लिए कहा। (12) (1014)
मैंने (अपना) चोगा एक कंधे पर रखा (और) विश्व-नेता की पूजा की, सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता538 के सामने मैंने (तब) पहला (ऐसा) टिकट लिया। (13) (1015)
उस कार्य के कारण, दस हजार (लोकों) को कंपाने वाले भगवान ने भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए मुझे उस सर्वोच्च स्थान पर स्थापित किया। (14) (1016)
बोझ उठाने के मेरे प्रयास ने मुझे आसक्तियों से मुक्ति दिलाई। (अब) मैं बुद्ध के युग में अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूं।539 (15) (1017)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (16) (1018)
इस प्रकार पूज्य कुण्डधान थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
आदरणीय कुण्डधान थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
31. थेरा कुण्डधान की जीवनी पर टीका।
सत्ताहम्पतिसल्लीनम् से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य थेरा कुन्दधाना की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की सेवा में समर्पित कर्म किए, पुनर्जन्मों के चक्र (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्म संचित किए, और इस-उस जन्म में हंसवती नगर के एक परिवार में, प्रतापी पद्ममुत्तरा के समय में पुनर्जन्म लिया। उपर्युक्त प्रकार से, उन्होंने प्रतापी बुद्ध के पास जाकर सत्य (धम्म) सुना, गुरु को प्रथम षडाष्टक (सलाक) लेने वालों में एक भिक्षु को सर्वोच्च स्थान देते हुए देखा, उस उच्च पद की आकांक्षा की, और अपनी उस आकांक्षा के अनुरूप पुण्य कर्म करते हुए विचरण किया। एक दिन, उन्होंने निरोध की समाधि से उठे हुए परम पूज्य पद्ममुत्तरा को आम की गुठली से सना हुआ एक बड़ा केला भेंट किया; परम पूज्य ने उसे स्वीकार किया और उसका भोजन किया। उस पुण्य कर्म के कारण उन्होंने देवताओं के बीच दिव्य प्रभुत्व प्राप्त किया और कस्सपा बुद्ध के समय पृथ्वी देवता के रूप में पुनर्जन्म लिया। दीर्घायु बुद्धों के लिए, अर्थात्, कोई नियमित अर्धमासिक उपवास (उपोसथ) नहीं होता था। इसी प्रकार, परम पूज्य विपस्सी प्रत्येक छह वर्ष के अंतराल पर उपवास (उपोसथ) करते थे। परन्तु दशबल कस्सपा प्रत्येक छह माह में विनय के 227 अनुशासनात्मक नियमों, पातिमोक्खा का पाठ करते थे। उस पातिमोक्ख के पाठ के समय, दो साथी भिक्षु, जो एक ही स्थान पर रहते थे, वहाँ यह कहते हुए गए: "हम उपवास रखेंगे (उपोसथ)।" इस पृथ्वीदेव ने मन ही मन सोचा: "इन दोनों भिक्षुओं की मित्रता अत्यंत दृढ़ है; वास्तव में यह कैसे है? क्या किसी के दखल देने से यह टूट जाएगी या बरकरार रहेगी?" वह उनके बीच अवसर की तलाश में उनसे कुछ दूर चले गए।
फिर, दो थेरों में से एक ने अपना कटोरा और वस्त्र दूसरे को सौंप दिया, और पानी की उपलब्धता वाली जगह पर जाकर स्नान किया, हाथ-पैर अच्छी तरह धोए और एक झाड़ी के पास से बाहर आया। पृथ्वी-देवता थेरे के पीछे-पीछे, कदम-दर-कदम, झाड़ी से बाहर आए। उन्होंने अत्यंत सुंदर स्त्री का रूप धारण कर लिया था, और अपने बालों को सुलझाकर, उन्हें ठीक से बांधकर, मानो अपनी पीठ पर कोमल मिट्टी लादकर, अपने वस्त्रों को संवारकर और निचले वस्त्र को पहनकर बाहर आ रहे थे। उनके सहयोगी थेरा, जो एक तरफ खड़े थे, जैसे ही उन्होंने यह बात देखी, वे अप्रसन्न हो गए और सोचने लगे, "इस भिक्षु के साथ मेरा लंबे समय से चला आ रहा घनिष्ठ संबंध अब नष्ट हो गया है; यदि मुझे ऐसे दुराचार के बारे में पता होता, तो मैं इतने लंबे समय तक उसके (या इसके) साथ संबंध नहीं रखता।" दूसरे के वापस आते ही उन्होंने कहा, "मित्र! अपना कुंड और वस्त्र वापस ले लो; मैं तुम्हारे जैसे दुष्ट व्यक्ति के साथ एक ही यात्रा पर नहीं जाऊंगा।" यह सुनकर उस विवेकशील भिक्षु को ऐसा लगा मानो दूसरे के तीन दांत वाले भाले से उसके हृदय में छेद कर दिया गया हो। इसके बाद उन्होंने अपने मित्र से कहा, "मित्र! तुम क्या कह रहे हो? मुझे याद नहीं कि मैंने इतने लंबे समय में दुक्कात् अपराध तक किया हो; फिर भी तुम मुझे अब बता रहे हो कि मैं पापी हूं; तुम्हें ऐसा क्या दिखाई देता है?" प्रतिक्रिया यह थी: "किसी और के देखने का क्या फायदा? क्यों? तुम एक जगह पर थे, एक महिला के साथ, जो इस तरह से सजी-धजी थी, और तुम दोनों साथ-साथ वहाँ से निकले।"

हालाँकि उसने अपने मित्र के आरोप के जवाब में तीन बार कहा: "मित्र! ऐसा मेरे लिए नहीं है; मैंने ऐसी कोई महिला नहीं देखी"; फिर भी दूसरे थेरे ने अपने मित्र के स्पष्टीकरण पर विश्वास नहीं किया, उसने स्वयं जो देखा उसे ही सत्य मान लिया और उसी पर कायम रहते हुए, उसके साथ उसी यात्रा पर नहीं गया, और गुरु के पास जाने के लिए दूसरे मार्ग से चल पड़ा। दूसरा भिक्षु भी गुरु के पास जाने के लिए दूसरे मार्ग से चला गया।

इसके बाद, जब भिक्षुओं का समूह दीक्षा हॉल में प्रवेश कर रहा था, तब उस भिक्षु ने उपोसथा हॉल के शीर्ष पर अपने पुराने मित्र को देखा, उसे पहचान लिया और मन ही मन कहा: "इस व्रत सभा में एक दुष्ट भिक्षु है; मैं उसके साथ व्रत नहीं रखूंगा"; वह उपोसथा हॉल छोड़कर बाहर खड़ा हो गया। फिर, पृथ्वी-देव ने मन ही मन कहा; "मुझसे बहुत हानि हुई है", एक वृद्ध भक्त के वेश में उनके समक्ष जाकर उसने पूछा: "हे पूज्यवर! मेरे स्वामी इस स्थान पर क्यों खड़े हैं?" "मैं बाहर इसलिए खड़ा हूँ क्योंकि:- "हे भक्त! एक दुष्ट भिक्षु इस उपोस्थल में प्रवेश कर गया था; मैं उसके साथ व्रत नहीं रखता।" पृथ्वीदेव ने उत्तर दिया: "हे पूज्यवर! कृपया इसे इस प्रकार न लें; यह भिक्षु सर्वांगीण शुद्ध नैतिक आचरण वाला है; मैं वही स्त्री हूँ जिसे आपने देखा था; आपके बारे में जानने के उद्देश्य से मैंने कहा था: "इन थेरों की मित्रता वास्तव में दृढ़ है, है ना? यह कार्य मैंने इसलिए किया क्योंकि मैं यह देख रही थी कि आपकी मित्रता टूटेगी या नहीं।" थेरे ने कहा: "लेकिन आप तो अच्छे मनुष्य हैं।" उत्तर था: "हे पूज्यवर! मैं पृथ्वी-देवता हूँ।" युवा देवता बोलते-बोलते ही दिव्य शक्ति से खड़े हो गए, थेरा के चरणों में गिर पड़े और उनसे क्षमा मांगते हुए कहा, "आदरणीय महोदय! कृपया मुझे क्षमा करें; थेरा में ऐसा कोई दोष नहीं है; कृपया उपोषथा संपन्न करें"; और थेरा से व्रत सभा में प्रवेश करने का आग्रह किया। तब थेरा ने उसी स्थान पर व्रत संपन्न किया। यद्यपि उन्होंने अपने पुराने मित्र के साथ मित्रता का नवीनीकरण करने के लिए एक ही स्थान पर निवास नहीं किया। उन्होंने थेरा के इस दोष के बारे में कुछ नहीं कहा। बाद में, प्रश्नकर्ता थेरा ने विपश्यना (स्पष्ट अंतर्दृष्टि) के कर्मों का पालन करते हुए अर्हतत्व प्राप्त किया।

उस कर्म के फलस्वरूप, पृथ्वी देवता दो बुद्धों के बीच के एक पूर्ण काल (एक बुद्धान्तर) तक नरक से मुक्त नहीं हुए। परन्तु यदि किसी समय वे मानव जगत में आएँ, तो किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किया गया कोई भी दोष उन पर आ पड़ेगा। उनका पुनर्जन्म सावत्थी में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ, उसी समय जब हमारे प्रतापी बुद्ध का जन्म हुआ। उन्होंने उनका नाम दानमानव रखा। यौवन प्राप्त करने पर उन्होंने तीनों वेदों का ज्ञान प्राप्त किया, गुरु के वृद्धावस्था के समय उनके सत्य (धम्म) उपदेश सुने, विधिवत श्रद्धा अर्जित की और भिक्षु बन गए। जिस दिन से उनका दीक्षा संस्कार हुआ, उसी दिन से एक सुसजपित युवती उनके साथ गाँव में प्रवेश करती थी; जब वे गाँव से बाहर जाते थे, तो वह भी उनके साथ जाती थी; जब वे अपने मठ में प्रवेश करते थे, तो वह भी उनके साथ जाती थी; जब वे खड़े होते थे, तो वह भी उनके साथ खड़ी होती थी। इस प्रकार, वह लगातार उसका पीछा करती हुई प्रतीत होती थी। थेरा उसे नहीं देख पाती थी। हालाँकि, उसके पूर्व कर्म के बुरे परिणाम के कारण, वह दूसरों को दिखाई देने लगी थी।

गाँव में चावल की दलिया भिक्षा देते समय, महिलाओं ने उनका उपहास उड़ाते हुए कहा: "आदरणीय महोदय! उबले हुए चावल का यह करछुल आपके लिए है; दूसरा करछुल हमारी इस महिला साथी के लिए है।" थेरा को बहुत दुख हुआ। मठ लौटने पर भी, नौसिखिए और युवा भिक्षु उनके चारों ओर जमा हो गए और उनका उपहास उड़ाते हुए कहा: "धान कोन्त (?) कोन्द बन गया है।" (पीटीएसडी में कोन्द, कुन्द है, एक टेढ़ा-मेढ़ा कोन्त (?) एक गंदी आदतों वाला आदमी।) फिर, उसी परिस्थिति में, उनका नाम थेरा कुन्दधान पड़ा। वह उठ खड़ा हुआ और उनके द्वारा लगाए गए आरोप (केली) को सहन न कर पाने के कारण क्रोधित हो गया और उनसे कहा, "तुम सब कुटिल (कोण्डा) हो, तुम्हारा गुरु (उपज्जा) भी कुटिल (कोण्डा) है और तुम्हारा शिक्षक भी।" तब उन्होंने गुरु को उसके बारे में बताया, "आदरणीय गुरु! कुण्डधान ने युवा भिक्षुओं के साथ अभद्र (या कठोर) शब्द कहे।" गुरु ने उसे बुलवाया और पूछा, "हे धान! क्या यह सच है कि तुम युवा भिक्षुओं के साथ कठोर शब्द कहते हो?" जब उसने उत्तर दिया, "हे प्रतापी! हाँ, यह सच है", तो गुरु ने उससे पूछा, "तुमने ऐसा क्यों कहा?" गुरु ने उत्तर दिया, "आदरणीय गुरु! मैंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि मैं निरंतर उत्पीड़न सहन नहीं कर पा रहा था।" गुरु ने आगे कहा, "तुमने आज तक अपने पूर्व कर्म का निवारण (जिरापेटि) नहीं किया है; हे भिक्षु! मत करो।" अगर आप फिर से इस तरह कठोर शब्द बोलेंगे, तो बुद्ध ने निम्नलिखित श्लोक कहे:-

किसी से भी कठोर शब्द न बोलें;
जिनसे बात की गई वे भी यही बात कहेंगे।
उसके पास लौट आना; झगड़ालू (या कलहपूर्ण)
शब्द सचमुच पीड़ादायक होते हैं; प्रतिशोध
वह उसे व्याप्त कर लेगा (या उसे प्रभावित करेगा)।
अगर कोई खुद नहीं हिलता, जैसे
तांबे के संगीत वाद्ययंत्रों के एक जोड़े के लिए

झांझों को पास-पास बजाने पर, यह एक बन गया
लगभग निर्वाण प्राप्त कर लिया है;
आपको किसी भी प्रकार का कोई विवाद (सारम्भ) नहीं है।

उन्होंने राजा कोसल से भी इस मामले पर बात की, विशेष रूप से इस बात पर कि थेरा एक स्त्री के साथ घूमता था। राजा ने अपने दूतों को यह कहते हुए भेजा: "देखो, जाकर मामले की जाँच करो"; वह स्वयं अपने कुछ साथियों के साथ थेरा के पास गया और एक तरफ खड़ा होकर देखने लगा। उस समय थेरा अपनी कढ़ाई कर रहा था। वह स्त्री भी पास ही कहीं खड़ी हुई प्रतीत हुई।

यह देखकर राजा उस स्थान पर गया जहाँ वह खड़ी थी और मन ही मन कहने लगा: "यह बात तो सच है।" जब राजा उसके पास पहुँचा, तो वह मानो थेरा की झोपड़ी में प्रवेश कर चुकी थी। राजा भी उसके साथ झोपड़ी में गया और चारों ओर देखा, तथा कुछ भी न देखकर उसने यह धारणा बनाई: "यह स्त्री नहीं है, यह उसके बुरे कर्मों का फल अवश्य होगा।" सबसे पहले तो, यद्यपि वह थेरा के पड़ोस से गुजरी, उसने थेरा को प्रणाम नहीं किया। जब उसे उसकी स्थिति का पता चला, तो वह झोपड़ी से बाहर निकली, थेरा को प्रणाम किया, एक तरफ बैठ गई और पूछा: "क्या आप भिक्षा भोजन से तृप्त नहीं हुए?" थेरा ने उत्तर दिया: "हे महाराज! यह उचित है।" राजा ने उत्तर दिया: "आदरणीय महाराज! मैं स्वामी जी का कथन समझ गया हूँ; आपको इस प्रकार के दुराचारी के साथ भटकते देखकर कौन प्रसन्न होगा? अब से आपको कहीं भी जाने की कोई आवश्यकता नहीं है; मैं आपको चार प्रकार की आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराऊँगा; कृपया अपनी बुद्धि का ध्यान रखने में लापरवाही न करें।" राजा ने थेरा को नियमित रूप से भोजन उपलब्ध कराया। थेरा ने राजा का समर्थन प्राप्त किया, पर्याप्त भोजन मिलने से उसका मन एकाग्र हो गया, उसे विपश्यना (स्पष्ट अंतर्दृष्टि) प्राप्त हुई और उसने अर्हतत्व प्राप्त कर लिया। इसके बाद वह स्त्री लुप्त हो गई।

उस समय, उग्ग नगर में विधर्मी (या विधर्मी) परिवार में रहते हुए, महासुभद्दा ने मन ही मन कहा, "हे गुरु, मुझ पर दया और करुणा करें।" उन्होंने स्वयं को उपवास में रखा, सांसारिक बंधनों से मुक्त हुए, महल के तल पर खड़े होकर सत्य की घोषणा की, "ये फूल भीतर रहने के बजाय दशबल के सिर पर छत्र (या आच्छादन) का रूप धारण कर लें! इस विचार (या संकेत) के साथ, कल दशबल और पाँच सौ भिक्षुओं को मेरा भिक्षापान ग्रहण करें!" और उन्होंने चमेली के आठ मुट्ठी फूल बिखेर दिए। सत्य धर्म का प्रचार करते समय, फूल जाकर गुरु के सिर पर छत्र का रूप धारण कर लिया। चमेली के फूलों के उस आच्छादन को देखकर, गुरु ने मन ही मन सुभद्दा का भिक्षापान स्वीकार कर लिया, और अगले दिन सूर्योदय के समय, थेरा आनंद से कहा, "आनंद! आज हम भिक्षा भोजन के लिए दूर-दूर तक भटकेंगे; साधारण (पुथुज्जन) भिक्षुओं को कुछ न देकर, सारा (सलाका) कुलीन भिक्षुओं को दे दो। थेरा ने भिक्षुओं को इस प्रकार सूचित किया: "मित्र! आज गुरु भिक्षा भोजन के लिए दूर स्थान पर जा रहे हैं; साधारण भिक्षुओं को न जाने दो, कुलीन भिक्षुओं को ही सारा (सलाका) देना चाहिए।" आनंद ने तार्किक चिंतन करते हुए कहा: "गुरु मुझे ऐसे भिक्षुओं को सारा (सलाका) देने के लिए नहीं कहते; उन्होंने मुझे केवल कुलीन (आर्य) भिक्षुओं को ही देने के लिए कहा है।" आनंद ने जाकर गुरु को यह बात बताई। गुरु ने कहा: "तुम्हारे लिए अच्छा होगा कि तुम सारा (सलाका) उस थेरा को दे दो जिसने तुम्हें इसे लाने के लिए कहा है।" थेरा आनंद ने विचार किया: "यदि कुन्दधाना को सारा (सलाका) देना उचित नहीं है, तो गुरु ने इसे मना किया होगा;" यहां कोई कारण होगा' और ****(पृष्ठ 96) से कहा कि वह बाद वाले को पर्ची दे देगा और उसके जाने का आदेश देगा। कुन्दधाना अपने जाने से पहले ही उच्च ज्ञान के आधार, चौथे ध्यान में प्रवेश कर गया, अपनी जादुई शक्ति से आकाश में खड़ा हो गया, अपना हाथ बढ़ाया और पर्ची (सलाका) को पकड़ लिया और कहा: "मित्र आनंद! इसे मेरे पास लाओ; गुरु ने मुझे समझ लिया है; गुरु ने मुझ जैसे भिक्षु को पहले लॉटरी (सलाका) लेने से मना नहीं किया। गुरु ने उस भिक्षु की जीवनी लिखकर, इस युग में लॉटरी (सलाका) लेने वालों में, सबसे पहले, उस थेरा को सर्वोच्च स्थान दिया। क्योंकि इस थेरा ने राजसी समर्थन प्राप्त करके, उचित पोषण सुविधा प्राप्त करने और स्पष्ट अंतर्दृष्टि (विपस्सना) के लिए कर्म करने के कारण एकाग्रचित्त हो गए, और उपनिषद (अरहतत्व) प्राप्त करने के लिए पर्याप्त योग्यता के कारण छह प्रकार के उच्च ज्ञान के स्वामी बन गए। इसके बावजूद, वे साधारण (पुथुज्जन) भिक्षु, जो इस थेरा के गुणों को नहीं जानते थे, उन्होंने इस प्रकार संदेह व्यक्त किया: "यह व्यक्ति सबसे पहले लॉटरी (सलाका) लेता है; ऐसा क्यों है?" उनके उस संदेह को दूर करने के लिए, थेरा आकाश में चले गए, और अपनी जादुई शक्ति का प्रदर्शन किया।उन्होंने "पंच चिंदे" से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला ताकि वे अपने अरहतत्व को उस तरीके से प्रकट कर सकें जिस तरह से अरहतत्व को प्रदर्शित किया जाना चाहिए।

1. इस प्रकार अपने पुण्य कर्मों के पूर्ण भार के अनुरूप अर्हत बनकर और सर्वोच्च पद प्राप्त करके, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया और 'सत्ताहम पटिसल्लीनम्' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि प्रसन्नतावश किए गए अपने पूर्व कर्मों को प्रकट कर सकें। वहाँ वे सात दिनों तक एकांतवास में निरोध (सम्मोहन) की अवस्था में रहे; यही इसका अर्थ है। शेष का अर्थ सरल है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा कुण्डधान का
समाप्त हो गया है।

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

32. सागत

उस समय मैं शोभिता नाम से एक ब्राह्मण पुरुष था। अपने छात्रों द्वारा सम्मानित होकर मैं आश्रम चला गया। (1) (1019)
भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित, (दाहिनी ओर) उस समय भगवान, आश्रम के द्वार से निकलते हुए, वहाँ खड़े थे, परम पुरुष। (2) (1020)
इससे बना वस्त्र।

---

535 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 536 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ 537 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (gī tel) 538 शाब्दिक अर्थ, "गया" 539 PTS sañjālesi के लिए BJTS के साथ sañcālesi पढ़ना

मैंने (तब) उन्हें देखा, संबुद्ध, शांत पुरुष, शांत अनुयायियों के साथ। अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए मैंने विश्व-नेता की प्रशंसा की: (3) (1021)
“जितने भी वृक्ष हों, वे सब दृढ़ पृथ्वी में उगते हैं। उसी प्रकार, बुद्धिमान प्राणी भी विजेता की व्यवस्था में ही विकसित होते हैं। (4) (1022)
हे ज्ञानी, कारवां-नेता, आप बहुत से लोगों को गलत रास्ते से हटा देते हैं, उन्हें सही रास्ता बताकर उनका मार्गदर्शन करते हैं। (5) (1023)
पालतू, पालतू लोगों से घिरा हुआ, ध्यान करने वाला, समाधि-प्रेमियों से, परिश्रम पर तुले लोगों से (और) शांतिप्रिय लोगों से, तटस्थ लोगों से, (6) (1024)
आप अपने सभी अनुयायियों के गुणों से सुशोभित हैं, आप तेजस्वी हैं। आपका प्रकाश उगते सूरज की तरह हर जगह फैलता है। (7) (1025)
मेरे हृदय में प्रसन्नता देखकर, भिक्षुओं की सभा में खड़े महान ऋषि पद्ममुत्तरा ने ये श्लोक कहे (तब): (8) (1026)
“मैं उस ब्राह्मण का विवरण दूंगा जिसने आनंद उत्पन्न किया है। वह एक लाख युगों तक देवताओं के लोक में आनंदित रहेगा। (9) (1027)
तुसिता स्वर्ग से गिरकर, अपनी पुण्य जड़ों से प्रेरित होकर, वह धन्य में त्याग करेगा।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 540 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 541 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
542 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 543 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

एक, गौतम का विधान। (10) (1028)
उस कर्म के फलस्वरूप (11) (1029) वह अर्हंत पद प्राप्त करेगा। वह गुरु का अनुयायी होगा और सागत के नाम से जाना जाएगा।
त्याग करने के बाद वह शरीर से किए गए बुरे कर्मों से बचेगा। शब्दों से किए गए बुरे कर्मों से बचकर वह अपनी आजीविका को शुद्ध करेगा। (12) (1030)
मैं (अब) उस तरह से जी रहा हूँ, सत्ता के तत्वों में निपुण। सभी अशुद्धियों को भली-भांति जानते हुए, मैं (अब) अशुद्धियों से मुक्त होकर जी रहा हूँ। (13) (1031)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) (1032)
ये श्लोक वास्तव में पूज्य सागत थेरा ने कहे थे।
सागत थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
32. थेरा सागत की जीवनी पर टीका।
सोभितो नाम नामेन से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा सागत की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, उन्होंने इस और उस जन्म में पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति पाने के लिए लाभकारी कर्मों का संचय किया और प्रतापी पद्ममुत्तरा के समय में एक ब्राह्मण परिवार में पुनर्जन्म लिया। सभी प्रकार के विज्ञानों में निपुणता प्राप्त करके वे सोभिता नाम से प्रसिद्ध हुए। वे तीनों वेदों, निघंडु और केतुभ वेदों, उनके वर्णानुक्रमिक विभाजनों और इतिहास के पंचम ग्रंथ के पद-दर-पद, उनकी व्याख्याओं के ज्ञाता थे तथा एक महान व्यक्तित्व के सांसारिक गुणों से भलीभांति परिचित थे। एक दिन, उद्यान द्वार से गुजरते हुए, उनकी मुलाकात महान पुरुष के बत्तीस गुणों से परिपूर्ण, तेजस्वी पद्ममुत्तरा से हुई। वे अत्यंत श्रद्धावान हो गए और अनेक प्रकार से उनकी स्तुति और गुणगान किया। उनकी स्तुति सुनकर, तेजस्वी पद्ममुत्तरा ने उन्हें यह भविष्यवाणी दी: "भविष्य में वे गौतम बुद्ध के शिष्य सागत बनेंगे।" इसके बाद उन्होंने पुण्य कर्म किए, अपने जीवनकाल तक विराजमान रहे और वहां से मृत्यु के बाद, उनका पुनर्जन्म दिव्य लोक में हुआ। एक लाख युगों (कप्पा) तक दिव्य और मानव जगत दोनों में समृद्धि का आनंद लेने के बाद, उनका पुनर्जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ, जब बुद्ध का जन्म हुआ। उनके माता-पिता प्रसन्न हुए और कहा: सुजाता (कुलीन कुल का) आया है, और उन्होंने उसका नाम सागत रखा। वे इस व्यवस्था से अत्यंत प्रसन्न हुए, भिक्षु बन गए, विपश्यना प्राप्त की और अर्हतत्व प्राप्त किया।
17. इस प्रकार पुण्य कर्मों के भार के अनुसार अर्हतत्व प्राप्त करने पर, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया, प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्मों को प्रकट करने के लिए 'शोभितो नाम नामेण' से शुरू होने वाला श्लोक पढ़ा। वहीं, जब पुण्य कर्मों का भार पूर्ण हो गया, तब वे शोभिता नाम से ब्राह्मण बन गए; इस प्रकार संबंध स्थापित हुआ।
21. विपथा उद्धरित्वाना (गलत मार्ग से खींचकर) विपरीत मार्ग से खींचकर और हटाकर, यात्रा (या गलत मार्ग) की; पथम् आचिक्खसे (आप मार्ग का संकेत देते हैं) हे सर्वज्ञ बुद्ध! आप मार्ग का वर्णन, उपदेश, प्रदर्शन, विश्लेषण और प्रकटीकरण करते हैं, जो पुण्य पुरुष की निर्वाण की प्राप्ति और यात्रा का मार्ग है; यही अर्थ है। शेष का अर्थ स्पष्ट है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा सागत का अंत हो गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

33. महा-कच्चाना 546

मैंने इसे सोने से ढककर भगवान पद्ममुत्तरा के "पदुम" नामक मंदिर में एक सिंह-सिंहासन बनवाया। (1) (1033)
रत्नों से बनी छतरी और बैल की पूंछ से बना पंखा लेकर, मैंने उन्हें (वहाँ) उस बुद्ध के लिए रखा, जो जगत के सगे-संबंधी, तटस्थ हैं। (2) (1034)
पृथ्वी भर के सभी छोटे देवता वहाँ एकत्रित हुए। "वह कर्मों के फल बताएगा।"

---

544 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित 545 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ 546 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपादान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

छतरियों और सीटों के 547 रत्नों के। (3) (1035)
जब गुरु इस प्रकार बोल रहे हों, तो हम सब कुछ सुनेंगे। हम बुद्ध के युग में बहुत आनंद उत्पन्न करेंगे।548" (4) (1036)
स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान, स्वयं-एक, सर्वोच्च व्यक्ति, सभा से घिरे हुए549 (तब) ने ये छंद कहे (मेरे बारे में): (5) (1037)
"मैं उस व्यक्ति के बारे में विस्तार से बताऊंगा जिसने मुझे यह सिंहासन दिया है, जो सोने और रत्नों से बना है; तुम सब मेरी बात सुनो: (6) (1038)
हे देवताओं के राजा, वह तीस युगों तक दिव्य शासन करेगा। वह अपने चारों ओर सौ मील के क्षेत्र को अपने प्रकाश से विजय प्राप्त करेगा। (7) (1039)
मनुष्य जगत में आकर वह चक्र चलाने वाला राजा होगा। उसका नाम पभासर होगा (और वह) महान शक्ति का स्वामी होगा। (8) (1040)
जैसे उदय हुआ सौ किरणों वाला (सूर्य), चाहे दिन हो या रात, वह क्षत्रिय अपने चारों ओर आठ हाथ तक प्रकाश फैलाएगा। (9) (1041)
एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (10) (1042)
तुसिता स्वर्ग से गिरते हुए, (अपनी) पुण्य जड़ों से प्रेरित होकर,

---

547 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

548 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 549 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 550 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

वह ब्रह्मा का संबंधी होगा; उसका नाम कच्चाना होगा। (11) (1043)

संसार का त्याग करने के बाद, वह अरहंत, निष्कलंक हो जाएगा। जगत के दीपक गौतम उसे सर्वोपरि स्थान देंगे। (12) (1044)

वह संक्षेप में प्रस्तुत समस्याओं को विस्तारपूर्वक समझाएगा। इस प्रकार उस समस्या को समझाकर वह उनकी सभी इच्छाओं को पूरा करेगा। (13) (1045)

धनवान कुल में जन्म लेकर, मंत्रों के ब्राह्मण स्वामी बनकर, मैंने अपना धन और अनाज त्यागकर बेघर होकर प्रस्थान किया। (14) (1046)

मैं संक्षेप में प्रस्तुत की गई समस्याओं को विस्तारपूर्वक समझाता हूँ। उनकी सभी इच्छाओं को पूरा करके मैं सर्वश्रेष्ठ द्विपाद प्राणी को संतुष्ट करता हूँ। (15) (1047)

मुझसे संतुष्ट होकर, वीर, आत्म-स्वरूप एक, शीर्ष व्यक्ति, भिक्षुओं की सभा में विराजमान होकर, मुझे उस सर्वोत्कृष्ट स्थान पर विराजमान किया। (16) (1048)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (17) (1049)

इस प्रकार पूज्य महाकच्चाना थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

महाकच्चाना थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

33. थेरा महाकच्चाना की जीवनी पर टीका।

पदुमुत्तरा नाथस्स से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा कच्चाना की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने और पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले अच्छे (या पुण्य कर्मों) को संचित करने के कारण, वे भी प्रतापी पदुमुत्तरा के समय एक अत्यंत धनी गृहस्थ के घर में पुनर्जन्म लेकर पुनर्जन्म लिए। विकास की आयु (या वरिष्ठता) प्राप्त करने के बाद, एक दिन उन्होंने गुरु की उपस्थिति में सत्य (धम्म) सुना, जब उन्होंने देखा कि गुरु ने उन विश्लेषकों में एक भिक्षु को सर्वोच्च स्थान दिया है जो संक्षेप में उपदेशित किसी भी बात की विस्तृत व्याख्या कर सकते हैं, तो उन्होंने भी उस पद की आकांक्षा की, दान-पुण्य आदि जैसे पुण्य कर्म किए, देवताओं और मनुष्यों के बीच अपने पुनर्जन्मों का भ्रमण किया, महाविज्ञान (विज्जाधर) के भंडार बन गए, जब तेजस्वी सुमेधा आकाश में विचरण कर रहे थे, तब वे एक घने जंगल में बैठे गुरु से मिले, अत्यंत श्रद्धावान हुए और कणिकार पुष्पों से आदर का अर्पण किया।

उस पुण्य कर्म के फलस्वरूप, उनका जन्म-जन्म का चक्र बार-बार चलता रहा और वे दशबाला कस्सपा के समय बनारस के एक परिवार में पुनर्जन्म हुए। जब बुद्ध परिनिर्वाण प्राप्त कर चुके थे, तब उन्होंने उनके सम्मान में दस हजार मूल्य की सोने की ईंटें एक स्वर्ण मंदिर की स्थापना स्थल पर अर्पित कीं और यह प्रार्थना की: "हे बुद्ध! मैं जहाँ भी पुनर्जन्म लूँ, मेरा रंग स्वर्णमय हो।" इसके बाद उन्होंने जीवन भर अच्छे कर्म किए, दो बुद्धों के बीच के अंतराल में देवताओं और मनुष्यों के बीच अपने पुनर्जन्म के चक्रों में विचरण किया और जब बुद्ध उदय हुए, तब वे उज्जैन के राजा चंदपज्जोत के निजी पुरोहित (पुरोहित) के घर में पुनर्जन्म हुए। उनके नामकरण के दिन, उनके माता-पिता ने मन ही मन कहा: "स्वर्णमय रंग का हमारा पुत्र अपने साथ अपना नाम लेकर आया है।" इसी कारण उन्हें कंचनमण्व (स्वर्ण बालक) के नाम से भी जाना जाने लगा। वृद्ध होने पर उन्होंने तीनों वेदों का ज्ञान प्राप्त किया और अपने पिता के निधन के बाद पुरोहित (गुप्त पुरोहित) का पद ग्रहण किया। अपने कुल में वे कच्चन के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

राजा चंदपज्जोत ने बुद्ध के प्रकट होने के बारे में सुना और उन्हें यह कहते हुए भेजा: "गुरुजी! आप वहाँ जाइए और गुरुजी को यहाँ ले आइए।" वे स्वयं आठवें शिष्य थे और गुरुजी के समक्ष उपस्थित हुए। गुरुजी ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। उपदेश के अंत में, उन्होंने

अपने सात शिष्यों के साथ अरहतत्व और विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त किया। तब गुरुजी ने हाथ बढ़ाते हुए कहा: "आओ! भिक्षुओं!" उसी क्षण वे साठ वर्ष के थेरों के समान हो गए, जादुई शक्तियों से निर्मित कुंड और वस्त्र धारण किए, दो उंगली चौड़ी बाल और दाढ़ी रखी। इस प्रकार अपना लाभ पूरा करने के बाद, थेर ने गुरुजी को सूचित किया: "आदरणीय गुरुजी! राजा चंदपज्जोत आपके चरणों में नमन करना चाहते हैं और धर्म का उपदेश सुनना चाहते हैं।" गुरुजी ने उत्तर दिया: "हे भिक्षु! आप स्वयं वहाँ जाइए; आपके जाने पर राजा प्रसन्न होंगे।" थेरा, स्वयं आठवें के रूप में वहाँ गया, राजा को प्रसन्न किया, अवंती के लोगों के बीच विधिवत रूप से व्यवस्था स्थापित करवाई और फिर से गुरु के समक्ष उपस्थित हुआ।

31. इस प्रकार अरहतत्व की सिद्धि प्राप्त करके और सर्वोच्च पद प्राप्त करके उन्होंने कहा: "हे भिक्षुओं! मेरे शिष्यों में, जो अर्थ का व्यापक विश्लेषण कर सकता है, वह प्रमुख है, अर्थात् महा कच्चाना", उन्होंने अपने पूर्व कर्म को याद किया और पद्ममुत्तरनाथस्स से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया ताकि पहले किए गए कर्म को प्रकट किया जा सके, या तो कमलों से ढके होने के कारण या कमल के फूलों के रूप में निर्मित होने के कारण: मंदिर, जो महिमावान के निवास के सुगंधित मठवासी कक्ष के समान श्रद्धापूर्वक अर्पित करने योग्य है; गौतमका, आलवका का मंदिर, उन राक्षसों का निवास स्थान, श्रद्धापूर्वक अर्पण किए जाने के कारण मंदिर कहलाता है; उसी प्रकार, इस तेजस्वी का निवास स्थान भी एक मंदिर कहलाता है; इसे अवशेषों के संग्रहण का मंदिर नहीं समझना चाहिए; वास्तव में, उन्होंने अवशेषों का मंदिर इसलिए नहीं बनवाया क्योंकि परमानंद प्राप्त न कर चुके तेजस्वी के भौतिक अवशेष वहाँ मौजूद नहीं थे: silāsanam kārayitvā (एक पत्थर का आसन बनवाया) पद्मा नामक उस सुगंधित कक्ष में पुष्प अर्पित करने के उद्देश्य से नीचे क्रिस्टल का पत्थर का आसन बनवाया; suvaṇṇana'bhilepayi (उस पर सोना मढ़वाया) जंबोनादा (जंबू नदी) के सोने से उस पत्थर के आसन पर विशिष्ट रूप से मढ़वाया और उसे ढकवाया; यही अर्थ है।

32. रत्नमयम् (रत्नों से निर्मित) सात प्रकार के रत्नों से निर्मित छत्र; पग्गयहा (धारण करके) मैंने बुद्ध के लिए उचित रूप से स्थापित किया, अपने सिर पर याक की पूंछ का पंखा और चामर की उत्तम सफेद पूंछ धारण की; लोकबंधुस्सा तादिनो (संसार के ऐसे सगोत्र के लिए) मैंने बुद्ध की ओर ऐसे गुण (तादि) धारण किए, जो समस्त संसार के सगोत्र के समान हैं; यही इसका अर्थ है। शेष का अर्थ सरल है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा महा कच्चाना का

समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 34. थेरा कौदायि

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

34. कालोदय 551

मैंने खिले हुए कमल, जल लिली और चमेली के फूल तोड़े और दूध में पकाए हुए कुछ चावल लेकर उन्हें गुरु (तत्कालीन) बुद्ध पद्ममुत्तरा को अर्पित किया।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 551 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

विश्व का सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ, जो उस समय यात्रा पर निकला हुआ था। (1-2) (1050-1051)

(उस समय) महान वीर ने वह दूध-चावल खाया (जो खाने में बहुत अच्छा था), और उस (कमल) फूल को लेकर वहाँ के लोगों को दे दिया। (3) (1052)

"यह उत्कृष्ट कमल सुंदर, मनमोहक और दुनिया में बहुत प्रिय है। (4) (1053)

मैं उस व्यक्ति का विवरण दूंगा जिसने मुझे यह फूल भेंट किया और दूध में पका हुआ यह चावल दिया; आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें: (5) (1054)

वह दस बार और आठ बार और दिव्य शासन करेगा। उसके कर्मों के फलस्वरूप,553 (भविष्य में) आकाश में कमल और लिली के फूलों से बना एक मंडप निर्मित होगा, जिसमें चमेली के फूल भी होंगे। (6-7) (1055-1056)

वह पच्चीस बार ऐसा राजा होगा जो (कानून के) पहिये को घुमाएगा। वह पृथ्वी पर निवास करेगा और पाँच सौ सांसारिक शासन करेगा। (8) (1057)

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (9) (1058)

अपने कर्मों से प्रसन्न होकर, अपनी उत्तम जड़ों से प्रेरित होकर, वह बुद्ध का संबंधी बनेगा।

---

552 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

553 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

शाक्यों को आनंद पहुंचाते हुए। (10) (1059)

और वह, संसार का त्याग करके, अपनी पुण्य जड़ों से प्रेरित होकर, समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए, निर्वाण को प्राप्त करेगा, निर्दोश होकर। (11) (1060)

(तब) गौतम, विश्व के रिश्तेदार, उसे विश्लेषण करने और उचित कार्य करने के लिए सर्वोपरि स्थान पर रखेंगे। (12) (1061)

परिश्रम में लीन होकर, शांत होकर,554 पुनर्जन्म के आधारों से रहित होकर,555 वह गुरु का अनुयायी होगा; उसका नाम (तब) उदयी होगा।" (13) (1062)

(अब) मेरा हृदय मुक्त हो गया है; द्वेष मन से विमुख हो गया है।556 समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए, मैं अब दोषों से मुक्त होकर जीता हूँ। (14) (1063)

मैं एक उत्साही और बुद्धिमान साधक था, मैंने सम्बुद्ध को संतुष्ट किया। और सम्बुद्ध ने प्रसन्नतापूर्वक मुझे उस सर्वोत्कृष्ट स्थान पर स्थापित किया। (15) (1064)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (16) (1065)

इस प्रकार पूज्य कालुदायी थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कालुदयी थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

34. थेरा कालुदयी की जीवनी पर टिप्पणी।

पद्ममुत्तरा बुद्धस्स से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा कालुदयी की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा की, और पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया। इस जन्म और उस जन्म में उनका पुनर्जन्म हंसवती

नगर के एक पारिवारिक घर में हुआ, जब वे पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय में थे। उन्होंने सत्य (धम्म) का पाठ सुना, जब उन्होंने देखा कि गुरु ने परिवार को प्रसन्न करने वाले भिक्षुओं में से एक भिक्षु को सर्वोच्च स्थान दिया है; उन्होंने उचित प्रयास (तज्जम अभिनीहारम) किया और उस पद की आकांक्षा की।

अपने जीवनकाल में पुण्य कर्म करते हुए, वे पुनर्जन्मों के चक्र में विचरण करते रहे और कपिलवस्तु में एक मंत्री के घर में उसी दिन गर्भ धारण किया, जिस दिन हमारे बोधिसत्व ने अपनी माता के गर्भ में जन्म लिया था। यह कहते हुए कि उनका जन्म बोधिसत्व के साथ ही हुआ था, उन्हें दोहरी रजाई (दुकुलाचुम्बताक) पर लिटाया गया और बोधिसत्व की सेवा के लिए लाया गया। वास्तव में, बोधिसत्व के साथ ही बोधि वृक्ष, राहुल की माता, सोने के खजाने के चार कलश, सवारी करने वाला हाथी, घोड़ा कंठक, आनंद, चाण, कालुदयी; इस प्रकार ये सातों एक साथ जन्मे (सहजता) कहलाए, क्योंकि इनका जन्म एक ही दिन हुआ था। फिर, उनके नामकरण के दिन उनका नाम उदयी रखा गया, क्योंकि उनका जन्म उस दिन हुआ था जब पूरा शहर खुशी से झूम रहा था। हालांकि, उनके हाथ-पैर थोड़े काले होने के कारण, उन्हें काले उदयी (कालुदयी) के नाम से जाना जाता था। बोधिसत्व के साथ खेलते-खेलते वे बड़े हुए।

इसके बाद, जब जगत के रक्षक राजगृह के निकट वेलुवन में निवास कर रहे थे, तब उन्होंने महान वैराग्य त्याग कर सर्वज्ञता प्राप्त कर ली और धर्म के उत्तम चक्र का संचालन कर रहे थे। तभी महान राजा सुद्धोदन को इस बात का ज्ञान हुआ और उन्होंने एक मंत्री और एक हजार सैनिकों के दल को यह कहते हुए भेजा, "मेरे पुत्र को यहाँ लाओ।" वह मंत्री धर्मोपदेश के समय गुरु के समक्ष उपस्थित हुए, सभा के अंतिम छोर पर खड़े होकर धर्मोपदेश को सुना और अपने दल सहित अर्हतत्व प्राप्त कर लिया। तब गुरु ने उनकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा, "आओ, भिक्षुओं!" उसी क्षण वे सभी साठ वर्ष के वरिष्ठ भिक्षुओं के समान हो गए, मानो उन्होंने जादुई रूप से निर्मित कुंड और वस्त्र धारण कर लिए हों। अरहत पद प्राप्त करने के बाद, वे केवल मध्यम आयु वर्ग के कुलीन व्यक्ति ही रह गए। इसलिए, मंत्री ने राजा द्वारा दशाबल को भेजे गए संदेश के बारे में किसी को नहीं बताया। राजा ने एक और मंत्री को एक हजार सैनिकों के साथ यह कहते हुए भेजा: "जो गया था, वह न तो लौटा है और न ही उसके बारे में कोई खबर मिली है।" जब उस मंत्री ने भी ऐसा ही किया, तो राजा ने एक और मंत्री को भेजा। इस प्रकार, राजा ने नौ मंत्रियों को नौ हजार सैनिकों के साथ भेजा। उन सभी ने अरहत पद प्राप्त किया और मौन रहे। राजा ने इस प्रकार विचार किया: "इनमें से बहुत से लोग, मेरे प्रति स्नेह की कमी के कारण, दशबल के यहाँ आने के उद्देश्य से कुछ नहीं बोले; यह उदयी, वास्तव में, दशबल के समान आयु का है, जिसके साथ उसने मिट्टी में खेला था, वह भी मेरे प्रति स्नेह रखता है; मैं इस मंत्री को भेजूँगा।" राजा ने कालुदयी को बुलवाया और उसे यह कहते हुए भेजा: "मेरे प्रिय! बेहतर होगा कि तुम एक हजार सैनिकों के दल के साथ राजगृह जाओ और दशबल को यहाँ ले आओ।" लेकिन जाते समय, कालुदयी ने इस प्रकार कहा: "महाराज! यदि मुझे भिक्षु बनने की आपकी अनुमति मिल जाए, तो मैं यहाँ महाराज को लेकर आऊँगा। यह कहे जाने पर कि "आपकी इच्छा पूरी करने के बाद, मुझे मेरा पुत्र दिखाएँ," मंत्री राजगृह गए और धर्मोपदेश देते समय श्रोताओं के चारों ओर स्थित हो गए, अपने अनुयायियों के साथ अर्हतत्व प्राप्त किया और 'आओ, भिक्षु' की स्थिति में आ गए (पृष्ठ 105)। अर्हतत्व प्राप्त करने के बाद मंत्री ने मन ही मन कहा, "अभी दशाबल के अपने कुल नगर जाने का समय नहीं है, जब वसंत ऋतु आ जाए, जब घने जंगल में फूल खिलें, जब धरती हरी घास से ढक जाए, तब जाने का समय होगा।" उन्होंने उस समय की प्रतीक्षा की और जब वसंत ऋतु आ गई, तो उन्होंने गुरु के कुल नगर जाने के मार्ग की उचित प्रशंसा करते हुए ये श्लोक कहे:

आदरणीय महोदय! अब ये गहरे लाल रंग के हैं।
पेड़; अपनी पत्तियाँ गिराते हुए, वे
फलों के लिए बोली लगाना; लेकिन आग लगने पर
वृक्ष चमक रहे हैं, हे महान नायक! अब समय आ गया है
यात्रा करते हुए। पेड़ अपने आप से प्रसन्न हैं।
फूल; वे हर दिशा में हवा भेजते हैं
चारों ओर से; अपने पत्ते त्यागते हुए,
वृक्ष फल देने के लिए तत्पर हैं;
हे वीर! प्रस्थान का समय आ गया है।
यहां।
न ज़्यादा ठंड, न ज़्यादा गर्मी, हालांकि;
आदरणीय महोदय! मौसम अच्छा है
यात्रा का। साकियान और

कोलियन आपको नदी पार करते हुए देखते हैं
रोहिणी विपरीत दिशा (या पश्चिम) की ओर मुख किए हुए है।
किनारा।
किसान अपने खेत की जुताई करता है
अपनी इच्छा के कारण; व्यापारी जाते हैं, क्योंकि
उनकी इच्छा, खुले समुद्रों की ओर (या
धन प्राप्त करने के लिए (समुद्र) का उपयोग करें। उसे ऐसा करने दें।
मेरी वह इच्छा जिसके लिए मैं खड़ा हूँ
पूरा हो जाना (या साकार हो जाना)।
न तो बहुत ठंडा, न बहुत गर्म, न ही बहुत
भिक्षा प्राप्त करना कठिन है - तृप्ति के लिए भोजन
भूख; जमीन हरी-भरी घास से भरी है;
हे महान ऋषि! यही समय है। फिर से और
फिर भी वे अपने बीज बोते हैं;
शाही बारिश बार-बार होती रही;
किसान अब अपने खेतों की जुताई करते हैं और
फिर से; फसलें बार-बार राज्य में आती हैं।
बार-बार भिखारी इधर-उधर भटकते रहते हैं;
और फिर दान के स्वामी अपना दान देते हैं
भेंट। भेंट देने के बाद, स्वामियों
दानशीलता के कारण बार-बार स्वर्गिक निवास के निकट पहुंचने की प्रेरणा मिलती है।
जिस भी परिवार में प्रचुरता से संपन्न एक बुद्धिमान व्यक्ति रहता हो
ज्ञान जन्मजात होता है, बुद्धिमान व्यक्ति परिवार से आता है।
वास्तव में, यह सात पीढ़ियों पर समृद्धि की वर्षा करता है।
युग। मुझे लगता है कि देवताओं का देवता।
(देवदेव) सक्षम हैं; वास्तव में, ऋषि
नाम दिया गया सत्य वास्तव में आपके द्वारा ही उत्पन्न किया गया है।
महान ऋषि के पिता का नाम है
सुद्धोदना; हालाँकि, बुद्ध की माता हैं
माया नाम की वह महिला जिसने सर्वांगीणता को धारण किया है
बोधिसत्ता अपनी कोख में, अपने गर्भ के विघटन पर
शरीर, तैंतीस वर्ष की दिव्य दुनिया में प्रसन्न है।
गौतम वंश की वह महिला मर गई और आगे बढ़ गई।
यहां से दूर, दिव्य इंद्रिय सुख से संपन्न होकर
वह पांच प्रकार के सुखों से खुद को प्रसन्न करती है।
उन समूहों से घिरे हुए, कामुक सुखों के
दिव्य प्राणियों का।

वहाँ, अंगारिनो (लाल रंग का) अंगारों के समान; इस प्रकार, अंगाराणी (अंगारे जैसे) फूल और वृक्षों के फल लाल मूंगे के रंग के अंगारों जैसे हैं; वे इनके समान हैं; इस प्रकार, अंगारिनो, ज्वलंत अंगारे के रंग का; मानो चारों ओर से बरसते अंगारों और अत्यंत लाल कुसुम-फूल के रंग से परिपूर्ण हो; यही अर्थ है। दानी (अब) इस समय; दुमा, वृक्ष; भद्दन्ते, आदरणीय!, इसका भीतरी भाग अच्छा है; इस प्रकार, भद्दन्ते; एक अक्षर 'द' के लोप के बाद इस प्रकार कहा जाता है; गुरु विशिष्ट गुणों से जुड़े हैं, और विशिष्ट गुणों से जुड़े लोगों में सर्वोच्च (या प्रमुख) हो गए हैं; इसलिए भद्दन्ते; इस प्रकार, गुरु को संबोधित करने का एक तरीका है; जैसे कि "सुगते, पातिकम्मे, सुखे, दुःखे,

जीवे (अच्छा चलने वाला, उचित कार्य, सुख, दुःख, जीवन)" आदि उदाहरणों में, यह अक्षर (या स्वर) 'ए' एक अलग शब्द (पच्चत्तवचन) है; हालाँकि, यहाँ इसे आत्मज्ञान (संबोधन) के प्रतीक के रूप में समझा जाना चाहिए। इसलिए इसे इस प्रकार कहा गया है: "भद्दन्ते, इस प्रकार, संबोधन का शब्द है"। कुछ लोग ऐसा कहते हैं:- "भद्दा शब्द समानता के लिए एक मध्यवर्ती शब्द है; फलेसीनो (फल देने वाले) वे फल चाहते हैं; इस प्रकार, फलेसीनो, फल चाहने वाले; यद्यपि निर्जीव (या इच्छाहीन)। थेरा द्वारा इस प्रकार अनुरोध किए जाने पर, प्रतापी बुद्ध ने वहाँ जाते समय कई लोगों की विशिष्ट उपलब्धियों को देखा और बीस हजार रोगमुक्त अरहतों से घिरे राजगृह से कपिलवस्तु की ओर जाने वाले मार्ग पर बिना किसी हड़बड़ी (या विश्राम से) विचरण करते हुए चल पड़े। थेरा अपनी जादुई शक्तियों के बल पर कपिलवस्तु गए, और राजा के सामने आकाश में ही खड़े रहे। राजा ने उन्हें पहले कभी न देखे जाने के भाव से देखा और पूछा, "आप कौन हैं?" थेरा ने यह बताने के लिए एक श्लोक कहा, "आप मुझे, उस युवा मंत्री को, जो प्रतापी बुद्ध के समक्ष भेजा गया है, नहीं पहचानते; फिर भी, आपको मुझे इस प्रकार पहचानना चाहिए।"

"हे साकियान सम्राट! मैं बुद्ध का पुत्र हूँ,
अजेय विजेता, ऐसा व्यक्ति
चमकते अंगारों के समान, गहरे लाल रंग का;
हे गौतम! आप मेरे दादा हैं! आध्यात्मिक रूप से
(धम्मेना), आप मेरे दादाजी हैं।

वहाँ, बुद्धस्सा पुत्तो'म्ही (मैं बुद्ध का पुत्र हूँ) मैं सर्वज्ञ बुद्ध की गोद का पुत्र हूँ; असयहसाहिनो, अजेय विजेता का पुत्र, महान आत्मज्ञान से पहले की स्थिति को छोड़कर, क्योंकि दूसरों द्वारा महान बोधिसत्व पर दबाव डालकर (या उन्हें पराजित करके) विजय प्राप्त करने में असमर्थ होने के कारण, अजेय, बोधि के लिए कर्मों के संपूर्ण भार का, महान सहानुभूति के विशेष उपकारक का, विजय प्राप्त करने और प्रभुत्व स्थापित करने के दृष्टिकोण से भी; इसके आगे भी, दूसरों द्वारा विजय प्राप्त करने और उन पर हावी होने में असमर्थता के कारण, पाँच श्रेणियों के अजेय मार को जीतने और उन पर हावी होने के दृष्टिकोण से, बुद्ध के कर्तव्यों की नई विजय के दृष्टिकोण से, जो दूसरों द्वारा अजेय हैं, उन्हें इस वर्तमान जीवन और परलोक में पूर्ण लाभ के माध्यम से प्राप्त होने वाली सलाह के रूप में माना जाता है, उन प्राणियों के लिए जो अनुशासन के अधीन हैं, इस प्रकार कि वे निम्नलिखित वर्गीकरणों में प्रबुद्ध होने के योग्य हैं: उनकी व्यक्तिगत प्रवृत्तियाँ, पालन, अभ्यास, मुक्ति (या मोक्ष) इत्यादि, वहाँ या वहाँ अच्छे कर्म करने की स्थिति से, अजेय के विजेता; अंगीरसस (अंगीरस का) एक, नैतिक उपदेशों इत्यादि जैसे गुणों से समृद्ध; अन्य लोग राय देते हैं कि वह व्यक्ति जिसने बड़े और छोटे शारीरिक अंगों से प्रकाश उत्सर्जित किया। कुछ लोग इस प्रकार कहते हैं: दो नाम: अंगीरास और सिद्धार्थ को ही पिता माना जाता है; अप्पतिमस्स (अद्वितीय) का अर्थ है अनुकरणीय; तादिनो (ऐसा) का अर्थ है जिसने वांछनीय और अवांछनीय वस्तुओं (या मामलों) के समान गुण प्राप्त किए हों; पितुपितामयं तुवम् (आप मेरे पिता के पिता हैं) आप सांसारिक रीति-रिवाजों के अनुसार मेरे पिता, आत्मप्रबुद्ध बुद्ध के पिता हैं, जो कुलीन कुल के थे; सक्का (हे सकियन!) वह जन्म के आधार पर राजा को संबोधित करते हैं; धम्मेन (आध्यात्मिक रूप से) दो जन्मों के संयोजन से - स्वयं के जन्म से कुलीन कुल और सांसारिक कुल; गौतम, हे गौतम! वह अपने कुल के आधार पर राजा को संबोधित करते हैं; अय्याकोसि, आप मेरे दादा हैं; थेरा ने यहाँ भी "बुद्धस्स पुत्तोऽम्हि, मैं बुद्ध का पुत्र हूँ" से शुरू होने वाले श्लोक को कहकर अपने अरहतत्व को प्रकट किया।

इस प्रकार स्वयं को प्रकट करने के बाद, जब उन्हें बहुमूल्य आसन पर बैठने का अनुरोध किया गया, और जब उनके भिक्षापात्र में उनके द्वारा तैयार किया गया अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन भरकर प्रसन्न और संतुष्ट राजा द्वारा उन्हें भेंट किया गया, तो उन्होंने जाने का संकेत दिया। जब उनसे पूछा गया, "आदरणीय महोदय! आप कहीं क्यों जाना चाहते हैं? कृपया यहीं भोजन करें," तो थेरा ने उत्तर दिया, "मैं गुरु के पास वापस जाकर वहाँ भोजन करूँगा।" राजा ने पूछा, "परन्तु गुरु कहाँ हैं?" थेरा ने उत्तर दिया, "गुरु महाराज से मिलने के उद्देश्य से बीस हजार भिक्षुओं से घिरे हुए यात्रा पर निकले हैं।" राजा ने कहा, "आप अपने कटोरे में यह भिक्षापात्र ग्रहण करें; आप गुरु के लिए एक और भिक्षापात्र ले जाएँगे; जब तक मेरा पुत्र इस नगर में न आ जाए, तब तक कृपया यहाँ से उनके लिए भिक्षापात्र ले जाएँ।" ऐसा कहने पर, थेरा ने अपना भिक्षापात्र ग्रहण किया। उन्होंने राजा और उनके दल को सत्य (धम्म) का उपदेश दिया, भिक्षापात्र से भरा हुआ भोजन आकाश में गुरु के पास पहुँचाने के लिए भेजा, और स्वयं भी वायु में ऊपर उठ गए, जबकि सभी लोग उन्हें देख रहे थे, ताकि गुरु के आने से बहुत पहले ही सभी राजपरिवार तीन रत्नों के प्रति अत्यधिक प्रसन्न और श्रद्धावान हो जाएँ; उन्होंने भिक्षापात्र को अपने पास लाया और उसे गुरु के हाथ में रख दिया। गुरु ने वह भिक्षापात्र ग्रहण किया। इस प्रकार, साठ योजन की यात्रा के दौरान, प्रतिदिन एक योजन की यात्रा करते हुए, थेरा ने प्रतिदिन राजपरिवार से भगवान को भिक्षापात्र लाकर अर्पित किया। तब भगवान ने कहा, "इसने मेरे पिता के पूरे निवास को श्रद्धापूर्वक श्रद्धावान बना दिया," और उन्हें अपने परिवार को प्रसन्न करने वाले भिक्षुओं में सर्वोच्च स्थान दिया:

"हे भिक्षुओं! मेरे शिष्यों में, जो मेरे परिवार के मन में श्रद्धा का भाव भरते हैं, आप ही मेरे परिवार के भिक्षुओं में श्रेष्ठ हैं।" इस परिवार में, यह सबसे ऊपर (या मुखिया) है, अर्थात्, कालुदाई।

48-49. अपने द्वारा किए गए पुण्य कर्मों के भार के अनुरूप अरहत पद और सर्वोच्च पद प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया और अपने पूर्व कर्मों को प्रकट करने के लिए प्रसन्नता व्यक्त करते हुए पद्मुत्तरस्स बुद्धस्स से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। अद्धानम्पतिपन्नस्स (उन्हें जो यात्रा पर निकले थे) उन्हें जो दूसरे राज्य में जाने के उद्देश्य से दूर की यात्रा पर निकले थे; चरतो चरिकम् तका (उन्हें जो उस समय अपने भ्रमण पर थे) उन्हें जो उस समय तीन प्रकार के भ्रमण पर थे: भीतरी मंडल, मध्य मंडल और बाह्य मंडल; पद्मुत्तरबुद्धस्स, महिमावान पद्मुत्तर बुद्ध को, सुफुल्लम् (सुभरे) उचित रूप से खिले हुए, जागृत; मैंने लाल कमल (पदुमा) और सफेद लिली (उप्पला) को लेकर, खिले हुए मल्लिका फूल को दोनों हाथों से पकड़कर भर लिया; यही इसका अर्थ है। मैंने उत्तम भोजन लेकर, पूरी तरह से पके हुए, उत्तम, उत्तम और मीठे साली चावल को लेकर, स्वामी से उसका भोजन बनाने का अनुरोध किया; यही इसका अर्थ है।

57. सक्यानम नंदजननो (शाकियों के आनंद को बढ़ाने वाला) आनंद को बढ़ावा देने और वृद्धि (ऊंचाई) और परिधि (परिणाम), सौंदर्य, यौवन और शाही शाकीय परिवार के सदस्यों, प्रतापी के सगे-संबंधियों के संबोधन शब्दों की समृद्धि के लिए; ञातिहंधु भविस्सति (संबंधी और सगे-संबंधी बन जाएगा) ज्ञात और स्पष्ट सगे-संबंधी बन जाएगा। शेष तो आसानी से समझ में आ जाएगा।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा कालुदाई का

समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 35. थेरा मोघराजा

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

35. मोगराज

स्वयंभू अत्थादस्सी, जो अजेय हैं, भिक्षुओं की सभा से घिरे हुए रथ-मार्ग पर प्रवेश कर गए। (1) (1066)

---

554 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 555 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 556 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ।

मेरे सभी छात्र मेरे चारों ओर थे, तब मैं घर से निकल गया। बाहर जाकर मैंने वहाँ (संबुद्ध को), विश्व-नेता को देखा। (2) (1067)

(तब) संबुद्ध को प्रणाम करते हुए, अपने सिर पर हाथ जोड़कर, अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए, मैंने विश्व-नेता की विनम्रतापूर्वक प्रशंसा की: (3) (1068)

जिस हद तक प्राणियों का रूप होता है, वे निराकार होते हैं या वे अचेतन होते हैं, वे सभी आपके पास मौजूद (महान) ज्ञान में समाहित हैं।557 (4) (1069)

यदि कोई मछली पकड़ने के लिए उपयुक्त जाल से पानी को घेर ले, तो पानी में रहने वाले सभी जीव जाल के अंदर फंस जाएंगे। (5) (1070)

और जिसके भी इरादे सजीव हों या निराकार, वे सब आपके पास मौजूद (महान) ज्ञान में समाहित हैं। (6) (1071)

आप इस दुनिया को ऊपर उठा रहे हैं जो अंधकार के निर्माता द्वारा भ्रमित है।558 आपके उपदेश को सुनकर वे (सभी) संदेह की बाढ़ को पार कर जाते हैं। (7) (1072)

यह संसार अज्ञान में जकड़ा हुआ है, अंधकार के जनक द्वारा ढका हुआ है। आपके ज्ञान में वे चमकते हुए अंधकार के जनक को दूर भगाते हैं। (8) (1073)

आपकी वह दृष्टि ही सबके लिए घोर अंधकार को दूर करती है। आपके उपदेश सुनकर अनेक लोग निर्वाण प्राप्त करते हैं।" (9) (1074)

मैंने एक पात्र में थोड़ा सा शुद्ध शहद भरकर, उसे दोनों हाथों से उठाकर महान ऋषि को दे दिया। (10) (1075)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 557 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 558 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

महान नायक, महान ऋषि ने इसे उबले हुए चावल के साथ स्वीकार किया।559 इसे खाकर, सर्वज्ञ ने आकाश में विचरण किया।560 (वहाँ)। (11) (1076)

शिक्षक अत्थादस्सी, मैन-बुल, वातावरण में खड़े होकर, मेरे (स्वयं) हृदय को आनंदित करते हुए, (तब) मेरे बारे में ये छंद बोले: (12) (1077)

"जिसके द्वारा ज्ञान की प्रशंसा की जाती है और सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की स्तुति की जाती है, वह अपने हृदय में व्याप्त आनंद के कारण बुरे पुनर्जन्म में नहीं जाएगा। (13) (1078)

वह चौदह (अलग-अलग) बार (पूरी तरह से) दिव्य शासन करेगा। वह आठ सौ सांसारिक 561 शासनकालों के साथ पृथ्वी पर निवास करेगा। (14) (1079)

और वह पाँच सौ बार ऐसा राजा होगा जो (कानून के) पहिये को घुमाएगा। वह पृथ्वी पर अनगिनत क्षेत्रीय शासन करेगा। (15) (1080)

जो विद्वान मंत्रों को जानता है, वह तीनों वेदों में पारंगत हो जाएगा। और (तब) वह गौतम बुद्ध की शिक्षाओं में संसार का त्याग करेगा।562 (16) (1081)

अपने ज्ञान के माध्यम से वह उन तथ्यों को खोजेगा जो इतने गहरे और सूक्ष्म हैं। वह गुरु का अनुयायी होगा जिसका नाम मोगराज होगा। (17) (1082)

तीनों ज्ञानों से संपन्न,563 निष्कलंक, कर्तव्यनिष्ठ। गौतम सारथी उसे उस सर्वोत्कृष्ट स्थान पर स्थापित करेंगे।" (18) (1083)

---

559 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 560 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 561 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 562 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ 563 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, स्पष्ट मक्खन (गी तेल)

मानवीय कार्यों को त्यागकर, अस्तित्व के बंधनों को तोड़कर, सभी दोषों को भली-भांति जानकर, मैं अब दोषों से मुक्त होकर जीता हूँ। (19) (1084)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) (1085)

इस प्रकार पूज्य मोगराज थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मोगराज थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

35. थेरा मोगराज की जीवनी पर टीका।

अत्थादस्सी तु भववा से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा मोगराज की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस-उस जन्म में एक ब्राह्मण परिवार में जन्म लिया। बुद्धि प्राप्त करने पर, एक दिन उन्होंने गुरु की उपस्थिति में सत्य (धम्म) का प्रवचन सुना। जब उन्होंने देखा कि गुरु ने एक भिक्षु को लहूलुखचीवर वस्त्र धारण करने वालों में सर्वोच्च स्थान दिया है, तो उन्होंने उस पद को प्राप्त करने का संकल्प लिया, इस-उस जन्म में पुण्य कर्म किए, और अत्थादस्सी के समय में एक ब्राह्मण परिवार में पुनः जन्म लिया तथा ब्राह्मण विद्याओं और विज्ञानों में सिद्धि प्राप्त की। एक दिन, उन्होंने प्रतापी अत्थादस्सी को भिक्षुओं से घिरे हुए रथयात्रा मार्ग पर जाते देखा, वे अत्यंत श्रद्धा से भर गए, पाँच प्रकार की व्यवस्थाओं (पंचपतिष्टि) से उन्हें प्रणाम किया, अपने हाथों को सिर पर रखकर श्रद्धापूर्वक उनकी स्तुति में छह श्लोक पढ़े, जिनकी शुरुआत इन शब्दों से हुई: "यावता रूपिनो सत्था (जब तक सुंदर गुरु)" इत्यादि, और मटका भरकर शहद अर्पित किया। गुरु ने उसे ग्रहण किया और धन्यवाद दिया। उस पुण्य कर्म के कारण, वे जन्म-जन्म के चक्रों में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण करते रहे और प्रतापी कस्सपा के समय में कत्थवाहन नामक राजा के मंत्री के रूप में पुनर्जन्म लिया। राजा द्वारा गुरु को लाने के लिए भेजे जाने पर, वे गुरु के समक्ष गए, सत्य (धम्म) का उपदेश सुना, और विधिवत श्रद्धा प्राप्त की। वे भिक्षु बने, बीस हजार वर्षों तक भिक्षु के कर्तव्यों का पालन किया, वहाँ से उनका निधन हो गया, एक बुद्धान्तर (दो बुद्धों के बीच का अंतराल) तक वे अपने पुनर्जन्मों के चक्र में भृंगते रहे, और जब इस बुद्ध का पुनर्जन्म हुआ, तो उन्होंने मोगराज नाम प्राप्त किया, ब्राह्मण बावरी की उपस्थिति में विज्ञान का ज्ञान प्राप्त किया, पश्चाताप किया, संसार का त्याग किया, तपस्वी बन गए, एक हजार तपस्वियों से घिरे रहे, अजित आदि के साथ गुरु के समक्ष भेजे गए, वे उनमें से पंद्रहवें थे, उन्होंने प्रश्न पूछे और उत्तर प्राप्त करने के बाद अर्हतत्व प्राप्त किया। अर्हतत्व प्राप्त करने के बाद, उन्होंने फटे-पुराने वस्त्र (पमसुकूल) धारण किए, जो तीन विशिष्ट प्रकार की अल्पता से युक्त थे, अर्थात्: अल्प हथियार-सुई, अल्प धागा, अल्प रंग। इसी कारण गुरु ने उन्हें अल्प वस्त्र धारण करने वालों में सर्वोच्च स्थान दिया।

(1) पंचपतितीत; पाली ग्रंथ समाज के पाली-अंग्रेज़ी शब्दकोश में पंच शब्द के अंतर्गत दी गई परिभाषा अपर्याप्त है, बल्कि गलत है। यह आधिवचन (शब्दावली) उस प्रकार की श्रद्धा अर्पित करने की विधि के लिए है जिसमें उपासक घुटने टेककर बैठता है, और तब तक झुकता है जब तक उसका माथा पृथ्वी (भूमि) को स्पर्श न कर ले और दोनों हाथों की हथेलियाँ जमीन पर न टिक जाएँ; इस प्रकार, उसके शरीर के पाँचों अंग, अर्थात्: दो घुटने, दो हथेलियाँ और माथा, श्रद्धा की मुद्रा में पृथ्वी को स्पर्श करते हैं।

64. इस प्रकार अपने संकल्प (पानिधान) के अनुरूप अर्हतत्व की प्राप्ति करके, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों के भार को पहचाना और अपने द्वारा किए गए कर्मों को प्रकट करने के लिए 'अत्थादस्सी तु भगवीआ' से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा। इसका अर्थ स्पष्ट है।

73. पूतदम् पूर्णयित्वाना, पात्र भरकर; पूतका (पात्र) मक्खी के अंडों से रहित जलपात्र कहा गया है; एक घड़े में थोड़ा शहद भरकर, पग्गयहा, उठाकर, महेसिनो (महान ऋषि को); उस शहद के घड़े को आदरपूर्वक दोनों हाथों से उठाकर प्रतापी को अर्पित किया; इस प्रकार संबंध स्थापित हुआ है। शेष का अर्थ समझना अत्यंत सरल है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा मोगराज

समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 36. थेरा अधिमुत्ता

<<<< पिछला । अगला >>>>

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

36. अधिमुत्त

जब विश्व-प्रमुख अत्थादस्सी, परम पुरुष, का देहांत हुआ,564 तो मैंने अत्यंत निर्मल मन से भिक्षुओं की सभा बुलाई। (1) (1086)
सीधे और सुस्थापित सभा-रत्न को आमंत्रित करके, (और) एक मंडप का निर्माण करके,565 मैंने उन भिक्षुओं को गन्ना खिलाया।566 (2) (1087)
मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लेता हूँ, चाहे वह मनुष्य का हो या दिव्य, मैं सभी प्राणियों से श्रेष्ठ हूँ; यही अच्छे कर्मों का फल है। (3) (1088)
उस समय जब मैंने उसे वह उपहार दिया था, तब से अठारह सौ युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है: यही गन्ने के उपहारों का फल है। (4) (1089)
विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 564 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 565 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
566 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त कर लिए हैं, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) (1090)
इस प्रकार पूज्य अधिमुत्त थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
अधिमुत्त थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
36. थेरा अधिमुत्त की जीवनी पर टीका।
निब्बुते लोकनाथमहि से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य थेरा अधिमुत्त की जीवनी का वर्णन करते हैं। इन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा की, पुण्य कर्मों का संचय किया जो पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति दिलाने में सहायक थे; इस और उस जन्म में इनका पुनर्जन्म एक परिवार में हुआ जब जगत के रक्षक अत्थादस्सी परिनिर्वाण को प्राप्त हुए; ये तीनों रत्नों के प्रति अत्यंत श्रद्धावान थे, भिक्षुओं को आमंत्रित किया, गन्ने से एक पंडा बनवाया, एक बड़ा दान दिया और अंत में, निर्वाण की ओर ले जाने वाले शांत मार्ग के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया। वहाँ से देहांत होने पर, उन्होंने देवताओं और मनुष्यों के बीच दोनों प्रकार की समृद्धि का आनंद लिया, एक परिवार में पुनर्जन्म लिया जब इस बुद्ध का उदय हुआ, वे शासन से प्रसन्न हुए और अपने दृढ़ विश्वास के कारण थेरा अधिमुत्त के नाम से प्रसिद्ध हुए।
84. इस प्रकार अर्हतत्व प्राप्त करने पर, पुण्य कर्मों के भार से प्रेरित होकर, उन्हें अपने पूर्व कर्मों की याद आई, वे प्रसन्न हुए और उन्होंने निब्बुते लोकनाथंहि से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्मों को प्रकट कर सकें। यह सब अर्थ में सरल है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा अधिमुत्ता के
समाप्त हो गया है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 37. थेरा लासुनादायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

37. लसुणदायक 567

मैं उस समय हिमालय से कुछ ही दूरी पर एक तपस्वी था। मैं लहसुन खाकर अपना जीवन यापन करता था; लहसुन ही (उस समय) मेरा (एकमात्र) भोजन था। (1) (1091)
कुछ खारिया भरने के बाद मैं एक मठ में गया। मैंने सभा को लहसुन दिया, प्रसन्न होकर, (और) प्रसन्न हृदय से। (2) (1092)
सभा को लहसुन देते हुए, सर्वोच्च व्यक्ति विपस्सी के वितरण पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मैंने (तब) स्वर्ग में आनंद लिया। (3) (1093)
जब से मैंने उन्हें वह लहसुन दिया है, तब से लेकर अब तक के इक्यावन युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है: यही लहसुन की कलियों का फल है। (4) (1094)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) (1095)
इस प्रकार पूज्य लसुणदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
लसुणदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 567 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 568 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
37. थेरा लासुणदायक की जीवनी पर टीका।
हिमवन्तस्साविदुरे से शुरू होने वाले श्लोक थेरा लसुणदायक की जीवनी का वर्णन करते हैं। इस पूजनीय व्यक्ति ने पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, जन्म-जन्म के चक्रों से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस-उस जन्म में, तेजस्वी विपस्सी के समय में एक गृहस्थ परिवार में पुनर्जन्म लिया। बुद्धि प्राप्त करने पर, उन्होंने गृहस्थ जीवन की असुविधाओं को देखा, गृहस्थी त्याग दी, संसार का त्याग किया, तपस्वी बन गए और हिमवन्त के निकट वन में रहने लगे, खूब प्याज उगाए और वहीं वन की जड़ों और फलों को खाकर जीवन व्यतीत किया। काज नामक डंडे से उठाई गई टोकरियों में प्रचुर मात्रा में प्याज लेकर वे गृहस्थों के बीच लाए, श्रद्धापूर्वक दान किया और बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के समूह को औषधि के रूप में भेंट किए और चले गए। अपने जीवनकाल में इसी प्रकार पुण्य कर्म करते हुए, वे अपने पुनर्जन्मों के चक्र में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण करते रहे। उन्हीं पुण्य कर्मों के बल पर उन्होंने दोनों प्रकार की समृद्धि का आनंद लिया और समय आने पर वे उसी समय प्रकट हुए जब इस बुद्ध का जन्म हुआ। उचित धार्मिक आस्था प्राप्त करके वे भिक्षु बन गए, विपश्यना का ज्ञान प्राप्त किया और शीघ्र ही अरहतत्व प्राप्त कर अपने पूर्व कर्म के फलस्वरूप थेरा लसुना-दायक के नाम से प्रसिद्ध हो गए।
89. अपने पूर्व कर्मों को याद करके वे प्रसन्न हुए और उन्होंने हिमवंतस्सविरे से शुरू होने वाला श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्मों को प्रकट कर सकें। वे कहते हैं, "मैं तब एक संन्यासी था, जब विपस्सी परमेश्वर प्रकट हुए, हिमालय पर्वत के चारों ओर स्थित उस स्थान पर जहाँ मनुष्य विचरण करते थे।" इस प्रकार संबंध स्थापित होता है। "लसुणम उपजीवामि" (मैंने प्याज खाकर अपना जीवन यापन

किया), मैंने लाल प्याज उगाए, अपने खेत को चरागाह बनाया और अपना जीवन यापन किया। अतः इसका अर्थ यह है। इसलिए यह कहा गया है: "लसुणम मयभोजनम, मेरा भोजन प्याज था।"
90. खारियो पूरायित्वाना (डंडे से उठाकर ले जाने वाली टोकरियों को भरकर), मैंने तपस्वी की टोकरी को प्याज से भरकर डंडे से ऊपर उठाया; संघारामण (पुजारियों का आश्रम) पुजारियों का निवास स्थान, मठ शीत ऋतु आदि तीन ऋतुओं में पुजारियों की चार प्रकार की मुद्राओं के साथ बसा; आगाच्छिम, मैं आया; यही अर्थ है। हत्थो हत्थेन चित्तेना, आनंदित और प्रसन्न हृदय से, मैंने पुजारियों को प्याज भेंट किया, मेरा मन प्रसन्नता से भरा हुआ था और मैं संतुष्ट था; यही अर्थ है।
91. विपस्सिस्सा निरतस्सहम (मैं विपस्सी के विधान में प्रसन्न हुआ), मैं विपस्सी के विधान से प्रसन्न और पूर्णतः संतुष्ट हुआ, जो मनुष्यों में श्रेष्ठ और श्रेष्ठ हैं; यही संबंध है। संघस्स टू द पुरोहित :P: मोदहम ***(पृष्ठ 117) :P: प्याज का दान देकर मैं प्रसन्न हुआ, मैं (स्वर्ग में) युगों के जीवनकाल (कप्पा) तक दिव्य समृद्धि का आनंद लेते हुए, स्वर्गलोक में सर्वोच्च स्थान पर, मैं प्रसन्न और संतुष्ट हुआ; यही अर्थ है। शेष तो आसानी से समझ में आ जाएगा।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा लासुना दयाका का
समाप्त हो गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

38. आयागदायक 569

जब जगत के रक्षक, सिख (बुद्ध), सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का निधन हुआ, तो मैंने प्रसन्नतापूर्वक और प्रसन्न हृदय से उनके उत्कृष्ट स्तूप की पूजा की। (1) (1096)
मैंने कामगारों से बात करने के बाद पूंजी उपलब्ध कराई;570 मैंने एक भोजन कक्ष का निर्माण किया, प्रसन्नतापूर्वक, (और) प्रसन्न हृदय से। (2) (1097)
(उसके बाद) मैं आठ युगों तक बिना किसी रुकावट के देवताओं के बीच रहा। शेष युगों में मैंने एक मिश्रण में पुनर्जन्म लिया।571 (3) (1098)
मेरे शरीर में विष प्रवेश नहीं करते, शत्रु मुझे हानि नहीं पहुँचाते, मैं पानी में नहीं डूबता: यही भोजनालय का फल है। (4) (1099)
जब भी मैं चाहूँ, एक विशाल बादल (भारी) वर्षा करता है। यहाँ तक कि देवता भी मेरे निवास स्थान पर आते हैं; यह अच्छे कर्मों का फल है। (5) (1100)
तीस बार चक्र घुमाने वाले राजाओं के रूप में, सात रत्नों के स्वामी; कोई भी मुझे तुच्छ नहीं समझता: यही अच्छे कर्मों का फल है। (6) (1101)
उस भोजन कक्ष को बनवाने के बाद से इकत्तीस युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है: यही भोजन कक्ष का फल है। (7) (1102)
विश्लेषण के चार तरीके,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 569 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 570 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

571 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 572 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

और इन आठ मुक्तियों, छह विशेष ज्ञानों में महारत हासिल करके, मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) (1103)

इस प्रकार पूज्य आयागदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आयागडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

38. थेरा आयागदायक की जीवनी पर टीका।

निब्बुते लोकनाथंहि से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा आयागा की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, जन्म-मृत्यु के चक्रों से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस या उस जन्म में, परम पूज्य सिख धर्मगुरु के परनिर्वाण के समय, एक गृहस्थ घर में पुनर्जन्म लिया। वे इस व्यवस्था से प्रसन्न होकर बढ़ईयों को खर्चे देकर, मन को तृप्त करने योग्य एक लंबा भोजन कक्ष बनवाए, भिक्षुओं को आमंत्रित किया, उन्हें उत्तम भोजन कराया, बड़ा दान दिया और अपने मन को पुण्यमय आनंद से भर लिया। अपने जीवन भर पुण्य कर्म करते हुए और जन्म-मृत्यु के चक्रों में विचरण करते हुए, उन्होंने दोनों प्रकार की समृद्धि का आनंद लिया और एक गृहस्थ घर में पुनर्जन्म लिया। उन्होंने पूर्ण विश्वास प्राप्त कर लगन से परिश्रम और लगन से विपश्यना विकसित की और शीघ्र ही अर्हतत्व प्राप्त कर लिया। अपने पुण्य कर्मों के फलस्वरूप वे आयगथेरा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

94. इस प्रकार अर्हतत्व प्राप्त करने पर, पुण्य कर्मों के भार से प्रेरित होकर, उन्होंने अपने पूर्व में किए गए पुण्य कर्मों को याद किया, प्रसन्न हुए और निब्बुते लोकनाथंहि से शुरू होने वाला श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व में किए गए कर्मों को प्रकट कर सकें। वहाँ, निब्बुते वदतम, यानी निर्वाण में प्रवेश करने का कथन, उत्कृष्ट है, उन लोगों के बीच जो कहते हैं "हम बुद्ध हैं", जब परम श्रेष्ठ तेजस्वी सिख परिनिर्वाण में प्रवेश कर गए; यही अर्थ है। हत्थो बत्थेन चित्तेन (आनंदित और प्रसन्न मन से), क्योंकि मेरी श्रद्धा प्रबल है, प्रसन्न और आनंदित, आनंद से ग्रस्त मन से, उत्तमं थूपं (सर्वोत्तम ठोस मंदिर), सर्वश्रेष्ठ शिवालय: अवंदिम (मैंने प्रणाम किया); मैंने नमन किया; यही अर्थ है।

95. बढ़ईयों से बात करने के बाद, मैंने भोजन कक्ष के आकार के बारे में चर्चा की और पूछा, "भोजन कक्ष कितना बड़ा है?" यही अर्थ है। फिर मैंने उन बढ़ईयों को काम के लिए कीमत दी; और प्रसन्न होकर मैंने उनसे एक लंबा भोजन कक्ष बनवाया। शेष अर्थ तो आसानी से समझ में आ जाता है।

97. आयागस्सा इदं फलम् (यह लंबे हॉल का फल है), यह भोजन कक्ष अर्पित करने का लाभकारी परिणाम है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा आयागदायका का

समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 39. थेरा धम्मचक्किका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

39. धम्मचक्किका 573

भगवान सिद्धार्थ के सिंह-सिंहासन के सामने, मेरे द्वारा एक धम्म-चक्र574 स्थापित किया गया था, जो सुगठित था, (और) बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित था।575 (1) (1104)
मैं एक आकर्षक सुनहरे रंग से चमकता हूँ; मेरे पास वाहन, सेना और घोड़े हैं। कई लोग मुझसे जुड़े हुए हैं और लगातार मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। (2) (1105)
मैं हमेशा साठ हजार वाद्ययंत्रों से घिरा रहता हूँ,577 मेरे अनुचरों द्वारा सुशोभित: यही अच्छे कर्मों का फल है। (3) (1106)
जब से मैंने उस (धम्म-)चक्र की स्थापना की है, तब से चौरानवे युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है: यही धम्म-चक्र का फल है। (4) (1107)
उसके ग्यारह युग बाद आठ राष्ट्रों पर शासन करने वाले स्वामी थे; (उन सभी) का नाम सहस्रज था, 578 चक्र घुमाने वाले महान शक्तिवान राजा। (5) (1108)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 573 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 574 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
575 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 576 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 577 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित 578 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) (1109)
इस प्रकार पूज्य धम्मचक्किका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
धम्मचक्किका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

39. थेरा धम्मचक्किका की जीवनी पर टीका

सिद्धार्थस भगवतो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा धम्मचकिका की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। इन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस-उस जन्म में प्रतापी सिद्धार्थ के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। विकास की आयु प्राप्त करने पर, उनके परिवार में उनकी पत्नी और बच्चे शामिल हो गए और वे समृद्धि से संपन्न होकर धनी बन गए। तीन रत्नों से प्रसन्न होकर, वे परम श्रद्धा से परिपूर्ण हो गए और उन्होंने धम्मसभा में धर्म प्रचार

आसन के पीछे धर्म चक्र बनवाया और श्रद्धापूर्वक अपनी भेंट अर्पित की। इस पुण्य कर्म के फलस्वरूप, जहाँ-जहाँ उनका जन्म हुआ, देवताओं और मनुष्यों के बीच, उन्होंने सक्का और विश्वराज की समृद्धि का आनंद लिया और समय आने पर, जब यह बुद्ध प्रकट हुए, तब वे एक पारिवारिक घर में आसीन हुए। धनवान होते हुए भी, उन्होंने अपने भीतर उचित रूप से धार्मिक आस्था को जागृत किया, भिक्षु बन गए, स्पष्ट अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की, शीघ्र ही अरहतत्व प्राप्त कर लिया और स्वाभाविक रूप से थेरा धम्मचक्किका के रूप में प्रसिद्ध हो गए, क्योंकि उनका नाम उनके द्वारा पहले किए गए अच्छे कर्म के नाम से मिलता-जुलता था।

102. पुण्य के भार के अनुरूप अर्हतत्व का फल प्राप्त करने पर, उन्होंने अपने पूर्व कर्म को याद किया, प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'सिद्धत्थस भगवतो' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। "सिंहासन के सामने, हे प्रतापी, बुद्धासन के ठीक सामने, सिंहासन के सामने" (यही अर्थ है)। "धम्मचक्कम् मे तापितम् (मेरे द्वारा स्थापित) सत्य (धम्म) का चक्र, जिसके मध्य में दर्पण के समान आकृति बनी थी और दोनों ओर सिंह की आकृति बनी थी, आध्यात्मिक चक्र (धम्मचक्क) के रूप में मेरे द्वारा स्थापित और अर्पित किया गया था। उसका क्या हुआ? "वण्णितम" (प्रशंसा की गई), बुद्धिमान विद्वानों द्वारा "अत्यंत उत्कृष्ट" कहकर उसकी प्रशंसा की गई। सत्य का चक्र (धम्मचक्क) अच्छी तरह से बना हुआ है; इसी प्रकार, संबंध भी बना हुआ है।

103. चारुवण्णो व सोभामि (मैं सोने के रंग के समान चमकता हूँ) सोने के रंग के समान, मैं जगमगाता हूँ; यही अर्थ है। और यही अर्थ है:- "चतुवण्णहि सोभाम् (मैं चार रंगों से चमकता हूँ)"; सोभामि, मैं चार रंगों से चमकता हूँ, जो कि राजकुमार, योद्धा, ब्राह्मण, व्यापारी और शुद्ध (आम आदमी) जैसे जन्मों के रूप में गिने जाते हैं; यही अर्थ है। सयोग्गबलवाहनो (अपने सैनिकों के बल का वाहक), सोने की पालकियों आदि जैसे उपकरणों से सुसज्जित (साहितो (साथ)), सेनापति, महान मंत्रियों आदि जैसे सेवकों के बल से, साथ ही हाथियों, घोड़ों, रथों जैसे परिवहन से; यही अर्थ है। बहुज्जना (अनेक लोग), प्रचुर मनुष्य; अनुयन्ता (मेरे पीछे चलने वाले), मेरा अनुसरण करने वाले; वे हमेशा मेरे चारों ओर मौजूद रहते हैं; यही हमारा संबंध है। बाकी सब समझना बहुत आसान है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा धम्मचक्किका

समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 40. थेरा कपारुक्खिया

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

40. कप्पारुक्खिया579

भगवान सिद्धार्थ के सर्वश्रेष्ठ स्तूप के सामने 580 सजावटी कपड़ा लगाकर, मैंने वहाँ एक मनोकामना वृक्ष स्थापित किया।581 (1) (1110)

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूँ, चाहे वह मानव हो या दिव्य, वहाँ एक मनोकामना वृक्ष स्थापित है, जो मेरे द्वार को सुंदर बनाता है। (2) (1111)

मैं, अपने दल के साथ, और जो भी मेरे साथ जुड़ा हुआ है, उस (इच्छा वृक्ष) से कपड़ा लेकर हम सब हमेशा अपने वस्त्र धारण करते हैं। (3) (1112)

उस (इच्छा-वृक्ष) को स्थापित करने के बाद से चौरानवे युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है: यही इच्छा-वृक्ष का फल है। (4) (1113)

सातवें युग पूर्व में, सुचेला583 नामक आठ क्षत्रिय थे जो महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र-चालक थे। (5) (1114)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 579 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 580 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

581 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 582 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 583 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) (1115)

इस प्रकार पूज्य कप्परुक्खिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कप्परुक्खिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

कुण्ड, सागत, कच्चाना उदयी, राजसवय, अधिमुत्त, लसुणद, आयागी, धम्मश्चक्खिका। कप्परुक्खी दसवाँ है; श्लोक एक सौ बारह

कुण्डधान अध्याय, चौथा।

टिप्पणी अनुवाद: यू लू पे विन

40. थेरा कप्परुक्खिया की जीवनी पर टिप्पणी।

सिद्धार्थस भगवतो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा कप्परुक्खिया की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, उन्होंने पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया। इस और उस जन्म में, वे प्रतापी सिद्धार्थ के समय एक धनी परिवार में पुनर्जन्म लिए; वे अत्यंत धनी और समृद्ध थे, गुरु में उनकी अटूट आस्था थी, उनके पास सात प्रकार के रत्नों से जड़ा हुआ सोने का विश्व वृक्ष (कप्परुक्खा) था, जिसे उन्होंने प्रतापी सिद्धार्थ के मंदिर के सामने श्रद्धापूर्वक अर्पित किया। इसी रूप में पुण्य कर्म करते हुए, वे अपने जीवनकाल तक वहीं रहे, फिर उनका देहांत हुआ, वे अपने पुनर्जन्मों के चक्रों में विचरण करते रहे, और समय आने पर, जब यह बुद्ध प्रकट हुए, तब वे एक परिवार में पुनर्जन्म लिए; जब उन्होंने ज्ञान की आयु प्राप्त की, तो उनका गृहस्थी जीवन सुस्थापित हो गया और तीनों रत्नों में दृढ़ विश्वास रखते हुए, उन्होंने सत्य (धम्म) को सुना, विधिवत रूप से धार्मिक आस्था प्राप्त की, गुरु का हृदय जीत लिया, भिक्षु बन गए, कुछ ही समय बाद अरहत पद प्राप्त कर लिया और पूर्व में किए गए पुण्य कर्म के नाम से थेरा कप्परुक्खिया के रूप में प्रसिद्ध हो गए।

108. इस प्रकार अरहतत्व की प्राप्ति करके, उन्होंने अपने पूर्व कर्म को याद किया और प्रसन्न होकर अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'सिद्धत्थस भगवतो' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। थूपसेठस सम्मुखा (सर्वोत्तम ठोस मंदिर के सामने), मंदिर के सामने स्थित ठोस अवशेष-संग्रहालय मंदिर जो सर्वोत्तम और उत्कृष्ट है; विचित्र दुस्से (बहुरंगी वस्त्र), चीनी चादर, सोमारा चादर आदि जैसे अनेक रंगों वाले, अद्वितीय, बेजोड़, जिसने मन को मोहित कर लिया; लगेत्वा (लटकाया हुआ) विश्व वृक्ष (कप्पसरुक्खा) को लटकाकर; तपेसिम (मैंने स्थापित किया); मैंने स्थापित किया; यही अर्थ है; शेष का अर्थ स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा कप्परुक्खिया का

समाप्त हो गया है।

चौथे अध्याय पर टिप्पणी
(वग्गा) समाप्त हो गया है

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 41. थेरा उपालि

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स
उपाली अध्याय, पाँचवाँ

---

41. उपाली (2)584

विश्व के महान भगवान, हजार (अरहंतों) निष्कलंकों से घिरे हुए, एकांतवास के लिए बाध्य होकर एकांतवास में चले गए। (1) (1116)
मैंने हिरण के चमड़े के कपड़े पहने थे, और मेरे पास एक तिहरी छड़ी थी। (तब) मैंने विश्व के प्रमुख को सभा से घिरा हुआ देखा। (2) (1117)
एक कंधे पर हिरण की खाल रखकर, दोनों हाथों को सिर पर दबाकर,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 584 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 585 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
586 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 587 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

संबुद्ध की पूजा करने के बाद, मैंने विश्व-नेता की प्रशंसा की: (3) (1118)
"जैसे सभी पक्षी, कौवे आदि, अंडों से निकले हों या पसीने से पैदा हुए हों, गर्भ में पैदा हुए हों या सजीवप्रजक हों, हमेशा आकाश में यात्रा करते हैं; (4) (1119)
चाहे कितने भी प्राणी विद्यमान हों, चाहे वे चेतना वाले हों या न हों,589 वे सभी आपके पास मौजूद (महान) ज्ञान में समाहित हैं। (5) (1120)
हिमालय की सर्वोच्च चोटियों पर जो भी पर्वतीय सुगंधें हैं, वे सब आपकी नैतिकता की सुगंध के एक अंश के बराबर भी नहीं हैं।590 (6) (1121)

यह संसार अपने देवताओं सहित अंधकार के निर्माताओं के चंगुल में है।591 जब तुम्हारा ज्ञान प्रकाशमान होता है तो अंधकार के निर्माता नष्ट हो जाते हैं। (7) (1122)
जैसे दिन ढलने पर जीव-जंतु अंधेरे में रहते हैं, वैसे ही बुद्ध के प्रकट न होने पर यह संसार अंधकार में डूबा रहता है। (8) (1123)
जिस प्रकार सूर्योदय के समय सूर्य प्रतिदिन अंधकार को दूर भगाता है, उसी प्रकार हे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, आप भी प्रतिदिन अंधकार का नाश करते हैं। (9) (1124)
आप परिश्रम में तल्लीन हैं, संसार में देवताओं के बीच बुद्ध हैं। आपके कर्मों से प्रसन्न होकर आप अनेक लोगों को तृप्त करते हैं।” (10) (1125)
(तब) इन सब के लिए धन्यवाद देते हुए, महान ऋषि पद्ममुत्तरा, वीर,592 आकाश में हंस-राजा की तरह उड़ गए। (11) (1126)

---

588 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 589 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ 590 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (gī tel) 591 शाब्दिक अर्थ, "गया" 592 PTS sañjālesi के लिए BJTS के साथ sañcālesi पढ़ना

उड़ जाने के बाद, संबुद्ध, महान ऋषि पद्ममुत्तरा, शिक्षक, आकाश में खड़े होकर, मेरे बारे में ये श्लोक बोले: (12) (1127)
“मैं उस व्यक्ति का विवरण दूंगा जिसने ज्ञान की इस प्रशंसा को (अच्छे) उपमाओं के साथ जोड़ा है; आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें: (13) (1128)
अठारह (अलग-अलग) बार वह सभी देवताओं का राजा होगा। वह पृथ्वी पर निवास करेगा और तीन सौ सांसारिक शासन करेगा। (14) (1129)
वह पाँच सौ बार शासन करेगा, एक ऐसा राजा जो कानून का पहिया घुमाएगा, और उसका स्थानीय शासन अनगिनत होगा। (15) (1130)
एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (16) (1131)
तुसिता से गिरकर, अपनी पवित्र जड़ों से प्रेरित होकर, जटाधारी एक नीच तपस्वी उपाली के नाम से जाना जाएगा। (17) (1132)
और उसके बाद, सभी बुराइयों को दूर भगाते हुए, सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए, वह निर्वाण प्राप्त करेगा, निर्दोष होकर। (18) (1133)
और शाक्यों के पुत्र, महान ख्यातिप्राप्त बुद्ध, जिन्हें गौतम के नाम से जाना जाता है, उनके विनय ज्ञान से प्रसन्न होकर उन्हें उस सर्वोत्कृष्ट स्थान पर स्थापित करेंगे।”595 (19) (1134)
मैंने विश्वास के साथ प्रस्थान करने के बाद (अपना कर्तव्य) पूरा किया, और मैं निष्कलंक हूँ।

---

593 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया" 594 शाब्दिक अर्थ, "योग्य" 595 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंढ (भाग, अंश, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेण्डु (लंबा? मोटा?)।"

सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए, मैं अब दोषों से मुक्त होकर जीता हूँ। (20) (1135)
भगवान ने मुझ पर दया की; मैं विनय में निपुण हूँ। अपने कर्मों से प्रसन्न होकर मैं दोषरहित जीवन जी रहा हूँ। (21) (1136)
मैं मठवासी नियमों596 और पाँच इंद्रियों में आत्मसंयमित होकर, संपूर्ण विनय को, उस रत्न-खदान को, पूर्णतः धारण करता हूँ। (22) (1137)
और फिर, मेरे सद्गुण को पहचानते हुए, गुरु, विश्व में सर्वश्रेष्ठ,597 भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए, ने मुझे उस सर्वोच्च स्थान पर बिठाया। (23) (1138)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) (1139)
इस प्रकार पूज्य उपालि थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
उपाली थेरा की कथा का अंत हो गया है।

टीका अनुवाद: उ लू पे विन

41. थेरा भागिनेय्युपाली की जीवनी पर टीका

खीणासवसहस्सेहि से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य उपाली के भतीजे, पूज्य थेरा भागिनेय्युपाली की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। दरअसल, पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, इस और उस जन्म में पुण्य कर्मों का संचय करते हुए, इस थेरा का पुनर्जन्म तेजस्वी पद्ममुत्तरा के समय एक परिवार में हुआ। बड़े होने पर उन्होंने गृहस्थ जीवन में असुविधा देखी (या उन्हें इसका एहसास हुआ), इसलिए उन्होंने अपना घर त्याग दिया, संसार का त्याग कर तपस्वी बन गए, पाँच प्रकार के उच्च ज्ञान और आठ प्रकार के समृद्ध ध्यान को प्राप्त किया और हिमालय में निवास करने लगे। ऋषि ने दूर से भी पूर्णिमा के चंद्रमा के समान तेजस्वी भगवान को देखा, वे प्रसन्नतापूर्वक धार्मिक भाव से भर गए, अपने कंधे पर हिरण की खाल रखी, हाथ जोड़कर प्रणाम किया, दस कीलों का गठ्ठा अपने सिर पर विधिपूर्वक धारण किया और खड़े-खड़े ही भगवान की अनेक दृष्टांतों और स्तुतिगानों से उनकी प्रशंसा की। उनकी प्रशंसा सुनकर भगवान ने उन्हें यह भविष्यवाणी की: "यह ऋषि भविष्य में गौतम नामक भगवान के शासनकाल में भिक्षु बनेंगे और विनय विद्या में तीक्ष्ण ज्ञान रखने वालों में श्रेष्ठ होंगे।" वे अपने जीवन काल तक खड़े रहे और पूर्ण ध्यान में लीन होकर ब्रह्मलोक में पुनर्जन्म लिया। वहाँ से विदा होकर, उन्होंने अपने पुनर्जन्मों का चक्र पूरा किया, देवताओं और मनुष्यों के बीच समृद्धि का आनंद लिया, और फिर से जन्म लिया, जब यह बुद्ध कपिलवस्तु नगर में थेरा उपाली की बहन के पुत्र के रूप में प्रकट हुए। धीरे-धीरे बड़े होकर, वे अपने मामा थेरा उपाली की उपस्थिति में भिक्षु बन गए, मानसिक साधना (कम्मत्ष्ठान) की, विपश्यना (स्पष्ट अंतर्दृष्टि) विकसित की और शीघ्र ही अरहत बन गए। अपने गुरु के निकट रहने के कारण, वे अनुशासन (विनय) के मामलों में तीक्ष्ण बुद्धि वाले हो गए। तब भगवान बुद्ध ने उन्हें सर्वोच्च स्थान पर इस प्रकार स्थापित किया: "हे भिक्षुओं! मेरे शिष्यों में, अनुशासन (विनय) के मामलों में तीक्ष्ण बुद्धि वाले भिक्षुओं, यह प्रमुख है, अर्थात् भागिनेय्युपाली।"

1. इस प्रकार सर्वोच्च पद प्राप्त करके, उन्हें अपने पूर्व कर्म की याद आई, वे प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'खीणा सवसहस्सेहि' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। इस प्रकार: आ (तक), सभी दिशाओं से सर्वोच्च स्वर्ग (भवग्ग) तक, प्रवाहित होते हैं, हो जाते हैं; इस प्रकार, आसव (कैंसर); ऐसे चार प्रकार के कैंसर जैसे कि इंद्रिय सुखों के कैंसर आदि; वे जिनके द्वारा कैंसर समाप्त हो गए थे, सूख गए थे, विशेष रूप से वाष्पित हो गए थे, स्पष्ट रूप से कुचल दिए गए थे; इस प्रकार, कैंसर रहित, खीणासवा; उन्हीं में से एक हजार, एक हजार कैंसर रहित; उन एक हजार कैंसर रहित अरहतों द्वारा; परेतो, घिरे हुए; लोकनायको, जगत के नेता, निर्वाण की ओर, एकांतवास में रहने के लिए एकांतवास में चले गए; इस प्रकार, संबंध है।

2. अजिनेनानिवत्थो'हम (मैंने हिरण की खाल पहनी थी), मैं हिरण की खाल से ठीक से ढका हुआ था, हिरण की खाल पहनने वाला; यही अर्थ है। तिदण्ड परिधारको (तीन छड़ियों को धारण करने वाला) ने तिपाई (तिदण्ड) ली, जल का प्याला रखने और उसे उठाने के लिए; यही अर्थ है। मैंने विश्व के नेता को भिक्षुओं के समूह से घिरा हुआ देखा (या मिला); यही संबंध है। बाकी सब स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा भागिनेय्युपाली का

समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 42. थेरा कोलियवेसा

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

42. कोलियावेस्सा

मैंने विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ ऋषि अनोमादस्सी के लिए प्लास्टर से लेप लगाकर एक पैदल मार्ग का निर्माण करवाया। (1) (1140)
(तब) मैंने उस मार्ग पर विभिन्न रंगों के फूल बिखेरे। आकाश में एक शामियाना बनाकर मैंने परम बुद्ध को भोजन कराया। (2) (1141)
मैंने अपने हाथ जोड़कर, अच्छे संकल्प वाले परमेश्वर की आराधना की, और उस समय मैंने एक लंबा हॉल परमेश्वर को समर्पित किया। (3) (1142)

---

596 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है। कम से कम प्रसारण के समय, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी। 597 yenicchakā, बीजेटीएस सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

मेरे मन की बात समझकर, गुरु, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, धन्य, दृष्टिभ्रमित, ने (इसे) स्वीकार किया, मुझ पर दया करते हुए। (4) (1143)
इसे स्वीकार करते हुए, विश्व के सर्वश्रेष्ठ प्राप्तकर्ता संबुद्धा598 भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए ने ये श्लोक कहे (तब मेरे बारे में): (5) (1144)
मैं उनके बारे में विस्तार से बताऊंगा, जिन्होंने (अब) इतने प्रसन्न हृदय से यह लंबा हॉल मुझे दान कर दिया; आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें: (6) (1145)
जब अच्छे कर्मों से संपन्न इस व्यक्ति की मृत्यु का समय आएगा, तब एक रथ प्रकट होगा, जिसमें हजार घोड़े जुते होंगे। (7) (1146)
उस वाहन से (तब) यह व्यक्ति देवताओं के लोक में जाएगा। जब वहाँ वह शुभ जन्म होगा, तो सभी देवता प्रसन्न होंगे। (8) (1147)
वह वहाँ एक हवेली में निवास करेगा, सबसे अच्छी हवेली, बहुत महंगी, रत्नों से सजी मिट्टी से निर्मित और उत्तम छज्जे वाली कोठरियों से सुसज्जित। (9) (1148)
वह (तब) तीस हजार युगों तक स्वर्ग में आनंदित रहेगा। वह उन तीस हजार युगों तक देवताओं का राजा रहेगा। (10) (1149)
वह सतहत्तर बार राजा बनेगा जो (कानून के) पहिये को घुमाएगा। उन सभी का एक ही नाम होगा, "यशोधरा," और वे एक ही होंगे। (11) (1150)
दोहरे आनंद का अनुभव करते हुए, पुण्य का ढेर लगाते हुए,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 598 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 599 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
600 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के।

वह अट्ठाईसवें युग में एक चक्र-घुमाने वाला राजा होगा (इसलिए)। (12) (1151)
और (उसके पास) विस्साकम्मा द्वारा निर्मित एक शानदार हवेली होगी।601 अकेले रहते हुए भी वह उस शहर में दस ध्वनियाँ सुनेगा। (13) (1152)
असंख्य युगों बाद वह एक देश का राजा होगा, पृथ्वी का राजा, महान शक्ति के साथ; उसका नाम (तब) ओक्काका होगा। (14) (1153)
और वह (उसकी) सोलह हजार स्त्रियों में सबसे श्रेष्ठ (602) उसके नौ पुत्रों को जन्म देगी, जो कि उत्तम कुल के क्षत्रिय (राजकुमार) होंगे। (15) (1154)
वह क्षत्रिय स्त्री अपने नौ पुत्रों के जन्म के बाद मर जाएगी। तब वह एक युवा और प्रिय कन्या को अपनी मुख्य रानी के रूप में स्वीकार करेगा। (16) (1155)

(राजा) ओक्काका को प्रसन्न करने पर, उस कन्या को वरदान प्राप्त होगा। वरदान के रूप में उसे वहाँ से (नौ) पुत्र प्राप्त होंगे। (17) (1156)
आगे बढ़ने के बाद वे सभी हिमालय में चले जाएँगे। 603 कुल के बँटने से डरकर वे सभी बहनों के साथ सहवास करेंगे। (18) (1157)
और उन लड़कियों में से एक (भयानक) बीमारी से पीड़ित होगी। क्षत्रिय यह कहते हुए कि 'हमारे परिवार को बर्बाद मत करो', उसे दफना देंगे। (19) (1158)
एक राजा,605 उसे ले जाने के बाद उसके साथ (अच्छे से) रहेगा।

---

601 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 602 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 603 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 604 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)। 605 शाब्दिक अर्थ, "गया"।

और उस समय से, "ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होने वाला समूह" होगा। (20) (1159)
उनकी संतानें जन्म के समय "कोल्या" कहलाएँगी। वहाँ वे जादुई रूप से भारी मात्रा में मानव भोजन का उत्पादन करेंगी। (21) (1160)
उस शरीर से गिरकर (यह) स्वर्ग में जाएगा। वहाँ उसे एक शानदार महल मिलेगा जो मन को प्रसन्न करेगा। (22) (1161)
अपने पुण्य कर्मों से प्रेरित होकर स्वर्ग से गिरकर मनुष्य रूप धारण करने पर वह सोन के नाम से जाना जाएगा। (23) (1162)
शिक्षक के विधान में अथक प्रयास से, सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए, वह निर्वाण प्राप्त करेगा, दोषरहित होकर। (24) (1163)
हे भगवान, असीम दृष्टि वाले, शाक्यों के श्रेष्ठ गौतम, विशेषाधिकार प्राप्त ज्ञानी, महान वीर, (उन्हें)608 सर्वोपरि स्थान देंगे।" (25) (1164)
(अंतराल?)609
परम वशीकरण में वशीकृत, मेरा हृदय (अब) सही दिशा में निर्देशित है, (और) मेरा बोझ उतार दिया गया है: मैं निर्वाण प्राप्त कर चुका हूँ, बेदाग। (26) (1165)
तेजस्वी शरीर वाले, 610 महान हाथी, सिंहराज की तरह निर्भीक, भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए, (उन्होंने) मुझे सबसे आगे स्थान दिया। (27) (1166)

---

606 में संचलेसी का पाठ बीजेटीएस द्वारा पीटीएस संजालेसी के लिए किया गया है। 607 शाब्दिक अर्थ है, "गिर गया"। 608 शाब्दिक अर्थ है, "गुणी"। 609 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में, मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंड (भाग, अंश, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु (लंबा? मोटा?)"। 610 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस कई रूपों में गेंदु पढ़ता है। कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक स्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी।

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) (1167)
इस प्रकार पूज्य सोन कोलियवेस्सा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
कोलियावेस्सा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
42. थेरा सोनाकोलिविसा की जीवनी पर टिप्पणी।
अनोमदास्सिस्सा मुनिनो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा कोल्विसा की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने और इस-उस जन्म के चक्र से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित करने के कारण, उन्होंने प्रतापी अनोमदास्सी के समय में एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया; वयस्क होने पर, उन्होंने पत्नी और बच्चों का घर बसाया, धनवान हुए, प्रतापी बुद्ध के आने-जाने के लिए एक सुंदर सैरगाह बनवाई, एक सुव्यवस्थित (शुद्धापरिक्कम्मा) बनवाई, उसे दर्पण की सतह के समान समतल करवाया, उसे

चमकीला बनाया, उसमें दीपक, सुगंधित अगरबत्ती और सुगंधित फूल आदि लगवाए, उसे प्रतापी बुद्ध को अर्पित किया, और बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के समूह को उत्तम भोजन से आदरपूर्वक सत्कार किया। इस प्रकार, अपने जीवनकाल में पुण्य कर्म करने के बाद, जब उनका निधन हुआ तो उनका पुनर्जन्म दिव्य लोक में हुआ। वहाँ, उन्होंने पाली (पितकों की) में वर्णित विधि से दिव्य आनंद का अनुभव किया; बीच की सभी घटनाओं को पाली में बताए अनुसार ही समझा जाना चाहिए। (हालाँकि, अंतिम जन्म में, उनका जन्म कोलिया राजवंश में हुआ और वयस्क होने पर, एक करोड़ मूल्य के कान के आभूषण धारण करने के कारण, वे कोटिकाञ्ञ (एक ****PG125) या कुटिकाञ्ञो (एक कक्षवाहक) के रूप में प्रसिद्ध हुए। उन्हें प्रतापी ईश्वर में अटूट आस्था थी, उन्होंने सत्य (धम्म) का श्रवण किया, उचित रूप से धार्मिक आस्था प्राप्त की, भिक्षु बने, शुद्ध अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की और शीघ्र ही अर्हतत्व प्राप्त कर लिया।

25. अरहत बनकर, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया, प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्मों को प्रकट करने के लिए 'अनोमदास्सिस मुनिनो' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, अनोमदास्सिस (अनोमदास्सी का), वह अनोमदास्सी हैं, जिनका महिमामय शरीर दर्शनीय है, क्योंकि वे एक महान व्यक्तित्व के बत्तीस विशिष्ट चिह्नों से सुशोभित हैं, क्योंकि उनके चारों ओर एक फ़ैदम लंबी दीप्तिमान किरणों का चमकता हुआ प्रभामंडल है, और क्योंकि वे ऊँचाई और चौड़ाई (आरोहपरिनाह) से संपन्न हैं, असाधारण (अनोमम्), असाधारण (अलमकम), सुंदर और दर्शनीय (दस्सनम्) हैं; उस ऋषि अनोमदास्सी का यही अर्थ है। तदिनो (ऐसे) जो वांछनीय और अवांछनीय के बीच अविचल हैं; सुधाया लेपनम कत्वा (सुंदर सजावट के लिए लेप लगाया; कारयिम (मैंने बनवाया)) मैंने दीपक, धूप, फूल, झंडे, माला आदि अलंकरणों से सुसज्जित एक सुशोभित मार्ग (या मठ) बनाया; यही अर्थ है। शेष श्लोकों का अर्थ पाली के क्रमबद्ध प्रवाह से आसानी से समझा जा सकता है।

35. जो व्यक्ति अपने आसपास के अनुयायियों और धन की समृद्धि का कारण माना जाता है, वही यशोदरा (यशोद धारक) कहलाता है। ये सभी सतहत्तर विश्वराज यशोदरा नाम से ही जाने जाते थे। इस प्रकार इनका संबंध है।

52. आंगीरसो (तेजस्वी), वह आंगीरसो (तेजस्वी) है जिसकी किरणें उसके शरीर के अंगों से निकलती हैं; वह न तो इच्छा, क्रोध, भ्रम और भय जैसे बुरे आचरण के कारण और न ही बुरे व्यवहार के कारण नरक के चारों रूपों में जाता है; अतः वह नाग है; वह नाग, जो नरक में नहीं जाता, शक्तिशाली और पूजनीय भी है; अतः वह महानागा है; शेष अर्थ स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा कोलिविसा का
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 43. थेरा भद्दिया-कादिगोधाय-पुत्त

<<<< पिछला । अगला >>>>

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

43. भद्दिया-कालिगोधाय-पुत्त

प्रेममय हृदय वाले, महान ऋषि, सभी लोकों के प्रमुख नेता, संबुद्ध पद्ममुत्तरा, वहाँ के सभी लोगों के पास आते हैं। (1) (1168)

उस अद्वितीय पुण्य क्षेत्र में सभी शिक्षक को (उपहार), वस्त्र (या) रहने की जगह,612 (या) भोजन और पेय जैसी आवश्यक वस्तुएँ दे रहे थे। (2) (1169)

“मैं भी देवताओं के देव, तटस्थ, 613 को दान दूंगा, (उन्हें), सर्वश्रेष्ठ बुद्ध और अद्वितीय सभा को आमंत्रित करते हुए। (3) (1170)

मेरे द्वारा प्रेरित होकर, (अन्य लोगों ने भी) तब तथागत और संपूर्ण भिक्षु सभा को, पुण्य के अतुलनीय क्षेत्र में आमंत्रित किया। (4) (1171)

मैंने बुद्ध के लिए उपयुक्त एक कीमती आसन सजाया; एक लाख मूल्य का पलंग, सोने का बना हुआ, ऊनी गलीचा, गद्दा, अलंकृत ऊनी चादरें, और खोमा और सूती वस्त्रों से सुसज्जित। (5) (1172)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 611 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 612 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

613 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

पद्ममुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, देवताओं के देवता, मनुष्यों के बैल, सभा से घिरे हुए,614 मेरे द्वार पर आए (तब)। (6) (1173)

विश्व के रक्षक, ख्यातिप्राप्त बुद्ध से मिलने के लिए बाहर जाते हुए, प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से मैंने अपने घर में उनके साथ समय बिताया। (7) (1174)

प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से मैंने (उन सभी को) दूध-चावल खिलाया:616 विश्व के नेता बुद्ध और वहाँ एक लाख भिक्षुओं को। (8) (1175)

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, यज्ञ प्राप्तकर्ता, भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए, ने (मेरे बारे में) ये श्लोक कहे: (9) (1176)

"मैं उस व्यक्ति के बारे में विस्तार से बताऊंगा जिसने यह सोने का आसन, ऊनी गलीचे के साथ, भेंट किया है; (आप सभी) मेरी बात ध्यान से सुनें: (10) (1177)

वह चौहत्तर बार दिव्य शासन करेगा। दिव्य अप्सराओं द्वारा अभिषिक्त होकर, वह जादुई रूप से धन उत्पन्न करेगा। (11) (1178)

वह पृथ्वी पर एक हजार क्षेत्रीय शासनकाल तक निवास करेगा, (और) वह इक्यावन बार कानून के पहिये को घुमाने वाला राजा होगा। (12) (1179)

जिन सभी गर्भों में वह जन्म लेगा, वह एक उच्च कुल में होगा। और वह, अपने उत्तम मूलों से प्रेरित होकर, गुरु का अनुयायी होगा; उसका नाम भद्दिया होगा।" (13) ((1180)

एकांत से खुद को बांधकर, मैं एक सुनसान बिस्तर को अपना घर बना लेता हूँ।

614 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 615 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 616 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ।

और सभी फल प्राप्त हो चुके हैं; अशुद्धियाँ617 अब जड़ से उखाड़ दी गई हैं। (14) (1181)

मेरे बारे में सब कुछ जानने वाले, सर्वज्ञ, विश्व-नेता, भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए, उन्होंने मुझे उस सर्वोत्कृष्ट स्थान पर स्थापित किया। (15) (1182)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (16) (1183)

इस प्रकार पूज्य भद्दिया कालिगोधायपुत्त थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

भद्दिया कादिगोधायपुत्त थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

43. थेरा कालीगोधापुत्तभद्दिया की जीवनी पर टिप्पणी।

पद्ममुत्तरा सम्बुद्धम् से शुरू होने वाले श्लोक आदरणीय भद्दिया थेरा, कालीगोधा के पुत्र, की जीवनी का वर्णन करते हैं। इन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, पुनर्जन्म के चक्रों (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस-उस जन्म में एक समृद्ध परिवार में, प्रतापी पद्ममुत्तरा के समय में पुनर्जन्म लिया। आयु में वृद्धि होने पर, उन्होंने अपने परिवार, पत्नी और बच्चों का

विस्तार किया; नागरिकों को पुण्य कर्म करते देखकर, वे स्वयं भी अच्छे कर्म करने के लिए प्रेरित हुए, उन्होंने बुद्ध के नेतृत्व में भिक्षुओं के समूह को आमंत्रित किया, मोटे बुने हुए कपड़े या ऊनी चादर आदि से उच्च मूल्य के पलंग तैयार किए, प्रतापी बुद्ध के अपने पुरोहितों के साथ वहाँ विराजमान होने पर उत्तम भोजन की व्यवस्था की और महान दान दिया। इस प्रकार अपने जीवनकाल में पुण्य कर्म करते हुए उन्होंने देवताओं और मनुष्यों दोनों के बीच सुख का अनुभव किया और बाद में उनका पुनर्जन्म हुआ; जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तब वे रानी कालीगोधा के पुत्र के रूप में प्रकट हुए। बुद्धि प्राप्त करने पर, अपनी सुगठित कद-काठी और हाथों-पैरों की मोटाई के कारण, साथ ही रानी कालीगोधा के पुत्र होने के कारण, वे कालीगोधा के पुत्र भद्दिया के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे गुरु के प्रति अत्यंत प्रसन्न थे, अपने माता-पिता का हृदय जीत लिया, भिक्षु बन गए और शीघ्र ही अरहत बन गए।

54. अरहत बनने पर, उन्हें अपने पूर्व कर्म का स्मरण हुआ, वे प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने पूर्व कर्म (या उनके द्वारा पूर्व में किए गए कर्म) को प्रकट करने के लिए पद्ममुत्तरा सम्बुद्धम् से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। इसका अर्थ नीचे बताया गया है (या पहले ही मेट्टाचित्तम् 9 में वर्णित है: मित्रता भाव), सभी प्राणियों के प्रति स्नेह और आनंद भाव विकसित होता है; इस प्रकार, प्रेम से युक्त मन ही मेट्टाचित्त कहलाता है, (प्रेम से भरा मन)। ऐसे महिमावान व्यक्ति के प्रति, जिनके पास यह मन है, वे मेट्टाचित्त (प्रेममय) हैं; वे प्रेममय हैं; महामुनि (महान ऋषि), समस्त पुरोहितों में महान होने के कारण वे एक महान ऋषि हैं; स्वयं प्रबुद्ध बुद्ध पद्ममुत्तरा; इस प्रकार, संबंध स्थापित होता है। जनतासब्बा (सभी लोग), समस्त मानव जाति, नगर के सभी निवासी; इस प्रकार, अर्थ स्थापित होता है। सब्बा-लोकग्गनायकम्, समस्त विश्व के सर्वोच्च नेता; उपेति (पहुँचते हैं), लोग आत्मप्रबुद्ध बुद्ध पद्ममुत्तरा, सर्वोच्च सर्वश्रेष्ठ नेता के निकट जाते हैं, क्योंकि वे समस्त विश्व को निर्वाण की ओर ले जाते हैं; इस प्रकार, यह संबंध है।

55. सत्तुकंच बद्धकंच, भौतिक और स्थिर दोनों, आमिसम् (घटक) स्थिर मानी जाने वाली सामग्री, और अस्थिर आटा (जौ का आटा); दूसरे शब्दों में, भोजन, पेय पदार्थ, या थैली में पकाए या उबाले गए विशेष प्रकार के केक, पूप, चबाने योग्य, खाने योग्य, चावल का दलिया (या उबले हुए चावल) आदि, समय-सीमा (यावकालिका) के अनुसार होने के कारण आमिसा (भोजन सामग्री) हैं; पीने और खाने योग्य पोषण ग्रहण करने के साथ-साथ वह स्वामी को दान भी देता है; पुण्य का अतुलनीय क्षेत्र; इस प्रकार, यह संबंध है।

58. आसनम् बुद्धयुत्तकम, बुद्ध के योग्य आसन, सात प्रकार के रत्नों से बना आसन, बुद्ध से जुड़ा हुआ, बुद्ध के लिए उपयुक्त, बुद्ध के योग्य; यही इसका अर्थ है। शेष को व्यवस्थित क्रम (अनुयोग) से आसानी से समझा जा सकता है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा भद्दिया के पुत्र का

कालीगोधा का अंत हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 44. थेरा सन्निधापक

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

44. सन्निधापक 618

जंगल में एक झोपड़ी बनाकर, मैं एक पहाड़ पर रहने लगा (तब), मैं यश और अपमान दोनों में प्रसन्न था, चाहे मुझे कुछ मिले या न मिले।619 (1) (1184)

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, यज्ञ प्राप्तकर्ता, एक लाख गुरुओं के साथ (उस समय) मेरी उपस्थिति में आए। (2) (1185)

कमल के नाम पर रखे गए महान नायक, जो आ चुके थे, उनके लिए मैंने घास की चटाई बिछाई और उसे गुरु को दे दिया। (3) (1186)
खुश, प्रसन्न हृदय से, एकदम स्पष्ट मन से,

---

617 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल) 618 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 619 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
620 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या जंकेट (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मैंने धर्मात्मा (संबुद्ध) को भोजन और पेय दोनों प्रदान किए। (4) (1187)
उस समय जब मैंने उसे वह उपहार दिया था, तब से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है: यही अरंडी के तेल का फल है।622 (5) (1188)
इसके बाद इकतालीसवें युग में मैं अरिंदमा623 के नाम से जाना जाता था, जो महान शक्ति वाला, चक्र घुमाने वाला, सात रत्नों का स्वामी राजा था। (6) (1189)624
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) (1190)
इस प्रकार पूज्य सन्निधापक625 थेरा ने ये श्लोक कहे।
सन्निधापक626 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
44. थेरा सन्निष्ठपक की जीवनी पर टिप्पणी।
araññe kuṭikam katvā से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा सन्निष्ठपाक की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। पूर्व बुद्धों की सम‍र्पित सेवा करते हुए, उन्होंने पुनर्जन्म के चक्रों (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया, और इस-उस जन्म में उनका पुनर्जन्म तेजस्वी पद्ममुत्तरा के समय एक गृहस्थ परिवार में हुआ। जब वे ज्ञान की आयु प्राप्त कर चुके, तो गृहस्थ जीवन के बंधन में बंध गए, परन्तु गृहस्थ जीवन की हानि को भांपकर उन्होंने भौतिक सुखों और व्यभिचार (किलेष) के सुखों का त्याग कर एक पहाड़ी पर वनवास में निवास किया। उसी अवसर पर, तेजस्वी पद्ममुत्तरा एकांत की इच्छा से उनके स्थान पर आ पहुँचे। फिर उस तपस्वी ने परम पूज्य बुद्ध से मुलाकात की, श्रद्धापूर्वक उन्हें प्रणाम किया, उनके बैठने के लिए घास बिछाई और उन्हें अर्पित किया। उन्होंने वहां बैठे परम पूज्य बुद्ध का अंजीर और अन्य कई छोटे-बड़े मीठे फलों से सत्कार किया। इस पुण्य कर्म के फल के कारण उनका वहां से निधन हो गया और वे बार-बार जन्म-मृत्यु के चक्र में विचरण करते हुए देवताओं और मनुष्यों के बीच रहे, दोनों के सुख का आनंद लेते हुए एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया, जब इस बुद्ध का जन्म हुआ। पवित्र आस्था से परिपूर्ण होकर वे भिक्षु बन गए, कुछ ही समय बाद उन्होंने विपश्यना (ज्ञान) प्राप्त कर ली और अरहत बन गए। वे थेरा सन्निष्ठपक के नाम से प्रसिद्ध थे क्योंकि वे निर्वाण में भली-भांति स्थापित थे, जिसे निर्वाण की प्राप्ति के समान ही निर्वाण का शांत मार्ग माना जाता है, मानो किसी तेज धार वाले यंत्र की नोक पर अरहत की प्राप्ति हो जाती है।
70. अरहत बनने पर, उन्हें अपने पूर्व कर्म याद आए, वे मन से प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'अरञ्ञे कुटिकम् कत्वा' से शुरू होने वाला श्लोक बोला। वहाँ (जंगल में), शेर, बाघ आदि जैसे खतरों के कारण मनुष्य इस स्थान में प्रसन्न नहीं होते, इससे संतुष्ट नहीं होते और यहाँ नहीं ठहरते; अतः, 'अरञ्ञे (जंगल); उस जंगल में; कुटिकम् (एक कक्ष) में घास की छत वाला निवास बनाकर, पहाड़ी पर; वासामि (मैं रहता हूँ), मैंने अपना निवास बनाया; यही अर्थ है। मैं लाभ-हानि, यश-अपमान से संतुष्ट होकर रहता था; यही संबंध है।

72. जलजुत्तमनामकम (सर्वोत्तम जलीय फूल), जल में उत्पन्न जलज (जलीय उत्पाद), कमल (पदुम); सर्वोत्तम जलीय उत्पाद सर्वोत्तम कमल है; उनका नाम जलजुत्तम है, जिसका नाम सर्वोत्तम जलीय फूल के समान है; जलजुत्तम नाम के उस बुद्ध का अर्थ सर्वोत्तम कमल है; यही अर्थ है। पाली पद्धति का अनुसरण करके इसे आसानी से समझा जा सकता है।

टिप्पणी

थेरा की जीवनी

सन्निष्ठापक

समाप्त हो गया है

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 45. थेरा पञ्चहत्थिया

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

45. पंचहत्थिया 627

सुमेधा नामक सम्बुद्ध बाज़ार से दृष्टि झुकाए, कम बोलते, सचेत, अपनी इंद्रियों को सतर्क रखते हुए यात्रा कर रहा था। (1) (1191)

फिर वे मेरे लिए लाए — मेरे शीर्ष-शिखर के लिए — पाँच मुट्ठी जल लिली।

---

621 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 622 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 623 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 624 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)। 625 शाब्दिक अर्थ, "गया"। 626 PTS के लिए BJTS के साथ संकालेसी का पाठ। 627 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 628 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

629 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 630 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

मैंने अपने हाथों से (अच्छी तरह से) प्रसन्न होकर उनके साथ बुद्ध-पूजा की। (2) (1192)

(तब) वे फूल (जो मैंने रखे थे) शिक्षक की छत्रछाया बन गए। वे छात्र एक (अच्छे) शिक्षक के पास जैसे झुंड बनाकर आते हैं, वैसे ही विशाल हाथी के पास आ गए। (3) (1193)
मैंने जब से (उसे) वह फूल अर्पित किया है, तब से तीस हजार युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है: यही बुद्ध-पूजा का फल है। (4) (1194)
एक सौ बीस युग बाद पाँच (विभिन्न) क्षत्रिय थे। (उन सभी को) हत्थिया कहा जाता था, 632 चक्र घुमाने वाले महान शक्तिवान राजा। (5) (1195)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) (1196)
इस प्रकार पूज्य पंचहत्थिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
पंचहत्थिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
45. थेरा पंचहत्थिया की जीवनी पर टीका।
सुमेधो नाम सुम्बुद्धो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा पंचहत्थिया की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, उन्होंने पुनर्जन्म के चक्रों (वत्) से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित किए और इस या उस जन्म में, वे सुमेधा बुद्ध के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिए। बुद्धि की आयु प्राप्त करने पर, उन्होंने तीन रत्नों में अटूट आस्था रखते हुए जीवन व्यतीत किया। उस अवसर पर वे पाँच मुट्ठी सफेद लिली (उप्पला) लाए। उन्होंने वे पाँच मुट्ठी लिली श्रद्धापूर्वक सड़क पर विचरण कर रहे सुमेधा बुद्ध को अर्पित कीं। वे पाँच मुट्ठी लिली आकाश में छत्र बन गईं, तथागव बुद्ध के साथ गईं और उन्हें छाया प्रदान की। उस घटना को देखकर वे आनंदमय हो उठे, उनका शरीर उत्साह (पीति) से भर गया, उन्होंने अपने जीवन भर उसी पुण्य कर्म को याद रखा और वहाँ से मृत्यु के बाद दिव्य लोक में पुनर्जन्म लिया। इसके बाद, बार-बार पुनर्जन्म के चक्र में भटकते हुए, उनका पुनर्जन्म एक पारिवारिक घर में हुआ, जहाँ इस बुद्ध का जन्म हुआ। बुद्धि प्राप्त करते ही उनमें श्रद्धा का भाव उत्पन्न हुआ; फलस्वरूप वे भिक्षु बन गए, विपश्यना (अंतर्दृष्टि) विकसित की और कुछ ही समय बाद अरहत बन गए। वे अपने द्वारा किए गए पुण्य कर्म के नाम पर थेरा पंचहत्तिया के नाम से प्रसिद्ध हुए।
77. अपने पूर्व कर्म को याद करते हुए, उन्होंने सुमेधो नाम सम्बुद्धो से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया, ताकि अपने द्वारा किए गए और देखे गए पूर्व कर्म को प्रत्यक्ष रूप से प्रकट कर सकें। वहाँ, सुमेधो (अच्छा ज्ञान) वह तेजस्वी, आत्मप्रबुद्ध बुद्ध सुमेधा, जिन्हें अच्छी बुद्धि प्राप्त थी, और चार आर्य सत्यों में उचित अंतर्दृष्टि, विश्लेषणात्मक ज्ञान इत्यादि जैसे ज्ञान प्राप्त था; अंतरापणे (खरीदारी केंद्र के भीतर) वे गली में गए; इस प्रकार संबंध है। ओक्खित्तचक्खु (झुकी हुई आँखें) दृष्टि को नीचे झुकाए हुए; मितभाणी (संयमित वक्ता) सीमा को जानकर बोलने की आदत; सीमा को जानकर उन्होंने सत्य (धम्म) का उपदेश दिया; इस प्रकार अर्थ है। शेष तो आसानी से समझ में आ जाता है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा पंचहत्थिया का
समाप्त हो गया है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 46. थेरा पदुमच्छदानिया

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

2.146. थेरा पद्माच्छादनिया की जीवनी पर टीका।
कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

46. पदुमच्छदानिया 633

जब विपस्सी, प्रधान पुरुष, विश्व-स्वामी निर्वाण प्राप्त कर चुके थे, तो मैंने एक खिलता हुआ गुलाबी कमल लेकर उसे (बुद्ध की) चिता पर रखा। (1) (1197)
और जब (इसे) चिता पर रखा गया, (वह कमल) आकाश में उठ उठा। आकाश में एक शामियाना बनाकर मैंने (इसे) चिता के ऊपर थामे रखा। (2) (1198)

631 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 632 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना," "चिंतन करना," "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ। 633 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 634 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
635 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया) के रूप में। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

उस फूल को अर्पित करने के बाद से इक्यावन युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है: यही बुद्ध-पूजा का फल है। (3) (1199)
सैंतालीस युग पहले (मेरा) नाम पद्मिसारा रखा गया था, जो चारों दिशाओं में विजयी था, और महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था। (4) (1200)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) (1201)
इस प्रकार, पूज्य पद्ममुच्चदानीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
पद्मुच्चदानीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
46. थेरा पद्माच्छादनिया की जीवनी पर टीका।
निब्बुते लोकनाथमहि से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा पद्माच्छादनीय की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, पुण्य कर्मों का संचय करते हुए, जो पुनर्जन्म के चक्रों (वत्त) से मुक्ति दिलाने में सहायक थे, उन्होंने इस और उस जन्म में एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। ज्ञानोदय प्राप्त करने पर, उन्हें तीन रत्नों में दृढ़ विश्वास हो गया और उन्होंने परिनिर्वाण प्राप्त कर चुके विपस्सी की चिता पर श्रद्धापूर्वक कमल के फूल अर्पित किए। वे अपने जीवनकाल तक उसी सुखद और पवित्र मन से रहे और उसके बाद केवल अच्छे जन्मों में विचरण करते हुए, कई बार दिव्य और मानवीय, दो प्रकार के आनंद का अनुभव किया और हमारे आत्मप्रबुद्ध बुद्ध के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। ज्ञानोदय प्राप्त करने पर, उन्होंने गुरु में दृढ़ आस्था रखी, भिक्षु धर्म का पालन करते हुए, परिश्रम और लगन से काम लिया और शीघ्र ही अरहत बन गए। जब भी वे रात्रि विश्राम, दिन विश्राम आदि स्थानों पर निवास करते थे, तो उनका मठ कमल (पदुम) के फूलों से ढका रहता था; इसी कारण वे थेरा पद्माच्छादनीय के नाम से प्रसिद्ध हुए।
83. अपने पूर्व कर्म को याद करते हुए, उन्होंने निब्बुते लोकनाथंहि से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्म को मानसिक सुख के लिए प्रकट कर सकें। वहाँ निब्बुते (जब निर्वाण में प्रवेश किया), जब गुरु ने स्कंधों के नाश होने से परिनिर्वाण प्राप्त किया; आरोपयिं (मैंने आरोहण किया), जब आत्मप्रबुद्ध बुद्ध विपस्सी का शरीर चिता पर लाया गया, तब मैंने आदरपूर्वक चिता को अर्पित किया; यही अर्थ है। उपरोक्त शैली के कारण शेष श्लोकों का अर्थ सरल है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा पद्माच्छदानिया का
समाप्त हो गया है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 47. थेरा सयानदायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

47. सयनादायक 637

मैंने सिद्धार्थ, जो धन्य, प्रेममय और तटस्थ हैं, को (सभी) बिस्तर के वस्त्रों से ढका हुआ एक उत्कृष्ट पलंग दिया। (1) (1202)
(तब) भगवान ने वह उपयुक्त पलंग और कुर्सी स्वीकार की। (और) उस आसन से उठकर विजेता हवा में उड़ गया। (2) (1203)
जब से मैंने उसे वह पलंग दिया है (बहुत पहले), तब से लेकर अब तक के चौरानवे युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला; यही पलंग का फल है। (3) (1204)
वरुण देव कहलाने वाला,639

---

636 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करने वाला," यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 637 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 638 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
639 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए।

सात रत्नों का स्वामी, इक्यावनवें युग में महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था (इसलिए)। (4) (1205)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) (1206)
इस प्रकार पूज्य सायनाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
सायनाडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
47. थेरा सयनदायक की जीवनी पर टीका।

सिद्धार्थस भागवत से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेर सयनदायक की जीवनी का वर्णन करते हैं। इन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस-उस जन्म में एक परिवार में पुनर्जन्म लिया। यह जन्म प्रतापी सिद्धार्थ के समय हुआ था। बुद्धि प्राप्त करने पर, उन्होंने गुरु में अटूट आस्था रखी और सोने के लिए हाथी दांत, सोना आदि से बना एक पलंग बनवाया, जिस पर बहुमूल्य रंग-बिरंगी चादरें बिछाईं और श्रद्धापूर्वक प्रतापी सिद्धार्थ को अर्पित किया। प्रतापी सिद्धार्थ ने दानदाता पर दया करते हुए भेंट स्वीकार की और पलंग के विश्राम का आनंद लिया। इस पुण्य कर्म के फलस्वरूप, उन्होंने दिव्य और मानवीय आनंद का अनुभव किया और जब सिद्धार्थ बुद्ध का जन्म हुआ, तब वे एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिए। ज्ञानोदय प्राप्त करने पर, उन्होंने गुरु के विधान (शासन) में दृढ़ विश्वास स्थापित किया, भिक्षु बन गए, विपश्यना (अंतर्दृष्टि) विकसित करने लगे और शीघ्र ही अरहत बन गए। अपने पूर्व कर्म के नाम से ही वे थेरा सयनदायक के नाम से प्रसिद्ध हुए।
80. एक दिन, अपने पूर्व कर्म को याद करके, वे प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'सिद्धार्थस भगवतो' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। पाली पद्धति का अनुसरण करने से यह सब आसानी से समझ में आ जाता है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा सयनदायका का
समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 48. थेरा कनकमादायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

48. कंकमदायक 640

मैंने ईंटों से जमीन को ढेर करके, अत्थादस्सी, (महान) ऋषि, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ व्यक्ति के लिए एक पैदल मार्ग का निर्माण करवाया। (1) (1207)
वह पैदल मार्ग बहुत अच्छी तरह से बनाया गया था, जिस पर पाँच रत्न ढेर लगे हुए थे। वह सौ हाथ लंबा था और ध्यान के लिए सुखद था। (2) (1208)
धन्य बुद्ध ने इसे स्वीकार किया — अत्थादस्सी, पुरुषों में श्रेष्ठ — (और) अपने हाथ से कुछ रेत छानते हुए, उन्होंने ये छंद (ज़ोर से) कहे: (3) (1209)
“रेत के इस उपहार और इस उत्तम निर्मित मार्ग के कारण, (यह व्यक्ति) रेत का आनंद लेगा और सात रत्नों को प्राप्त करेगा। (4) (1210)
तीन युगों तक वह देवताओं के बीच दिव्य शासन करेगा। दिव्य अप्सराओं से घिरा हुआ वह (महान) सुख का आनंद लेगा। (5) (1211)
मानव जगत में आकर वह एक देश का राजा होगा, और तीन बार वह चक्र-चालक के रूप में (महान) पृथ्वी पर निवास करेगा।” (6) (1212)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 640 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

उस (अच्छे) कर्म के बाद से अठारह सौ युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है: यही उस मार्ग का फल है। (7) (1213)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) (1214)
इस प्रकार पूज्य चंकमदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
चांकमदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
48. थेरा चंकमनदायक की जीवनी पर टीका।
अत्थादस्सिस्सा मुनिनो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा चंकमनदायक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, उन्होंने पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया, और इस या उस जन्म में, परम पूज्य बुद्ध अत्थादस्सी के समय में एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। ज्ञानोदय की आयु प्राप्त करने पर, उन्होंने गुरु के प्रति गहरी आस्था रखी; उन्होंने एक ऊँची नींव पर सुशोभित, चांदी के ढेर की तरह चमकता हुआ, सुचारु कार्यों से सुसज्जित एक कुटिया बनवाई, उस पर मोती के टुकड़ों के समान सफेद रेत (मुत्तदल्ला) बिछाई और उसे परम पूज्य बुद्ध को अर्पित किया। भगवान बुद्ध ने उस भिक्षु को स्वीकार किया, उसे शारीरिक और मानसिक एकाग्रता का सुख प्राप्त कराया और भविष्यवाणी की: "यह भविष्य में गौतम युग में भगवान बुद्ध का शिष्य बनेगा। उस पुण्य के कारण, वह बार-बार जन्म-जन्म के चक्रों में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण करता रहा, दोनों प्रकार के आनंद का अनुभव किया, और जब यह बुद्ध प्रकट हुए, तब वह एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया; परिपक्व आयु प्राप्त करने पर, वह धार्मिक आस्था से संपन्न हुआ, युग में भिक्षु बना, शीघ्र ही अर्हतत्व प्राप्त किया, और अपने पुण्य कर्म के नाम से चंकमनदायक नामक थेरा के रूप में प्रसिद्ध हुआ।"
93. अपने पूर्व में किए गए पुण्य कर्म को याद करके, एक दिन वे आनंद में लीन हो गए और उन्होंने अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'अत्थादस्सिस्सा मुनिनो' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, अत्थादस्सिस्सा (अत्थादस्सी का), वह जो कल्याण को देखता और समझता है; संबंध (पयोजन), वृद्धि, निर्वाण की उन्नति; इस प्रकार, अत्थादस्सी (कल्याण का द्रष्टा); दूसरे शब्दों में, वह निर्वाण के कल्याण को देखने और जानने का अभ्यस्त है; इस प्रकार, अत्थादस्सी; मैंने उस महिमावान, ऋषि अत्थादस्सी के लिए एक आश्रम बनाया था, जो हृदय को आनंदित करने वाला, मन को तृप्त करने वाला, विकास के लिए सहायक, मन की पूर्णता को सुगम बनाने वाला था; इस प्रकार, संबंध है। उपरोक्त विधि का अनुसरण करके शेष बातें आसानी से समझ में आ जाएंगी।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा चंकमनदायका का
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 49. थेरा सुभद्दा

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

49. सुभद्दा

पद्ममुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, यज्ञ-प्राप्तकर्ता, महान ख्यातिप्राप्त, लोगों को ऊपर उठाकर उन्हें निर्वाण प्राप्त कराते हैं। (1) (1215)
और जब बुद्ध का निधन हुआ641 तो दस हजार लोक कांप उठे। तब लोगों और देवताओं का एक विशाल समूह वहाँ एकत्रित हुआ। (2) (1216)
प्रसन्न होकर, (और) प्रसन्न हृदय से मैंने सर्वश्रेष्ठ पुरुष को धूप और चमेली के फूलों से भरे आवरण से अभिषेक किया। (3) (1217)
विश्व में अद्वितीय शिक्षक, मेरे विचारों को जानकर, हे बुद्धिमान, संबुद्ध ने मेरे बारे में ये श्लोक कहे: (4) (1218)
मैं उस व्यक्ति के बारे में विस्तार से बताऊंगा जिसने मेरे इन अंतिम क्षणों में मुझे प्रभावित किया।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 641 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 642 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
643 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मुझे सुगंध और फूलों से ढक दिया; (आप सभी) मेरी बातें सुनो: (5) (1219)
यहाँ से गिरकर यह व्यक्ति तुसिता स्वर्ग में जाएगा। वहाँ दिव्य शासन करते हुए वह (फिर) निम्माना जाएगा।644 (6) (1220)
(वहाँ) ठीक उसी प्रकार उसने उत्तम फूल देकर, अपने कर्मों में प्रसन्नता का अनुभव किया होगा और (तब) उसे बहुत सुख प्राप्त होगा। (7) (1221)
फिर से पतित होकर यह व्यक्ति तुषिता शरीर में जन्म लेगा। उस शरीर से भी गिरकर वह मनुष्य अवस्था में चला जाएगा। (8) (1222)
शाक्यों का पुत्र, महान हाथी, देवताओं सहित संसार का नेता, दृष्टिभ्रमित, जागृत, अनेकों को निर्वाण प्राप्त कराएगा। (9) (1223)
(एक गैर-बौद्ध के रूप में) आगे बढ़ते हुए, (अपनी) अच्छी जड़ों से प्रेरित होकर, संबुद्ध के पास पहुँचकर वह उस समय (अच्छे) प्रश्न पूछेगा। (10) (1224)
एक बार जब वह बोल चुका होगा, तो संबुद्ध, सर्वज्ञ, विश्व-नेता, अपने पूर्व कर्मों को समझकर (चार आर्य) सत्यों को प्रकट करेगा।645 (11) (1225)
यह बुद्धिमान और ऊर्जावान, प्रसन्न और शांत मन वाला व्यक्ति, गुरु की पूजा करने के बाद (बौद्ध बनने के लिए) प्रस्थान करने का निवेदन करेगा। (12) (1226)
सर्वोच्च शिक्षा में निपुण, वह बुद्ध, अपने कर्मों से प्रसन्न होकर, उसके प्रसन्न मन को देखकर, उसे (तब) दीक्षा देंगे। (13) (1227)
इस व्यक्ति ने अपने तमाम प्रयासों के बाद

644 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करने वाला," यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े और उससे बने ऊपरी वस्त्र दोनों को संदर्भित करता है। 645 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

बुद्ध के 646 विधान में, सभी दोषों को भली-भांति जानकर निर्वाण प्राप्त होगा, दोषरहित होकर।" (14) (1228)
पांचवां पाठ भाग। अपने पूर्व कर्मों के अनुरूप, शांत और सजग रहते हुए, बुद्ध का वैध पुत्र होने के नाते, मैं धम्म से जन्मा, उत्तम निर्मित प्राणी हूँ। (15) (1229)
शिक्षा के राजा के पास पहुँचकर, मैंने अंतिम प्रश्न पूछा। मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने शिक्षा की धारा को प्रकट किया। (16) (1230)

उनकी शिक्षा को समझकर, मैं उस व्यवस्था से प्रसन्न होकर जीवन व्यतीत करता था। समस्त दोषों को भली-भांति जानकर, मैं अब दोषों से मुक्त होकर जीवन व्यतीत करता हूँ। (17) (1231)

एक लाख युगों बाद कमल के नाम से जाने जाने वाले (बुद्ध) ने निर्वाण प्राप्त किया, जो तेल से वंचित दीपक के समान, अथाह है। (18) (1232)648

वहाँ रत्नों से बना एक स्तूप था, जो सात लिग (ऊँचा) था, अत्यंत शुभ और रमणीय; वहाँ मैंने ध्वज-पूजा की। (19) (1233)

तिस्सा, संबुद्ध का सबसे प्रमुख अनुयायी, कस्सपा, मेरा (स्वयं का) वैध पुत्र था, जो उस विजेता की शिक्षाओं का उत्तराधिकारी था। (20) (1234)

अपनी अपरिपक्व बुद्धि के कारण, मैंने (एक बार) अशुभ शब्द बोले। उस (बुरे) कर्म के फलस्वरूप मैंने (केवल) विजेता की मृत्यु देखी।649 (21) (1235)

साल के पेड़ों से घिरे एक बगीचे में (महान) ऋषि, (तब) अपनी मृत्यु शैया पर, मित्र, दयालु, विजयी,

---

646 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ। 647 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (gī tel)। 648 शाब्दिक अर्थ, "गया"। 649 BJTS के साथ PTS sañjālesi के लिए sañcālesi पढ़ना।

महान नायक ने मुझे (वहाँ) नियुक्त किया।650 (22) (1236)

आज, अभी इसी वक्त मैं आगे बढ़ गया हूँ; आज मेरा दीक्षा समारोह भी है।651 (और) आज ही मेरा अंतिम प्रस्थान है652 दो पैरों वाले प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ के सामने। (23) (1237)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) (1238)

इस प्रकार पूज्य सुभद्दा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुभद्दा थेरा की कथा का अंत हो गया है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

49. थेरा सुभद्दा की जीवनी पर टीका।

पदुमुत्तरो लोकविदू से शुरू होने वाले श्लोक, आदरणीय थेरा सुभद्दा की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, निर्वाण प्राप्त करने के उद्देश्य से पुण्य कर्म संचित करते हुए, इस और उस जन्म में, वे धनवान और धर्मपरायण एक परिवार में, प्रतापी पद्ममुत्तरा के समय में पुनर्जन्म लेकर आए। ज्ञानोदय प्राप्त करने पर, उन्होंने गृहस्थी का बंधन धारण किया, तीनों रत्नों में गहरी आस्था रखी, परिणीति के पलंग पर लेटे हुए तेजस्वी पद्ममुत्तरा को देखा (जो चारों ओर से निर्वाण की ओर अग्रसर हैं), दस हजार ब्रह्मांडों के एकत्रित दिव्य प्राणियों को भी देखा, श्रद्धा से भर गए और आदरपूर्वक निग्गुंडी, केतका, नीला (नीलक) आशोक, असिता आदि अनेक सुगंधित पुष्प अर्पित किए। अपने जीवनकाल तक जीवित रहने के बाद, उस पुण्य कर्म के फलस्वरूप, वहाँ से देहांत होने पर, उन्होंने तुषिता आदि दिव्य लोकों में दिव्य समृद्धि का आनंद लिया, उसके बाद मनुष्यों के बीच मानवीय समृद्धि का आनंद लिया और जहाँ भी उनका जन्म हुआ, उन्हें सुगंधित पुष्पों से सम्मानित किया गया। जब ये बुद्ध प्रकट हुए, तो उनका पुनर्जन्म एक समृद्ध परिवार में हुआ। बुद्धि प्राप्त करने पर, यद्यपि उन्हें इंद्रिय सुखों में हानि दिखाई देने लगी, फिर भी उन्होंने बुद्ध के दर्शन तब तक नहीं किए जब तक कि प्रतापी बुद्ध परिनिर्वाण की अवस्था में नहीं चले गए। वे तभी भिक्षु बने जब प्रतापी बुद्ध परिनिर्वाण की शय्या पर लेटे हुए थे और उन्होंने अर्हतत्व प्राप्त किया। वे अपने पूर्व में किए गए पुण्य कर्म के कारण सुभद्दा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

101. अपने पूर्व कर्म को याद करके, उन्होंने अपने मानसिक सुख के लिए किए गए पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'पदमुत्तरो लोकविदु' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। यह तो सरल है। सुनथा ममभासतो :P: निब्बायिस्सतिऽनासावो, मेरी बात सुनो :P: जो दोषमुक्त होकर निर्वाण में प्रवेश करता है; परम पूज्य पद्ममुत्तरा ने परिनिर्वाण के पलंग पर लेटे हुए यह भविष्यवाणी की थी।

पाँचवें मोड़ पर टिप्पणी

पाठ (भानवर) का, है

समाप्त।

115. उन्होंने अपनी उचित प्राप्ति को दर्शाने के लिए पुबकम्मेन सम्युत्तो से शुरू होने वाले एक श्लोक का पाठ किया। एकाग्गो, एकाग्र मन वाला; सुसमाहितो (अच्छी तरह से एकाग्र) शरीर और मन इस प्रकार शांत, इसका अर्थ है। बुद्धस्स ओरसो पुत्तो (बुद्ध का हृदय पुत्र) वह जिसने बुद्ध के हृदय से आए उपदेशात्मक परामर्श को सुनने के बाद अर्हतत्व की प्राप्ति की है; इस प्रकार, इसका अर्थ है। धम्मजोम्हि सुनिम्मितो (मैं अच्छी तरह से सृजित धम्म से जन्मा हूँ), मैं वह हूँ और मैं वह बन जाता हूँ जिसने अपने सभी कर्तव्यों को अच्छी तरह से पूरा किया है, श्रेष्ठ (आरिया) के जन्म से अच्छी तरह से सृजित, जो कर्म से उत्पन्न हुआ, मानसिक अभ्यास का कर्म (कम्मत्थाना); इस प्रकार, इसका अर्थ है

116. धम्मराजम उपगम्म (सत्य के राजा (धम्म) के पास पहुँचकर, सत्य (धम्म) द्वारा समस्त प्राणियों के राजा बने प्रतापी के निकट जाकर, यही अर्थ है। अपुच्चिम पण्हमुत्तमम (मैंने सबसे उत्तम प्रश्न पूछा), मैंने ऐसे प्रश्न पूछे जो स्कंध, इंद्रियों के निवास स्थान, धातु, सत्य, प्रतीत्यसमुत्पाद आदि जैसे उत्तम विषयों से उचित रूप से संबंधित थे, यही अर्थ है। कथायन्तो च मे पण्हम (अपना प्रश्न भी कहकर), मेरे प्रश्न को कहकर और समझाकर, हमारे प्रतापी ने मुझे सत्य (धम्म) की धारा की ओर अग्रसर किया, सत्य (धम्म) की धारा के निकट ले जाकर उसमें प्रवेश कराया, जो पूर्ण अवशेष रहित निर्वाण का तत्व (धातु) माना जाता है; यही अर्थ है। अर्थ।

118. जलजुत्तमनायको (सबसे उत्कृष्ट जलीय पुष्प नेता, पद्ममुत्तरा नाम से) इस काल्पनिक शब्द में व्यंजन 'म' को 'य' में परिवर्तित किया गया है; निब्बायि अनुपादानो (अनासक्त होकर बुझ गया) अदृश्य हो गया, प्रकट नहीं हुआ, पाँचों स्कंधों (जो आसक्ति हैं) को ग्रहण किए बिना निर्वाण में प्रवेश कर गया; मानव जगत आदि में भी कहीं भी विधिवत स्थापित हुए बिना; यही अर्थ है। दीपो वा तेलसंखया (जैसे वह दीपक जिसका तेल पूरी तरह समाप्त हो गया हो) वह बाती और तेल की अनुपस्थिति के कारण, तेल के पूर्ण रूप से समाप्त हो जाने के कारण, दीपक की तरह बुझ गया; यही संबंध है।

119. परिनिभान प्राप्त कर चुके उस तेजस्वी पद्ममुत्तरा का रत्नों से बना ठोस मंदिर सात योजन ऊँचा था; यही इसका अर्थ है। धजम तत्थ अपुजेसिम (मैंने वहाँ श्रद्धापूर्वक ध्वज अर्पित किया) मैंने उस मंदिर में मनभावन, सर्वगुणपूर्ण और उत्तम ध्वज श्रद्धापूर्वक अर्पित किया; यही इसका अर्थ है।

120. कस्सपस्सा च बुद्धस्स, बुद्ध कस्सपा के, प्रतापी पद्ममुत्तरा के समय से, मेरे बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों के चक्रों में भटकते हुए, मेरे प्रिय पुत्र तिस्सा, बुद्ध, विजेता, के धर्म में उत्तराधिकारी थे, जो आत्मप्रबुद्ध बुद्ध कस्सपा के प्रमुख शिष्य थे; इस प्रकार, संबंध है।

121. तस्स हीनेना मनसा (अपने नीच मन के कारण), मेरे उस पुत्र तिस्सा, जो मेरा मुख्य शिष्य था, के नीच और पापी (लामक) मन के कारण; अभद्दकम (बुरा) वाचम, (शब्द) आभासिम (मैंने कहा) मैंने ऐसे अनुचित और अनुपयुक्त शब्द कहे जैसे: "अन्तको पच्चिमो, अंत, अंतिम", उस कर्म का परिणाम), उस बुरे कर्म की स्पष्ट परिपक्वता के कारण जिसे अरहत के लिए निंदा माना गया; पच्चिमे अद्दसम जिनम (मैंने अंतिम क्षण में विजेता को देखा) मैंने हमारे आत्मप्रबुद्ध बुद्ध गौतम, समस्त मारों के विजेता को, मल्ल नगर के निकट उगे साल वन में, परिनिर्वाण के पलंग पर लेटे हुए, उनके सर्वांगीण अंत में पूर्ण परलोक में देखा; यही अर्थ है। इसका एक पाठ यह भी है: "पच्चा मे आसि भद्दक, मेरा भद्दक अंतिम हुआ"। उस प्रतापी के अंत के समय, निर्वाण के निकट आने के समय, पच्चा (उसका अंतिम); मे (मेरा) भद्दकम (अच्छा) आसि (था) जब मुझे चारों आर्य सत्यों का उचित ज्ञान प्राप्त हुआ, यही अर्थ है।

122. पाब्बाजेसी महावीर (महान वीर ने मुझे भिक्षु बनाया) वह ऋषि, जिन्होंने अपार परिश्रम किया, समस्त प्राणियों के कल्याण के साधक रहे, दूसरों के प्रति दयालु रहे, मारा पर विजय प्राप्त की, और जो मल्ल देश के निकट स्थित साल के उपवन में परिनिर्वाण के पलंग पर अपनी अंतिम नींद सो रहे थे, उन्होंने मुझे भिक्षु बनाया; इस प्रकार, यह संबंध है।

123. आज ही, आज ही, परम पूज्य के परिनिर्वाण के उसी दिन मेरा भिक्षुत्व संपन्न हुआ; इसी प्रकार आज ही मेरा दीक्षा संस्कार हुआ; आज ही, मेरे समक्ष दो पैरों वाले परम श्रेष्ठ प्राणी का परिनिर्वाण (पूर्ण निर्वाण) हुआ; यही संबंध है। शेष तो सहजता से समझ में आ जाता है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा सुभद्दा का

समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 50. थेरा कुंडा

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

50. कुंडा

विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ, धन्य (सिद्धार्थ) के लिए एक माला बनवाकर, मैंने उसे चमेली के फूलों से ढक दिया। (1) (1239)
फूल रखने के बाद, मैंने उन्हें बुद्ध को दे दिया। बचे हुए फूलों को उठाकर मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित कर दिया। (2) (1240)
प्रसन्नता से, अपने हृदय में आनंद लिए मैंने वह पुष्पमय माला विश्व के प्रधान नेता बुद्ध को सोने की माला के समान भेंट की। (3) (1241)
संबुद्ध, संदेह दूर होने पर, बाढ़ पार करने वालों द्वारा सम्मानित, 654 भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए, ये श्लोक बोले (तब मेरे बारे में): (4) (1242)

650 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया" 651 शाब्दिक अर्थ, "पुण्यशाली" 652 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंढ (भाग, अंश, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु (लंबा? मोटा?)।" 653 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 654 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

"मैं उस व्यक्ति के बारे में विस्तार से बताऊंगा जिसने मुझे दिव्य सुगंधों से परिपूर्ण पुष्प माला भेंट की; आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें: (5) (1243)
जब वह यहाँ से गिर जाएगा, तो यह व्यक्ति देवताओं के लोक में जाएगा, जहाँ उसके चारों ओर देवताओं की सभा होगी, और वहाँ चमेली के फूल बिखरे होंगे। (6) (1244)
उसका निवास, जो ऊँचा उठा हुआ होगा, सोने और रत्नों से बना होगा। वह दिव्य महल उसके अच्छे कर्मों से प्रकाशित होकर दमकता हुआ चमकेगा।655 (7) (1245)
वह चौहत्तर (अलग-अलग) बार दिव्य शासन करेगा। अप्सराओं द्वारा सेवा किए जाने पर, वह महान सुख का आनंद लेगा। (8) (1246)
वह पृथ्वी पर निवास करेगा और तीन सौ बार शासन करेगा। वह पाँच सौ बार कानून के पहिये को घुमाने वाला राजा होगा। (9) (1247)
वह दुज्जया नाम से जाना जाने वाला एक मानव सम्राट होगा।656 वह अपने कर्मों को जाने बिना उस पुण्य का अनुभव करेगा। (10) (1248)
वह दुःख के स्थान पर नहीं जाएगा, वह मानवीय अवस्था में जाएगा। उसके लिए ढेर सारा सोना होगा, बहुत सारा, अरबों में गिना जाएगा। (11) (1249)
वह संसार में पुनर्जन्म लेगा; वह (तब) एक ब्राह्मण पुरुष होगा, सारी का प्रिय पुत्र, (और) वांगता का ज्ञानी पुत्र। (12) (1250)
फिर वह शाइनी में आगे बढ़ेगा-

655 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 656 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 657 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

शरीरधारी658 (बुद्ध का) उपदेश। उसका नाम चूलकुंडा होगा,659 शिक्षक का अनुयायी। (13) (1251)

(यद्यपि) वह नौसिखिया होते हुए भी अरहंत बन जाएगा।660 समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए वह निर्वाण को प्राप्त करेगा, दोषरहित होकर।" (14) (1252)

अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मैंने अपने (स्वयं के) भाई,661 महान नायक जो उठ खड़ा हुआ था, और कई अन्य सुखद662 लोगों की भी प्रतीक्षा की। (15) (1253)

अपने भाई की सेवा करते हुए, जब उसकी मृत्यु हुई, तो मैंने उसके अवशेष उसके कटोरे में रखे और उसे संसार के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के बैल, संबुद्ध को अर्पित कर दिया। (16) (1254)

इस संसार में देवताओं के साथ बुद्ध ने अपने दोनों हाथों से (उस कटोरे को) उठाया। उन अवशेषों का आदर करते हुए, उन्होंने (तब) शीर्ष अनुयायी की प्रशंसा की।663 (17) (1255)

अब मेरा मन पूरी तरह से मुक्त हो गया है और मुझमें आस्था स्थापित हो गई है। समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए भी, मैं (अब) निर्मल होकर जी रहा हूँ। (18) (1256)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (19) (1257)

इस प्रकार पूज्य चुंडा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कुंडा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

उपाली, सोना, भद्दिया, सन्निधापक, हत्थिया, चदना, सेय्या-चंकमं

---

658 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 659 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)। 660 शाब्दिक अर्थ, "गया"। 661 BJTS के साथ PTS के लिए संजालेसी का पाठ। 662 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"। 663 शाब्दिक अर्थ, "पुण्यवान"।

सुभद्दा, चुंडा नाम की एक महिला: एक सौ चालीस श्लोक और उनके अतिरिक्त चार और।

उपाली अध्याय, पांचवां।

टिप्पणी अनुवाद: यू लू पे विन

50. थेरा चुंडा की जीवनी पर टिप्पणी।

सिद्धार्थस भगवतो से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य थेरा चुंडा की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी अनेक पुण्य कर्म किए थे, जो पुनर्जन्मों के चक्र (वत्) से मुक्ति दिलाने में सहायक थे। वे भगवान सिद्धार्थ के समय एक समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लिए। ज्ञानोदय प्राप्त करने पर, उन्होंने गुरु के प्रति गहरी आस्था रखी, सात प्रकार के रत्नों से जड़ा एक कीमती सोने का पात्र बनवाया, उसे चमेली के फूलों से ढककर भगवान सिद्धार्थ को श्रद्धापूर्वक अर्पित किया। वे फूल स्वतः ही आकाश में उठ गए और छत्र का रूप धारण कर लिया। तब भगवान सिद्धार्थ ने उनके बारे में भविष्यवाणी की, "भविष्य में वे भगवान गौतम के मार्गदर्शन में चुंडा नामक शिष्य बनेंगे।" उस पुण्य कर्म के फलस्वरूप वे वहां से देह त्याग कर दिव्य लोक में अवतरित हुए। समय के साथ (क्रमिक रूप से) उन्होंने इंद्रिय सुखों के छह दिव्य लोकों में समृद्धि का आनंद लिया और मनुष्यों में विश्वराज आदि के सुखों का अनुभव करने के बाद, ब्राह्मण परिवार में रूपसारी

के पुत्र के रूप में पुनर्जन्म लिया और बुद्ध के जन्म के समय थेरा सारिपुत्त के सबसे छोटे भाई बने। जब वे बुद्धि की आयु प्राप्त कर चुके थे, तो उनकी उत्कृष्ट शारीरिक वृद्धि, सर्वांगीण नेतृत्व क्षमता (परिणाम), सुंदरता और आयु के कारण, उन्हें चुंडा नाम दिया गया, जिसमें व्यंजन 'स' को 'क' में बदल दिया गया। यौवन प्राप्त करने पर, उन्होंने गृहस्थ जीवन में हानि और त्याग में लाभ को देखा, अपने भाई थेरा की उपस्थिति में भिक्षु बन गए, विपश्यना विकसित की और शीघ्र ही अर्हतत्व प्राप्त कर लिया।

125. अरहतत्व की प्राप्ति के बाद, एक दिन उन्हें अपने पूर्व कर्मों की याद आई, वे आनंद में लीन हो गए और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'सिद्धत्थस भगवतो' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। इसका अर्थ पहले ही बताया जा चुका है। 'अग्हियम' से शुरू होने वाला श्लोक भी अर्थ में सरल है।

128. वितिनाकंखो संबुद्धो (संदेह रहित आत्मप्रबुद्ध बुद्ध) संशय से मुक्त, संदेह रहित आत्मप्रबुद्ध बुद्ध, जिन्होंने श्रेष्ठ मार्ग की विशिष्ट उपलब्धि से संशय को त्याग दिया; तिन्नोगेहि पुरक्खतो (बाढ़ पार करने वालों के आगे स्वयं को रखते हुए) संशय रहित (अरहतों) से घिरे और उनके आगे रहते हुए, जिन्होंने बाढ़ पार कर ली थी; इस प्रकार, इसका अर्थ है। भविष्यवाणी का यह श्लोक अर्थ में सरल है।

139. उपात्: महावीरम्, मैंने महान वीर की सेवा की; पट्टिया (प्राप्ति के लिए) परम श्रेष्ठ लाभ, निर्वाण की प्राप्ति के लिए, मैंने महान वीर बुद्ध की सेवा और परिचारिका की, क्योंकि उन्होंने चार असंख्य युगों (कप्पा) के अतिरिक्त एक लाख युगों तक पूर्णता की पूर्ति के साथ परिश्रम किया; यही अर्थ है। अञ्ञे च पेसलेबाहु (अनेक अन्य सचेतन व्यक्ति) मैंने केवल बुद्ध की ही सेवा नहीं की, बल्कि कई अन्य शिष्यों की भी सेवा की, जिन्होंने सर्वोच्च पद प्राप्त किए थे, नैतिक उपदेशों से युक्त थे और अपने नैतिक गुणों के प्रति समर्पित थे; मे माई; भातराम (भाई) मैंने थेरा सारिपुत्त की भी परिचारिका की; यही संबंध है।

140. भातराम मे उपात्तहित्वा, अपने भाई की सेवा करने के बाद, उपनामेसिम (मैंने अर्पित किया); अपने भाई की सेवा करने के बाद, अपने कर्तव्यों और उचित कर्तव्यों का पालन करने के बाद, उनके प्राणिब्बान के समय, क्योंकि वे पहले मरे, मैंने उनके अवशेषों को अपने भिक्षापात्र में एकत्रित करके बिखेर दिया और जगत के सबसे बड़े, बुद्ध, जो मनुष्यों के महापुरुष हैं, को सौंप दिया; यही अर्थ है।

141. उभो हत्थेहि पग्गयहा, दोनों हाथों से उठाकर, अग्गसावकम, प्रमुख शिष्य, कित्तयी, ने प्रचारित किया; उस प्रतापी ने मेरे द्वारा अर्पित उस अवशेष को अपने दोनों हाथों से उचित ढंग से धारण किया, और उस अवशेष को उचित रूप से प्रदर्शित करने के लिए थेरा सारिपुत्त को प्रकट किया; यही अर्थ है। शेष का अर्थ स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा कुंडा का
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 51. थेर विधूपनदायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स
विज्ञानी अध्याय, छठा

---

51. विधूपनदायक 664

मैंने विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ, और सभी द्विपाद प्राणियों के समान भगवान, पद्ममुत्तरा बुद्ध को एक पंखा समर्पित किया। (1) (1258)
अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए, दोनों हाथों को जोड़कर, संबुद्ध की पूजा करने के बाद, मैं उत्तर दिशा की ओर मुख करके चला गया। (2) (1259)
पंखा उठाते हुए (मैंने उसे दिया) शिक्षक, विश्व के प्रमुख नेता; भिक्षुओं की सभा में खड़े होकर (तब) मेरे बारे में ये छंद बोले: (3) (1260)
"इस पंखे के उपहार और अपने हृदय में दृढ़ संकल्प के कारण, वह एक लाख युगों तक शोक के स्थान पर नहीं जाएगा। (4) (1261)
दृढ़ संकल्प के साथ, अथक प्रयास से, हृदय के सद्गुणों पर ध्यान देते हुए, वह केवल सात वर्ष की आयु में ही अरहंत पद प्राप्त कर लेगा। (5) (1262)
साठ हजार युगों में (इसलिए) वह सोलह (विभिन्न) राजा होंगे जो (सभी) विजयमान कहलाएंगे, 665 चक्र घुमाने वाले महान शक्तिवान सम्राट। (6) (1263)
{फैंसी ब्रेकेट} में दिए गए 664 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 665 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) (1264)
इस प्रकार पूज्य विधूपनादायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
विधूपनदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

6. पंखे पर अध्याय

51. थेरा विधूपनदायक की जीवनी पर टीका।

पदुमुत्तरा बुद्धस्स से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा विधुपनदायक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व श्रेष्ठ विजेताओं के युग में उन्होंने भी पुण्य कर्मों से परिपूर्ण होकर, जन्म-मृत्यु के चक्रों (वत्त) से मुक्ति पाने के लिए इस और उस जन्म में पुण्य कर्म संचित किए, और पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। ज्ञानोदय प्राप्त करने पर वे धनी और बुद्ध में परम श्रद्धा से परिपूर्ण हो गए। प्रसन्न होकर उन्होंने ग्रीष्म ऋतु में सोने, चांदी, मोतियों और रत्नों से बना पंखा बुद्ध को अर्पित किया। उस पुण्य कर्म के फलस्वरूप वे देवताओं और मनुष्यों के बीच जन्म-मृत्यु के चक्रों में विचरण करते रहे, दो प्रकार की समृद्धि का आनंद लिया, और हमारे इस आत्मप्रबुद्ध बुद्ध के उदय के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। गृहस्थी बंधन में बंधने के बाद, उन्होंने गृहस्थ जीवन में असुविधा देखी; त्याग में लाभ देखा, धार्मिक आस्था से परिपूर्ण हुए, शासन (सासन) में भिक्षु बन गए और शीघ्र ही अरहत बन गए।
1. अपने पूर्व कर्मों को याद करते हुए, उन्होंने मन ही मन कहा, "किस पुण्य कर्म से मुझे यह दिव्य समृद्धि प्राप्त हुई है?" उन्हें तुरंत इसका ज्ञान हो गया और उन्होंने पद्ममुत्तरा बुद्धस्स से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सकें। इसका अर्थ पहले ही बताया जा चुका है: बीजनिका मया दिन्ना। यह पंखा मैंने अर्पित किया है, यह विशिष्ट रूप से ऊष्मा से जल रहे प्राणियों की ऊष्मा को बुझाता है, यह ठंडी हवा उत्पन्न करता है; इस प्रकार बीजनी, पंखा; वही पंखा बीजनिका, पंखा है; सात प्रकार के रत्नों से बना, अत्यंत चमकीला वह पंखा मैंने बनवाया और अर्पित किया है; यही अर्थ है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा विधूपनदायक

समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 52. थेरा सत्रासिका

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

52. सतरांगसिका 666

एक चट्टानी उभार पर चढ़कर, परम पुरुष वहाँ बैठ गया। (मैं), उस पर्वत के क्षेत्र में एक ब्राह्मण मंत्र-गुरु, (1) (1265)
मैंने अपने हाथों को जोड़कर (उनकी) प्रशंसा की, विश्व नेता, देवताओं के देवता, मनुष्यों के बैल, महान नायक जो आ चुके थे: (2) (1266)
"यह बुद्ध हैं, महान नायक, सर्वश्रेष्ठ शिक्षा के उपदेशक, अग्नि की धधकती हुई स्तंभ के समान, भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित। (3) (1267)
समुद्र के समान अविचलित, सागर के समान पार करना कठिन, पशुओं के राजा के समान निर्भीक, नेत्रपूर्ण व्यक्ति धम्म का उपदेश देता है। (4) (1268)
मेरे विचारों को समझते हुए, कमल के नाम से जाने जाने वाले (बुद्ध), भिक्षुओं की सभा में खड़े होकर, शिक्षक ने ये श्लोक कहे: (5) (1269)
"जिसने हाथ जोड़कर तीस हजार युगों तक (मेरी), सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की स्तुति की है, वह दिव्य शासन करेगा। (6) (1270)
एक लाख युगों में से एक का नाम अंगिरासा के नाम पर रखा गया है,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 666 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 667 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

तब संबुद्धा, अंधापन दूर होने पर, 668 अस्तित्व में आएगा। (7) (1271)
उस व्यक्ति के धम्म का योग्य उत्तराधिकारी, धम्म की वैध संतान, सतरांगसी के नाम से जाना जाने वाला व्यक्ति अरहंत बनेगा (तब)।" (8) (1272)
केवल सात वर्ष की आयु में, मैं बेघर हो गया। मुझे सतरांगसी के नाम से जाना जाता है; मेरा प्रकाश (संपूर्ण विश्व) को पवित्र करता है।669 (9) (1273)
मंच पर या वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न, समाधि-प्रेमी, मैं परम बुद्ध की शिक्षाओं में अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ। (10) (1274)
साठ हजार युग पहले रोमा नाम से जाने जाने वाले चार पुरुष थे। वे महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, पहिए घुमाने वाले थे। (11) (1275)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) (1276)
इस प्रकार पूज्य सतरंगसिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
सतारांगसिका670 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

52. थेरा सतरमसी की जीवनी पर टीका।

उच्च्यम सेलामारुयह से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा सतरमसी की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए पुण्य कर्म संचित किए, जो पुनर्जन्म के चक्र (वत्त) से मुक्ति दिलाने में सहायक थे। इस और उस जन्म में वे ब्राह्मण परिवार में जन्म लिए, उस समय जब पद्ममुत्तरा विराजमान थे। ज्ञान की आयु प्राप्त करने पर उन्होंने संस्कृत व्याकरण और तीनों वेदों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया, गृहस्थ जीवन त्याग दिया, वन में प्रवेश किया, संसार का त्याग कर तपस्वी बन गए और हिमवंत में निवास करने लगे। उस अवसर पर, पद्ममुत्तरा एकांत की इच्छा से एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़े और जलती हुई अग्नि के समान बैठ गए। उस प्रकार बैठे हुए पद्ममुत्तरा को देखकर तपस्वी प्रसन्न हो गए, उन्होंने हाथ जोड़कर अनेक प्रकार से उनकी स्तुति की। उस पुण्य कर्म के फलस्वरूप, वे वहाँ से चले गए, छह दिव्य अवस्थाओं में दैवीय आनंद का अनुभव किया, फिर पुनर्जन्म लेकर विश्वराज बने, जिनका नाम सतरमसी (सौ किरणें) था। अनेक वर्षों तक उस समृद्धि का अनुभव करने के बाद, उनका पुनर्जन्म एक पारिवारिक घर में हुआ, जब इस बुद्ध का जन्म हुआ; उन्होंने अपने पूर्व पुण्य कर्मों के फलस्वरूप ज्ञान की सर्वांगीण परिपक्वता के कारण सात वर्ष की आयु में ही संसार का त्याग कर दिया और अर्हतत्व प्राप्त किया।

8-9. इस प्रकार स्मरण करते हुए:- "मैंने सात वर्ष की आयु में ही किस कर्म से शांति का मार्ग प्राप्त किया?", उन्होंने अपने ज्ञान के माध्यम से अपनी आँखों के सामने अपने पूर्व कर्म को खोज निकाला, जिससे वे आनंदमय हो गए और उन्होंने 'उच्च्यं सेलमरुयह' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि गंभीर उच्चारण द्वारा अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सकें। वहाँ (उच्च्यं) पत्थर से बनी एक ऊँची पहाड़ी पर चढ़कर पद्ममुत्तरा बैठ गए; यही संबंध है। (पब्बतस्सािवदूरंहि) पहाड़ी के पास उस स्थान पर जहाँ प्रतापी विराजमान थे; यही अर्थ है। (ब्राह्मणो मंतपारागू) एक ब्राह्मण जो अपने तीन वेदों को मंत्रों के रूप में मानकर चरम सीमा तक पहुँच चुका था; यही अर्थ है। मंत्रों के इस विद्वान ने स्वयं को, मानो किसी और को, यह बात समझाई। उपविष्ठम् महावीरन् (वह महान वीर जो प्रवेश कर चुका है), वीरता से परिपूर्ण विजेता, पर्वत पर विराजमान; क्या विशिष्टता है? देवदेवम् (देवताओं के देवता), समस्त छह चरणों वाले संसार के इंद्रिय-प्रधान और ब्रह्माओं के स्वामी; नरसोभम् (महान पुरुष), मनुष्यों में श्रेष्ठ; लोकनायकम् (संसार के नेता), निर्वाण ले जाने वाले, समस्त जगत के प्राणियों के मार्गदर्शक; अंजलिम्, हाथ जोड़कर; पग्घेत्वान, ऊपर उठाकर; संथविम् (मैंने उचित स्तुति की), मैंने दस उंगलियों को एक साथ जोड़कर एक पात्र बनाया, उसे अपने सिर पर उचित रूप से रखा और महिमामयी की उचित स्तुति की; यही संबंध है।

12. अभासथ ने कहा, "उन्होंने इस प्रकार भविष्यवाणी की: 'वह इस कारण से अरहत बनेगा, अर्थात्: इस व्यक्ति ने हाथ जोड़कर भेंट की, इत्यादि।' शेष का अर्थ स्पष्ट है।"

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा सतरमसी का
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 53. थेरा सयानदायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

53. सायनादायक 671

बुद्ध पद्ममुत्तरा को समस्त संसार पर दया आई। मैंने अत्यंत निर्मल मन से उन्हें पलंग दान किया। (1) (1277)

---

668 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 669 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 670 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित 671 अपदान संख्याएँ {फैंसी कोष्ठकों} में दी गई हैं, जो BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं।

उस पलंग के उपहार के कारण, भोजन (तब) मुझे अपने आप प्रकट हो जाता था, (जैसे) अच्छे खेत में बीज की उपज: यही उस पलंग को देने का फल है। (2) (1278)
मैं आकाश में अपना बिस्तर बनाता हूँ; मैं पूरी पृथ्वी को धारण करता हूँ; प्राणियों पर मेरा प्रभुत्व है: यही बिस्तर (उपहार) का फल है। (3) (1279)
(तब) पाँच हज़ार युग पहले, आठ महावर थे; चौंतीस सौ युग बाद, चार महान शक्ति वाले राजा थे। (4) (1280)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) (1281)
इस प्रकार पूज्य सायनाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
सायनाडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
53. थेरा सयनदायक की जीवनी पर टीका।
पद्ममुत्तरा बुद्धस्स से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य थेरा सयनदायक की जीवनी पर आधारित हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा की, पुनर्जन्मों के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया, और इस-उस जन्म में उनका पुनर्जन्म पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय एक गृहस्थ परिवार में हुआ। ज्ञान प्राप्ति के बाद, उन्होंने विधिवत गृहस्थ जीवन व्यतीत किया, समृद्धि का आनंद लिया, गुरु के धर्म उपदेश सुने, गुरु में अटूट आस्था रखी, हाथीदांत, सोने, चांदी, मोती और माणिक से बना एक उत्तम पलंग बनवाया, उस पर चीनी वस्त्र, मखमल आदि की चादरें बिछाईं और उसे बुद्ध को सोने के लिए अर्पित किया। बुद्ध ने उस पर विश्राम किया और उनका उत्थान हुआ। उस पुण्य कर्म का एक वृत्तांत यह है कि वे अपने पुनर्जन्मों के चक्रों में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण करते रहे, आकाश में विचरण करने, सुखमय नींद लेने आदि जैसी समृद्धि का आनंद लेते रहे, एक समृद्ध परिवार में उनका पुनर्जन्म हुआ; जब यह बुद्ध उठे, तो बुद्धि की आयु प्राप्त करने के बाद उन्होंने गुरु के सत्य (धम्म) उपदेश सुने, धर्मपरायण हो गए, भिक्षु बन गए, विपश्यना (विपस्सन्तो) विकसित की और कुछ ही समय बाद अरहत बन गए।
20. अपने पूर्व कर्म को याद करके वह आनंद में लीन हो गया और उसने पद्ममुत्तरा-बुद्धस्स से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया ताकि वह अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सके। उस श्लोक का अर्थ पहले ही बताया जा चुका है।
21. सुखेत्ते बीजसंपदा (उपजाऊ खेत में बीज की सफलता) जिस प्रकार घास और कचरे से रहित, कोमल मिट्टी आदि गुणों से युक्त उपजाऊ खेत में बोए गए बीज भरपूर फसल देते हैं, ठीक उसी प्रकार दान की गई वस्तुएँ, चाहे मात्रा में कम ही क्यों न हों, शुद्ध दाता के पुण्य क्षेत्र में पूर्ण फलदायी होती हैं, जो घास और कचरे से रहित हो और जिसमें कामवासना (राग), क्रोध (दोष) आदि पंद्रह सौ प्रकार के दुराचार (किलेसा) समाहित हों; यही अर्थ है। शेष अर्थ तो आसानी से समझ में आ जाता है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा सयनदायका का

समाप्त हो गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

54. गंधोदक 673

पद्ममुत्तरा बुद्ध के लिए बोधि वृक्ष उत्सव मनाया गया। मैंने एक सजा हुआ पात्र लेकर सुगंधित जल दान किया। (1) (1282)
जब उस बोधि को स्नान कराया जा रहा था, तभी उस पर एक विशाल बादल बरस पड़ा। और जब बिजली कड़की तो वहाँ एक कान बहरा कर देने वाली आवाज़ हुई। (2) (1283)
उस बिजली के बल से मैं वहीं (ठीक उसी समय) मर गया। देवताओं के लोक में खड़े होकर मैंने ये छंद (ज़ोर से) कहे: (3) (1284)

---

672 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 673 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 674 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

"हे बुद्ध! हे शिक्षा! हे हमारे गुरु की (महान) उपलब्धि! मेरा मृत शरीर नीचे गिर गया है (और) मैं (अब) स्वर्ग में आनंदित हूँ! (4) (1285)
मेरा निवास (बहुत) ऊँचा है, सौ मंजिल तक ऊँचा। एक लाख कुंवारी लड़कियाँ (अब) हर समय मेरे आस-पास रहती हैं। (5) (1286)
मेरे लिए रोग का कोई अस्तित्व नहीं है; मेरे लिए शोक का भी कोई अस्तित्व नहीं है; मुझे दर्द का अनुभव नहीं होता: यही अच्छे कर्मों का फल है।" (6) (1287)
अट्ठाईस सौ युग बाद 1675 को राजा संवसिता नाम दिया गया, जो महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था और सात रत्नों का स्वामी था। (7) (1288)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) (1289)
इस प्रकार पूज्य गंधोदकिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
गंधोदक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
54. थेरा गंधोदकिया की जीवनी पर टीका।

पद्ममुत्तरा बुद्धस्स से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा गंधोदकिया की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व श्रेष्ठ ऋषियों की समर्पित सेवा की, इस और उस जन्म में पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया, और प्रतापी पद्ममुत्तरा के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। जब प्रतापी पद्ममुत्तरा परिनिर्वाण हुए, तो उन्होंने नगरवासियों को बोधि वृक्ष को चंदन, कपूर, अगरू आदि के मिश्रण से सुगंधित जल से भरे विभिन्न कलशों में अर्पण करते देखा। उसी क्षण मूसलाधार वर्षा हुई। फिर वे बिजली की गति से प्राणहीन हो गए। उसी पुण्य कर्म के कारण उनका पुनर्जन्म दिव्य लोक में हुआ। वहाँ विराजमान होकर उन्होंने "अहो बुद्धो, अहो धम्मो!" (बुद्ध अद्भुत हैं, धर्म अद्भुत है!) से शुरू होने वाले श्लोकों का पाठ किया। इस प्रकार देवताओं और मनुष्यों के बीच समृद्धि का अनुभव करते हुए, वे सर्वत्र ऊष्मा से मुक्त होकर, जहाँ भी पुनर्जन्म लेते थे, सुखी रहते थे, क्योंकि वे अपने आप को शीतलता के निकट रखते थे। जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तो उनका पुनर्जन्म एक पारिवारिक घर में हुआ। बुद्धि प्राप्त करने पर, उन्होंने गुरु में दृढ़ विश्वास स्थापित किया, भिक्षु बन गए, मानसिक साधना (कम्मत्थाना) में लग गए, विपश्यना (विपश्यना) विकसित की और शीघ्र ही अर्हतत्व प्राप्त कर लिया। पूर्व में किए गए पुण्य कर्मों के कारण वे थेरा गंधोदकिया के नाम से प्रसिद्ध हुए।

25. एक दिन, अपने पूर्व कर्म को याद करके, वह आनंद में लीन हो गया और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'पदुमत्तरस्सा' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। इसका अर्थ पहले ही बताया जा चुका है। महाबोधिमहो अहु (महाबोधि का उत्सव था) महाबोधि को श्रद्धापूर्वक अर्पण किया गया; यही इसका अर्थ है। विचित्रम् घटमदाय (रंगीन कलश लेकर) सुगंधित जल से भरा एक कलश लेकर, जो सोने की अनेक प्रकार की नक्काशी से सुशोभित होने के कारण सुंदर रूप से चमक रहा था; यही इसका अर्थ है। गंधोदकमदासहम (सुगंधित जल अर्पित किया) मैंने विशेष रूप से सुगंधित जल छिड़का; यही इसका अर्थ है।

26. बोधि वृक्ष को आदरपूर्वक अर्पण करते समय जब बोधि वृक्ष को स्नान कराया गया, तब भी यही अर्थ है। अर्थ स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा गंधोदकिया का
समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 55. थेरा ओपावुइहा

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

55. ओपावुयहा676

मैंने पद्ममुत्तरा बुद्ध को एक (उत्कृष्ट) नस्ल का (घोड़ा) दिया। इसे बुद्ध को सौंपकर,677 मैं (फिर) अपने घर (वापस) चला गया। (1) (1290)

गुरु के सबसे बड़े अनुयायी (भिक्षु) का नाम देवला था।678

---

675 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद

किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 676 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 677 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
678 कुम्मासा, संस्कृत कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, जो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में होता है (PSI yavayen kaḷ)

सर्वश्रेष्ठ शिक्षा के योग्य उत्तराधिकारी के रूप में वह मेरे समक्ष उपस्थित हुए। (2) (1291)
"भगवान स्वयं अपना कटोरा उठाते हैं; वे किसी विशेष नस्ल के कटोरे का प्रयोग नहीं करते। आँखों को भाने वाले ने इसे स्वीकार किया (क्योंकि) उन्होंने तुम्हारे विचारों को जान लिया था।" (3) (1292)
मुझे सिंध से आए उस तेज़ गति वाले वाहन का मूल्य पता चला। (फिर) मैंने पद्ममुत्तरा बुद्ध को एक उपयुक्त 679 (उपहार) दिया। (4) (1293)
मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूँ, चाहे वह मानव हो या दिव्य, 680 उपयुक्त और विविध 681 सिंध-घोड़े 682 मेरे लिए उत्पन्न हों। (5) (1294)
दीक्षा लेने वालों को इससे अच्छा लाभ मिलता है।683 यदि कोई बुद्ध संसार में जन्म लेता है (तो) उन्हें निरंतर उसकी सेवा करनी चाहिए। (6) (1295)
मैं अट्ठाईस (अलग-अलग) बार (उस समय) महान शक्ति वाला राजा था, गुलाब-सेब के बाग का स्वामी, 684 चारों ओर से विजयी। 685 (7) (1296)
यह मेरे लिए अंतिम समय है; मेरा अंतिम पुनर्जन्म हो रहा है।686 मैंने विजय और पराजय से परे अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है।687 (8) (1297)
चौंतीस हजार (युगों बाद से)

---

679 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 680 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 681 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama 682 sappi, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (gī tel) 683 शाब्दिक अर्थ, "गया" 684 का अनुसरण करता हूँ, BJTS के साथ sañcālesi का पाठ PTS sañjālesi 685 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया" 686 शाब्दिक अर्थ, "गुणी" 687 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार kaṇḍas (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ bheṇḍu (लंबा? मोटा?)।"

एक महान शक्तिवान राजा था, जो एक चक्र-चालक था और जिसके पास बहुत बल था, और जो सात रत्नों का स्वामी था। (9) (1298)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) (1299)
इस प्रकार पूज्य ओपावुयहा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
ओपावुयहा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
55. थेरा ओपावैहा की जीवनी पर टिप्पणी।
पदुमुत्तरा बुद्धस्स से शुरू होने वाले श्लोक आदरणीय थेरा ओपवायहा की जीवनी का वर्णन करते हैं। इन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, इस और उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और सूर्य-विजयी पदुमुत्तरा के विश्व में प्रकाशमान होने के समय एक समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लिया। समय के साथ बड़े होकर उन्होंने बहुत धन अर्जित किया, अत्यंत समृद्ध हुए और गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए उन्होंने शासन (सासन) में दृढ़ विश्वास प्राप्त किया और गुरु में उनकी अटूट आस्था के कारण उन्होंने एक उत्तम नस्ल के सिंधी घोड़े का आदरपूर्वक अर्पण किया। अर्पण करने के बाद उन्होंने विचार

किया: "बुद्ध से प्रारंभ होने वाले भिक्षुओं के लिए हाथी, घोड़े आदि जैसे पशु उपयुक्त नहीं हैं; मैं उचित वस्तुएँ अर्पित करूँगा।" उस घोड़े का मूल्यांकन करवाकर उन्होंने उचित वस्त्र, जैसे कि पारंपरिक मखमली वस्त्र, कालीन आदि, और कपूर, तक्कोला आदि औषधीय वस्तुएँ भेंट कीं। उस पुण्य कर्म के फलस्वरूप वे जीवन भर जीवित रहे और मृत्यु के बाद उन्होंने समृद्धि का आनंद लिया, और देवताओं और मनुष्यों के बीच हाथी, घोड़े आदि अनेक वाहनों से संपन्न हुए; और जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तब उनका पुनर्जन्म एक पारिवारिक घर में हुआ। ज्ञानोदय प्राप्त करने पर उन्होंने धर्म में गहरी आस्था धारण की, भिक्षु बने, मानसिक साधना (कम्मत्थाना) की, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (विपस्सना) विकसित की, और क्रमिक रूप से श्रेष्ठ मार्गों का अनुसरण करते हुए अर्हत पद प्राप्त किया। अपने पुण्य कर्मों के फलस्वरूप वे थेरा ओपवयह के नाम से प्रसिद्ध हुए।

33. इस प्रकार छानबीन करते हुए कि "अत्यंत किस कारण से मुझे यह शांत मार्ग प्राप्त हुआ है", उन्होंने अपने ज्ञान के माध्यम से अपनी आँखों के सामने ही अपने पूर्व कर्म का अहसास किया, और आनंदमय होकर उन्होंने पद्ममुत्तरा बुद्धस्स से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्म को गंभीर शब्दों में प्रकट कर सकें। इसका अर्थ केवल कहा जा चुका है। आजनीयमदासहम, मैंने आदरपूर्वक सिंध मूल का एक उत्तम नस्ल का घोड़ा अर्पित किया; यही इसका अर्थ है।

35. सपत्तभारो (अपने भिक्षापात्र को धारण करने वाला) वह व्यक्ति, जिस पर अपने भिक्षापात्र सहित आठ आवश्यक वस्तुओं का भार है, वह सपत्तभार है (अपने ही कटोरे से बोझिल), आठ भिक्षुओं की आवश्यक वस्तुओं से बंधा हुआ है, यही अर्थ है।

36. खमनीयमदासहम, मैंने अनुकूल होने की पेशकश की, ऐसे प्रतीत होने वाले मिंक की आवश्यक वस्तुएँ जैसे वस्त्र इत्यादि जो उपयुक्त रूप से अनुकूल हों; यही अर्थ है।

40. कारिमो (सर्वांगीण लक्ष्य) ने चरम सीमा प्राप्त कर ली है, वह पूर्ण हो गया है; यही अर्थ है। शेष आसानी से समझ में आ जाता है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा ओपावयहा का

समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 56. थेरा सपरिवारासन

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

56. सपरिवारासन 689

मैंने पद्ममुत्तरा बुद्ध से भीख माँगकर भिक्षा में भोजन दिया। जहाँ उन्होंने भोजन किया, वहाँ जाकर मैंने चमेली के फूल बिखेरे। (1) (1300)

उस आसन पर विराजमान बुद्ध, जो (संपूर्ण) विश्व के सर्वोच्च नेता, धर्मात्मा और सजग हैं, ने उस भिक्षा-भोजन की प्रशंसा की, जिसकी याचना की गई थी। (2) (1301)

“जैसे एक छोटा सा बीज भी उपजाऊ खेत में बोया जाए तो बारिश होने पर पूरी तरह से फल देता है, जो किसान को आनंद देता है, (3) (1302)

इसलिए यह भीख-प्राप्त अनाज, जिसे आपने अच्छे खेत में बोया था; जब आप पुनर्जन्म लेंगे तो आप इसके फल से प्रसन्न होंगे।

यह सब कहने के बाद, संबुद्ध

---

688 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में गेंडु लिखा है। कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी। 689 {फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए अपदान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 690 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

691 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

जिसका नाम कमल था, जो भीख माँगे गए भोजन की प्रशंसा करता था, (फिर) उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (5) (1304)

भिक्षुओं के उपदेशों में आत्मसंयमित 692 और पाँच इंद्रियों में, एकांत से बंधे हुए, मैं दोषरहित जीवन जी रहा हूँ। (6) (1305)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) (1306)

इस प्रकार पूज्य सपरिवारासन थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सपरिवारासन थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

56. थेरा सपरिवारासन की जीवनी पर टीका।

पद्ममुत्तरा बुद्धस्स से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा सपरिवारासन की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने और इस-उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित करने के कारण, वे पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय एक धनी परिवार में पुनर्जन्म लेकर बड़े हुए। वयस्क होने पर, उन्होंने धर्म के प्रति गहरी आस्था विकसित की और दान के फल में विश्वास रखते हुए, बुद्ध को विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट भोजन का भिक्षादान किया। भिक्षादान करने के बाद, उन्होंने भोजन कक्ष में बैठने की जगहों को चमेली (सुमन), माला (मल्लिका) आदि प्राकृतिक फूलों से सजाया। बुद्ध ने भी उनके भिक्षादान पर आभार व्यक्त किया। उस कर्म के फलस्वरूप, उन्होंने अपने पुनर्जन्मों के चक्र में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण किया, अनेक प्रकार की समृद्धि का आनंद लिया, और जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तब वे एक समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लिए; समय के साथ बड़े होकर, वे अपनी पवित्र आस्था और मनभावन धर्मपरायणता के कारण भिक्षु बन गए और कुछ ही समय बाद अरहत भी बन गए।

43. इस प्रकार शांत मार्ग प्राप्त करने पर, उन्होंने अपने पूर्व कर्म का ज्ञानपूर्वक गहन अध्ययन करते हुए यह समझा: "वास्तव में किस पुण्य कर्म के फलस्वरूप मैंने यह शांत मार्ग प्राप्त किया है?" वे आनंदमय हो उठे और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए पद्ममुत्तरा बुद्धस्स से प्रारंभ होने वाला श्लोक बोला। इसका अर्थ केवल कहा ही जा चुका है: पिंडपातम् अदादहम् (मैंने भिक्षा दी), इधर-उधर से प्राप्त भोजन के टुकड़ों को छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटकर, भोजन को पीने और चबाने योग्य बनाकर पिंडपात (भिक्षा) किया; वह भिक्षा मैंने बुद्ध को अर्पित की; मैंने यह सुनिश्चित किया कि बुद्ध उसे ग्रहण करें; यही इसका अर्थ है।

44. अकित्तयिपण्डपातम् (भिक्षा भोजन की घोषणा की गई) बुद्ध ने मेरे द्वारा दिए गए भिक्षा भोजन के गुण और लाभ को प्रकट किया; इस प्रकार, इसका अर्थ है।

48. समवुतो पातिमोक्खस्मिम् (अनुशासनात्मक नियमों में अच्छी तरह से नियंत्रित) - अनुशासनात्मक नियमों के अनुसार आत्म-संयम जैसे नैतिक उपदेशों से अच्छी तरह से नियंत्रित, बंद और उचित रूप से आच्छादित, जो उचित मुक्ति (पातिमोक्ख) की ओर ले जाता है; यही अर्थ है। इंद्रियेसा ए पंचसु (पांच इंद्रियों में भी) - पांच इंद्रियों में दृश्य रूपों (रूप) आदि जैसे इंद्रिय-संबंधी विषयों से सुरक्षित और इंद्रिय-संयम (इन्द्रियसंवर) के नाम से जाने जाने वाले नैतिक उपदेशों से सुरक्षित; यही अर्थ है। शेष को समझना आसान है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा सपरिवारासन का
समाप्त हो गया है

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

57. पंचादिपिका693

सभी प्राणियों पर दया करने वाले बुद्ध पद्ममुत्तरा की सच्ची शिक्षा की प्रशंसा करने के बाद, मैं भी नेक विचारों वाला व्यक्ति था। (1) (1307)
मैंने (महान) बोधि वृक्ष के चारों ओर दीपक अर्पित किए। (बुद्ध में) विश्वास रखते हुए मैंने (फिर) उन 694 दीपकों को हर समय जलाए रखा। (2) (1308)
मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूँ, चाहे वह मानव हो या दिव्य, आकाश में मशालें ले जाई जाती हैं: यही दीपक देने का फल है। (3) (1309)
(दाहिनी ओर) दीवारों के आर-पार, (दाहिनी ओर) चट्टानों के आर-पार भी,

---

692 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करने वाला," यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 693 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 694 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
695 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

(और) पर्वतों की चोटियों को पार करते हुए,696 मैं सभी दिशाओं में देख सकता हूँ697 यहाँ तक कि सौ मील (दूर) तक भी। (4) (1310)
उस (अच्छे) कर्म के फलस्वरूप मैंने अरहंतत्व प्राप्त किया है।698 मैं द्विपाद भगवान की व्यवस्था में अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ। (5) (1312699)
चौंतीस सौ युगों (तब से) मैं सतचक्खु के नाम से जाना जाता था; 700 मैं एक महान शक्ति वाला राजा था, एक महान बलवान चक्र-चालक था। (6) (1311)

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) (1313)

इस प्रकार पूज्य पंचदीपिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पंचदीपिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

57. थेरा पंचदीपक की जीवनी पर टिप्पणी।

पद्ममुत्तरा बुद्धस्स से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा पंचदीपक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने और पुनर्जन्मों के चक्र (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय करने वाले पंचदीपक, जहाँ कहीं भी जन्म लिए, पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिए; वे समय के साथ बड़े हुए, गृहस्थ जीवन व्यतीत किया, पद्ममुत्तरा बुद्ध द्वारा दिए गए सत्य (धम्म) के उपदेश सुने, सही दृष्टि में स्थापित हुए, पवित्र आस्था और शुद्ध भक्ति से परिपूर्ण हुए, पुरुषों के एक बड़े समूह द्वारा बोधि वृक्ष को आदरपूर्वक अर्पण करते हुए देखा, स्वयं बोधि वृक्ष के चारों ओर घेरा बनाकर प्रज्वलित दीप अर्पित किए। उस पुण्य कर्म के फलस्वरूप, उन्होंने जन्म-जन्म के चक्रों में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण किया, विश्वराज के समान समृद्धि का आनंद लिया, ऐसे महलों में निवास किया जो प्रकाश से परिपूर्ण थे, जहाँ भी उनका जन्म हुआ, वे हर जन्म में प्रकाशमान रहे। जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तब उनका पुनर्जन्म एक समृद्ध परिवार में हुआ; बड़े होने पर उनमें धार्मिक आस्था उत्पन्न हुई, वे भिक्षु बन गए और कुछ ही समय बाद अरहत बन गए। प्रकाश की श्रद्धापूर्वक भेंट करने के फलस्वरूप वे थेरा दीपका के नाम से प्रसिद्ध हुए।

50. एक दिन, उन्हें अपने पूर्व कर्मों की याद आई, वे आनंद में लीन हो गए और उन्होंने अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'पदमुत्तरा बुधस्स' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। इसका अर्थ पहले ही बताया जा चुका है। उजुदित्तिहोसाहम (मैं सीधे दृष्टिकोण वाला हो गया) टेढ़े-मेढ़े गलत दृष्टिकोण को त्यागकर, मैं सही दृष्टिकोण, निर्वाण की दिशा में उन्मुख सीधे और निर्मल मार्ग को प्राप्त करने वाला हो गया; यही इसका अर्थ है।

51. पदिपदाहम पदासिम (मैंने प्रज्वलित दीपों का दान दिया) यहाँ, यह चमकता और प्रकाशित करता है, अतः पदिपा, प्रज्वलित दीप; इसका दान पदिपदाना, प्रज्वलित दीपों का दान है। मैंने इसे दिया, मैंने आदरपूर्वक प्रज्वलित दीपों का दान दिया; यही इसका अर्थ है। शेष का अर्थ सर्वत्र स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा पंचदीपक का

समाप्त हो गया है

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 58. थेरा धजदायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

58. धजदायक 701

प्रसन्न होकर, (और) प्रसन्न हृदय से मैंने (उस समय) पद्ममुत्तरा बुद्ध के विशाल बोधि वृक्ष702 पर ध्वज फहराया। (1) (1314)
गिरे हुए पत्तों को उठाकर मैंने उन्हें बाहर फेंक दिया। मानो मैं पूर्णतः मुक्त, निष्कलंक संबुद्ध के सामने खड़ा होकर, भीतर और बाहर दोनों ओर से निर्मल बोधि की आराधना कर रहा था। (2) (1315)703

---

696 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 697 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 698 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 699 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)। 700 शाब्दिक अर्थ, "गया"। 701 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 702 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
703 कुम्मासा, संस्कृत कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, जो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में होता है (PSI yavayen kaḷ)

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, यज्ञ प्राप्तकर्ता, भिक्षुओं की सभा में खड़े होकर शिक्षक ने ये श्लोक कहे (तब): (3) (1316)
"इस सेवा और इस ध्वज के दान (यहाँ) के कारण, एक लाख युगों तक उसका कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं होगा। वह देवताओं के बीच प्रचुर दिव्य सुख का आनंद लेगा। (4) (1317-1318क-ख)704
और कई बार, वह एक देश का राजा होगा। वह एक चक्र-घुमाने वाला राजा होगा; उसका नाम (तब) उगाता होगा।705 (5) (1318सी-एफ)
अपनी उत्तम जड़ों से प्रेरित होकर, वह इस आनंद का अनुभव करते हुए, भगवान गौतम की शिक्षाओं में प्रसन्न होगा। (6) (1319)
मैं परिश्रम में लीन, शांत,706 पुनर्जन्म के आधारों से रहित;707 मैं परम बुद्ध की शिक्षाओं में अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ। (7) (1320)
इक्यावन हजार युगों पहले (मैं) राजा उगाता के नाम से जाना जाता था। पचास हजार युगों पहले (मैं) मेघा के नाम से जाना जाने वाला राजा था। (8) (1321)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) (1322)
इस प्रकार पूज्य धजदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

---

704 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", यहाँ अंबर एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 705 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित। 706 निज्झायमानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ। 707 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)। 708 शाब्दिक अर्थ, "गया"।

धजदायका की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
58. थेरा धजदायक की जीवनी पर टीका।
पदुमत्तरा बुद्धस्स से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा धजादावक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, पुण्य कर्मों का संचय करते हुए, जो इस और उस जन्म में पुनर्जन्मों (वत्त) के चक्र से मुक्ति दिलाने में सहायक थे, उन्होंने पद्ममुत्तरा बुद्ध के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। समय के साथ बड़े होकर, उन्होंने गुरु के प्रति सुखद श्रद्धा विकसित की, अनेक उत्तम वस्त्रों से एक ध्वज बनवाया और उसे श्रद्धापूर्वक अर्पित किया। इस पुण्य कर्म के कारण, वे प्रत्येक जन्म में उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा वाले परिवार में जन्म लेते रहे और श्रद्धापूर्वक अर्पित किए जाने योग्य बन गए। बाद में, जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तब उन्होंने एक

पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया; समय के साथ बड़े होकर, उन्होंने पत्नी और बच्चों का परिवार बसाया, वे धनवान, प्रसिद्ध, गुरु के प्रति गहरी श्रद्धा रखने वाले, स्पष्ट रूप से धर्मनिष्ठ बन गए और उन्होंने गृहस्थ जीवन त्याग दिया। संसार का त्याग करके वे भिक्षु के रूप में अरहत बन गए।

57. अरहतत्व की प्राप्ति के बाद, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों का स्मरण किया, आनंदमय भाव से भर गए और पद्ममुत्तरा बुद्धस्स से प्रारंभ होने वाला श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्मों को प्रकट कर सकें। हत्थो हत्थेन चित्तेन (आनंदित और प्रसन्न हृदय से) आनंदमय भाव से युक्त मन और पूर्ण रूप से परिपूर्ण शरीर से युक्त होने के कारण प्रसन्न और पवित्र आस्था से युक्त मन से प्रसन्न; यही अर्थ है। धजामारोपयिं अहम् (मैंने ध्वज फहराया) यह कांपता, तुकबंदी करता और हिलता है, इस प्रकार धजा (ध्वज) वह ध्वज जिसे मैंने बांस के खंभे के शीर्ष पर लटकाकर आदरपूर्वक अर्पित किया; यही अर्थ है।

68-59. पतितपट्टानि गणहित्वा (गिरे हुए पत्तों को उठाकर) बोधि वृक्ष के गिरे हुए पत्तों को उठाकर मैंने उन्हें बाहर फेंक दिया; यही अर्थ है। अंतोसुद्धम् बहिसुद्धम् (अंदर और बाहर से शुद्ध), वे मन की आंतरिक मानसिक प्रणाली से और बाहर से आँख, कान आदि शारीरिक घटकों से भी शुद्ध थे; अधि (विशेष रूप से), विशिष्ट रूप से; मुत्तम् (मुक्त), दोष से मुक्त, दोष रहित, बुद्ध के साक्षात रूप, सबसे उत्तम बोधि वृक्ष; अवन्दिम (मैंने पूजा की), मैंने उन्हें प्रणाम किया; यही अर्थ है। शेष सभी का अर्थ स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा धजादयाका का
समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 59. थेरा पदुमा

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

59. पदुमा709

वह सर्वश्रेष्ठ धम्म-चक्र घुमाते हुए चार सत्यों की घोषणा कर रहे थे, अमरता की वर्षा कर रहे थे, और अनेक लोगों को मुक्त कर रहे थे।710 (1) (1323)

ध्वज सहित कमल लेकर, 711 आधा कोसा 712 (दूर) खड़े होकर, प्रसन्न होकर, मैंने इसे ऋषि पद्ममुत्तरा के लिए हवा में उठाया। (2) (1324)

तब एक विचित्र घटना घटी: कमल (बुद्ध के पास) आया। मेरे मन की बात समझकर सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता ने उसे ले लिया। (3) (1325)

अपने उत्तम हाथ से उस उत्कृष्ट जलप्रजनित कमल को लेकर, भिक्षुओं की सभा में खड़े होकर शिक्षक ने ये श्लोक कहे: (4) (1326)

"मैं उस व्यक्ति का विवरण दूंगा जिसने (अभी-अभी) इस कमल के फूल को सर्वज्ञ अरहंत की ओर उछाला;713 (आप सभी) मेरे शब्दों को सुनें: (5) (1327)

देवताओं के राजा के रूप में वह तीस युगों तक दिव्य शासन करेगा। वह सात सौ सांसारिक शासनकालों तक पृथ्वी पर निवास करेगा। (6) (1328)

वहाँ कमलों से भरा एक कटोरा लेकर,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 709 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 710 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

711 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 712 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 713 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित 714 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

वह एक ऐसा राजा होगा जो शासन का पहिया घुमाएगा। उस पर हर समय आकाश से फूलों की वर्षा होगी। (7) (1329)

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में, गौतम नाम का व्यक्ति विश्व का गुरु होगा। (8) (1330)

अपने धम्म का योग्य उत्तराधिकारी, धम्म की वैध संतान, सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए वह निर्वाण प्राप्त करेगा, दोषरहित होकर। (9) (1331)

(मेरी माँ के) गर्भ से बाहर आकर, (दोनों) समझदार (और) सचेत होकर, जब मैं (केवल) पाँच वर्ष का था715 तब मैंने (अपना) अरहंतत्व प्राप्त किया। (10) (1332)

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें महारत हासिल की गई है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) (1333)

इस प्रकार पूज्य पद्म थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पद्मा थेरा की कथा का अंत हो गया है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

59. थेरा पद्मा की जीवनी पर टिप्पणी।

चतुसच्चम पकासंतो से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा पद्मा की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की उपस्थिति में अनेक पुण्य कर्म करने के बाद, जब ऋषि पद्ममुत्तरा द्वारा सत्य (धम्म) का प्रकाश प्रज्वलित रखा गया था, तब उन्होंने एक गृहस्थ परिवार में पुनर्जन्म लिया; उन्होंने गृहस्थ जीवन स्थापित किया और समृद्धि से संपन्न माने जाते थे। उन्होंने गुरु में अटूट आस्था रखी, असंख्य मनुष्यों के साथ सत्य (धम्म) का श्रवण किया और कमल के फूलों का गुलदस्ता (पद्मा) और एक ध्वज धारण किए खड़े रहे। ध्वज के साथ-साथ कमल के फूलों का गुलदस्ता भी आकाश में ऊपर उठ गया। इस अद्भुत घटना को देखकर वे अत्यंत आनंदमय हो गए। अपने जीवनकाल में उन्होंने अच्छे कर्म किए और अपने जीवन के अंत में स्वर्ग में पुनर्जन्म लिया। ध्वज के समान, वे छह इंद्रिय लोकों में प्रसिद्ध और सम्मानित थे। उन्होंने दैवीय आनंद के साथ-साथ विश्वराज के मानवीय आनंद का भी अनुभव किया और जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तब उनका पुनर्जन्म एक धनी और धर्मपरायण परिवार में हुआ। जैसे-जैसे वे बड़े होते गए, उनमें धर्मपरायणता जागृत होती गई; उन्होंने पाँच वर्ष की आयु में ही संसार का त्याग कर दिया; और कुछ ही समय में वे अरहत बन गए और अपने पुण्य कर्म के कारण थेरा पद्म के नाम से प्रसिद्ध हुए।

67. अपने पूर्व कर्म को याद करके, वह आनंद में लीन हो गया और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'चतुसच्चं पकासेनतो' से शुरू होने वाले इस श्लोक का उच्चारण किया। यहाँ सत्य (सच्चा) सत्य, असत्य नहीं, विकृत नहीं है, सत्य (सच्चा) को उचित रूप से प्रस्तुत किया गया है, जिसमें दुख (दुक्खा) का उद्गम (समुदय), दुख का निवारण (निरोध) और श्रेष्ठ मार्ग (मार्ग) शामिल हैं; उस चार प्रकार के श्रेष्ठ सत्य को प्रकट करते हुए, संसार में स्पष्ट करते हुए; यही अर्थ है। अमर वर्षा (अमर वर्षा) सत्य (धम्म) की वर्षा, बौछारें,

बरसती हुई, वर्षा के समान महान अमर निर्वाण, उस वर्षा को बरसाती हुई, इस मानव जगत को दिव्य जगत के साथ-साथ भीगते हुए, दुराचार (किलेसा) की आग को बुझाते हुए; यही अर्थ है।

68. सधजं पदुमं गयाह (झंडे सहित कमल का फूल लेकर), कमल के फूलों के गुलदस्ते को पकड़कर कमल को झंडे के साथ एक कर दिया; यही अर्थ है। आद्धकोसे तितो अहम, मैंने दोनों को उठाकर खड़ा किया; यही अर्थ है। बाकी सब कुछ स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा पद्मा के

समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 60. थेरा आसनबोधिया

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

60. आसनबोधिया716

जब मैं (केवल) सात वर्ष का था, तब मैंने विश्व-प्रधान (बुद्ध) को देखा। प्रसन्न होकर, और प्रसन्न हृदय से मैं श्रेष्ठ पुरुषों के पास गया। (1) (1334)

प्रसन्न होकर, (और) प्रसन्न हृदय से, मैंने उनके लिए सर्वश्रेष्ठ बोधि वृक्ष लगाया, तिस्सा, धन्य, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ। (2) (1335)

धरती में उगने वाला पैर-पानी पीने वाला,717 इसे "आसन" के नाम से जाना जाता था।

---

715 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल) 716 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 717 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर भी शामिल है।

मैंने पाँच वर्षों तक उस (वृक्ष) की देखभाल की, जो उत्कृष्ट आसन बोधि वृक्ष था। (3) (1336)

उस पुष्पवृंद को देखकर, अचंभित होकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए, अपने कर्मों का वर्णन करते हुए (तब) मैं सर्वश्रेष्ठ बुद्ध के पास गया। (4) (1337)

तिस्सा, जो उस समय संबुद्ध, स्वयं-एक, शीर्ष व्यक्ति थे, भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए, उन्होंने ये श्लोक कहे (उस समय मेरे बारे में): (5) (1338)

"मैं उस व्यक्ति का विवरण दूंगा जिसने इस बोधि वृक्ष को रोपा है और मुझे बुद्ध-पूजा से सम्मानित किया है; आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनें: (6) (1339)

देवताओं के बीच तीस युगों तक वह दैवीय शासन करेगा, और चौंसठ बार वह कानून के पहिये को घुमाने वाला राजा होगा। (7) (1340)

तुसिता स्वर्ग से गिरकर, अपनी पुण्य जड़ों से प्रेरित होकर, दोहरे आनंद का अनुभव करते हुए, वह मानव अवस्था में प्रसन्न होगा। (8) (1341)

परिश्रम में लीन होकर, शांत होकर,718 पुनर्जन्म के आधारों से रहित होकर,719 सभी दोषों को भली-भांति जानकर वह निर्वाण प्राप्त करेगा, निष्कलंक होकर।" (9) (1342)

एकांत में बंधे हुए, मन की शांति के साथ, इच्छाओं को त्यागकर, टूटी हुई जंजीरों वाले हाथी की तरह, मैं बिना किसी दोष के जी रहा हूँ। (10) (1343)

उस समय जब मैंने वह बोधि वृक्ष लगाया था, तब से लेकर अब तक के बानवे युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है: यही बोधि वृक्ष लगाने का फल है। (11) (1344)

---

718 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 719 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

चौहत्तर युग पहले मैं एक चक्र-घुमाने वाला सम्राट था। (मैं) दंडसेना के नाम से जाना जाता था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (12) (1345)

तिहत्तर युग पहले पृथ्वी पर सात स्वामी थे। वे सभी चक्र घुमाने वाले सम्राट थे जिन्हें समंतनेमी कहा जाता था।

पच्चीस युग पहले पुण्णक नामक क्षत्रिय एक महान बलवान चक्रचालक थे, जो सात रत्नों के स्वामी थे। (14) (1347)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) (1348)

इस प्रकार पूज्य आसनबोधिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आसनबोधिया थेरा की कथा समाप्त होती है। सारांश: विजयनी और सतरंगसी सायन, ओदकी, वाहिया, परिवार और पदिपा, धज, पद्म-पूजाक और बोधि को दसवां कहा जाता है; इस प्रकार बत्तीस श्लोक हैं।

विज्ञानी अध्याय, छठा।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

60. थेरा आसनन्बोधिया की जीवनी पर टीका।

जातिया सत्तवस्साहम से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा आसनबोधिया की जीवनी का वर्णन करते हैं। इन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस-उस जन्म में एक परिवार में जन्म लिया। वृहद होने पर उन्होंने आनंद प्राप्त किया, व्यवस्था से प्रसन्न हुए, आसनबोधि वृक्ष का फल लिया और बोधि के छोटे अंकुर से एक बोधि वृक्ष रोपा। वृक्ष को मृत्यु से बचाने के लिए उन्होंने जल छिड़काव आदि द्वारा उसकी देखभाल की और आदरपूर्वक उसका पालन-पोषण किया। इस पुण्य कर्म के फल से उन्होंने देवताओं और मनुष्यों के बीच आनंद का अनुभव किया और उसी परिवार में जन्म लिया, जब इस बुद्ध का जन्म हुआ। अपने सद्गुणों से परिपूर्ण होने के कारण, वे सात वर्ष की आयु में ही भिक्षु बन गए और एक तेज धार वाले यंत्र पर भी अरहतत्व प्राप्त कर लिया; वे अपने द्वारा पूर्व में किए गए पुण्य कर्म के नाम पर थेरा आसनबोधि के नाम से प्रसिद्ध हुए।

78. अपने पूर्व पुण्य कर्मों के भार को याद करके वह प्रसन्न हो गया और उसने 'जातिया सत्तावस्सो'हम' से शुरू होने वाला श्लोक बोला, ताकि वह अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सके। यहाँ 'जातिया' (जन्म से) का अर्थ है माता के गर्भ से जन्म लेने के समय से; यही अर्थ है। मैं, जो सात वर्ष का था और सर्वांगीण वाणी से परिपूर्ण था (सरदो), जगत के नेता, प्रतापी तिस्सा से मिला; यही संबंध है। 'पसन्नाचित्तो सुमानो' (प्रशंसनीय रूप से धर्मपरायण और नेक हृदय) का अर्थ है शिष्ट और स्पष्ट रूप से धर्मपरायण, अविचलित और स्पष्ट रूप से अविचलित, नेक हृदय, उत्तम मन, जिसका मन प्रसन्न मन से मेल खाता है; यही अर्थ है।

79. तिस्सास्साहम भगवतो (मैं उस तेजस्वी तिस्सा को प्रणाम करता हूँ) तीन बार जन्म लेने वाले तिस्सा; इस प्रकार, वे माता के गर्भ से, मनुष्य के जन्म से और पंच स्कंधों से मुक्त होकर उत्पन्न हुए; बुद्ध का जन्म हुआ; यही अर्थ है। मैंने जगत के उस श्रेष्ठ, उस तेजस्वी तिस्सा के सबसे उत्तम आसन बोधि वृक्ष को रोपा; यही संबंध है।

80. आसनोनमधेय्येन (आसन नाम धारण करने वाला) यह आसन बोधि वृक्ष था, जिसका नाम आसन था, जो इसके नाम और नाम की अनुभूति के कारण पड़ा; धरणी रुहपादपो (पृथ्वी में रोपित वृक्ष) इस पर लताएँ, वृक्ष, पहाड़ियाँ, नदियाँ, सागर आदि उगते हैं; अतः, धरणी (पृथ्वी)। यह क्या है? यह पथवी (पृथ्वी) है; यह बढ़ता और स्थापित होता है; अतः, धरणी रुहो (पृथ्वी पर उगा हुआ); यह अपने पैर से जल पीता है; अतः, पादपो (वृक्ष); यह छिड़के हुए जल को पीता है, और अपने पैर के रूप में मानी जाने वाली छड़ी के माध्यम से जल के स्वाद और सार को धारण करता है; यही इसका अर्थ है। यह जमीन पर उगा हुआ है, और पैर के माध्यम से जल पीता है; अतः, धरणरुहपादपो, जमीन पर उगा हुआ वृक्ष। परिकारिम (चारों ओर घूमकर देखभाल की), मैंने उस उत्कृष्ट आसनबोधि वृक्ष का पाँच वर्षों तक पोषण किया; यही इसका अर्थ है।

81. पुप्फितं पादपंदिस्वा, वृक्ष को खिलते हुए देखकर, अब्भूतम, विचित्र; सकां कम्मं, अपना कर्म; पकित्तेनतो प्रचार; मेरे द्वारा पोषित आसन बोधि से उत्पन्न विस्मयकारी फूलों के कारण रोंगटे खड़े कर देने वाली घटना को देखकर, मैं परम श्रेष्ठ बुद्ध के समक्ष अपने कर्म के बारे में प्रचार करने के लिए गया; यही अर्थ है। अर्थ सर्वत्र स्पष्ट है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा आसनबोधिया के पास है

समाप्त हो गया।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 61. थेरा सकाचित्तनिया

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

सकाचित्तनिया अध्याय, सातवाँ

---

61. सकाचित्तनिया723

जंगल में एक छोटा सा बाग देखकर, जो बहुत शांत और एकांत था।

---

720 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 721 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ 722 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, स्पष्ट मक्खन (गी तेल) 723 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपादान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

(ऋषियों के अभ्यास और बलिदानों की प्राप्ति के लिए एक स्थान,) (1) (1349)

बांस का एक स्तूप बनाकर, जिसे विभिन्न प्रकार के फूलों से सजाया गया था, मैंने (तब) अपनी रचना की पूजा ऐसे की मानो संबुद्ध के सामने खड़ी हो। (2) (1350)

मैं राजा था, देश का स्वामी था, सात रत्नों का स्वामी था। मैं अपने कर्मों में आनंदित था: यही स्तूप-पूजा का फल है। (3) (1351)

जब से मैंने (उन्हें) फूल चढ़ाकर सम्मानित किया है, तब से इक्यावन युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है: यही स्तूप-पूजा का फल है। (4) (1352)

अस्सी युग पहले मैं सात रत्नों का स्वामी था, चक्र-चालक अनंतयसा, 725 चारों महाद्वीपों का स्वामी। (5) (1353)

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) (1354)

इस प्रकार पूज्य सकाचित्तनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सकाचित्तनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

7. स्वयं के चिंतन पर अध्याय

61. थेरा सकासिंतेनिया की जीवनी पर टिप्पणी।

पावनम कानानाम दिस्वा से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा शकचिंतनीय की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, उन्होंने पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस-उस जन्म में एक परिवार में पुनर्जन्म लिया। समय के साथ बड़े होने पर, वे बुद्ध के जीवनकाल में उनसे दूर रहे क्योंकि उनका जन्म बुद्ध के जीवनकाल के अंतिम समय में हुआ था। परिनिर्वाण के समय उन्होंने संसार त्यागकर तपस्वी जीवन व्यतीत किया, हिमवंत में निवास किया, एक एकांत और रमणीय वन में पहुँचे, उसी पहाड़ी क्षेत्र में एक मंदिर स्थापित किया, बुद्ध की छवि को अपने मन में बसाया और उसे अवशेष सहित माना, श्रद्धापूर्वक वन के फूल अर्पित किए और निरंतर उसकी आराधना करते रहे। इस कर्म के फलस्वरूप, वह अपने पुनर्जन्मों के चक्र में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण करता रहा, उसने परम दिव्य आनंद और विश्वराज की समृद्धि दोनों का अनुभव किया और जब यह बुद्ध प्रकट हुए, तब उनका पुनर्जन्म एक पारिवारिक घर में हुआ; धन और पवित्र आस्था से परिपूर्ण होकर, वह गुरु से भी अधिक पवित्र हो गए, क्योंकि वे एक भिक्षु और छह प्रकार के उच्च ज्ञान से युक्त अरहत थे।

1. अपने पूर्व कर्म को याद करके वह प्रसन्न हुआ और उसने 'पवनम कानाना दिस्वा' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वह अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सके। वहाँ, पवनम (वन) वह जंगल बिखरा हुआ और फैला हुआ है जो एक तरह से वन बन गया है, कानाम (बिल्कुल घृणित) वह जंगल जहाँ कोई मार्ग नहीं है, कोई परिवहन नहीं है, और जो हमेशा शेरों, बाघों, राक्षसों, दानवों, हाथियों, घोड़ों, गरुड़ों और ड्रैगनों से भरा रहता है; (या आकाश में उड़ने वाले पक्षियों, कुत्तों और कोयल की भीड़ से भरा हुआ; अप्पसद्दम; (कम शोर) मानव आवाज से रहित होने के कारण शोर से मुक्त, वह जंगल जिसे कानाना, वनभूमि माना जाता है; यही अर्थ है। अनाविलम (अविचलित) कोई अशांति नहीं, खतरे से रहित; यही अर्थ है। इसीनम अनुचिण्णम (तपस्वी द्वारा अनुसरण किया गया) तपस्वियों द्वारा पीछा किया गया और चाहा गया; तपस्वी, जिन्हें बुद्ध, मौन बुद्ध, अरहत और दोषमुक्त व्यक्ति माना जाता है; यही अर्थ है। आहुतिनम पटिगघम (यज्ञ भेंट स्वीकार करने वाला) श्रद्धापूर्वक भेंट स्वीकार करने वाले घर के समान, जिसे पवित्र बलिदान (आहुन) कहा जाता है; यही अर्थ है।

2. थूनम कट्वाना वेलुना (बांस से मंदिर बनाकर) - बांस की सामग्री (पेसिका) से मंदिर स्थापित किया; यही अर्थ है। नानापुप्पम समोकिरीम (मैंने विभिन्न प्रकार के फूल विधिपूर्वक बिखेरे) - मैंने चंपक आदि अनेक प्रकार के फूल बिखेरे और श्रद्धापूर्वक अर्पित किए; यही अर्थ है। सम्मुखा विय सम्बुद्धम् (मानो स्वयं प्रबुद्ध बुद्ध की उपस्थिति में) - मानो जीवित बुद्ध की उपस्थिति में; निम्मितम (बनाया) मंदिर को प्रकट किया; अभि, विशिष्ट रूप से, (मैंने पूजा की) मैंने विशिष्ट रूप से प्रणाम किया; यही अर्थ है। शेष भाग आसानी से समझ में आ जाता है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा सकासिंतानिया का

समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 62. थेरा एवोपुफ़िया

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

62. आवोपुप्पिया

मठ से निकलते हुए वह पैदल मार्ग पर आगे बढ़ा और चार (महान) सत्यों की घोषणा करते हुए अमरता की अवस्था का उपदेश दिया। (1) (1355)
सिख धर्म के वचनों को समझना, सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, तटस्थ ईश्वर,

---

724 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
725 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया) के रूप में। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मैंने कई फूल उठाकर उन्हें आकाश में फेंक दिया। (2) (1356)
विश्व के सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, पुरुषों के सांड, के लिए उस कर्म के माध्यम से, मैंने विजय और पराजय से परे अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (3) (1357)
जब से मैंने (उन्हें) पुष्प अर्पित किए हैं, तब से लेकर अब तक के इकत्तीस युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है: यही पुष्प-पूजा का फल है। (4) (1358)
बीस युग पहले (मैं) सुमेधा क्षत्रिय था, जो महान शक्ति वाला चक्र-चालक और सात रत्नों का स्वामी था। (5) (1359)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) (1360)
इस प्रकार पूज्य आवोपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
आवोपुफिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
62. थेरा अवोपुप्पिया की जीवनी पर टिप्पणी।
विहार अभिनिक्खम्म से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा अवोपुप्पिया की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा की, पुनर्जन्म के चक्रों (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और इस या उस जन्म में, तेजस्वी सिख धर्मगुरु के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। बुद्धि प्राप्त करने पर वे धर्मपरायण हो गए, सत्य (धम्म) का श्रवण किया, प्रसन्न हुए, दोनों हाथों में विभिन्न प्रकार के फूल लेकर बुद्ध पर विशिष्ट रूप से बिखेरे। इस कर्म के फलस्वरूप वे अपने पुनर्जन्म के चक्रों में देवताओं और मनुष्यों के बीच विचरण करते रहे, स्वर्गिक आनंद और विश्वराज के समान समृद्धि का अनुभव किया, सर्वत्र आदरणीय रहे और इस बुद्ध के उदय के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। वयस्क होने पर उन्होंने धर्म में धर्मपरायणता प्राप्त की, संसार का त्याग किया और कुछ ही समय बाद अरहत बन गए। आ, चारों ओर से, यह खुलता है और प्रकाशित करता है; इस प्रकार, आकाशो (आकाश); वह उस आकाश में फूल बिखेरने के कारण अवोपुप्पिया थेरा के रूप में प्रसिद्ध थे।

7. इस प्रकार शांत मार्ग प्राप्त करके, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया, सुख-प्रेम में लीन हो गए और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए विहार अभिनिक्खमित्वा से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, विहार (मठ से) विशिष्ट रूप से शरीर को गिरने से रोकने के लिए चार प्रकार की मुद्राओं (इरियापथ) के माध्यम से उठाता है, लाता है (या बनाता है); इस प्रकार, विहार (मठ); उस मठ से; अभि, विशिष्ट रूप से; निक्खम्मा, बाहर आकर; अब्भूष्ठासि च चंकमति (उठकर इधर-उधर चलने के साथ-साथ) इधर-उधर चलने के उद्देश्य से, वे साठ हाथ के मठ पर विशिष्ट रूप से उठे, वे चढ़े; इस प्रकार, अर्थ है। चतुसच्चम पकासेन्टो (चार आर्य सत्यों को स्पष्ट करने के लिए) उस मठ में इधर-उधर घूमते हुए, पीड़ा (दुक्खा), पीड़ा का कारण (समुदय), पीड़ा का निवारण (निरोध) और आर्य मार्ग के रूप में माने जाने वाले चार आर्य सत्यों को प्रदर्शित करते हुए, प्रकट करते हुए, स्पष्ट रूप से विश्लेषण करते हुए, निर्वाण (अमर मार्ग) को प्रकट करते हुए, वहाँ इधर-उधर घूमते हैं; इस प्रकार, संबंध है।

8. Sikhissa giramaññāya, Buddhaseṭṭhassa tādino (अत्यंत उत्कृष्ट बुद्ध सिख के वचन को जानकर) अत्यंत उत्कृष्ट गुणों से संपन्न बुद्ध सिख की वाणी और स्वर को जानकर; nānā puppham gahetvāna (विभिन्न प्रकार के पुष्प लेकर) नाग, पन्नागा आदि अनेक पुष्प लेकर; ākāsamhi samokirim (मैंने आकाश में उचित रूप से बिखेरे) मैंने विचरण करते हुए तेजस्वी बुद्ध के सिर के ऊपर आकाश में बिखेरे और श्रद्धापूर्वक अर्पित किए।

9. हे द्विपादों के स्वामी, उस कर्म के फलस्वरूप, हे देवताओं, ब्रह्मा और मनुष्यों जैसे दो पैरों वाले प्राणियों के स्वामी, नरसभ (हे बैल के समान), हे मनुष्यों में बैल के समान, आप! आपके साक्षात भिक्षु बनकर, मैं निर्वाण, यानी अविचल स्थान को प्राप्त कर चुका हूँ; विजय और पराजय का त्याग करके, मैंने दिव्य और मानवीय आनंद माने जाने वाले विजय और नरक के चार कष्टों के समान पराजय का त्याग कर, निर्वाण प्राप्त कर लिया है; यही इसका अर्थ है। शेष अर्थ तो सहजता से समझ में आता है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा अवोपुप्पिया का
समाप्त हो गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

63. पक्कागमनीया 727

मैं उस समय सिंधु नदी के किनारे एक लाल हंस था, जो केवल सफेद काई खाकर जीवन यापन करता था, और पापों के मामले में काफी संयमित था। (1) (1361)

मैंने निर्मल बुद्ध को आकाश में विचरण करते देखा। मैंने अपनी चोंच से साल का फूल लेकर (बुद्ध) विपस्सी का सम्मान किया। (2) (1362)

वह, जो दिवंगत ईश्वर में अटूट और दृढ़ आस्था रखता है,

ब्रैकेट में दिए गए 726 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करता है। ब्रैकेट में दिए गए 727 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल

खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करता है।

अपने हृदय में सुख की अनुभूति के कारण वह बुरे पुनर्जन्म की ओर नहीं बढ़ेगा।728 (3) (1363)
मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था। जब मैं पक्षी था (बहुत पहले), तब मैंने अच्छे बीज बोए थे। (4) (1364)
मैंने जब से (उसे) वह फूल भेंट किया है, तब से इक्यावन युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है: यही बुद्ध-पूजा का फल है। (5) (1365)
आठ पुरुष थे जिनका एक ही नाम सुकारुदासना था।729 वे सत्रह युग पहले महान शक्ति वाले चक्र-चालक थे। (6) (1366)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) (1367)
इस प्रकार पूज्य पच्चागमनीया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
पच्चागमनीया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
63. थेरा पक्कागमनिया की जीवनी पर टिप्पणी।
सिंधुयानदीयतीरे से शुरू होने वाले श्लोक, पूज्य थेरा पच्चागमनिया की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, पुण्य कर्मों का संचय किया, जिससे उन्हें इस या उस जन्म में बार-बार पुनर्जन्म (वत्त) के चक्र से मुक्ति मिली। वे विपस्सी बुद्ध के समय सिंधु नदी के पास एक चक्कवाका पक्षी के गर्भ में पुनर्जन्म लिए; क्योंकि पक्षी अपने पूर्व कर्मों के बोझ से दबा हुआ था, इसलिए वह जीवित प्राणियों या कीड़ों को नहीं खाता था, केवल काई खाकर ही विचरण करता था। उसी क्षण, उस पक्षी ने बुद्ध को तेजस्वी रूप में देखा, श्रद्धा से भर गया, अपनी चोंच से साल के पेड़ से साल के फूल तोड़े, बुद्ध के पास आया और आदरपूर्वक उन्हें अर्पित किया। उस अत्यंत पवित्र मन के कारण, वह वहाँ से विदा होकर दिव्य लोक में उत्पन्न हुआ, और बार-बार छह प्रकार की दिव्य इंद्रिय सुखों का आनंद लिया, और वहाँ से विदा होकर मनुष्यलोक में उत्पन्न हुआ, जहाँ उसने विश्वराज के समान समृद्धि का अनुभव किया, और इसी प्रकार, जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तब वह एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया; बुद्धि प्राप्त करने पर, अपने पूर्व कर्म के प्रभाव से वह गुरु के प्रति स्पष्ट रूप से श्रद्धावान था, भिक्षु बना और शीघ्र ही अरहत बन गया। वह अपने पूर्व पुण्य के नाम से थेरा पक्कागमनिया के नाम से प्रसिद्ध था, क्योंकि जब वह एक चक्कवाका पक्षी था, तब उसने प्रतापी बुद्ध को देखा, कहीं गया, फूल लाया और श्रद्धापूर्वक उन्हें अर्पित किया।
13. अपने पूर्व कर्म को याद करके वे प्रसन्न हुए और उन्होंने सिंधुया नादिया तीरे से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सकें। यह कांपता और हिलता है, शीतल ध्वनि उत्पन्न करता है, इस प्रकार सिंधु (शीतलता की कंपन ध्वनि); यह गर्जना करता है, ध्वनि उत्पन्न करता है; इस प्रकार, और (नदी)। चक्कवाको अहम् तदा, मैं तब एक पक्षी था, चक्कवाका; यह तैरता है, उड़ता है और जल में, भूमि पर या आकाश में, पहिये की तरह तेजी से चलता है; इस प्रकार चक्कवाका; उस समय जब मैं विपस्सी महिमावान था, मैं एक चक्कवाका पक्षी था; यही अर्थ है। शुद्ध-सेवला-भक्खोऽहम् (मैं शुद्ध काई खाने वाला था) मैं केवल शुद्ध काई खाकर ही जीवन यापन करता था, क्योंकि मैं अन्य प्रकार के चरागाहों से मिश्रित नहीं था; मैं अच्छी तरह से अनुशासित हूँ, बुरे कर्मों के संबंध में अच्छी तरह से नियंत्रित हूँ, पूर्व प्रवृत्ति (वासना, प्रवृत्ति) के प्रभाव में बुरे कर्म करने के मामले में अच्छी तरह से नियंत्रित हूँ।
14. अद्दसम विरोजम बुद्धम (मैंने निष्कलंक बुद्ध को देखा) मैंने निर्मल, दोषरहित बुद्ध को देखा, जो कामवासना (राग), घृणा (दोष) और मोह (मोह) से मुक्त थे; गच्चहन्तम अनिलंजसे (आकाश में जाते हुए) बुद्ध आकाश में वायु यात्रा कर रहे थे; तुन्धेन (चोंच से) अपनी चोंच से; सालम, साल का फूल; पग्गयह, उठाकर; विपस्सिस्सःभिरोपयिम (मैंने उन्हें विपस्सी की ओर उठाया) मैंने श्रद्धापूर्वक विपस्सी को अर्पित किया; यही अर्थ है। शेष अर्थ आसानी से समझ में आ जाता है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा पक्कागमानिया का
समाप्त हो गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

64. परप्पसादक 730

"बैल, श्रेष्ठ पुरुष, वीर पुरुष, महान ऋषि, विजयी पुरुष, स्वर्ण रंग के सम्बुद्ध को देखकर कौन प्रसन्न नहीं होगा? (1) (1368)
बुद्ध की ध्यान अवस्था को देखकर कौन प्रसन्न नहीं होगा?731

---

728 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
729 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 730 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 731 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

हिमालय की तरह असीम, सागर की तरह पार करना कठिन? (2) (1369)
पृथ्वी के समान असीम, वन-फूलों की विविध मालाओं से सजे बुद्ध के नैतिक अनुशासन को देखकर कौन प्रसन्न नहीं होगा? (3) (1370)
बुद्ध के ज्ञान को देखकर कौन प्रसन्न नहीं होगा, जो आकाश के समान शांत और अंतरिक्ष के समान अथाह है? (4) (1371)
इन चार श्लोकों से सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, सिद्धार्थ, अजेय की स्तुति करते हुए (जब मैं) येन नाम का ब्राह्मण था,732 (5) (1372)
मैं चौरासी युगों तक किसी बुरी स्थिति में पुनर्जन्म लेता रहा; मैंने अच्छे पुनर्जन्मों में काफी सुख का आनंद लिया। (6) (1373)
विश्व के नेता की प्रशंसा करने के बाद से चौरानवे युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है: यही उनकी प्रशंसा का फल है। (7) (1374)
चौदहवें युग पूर्व में चार (पुरुष जिनका नाम) उगाता था, 733 महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा, सात रत्नों के स्वामी थे। (8) (1375)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) (1376)
इस प्रकार पूज्य परप्पसादक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
परप्पसादक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

732 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 733 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

64. थेरा परप्पसादक की जीवनी पर टीका।

उसाभम पवारंवीरम् से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा परप्पसादक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने वाले, इस और उस जन्म में पुनर्जन्म के चक्रों (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय करने वाले, वे प्रतापी सिद्धार्थ के समय एक ब्राह्मण परिवार में पुनर्जन्म हुए; वे तीनों वेदों के साथ-साथ पाँचवें ग्रंथ इतिहास (परंपरागत ज्ञान) में निपुण हुए, वे श्लोक का पाठ करने और तथ्यों की व्याख्या करने में सक्षम थे, साथ ही निघंडु और केतुभ के सभी विभाजनों, अक्षरों और विभाजकों का ज्ञान रखते थे, और सांसारिक विज्ञान, लोकायत और एक महान व्यक्ति के गुणों में निपुण थे, जिन्हें सेला ब्राह्मण के नाम से जाना जाता है। जब सिद्धार्थ ने स्वयं को बत्तीस विशिष्ट गुणों (पृष्ठ 168) और अस्सी लघु गुणों से परिपूर्ण, तेजस्वी बुद्ध के दर्शन किए, तो वे पूर्णतः धार्मिक भाव से भर गए और अनेक उदाहरणों और दृष्टांतों के माध्यम से उनकी स्तुति प्रकट की। इस पुण्य कर्म के फलस्वरूप, उन्होंने दिव्य इंद्रिय सुख के छह चरणों का आनंद लिया, दिव्य जगत में सक्का, मार आदि की समृद्धि प्राप्त की, मनुष्यों में विश्वराज की समृद्धि का अनुभव किया और एक समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लिया। ज्ञानोदय की आयु प्राप्त करने पर वे गुरु से प्रसन्न हुए, संसार का त्याग किया और शीघ्र ही चार प्रकार के विश्लेषणात्मक ज्ञान और छह प्रकार के उच्च ज्ञान प्राप्त कर दोषरहित अर्हत बन गए। बुद्ध की स्तुति के माध्यम से समस्त प्राणियों के मन को प्रसन्नतापूर्वक धार्मिक बनाने के कारण वे थेरा परप्पसादक के नाम से प्रसिद्ध हुए।

20. एक दिन, अपने पूर्व कर्म को याद करके वे प्रसन्न हुए और उन्होंने 'उषभं पवरं वीरं' से शुरू होने वाला एक श्लोक सुनाया, जिसमें उन्होंने अपने पूर्व कर्म का वर्णन किया। वहाँ, उषभं (बैल), वसाभ, निषभ, वसाभ और आसभ; इस प्रकार, चार सबसे बड़े नर बैल हैं। वहाँ, वसाभ बैल सौ पशुओं में सबसे बड़ा है; निषभ एक हजार पशुओं में सबसे बड़ा है; आसभो एक लाख करोड़ पशुओं में सबसे बड़ा है; ज्ञानवान ब्राह्मण अपने व्यक्तिगत ज्ञान के आधार पर जिसकी भी प्रशंसा करते हैं, उसकी प्रशंसा करने में वे सक्षम नहीं हैं। हालाँकि, बुद्धों की हर प्रकार से प्रशंसा करने में कोई भी सक्षम नहीं है; वास्तव में, बुद्ध अतुलनीय हैं। वास्तव में, ऐसा कहा गया है:

बुद्ध भी बुद्ध की प्रशंसा में बोलते थे;
यदि वे एक युग (कप्पा) के लिए भी बोलते रहें
दूसरे बुद्ध का, लंबा-लंबा अंतराल
एयॉन (कप्पा), शायद थक जाए लेकिन
तथागत की स्तुति कभी समाप्त नहीं होगी;

इस प्रकार, आरंभ हुआ। इस ब्राह्मण ने भी मुखानुरूल्हा (मुखारूल्हा) और निश्चित प्रसन्नतापूर्ण भक्ति के कारण "उषभ (बैल)" से आरंभ किया, जबकि उसे "आसभ (सबसे बड़ा बैल)" कहना चाहिए था। चयन योग्य और वांछनीय; इस प्रकार, वरो (उत्कृष्ट) है; कई लाख युगों (कप्पा) में परिश्रम करने के कारण, वीर है; नैतिक उपदेशों आदि के विशाल समूह की खोज करने वाला वह महेसिम (महान साधक) बुद्ध है; दुराचार (किलेसा), षट्समूह (खन्ध) मार आदि जैसे मारों पर स्पष्ट रूप से विजय प्राप्त करने वाला; इस प्रकार, विजयावी; वह विजयावीनाम (वह विजेता) आत्मप्रबुद्ध बुद्ध है। जिस किसी भी आत्मप्रबुद्ध बुद्ध का रंग स्वर्ण के समान होता है, वह स्वर्ण रंग का होता है; उस सुनहरे रंग वाले आत्मज्ञानी बुद्ध को देखकर, जो कि वह प्राणी है जो दिखावटी रूप से धार्मिक नहीं बनता।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा परप्पसादक
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 65. थेरा भिसदायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

65. भीषदायक 734

(संबुद्ध) वेस्सभु नामक तीसरे ऋषि (उस युग में जन्मे)735 वन में उतरकर736 वहाँ निवास करते थे, जो परम पुरुष थे। (1) (1377)
कुछ कमल की जड़ें और तने लेकर, 737 मैं 738 बुद्ध के समक्ष गया और अपने हाथों से (अच्छी तरह से) प्रसन्न होकर वह (भोजन) बुद्ध को दिया। (2) (1378)
और सबसे बुद्धिमान वेस्साभु के हाथ का स्पर्श पाकर, मैं अतुलनीय रूप से प्रसन्न था; क्या इससे बढ़कर कुछ हो सकता है?739 (3) (1379)
मेरा अंतिम जीवन चल रहा है; समस्त अस्तित्व अब नष्ट हो चुका है। जब मैं हाथियों का राजा था, तब मैंने अच्छे बीज बोए थे। (4) (1380)
उस समय मैंने जो (अच्छा) कर्म किया था, उसके बाद से इकत्तीस युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला: यही कमल की जड़ का फल है। (5) (1381)
तेरहवें युग (पूर्व) में सोलह लोगों के स्वामी, राजा (सभी) समोधान थे, जो महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले सम्राट थे। (6) (1382)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) (1383)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 734 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 735 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
736 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 737 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 738 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 739 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

इस प्रकार पूज्य भीषदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
भीषदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

65. थेरा भीषदायक की जीवनी पर टीका।

वेस्साभू नाम नामेन से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा भीषदायक की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, पुण्य कर्मों का संचय करते हुए, जो इस और उस जन्म के बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति दिलाने में सहायक थे, उन्होंने हिमवंत में एक हाथी की कोख में पुनर्जन्म लिया और वहां प्रतापी वेस्साभू के समय निवास किया। उस अवसर पर, प्रतापी वेस्साभू एकांत की इच्छा से हिमवंत गए। प्रतापी वेस्साभू से मिलकर, वह हाथी श्रद्धा से भर गया और कमल की डंडियों और जड़ों को पकड़कर प्रतापी वेस्साभू की सेवा करने लगा। उस पुण्य कर्म के फलस्वरूप, उन्होंने हाथी का जीवन त्याग दिया, दिव्य लोक में जन्म लिया, वहाँ उन्होंने इंद्रिय-संबंधी दिव्य लोक की छह अवस्थाओं की समृद्धि का आनंद लिया, मनुष्य रूप धारण किया, विश्वराज के समान समृद्धि का अनुभव किया और एक धनी परिवार में पुनर्जन्म लिया, जब इस बुद्ध का जन्म हुआ; अपनी पूर्व प्रवृत्ति (वासना) के बल पर, वे गुरु के प्रति अत्यंत श्रद्धावान थे, भिक्षु बने और कुछ ही समय बाद अर्हतत्व प्राप्त कर लिया। वे अपने पूर्व कर्म के नाम पर भिसदायक थेरा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

29. अपने पूर्व कर्म को याद करके उन्होंने वेस्साभू नाम नामेण से शुरू होने वाला एक श्लोक कहा, ताकि वे अपने पूर्व कर्म को दर्शा सकें। वहाँ, वेस्साभू (बुद्ध वेस्साभू), वे व्यापारी से आगे निकल जाते हैं; दूसरे शब्दों में, वे व्यापारियों, व्यापारिक कार्यों या इंद्रिय सुखों (राग) आदि या पुण्य कर्मों आदि या भौतिक (वात्तु) इंद्रिय सुखों और भ्रष्ट (किलेसा) इंद्रिय सुखों पर विजय प्राप्त करते हैं; इस प्रकार, वेस्साभू (उपरोक्त व्यापारियों आदि पर विजय प्राप्त करने वाले), वेस्साभू नाम से जाने जाने वाले वेस्साभू। इसिनम ततियो आहू (तपस्वियों में तीसरे थे), वे पुण्य कर्मों की खोज करते हैं; इस प्रकार, इसि (ऋषि); "विपस्सी, सिखी, वेस्साभू, ऐसा कहे जाने के कारण वे तीसरे तपस्वी (या ऋषि), तीसरे प्रतापी बन गए; यही अर्थ है। काहनम वनमोग्गयह (जंगल में प्रवेश करके), गोता लगाकर वे कानन (वन क्षेत्र) कहलाने वाले जंगल में प्रवेश कर गए; यही अर्थ है।"

30. भीषमूलालं गणहित्वा (कमल को डंठल और जड़ सहित पकड़कर), यह दो पैरों और चार पैरों वाले प्राणियों की भूख को कुचल देता है, सताता है और नष्ट कर देता है, इस प्रकार भीष (कमल-भोजन); यह क्या है? कमल-भोजन (पदुमकंडा), भोजन योग्य कमल और भोजन योग्य जड़ (भोजन योग्य कमल) ने उस भोजन योग्य कमल (भीषमूलालं) को ग्रहण किया; यही अर्थ है।

31. करेना च परामत्तहो (हाथ से अनुभव किया) वह दान जो मैंने दिया; वेस्सभूवर बुद्धिना (उत्कृष्ट बुद्ध वेस्सभू द्वारा) परम श्रेष्ठ बुद्ध वेस्सभू द्वारा हथेली से उचित स्पर्श और संपर्क किया गया। सुखाहम नाभिजानामि, समम तेना कुतोत्तरी? (मुझे ऐसा कोई सुख याद नहीं जो इसके समतुल्य हो); इससे बेहतर कोई बात कहाँ हो सकती है?) उस सुख के समतुल्य, मुझे याद नहीं कि वह सुख कहाँ से आया है जो उससे श्रेष्ठ, उससे भी बढ़कर और उससे भी अधिक है; यही अर्थ है। विधि का अनुसरण करने पर शेष आसानी से समझ में आ जाता है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा भीषदायक का
समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 66. थेरा सुसिंतिता

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

66. सुसिंटिटा740

दुर्गम पर्वत पर विचरण करते हुए मैं (तब) एक उच्च कुल का शेर था। जंगली जानवरों के समूहों का वध करते हुए मैं उस पर्वत पर रहता था। (1) (1384)
परन्तु हे अत्थादस्सी, हे भगवान, हे श्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता, हे सर्वज्ञ, मेरी उन्नति की कामना से उस उत्कृष्ट पर्वत पर आए। (2) (1385)
मैं अपने द्वारा मारे गए चित्तीदार मृगों को खाने की इच्छा से उनके पास पहुँचा। उसी समय भगवान बुद्ध भिक्षा मांगने के दौरान वहाँ आए। (3) (1386)
मैंने मांस के उत्तम टुकड़े लेकर गुरु को दिए। महान वीर ने इसके लिए धन्यवाद दिया, जिससे मुझे निर्वाण की ओर अग्रसर किया। (4) (1387)
मैं उस दुर्गम पर्वत पर अपने हृदय में उस आनंद के साथ प्रवेश किया, और आनंद को जन्म देते ही, मैं वहीं पर परास्त हो गया। (5) (1388)
उस (कुछ) मांस के उपहार और (मेरे) हृदय में दृढ़ संकल्प के कारण, पंद्रह सौ युगों तक मैंने देवताओं के संसार में आनंद लिया। (6) (1389)
शेष सभी युगों में मैंने उस मांस के उपहार और बुद्ध-स्मरण के कारण सदा स्वस्थ आचरण किया। (7) (1390)
अड़तीसवें युग में दिघायु नाम के आठ राजा थे।741

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 740 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 741 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

इसके साठवें युग में वरुण नाम के दो राजा हुए। (8) (1391)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) (1392)
इस प्रकार पूज्य सुसिंतिता थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
सुसिंटिटा थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

टिप्पणी अनुवाद: यू लू पे विन
66. थेरा सुसिंटिटा की जीवनी पर टिप्पणी।
गिरिदुग्गचनो आसिम से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा सुचिंतिता की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने और इस-उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित करने के कारण, वे परम पूज्य अत्थदस्सी के समय हिमवंत क्षेत्र में एक शिकारी के परिवार में पुनर्जन्म लेकर हिरण, सूअर आदि का शिकार करके अपना जीवन यापन करते थे। उस समय, जगत के स्वामी जगत के उत्थान और प्राणियों के प्रति अपनी सहानुभूति के कारण हिमवंत गए। तब उस शिकारी की मुलाकात परम पूज्य अत्थदस्सी से हुई, वे अत्यंत श्रद्धावान हुए और अपने भोजन के लिए लाया गया उत्तम मांस उन्हें भेंट किया। परम पूज्य अत्थदस्सी ने उन पर दया करके भेंट स्वीकार की; उन्होंने मांस खाया, धन्यवाद कहा और प्रस्थान किया। उसी पुण्य कर्म और उस अत्यंत प्रसन्नतापूर्ण धार्मिक भावना के कारण, वे वहाँ से चले गए, अपने पुनर्जन्मों के चक्रों में अच्छे मार्ग पर विचरण करते रहे (सुगातेसु, उत्कृष्ट अस्तित्व में), इंद्रिय सुखों के दिव्य जगत के छह चरणों की समृद्धि का आनंद लिया, मनुष्यों के बीच विश्वराज जैसी समृद्धि का अनुभव किया, और जब यह बुद्ध प्रकट हुए, तब एक पारिवारिक घर में उनका पुनर्जन्म हुआ; उन्होंने गुरु में अत्यंत प्रसन्नतापूर्ण धार्मिक आस्था धारण की, संसार का त्याग किया और शीघ्र ही अरहत बन गए।

36. चार प्रकार के विश्लेषणात्मक ज्ञान और पाँच प्रकार के उच्चतर ज्ञान जैसी विशिष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपने पूर्व कर्म को याद किया, प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'गिदिदुग्गकारो आसिम' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। यह प्रतिध्वनित होता है और ध्वनि उत्पन्न करता है; इस प्रकार, गिरि (पहाड़); वह क्या है? यह पत्थर और मिट्टी से बना पहाड़ है; कठिनाई और कष्ट के साथ चलना दुग्ग (कठिन यात्रा) है; पहाड़ियों पर कठिन यात्रा करना गिरिदुग्ग है, वह पहाड़ जिस पर चलना कठिन है; कठिन यात्रा; यही अर्थ है। मैं पहाड़ियों में, कठिन पहाड़ियों में विचरण करने वाला और नैतिक उपदेशों का पालन करने वाला था। 'अभिजातो व केसरी' (विशिष्ट रूप से जन्मे सिंह के समान), मैं विशिष्ट रूप से जन्मे और उत्पन्न हुए अयाल वाले सिंह के समान कठिन पहाड़ियों में विचरण करता था; यही अर्थ है।
40. गिरिदुग्गम पविसिम अहम (मैंने कठिन पहाड़ी पर प्रवेश किया) मांस की उस भेंट से प्रसन्न होकर और उत्साह से भरकर मैं पहाड़ी के भीतरी भाग में प्रवेश किया। शेष का अर्थ सरल है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा सुसिंटिटा का
समाप्त हो गया।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 67. थेरा वत्थदयका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

67. वत्थाडायक 743

मैं उस समय एक पक्षी के रूप में पैदा हुआ था, अच्छे (मजबूत) पंखों के साथ, एक हार्पी-राजा। मैंने निर्मल बुद्ध को गंधमादन (पर्वत) पर जाते देखा। (1) (1393)
मैंने अपना वीणा जैसा रूप त्याग दिया और मनुष्य के वस्त्र धारण कर लिए। मैंने एक वस्त्र दो पैरों वाले प्राणियों के स्वामी, तटस्थ को दे दिया। (2) (1394)
उस कपड़े का टुकड़ा लेकर, बुद्ध, विश्व के शीर्ष नेता, शिक्षक, आकाश में खड़े होकर (मेरे बारे में) ये श्लोक बोले: (3) (1395)
“इस वस्त्र के उपहार और अपने हृदय में दृढ़ संकल्प के कारण, वह वीणा के गर्भ को त्यागकर देवताओं के संसार में आनंदित होगा।” (4) (1396)
परन्तु अत्थादस्सी, हे भगवान, संसार के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के श्रेष्ठ, वस्त्र के उपहार की प्रशंसा करने के बाद उत्तर दिशा की ओर मुख करके चले गए। (5) (1397)

---

742 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 743 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के

अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 744 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

जब मैं पुनर्जन्म लेता हूँ, तो मुझे वस्त्रों की उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं; आकाश में एक छत्र है: यही वस्त्र देने का फल है। (6) (1398)
अरुणक नामक सात पुरुष महान शक्ति वाले चक्र-चालक थे। चौंतीसवें युग में वे लोगों के स्वामी थे। (7) (1399)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) (1400)
इस प्रकार पूज्य वत्थाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
वत्थडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
67. थेरा वत्थाडायक की जीवनी पर टीका
'पक्खिज्जतो तदा आसिम' से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा वत्थडायक की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, उन्होंने इस और उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित किए और परम पूज्य अत्थदस्सी के समय गरुड़ पक्षी के गर्भ में पुनर्जन्म लिया। गंधमादना पर्वत की ओर जा रहे परम पूज्य अत्थदस्सी को देखकर वे अत्यंत प्रसन्न और धर्मपरायण हो गए, उन्होंने गरुड़ पक्षी का रूप त्याग दिया, एक बालक का रूप धारण किया, अपने साथ अत्यंत कीमती दिव्य वस्त्र लिए और आदरपूर्वक उन्हें परम पूज्य को अर्पित कर दिया। परम पूज्य ने उन्हें स्वीकार किया, धन्यवाद कहा और प्रस्थान किया। उस पक्षी ने अपना समय उसी श्रद्धा भाव से व्यतीत किया, अपने जीवनकाल तक जीवित रहा, फिर वहां से उसका निधन हो गया, और वह दिव्य लोक में पुनर्जन्म लेकर वहां जीवन चक्र में विचरण करता रहा, पुण्य कर्मों का फल भोगता रहा, और मनुष्यों के बीच समृद्धि का आनंद लेता रहा; उसे हर जगह कीमती वस्त्र और आभूषण प्राप्त हुए; इसके बाद, प्रत्येक जन्म में वह पुनर्जन्म लेता रहा, जहां भी जाता, वस्त्रों की छाया में रहता था; बाद में जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तब उसका पुनर्जन्म एक पारिवारिक घर में हुआ; बुद्धि प्राप्त करने पर उसने गुरु में गहरी आस्था धारण की, संसार का त्याग किया, और कुछ ही समय बाद छह प्रकार के परम ज्ञान को प्राप्त करके रोगमुक्त हो गया। वह अपने पूर्व में किए गए पुण्य कर्म के नाम पर वत्थाडायक थेरा के नाम से प्रसिद्ध हुआ।
45. अपने पूर्व कर्म को याद करके वह आनंद में लीन हो गया और उसने अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'पक्खीजातो तदा आसिम' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, 'पक्खीजातो' (पंखों वाले प्राणी के रूप में जन्मा), एक पक्षी ऊपर जाता है और इसके साथ उड़ता है; इस प्रकार, 'पक्खा' (पंख); इसके पंख हैं; इस प्रकार, 'पक्खी' (पंखों वाला); पक्षी के गर्भ में जन्मा और उत्पन्न हुआ; यही अर्थ है। 'सुपञ्ञा' (गरुड़ पक्षी), जिसके पंख उत्तम हैं, वह सुपञ्ञा है, अच्छे पंखों वाला; सुनहरे रंग के चमकीले पंखों वाला महान पक्षी जो हवा (या हल्की हवा) को पकड़ लेता है; यही अर्थ है। 'गरुड़-राजा' (गरुड़) वे अजगरों को पकड़ने के उद्देश्य से पत्थरों का भारी बोझ निगल जाते हैं; इस प्रकार, 'गरुड़' (बड़ा पक्षी); गरुड़ों के प्रमुख और राजा; इस प्रकार, गरुड़धिपो है; मैंने निष्कलंक बुद्ध को देखा; इस प्रकार, संबंध है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा वत्थाडायक के पास
समाप्त हो गया।

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

68. अंबदायक 745

हे भगवान अनोमादस्सी, पर्वत पर बैठे हुए, इस अनंत संसार में प्रेम और दया का प्रसार किया, वे इच्छाहीन हैं। (1) (1401)
उस समय मैं हिमालय की सर्वोच्च पहाड़ियों में एक बंदर था। असीम अनोमा को देखकर, बुद्ध में मेरा हृदय प्रसन्न हुआ। (2) (1402)
उस समय हिमालयी क्षेत्र में आम के पेड़ फल दे रहे थे। इसलिए, मैंने एक आम लेकर उसे शहद के छत्ते के साथ दे दिया। (3) (1403)
महान ऋषि अनोमादस्सी, बुद्ध ने मुझसे यह भविष्यवाणी की थी: "इस शहद के उपहार और (साथ ही) आम (फल) के इस उपहार के कारण, (4) (1404)
आप सत्तावन युगों तक देवताओं की दुनिया में आनंदित रहेंगे (इसलिए)।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 745 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

आप शेष युगों के लिए मिक्स746 में पुनर्जन्म लेंगे। (5) (1405)
बुरे कर्मों का त्याग करके और परिपक्व बुद्धि से, इस शोक स्थल से प्रस्थान करके तुम अपने दोषों को नष्ट करोगे।" (6) (1406)
मुझे महान ऋषि ने उत्कृष्ट वशीकरण के माध्यम से वश में कर लिया है।747 मैंने विजय और पराजय से परे अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (7) (1407)
सत्तरह युगों (इसलिए)748 चौदह (विभिन्न) राजा थे (तब) (जिनका नाम सभी) अंबट्ठज था749 महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले सम्राट। (8) (1408)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) (1409)
इस प्रकार पूज्य अंबडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
अंबडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन

68. थेरा अम्बाडायक की जीवनी पर टीका

अनोमदस्सी भगवा से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेर अंबडायक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की भक्तिपूर्वक सेवा करते हुए, उन्होंने इस या उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित किए और प्रतापी अनोमदस्सी के समय में एक बंदर के गर्भ में पुनर्जन्म लिया तथा हिमवंत क्षेत्र में बंदरों के राजा बनकर सुशोभित जीवन व्यतीत किया। उस अवसर पर, प्रतापी अनोमदस्सी ने बंदर राजा पर दया करते हुए हिमवंत क्षेत्र का दौरा किया। तब प्रतापी को देखकर वह बंदर राजा अत्यंत प्रसन्न और श्रद्धावान हो गया और उन्हें थोड़े से शहद के साथ अत्यंत मीठे आम भेंट किए। तब प्रतापी ने बंदर के देखते ही उन सभी को खा लिया, धन्यवाद कहा और प्रस्थान किया। तब, बंदर मन से प्रसन्न और हृदय से आनंदित हुआ, अपने जीवनकाल तक उसी उत्साह और आनंद के साथ जीवित रहा, वहाँ से देहांत हुआ, दिव्य लोक में पुनर्जन्म लिया, वहाँ बार-बार आनंद का अनुभव किया, मनुष्यों के बीच समृद्धि देखी, एक समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लिया, जब यह बुद्ध प्रकट हुए, गुरु में श्रद्धा रखते हुए, संसार का त्याग किया और छह प्रकार के उच्च ज्ञान प्राप्त किए। वे अपने पूर्व पुण्य कर्म के नाम पर अंबदयाकथेरा के नाम से प्रसिद्ध हुए।

53. इसके बाद, उन्होंने अपने द्वारा किए गए पुण्य कर्म के बीज को देखा, प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए अनोमदस्सी भगवा से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला: मेट्टाया अफरी लोके अप्पमाने निरुपधि (उन्होंने असीम प्रेम से संसार को व्याप्त किया; उस महिमावान ने प्रेम और दयालु हृदय से संसार को व्याप्त किया, अस्तित्व के आधार से मुक्त करते हुए, "वे सुखी हों" आदि कहते हुए, समस्त संसार और असंख्य जीवों को व्याप्त किया, फैलाया और विकसित किया; यही अर्थ है।
54. कपि अहम तदा आसिम (मैं तब एक बंदर था), उनके आने के समय मैं एक बंदर-राजा था; यही अर्थ है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा अंबडायक का
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 69. थेरा सुमना

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

---

69. सुमना750

मैं उस समय माला बनाने वाली थी, सुमना नाम से जानी जाती थी। मैंने बुद्ध, निर्मल, यज्ञ ग्रहण करने वाले को देखा। (1) (1410) अपने दोनों हाथों से एक सुंदर चमेली का फूल लेकर,

---

746 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
747 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 748 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 749 शाब्दिक रूप से, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित 750 अपदान संख्याएँ {फैंसी कोष्ठकों} में दी गई हैं, जो BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं।

मैंने बुद्ध, सिख धर्म, जगत के सगे-संबंधी को नमन किया। (2) (1411)
उस पुष्प-पूजा के माध्यम से, इरादे और (दृढ़) संकल्प के साथ, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई ज्ञान नहीं है: यही बुद्ध-पूजा का फल है। (3) (1412)

मैंने जब से (उसे) वह फूल भेंट किया है, तब से इकत्तीस युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है: यही बुद्ध-पूजा का फल है। (4) (1413)
इसके पच्चीसवें युग में चार महान यशवान पुरुष थे; (वे सभी) चक्र चलाने वाले राजा थे, सात रत्नों के स्वामी थे। (5) (1414)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) (1415)
इस प्रकार पूज्य सुमना थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
सुमना थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टिप्पणी अनुवाद: यू लू पे विन
69. थेरा सुमना की जीवनी पर टीका।
सुमना नाम नामेना से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा सुमना की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, उन्होंने इस और उस जन्म में पुनर्जन्म के चक्रों से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और परम पूज्य सिख धर्मगुरु के समय एक माला बनाने वाले के घर में पुनर्जन्म लिया। वे समय के साथ बड़े हुए, परम पूज्य बुद्ध में गहरी आस्था से परिपूर्ण हुए और अपने मन को प्रसन्न रखते हुए मुट्ठी भर चमेली के फूल लेकर श्रद्धापूर्वक अर्पित किए। इस पुण्य कर्म के कारण उन्होंने देवताओं और मनुष्यों के बीच दो प्रकार की समृद्धि का आनंद लिया। वे इस बुद्ध के उदय के समय एक परिवार में पुनर्जन्म लिए, समय के साथ बड़े हुए, पत्नी और बच्चों के साथ अपना जीवन व्यतीत किया, सुमना नाम से प्रसिद्ध हुए, गुरु में गहरी आस्था रखी, संसार का त्याग किया और कुछ ही समय बाद अरहत बन गए।
62. अरहत बनने पर, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया, आनंदमय भाव में डूब गए, और अपने पूर्व कर्मों को प्रकट करने के लिए 'सुमनोनम नामेन' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। जिसका मन उत्तम और हृदय अच्छा हो, वह सुमन (अच्छा मन) कहलाता है। उस समय मैं सुमन नाम का एक पुष्प विक्रेता था, जिसका नाम अत्यंत पवित्र और निर्मल भक्ति से जुड़ा था।
63. सिखिनो लोकबंधुनो, सिखी को, संसार के संबंधी को; वह मुकुट और सिर प्रकट करता है, इस प्रकार सिखी; मुकुटधारी; दूसरे शब्दों में, वह उचित रूप से जुड़े हुए स्व-संबंधों को भस्म और नष्ट करता है, इस प्रकार सिखी, मुकुटधारी; जैसे अग्नि की लौ चमकती है, प्रकट होती है, लौ पत्तों, घास, ईंधन, पीली या हल्की लकड़ी या पत्तों आदि को जला देती है, वैसे ही यह महिमावान नीले, पीले आदि रंगों की किरणों से चमकता है, समस्त संसार के निवास स्थान में प्रकट होता है; उसके शरीर में व्याप्त सभी प्रकार के दुराचार (किलेसा) सूख गए, नष्ट हो गए और जल गए; इस प्रकार, शब्द-नाम, नामकरण क्रिया और नाम धारण करना; उस सिखी को; समस्त संसार के संबंधी को; इस प्रकार, ओकबंधु (साम्राज्य संबंधी)); अभिरोपायिम (मैंने इसे स्पष्ट रूप से स्थापित करवाया) मैंने उस गौरवशाली (एक सिख, संसार के सगे-संबंधी) को श्रद्धापूर्वक चमेली के फूल अर्पित किए; यही अर्थ है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा सुमना का
समाप्त हो गया है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 70. थेरा पुप्फाचांगगोटिया

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जेएस वाल्टर्स

70. पुप्पचंगोटिया751

निर्भीक रूप वाले शेर की तरह, (मजबूत) पंखों वाली विशाल वीणा की तरह, बाघों के शानदार सांड की तरह, और उच्च कुल के शेर (राजा) की तरह, (1) (1416)
सिख धर्म, तीनों लोकों का आश्रय, इच्छा रहित, अजेय, भिक्षुओं में श्रेष्ठ, वहाँ विराजमान थे, भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित। (2) (1417)
एक ताबूत में एक शानदार anoja752 फूल रखने के बाद,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 751 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 752 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध753 ताबूत पर छिड़कते हुए (मैंने उसे वह भी दिया)। (3) (1418)
मेरे हृदय में द्विपाद स्वामी, मनुष्यों के बैल के प्रति उस आनंद के कारण, मैंने विजय और पराजय से परे अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (4) (1419)
उस समय मैंने जो (अच्छा) कर्म किया था, उसके बाद से इकत्तीस युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला: यही बुद्ध-पूजा का फल है। (5) (1420)
तीसवें युग के दौरान (इसलिए) पाँच चक्र-घुमाने वाले सम्राट थे। (उन सभी का) नाम देवभूति था, जो सात रत्नों के 754 धारक थे। (6) (1421)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) (1422)
इस प्रकार पूज्य पुप्पचंगोतिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
पुप्पचंगोतिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश:
सकाचित्त, अद्धापुप्फी, और पच्चाभिगमना, परप्पसादी, भीसाद, सुचिन्ती, वत्थादायक, अंबदयी और सुमन तथा पुप्पचंगोटिक सहित कुल इकहत्तर श्लोक इन द्रष्टाओं द्वारा कहे गए थे
सकाचित्तनिया 755 अध्याय, सातवां,

753 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 754 रत्तंबरधारो, शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबर धारण करना", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 755 शाब्दिक अर्थ, "जाना", संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
70. पुप्पाकांकोटियाथेरा की जीवनी पर टिप्पणी
'अभितरूपम सीहम वा' से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा पुप्पचंकटिया की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने और पुण्य कर्मों का संचय करने के कारण, जो इस और उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति दिलाने में

सहायक थे, उनका पुनर्जन्म एक पारिवारिक घर में, सिख धर्मगुरु के समय में हुआ था। ज्ञानोदय प्राप्त करने पर, उन्हें अपार धन-संपत्ति प्राप्त हुई, गुरु के प्रति उनकी श्रद्धापूर्ण आस्था बढ़ी, उन्होंने उत्तम अनोजा पुष्पों से भरा एक संदूक तैयार किया, श्रद्धापूर्वक उस पुष्प-संदूक को भगवान को अर्पित किया, जिससे उनकी श्रद्धापूर्ण भक्ति का प्रदर्शन हुआ, और उन्होंने यह प्रार्थना की: "हे भगवान! इस अर्पण के फलस्वरूप, मैं जहाँ भी पुनर्जन्म लूँ, स्वर्णमय स्वरूप का होऊँ, पूजनीय बनूँ और निर्वाण प्राप्त करूँ।" उस पुण्य कर्म के कारण, उनका पुनर्जन्म देवताओं और मनुष्यों के बीच हुआ, वे सर्वत्र पूजनीय हुए और स्वर्णमय स्वरूप के व असाधारण रूप से सुंदर थे। बाद में, उनका पुनर्जन्म एक धनी परिवार में हुआ, जब इस बुद्ध का जन्म हुआ; बड़े होने पर उन्होंने गुरु के प्रति श्रद्धापूर्ण आस्था विकसित की, संसार का त्याग किया, विपश्यना (स्पष्ट अंतर्दृष्टि) प्राप्त की और कुछ ही समय बाद अरहत बन गए।

68-69. अरहतत्व की सिद्धि प्राप्त करने पर, उन्होंने अपने पूर्व कर्म को याद किया, प्रसन्न हुए और 'अभितरूपं सीहम वा' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सकें। वहाँ, सीहा (सिंह), वह दो पैरों वाले, चार पैरों वाले आदि प्राणियों को वश में कर लेता है और उनमें प्रवेश कर जाता है; इस प्रकार सीहा; अभितरूपो (निडर दिखता है), निर्भय स्वभाव का है; मैंने उस निर्भय सिंह के समान बैठे हुए को श्रद्धापूर्वक अर्पित किया; इस प्रकार, संबंध है। पवारं, उत्कृष्ट, सिखिम (महिमावान सिखि) गरुड़-राजा के समान, पंख वाले जानवरों या पक्षियों के प्रमुख, सबसे उत्कृष्ट बाघ-राजा के समान; विशिष्ट रूप से जन्मे, अयाल वाले सिंह के समान, तीनों लोकों के आश्रयदाता। वे कैसे बने? सिख धर्म, जो सामूहिक (खन्ध), हारा आदि शत्रुओं से अप्रभावित, व्यथा से मुक्त, और कुकर्मों से रहित था; यही संबंध है। मारणंगम (हत्यारों का सरदार), उन हत्यारों का सरदार, हत्या में श्रेष्ठ और प्रमुख, सभी प्रकार के कुकर्मों (किलेसा) को नष्ट करने वाला, यद्यपि इस उद्देश्य से मौन बुद्ध और बुद्ध के शिष्य भी विद्यमान हैं; यही अर्थ है। भिक्षुसमूहपुरक्खतम (भिक्षुओं के पुरोहितों में अग्रणी); सिख धर्म, जो भिक्षुओं के पुरोहितों से घिरा हुआ बैठा था; यही संबंध है।

70. चंकॉटकेत्हपेत्वाना, इसे ताबूत में रखकर, समोकिरिम (मैंने विधिवत बिखेर दिया), मैंने ताबूत में सबसे उत्तम अनोजा फूल भरकर सबसे उत्तम आत्मप्रबुद्ध बुद्ध सिख धर्म को श्रद्धापूर्वक अर्पित किया।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा पुप्पाकांकोटिया का
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 71. थेरा नागसामाला

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स
नागसमाला अध्याय, आठवां

---

71. नागसमाला

मैंने विश्व के रिश्तेदार सिख स्तूप पर श्रद्धा अर्पित की, (एक) तुरही के फूल756 के साथ जो महान राजमार्ग पर फेंक दिया गया था। (1) (1423)

उस समय मैंने जो (अच्छा) कर्म किया था, उसके बाद से इकत्तीस युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है: यही स्तूप-पूजा का फल है। (2) (1424)

पंद्रहवें युग (पूर्व) में भूमिया नामक क्षत्रिय महान बलवान चक्रपालक थे, जो सात रत्नों के स्वामी थे। (3) (1425)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) (1426)
इस प्रकार पूज्य नागसमाला थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
नागसमाला थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
8. नागसमाला पर अध्याय
71. थेरा नागसमला की जीवनी पर टीका।
Āpāṭalim aham puppham से शुरू होने वाले श्लोक आदरणीय थेरा नागसमालाक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने और इस-उस जन्म में पुनर्जन्मों के चक्रों से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों को संचित करने के बाद, उन्होंने सिख धर्म के समय में एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। बुद्धि प्राप्त करने पर, उन्होंने विधिवत गृहस्थ जीवन स्थापित किया, लेकिन उपयुक्त अच्छे लोगों की संगति में न रहकर, गुरु के जीवित रहते हुए उनके दर्शन, श्रवण या श्रद्धापूर्वक भेंट करने जैसा कोई कार्य नहीं किया, परन्तु उस प्रतापी के देहान्तरण पर, उन्होंने उस प्रतापी के भौतिक अवशेषों को संजोकर रखा, स्थापित मंदिर में अपने मन को पवित्र आस्था से भर दिया, श्रद्धापूर्वक उसे पाटलि पुष्प अर्पित किए, अपने आनंदमय मन को जागृत किया, अपने जीवनकाल तक जीवित रहे, वहीं उस अत्यंत सुखद पवित्र मन से प्राण त्यागे, तुषिता आदि छह दिव्य लोकों में आनंद का अनुभव किया, बाद में मनुष्यों के बीच मानवीय समृद्धि का अनुभव किया, और जब यह बुद्ध प्रकट हुए तो एक गृहस्थ घर में उनका पुनर्जन्म हुआ; बुद्धि की आयु प्राप्त करने पर, उनके माता-पिता ने उन्हें नागसमालो नाम दिया, क्योंकि उनका शरीर नाग वृक्ष के कोमल पत्तों जैसा था। ईश्वर में अत्यंत श्रद्धापूर्वक विश्वास रखते हुए, उन्होंने संसार का त्याग कर दिया और शीघ्र ही वे अरहत बन गए।
1. बाद में, अपने पूर्व कर्म को याद करके, वे प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'आपात्लिम अहम् पुप्पम' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, 'आपात्लिम, जहाँ तक पाटलि फूल है, अभिरोपेसिम (मैंने इसे स्पष्ट रूप से स्थापित किया) चारों ओर से, या आदरपूर्वक पाटलि फूल लेकर, मैंने इसे मंदिर में आदरपूर्वक अर्पित किया; यही अर्थ है। 'उज्जितम् सुमाहापथे (अच्छे राजमार्ग पर रखा) शहर के सभी निवासियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने और आदरपूर्वक भेंट करने के उद्देश्य से, शहर के मध्य में राजमार्ग, सड़क को ऊँचा और पक्का किया गया था, ईंटें बिछाने का काम पूरा हो गया था; यही अर्थ है। उपरोक्त विधि के साथ-साथ स्पष्ट अर्थ के कारण शेष भाग आसानी से समझ में आ जाता है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा नागसमाला का
समाप्त हो गया है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 71. थेरा नागसामाला

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स
नागसमाला अध्याय, आठवां

---

71. नागसमाला

मैंने विश्व के रिश्तेदार सिख स्तूप पर श्रद्धा अर्पित की, (एक) तुरही के फूल756 के साथ जो महान राजमार्ग पर फेंक दिया गया था। (1) (1423)
उस समय मैंने जो (अच्छा) कर्म किया था, उसके बाद से इकत्तीस युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है: यही स्तूप-पूजा का फल है। (2) (1424)
पंद्रहवें युग (पूर्व) में भूमिया नामक क्षत्रिय महान बलवान चक्रपालक थे, जो सात रत्नों के स्वामी थे। (3) (1425)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) (1426)
इस प्रकार पूज्य नागसमाला थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
नागसमाला थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
8. नागसमाला पर अध्याय
71. थेरा नागसमला की जीवनी पर टीका।
Āpāṭalim aham puppham से शुरू होने वाले श्लोक आदरणीय थेरा नागसमालाक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने और इस-उस जन्म में पुनर्जन्मों के चक्रों से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों को संचित करने के बाद, उन्होंने सिख धर्म के समय में एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया। बुद्धि प्राप्त करने पर, उन्होंने विधिवत गृहस्थ जीवन स्थापित किया, लेकिन उपयुक्त अच्छे लोगों की संगति में न रहकर, गुरु के जीवित रहते हुए उनके दर्शन, श्रवण या श्रद्धापूर्वक भेंट करने जैसा कोई कार्य नहीं किया, परन्तु उस प्रतापी के देहान्तरण पर, उन्होंने उस प्रतापी के भौतिक अवशेषों को संजोकर रखा, स्थापित मंदिर में अपने मन को पवित्र आस्था से भर दिया, श्रद्धापूर्वक उसे पाटलि पुष्प अर्पित किए, अपने आनंदमय मन को जागृत किया, अपने जीवनकाल तक जीवित रहे, वहीं उस अत्यंत सुखद पवित्र मन से प्राण त्यागे, तुषिता आदि छह दिव्य लोकों में आनंद का अनुभव किया, बाद में मनुष्यों के बीच मानवीय समृद्धि का अनुभव किया, और जब यह बुद्ध प्रकट हुए तो एक गृहस्थ घर में उनका पुनर्जन्म हुआ; बुद्धि की आयु प्राप्त करने पर, उनके माता-पिता ने उन्हें नागसमालो नाम दिया, क्योंकि उनका शरीर नाग वृक्ष के कोमल पत्तों जैसा था। ईश्वर में अत्यंत श्रद्धापूर्वक विश्वास रखते हुए, उन्होंने संसार का त्याग कर दिया और शीघ्र ही वे अरहत बन गए।
1. बाद में, अपने पूर्व कर्म को याद करके, वे प्रसन्न हुए और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए 'आपात्लिम अहम् पुप्पम' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। वहाँ, 'आपात्लिम, जहाँ तक पाटलि फूल है, अभिरोपेसिम (मैंने इसे स्पष्ट रूप से स्थापित किया) चारों ओर से, या आदरपूर्वक पाटलि फूल लेकर, मैंने इसे मंदिर में आदरपूर्वक अर्पित किया; यही अर्थ है। 'उज्जितम् सुमाहापथे (अच्छे राजमार्ग पर रखा) शहर के सभी निवासियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने और आदरपूर्वक भेंट करने के उद्देश्य से, शहर के मध्य में राजमार्ग, सड़क को ऊँचा और पक्का किया गया था, ईंटें बिछाने का काम पूरा हो गया था; यही अर्थ है। उपरोक्त विधि के साथ-साथ स्पष्ट अर्थ के कारण शेष भाग आसानी से समझ में आ जाता है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा नागसमाला का
समाप्त हो गया है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 72. थेरा पदसन्नका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

1कहावतों का अनुवाद: जे.एस.सी. वाल्टर्स
1.172. पदासञ्ञाका757
2टीका अनुवाद: यू लू पे विन
2.172. थेरा पदसन्नका की जीवनी पर टिप्पणी
कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

72. पदासञ्ञाका757

जैसे ही यह कदम रखा, मैंने सूर्य के रिश्तेदार तिस्सा का पैर देखा। मैंने प्रसन्न होकर उस पैर पर अपना मन प्रसन्न किया। (1) (1427)

---

756 {फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 757 {फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 758 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
759 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

उस बोध को प्राप्त करने के बाद से बानवे युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है: यही पाद-बोध का फल है। (2) (1428)
सातवें युग (पूर्व) में सुमेधा नामक क्षत्रिय एक महान बलवान चक्रचालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (3) (1429)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) (1430)
इस प्रकार पूज्य पदसञ्जक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
पादसंनाका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
72. थेरा पदसन्नका की जीवनी पर टिप्पणी।
अक्कन्तं च पदं दिस्वा से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेर पदसञ्जक की जीवनी का सार प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने पूर्व बुद्धों की भक्तिपूर्वक सेवा की, पुण्य कर्म संचित किए, जो प्रत्येक जन्म में पुनर्जन्म के चक्र (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले थे, और जहाँ कहीं भी उनका जन्म हुआ, वे प्रतापी तिस्सा के समय में एक धर्मपरायण भक्त के घर में पुनर्जन्म लिए; बुद्धि प्राप्त करने पर उन्होंने तीन रत्नों में श्रद्धा भाव धारण किया, प्रतापी द्वारा करुणावश दिखाए गए चरण-मंदिर (पादचेतियम) के दर्शन किए, अत्यंत धर्मपरायण और विरेखित हुए, और प्रचुर मात्रा में श्रद्धा अर्पित की, आदरपूर्वक भेंट चढ़ाई, इत्यादि। उसी उपजाऊ क्षेत्र में किए गए उसी पुण्य कर्म के कारण वे वहाँ से परास्त हो गए और स्वर्ग में पुनर्जन्म लिया। वहाँ दिव्य आनंद का अनुभव करने के बाद, उनका पुनर्जन्म मनुष्यों के बीच हुआ, उन्होंने हर प्रकार की मानवीय समृद्धि का अनुभव किया, और जब इस बुद्ध का पुनर्जन्म हुआ, तो वे एक समृद्ध परिवार में हुए; बड़े होने पर, उनमें धार्मिक आस्था उत्पन्न हुई, उन्होंने संसार का त्याग किया और कुछ ही समय बाद अरहत बन गए। वे अपने पूर्व में किए गए पुण्य कर्म के नाम पर पदसञ्जक थेरा के नाम से प्रसिद्ध हुए।
5. एक दिन, अपने पूर्व कर्म को याद करके, उन्होंने 'अक्कन्तं च पदम्दिस्वा' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सकें। वहाँ, अक्कन्तम् (पैर रखना), पैर रखना और दिखाया गया; सभी बुद्धों का मार्ग हमेशा चार उंगलियों से ऊपर ही होता था; परन्तु, उनकी दिव्य आस्था को जानते हुए, बुद्ध ने उन्हें "इसे देखो" कहकर चरण-मंदिर दिखाया; अतः, उन्होंने उस मंदिर में

दिव्य आस्था विकसित की और श्रद्धापूर्वक आदर किया, जैसे कि श्रद्धांजलि अर्पित करना, आदर भेंट करना इत्यादि; यही इसका अर्थ है। शेष का अर्थ सर्वत्र सरल है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा पदासञ्ञका का

समाप्त हो गया है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 73. थेरा संनाका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

73. संचका760

मैंने शिक्षक का फटा हुआ वस्त्र761 एक पेड़ के शीर्ष पर लटका हुआ देखा।762 तब मैंने अपने हाथ जोड़कर उस फटे हुए वस्त्र की पूजा की। (1) (1431)

उस समय मैंने जो (अच्छा) कर्म किया था, उसके बाद से बानवे युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ: बुद्ध को जानने का फल। (2) (1432)

चौथे युग में (उसके बाद) क्षत्रिय दुमासार763 महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो चारों दिशाओं में विजयी था। (3) (1433)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 760 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 761 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

762 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 763 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) (1434)

इस प्रकार पूज्य संञ्चका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सन्ञ्ञाका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टिप्पणी अनुवाद: यू लू पे विन

73. थेरा बुद्धसंञ्चक की जीवनी पर टीका।

दुमग्गे पमसुकुलिकम् से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा बुद्धसंञ्क की जीवनी का वर्णन करते हैं। इन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, इस या उस जन्म में पुनर्जन्म के चक्रों (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और प्रतापी तिस्सा के समय एक परिवार में पुनर्जन्म लिया; बड़े होने पर उनमें पवित्र आस्था का जन्म हुआ, उन्होंने एक वृक्ष की चोटी पर उलझे प्रतापी बुद्ध के फटे हुए वस्त्र (पमसुकुल) को देखा, अत्यंत श्रद्धा से भर गए, उसे अरहद्धज का प्रतीक माना और व्यक्तिगत श्रद्धा अर्पित की, जैसे कि उन्हें प्रणाम करना, आदरपूर्वक भेंट चढ़ाना आदि। उस पुण्य कर्म के कारण, उन्होंने दिव्य और मानवीय आनंद का अनुभव किया और इस बुद्ध के जन्म के समय एक समृद्ध परिवार में पुनर्जन्म लिया। उसके मन में अटूट आस्था जागृत हुई, फलस्वरूप उसने संसार का त्याग कर दिया और शीघ्र ही वह अरहत बन गया।

9. अरहतत्व प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपने पूर्व कर्मों को याद किया, प्रसन्न हुए और दुमग्गे पमसुकूलिकम् से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्मों को प्रकट कर सकें। वहाँ, वह काँपता और थरथराता है; इस प्रकार दुमा (वृक्ष); या वह दूध देता है, आकाश को भर देता है; इस प्रकार दुमा (वृक्ष); वृक्ष का सबसे ऊपरी भाग; इस प्रकार दुमग्गो (वृक्ष का शीर्ष); उस वृक्ष के शीर्ष पर। वह पृथ्वी के समान घृणित होकर अशोभनीय अवस्था की ओर बढ़ता है; इस प्रकार पमसुकूला (घृणित पृथ्वी); वही धूल का ढेर पमसुकूलिका (धूल के ढेर का उत्पाद) है। मैंने वृक्ष की चोटी पर उलझे हुए धूल के ढेर जैसे वस्त्र (पम्सुकुला) को देखकर अपने हाथ जोड़कर उस फटे-पुराने वस्त्र (पम्सुकुला) को प्रणाम किया; यही अर्थ है। तम तो केवल एक कण (निपाता) है; बाकी सब कुछ सर्वत्र अर्थहीन है।

जीवनी पर टिप्पणी

थेरा बुद्धसंज्ञा का

समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 74. थेरा भिसालुवदायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

74. भिसालुवदायक 764

वन के उपवन में प्रवेश करते हुए, मैं जंगल में रह रहा था। मैंने बुद्ध, विपस्सी, यज्ञ प्राप्तकर्ता को देखा। (1) (1435)

मैंने उसे खाने योग्य जड़ें दीं,765 और पानी दिया ताकि वह अपने हाथ धो सके। अपने सिर से उसके चरणों की पूजा करके, मैं उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (2) (1436)

मैंने उसे वे खाद्य जड़ें देने के बाद से इक्यावन युगों में कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है: यही अच्छे कर्मों का फल है। (3) (1437)

तीसरे युग में (उसके बाद) एक शक्तिशाली चक्र-घुमाने वाला राजा था, क्षत्रियन भीसम्मत, जो सात रत्नों का स्वामी था। (4) (1438)

चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) (1439)

इस प्रकार पूज्य भीशालुवदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

भिसालुवदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 764 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 765 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
766 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

छठा पाठ भाग।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
74. थेरा भीसालुवदायक की जीवनी पर टीका।
कानानम वनमोग्गयह से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा भिसालुवदायक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, पुण्य कर्मों का संचय करते हुए, जो इस या उस जन्म के बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति दिलाने में सहायक थे, वे हिमवंत के निकट एक वन में निवास कर रहे थे और वन के फलों और जड़ों का सेवन कर रहे थे, तभी उनकी मुलाकात एकांतवास के मार्ग से आए तेजस्वी विपस्सी से हुई। इसके बाद, वे श्रद्धावान हो गए और उन्होंने विपस्सी को पांच कमल की डंठलें (भिसालुव) भेंट कीं। उनके मन को प्रसन्नतापूर्वक पुण्यमय बनाने के लिए, तेजस्वी विपस्सी ने उन्हें एक ही अवस्था में खा लिया। उसी प्रसन्नतापूर्वक पुण्यमय मन से उनका प्राण त्यागा गया और तुषिता आदि दिव्य लोकों में समृद्धि का भोग करने के बाद, तथा बाद में मानवीय समृद्धि का भी अनुभव करने के बाद, उनका पुनर्जन्म एक गृहस्थी में हुआ, जब इस बुद्ध का जन्म हुआ। धनवान होने के बाद, उन्होंने अपना धन त्याग दिया, भिक्षु बन गए और कुछ ही समय बाद अरहत पद प्राप्त कर लिया।
13. इसके बाद, अपने पूर्व कर्म को याद करके, वह आनंद में लीन हो गया और उसने 'काननं वना'मोग्गयहा' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वह अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सके। इसका अर्थ तो पहले ही बताया जा चुका है। 'वसामि विपिने अहम्' (मैं एकांत में रहता हूँ), यानी मैं एकांत जीवन जीता हूँ; यही इसका संबंध है। शेष का अर्थ स्पष्ट है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा भिसालुवदायक का
समाप्त हो गया है।

छठे दौर की टीका
चाष्ट भानवर का पाठ समाप्त हो गया है
अंत तक।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 75. थेरा एकासनका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

2टीका अनुवाद: यू लू पे विन
2.175. थेरा एकासनका की जीवनी पर टीका
कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

75. एकासनका767

विपस्सी के प्रमुख अनुयायी (अरहंत) खंड थे, जिन्होंने संसार के यज्ञ किए थे; मैंने उन्हें एक भिक्षा दी थी। (1) (1440)
मेरे हृदय में द्विपद प्रभु, मनुष्यों के सांड के प्रति उस प्रसन्नता के कारण, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है: यही एक भिक्षापान का फल है। (2) (1441)
चालीस युग पूर्व वरुण नामक क्षत्रिय एक महान बलवान चक्रपालक थे, जो सात रत्नों के स्वामी थे। (3) (1442)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) (1443)
इस प्रकार पूज्य एकाञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
एकासन्चका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
75. थेरा एकासनका की जीवनी पर टीका
खाण्डो नामासिनामेना से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा एकाञ्कक की जीवनी का वर्णन करते हैं। उन्होंने भी पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करते हुए, इस और उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति दिलाने वाले पुण्य कर्मों का संचय किया और तेजस्वी विपस्सी के समय एक परिवार में पुनर्जन्म लिया; ज्ञान प्राप्त करने पर, उनका मन तीन रत्नों में श्रद्धा से भर गया, और वे उस गुरु के प्रमुख शिष्य खाण्ड से मिले, जो भिक्षा मांगते हुए भटक रहे थे, और उन्होंने श्रद्धापूर्वक उन्हें भिक्षा दी। उस कर्म के फलस्वरूप, उन्होंने दिव्य और मानवीय आनंद का अनुभव किया; सावत्थी में एक पारिवारिक गृह में उनका पुनर्जन्म हुआ; जब इस बुद्ध का जन्म हुआ, तो उन्होंने गुरु द्वारा दिए गए धर्म उपदेशों को सुना; जब उन्होंने उचित रूप से धार्मिक आस्था प्राप्त की, तो उन्होंने संसार का त्याग कर दिया और कुछ ही समय बाद अरहत बन गए। भिक्षा-भोजन के प्रति श्रद्धा धारण करने के कारण वे थेरा एकाञ्जक के नाम से प्रसिद्ध हुए।
18. इसके बाद, उन्हें अपने पूर्व कर्म याद आए; वे प्रसन्न हुए और उन्होंने 'खण्डो नामासिनामेना' से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सकें। वहाँ, 'खण्डो (टूट गया), क्योंकि उन्होंने उस थेरा, मुख्य शिष्य के दुराचार (किलेसा) को तोड़ दिया था।' इसके बाद, सब कुछ सरल है।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा एकासनका का
समाप्त हो गया है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.2 >> 76. थेरा तिनसंथरादायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

76. तिणासंथारदायक 768

हिमालयी क्षेत्र में जीवन से भरपूर एक विशाल झील थी। यह कमलों से ढकी हुई थी और विभिन्न प्रकार के पक्षियों का निवास स्थान थी। (1) (1444)
मैं उस क्षेत्र में रह रहा था, उस (झील) में स्नान और पानी पी रहा था। मैंने भिक्षुओं में सबसे श्रेष्ठ को आकाश में विचरण करते देखा। (2) (1445)

कोष्ठकों में दिए गए 767 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करता है। कोष्ठकों में दिए गए 768 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करता है।

मेरे मन की बात जानकर, जगत में अद्वितीय गुरु आकाश से अवतरित होकर उस समय वहाँ भूमि पर खड़े थे। (3) (1446)
मैंने सींग से कुछ घास काटकर उसे बैठने के लिए चटाई दी। भगवान वहाँ बैठ गए, तिस्सा, जो (संपूर्ण) जगत के मार्गदर्शक हैं।769 (4) (1447)
अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए, मैंने विश्व नेता की पूजा की। 770 पर झुककर मैं उस महान ऋषि के बारे में सोचते हुए वहाँ से चला गया। (5) (1448)
मेरे हृदय में उस आनंद के कारण, मेरा पुनर्जन्म निम्माना में हुआ।771 मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता: यही एक वरदान का फल है। (6) (1449)
मैं द्वितीय युग (पूर्व) में राजा772 मिगासममाता773 था, एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (7) (1450)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) (1451)
इस प्रकार पूज्य तिनसंथारका774 थेरा ने ये श्लोक कहे।
तिणासंथारदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

769 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दश:, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
770 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 771 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है। 772 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित 773 निज्झायामानो, शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ 774 सप्पी, शाब्दिक अर्थ, घी, स्पष्ट मक्खन (गी तेल)

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
76. थेरा तिनसंथारदायक की जीवनी पर टीका।
हिमवन्तस्साविदुरे से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा तिनसंथारदायक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों की समर्पित सेवा करने और इस-उस जन्म में बार-बार पुनर्जन्म (वत्त) के चक्र से मुक्ति पाने के लिए पुण्य कर्म संचित करने के कारण, वे प्रतापी तिस्सा के समय एक गृहस्थ परिवार में पुनर्जन्म हुए। क्योंकि वे बुद्ध के प्रकट होने से पहले ही उत्पन्न हुए थे, इसलिए उन्होंने गृहस्थ जीवन त्याग

दिया, संसार का त्याग कर तपस्वी बन गए और हिमवन्त के पास एक झील पर निर्भर रहकर उचित जीवन व्यतीत किया। उस अवसर पर, प्रतापी तिस्सा ने उन पर दया करते हुए आकाश में प्रस्थान किया; तब उस तपस्वी ने आकाश से अवतरित होकर उस तेजस्वी बुद्ध को खड़े देखा, तो वह अत्यंत श्रद्धा से भर उठा, घास काटकर उस पर बैठने का निवेदन किया, पाँच प्रकार की आसन धारण करके (पंचपतिच्छिता) उन्हें आदरपूर्वक प्रणाम किया, फिर एकांत में लौट आया (पटिकुतितो) और प्रस्थान किया। वह अपने जीवनकाल तक जीवित रहा, फिर वहाँ से परलोक चला गया, देवताओं और मनुष्यों के बीच पुनर्जन्मों का चक्र पूरा किया, अनेक प्रकार की समृद्धि का आनंद लिया, और जब यह बुद्ध प्रकट हुए, तब वह एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया; वयस्क होने पर, वह गुरु के प्रति परम श्रद्धा से परिपूर्ण हो गया, संसार का त्याग कर दिया और शीघ्र ही अरहत बन गया।

22. इसके बाद, उन्हें अपने पूर्व कर्म की याद आई, वे प्रसन्न हुए और उन्होंने हिमवंतससाविदुरे से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला, ताकि वे अपने पूर्व कर्म को प्रकट कर सकें। इसका अर्थ यह है कि जैसा कि ऊपर कहा गया है, महाजातस्सरो (महान प्राकृतिक झील) यहाँ है, लेकिन यहाँ सर (झील) है, नदी, गुफा आदि सर (झील) हैं; वह झील भी विशाल है, और क्योंकि वह स्वयं ही उत्पन्न हुई है और क्योंकि वह झील भी है, इसलिए महाजातस्सरो (महान प्राकृतिक झील) कहलाती है। क्योंकि यह अनोटत्ता, चद्दंता आदि जैसी झीलों की तरह प्रसिद्ध नाम नहीं है, इसलिए इसे "महाजातस्सरो" (बड़ी प्राकृतिक झील) कहा जाता है; अतः इसे अवश्य देखना चाहिए। शतपत्तेहि संचन्नो (सौ पंखुड़ियों वाले कमलों से भरा हुआ), क्योंकि प्रत्येक फूल में सौ पंखुड़ियाँ होती हैं, इसलिए इसे शतपत्त कहा जाता है; प्रत्येक सौ पंखुड़ियों वाले सफेद पद्म कमलों से भरा हुआ, फूलों का जंगल बन जाता है; यही इसका अर्थ है। नानासकुणमालयो, विभिन्न प्रजातियों के पक्षियों का बसेरा, जहाँ हंस, मुर्गे, मुर्गियाँ, जलपक्षी, तीतर आदि जैसे कई पक्षी एक साथ कूकते हैं, एक साथ आवाज करते हैं, इसलिए इसे सकुण कहा जाता है; यह वह विश्राम स्थल है जो पंख वाले पक्षियों का आश्रय स्थल बन गया है और इसी कारण इसे यह नाम मिला है। सकुणा (पक्षी); यही इसका अर्थ है। बाकी का अर्थ तो स्पष्ट ही है।

जीवनी पर टिप्पणी
थेरा तिनसंथराडायक का
समाप्त हो गया है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान3.2 >> 77. थेरा सुचिदायका

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

कहावतों का अनुवाद: जे.एस. वाल्टर्स

---

77. सूचिदायक 775

तीस हजार युग पहले (पूर्व में) विश्व-नेता, बत्तीस महान चिह्नों को धारण करने वाले संबुद्ध, 776 (बुद्ध) का नाम सुमेधा था। (1) (1452)

मैंने स्वर्ण रंग वाले, द्विपाद भगवान, तटस्थ बुद्ध को पाँच सुइयाँ दीं, ताकि (बुद्ध) अपने वस्त्र सिल सकें। (2) (1453)

उस सुई के उपहार के कारण ही, मेरे भीतर चतुर अर्थों और अंतर्दृष्टियों से भरपूर ज्ञान उत्पन्न हुआ, जो तीक्ष्ण, त्वरित और सहज था। (3) (1454)

मैंने अपने सारे दोष जला दिए हैं; समस्त अस्तित्व अब नष्ट हो चुका है। मैं परम बुद्ध की शिक्षाओं में अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ। (4) (1456)777

उस समय दिपादाधिपति नाम के चार राजा थे, जो चक्र-चालक थे, महान शक्ति रखते थे और सात रत्नों के स्वामी थे। (5) (1455)
चारों विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति, छह विशेष ज्ञान जिनमें मैंने महारत हासिल की है, (मैंने) वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) (1457)
इस प्रकार पूज्य सूचिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
सूचिदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 775 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है। 776 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें DPPN II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
777 कुम्मासा, संस्कृत: कुलमाष, जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक, "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु, "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है। 778 रत्तंबरधारो, शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला", बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

टीका अनुवाद: यू लू पे विन
77. सूचिदायक थेरा की जीवनी पर टीका।
तिमसकप्पसहस्सम्ही से शुरू होने वाले श्लोक पूज्य थेरा सूचिदायक की जीवनी का वर्णन करते हैं। पूर्व बुद्धों, श्रेष्ठ विजेताओं की समर्पित सेवा करने और पुण्य कर्मों का संचय करने के कारण, जो इस और उस जन्म में बार-बार होने वाले पुनर्जन्मों (वत्त) से मुक्ति दिलाने में सहायक थे, उन्होंने भी तेजस्वी सुमेधा के समय एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया; समय के साथ बड़े होकर उन्होंने तेजस्वी सुमेधा को वस्त्र सिलने के कार्य के लिए पाँच सुइयाँ भेंट कीं। उस पुण्य कर्म के फल के कारण, उन्होंने देवताओं और मनुष्यों के बीच पुण्य का फल भोगा, बार-बार जन्म-मृत्यु के चक्र में विचरण किया, जिस भी जन्म में वे प्रकट हुए, तीक्ष्ण ज्ञान से संपन्न होकर प्रसिद्ध हुए, एक पारिवारिक घर में पुनर्जन्म लिया, जब यह बुद्ध प्रकट हुए, उचित समय पर बड़े हुए, गुरु में प्रसन्नतापूर्ण आस्था रखी, भिक्षु बने और अपने तीक्ष्ण ज्ञान के कारण अत्यंत सूक्ष्म ज्ञान के साथ भी अर्हतत्व प्राप्त किया।
30. इसके बाद, अपने पुण्य कर्म पर गहन चिंतन करते हुए, वह उसे देखने आया, प्रसन्न हुआ और अपने पूर्व कर्म को प्रकट करने के लिए तिमसकप्पसहस्समिहि से शुरू होने वाला एक श्लोक बोला। यद्यपि यहाँ बीच के सभी शब्द आसानी से समझ में आ जाते हैं।
31. पंचसुचिमय दिन्ना (मैंने पाँच सुइयाँ अर्पित की हैं); यहाँ, यह भेदती है (सुचति), एक छोटा छेद बनाती है, प्रवेश करती है; इस प्रकार, सुचि (सुई); मैंने पाँच सुइयाँ अर्पित की हैं; यही अर्थ है। शेष तो आसानी से समझ में आ जाएगा।
जीवनी पर टिप्पणी
थेरा सूचिदायक का
समाप्त हो गया है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.3 थेरपदाना

<<<< पिछला । अगला >>>>

स्रोत: जेएस वाल्टर्स
नोट: जैसा है वैसा ही प्रस्तुत किया गया है

विषय-सूची

---

78. पाटलिपुप्पिया779

उस समय मैं एक धनी व्यक्ति का पुत्र था, नाज़ुक, आराम से रहता था। अपनी गोद में एक तुरही का फूल 780 रखकर मैं उसे उसके पास ले गया,
स्वर्ण रंग वाले, संबुद्ध, बाज़ार से गुज़रते हुए, एक महान व्यक्ति के चिह्न धारण किए हुए,781
सोने से बनी माला की तरह। (1-2) [1458-1459]

प्रसन्न होकर, [और] प्रसन्न हृदय से, मैंने फूल से विश्व-ज्ञाता, भगवान तिस्सा की पूजा की,
मनुष्यों के ईश्वर की पूजा करने के बाद। (3) [1460]

तब से बानवे युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
वह पुष्प- पूजा का फल है । (4) [1461]

तिरसठ युग पहले
अभिसममाता नाम से जाने जाने वाले [राजा]
महान शक्ति वाले एक चक्र-चालक थे, जो सात रत्नों के स्वामी थे। (5) [1462]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1463]

इस प्रकार पूज्य पाटलिपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

पाटलिपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 779 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है

780 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

781 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज के रूप में (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

---

79. थितांजलिया782

अतीत में, एक वन उपवन में,
मैं एक ऐसा व्यक्ति था जो हिरण का शिकार करता था
वहाँ मैंने संबुद्ध तिस्सा को देखा
एक महान व्यक्ति के लक्षण धारण किए हुए ।783 (1) [1464]

उनके लिए हाथ जोड़ते हुए,784
उस मोहल्ले में बैठे हुए
वहाँ रखी हुई पत्तों की चटाई पर,
फिर मैं पूर्व की ओर मुख करके चल पड़ा। (2) [1465]

तभी एक गिरी हुई बिजली मेरे सिर के ऊपर आकर गिरी। फिर से, जब मैं वहाँ मर रहा था, 785
मैंने अपने दोनों हाथों को एक साथ दबाया। (3) [1466]

तब से बानवे युगों में
मैंने [तब] अपने हाथों को एक साथ दबाया, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह मेरे हाथों को दबाने का फल है। (4) [1467]

चौवन युग [पहले]
मिगाकेतु 786 नामक [सम्राट]
वह एक महान शक्ति वाला पहिया घुमाने वाला था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (5) [1468]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1469]

इस प्रकार पूज्य थितांजलिय थेरा ने ये श्लोक कहे।

थितांजलिय थेरा की कथा समाप्त होती है

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 782 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

783 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

784 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज के रूप में (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

785 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

786 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

---

80. तिनिपादुमिया787

विजेता पदुमुत्तरा,
वह जिसने सब कुछ पार कर लिया, वह शांत, शांत दल के साथ, विजेता, शहर से चला गया। (1) [1470]

मैं उस समय हंसवती शहर में माला बनाने का काम करता था।
मैंने तीन फूल उठाए
जो वहाँ के सबसे प्रमुख फूल थे। (2) [1471]

मैंने बाज़ार के अंदर सड़क पर बुद्ध, निर्मल, को देखा, [और] संबुद्ध को देखकर
मैंने उस समय इस प्रकार सोचा: (3) [1472]

"ये फूल मेरे किस काम के हैं?
[भले ही] किसी राजा को उपहार में दिया जाए?
मुझे एक गाँव मिल सकता है या
[शायद] एक हज़ार गाँव के खेत। (4) [1473]

जगत के स्वामी की पूजा करना
अनियंत्रित-संरक्षक,788 बुद्धिमान, जो सभी प्राणियों को आनंद प्रदान करता है,789
मुझे असीम धन प्राप्त होगा।" (5) [1474]

इस तरह विचार करने के बाद
मैंने अपने दिल को खुशी दी। तीन लाल रंग के लोगों को उठाते हुए
मैंने [उन फूलों को] हवा में उछाला। (6) [1475]

जिस ऊंचाई तक मैंने उन्हें फेंका था, वे आकाश में अच्छी तरह से फैल गए थे और बुद्ध के सिर के ऊपर लटके हुए थे।
ऊपर की ओर इशारा करते हुए डंठल, [और] नीचे की ओर फूल। (7) [1476]

लोगों ने [उन्हें वहाँ] जो कुछ भी देखा, [फिर] उन्हें [हवा में] उछाला रखा

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 787 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

788 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

789 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज के रूप में (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

[और] आकाश में छोटे देवता,
“उत्कृष्ट!” की अपनी चीखें छोड़ दीं (8) [1477]

“सर्वोत्तम बुद्ध के कारण संसार में एक अद्‌भुत घटना घटित हुई है; हम सब अब उनकी शिक्षा सुनेंगे।”
[इन लाल] फूलों के कारण।” (9) [1478]

पद्ममुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, यज्ञ प्राप्तकर्ता,
शिक्षक, सड़क पर खड़े होकर,
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कहीं: (10) [1479]

मैं उनके बारे में विस्तार से बताऊंगा जिन्होंने लाल कमलों से
अभी-अभी यह बुद्ध- पूजा की ;790
आप सब मेरी बात सुनो: (11) [1480]

वह देवताओं के संसार में आनंदित होगा। तीस हज़ार युगों तक। तीस युगों तक देवताओं का राजा
वह दैवीय शासन करेगा। (12) [1481]

उसके पास हमेशा एक महल होगा जिसे महावित्तारिकम कहा जाता है,791
तीन सौ लीग ऊँचाई में उठाया गया;
एक सौ पचास [लीग] चौड़ा। (13) [1482]

और इसमें अच्छी तरह से बने दरवाजे होंगे
[पूरी तरह से] चालीस लाख [संख्या में]। इसमें [कई] गैबल वाली कोठरियाँ होंगी
[जिसमें] बड़े [और] उत्तम बिस्तर हैं। (14) [1483]

एक खरब स्वर्गीय अप्सराएँ
नृत्य और गायन में भी कुशल [और] संगीत कलाओं में अच्छी तरह से प्रशिक्षित
[हमेशा] उसे वहाँ घेर लेंगे। (15) [1484]

महिलाओं की टोलियों से भरे इस तरह के महल में फूलों की बारिश होगी
हमेशा, दिव्य लाल रंग के। (16) [1485] पहियों के आकार के लाल फूल792

790 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
791 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
792 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

वे हर समय वहीं लटके रहते हैं
दीवार की कीलों पर [और] कपड़ों के हुक पर भी,
दरवाज़े के बोल्ट पर 793 साथ ही मेहराबों पर भी। (17) [1486]

हवेली के अंदर फैलते हुए और फिर पंखुड़ियों से बने फूलों के कंबल में लिपटते हुए794
वे यहाँ हर समय आराम से सोएंगे795। (18) [1487]

वे शुद्ध [फूल], लाल रंग के,
अपनी दिव्य सुगंध से हर तरफ सौ मील तक महकेंगे
उस [स्वर्गीय] निवास का। (19) [1488]

वह पाँच सौ बार होगा
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है, [और उसके पास] गिनती से अनगिनत स्थानीय शासन होगा। (20) [1489]

दोहरे आनंद का अनुभव करने के बाद, अवैधता से अप्रभावित,
उस आनंद के समापन पर
निर्वाण उसे दिखाई देगा" (21) [1490]

बुद्ध को देखना मेरे लिए अच्छा था;
मेरा व्यवसाय797 अच्छे से उपयोग में आया। तीन फूलों से पूजा करना
तब मुझे तीन प्रकार का आनंद प्राप्त हुआ। (22) [1491]

आज मैंने शिक्षा प्राप्त कर ली है और मैं अब पूरी तरह से मुक्त हूँ; खिले हुए लाल फूल ले जाए जा रहे हैं
मेरे [अपने] सिर के ऊपर। (23) [1492]

जब शिक्षक पद्ममुत्तरा
मेरे कर्म के बारे में बात कर रहे थे [तब,] धम्म-प्रवेश हुआ
सात हजार जीवों के लिए। (24) [1493]

उस बुद्ध- पूजा के बाद से एक लाख युगों में ,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह तीन कमलों का फल है। (25) [1494]

---

793 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
794 शाब्दिक रूप से, "गया"
795 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ पाठ्येलेसी पढ़ना
796 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
797 शाब्दिक अर्थ, "गुणी"

मैंने अपने दोषों को जला दिया है;
समस्त अस्तित्व नष्ट हो गया है।

सभी दोष समाप्त हो गए हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (26) [1495]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (27) [1496]

इस प्रकार पूज्य तिणिपदुमिया थेरा ने ये श्लोक कहे

तिणिपदुमिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

समाला और पदसञ्ञी सुसञ्ञा, आलुवदायक, एकसञ्ञी, तिणिदद, सूची, पाटलिपुप्पिया, ठितंजली, तिपदुमी: पचहत्तर श्लोक

नागसमाला अध्याय, आठवाँ।

तिमिरपुप्पिया अध्याय, सातवाँ

---

81. तिमिरापुप्पिया798

चंदभागा नदी के किनारे
मैं धारा के साथ-साथ जा रहा था
[तभी] मैंने भिक्षु को वहाँ बैठे देखा,
वह प्रतिभाशाली, वह अविचलित। (1) [1497]

उसके बारे में मेरे दिल को प्रसन्न करके
मैंने उस समय इस तरह सोचा:
"यह पार किया हुआ व्यक्ति [दूसरों] को पार करवाएगा;
यह वश में किया हुआ व्यक्ति [दूसरों को भी] वश में करेगा। (2) [1498]

सांत्वना पाने वाला व्यक्ति दिलासा देगा;
शांत व्यक्ति [दूसरों] को शांत करेगा;

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 798 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

मुक्त व्यक्ति [दूसरों को] मुक्त करेगा;
बुझा हुआ व्यक्ति [दूसरों को भी] बुझाएगा। (3) [1499]

इस तरह विचार करने के बाद मैंने एक गहरे रंग का फूल उठाया और उसे सिर पर रख दिया।
सिद्धार्थ ऋषि के। (4) [1500]

अपने दोनों हाथों को एक साथ दबाकर [उनकी] परिक्रमा करते हुए, गुरु के चरणों की पूजा की
मैं [वहाँ से] पश्चिम की ओर चला गया। (5) [1501]

मेरी यात्रा के कुछ ही समय बाद
एक शेर [तब] मेरा पीछा कर रहा था। एक खाई के किनारे चलते हुए,
वहीं मैं गिर गया [और मेरी मृत्यु हो गई]। (6) [1502]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने वह फूल [उसे] भेंट किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (7) [1503]

इसके बाद छप्पनवें युग में
सात [पुरुष] थे, जो बहुत प्रसिद्ध, महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा थे, जो सात रत्नों के स्वामी थे। (8) [1504]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1505]

इस प्रकार पूज्य तिमिरपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

तिमिरपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

82. गतासञ्ञक

मैं केवल सात वर्ष की आयु में बेघर हो गया था

---

799 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
800 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज के रूप में (PSI:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को “भरने” के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

एक अत्यंत स्पष्ट मन से
मैंने [तब] गुरु के चरणों की पूजा की। (1) [1506]

[फिर] मैंने सात नागलिकी फूल हवा में उछाले
तिस्सा बुद्ध के लिए,
गुणों के असीम सागर। (2) [1507]

प्रसन्न मन से, मैंने पूजा की
जिस रास्ते पर वेल-गॉन-वन चला था, तब मैंने अपने हाथों को एक साथ दबाया
[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस करते हुए। (3) [1508]

तब से बानवे युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [1509]

उसके बाद आठवें युग में
तीन थे [जिनका नाम] अग्गिसीखा था। 801
[वे] महान शक्ति वाले चक्र-चालक थे, सात रत्नों के स्वामी थे। (5) [1510]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1511]

इस प्रकार पूज्य गतसञ्ञक थेरा ने ये श्लोक कहे।

गतसञ्ञक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

83. निपन्नञ्जलिका802

एक पेड़ की तलहटी में बैठा
मैं बहुत बीमार हो गया। वन में मैंने प्राप्त किया
एक अत्यंत दयनीय अवस्था। (1) [1512]

मुझ पर दया करके,

शिक्षक, तिस्सा, मेरे पास आए। जब मैं वहाँ मर रहा था, तब
मैंने अपने दोनों हाथ अपने सिर पर रख लिए। (2) [1513]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 801 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 802 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है। इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से, प्राणियों में परम, संबुद्ध की पूजा करने के बाद,
मैं वहीं पर मर गया। (3) [1514]

तब से बानवे युगों में
मैंने सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, [उनकी] पूजा की, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह पूजा का फल है। (4) [1515]

उसके बाद पाँचवें युग में
पाँच महाशिखा थे, 805 चक्र घुमाने वाले राजा, जो सात रत्नों के स्वामी और महान शक्ति वाले थे। (5) [1516]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1517]

इस प्रकार पूज्य निपन्नंजलिका थेरा ने ये श्लोक कहे

निपन्नांजलिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

84. अधोपुप्पिया806

सिख धर्म का प्रमुख अनुयायी
वह भिक्षु अभिभू के नाम से जाना जाता था,
विशाल शक्तियों वाला, एक त्रिगुण ज्ञाता, वह हिमालय गया। (1) [1518]

उस समय मैं भी हिमालय में एक ऋषि के रूप में रह रहा था,
असीम जादुई शक्ति के स्वामी,
एक रमणीय आश्रम में [वहाँ]। (2) [1519]

---

803 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है, जैसा कि 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

804 कुम्मासा , संस्कृत   कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , “जौ से बना भोजन;” BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , “नरम उबला हुआ भिक्षा”), या बिना खमीर की रोटी या भोज के रूप में (PSI: सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को “भरने” के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

805 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 806 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

आकाश में पक्षी की तरह उड़ते हुए,
मुझे पहाड़ की ओर खिंचाव महसूस हुआ। नीचे कुछ फूल तोड़ते हुए
मैं [तब] पहाड़ पर आया। (3) [1520]

सात फूल लेकर मैंने उन्हें [अभिभू के] सिर के ऊपर रखा
जब नायक [तब] आगे की ओर देखता है 807
मैं पूर्व की ओर मुख करके चला गया। (4) [1521]

अपने आश्रम पहुँचकर
मैं वहाँ अपने निवास स्थान पर गया। तपस्वियों का भोजन लेकर
मैं उस पहाड़ की ओर लौट आया।808 (5) [1522]

एक भयानक रूप वाला अजगर,
[और] बहुत ताकतवर, ने मुझ पर हमला किया [तब]। अपने पिछले कर्म को याद करते हुए
मैं मौके पर ही मर गया। (6) [1523]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने [उसे] वे फूल अर्पित किए, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
वह पुष्प- पूजा का फल है । (7) [1524]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [1525]

इस प्रकार पूज्य अधोपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

अधोपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

85. रंसिसाञ्चिका809

हिमालय पर्वत पर
मैं पहले निवास कर रहा था।

---

807 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है, जैसा कि 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

808 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज के रूप में (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 809 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है। इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

हिरण के चमड़े के बाहरी वस्त्र पहने हुए 810
मैं उस पर्वत पर निवास करता था [तब]। (1) [1526]

मैंने स्वर्ण संबुद्ध को देखा जो जंगल में चला गया था
वह सौ किरणों वाले सूर्य के समान था, खिले हुए राजसी साल के वृक्ष के समान। (2) [1527]

महान ऋषि विपस्सी की किरणों में [मेरा] हृदय प्रसन्न हो गया,
हाथों को जोड़कर, उकड़ू बैठकर,
मैंने सिर झुकाकर उनकी पूजा की। (3) [1528]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह किरणों को समझने का फल है। (4) [1529]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1530]

इस प्रकार पूज्य रंसिसाञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे

रंसिसञ्ञक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

86. रंसिसञ्ञक (2)

हिमालय पर्वत पर
मैं छाल के वस्त्र पहने [तपस्वी] था। मार्ग पर चढ़कर
मैं पूर्व की ओर मुख करके बैठा था। (1) [1531]

फिर अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति, फुस्सा, परिवर्तित अवस्थाओं के प्रेमी को देखकर,
पर्वत पर, मैंने अपने हाथ दबाए
[और] बुद्ध की किरणों में [अपने] हृदय को प्रसन्न किया। (2) [1532]

तब से बानवे युगों में
मुझे वह बोध [वहाँ] प्राप्त हुआ, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह किरणों को समझने का फल है। (3) [1533]

---

810 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है, जैसा कि 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [1534]

इस प्रकार पूज्य रंसिसाञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे

रंसिसञ्जक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

87. फलदायक 811

हिमालय पर्वत पर,
खुरदरे हिरण के चमड़े का चोला पहने, हाथ में फल लिए, मैंने फुस्सा को देखा,
सर्वश्रेष्ठ विक्टर, [और] उसे फल दिया। (1) [1535]

वह फल जो मैंने अत्यंत स्पष्ट मन से [उसे] दिया था, वह मेरे लिए फल बनकर उत्पन्न हुआ।
अस्तित्व में पुनर्जन्म। (2) [1536]

तब से बानवे युगों में
मैंने वह फल [उसे तब दिया था], मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (3) [1537]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [1538]

इस प्रकार पूज्य फलाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे

फलाडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

88. सद्दसञ्ञक 812

हिमालय पर्वत पर,
पत्तों की चटाई पर रहते हुए, मैंने ध्वनि से अपने हृदय को प्रसन्न किया
फुस्सा द्वारा धम्म का प्रचार । (1) [1539]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 811 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 812 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

बानवे युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही अच्छे कर्मों का फल है। (2) [1540]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [1541]

इस प्रकार पूज्य सद्दसाञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे।

सद्दसाञ्चक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

89. बोधिसञ्ञक 813

भगवान विपस्सी के लिए एक महान बोधि उत्सव था
मैंने उस उत्सव में भाग लिया,
एक ऐसा व्यक्ति होने के नाते जिसने त्याग कर दिया था। (1) [1542]

फूलों से भीगा हुआ पानी लेकर मैंने उसे बोधि वृक्ष पर डाला। "मुक्त होकर, वह हम सभी को मुक्त करेगा;
बाहर चला गया, वह हमें भी बाहर निकाल देगा।" (2) [1543]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने उस बोधि वृक्ष को सींचा था, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
बोधि-बोध का फल। (3) [1544]

जब तैंतीस युग बीत चुके थे, तब आठ चक्र-घुमाने वाले राजा थे, जो मनुष्यों के स्वामी थे और [तब] उदकासेचन के नाम से जाने जाते थे।814 (4) [1545]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1546]

इस प्रकार पूज्य बोधिसांका थेरा ने ये श्लोक कहे

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 813 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
814 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

बोधिसाञ्चक थेरा की कथा समाप्त हो गई है

---

90. पद्मपुप्पिया815

मैं एक कमल के जंगल में रहता था
[उस समय] कमल के फूल खाता था। मैंने सम्बुद्ध फुस्सा को देखा,
बत्तीस महान चिह्न धारण करना.816 (1) [1547]

एक कमल का फूल उठाना
मैंने इसे हवा में उछाल दिया
यह सुखद कर्म करने के बाद
मैं बेघर हो गया। (2) [1548]

अपने शरीर और मन पर आत्म-संयम रखते हुए,
और बुरे वाणी-कृत्यों से परहेज करते हुए
मैंने अपनी आजीविका को शुद्ध किया। (3) [1549]

तब से बानवे युगों में
मैंने वह फूल [उसे] भेंट किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [1550]

पृथ्वी के अठारह स्वामी थे
[सभी] पद्माभास के नाम से जाने जाते थे,817
और अठारहवें युग में [इसलिए]
ऐसे अड़तालीस [सम्राट] थे। (5) [1551]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1552]

इस प्रकार पूज्य पद्मपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

पद्मपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त होती है

सारांश:

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 815 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है
816 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
817 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

तिमिरा, नंगलीपुप्फी, निपन्नांजलिका, अधा,
दो रंसिसञ्ञी, फलदा, सद्दसञ्ञी और सेवक, पद्मपुप्फी और श्लोक
छप्पन का विवरण [यहाँ] दिया गया है।

तिमिरपुप्पिया अध्याय, नौवाँ।

सुधा अध्याय, दसवाँ

91. सुधापिंडिया818

कोई भी अच्छे कर्मों की गणना नहीं कर सकता —
यहाँ तक कि, "इसके लिए इतना है" — जो पूजा के योग्य लोगों के लिए पूजा करता है
जैसे बुद्ध और उनके अनुयायी, जिन्होंने शोक के आँसुओं को पार कर लिया है और पुनर्जन्म के बंधनों से परे चले गए हैं,819
निर्वाण प्राप्त करना, किसी चीज से भयभीत न होना। (1-2) [1553-1554]

जो यहाँ चारों महाद्वीपों पर आधिपत्य स्थापित करना चाहता है
एक सोलहवें भाग
जो ऐसी पूजा करता है । (3) [1555]

जब सिद्धार्थ सर्वोच्च व्यक्ति का मंदिर टूट गया था,
मैंने प्लास्टर के गोले दान किए
एक ऐसे मन के साथ जो बहुत स्पष्ट था। (4) [1556]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही नवीनीकरण का फल है। (5) [1557]

तीसवें युग पूर्व
तेरह चक्र-घुमाने वाले राजा थे,

{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 818 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं
819 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

[सभी] पटिसंखार के नाम से जाने जाते हैं, 820
सात रत्नों के धारक। (6) [1558]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [1559]

इस प्रकार पूज्य सुधापिंडिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

सुधापिंडिया थेरा की कथा समाप्त होती है

---

92. सुसिंटिटा821

प्रसन्न होकर, और प्रसन्न हृदय से, मैंने जगत के स्वामी तिस्सा को एक नई शुभ कुर्सी822 भेंट की।
बुद्ध, सूर्य के रिश्तेदार। (1) [1560]

अड़तीस युग पहले
मैं राजा था, महारुचि
मेरे लिए बहुत धन-दौलत थी
और बैठने के लिए बहुत से पलंग थे। (2) [1561]

बुद्ध को एक बहुत ही स्पष्ट मन से कुर्सी देकर, मैंने अपने कर्मों का अनुभव किया
पहले मैंने अच्छा किया था। (3) [1562]

तब से बानवे युगों में
मैंने [उसे] वह कुर्सी तब भेंट की थी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह कुर्सी उपहार का फल है। (4) [1563]

अड़तीस युग पहले
तीन पहिया घुमाने वाले सम्राट थे: रुसी और उपरुसी भी,
[और] महारुचि तीसरे थे। (5) [1564]

---

820 कुम्मासा , संस्कृत कुलमासा , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के केक या जंकेट के रूप में (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 821 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।
822 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1565]

इस प्रकार पूज्य सुचिंतिता थेरा ने ये श्लोक कहे

सुसिंतिता थेरा की कथा समाप्त हो गई है

93. अड्ढचेलाका823

मैंने कपड़े का आधा टुकड़ा दिया
तब भगवान तिस्सा को। मैं बहुत दुखी था,
[और] एक भयानक गंध से ग्रस्त। (1) [1566]

उस आधे कपड़े को देते हुए मैं एक [पूरे] युग के लिए स्वर्ग में रोमांचित हुआ। शेष युगों के दौरान
मैंने वह अच्छा कर्म पूरा किया।824 (2) [1567]

तब से बानवे युगों में
मैंने उस समय वह कपड़ा दान किया था, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है:
यह वस्त्र देने का फल है। (3) [1568]

उनतालीसवें युग में [इसलिए] बत्तीस मनुष्य स्वामी थे, राजा जिन्होंने समंत-ओदना के नाम से जाने जाने वाले [कानून के] पहिये को घुमाया।825 (4) [1569]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1570]

इस प्रकार पूज्य अद्धचेलक थेरा ने ये श्लोक कहे

अद्धचेलक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 823 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

824 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

825 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज के रूप में (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

94. सुचिदायक 826

मैं पहले बंधुमा नामक सुंदर शहर में एक लोहार था।
मैंने एक सुई का उपहार दिया
विपस्सी को, महान ऋषि। (1) [1571]

ऐसे कर्मों के कारण [मेरा] ज्ञान [अब] एक शीर्ष हीरे के समान है
मुझे कोई वासना नहीं है, मैं पूरी तरह से स्वतंत्र हूँ;
मैंने अरहंतत्व प्राप्त कर लिया है।827 (2) [1572]

ज्ञान से मैं सभी पूर्व जन्मों के बारे में सब कुछ सीखता हूँ
और वर्तमान और भविष्य के:
यह सुई-उपहारों का फल है। (3) [1573]

इक्यावनवें युग में सात वजिरसमा रहते थे, 828
महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले राजा। (4) [1574]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1575]

इस प्रकार पूज्य सुचिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे।

सुचिदायक थेरा की कथा समाप्त होती है

95. गंधमालिया 829

मैंने उनके लिए एक सुगंधित स्तूप बनाया
[उनके लिए], सिद्धार्थ, भगवान बुद्ध, विश्व के शीर्ष प्रमुख, अग्नि-वेदी की तरह प्रज्वलित,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 826 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

827 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

828 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन

(पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 829 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

नीले जल लिली की तरह चमकीला, बाघ बैल की तरह शानदार,
सिंह के समान श्रेष्ठ कुल का,
बैठा हुआ, सभी भिक्षुओं में शीर्ष, भिक्षु सभा द्वारा सम्मानित, और इसे बुद्ध के लिए उपयुक्त चमेली के फूलों से ढका हुआ
[फिर] गुरु के चरणों की पूजा करते हुए
मैं उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (1-3) [1576-78]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने [तब] वह सुगंधित माला दी, जो बुद्ध के लिए उचित कार्य करने के फल से प्रतिष्ठित थी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [1579]830

उनतीसवें युग में [इसलिए]
सोलह [अलग-अलग] लोग थे; [सभी] देवगंधा831 के नाम से जाने जाते थे
[और] वे सभी पहिए घुमाने वाले राजा थे। (5) [1580]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1581]

इस प्रकार पूज्य गंधमालिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

गंधमालिया थेरा की कथा समाप्त होती है

---

96. टिपूपफिया832

अतीत में, एक वन उपवन में,
मैं एक ऐसा व्यक्ति था जो हिरण का शिकार करता था। [बुद्ध की] हरी पाटली 833 को देखकर

---

830 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
831 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , “जौ से बना भोजन;” BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , “नरम उबला हुआ भिक्षा”), या बिना खमीर की रोटी या भोज के रूप में (PSI:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 832 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

833 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

मैंने उस पर तीन फूल बिखेरे। (1) [1582]

फिर मैंने गिरे हुए 834 पत्तों को उठाकर बाहर फेंक दिया। पाटली वृक्ष की पूजा करते हुए,
अंदर से शुद्ध और बाहर से भी शुद्ध, मानो संसार के नेता, विपस्सी, संबुद्ध का सामना कर रहे हों,
पूरी तरह से मुक्त, बेदाग,
मैं वहीं पर मर गया।835 (2-3) [1583-1584]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने वह बोधि-पूजा की ।
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बोधि- पूजा का फल है । (4) [1585]

इसके तीसवें युग में
तेरह राजा थे जो [सभी]
समंतपासादिका, 836 नाम के थे
महान शक्ति के साथ पहिया घुमाने वाले सम्राट। (5) [1586]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1587]

इस प्रकार पूज्य तिपुफीय थेरा ने ये श्लोक कहे।

तिपुफीय थेरा की कथा समाप्त होती है

---

97. मधुपिंडिका837

एक शांत और परेशानी मुक्त
वन उपवन में, मैंने [एक बार] देखा
सिद्धार्थ ऋषि, सर्वोच्च,838

बलिदान प्राप्तकर्ता, (1) [1588]

---

834 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या भोज के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है
835 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
836 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 837 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
838 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

हे महान हाथी, मनुष्यों का बैल,839 एक शुद्ध नस्ल के समान, भोर के तारे की तरह चमकते हुए,840 देवताओं की सभा द्वारा प्रशंसित, मुझमें बहुत841 खुशी उत्पन्न हुई;
तब ज्ञान अस्तित्व में आया। (2) [1589]842

ध्यान से उठे शिक्षक को शहद देते हुए,
[और] गुरु के चरणों की पूजा करके, मैं पूर्व की ओर मुख करके चला गया। (3) [1590]

[तब] चौंतीस युग [पहले] मैं राजा सुदस्सन था;843
जब भी मैं कमल की जड़ों को खाता था, उनसे मीठा शहद बहता था।
और शहद की बारिश हुई:
यह पूर्व कर्मों का फल है। (4) [1591]844

तब से चौरानवे युगों में
मैंने उसे तब वह शहद दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
शहद देने का यही फल है। (5) [1592]

[और] चौंतीस युग पहले
सुदस्सन नाम के चार राजा थे, जो महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले राजा थे। (6) [1593]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [1594]

इस प्रकार पूज्य मधुपिंडिका थेरा ने ये श्लोक कहे

मधुपिंडिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

839 कुम्मासा , संस्कृत कुलमासा , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के केक या जंकेट के रूप में (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है

840 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

841 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

842 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

843 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

844 लिट., “गया”

---

98. सेनासनदायक 845

मैंने भगवान सिद्धार्थ को पत्तों से बनी चटाई दी,
और [उस बुद्ध की] पूरी तरह से सेवा की,
[फिर] उनके लिए फूल बिखेरे। (1) [1595]

मैंने एक बहुत ही महंगी
सुखद गुफा और महलों का भी आनंद लिया;
फूल जो सबसे महंगे थे
उस समय मेरे बिस्तर पर गिर पड़ा। (2) [1596]

मैं अपने बिस्तर पर फूलों की एक सजी हुई चटाई पर आराम से लेट गया, और फूलों की बारिश हमेशा होती रही
[उस समय] मेरे बिस्तर पर बारिश हुई थी। (3) [1597]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने पत्तों से बनी वह चटाई दी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यही चटाई देने का फल है। (4) [1598]

सात चक्र-घुमाने वाले राजा थे
[सभी] नाम थितोसंथारक846
जो पाँचवें युग [पूर्व] में पैदा हुए थे, वे लोगों के स्वामी। (5) [1599]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1600]

इस प्रकार पूज्य सेनासनदायक847 थेरा ने ये श्लोक कहे।

सेनासनदायक थेरा की कथा समाप्त होती है

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 845 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

846 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

847 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

99. वेय्यावक्काक 848

वहाँ एक बड़ा समूह849 विपस्सी की प्रतीक्षा कर रहा था, फिर भगवान बुद्ध की।
हर तरह के कर्तव्यों में व्यस्त,
मैं तब एक [विनम्र] सेवक था। (1) [1601]

मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं था
उस सुदाग़ महान ऋषि को, [इसलिए] मैंने गुरु के चरणों की पूजा की
एक ऐसे मन के साथ जो बहुत स्पष्ट था। (2) [1602]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने [उस समय] वह सेवा की थी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही सेवा करने का फल है। (3) [1603]

फिर, आठ युग पहले, मैं राजा था, सुसिंटिटा,850
एक महान शक्ति वाला पहिया घुमाने वाला, सात रत्नों का स्वामी। (4) [1604]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1605]

इस प्रकार पूज्य वेय्यावच्चक थेरा ने ये श्लोक कहे।

वेय्यावच्चक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

100. बुद्धूपट्टक

[उस समय] मैं विपस्सी, भगवान के लिए शंख बजाने वाला था, निरंतर सेवा में लगा हुआ था
सुदाग़, महान ऋषि की सेवा में। (1) [1606]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 848 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

849 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

850 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

उस सेवा का फल देखो
तटस्थ, विश्व-प्रमुख को:
साठ हज़ार तुरिया ढोल
निरंतर मेरी सेवा कर रहे हैं। (2) [1607]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने उस प्रकार महान ऋषि की सेवा की, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यही सेवा करने का फल है। (3) [1608]

चौबीसवें युग में 851
तब सोलह [विभिन्न] राजा थे; [सभी] का नाम महानिघोष था,852
महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले सम्राट। (4) [1609]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1610]

इस प्रकार पूज्य बुद्धूपट्टक थेरा ने ये श्लोक कहे।

बुद्धूपट्टक थेरा की कथा समाप्त होती है
सारांश: सुधापिंड और चेल भी,
कम्मार, गंधमालिया, तिपुप्पिया, मधु, सेना, वेय्यावच्च और धम्मक: इस अध्याय में ठीक साठ श्लोक बताए गए हैं

सुधा 853 अध्याय, दसवाँ।

फिर अध्यायों का सारांश है: बुद्ध अध्याय पहला है,
सिहासनी, सुभूति,
कुण्ड-धान और उपाली, विजानी और सकाचित्तनी,

{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 851 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है

852 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

853 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

नागसमाला, तिमिरा,
सुधा अध्याय के साथ वे दस हैं।
चौदह सौ श्लोक और पचपन अन्य हैं

बुद्ध कहलाने वाले दस अध्याय।

पहला सौ 854 पूरा हो गया है।

भिक्खदाई अध्याय, ग्यारहवाँ

---

101. भिक्खदायि 855

[मैंने] स्वर्ण संबुद्ध, यज्ञ प्राप्तकर्ता को देखा,
[जो,] उत्तम वन से निकलकर निर्वाण में आ गया है। (1) [1611]

मैंने भीख में मिले भोजन का एक चम्मच सिद्धार्थ को दिया, जो महान ऋषि, महान नायक और तटस्थ थे।
वह बुद्धिमान, [जो] शांत था। (2) [1612]

जब उन्होंने कई लोगों को निर्वाण प्राप्त कराया, क्योंकि वे उनका अनुसरण करते थे,
मुझमें एक उदात्त आनंद उत्पन्न हुआ
बुद्ध के बारे में, सूर्य के सगे-संबंधी। (3) [1613]856

तब से चौरानवे युगों में
मैंने [उसे] तब वह भिक्षा-भोजन दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह भीख माँगे गए भिक्षा-भोजन का फल है। (4) [1614]

सत्तासीवें युग में
सात चक्र घुमाने वाले राजा थे; [उन सभी का] नाम महारेणु था,857

---

854 रत्तंबरधारो , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 855 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।
856 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
857 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या जंकेट (पीएसआई: सिंह. रोटीया) के रूप में। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

सात रत्नों के स्वामी। (5) [1615]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1616]

इस प्रकार पूज्य भिक्खदायक थेरा ने ये श्लोक कहे।

भिक्खदायक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

102. Ñāṇasaññaka858

[मैंने देखा] स्वर्ण संबुद्ध, मनुष्यों का बैल, एक शुद्ध नस्ल के समान, महान ऋषि, एक हाथी के समान,
एक मातंग 859 त्रिविध मद्यपथ में, (1) [1617]

सभी दिशाओं में चमकता हुआ
पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह, दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, परम पुरुष,
जो [तब] सड़क पर निकल गया था। (2) [1618]

उसके ज्ञान में [मेरे] दिल को प्रसन्न करते हुए मैंने अपने दोनों हाथों को एक साथ दबाया। खुश, [और] प्रसन्न हृदय से,
मैंने सिद्धार्थ का आदर किया। (3) [1619]

तब से चौरानवे युगों में

मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
ज्ञान को समझने का फल। (4) [1620]

सत्तर युगों बाद सोलह परम पुरुष थे, जो महान शक्ति से संपन्न, चक्र घुमाने वाले राजा थे।
सात रत्नों के स्वामी। (5) [1621]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1622]

संभवतः और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 858 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं
859 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

इस प्रकार पूज्य ञाणसञ्ञक थेरा ने ये श्लोक कहे।

ञाणसञ्ञक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

103. Uppalahatthiya860

मैं तिवारा में रह रहा था,
उस समय मैं माला बनाने वाला था।
मैंने बुद्ध, निर्मल, को देखा,
सिद्धार्थ, विश्व द्वारा पूजित। (1) [1623]

प्रसन्न, मेरे हृदय में आनंद के साथ, मैंने मुट्ठी भर फूल दिए
मैं जिस भी स्थान पर पुनर्जन्म लेता हूँ,
उस कर्म के अनुसार, (2) [1624]

मैं सुखद फल का आनंद लेता हूँ
मैंने उस समय खुद क्या अच्छा किया था। मैं सुंदर फूलों से घिरा हुआ हूँ:
फूल देने का यही फल है।861 (3) [1625]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने वह फूल [उसे] भेंट किया,

मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
बुद्ध -पूजा का फल । (4) [1626]

चौरानवे युगों बाद से, और वर्तमान समय को छोड़कर,
पाँच सौ राजा थे; सभी नज्जुपमा के नाम से जाने जाते थे।862 (5) [1627]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1628]

इस प्रकार पूज्य उप्पलाहथिया थेरा ने ये श्लोक कहे

उप्पलाहथिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 860 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं
861 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
862 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

104. पदपूजक863

मैंने सिद्धार्थ को एक चमेली का फूल दिया, [तब] भगवान को, [और] हँसते हुए मैंने [तब] उनके चरणों पर सात फूल बिखेरे। (1) [1629]

उस कर्म के कारण, आज मैं
देवताओं और मनुष्यों दोनों को पार कर चुका हूँ। मैं अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ
बुद्ध के 865 युग में। (2) [1630]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने वह फूल [उसे] भेंट किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
वह पुष्प- पूजा का फल है । (3) [1631]

तेरह चक्र-घुमाने वाले राजा थे; [सभी का] नाम समंतगंधा था, 866
पाँचवें युग पूर्व में चारों ओर समूहों पर आधिपत्य करने वाले। (4) [1632]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1633]

इस प्रकार पूज्य पादपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे

पदपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 863 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

864 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

865 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

866 र'अट्टम्बरधारो , लिट., "लाल अम्बरा धारण करने वाला।" धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

105. मुट्ठिपुप्पिया867

मैं तब माला बनाने वाला था
जिसे सुदासाना के नाम से जाना जाता था.868
मैंने बुद्ध, निर्मल, को देखा,
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल। (1) [1634]

चमेली का फूल तोड़ते हुए,
प्रसन्न और मेरी आँखें एकदम साफ़ थीं
मैंने पद्ममुत्तरा की पूजा की,
दिव्य नेत्रों वाले जो आए थे। (2) [1635]

उस बुद्ध- पूजा के कारण
और मेरे हृदय में संकल्प के कारण, एक लाख युगों तक
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला। (3) [1636]

तब सोलह [विभिन्न] राजा थे, [सभी] देवोत्तरा के नाम से जाने जाते थे,869
छत्तीसवें युग में, महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले सम्राट। (4) [1637]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1638]

इस प्रकार पूज्य मुट्ठिपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

मुट्ठिपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त होती है

---

106. उदकपूजक 870

[मैंने] स्वर्ण संबुद्ध को हवा के मार्ग पर जाते देखा,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 867 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं
868 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
869 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 870 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

तेल की वेदी की तरह चमकता हुआ, 871
अग्नि-वेदी की तरह धधक रहा है। 872 (1) [1639]

मैंने अपने हाथ में थोड़ा पानी लेकर उसे आकाश में उछाल दिया
बुद्ध, करुणामय, ऋषि,
महान नायक, [तब] इसे स्वीकार किया। (2) [1640]

आकाश में खड़े होकर, शिक्षक, जिनका नाम पद्ममुत्तरा था, मेरे विचारों को समझते हुए,
उन्होंने [मेरे बारे में ठीक उसी समय] यह श्लोक कहा: (3) [1641]

"पानी के इस उपहार के कारण
और जो आनंद उसने तब उत्पन्न किया, वह एक लाख युगों तक बना रहा।
उसे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चलेगा।" (4) [1642]

बुद्ध के लिए उस कर्म के कारण, 873
दुनिया के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है
सभी विजय और पराजय से परे। (5) [1643]

पैंसठ सौवें युग में,
तीन चक्र-घुमाने वाले सम्राट थे; [सभी] का नाम सहस्त्रराज874 था
चारों ओर से लोगों पर प्रभुत्व रखता है। (6) [1644]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [1645]

इस प्रकार पूज्य उदकपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे।

उदकपूजक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

871 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
872 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया))। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
873 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
874 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

---

107. नलमालिया 875

सरकंडों की माला लेकर
और उसे बांधकर में [तब] उनके पास पहुँचा
पद्ममुत्तरा, बुद्ध,
विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ, शांत, तटस्थ, जो घास में बैठे थे, [तब], [और वहाँ] मैंने दो पैरों वाले भगवान को पंखा किया,
बुद्ध, [वह], तटस्थ।876 (1-2) [1646-1647]

सर्वज्ञ ने [इसे] प्राप्त किया,
[तब] विश्व नेता ने [खुद को] पंखा किया। यह समझते हुए कि मैं क्या सोच रहा था,
उन्होंने [मेरे बारे में] यह श्लोक कहा: (3) [1648]

"जिस प्रकार इसने मेरे शरीर को ठंडा किया, उसे नरक की झुलसन का अनुभव नहीं होगा; ठीक उसी प्रकार तुम्हारा हृदय भी इससे मुक्त हो जाएगा।"
अस्तित्व की त्रिविध अग्नि।" (4) [1649]

सभी देवता एक वृक्ष में एकत्रित हुए, जो भी [तब सोच रहे थे], "हम बुद्ध के वचन सुनेंगे
जिससे दानदाता हँसेगा।" (5) [1650]

[तब], वहाँ बैठे हुए, धन्य पुरुष, देवताओं की सभा द्वारा सम्मानित, दानदाता को हँसाते हैं
ये छंद [मेरे बारे में भी] कहे: (6) [1651]

"पंखे चलाने के इस उपहार के कारण
और [अपने] हृदय में संकल्प, वह एक चक्र-घुमाने वाला राजा बन जाएगा
सुब्बत के नाम से जाना जाता है।877 (7) [1652]

उस कृत्य के शेष भाग के माध्यम से, अपनी नेक पृष्ठभूमि से प्रेरित होकर, वह एक प्रभावशाली राजा बन जाएगा।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 875 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
876 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
877 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मालुता के नाम से जाना जाता है।878 (8) [1653]

पंखा चलाने के इस उपहार और [उनके] प्रचुर सम्मान के कारण,
एक लाख युगों के लिए
उसे किसी बुरे पुनर्जन्म का पता नहीं चलेगा।" (9) [1654]

तीस हज़ारवें युग में
सुब्बत नाम के आठ राजा थे। उनतीस हज़ारवें युग में
मालुता नाम के आठ राजा थे। (10) [1655]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [1656]

इस प्रकार पूज्य नलमालिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

नलमालिया थेरा की कथा समाप्त होती है

---

108. आसनूपट्टायक 879

एक शांत और अबाधित वन उपवन में प्रवेश करते हुए, मैंने एक सिंह-सिंहासन भेंट किया
तटस्थ व्यक्ति, अत्थादस्सी को। (1) [1657]

मुट्ठी भर फूल लेकर और उनके चारों ओर परिक्रमा करते हुए, शिक्षक की श्रद्धापूर्वक सेवा करते हुए,
मैं उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (2) [1658]

उस दो पैरों वाले भगवान, जगत के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के बैल के लिए किए गए उस कर्म के कारण, मैंने स्वयं ही निर्वाण प्राप्त कर लिया;
सभी [नया] अस्तित्व नष्ट हो जाता है। (3) [1659]

अठारह सौ युगों में
[जबसे] मैंने [उसे] वह उपहार दिया था, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह सिंह-सिंहासन का फल है। (4) [1660]

---

878 रत्तंबरधारो , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 879 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

सात सौवें युग में
क्षत्रियन सन्निब्बापक 880
वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (5) [1661]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1662]

इस प्रकार पूज्य आसनूपट्टायक थेरा ने ये श्लोक कहे

आसनुपट्टायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

109. बिलादायक 881

हिमालयी क्षेत्र में,
मैं पत्तों से बनी चटाई पर रहता था। भोजन के लिए कोई लालच महसूस न करते हुए,
मैं तब हमेशा खुश रहता था। (1) [1663]

कलम्बा की तरह जड़ें खोदते हुए , 882
biḷāli and takkaḷi 883 [too]
[मैंने उन्हें खाया] मिलाकर तैयार किया
बेर,884 मार्किंग-नट,885 और बेल.886 (2) [1664]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञाता
बलि प्राप्तकर्ता,
मेरे विचारों को समझते हुए,
ठीक उसी समय मेरी उपस्थिति में आया। (3) [1665]

कुछ बिलाली [जड़ों] को लेकर
वह महान हाथी जो आया था,

---

880 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है, जैसा कि 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 881 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

882 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

883 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

884 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

885 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

886 निज्झायामानो , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

देवताओं के ईश्वर, मनुष्यों के बैल,
मैंने [उन्हें] [उनके] भिक्षापात्र में [तब] रख दिया। (4) [1666]

फिर महान नायक ने [उन्हें] खा लिया
जिससे मुझे बहुत खुशी हुई। खाने के बाद, सर्वज्ञानी ने
उन्होंने उस समय मुझसे यह श्लोक कहा: (5) [1667]

“मुझे ये जड़ें 887 [खाने के लिए] देकर आपने अपने दिल को खुशी दी है
एक लाख युगों तक
आपको कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चलेगा।” (6) [1668]

यह मेरा आखिरी चक्कर है;
सभी [नया] अस्तित्व नष्ट हो गया है। मैं अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ।
बुद्ध के 888 विधान में। (7) [1670]889

चौवनवें युग में, सुमेखली के नाम से जानी जाने वाली
वह महान शक्ति वाली एक चक्र-चालक थी, जो सात रत्नों की स्वामी थी। (8) [1669]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1671]

इस प्रकार पूज्य बिलादायक थेरा ने ये श्लोक कहे

बिलादायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

110. रेणुपूजक 890

[मैंने] स्वर्ण संबुद्ध को देखा, जो सौ किरणों वाले सूर्य के समान, सभी दिशाओं में चमक रहा था
जैसे पूर्णिमा का चाँद, (1) [1672]

[उसके अनुयायियों] से घिरा हुआ
जैसे पृथ्वी समुद्र से घिरी हुई है

---

887 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
888 शाब्दिक रूप से, "गया"
889 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ पाठ्येलेसी पढ़ना
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 890 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

मैंने विपस्सी को भेंट किया
पराग से भरा हुआ आयरनवुड891 फूल। (2) [1673]

तब से इक्यावन युगों में

मैंने वह पराग [उन्हें] अर्पित किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [1674]

इसके बाद पैंतालीसवें युग में
एक राजा था, जिसे रेणु के नाम से जाना जाता था, जो महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था और सात रत्नों का स्वामी था। (4) [1675]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1676]

इस प्रकार पूज्य रेणुपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे

रेणुपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: भिक्खदायी, ञाणसञ्ञी,
हत्थिया, पदपूजक, मुथिपुप्पी, उदकड़ा, नाममालि, निवासक, बिषालिदाय894 और रेनु भी; छः और साठ श्लोक हैं।

भिक्खदाई अध्याय, ग्यारहवाँ।

---

891 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है, जैसा कि 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

892 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

893 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

894 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

महापरिवार अध्याय, बारहवाँ

---

111. महापरिवार 895

विपस्सी नामक भगवान,
दुनिया के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, तब बंदुमा नगर में प्रवेश किया
अड़सठ हज़ार [अरहंतों] के साथ। (1) [1677]

शहर से बाहर आकर
वह दीपों के मंदिर में गया।896
मैंने बुद्ध, निष्कलंक, बलि प्राप्तकर्ता को देखा। (2) [1678]

अस्सी हज़ार लघु आत्माएँ897 जो [तब] इंद्र और तैंतीस की श्रद्धापूर्वक सेवा करती थीं
[भी वहाँ] मेरी उपस्थिति में थीं। (3) [1679]

जब वह ध्यान से उठे,
मैंने वहाँ से कपड़े का एक टुकड़ा उठाया।
मैंने सिर झुकाकर उनकी पूजा की, फिर मैंने उसे महान ऋषि को दे दिया: (4) [1680]

"हे बुद्ध! हे शिक्षा!
हे हमारे गुरु की [महान] उपलब्धि!
बुद्ध की शक्ति के माध्यम से
उसने धरती को ही हिला दिया। (5) [1681]

और उस चमत्कार को देखकर, अजूबा रोंगटे खड़े कर देने वाला,
मैंने बुद्ध में अपने हृदय को प्रसन्न किया,
द्विपद भगवान, तटस्थ। (6) [1682]

तब मैंने द्विपाद भगवान, तटस्थ ईश्वर में अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए, वह वस्त्र गुरु को दे दिया।
उसके पास शरण लेने गया। (7) [1683]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 895 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है
896 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
897 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

तब से इक्यावन युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (8) [1684]

पंद्रहवें युग पूर्व
सोलह [नाम वाले] वाहन थे, 898 चक्र घुमाने वाले राजा, महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी। (9) [1685]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [1686]

इस प्रकार पूज्य महापरिवार थेरा ने ये श्लोक कहे

महापरिवार थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

112. सुमंगल

अत्थादस्सी, सर्वश्रेष्ठ विजेता,
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल, मठ से प्रस्थान करते हुए
[मेरे घर के पास] झील तक आया।899 (1) [1687]

संबुद्ध ने [वहाँ] स्नान किया और पिया, [फिर वह] बाहर निकला और एक वस्त्र में
भगवान उस स्थान पर खड़े होकर सभी दिशाओं का अवलोकन कर रहे थे। (2) [1688]

अपने निवास में रहते हुए, मैंने विश्व के नेता को देखा
सौ किरणों वाले सूर्य के समान चमकता हुआ, उत्तम शिल्प वाले सोने के समान जगमगाता हुआ और प्रसन्न हृदय वाला।
फिर मैंने नृत्य और गीतों का संचालन करने के लिए अपनी उंगलियां चटकाईं
और वहाँ पाँच प्रकार के संगीत।900 (3-4) [1689-1690]

---

898 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 899 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।
900 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लेता हूँ, चाहे वह मानव हो या दिव्य, मैं सभी अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ हूँ।
और मेरी महिमा प्रचुर है। (5) [1691]

"हे सुसंस्कृत व्यक्ति, आपकी जय हो! 901
हे परम पुरुष, आपकी जय हो! स्वयं को प्रसन्न करके, ऋषि,
[अब] आप [सभी] दूसरों को प्रसन्न कर रहे हैं।" (6) [1692]

स्वीकार करने के बाद, बैठ कर,
अच्छे वचन वाले ने हँसी पैदा की। 902
मैंने संबुद्ध की सेवा की
[तब] तुसिता में पुनर्जन्म हुआ। (7) [1693]

सोलहवें युग पूर्व ग्यारह एकासिंटिटास903
महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, पहिए घुमाने वाले थे। (8) [1694]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1695]

इस प्रकार पूज्य सुमंगल थेरा ने ये श्लोक कहे

सुमंगल थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

113. सरणागमनिया 904

दोनों देव-राजाओं के बीच युद्ध
[तब तक] शुरू हो चुका था
इसके लिए भारी भीड़ जमा हुई थी, जिससे बहुत शोरगुल मच रहा था। (1) [1696]
पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, यज्ञ प्राप्तकर्ता,

---

901 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के केक या जंकेट के रूप में (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है
902 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
903 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित
904 {फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

शिक्षक, आकाश में खड़े होकर,
[तब] कई लोगों को भावुक कर दिया। (2) [1697]

सभी देवता प्रसन्न हुए;
उनके हथियार और कवच नीचे फेंक दिए गए। संबुद्ध की पूजा करने के बाद
फिर वे एक तरफ खड़े हो गए। (3) [1698]

हमारे विचारों को समझते हुए, दयालु, विश्व-ज्ञानी ने [तभी] राजसी शब्द कहे, जिससे कई लोग निर्वाण प्राप्त कर सके। (4) [1699]

“जिस व्यक्ति के हृदय में बुराई भरी हो, वह किसी एक जीवित प्राणी को हानि पहुँचा सकता है। क्योंकि उसके हृदय पर वह कलंक लगा होता है।”
उसका पुनर्जन्म किसी नरक में होगा। (5) [1700]

युद्ध के मोर्चे पर एक हाथी905 कई जीवों को नुकसान पहुंचा सकता है, लेकिन अगर वह अपने दिल को ठंडा कर ले
उसे बार-बार नहीं मारा जाएगा।” (6) [1701]

उन दोनों की सेनाएँ
आत्मा907 -राजा [तब] चकित थे।908
और वे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ के पास गए,
तटस्थ के पास, [शरण लेने के लिए]। (7) [1702]

लोगों को समझाने के बाद, वह नेत्रपूर्ण व्यक्ति ऊपर की ओर उठा, और सभी देवताओं द्वारा देखा गया,
वह उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (8) [1703]

मैं शरण लेने वाला पहला व्यक्ति था
द्विपदीय भगवान, तटस्थ ईश्वर के पास। एक लाख युगों तक
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है। (9) [1704]

तीस हज़ारवें युग में

---

905 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीएनपी II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल है
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
906 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
907 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
908 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

सोलह रथ-बैल थे, 909
वे राजा जिन्होंने [कानून का] पहिया घुमाया,
[सभी] महादुंदुभि कहलाए।910 (10) [1705]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [1706]

इस प्रकार पूज्य सरणागमनिया थेरा ने ये श्लोक कहे

सरणागमनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

114. एकासनीय 911

उस समय मैं देवताओं का राजा था, जिसे वरुण के नाम से जाना जाता था
मैंने संबुद्ध की सेवा की,
उनकी शक्ति के वाहन के रूप में। (1) [1707]

जब अत्थादस्सी, सर्वश्रेष्ठ पुरुष, जगत के स्वामी, सभी तुरियाओं की आपूर्ति करते हुए निर्वाण प्राप्त कर चुके थे ,
मैं सर्वश्रेष्ठ बोधि वृक्ष के पास गया। (2) [1708]

मानो संबुद्ध के सामने
मैंने सर्वश्रेष्ठ बोधि वृक्ष की सेवा की,
संगीत और नृत्यों के साथ भी,
झांझों के साथ अच्छी तरह से संगत।912 (3) [1709]

उस बोधि की सेवा करने के बाद
वहाँ धरती से उगने वाले पेड़ को देखकर, मैंने खा लिया था, और मेरे पैर क्रॉस किए हुए थे,
मैं वहीं पर मर गया। (4) [1710]

अपने कर्मों में प्रसन्न होकर, उस उत्कृष्ट बोधि वृक्ष से प्रसन्न होकर, अपने हृदय में उस आनंद के कारण,
मैंने निर्वाण प्राप्त कर लिया है [अब]। (5) [1711]

909 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ

910 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 911 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

912 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

[और] साठ हज़ार वाद्ययंत्र 913
हर समय मेरी सेवा में हैं
जैसे-जैसे मैं जन्म-जन्मांतर की ओर बढ़ता हूँ
मनुष्यों और देवताओं के बीच भी। (6) [1712]

मुझमें तीनों आग बुझ गई हैं;
सभी [नया] अस्तित्व नष्ट हो गया है। मैं अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ।
बुद्ध के 915 विधान में। (7) [1713]

इसके पाँच सौवें युग में चौंतीस क्षत्रिय थे
[जिनमें से सभी] का नाम सुबहू,916 था
सात रत्नों के स्वामी। (8) [1714]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1715]

इस प्रकार पूज्य एकासनीय थेरा ने ये श्लोक कहे।

एकासनीय थेरा की कथा समाप्त होती है

---

115. सुवण्णपुप्फिया 917

विपस्सी नामक भगवान,
विश्व के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के बैल, बैठे हुए, वहाँ के लोगों के समूह को अमरता का उपदेश दिया। (1) [1716]

शिक्षा 918 सुनने के बाद
उस द्विपाद भगवान, तटस्थ व्यक्ति की शिक्षा सुनकर, मैंने [तब] बुद्ध को अर्पित किया
[शुद्ध] सोने से बने चार फूल। (2) [1717]

---

913 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
914 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
915 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
916 निज्झायामानो , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 917 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
918 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

वहाँ सोने का एक चंदवा था
उस समय पूरी भीड़ पर फैला हुआ था। बुद्ध के प्रकाश और सोने से वहाँ एक विशाल दीप्ति थी। (3) [1718]

खुश, मेरे दिल में उमंग के साथ, रोमांचित, मेरे हाथ एक साथ जुड़े हुए, उन लोगों के लिए उत्पन्न आनंद के साथ [जिन्होंने सुना], दुनिया को आनंद पहुंचाते हुए, (4) [1719]

बुद्ध को आमंत्रित करके,920 आज्ञाकारी की पूजा करके,921 बहुत आनंद का अनुभव करते हुए
मैं [तब] अपने घर लौट आया। (5) [1720)

अपने निवास में प्रवेश करने के बाद,
मैंने सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को याद किया। मेरे हृदय में उस आनंद के कारण, मेरा तुसिता में पुनर्जन्म हुआ। (6) [1721]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने वह फूल [उन्हें] अर्पित किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (7) [1722]

तब सोलह [विभिन्न] राजा थे, [सभी] नेमिसम्मत के नाम से जाने जाते थे,922
तैंतालीसवें युग में,
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले सम्राट। (8) [1723]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1724]

इस प्रकार पूज्य सुवन्नपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

सुवन्नपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त होती है

---

919 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

920 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

921 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

922 निज्झायामानो , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

116. चितकपूजक 923

जब सिख धर्म के धन्य पुरुष,
विश्व के सगे-संबंधी, 924 में देहांत हो गए,
मैं [तब] राजसी क्षेत्र में रहता था,
मंत्रियों और सेवकों के साथ। (1) [1725]

प्रसन्न, [और] प्रसन्न हृदय से,
मैं [उनके लिए निर्मित] मंदिर गया। वहाँ तुरिया -ढोल बजाए जा रहे थे
मैंने फूलों की माला चढ़ाई। (2) [1726]

उस मंदिर में पूजा करने के बाद
और मंदिर की पूजा करते हुए, प्रसन्न और प्रसन्न हृदय से
मैं [तब] अपने घर लौट आया। (3) [1727]

अपने निवास में प्रवेश करने के बाद,
मुझे उस पूजा - स्थल की याद आ गई
उस कर्म के द्वारा द्विपद-भगवान के लिए,
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों का बैल, (4) [1728]

मनुष्यों और देवताओं के बीच [महान] सुख का आनंद लेने के बाद,
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है
सभी विजय और पराजय से परे। (5) [1729]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने वह फूल [उन्हें] अर्पित किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
जो मंदिर- पूजा का फल है । (6) [1730]

तब से उनतीसवें युग में
तब सोलह [विभिन्न] राजा थे, [सभी] उगाट नाम से जाने जाते थे,925
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले सम्राट। (7) [1731]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 923 अपदान संख्याएँ BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

924 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

925 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [1732]

इस प्रकार पूज्य चितकापूजक थेरा ने ये श्लोक कहे

चितकपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

117. बुद्धसंञ्ञक 926

जब विपस्सी, विश्व के शीर्ष, ने जीवन के घटकों को त्याग दिया, तो जल से घिरी भूमि,
[उस समय] धरती कांप उठी थी। (1) [1733]

जब बुद्ध का जीवन समाप्त हुआ, तो मेरा निवास भी हिल गया
[और] मेरी सजावटी बालों की माला
उसके द्वारा खिंची और अलग हो गई थी। (2) [1734]

जब मेरा घर हिल गया, तो मैं बहुत डर गया था।
और किसी भी कारण से [तब]
वहाँ एक विशाल प्रकाश था। (3) [1735]

वेसवण927 यहाँ आकर लोगों के भय को दूर कर दिया: प्राणियों को डरने की कोई बात नहीं है;
शांत रहो, आत्मसंयम बरतो। (4) [1736]

हे! बुद्ध! हे! शिक्षा!
हे! हमारे गुरु की [महान] उपलब्धि! [साथ ही] जब उनका जन्म हो रहा था
पृथ्वी [स्वयं] कांप उठी थी [तब]।" (5) [1737]

बुद्ध की शक्ति की प्रशंसा करने के बाद, मैं स्वर्ग में एक युग तक रोमांचित रहा। शेष युगों के दौरान
मैंने बहुत सारे अच्छे कर्म किए। (6) [1738]

तब से इक्यावन युगों में
मुझे तब यह बोध हुआ, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
बुद्ध को समझने का फल। (7) [1739]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 926 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं
927 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

चौदहवें युग पूर्व, मैं समिता नाम से जानी जाने वाली एक राजसी सम्राट थी,
महान शक्ति वाली एक चक्र-चालक। (8) [1740]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1741]

इस प्रकार पूज्य बुद्धसंञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे

बुद्धसंञ्चक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

118. मगसञ्ञक 928

पद्ममुत्तरा बुद्ध के [अपने] अनुयायी, जो वन-भिक्षु थे, एक विशाल जंगल में खो गए थे,
वे अंधे की तरह वहाँ भटक रहे थे। (1) [1742]

संबुद्ध, पद्ममुत्तरा, नेता, का स्मरण करते हुए,
[और] वे जो उस ऋषि के पुत्र थे,
तब तक बड़े जंगल में खो गए थे, (2) [1743]

मेरे निवास से नीचे उतरते हुए
मैं वहाँ गया जहाँ भिक्षु थे
और उन्हें रास्ता दिखाते हुए
मैंने उन्हें भोजन भी दिया। (3) [1744]

दो पैरों वाले भगवान, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के बैल, के लिए उस कर्म के कारण, जो केवल सात वर्ष के थे,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (4) [1745]

इसके बाद पाँच सौवें युग में,
बारह चक्र-घुमाने वाले सम्राट थे जिन्हें सच्चक्खु930 के नाम से जाना जाता था

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 928 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
929 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
930 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

सात रत्नों के स्वामी। (5) [1746]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1747]

इस प्रकार पूज्य मगसञ्ञक थेरा ने ये श्लोक कहे।

मगसञ्ञक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

119. पक्कुपट्टानसञ्ञक 931

ठीक उसी समय जब वेल-गॉन अत्थादस्सी ने अंतिम निर्वाण प्राप्त कर लिया था,
मेरा जन्म एक आत्मा के गर्भ में हुआ था;
उस समय मेरे पास [महान] गौरव था। (1) [1748]

"यह मेरे लिए एक बुरी उपलब्धि है, एक बुरी सुबह, एक बुरा उदय,
कि मुझे ऐसी समृद्धि मिले
जब आँखों को भाने वाले का देहांत हो गया।"933 (2) [1749]

मेरे विचारों को समझते हुए, सागर 934 नामक अनुयायी ने मेरी उन्नति की कामना करते हुए,
[तब] मेरे समक्ष [वहाँ] आया: (3) [1750]

"तुम शोक क्यों कर रहे हो? डरो मत!
हे शिक्षा के ज्ञाता, बुद्ध द्वारा तुम्हें दिया गया है
सभी की सफलता के बीज। (4) [1751]

जो संबुद्ध, सिद्धार्थ, विश्व के नेता की पूजा करेगा,
एक छोटी सी हड्डी की भी पूजा करनी चाहिए।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 931 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं
932 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
933 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
934 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
935 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
936 निज्झायामानो , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

अंतिम निर्वाण के बाद। (5) [1752]

जब हृदय का सुख एक समान होता है, तो वही अमूल्य पुण्य होता है
इसलिए एक स्तूप का निर्माण करके,
वहाँ विजेता के अवशेषों की पूजा करें।" (6) [1753]

सागर की बातें सुनकर,
मैंने [तब] एक बुद्ध स्तूप बनाया। पाँच वर्षों तक मैंने उसकी सेवा की
उस ऋषि का परम स्तूप। (7) [1754]

द्विपाद भगवान, जगत के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के बैल, के लिए उस कर्म के कारण, [महान] सुख का आनंद लेते हुए,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (8) [1755]

सातवें युग पूर्व
चार भूरीपञ्ञ थे, 937 चक्र घुमाने वाले महान शक्ति के राजा, सात रत्नों के स्वामी। (9) [1756]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [1757]

इस प्रकार पूज्य पच्चुपट्टानासंञ्कक थेरा ने ये श्लोक कहे

पच्चुपट्टानसंञ्ञक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

120. जातिपूजा 938

जब विपस्सी [बुद्ध] का जन्म हुआ, तब वहाँ एक विशाल प्रकाश था
इसके जवाब में धरती स्वयं कांप उठी।
[जैसे इसके] महासागर और पर्वत। (1) [1758]

उन्होंने शकुनों की व्याख्या की:
"एक बुद्ध का जन्म हुआ है939, संसार में, सभी जीवित प्राणियों के शीर्ष पर
जो [सभी] लोगों को ऊपर उठाएगा।" (2) [1759]

937 सप्पी , शाब्दिक रूप से, घी, स्पष्ट मक्खन (गी तेल)
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 938 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
939 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

शकुनों की खबर सुनकर मैंने बच्चे के जन्म के लिए पूजा की।
ऐसी पूजा कहीं और नहीं होती
जन्म के लिए की जाने वाली पूजा । (3) [1760]

अपने हृदय को प्रसन्न करके, स्वयं को पूरी तरह से संयमित रखते हुए,
उस जन्म- पूजा के बाद
मैं वहीं पर मर गया। (4) [1761]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लेता हूँ, चाहे वह मनुष्य का हो या दिव्य, मैं सभी अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ हूँ:
यही जन्म- पूजा का फल है । (5) [1762]

अब ये अवशेष मेरे हृदय की शक्ति से मेरी रक्षा करते हैं। अब दूसरे मुझे परेशान नहीं कर सकते।
वह जन्म- पूजा का फल है । (6) [1763]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने उस समय वह पूजा की थी , मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
वह जन्म- पूजा का फल है । (7) [1764]

तीस युग पहले,
चौंतीस लोगों के स्वामी, [सभी] सुपारीकारिया नाम के,941
वे महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा थे। (8) [1765]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1766]

इस प्रकार पूज्य जातिपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे।

जातिपूजक थेरा की कथा समाप्त होती है
सारांश: परिवार, सुमंगल्य,
शरण, आसन, पुप्पिका,

---

940 कुम्मास , संस्कृत: कुलमास , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है
941 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

Citapūjī, Buddhasaññī, Magg', Upaṭṭhāna, Jātina - इस भाग में नब्बे उच्चारित श्लोकों की स्पष्ट गणना की गई है।

महापरिवार अध्याय, बारहवाँ।

सेरेय्यक अध्याय, तेरहवाँ

---

121. सेरेय्याका 942

मैं एक विद्वान मंत्र-ज्ञाता था जिसने तीनों वेदों में महारत हासिल कर ली थी। खुले आसमान के नीचे खड़े होकर
मैंने विश्व के नेता को देखा, (1) [1767]

शेर की तरह जंगलों में विचरण करते हुए, बाघ-राजा की तरह अविचलित, महान ऋषि, हाथी की तरह,
एक मातंग 943 तीन गुना रट में।944 (2) [1768]

कुछ चमेली के फूल उठाकर, मैंने उन्हें हवा में उछाल दिया।
बुद्ध की शक्ति से,
उन्होंने उसे वहाँ पूरी तरह घेर लिया। (3) [1769]

महान नायक अविचलित खड़ा रहा,
विश्व-नेता, सर्वज्ञ। चारों ओर उन्होंने फूल बिखेर दिए,
[इस प्रकार] पुरुषों के बैल को ढकते हुए।946 (4) [1770]

वहाँ फूलों की एक छतरी
जिसके तने अंदर और फूल बाहर थे, जिसने [उसे] एक सप्ताह तक [बाद में] ढक रखा था, फिर गायब हो गया। (5) [1771]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 942 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

943 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

944 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है।

945 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

946 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

और उस चमत्कार को देखकर, अजूबा जो रोंगटे खड़े कर देता है,
मैंने बुद्ध में अपने हृदय को प्रसन्न किया,
सुप्रसिद्ध, विश्व-नेता। (6) [1772]

मेरी पवित्र जड़ों से प्रेरित उस आनंद के कारण, जो मेरे हृदय में एक लाख युगों से व्याप्त है,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है। (7) [1773]

पंद्रह हज़ारवें युग में
बीस से पाँच अधिक पुरुष थे, महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा,
[सभी] को तब Cīnamāla947 के नाम से जाना जाता था। (8) [1774]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1775]

इस प्रकार पूज्य सेरेय्याका थेरा ने ये श्लोक कहे।

सेरेय्याका थेरा की कथा समाप्त होती है

---

122. पुप्फथुपिया948

हिमालयी क्षेत्र में, 949
लंबका नाम का एक पर्वत है। 950
मैं इसके केंद्र में निवास कर रहा था,
एक ब्राह्मण मंत्रों के गुरु। (1) [1776]

[उस समय] पाँच हज़ार छात्र लगातार मुझे घेरे रहते थे
वे [सभी] मुझसे पहले उठे,
और मंत्रों में भी कुशल थे। (2) [1777]

---

947 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 948 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

949 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

950 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

"[शिक्षक], आपको यह तथ्य जानना चाहिए कि
बुद्ध बत्तीस बड़े चिह्नों और अस्सी छोटे चिह्नों को धारण करते हुए संसार में जन्म ले चुके हैं
सर्वश्रेष्ठ विजेता की आभा,
एक फ़ैदम चौड़ा, सूर्य की तरह चमकता है।" (3) [1778]952

अपने छात्रों की बातें सुनकर, मंत्रों के ब्राह्मण गुरु अपने आश्रम से निकल पड़े,
[तब] उस ब्राह्मण ने दिशा-निर्देश पूछे: "वह किस क्षेत्र में रहता है,
महान नायक, विश्व-नेता? (4) [1779]953

मैं उस दिशा954 [और] विजेता, जिसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं है, की पूजा करूँगा। और प्रसन्न हृदय से,
मैं उस (5) [1780] की पूजा करूँगा

आओ, विद्यार्थी, चलो चलें; आओ हम उस पश्चात्ताप को देखें। गुरु के चरणों की पूजा करने के बाद,
हम उसका निर्णय सुनेंगे।"956 (6) [1781]

मेरे प्रस्थान करने के एक दिन बाद, मैं एक [बुरी] बीमारी से ग्रसित हो गया
मैं एक साल के पेड़ के नीचे लेट गया ।
उस बीमारी के कारण [बहुत] दर्द में। (7) [1782]

सभी छात्रों को इकट्ठा करके [तब]
मैंने उनसे इस प्रकार प्रश्न पूछे: "किस प्रकार का गुण है

विश्व के भगवान, सर्वोच्च बुद्ध का?” (8) [1783]

[तब] मेरे द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने सर्वश्रेष्ठ बुद्ध के बारे में [सबसे] विस्तार से बताया, 957
साथ ही वे उन्हें [तब] देख सकते थे
[और] उसने मुझे उससे आमने-सामने मिलवाया। (9) [1784]

[छात्रों] की बातें सुनने के बाद,

---

951 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को संदर्भित करता है।
952 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
953 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama
954 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
955 शाब्दिक रूप से, "गया"
956 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ पाठ्येलेसी पढ़ना
957 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

मैंने [तब] अपने दिल को खुशी दी। एक पुष्प स्तूप का निर्माण करके
मैं वहीं मर गया। (10) [1785]

मेरे शरीर को जलाने के बाद, वे बुद्ध की उपस्थिति में आए। उनके लिए हाथ जोड़कर,
फिर उन सभी ने गुरु की पूजा की। (11) [1786]

पुष्प स्तूप बनाकर
महान ऋषि, जो स्वर्ग सिधार गए हैं, उनके लिए एक लाख युगों तक,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है। (12) [1787]

चालीस हज़ारवें युग में
सोलह क्षत्रिय [पुरुष] थे। [सभी] अग्गीसमा,958 के नाम से जाने जाते थे
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले राजा। (13) [1788]

बीस हज़ारवें युग में, पृथ्वी के अड़तीस शासक
वे राजा थे जिन्होंने [कानून का] पहिया घुमाया,
और [सभी] को घटासन कहा जाता था।959 (14) [1789]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) [1790]

इस प्रकार पूज्य पुप्पथूपिया थेरा ने ये श्लोक कहे

पुप्पथुपिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

123. पायासादायका960

[मैंने] स्वर्ण संबुद्ध को देखा, जो भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित बत्तीस महान चिह्नों को धारण किए हुए थे,
जो [तब] जंगल छोड़ रहा था। (1) [1791]

958 शाब्दिक रूप से, "योग्य"<extra_id_1
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 960 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
अत्यंत प्रसन्न होकर मैंने [तब] व्यवस्था की
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

दूध-चावल पीतल के कटोरे में परोसा गया। बलिदान अर्पित करने की इच्छा से
मैंने [यह] भेंट प्रस्तुत की।961 (2) [1792]
उस समय जीवित बुद्ध962, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, एक मार्ग पर अच्छी तरह से चढ़ गए थे963

आकाश में हवा के मार्ग में। (3) [1793]
और उस चमत्कार को देखकर, अजूबा जो रोंगटे खड़े कर देता है, उस कांसे के कटोरे को नीचे रखकर,

मैंने [उसी समय] विपस्सी की पूजा की। (4) [1794]
“आप सर्वज्ञ ईश्वर हैं, देवताओं और मनुष्यों दोनों के प्रधान हैं। मुझ पर दया करके,

[कृपया] [यह भोजन] स्वीकार करें, हे महान ऋषि।” (5) [1795]
मैं जो सोच रहा था उसे समझते हुए,

शिक्षक, विश्व के महान ऋषि, धन्य, सर्वज्ञ,
विश्व-नेता ने इसे स्वीकार किया। (6) [1796]
मैंने उसे तब वह भिक्षा-भोजन दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:

तब से इक्यावन युगों में
मैंने [उसे] तब वह भिक्षा-भोजन दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
इसके बाद इकतालीसवें युग में

मैं बुद्ध नाम का एक शासक था,964,965, एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (8) [1798]
961 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

---

961 “Auspicious,” a historical monk, see DPPN II: 1162. This same apadāna is included above, verbatim, as 472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
962 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
963 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
964 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
965 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1799]

इस प्रकार पूज्य पायसादायक थेरा ने ये श्लोक कहे

पायसादायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

124. गंधोदकिया966

अपने शानदार महल में बैठे हुए, मैंने विजेता, विपस्सी को अर्जुन वृक्ष की तरह भव्य देखा,967
सर्वज्ञ, निष्कलंक। (1) [1800]

जैसे ही विश्व-नेता 968 पार गए
महल के पास का क्षेत्र,
उसकी आभा [हर जगह] फैल गई
मानो [वह प्रकाश] सूर्य से आया हो।969 (2) [1801]

कुछ सुगंधित जल लेकर
मैंने तब सर्वश्रेष्ठ बुद्ध पर जल छिड़का, और उस आनंद के साथ,
मैं वहीं पर मर गया। (3) [1802]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने वह सुगंधित जल छिड़का, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [1803]

इसके बाद इकत्तीसवें युग में
सुगंधा नामक क्षत्रिय, 970
वह महान शक्ति वाली, सात रत्नों की स्वामी, एक चक्र-चालक थी। (5) [1804]
चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 966 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
967 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
968 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
969 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
970 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1805]

इस प्रकार पूज्य गंधोदकिया थेरा ने ये श्लोक कहे

गंधोदकिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

125. सम्मुखाथविका971

जब विपस्सी [बुद्ध] का जन्म हुआ, तो मैंने शकुनों की व्याख्या की:
"एक बुद्ध का जन्म संसार में हुआ है;
वह लोगों को निर्वाण तक पहुँचाएँगे।" (1) [1806]

और जब उनका जन्म हो रहा था,
दस हज़ार विश्व-व्यवस्था कांप उठी। अब वह धन्य, गुरु,
नेत्रपूर्ण धम्म का उपदेश दे रहे हैं । (2) [1807]

और जब उसका जन्म हो रहा था, तब वहाँ एक विशाल प्रकाश था। अब वह भगवान, गुरु,
आँखों से देखने वाला व्यक्ति धम्म का उपदेश दे रहा है । (3) [1808]

और जब उनका जन्म हुआ, तब सारी नदियाँ बहना बंद हो गईं। अब वह परम पूज्य, गुरु,
आँखों से देखने वाला व्यक्ति धम्म का उपदेश दे रहा है । (4) [1809]

और जब उसका जन्म हुआ, तब नरक की सारी आग बुझ गई। अब वह परम पूज्य, गुरु,
आँखों से देखने वाला धम्म का उपदेश दे रहा है । (5) [1810]

और जब उसका जन्म हुआ, तो पक्षियों के सभी झुंड उड़ना बंद कर दिए। अब वह धन्य गुरु,
आँखों से देखने वाला धम्म का उपदेश दे रहा है । (6) [1811]

और जब उसका जन्म हो रहा था, तब तेज़ हवाएँ चलना बंद हो गईं। अब वह परम पूज्य, गुरु,
आँखों से देखने वाला धम्म का उपदेश दे रहा है । (7) [1812]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 971 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

और जब वह पैदा हो रहा था, तब सारे रत्न चमक रहे थे। अब वह परम पूज्य, गुरु,
आँखों से देखने वाला धम्म का उपदेश दे रहा है । (8) [1813]

और जब वह पैदा हो रहा था, तब उसने अपने पहले सात कदम उठाए। अब वह धन्य पुरुष, गुरु,
आँखों से देखने वाला धम्म का उपदेश दे रहा है । (9) [1814]

और जब संबुद्ध का जन्म हुआ, तो उन्होंने सभी दिशाओं का सर्वेक्षण किया।
और [फिर उन्होंने] राजसी शब्द कहे;
यही बुद्धों का स्वभाव है।" (10) [1815]

लोगों को भावुक करने के बाद, [और] मैंने संबुद्ध की पूजा करके विश्व-नेता की प्रशंसा की थी,
मैं पूर्व की ओर मुख करके चला गया। (11) [1816]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने बुद्ध की इस प्रकार प्रशंसा की, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यही उसकी प्रशंसा करने का फल है। (12) [1817]

इसके बाद नब्बेवें युग में
[राजा] सम्मुखाथविका,972
वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (13) [1818]

इसके बाद अस्सी-नौवें युग में, [राजा] पथविदुंदुभि973
वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (14) [1819]

इसके बाद अस्सी-आठवें युग में, राजा974 जिसका नाम ओभासमता975 था

वह बहुत ताकतवर पहिया घुमाने वाला था
सात रत्नों का स्वामी। (15) [1820]

---

972 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
973 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
974 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
975 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

सत्तासीवें युग में, [राजा] सरितच्छेदन976
वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (16) [1821]

छियासीवें युग में [इसलिए,] [राजा] अग्गिनीब्बापना977
वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (17) [1822]

पचासीवें युग में [इसलिए,] [राजा] राजवातसमा978
वह एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (18) [1823]

चौरासीवें युग में [इसलिए,] [राजा] गतिपच्छेदन979
वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (19) [1824]

83वें युग में [इसलिए,] [राजा] रतनप्पज्जल980
वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (20) [1825]

बयासीवें युग में, [राजा] पदविक्कमण981
वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (21) [1826]

इक्यासीवें युग में [इसलिए,] [राजा] राजविलोकन982
वह एक महान शक्ति वाला पहिया घुमाने वाला था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (22) [1827]

अस्सीवें युग में [इसलिए,]

---

976 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
977 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
978 शाब्दिक रूप से, "गया"

979 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ पाठ्येलेसी पढ़ना
980 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
981 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
982 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं मीटर बनाए रखने के लिए "हज़ार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली शाब्दिक अर्थ है, "एक हज़ार कंड (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]।"

राजा983 जिसे हिरिसारा984 के नाम से जाना जाता है
वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (23) [1828]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) [1829]

इस प्रकार पूज्य सम्मुखाथविका थेरा ने ये श्लोक कहे

सम्मुखाथविका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

126. कुसुमासानिया 985

धन्जवती नगर में,
मैं उस समय एक ब्राह्मण था, तीनों वेदों का ज्ञाता था,
चिह्नों और इतिहास, शब्दकोशों और कविता में अच्छी तरह से पारंगत,986 [साथ ही] शकुन पढ़ने में कुशल, एक [विद्वान] व्याकरणविद्;
मैंने अपने छात्रों को मंत्र सिखाए। (1-2) [1830-1831]

उस समय मैंने सड़क पर पाँच मुट्ठी कमल के फूल रखे थे, ताकि मैं बलिदान अर्पित कर सकूँ
मेरी माँ और मेरे पिता के लिए।988 (3) [1832]

तब हे भगवान, विपस्सी, भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित,
पुरुषों का बैल [तब मेरे पास आया,]
हर दिशा को रोशन करते हुए। (4) [1833]

---

983 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस कई रूपों में गेंडु पढ़ता है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक स्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी
984 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 985 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
986 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
987 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
988 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

महान ऋषि को आमंत्रित करने के बाद, मैंने उनके लिए एक आसन नियुक्त किया,
फिर उन फूलों को वहाँ फैलाकर,
मैं उसे अपने घर ले गया। (5) [1834]

मेरे घर में जो कुछ भी था,
मुझे जो भी भिक्षा भोजन दिया गया था, वह सब मैंने बुद्ध को दे दिया
[अपने] हाथों से [अच्छा महसूस करते हुए-] प्रसन्न। (6) [1835]

यह जानते हुए कि उसका भोजन कब पूरा हो गया,990
मैंने एक मुट्ठी [फूल] दिए। धन्यवाद देते हुए, सर्वज्ञ
[फिर] उत्तर की ओर मुख करके चले गए। (7) [1836]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने उसे तब वह फूल दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फूल देने का यही फल है। (8) [1837]

एक मध्यवर्ती युग में,
मैं राजा वरदस्सन था, 991
एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (9) [1838]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [1839]

इस प्रकार पूज्य कुसुमासनीय थेरा ने ये श्लोक कहे

कुसुमासनीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

127. फलदायका 992

मैं एक विद्वान मंत्र-ज्ञाता था जिसने तीनों वेदों में महारत हासिल कर ली थी। मैं [उस समय] एक आश्रम में रहता था
हिमालय से ज्यादा दूर नहीं। (1) [1840]

---

989 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
990 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
991 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 992 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

मेरे पास अग्नि के लिए भेंट थी
और कुछ सफेद कमल के फल भी;
इन्हें एक थैले में रखकर, मैं
उन्हें एक पेड़ के ऊपर लटका दिया। (2) [1841]

पद्ममुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, यज्ञ प्राप्तकर्ता,
मेरे उत्थान की कामना के साथ,
भीख मांगते हुए मेरे पास आया। (3) [1842]

प्रसन्न, [और] प्रसन्न हृदय से, [सर्वोच्च] आनंद उत्पन्न करते हुए, संसार को सुख प्रदान करते हुए,
मैंने बुद्ध को अपना फल दिया। (4) [1843]

स्वर्ण रंग के संबुद्ध, बलि प्राप्तकर्ता,
आकाश में खड़े शिक्षक,
[तब] मेरे बारे में यह श्लोक कहा: (5) [1844]

“इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ [कुछ] फल के इस उपहार के कारण, एक लाख युगों तक
उसे किसी बुरे पुनर्जन्म का पता नहीं चलेगा।” (6) [1845]

केवल उन्हीं स्वस्थ जड़ों के माध्यम से, मैंने खुशी का अनुभव किया
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है
सभी विजय और पराजय से परे। (7) [1846]

सातवें युग पूर्व
मैं राजा सुमंगल था,
महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (8) [1847]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1848]

इस प्रकार पूज्य फलाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे

फलाडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

993 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है, जैसा कि 472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

---

128. Ñāṇasaññaka994

मैं एक पहाड़ पर रहता था
हिमालय पर्वत में।
कुछ शुद्ध [सफेद] रेत देखकर मैंने
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को याद किया: (1) [1849]

“ज्ञान की कोई उपमा नहीं है;
न ही गुरु से मिलने की।995
सभी शिक्षा सीखने के बाद
उस ज्ञान से व्यक्ति मुक्त हो जाता है। (2) [1850]

हे श्रेष्ठ व्यक्ति, आपकी जय हो! 996
हे परम पुरुष, आपकी जय हो!
आपके जैसा कोई नहीं है
ज्ञान के संदर्भ में, सर्वश्रेष्ठ पुरुष।” (3) [1851]

ज्ञान में [मेरे] हृदय को प्रसन्न करके, मैंने स्वर्ग में एक युग का रोमांच अनुभव किया
शेष युगों के दौरान,
मैंने वह अच्छा कर्म पूरा किया।997 (4) [1852]

तब से इक्यावन युगों में
मुझे वह बोध प्राप्त हुआ [तब], मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
ज्ञान-बोध का फल। (5) [1853]

तिहत्तरवें युग में
एक [नाम] पुलिनापुप्पिया998
वह एक महान शक्तिवान, सात रत्नों का स्वामी, एक चक्र-चालक था। (6) [1854]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया! (7) [1855]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 994 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
995 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
996 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
997 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
998 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

इस प्रकार पूज्य ञाणसञ्ञक थेरा ने ये श्लोक कहे।

ञाणसञ्ञक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

129. Gandhapupphiya999

स्वर्ण रंग के संबुद्ध विपस्सी, आदरणीय, अपने सभी अनुयायियों द्वारा सम्मानित, 1000
मठ से प्रस्थान किया। (1) [1856]

सर्वज्ञ, निष्कलंक, सर्वश्रेष्ठ बुद्धों को देखकर,
मैंने सुगंधित फूल पूजा की ।
खुश, [और] प्रसन्न हृदय से। (2) [1857]

द्विपद-भगवान, तटस्थ के लिए मेरे हृदय में उस आनंद के कारण,
मैंने फिर से प्रसन्न होकर तथागत की पूजा की। (3) [1858]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने वह फूल [उसे] भेंट किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [1859]

मैं बुद्ध नाम का एक शासक था,964,965, एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (8) [1798]
वारण नामक क्षत्रिय

वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (5) [1860]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1861]

इस प्रकार पूज्य गंधपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

गंधपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 999 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है

1000 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1001 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

130. पद्मपूजक 1002

हिमालयी क्षेत्र में,
गौतम नाम का एक पर्वत है। यह विभिन्न प्रकार के पेड़ों से ढका हुआ है,
और भूतों के एक बड़े समूह का अड्डा। (1) [1862]

उस [पहाड़] के बीच में एक आश्रम बनाया गया था। [मेरे अपने] छात्रों से घिरा हुआ,
मैं उस आश्रम में रहता था [उस समय]। (2) [1863]

"छात्र समूह मेरे पास आए;
वे मेरे लिए एक गुलाबी कमल लाएँ;
आइए बुद्ध- पूजा करें
द्विपद भगवान, तटस्थ के लिए।" (3) [1864]

"जी हाँ, चलिए" कहते हुए उन्होंने सहमति दी और एक गुलाबी कमल का फूल लाए। इसे एक अवसर बनाकर,
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। (4) [1865]

फिर, छात्रों को इकट्ठा करके,
मैंने उन्हें अच्छी तरह से सलाह दी: "कभी भी लापरवाह मत बनो;
[उत्साह] रखो, सुख लाओ।" (5) [1866]

इस प्रकार उन छात्रों को सलाह देने के बाद जो मेरे शब्दों के प्रति धैर्यवान थे,1003 [और] परिश्रमी सद्‌गुण से बंधे हुए थे,
मैं उस समय [वहाँ] चल बसा। (6) [1867]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने [उसे] वह फूल भेंट किया, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (7) [1868]

इक्यावनवें युग में [इसलिए]
एक राजा था, जलुत्तमा,
एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (8) [1869]
चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1002 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1003 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9)

इस प्रकार पूज्य पद्मपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे

पद्मपुजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

सेरेय्याका, पुप्फथुपी, पायास-ओडकी-थोमका, आसनी-फला [और] सन्नी,
गंध और पद्मपुप्पिया। अर्थ के ज्ञाताओं द्वारा प्रचारित सौ से अधिक श्लोकों में से पाँच।

तेरहवाँ सेरेय्याक अध्याय

शोभिता अध्याय, चौदहवाँ

---

131. शोभिता

विजेता पदुमुत्तरा,
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल, लोगों के एक बड़े समूह के सामने

उन्होंने अमरता के मार्ग का उपदेश दिया। (1) [1870]

[फिर] उनके शब्दों को सुनकर, उनके उन राजसी शब्दों को सुनकर, मैंने अपने दोनों हाथों को एक साथ दबाया,
उस समय मैं शांत हो गया। (2) [1871]

"चूंकि [महान] महासागर समुद्रों में सबसे आगे है, [और] चट्टानों का ढेर मेरु
(3) यह सर्वश्रेष्ठ पर्वत है, (3) इसी प्रकार जो लोग हृदय द्वारा नियंत्रित होते हैं वे एक इंच भी पास नहीं आते।
बुद्ध के ज्ञान का।" (4) [1872]1004
बुद्ध, करुणामय, ऋषि, धम्म- पद्धति को प्रस्तुत करते हुए,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1004 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए,
[मेरे बारे में तब] यह श्लोक कहा: (5) [1873]

"जो बुद्ध, विश्व-नेतृत्वकर्ता, के एक लाख युगों तक जीवित रहने पर भी इस प्रकार ज्ञान की प्रशंसा करता है।"
किसी बुरे पुनर्जन्म का ज्ञान नहीं होगा। (6) [1874]

दोषों को नष्ट करके, शांत और ध्यानपूर्वक,
वह शिक्षक का अनुयायी होगा,
शोभिता के नाम से जाना जाता है।" (7) [1875]

मैंने अपने दोषों को जला दिया है, सभी [नया] अस्तित्व नष्ट हो गया है
त्रिविध ज्ञान प्राप्त हो गया है,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था। (8) [1877]1005
पचास हज़ारवें युग में
सात समुग्गत थे, 1006 चक्र घुमाने वाले महान शक्ति वाले राजा, सात रत्नों के स्वामी। (9) [1876]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [1878]

इस प्रकार पूज्य शोभिता थेरा ने ये श्लोक कहे

शोभिता थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

132. सुदस्सन 1007

वित्तत्था नदी के किनारे, एक अंजीर का पेड़ था जिस पर फल लगते थे

1005 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1006 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1007 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है। इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

1008 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1009 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के।

जब मैं उस पेड़ की तलाश कर रहा था
मैंने विश्व के नेता को देखा। (1) [1879]

एक पेंडानस1010 को खिलते हुए देखकर, एक डंठल काटने के बाद,
मैंने इसे बुद्ध को भेंट किया,
सिख धर्म, दुनिया का रिश्तेदार। (2) [1880]

"शाश्वत, अमर अवस्था के बारे में आपने जो भी ज्ञान प्राप्त किया है,
मैं उस ज्ञान की प्रशंसा करता हूँ,
हे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, हे महान ऋषि।" (3) [1881]

ज्ञान के लिए इस प्रकार पूजा करते हुए ,
मैंने [तब] फलदार अंजीर का पेड़ देखा; मुझे वह अनुभूति प्राप्त हुई:
यह ज्ञान- पूजा का फल है । (4) [1882]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने वह फूल [उन्हें] अर्पित किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
वह ज्ञान का फल है- पूजा । (5) [1883]

तेरहवें युग पूर्व
बारह [नाम वाले] फलुग्गता थे, 1011 महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा, सात रत्नों के स्वामी। (6) [1884]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [1885]

इस प्रकार पूज्य सुदस्सन थेरा ने ये श्लोक कहे
सुदस्सना थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

केक या जंकेट (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

1010 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1011 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

---

133. चंदनपूजक 1012

चंदभागा नदी के किनारे, मैं उस समय एक किन्नर था
मैं फूलों को अपने भोजन के रूप में इस्तेमाल करता था
और फूलों से बने कपड़े पहनता था। (1) [1886]

लेकिन अत्थादस्सी, हे भगवान,
दुनिया के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, जंगल की छत से चले गए,
जैसे हंस-राजा हवा में उड़ता है। (2) [1887]

“हे सुसंस्कृत व्यक्ति, आपकी प्रशंसा हो;
आपका हृदय [इतना] शुद्ध है।
आपका रंग [आपकी] खुशी दर्शाता है;
आपका चेहरा [आपकी] इंद्रियों की स्पष्टता दर्शाता है।” (3) [1888]

महान बुद्धि वाले ज्ञानी, आकाश से अवतरित होकर, अपना ऊपरी वस्त्र फैलाते हुए
[बैठा] 1015 उस पर, पैर एक साथ क्रॉस करके। (4) [1889]

चंदन का तेल लेकर, मैं विक्टर के पास गया। खुश, मेरे दिल में आनंद के साथ,
मैंने [वह तेल] बुद्ध को दिया। (5) [1890]

संसार के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के बैल, संबुद्ध की पूजा करने के बाद, मुझे बहुत आनंद आया,
मैं उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (6) [1891]

चंदन पूजा करने के बाद से अठारह सौ युगों में ,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (7) [1892]

चौदहवें युग पूर्व

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1012 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1013 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1014 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1015 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

वहाँ तीन लोग थे [जो तब रहते थे], [सभी] रोहिणी नाम से जाने जाते थे, 1016
महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा। (8) [1893]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [1894]

इस प्रकार पूज्य चंदनपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे

चंदनपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

134. पुप्फचदानीय 1017

सुनंदा 1018 के नाम से जाने जाने वाले ब्राह्मण
जो मंत्रों का ज्ञाता था, विद्वान पुरुष था, भीख मांगने के योग्य था, उसने वाजपेय की बलि दी। 1019 (1) [1895]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञाता,
शीर्ष, दयालु, ऋषि, लोगों पर दया करने वाले,
आकाश में इधर-उधर विचरण करते रहे। (2) [1896]

इस प्रकार, सर्वज्ञ, विश्व नेता, इच्छा रहित संबुद्ध ने उनके प्रति प्रेम रखते हुए उनका अनुसरण किया।
तब 1020 अनगिनत प्राणियों को रोमांचित किया। (3) [1897]

फूलों की एक डंडी तोड़कर, मंत्रों के उस ब्राह्मण गुरु ने अपने सभी छात्रों को इकट्ठा किया,
उन्हें सीधे आकाश में फेंक दिया। (4) [1898]

वहाँ एक पुष्पीय छत्र था

1016 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1017 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1018 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1019 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1020 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

पूरे शहर पर 1021 फिर;
बुद्ध की शक्ति से,
वे वहाँ पूरे एक सप्ताह तक रहे। 1022 (5) [1899]

केवल उन्हीं पौष्टिक जड़ों के माध्यम से, सुख का अनुभव करते हुए,
सभी दोषों को अच्छी तरह जानते हुए,
मैंने सांसारिक बंधनों को पार कर लिया है। (6) [1900]

ग्यारहवें युग में
पैंतीस [अलग-अलग] राजा थे1023
अंबरमसासमा के नाम से जाने जाने वाले, 1024
महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा। (7) [1901]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8)

इस प्रकार पूज्य पुप्पचादनिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

पुप्पचादनिया थेरा की कथा समाप्त होती है

135. रहोसञ्ञक 1025

हिमालय श्रृंखला के पास,
वासभा नाम का एक पर्वत है। मेरा आश्रम बहुत अच्छी तरह से बना है
[वहाँ] उस पर्वत की तलहटी में। (1) [1902]

उस ब्राह्मण ने उस समय तीन हज़ार वर्षों तक [अपनी शिक्षाएँ] दीं। छात्रों को एक साथ लाकर,1026
वह एक तरफ [वहाँ, बैठे] रहते थे। (2) [1903]

मंत्रों के ब्राह्मण गुरु, एक तरफ [वहाँ] बैठे हुए,

1021 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1022 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama
1023 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
1024 lit., "गया"
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1025 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1026 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

बुद्ध के ज्ञान की खोज में, 1027
ज्ञान पर उनका हृदय प्रसन्न हुआ [तब]। (3) [1904]

वहाँ अपने मन को प्रसन्न करने के बाद, मैं पत्तों से बनी चटाई पर बैठ गया; पद्मासन में,1028
मैं मौके पर ही चल बसा। (4) [1905]

तब से इकत्तीस युगों में
मुझे वह बोध प्राप्त हुआ [तब], मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
ज्ञान को समझने का फल। (5) [1906]

सत्ताईसवें युग में एक राजा था, सिरिधारा, 1030
एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (6) [1907]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [1908]

इस प्रकार पूज्य रहोसंञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे।

रहोसंञ्चक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

136. कैम्पकपुप्पिया 1031

[मैंने बुद्ध को देखा], भोर का तारा, 1032
डिनर-प्लेट वृक्ष की तरह चमकता हुआ, 1033

1027 कुम्मासा , संस्कृत कुलमासा , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के केक या जंकेट के रूप में (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है
1028 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1029 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1030 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1031 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1032 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1033 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

एक पर्वत के भीतर बैठकर, सभी दिशाओं का सर्वेक्षण कर रहे थे। (1) [1909]

तब तीन युवा ब्राह्मण पुरुष थे, जो अपनी-अपनी [ब्राह्मण] कलाओं में अच्छी तरह से प्रशिक्षित थे।1034
तपस्वियों का सामान लेकर,
वे मेरे पीछे आ रहे थे। (2) [1910]

एक थैले में सात फूल थे
वे तपस्वी वहाँ लेट गए थे। उन्हें उठाकर मैंने उन्हें
वेसभु के ज्ञान के लिए दिया। (3) [1911]

तब से इकत्तीस युगों में

मैंने वे फूल [उसे] अर्पित किए,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह ज्ञान का फल है- पूजा । (4) [1912]

उन्नीसवें युग में [इसलिए,] विहताभ नामक एक राजा, 1035
महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (5) [1913]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1914]

इस प्रकार पूज्य चंपकपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

कैम्पाकापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

137. अत्थासंदसक 1036

एक बड़ी, नुकीली इमारत में बैठे, 1037
मैंने विश्व के नेता को देखा, निष्कलंक, शक्ति से परिपूर्ण,
भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित। (1) [1915]

1034 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
1035 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित
{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 1036 अपदान संख्याएँ BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं
1037 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

"देखकर कौन प्रसन्न नहीं होगा
एक लाख को तीन गुना ज्ञान, विशेष ज्ञान, 1038 महाशक्तियों के साथ,
संबुद्ध के चारों ओर? (2) [1916]

असीम ज्ञान वाले संबुद्ध को देखकर कौन प्रसन्न नहीं होगा, जिनके ज्ञान में कोई निकट नहीं आता
[इस दुनिया में] इसके देवताओं और मनुष्यों के साथ? (3) [1917]

देखकर कौन प्रसन्न नहीं होता
[उसे,] संपूर्ण,1039 रत्नों की खान, धम्म -शरीर की व्याख्या1040

[जिसे कोई] कभी चोट नहीं पहुँचा सकता?” (4) [1918]

नारद सरगच्छिया
इन तीन श्लोकों को कहकर [तब]
स्तुति की 1041 [बुद्ध] पदुमुत्तरा,
अजेय, संबुद्ध। (5) [1919]

मेरे हृदय में उस आनंद और बुद्ध की मेरी स्तुति के कारण, एक लाख युगों तक
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है। (6) [1920]

तीसवें युग में [इसलिए]
सुखित्त1042 नामक क्षत्रिय
वह एक महान शक्ति वाला पहिया घुमाने वाला था, सात रत्नों का स्वामी था। (7) [1921]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया! (8) [1922]

इस प्रकार पूज्य अत्थासंदसक थेरा ने ये श्लोक कहे।

अत्थासंदसक थेरा की कथा समाप्त होती है

1038 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1039 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1040 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1041 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama
1042 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

---

138. एकपासादनिया 1043

[यद्यपि] मेरा नाम “नारद” था, फिर भी मैं [तब] “केशव” के नाम से जाना जाता था,1044 जो अच्छे और बुरे दोनों की तलाश करता था,1045
मैं बुद्ध की उपस्थिति में आया। (1) [1923]

प्रेममय हृदय वाले, करुणामय, अत्थादस्सी, इतने महान ऋषि, [संसार के] प्राणियों को सांत्वना देने वाले,
आँखों से परिपूर्ण व्यक्ति ने अपने धम्म का उपदेश दिया । (2) [1924]

अपने दोनों हाथों को अपने सिर पर रखकर, अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए,
शिक्षक की पूजा करने के बाद,
मैं पूर्व की ओर मुख करके चला गया। (3) [1925]

सत्रह सौवें युग में मैं राजा था, पृथ्वी का शासक, अमितवासना के नाम से जाना जाता था, 1046
एक शक्तिशाली पहिया घुमाने वाला। (4) [1926]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1927]

इस प्रकार पूज्य एकापासादनिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

एकापासादनिया थेरा की कथा समाप्त होती है

---

139. सालपुप्फदायक 1047

मैं उस समय जानवरों का राजा था, एक [जंगली] शेर जो निडर था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1043 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1044 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1045 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1046 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1047 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

एक पहाड़ी चट्टान में शिकार करते समय,

मैंने दुनिया के नेता को देखा। (1) [1928]

"यही महान नायक होगा;
वह बहुत से लोगों को मुक्त करेगा। 1050
तो फिर क्या मुझे उसके पास नहीं जाना चाहिए?
देवताओं के देवता, मनुष्यों में बैल?" (2) [1929]

साल के पेड़ की एक शाखा तोड़ना
मैं [इसे] ले गया, फूल [और] कलियाँ।1051
संबुद्ध के पास पहुँचकर,
मैंने [उन्हें] वे उत्कृष्ट फूल दिए। (3) [1930]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने [उसे] वे फूल अर्पित किए, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
वह पुष्प- पूजा का फल है । (4) [1931]

और नौ युग पहले
उस समय तीन [अलग-अलग] राजा थे
विरोचना नाम से जाने जाते थे, 1052
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले सम्राट। (5) [1932]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1933]

इस प्रकार पूज्य सालपुप्पदायक थेरा ने ये श्लोक कहे।

सालपुप्पदायक थेरा की कथा समाप्त होती है

1048 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1049 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1050 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

1051 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1052 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

140. पियालाफलदायक 1053

मैं तब दूसरों को हानि पहुँचाने वाला था, अन्य प्राणियों का हानिकर्ता। 1054
मैं एक [पहाड़] ढलान पर विश्राम कर रहा था
शिक्षक के पास [जिन्हें] सिख धर्म के नाम से जाना जाता है। (1) [1934]

शाम और सुबह में
मैंने विश्व-प्रमुख बुद्ध को देखा। [लेकिन] मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं था
द्विपद-स्वामी, तटस्थ। (2) [1935]

एक पियाला फल लेकर , मैं
बुद्ध की उपस्थिति में गया।
भगवान ने इसे स्वीकार किया,
दुनिया के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल। (3) [1936]

तब से दूसरों के हित में मैंने मार्गदर्शक सिख की सेवा की,1055 और उस प्रसन्नता के साथ अपने हृदय में
मैं वहीं पर मर गया। (4) [1937]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने वह फल [बुद्ध को] दिया, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
फल देने का फल यही है। (5) [1938]

पंद्रहवें युग पूर्व
तीन [पुरुष] थे जिनका नाम मालाभी था, महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा, सात रत्नों के स्वामी। (6) [1939]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [1940]

इस प्रकार पूज्य पियालफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे

पियालाफलदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1053 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है

1054 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1055 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन

(पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

सारांश:

सोभी और सुदस्सना भी, चंदन, पुप्पचदना, राहो और चंपकपुफ्फी और अत्थासंदसक, एकदुस्सी, सालददा के साथ
[और] फलाडायक, दसवां।
गिनने पर स्पष्ट रूप से [यहाँ] हैं
सत्तर श्लोक और दो [अधिक]

शोभिता अध्याय, चौदहवाँ।

छत्त अध्याय, पंद्रहवाँ

---

141. अधिच्छत्तिया 1056

जब भगवान बुद्ध का देहांत हुआ, 1057
अत्थादस्सी, परम पुरुष, ने एक ऊपरी छत्र बनवाया, 1058
मैंने इसे [उनके] स्तूप पर [तब] रखा। (1) [1941]

समय-समय पर [वहाँ] आकर, मैंने विश्व-नेता का आदर किया। एक पुष्प आवरण बनवाकर
मैंने इसे छाते पर रख दिया। (2) [1942]

मैंने सत्रहवें युग [पहले] में दैवीय शासन किया।
मैं मानवीय अवस्था में नहीं गया:
यह स्तूप -पूजा का फल है । (3) [1943]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [1944]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1056 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं
1057 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1058 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन

(पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

इस प्रकार पूज्य अधिच्छत्तीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अधिच्छत्तीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

142. थंबरोपक 1059

जब जगत के स्वामी निर्वाण को प्राप्त हुए, तो पुरुषों के बैल, धम्मदस्सी,
मैंने बैनरों वाला एक स्तंभ लगाया
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध स्तूप पर [तब]। (1) [1945]

सीढ़ी बनाने के बाद
मैं उस सबसे अच्छे स्तूप पर चढ़ गया। एक सफेद चमेली का फूल लेकर
मैंने उसे उस खंभे पर रख दिया। (2) [1946]

हे! बुद्ध! हे! शिक्षा!
हे! हमारे गुरु की [महान] उपलब्धि! मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का ज्ञान नहीं है:
यह स्तूप -पूजा का फल है । (3) [1947]

इसके बाद चौरानवेवें युग में
थूपसिखा नाम से जाने जाने वाले सोलह [विभिन्न] सम्राट थे, 1060
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले राजा। (4) [1948]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1949]

इस प्रकार पूज्य थंबरोपका थेरा ने ये श्लोक कहे।

थंबरोपका थेरा की कथा समाप्त होती है

---

143. वेदिकारक 1061

जब जगत के स्वामी निर्वाण को प्राप्त हुए, पियादस्सी, परम पुरुष,

---

{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 1059 अपदान क्रमांक बीजेटीएस संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें पीटीएस संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है

1060 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1061 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से, मैंने बुद्ध की एक रेलिंग बनाई। (1) [1950]

इसे रत्नों से घेरकर मैंने वह अंतिम [रेल] बनाई, और उस महान रेलिंग को बनाकर
मैं मौके पर ही चल बसा। (2) [1951]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूँ, चाहे वह मानव हो या दिव्य, आकाश में रत्न ले जाए जाते हैं:
यह अच्छे कर्मों का फल है। (3) [1952]

सोलहवें युग में
बत्तीस [अलग-अलग] राजा थे, [सभी] महान शक्ति वाले चक्र-चालक,
[और उनका नाम] मणिप्पभा रखा गया।1062 (4) [1953]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया! (5) [1954]

इस प्रकार पूज्य वेदिकारक थेरा ने ये श्लोक कहे।

वेदिकारक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

144. सपरीवारिया 1063

विजेता, पद्ममुत्तरा,
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल, आग के धधकते स्तंभ की तरह,
तब संबुद्ध का देहांत हो गया।1064 (1) [1955]

जब महान वीर का देहांत हुआ,1065

1062 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1063 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1064 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1065 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

वहाँ एक स्तूप बनाया गया था। दिन-रात वे सेवा करते रहे।
परम उत्तम अवशेष-गर्भ। (2) [1956]

प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से
मैंने चंदन की रेलिंग बनाई,
और ढेर सारी धूप भी दी,
तब स्तूप उपयुक्त था। (3) [1957]

अस्तित्व में स्थानांतरण करते हुए, चाहे वह मानवीय हो या दिव्य, मैंने कोई निम्न अवस्था नहीं देखी:
यह पूर्व कर्मों का फल है। (4) [1958]

पंद्रह सौ युग पहले, आठ लोग थे
उन सभी का नाम समात्ता था, 1068
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले राजा। (5) [1959]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1960]

इस प्रकार पूज्य सपरिवरीय थेरा ने ये श्लोक कहे

सपरिवरीय थेरा की कथा समाप्त होती है।

---

145. उम्मापुप्फिया 1069

जब सिद्धार्थ, धन्य, यज्ञ प्राप्तकर्ता,
विश्व पूजित का देहांत हुआ, 1070
एक स्तूप उत्सव 1071 हुआ। (1) [1961]

1066 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

1067 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1068 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1069 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1070 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1071 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

जब उत्सव चल रहा था
महान ऋषि सिद्धार्थ के लिए, एक [नीला] अलसी का फूल लेकर1072 [तब
मैंने इसे स्तूप पर रखा। (2) [1962]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने वह फूल [वहाँ] अर्पित किया, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह स्तूप -पूजा का फल है । (3) [1963]

और नौ युग पहले
अस्सी सम्राट थे। [सभी] सोमदेव के नाम से जाने जाते थे, 1073
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले राजा। (4) [1964]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1965]

इस प्रकार पूज्य उम्मापुप्फिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

उम्मापुप्फिया थेरा की कथा समाप्त होती है

---

146. अनुलेपादायक 1074

मैंने [महान] ऋषि, अनोमादस्सी की बोधि-रेलिंग1075 बनाई। प्लास्टर के गोले देने के बाद,

मैंने [सारा] काम हाथ से किया। (1) [1966]

अनोमादस्सी, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति,
शिक्षक, भिक्षुओं के साथ बैठे हुए, 1076
उस कार्य को इतनी अच्छी तरह से किया हुआ देखकर,
[तब] मेरे बारे में यह श्लोक कहा: (2) [1967]

1072 रत्तंबरधारो , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है

1073 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 1074 अपदान संख्याएँ BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1075 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

1076 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

“इस प्लास्टरिंग कार्य के कारण, और [उसके] इरादे1077 और संकल्प के कारण, सुख का आनंद लेने के बाद,
वह दुख का अंत करेगा।” (3) [1968]

मेरे चेहरे के भाव मेरी खुशी दर्शाते हैं; मैं शांत और आत्म-नियंत्रित हूँ।
मैं अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ
बुद्ध के 1078वें युग में। (4) [1969]

जब सौवां युग पहले और उससे कम नहीं पूरा हो गया था,
मुझे 1079 में राजा सब्बागघना नाम दिया गया, 1080
एक महान शक्ति वाला पहिया घुमाने वाला। (5) [1970]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1971]

इस प्रकार पूज्य अनुलेपादायक थेरा ने ये श्लोक कहे

अनुलेपादायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

147. मग्गदायक 1081

आँखों से परिपूर्ण वह नदी पार करने के बाद जंगल में चला गया
मैंने सिद्धार्थ, 1082 संबुद्ध को देखा,
सभी उत्कृष्ट लक्षणों को धारण करते हुए। (1) [1972]

कुदाल 1083 और टोकरी लिए हुए
मैंने [तब] उस रास्ते को समतल किया,

1077 रत्तंबरधारो , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को संदर्भित करता है

1078 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1079 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

1080 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1081 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1082 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

1083 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है।

और शिक्षक की पूजा करने के बाद,
मैंने अपने हृदय को बहुत प्रसन्नता दी। (2) [1973]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
सड़क बनाने का यही फल है। (3) [1974]

सत्तावनवें युग में,
शीर्ष पर एक ही व्यक्ति था;
वह एक स्वामी, मनुष्यों का शासक था,
[जो] सुप्पबुद्ध के नाम से जाने जाते थे।1084 (4) [1975]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया! (5) [1976]

इस प्रकार पूज्य मगदायका थेरा ने ये श्लोक कहे।

मगदायका थेरा की कथा समाप्त होती है

148. फलकदायक 1085

शहर में एक गाड़ी बनाने वाला,
मैं लकड़ी के काम में कुशल था। चंदन का तख्ता बनाने के बाद
मैंने इसे दुनिया के रिश्तेदार को दे दिया। (1) [1977]

सोने से बना, यह दिव्य महल [सभी दिशाओं] को रोशन करता है। हाथी, दिव्य और अश्व
मुझे रथ उपलब्ध कराए जाते हैं। (2) [1978]

महल और पालकी भी
इच्छा अनुसार निर्मित किए जाते हैं;
बिना छाने, 1086 रत्न मेरे पास आते हैं:
यह एक तख्ते-[उपहार] का फल है। (3) [1979]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने [उसे] वह तख्ता-[उपहार] तब दिया था,

1084 रत्तंबरधारो , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को संदर्भित करता है
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1085 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।
1086 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
जो एक तख्ते-[उपहार] का फल है। (4) [1980]

सत्तावनवें युग में,
चार [पुरुष जिनका नाम] भवानीमित्त1087 था
महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले राजा थे। (5) [1981]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1982]

इस प्रकार पूज्य फलकदायक थेरा ने ये श्लोक कहे

फलकडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

149. वटंसकिया 1088

स्वयं-रूप, अजेय, सुमेधा के नाम से जाने जाने वाले [बुद्ध], अपने विरह को सुदृढ़ करते हुए,
एक बड़े जंगल में चला गया। (1) [1983]

एक साल के पेड़ को खिलते हुए देखकर ,
मैंने [तभी] एक बालों का हार बांधा। विश्व नेता के आमने-सामने,
मैंने [वह हार] बुद्ध को दिया। (2) [1984]

जब से मैंने [उन्हें] वह फूल अर्पित किया है, तब से तीस हज़ार युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [1985]

उन्नीस सौवें युग में
सोलह [नाम वाले] निम्मिता, 1089 महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा, सात रत्नों के स्वामी थे। (4) [1986]

1087 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1088 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।
1089 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1987]

इस प्रकार पूज्य वतंसकिया थेरा ने ये श्लोक कहे

वतंसकिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

150. पल्लंकडायक 1090

मैंने सुमेधा को, जो विश्व का सर्वश्रेष्ठ, धन्य, तटस्थ है,
एक [अच्छी तरह से बना हुआ] सोफा [उसके उपयोग के लिए,]
जिस पर एक ऊपरी आवरण था। (1) [1988]

उस समय वह [अच्छी तरह से बना हुआ] सोफा सात रत्नों से जड़ा हुआ था
मेरी सोच के अनुसार,
[वह] हमेशा मेरे लिए उत्पादित होता है।1091 (2) [1989]

तीस हज़ार युगों में
जब से मैंने [उसे] वह सोफा दिया है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
जो सोफे-[उपहार] का फल है। (3) [1990]

बीस हज़ारवें युग में,
वहाँ तीन [नाम वाले] सुवन्नाभ थे, 1092 चक्र घुमाने वाले राजा, महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी। (4) [1991]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [1992]

इस प्रकार पूज्य पल्लंकडायक थेरा ने ये श्लोक कहे

पल्लंकडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1090 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1091 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1092 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

सारांश:

चट्टा, थंबा और वेदी, परिवार', उम्मापुफिया, अनुलेपा, मग्गदायि, फलदायि, वातांसक, पल्लंकादायि, छप्पन
श्लोक [इस प्रकार] यहाँ घोषित किए गए हैं।

चट्टा अध्याय, पंद्रहवाँ।

बंधुजीवक अध्याय, सोलहवाँ

---

151. बंधुजीव 1093

मैंने उसे देखा, चाँद की तरह निर्मल, शुद्ध और उज्ज्वल, शांत,
उसकी आनंदमय अवस्थाएँ समाप्त हो गईं, संसार के बंधनों से परे, लोगों को निर्वाण तक पहुँचाते हुए,
पार कर लिया है, और दूसरों को पार करने में मदद कर रहा हूँ, जंगल में ध्यान कर रहा हूँ,
शांत और पूरी तरह से आत्म-नियंत्रित। (1-2) [1993-1994]

फिर, थ्रेडिंग1094 बंधुजी'व'आका 1095
एक डोरी पर फूल,
मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया,
सिख धर्म, संसार का रिश्तेदार। (3) [1995]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [1996]

सातवें युग पूर्व
मनुष्यों के स्वामी, जो बहुत प्रसिद्ध हैं,

{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 1093 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1094 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1095 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

वहाँ एक शक्तिशाली चक्र-घुमाने वाला राजा था
जिसका नाम समंतचक्खु था।1096 (5) [1997]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [1998]

इस प्रकार पूज्य बंधुजीवका थेरा ने ये श्लोक कहे

बंधुजीवका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

152. ताम्बापुप्पिया 1097

दूसरों के परिवहन कार्य में कार्यरत रहते हुए, मैंने 1098 में एक अपराध किया था। मुझे जंगल में निर्वासित कर दिया गया था;
डर से भरा हुआ, मैं भयभीत था। (1) [1999]

फूलों से लदे एक पेड़ को देखकर
छोटे, सुव्यवस्थित गुच्छों के साथ, तांबे के रंग का एक फूल चुनते हुए,
मैंने इसे बोधि पर बिखेर दिया। (2) [2000]

उस बोधि, परम पाटली वृक्ष के चारों ओर झाड़ू लगाने के बाद,
पद्मासन में आना,1099
मैं बोधि वृक्ष की जड़ों में रुका था। (3) [2001]

जिस रास्ते पर मैं गया था, उसे खोजते हुए, वे मेरे सामने आ गए। और उन्हें देखते ही, वहीं पर
मुझे उत्कृष्ट बोधि याद आया। (4) [2002]1101

1096 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को संदर्भित करता है

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1097 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

1098 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1099 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1100 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

1101 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

बोधि [वृक्ष] की पूजा करने के बाद
एक ऐसे मन के साथ जो बहुत स्पष्ट था,
मुझे विभिन्न प्रकार के 1102 पेड़ मिले [तब]

एक भयानक पहाड़ी चट्टान के अंदर। (5) [2003]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने वह फूल [उसे] भेंट किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (6) [2004]

इसके तीसवें युग में
एक राजा था, शमफुशिता,1103 एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (7) [2005]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [2006]

इस प्रकार पूज्य तंबपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

ताम्बापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

153. विथिसमज्जक 1104

[मैंने देखा] विश्व-प्रमुख सौ किरणों वाले उगते सूरज की तरह, दोपहर के पीले किरणों वाले सूरज की तरह निकलते हुए
पंद्रहवें [दिन] को चंद्रमा1105 की तरह।1106 (1) [2007]

वहाँ अड़सठ हज़ार [भिक्षु] थे, जिन्होंने संबुद्ध के चारों ओर सभी दोषों को नष्ट कर दिया था,
द्विपाद-स्वामी, मनुष्यों का बैल। (2) [2008]

1102 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं बीजेटीएस सिंहली व्याख्या बलन्ना वु मामा का अनुसरण करता हूँ

1103 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1104 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1105 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1106 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

उस सड़क को साफ करने के बाद
विश्व नेता, सारथी, मैंने [तब] वहाँ एक बैनर फहराया,
एक ऐसे दिमाग के साथ जो बहुत स्पष्ट था। (3) [2009]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने वह बैनर [उसे] दिया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
बैनर देने का यही फल है। (4) [2010]

उसके बाद चौथे युग में मैं एक महान शक्ति वाला राजा था, जो सुधज1107 के नाम से प्रसिद्ध था।
और सभी लक्षणों से युक्त था। (5) [2011]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2012]

इस प्रकार पूज्य विथिसमज्जक थेरा ने ये श्लोक कहे

विथिसमज्जक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

154. कक्कारूपुजक 1108

एक देवता का पुत्र होने के नाते,
मैंने 1109 सिख धर्म, जो कि नेता है, की पूजा की। कक्कारू का फूल लेकर
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। (1) [2013]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने वह फूल [उसे] भेंट किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [2014]

और नौ युग पहले
मैं राजा सत्तुत्तमा था, 1110

1107 रत्तंबरधारो , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबर धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1108 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

1109 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1110 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर वाली रोटी या जंकेट (पीएसआई: सिंह. रोटीया) के रूप में। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2015]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2016]

इस प्रकार पूज्य कक्कारूपुजक थेरा ने ये श्लोक कहे।

कक्कारूपुजक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

155. मंदारवपूजक 1111

एक देवता का पुत्र होने के नाते,
मैंने मंदारवा के फूलों से सिख धर्म के नेता की पूजा की [जो]
मैंने [तब] बुद्ध को अर्पित किया। (1) [2017]

उस दिव्य माला ने
तथागत को पूरे एक सप्ताह तक ढके रखा। सभी लोग वहाँ एकत्रित होकर तथागत का आदर कर रहे थे। (2) [2018]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने तब पुष्प पूजा की।
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2019]

और दसवें युग पूर्व
मैं राजा था, जुटिंदारा, 1113
महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2020]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2021]

संभवतः और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1111 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1112 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1113 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

इस प्रकार पूज्य मंदारवपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे।

मंदारवपूजक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

156. कदंबपुप्पिया 1114

हिमालयी क्षेत्र में,
कुक्कुट नाम का एक पर्वत है।
उसी पर्वत की तलहटी में,
सात [अकेले] बुद्ध निवास करते थे।1116 (1) [2022]

खिले हुए कदम [वृक्ष] को देखकर, जैसे सभी दीपों के उठे हुए राजा,1117 दोनों हाथों से [फूल] लेते हुए
मैंने उन्हें बुद्धों पर रखा। (2) [2023]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने तब पुष्प पूजा की।
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2024]

बानवेवें युग में
सात [नाम वाले] फुल्लानायका1118
महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले राजा थे। (4) [2025]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2026]

इस प्रकार पूज्य कदंबपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

कदंबपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1114 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है

1115 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1116 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1117 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1118 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

---

157. तिणासुलका 1119

हिमालयी क्षेत्र में,
वहाँ एक पर्वत है, भूतगण।1120
एक [अकेला] विजेता वहाँ रहता था,
स्वयं-निर्मित, एक संसार-अस्वीकारक। (1) [2027]

चमेली के फूल लेकर
मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया। एक लाख युगों से एक कम
मैं [पुनर्जन्म में] पीछे नहीं हटा।1121 (2) [2028]

ग्यारहवें युग में
[मैं] एक धरणीरुहा था,1122
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2029]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2030]

इस प्रकार पूज्य तिनसुलक थेरा ने ये श्लोक कहे।

तिनसुलक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

158. नागपुप्फिया 1123

सुवच्छा नाम का एक व्यक्ति था 1124
मंत्रों का एक ब्राह्मण गुरु, जिसे उसके अपने छात्रों ने आगे रखा था, एक पर्वत पर रहता था। (1) [2031]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1119 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1120 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1121 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1122 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1123 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1124 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

विजेता, पदुमुत्तरा, बलि प्राप्तकर्ता,
मेरे उत्थान की कामना के साथ
तब मेरी उपस्थिति में आए। (2) [2032]

वह आकाश में इधर-उधर चलता रहा, मानो वह धुआँ छोड़ रहा हो और जल रहा हो,1125 [और] मुझे मुस्कुराने के बाद,1126 वह पूर्व की ओर मुँह करके चला गया। (3) [2033]

और उस चमत्कार को देखकर, अजूबे से रोंगटे खड़े हो गए, एक आयरनवुड फूल लेकर,
मैंने [इसे] उसके रास्ते में बिखेर दिया।1127 (4) [2034]

उस फूल को बिखेरने के बाद से लेकर अब तक के लाखों युगों में, मेरे हृदय में उत्पन्न आनंद के कारण,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है। (5) [2035]

इकतीसवें युग में [इसलिए] मैं राजा, महारथ, 1128 था
महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (6) [2036]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [2037]

इस प्रकार पूज्य नागपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

नागपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

1125 कुम्मासा , संस्कृत कुलमासा , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (PSI यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" BJTS सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के केक या जंकेट के रूप में (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है

1126 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1127 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1128 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

159. पुन्नागपुप्पिया 1129

एक वन उपवन में गोता लगाते हुए,
मैं [तब] एक शिकारी के रूप में वहाँ रहता था। एक लॉरेल1130 के पेड़ को खिलते हुए देखकर,
मुझे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की याद आई। (1) [2038]

[उससे] एक फूल तोड़कर,
अच्छी तरह से सुगंधित [और] सुगंधों से महका हुआ, रेत का एक स्तूप बनाकर,1131
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। (2) [2039]

तब से बानवे युगों में
मैंने तब पुष्प पूजा की।
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2040]

इक्यावनवें युग में [तब से]
तामोनुदा, 1132 नामक एक शासक रहता था
एक चक्र-घुमाने वाला राजा, जिसके पास बहुत शक्ति थी और जो सात रत्नों का स्वामी था। (4) [2041]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2042]

इस प्रकार पूज्य पुन्नागपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

पुन्नागपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

160. कुमुददायक 1133

हिमालय पर्वतमाला के पास एक बड़ी, प्राकृतिक झील थी

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1129 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1130 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1131 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1132 रत्तंबरधरो , लिट., "लाल अम्बरा धारण करने वाला।" धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1133 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

गुलाबी और नीले कमलों से ढका हुआ,
चारों ओर बिखरे हुए सफेद कमलों के साथ।1134 (1) [2043]

उस समय मैं वहाँ एक पक्षी था, जिसे काकुधा नाम से जाना जाता था,1135 पुण्य/अपराध में विद्वान,1136
नैतिक और बुद्धिमान भी। (2) [2044]

पद्ममुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, यज्ञ प्राप्तकर्ता,
महान ऋषि उस [महान] झील के आसपास भटकते रहे। (3) [2045]

जल में उगा हुआ कमल लेकर,
मैंने इसे [तब] महान ऋषि को दे दिया। मेरे विचारों को समझते हुए,
उस महान ऋषि ने इसे स्वीकार किया। (4) [2046]

अपनी पवित्र जड़ों से प्रेरित होकर, एक लाख युगों तक वह उपहार देने के बाद
मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का ज्ञान नहीं हुआ है। (5) [2047]

सोलह सौवें युग में
आठ लोग थे, [जिनमें से सभी का] नाम वरुण था,
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले राजा। (6) [2048]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [2049]

इस प्रकार पूज्य कुमुददायक थेरा ने ये श्लोक कहे।

कुमुददायक थेरा की कथा समाप्त होती है

सारांश:

बंधुजीव, तांबपुफ्फी, वीथी, कक्कारापुप्फिया,

1134 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1135 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1136 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

मंदारवा, कदंबी, सुलिका, नागपुप्पिया, पुन्नागा और कोमुदी: इनमें छप्पन श्लोक हैं।
[इस अध्याय में, पूर्ण रूप से] घोषित किया गया।

बंधुजीवक अध्याय, सोलहवाँ

सुपरीकारिया अध्याय, सत्रहवां

---

161. सुपारिकारिया 1137

जिसका नाम पद्म था, मनुष्यों का बैल, द्विपद स्वामी, नेत्रों से परिपूर्ण, जो प्रस्थान कर रहा था
वन, [तब] धम्म का प्रचार कर रहा था । (1) [2050]

वहाँ एक आत्माओं का समूह (1138) उस महान ऋषि के निकट ठहर रहा था। वे जिस भी कार्य के लिए आए थे।
उन्होंने हर समय देखभाल की। (2) [2051]

बुद्ध के वचनों और अमरता के उपदेश को समझते हुए, प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से,
मैंने उंगलियां चटकाकर उसकी सेवा की। (3) [2052]

अच्छे अभ्यास के फल को देखो, महान शिक्षक की सेवा के फल को देखो: तीस हजार युगों में,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है। (4) [2053]

उनतीस सौवें युग में, समलंकटा नाम के एक [पुरुष],1139
वह एक महान शक्ति वाला पहिया घुमाने वाला था,
सात रत्नों का स्वामी। (5) [2054]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1137 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1138 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1139 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2055]

इस प्रकार पूज्य सुपारीचरिया थेरा ने ये श्लोक कहे

सुपारीचरिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

162. काणवेरापुप्पिया 1140

सिद्धार्थ नामक धन्य, विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित, 1141 तब शहर में प्रवेश किया। (1) [2056]

राजा के भीतरी कक्षों में1142 [वहाँ] मैं एक विश्वसनीय1143 पहरेदार के रूप में रहता था। जब मैं महल के अंदर होता था,

मैंने [बुद्ध], विश्व-नेता को देखा। (2) [2057]

एक काणवेरा फूल लेकर,
मैंने इसे भिक्षुओं में बाँट दिया।1144
फिर मैंने उनमें से कुछ और बाँट दिए
बुद्ध के लिए, अलग से। (3) [2058]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने वह पुष्प-अर्पण किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
पुष्प-अर्पण का फल । (4) [2059]

सत्तासीवें युग में
वहाँ चार [नाम] महिद्धिका, 1145 चक्र घुमाने वाले महान शक्ति वाले राजा, सात रत्नों के स्वामी थे। (5) [2060]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1140 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1141 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1142 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया))। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1143 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1144 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1145 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2061]

इस प्रकार पूज्य काणवेरापुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

काणवेरापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

163. खज्जकदायक 1146

पहले मैंने कुछ फल दिए थे [तब]
हे भगवान तिस्सा, मैंने [उन्हें] नारियल और साथ ही
मिठाई भी दी, जो उनके लिए उपयुक्त थी। (1) [2062]

और उसे बुद्ध को, महान ऋषि तिस्सा को, आनंद चाहने वाले1147 को देते हुए, मैं प्रसन्न हुआ,
जैसा मैंने चाहा, वैसे ही पुनर्जन्म हुआ। (2) [2063]

तब से बानवे युगों में
मैंने उसे तब वह उपहार दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही फल देने का फल है। (3) [2064]

तेरहवें युग पूर्व एक राजा थे, इंदसमा, 1148
एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2065]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2066]

इस प्रकार पूज्य खज्जकदायक थेरा ने ये श्लोक कहे

खज्जकदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1146 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है

1147 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1148 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है।

---

164. देसपूजक 1149

अत्थादस्सी, धन्य पुरुष,
विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, आकाश में आरोहित हुए
उस समय हवा में जा रहा था। (1) [2067]

मैंने उस स्थान की पूजा की जहाँ
गुरुजी खड़े ही थे कि तभी वह महान ऋषि ऊपर की ओर उठे।
[अपने] हाथों से प्रसन्न होकर। (2) [2068]

अठारह सौ युगों में
जब से मैंने महान ऋषि को देखा है [उस समय], मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह क्षेत्र- पूजा का फल है । (3) [2069]

ग्यारह सौवें युग में
मैं गोसुजाता के नाम से जाना जाता था, 1150
एक महान शक्ति वाला, चक्र घुमाने वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2070]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2071]

इस प्रकार पूज्य देसपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे

देसपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

165. कणिकारच्छदनिया 1151

वेसभु नामक संबुद्ध,
विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, ऋषि ने एक विशाल वन में प्रवेश किया
एक दोपहर आराम करने के लिए। (1) [2072]

डिनर-प्लेट फूल तोड़कर मैंने उसके लिए एक चंदवा बनाया

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1149 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1150 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1151 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

वह पुष्प चंदवा बनाते हुए,
मैंने इसे बुद्ध को भेंट किया। (2) [2073]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने [उन्हें] वे फूल अर्पित किए, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2074]

इसके बीसवें युग में
आठ राजा थे1152 [नाम] सोन्णाभ, चक्र-चालक जिनके पास महान शक्ति थी, सात रत्नों के स्वामी। (4) [2075]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2076]

इस प्रकार पूज्य कणिकारच्छदनिया थेरा ने ये श्लोक कहे

कणिकारच्छदनिया थेरा की कथा समाप्त होती है।

---

166. सप्पिदायक 1153

फिर, भगवान, जिनका नाम फुस्सा, यज्ञ प्राप्तकर्ता है,
हीरो, सड़क पर जा रहा था,
कई लोगों को निर्वाण तक पहुँचा रहा था। (1) [2077]

कुछ समय बाद भगवान
तब वह मेरे [स्वयं] सामने आया, [और] मैंने [उसका] भीख का कटोरा लेकर,
[उसे] कुछ घी दिया।1154 (2) [2078]

तब से बानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह घी दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही घी देने का फल है। (3) [2079]

इसके बाद छप्पनवें युग में

1152 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1153 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1154 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

सन्दोदक नाम का एक व्यक्ति था, 1155
एक महान शक्ति वाला, सात रत्नों का स्वामी, चक्र घुमाने वाला राजा। (4) [2080]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2081]

इस प्रकार पूज्य सप्पिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे।

सप्पिदायक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

167. युथिकपुप्पिया 1156

चंदाभागा नदी के किनारे, धारा के साथ यात्रा करते हुए, मैंने वहाँ स्वयं-एकत्व को देखा,
खिले हुए राजसी साल के पेड़ की तरह। (1) [2082]

चमेली का फूल लिए हुए,
मैं [तब] उस महान ऋषि के पास पहुँचा। प्रसन्न होकर, मेरे हृदय में आनंद था,
मैंने बुद्ध को [वह फूल] दिया। (2) [2083]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने तब पुष्प पूजा की।
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2084]

सड़सठवें युग में
एक [नाम] समुद्धरा था, 1157
एक चक्र-घुमाने वाला राजा, महान शक्ति वाला, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2085]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2086]

1155 कुम्मासा , संस्कृत कुलमासा , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के केक या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1156 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है। इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

1157 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

इस प्रकार पूज्य युथिकापुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

युथिकापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त होती है

---

168. दुस्सादायक 1158

सुंदर तिवारा शहर में,
मैं तब राजा का पुत्र था। उपहार प्राप्त करने के बाद, 1159
मैंने इसे शांत [बुद्ध] को दिया। (1) [2087]

भगवान ने इसे स्वीकार किया;
उन्होंने कपड़े को अपने दोनों हाथों से छुआ। स्वीकार करने के बाद, सिद्धार्थ
फिर हवा में, आकाश में ऊपर उठ गया। (2) [2088]

जब बुद्ध जा रहे थे [दूर]
वह कपड़ा उसके पीछे उड़ गया।
मैंने वहाँ अपने दिल को खुशी दी:
'बुद्ध सर्वोच्च व्यक्ति हैं।' (3) [2089]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने वह कपड़ा [उसे] तब दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही कपड़ा देने का फल है। (4) [2090]

सड़सठवें युग में
वहाँ एक चक्र घुमाने वाला सम्राट था, एक महान शक्ति वाला लोगों का स्वामी,
जिसे परिशुद्ध नाम से जाना जाता था।1160 (5) [2091]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2092]

इस प्रकार पूज्य दुस्सादायक थेरा ने ये श्लोक कहे

दुस्सादायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1158 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है

1159 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1160 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

169. समादपका 1161

शहर बंधुमती में,
वहाँ एक बड़ी भीड़ थी1162 [तब]। मैं उनमें सबसे उत्तम था,
और वे सब मेरे साथी थे।1163 (1) [2093]

उन सबको एक साथ बुलाकर
मैंने [तब] अच्छे कर्मों को बढ़ावा दिया,1164
"आइए अतुलनीय पुण्य-क्षेत्र का निर्माण करें,
[भिक्षुओं की] सभा, एक इमारत।"1165 (2) [2094]

मेरी इच्छाओं के वे अनुयायी1166
सहमत हुए [यह कहते हुए], "उत्कृष्ट!"
और [जब] उन्होंने इमारत का निर्माण पूरा कर लिया,
हमने इसे विपस्सी को दे दिया [तब]। (3) [2095]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने उसे वह इमारत तब दे दी थी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह इमारतों को देने का फल है। (4) [2096]

उनसठवें युग में [इसलिए]
वहाँ लोगों का एक स्वामी था,
एक महान शक्ति वाला चक्र घुमाने वाला राजा, जिसे आवेय्या के नाम से जाना जाता था।1168 (5) [2097]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2098]

इस प्रकार पूज्य समादपक थेरा ने ये श्लोक कहे

समादपक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1161 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है
1162 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1163 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1164 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1165 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1166 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama
1167 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
1168 lit., “गया”

---

170. पंचांगुलिया 1169

तिस्सा के नाम से जाने जाने वाले भगवान,
दुनिया के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, ऋषि, अपनी सुगंधित कुटिया के अंदर, 1170
समय अच्छे से बीत रहा था। (1) [2099]

एक माला और कुछ सुगंध लेकर, मैं विजेता के पास गया। चुपचाप,1171 धन्य व्यक्ति पर,
मैंने 1172 सुगंधित हथेली का निशान 1173 [तब] बनाया। (2) [2100]

तब से बानवे युगों में
मैंने उसे वे इत्र भेंट किए, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
सुगंधित हथेली के निशान का फल। (3) [2101]

बहत्तरवें युग में
मैं राजा था, सायंभ, 1174
एक महान शक्ति वाला चक्र-चालक, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2102]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2103]

इस प्रकार पूज्य पंचांगुलिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

पंचांगुलिया थेरा की कथा समाप्त होती है

सारांश:

सुपारी और काणवेरी, खुज्जक, देसपूजक, काणिकारा, सप्पिदद, युथिका, दुस्सादायक,

---

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1169 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है

1170 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1171 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1172 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1173 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1174 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

माल और पंचांगुलिका, चौवन श्लोक।

सत्रहवाँ सुपारीचरीय अध्याय

कुमुदा अध्याय, अठारहवाँ

---

171. कुमुदमालिया 1175

हिमालय पर्वत में एक बड़ी, प्राकृतिक झील थी। मैं वहाँ जन्मा एक राक्षस था,
भयानक रूप का, महान शक्ति वाला। (1) [2104]

वहाँ सफेद कमल खिल रहे थे, जो पहियों जितने बड़े थे,1176
और मैंने [तब] उन 1177 कमलों को चुना।
बलवान का 1178 समूह 1179 भी [वहाँ] था। (2) [2105]

लेकिन अत्थादस्सी, हे भगवान,
दो पैरों वाले भगवान, मनुष्यों के बैल,
यह देखकर कि वे फूल तोड़ लिए गए थे,1180
तब मेरी उपस्थिति में आया। (3) [2106]

देवताओं का ईश्वर, मनुष्यों का बैल,
तब संबुद्ध मेरे पास आए। उन सभी फूलों को उठाते हुए
मैंने उन सभी को बुद्ध को दे दिया। (4) [2107]

फिर वह कंपनी हिमालय के छोर तक फैल गई। 1181
उसके ऊपर एक छत्र के साथ 1182

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1175 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1176 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1177 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1178 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

1179 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1180 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1181 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

1182 शाब्दिक रूप से, "गया"

तथागत ने आगे यात्रा की। (5) [2108]

अठारह सौ युगों में
जब से मैंने [उसे] वह फूल अर्पित किया है, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (6) [2109]

पंद्रहवें युग पूर्व,
लोगों के सात स्वामी थे,
महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा, [सभी] सहस्रथ के नाम से जाने जाते थे।1183 (7) [2110]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [2111]

इस प्रकार पूज्य कुमुदमालिया थेरा ने ये श्लोक कहे

कुमुदमालिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

172. निस्सेणिदायक 1184

मैंने महल में ऊपर चढ़ने के लिए एक सीढ़ी बनवाई थी
कोंडञ्ञ के, धन्य,
विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ। (1) [2112]

मेरे हृदय में उस आनंद के कारण, महान सुख प्राप्त करके, मैं अपना अंतिम शरीर धारण कर रहा हूँ
परम बुद्ध की शिक्षा में। (2) [2113]

इकतीस हजारवें युग में उस समय तीन [लोग] थे, राजा जिन्होंने [कानून का] पहिया घुमाया, [सभी] नाम पहासाम्बाहुला.1185 (3) [2114]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2115]

पीटीएस संजालेसी के लिए बीजेटीएस के साथ 1183 पठन संजालेसी
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1184 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1185 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

इस प्रकार पूज्य निस्सेणिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

निस्सेनिदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

173. रत्तीपुप्फिया 1186

मैं उस समय जंगल में एक उपवन के भीतर हिरण का शिकारी था
मैंने विपस्सी बुद्ध को देखा [तब],
देवताओं के देवता, मनुष्यों के बैल। (1) [2116]

एक शीतकालीन चेरी1187 के पेड़ पर लाल [फूल] खिलते हुए देखकर, [उन्हें] उनकी डंडियों सहित लेकर,
मैंने उन्हें महान ऋषि को अर्पित किया। (2) [2117]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने [उन्हें] वे फूल अर्पित किए, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
फूल देने का यही फल है। (3) [2118]

और आठवें युग पहले,
मैं सुप्पसन्ना नाम का एक महान शक्तिवान सम्राट था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (4) [2119]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2120]

इस प्रकार पूज्य रत्तीपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

रत्तीपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1186 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है

1187 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1188 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

174. उदपानदायक 1189

मैंने भगवान विपस्सी के लिए एक [जल] कुआँ बनवाया। उन्हें भिक्षा देने के बाद
फिर मैंने [कुएँ] को समर्पित किया। (1) [2121]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
कुएँ देने का यही फल है। (2) [2122]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2123]

इस प्रकार पूज्य उदपानडायक थेरा ने ये श्लोक कहे।

उदपानडायक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

175. सिहासनदायक 1190

जब जगत के स्वामी निर्वाण को प्राप्त हुए, पद्ममुत्तरा, नेता,
मैंने [उन्हें] एक सिंह-सिंहासन दिया
प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से। (1) [2124]

दुनिया में खुशियाँ लाते हुए, बहुत सुगंधित फूलों से वहाँ पूजा करने के बाद , [मैं]
कई लोगों को राहत मिली।1191 (2) [2125]

प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से उस उत्कृष्ट बोधि की पूजा करते हुए,
एक लाख युगों के लिए
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है। (3) [2126]

पंद्रह हज़ारवें युग में आठ [अलग-अलग लोग] थे,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1189 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1190 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है। इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।
1191 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162। यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

वे सम्राट जिन्होंने [कानून का] पहिया घुमाया,
[सभी] सिलुकाया नाम से जाने जाते हैं।1192 (4) [2127]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2128]

इस प्रकार पूज्य सिहासनदायक थेरा ने ये श्लोक कहे

सिहासनदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

176. मगदत्तिका 1193

अनोमदस्सी, हे भगवान,
दो पैरों वाले भगवान, मनुष्यों के बैल, संसार में सुख लाने वाले,
आकाश में इधर-उधर चलता रहा।1194 (1) [2129]

प्रसन्न, अपने हृदय में आनंद के साथ, पूजा करते हुए मैंने फूल बिखेरे
फूल उसके उठे हुए पैरों पर और उसके सिर के ऊपर भी टिके रहे।1195 (2) [2130]

बीस हज़ारवें युग में पाँच अलग-अलग लोग रहते थे, जिनका नाम पुप्फच्छदानिया था।1196
महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा। (3) [2131]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2132]

1192 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1193 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।
1194 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1195 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1196 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

इस प्रकार पूज्य मगदत्तिका थेरा ने ये श्लोक कहे।

मगदत्तिका थेरा की कथा समाप्त होती है

177. एकादशी 1197

प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से, मैंने उस समय एक दीपक दिया था।
उत्कृष्ट साला 1198 बोधि में
ऋषि पद्ममुत्तरा का। (1) [2133]

जन्म-मृत्यु के चक्र में, पुण्य के ढेरों के साथ पुनर्जन्म लेकर, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं जाना है:
जो कि एक दीपक-उपहार का फल है। (2) [2134]

सोलह हज़ारवें युग में
तब ये चार [अलग-अलग] पुरुष थे, [सभी] चंदाभा नाम से जाने जाते थे, 1199
महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा। (3) [2135]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2136]

इस प्रकार पूज्य एकादशी थेरा ने ये श्लोक कहे

एकादशीया थेरा की कथा समाप्त हो गई।

178. मणिपूजक 1200

एक छोटी हिमालयी नदी
तब उसके किनारे-किनारे सुचारू रूप से बहती थी।1201

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1197 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1198 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1199 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1200 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें अधिक संख्या में अंश शामिल हैं। इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।
1201 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

उस समय स्वयं-एक-स्वरूप1202 उस [नदी] के निकट एक खेत में निवास करते थे। (1) [2137]

प्रसन्न हृदय [और] प्रसन्न मन से, मैंने बुद्ध को [तभी] दिया
रत्नों से बना एक सोफा, उत्कृष्ट, मनमोहक और विविध। (2) [2138]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने उसे वे रत्न भेंट किए, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2139]

और बारहवें युग पूर्व
उस समय आठ [अलग-अलग] राजा थे, [सभी] सतरांगसी के नाम से जाने जाते थे, 1203
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले सम्राट। (4) [2140]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2141]

इस प्रकार पूज्य मणिपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे।

मणिपूजक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

179. टिकिच्चक 1204

शहर बंधुमती में,
मैं एक प्रशिक्षित चिकित्सक था, जो कई लोगों को खुशी देता था
जब मरीज़ों को बहुत [बीमारी] हुई। (1) [2142]

एक भिक्षु को देखकर जो बीमार था, [लेकिन] नैतिक [भी] बहुत उज्ज्वल था,
प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से,
मैंने तब उसे कुछ दवा दी। (2) [2143]

1202 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या जंकेट के

रूप में (पीएसआई: सिंह.   रोटीया))। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1203 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1204 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

उस भिक्षु ने, जिसकी इंद्रियाँ अच्छी तरह से संरक्षित थीं, इसके कारण स्वस्थ हो गया।
वह विपस्सी का सेवक था,
अशोक के नाम से जाना जाता है।1205 (3) [2144]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने [उसे] औषधीय जड़ी-बूटियाँ दीं,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
जो औषधि का फल है। (4) [2145]

उसके बाद आठवें युग में
सब्बोसधा1206 के नाम से जाना जाने वाला
वह महान शक्ति वाला एक चक्र-चालक था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (5) [2146]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2147]

इस प्रकार पूज्य तिचिच्चक थेरा ने ये श्लोक कहे

टिकिच्चक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

180. संघुपट्टक 1207

जब वेस्साभू बुद्ध थे, 1208
मैं [तब] वनवासी था
प्रसन्न हृदय और प्रसन्न मन से, मैंने सर्वश्रेष्ठ सभा की सेवा की। (1) [2148]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही सेवा करने का फल है। (2) [2149]

1205 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

1206 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1207 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है। इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

1208 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

सातवें युग पूर्व,
सात समोत्थत थे, 1209 महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा, सात रत्नों के स्वामी। (3) [2150]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2151]

इस प्रकार पूज्य संघपट्टक थेरा ने ये श्लोक कहे

संघुपट्टक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: कुमुदा, फिर निस्सेनी,
रत्तिका, उदपानद, सिहासनी, मगगवाद, एकादीपी, मणिप्पद, टिकिच्चक, उपट्ठाक,
पचास श्लोकों से एक कम [यहाँ]

कुमुद अध्याय, अठारहवाँ।

कुटजपुप्पिया अध्याय, उन्नीसवाँ

---

181. कुटजपुप्पिया 1210

[मैंने देखा] स्वर्ण संबुद्ध,
जैसे उदय हुआ सौ किरणों वाला [सूर्य], सभी दिशाओं का सर्वेक्षण करते हुए,
जब वह आकाश में यात्रा कर रहा था। (1) [2152]

कुछ शीतकालीन चेरी देखकर,
अच्छी तरह से फैले हुए1211 और खिल रहे [वहाँ], उस पेड़ से [एक फूल] तोड़ते हुए,

मैंने [तब] इसे फुस्सा को अर्पित किया। (2) [2153]

1209 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के केक या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1210 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।
1211 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

तब से बानवे युगों में
मैंने [उसे] वह फूल भेंट किया, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2154]

सत्रहवें युग में
तीन [पुरुष थे जिनका नाम] पुफ्फीता था, 1212 महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा, सात रत्नों के स्वामी। (4) [2155]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2156]

इस प्रकार पूज्य कुटजपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे

कुटजपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

182. बंधुजीवका 1213

सिद्धार्थ नामक संबुद्ध,
स्वयं-बनकर, भले लोगों द्वारा प्रशंसित,1214
एकाग्रता में प्रवेश करके,1215
एक पर्वत पर बैठ गया [तब]। (1) [2157]

एक प्राकृतिक झील में एक शानदार कमल के फूल की तलाश में,
मैंने बंधुजीवका के फूल देखे
आस-पास के क्षेत्र में। (2) [2158]

उन्हें अपने दोनों हाथों से उठाकर, मैं फिर उस महान ऋषि के पास पहुँचा। प्रसन्न, अपने हृदय में आनंद के साथ,

मैंने [उन्हें] सिद्धार्थ को अर्पित किया। (3) [2159]

1212 कुम्मासा , संस्कृत कुलमासा , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के केक या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1213 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।

1214 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1215 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

तब से चौरानवे युगों में
मैंने [उन्हें] वे फूल अर्पित किए, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह पुष्प- पूजा का फल है । (4) [2160]

चौदहवें युग पहले, लोगों का एक शासक था
जिसका नाम समुद्दकप्पा था, 1216
एक महान शक्ति वाला, चक्र घुमाने वाला राजा। (5) [2161]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2162]

इस प्रकार पूज्य बंधुजीवका थेरा ने ये श्लोक कहे
बंधुजीवका थेरा की कथा समाप्त होती है

---

183. कोटुंबरिया 1217

खुश, [और] प्रसन्न हृदय से,
मैं पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ के पास पहुँचा, जो डिनर-प्लेट के पेड़ की तरह चमक रहे थे,1218 पहाड़ों के बीच बैठे हुए, असीम सागर की तरह,1219 पृथ्वी तक फैले हुए,
देवताओं की सभा द्वारा पूजित 1220, 1221
मनुष्यों के बैलों की सर्वश्रेष्ठ नस्ल का। (1-2) [2163-2164]

मैंने [एक बार] बुद्ध को अर्पित किया
सिख धर्म, जगत के सगे-संबंधी,
कपड़े का एक टुकड़ा 1222 [जिसे मैंने] भरा था

1216 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1217 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें और भी बहुत कुछ है।
इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताएँ।
1218 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1219 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1220 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1221 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1222 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

सात फूल [मैंने] तोड़े थे। (3) [2165]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [2166]

इसके बीसवें युग में
मैं एक अत्यंत शक्तिशाली
महान शक्ति वाला चक्र-घुमाने वाला सम्राट था, [जिसे] महाणेल.1223 (5) [2167] नाम से जाना जाता था

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2168]

इस प्रकार पूज्य कोटुंबरिया1224 थेरा ने ये श्लोक कहे

कोटुंबरिया1225 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

184. पंचहत्थिया 1226

तिस्सा के नाम से जाने जाने वाले भगवान
वह दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल था; भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित, 1227
वह 1228 राजमार्ग पर चला गया। (1) [2169]

भेंट देने की इच्छा से
अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए, मैंने 1229
मुट्ठी भर कमल के फूल उठाए
और मेरे द्वारा रखे गए चार [और मुट्ठी भर] 1230। (2) [2170]

1223 सप्पी , शाब्दिक रूप से, घी, स्पष्ट मक्खन (गी तेल)
1224 शाब्दिक रूप से, "गया"
1225 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ पाठ्येलेसी पढ़ना
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1226 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1227 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1228 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1229 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1230 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

बुद्ध की किरणों से प्रसन्न होकर, मैंने [उन्हें] सर्वश्रेष्ठ द्विपाद, स्वर्ण-रंग के संबुद्ध को दे दिया
जो बाज़ार से होकर चल रहा था। (3) [2171]

तब से बानवे युगों में
मैंने [उसे] वे फूल भेंट किए, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [2172]

इसके तीसवें युग में
पाँच सुभाषम्मत थीं, 1235
महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले सम्राट। (5) [2173]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2174]

इस प्रकार पूज्य पंचहत्तिया थेरा ने ये श्लोक कहे

पंचहत्थिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

185. इसिमुग्गदायक 1236

उगते हुए सौ किरणों वाले [सूर्य] की तरह, जैसे सूर्य [जब] उग चुका था, शाही आभूषणों की तरह चमक रहा था,
भगवान पद्ममुत्तरा थे। (1) [2175]

मधुमक्खियों से रहित मधुमक्खी के शहद में ऋषि के मूंग को पीसना,1237

1231 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1232 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

1233 शाब्दिक रूप से, "गया"

1234 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ पाठ्येलेसी पढ़ना

1235 शाब्दिक रूप से, "गिर गया"

{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 1236 अपदान संख्याएँ BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1237 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1238 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

आनंद में स्थापित होकर,
मैंने उन्हें दुनिया के रिश्तेदार को दे दिया। (2) [2176]

आठ लाख अनुयायी
तब बुद्ध [उनके साथ थे]। उन सभी के कटोरे भरते हुए,
[मैंने] बहुत बड़ी मात्रा प्रदान की। (3) [2177]

उन सुखद जड़ों से प्रेरित उस मानसिक आनंद के कारण,
एक लाख युगों के लिए

मैं बुरी हालत में पैदा नहीं हुआ था।1239 (4) [2178]

चालीस हज़ारवें युग में
[पहले], उनकी संख्या अड़तीस थी,
वे महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले राजा, जिनके नाम महिषमंत थे।1240 (5) [2179]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया! (6) [2180]

इस प्रकार पूज्य इसिमुग्गदायक थेरा ने ये श्लोक कहे।

इसिमुग्गदायक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

186. बोधिउपाट्ठायक 1241

शहर में, राममावती,
मेरा नाम मुराजा था।1242
निरंतर सेवा के लिए प्रतिबद्ध,
मैं महान बोधि वृक्ष के पास गया। (1) [2181]

उन सुखी जड़ों से प्रेरित होकर, अठारह सौ युगों तक सुबह और शाम प्रयास करते हुए
मैं बुरी हालत में पैदा नहीं हुआ था।1243 (2) [2182]

1239 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को संदर्भित करता है

1240 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 1241 अपदान संख्याएँ BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1242 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

1243 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के।

पंद्रह सौवें युग में
मैं एक राजा था, मनुष्यों का शासक,
दमाथा के नाम से जाना जाता था, 1244
एक महान शक्ति वाला, चक्र घुमाने वाला राजा। (3) [2183]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2184]

इस प्रकार पूज्य बोधिउपात्यक थेरा ने ये श्लोक कहे।

बोधिउपात्यक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

187. एकचिन्तित 1245

जब [उसके] जीवनकाल के अनुसार, कोई देवता संसार से गिरता है,1246
तब तीन बातें1247 निकलती हैं,
देवताओं के आनंद में। (1) [2185]1248

"यहाँ से, महोदय,1249 लोगों की संगति में एक अच्छे राज्य में जाइए
मनुष्य बनकर प्राप्त करें
उत्तम सत्य में महान विश्वास।1250 (2) [2186]

"यह स्थापित करने के बाद, आपका विश्वास, सुप्रसिद्ध उत्तम सत्य में,
[अच्छी तरह से] स्थिर, [उन सुखद] जड़ों से जन्मा,
जब तक [तुम] जीवित रहो, दृढ़ रहो। (3) [2187]

केक या जंकेट (PSI: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

1244 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1245 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1246 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1247 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1248 रत्तंबरधारो , लिट., "लाल अम्बरा धारण करने वाला।" धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।
1249 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1250 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

"अपने शरीर से अच्छे कर्म करो,
और अपनी वाणी से बहुत अच्छे कर्म करो;
अपने मन से भी अच्छा करो,
घृणा और आसक्ति से मुक्त रहो। (4) [2188]

"इस प्रकार [अपने जीवन को] ऊंचा उठाकर, बहुत दान देकर पुण्य कर्म करके, दूसरे लोगों को भी प्रवेश कराओ
पवित्र जीवन [और] उत्कृष्ट सत्य में।" (5) [2189]

जब देवताओं को पता चलता है कि कोई देवता गिर गया है,1255 [इस प्रकार की] करुणा से भरकर, वे [उसके पुनर्जन्म पर] प्रसन्न होते हैं:
"हे भगवान, बार-बार [वापस] आओ।" (6) [2190]

मैं उस समय भावुक हो गया जब देवताओं की सभा एकत्रित हुई थी,
"तो अब मुझे किस गर्भ में
जाना चाहिए जब मैं यहाँ से गिर गया हूँ?" (7) [2191]

पदुमुत्तरा के अनुयायी,
सुमना नाम से जाने जाते हैं, 1256
एक भिक्षु जिसकी इंद्रियाँ [अच्छी तरह से] नियंत्रित थीं, यह महसूस करते हुए कि मैं प्रभावित हुआ था
[और] मुझे ऊपर उठाने की इच्छा से,
तब मेरे सामने आया
[और] मुझे निर्देश देते हुए मुझे प्रेरित किया
अर्थ और शिक्षा में।1257 (8-9) [2192-2193]

उनके शब्दों को सुनकर, मैं
बुद्ध ने मेरे हृदय को प्रसन्न किया। उस बुद्धिमान [भिक्षु] को प्रणाम करने के बाद,
मैं [तब] वहीं पर चल बसा। (10) [2194]

मैं उसी क्षण और वहीं पुनर्जन्म लिया, उन सुखद जड़ों से प्रेरित होकर।

1251 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, स्पष्ट मक्खन (गी तेल)
1252 शाब्दिक रूप से, "गया"
1253 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ पाठ्येलेसी पढ़ना
1254 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
1255 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

1256 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद बनाए रखने के लिए "हज़ार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेज़ी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली शाब्दिक अर्थ है, "एक हज़ार कंड (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]।"
1257 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

एक लाख युगों के लिए
मैं बुरी हालत में पैदा नहीं हुआ था।1258 (11) [2195]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [2196]

इस प्रकार पूज्य एकचिन्तिता थेरा ने ये श्लोक कहे

एकासिंतिता थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

188. टिकाण्णिपुप्पिया 1259

मैं, [तब] एक देवता होने के नाते,
अप्सराओं द्वारा सम्मानित,1260
मेरे पिछले कर्मों के कारण पुनर्जन्म हुआ,
उन्हें याद किया, जो बुद्धों में सर्वश्रेष्ठ थे। (1) [2197]

तीन काण्णी फूल तोड़कर , जिनसे मेरे मन को आनंद मिला, मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया
विपस्सी, पुरुषों में बैल। (2) [2198]

तब से इक्यावन युगों में
मैंने वह फूल [उसे] भेंट किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2199]

तिहत्तर युग पहले
चार नरुत्तम थे, 1261
महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले सम्राट। (4) [2200]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2201]

1258 येनिच्चका , बीजेटीएस सिंहली व्याख्या कामाती तनका के अनुसार
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1259 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1260 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1261 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

इस प्रकार पूज्य तिकण्णिपुप्फिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

तिकण्णिपुप्फिया थेरा की कथा समाप्त होती है

---

189. एकाचारिया 1262

उस समय तावतिंसा देवताओं के बीच बहुत शोर मच गया:
"संसार के बुद्ध का देहांत हो गया है1263
और हम [अभी भी] वासना से ग्रस्त हैं।" (1) [2202]

उनमें से जो [इस प्रकार] विचलित हो गए थे, शोक के तीरों से ग्रस्त थे,
मेरी अपनी मानसिक शक्ति से दृढ़ होकर,
मैं बुद्ध की उपस्थिति में गया। (2) [2203]

जादू से निर्मित कोमल मंदारवा के फूल को तोड़ते हुए ,
मैंने [तब] इसे उस समय अर्पित किया
बुद्ध के देहांत के समय।1265 (3) [2204]

सभी देवता और स्वर्गीय
उस समय अप्सराएँ मेरे लिए प्रसन्न हुईं। एक लाख युगों तक
मैं बुरी हालत में पैदा नहीं हुआ था।1266 (4) [2205]

साठ हज़ार युग पहले
सोलह महान लोग पैदा हुए थे
[सभी] नाम महामल्लजन 1267
महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले सम्राट। (5) [2206]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2207]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1262 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1263 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1264 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया))। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1265 र'अट्टम्बरधारो , लिट., "लाल अम्बरा धारण करना।","" the latter referring to a type of cloth as well as an upper इससे बना वस्त्र।

1266 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1267 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

इस प्रकार पूज्य एकाचार्य थेरा ने ये श्लोक कहे।

एकाचार्य थेरा की कथा समाप्त होती है

---

190. तिवन्तिपुप्पिया 1268

वे सभी, एक साथ एकत्रित होकर,
मुझे देख रहे हैं, अभिभूत हैं। 1269
[मन में] जलन उत्पन्न हुई 1270
उन [लोगों] में से जो देख रहे हैं। (1) [2208]

उस समय एक अनुयायी
बुद्ध धम्मदस्सी, ऋषि, जो सुनंदा1271 के नाम से जाने जाते थे, मेरे पास आए। (2) [2209]

जो मेरे सहयोगी थे1272 उन्होंने मुझे उस समय एक फूल दिया। उस फूल को लेकर [जो उन्होंने दिया था,]
मैंने इसे अनुयायी को दे दिया। (3) [2210]

मैं उसी स्थान पर मर गया
[और फिर] मेरा पुनर्जन्म हुआ

अठारह सौ युगों में [इसलिए]
मैं किसी शोक के स्थान पर नहीं गया। (4) [2211]

तेरह सौवें युग में, आठ धूमकेतुना थे, 1273
महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले सम्राट। (5) [2212]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2213]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1268 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1269 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1270 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1271 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1272 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1273 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

इस प्रकार पूज्य तिवन्तिपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

तिवन्तिपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त होती है

सारांश:

कुटजा और बंधुजीवी, कोटुम्बारिका, हत्थिया, इसिमुग्गा और [तब] बोधि, एकसिंति, टिकानिका, एकाकारी और तिवंती,
यहां बासठ 1274 श्लोक बताए गए हैं।

कुटजपुप्पिया अध्याय, उन्नीसवाँ

तमालपुप्पिया अध्याय, बीसवाँ

---

191. तमालपुप्पिया 1275

मेरा जादुई ढंग से बना महल, चौरासी लाख स्तंभों के साथ, एक [सुंदर] सुनहरा [रंग] का था,
एक दिव्य वृक्ष के समतुल्य।1276 (1) [2214]

एक तमाला फूल तोड़ना
बहुत ही स्पष्ट मन से, मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया।
सिख धर्म, जगत का सगे-संबंधी। (2) [2215]

तब से इकत्तीस युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
वह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2216]

बीस युग पहले
एक [नाम] चंदतित्ता थी, 1277

1274 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, स्पष्ट मक्खन (गी तेल))

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1275 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1276 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1277 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2217]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2218]

इस प्रकार पूज्य तमालपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

तमालपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त होती है

192. तिणासंथारदायक 1278

वन में रहने वाला ऋषि [महान] शिक्षक के लिए कौन सी घास काट रहा है?
वे सभी [पत्तियाँ] दाईं ओर मुड़ रही हैं1279
[उस समय] धरती पर गिर पड़ा। (1) [2219]

कि मैं, घास का [भार] लेकर
और घास की पत्तियों और ताड़ के पत्तों को लाकर एक चटाई बनाई,
उत्कृष्ट भूमि पर बिछाई। (2) [2220]

उस घास और उन पत्तों से चटाई बनाकर मैंने वह चटाई सिद्धार्थ को दी;
मैं उसे सात दिनों तक वहाँ ढोता रहा
देवताओं और मनुष्यों के शिक्षक के लिए। (3) [2221]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने तब [बुद्ध को] घास दी थी
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह घास के उपहार का फल है। (4) [2222]

इसके बाद पैंसठवें युग में
1281 में चार [नाम वाले] महाधन थे।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1278 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1279 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1280 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1281 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले सम्राट। (5) [2223]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2224]

इस प्रकार पूज्य तिनसंथारदायक थेरा ने ये श्लोक कहे।

तिनसंथारदायक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

193. खंडफुल्लिया 1282

विशाल जंगलों में एक स्तूप था
फुस्सा, धन्य [बुद्ध] का।
उस समय वहाँ एक पेड़ था, जिसे हाथियों ने [आधे] तोड़ दिया था। (1) [2225]

उनके गुणों से प्रसन्न होकर1283
तीनों लोकों में सम्मानित, असमान [भूमि] को समतल करते हुए,1284
मैंने कुछ शुद्ध दान दिया। (2) [2226]

तब से बानवे युगों में
मैंने तब वह [अच्छा] कर्म किया था,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही शुद्ध दान देने का फल है। (3) [2227]

सत्तरह युग बाद 1285
सोलह जितसेन थे 1286
महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले सम्राट। (4) [2228]
चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1282 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1283 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1284 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1285 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1286 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
[मैंने] वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया! (5) [2229]

इस प्रकार पूज्य खंडफुल्लिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

खंडफुल्लिया थेरा की कथा समाप्त होती है

---

194. अशोकपूजक 1287

सुंदर तिवारा शहर में,
तब एक शाही उद्यान था। मैं एक शाही परिचारक था, 1288
वहाँ के बगीचे का वार्डन। (1) [2230]

स्वयं-एक हो चुके, प्रकाश से परिपूर्ण, 1289 पद्मा नाम के [बुद्ध तब] थे। कमल की छाया में बैठे हुए
वह ऋषि अभी तक [संसार] नहीं छोड़े थे।1290 (2) [2231]

एक अशोक1291 को फूलों से लदे, सुंदर रूप में देखकर, मैंने बुद्ध को एक फूल दिया,
उत्कृष्ट कमल-नाम वाले ऋषि। (3) [2232]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने वह फूल [उन्हें] अर्पित किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
वह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [2233]

सत्तरवें युग में
सोलह अरुणांजह थे, 1292
महान शक्ति वाले, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले सम्राट। (5) [2234]
चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

1287 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1288 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1289 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1290 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1291 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1292 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2235]

इस प्रकार पूज्य अशोकपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे

अशोकपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

195. अंकोलाक 1293

खिलते हुए अंकोला को देखकर
उत्कृष्ट फूलों और कलियों के साथ,1294
उसमें से एक फूल तोड़कर,
मैं बुद्ध के समक्ष गया। (1) [2236]

उस काल में सिद्धार्थ
वह छिपे हुए थे, 1295 महान ऋषि। एक क्षण के लिए उनका सम्मान करते हुए,
मैंने उस फूल को गुफा में फेंक दिया। (2) [2237]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने वह फूल [उसे] भेंट किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2238]

इसके छत्तीसवें युग में
मैं देवगज्जिता था, 1296
एक महान शक्ति वाला, सात रत्नों का स्वामी, चक्र घुमाने वाला राजा। (4) [2239]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2240]

इस प्रकार पूज्य अंकोलाका थेरा ने ये श्लोक कहे

अंकोलाका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1293 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1294 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1295 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया))। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1296 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

---

196. किसलयपूजक 1297

द्वारवती शहर में,
मेरे पास एक छोटा फूल वाला पेड़ था। 1298
वहाँ [उस जगह पर] एक कुआँ था
[जिसके जल] ने वृक्षों को लंबा किया।1299 (1) [2241]

सिद्धार्थ, अजेय,
अपनी [मानसिक] 1300 शक्ति से दृढ़ किया, मेरे प्रति अपनी करुणा दिखाते हुए,
हवा के मार्ग में यात्रा की। 1301 (2) [2242]

मैं और कुछ नहीं देख रहा हूँ,
महान ऋषि की पूजा पर ध्यान केंद्रित है। अशोक वृक्ष को अंकुरित होते हुए देखकर
मैंने इसे आकाश में फेंक दिया। (3) [2243]

वे शाखाएँ बुद्ध की ओर पीछे की ओर जा रही हैं [आकाश में]
उस चमत्कार को देखकर,
[सोचा], "ओह! बुद्ध की महानता!"1302 (4) [2244]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने [बुद्ध को] वह अंकुर अर्पित किया, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (5) [2245]

सत्ताईसवें युग पूर्व एकास्सर नामक एक व्यक्ति रहता था, 1303
एक महान शक्ति वाला, चक्र घुमाने वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (6) [2246]
चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1297 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1298 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1299 कुम्मासा , संस्कृतः कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1300 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1301 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1302 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama
1303 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [2247]

इस प्रकार पूज्य किसलयपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे

किसलयपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

197. तिन्दुकदायक 1304

एक खराब पहाड़ी सड़क पर यात्रा करते हुए,
मैं एक बंदर था, 1305 मजबूत और तेज। जंगली मैंगोस्टीन 1306 को फल में देखकर,
मुझे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की याद आई। (1) [2248]

कई दिनों तक प्रसन्नतापूर्वक, अपने हृदय में आनंद लिए, मैं विश्व के नेता की खोज में निकला,
सिद्धार्थ, तीन लोकों का अंत करने वाला।1308 (2) [2249]

अपने उस विचार को समझते हुए,
विश्व में सर्वोच्च शिक्षक मेरे निकट आए
एक हजार मुक्त प्रवाह के साथ।1309 (3) [2250]

अत्यंत आनंद उत्पन्न करते हुए1310 [तब,]
मैं हाथ में फल लेकर [उनके] पास पहुँचा।

भगवान ने इसे स्वीकार किया,
सर्वज्ञ, सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता। (4) [2251]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे वह] फल दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह फल के उपहार का फल है। (5) [2252]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1304 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है

1305 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1306 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1307 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1308 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1309 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

1310 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

सत्तावनवें युग में
[एक था] जिसका नाम उपनंद था, 1311
एक चक्र-घुमाने वाला राजा, महान शक्ति वाला, सात रत्नों का स्वामी। (6) [2253]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [2254]

इस प्रकार पूज्य तिन्दुकदायका थेरा ने ये श्लोक कहे

तिन्दुकदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

198. मुट्ठिपूजक 1312

सुमेधा नामक भगवान, जो विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, विजेता हैं, ने 1313

दीन-हीनों के प्रति करुणा के साथ। (1) [2255]

मैंने बुद्ध को प्रस्तुत किया,
द्विपादों के स्वामी, तटस्थ, चलते हुए ध्यान करते हुए,1314
मुट्ठी भर गिरिनिल फूल। (2) [2256]

उन सुखद जड़ों द्वारा उत्तेजित उस मानसिक आनंद के कारण, तीस हजार युगों के दौरान
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है। (3) [2257]

तेईस सौवें युग में
एक [पुरुष] था जो बहुत बलवान था, एक राजा1316 जिसका नाम सुनेला था,1317

1311 शाब्दिक रूप से, "गया"
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1312 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1313 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1314 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है।
1315 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1316 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1317 निज्झायामानो , शाब्दिक रूप से, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना;" मैं BJTS सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता हूँ balannā vu mama

---

सात रत्नों का स्वामी। (4) [2258]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2259]

इस प्रकार पूज्य मुट्ठिपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे।

मुट्ठिपूजक थेरा की कथा समाप्त होती है

---

199. किंकनिपुप्फिया 1318

स्वयंभू, अजेय, सुमंगला नाम से जाने जाने वाले,
विजेता, नगर में प्रवेश किया,
जंगल से बाहर आकर। (1) [2260]

भिक्षा के लिए इधर-उधर भटकने के बाद, ऋषि [तब] शहर से चले गए
अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद, संबुद्ध,
[फिर से] जंगल में रहने लगे। (2) [2261]

एक किंकणी फूल लेकर,
प्रसन्नता से, मेरे हृदय में आनंद के साथ, मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया,
स्वयं-एक हो चुके, महान ऋषि। (3) [2262]

तब से चौरानवे युगों में
मैंने वह फूल [उसे] भेंट किया,
मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [2263]

इसके बाद छियासीवें युग में अपिलापिया नाम का एक व्यक्ति था। 1319
एक चक्र-घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (5) [2264]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2265]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1318 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं
1319 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

इस प्रकार पूज्य किंकणिपुप्पिया1320 थेरा ने ये श्लोक कहे।

किंकणिपुप्पिया1321 थेरा की कथा समाप्त होती है

---

200. युथिकापुप्पिया 1322

विक्टर पदुमत्तरा 1323

बलि प्राप्तकर्ता,
जंगल छोड़कर जाता है
मठ, आँखों वाला। (1) [2266]

मैंने अपने दोनों हाथों से एक अद्वितीय चमेली का फूल इकट्ठा किया।
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया
प्रेममय हृदय वाला, तटस्थ। (2) [2267]

सफलता का अनुभव करने के कारण, उस मानसिक सुख से,
एक लाख युगों के लिए
मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का ज्ञान नहीं है। (3) [2268]

पचासवें युग में
समित्तनंदन नाम का एक जनस्वामी था, 1325
एक महान शक्ति वाला, चक्र घुमाने वाला राजा। (4) [2269]

चार विश्लेषणात्मक विधियाँ, और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2270]

इस प्रकार पूज्य युथिकापुप्फिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

1320 कुम्मासा , संस्कृत कुलमासा , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर के केक या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अधिक संभावित लगता है और मैंने तदनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है

1321 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1322 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1323 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1324 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1325 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

युथिकापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

तमाली, तिणासंथारा, खंडाफुल्ली, अशोकिया, अंकोलाकी, किसलय, तिन्दुका, नेलापुप्पिया,
किंकणिका 1326 [और] युथिका:
पचास श्लोक और आठ हैं।

तमालपुप्पिया अध्याय, बीसवाँ
फिर अध्यायों का सारांश है: भिक्खदा और परिवार,
छत्त और बंधुजीवी और साथ ही सुपारिकरिया, कुमुद, कुटज भी,
तमलिका, दसवां भाग पूरा हो गया है।
यहां छह सौ श्लोक हैं और उससे भी छियासठ अधिक हैं।

दस अध्याय जिन्हें भिक्खा कहा जाता है

दूसरा सौ पूरा हो गया है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.4 थेरपदाना

स्रोत: जेएस वाल्टर्स
नोट: जैसा है वैसा ही प्रस्तुत किया गया है

<<<< पिछला । अगला >>>>

विषय-सूची

1.100298. सरणगमानिया 1713
अपदाना: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 201-300
कणिकारपुप्पिया अध्याय, इक्कीसवाँ

---

201. कणिकारापुप्पिया 1329

एक खाने की थाली 1330 खिली हुई देखकर, और उसे उस समय तोड़कर, मैंने [फिर] उसे तिस्सा को अर्पित किया,
बाढ़ पार करने वाला, तटस्थ व्यक्ति। (1) [2271]
पिछले बानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1329 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1330 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [2272]

इसके बाद पैंतीसवें युग में
[रहते थे] प्रसिद्ध अरुणपाल, 1331
महान शक्ति वाला एक चक्र घुमाने वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2273]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2274]

इस प्रकार पूज्य कणिकारापुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कणिकारापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

202. विनेलापुप्पिया 1332

स्वर्ण रंग के धन्य, सौ किरणों वाले, राजसी, 1333
प्रेममय हृदय, अग्नि के समान तेजस्वी1334
वहाँ पैदल मार्ग पर चढ़ गया था। (1) [2275]

प्रसन्नता से भरे हृदय से, सर्वोच्च ज्ञान की आराधना करते हुए, एक वाइनला 1335 फूल लेते हुए,
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। (2) [2276]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2277]

1331 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1332 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1333 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1334 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1335 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

सत्ताईसवें युग में [इसलिए] मेरा नाम सुमेघाघना रखा गया, 1336
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2278]
विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2279]
इस प्रकार पूज्य विनेलापुप्पिया1337 थेरा ने ये श्लोक कहे।
विनेलापुप्पिया 1338 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

203. किंकणिकपुप्पिया 1339

सोने के समान बहुमूल्य, 1340
सर्वज्ञ, जगत के स्वामी, जगत के स्वामी ने जलकुंड में डुबकी लगाकर स्नान किया। (1) [2280]

प्रसन्नता से, मन मग्न होकर, एक किंखाणी 1341 फूल लेकर,
मैंने इसे विपस्सी को दे दिया।
द्विपद भगवान, तटस्थ एक। (2) [2281]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2282]

सतहत्तर युगों बाद 1342
एक राजा था, भीमर्थ, 1343

1336 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए कहीं और "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

1337 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1338 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1339 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1340 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1341 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1342 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1343 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2283]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2284]

इस प्रकार पूज्य किंकणिकपुप्पिया1344 थेरा ने ये श्लोक कहे।

किंकणिकपुप्पिया1345 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

204. ताराणिया 1346

अत्थादस्सी, भगवान,
दो पैरों वाले भगवान, मनुष्यों के बैल, उनके अनुयायियों द्वारा सम्मानित [तब]
गंगा के तट पर पहुँचे। (1) [2285]

गंगा नदी पूरी तरह से पानी से भरी होने के कारण उसे पार करना काफी मुश्किल था।1347
मैंने भिक्षुओं के समूह को पार कराया1348
और बुद्ध, सर्वोच्च द्विपद। (2) [2286]

उस [अच्छे] कर्म को करने के बाद से अठारह सौ युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है:
यह नौका विहार का फल है। (3) [2287]

तेरहवें युग में
सन्भोगव नाम के पाँच व्यक्ति थे, 1349
महान शक्ति वाले, चक्र घुमाने वाले सम्राट, सात रत्नों के स्वामी। (4) [2288]
विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

1344 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1345 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1346 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1347 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1348 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1349 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2289]

इस प्रकार पूज्य ताराणिय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

ताराणीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

205. निग्गुंडिपुप्पिया 1350

मैं भगवान विपस्सी के आश्रम में निवास कर रहा था। निग्गुंडी 1351 फूल इकट्ठा करते हुए,
मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया। (1) [2290]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [2291]

इसके पैंतीसवें युग में लोगों का एक स्वामी था जिसका नाम महापतापा था।
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (3) [2292]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2293]

इस प्रकार पूज्य निग्गुंडिपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

निग्गुंडिपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1350 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1351 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1352 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

206. उदकदायका 1353

भिक्षु को देखकर, 1354 जो भोजन कर रहा था, अत्यंत तेजस्वी और शांत, एक छोटे बर्तन में पानी ला रहा था,
मैंने इसे सिद्धार्थ को दिया। (1) [2294]

आज मैं शुद्ध हो गया हूँ;
निर्मल, मेरे सारे संदेह दूर हो गए। अस्तित्व में पुनर्जन्म लेकर,
वह फल मेरे लिए भी पुनर्जन्म लेता है। (2) [2295]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] पानी पिलाया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
पानी देने का यही फल है। (3) [2296]

इकसठवें युग में [अतः]
1355 में विमला नाम का एक व्यक्ति था।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2297]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2298]

इस प्रकार पूज्य उदकदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उदकडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

207. सलामालिया 1356

[मैंने देखा] सिद्धार्थ, प्रशिक्षक, 1357
एक पर्वत की ढलान पर बैठे हुए [तब,]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1353 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1354 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1355 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1356 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
1357 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

खाने की थाली जैसे पेड़ की तरह चमक रहा है,1358
हर दिशा का सर्वेक्षण। (1) [2299]

धनुष के दोनों सिरों को इकट्ठा करके,1359 फिर मैंने उसे एक तीर से जोड़ा। फूल को उसकी डंठल सहित काटकर,
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। (2) [2300]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2301]

इसके बाद इक्यावनवें युग में
एक व्यक्ति था जिसका नाम जुटिंधरा था, 1360
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2302]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2303]

इस प्रकार पूज्य सलामालिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सलामालिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

208. कोरण्डपुप्पिया 1361

मैंने महान ऋषि, [बुद्ध] विपस्सी के कदमों को देखा, जो कदम दर कदम आगे बढ़ रहे थे;
[यह] सुंदर था, पहिये से चिह्नित। (1) [2304]

एक कोरण्ड 1362 फूल देखना

1358 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1359 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1360 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1361 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1362 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

मैंने इसे 1363 में इसके मूल के साथ जोड़ा। प्रसन्न, [और] प्रसन्न हृदय से,
मैंने उस अद्वितीय पद की पूजा की। (2) [2305]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2306]

सत्तावनवें युग में
अतः एक वीतमला, 1364 थी।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2307]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2308]

इस प्रकार पूज्य कोरण्डपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कोरण्डपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

209. आधारद्यक 1365

मेरे द्वारा एक सिंहासन दान किया गया था
सिख धर्म को, विश्व के सगे-संबंधी। [तब] मैं 1366 का स्वामी था
इस पूरी पृथ्वी की सारी भूमि। (1) [2309]

मेरे सारे दोष जलकर राख हो गए हैं, मेरा हर अस्तित्व समाप्त हो गया है।
अब मेरे पास मेरा अंतिम शरीर है
बुद्ध के 1367वें युग में। (2) [2310]

1363 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1364 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1365 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1366 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1367 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या जंकेट (पीएसआई: सिंह. रोटीया) के रूप में। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

इसके सत्ताईसवें युग में समंतचारण नामक चार व्यक्ति विद्यमान थे, 1368
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले सम्राट। (3) [2311]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2312]

इस प्रकार पूज्य आधारदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आधाराडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

210. वातातपनिवारिया 1369

एकदम स्पष्ट मन से, मैंने एक छाता दिया
धन्य संत तिस्सा को,
देवताओं का ईश्वर, तटस्थ। (1) [2313]

मेरे भीतर की बुराई1370 को दबा दिया गया है;
अच्छाई की प्राप्ति हुई है।1371
आकाश में ले जाया गया छाता:1372
पूर्व कर्मों का फल। (2) [2314]

यह मेरा आखिरी पुनर्जन्म है, सभी जन्म समाप्त हो गए हैं।
अब मेरे पास मेरा अंतिम शरीर है

बुद्ध के 1373 युग में। (3) [2315]

पिछले बानवे युगों में
मैंने वो छाता तब वापस दे दिया था।

संभवतः, और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी प्रकार का जौ से बना भोजन है।

1368 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1369 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1370 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1371 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1372 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1373 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह छाता-उपहारों का फल है। (4) [2316]

इसके बाद बहत्तरवें युग में आठ जनस्वामी थे, जो सभी महानिदान के नाम से जाने जाते थे।
वे राजा जो चक्र-घुमाने वाले सम्राट थे। (5) [2317]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2318]

इस प्रकार पूज्य वातातपनिवारिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वातातपनिवरिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: कणिकारा और विनेला,
और किंकिनी के साथ तारण, निग्गुंडीपुप्पा, 'दकाडा, सलदा और कोरंडका, अधरका, वातातप:
इसमें अड़तालीस श्लोक हैं। कणिकारापुप्पिया अध्याय, इक्कीसवाँ।

हाथी अध्याय, बाईसवाँ

211. हत्थिदायक 1375

मैंने एक उत्तम हाथी भेंट किया,
जिसके दांत हल के डंडों के समान थे, पूर्ण विकसित, भगवान सिद्धार्थ को,
द्विपादों का स्वामी, तटस्थ। (1) [2319]

मुझे इसका अंतिम अर्थ समझ आ गया है।
शांति का अद्वितीय मार्ग। मैंने एक बहुत ही कीमती उपहार दिया।
सभी लोकों के शुभचिंतक को.1376 (2) [2320]

1374 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1375 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1376 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह उपहार दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
हाथियों को देने का फल। (3) [2321]

अठहत्तरवें युग में
1377 में राजवंश के सोलह लोग थे।
समंतपासादिका नाम दिया गया, 1378
महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले सम्राट। (4) [2322]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2323]

इस प्रकार पूज्य हत्थिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

हत्थिदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

212. पाणधिदायक 1379

[एक बार] मैंने एक जोड़ी जूते दिए
एक वनवासी ऋषि को
जो लंबे समय से तपस्या का अभ्यास कर रहे थे,
वृद्ध हो गया, सुसंस्कृत विचार के साथ। (1) [2324]

उस कर्म के कारण, द्विपद स्वामी, 1380
हे पुरुषों के श्रेष्ठ बैल, विश्व में सर्वश्रेष्ठ, मुझे हर वाहन पसंद है:
यह पिछले कर्मों का फल है। (2) [2325]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह जूतों की एक जोड़ी का फल है। (3) [2326]

1377 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1378 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1379 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1380 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

सतहत्तर युगों बाद 1381
राजसी जाति के आठ लोग थे 1382
सुयाना नाम से जाने जाते थे, 1383
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले सम्राट। (4) [2327]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2328]

इस प्रकार पूज्य पाणधिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पाणधिडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

213. सक्कासञ्जक 1384

उस काल में वेस्साभू
भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित, 1385
चार आर्य सत्यों का प्रचार कर रहा है, 1386
लोगों की [वासना] को बुझाना। (1) [2329]

महान कृपा के पात्र,
मैं उस भीड़ में घुस गया।
वहाँ बैठे हुए मैं [तब]
शिक्षक की शिक्षा सुनी। (2) [2330]

उनकी शिक्षा सुनने के बाद मैंने
[फिर] देवताओं के लोक में गया। तीस हजार युगों तक मैं
वहाँ देवताओं के नगर में निवास किया। (3) [2331]

पिछले इकत्तीस युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई थी।

1381 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1382 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1383 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1384 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1385 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1386 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
सत्यों को समझने का यही फल है। (4) [2332]

इसके छब्बीसवें युग में लोगों का एक ही स्वामी था; उसका नाम एकाफुसिता था,1387

एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (5) [2333]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2334]

इस प्रकार पूज्य सच्चसाञ्ञक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सच्चसाञ्ञाका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

214. एकासञ्ञक 1388

मैंने शिक्षक का चिथड़ों का वस्त्र एक पेड़ के शीर्ष पर लटका हुआ देखा। 1389
मैंने अपने हाथों को एक साथ दबाया
मैंने [बुद्ध के] चिथड़े-कपड़े की पूजा की। (1) [2335]

पिछले इकत्तीस युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्मों के बारे में कुछ नहीं जाना है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [2336]

इसके पच्चीसवें युग में, लोगों का एक स्वामी था, जिसे अमिताभ के नाम से जाना जाता था।
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (3) [2337]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

1387 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1388 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
1389 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1390 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2338]

इस प्रकार पूज्य एकाञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकासन्चका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

215. रांगसिसाञ्क 1391

[मैंने देखा] उत्कृष्ट बाघ-बैल,
उच्च कुल का, पर्वत की ढलान पर, उगते हुए सौ किरणों वाले [सूर्य] के समान,
जैसे सूर्य [जब उसकी] किरणें ठंडी होती हैं।1392 (1) [2339]

बुद्ध की महिमा
पर्वत की ढलान पर चमक रहा था। [मेरा] हृदय किरणों में प्रसन्न हुआ; एक युग के लिए मैं स्वर्ग में आनंदित हुआ। (2) [2340]

इसके बाद के सभी 1393 युगों में, उस मानसिक आनंद के कारण मेरे द्वारा अच्छाई 1394 को पूरा किया गया।
और बुद्ध को याद करते हुए। (3) [2341]

तीस हजार युगों में
जब से मुझे वह धारणा प्राप्त हुई,1395
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
बुद्ध-बोध का फल। (4) [2342]

सत्तावनवें युग में
वहाँ एक जनस्वामी था, जिसका नाम सुजाता था, 1396
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (5) [2343]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1391 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1392 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1393 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1394 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।
1395 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1396 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2344]

इस प्रकार पूज्य रांसिसाञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

रांगसिसाञ्चका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

216. संठिता 1397

मुझे सचेतन व्यक्ति का दर्शन प्राप्त हुआ, [देखते हुए] एक बुद्ध अश्वत्थ 1398 वृक्ष के नीचे गए हुए थे,
पूर्ण विकसित और चमकीला हरा। (1) [2345]

पिछले इकत्तीस युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्मों के बारे में कुछ नहीं जाना है:
बुद्ध को समझने का फल। (2) [2346]

इसके तीसवें युग में
1399 में धनित्थ नामक सम्राट रहते थे, 1400 में एक चक्र-घुमाने वाला राजा, महान शक्ति वाला, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2347]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2348]

इस प्रकार पूज्य संठित थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

संठित थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1397 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1398 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1399 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1400 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

217. तालवन्तदायक 1401

मैंने सूर्य के रिश्तेदार तिस्सा को ताड़ के पत्तों का पंखा दिया, 1402
गर्मी की तपिश में उसकी प्यास बुझाने के लिए,
[और] सूर्य की जलन को शांत करो। (1) [2349]

मैं कामवासना की आग बुझा रहा हूँ, और घृणा की आग भी; मैं भ्रम की आग बुझा रहा हूँ:
यह प्रशंसक को देने का फल है। (2) [2350]

मेरे सारे दोष जलकर राख हो गए हैं, मेरा हर अस्तित्व समाप्त हो गया है।
अब मेरे पास मेरा अंतिम शरीर है
बुद्ध के 1403 युग में। (3) [2351]

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [2352]

इसके बाद तिरसठवें युग में
वहाँ महाराम नाम का एक व्यक्ति था, 1404
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (5) [2353]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2354]

इस प्रकार पूज्य तालवन्तदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तलवंतायक थेर की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1401 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1402 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1403 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1404 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

218. अक्कन्तसञ्ञक 1405

अतीत में, मैंने
अपने गुरु के पास एक मोटा सा लबादा लेकर, मैं एक मंत्र का अध्ययन कर रहा हूँ
तीर से तीरों को विभाजित करना। (1) [2355]

मैंने बुद्ध को देखा, जो निष्कलंक और बलिदान ग्रहण करने वाले थे।
प्रमुख, उत्कृष्ट, पुरुषों में श्रेष्ठ, तिस्सा बुद्ध, सर्वश्रेष्ठ हाथी। (2) [2356]

वह साधारण सा लबादा मैंने उस श्रेष्ठ व्यक्ति के लिए बिछाया था, जो चल रहा था,1406 महान व्यक्ति, महान नायक।
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल। (3) [2357]

उस निष्कलंक दीपक को देखकर, जो चंद्रमा के समान निर्दोष था,
तब मैंने गुरु के चरणों की पूजा की।
बहुत स्पष्ट मन के साथ। (4) [2358]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने वह साधारण सा लबादा [बुद्ध को] दे दिया, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
एक भद्दा लबादा देने का फल। (5) [2359]

सैंतीसवें युग में
अतः लोगों का एक स्वामी था, जिसे सुनंदा के नाम से जाना जाता था (1407)।
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (6) [2360]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [2361]

इस प्रकार पूज्य अक्कंतसञ्ञक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अक्कंतसञ्ञक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1405 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1406 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1407 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

219. सप्पिदायक 1408

एक शानदार महल में बैठे, हरम की महिलाओं से घिरे हुए, 1409 एक बीमार भिक्षु को देखकर
मैंने उसे उसके घर वापस जाने में मदद की।
[जहाँ] महान नायक, देवताओं के देवता, मनुष्यों के सांड ने प्रवेश किया था। [तब] मैंने घी दिया।
सिद्धार्थ, महान ऋषि को। (1-2) [2362-2363]

उसे देखकर भय कम हो गया।
[उसका] चेहरा और इंद्रियाँ1411 बहुत स्पष्ट, उस शिक्षक के चरणों की पूजा करने के बाद, मैं अतीत में बहुत अच्छी तरह से रहा। (3) [2364]

मुझे अत्यंत प्रसन्न और मेरी सभी इंद्रियों को परिपूर्ण देखकर,
हीरो 1412 आकाश में उड़ गया
ठीक हवा में हंस-राजा की तरह। (4) [2365]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह उपहार दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
स्पष्ट मक्खन का फल। (5) [2366]

सत्रहवें युग में
वहाँ जुटिदेव नाम का एक व्यक्ति रहता था, 1413
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (6) [2367]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [2368]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1408 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1409 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1410 कुम्मासा , संस्कृतः कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1411 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1412 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1413 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

इस प्रकार पूज्य सप्पिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सप्पिदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

220. पापनिवारिया 1414

हे भगवान, मैंने पियादस्सी के मार्ग को सरकंडों से बने आवरण से शुद्ध किया। 1415
उसके लिए हवा और गर्मी को रोकने के लिए। (1) [2369]

पाप को दंडित करने के लिए,1416
अच्छाई की प्राप्ति हुई है।1417
अशुद्धियों को नष्ट करने के लिए 1418 I
व्यवस्था में कड़ी मेहनत की।1419 (2) [2370]

ग्यारहवें युग में
[एक जीवित व्यक्ति] जिसे अग्गिदेव के नाम से जाना जाता था, 1420
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2371]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2372]

इस प्रकार पूज्य पापनिवारिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पापनिवारिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

हत्थी, पानाधि, सच्च, एकासञ्ञी और रंगसिया, संठित और तालवन्ती,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1414 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1415 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1416 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है।
1417 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1418 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1419 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
1420 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

इसी प्रकार अक्कांतसन्नका; सप्पी और पापनिवारी,
यहां चार और पचास छंद बनाएं।

हत्थी अध्याय, बाईसवाँ

आलंबनदायक अध्याय, तेईसवाँ

---

221. आलंबनदायक 1421

मैंने [चीज़ें] टांगने के लिए एक तख्ता दिया
द्विपद भगवान, तटस्थ, धन्य, अत्थदस्सी को,
दुनिया का सबसे अच्छा, तटस्थ। (1) [2373]

मैं विशाल पृथ्वी पर शासन कर रहा हूँ (1422)
समुद्र और आकाश के साथ। मैं 1423 आधिपत्य का प्रयोग करता हूँ।
पृथ्वी पर [सभी] प्राणियों1424 के बीच। (2) [2374]

मेरे सारे दोष जलकर राख हो गए हैं, मेरा हर अस्तित्व समाप्त हो गया है।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2375]

बासठवें युग में
अतः वे तीन शाही जाति के थे, 1425
[सभी का] नाम एकापस्सिता रखा गया, 1426
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले सम्राट। (4) [2376]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2377]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1421 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1422 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

1423 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1424 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1425 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1426 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

इस प्रकार पूज्य आलमबनदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आलंबनदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

222. अजिनदायक 1427

इकत्तीस युग पहले, 1428
मैंने भीड़ के लिए चटाई बनाई। मैंने बुद्ध, निर्मल, यज्ञ प्राप्तकर्ता को देखा। (1) [2378]

मैंने चमड़े का एक वस्त्र दिया

सिख धर्म, संसार का सगे-संबंधी।
उस कर्म के फलस्वरूप, हे द्विपाद स्वामी, हे जगत के श्रेष्ठ, हे पुरुषों के श्रेष्ठ बैल, सुख का अनुभव करते हुए,
मैंने अपने पापों को नष्ट कर दिया। अब मेरे पास मेरा अंतिम शरीर है।
बुद्ध के 1429 के युग में। (2-3) [2379-2380]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उसे हिरण की चमड़ी दी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
वह हिरण के चमड़े का फल है। (4) [2381]

उसके बाद पाँचवें युग में
सन् 1430 में सुदायका नाम का एक राजा था।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति का राजा, सात रत्नों का स्वामी। (5) [2382]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2383]

इस प्रकार पूज्य अजिनादायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1427 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1428 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1429 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1430 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

अजिनदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

223. द्वेरतनिया 1431

मैं उस समय जंगल में एक उपवन के भीतर हिरण का शिकारी था
मैंने बुद्ध को देखा, निष्कलंक, बलिदान प्राप्तकर्ता। (1) [2384]

तब मैंने महान ऋषि विपस्सी (बुद्ध) को मांस का एक टुकड़ा दिया। मैंने उन पर आधिपत्य स्थापित किया।
दुनिया में, उसके देवताओं सहित। (2) [2385]

उस समय मांस देने के कारण,
gems1432 मेरे लिए अस्तित्व में आया।
इस दुनिया में मेरे पास दो रत्न1433 थे
सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति के लिए। (3) [2386]

मुझे मांस के उपहार के लाभ के रूप में सब कुछ अच्छा लग रहा है। मेरा शरीर कोमल है।
[और] ज्ञान, एक तीक्ष्ण बुद्धि।1434 (4) [2387]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय उसे वह मांस दिया था, मुझे कभी भी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
यह मांस देने का फल है। (5) [2388]

और चौथे युग पूर्व में एक जन-प्रभु था। उसका नाम महारोहित था।
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (6) [2389]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1431 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1432 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1433 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1434 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1435 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [2390]

इस प्रकार पूज्य द्वेरतनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

द्वेरातानिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

224. आरक्खदायक 1436

मैंने भगवान सिद्धार्थ के लिए एक वेदी 1437 बनवाई और मैंने उनकी रक्षा भी की
सुप्रसिद्ध व्यक्ति, महान ऋषि को। (1) [2391]

उस कर्म के अवशेष के रूप में, मुझे भय और आतंक दिखाई नहीं देता। जहाँ कहीं भी मेरा पुनर्जन्म हुआ हो,
मुझे कभी कोई डर नहीं लगता। (2) [2392]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस वेदी का निर्माण करवाया था।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह वेदी [उपहार] का फल है। (3) [2393]

और छठे युग में
1438 में अपसेना नाम का एक व्यक्ति रहता था।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2394]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2395]

इस प्रकार पूज्य आरक्खदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आरक्खडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1436 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1437 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1438 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

225. अव्याधिका 1439

मैंने [उस समय] विपस्सी को एक गर्म कमरा 1440 दिया था, और बीमारों के लिए एक निवास स्थान भी दिया था

जिसमें गर्म पानी की व्यवस्था थी। (1) [2396]
उस अच्छे कर्म के फलस्वरूप,

मेरी स्वयं की स्थिति अच्छी है।1441
मुझे कोई बीमारी नहीं हुई है:
यह अच्छे कर्मों का फल है।1442 (2) [2397]
पिछले इक्यावन युगों में

पिछले इक्यावन युगों में
यह गर्म कमरे का फल है। (3) [2398]
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
सातवें युग पूर्व में एक अपराजिता थे, 1443

एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2399]
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
इस प्रकार पूज्य अव्याधिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अव्याधिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

The legend of Avyādhika Thera is finished.

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1439 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1440 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1441 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1442 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1443 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

---

226. अंकोलापुप्पिया 1444

मेरा नाम [उस समय] नारद था
[और] मैं कस्सपा के नाम से जाना जाता था। मैंने [बुद्ध] विपस्सी को देखा,
भिक्षुओं के प्रमुख, देवताओं द्वारा सम्मानित, बुद्ध, कम चिह्नों को धारण करते हुए, 1445
बलिदान प्राप्तकर्ता। एक अलंगियम फूल लेते हुए,
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। (1-2) [2401-2402]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2403]

चौहत्तरवें युग में
रोमासा नामक क्षत्रिय , 1446
नौकरों और वाहनों से संपन्न 1447
उसे मालाओं से सजाया गया था। (4) [2404]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2405]

इस प्रकार पूज्य अंकोलापुप्फिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अंकोलापुप्फिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1444 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1445 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1446 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है।
1447 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

227. वटांगसकिया 1448

मैंने विश्व के नेता को एक बगीचे में ले जाते हुए देखा। 1449

सोने से बना, उत्कृष्ट रूप से गढ़ा हुआ, सिर के लिए एक पुष्पमाला उठाकर, [और] वहाँ से जल्दी से उठकर, हाथी की पीठ पर सवार होकर,
मैंने इसे बुद्ध को दे दिया।
सिख धर्म के लिए, विश्व के रिश्तेदार। (1-2) [2406-2407]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2408]

सत्ताईसवें युग में
अतः लोगों का एक स्वामी रहता था।
[जिनका नाम] महापतापा रखा गया था (1450)
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (4) [2409]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2410]

इस प्रकार पूज्य वटांगसकिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वटांगसकिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

228. मिंजावटांगसकिया 1451

जब जगत के भगवान निर्वाण को प्राप्त हुए, सिख धर्म, वाद-विवाद में सर्वश्रेष्ठ,
मैंने बोधि 1452 की पूजा की।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1448 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1449 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1450 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1451 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1452 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

बालों की मालाओं से ढककर। (1) [2411]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय वह पूजा की थी।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बोधि- पूजा का फल है । (2) [2412]

इसके बाद छब्बीसवें युग में
मेघभा नाम की एक महिला थी, 1453
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2413]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2414]

इस प्रकार पूज्य मिंजवतंगसकिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मिंजावतंगसकिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

229. सुकतवेलिया 1454

उस समय मेरा नाम असिता था, 1455 और मैं माला बनाने वाली थी। एक पुष्प-माला उठाते हुए, 1456
मैं इसे राजा को देने गया था। (1) [2415]

राजा से अभी तक मुलाकात न होने के कारण, मैंने नेता, सिख धर्म को देखा।
प्रसन्न, और प्रसन्न हृदय से,
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। (2) [2416]

1453 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1454 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1455 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1456 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1457 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1458 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2417]

इसके पच्चीसवें युग में
मैं एक महान शक्तिवान राजा था, जिसे द्वेभार के नाम से जाना जाता था, 1459
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (4) [2418]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2419]

इस प्रकार पूज्य सुकतवेलीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुकातावेलीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

230. एकावंदिया 1460

प्रसन्नता से, अपने हृदय में आनंद लिए, मैंने बुद्धों में सर्वश्रेष्ठ, वेसभु, विजयी, की पूजा की
बैल, उत्कृष्ट, नायक। (1) [2420]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यही उपासना का फल है। (2) [2421]

चौबीसवें युग में विगतानन्द नामक एक व्यक्ति (1461) निवास करता था।

एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2422]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2423]

इस प्रकार पूज्य एकावंदिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

1459 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1460 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1461 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

एकावंदिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश: आलंबन और अजिना, मानस, अरक्खादायका, अव्याधि, अंकोला, सोना, मिंजा, अवेसा, वंदना;
पचपन श्लोक गिने गए हैं
जिनका अर्थ उन्हें पता है, उनके द्वारा।

आलंबनदायक अध्याय, तेईसवाँ

उदकासनदयी अध्याय, चौबीसवाँ

---

231. उदकासनदायक 1462

आश्रम के द्वार से बाहर आकर मैंने बैठने के लिए एक तख्ता बिछाया और मैंने पानी पिलाया
अंतिम लक्ष्य प्राप्त करने के लिए। (1) [2424]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह सीटों और पानी का फल है। (2) [2425]

पंद्रहवें युग पूर्व
सन् 1463 में अभिसामा नाम का एक व्यक्ति रहता था।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2426]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2427]

इस प्रकार पूज्य उदकासनदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उदकासनदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1462 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1463 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

---

232. भजनदायक 1464

बंदुमती शहर में,
मैं उस समय कुम्हार था
मैंने लंबे समय तक 1465 की रक्षा की
भिक्षुओं की सभा के लिए पात्र।1466 (1) [2428]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने भिक्षुओं के पात्रों की रक्षा की, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई ज्ञान नहीं है:
[सुरक्षा] पात्रों का फल। (2) [2429]

इसके तिरपनवें युग में अनंतजली नामक एक व्यक्ति का जन्म हुआ, 1467
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2430]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2431]

इस प्रकार पूज्य भाजनदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

भाजनदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

233. सालपुप्पिया 1468

अरुणावती शहर में
मैं उस समय केक बनाने वाला था। मैंने सिख धर्म [बुद्ध], विक्टर को देखा,

---

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1464 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1465 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1466 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1467 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1468 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1469 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

मेरे द्वार 1471 से होकर यात्रा 1470। (1) [2432]

मैंने अत्यंत स्पष्ट मन से बुद्ध का कटोरा ग्रहण किया और उन्हें एक साल का फूल भेंट किया।
बुद्ध, सर्वोच्च बिंदु प्राप्त करने वाले। (2) [2433]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उसे मिठाई 1472 दान की, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह साल के फूल का फल है । (3) [2434]

चौदहवें युग पूर्व
मेरा नाम अमितंजला था, 1473
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2435]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2436]

इस प्रकार पूज्य सालपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सालपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

234. किलंजदायका 1474

तिवारा में, सुंदर शहर,
मैं तब टोकरी बनाने वाला था (1475)।
वहाँ मौजूद भीड़ ने खूब आनंद उठाया।
सिद्धार्थ में, विश्व का दीपक। (1) [2437]

पूजा के लिए1476

1470 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1471 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1472 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1473 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1474 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1475 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1476 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या खमीर रहित भोजन के रूप में।

हे जगत के स्वामी, एक व्यक्ति चटाई मांग रहा है। पूछे जाने पर मैंने उसे चटाई दे दी।
बुद्ध- पूजा करने वाले । (2) [2438]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यही चटाई देने का फल है। (3) [2439]

सत्तरवें युग में जुटिंधरा नाम का एक राजा था (1477)।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2440]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2441]

इस प्रकार पूज्य किलांजदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

किलांजदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

235. वेदीयदायक 1478

प्रसन्न होकर, अपने हृदय में आनंद लिए, मैंने एक रेलिंग बनवाई
धन्य के शानदार आधार पर
विपस्सी का बोधि वृक्ष। (1) [2442]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने वह रेलिंग बनवाई थी।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [2443]

ग्यारहवें युग में
मेरा नाम सूरीअस्समा (1479) रखा गया था।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2444]

केक या जंकेट (PSI: Sinh. roṭiya)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई खाद्य पदार्थ है।

1477 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1478 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1479 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2445]

इस प्रकार पूज्य वेदियदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वेदियादायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

236. वण्णकारक 1480

अरुणावती शहर में
मैं उस समय एक रंगसाज़ था। मैंने विभिन्न रंगों से रंगा
स्तूप पर वस्त्र वस्तुएँ.1481 (1) [2446]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय रंगों से खुद को रंगा था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है;
रंगों का यही फल है। (2) [2447]

इसके बाद तेईसवें युग में
[मेरा नाम] चंदुपमा था, 1482
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2448]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2449]

इस प्रकार पूज्य वण्णकारक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वन्नकारक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1480 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1481 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1482 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

237. पियालापुप्पिया 1483

मैं उस समय जंगल में एक उपवन में हिरण का शिकारी था। एक पियाला फूल देखकर

मैंने इसे सड़क पर फेंक दिया।1485 (1) [2450]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [2451]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2452]

इस प्रकार पूज्य पियालापुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पियालापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

238. अंबयागदायका 1486

उस समय अपने क्षेत्र में एक विशेषज्ञ 1487 होने के नाते, मैं एक वन उपवन में गया,
और बुद्ध, शांत स्वभाव वाले व्यक्ति को देखकर,
मैंने उसे आमों का उपहार दिया। (1) [2453]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह दान दिया था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1483 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1484 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1485 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1486 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
1487 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1488 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह आम के उपहार का फल है। (2) [2454]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2455]

इस प्रकार पूज्य अंबयागदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अंबयागडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

239. जगतिकारक 1489

जब विश्व के स्वामी, पुरुषों में श्रेष्ठ, अत्थादस्सी निर्वाण प्राप्त हुए, तो भूनिर्माण मेरे द्वारा किया गया था
बुद्ध के उत्कृष्ट स्तूप के लिए। (1) [2456]

उस कर्म को करने के बाद से अठारह सौ युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
यह [अच्छी] भूनिर्माण का फल है। (2) [2457]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2458]

इस प्रकार पूज्य जगतिकारका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

जगतिकारका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

240. वासिदायक 1490

अतीत में मैं तिवारा में एक लोहार था, 1491 जो सबसे अच्छे शहरों में से एक है। एक रेज़र वह उपहार था जो मैंने बनाया था
एक अजेय अकेले व्यक्ति को। (1) [2459]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1489 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1490 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
1491 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उसे तब वो रेज़र दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला: एक उपहार में मिले रेज़र का फल। (2) [2460]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2461]

इस प्रकार पूज्य वासिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वासिदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: उदाकासन, भाजनादा
सालपुप्पी, किलांजदा, वेदिका और वनकर, पियालम, अंबयागड़ा, जगती और वासिदयी:
इसमें तीस श्लोक और आठ श्लोक अतिरिक्त हैं।

उदकासनदयी अध्याय, चौबीसवाँ

तुवरदया अध्याय, पच्चीसवाँ

---

241. तुवरदायक 1492

मैं उस समय जंगल में एक उपवन के भीतर हिरण का शिकारी था
मैं भिक्षुओं के लिए एक [पात्र] लाया जो भरा हुआ था14931494
तुवारा 1495 के साथ [उनके खाने के लिए].1496 (1) [2462]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उन्हें उस समय वह उपहार दिया था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1492 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1493 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1494 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है।
1495 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1496 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
वह तुवारा का फल है । (2) [2463]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2464]

इस प्रकार पूज्य तुवरदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तुवरदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

242. नागकेसरिया 1497

धनुष के दोनों सिरों को इकट्ठा करके, 1498
मैं जंगल में प्रवेश कर गया
मैंने वहाँ एक छोटी झील देखी, जिसमें 1499 लोग एकत्रित थे।
बहुत साफ 1500 और फूलों से भरा हुआ।1501 (1) [2465]

दोनों हाथों से एक तोड़कर और माथे पर प्रणाम करके,1502
फिर मैंने इसे टिस्सा को भेंट किया।
बुद्ध, जगत के रिश्तेदार। (2) [2466]

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2467]

सतहत्तरवें युग में,

मेरा नाम पामोक्खरण रखा गया, 1503
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2468]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1497 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1498 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1499 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1500 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1501 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1502 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
1503 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2469]

इस प्रकार पूज्य नागकेसरिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नागकेसरिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

243. नलिनाकेसरिया 1504

मैं एक जलपक्षी था1505 जो एक प्राकृतिक झील1506 [वहाँ] में रहता था।
फिर मैंने उसे देखा, जो देवताओं का परमेश्वर है।
[जब] वह आकाश में उड़ रहा था। (1) [2470]

एक ऐसे मन के साथ जो बिल्कुल स्पष्ट था
मैंने अपनी चोंच से कुछ परागकण (1508) तोड़े
[और फिर] इसे टिस्सा को दे दिया।
बुद्ध, जगत के रिश्तेदार। (2) [2471]

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2472]

तिहत्तरवें युग में
मेरा नाम सतपट्टा था, सन् 1509
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2473]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2474]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1504 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1505 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1506 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1507 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1508 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1509 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

इस प्रकार पूज्य नलिनाकेसरिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नलिनाकेसरिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

244. वीरवापुप्फिया 1510

विश्व नेता तब बाहर चले गए।
एक हजार दोषरहित अरहंतों के साथ।1511
विरावा 1512 का फूल तोड़ना ,
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। (1) [2475]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [2476]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2477]

इस प्रकार पूज्य वीरवपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वीरवपुप्पिया थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

---

245. कुटिधूपक 1513

मैं उस झोपड़ी में चौकीदार था।
भगवान सिद्धार्थ की। मैं समय-समय पर इसे सुगंधित करता था।
[अपने] हाथों से अच्छा महसूस कर रहा हूँ-] प्रसन्न। (1) [2478]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
बुद्ध की पूजा का फल। (2) [2479]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1510 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1511 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1512 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1513 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2480]

इस प्रकार पूज्य कुटिधूपका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कुटिधूपका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

246. पट्टादायक 1514

जब उसने मुझे पूरी तरह से वश में कर लिया, तो मैंने उसे भिक्षापात्र भेंट किया।
महान ऋषि सिद्धार्थ को, जो सत्यनिष्ठा के साक्षात स्वरूप और तटस्थ हैं। (1) [2481]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय वह दान किया था, और मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
वह कटोरे के उपहार का फल है। (2) [2482]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2483]

इस प्रकार पूज्य पट्टाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पट्टाडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

247. धातुपूजक 1515

जब सिद्धार्थ, जो पुरुषों में श्रेष्ठ और जगत के स्वामी थे, निर्वाण प्राप्त कर चुके थे, तब मुझे उनका एक अवशेष प्राप्त हुआ।
द्विपद भगवान, तटस्थ एक। (1) [2484]

मैंने उस अवशेष को लेकर
बुद्ध के, सूर्य के रिश्तेदार के,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1514 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1515 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

फिर उन्होंने पाँच वर्षों तक उसकी पूजा की।
मानो वहाँ सर्वश्रेष्ठ पुरुष खड़े थे। (2) [2485]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय उस अवशेष की पूजा की थी, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
अवशेषों की देखभाल का फल। (3) [2486]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2487]

इस प्रकार पूज्य धातुपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

धातुपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

248. पातालीपूजक 1517

उस समय मैंने अपने सिर पर सात तुरही के फूल रखे; मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया।
वेसभु, पुरुषों में सर्वोच्च। (1) [2488]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
वह पुष्प- पूजा का फल है । (2) [2489]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2490]

इस प्रकार पूज्य पातालिपुक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पाटलिपजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

1516 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1517 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1518 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

249. बिम्बिजलिया 1519

विजेता पद्ममुत्तरा,
स्वयं एक हो जाओ, प्रधान व्यक्ति, चार [महान] सत्यों की व्याख्या करते हुए,
अमरता का मार्ग घोषित किया। (1) [2491]

उस समय मैंने [वहाँ] फैलकर अपना काम किया।
फूल [जिन्हें] बिम्बिजलिका 1520 कहा जाता है
और उन्हें बुद्ध को अर्पित किया।
द्विपादों का स्वामी, तटस्थ। (2) [2492]

इसके बाद अड़सठवें युग में चार [नाम] किंजाकेसरा, 1521 थे
महान शक्ति वाले, चक्र घुमाने वाले सम्राट, सात रत्नों के स्वामी। (3) [2493]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2494]

इस प्रकार पूज्य बिम्बिजलिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बिम्बिजलिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

250. उद्दालदायका 1522

महान वन से निकले बुद्ध, जिनका नाम काकुसंध1523 है, जो स्वयं एक हो गए हैं, अजेय हैं।
एक बड़ी नदी पर पहुँच गया था। (1) [2495]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1519 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1520 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1521 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1522 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
1523 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

सुनहरी बौछार लेना1524 [खिलना], आनंद से भरा मन होना,
मैंने इसे स्वयं-विकास को दे दिया।
आत्म-नियंत्रित व्यक्ति, ईमानदार व्यक्ति.1525 (2) [2496]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
वह पुष्प- पूजा का फल है । (3) [2497]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान जिन पर महारत हासिल की गई:
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2498]

इस प्रकार पूज्य उद्दालदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उद्दालदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: तुवारा, नागा, नलिना,
विरव, कुटिधूपका, पत्ता, धातु, पाटलिया,
[और] बिम्बी; उद्दालक सहित सैंतीस श्लोक गिने गए
जिनका अर्थ उन्हें पता है, उनके द्वारा।

तुवरदया अध्याय, पच्चीसवाँ

1524 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1525 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

थोमाका अध्याय, छब्बीसवाँ

251. थोमादायक 1526

देवताओं के लोक में खड़े होकर (1527), शिक्षा को सुनकर (1528)
विपस्सी [बुद्ध], महान ऋषि,
संतुष्ट1529 मैंने ये शब्द कहे:1530 (1) [2499]

हे सुसंस्कृत व्यक्ति, आपकी प्रशंसा हो!1531
हे परम पुरुष, आपकी जय हो! [आप] अमरता की स्थिति समझाते हुए कई लोगों को पार ले जाते हैं।" (2) [2500]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय वह भाषण दिया था, और तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
यही प्रशंसा करने का फल है। (3) [2501]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2502]

इस प्रकार पूज्य थोमाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

थोमाडायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1526 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1527 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1528 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1529 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1530 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1531 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

252. एकासनादायक 1532

मेरे दिव्य रंग को त्यागते हुए1533,1534
मैं अपनी पत्नी के साथ यहाँ सेवा करने की इच्छा से आया हूँ।
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की व्यवस्था.1535 (1) [2503]

पदुमुत्तरा का अनुयायी
देवला नाम से जाना जाता था। 1536
एक बहुत ही स्पष्ट मन के साथ,
मैंने उसे भिक्षा भोजन दिया। (2) [2504]

उस [अच्छे] कर्म को करने के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
भीख मांगने का फल यही है।1537 (3) [2505]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान जिन पर महारत हासिल की गई:
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2506]

इस प्रकार पूज्य एकासनदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकासनदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

253. चितपुजक 1538

आनंद नाम से जाने जाने वाले बुद्ध,
स्वयंभू, अजेय, सन् 1539 में अपने वनवास में इस दुनिया से विदा हो गए।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1532 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1533 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1534 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1535 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1536 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1537 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1538 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1539 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

जंगलों में, लोगों से रहित। (1) [2507]

देवताओं के लोक से यहाँ आकर, मैंने एक चिता बनाकर, उसके शरीर को उसी स्थान पर जला दिया।
और मैंने [इस पर] ध्यान दिया।1541 (2) [2508]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2509]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2510]

इस प्रकार पूज्य चितपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

चितपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

254. तिचमपकपुप्पिया 1542

हिमालयी क्षेत्र में
विकट नाम का एक पर्वत है।1543
इसके बीच में [उस समय] 1544 आवास थे।
एक भिक्षु जिसकी इंद्रियाँ [अच्छी तरह से] नियंत्रित हैं। (1) [2511]

उस [भिक्षु] की शांति देखकर, [स्वयं] का मन अत्यंत स्पष्ट था, और मैंने तीन चंपक फूल एकत्र किए।
मैं उन [फूलों] को [वहाँ] बिखेर देता हूँ। (2) [2512]

1540 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1541 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1542 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1543 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1544 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2513]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2514]

इस प्रकार पूज्य तिकामपकपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

टिकाम्पाकापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

255. सत्तपातलिया 1545

मैंने [तब] बुद्ध को सात तुरही-फूल (1546) अर्पित किए, जो भोजन-प्लेट वृक्ष (1547) की तरह चमक रहे थे।
पहाड़ के भीतर बैठे हुए। (1) [2515]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [2516]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2517]

इस प्रकार पूज्य सत्तपातलिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सत्तपातलिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1545 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1546 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1547 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

256. पाहनदायक 1548

उस समय मैं बुद्ध का पुत्र था।
[एक लड़का जिसका] नाम कैंडाना था।1549
मैंने अपने जूतों में से एक जूता दान कर दिया।
जब आपका जागरण हुआ। (1) [2518]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस जूते को तब दान कर दिया था।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह एक उपहार स्वरूप प्राप्त जूते का फल है। (2) [2519]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति मार्ग;
छह विशेष ज्ञान जिन पर महारत हासिल की गई:
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2520]

इस प्रकार पूज्य पाहनदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पाहनदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

257. मंजरीपूजक 1550

फूलों का एक गुच्छा बनाकर, मैं राजमार्ग पर निकल गया।
मैंने उस भिक्षु को देखा, जिसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता।
भिक्षु सभा द्वारा सम्मानित। (1) [2521]

मैं प्रसन्न हूँ, मेरे हृदय में आनंद है, और मैं परम प्रसन्नता से परिपूर्ण हूँ, इसे अपने दोनों हाथों से ग्रहण करता हूँ।
मैंने बुद्ध को [वह गुलदस्ता] भेंट किया। (2) [2522]

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1548 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1549 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1550 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1551 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1552 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2523]

तिहत्तरवें युग में
पृथ्वी पर एक शासक था, जिसका नाम ज्योतिया था, 1553
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (4) [2524]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2525]

इस प्रकार पूज्य मंजरीपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मांजारिपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

258. पन्नदायक 1554

हिमालय पर्वत पर,
मैं छाल के वस्त्र धारण करने वाला एक तपस्वी था, जो बिना नमक के पत्तों पर जीवन यापन करता था।
मेरी आवश्यकताओं के संदर्भ में आत्म-नियंत्रित।1555 (1) [2526]

जब मुझे नाश्ता मिल गया, तब सिद्धार्थ (बुद्ध) मेरे पास आए।
मैंने वह [भोजन] बुद्ध को दिया।
[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (2) [2527]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वे पत्ते दिए थे, मुझे कभी भी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
यह पत्तों के दान का फल है। (3) [2528]

सत्ताईसवें युग में यदत्तिया नामक एक राजा था (1556)।

1553 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1554 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1555 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1556 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2529]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति मार्ग;
छह विशेष ज्ञान जिन पर महारत हासिल की गई:
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2530]

इस प्रकार पूज्य पन्नदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पन्नदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

259. कुटिडायक 1557

उस समय संबुद्ध वृक्ष की जड़ में निवास करते हुए वनों में विचरण करते थे। पत्तों का एक कक्ष बनाकर, मैंने इसे अजेय के लिए दिया।1558 (1) [2531]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने पत्तों की वह झोपड़ी [उसे] दे दी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह झोपड़ी-दान का फल है। (2) [2532]

इसके बाद अड़तीसवें युग में
सोलह [पुरुष] थे जो राजा थे, चक्र-घुमाने वाले सम्राट जिन्हें कहा जाता था, उद्धरण, सब्तथा-अभिवस्सी.1559 (3) [2533]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2534]

इस प्रकार पूज्य कुटिडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कुटिडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1557 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1558 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1559 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

260. अग्गपुप्फिया 1560

एक अग्गजा 1561 को खिलने देना ,
मैंने परम पुरुष, स्वर्ण रंग के संबुद्ध, सिख धर्म के पास पहुँचकर प्रार्थना की, जो आग के ढेर की तरह थे।
वह पर्वत की ढलान पर बैठे हुए अपनी हजार किरणें बिखेर रहे थे। प्रसन्न, मेरे हृदय में आनंद भरा हुआ था।
मैंने बुद्ध को [वह फूल] अर्पित किया। (1-2) [2535-2536]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2537]

पच्चीसवें युग में [अतः]
मुझे अमिता, 1563 के नाम से जाना जाता है।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2538]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2539]

इस प्रकार वास्तव में आदरणीय अग्गपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे।

अग्गपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

थोमाका, भिक्खा, चिताका, चंपाका, सत्तपातली,
पाहन, मंजरी, पन्ना, कुटिदा, अग्गपुप्पिया 1564

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1560 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1561 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1562 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1563 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1564 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

और यहाँ छंदों की संख्या ठीक चालीस और एक अधिक है।

थोमाका अध्याय, छब्बीसवाँ

पदुमुखेपा अध्याय, सत्ताईसवाँ

---

261. आकाशुक्खीया 1565

दो जलप्रजनित फूल लेकर, 1566
मैं बाज़ार में घूमते हुए पुरुषों में श्रेष्ठ, सिद्धार्थ, स्वर्ण रंग के [बुद्ध] के पास पहुँचा। (1) [2540]

मैंने एक फूल बुद्ध की प्रतिमा के दोनों चरणों में रख दिया। और दूसरा फूल लेकर...
मैंने इसे आकाश में फेंक दिया। (2) [2541]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उसे वह फूल भेंट किया।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
फूल देने का यही फल है। (3) [2542]

बत्तीसवें युग में
सन् 1568 में अंतालिक्खाचारा नामक एक पृथ्वी स्वामी रहते थे।
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (4) [2543]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति मार्ग;
छह विशेष ज्ञान जिन पर महारत हासिल की गई:
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2544]

इस प्रकार पूज्य आकाशुक्खिपिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1565 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1566 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1567 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1568 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

आकाशुक्खिपिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

262. तेलमक्खीया 1569

जब सिद्धार्थ, परम पूज्य, पुरुषों में श्रेष्ठ, का देहांत हुआ, सन् 1570 में मैंने उन पर तेल मल दिया।
उसके बोधि वृक्ष पर रेलिंग। (1) [2545]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने [रेलिंग पर] तेल लगाया, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह तेल मलने का फल है। (2) [2546]

इसके चौबीसवें युग में
मैं शासक हूँ, 1571 जिसका नाम सुच्छवी है, 1572
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2547]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति मार्ग;
छह विशेष ज्ञान जिन पर महारत हासिल की गई:
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2548]

इस प्रकार पूज्य तेलमक्खिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तेलमक्खिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1569 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1570 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1571 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1572 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

263. अद्धचंडीय 1573

एक अर्धचंद्र 1574 मेरे द्वारा दिया गया था
पृथ्वी से उगते वृक्ष 1575 पर, धन्य तिस्सा के चरणों में
बोधि, [मगरमच्छ की छाल वाला वृक्ष].1576 (1) [2549]

पिछले बानवे युगों में

मैंने उसे वह फूल भेंट किया।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बोधि- पूजा का फल है । (2) [2550]

अतः पच्चीसवें युग में देवपा नामक एक क्षत्रिय ने (1577)
वह एक महान शक्तिवान चरखा चलाने वाला था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (3) [2551]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2552]

इस प्रकार पूज्य अद्धचंडीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अद्धचंडीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

264. अरणदीपीय 1578

मैं, देवता के रूप में पुनर्जन्म लेकर,
उस समय धरती पर आकर उन्होंने पाँच दीपक दान किए।
[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (1) [2553]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1573 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1574 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1575 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1576 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1577 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1578 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय वह दीपक दान कर दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:

यह दीपक दान का फल है। (2) [2554]

पचपनवें युग में [अतः]
पृथ्वी पर एक शासक रहता था,
[जिनका नाम] समंतचक्खु था, 1579
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (3) [2555]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2556]

इस प्रकार पूज्य अरणदीपीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अरणदीपीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

265. बिलादायक 1580

हिमालयी क्षेत्र में,
रोमासा नाम का एक पहाड़ है।1581
उस पर्वत की तलहटी में रहता था
एक भिक्षु जिसकी इंद्रियाँ [अच्छी तरह से] नियंत्रित हैं। (1) [2557]

मैंने कंदयुक्त जड़ें एकत्र करके उस भिक्षु को दान कर दीं।
महान नायक ने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की।
स्वयं-बनने वाला, अजेय: (2) [2558]

"आपने मुझे अत्यंत स्पष्ट मन से कंदयुक्त जड़ें दी हैं। अस्तित्व में पुनर्जन्म हो रहा है।"
फल तुम्हारे लिए पुनर्जन्म लेगा।" (3) [2559]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उसे वे कंदयुक्त जड़ें दीं, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह कंदयुक्त जड़ों का फल है। (4) [2560]

1579 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1580 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1581 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2561]

इस प्रकार पूज्य बिलादायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बिलादायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

266. मच्छादायक 1582

चंदाभागा नदी के किनारे
उस समय मेरा यूजरनेम osprey1583 था।
मैं 1584 एक बड़ी मछली लाया और उसे दे दी
सिद्धार्थ नामक बुद्ध को। (1) [2562]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस मछली को तब दान कर दिया था।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह मछली दान का फल है। (2) [2563]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2564]

इस प्रकार पूज्य मच्छडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।
मच्छडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

267. जवाहंगसाका 1585

चंदाभागा नदी के किनारे
मैं उस समय वनपाल था।
मैंने बुद्ध, सिद्धार्थ को देखा।
आकाश में यात्रा करते हुए [वहाँ]। (1) [2565]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1582 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1583 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1584 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1585 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है। यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

मैंने अपने हाथों को जोड़कर ऊपर उठाया, उस महान ऋषि के दर्शन किए, जिससे मेरे हृदय को आनंद मिला।
मैंने नेता को आदर दिया। (2) [2566]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने पुरुषों में श्रेष्ठ बैल का आदर किया, मैंने कभी बुरे पुनर्जन्म को नहीं जाना है:
यही श्रद्धा का फल है। (3) [2567]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2568]

इस प्रकार पूज्य जवाहांसक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

जावहंसक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

268. साललपुप्पिया 1586

सन् 1587 में, चंदाभागा नदी के किनारे मैं एक किन्नर था । मैंने बुद्ध और विपस्सी के दर्शन किए।
किरणों के जाल से घिरा हुआ। (1) [2569]

प्रसन्न, हृदय में आनंद और परम प्रसन्नता से परिपूर्ण, सालल का फूल लेकर,
मैं इसे विपस्सी के सामने बिखेरता हूँ। (2) [2570]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2571]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1586 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1587 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1588 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2572]

इस प्रकार पूज्य साललपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

साललपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

269. उपागतभाषणीय 1589

हिमालय पर्वतों के बीच एक सुंदर झील थी। मैं उस स्थान पर एक दानव था।
निम्न नैतिकता के साथ,1591 भयानक। (1) [2573]

विपस्सी, विश्व के नेता, दयालु, करुणामयी,
तब वह मेरे सामने आया।
मुझे ऊपर उठाने की इच्छा के साथ। (2) [2574]

आशा के साथ आगे बढ़ते हुए, मैंने गुरु को नमन किया।
वह महान नायक जो आ चुका था,
देवताओं का देवता, मनुष्यों का बैल। (3) [2575]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने परमेश्वर की पूजा की, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
यही उपासना का फल है। (4) [2576]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2577]

इस प्रकार पूज्य उपागतभाषनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उपागतभासनीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1589 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1590 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1591 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

270. तराणीय 1592

विपस्सी बुद्ध, 1593 स्वर्ण बुद्ध, नदी के किनारे खड़े थे, वे श्रद्धा के योग्य गुरु थे।
भिक्षु सभा द्वारा सम्मानित। (1) [2578]

उस स्थान पर विशाल महासागर पार करने के लिए नावें नहीं मिलती थीं। उस नदी से आगे बढ़ने पर
मैंने विश्व के नेता को पार कराने में मदद की।1594 (2) [2579]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को पार करने में मदद की, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह नौका विहार का फल है। (3) [2580]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2581]

इस प्रकार पूज्य ताराणिय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

ताराणीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

उक्खेपी, तेला और कैंडी, दिपाड़ा और बिलालिदा, माचा, जावा, सलालादा,

रक्खसा, तराणा [से] दस बनते हैं और यहाँ श्लोकों की गणना ठीक चालीस प्लस एक के रूप में की गई है।

पदुमुखेपा अध्याय, सत्ताईसवाँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1592 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1593 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1594 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

सुवन्नबिम्बोहना अध्याय, अट्ठाईसवाँ

---

271. सुवण्णबिम्बोहनिया 1595

मैंने एक कुर्सी दान की।
अपने हाथों से किए गए काम से मुझे बहुत खुशी हुई, और मैंने एक तकिया भी दिया।
अंतिम लक्ष्य की कामना करते हुए। (1) [2582]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने तब वह तकिया दान कर दिया था।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
वह तकिये का फल है। (2) [2583]

इसके बाद तिरसठवें युग में
क्या 1596 में शासक का नाम असमा था, 1597
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2584]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2585]

इस प्रकार पूज्य सुवन्नबिम्बोहनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुवन्नबिम्बोहनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

272. तिलमुत्तिदायक 1598

मेरी सोच को समझते हुए,
शिक्षक, विश्व के प्रमुख नेता, अपने शरीर के माध्यम से जो बना हुआ है
मन ने अपनी शक्तियों के माध्यम से मुझसे संपर्क किया।1599 (1) [2586]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1595 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1596 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1597 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1598 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1599 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

गुरु की सेवा करते हुए, परम पुरुष की पूजा करते हुए, प्रसन्नता से अपने हृदय में आनंद भरते हुए,
मैंने तिल की एक मुट्ठी दी। (2) [2587]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने एक मुट्ठी तिल दिए।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
तिल के फल की एक मुट्ठी। (3) [2588]

सोलहवें युग पूर्व
नंदिया नामक क्षत्रिय
वह एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा था, जो सात रत्नों का स्वामी था। (4) [2589]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2590]

इस प्रकार पूज्य तिलमुट्ठिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिलमुथिदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

273. चांगोटकीय 1600

पहाड़ों के बीच रहते हुए, समुद्र से प्राप्त भोजन पर निर्भर रहते हुए,
पीछे की ओर गिरने की इच्छा न रखते हुए,
दान किया, एक बॉक्स.1601 (1) [2591]

फूलों का एक डिब्बा देने के बाद
सिद्धार्थ को, जो परम ऋषि हैं, समस्त प्राणियों पर दया करने वाले हैं।
मैंने स्वर्ग में एक युग का आनंद लिया। (2) [2592]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने वह डिब्बा [बुद्ध को] दे दिया था, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं भुगतना पड़ा है:
यह एक बॉक्स देने का फल है। (3) [2593]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1600 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1601 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2594]

इस प्रकार पूज्य चांगोटकीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

चांगोटकीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

274. अब्भंजनदायक 1602

मैंने मरहम दिया था
कोण्डाञ्ञ को, हे भगवान, जो वासना से मुक्त, तटस्थ, जिनका मन आकाश के समान विशाल था, जो विलंब नहीं करते थे, 1603
ध्यानी, 1604
सभी भ्रमों का पलटना,

समस्त संसार का शुभचिंतक, 1605
द्विपद स्वामी, तटस्थ एक। (1-2) [2595-2596]

बुद्ध को मरहम लगाने के बाद से अनगिनत युगों के दौरान, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
[उपहार देने का] फल। (3) [2597]

पंद्रहवें युग पूर्व
सन् 1606 में सिराप्पा नाम का एक शासक था।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2598]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2599]

इस प्रकार पूज्य अब्भंजनदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अब्भंजनदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1602 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1603 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1604 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1605 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1606 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

---

275. एकंजलिया 1607

मैंने एक खुला निवास स्थान दिया
एकांतवासी को, सबसे महान ऋषि को, जो एक अंजीर के पेड़ की छाया में निवास करते हैं।
पत्तों की [अच्छी तरह से] तैयार की गई1609 चटाई पर। (1) [2600]

मैंने अपने हाथों को आपस में जोड़कर ऊपर उठाया, 1610
मैंने दो पैरों वाले प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ, टिस्सा के लिए फूलों की चटाई बिछाई।

विश्व का स्वामी, तटस्थ। (2) [2601]

पिछले बानवे युगों में
मैंने फूलों की वो चटाई बनाई, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई ज्ञान नहीं है:
यही चटाई देने का फल है। (3) [2602]

चौदहवें युग पूर्व
मैं 1611 में लोगों का शासक था।
एक पहिया घुमाने वाला राजा, महान शक्ति के साथ, जिसे 1612 एका-अंजलिका के नाम से जाना जाता है। 1613 (4) [2603]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2604]

इस प्रकार पूज्य एकंजलिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकंजलिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1607 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1608 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1609 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1610 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1611 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1612 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
1613 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

---

276. पोत्थादायका 1614

मैंने प्लास्टरिंग1615 के लिए उपहार दिया
उपहार के योग्य, अद्वितीय 1616
1617 में महान ऋषि के नाम पर,

शिक्षक, और शिक्षण, और भिक्षु.1618 (1) [2605]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह प्लास्टर-उपहार का फल है। (2) [2606]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2607]

इस प्रकार पूज्य पोत्थाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पोत्थाडायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

277. चितकपूजक 1619

चंदाभागा नदी के किनारे
मैं मौजूदा हालात के साथ चल रहा था।
मैंने सात मालुवा 1620 फूल रखे
[और] एक मंदिर में पूजा की।1621 (1) [2608]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1614 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1615 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1616 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1617 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1618 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1619 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1620 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1621 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस मंदिर में पूजा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
वह श्रिन- पूजा का फल है । (2) [2609]

सतहत्तर युगों बाद
सात चक्र घुमाने वाले राजा थे, [जिन सभी का नाम] पतिजग्ग था, 1622 सात रत्नों के स्वामी। (3) [2610]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2611]

इस प्रकार पूज्य चित्तकपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सीतापूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

278. आलुवादायक 1623

हिमालय पर्वत पर
सुंदर, महान सिंधु नदी बहती है।
वहाँ मैंने निर्विचारित व्यक्ति को देखा।
दीप्तिमान एक, 1624 सुंदर। (1) [2612]

उन्हें देखकर मैं चकित रह गया, वे परम शांति में लीन थे।
मैंने उसे कुछ कंदयुक्त जड़ें दीं।
[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (2) [2613]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने तब उन कंदयुक्त जड़ों को जन्म दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
यह कंद-जड़-उपहारों का फल है। (3) [2614]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान जिन पर महारत हासिल की गई:
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2615]

1622 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1623 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1624 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

इस प्रकार पूज्य आलुवदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आलुवदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

279. एकपुंडरीका 1625

स्वयंभू, प्रकाशमान [बुद्ध] को तब रोमासा नाम से जाना जाता था।1626
मैंने उन्हें एक सफेद कमल भेंट किया।
एक ऐसे मन के साथ जो बहुत स्पष्ट था। (1) [2616]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने तब एक सफेद कमल दिया था।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
वह सफेद कमल का फल है। (2) [2617]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2618]

इस प्रकार पूज्य एकपुंडरीका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकपुंडरीका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

280. तरणीय 1627

राजमार्ग के एक ऊबड़-खाबड़ स्थान पर,
मैंने एक पुल का निर्माण करवाया।

दुनिया को पार करने के लिए,
[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (1) [2619]

पिछले इक्यावन युगों में
वह पुल मैंने बनवाया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
पुल देने का यही फल है। (2) [2620]

इसके बाद पचपनवें युग में

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1625 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1626 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1627 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

वहाँ एक [पुरुष] था, समोगधा, 1628
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2621]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2622]

इस प्रकार पूज्य ताराणिय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

ताराणीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

सोवण्ण और तिलमुट्ठी, चंकॉट', 1629 अब्भंजम, अंजलि, पोत्थक, चितक, माला, एकपुण्डरी, सेतुना:
जब बुद्धिमान लोग इन श्लोकों की गिनती करते हैं तो उनकी संख्या बयालीस होती है।

सुवन्नबिम्बोहना अध्याय, अट्ठाईसवाँ

पन्नदायक अध्याय, उनतीसवाँ

---

281. पन्नदायक 1630

पत्तों से बने कमरे में बैठकर मैं पत्तों को ही भोजन के रूप में खा रहा हूँ।
सिद्धार्थ (बुद्ध), विश्व की मशाल, 1631
हर दुनिया के चिकित्सक, 1632

1628 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1629 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1630 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
1631 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1632 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

तब परम संत उस कमरे में बैठे हुए मेरे पास आए।
मैंने उसे छुट्टियाँ दीं [जब वह]
पत्तों से बनी चटाई पर बैठे हुए। (1-2) [2623-2624]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने तब उसे वे पत्ते दिए थे, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
पत्ते देने का फल यही है। (3) [2625]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2626]

इस प्रकार पूज्य पन्नदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पन्नदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

282. फलदायक 1633

ध्यान से उठते हुए, 1634
[बुद्ध] 1635 में मुझसे भिक्षा मांगने आए। ठीक उसी प्रकार जैसे ब्रह्मांडीय पर्वत, 1636 में उन्होंने
वह पृथ्वी के वाहक के समान था।1637 (1) [2627]

मायरोबलन 1638 [और] आंवला, 1639
आम, 1640 गुलाब-सेब, 1641 बहेरा, 1642

{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 1633 अपदान संख्याएँ BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1634 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1635 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1636 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

1637 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1638 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1639 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

1640 शाब्दिक रूप से, "गया"

1641 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ संजलेसी पढ़ना

1642 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

जुजुबे,1643 मार्किंगनट,1644 बेल,1645 और फारुसका के फल 1646 — ये सब मैंने दिए थे।
एकदम स्पष्ट मन से,
सिद्धार्थ [बुद्ध], महान ऋषि,
हर दुनिया का दयावान.1647 (2-3) [2628-2629]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने तब उसे वह फल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (4) [2630]

सत्तावनवें युग में
अतः [रहते थे] एक शासक, 1648 एकज्जा, 1649
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (5) [2631]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2632]

इस प्रकार पूज्य फलाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

फलाडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

283. पच्चुग्गमानिया 1650

एकदम शांत मन से मैं बाहर गया और विश्व के मशाल, सिद्धार्थ (बुद्ध) को 1651 में प्रणाम किया।

1643 शाब्दिक रूप से, "योग्य"
1644 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं मीटर बनाए रखने के लिए "हज़ार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी शोषण का उपयोग करता हूँ। पाली शाब्दिक रूप से है, "एक हज़ार कंड (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]।"
1645 में बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
1646 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
1647 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
1648 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
1649 लिट., "एक फूल पर"
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1650 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1651 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

हर दुनिया का चिकित्सक, 1652; मनुष्यों का बैल, जो जंगल में शेर की तरह आया था, 1653
सर्वोत्तम नस्ल के बैल की तरह,
अर्जुन वृक्ष के समान भव्य।1654 (1-2) [2633-2634]

पिछले चौरानवे युगों में
मैं पुरुषों के महापुरुष से मिलने गया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
मिलने जाने का यही फल है। (3) [2635]

सत्ताईसवें युग में
अतः मनुष्यों का एक ही शासक था।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, जिसका नाम सुपरिवारा था।1655 (4) [2636]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2637]

इस प्रकार पूज्य पच्चुग्गमनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पच्चुग्गमनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

284. एकपुप्फिया 1656

उस समय मैं एक जिन्न था, 1657
दक्षिणी द्वार पर निवास करते हुए।
मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
[चमकीला लेकिन ठंडा] किरणहीन सूर्य की तरह।1658 (1) [2638]

1652 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1653 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1654 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1655 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1656 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1657 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1658 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मैंने मनुष्यों के मुखिया विपस्सी को एक फूल भेंट किया।
समस्त संसार का शुभचिंतक, 1659
सर्वश्रेष्ठ द्विपद, तटस्थ। (2) [2639]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने तब उसे वह फूल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2640]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2641]

इस प्रकार पूज्य एकपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

285. मग़ावपुप्पिया 1660

स्वयंभू स्वरूप, अजेय, उन्होंने ध्यान की कला से परिपूर्ण किया।
प्रकाशमान, निष्कलंक
[निवास] नर्मदा नदी के किनारे पर। (1) [2642]

प्रसन्न मन से, यह देखकर
संबुद्ध, अजेय, फिर एक माघवा फूल के साथ
मैंने पूजा की1661 कि स्वयं एक हो गया। (2) [2643]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2644]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2645]

1659 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1660 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
1661 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

इस प्रकार पूज्य मगहावपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मघावपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

286. उपत्थायक 1662

मैंने उसे आमंत्रित करने के बाद—
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का सांड, सर्वश्रेष्ठ द्विपाद प्राणी, महान हाथी, बलि का पात्र,
जो सड़क पर आ गए थे —
यह सेवा मेरे द्वारा प्रदान की गई थी
सिद्धार्थ [बुद्ध], महान ऋषि,
हर दुनिया का शुभचिंतक.1663 (1-2) [2646-2647]

इसे स्वीकार करते हुए, संबुद्ध ने
तब परम ऋषि उस आसन से उठे जो उनकी सेवा के लिए तैयार किया गया था।
[और] पश्चिम की ओर मुख करके आगे बढ़ा। (3) [2648]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह सेवा प्रदान की थी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही सेवा देने का फल है। (4) [2649]

सत्तावनवें युग में
अतः, [वह] 1664 में बालासेना नामक स्थान पर रहे।
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (5) [2650]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान जिन पर महारत हासिल की गई:
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2651]

इस प्रकार पूज्य उपत्थायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उपत्थायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1662 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1663 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1664 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

287. अपदानिया 1665

मैंने अपदानों की प्रशंसा की।
महान ऋषि, वे लोग जो अब इस दुनिया में नहीं हैं,
और उन्होंने उनके चरणों में सिर रखकर उनकी पूजा की।
[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (1) [2652]

पिछले बानवे युगों में
मैंने अपदान [कविताओं] की प्रशंसा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यही प्रशंसा का फल है। (2) [2653]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2654]

इस प्रकार पूज्य अपदानिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अपदानीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

288. सत्ताहबब्बजित 1666

भिक्षुओं को सम्मानित और आदरणीय माना जाता था।1667
भगवान विपस्सी की स्तुति हो। मुझ पर विपत्ति आ पड़ी है; 1668
घर पर पारिवारिक कलह थी।16691670 (1) [2655]

त्याग में प्रवेश करना
अपने दुःख को कम करने के लिए,
मैंने वहाँ एक सप्ताह आनंदपूर्वक बिताया,
शिक्षक की शिक्षा की इच्छा रखते हुए।1671 (2) [2656]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1665 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1666 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1667 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1668 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1669 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1670 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1671 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

पिछले इक्यावन युगों में
तब मैं संन्यासी बनकर निकल पड़ा।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
त्याग का फल। (3) [2657]

सड़सठवें युग में
अतः पृथ्वी के सात स्वामी थे।
[जिनका] नाम सुनिक्खमा था, 1672
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले सम्राट। (4) [2658]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2659]

इस प्रकार पूज्य सत्ताहबब्बजित थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सत्ताहबब्बजित थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

289. बुद्धूपट्टायक 1673

वेटांबरी 1674 का नाम था
वह व्यक्ति जो उस समय मेरे पिता थे, उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपने हाथों में ले लिया।
वह मुझे सबसे बड़े ऋषि के पास ले गया। (1) [2660]

"ये सभी बुद्ध, जगत के प्रधान स्वामी, मुझे दिखाए जाएंगे;"
मैंने उन सभी की आदरपूर्वक सेवा की।
[अपने] हाथों से [अच्छी तरह से] संतुष्ट महसूस कर रहा हूँ। (2) [2661]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने तब बुद्ध की देखभाल की थी, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
सेवा प्रदान करने का फल। (3) [2662]

इसके बाद तेईसवें युग में
1675 में शासक वर्ग के चार लोग थे।

1672 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1673 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1674 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1675 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

[जिन्हें] सभी समनुपट्टक कहा जाता था, 1676
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले सम्राट। (4) [2663]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2664]

इस प्रकार पूज्य बुद्धूपट्टायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बुद्धूपट्टायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

290. पब्बंगमनिया 1677

चौरासी हजार [महान लोगों] ने संसार का, सब कुछ त्याग दिया। मैंने [तब] उन्हें प्राथमिकता दी।
अंतिम लक्ष्य की कामना करते हुए। (1) [2665]

वासना और अस्तित्व की इस दुनिया में, उन्होंने ध्यानपूर्वक ध्यान दिया
अबाधित व्यक्ति, 1678, स्पष्ट व्यक्ति, 1679
अपने हाथों से [अच्छी तरह से] संतुष्ट महसूस करते हुए। (2) [2666]

[उनके] दोष नष्ट किए गए, 1680 दोष दूर किए गए, 1681
उन्होंने बिना किसी गलती के अपना कर्तव्य निभाया, 1682
प्रेममय हृदयों से सर्वव्यापी,
स्वयं-स्वयं-स्वयं, अजेय लोग; (3) [2667]

उन संबुद्धों को याद करते हुए, 1683
उनकी सेवा करने के बाद,
जब मेरी मृत्यु का समय आया,
मैं दिव्य अस्तित्व में गया। (3-4) [2668]

1676 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1677 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1678 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1679 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1680 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

1681 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1682 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1683 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय नैतिकता की रक्षा की थी।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
संयम बरतने का यही फल है। (5) [2669]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2670]

इस प्रकार पूज्य पुब्बांगमनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पुब्बांगमनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

पन्ना, फल, उग्गमिया, एकपुप्फी और मगव, उपट्टाक का अपदान , पब्बज्जा और उपट्टाहा,
और पुब्बंगमा; इन श्लोकों की संख्या अड़तालीस है।

पन्नदायक अध्याय, उनतीसवाँ

चितपुजक 1684 अध्याय, तीसवाँ

---

291. चितपूजक 1685

उस समय मैं एक ब्राह्मण था, जिसका नाम अजिता था।1686
बलिदान करने की इच्छा से, 1687
मैंने कई तरह के फूल इकट्ठा किए थे। (1) [2671]

1688 में सिख धर्म के विश्ववासी रिश्तेदार की जलती हुई चिता देखने के बाद,

---

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1684 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1685 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1686 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1687 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1688 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

उन फूलों को [फिर से] इकट्ठा करना
मैं उन्हें उस जलती हुई चिता पर बिखेर देता हूँ। (2) [2672]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2673]

सत्ताईसवें युग में
अतः, मनुष्यों के सात स्वामी थे।
उनका नाम सुपज्जलिता रखा गया, 1689
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले राजा। (4) [2674]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2675]

इस प्रकार पूज्य चितपूजक1690 थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सिटपुजका 1691 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

292. पुप्फधारक 1692

मैं छाल के वस्त्र धारण करने वाला एक तपस्वी था, जो हिरण के चमड़े के बाहरी वस्त्र पहनता था। मुझे पाँच विशेष ज्ञान प्राप्त थे;1693
एक व्यक्ति जो चंद्रमा को छू सकता था। (1) [2676]

विश्व की मशाल विपस्सी को देखना, 1694
मेरे साथ उसी स्थान पर आओ, मैंने पुष्पों की छतरी धारण की।
शिक्षक के [सिर के ऊपर]। (2) [2677]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस पुष्पीय [छतरी] को धारण किया,

1689 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1690 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

1691 शाब्दिक रूप से, "गया"

{फैंसी कोष्ठकों} में दिए गए 1692 अपदान संख्याएँ BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करती हैं

1693 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1694 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह [फूलों] के फल हैं। (3) [2678]

अस्सीवें युग में
अतः, समंतधारण नामक पृथ्वी का एक स्वामी था (1695)।
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (4) [2679]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2680]

इस प्रकार पूज्य पुप्पधारक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पुप्पधारक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

293. चट्टदायका 1696

उस समय मेरा पुत्र संन्यासी था और भगवा वस्त्र धारण करता था। उसने बुद्धत्व प्राप्त कर लिया था।
और निर्वाण, विश्व का दीपक। (1) [2681]

अपने बेटे के बारे में पता चलने के बाद, मैं उस जगह गया, मैं चिता पर गया।
उस महान व्यक्ति का जो गुजर गया था।1697 (2) [2682]

मैंने वहां हाथ जोड़कर चिता की पूजा की।
और एक सफेद छाता लेकर
मैंने उस समय इसे वहाँ उठाया। (3) [2683]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने वह [सफेद] छाता पेश किया, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
छतरियां देने का फल। (4) [2684]

अतः पच्चीसवें युग में लोगों के सात स्वामी थे।

1695 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1696 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
1697 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

जिनके नाम [सभी] महाराजा, 1698 थे
महान शक्ति वाले पहिए घुमाने वाले सम्राट। (5) [2685]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2686]

इस प्रकार पूज्य चट्टडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

चट्टडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

294. सद्दसाञ्ञक 1699

जब सूरज पूरी तरह से नहीं निकला हो,
अभी भी प्रचुर मात्रा में चमक है 1700 :
दुनिया के भीतर उत्पन्न होने वाली
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, महान ऋषि। (1) [2687]

मैंने [तब] वहाँ उसकी आवाज़ सुनी।
लेकिन1701 मैंने विक्टर को नहीं देखा।
जब मेरी मृत्यु का समय आ गया,
मुझे बुद्ध की ध्वनि याद आ गई। (2) [2688]

पिछले चौरानवे युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्मों के बारे में कुछ नहीं जाना है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2689]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2690]

इस प्रकार पूज्य सद्दसाञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

1698 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1699 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
1700 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1701 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

सद्दसञ्ञक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

295. गोसीसानिकखेपा 1702

मैंने 1703 में सुनहरी चंदन की लकड़ी बिछाई
आश्रम के द्वार से बाहर निकलने के लिए। अब मैं अपने कर्मों का फल भोग रहा हूँ:
यह पिछले कर्मों का फल है। (1) [2691]

शुद्ध नस्ल के घोड़े, हवा की तरह तेज दौड़ने वाले घोड़े, सिंध के घोड़े, तेज रफ्तार वाहन:
मुझे इन सब चीजों का आनंद आ रहा है:
वह चंदन का फल है। (2) [2692]

ओह! मेरा कर्म, 1704 एक अंतिम कर्म, एक उत्तम मैदान में अच्छी तरह से किया गया।
भिक्षुओं के लिए किए गए कार्यों के अलावा और कुछ नहीं। 1705
इसका थोड़ा सा भी मूल्य है (3) [2693]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने चंदन वहाँ रख दिया, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
लकड़ी बिछाने का यही फल है। (4) [2694]

अतः पचहत्तरवें युग में एक अत्यंत शक्तिशाली प्राणी था।
वह पहिया घुमाने वाला, जिसके पास जबरदस्त ताकत थी, जिसका नाम सुप्पतित्तिता था।1706 (5) [2695]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2696]

इस प्रकार पूज्य गोसीसानिकखेपा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1702 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1703 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1704 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1705 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1706 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

गोसीसानिकखेपा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

296. पदपूजक 1707

हिमालय पर्वत पर,
मैं उस समय 1708 का किन्नरा था।
मैंने बुद्ध, निर्मल, [चमकीले लेकिन शीतल] को देखा, जो उस समय मेरे पास आए थे, विपस्सी बुद्ध, विश्व-नेता।
और फिर मैंने उसके पैरों को रगड़ा
चंदन और धूप भी।1710 (1-2) [2697-2698]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उन चरणों की पूजा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
पाद -पूजा करने का फल । (3) [2699]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2700]

इस प्रकार पूज्य पादपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पदपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

297. देशकित्तिया 1711

उस समय मैं उपसालक नाम का एक ब्राह्मण पुरुष था।1712

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1707 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1708 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1709 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1710 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा शब्द एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1711 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1712 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

दुनिया के सर्वश्रेष्ठ बैल को देखकर, दुनिया के बलिदान प्राप्त करते हुए,
जंगल में, वन में डूब गया
मैंने वहां बुद्ध के चरणों की पूजा की। अपनी मानसिक प्रसन्नता को समझते हुए,
बुद्ध वहीं से गायब हो गए। (1-2) [2701-2702]

जंगल से बाहर आने के बाद,
मुझे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की याद आ गई। इस क्षेत्र में यह घोषणा करते हुए,
मैंने स्वर्ग में एक युग का आनंद लिया। (3) [2703]

पिछले बानवे युगों में

मैंने इस क्षेत्र के लिए यह घोषणा की है कि मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
यही प्रचार का फल है। (4) [2704]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2705]

इस प्रकार पूज्य देशकित्तिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

देशकित्तिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

298. सरणगमानिया 1713

मैं उस समय हिमालय के एक पर्वत पर शिकारी था। मैंने बुद्ध और विपस्सी को देखा।
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल। (1) [2706]

संबुद्ध की सेवा करना
मैंने बड़ों के लिए उचित कार्य किया।
और [फिर] मैं दो पैरों वाले भगवान के पास गया,
तटस्थ [बुद्ध,] शरण के लिए। (2) [2707]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय शरण ली थी, मुझे कभी कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
शरण लेने का फल। (3) [2708]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1713 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2709]

इस प्रकार पूज्य सरणगमनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सरणगमनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

299. अम्बापिंडिया

मैं [तब] एक प्रसिद्ध टाइटन था [1714]
रोमासा नाम से जाना जाता है।1715
मैंने दान में कुछ आम दिए
विपस्सी [बुद्ध], महान ऋषि को। (1) [2710]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने तब उसे वो आम दिए थे, मुझे अब तक कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है:
आम देने का यही फल है। (2) [2711]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2712]

इस प्रकार पूज्य अंबपिंडिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अंबापिंडिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

300. अनुसावक 1716

मैंने विजेता विपस्सी को भिक्षा मांगते हुए देखा।
मैंने उल्लू के भोजन की मात्रा दी1717
सर्वश्रेष्ठ द्विपद, तटस्थ एक के लिए। (1) [2713]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1714 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1715 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1716 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1717 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

उस समय मैंने प्रसन्नता और आनंद से भरे हृदय से बुद्ध का अभिवादन किया।
मैंने बुद्ध की स्तुति की।
अंतिम लक्ष्य की कामना करते हुए। (2) [2714]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने तब बुद्ध की स्तुति की थी, और तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं भुगतना पड़ा है।
यह प्रशंसा गीत गाने का फल है। (3) [2715]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2716]

इस प्रकार पूज्य अनुसावक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अनुसावका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:

चितक और परिच्छत्त, सद्दा, गोसीससंथार, पद, पदेसा, शरण, अम्बा और संसावक भी:
इसमें सैंतालीस श्लोक हैं।
जिनकी गिनती जानकार लोग करते हैं।

चितकापूजक अध्याय, तीसवाँ
इसके बाद अध्यायों का सारांश है: काण्णिकारा, हत्थिददा,
आलंबन, उदकासन, तुवरा और थोमना भी, उक्खेपा, शिशुपधान, पणदा और सीतापूजी:
कुल मिलाकर यहाँ सभी छंद
[संख्या] चार [बार] एक सौ और पचास से एक अधिक भी।1718

कुल पच्चीस सौ [श्लोक] और इसके अतिरिक्त बहत्तर और: तीन सौ अपदान [कविताएँ]
सत्य को देखने वाले ही इनकी गिनती करते हैं।

1718 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

तीसरा सौ पूरा हो गया है।
[टिपिटक]] >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.5 थेरपदाना
स्रोत: जेएस वाल्टर्स
नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अंतर्वस्तु

अपदाना: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 301-400

---

301. पदुमकेसरिया1720

[मैं रहता था]1721 ऋषि-सभा में,1722 एक भयंकर मातंग 1723 हाथी। ऋषियों के लिए प्रसन्नता का अनुभव करते हुए1724
मैंने [कुछ] कमल के पराग छिड़के।1725 (1) [2717]

उन सर्वश्रेष्ठ आत्म-प्रबुद्ध, वासना रहित, तटस्थ पुरुषों के बीच रहकर मेरे हृदय को प्रसन्नता प्राप्त हुई।
मैंने स्वर्ग में एक युग का आनंद लिया। (2) [2718]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय पराग बिखेरा था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
वह पुष्प- पूजा का फल है । (3) [2719]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2720]

इस प्रकार पूज्य पद्मकेसरिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पद्मकेसरिया थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1720 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1721 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1722 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1723 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1724 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1725 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

---

302. सब्बागंधिया1726

मैंने फूलों की माला दी
मैंने विपस्सी [बुद्ध], महान ऋषि को, और सत्यनिष्ठ व्यक्ति को दिया।
[एक टुकड़ा] उत्तम रेशमी कपड़े का। (1) [2721]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने पहले उसे वह कपड़ा दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह इत्र देने का फल है। (2) [2722]

पंद्रहवें युग पूर्व
1727 में सुसेला नाम का एक शासक रहता था, 1728
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (3) [2723]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2724]

इस प्रकार पूज्य सब्बागंधिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सब्बागंधिया थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

---

303. परमन्नदायक 1729

मैंने बुद्ध, विपस्सी को देखा।
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों में सांड, भोजन की थाली के समान चमकता हुआ वृक्ष, 1730
ठीक वैसे ही जैसे सूरज उगता है। (1) [2725]

अपने दोनों हाथों को एक साथ दबाते हुए,
मैं बुद्ध को अपने घर ले आया।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1726 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1727 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1728 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1729 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1730 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

संबुद्ध को [वहाँ लाकर]
मैंने उसे दूध-चावल 1731 दान किया। (2) [2726]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उसे वह दूध-चावल दिया था, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है:
यह दूध-चावल-दान का फल है। (3) [2727]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2728]

इस प्रकार पूज्य परमन्नादायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

परमन्नाडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

304. धम्मसंज्क1732

वहाँ एक विशाल उत्सव था
परम पूज्य विपस्सी के बोधि वृक्ष के लिए।
संबुद्ध उसकी जड़ों में विराजमान थे।
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों में बैल।1733 (1) [2729]

उस समय, भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित भगवान,
चार आर्य सत्यों का उपदेश देते हुए, अपना राजसी भाषण दे रहे थे। (2) [2730]

संक्षिप्त और विस्तृत प्रवचनों के माध्यम से उपदेश देना,
संबुद्ध, आवरण हटाए गए, 1735
शुद्ध किया गया 1736 महान भीड़। (3) [2731]

1731 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1732 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है। यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1733 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1734 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1735 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

1736 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

बुद्ध की शिक्षाओं को सुनकर,
विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ व्यक्ति ने गुरु के चरणों की पूजा की।
मैं उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (4) [2732]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने सुना है कि उस समय शिक्षा देने से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
शिक्षा को समझने का फल.1737 (5) [2733]

इसके तैंतीसवें युग में, सूतवा नाम से जाना जाने वाला एक शासक था।
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (6) [2734]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [2735]

इस प्रकार पूज्य धम्मसंञ्क थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

धम्मसनक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

305. फलाडायक 1739

भागीरथी नदी के किनारे उस समय एक आश्रम था। मैं एक बार उस आश्रम में गया था।
उम्मीद से, मेरे हाथों में फल। (1) [2736]

मैंने वहां विपस्सी [बुद्ध] को देखा।
[चमकीला लेकिन ठंडा] जैसे किरणहीन सूर्य।1741
मैंने शिक्षक को दान दिया
मेरे हाथ में जितने भी फल थे। (2) [2737]

1737 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1738 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1739 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1740 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1741 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने तब उसे वह फल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (3) [2738]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2739]

इस प्रकार पूज्य फलाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

फलाडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

306. संपसादक 1742

हे बुद्ध-वीर, आपकी जय हो!
आप सर्वव्यापी निर्मल हैं। मुझ पर विपत्ति आ पड़ी है;
मेरे लिए शरण बनो।" (1) [2740]

सिद्धार्थ [बुद्ध], संसार में
अद्वितीय व्यक्ति ने 1743 में [मुझे] समझाया:1744
"भिक्षुओं की सभा सागर के समान असीम और अद्वितीय है।"
भिक्षुओं में अपने दिल को आनंदित करें 1745
और खुशी का बीज बो दें
उस क्षेत्र में, जो त्रुटिहीन है,
जो असीमित फल प्रदान करता है।"1746 (2-3) [2741-2742]

यह कहते हुए, सर्वज्ञानी,
दुनिया के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों में बैल की तरह, ने मुझे उस तरह से निर्देश देने के बाद,
आकाश में उठ गया, आकाश!1747 (4) [2743]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1742 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1743 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1744 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1745 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1746 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1747 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

पुरुषों के सांड, सर्वज्ञ, के चले जाने के कुछ ही समय बाद, मेरी मृत्यु का समय आ गया; मेरा पुनर्जन्म तुसिता में हुआ। (5) [2744]

फिर उस खेत में, जो दोषरहित है और असीमित फल देता है,
भिक्षुओं में, मेरे हृदय को प्रसन्न करके, मैंने स्वर्ग में एक युग का आनंद लिया। (6) [2745]

पिछले चौरानवे युगों में
मुझे उस समय वह सुख प्राप्त हुआ था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही सुख की अनुभूति का फल है। (7) [2746]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2747]

इस प्रकार पूज्य संपसादक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

संपसादक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

307. आरामदायक 1748

1749 में भगवान सिद्धार्थ के लिए एक बगीचा लगाया गया था।
जब पक्षी पेड़ों पर बसेरा कर रहे थे
[और वे घनी छाया पैदा करने आए थे],1750
मैंने बुद्ध को देखा, जो निर्मल और बलिदान ग्रहण करने वाले थे।
मैं दुनिया का सबसे बेहतरीन वाला लाया हूँ।
पुरुषों में बैल, बगीचे में। (1-2) [2748-49]

प्रसन्न, और प्रसन्न हृदय से,
मैंने उसे फल और फूल दिए।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1748 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1749 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1750 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

और उससे उत्पन्न आनंद के साथ,
मैंने औपचारिक दान किया।1751 (3) [2750]

जो कुछ मैंने बुद्ध को अत्यंत स्पष्ट मन से अर्पित किया,
मेरे लिए एक [महान] फल के रूप में पुनर्जन्म हुआ जबकि
मैं अस्तित्व में पुनर्जन्म लिया।1752 (4) [2751]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह उपहार दिया था, मुझे अब बुरे पुनर्जन्म का कोई ज्ञान नहीं है:
बगीचा देने का फल। (5) [2752]

सैंतीसवें युग में सात मुदुसीतल थे, 1753
महान शक्ति वाले, चक्र घुमाने वाले सम्राट, सात रत्नों के स्वामी। (6) [2753]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [2754]

इस प्रकार पूज्य आरामदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आरामदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

308. अनुलेपादायक 1754

मैंने एक भिक्षु को देखा, एक अनुयायी को।
अत्थादस्सी [बुद्ध], ऋषि के।
मैं उसके पास तब पहुंचा जब वह यह कर रहा था।
सीमा पर मरम्मत [वहाँ]। (1) [2755]

जब मरम्मत का काम पूरा हो गया, तो मैंने [उन्हें] मरहम दान में दिया।
खुश, मेरा दिल आनंद से भर गया
अद्वितीय योग्यता क्षेत्र में। (2) [2756]

अठारह सौ युगों में
क्योंकि मैंने तब वह अच्छा कर्म किया था,

1751 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
1752 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1753 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1754 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह मरहम देने का फल है। (3) [2757]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2758]

इस प्रकार पूज्य अनुलेपादायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अनुलेपादायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

309. बुद्धसंञ्ञक 1755

मैंने सपने में विश्व के नेता, सिद्धार्थ बुद्ध को देखा।
जैसे उगता हुआ सौ किरणों वाला [सूर्य], [चमकीला लेकिन शीतल] जैसे किरणहीन सूर्य,
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों में श्रेष्ठ बैल, जो [तब] जंगल में गया था। वहाँ मेरे दिल को आनंदित करते हुए।
मैं सुदाए हुए [बुद्ध] के पास पहुँचा। (1-2) [2759-2760]

पिछले चौरानवे युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्मों के बारे में कुछ नहीं जाना है:
बुद्धों को समझने का फल। (3) [2761]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2762]

इस प्रकार पूज्य बुद्धसंञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बुद्धसंञ्चक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

310. पब्भारद्यक 1756

मैंने भगवान पियादस्सी के लिए एक पहाड़ी गुफा की सफाई की।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1755 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1756 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

और पानी के बर्तन की देखभाल की।
तटस्थ व्यक्ति के उपभोग के लिए। (1) [2763]

पियादस्सी, महानतम ऋषि,
बुद्ध ने मुझे यह समझाया।
"a mil- kaṇḍa 1757 cent- bheṇḍu 1758 [large]
1759 के बाद बलिदान होगा, जो सोने का बना होगा और झंडों से ढका होगा;
साथ ही रत्नों का एक छोटा समूह भी नहीं।" एक पहाड़ी गुफा देने के बाद, 1760
मैंने स्वर्ग में एक युग का आनंद लिया। (2-3) [2764-2765]

बत्तीसवें युग में
1761 में सुसुद्ध नामक शासक रहता था, 1762 में
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (4) [2766]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2767]

इस प्रकार पूज्य पब्भारद्यक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पब्भारडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

समीक्षा:

केसर, गंध और अन्ना, धम्मस्ना और फल भी, पसाद, अरमादायि,
लोमका, बुद्धसन्नाका, [और] पब्भारदा; छंद,
वे कहते हैं कि 1763 पचास से एक कम है।

पदुमकेसरिया अध्याय, इकत्तीसवाँ

1757 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1758 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1759 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1760 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1761 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
1762 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
1763 शाब्दिक रूप से, "गया"

आरक्खदायक, 1764 अध्याय, बत्तीसवाँ

---

311. आरक्खदायक 1765

मैंने एक बाड़ का निर्माण किया।
महान ऋषि धम्मदासी और मैंने उनकी रक्षा की।
सर्वश्रेष्ठ द्विपद के लिए, तटस्थ एक। (1) [2768]

मैंने वह कर्म अठारह सौ युग पहले किया था।
उस [अच्छे] कर्म के शेष प्रभाव से, मैं अब एक अरहंत हूँ।1766 (2) [2769]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [2770]

इस प्रकार पूज्य आरक्खदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आरक्खडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

312. भोजनादायक 1767

साल के पेड़ की शाखा के समान उत्तम कुल का , सहजन के पेड़ की तरह ऊपर उठता हुआ, इंद्र के बाण की तरह आकाश में विचरण करता हुआ।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1764 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1765 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1766 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1767 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
1768 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1769 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1770 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

विक्टर हमेशा चमकता रहता था। (1) [2771]

एकदम स्पष्ट मन से, मैंने खाने-पीने की चीजें दान कीं।
वह, जो अन्य देवताओं से श्रेष्ठ ईश्वर है,
वेस्साभू [बुद्ध], महान ऋषि। (2) [2772]

स्वयं-निर्मित, अजेय,
बुद्ध ने इसके लिए मुझे धन्यवाद दिया1771: "इसे तुम्हारे लिए फल के रूप में उत्पन्न होने दो,
जैसे [आप] अस्तित्व में पुनर्जन्म लेते हैं।"1772 (3) [2773]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने तब उसे वह उपहार दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह भोजन देने का फल है। (4) [2774]

इसके पच्चीस युग बाद अमित्तभा नाम का एक व्यक्ति हुआ, 1773
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (5) [2775]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2776]

इस प्रकार पूज्य भोजनाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

भोजनाडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

313. गतासान्नाका1774

हवा में कोई पदचिह्न नहीं हैं; आकाश पर हवा के कोई निशान नहीं हैं। मैंने विजेता, सिद्धार्थ को देखा।
देवताओं की दुनिया की यात्रा।1775 (1) [2777]

मैंने सम्मासंबुद्ध के वस्त्र को हवा से लहराते हुए देखा।

1771 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
1772 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
1773 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1774 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1775 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

ऋषि की यात्रा देखकर,
मेरे लिए आनंद सदा के लिए जन्म लेता है। (2) [2778]

पिछले चौरानवे युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्मों के बारे में कुछ नहीं जाना है:
बुद्ध-बोध का फल। (3) [2779]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2780]

इस प्रकार पूज्य गतासञ्ञक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

गतसंनाका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

314. सत्तपदुमिया 1776

मैं ब्राह्मण था, नेसादा, 1777
उस समय नदी किनारे निवास करते थे।
मैंने वहां के आश्रम की सफाई की।
कमल के फूलों के साथ [मेरी झाड़ू के रूप में]। (1) [2781]

स्वर्ण संबुद्ध को देखकर, विश्व के नेता सिद्धार्थ, जंगल से होकर गुजर रहे थे [एक बार]
मुझे आनंद का अनुभव हुआ।1778 (2) [2782]

विश्व के नेता, संबुद्ध, सिद्धार्थ से मिलने के लिए मैं उन्हें आश्रम ले आया।
और कमल और लिली फैलाए।1779 (3) [2783]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1776 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1777 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1778 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1779 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [2784]

सातवें युग पूर्व
1780 में चार पादपावर थे।
महान शक्ति वाले, चक्र घुमाने वाले सम्राट, सात रत्नों के स्वामी। (5) [2785]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2786]

इस प्रकार पूज्य सत्तापदुमिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सत्तपदुमिया थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

---

315. पुप्पासानिया 1781

स्वर्ण रंग के संबुद्ध, सौ किरणों वाले सूर्य के समान, पास ही से गुजर रहे थे [ग्रंथ]।
सिद्धार्थ, अजेय। (1) [2787]

बुद्ध से मिलने के लिए बाहर जाकर, उन्हें अपने आश्रम में आमंत्रित करके, मैंने उन्हें फूलों का आसन भेंट किया।
एक ऐसे मन के साथ जो बहुत स्पष्ट था। (2) [2788]

दोनों हाथों को एक साथ दबाकर, उस समय मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ। बुद्ध में अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए,
मैंने उस कर्म को अपने उपयोग में लाया। (3) [2789]

मैं इस व्यवस्था में पवित्र हूँ
उस सारी अच्छाई के कारण,1782
मेरे द्वारा अर्जित योग्यता
अजेय, स्वयं-रूप। (4) [2790]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने तब वह फूलों वाली कुर्सी वापस दे दी थी।

1780 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1781 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1782 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
पुष्प आसन देने का फल। (5) [2791]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2792]

इस प्रकार पूज्य पुप्पासानिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पुप्पासानिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

316. आसनत्थविका 1783

सिख धर्म [बुद्ध], सर्वोच्च स्तूप, उस समय संसार का सगे-संबंधी था। मैं एक अंधकारमय मार्ग पर यात्रा कर रहा था।
वन, एक बंजर जंगल। (1) [2793]

जंगल से बाहर निकलने के बाद,
मैंने बुद्ध का सिंह सिंहासन देखा।1784
आत्मविश्वास से अपने हाथों को दबाते हुए,
मैंने विश्व के नेता की प्रशंसा की। (2) [2794]

पूरे दिन (1785) मैंने विश्व के प्रधान नेता बुद्ध की स्तुति की। प्रसन्नतापूर्वक और प्रसन्न हृदय से।
मैंने उस समय यह भाषण दिया: (3) [2795]

हे सुसंस्कृत व्यक्ति, आपकी प्रशंसा हो!1786
हे परम पुरुष, आपकी जय हो! आप सर्वज्ञ, महान नायक हैं।
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों में बैल।" (4) [2796]

सिख धर्म की इस प्रकार प्रशंसा करने के बाद, वहाँ उनके सिंहासन को प्रणाम करने के बाद,

---

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1783 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1784 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1785 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1786 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

अन्य चिंताओं के कारण, 1787
मैं उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (5) [2797]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता की प्रशंसा की [तब,] मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह प्रशंसा गीत गाने का फल है। (6) [2798]

सत्ताईसवें युग पूर्व सात अतुल्य थे, 1788
महान शक्ति वाले, चक्र घुमाने वाले सम्राट, सात रत्नों के स्वामी। (7) [2799]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [2800]

इस प्रकार पूज्य आसनत्थविका थेरा ने इन श्लोकों का उच्चारण किया।

आसनत्थविका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

317. सद्दसाञ्ञाका1789

महान नायक, सुंदर पुरुष, 1790 में अमरता के मार्ग का उपदेश देते हुए, अपने अनुयायियों से घिरे एक शानदार घर में निवास कर रहे थे। (1) [2801]

उसने लोगों के मोह को नष्ट कर दिया।
अपने मधुर शब्दों के माध्यम से।
उस समय बहुत हंगामा मच गया था।
देवताओं और मनुष्यों के लिए अच्छे की कामना।1791 (2) [2802]

उन कथनों को सुनकर
सिद्धार्थ [बुद्ध], महान ऋषि,

1787 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1788 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1789 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1790 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

1791 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

और उस ध्वनि से मेरा हृदय प्रसन्न हो गया।
मैंने तब विश्व के नेता की पूजा की। (3) [2803]

पिछले चौरानवे युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्मों के बारे में कुछ नहीं जाना है:
बुद्धों को समझने का फल। (4) [2804]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2805]

इस प्रकार पूज्य सद्दसाञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सद्दसञ्ञक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

318. तिरांगसिया 1792

पर्वत की ढलान पर, सिद्धार्थ ने एक कुलीन सिंह की तरह सभी दिशाओं को प्रकाशित कर दिया था।
पहाड़ पर आग के ढेर की तरह 1793। (1) [2806]

बुद्ध की आभा को देखकर, जो सूर्य की आभा के समान थी,
और चंद्रमा की चमक की तरह, मेरे लिए भी बड़ी खुशी उत्पन्न हुई। (2) [2807]

तीनों प्रकाशों को देखकर, परम श्रोता को देखकर, 1794 में एक कंधे पर हिरण की खाल रखते हुए,
मैंने विश्व के नेता की प्रशंसा की। (3) [2808]

संसार में अंधकार को दूर करने वाले प्रकाश के तीन निर्माता, 1795

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1792 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1793 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

1794 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1795 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

चंद्रमा भी है, और सूर्य भी।
और बुद्ध, विश्व के नेता। (4) [2809]

इन उपमाओं को स्पष्ट करते हुए,
मैंने महान ऋषि की प्रशंसा की।1796
बुद्ध के गुणों की प्रशंसा करने के बाद,
मैंने स्वर्ग में एक युग का आनंद लिया। (5) [2810]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने [उस समय] बुद्ध की प्रशंसा की थी, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
यही प्रशंसा का फल है। (6) [2811]

इसके बाद इकसठवें युग में
वहाँ एक [पुरुष] था, Ñāṇadhara,1797
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी। (7) [2812]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [2813]

इस प्रकार पूज्य तिरांसिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिरांगसिया थेरा की कथा का अंत हो गया है।

---

319. कंदलपुप्पिया1798

उस समय मैं सिंधु नदी के किनारे एक किसान था। दूसरों की सेवा में लगा हुआ था।
मैंने दूसरे के चावल नहीं ढूंढे।1799 (1) [2814]

सिंधु नदी के किनारे घूमते हुए,
मैंने सिद्धार्थ, जो विजेता थे, को ध्यान मुद्रा में बैठे देखा (1800)

1796 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1797 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1798 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1799 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1800 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

खिले हुए कमल के फूल की तरह। (2) [2815]

मैंने सभी तने काट दिए हैं
फिर उसने सात केले के फूलों को सिर पर फैला दिया।
बुद्ध का, सूर्य का रिश्तेदार। (3) [2816]

प्रोटोकॉल का ध्यान रखते हुए,
[उस समय] जब मैं स्वर्ण रंग के संबुद्ध के पास पहुंचा था,
हे ज्ञानी, अपनी इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रखने वाले,
— हाथी की तरह पहुँचना कठिन है, तीन गुना लय में डूबा हुआ मातंग — मैंने अपने हाथों को एक साथ दबा लिया है
मैंने गुरु [बुद्ध] की पूजा की। (4-5) [2817-2818]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (6) [2819]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [2820]

इस प्रकार पूज्य कंदलपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कंदलिपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

320. कुमुदमालिया 1801

एक सफेद कमल का फूल लेकर मैं
इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, बलि प्राप्तकर्ता के समक्ष रखा गया।
बैल, श्रेष्ठ, वीर, विजयी, महान ऋषि, विपस्सी [बुद्ध], महान वीर
जैसे कोई शेर जो उच्च कुल का हो। (1-2) [2821-2822]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [2823]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1801 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2824]

इस प्रकार पूज्य कुमुदमालिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कुमुदमालिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: अरक्खाड़ा, भोजनदा,
गतासानि और पदुमिका, पुप्पासानि, संथवाका, सद्दासानि, तिरांसिय, कंडाली और कोमुदी भी: सत्तावन छंद हैं।

आरक्खदाय अध्याय, बत्तीसवाँ

उम्मापुप्पिया अध्याय, तैंतीसवाँ

---

321. उम्मापुप्पिया1802

मैंने परम पुरुष, सिद्धार्थ, अजेय, एकाग्र, सिद्ध पुरुष को देखा।
ध्यान में बैठे हुए 1803. (1) [2825]

नीले रंग के अलसी के फूल इकट्ठा करके, मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया।
सभी फूल एक ही दिशा में मुंह किए हुए थे।
तने ऊपर की ओर मुड़े हुए, सिर नीचे की ओर मुड़े हुए। (2) [2826]

सुंदर चित्रों की तरह वे आकाश में पुष्पों की छतरी की तरह बने रहे।
उस मानसिक आनंद के कारण,

मेरा पुनर्जन्म तुसिता में हुआ। (3) [2827]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1802 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1803 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1804 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [2828]

इसके बाद पचपनवें युग में
एक व्यक्ति था, पृथ्वी का स्वामी, जिसे समंतच्छदना के नाम से जाना जाता था, 1805
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (5) [2829]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2830]

इस प्रकार पूज्य उम्मापुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उम्मापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

322. पुलिनापुजका 1806===

अर्जुन वृक्ष के समान तेजस्वी, उत्तम नस्ल के बैल के समान।
भोर के तारे की तरह चमकता हुआ, 1807
पुरुषों के बैल ने [दुनिया] को रोशन किया। (1) [2831]

अपने दोनों हाथों को एक साथ दबाते हुए,
मैंने गुरु [बुद्ध] की पूजा की। [फिर] मैंने अपने कर्मों से प्रसन्न होकर गुरु की स्तुति की। (2)[2832]

1808 में मैंने कुछ बहुत साफ रेत इकट्ठा की और उसे उस रास्ते पर फैला दिया जिस पर वह चला था, 1809 में मैंने उसे 1810 अपनी गोद में रखा था।

1805 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 1806 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

1807 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1808 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1809 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा शब्द एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1810 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

विपस्सी बुद्ध, महान ऋषि के लिए। (3) [2833]

दोपहर के आराम के समय, मेरा मन बिल्कुल शांत था।
मैंने उस रेत का आधा हिस्सा छिड़क दिया।
द्विपद भगवान के लिए, तटस्थ एक। (4) [2834]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय वह रेत छिड़की थी, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
रेत देने का फल यही है। (5) [2835]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2836]

इस प्रकार पूज्य पुलिनापूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पुलिनपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

323. हासजनक 1811

मैंने शिक्षक का चिथड़ों से बना वस्त्र एक पेड़ की चोटी पर टंगा हुआ देखा।

अपने हाथों को आपस में दबाकर,
मैंने इसे और ऊपर उठा लिया। (1) [2837]

दूर से एक झलक देखने के बाद
उस चोगे को देखकर मुझे हंसी आ गई।
अपने हाथों को आपस में दबाकर,
मैंने अपने दिल को और भी अधिक आनंद दिया। (2) [2838]

पिछले इक्यावन युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्मों के बारे में कुछ नहीं जाना है:
बुद्धों को समझने का फल। (3) [2839]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1811 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1812 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1813 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [2840]

इस प्रकार पूज्य हासजनक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

हासजनक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

324. सन्न्यासमिका 1814

मैं [केवल] सात वर्ष का था, 1815 में मंत्रों का एक विद्वान गुरु। वंश परंपरा को आगे बढ़ाते हुए,
मैंने बलिदानों को प्रोत्साहित किया। (1) [2841]

चौरासी हजार [जीवित] जानवरों को मैं प्रतिदिन बलि देता हूँ। उन्हें लकड़ी के खंभे से बांधकर बलि के लिए रखा जाता है। (2) [2842]

जैसे भट्टी के ऊपर पीटा हुआ 1817 [सोना], 1818 [तेज जलता हुआ] जैसे देवदार का कोयला, 1819 जैसे सूरज [जब] उग रहा हो,
जैसे 1820 के पंद्रहवें दिन का चंद्रमा।

सिद्धार्थ, समस्त सफलता का लक्ष्य,
त्रिविध जगत द्वारा 1821 में पूजित, मित्र, 1822
संबुद्ध के पास पहुँचने पर
[मैंने] यह भाषण [तभी और वहीं] दिया: (3-4) [2843-2844]

"हे युवक, सभी जीवित प्राणियों के प्रति अहिंसा ही मुझे सबसे अधिक प्रसन्न करती है।"

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1814 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1815 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1816 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1817 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1818 में शाब्दिक अर्थ में, "जाना", संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित।
1819 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
1820 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
1821 शाब्दिक रूप से, "गया"
1822 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

और चोरी करने, अपराध करने और शराब पीने से परहेज़ करना। (5) [2845]

मुझे अच्छे व्यवहार से प्रसन्नता होती है, और विद्वानों के प्रति कृतज्ञता भी; किए गए कार्य भी प्रशंसनीय हैं।
इस दुनिया में दूसरों के लिए। (6) [2846]

उन चीजों का अभ्यास करते हुए, सभी के प्रति दयालुता में आनंद लेते हुए,1823 बुद्ध में अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए, परम मार्ग का अभ्यास करो।" (7) [2847]

यह कहते हुए, सर्वज्ञानी ने कहा,
विश्व के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, पुरुषों में श्रेष्ठ बैल, ने मुझे इस प्रकार सलाह दी,
आकाश में उठा और उड़ गया।1824 (8) [2848]

मैंने पहले अपने हृदय को शुद्ध किया, फिर बाद में अपने हृदय को सुख प्रदान किया। उस मानसिक सुख के कारण,
मेरा पुनर्जन्म तुसिता में हुआ। (9) [2849]

पिछले चौरानवे युगों में

मैंने उस आनंद को अपने हृदय में समाहित कर लिया है, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
बुद्धों को समझने का फल। (10) [2850]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [2851]

इस प्रकार पूज्य सन्ज्ञासामिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सन्ज्ञासामिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

325. निमित्तसञ्ञाका1825

मैं चंदाभागा नदी के किनारे एक कुटिया में रहता था। मैंने एक सुनहरे रंग का हिरण देखा।
[जो] जंगल में भटक रहा था। (1) [2852]

1823 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
1824 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1825 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

उस हिरण को देखकर मेरा मन प्रसन्न हो गया, तब मुझे विश्व के सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की याद आई।
उसी आनंद के साथ, मैंने अन्य बुद्धों को याद किया: (2) [2853]

"वे बुद्ध जो इस दुनिया से चले गए हैं,
जो लोग इस दुनिया से चले गए, वे अपने जीवनकाल में ठीक इसी तरह प्रकाशमान हुए।
जैसे [सुनहरे] हिरण-राजा हृदय के लिए।" (3) [2854]

पिछले चौरानवे युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्मों के बारे में कुछ नहीं जाना है:
बुद्धों को समझने का फल। (4) [2855]

सत्ताईसवें युग में
अतः पृथ्वी का एक ही स्वामी था, जिसका नाम अरञ्ञसत्त था (1826)।
एक पहिया घुमाने वाला, अत्यंत शक्तिशाली राजा। (5) [2856]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2857]

इस प्रकार पूज्य निमित्तसञ्ञक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

निमित्तसञ्ञक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

326. अन्नसावका 1827

संबुद्ध को 1828 में रोके रखना —
स्वर्ण रंग का संबुद्ध, सोने से बनी किसी कीमती वस्तु के समान, बत्तीस महान चिह्नों से युक्त, सिद्धार्थ, समस्त सफलता का लक्ष्य।
वह निर्मल, अजेय, जो बाजार से होकर गुजर रहा था—
मैंने [उस संबुद्ध को] भोजन कराया, हे महान ऋषि। (1-2) [2858-2859]

1826 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1827 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1828 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

उस समय संसार के प्राणियों के प्रति दयालु ऋषि ने मुझ पर अपना प्रकाश प्रज्वलित किया। बुद्ध में मेरा हृदय प्रसन्न हो गया।
मैंने स्वर्ग में एक युग का आनंद लिया। (3) [2860]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने तब उसे भिक्षा में भोजन दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
यह दान देने का फल है। (4) [2861]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [2862]

इस प्रकार पूज्य अन्नसावका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अन्नासावका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

327. निग्गुण्डिपुप्फिया 1829

जब [उसके] जीवनकाल के अनुसार, एक देवता संसार से विदा हो जाता है, 1830
तीन कहावतें 1831 उत्सर्जित होती हैं [तब,]
देवताओं के आनंद में। (1) [2863]1832
"यहाँ से, महोदय, 1833 में अच्छे राज्य की ओर जाइए, लोगों की संगति में।"
मनुष्य बनना ही प्राप्त करना है
उत्कृष्ट सत्य में महान विश्वास।1834 (2) [2864]

यह स्थापित करने के बाद, आपका विश्वास सुप्रसिद्ध उत्कृष्ट सत्य में है,
[अच्छी तरह से] स्थापित, [उन सुखद] जड़ों से उत्पन्न,
जब तक तुम जीवित रहो, दृढ़ रहो। (3) [2865]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1829 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1830 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1831 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1832 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा शब्द एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1833 में शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

1834 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

अपने शरीर से अच्छे कर्म करना1835
और अपने भाषण से बहुत अच्छा काम करना;
अपने मन का भी ख्याल रखना।
घृणा और आसक्ति से मुक्त हो।1836 (4) [2866]

इस प्रकार अपने जीवन को ऊंचा उठाकर, पुण्य कर्म करते हुए और भरपूर दान देकर, दूसरों को भी इसमें प्रवेश करने के लिए प्रेरित करो।
पवित्र जीवन [और] उत्कृष्ट सत्य।" (5) [2867]

जब देवताओं को पता चलता है कि एक देवता का पतन हो रहा है,1837 [इस प्रकार की] करुणा से भरकर, वे [उसके पुनर्जन्म पर] प्रसन्न होते हैं:
"हे भगवान, बार-बार लौट आओ।" (6) [2868]

उस समय जब देवताओं की सभा एकत्रित हुई तो मैं भावुक हो गया।
तो अब मुझे किस गर्भ में जाना चाहिए?
जब मैं यहाँ से गिर जाऊँ तो क्या करूँ? (7) [2869]

पदुमुत्तरा के अनुयायी,
सुमाना नाम से जानी जाती थी, 1838
एक भिक्षु जिसकी इंद्रियां [अच्छी तरह से] नियंत्रित थीं, यह समझते हुए कि मैं भावुक हो गया था।
और मुझे ऊपर उठाने की इच्छा रखते हुए,
तब वह मेरे सामने आया था
और मुझे निर्देश देते हुए उत्तेजित किया।
अर्थ और शिक्षा में.1839 (8-9) [2870-2871]

बारहवाँ पाठ भाग, 1840
उनकी बातें सुनने के बाद मैंने
बुद्ध को प्रणाम करने से मेरा हृदय प्रसन्न हुआ। 1841
मैं [तब] वहीं मर गया। (10) [2872]

उन सुखद जड़ों से प्रेरित होकर, मेरा वहीं पर पुनर्जन्म हुआ।

1835 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
1836 शाब्दिक रूप से, "गया"
1837 में पीटीएस सांजलेसी के लिए बीजेटीएस के साथ सांजलेसी का पाठ किया गया
1838 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
1839 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
1840 में यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
1841 में बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

मां के गर्भ में निवास करते हुए भी,
मैं अपनी माँ का प्रशिक्षक था।1842 (11) [2873]

उस शरीर से गिरने के बाद
मेरा पुनर्जन्म 33, 1843 को हुआ था।
उस [स्वर्ग] के भीतर, मेरे लिए,
मानसिक विक्षोभ नहीं देखा गया। (12) [2874]

तावतिंसा से भी गिर गया,
1844 में मैं एक माँ के गर्भ में आया। उस गर्भ से बाहर आते ही मुझे पता चल गया।

[काले और सफेद के बीच का अंतर] 1845 (13) [2875]

केवल सात वर्ष का होने के कारण,
मैंने 1846 में पार्क-आश्रम में प्रवेश किया।
भगवान गौतम के बारे में,
शाक्यान पुत्र, तटस्थ व्यक्ति। (14) [2876]

जब व्यवस्था फैल गई
[और] 1847 की शिक्षा लोकप्रिय थी, 1848
मैंने वहाँ शिक्षक के स्वयं के भिक्षुओं को देखा, जो उनके उपदेशों का पालन करते थे। (15) [2877]

वहां श्रावस्ती नामक एक नगर था, जिसका एक राजा था जिसका नाम कोसल था।
हाथी रथ से वह
सर्वोच्च बोधि वृक्ष के पास आया। (16) [2878]

वहाँ उसके हाथी को देखकर, अपने पिछले कर्मों को याद करते हुए, मैंने अपने दोनों हाथों को एक साथ दबाया,
मैं भी उस कार्यक्रम में गया था।1849 (17) [2879]

केवल सात वर्ष का होने के कारण,
मैं बेघर हो गया। बुद्ध की देखभाल करने वाला उनका अनुयायी आनंद था, जो 1850 में पूर्णतः सुसंस्कृत और दृढ़ निश्चयी था।

1842 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
1843 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
1844 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस द्वारा पढ़ा गया (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
1845 साहित्य, "एक फूल पर"
1846 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
1847 khiḍḍāratiyaa
1848 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
1849 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
1850 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

सचेत और बहुत ज्ञानी भी।
उन्होंने 1851 में ब्रिलियंट वन का कार्यभार संभाला।
राजा के हृदय को प्रसन्नता प्रदान करना। (18-19) [2880-2881]

उनकी शिक्षा सुनने के बाद, मुझे अपने पिछले कर्म याद आ गए। ठीक उसी स्थान पर खड़े होकर...
[तब] मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (20) [2882]

एक कंधे पर चोगा डालना।

मैंने अपने हाथों को सिर पर जोड़कर, संबुद्ध को प्रणाम किया।
मैंने यह भाषण [तभी और वहीं] दिया: (21) [2883]

मैंने 1852 निग्गुंडी फूल एकत्र किए और उन्हें पद्ममुत्तरा बुद्ध के सिंह-सिंहासन पर रखा।
दो पैरों वाले जीवों के स्वामी, शिक्षक। (22) [2884]

उस कर्म के द्वारा, हे द्विपाद प्रभु,
हे विश्व के सर्वश्रेष्ठ, हे पुरुषों में श्रेष्ठ, मैंने विजय या पराजय के बिना अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है।(23) [2285]

पच्चीस हज़ार युग में, 1853 में, 1854 में, करोड़ों-सैकड़ों-खरबों और सैकड़ों की संख्या में पुरुषों के शाही-स्वामी थे।
ट्रिलियन-सौ-ट्रिलियन, प्रत्येक आठ.1855 (24) [2886]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [2887]

इस प्रकार पूज्य निग्गुंडिपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

निग्गुंडिपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

1851 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”
1852 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
1853 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
1854 pariḷāho
1855 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

---

328. सुमनवेलिया 1856

सभी लोग एकत्रित होकर वेस्साभु [बुद्ध], भगवान बुद्ध की महान पूजा कर रहे थे।
दुनिया का सबसे अच्छा, तटस्थ। (1) [2888]

शुद्ध भिक्षा भोजन का गोला बनाना
और, खुशी से, फूलों की माला।
फिर मैंने उन्हें सबके सामने पेश किया
बुद्ध का सिंह-सिंहासन। (2) [2889]

सभी लोग एकत्रित होकर उस अद्भुत फूल को देख रहे हैं।
यह फूल किसके द्वारा भेंट किया गया था? (1857)
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, तटस्थ व्यक्ति?” (3) [2890]

उस मानसिक सुख के कारण, मेरा पुनर्जन्म निम्माना में हुआ। (1858)
मैं अपने कर्मों का फल भोगता हूँ।
मैंने अतीत में अच्छा किया है। (4) [2891]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ, मैं सभी लोगों को प्रिय हूं।
वह पुष्प- पूजा का फल है । (5) [2892]

मुझे अपने शरीर के माध्यम से आत्मसंयमित तपस्वियों की निंदा करने का कोई वाकया नहीं मिला है।
न ही 1860 मेरे भाषण से न ही मेरे मन से। (6) [2893]

उस अच्छे व्यवहार के कारण
[और मेरा] मानसिक संकल्प, 1861
मैं सभी [लोगों] द्वारा सम्मानित महसूस करता हूँ:

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1856 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।
1857 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1858 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1859 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा शब्द एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1860 में शाब्दिक अर्थ में, "जाना", संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित।
1861 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
1862 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

निंदा न करने का यही फल है। (7) [2894]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने तब पुष्प पूजा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (8) [2895]

ग्यारहवें युग में
एक राजा था, 1863 सहस्सारा, 1864
महान शक्ति से युक्त, सात रत्नों के स्वामी, चक्र घुमाने वाले सम्राट। (9) [2896]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [2897]

इस प्रकार पूज्य सुमनवेलीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुमनवेलीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

329. पुप्फच्छत्तिया 1865

जल में उगे कमलों को लाते हुए, 1866 सौ पत्तियों वाले, मन को प्रसन्न करते हुए, और उसे प्रसन्न करते हुए, मैंने एक भेंट प्रस्तुत की।
भगवान बुद्ध, सिद्धार्थ को पुष्पों से सजा हुआ छाता।
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ व्यक्ति, जब वह सत्य की घोषणा कर रहा था,
जीवित प्राणियों को सहायता प्रदान करना। (1-2) [2898-2899]

और सिद्धार्थ, जगत के ज्ञाता, यज्ञ के प्राप्तकर्ता,
भिक्षुओं की सभा में खड़े हुए, 1867
शिक्षक ने मेरे लिए यह आयत कही: (3) [2900]

1863 शाब्दिक रूप से, "गया"
1864 में पीटीएस सांजलेसी के लिए बीजेटीएस के साथ सांजलेसी का पाठ किया गया
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1865 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
1866 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
1867 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

“[यही वह व्यक्ति] जिसने मुझमें उसके दिल को प्रसन्न किया
और उस मानसिक आनंद के कारण उसने फूलों की छतरी बनाई।
बुरे पुनर्जन्म में नहीं जाएगा।” (4) [2901]

यह कहकर, विश्व के नेता, सिद्धार्थ संबुद्ध ने अपने दल से विदा ली।
आकाश में उठ गया, आकाश!1868 (5) [2902]

जब ईश्वर-मानव 1869 का उदय हुआ तो सफेद छतरी भी उठ खड़ी हुई।
वह अद्वितीय छाता [तब]
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध के सामने गया। (6) [2903]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उसे वह छाता दिया।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
पुष्प छत्र का फल। (7) [2904]

चौहत्तरवें युग में
आठ [नाम] जलसिखा, 1870 महान शक्ति वाले चक्र-घुमाने वाले सम्राट, सात रत्नों के स्वामी थे। (8) [2905]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [2906]

इस प्रकार पूज्य पुप्पच्छत्तिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पुप्पच्छत्तीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

330. सपरिवरचट्टदायक1871

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
धम्म की वर्षा हो रही थी

1868 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

1869 में शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

1870 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1871 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

जैसे 1872 से आकाश से बारिश का पानी। (1) [2907]

मैंने तब संबुद्ध को अमरता का मार्ग उपदेश देते हुए देखा। इससे मेरे हृदय को आनंद मिला।
मैं [तब] अपने घर वापस चला गया। (2) [2908]

एक सजी हुई छतरी लेकर,
मैं परम पुरुष के पास पहुँचा। प्रसन्न होकर, और प्रसन्न हृदय से, मैंने उसे आकाश में उठा लिया। (3)[2909]

प्रमुख अनुयायियों में से एक, एक सुव्यवस्थित 1873 वाहन की तरह नियंत्रित होकर, संबुद्ध की ओर जा रहा था।
[फिर] उसने [इसे] अपने सिर के ऊपर उठा लिया। (4) [2910]

दया से परिपूर्ण, करुणामय
विश्व के प्रमुख नेता बुद्ध, 1874 में भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए।
[तब] मेरे बारे में ये आयतें बोलीं: (5) [2911]

"जिसने मुझे यह सुशोभित, मन को प्रसन्न करने वाला छाता दिया है, वह मुझे मानसिक सुख प्रदान करता है।"
बुरे पुनर्जन्म में नहीं जाएगा। (6) [2912]

और वह सात बार देवताओं के बीच दिव्य शासन करेगा।
और वह छत्तीस बार होगा
एक [शक्तिशाली] पहिया घुमाने वाला राजा। (7) [2913]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (8) [2914]

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, सभी दोषों को भली-भांति जानने वाला

1872 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1873 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1874 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा शब्द एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग।" (9) [2915]

बुद्ध के वचनों को समझकर, उनके द्वारा कहे गए उन महान शब्दों को सुनकर, मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद का संचार हुआ।
मैंने और भी अधिक भाषण को जन्म दिया। (10) [2916]

मैंने मनुष्य गर्भ का त्याग कर एक देवता का गर्भ प्राप्त किया। मेरा भव्य स्वर्गीय महल
ऊँचा उठा, 1875 मन को प्रसन्न करते हुए। (11) [2917]

जब मैं उस हवेली से बाहर निकलता हूँ, तो एक सफेद छाता साथ ले जाया जाता है।1876
मुझे यही धारणा बन रही है:
पूर्व कर्मों का फल। (12) [2918]

देवताओं के लोक से गिरकर मैं मनुष्य रूप में आया, छत्तीस बार चक्र घुमाने वाला।
सात सौ युग पहले। (13) [2919]

उस शरीर से गिरने के बाद,
मैं तैंतीसवीं कक्षा में गया। 1877
मैं धीरे-धीरे स्थानांतरित हो रहा हूँ
मानव जीवन में पुनः लौट आया। (14) [2920]

उनके पास एक सफेद छाता था।
मेरे लिए अपनी माँ के गर्भ से बाहर आना। फिर सात साल की उम्र में,
मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (15) [2921]

[एक आदमी था] जिसका नाम सुनंदा था, 1878
मंत्रों के एक ब्राह्मण गुरु। 1879 का क्रिस्टल छाता लेकर आ रहे हैं।
, प्रमुख अनुयायी को उपहार दिया। (16) [2922]

महान नायक, महान वक्ता
सारिपुत्त ने आभार व्यक्त किया।1880
उनकी कृतज्ञता सुनकर,
मुझे अपना पिछला काम याद आ गया। (17) [2923]

1875 में शाब्दिक अर्थ में, "जाना", संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित।
1876 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
1877 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
1878 शाब्दिक रूप से, "गया"
1879 में पीटीएस सांजलेसी के लिए बीजेटीएस के साथ सांजलेसी पढ़ा गया
1880 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

अपने दोनों हाथों को एक साथ दबाते हुए,
मैंने अपने मन को सुख दिया। अपने पिछले कर्मों को याद करते हुए,
मैंने अरहंत अवस्था प्राप्त की। (18) [2924]

फिर मैं अपनी सीट से उठकर, अपने हाथों को सिर पर जोड़कर, सम्बुद्ध को प्रणाम किया।
[और] उस समय ये शब्द कहे: (19) [2925]

एक लाख युगों बाद

पद्ममुत्तरा बुद्ध,
विश्वज्ञानी, विश्व में अद्वितीय, बलिदान का पात्र
स्वयं-एक हो चुके, प्रधान व्यक्ति ने अपने दोनों हाथों में ग्रहण किया।
मेरे द्वारा दी गई छतरी,
पूरी तरह से अलंकृत और सुशोभित। (20-21) [2926-2927]

हे बुद्ध! हे शिक्षा!
ओह! हमारे शिक्षक की उपलब्धि!
एक छाते के उपहार के माध्यम से,
मेरा पुनर्जन्म किसी बुरी स्थिति में नहीं हुआ। (22) [2928]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। अपने सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए, मैं अब बिना किसी दोष के रहता हूँ। (23) [2929]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) [2930]

इस प्रकार पूज्य सपरिवाराचत्तदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सपरिवाराचट्टदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: उम्मापुप्फी और पुलिना,
हासा, सान्या, निमित्तका, सासावाका और निगुंडी, 1881
सुमना, पुप्पचट्टका, और सुपरिवरचट्टा:
एक सौ सात श्लोक।

1881 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

उम्मापुप्पिया अध्याय, तैंतीसवाँ

गंधतूपिया, 1882 अध्याय, चौंतीसवाँ

---

331. गंधथूपिया 1883

मैंने सिद्धार्थ बुद्ध के लिए चमेली के फूलों से लिपटा हुआ एक सुगंधित स्तूप भेंट किया।
जैसा कि संबुद्ध के लिए उपयुक्त था।1884 (1) [2931]

विश्व के नेता, संबुद्ध, सोने की कीमती वस्तु के समान थे।

नीले जल लिली की तरह चमकीला, 1885
अग्नि-वेदी की तरह धधक रहा है। (2) [2932]

भिक्षुओं के मुखिया को बैठे हुए और भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित देखकर मेरा हृदय प्रसन्न हुआ।
एक उत्कृष्ट बाघ-बैल की तरह, एक उत्तम नस्ल के शेर की तरह,
और मैंने गुरु के चरणों की पूजा करने के बाद अपने हाथों को जोड़कर उन्हें जोड़ा।
मैं उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (3-4) [2933-2934]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय उन [अच्छी] सुगंधों को दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
सुगंध पूजा करने का फल । (5) [2935]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [2936]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1882 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।
1883 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1884 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1885 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

इस प्रकार पूज्य गंधतूपीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

गंधाथुपिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{*332, केवल BJTS: Udakapūjaka1886}1887

मैंने स्वर्ण संबुद्ध को हवा के मार्ग पर चलते हुए देखा, जो तेल की वेदी की तरह चमक रहा था।
अग्नि-वेदी की तरह धधक रहा है।1889 [2937]

मैंने हाथ में थोड़ा पानी लेकर उसे आसमान में उछाल दिया।
दयालु बुद्ध, ऋषि, महान नायक, ने [तब] इसे स्वीकार किया। [2938]

आकाश में खड़े होकर, पद्ममुत्तरा नाम के गुरु ने मेरे मन के विचारों को जान लिया।
[उसी समय मेरे बारे में] यह श्लोक बोला: [2939]

"पानी के इस उपहार के कारण
और जो आनंद उसने तब उत्पन्न किया, वह एक लाख युगों तक बना रहा।
उसे बुरे पुनर्जन्म का कोई ज्ञान नहीं होगा। [2940]

बुद्ध के लिए उस कार्य के कारण, 1890
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल, मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है।
सभी विजय और पराजय से परे। [2941]

पैंसठ सौवें युग में,
तीन चक्र-घुमाने वाले सम्राट थे; [सभी का] नाम सहस्रराज था, 1891
चारों ओर से लोगों पर प्रभुत्व रखता है। [2942]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1886 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

1887 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1888 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1889 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा शब्द एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1890 में शाब्दिक अर्थ में, "जाना", संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

1891 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [2943]

इस प्रकार पूज्य उदकपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उदकपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{*333, केवल BJTS: Punnāgapupphiya1892}

एक वनक्षेत्र में प्रवेश करते हुए,
मैं तब वहां शिकारी के रूप में रहता था। 1893 में एक लॉरेल के पेड़ को खिलते हुए देखकर,
मुझे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की याद आ गई। [2944]

उसमें से एक फूल तोड़कर,
अच्छी तरह से सुगंधित और खुशबूदार, रेत का स्तूप बनाकर, 1894
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। [2945]

पिछले बानवे युगों में
मैंने तब पुष्प पूजा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [2946]

इक्यावनवें युग में [अतः]
एक शासक रहता था, तामोनुडा, 1895
एक चक्र घुमाने वाला, महान शक्ति से परिपूर्ण, सात रत्नों का स्वामी। [2947]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [2948]

इस प्रकार पूज्य पुन्नागपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1892 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।
1893 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1894 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1895 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

पुन्नागपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{*334, केवल BJTS: Ekadussadāyaka1896}

हंसवती नगर में,

मैं उस समय घास ढोने वाला था। मैं घास ढोकर ही अपना जीवन यापन करता हूँ।
और इसी से मैं अपने बच्चों का पेट भरता हूँ। [2949]

विजेता, पदुमुत्तरा,
वह हर चीज का स्वामी था।1897
अंधकार को दूर भगाते हुए,
उस समय विश्व नेता का उदय हुआ। [2950]

अपने घर में बैठे हुए, उस समय मेरे मन में ये विचार आया:
"बुद्ध संसार में अवतरित हो चुके हैं, [परन्तु] मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है।"
मेरे पास केवल यही एक लबादा है, मेरा अपना कोई दाता नहीं है। पीड़ा नरक का एक नमूना है; 1898
मैं अब दान दूंगा।" [2951-2952]

इस प्रकार विचार करते हुए,
मैंने अपने मन को प्रसन्न किया। उस एक कपड़े के टुकड़े को लेकर,
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को दे दिया। [2953]

वह एक कपड़ा देने के बाद,
मैंने खुशी के जोरदार नारों को जन्म दिया, "यदि आप बुद्ध हैं, तो ज्ञानी,
मुझे पार ले चलो, हे महान ऋषि।" [2954]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
अपनी प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए,
[बुद्ध] ने तब मुझे धन्यवाद दिया: [2955]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1896 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

1897 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1898 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

"इस एक ही वस्त्र के उपहार के कारण, जो इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ दिया गया है, वह किसी बुरी जगह पर नहीं जाएगा।"
एक लाख 1899 युगों के लिए। [2956]

वह छत्तीस बार देवताओं के स्वामी के रूप में दिव्य शासन करेगा।
और वह तैंतीस बार बनेगा
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। [2957]

क्षेत्रीय शासन का काफी प्रभाव होगा, जिसकी गणना करना असंभव है।
देवताओं की दुनिया में हो या मनुष्यों की दुनिया में,
आप अस्तित्व में पुनर्जन्म लेंगे। [2958]

सुंदर और सद्‌गुणों से परिपूर्ण, अद्वितीय शरीर के साथ, आप जब चाहें, अटूट असीमित वस्त्र प्राप्त करेंगे। [2959]

जब उन्होंने यह कहा, तब सर्वोच्च कमल के नाम से प्रसिद्ध बुद्ध, ज्ञानी पुरुष, आकाश में विलीन हो गए।
ठीक हवा में उड़ते हंस-राजा की तरह। [2960]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ, मेरे पास संपत्ति की कोई कमी नहीं होगी:
यह एक ही कपड़े का फल है। [2961]

मेरे हर कदम के साथ, 1901 [कुछ] कपड़ा मेरे लिए उत्पन्न होता है। मैं नीचे कपड़े पर खड़ा हूँ;
मेरे ऊपर एक चंदवा। [2962]

और आज भी मैं यही कामना कर रहा हूँ।
कि मैं किसी कपड़े से पूरे ब्रह्मांड को भी ढक सकूँ।
अपने जंगलों और पहाड़ों के साथ। [2963]

सिर्फ उस एक कपड़े की वजह से, जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए, मैं 1902 में सुनहरे रंग का था।

1899 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
1900 में शाब्दिक अर्थ में, "जाना", संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित।
1901 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
1902 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

जन्म से जन्म तक स्थानांतरण।1903 [2964]

उस एक कपड़े का एक परिणाम:
कहीं भी कोई विनाश नहीं हुआ। 1904
यह मेरा आखिरी जीवन होगा;
अब इसका फल मुझे मिल रहा है। [2965]

उस समय जब मैंने वह वस्त्र दिया था, तब से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने किसी भी बुरे पुनर्जन्म को नहीं जाना है:
यह एक ही कपड़े का फल है। [2966]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। [2967]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [2968]

इस प्रकार पूज्य एकदुसदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकदुस्सादायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

332. {335.}1905 फुसिटाकामिया1906

संबुद्ध, जिनका नाम विपस्सी था,
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों में बैल, भिक्षुओं के आश्रम में निवास करता था 1907 [तब], साथ में अरहंत। 1908 (1) [2969]

विपस्सी, विश्व के नेता,
वह आश्रम के दरवाजे से बाहर निकल गया।

1903 शाब्दिक रूप से, "गया"
1904 में पीटीएस sañjālesi के लिए BJTS के साथ sañcālesi पढ़ा गया
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1905 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।
1906 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1907 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1908 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

उन लोगों के साथ जो दोषों से रहित हैं, 1909
[जिनकी संख्या] आठ लाख थी। (2) [2970]

तब मैंने हिरण की खाल से बने वस्त्र पहने थे, और साथ ही छाल से बने कपड़े भी पहने थे। मैं कुसुम का पानी ले जा रहा था।
मैं संबुद्ध के पास आया। (3) [2971]

अपने हृदय को आनंदित करते हुए, प्रसन्न होकर, हाथों को जोड़कर, कुसुम का पानी पीते हुए, 1911
मैंने इसे बुद्ध पर छिड़का। (4) [2972]

उस कर्म के कारण, सर्वोच्च कमल के नाम से विख्यात सम्बुद्ध ने, 1912 में मेरे उस कर्म की प्रशंसा करने के बाद,
उनकी इच्छा के अनुसार चला गया। (5) [2973]

पाँच हज़ार [सुगंधित] बूँदें थीं, जो मैंने 1913 में विक्टर को भेंट की थीं।
पच्चीस सौ के कारण, मैंने देवताओं के संसार पर शासन किया; पच्चीस सौ के कारण, मैं चक्र चलाने वाला सम्राट था; शेष कर्मों के कारण,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया।1914 (6-7) [2974-2975]

जब मैं देवताओं का राजा बनूंगा,
और इसी प्रकार जब मैं मनुष्यों का स्वामी बनूंगा, तो मुझे वही नाम दिया जाएगा:
मेरा नाम [हमेशा] "फुसिता" है। 1915 (8) [2976]

क्या मैं भगवान बन गया हूँ?
या इसी प्रकार, चाहे मैं पुरुष हूँ या नहीं,
ऐसा लगता है मानो 1916 में बूँदें बरस रही हों

1909 में शाब्दिक अर्थ में, "जाना", संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

1910 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1911 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

1912 शाब्दिक रूप से, "गया"

1913 में पीटीएस सांजलेसी के लिए बीजेटीएस के साथ सांजलेसी का पाठ किया गया

1914 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

1915 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

1916 में यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

सभी दिशाओं में एक फ़ैदम 1917.1918 (9) [2977]

मेरा अस्तित्व खुल गया, 1919
मेरे सारे पाप जलकर राख हो गए हैं।
सभी बहिर्वाह अब नष्ट हो चुके हैं:
यह बूंदों को देने का फल है। (10) [2978]

मेरी बारिश चंदन जैसी महकती है, और यह वैसी ही सुगंध फैलाती है।
मेरे शरीर की गंध भी मीठी है;
एक छोटा कमरा व्याप्त है। (11) [2979]

एक दिव्य सुगंध फैलती है

अच्छे कर्म वाले लोगों के लिए।1920
उस गंध को सूंघने के बाद, वे जान जाते हैं, "फुसिता इस जगह पर आई है।" (12) [2980]

शाखाएँ, पत्तियाँ, टहनियाँ, यहाँ तक कि घास भी, पूरी दुनिया में ऐसा लगता है मानो पौधे मेरे विचारों को पहचान रहे हों।
पल भर में सुगंध उत्पन्न होती है। (13) [2981]

चंदन पूजा करने के बाद से लाखों युगों में ,
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बूंदों को देने का फल है। (14) [2982]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) [2983]

इस प्रकार पूज्य फुस्सिताकम्मिया1923 थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

फुस्सिटकम्मिया 1924 थेरा की गाथा समाप्त हो गई है।

1917 में बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में 'गेण्डु' लिखा है । कम से कम प्रसारण के संदर्भ में, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।
1918 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
1919 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
1920 में PTS uddhalomikā के स्थान पर BJTS द्वारा uddalomika° का पाठ किया गया (जिसका अर्थ लगभग समान है, देखें RD, sv)
1921 साहित्य, "एक फूल पर"
1922 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
1923 khiḍḍāratiyaa
1924 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

---

333. {336.}1925 पभंकर1926

घने जंगल में, जो जंगली जानवरों से भरा हुआ था, वहाँ धन्य पद्ममुत्तरा का एक स्तूप (1927) स्थित था।
दुनिया का सबसे अच्छा, तटस्थ। (1) [2984]

वहां जाने की हिम्मत किसी ने नहीं की।
स्तूप को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए।
स्तूप टूट गया था, [खंडहर में बदल गया था]।
घास, टहनियों और लताओं से ढका हुआ। (2) [2985]

मैं उस समय वनकर्मी था।
मेरे पिता और दादाजी भी 1928 में इसी तरह के थे। मैंने जंगल में वह स्तूप देखा था।
टूटा हुआ, घास और लताओं में उलझा हुआ। (3) [2986]

बुद्ध के स्तूप को देखने के बाद,
मैंने श्रद्धापूर्वक उसकी सेवा की: "सर्वश्रेष्ठ बुद्ध का स्तूप, टूटा हुआ, जंगल में परित्यक्त पड़ा है।"
यह उचित नहीं है, उपयुक्त नहीं है।
जो सही और गलत में फर्क कर सकता है।1929
लेकिन मैं अन्य कामों में संलग्न रहता हूँ।
बुद्ध के स्तूप की सफाई नहीं करना।" (4-5) [2987-2988]

स्तूप की आठ बार पूजा करने के बाद उस पर उगने वाली घास, टहनियों और लताओं को साफ करना।
[अभी भी] झुकी हुई थी, मैं [फिर] चली गई। (6) [2989]

उस कर्म के फलस्वरूप, मैंने इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ अपने मानव शरीर का त्याग कर दिया, और वह भी बहुत अच्छे से।
मैं तब तावतिंसा गया। (7) [2990]

वहाँ मेरा सुनिर्मित महल है

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1925 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।
1926 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
1927 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
1928 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
1929 में शाब्दिक अर्थ में, "जाना", संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित।

वह सोने का बना था, चमकीला था। उसकी ऊंचाई साठ मील थी।
[और यह] तीस लीग चौड़ा था। (8) [2991]

और मैंने तीस बार ऐसा किया।
देवताओं पर शासन करना।
और मैं पच्चीस बार था
एक पहिया घुमाने वाला राजा [महान शक्ति के साथ]। (9) [2992]

जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए, मुझे अपार संपदा प्राप्त होती है। मेरे पास कभी संपदा की कमी नहीं होती।
स्तूपों की सफाई का यही फल है। (10) [2993]

जब मैं जंगल में हाथी की पीठ पर बैठा होता हूँ, 1930 में मैं जिस भी दिशा में जाता हूँ,
जंगल मुझे शरण प्रदान करता है। (11) [2994]

मैं अपनी दोनों आँखों से नहीं देख सकता
कोई भी पेड़ का ठूंठ या कांटा।
मेरे कर्मों के अनुसार, 1931
यह अपने आप ही हट जाता है। (12) [2995]

मुझे खुजली नहीं होती, 1932 दाद, 1933 चकत्ते, 1934 फोड़े, 1935 कुष्ठ रोग, 1936 मिर्गी, 1937 खुजली और 1938 खुजली भी नहीं होती:
यह [स्तूपों] की सफाई का फल है। (13) [2996]

मेरे लिए एक और चमत्कार:
स्तूप की सफाई करने के बाद, 1940, 1941

1930 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1931 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

1932 शाब्दिक रूप से, "गया"

1933 में पीटीएस सांजलेसी के लिए बीजेटीएस के साथ सांजलेसी का पाठ किया गया

1934 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

1935 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

1936 में यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

1937 में बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा गया है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

1938 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

1939 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

1940 में uddalomika° को BJTS द्वारा PTS uddhalomikā के स्थान पर पढ़ा गया (जिसका अर्थ लगभग समान है, देखें RD, sv)

1941 में, "एक फूल पर"

मुझे मुहांसों का एहसास नहीं था
या मेरे शरीर पर धब्बे उत्पन्न हुए। (14) [2997]

मेरे लिए एक और चमत्कार:

स्तूप की सफाई करने के बाद, 1942
मैं [केवल] दो अवस्थाओं में ही पुनर्जन्म लेता हूँ:
वह किसी देवता का हो, या किसी मनुष्य का। (15) [2998]

मेरे लिए एक और चमत्कार:
स्तूप की सफाई करने के बाद, 1943
हर जगह जहाँ मैं रह रहा हूँ
यह सुनहरे रंग का और बहुत चमकीला है। (16) [2999]

मेरे लिए एक और चमत्कार:
स्तूप की सफाई करने के बाद, 1944
अप्रिय चीजों से बचा जाता है।
और मनभावन चीजें प्रकट होती हैं। (17) [3000]

मेरे लिए एक और चमत्कार:
स्तूप की सफाई करने के बाद, 1945
मेरा मन [हमेशा बहुत] शुद्ध रहता है।
एकाग्रचित्त, बहुत चौकस। (18) [3001]

मेरे लिए एक और चमत्कार:
स्तूप की सफाई करने के बाद, 1946
एक ही बैठक में बैठे हुए,
मैंने अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली। (19) [3002]

उस [अच्छे] कर्म को करने के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
स्तूपों की सफाई का यही फल है। (20) [3003]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (21) [3004]

इस प्रकार पूज्य पभंकरा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पभंकरा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

1942 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

1943 khiḍḍāratiyaa

1944 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

1945 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

1946 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।

334. {337.}1947 तिणकुटिदायक1948

शहर में, बंदुमती में,
मैं उन लोगों में से था जो दूसरों के लिए काम करते थे। हालाँकि मैं दूसरों की सेवा में बंधा हुआ था।
मैंने दूसरे के चावल नहीं ढूंढे।1949 (1) [3005]

अकेले जाकर बैठते हुए मैंने इस बारे में इस प्रकार सोचा: "बुद्ध संसार में अवतरित हुए हैं।"
और मैंने कोई सेवा प्रदान नहीं की है। (2) [3006]

अब मेरे जीवन को सुधारने का समय आ गया है; 1950 का वो क्षण मेरे लिए तैयार है। पीड़ा नरक का एक नमूना है।
गुणहीन प्राणियों के लिए। (3) [3007]

इस तरह सोच-विचार करने के बाद, मैंने श्रम प्रमुख से संपर्क किया।1951
उससे कुछ काम मांगने के बाद, 1952
मैं जंगल में प्रवेश कर गया।1953 (4) [3008]

उस समय कुछ घास, लकड़ियाँ और लताएँ इकट्ठा करके, और तीन खंभे 1954 लगाकर,
मैंने वहाँ घास की झोपड़ी बनाई। (5) [3009]

मैंने उसे समर्पित करने के बाद
1955 में भिक्षुओं की सभा के लिए बनी झोपड़ी से मैं उसी दिन वापस आया था।
और श्रम फोरमैन के पास पहुंचा। (6) [3010]

उस कर्म के फलस्वरूप,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1947 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

1948 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1949 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1950 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा शब्द एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

1951 में शाब्दिक अर्थ में, "जाना", संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित किया गया है।

1952 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1953 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

1954 शाब्दिक रूप से, "गया"
1955 में पीटीएस सांजलेसी के लिए बीजेटीएस के साथ सांजलेसी का पठन

फिर मैं तावतिंस गया।
वहाँ मेरा महल, जो बहुत अच्छी तरह से बनाया गया था, घास की झोपड़ी से बनाया गया था। (7) [3011]

जो हवेली मुझे दिखाई दी,
एक मिल- कण्ड 1956 सेंट- भेण्डु 1957 [बड़ा], सोने का बना, झंडों से ढका हुआ,
उसमें एक लाख दरवाजे थे। (8) [3012]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव रूप हो या दिव्य, अपने विचारों को पहचानते हुए,
मेरे लिए एक महल बन जाता है। (9) [3013]

मुझे डर नहीं लगता, मैं सुन्न नहीं होता, मेरे रोंगटे नहीं खड़े होते;
मुझे अपने भीतर उन चीजों का ज्ञान नहीं है:1958
घास की झोपड़ी देने का यही फल है। (10) [3014]

शेर, बाघ और तेंदुए,
भालू 1959 [और] भेड़िये, 1960 k'ara bānā भालू 1961 —
वे सब मुझसे दूर रहते हैं:
घास की झोपड़ी देने का यही फल है। (11) [3015]

वाइपर्स 1962 और घोस्ट्स, 1963 कोबरा [भी],
कुंभण्ड , रक्खासा -[राक्षस];
वे सब भी मुझसे बच रहे हैं:
घास की झोपड़ी देने का यही फल है। (12) [3016]

मुझे याद नहीं आ रहा कि मैंने देखा था
जब मेरे सपने बुरे होते हैं, तो मुझे सचेतनता प्राप्त होती है।
घास की झोपड़ी देने का यही फल है। (13) [3017]

उस घास की झोपड़ी के उपहार की बदौलत ही मुझे सफलता मिली है।

1956 में, "गिर गया"
1957 साहित्य, "योग्य"
1958 में यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
1959 में बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा गया है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

1960 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
1961 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
1962 में पीटीएस उद्धालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस द्वारा उद्दालोमिका° का पाठ किया गया (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
1963 साहित्य, "एक फूल पर"

मैंने शिक्षण को देखा है
गौतम [बुद्ध], धन्य। (14) [3018]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
घास की झोपड़ी देने का यही फल है। (15) [3019]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (16) [3020]

इस प्रकार पूज्य तिणकुटिडायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिणकुटिडायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

335. {338.}1964 उत्तरेयाद्यक1965

हंसवती नगर में,
मैं उस समय ब्राह्मण था।
एक विद्वान जो मंत्रों को जानता था,
तीनों वेदों के स्वामी। (1) [3021]

मुझे अपने उन छात्रों से सम्मान प्राप्त हुआ, जो अच्छे कुल के थे और सुशिक्षित थे।
मैं तब शहर से बाहर चला गया
जल-पवित्रीकरण के लिए.1966 (2) [3022]

विजेता, पदुमुत्तरा,
वह हर चीज का उस्ताद था।1967
विक्टर ने शहर में प्रवेश किया
एक हजार निर्दोषों के साथ.1968 (3) [3023]

उन्हें संतों से घिरा देखकर, 1969
इससे मेरे हृदय को अत्यधिक प्रसन्नता प्राप्त हुई।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1964 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

1965 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1966 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1967 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

1968 में, इसका अर्थ है "जाना", अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए इसका अनुवाद "उड़ना" के रूप में किया गया है।

1969 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मानो [न्याय] द्वारा कामवासना से मुक्त कर दिया गया हो।
उसे देखकर, सुंदर दिखने वाला।1970 (4) [3024]

मेरे सिर पर हाथ एक साथ दबाए हुए
मैंने आज्ञाकारी व्यक्ति की पूजा की।
मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।
मैंने एक ऊपरी लबादा दान किया।1973 (5) [3025]

इसे दोनों हाथों से पकड़कर,
मैंने वह लबादा आकाश में फेंक दिया। वह लबादा एक छत्र बन गया। 1974
बुद्ध के अनुचरों जितना बड़ा। (6) [3026]

यह वहीं रुका रहा और भिक्षुओं और अन्य लोगों के उस विशाल समूह को भिक्षा मांगते हुए घेरे रहा; 1975
तब [उस चमत्कार] ने मुझे मुस्कुराने पर मजबूर कर दिया। (7) [3027]

जब वह 1976 में घर से चले गए
स्वयं एक हो जाने वाला, प्रधान व्यक्ति, शिक्षक, सड़क पर खड़ा, 1977
मुझे यह धन्यवाद व्यक्त किया:1978 (8) [3028]

मैं उसके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा।
जिसने प्रसन्नता से भरे हृदय से मुझे यह लबादा उपहार में दिया;
आप सब मेरी बात सुनो: (9) [3029]

तीस हजार युगों तक वह देवताओं के लोक में आनंदित रहेगा। पचास बार देवताओं का स्वामी।
वह दैवीय शासन का प्रयोग करेगा। (10) [3030]

जबकि वह, अच्छे कर्मों से संपन्न, 1979

1970 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
1971 शाब्दिक रूप से, "गया"
1972 में पीटीएस सांजलेसी के लिए बीजेटीएस के साथ सांजलेसी का पठन
1973 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
1974 साहित्य, "योग्य"
1975 में यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंढ (भाग, अंश, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेण्डु [लंबा? मोटा?]"।
1976 में बीजेटीएस के बाद, पीटीएस ने कई रूपों में geṇḍu पढ़ा । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
1977 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
1978 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
1979 में PTS uddhalomikā के स्थान पर BJTS द्वारा uddalomika° का पाठ किया गया (जिसका अर्थ लगभग समान है, देखें RD, sv)

देवताओं के लोक में निवास करने वाले व्यक्ति के लिए एक वस्त्र चंदवा होगा।
हर तरफ सौ मील। (11) [3031]

और वह छत्तीस बार होगा
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है, [और उसके पास] बहुत स्थानीय शासन होगा, गिनती में अनगिनत।(12) [3032]

अच्छे कर्मों से संपन्न होकर, 1980 में जब वह संसार में पुनर्जन्म ले रहा था, 1981 में उसने अपने मन में जो कुछ भी चाहा, वह सब प्राप्त कर लिया।
1982 में हर समय साकार होगा। (13) [3033]

इस व्यक्ति को बहुत महंगा कपड़ा मिलने वाला है:
रेशमी कपड़ा (1983) और ऊनी कंबल (1984) भी।
खोमा और सूती कपड़ा भी।1985 (14) [3034]

इस व्यक्ति को वह सब कुछ मिलेगा जिसकी वह कामना करता है।
वह हमेशा आनंद उठाएगा
कपड़े के एक टुकड़े का परिणाम। (15) [3035]

और बाद में, अपनी अच्छी जड़ों से प्रेरित होकर, वह स्वयं ही इस बात को समझ जाएगा।

धन्य गौतम की शिक्षा.1986 (16) [3036]

ओह! मैंने तो खूब अच्छा कर्म किया!
सर्वज्ञ, महान ऋषि! एक ही आवरण देकर,
मैंने अमरता की अवस्था प्राप्त कर ली है। (17) [3037]

जब मैं एक मंडप में हूँ, 1987
पेड़ की जड़ हो या खाली घर, कपड़े की छतरी ले जाई जाती है।
मेरे लिए, प्रत्येक तरफ एक फ़ैदम। (18) [3038]

और उस वस्त्र के कारण जो मैंने दिया था,

1980 साहित्य, "एक फूल पर"
1981 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
1982 khiḍḍāratiyaa
1983 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
1984 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
1985 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
1986 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
1987 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली पार्टी वाला व्यक्ति,"

मुझे बिना पूछे ही कपड़े पहना दिए गए हैं।1988
मुझे 1989 भोजन [और साथ ही] पेय प्राप्त होता है:
यह ऊपरी आवरण का फल है। (19) [3039]

उस [अच्छे] कर्म को करने के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
यही वस्त्र देने का फल है। (20) [3040]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (21) [3041]

इस प्रकार पूज्य उत्तरेय्यदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उत्तरेय्यदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

336. {339.}1990 धम्मसावनिया1991

विजेता, पदुमुत्तरा,
वह हर चीज का उस्ताद था।1992
चार आर्य सत्यों का उपदेश देते हुए उन्होंने कई लोगों को पार कराया। (1) [3042]

फिर मैंने जटाधारी तपस्वी (1993) का अभ्यास किया।
मैंने छाल से बने अपने कपड़े उतार फेंके,
मैंने उस समय आकाश में यात्रा की थी। (2) [3043]

तब मैं 1995 में उड़ान भरने में असमर्थ था।
उसके ऊपर, सर्वश्रेष्ठ बुद्ध। जैसे कोई पक्षी 1996 में पहाड़ से टकराता है,

---

1988 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी

1989 pariḷāho

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 1990 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

1991 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

1992 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

1993 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

1994 में, "जाना" का अनुवाद संदर्भ के आधार पर अन्यत्र "उड़ना" के रूप में किया गया है।

1995 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

1996 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

मुझे आगे यात्रा करने का अवसर नहीं मिला।1997 (3) [3044]

पहले मेरी आवाजाही इस तरह बाधित नहीं होती थी; 1998 मानो पानी से ऊपर उठ रही हो, 1999
मैं आसानी से 2000 उड़ गया 2001 आकाश से। (4) [3045]

"एक महान इंसान को अवश्य ही 2002
वह अभी मेरे नीचे बैठा होगा।
मेरे लिए 2003 में उसकी तलाश करना अच्छा रहेगा;
मुझे कुछ सार्थक मिल सकता है।"2004 (5) [3046]

फिर आकाश से नीचे उतरते हुए, मैं
शिक्षक की आवाज सुनी,

जो अनित्यता का उपदेश दे रहा था;
मैंने उस समय वह [सबक] सीखा। (6) [3047]

2005 में अनित्यता को समझना सीखते हुए मैं अपने आश्रम लौट गया। वहीं मैंने अपना शेष जीवन व्यतीत किया।
मैं वहीं मर गया। (7) [3048]

मेरे बाद के जीवन में,
मुझे वह शिक्षा याद आ गई। उस कर्म के फलस्वरूप मैंने बहुत अच्छा कर्म किया।
मैं तब तावतिंसा गया। (8) [3049]

तीस हजार युगों तक मैंने देवताओं के संसार में आनंद लिया। और मैंने दिव्य शासन का संचालन किया।
पचास से अधिक [विभिन्न] बार। (9) [3050]

और इकहत्तर [अलग-अलग] बार
मैं एक ऐसा सम्राट था जो हर काम को अपने तरीके से अंजाम देता था।

1997 शाब्दिक रूप से, "गया"
1998 में पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ सांचेलेसी पढ़ना
1999 में, "गिर गया"
2000 लिट., "मेधावी"
2001 में यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में, मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंड (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
2002 में BJTS के बाद, PTS ने geṇḍu को कई रूपों में पढ़ा। कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
2003 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के बाद
2004 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
2005 में PTS uddhalomika ° के स्थान पर BJTS द्वारा uddhalomika° का पाठ किया गया (जिसका अर्थ लगभग समान है, देखें RD, sv)

वहाँ बहुत स्थानीय शासन भी था, जिसकी गिनती करना असंभव था। (10) [3051]

[तब] मैं अपने पिता के घर में बैठा था,
एक भिक्षु जो अपनी इंद्रियों पर पूर्णतः नियंत्रण रखता है और छंदों के माध्यम से सत्य का चित्रण करता है, 2006
चीजों को क्षणभंगुर बताया।2007 (11) [3052]

उस धारणा को याद रखते हुए, जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए भी, मुझे अंत का अहसास नहीं हुआ।
निर्वाण, शाश्वत अवस्था। (12) [3053]

"वास्तव में, सब कुछ परिवर्तनशील है;
चीजें अस्तित्व में आती हैं [और फिर] नष्ट हो जाती हैं।
वे उत्पन्न होते हैं [और फिर] वे विलीन हो जाते हैं;
उनका समापन 2008 खुशी है।" (13) [3054]2009

उस श्लोक को सुनने के बाद, 2010
मुझे अपनी पिछली धारणा याद आ गई। एक ही बैठक में बैठे हुए,
मैंने अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली। (14) [3055]

मात्र सात वर्ष की आयु में ही मैंने अरहंत पद प्राप्त कर लिया था। मेरे सद्गुणों को पहचानते हुए...
बुद्ध, नेत्रपूर्ण ने मुझे दीक्षा दी। (15) [3056]

हालांकि मैं तब एक [महज] लड़का था,
मैंने अपना काम पूरा कर लिया है। आज मुझे क्या करना है?
शाक्यान के विधान में?2011 (16) [3057]

उस [अच्छे] कर्म को करने के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
शिक्षण को सुनने में फल.2012 (17) [3058]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

2006 साहित्य, "एक फूल पर"
क्या ये 2007 की बात है या शायद फूलों की? या दोनों की, यानी खिले हुए पेड़ों की?
2008 khiḍḍāratiyaÁ
2009 tidase , ie, in Tāvatiṃsa heaven
2010 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या शानदार) महल में"
2011 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद पहले चरण में "नया" और दूसरे चरण में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
2012 शाब्दिक रूप से, " पूजा "

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (18) [3059]

इस प्रकार पूज्य धम्मसवानीया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

धम्मसवानीया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

337. {340.}2013 उक्खित्तापडुमिया2014

हंसवती नगर में,
मैं उस समय फूल विक्रेता था। कमल के तालाब में डुबकी लगाते हुए,
मैंने कुछ कमल के फूल एकत्र किए। (1) [3060]

विक्टर पदुमत्तरा
वह हर चीज का उस्ताद था।2015
एक लाख के साथ
ऐसे ही लोग जिनका मन शांत था, शुद्ध थे और जिनके सारे दोष नष्ट हो चुके थे।
छह विशेष ज्ञान-धारकों के पास, परम पुरुष ने संपर्क किया।
मेरी उन्नति की कामना करते हुए.2016 (2-3) [3061-3062]

[उन्हें] देखकर, देवताओं के देव, स्वयंभू एक, विश्व-नेता, ने तनों को तोड़कर कमलों को हवा में उछाल दिया। (4) [3063]

“यदि आप बुद्ध हैं, नायक हैं,
विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के सांड, इन कमलों को अपने आप खिलने दो।
जाओ [और] अपने सिर पर ले जाया जाए।” (5) [3064]

विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल, महान नायक ने बुद्ध की शक्ति से ऐसा चाहा।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2013 अपादान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

2014 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

2015 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2016 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2017 में, "जाना" का अनुवाद संदर्भ के आधार पर कहीं और "उड़ना" के रूप में किया गया है।

वे [फूल] उसके सिर पर ले जाए गए थे। (6) [3065]

उस कर्म के फलस्वरूप, मैंने इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ अपने मानव शरीर का त्याग कर दिया, और वह भी बहुत अच्छे से।
मैं तब तावतिंसा गया। (7) [3066]

वहाँ मेरा सुनिर्मित महल है
इसे 2018 में "सौ पंखुड़ियाँ" के नाम से जाना जाता था। 2019
यह साठ लीग (लगभग 10 किमी) की ऊंचाई तक फैला हुआ था;
[और यह] तीस लीग चौड़ा था। (8) [3067]

हजार बार देवताओं के स्वामी, मैंने [तब] दिव्य शासन किया।
और पचहत्तर बार मैं था
एक राजा जिसने [कानून का] पहिया घुमाया। (9) [3068]

वहाँ स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव है।
मैंने अपने कर्मों का फल भोगा।
पहले मेरे द्वारा अच्छी तरह से किया गया। (10) [3069]

उस एक कमल के कारण ही सौभाग्य प्राप्त हुआ।
मुझे शिक्षा का एहसास हुआ
धन्य [बुद्ध], गौतम। (11) [3070]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (12) [3071]

जब से मैंने [उसे] 2020 का वह फूल भेंट किया है, तब से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने किसी बुरे पुनर्जन्म को नहीं जाना है:
एक कमल का फल । (13) [3072]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) [3073]

इस प्रकार पूज्य उक्खित्तपदुमिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उक्खित्तपदुमिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

2018 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ: "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
2019 sappi , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (gī tel)
2020 lit., "गया"

समीक्षा:

गंधोदक और पूजनी, पुन्नागा, एकदुस्सिका, फुसिता और पभंकर, कुटिदा, उत्तरायका, सावनी, एकपादुमी:
वहाँ छंदों का समूह [संख्याएँ]
एक सौ श्लोक और साथ ही चौवालीस [अतिरिक्त श्लोक]।

गंधतूपीय अध्याय, चौंतीसवाँ

एकपादुमिया अध्याय, पैंतीसवाँ

338. {341.}2021 एकपाडुमिया2022

विक्टर पदुमत्तरा
वह हर चीज का स्वामी था। 2023
2024 में सभी अस्तित्वों की व्याख्या, 2025
उसने कई लोगों को पार कराया। (1) [3074]

उस समय मैं हंसों का राजा था;
मैं पक्षियों में विशिष्ट था। एक प्राकृतिक झील में डुबकी लगाई,
मैं हंसों के खेल खेल रहा हूँ। (2) [3075]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
विक्टर विमान 2026 तक हर समय उड़ता रहेगा।
उस प्राकृतिक झील के ऊपर [वहाँ]। (3) [3076]

मैंने देवताओं के ईश्वर को देखा है,
स्वयं को एक बनाओ, विश्व नेता बनो,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2021 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद के मुख्य क्रमांकन को निर्धारित करता है।

2022 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2023 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर वाली रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2024 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2025 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

2026 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मैंने अपनी चोंच से कमल के फूल तोड़े—सुंदर, सौ पंखुड़ियों वाले—और उनकी डंठलें तोड़कर आकाश में उछाल दीं, मैं
मैंने सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की पूजा की ।
2027 तक विश्व के नेता से प्रसन्न। (4-5) [3077-3078]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
शिक्षक, आकाश में खड़े हैं,
मुझे यह धन्यवाद व्यक्त किया:2028 (6) [3079]

“इस एक कमल [उपहार] के कारण, दृढ़ संकल्प और इरादे के साथ, एक लाख युगों तक
आप 2029 के कष्ट में नहीं पड़ेंगे। 2030 (7) [3080]

यह सब कहने के बाद, सम्बुद्ध, जिसका नाम परम कमल था, ने 2031 में मेरे कर्मों का विस्तृत वर्णन किया।
उनकी इच्छा के अनुसार चला गया। (8) [3081]

उस [अच्छे] कर्म को करने के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (9) [3082]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [3083]

इस प्रकार पूज्य एकपदुमिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकपदुमिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

2027 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
2028 शाब्दिक रूप से, "गया"
2029 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
2030 शाब्दिक रूप से, "गिर गया"
2031 शाब्दिक रूप से, "योग्य"

---

339. {342.}2032 तिनुप्पलमालिया2033

चंदाभागा नदी के किनारे पर,
उस समय मैं एक बंदर 2034 था।
मैंने स्टेनलेस बुद्ध को देखा [जो]
पहाड़ की ढलान पर बैठा था। (1) [3084]

मैं उन्हें देखकर मंत्रमुग्ध हो गया, वे चारों दिशाओं में प्रकाशमान थे, मानो कोई भव्य साल का वृक्ष खिला हुआ हो।
महान और छोटे चिह्न धारण करना.2035 (2) [3085]

प्रसन्नता से, परमानंदित हृदय से और आनंद से भरे मन से, मैंने बुद्ध के सिर पर अर्पण किया।
तीन [सुंदर] नीले कमल के फूल। (3) [3086]

उन फूलों को विपस्सी, परम ऋषि को अर्पित करने के बाद, आदरपूर्वक उनके पास जाकर
फिर मैं उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (4) [3087]

2036 पर झुककर [वहां से] जा रहा है,
एकदम स्पष्ट मन से मैं एक पहाड़ पर उतरा।
[और] मैंने अपने जीवन का अंत प्राप्त कर लिया। (5) [3088]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण, 2037
मैं तब तावतिंसा गया। (6) [3089]

और [उसके बाद,] तीन सौ बार मैंने देवताओं के [जगत] पर शासन किया।
और [इसके अलावा] पाँच सौ बार
मैं वह राजा था जिसने पहिया घुमाया। (7) [3090]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2032 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2033 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

2034 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2035 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2036 शाब्दिक रूप से, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

2037 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने तब पुष्प पूजा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (8) [3091]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [3092]

इस प्रकार पूज्य तिनुप्पलामालिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिनुप्पलामालिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

340. {343.}2038 धजदायक2039

उस शिक्षक का नाम तिस्सा रखा गया, जो विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल था। उनके निधन को देखकर, 2040
मैंने [उस स्थान पर] एक झंडा फहराया।2041 (1) [3093]

उस कर्म के फलस्वरूप, मैंने इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ अपने मानव शरीर का त्याग कर दिया, और वह भी बहुत अच्छे से।
मैं तब तावतिंसा गया। (2) [3094]

और [उसके बाद,] तीन सौ बार मैंने देवताओं के [जगत] पर शासन किया।
और [इसके अलावा] पाँच सौ बार
मैं वह राजा था जिसने पहिया घुमाया। (3) [3095]

वहाँ स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव है।
मैंने अपने कर्मों का फल भोगा।
पहले मेरे द्वारा अच्छी तरह से किया गया। (4) [3096]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2038 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2039 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
2040 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2041 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
झंडा देने का यही फल है। (5) [3097]

आज, यदि मैं इसकी कामना करूं,
जंगलों और पहाड़ों से ढकी दुनिया खोमा के कपड़े से ढकी हुई है:
2042 का फल जो मैंने 2043 में किया था। (6) [3098]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [3099]

इस प्रकार पूज्य धजदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

धजदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

341. {344.}2044 तिन्निकिङ्खणिकापूजक2045

हिमालय पर्वतमाला के निकट, एक पर्वत है, भूतगण।2046
वहाँ मैंने चिथड़ों से बना एक वस्त्र देखा,2047
पेड़ के शीर्ष पर फंसा हुआ.2048 (1) [3100]

उस समय मैंने वहाँ तीन सुंदर किंखाणी (2049 फूल) बिखेरे। प्रसन्न होकर, और प्रसन्न हृदय से।
मैंने उस चिथड़े-दुबले वस्त्र की पूजा की । (2) [3101]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था।

2042 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

2043 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2044 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2045 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2046 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2047 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2048 शाब्दिक रूप से, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

2049 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
वह तीन फूलों का फल है। (3) [3102]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3103]

इस प्रकार पूज्य तिणिकिंखाणिकपूजक2050 थेरा ने ये श्लोक कहे।

Tīṇikiṅkhaṇikapūjaka2051 Thera की कथा समाप्त हो गई है।

---

342. {345.}2052 नलगारिका2053

हिमालय पर्वतमाला के निकट,
हरिता नाम का एक पर्वत है।2054
स्वयं एक हो जाओ, नारद,
तब वह एक पेड़ की जड़ों में रहता था। (1) [3104]

मैंने सरकंडों से एक घर बनाया, उसे घास से ढक दिया, और फिर एक रास्ता साफ किया।
उन्होंने [उन्हें] स्वयं-एक हो जाने को दे दिया। (2) [3105]

चौदहवें युग में [पूर्व में]
मुझे देवताओं की दुनिया में आनंद आया, और मैंने चौहत्तर बार ऐसा किया।
देवताओं पर शासन का प्रयोग करें। (3) [3106]

और सतहत्तर बार मैंने
वह [तब] एक चक्र-घुमाने वाला सम्राट था।
वहाँ बहुत स्थानीय शासन भी था, जिसकी गिनती करना असंभव था। (4) [3107]
मेरा निवास स्थान बहुत ऊंचा था, जो इंद्र के खंभे की तरह ऊंचा उठता था।

2050 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

2051 शाब्दिक रूप से, "गया"

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2052 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2053 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2054 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

एक हजार स्तंभों वाला, अद्वितीय, प्रकाश से परिपूर्ण एक महल। (5) [3108]

दोनों उपलब्धियों का आनंद लेते हुए, 2055
अपनी पवित्र पृष्ठभूमि से प्रेरित होकर, मैं धर्म के मार्ग पर आगे बढ़ा।
गौतम, भगवान के। (6) [3109]

परिश्रम करने के लिए तत्पर रहने वाला व्यक्ति होने के नाते,
शांत, 2057 पुनर्जन्म के आधारों से रहित, 2058
टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [3110]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [3111]

इस प्रकार पूज्य नलगारिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नलगारिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

343. {346.}2059 कैम्पकापुप्फहिया2060

हिमालयी क्षेत्र में,
कावला नाम का एक पहाड़ है।2061
बुद्ध ने सुदस्सन का नाम रखा।
पहाड़ की ढलान पर रह रहा था। (1) [3112]

हिमालयी फूल लेकर,
मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
बाढ़ पार करने वाला, 2062 अछूता, 2063

2055 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को संदर्भित करता है।

2056 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

2057 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

2058 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2059 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2060 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2061 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2062 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
2063 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

आकाश से यात्रा करते हुए [ठीक उसी समय]। (2) [3113]

उस समय मैंने उनके सिर पर सात सुगंधित चंपक फूल रखे। मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया।
स्वयं-एक हो जाओ, महान ऋषि। (3) [3114]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उन फूलों से पूजा की , मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [3115]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3116]

इस प्रकार पूज्य कैम्पकपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कैम्पाकापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

344. {347.}2064 पदुमपूजक2065

हिमालय पर्वतमाला के निकट,
रोमासा नाम का एक पहाड़ है।2066
संभव के नाम से जाने जाने वाले बुद्ध
फिर वह वहाँ खुले में रहने लगा। (1) [3117]

अपने निवास से बाहर निकलते हुए,
मैं उसके लिए एक कमल का फूल लाया। एक ही फूल लाने के बाद
मैं पुनर्जन्म की ओर आगे बढ़ा। (2) [3118]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उसे वह फूल भेंट किया।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2064 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2065 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2066 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2067 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
2068 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [3119]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3120]

इस प्रकार पूज्य पद्मपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पद्मपुजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

345. {348.}2069 तिनामुथिदायक2070

हिमालयी क्षेत्र में,
वहाँ लंबका नाम का एक पर्वत है।2071
संबुद्ध, उपतिस्सा,
खुली हवा में इधर-उधर चलता रहा। (1) [3121]

उस समय मैं जंगल में एक छोटे से बाग में हिरण का शिकार करता था।
उस परम देव, स्वयंभू स्वरूप, अजेय, अत्यंत निर्मल मन वाले व्यक्ति को देखकर,
फिर मैंने मुट्ठी भर घास दी
परम संत, बुद्ध को,
ताकि वह उस पर बैठ सके। (2-3) [3122-3123]

देवताओं के ईश्वर को कुछ और देते हुए,
मैंने अपने हृदय को प्रसन्न किया। संबुद्ध को प्रणाम करते हुए, मैंने
[तब] उत्तर की ओर मुख करके प्रस्थान किया। (4) [3124]

कुछ समय बाद ही, जानवरों का एक राजा 2072
यात्रा के दौरान मुझे चोट लगी।2073

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2069 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2070 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2071 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2072 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी भाग को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

2073 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

उस शेर द्वारा गिराए जाने पर,
मैं वहीं मर गया। (5) [3125]

जब मैंने सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, निष्कलंक बुद्ध के लिए वह कर्म किया, 2074 तो तुरंत ही 2075 तीर छूट गया।
मैं देवताओं के लोक में गया। (6) [3126]

मेरी प्यारी बलिदानी पोस्ट, 2076
good2077 karma द्वारा बनाया गया,
was mil- kaṇḍa 2078 cent- bheṇḍu 2079 [large]
सोने से बना, झंडों से ढका हुआ। (7) [3127]

अपनी शानदार रोशनी बिखेरते हुए,
जैसे सौ किरणों वाला [सूर्य] उदय हुआ हो, वैसे ही यह दिव्य कन्याओं से भरा हुआ है।
मुझे वहाँ बहुत आनंद आया। (8) [3128]

देवताओं के लोक से गिरकर, अपनी पवित्र जड़ों से प्रेरित होकर, मानव अवस्था में वापस लौटकर,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया।2080 (9) [3129]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उसे बैठने के लिए जगह दी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
मुट्ठी भर घास का फल। (10) [3130]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [3131]

इस प्रकार पूज्य तिनमुट्ठिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिनमुट्ठिदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

2074 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
2075 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
2076 शाब्दिक रूप से, "गया"
2077 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
2078 शाब्दिक रूप से, "गिर गया"
2079 शाब्दिक रूप से, "योग्य"
2080 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

---

346. {349.}2081 तिन्दुकफलदायका2082

मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
बाढ़ पार करने वाला, अछूता, 2083
पहाड़ की ढलान पर बैठे हुए,
डिनर-प्लेट ट्री की तरह चमक रहा है।2084 (1) [3132]

जंगली मैंगोस्टीन2085 को खिलते हुए देखना,
मैंने फल सहित 2086 टहनियाँ तोड़ लीं। प्रसन्न होकर मेरा हृदय आनंद से भर गया।
मैंने उन्हें [उसे] दे दिया, वेसभु। (2) [3133]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने वह फल [बुद्ध को] दे दिया, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ:

फल देने का फल यही है। (3) [3134]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3135]

इस प्रकार पूज्य तिण्डुकफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिण्डुकफलदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2081 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2082 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2083 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2084 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2085 शाब्दिक रूप से, "जा रहा है," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ रहा है" के रूप में अनुवादित

2086 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

---

347. {350.}2087 एकांजलिया2088

संबुद्ध ने रेवता2089 नाम दिया
उस समय वे नदी किनारे रहते थे।
मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
जैसे सूर्य अपनी सुनहरी किरणों के साथ, 2090
जैसे पीटे हुए2091 [सोने]2092 को भट्टी के ऊपर रखा गया हो,2093 [तेज जल रहा हो] जैसे देवदार का कोयला,2094 भोर के तारे की तरह चमक रहा हो।2095
मैंने अपने हाथों को एक बार जोड़ा। (1-2) [3136-3137]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने अपने हाथ जोड़े [तब], मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
यही अभिवादन का फल है। (3) [3138]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3139]

इस प्रकार पूज्य एकंजलिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकंजलिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

समीक्षा:

पदुमा, उप्पलहत्था, धजा, किंखानिका, नाला, कैम्पका, पदुमा, मुठी, तिंडुक और इस प्रकार एकांजलि।
इसमें छह और साठ श्लोक हैं।
जिनकी गिनती जानकार लोग करते हैं।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2087 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2088 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2089 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से तैयार किया गया एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर वाली रोटी या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2090 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल रंग धारण करने वाला" अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

2091 शाब्दिक रूप से, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

2092 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

2093 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

2094 शाब्दिक रूप से, "गया"

2095 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

एकपदुमिया अध्याय, पैंतीसवाँ

सद्दसाञ्‍ञक अध्याय, छत्तीसवाँ

---

348. {351.}2096 सद्दासानका2097

उस समय मैं जंगल में एक छोटे से बाग में हिरण का शिकार करता था।
वहाँ मैंने एक बार संबुद्ध को देखा था।
देवताओं की सभा द्वारा सम्मानित।2098 (1) [3140]

चार आर्य सत्यों का उपदेश देते हुए उन्होंने कई लोगों को समुद्र पार पहुंचाया।
मैंने उनकी मीठी-मीठी बातें भी सुनीं।
जैसे2099 कोयल का गीत2100.2101 (2) [3141]

हे जगत के सगे भाई, सिख धर्म के गीत (बुद्ध) से मेरा हृदय प्रसन्न हुआ।
ऋषि, दिव्य ध्वनि स्वरक, 2102
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया।2103 (3) [3142]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह आनंद की अनुभूति का फल है। (4) [3143]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3144]

इस प्रकार पूज्य सद्दसाञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2096 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2097 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2098 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2099 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2100 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

2101 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

2102 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

2103 शाब्दिक रूप से, "गया"

सद्दसञ्जक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

349. {352.}2104 यवकलापिय2105

अरुणावती नगर में,
मैं तब जौ का किसान था2106। सड़क पर बुद्ध2107 को देखकर,
मैंने जौ का गट्ठा फैला दिया। (1) [3145]

हे सिख धर्म, विश्व के प्रमुख नेता, दयालु, करुणामयी, मेरे विचारों को समझने वाले,
जौ के उस गट्ठे पर बैठ गया। (2) [3146]

बैठे हुए निष्कलंक, महान ध्यानी, नेता को देखकर, और अत्यंत आनंद उत्पन्न करते हुए,
मैं वहीं मर गया। (3) [3147]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
जौ फैलाने में फल। (4) [3148]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3149]

इस प्रकार पूज्य यवकलापिय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

यवकलापिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2104 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2105 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2106 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2107 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

350. {353.}2108 किसुकापुजाका2109

एक खिले हुए पुलस वृक्ष को देखकर, 2110 हाथों को जोड़कर फैलाते हुए, सिद्धार्थ बुद्ध को याद करते हुए,
मैंने आकाश में पूजा की। (1) [3150]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [3151]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3152]

इस प्रकार पूज्य किंशुकापूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

किंसुकापुजका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

351. {354.}2111 साकोटकाकोरांडदायका2112

विश्व के सगे-संबंधी सिख [बुद्ध] द्वारा एक कंधे पर हिरण की खाल रखकर चलाए गए मार्ग को देखकर,
मैंने उस शानदार पदचिह्न की पूजा की। (1) [3153]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2108 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2109 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2110 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 2111 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

2112 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2113 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2114 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2115 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

खिले हुए कोरण्ड को देखकर ,
धरती में उगने वाला पैर-पीने वाला जीव, 2116
फूलों वाली एक टहनी लेकर, मैं
पूजा की2117 उस पदचिह्न पर पहिया.2118 (2) [3154]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह पदचिह्न पूजा का फल है । (3) [3155]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3156]

इस प्रकार पूज्य सकोटककोरण्डदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सकोटककोरण्डडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

352. {355.}2119 दण्डदायक2120

जंगल में डूबा हुआ, वनों में,
मैंने उस समय कुछ बांस काटे थे। एक छड़ी लेकर,2121
मैंने इसे विधानसभा को दे दिया।2122 (1) [3157]

मेरे मन में उमड़ी खुशी के कारण, "आपको सुख मिले!" कहकर मैंने वह छड़ी भेंट की थी।
मैं उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (2) [3158]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय भिक्षुओं को वह छड़ी दी थी।

2116 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

2117 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
2118 शाब्दिक रूप से, "गया"
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2119 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2120 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
2121 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2122 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
छड़ी देने का यही फल है। (3) [3159]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3160]

इस प्रकार पूज्य दंडदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

दंडदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

353. {356.}2123 अम्बयागुडायक2124

संबुद्ध, सौ किरणों वाला, 2125
स्वयं-निर्मित, अजेय, ध्यान से उठकर, 2126
मेरे पास भीख मांगने आया। (1) [3161]

पच्चेकबुद्ध को देखकर,
एकदम स्पष्ट मन से,
मैंने आम से बना दलिया दिया
उनके लिए, स्पष्ट मन वाले [बुद्ध]। (2) [3162]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।

यह आमों के दलिया का फल है। (3) [3163]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3164]

इस प्रकार पूज्य अंबयागुदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अंबयागुडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2123 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2124 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2125 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2126 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

354. {357.}2127 सुपूतकपूजक2128

दोपहर के आराम के बाद, विश्व नेता विपस्सी (बुद्ध) भिक्षा मांगने के लिए बाहर निकले।
उस समय मेरी उपस्थिति में आया। (1) [3165]

उसके बाद, प्रसन्न होकर, प्रफुल्लित होकर, नमक से भरा एक अच्छा थैला दिया।
विश्व के सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ ईश्वर के लिए, मैंने स्वर्ग में एक युग का आनंद लिया। (2) [3166]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने [बुद्ध को] वह अच्छा थैला दिया, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ है:
यह एक अच्छे उपहार का फल है। (3) [3167]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3168]

इस प्रकार पूज्य सुपुटकपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुपुटकपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

355. {358.}2129 सज्झादायक2130

मैंने चांदी का एक टुकड़ा उपहार में दिया।
अत्यंत प्रसन्नता के साथ, दोनों हाथों से, भगवान विपस्सी को प्रणाम करता हूँ।
दुनिया का सबसे अच्छा, तटस्थ। (1) [3169]

हाथी और घोड़े जैसे वाहन, दिव्य वाहन प्राप्त होते हैं;

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2127 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2128 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2129 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2130 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2131 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

उस चांदी के उपहार के कारण,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (2) [3170]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने तब वह चांदी का टुकड़ा दे दिया था, और तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है:
चांदी देने का यही फल है। (3) [3171]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3172]

इस प्रकार पूज्य सज्जादायका2132 थेरा ने ये श्लोक कहे।

सज्जादायका2133 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

356. {359.}2134 सारनागमानिया2135

उस समय हम एक नाव पर सवार हुए, भिक्षु और मैं,2136 एक अजीवक ।
जब नाव टुकड़े-टुकड़े हो गई,
उस बौद्ध भिक्षु ने मुझे शरण दी। (1) [3173]

पिछले इकत्तीस युगों में
उन्होंने मुझे [उस समय] शरण दी थी, मुझे कभी भी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
शरण लेने का फल। (2) [3174]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3175]

इस प्रकार पूज्य सरणागमनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सरणागमनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

2132 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को संदर्भित करता है।
2133 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2134 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2135 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2136 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

357. {360.}2137 पिंडपतिका2138

संबुद्ध का नाम तिस्सा था; वे उस समय जंगल में रहते थे। तुसिता से यहाँ आते हुए, मैं
मैंने उस बुद्ध को भिक्षा दी। (1) [3176]

मैंने संबुद्ध को प्रणाम किया।
वह महान यशायाह, जिसका नाम तिस्सा है। मेरे हृदय को आनंदित करते हुए,
मैं [तब] तुसिता लौट गया। (2) [3177]

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस समय दान दिया था, मुझे अब तक कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है:
यह भिक्षा देने का फल है। (3) [3178]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3179]

इस प्रकार पूज्य पिंडपातिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पिंडपातिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: सददासन्या, यवासिका,
Kiŋsuka, 'Raṇḍapupphiya, Ālamba and Ambayāgu, Suputi, Sajjhadāyaka, Saraṇa� andPiṇḍapāta [meta] exactly forty verses.

सद्दसञ्ञक अध्याय, छत्तीसवाँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2137 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2138 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

मंदारपुप्पिया 2139, अध्याय सैंतीसवाँ

---

358. {361.}2140 एकमंदारिय2141

तावतिंस से यहाँ आते हुए,
मैं मंगला नाम का एक आदमी था।2142
मैंने मंदारव का एक फूल लिया और उसे अपने सिर पर उठा लिया।
विपस्सी [बुद्ध], महान ऋषि, ध्यान में बैठे हुए।2143
मैंने इसे एक सप्ताह तक इसी प्रकार ढोया।
[तब] देवताओं के लोक में लौट आया। (1-2) [3180-3181] इक्यावन युगों में
मैंने बुद्ध की पूजा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [3182]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3183]

इस प्रकार पूज्य एकमंदारिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकमंदारिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2139 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2140 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2141 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2142 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2143 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

---

359. {362.}2144 Kekkhārupupphiya2145

मृतकों की दुनिया से आ रहा है, 2146
मैंने गौतम को देखा, महानजन।2147
केक्खारा का फूल लेना
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। (1) [3184]

पिछले बानवे युगों में
मैंने बुद्ध की पूजा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [3185]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3186]

इस प्रकार पूज्य केक्खारुपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

केक्खारुपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

360. {363.}2148 भिसामुदलदायक2149

संबुद्ध को 2150 फुस्सा, सर्वस्व के [महान] स्वामी का नाम दिया गया। 2151
एकांत प्रेमी, 2152 बुद्धिमान व्यक्ति, 2153

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2144 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2145 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2146 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2147 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2148 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2149 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2150 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2151 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी भाग को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
2152 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
2153 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

उस समय मेरी उपस्थिति में आया। (1) [3187]

हे विजयदाता, महान करुणा के देवता, कमल की जड़ों और तनों को धारण करने वाले, उनमें अपने हृदय को आनंदित करते हुए, मैं उन्हें सर्वश्रेष्ठ बुद्धों को दे दिया। (2) [3188]

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस समय वह कमल की जड़ दी थी, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
यह कमल की जड़ के उपहारों का फल है। (3) [3189]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3190]

इस प्रकार पूज्य भीष्ममूलाडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

भीसमुलालदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

361. {364.}2154 केसरपुप्पहिया2155

मैं उस समय एक जादूगर था [2156]
हिमालय पर्वत पर।
मैंने निष्कलंक बुद्ध को देखा।
महान प्रसिद्ध व्यक्ति, इधर-उधर टहलते हुए। (1) [3191]

उस समय मैंने 2157 स्थान प्राप्त किए थे
मेरे सिर पर तीन केसर के फूल हैं।
मैंने संबुद्ध के पास जाकर वेसभु की पूजा की । (2) [3192]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [3193]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2154 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2155 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2156 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2157 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3194]

इस प्रकार पूज्य केसरपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

केसरापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

362. {365.}2158 Aṅkolapupphiya2159

उस समय चित्तकूट 2160 में पद्मा नामक सम्बुद्ध निवास करते थे। उन्हें देखकर मैं उनके पास गया।
बुद्ध, स्वयं एक हो जाओ। (1) [3195]

अंकोला का फूल देखकर ,
मैंने उस समय 2161 [इसे] एकत्र किया। संबुद्ध के पास पहुँचकर, मैंने 2162 विजेता पद्म की पूजा की। (2) [3196]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [3197)
विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3198]

इस प्रकार पूज्य अंकोलापुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अंकोलापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2158 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2159 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2160 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2161 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2162 शाब्दिक रूप से, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

---

363. {366.}2163 कदम्बपुप्फहिया2164

महल के द्वार पर बैठा हुआ
मैंने विश्व के नेता को देखा,
स्वर्ण रंग के संबुद्ध, सोने से बनी किसी कीमती वस्तु के समान, महान पुरुष के चिह्नों को धारण किए हुए, आकाश में विचरण कर रहे थे। कदंब का फूल लिए हुए,
मैंने इसे विपस्सी को अर्पित किया। (1-2) [3199-3200]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [3201]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3202]

इस प्रकार पूज्य कदंबपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कदंबपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

364. {367.}2166 उद्दालपुप्पिया2167

अनाथ नामक सम्बुद्ध गंगा नदी के तट पर निवास करते थे।2168

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2163 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2164 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2165 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2166 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें और भी बहुत कुछ है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

2167 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2168 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

सुनहरी बौछार [फूलों] को लेते हुए
मैंने अजेय की पूजा की। (1) [3203]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [3204]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3205]

इस प्रकार पूज्य उद्दालपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उद्दालपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

365. {368.}2170 एककम्पकपुप्पहिया2171

उपसंत2172 नामक सम्बुद्ध पर्वत की ढलान पर निवास कर रहे थे। वे एक चंपक [फूल] लिए हुए थे।
मैंने परम पुरुष से संपर्क किया। (1) [3206]

प्रसन्नता से, हृदय में आनंद लिए, इसे दोनों हाथों से ग्रहण करते हुए।
मैंने अजेय की पूजा की,
अतुलनीय पाचेका -ऋषि। (2) [3207===

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [3208]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

2169 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को संदर्भित करता है।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 2170 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

2171 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2172 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2173 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3209]

इस प्रकार पूज्य एकाचमपकपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकाकाम्पाकापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

366. {369.}2174 तिमिरापुप्पिया2175

चंदाभागा नदी के किनारे मैं धारा के साथ बह रहा था।
मैंने निष्कलंक बुद्ध को देखा।
खिले हुए राजसी साल के पेड़ की तरह। (1) [3210]

मन में प्रसन्नता लिए, तिमिरा का फूल लेकर।
परम पच्चेका ऋषि को,
मैं इसे [उस बुद्ध के] सिर पर बिखेर देता हूँ। (2) [3211]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [3212]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3213]

इस प्रकार पूज्य तिमिरपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिमिरपुफिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

367. {370.}2176 Salaḷapupphiya2177

चंदाभागा नदी के किनारे
उस समय मैं किन्नरा 2178 था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2174 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2175 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2176 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2177 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2178 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या खमीर रहित भोजन के रूप में।

और फिर मैंने देवताओं के ईश्वर को देखा,
पुरुषों का बैल, इधर-उधर चलता हुआ। (1) [3214]

मैंने एक सालला फूल तोड़कर बुद्ध को भेंट किया।
महान नायक, [बुद्ध] ने सूंघा
[वह] दिव्य सुगंधित फूल.2179 (2) [3215]

उन्हें संबुद्ध के रूप में स्वीकार करना

विपस्सी, विश्व के नेता,
महान नायक, [बुद्ध] ने सूंघा, मेरी इच्छा के प्रति सचेत होकर।2180 (3) [3216]

प्रसन्नता से भरे हृदय से मैंने उनका आदर किया, जो दो पैरों पर चलने वाले सर्वश्रेष्ठ प्राणी थे। दोनों हाथों को जोड़कर मैंने उनकी पूजा की।
मैं फिर से पहाड़ पर चढ़ गया। (4) [3217]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (5) [3218]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [3219]

इस प्रकार पूज्य सलापुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सलापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

समीक्षा:

मंदारव और केकखारु, भीसा, केसरपुप्पिया, अंकोलक और कदंबी, उद्दालि, एकामपाका, तिमिरा, सलसा भी:
और ठीक चालीस श्लोक।

मंदारपुप्पिया 2182 अध्याय, सैंतीसवाँ

केक या जंकेट (PSI: सिंह. रोटिया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई खाद्य पदार्थ है।

2179 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
2180 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
2181 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
2182 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

बोधिवन्दक अध्याय, अड़तीसवाँ

---

368. {371.}2183 बोधिवन्दक2184

मैंने एक हरा पाटली 2185 पेड़ देखा,
धरती में उगने वाला पैर-जलपायक।2186
दृढ़तापूर्वक 2187 अपने हाथों को दबाते हुए,
मैंने उस पाटली वृक्ष की पूजा की। (1) [3220]

हाथों को जोड़कर, श्रद्धा से अपने मन को भर कर, भीतर और बाहर दोनों ओर से शुद्ध होकर,
मैंने उस पाटली वृक्ष की पूजा की।
मानो 2190 से पहले संबुद्ध, पूर्णतः मुक्त, निष्कलंक, 2191
विश्व द्वारा सम्मानित विपस्सी
करुणा और ज्ञान का सागर। (2-3) [3221-3222]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस बोधि वृक्ष की पूजा की थी, और मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का सामना नहीं करना पड़ा।
यह उपासना का फल है। (4) [3223]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3224]

इस प्रकार पूज्य बोधिवन्दक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बोधिवन्दक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2183 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2184 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2185 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2186 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2187 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

2188 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

2189 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

2190 lit., "गया"

2191 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

---

369. {372.}2192 पाटलिपुप्फिया2193

विपस्सी नामक भगवान,
स्वयं-एक हो गया, प्रमुख व्यक्ति, सूर्य, विजेता, तब अपने सभी छात्रों से घिरा हुआ प्रवेश किया।(1) [3225]

उस समय मेरी गोद में तीन ताजे पाटली फूल रखे गए थे। सिर धोने की इच्छा से मैं चला गया।
नदी [किनारे] स्नान स्थल.2195 (2) [3226]

बंधुमती से बाहर निकलते हुए,
मैंने विश्व के नेता को देखा, नीले जल लिली की तरह चमकीला, अग्नि-वेदी की तरह प्रज्वलित, बाघ बैल की तरह उत्कृष्ट,
एक सुसंस्कृत शेर की तरह, भिक्षुओं के आगे-आगे यात्रा करते हुए,
भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित। (3-4) [3227-3228]

उसमें प्रसन्न होकर, सुप्रसिद्ध [बुद्ध], अपवित्रता के दाग को धोते हुए,2197 उन तीन फूलों को लेकर मैं
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की पूजा की। (5) [3229]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (6) [3230]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [3231]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2192 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2193 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

2194 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2195 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2196 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

2197 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

इस प्रकार पूज्य पाटलिपुप्फिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पाटलिपुप्फिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

370. {373.}2198 तिनुप्पलमलिया2199

चंदाभागा नदी के किनारे पर,
उस समय मेरा नाम मंकी2200 था।
मैंने स्टेनलेस बुद्ध को देखा [जो]
पहाड़ की ढलान पर बैठा था। (1) [3232]

मैं उन्हें देखकर मंत्रमुग्ध हो गया, वे चारों दिशाओं में प्रकाशमान थे, मानो कोई भव्य साल का वृक्ष खिला हुआ हो।
महान और छोटे चिह्न धारण करना.2201 (2) [3233]

प्रसन्नता से, परमानंदित हृदय से और आनंद से भरे मन से, मैंने बुद्ध के सिर पर अर्पण किया।
तीन [सुंदर] नीले कमल के फूल। (3) [3234]

उन फूलों को अर्पित करने के बाद
परम आदर की भावना रखते हुए, महान ऋषि फुस्सा [बुद्ध] के प्रति श्रद्धा का भाव रखते हुए।
मैं [वहाँ से] उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (4) [3235]

वहां से 2203 नंबर पर झुककर आगे बढ़ रहा है।
एकदम स्पष्ट मन से मैं एक पहाड़ पर उतरा।
[और] मैंने अपने जीवन का अंत प्राप्त कर लिया। (5) [3236]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,2204

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2198 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2199 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

2200 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2201 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
2202 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
2203 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
2204 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

मैं तब तावतिंसा गया। (6) [3237]

और [उसके बाद,] तीन सौ बार मैंने देवताओं के [जगत] पर शासन किया।
और [इसके अलावा] पाँच सौ बार
मैं वह राजा था जिसने पहिया घुमाया। (7) [3238]

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस फूल से पूजा की ।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (8) [3239]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [3240]

इस प्रकार पूज्य तिनुप्पलामालिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिनुप्पलामालिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

371. {374.}2205 Paṭṭipupphiya2206

जब सम्बुद्ध, महान ऋषि पद्ममुत्तरा का निधन हुआ, 2207
सभी लोग एक साथ आए;
वे [उसके] शव को ले जा रहे हैं।2208 (1) [3241]

जब शव को हटाया जा रहा था, जब ढोल बज रहे थे,2209 मैं खुश था, मेरे दिल में आनंद था,
मैंने 2210 [एक] लाल लोध फूल की पेशकश की। (2) [3242]

उस पुष्प पूजा के बाद से एक लाख युगों में ,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2205 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2206 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2207 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2208 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
2209 शाब्दिक रूप से, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
2210 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
अवशेषों की पूजा का फल.2211 (3) [3243]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3244]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [3245]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [3246]

इस प्रकार पूज्य पट्टिपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पट्टिपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

372. {375.}2212 सत्तपनीय2213

विश्व के नेता, सुमना नामक सम्बुद्ध का जन्म हुआ। मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद का संचार हुआ।
मैंने 2214 रुक-अट्टाना फूल चढ़ाए। (1) [3247]

जब से मैंने 2215 रुक-अत्तना अर्पित किए हैं, तब से लेकर अब तक के एक लाख युगों में ,
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
रुक-अट्टन-पूजा का फल . (2) [3248]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

2211 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2212 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2213 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2214 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2215 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3249]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [3250]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3251]

इस प्रकार पूज्य सत्तपण्णिय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सत्तपण्णीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

373. {376.}2216 गंधमुठिया2217

जब एक स्तूप2218 का निर्माण हो रहा था, तब विभिन्न सुगंध2219 एकत्रित की गईं। प्रसन्नता से, मेरे हृदय में आनंद था।
मैंने 2220 को मुट्ठी भर धूप दी। (1) [3252]

एक लाख युगों में
जब से मैंने उस स्तूप की पूजा की है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है:
यह स्तूप -पूजा का फल है । (2) [3253]

बुद्ध की उपस्थिति में मेरा होना2222
यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3254]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2216 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2217 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2218 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2219 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2220 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

2221 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

2222 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [3255]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3256]

इस प्रकार पूज्य गंधमुट्ठिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

गंधमुट्ठिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

374. {377.}2223 सीतापूजक2224

जब भगवान बुद्ध का देहांत हुआ2225 — [वह] जिन्हें “परम कमल”2226 कहा जाता है — जब स्तूप खड़ा किया गया था,
मैंने इसे एक साल का फूल भेंट किया। (1) [3257]

उस पुष्प पूजा के बाद से एक लाख युगों में ,
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह स्तूप -पूजा का फल है । (2) [3258]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3259]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [3260]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2223 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2224 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

2225 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2226 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2227 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3261]

इस प्रकार पूज्य चितपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

चितपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

375. {378.}2228 सुमनतालवन्तिया2229

मैंने भगवान सिद्धार्थ को चमेली के फूलों से ढका हुआ ताड़ का पंखा दिया, [और]

इसे महान प्रसिद्धि वाले के लिए वहन किया। (1) [3262]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने तब वह ताड़ के पत्ते का पंखा उसे दे दिया।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह ताड़ के पत्तों का फल है। (2) [3263]

बुद्ध की उपस्थिति में मेरा होना2231
यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3264]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [3265]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3266]

इस प्रकार पूज्य सुमनतालवन्तीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2228 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2229 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2230 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2231 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

सुमनतालवन्तीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

376. {379.}2232 सुमनदामादायका2233

चमेली की माला बनाकर मैं उसे लेकर आगे खड़ी हो गई।

भगवान सिद्धार्थ के बारे में,
अच्छी तरह से स्नान किया हुआ, तपस्वी.2234 (1) [3267]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने वह [चमेली की] माला धारण की, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला:
चमेली ले जाने में फल। (2) [3268]

बुद्ध की उपस्थिति में मेरा होना2235
यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3269]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [3270]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3271]

इस प्रकार पूज्य सुमनदामदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुमनदामदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2232 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2233 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2234 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2235 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

377. {380.}2236 कसुमरिफलदायका2237

मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, पुरुषों का बैल, पहाड़ की ढलान पर बैठा हुआ था।

डिनर-प्लेट ट्री की तरह चमक रहा है।2238 (1) [3272]

प्रसन्न, हृदय में आनंद लिए, हाथों को सिर पर जोड़कर, फल इकट्ठा करते हुए ,
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को दे दिया। (2) [3273]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने वह फल [बुद्ध को] दे दिया, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ:
फल देने का फल यही है। (3) [3274]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3275]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [3276]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [3277]

इस प्रकार पूज्य कासुमारीफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कासुमारीफलदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

समीक्षा:

बोधि और पाटलिपुप्पी,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2236 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2237 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
2238 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2239 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

उप्पलि, सत्तपनिय, गंधमुथि और सीताका, ताल, सुमनदमका,

और कासुमारीफला भी:
साठ छंदों से एक कम।

बोधिवन्दक अध्याय, अड़तीसवाँ

अवन्तफल अध्याय, उनतीसवाँ

378. {381.}2240 अवनफलदायक2241

हे भगवान, सौ किरणों वाले, स्वयं स्वरूपित, अजेय, एकांतप्रिय, संबुद्ध,
भोजन की तलाश में निकले। (1) [3278]

हाथ में फल लिए हुए, मैंने पुरुषों के उस श्रेष्ठ बैल को आते देखा। मैं प्रसन्न और आनंदित था।
मैंने उसे डंठल हटाकर फल दिए। (2) [3279]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने [उसे] वह फल [उस समय] दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (3) [3280]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3281]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2240 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2241 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

2242 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2243 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [3282]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [3283]

इस प्रकार पूज्य अवन्तफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अवन्तफलदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

379. {382.}2244 लबुजफलदायका2245

शहर में, बंधुमती,
मैंने तब एक आश्रम में काम किया।2246
मैंने निष्कलंक बुद्ध को देखा।
[जो] आकाश में यात्रा कर रहा था। (1) [3284]

मैंने ब्रेडफ्रूट2247 [वृक्ष] का फल लेकर उसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को अर्पित किया। आकाश में विराजमान, शांत,
महान ख्यातिवान ने इसे स्वीकार किया। (2) [3285]

बुद्ध को वह फल अर्पित करने के बाद, अत्यंत निर्मल मन से, जो मेरे लिए आनंद का स्रोत था और इस संसार में सुख लाता था, मुझे अपार आनंद और असीम, परम सुख प्राप्त हुआ।
एक रत्न 2248 वास्तव में इसके लिए निर्मित किया गया था
[मैं,] यहाँ-वहाँ पुनर्जन्म लेता रहता हूँ।2249 (3-4) [3286-3287]2250

पिछले इक्यावन युगों में

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2244 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2245 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
2246 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2247 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

2248 शाब्दिक रूप से, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
2249 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
2250 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

मैंने उस समय [बुद्ध को] फल दिए थे, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (5) [3288]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [3289]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [3290]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [3291]

इस प्रकार पूज्य लबुजफलदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

लाबुजाफलदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

380. {383.}2251 उदंबरफलदायक2252

परम पुरुष विनता नदी के तट पर निवास करते थे।
मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
शांत व्यक्ति,2253 बहुत संयमित व्यक्ति.2254 (1) [3292]

मेरा मन उसमें आनंद से भर गया है, जो अशुद्धता के दाग को धोता है, 2255 उदुंबरा 2256 फल एकत्रित करता है
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को दे दिया। (2) [3293]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2251 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2252 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
2253 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2254 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी भाग को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2255 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

2256 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने [बुद्ध को] फल दिए थे [उस समय], मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ है:
फल देने का फल यही है। (3) [3294]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3295]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [3296]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [3297]

इस प्रकार पूज्य उदंबरफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उदंबरफलदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

381. {384.}2257 पिलक्खफलदायका2258

जंगल में बुद्ध को देखना,2259
हे महान यशस्वी अत्थादस्सी, मैं प्रसन्न हूं, मेरे हृदय में आनंद है।
मैंने उसे लहरदार पत्तों वाला अंजीर 2260 फल दिया। (1) [3298]

बुद्ध को फल देने के बाद से अठारह सौ युगों में, मुझे कोई पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
फल देने का फल यही है। (2) [3299]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2257 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2258 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2259 कुम्मासा , संस्कृतः कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2260 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3300]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [3301]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3302]

इस प्रकार पूज्य पिलक्खफलदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पिलाक्खफलदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

382. {385.}2261 चरणफलदायका2262

मैंने उस समय स्वर्ण रंग के संबुद्ध, बलि प्राप्तकर्ता को 2263 फल दिए थे ।
जो सड़क पर जा रहा था। (1) [3303]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने वह फल [बुद्ध को] दे दिया, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ:
फल देने का फल यही है। (2) [3304]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [3305]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2261 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2262 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2263 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [3306]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [3307]

इस प्रकार पूज्य फारुसफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

फ़ारुसफलदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

383. {386.}2264 वल्लिफलदायक2265

उस समय सभी लोग एक साथ जंगल में गए थे।
वहाँ जंगली रूप से उगने वाले फलों की तलाश में,
उन्होंने उस समय ऐसा फल प्राप्त किया। (1) [3308]

मैंने वहाँ सम्बुद्ध, स्वयंभू स्वरूप, अजेय को देखा। मैं प्रसन्न था, मेरे हृदय में आनंद व्याप्त था।
मैंने उसे कुछ वल्ली 2266 फल दिए। (2) [3309]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय [बुद्ध] को वह फल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (3) [3310]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3311]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [3312]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2264 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2265 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2266 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [3313]

इस प्रकार पूज्य वल्लिफलदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वल्लिफलदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

384. {387.}2267 कदलिफलदायक2268

मैंने विश्व के नेता को देखा, जो खाने की थाली जैसे पेड़ की तरह चमक रहा था, 2269 पंद्रहवें दिन के चंद्रमा की तरह, 2270
दीपकों के वृक्ष की तरह प्रज्वलित। (1) [3314]

मैंने कुछ केले के फल इकट्ठा किए और फिर उन्हें शिक्षक को दे दिया।
मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।
उनकी पूजा करने के बाद, मैं चला गया। (2) [3315]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय [बुद्ध] को वह फल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (3) [3316]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3317]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [3318]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2267 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2268 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2269 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2270 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [3319]

इस प्रकार पूज्य कदलीफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कदलीफलदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

385. {388.}2271 पणासफलदायक2272

उस समय हिमालय में अज्जुन नामक सम्बुद्ध निवास करते थे।
उन्हें सुचारु आचरण का वरदान प्राप्त था।
[और] ध्यान में कुशल.2274 (1) [3320]

पानी के घड़े के आकार का जीवजीवका 2275 जक 2276 लेकर , 2277 [और] उसे पत्तों के पंखे पर रखकर,
मैंने इसे शिक्षक को दे दिया। (2) [3321]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय [बुद्ध] को वह फल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (3) [3322]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [3323]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2271 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2272 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2273 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2274 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
2275 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
2276 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
2277 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [3324]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [3325]

इस प्रकार पूज्य पनासाफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पनासाफलदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

386. {389.}2278 सोनाकोटिविसा2279

जब विपस्सी की व्यवस्था2280 उत्पन्न हुई, तो मैंने राज नगरी बंधुमा में एक गुफा2281 बनवाई।

भिक्षुओं के लिए 2282 चार दिशाओं में। (1) [3326]

गुफा के फर्श को कालीनों से ढककर, मैंने इसे समर्पित किया।
मेरे हृदय में आनंद और उल्लास का संचार हो रहा है।
तब मैंने यह आकांक्षा व्यक्त की: (2) [3327]

यदि मैं किसी संबुद्ध को प्रसन्न करूँ
और संसार का त्याग करने के लिए,2285
मुझे परम शांति प्राप्त करनी चाहिए
और अतुलनीय निर्वाण।" (3) [3328]

उन अच्छे वंशों के कारण ही, नब्बे युगों का पुनर्जन्म लेकर, चाहे देवता के रूप में जन्म हो या मनुष्य के रूप में,
मैं चमक उठा, पुण्य कर्म करने वाला। (4) [3329]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2278 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2279 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2280 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2281 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
2282 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
2283 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
2284 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
2285 लिट., "गया"

उस कर्म के शेष भाग के रूप में, इस अंतिम अस्तित्व में,
मैं इकलौते बेटे के रूप में पैदा हुआ था।
कैम्पा के सबसे प्रमुख करोड़पति का। (5) [3330]

यह सुनकर कि मेरा जन्म हुआ था,2286
मेरे पिता की यही इच्छा थी: "मैं इस [युवक] लड़के को यह दे रहा हूँ।"
पूरे दो सौ मिलियन।"2287 (6) [3331]

मेरे दोनों पैरों के तलवों पर चार उंगल चौड़े बाल उग आए थे।
यह छूने में महीन और मुलायम था।

सुंदर, बिल्कुल रुई की तरह।2288 (7) [3332]

अतीत में नब्बे युगों तक,
और इस युग में, मुझे अभी तक यह पता नहीं चला है कि मेरे पैर कहाँ रखे हैं।
किसी भी ऐसी जमीन पर जिस पर कालीन न हो। (8) [3333]

संबुद्ध मुझसे प्रसन्न हुए; मैं बेघर होकर निकल पड़ा।
मैंने अरहंत पद प्राप्त कर लिया है;
शांत हो गया, मैं निर्वाण में हूँ।2289 (9) [3334]

सर्वज्ञानी द्वारा नियुक्त
"दृढ़ निश्चयी [भिक्षुओं] में सबसे आगे,"2290
मैं निष्कलंक हूँ, एक अरहंत हूँ।
छह ज्ञान-धारक, शक्तिशाली.2291 (10) [3335]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने तब [बुद्ध को] वह उपहार दिया था, और तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है:
गुफा देने का यही फल है। (11) [3336]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

2286 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
2287 शाब्दिक रूप से, "गिर गया"
2288 शाब्दिक रूप से, "योग्य"
2289 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
2290 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
2291 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [3337]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (13) [3338]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) [3339]

सोना कोटिविसा थेरा
भिक्षुओं की सभा के सामने,
महान अनोटट्टा झील पर प्रश्न पूछे जा रहे हैं [और फिर] उनके उत्तर दिए जा रहे हैं। [3340]2292

इस प्रकार पूज्य सोनकोटिवीसा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सोनकोटिवीसा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

387. {390.} पिछले कर्मों के चिथड़े 2293

अनोटट्टा नामक झील के पास, सुंदर समतल चट्टानी भूमि पर,
जहां विभिन्न प्रकार के रत्न चमकते थे
और विभिन्न सुगंधों से जंगल भर गए, (1) [3341]

विधानसभा से घिरा हुआ 2294
भिक्षुओं के बीच, विश्व के नेता ने वहाँ बैठे हुए [तब] समझाया
उसके द्वारा किए गए पूर्ववर्ती कार्य2295: (2) [3342]

हे भिक्षुओं, मुझसे सुनो, मेरे द्वारा पूर्व में किए गए कर्मों और उन कर्मों के परिणामों के बारे में।

2292 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2293 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें और भी बहुत कुछ है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

2294 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2295 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

स्वयं बुद्ध में परिपक्व.2296 (3) [3343]

मेरे अन्य पूर्व जन्मों में से
मैं मुनाली नाम का एक बदतमीज़ लड़का था।
मैंने सरभू, 2297 के बारे में झूठ बोला था।

एक निर्दोष अकेला बुद्ध। (4) [3344]

उस कर्म के फलस्वरूप,
मैंने बहुत समय तक नरक के चक्कर लगाए।2298
मैंने पीड़ा का अनुभव किया2299
कई हज़ार वर्षों से। (5) [3345]

इसके अंतिम कर्मफल के रूप में, मेरे इस अंतिम जन्म में,
मुझे [कुछ घृणित] निंदा का सामना करना पड़ा
सुंदरिका से संबंधित.2300 (6) [3346]

मैं नंदा था, एक अनुयायी।
बुद्ध सब्बाभिभु के। मेरा पुनर्जन्म नरक में हुआ था।
मैंने उसकी बदनामी करने के बहुत समय बाद तक। (7) [3347]

नरक में मेरा लंबा पुनर्जन्म दस हजार वर्षों तक चला। जब मुझे पुनः मनुष्य का जन्म प्राप्त हुआ,
मुझे भी बहुत बदनामी झेलनी पड़ी। (8) [3348]

उस कर्म के बचे हुए फल के कारण, लेडी सिंका ने मेरी बदनामी की।
लोगों के एक समूह के सामने
तथ्य में बिना किसी आधार के.2301 (9) [3349]

मैं एक विद्वान ब्राह्मण था, जिसकी सेवा की जाती थी, जिसे पूजा जाता था।
एक विशाल जंगल में, मैं पढ़ा रहा था
पांच सौ युवकों को मंत्र। (10) [3350]

उस स्थान पर ऋषि गीमा आए थे (2302)
जिनके पास अपार महाशक्तियाँ थीं।2303

2296 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
2297 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
2298 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
2299 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
2300 लीटर, "गया"
2301 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
2302 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
2303 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

उसे आते हुए देखकर,

मैंने उस निर्दोष [व्यक्ति] पर बदनामी का आरोप लगाया। (11) [3351]

मैंने तब अपने छात्रों से यह कहा था: "यह ऋषि सुखों में आनंदित होता है!"
जब मैंने वह घोषणा की, तो वहाँ के युवकों ने उसे दिल से ले लिया। (12) [3352]

फिर सभी युवक, [मेरे छात्र], कबीले-कबीले में भीख मांगते हुए, बहुत से लोगों को यह बात दोहराते रहे,2304
“यह ऋषि सुखों में आनंदित होता है!” (13) [3353]

उस कर्म के फलस्वरूप,
ये पाँच सौ भिक्षु [अब मेरे साथ] सभी को सुंदरीका से जुड़ी [कुछ बुरी] निंदा मिली।(14) [3354]

एक बार धन की लालसा में मैंने दूसरी माँ से पैदा हुए भाइयों की हत्या कर दी।2305
मैंने उन्हें पहाड़ी सड़क पर रख दिया
[और] उन्हें हिमस्खलन में कुचल दिया।2306 (15) [3355]

उस कर्म के फलस्वरूप, देवदत्त ने एक बड़ा पत्थर फेंका।
और उस चट्टान का एक टुकड़ा
[तब] मेरे पैर के अंगूठे को कुचल दिया।2307 (16) [3356]

एक समय की बात है, मैं एक छोटा लड़का था,
मुख्य मार्ग के किनारे खेलते हुए। एक अकेले बुद्ध को देखकर,
मैंने उस पर मिट्टी का एक ढेला फेंका। (17) [3357]

उस कर्म के फलस्वरूप, मेरे इस अंतिम जन्म में, देवदत्त ने कुछ हत्यारों को काम पर रखा।
मुझे मारने के लिए.2308 (18) [3358]

एक बार, जब मैं अपने हाथी पर सवार था,

2304 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

2305 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

2306 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

2307 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

2308 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

मैंने एक परम एकांत ऋषि को भिक्षा मांगते हुए देखा।

मैंने हाथी से उस पर हमला किया। (19) [3359]

उस कर्म के फलस्वरूप, हाथी नालागिरि का जन्म हुआ।
उत्तेजित, क्रूर, मेरी ओर बढ़ा
गिद्ध शिखर पर स्थित सुंदर शहर में।2309 (20) [3360]

मैं पथिव नामक राजा था; मैंने एक आदमी को खंजर से मार डाला।
उस कर्म के फलस्वरूप,
मैं लंबे समय तक नरक में जलता रहा। (21) [3361]

उस कर्म के बचे-खुचे फल के कारण मेरे पैर की त्वचा पूरी तरह से फट गई।
और इसकी वजह से मुझे काफी परेशानी हुई।
कर्म तो यूं ही गायब नहीं हो जाता! (22) [3362]

मैं एक समय मछुआरों के गांव में एक मछुआरे के लड़के के रूप में रहता था।
मछलियों को मरते हुए देखकर,
सुखद विचार मेरे मन में भर गए।2310 (23) [3363]

उस कर्म के फलस्वरूप,
मुझे एक बार सिरदर्द हुआ था;
सभी शाक्यनों की हत्या कर दी गई,2311
जब विदुड़भा ने उनकी हत्या की।2312 (24) [3364]

मैंने फुस्सा (बुद्ध) के पवित्र शब्दों और अनुयायियों की निंदा की, "घटिया अनाज चबाकर खाओ"।
तुम सब, और चावल मत खाना।" (25) [3365]

उस कर्म के फलस्वरूप,
मुझे तीन महीने तक अनाज खाना पड़ा, जब एक ब्राह्मण ने मुझे आमंत्रित किया।
मैं विभिन्न राज्यों में रहा। (26) [3366]

कुश्ती के दौरान,
एक पहलवान का बेटा, मैंने [लड़ाई] रोक दी;2313
उस कर्म के फलस्वरूप,
[एक बार] मुझे पीठ दर्द हुआ। (27) [3367]

2309 लिट., "एक फूल पर"
2310 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
2311 khiḍḍāratiyaÁ
2312 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
2313 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"

मैं एक [अभ्यास करने वाला] डॉक्टर था
और एक धनी व्यक्ति के पुत्र को शुद्ध किया;2314
उस कर्म के फलस्वरूप,
मुझे पेचिश हो गई। (28) [3368]

एक बार मैंने, ज्योतिपाला ने कहा
कासपा को, जो अच्छी तरह से चला गया है,
तो फिर यह गंजा आदमी कहाँ से जाग रहा है?
जागृति तक पहुँचना इतना कठिन क्यों है? (29) [3369]

उस कर्म के फलस्वरूप,
मैंने उरुवेला में छह साल तक घोर तपस्या की।
और फिर ज्ञानोदय प्राप्त किया। (30) [3370]

“उस मार्ग पर चलकर मुझे परम ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ,” [मैंने सोचा], “तो फिर मुझे किस मार्ग पर चलना चाहिए, जो मेरे पूर्व कर्मों से बाधित है? अच्छे और बुरे कर्मों को समाप्त करते हुए।”
और हर तरह की पीड़ा से बचना
दुःख, कष्ट और भावनाओं के प्रवाह से मुक्त,
मैं निर्वाण को प्राप्त करूँगा।” (31-32) [3371-72]

इस प्रकार उन्होंने भिक्षुओं की सभा के समक्ष सर्वशक्तिशाली विजयदाता, 2316 का वर्णन किया।
महान अनोटट्टा झील पर। (33) [3373]

इस प्रकार भगवान बुद्ध ने धर्म पर यह संक्षिप्त प्रवचन दिया, जिसमें उन्होंने अपने पूर्व आचरण का खुलासा किया, जिसे बुद्ध- उपदान के नाम से जाना जाता है, जिसका नाम "पूर्व कर्मों के चिथड़े" है।

“पूर्व कर्मों के चिथड़े” नामक बुद्ध- उपदान पूरा हो गया है।

समीक्षा:

अवंता और लबुजा भी, उदुंबरा और पिलक्खु, फारु, वल्ली और कदली, पनासा, कोटिविसका
और पूर्व कर्मों के वस्त्र, महान ऋषि की कथा: श्लोकों की संख्या 91
बुद्धिमान लोग ही इनकी गिनती करते हैं।

2314 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।
2315 शाब्दिक रूप से, “ पूजा ”
2316 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

अवन्तफल अध्याय, उनतीसवाँ

पिलिंडावच्छ अध्याय, चालीसवाँ

---

388. {391.}2317 पिलिंडावाच्चा2318

हंसवती नगर में,
मैं उस समय द्वारपाल था।2319 अबाधित,2320 असीम धन
घर में मेरे लिए ढेर लगा दिया गया था। (1) [3374]

भव्य महल में बैठकर, एकांत में बैठकर, मेरा मन अत्यंत प्रसन्न हो गया था।
मैंने उस समय इस प्रकार विचार किया: (2) [3375]

मैंने बहुत धन अर्जित किया है; मेरे पास एक समृद्ध हरम है।
पृथ्वी के स्वामी राजा आनंद, 2321
स्वयं ने मुझे आमंत्रित किया.2322 (3) [3376]

और अब इस बुद्ध का जन्म हुआ है, स्वतःस्फूर्त रूप से जन्मे ऋषि।
और यह सारी दौलत मेरे लिए ही मौजूद है;
मैं शिक्षक को उपहार दूंगा। (4) [3377]

राजसी राजकुमार, [जिनका नाम] पद्मा2326 था, ने विजेता के लिए शानदार उपहार दिए: शक्तिशाली2327 हाथी और पालकी

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2317 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
2318 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
2319 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
2320 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
2321 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
2322 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
2323 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
2324 शाब्दिक रूप से, "गया"
2325 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
2326 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
2327 शाब्दिक रूप से, "योग्य"

और बड़े2328 समर्थन2329 [उन्हें ऊपर रखने के लिए]। (5) [3378]

मैं भिक्षुओं को भी उपहार दूंगा।
अत्यंत उत्कृष्ट सद्गुण के साथ।2332
मैं ही उकसाने वाला बनूंगा2333
अन्य [चीजों] का जो अभी तक नहीं दी गई हैं।"2334 (6) [3379]

विभिन्न प्रकार के दान के बारे में विचार करना23352336
जिसका फल सुख है, मैंने 2337 एक आवश्यक उपहार जलाया, 2338
[जो] मेरे इरादों को पूरा करेगा: (7) [3380]

मैं आवश्यक सामग्री दान करूँगा।
असाधारण सद्गुण वाले भिक्षुओं के लिए।2340
मैं ही उकसाने वाला बनूंगा2341
अन्य [चीजों] का जो अभी तक नहीं दी गई हैं।"2342 (8) [3381]

टोकरी बनाने वालों के पास पहुँचते हुए,2343
मैंने एक ऐसा छाता बनाया जो टिकाऊ हो,2344
एक में एकजुट करना,
एक लाख छतरियाँ। (9) [3382]

मैंने इन्हें एक में समाहित कर दिया,
मैंने एक लाख कपड़े की पट्टियों को एक साथ मिलाकर एक पट्टी बनाई।
एक लाख भिक्षापात्र। (10ए-बी)2345 [3383]

2328 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए लैटिन शब्द "हजार" और "सौ" के संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

2329 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

2330 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

2331 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

2332 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा जा रहा है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

2333 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"

2334 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

2335 khiḍḍāratiyaÁ

2336 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

2337 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, “मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में”

2338 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।

2339 शाब्दिक रूप से, “ पूजा ”

2340 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

2341 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी

2342 pariḷāho

2343 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

2344 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)

2345 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

और छोटी चाकूएँ2346 [और] कुल्हाड़ीयाँ,2347
सुई 2348 [और] नाखून काटने वाले कटर 2349
उन्हें इसके लिए उपयुक्त बनाकर
उन्हें छाते के नीचे लटका दिया। (10सी-डी, 11ए-बी) [3384]

मैंने उसके लिए भी पंखे बनवाए थे, ताड़ के पत्तों से बने पंखे, मोर के पंख और याक की पूंछ से बने पंखे;
जल-छानने वाले,2354 तेल-कंटेनर.2355 (11सी-डी, 12ए-बी) [3385]

मैंने भी उसी के अनुरूप बनाया था।
सुई के डिब्बे 2356 [और] कंधे की पट्टियाँ 2357
साथ ही कमर के लिए गर्डल2358
और [भी] अच्छी तरह से निर्मित स्टूल.2359 (12सी-डी, 13ए-बी) [3386]

मैंने खाने के बर्तनों और दवाइयों से भरे तांबे के तेल के बर्तनों को भी ठीक किया।
छाते के नीचे की तरफ। (13बी-सी, 14ए-बी) [3387]

मैंने इन सभी चीजों से बर्तन भर दिए:
स्वीट-फ्लैग,2360 कस्कस घास,2361 मुलेठी,2362
काली मिर्च,2363 और काली मिर्च के दाने,2364
मायरोबालन2365 [और] अदरक2366 [भी]। (14सी-डी, 15ए-बी) [3388] मैंने भी ऐसा ही किया था, उसके लिए उपयुक्त,

---

2346 samādhikusalo ahaŋ

2347 iddhipādesu kovido

2348 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

2349 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है

2350 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

2351 mahābhisakkasaṅkāso

2352 dosavyādhitikicchako

2353 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

2354 दिट्ठिगण्ड°

2355 लोकापज्जोटो

2356 sanarāmarasakkato

2357 नारदिको

2358 लिट., “में”

2359 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।

2360 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”

2361 महास्सादंग

2362 महरसंग

2363 शाब्दिक रूप से, "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"

2364 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha

2365 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव

2366 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं

जूते [पैरों के लिए],2367 [और] सैंडल2368 [भी], तौलिए2369 [स्नान के बाद उपयोग करने के लिए],
[और] अच्छी तरह से निर्मित चलने वाली छड़ें.2370 (15सी-डी, 16ए-बी) [3389]

जड़ी-बूटियों और मलहमों को रखने के लिए नलियाँ2371,2372 कास्टिक की छड़ें,2373 सामान रखने के लिए बर्तन,2374 [ताले और उनकी चाबियाँ]2375 और चाबी के डिब्बे2376
पाँच रंगों के [कपड़े] से सिला हुआ। (16सी-डी, 17ए-बी) [3390]

मैंने उसी के लिए पट्टियाँ2377 और [साथ ही] धुएँ की नलियाँ2378, दीपक धारक2379 और पानी के पात्र2380 भी बनवाए थे।
और विकर की बुनी हुई टोकरियाँ।2381 (17सी-डी, 18ए-बी) [3391]

मैंने उसी के लिए चिमटी2382 [खींचने के लिए], कैंची2383 [काटने के लिए], दवाइयों के लिए थैले2384 भी बनवाए थे।
और कान के मैल को हटाने के उपकरण।2385 (18सी-डी, 19ए-बी) [3392]

मैंने भी उसी के अनुरूप एक छतरी बनवाई थी और उसे उसके नीचे लगा दिया था।
लंबी बेंचें2386 और साथ ही छोटी कुर्सियाँ2387
और चार [पैरों] से निर्मित सोफे2388।2389 (19सी-डी, 20ए-बी) [3393] मैंने भी इसी प्रकार बनवाए थे, उसके लिए उपयुक्त,

---

2367 शाब्दिक रूप से, "मेरी माँ का शरीर सुगंध से भरा हुआ था"

2368 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]

2369 या “शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना”

2370 लिट., “बहिर्वाहों का विनाश”

2371 या “जो बाहर गया था”: पब्बाजितो

2372 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।

2373 शाब्दिक रूप से, "यहाँ"

2374 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।

2375 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है।

2376 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"

2377 sampahaŋsitā

2378 भोट्टा , बीजेटीएस में इसे भेट्टा ("तोड़ने वाला") पढ़ा जाता है।

2379 chettā

2380 sotā

2381 pasaŋsitā

2382 akhilo

2383 visālo . BJTS इसे visallo (“दर्द से मुक्त”) पढ़ता है

2384 anīgho

2385 अकथानकथि , ilt. "नहीं कह रहा, 'क्यों'?"

2386 अनेजो

2387 विराजो

2388 खट्टा । बीजेटीएस इसे खंत (विनम्र) पढ़ता है।

2389 रीडिंग गंटा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस गंधा (“सुगंधित”)

ऊनी कुशन 2390 और सूती कुशन 2391
छोटी कुर्सियों के लिए बनाए गए कुशन
और बहुत अच्छी तरह से बने तकिए2392 [भी]; (20सी-डी, 21ए-बी) [3394]

मालिश करने वाले पत्थर2393 और मधुकोश,2394
और हाथों को गर्म करने के लिए तेल,2395
छोटे केस, 2396 तख्ते 2397 और सुइयां 2398 [भी],
और एक बिस्तर जिस पर कालीन बिछे हुए थे,2399 (21सी-डी, 22ए-बी) [3395]

रहने के स्थान 2400 और पैर पोंछने के तौलिए 2401
और कुर्सियों और बिस्तरों के लिए इस्तेमाल करने के लिए लकड़ियाँ,2402
टूथपिक्स2403 और [भी अच्छे] टूथ-स्टिक्स,2404
[और] सिर पर मलने के लिए सुगंध,2405 (22सी-डी, 23ए-बी) [3396]

आग जलाने के लिए लकड़ी2406 और पुआल से बनी कुर्सियाँ2407
भिक्षापात्रों को ढकने के लिए छोटी प्लेटें, 2408
पानी के लिए बनाए गए चम्मच,2409
चुन्नम [भंडारण] के लिए चांदी के गर्त, 2410 (23सी-डी, 24ए-बी) [3397]

झाडू2411 और पानी के जग2412 और इसी तरह बारिश के मौसम में पहनने के लिए कपड़े2413, बैठने पर खुजली से बचने के लिए ढँकने के लिए कपड़े2414

2390 रीडिंग वट्टा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस मेट्टा (“लव”)

2391 pakāsitā

2392 t'āretā

2393 में तारेटा ("क्रॉसर") के पीटीएस पुनरावृति के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ अत्थकारेता का पाठ किया गया है।

2394 k'āretā
2395 सम्पदालता , बीजेटीएस सम्पदालता
2396 पापेटा
2397 साहित्य , या "सहनकर्ता"
2398 में, BJTS के साथ kantā का पाठ किया गया है, जिसमें PTS में hantā की पुनरावृत्ति है , जिसे दोनों पाठ श्लोक में अगले शब्द के रूप में पढ़ते हैं।
2399 hantā
2400 रीडिंग ātāpī with BJTS for PTS tātâpi (“also the Protector”)
2401 t'āpaso , इससे पंक्ति में नौ अक्षर बनते हैं, जिसे "हत्यारा" को संक्षिप्त करके आठ अक्षरों के रूप में उच्चारित करने की आवश्यकता है।
"स्लेयर" में
2402 samacitto
2403 'समासामो , (बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस के अनुसार; इसका मूल रूप समासामो भी हो सकता है , “हमेशा एक जैसा”)
2404 a'sahāyo , शाब्दिक अर्थ, “मित्रहीन”
2405 दयासयो (और उसके बाद की व्याख्या) को पीटीएस दयासयो ("दयालुता के लिए प्रसिद्ध" "दयालुता-प्रसिद्ध") के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ना
2406 accherasanto
2407 अकुहो , शाब्दिक अर्थ, "धोखे से मुक्त" "ईमानदार"
2408 क'तावी , अर्थात् एक अरहंत, जिसने वह किया है जो किया जाना चाहिए
2409 i'sisattamo
2410 nittiṇṇakaṅkho
2411 nimmāno
2412 अप्पमेय्या , शाब्दिक अर्थ, "मापा नहीं जा सकता"
2413 अनुपमा , शाब्दिक अर्थ, "वह जिसके लिए कोई रूपक नहीं है"
2414 sabbavākyapathātīto , शाब्दिक अर्थ, “वह जिसके लिए सभी कथनों के मार्ग अतीत में हैं”

और2415 मध्यवर्ती वस्त्र2416 [भी], (24सी-डी, 25ए-बी) [3398]

मठवासी वस्त्र और ऊपरी वस्त्र,2417 मुँह और नाक साफ करने वाले,2418 प्रचुर मात्रा में नमक और खट्टा दलिया,2419
शहद2420 और खट्टा दूध पीने के लिए,2421 (25सी-डी, 26ए-बी) [3399]

धूप,2422 उबले हुए चावल के टुकड़े,2423 और चिथड़े,2424 चेहरे को पोंछने के लिए रुमाल:2425 जो कुछ भी दिया जाना चाहिए
जो शिक्षक के लिए उपयुक्त है, इन सभी चीजों को इकट्ठा करने के बाद।
मैं [राजा] आनंद के पास गया।2426
राजा के पास जाने के बाद,
सबसे महान ऋषि के पिता2427,2428
सिर झुकाकर प्रणाम करने के बाद,
मैंने उस समय उससे ये शब्द कहे थे: (26सी-डी, 27-28) [3400-3401]

[नायक:]2429
“हम साथ-साथ पैदा हुए और पले-बढ़े; हम दोनों एक ही सोच के हैं।”

2415 saccaneyyantago , शाब्दिक अर्थ, "वह जो सत्यों के अंत तक पहुँच चुका है जिसे समझा जाना है [या निर्देश दिया जाना है, नेतृत्व किया जाना है, मार्गदर्शन किया जाना है (नेति का क्रियापद)]"
2416 जिनो
2417 sattasāravare . BJTS इसे महल को संशोधित करने के रूप में व्याख्या करता है, लेकिन पाली मुझे इससे अधिक अस्पष्ट लगती है। v. [5887] और [6287] में बुद्ध-विशेषण के रूप में sattasāra° के प्रयोग की तुलना करें।
2418 रीडिंग akaṃ dhammakathaṃ ahaṃ with BJTS for PTS ahaŋ dhammakathaŋ ahaŋ ("मैं धम्म- प्रचारक मैं")
2419 nissāso , BJTS ग्लॉस māgē piṭataṭa heḷana vātaya ("वह हवा जिसे मैं नीचे फेंक देता हूँ/अपने बाहरी हिस्से में निकाल देता हूँ")
2420 रीडिंग sabbagandhe 'tiseti (= atisayati) BJTS के साथ PTS sabbagandho ti seti ("यह 'सभी अच्छी सुगंध' को नीचे रखता है")
") और इसके बाद बीजेटीएस सिंहली ग्लॉस
2421 BJTS में एटिसैंटो के लिए एडिसैंटो ("घोषणा") पढ़ा जाता है
2422 रीडिंग guṇatthavassa sabbaṃ taṃ phalaṃ tu paramambhūtaṃ with BJTS for PTS guṇatthavassapupphan tan phalan tu param abbhutaŋ ("वह फल जो सद्गुण के अर्थ में अत्यंत चमत्कारिक रूप से खिलता है" [?]), और BJTS ग्लॉस का अनुसरण किया: buddha guṇakitiyāge ē siyalu vipāka atiśaya vismayajanaka ya .
2423 पाठ का चौथा (अनुवाद में तीसरा) पद त्रुटिपूर्ण प्रतीत होता है। IPTS इसे rasaddhovisamāyuto पढ़ता है । "शुद्ध स्वाद से बंधा हुआ।" BJTS में लिखा है (टाइपोग्राफिकल त्रुटि?) saradvadhanisamāyuto (= rasad- hvanisaāmyuto ?)। दोनों ही मामलों में वैकल्पिक अनुवाद और भी अनिश्चित हैं। मैं BJTS के सिंहली अनुवाद का अनुवाद करता हूँ, mad- hura svaradhvani yukta vūyem (- mihirihaddha ättem), "मैं मधुर ध्वनि से बंध गया (मेरे पास एक मधुर ध्वनि है)"।
2424 रीडिंग khīṇe ayusi with BJTS for PTS khīṇ' ev' āyu pi ("जीवन भी निश्चित रूप से नष्ट हो जाता है")
2425 शाब्दिक रूप से, "आप सभी इसे सुनें" (द्वितीय व्यक्ति बहुवचन क्रिया)
2426 ya'sassī
2427 शाब्दिक रूप से, "इसलिए मैं खुश हूँ"
2428 दुःखान्तकरण बुद्ध , शाब्दिक अर्थ: "दुखों का अंत करने वाला बुद्ध"
2429 धम्मॅ ...
2430 जनायण , लिट., "मैंने उत्पादन किया"

और 2431 में हम दोनों समान रूप से अनुसरण करते हैं
[एक मार्ग] सुख और दुख के माध्यम से।"2432 (29) [3402]

[राजा:]
"हे शत्रुओं पर विजय पाने वाले2433, आपके मन में असंतोष2434 है।
अगर तुम कर सकते हो, योद्धा, तो तुम्हें ऐसा करना चाहिए
उस असंतोष को दूर करो। (30) [3403]

आपकी असंतुष्टि मेरी असंतुष्टि है;2435
हम दोनों एकमत हैं।2436
मेरा वाला 'बाहर' के रूप में जाना जाता है।
यदि आपका भी [निष्कासन कर दिया गया है]।" (31) [3404]

[नायक:]
“हे महान राजा, मेरे बारे में जान लो,2437 कि मेरा दुख2438 दूर करना कठिन है।
[यदि आप] सक्षम हैं2439 तो आपको चिल्लाना चाहिए2440 [यह]: (32) [3405]

एक2441 वरदान2442 आपके लिए देना कठिन है2443 [मुझे]।” [राजा:]
जब तक मुझे जीत मिलती रहेगी,
यदि यह आपके लिए उपयोगी हो, तो मैं अपने पूरे जीवन भर ऐसा करने के लिए तैयार हूँ।
बिना हिचकिचाए मैं 2445 [इसे] दे दूंगा।” (33) [3406]

[नायक:]
“हे राजा, आपने यह गर्जना की है, लेकिन बहुत अधिक गर्जना करना अनुचित होगा।” [राजा:]

2431 या “विधर्मी”: कुटित्थिये
2432 रीडिंग titthikākiṇṇe with BJTS for PTS titthikâkiṇṇo (“मैं प्रतिद्वंद्वियों से घिरा हुआ हूँ”)
2433 v'adanto , शाब्दिक अर्थ, “कहना,” “बताना”
2434 में पीटीएस varaŋ (“उत्कृष्ट”) के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ vadaṃ पढ़ा जा रहा है।
2435 पीटीएस °jinassa (“विजेता का”) के लिए BJTS (और PTS विकल्प) के साथ janassa का पाठ
2436 रीडिंग sarado va sasaṅko 'haṃ with BJTS for PTS saraŋ divasasanko 'haŋ (“मैं झील के लिए दिन में चंद्रमा हूँ” [?])
2437 शाब्दिक रूप से, “मैं था”
2438 शाब्दिक रूप से, "अच्छी तरह से चला गया व्यक्ति," सुगाताŋ
2439 y'athāsattivasena
2440 v'āgīso , “[मैं एक हूँ] वाणी पर महारत के साथ”
2441 में विमतिपट्टा को पीटीएस विमतिंग पट्टा के स्थान पर बीजेटीएस से पढ़ा गया है , हालांकि बाद वाला (व्याकरणिक दृष्टि से कुछ हद तक गलत) समान अर्थ व्यक्त करता है।
2442 apades' ahaṃ को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS apaniŋ (समान अर्थ, apaneti से) के लिए पढ़ना
2443 tiṇṇasamsārasāgaro
2444 BJTS mañcado (“Mañcada”) पढ़ता है
2445 BJTS में supaṭo (“Supaṭa”) पढ़ा जाता है
2446 यह पीटीएस शब्द bodhisammajako (“बोधिसम्मजक”) का बीजेटीएस पाठ है ।
2447 r'akkhasā = rākṣasā

आज मैं आपको इस रूप में पहचानूंगा
वह जो सभी चीजों में समर्थित है।"2448 (34) [3407]

[नायक:]
“[जब] तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं तुम्हें क्या देना चाहता हूँ, तो तुम हठपूर्वक2449 मुझे नीचे उतार दोगे।”2450 [राजा:]
“तुम्हें रोकने का क्या फायदा?2451
आपको अपनी इच्छा मुझे बतानी चाहिए! (35) [3408]

[नायक:]
“हे महान राजा, मैं यह चाहता हूँ,
उन्हें भोजन कराने के बारे में, संबुद्ध, सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, अतुलनीय बुद्ध;
मेरे जीवन को व्यर्थ न जाने दो!2452 (36) [3409]

[राजा:]
मैं तुम्हें एक अलग वरदान दूंगा:
जो इस दुनिया से चले गए हैं, उनसे विनती नहीं की जा सकती;2455
किसी को भी उस दिवंगत व्यक्ति के बारे में नहीं बताना चाहिए।
इच्छा पूरी करने वाले रत्न की तरह दिया जाए।2456 (37) [3410]

[नायक:]
“हे राजा, क्या आपने अभी-अभी यह नहीं कहा था कि2457
क्या तुम मुझे अपना जीवन भी दे दोगे?
जो इस दुनिया से चले गए हैं, वे देने के योग्य हैं।
एक व्यक्ति द्वारा [अपना] जीवन देकर।" (38) [3411]

[राजा:]
“महान नायक को अलग रखा जाता है;
उसे किसी को भी नहीं दिया जाना चाहिए।
बुद्ध की प्राप्ति का वादा मैं नहीं करता;
2460 असीमित धन [इसके बजाय] चुनें।" (39) [3412]

2448 पन्नागा
2449 mahānubhāvā isayo
2450 k'amaṇḍalu-dharā . यह विशेष पात्र गैर-बौद्ध तपस्वियों का एक विशिष्ट चिह्न है।
2451 jaṭā-bhāra-bharita , शाब्दिक अर्थ, “गुंथी हुई चोटी और भार/भारी बोझ से भरा हुआ”।
2452 युगामत्तं च पेक्खंत , शाब्दिक अर्थ, "हल की लंबाई तक आगे देखना," यानी, बस थोड़ा सा, अपनी निगाहें सामने की जमीन पर टिकाए रखना।
2453 गच्चन्ति , शाब्दिक अर्थ, "जाना"
2454 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ सयान च उपसम्पन्ना पढ़ना अयम च उपसम्पन्नो ("और यह आपूर्ति की गई है"
2455 पतिहिरस्स इदान फलां
2456 lohadoṇiŋ gahetvāna
2457 v'anamajjhe , शाब्दिक अर्थ, "जंगल के बीच में"
2458 PTS में apassitā पढ़ा जाता है , BJTS में avassitā पढ़ा जाता है ; ये शब्द समानार्थी हैं और एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जा सकते हैं।
2459 reading uggatejāna with BJTS for PTS uggatejana
2460 °saddena , शाब्दिक अर्थ, "ध्वनि के साथ"

[नायक:]
आइए किसी निष्कर्ष पर पहुँचें;

हम अदालत में इस पर सवाल उठाएंगे।
वे2461 उचित मार्ग घोषित करेंगे;2462
हम इस बारे में पूछताछ करेंगे। (40) [3413]

राजा को अपने कब्जे में लेने के बाद,
फिर मैं अदालत में गया। वहाँ, सभी न्यायाधीशों के सामने,2463
मैंने [उनसे तब] ये शब्द कहे: (41) [3414]

[नायक:]
"हे न्यायाधीशों, मेरी बात सुनो: राजा ने मुझे वरदान दिया है। बिना किसी अपवाद के।"
उसने अपना जीवन भी अर्पित कर दिया।2464 (42) [3415]

जब उन्होंने मुझे वह वरदान दिया, तो मैंने सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की कामना की।
बुद्ध ने मुझे भरपूर दान दिया है;
अन्यथा मैं संदेह से भरा हुआ हूँ।"2465 (43) [3416]

[न्यायाधीश:]
हम आपके और पृथ्वी की रक्षा करने वाले राजा के इन शब्दों को सुनेंगे। दोनों के शब्दों को सुनना...
हम आपके सभी संदेह दूर कर देंगे। (44) [3417]

हे राजा, क्या आपने इस व्यक्ति को सब कुछ, बिना किसी अपवाद के, पूर्ण रूप से दिया था?
[और] अपना जीवन भी अर्पित करोगे?" (45) [3418]

[राजा:]
"दुख में डूबे हुए,2468 उन्होंने एक अद्वितीय वरदान की प्रार्थना की। उन्हें इतना व्याकुल जानकर,2469
मैंने इसे पूरी तरह से दिया। (46) [3419]

2461 या "प्रशिक्षित:" विनीता

2462 appamaññāsu kovidā , अर्थात् "ईश्वरीय अवस्थाओं" (ब्रह्मविहारा) के अभ्यास में कुशल, अर्थात् प्रेम, करुणा, सहानुभूतिपूर्ण आनंद और समभाव।

2463 में abhilāsino शब्द को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS abhilābhino , "प्राप्त करना" के स्थान पर पढ़ा गया है।

2464 samayaŋ saŋviditvāna

2465 अतापी , शाब्दिक अर्थ, "जलना"

2466 saŋviggamānaso

2467 अगलुम , सिंह। अगिल, अगरु, अगुरु

2468 reading panasaṃ devagandhikaṃ with BJTS for PTS vansaṇḍe va gandhika� ("वन उपवन में सुगंधित")

2469 या "हाथी के ललाट लोब जितना बड़ा:" कुंभमट्टंग

[न्यायाधीश:]
"हे राजा, आप यहाँ पराजित हो चुके हैं;
जो इस दुनिया से चला गया है, उसे दे दिया जाना चाहिए।

दोनों के संदेह दूर हो गए हैं;
[इसमें] सही मार्ग पर दृढ़ रहो।"2470 (47) [3420]

[नायक/कथावाचक:]
राजा को उसके पद से हटा दिया गया
तब राजा ने न्यायाधीशों से ये शब्द कहे:
"मुझे भी ठीक लग रहा है, आपको भी वापस लौटना चाहिए।"
[उसे]; मैं फिर से बुद्ध को लाऊंगा।" (48) [3421]

[न्यायाधीश, नायक से:]
"अपने उद्देश्य की पूर्ति करने के बाद, दिवंगत आत्मा को भोजन कराने के बाद,
आपको संबुद्धा को 2473 लौटाना चाहिए
[महान] ख्याति के [राजा] आनंद को।" (49) [3422]

[नायक:]
न्यायाधीशों को सलाम करने के बाद
और राजा आनंद भी,2474, [तब] प्रसन्न होकर, आनंदित हुए।
मैं संबुद्ध के पास गया। (50) [3423]

जलप्रपात पार करने वाले, निष्कलंक संबुद्ध के पास पहुँचकर, सिर झुकाकर प्रणाम करने के बाद,
मैंने ये शब्द [उस समय उससे] कहे थे: (51) [3424]

"हे सुंदर आँखों वाले, अपनी सहमति दीजिए, जिससे मेरा हृदय प्रसन्न हो उठे; मेरे निवास स्थान की ओर आइए।"
एक लाख स्वामियों के साथ।"2475 (52) [3425]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता

2470 cittaŋ , शाब्दिक अर्थ, "विचार" या "मन"
2471 शाब्दिक रूप से, "ऐसा व्यक्ति बन गया है जो"
2472 शाब्दिक अर्थ, "अविचलित" "अविचलित"
2473 शाब्दिक रूप से, "अस्तित्व में आना"
2474 adantadamako का अर्थ या तो "अनियंत्रित को वश में करने वाला" या "अनियंत्रित को वश में करने वाला" हो सकता है; मैं हाइफ़न के साथ अस्पष्टता को खुला छोड़ देता हूँ, यहाँ "अनियंत्रित को वश में करने वाला" के लिए अपनी प्राथमिकता स्वीकार करता हूँ (जो कि BJTS का भी पाठ है, dametar पर RD देखें), और जप में उच्चारण की अनुशंसा करता हूँ जो यौगिक में पहले शब्द पर जोर और स्वर के माध्यम से इस बात पर जोर दे सकता है कि बुद्ध वह हैं जो अनियंत्रित/जंगली लोगों को वश में करते हैं।
2475 bodhento bodhapakkhiye , जिसे BJTS (37) जागृति या ज्ञानोदय के पहलुओं या गुणों के रूप में व्याख्यायित करता है- उल्लेख (बोध , यहाँ = बोधि , आरडी एसवी देखें)

आँखों से देखने वाले ने मेरी सोच को समझकर सहमति दी। (53) [3426]

शिक्षक को प्रणाम करने के बाद, यह समझते हुए कि उन्होंने सहमति दे दी है,

प्रसन्न, मेरे ह्रदय में परमानंद व्याप्त है।
मैं अपने निवास स्थान पर गया। (54) [3427]

मित्रों और मंत्रियों को एकत्रित करना
मैंने उनसे तब ये शब्द कहे थे: "मुझे वो चीज मिली है जो पाना बहुत मुश्किल है,
ठीक इच्छा पूरी करने वाले रत्न की तरह।" (55) [3428]

[मित्रों और मंत्रियों:]
"तो फिर हम उसकी उपासना किससे करेंगे?"
विक्टर2477 असीम है,2478
अतुलनीय, 2479 बेजोड़, 2480 हीरो, 2481
अमापनीय,2482 अद्वितीय।"2483 (56) [3429]

और इस प्रकार हमेशा एक जैसा ही,2484
बिना किसी दूसरे के,2485 पुरुषों का बैल.2486
ऐसी सेवा जो आपके लिए करना कठिन हो
बुद्ध के लिए उपयुक्त है। (57) [3430]

विभिन्न प्रकार के फूलों को मिलाकर हम एक पुष्प मंडप बना सकते हैं।2487
यही बात बुद्ध के लिए उपयुक्त है;
वहाँ सब कुछ होगा- पूजा ।" (58) [3431]

[नायक:]
मैंने वह मंडप बनाया [से]
नीले कमल, 2488 गुलाबी कमल, 2489

2476 ācāra-upacāraññū

2477 धम्मनुच्चवासंवरं (बीजेटीएस इसे धम्मनुच्चवी॰ पढ़ता है)

2478 pade padaŋ nikkhipantā , शाब्दिक अर्थ, "धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए [अपने पैर] सावधानीपूर्वक रखना"

2479 pade padaŋ nikkhipantā , शाब्दिक अर्थ, "धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए [अपने पैर] रखना"

2480 durūpansaṅkamā

2481 अप्पासद्दा

2482 रीडिंग यदा 'हं बीजेटीएस के साथ पीटीएस यवाहां के लिए , "जहाँ तक मैं..."

2483 munibhutā va , ie, silently

2484 रीडिंग desesi with BJTS for PTS desesi , "आप उपदेश देते हैं"

2485 nisāmetha

2486 लिट., "महान शिक्षण," सद्धम्मसवनं सुखं

2487 k'athaŋ vītisāretvā

2488, अर्थात् महापुरुष के शरीर पर स्थित बत्तीस शुभ चिह्न , जो यह संकेत देते हैं कि वह या तो एक
बुद्ध या फिर चक्र घुमाने वाला सम्राट।

2489 r'eading iddhiyā* with BJTS for PTS itthiyaÁ ("to a woman," sic!)*

जैस्मीन2490 और अतिमुत्तका 2491
चंपक2492 और आयरनवुड फूल.2493 (59) [3432]

मैंने एक लाख सीटें लगाईं, जिन पर छतरियों से छाया की व्यवस्था थी।
मेरे लिए आरक्षित सबसे नीची सीट,
शानदार था [और] सौ के लायक था। (60) [3433]

मैंने एक लाख कुर्सियाँ बिछाईं, जिन पर छतरियों से छाया की गई थी। खाना-पीना तैयार करने के बाद,
मैंने [शुरू करने का] समय घोषित किया। (61) [3434]

जब मैंने घोषणा की कि समय आ गया है, तो महान ऋषि पद्ममुत्तरा ने कहा,
[फिर] मेरे निवास पर पहुंचे
एक लाख स्वामियों के साथ। (62) [3435]

तब परम पुरुष एक लाख गुरुओं के साथ पुष्पमय मंच पर बैठ गए।2494
छतरी ऊपर रखी हुई है। (63) [3436]

उचित रूप2495 में और बिना किसी त्रुटि के, उस नेत्रपूर्ण व्यक्ति ने [तब] स्वीकार किया
एक लाख छतरियां,
[और] एक लाख सीटें भी। (64) [3437]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
मुझे पार कराने की इच्छा से,
महान ऋषि ने [उन बातों को] स्वीकार किया। (65) [3438]

प्रत्येक भिक्षु के लिए एक,2496
मैंने प्रत्येक को एक भिक्षापात्र भेंट किया।
उन्होंने अपने पिछले 2498 कटोरे नीचे रख दिए;
मैंने प्रत्येक के लिए एक कांस्य2499 कटोरा ले गया। (66) [3439]

सात रात और सात दिन बुद्ध

2490 k'osohitaŋ vatthaguyhaŋ , BJTS इसे kosohitavatthaguyhaŋ पढ़ता है
2491 k'aṇṇasote , "उसके श्रवण अंग पर"
2492 reading patamasi nalāṭantaṃ with BJTS for PTS paṭtimasanalāṭaŋ taŋ
2493 niṭṭhaŋ gantvā , शाब्दिक अर्थ, "निष्कर्ष पर पहुँचकर"
2494 सब्बे पत्त' अम्हा निब्बुतिन
2495 एकाटो , लिट., "एक के रूप में"
2496 शाब्दिक रूप से, "देने के बाद"
2497 reading gopānasīyo with BJTS for PTS gopānasī
2498 रीडिंग vasī with BJTS (and PTS alt.) for PTS vasiŋ

पुष्प मंडप में बैठा था। अनेक प्राणियों को जागृत करते हुए,
उन्होंने शिक्षण का पहिया घुमाया।2500 (67) [3440]

जब वह अपना उपदेश दे रहे थे, तब पुष्प मंडप के नीचे चौरासी हजार लोग उपस्थित थे।
शिक्षण में अंतर्दृष्टि प्राप्त की।2502 (68) [3441]

जब सातवां दिन आया, तब महान ऋषि पद्ममुत्तरा ने भीड़ से ये श्लोक कहे।
अपनी छाता-छाया वाली सीट से: (69) [3442]

[पदुमत्तरा बुद्ध:]
मैं इस आदमी के बारे में विस्तार से बताऊंगा।
जिसने मुझे बिना किसी कमी के यह [सर्वोत्तम] भेंट दी;
आप सब मेरी बात सुनो: (70) [3443]

हाथी, सैनिक, रथ, घोड़ा:
उसे चार गुना सेना मिलेगी;
वे लगातार उसकी प्रतीक्षा करेंगे2503:
यही सब कुछ का फल है - उपहार.2504 (71) [3444]

पालकी भी, जिन्हें जोड़ा गया है2505
हाथियों और घोड़ों को,
हमेशा 2506 उसके लिए उपलब्ध रहेगा:
यही सब उपहारों का फल है। (72) [3445]

और साठ हजार रथ, सभी अलंकृत और सुशोभित।
मैं इस [आदमी] का लगातार इंतजार करूंगा:
यही सब उपहारों का फल है। (73) [3446]

साठ हजार यंत्र2507 [और]

2500 हेतु , शाब्दिक अर्थ, कारण; मैं इन्हें आनिसंस (सिंह. अनुसस अतक लबमि) के रूप में समझने में बीजेटीएस की व्याख्या का अनुसरण करता हूँ । बीजेटीएस हेतु (जो शायद मेट्रिक कॉसा हो) के प्रयोग की व्याख्या इस प्रकार करता है: "उस अच्छे कर्म, यानी उस कर्म को कारण बनाना।" मैं यहाँ आठ को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) सर्वत्र पूजित, (2) अमृतमय भोजन, (3) सभी द्वारा समर्थित, (4) कोई भय नहीं, (5) कोई रोग नहीं, (6) दीर्घायु, (7) उत्तम त्वचा, (8) चुने हुए या वांछित निवास स्थान।

2501 पूजितो

2502 पीटीएस पतिथ भोसियन सब्बेसन के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ पतिठ होमी सब्बेसां पढ़ना

2503 शाब्दिक अर्थ, “होना,” “पाना”

2504 tā'so

2505 ā'vā'se patthite vase

2506 रीडिंग vasī with BJTS (and PTS alt.) for PTS vasiŋ
2507 pūgadhamme

अच्छी तरह से सजाए गए केतली-ढोल 2508
उसके लिए लगातार आवाज करता रहेगा:
यही सब उपहारों का फल है। (74) [3447]

और महिलाएं भी, सभी सजी-धजी, जिनकी संख्या छियासी हजार थी, विभिन्न प्रकार के वस्त्रों और आभूषणों से सजी हुई थीं।
रत्न जड़ित झुमके पहने हुए, (75) [3448]

लंबी पलकों, प्यारी मुस्कान 2509 और पतली कमर वाली, देखने में मनमोहक, 2510 इस [आदमी] की लगातार सेवा करती रहेगी:
यही सब उपहारों का फल है। (76) [3449]

वह तीस हजार युगों तक देवताओं की दुनिया में आनंदित रहेगा।
हजार बार देवताओं के स्वामी,
वह दैवीय शासन का प्रयोग करेगा। (77) [3450]

वह एक हजार बार ऐसा राजा बनेगा जो [कानून का] पहिया घुमाएगा, [और उसके पास] बहुत स्थानीय शासन होगा, गिनती में अनगिनत। (78) [3451]

जबकि वह, अच्छे कर्मों से संपन्न,2511
देवताओं के लोक में निवास करते हुए, एक रत्न-छतरी ले जाई जाएगी
उसके लिए देवताओं की दुनिया के चारों ओर। (79) [3452]

जब भी उसे छाया की आवश्यकता हो,2512
इस व्यक्ति की इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए, कपड़े और फूलों से बनी एक छतरी,2513
उसे लगातार छाया प्रदान करेगा। (80) [3453]

अपने उत्तम मूल के कारण देवताओं के लोक से गिरकर,
उसके कर्मों के अनुसार,2514
वह ब्रह्मा का रिश्तेदार होगा।2515 (81) [3454]

2508 lit., “देने के बाद”
2509 या, "उन आठ के अतिरिक्त"
2510 पटिसम्भिदा , अर्थात् (चार) विश्लेषणात्मक गुणों में निपुणता, अरहंतत्व का एक लक्षण।
2511 शाब्दिक अर्थ, "और"। यहाँ ' ca' दो अलग-अलग ānisaṃsas को एक में जोड़ता है, जिसे अंतिम पद में एकवचन सर्वनाम etaŋ से संदर्भित किया गया है।
2512 sabbavositavosāno , शाब्दिक अर्थ, "वह व्यक्ति जिसने सभी सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हों," "अरहंत होना"
2513 काताकिको , यानी, "अरिहंत होना"
2514 अनासावो , यानी, "अरिहंत होना"
2515 अठगोपनासि नाम

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (82) [3455]

भिक्षुओं की सभा में विराजमान, शाक्यों के श्रेष्ठ पुरुष गौतम।
उसे सर्वोच्च स्थान पर पहुंचा देगा
सब कुछ समझने का.2516 (83) [3456]

वह शिक्षक का अनुयायी होगा और उसका नाम पिलिंडावच्चा होगा।
उन्हें सभी देवताओं द्वारा सम्मानित किया जाएगा।
टाइटन्स2519 और संगीत-अप्सराएँ.2520 (84) [3457]

उन सभी के प्रिय होने के कारण,
बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियां, और इसी प्रकार आम लोग भी।
वह बिना किसी दोष के निवास करेगा।"2522 (85) [3458]

[नायक:]
कर्म ने एक लाख का फल दिया
[युगों बाद] ने मुझे यहाँ [इसका] फल दिखाया:
पूरी तरह से मुक्त, तीर की तरह तेज,
मैंने अपने दोषों को नष्ट कर दिया है। (86) [3459]

ओह! मेरे कर्मों का फल मुझे बहुत अच्छे से मिला।
अद्वितीय योग्यता क्षेत्र में।2523
उस स्थान पर वह कार्य करने के बाद2524
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है।2525 (87) [3460]

एक ऐसा व्यक्ति जिसने उत्कृष्ट भेंट दी,2526 जिसमें किसी चीज की कमी नहीं थी,

---

2516 रीडिंग vasī with BJTS (and PTS alt.) for PTS vasiŋ

2517 pūgadhamme

2518 thamhāni

2519 शाब्दिक रूप से, "देने के बाद"

2520 हेतु , शाब्दिक अर्थ, कारण; मैं बीजेटीएस का अनुसरण करते हुए इन्हें आनिसंस (सिंह. अनुसस पहक लबामि) के रूप में समझता हूँ। मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) प्रेम से अविचलित, (2) धनी, (3) जिसके वचन सुने जाते हैं, जिससे कोई अपराध नहीं होता, (4) मन अनियंत्रित नहीं, अविचलित, और (5) अरहंतत्व (निर्मल, आदरणीय, आज्ञाकारी, कर्तव्य पूर्ण, बुद्ध का निष्कलंक अनुयायी)।

2521 acalo homi mettāya

2522 अनुनाभोगवा

2523 adeyyavacano homi

2524 न धनसेमि यथा अहं
2525 में बीजेटीएस के अनुसार abhantù� mānasaù� mama (भंत = डगमगाना, डगमगाना, अस्थिर, अनियंत्रित गाड़ी के लिए प्रयुक्त) का पाठ पीटीएस के āgataŋ mānasaŋ mamaŋ (वैकल्पिक mama) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "मेरा मन आ गया है"। पीटीएस asantaŋ (शांति का अभाव, विचलित) को भी एक वैकल्पिक पाठ के रूप में देता है, जो āgataŋ से बेहतर होगा ।
2526 vimalo homi sāsane

शुरू से ही प्राथमिकता दी गई:2527
यह उस भेंट का फल है। (88) [3461]

बुद्ध 2528 के लिए छाते देना
[और] उत्कृष्ट सद्‌गुण वाले भिक्षु,2529
मुझे आठ परिणाम प्राप्त हुए, 2530
मेरे कर्म के अनुसार: (89) [3462]

मुझे 2531 ठंड [या] गर्मी के बारे में जानकारी नहीं है।
मैं गंदगी और धूल से मैला नहीं हूँ।
मैं सुरक्षित हूँ, उत्पीड़न से मुक्त हूँ,
[और] मुझे हर समय सम्मानित किया जाता है। (90) [3463]

मैं कोमल त्वचा वाला व्यक्ति हूँ,2537 मेरा मन हमेशा बहुत स्पष्ट रहता है,2538 और इस वर्तमान जन्म को छोड़कर,2539 जब मैं संसार में जन्म-मृत्यु का चक्र पूरा करता हूँ,2540
सभी अलंकरणों से सुसज्जित एक लाख छतरियाँ
मेरे सिर के ऊपर ले जाए जाते हैं,
परिणामस्वरूप2541 उस कर्म के। (91-92) [3464-3465]

इस जीवन में मुझे छाता धारण करने की कमी क्यों है? क्योंकि सभी कर्मों को करने से मैं
निर्वाण की छत्रछाया में.2545 (93) [3466]

2527 sagāravo
2528 sappaṭisso
2529 काताकिको , यानी, "अरिहंत होना"
2530 अनासावो , यानी, "अरिहंत होना"
2531 भिक्खु तन वन्दते , शाब्दिक अर्थ, "एक भिक्षु जिसकी पूजा की जाती है"
2532 paññapes' ahaŋ
2533 हेतु , शाब्दिक अर्थ, कारण; मैं बी.जे.टी.एस. का अनुसरण करते हुए इन्हें आनिसंस (सिंह. अनुसस पहक लबामि) समझता हूँ। मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) अच्छा जन्म, (2) अपार धन, (3) सर्वोपरि सफलता, (4) कंजूसी या लोभ का अभाव, (5) जादुई पालकी।

2534 ucce kule
2535 mahābhogo bhavāmi
2536 पीटीएस सब्बासंपट्टिको होमी को बीजेटीएस के साथ पढ़ना

2537 शाब्दिक अर्थ, “मुझे नहीं मिला”, “मुझे नहीं पता”, “मुझे अनुभव नहीं होता”
2538 मैकचेराŋ = मैकचेरियाŋ2
2539 उपतित्तति , शाब्दिक अर्थ, "वहाँ खड़ा है," "दृढ़ता से खड़ा हो जाता है"
2540 थेरो , “बुजुर्ग”
2541 सब्बाभिन्ना-बालापट्टो
2542 para-kiccatta-kiccāni , “वे कर्तव्य जो दूसरों द्वारा किए जाने हैं”। मैं इस संयुक्त वाक्य को पढ़ते समय BJTS की व्याख्या का अनुसरण करता हूँ; इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उसने अपने स्वयं के कर्तव्यों का पालन किया, जिसमें दूसरों की सेवा से संबंधित कर्तव्य भी शामिल हैं।
2543 पविसिं अभयं पुराण अर्थात निर्वाण।
2544 PTS seṭṭhan taŋ के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ seṭṭhattaṃ (शाब्दिक रूप से, "सर्वोत्तमता") का पाठ
2545 कैरेत्वा (बीजेटीएस पढ़ता है करित्वा) कैराना नाना

दिवंगत व्यक्ति के लिए कपड़े देना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2546
मुझे आठ परिणाम प्राप्त हुए, 2547
मेरे कर्म के अनुसार: (94) [3467]

जैसे ही मैं दुनिया में पुनर्जन्म लेता हूँ,2548
मेरा शरीर बेदाग है, सुनहरे रंग का, सुंदर।
भव्यता से संपन्न, और चिकना.2550 (95) [3468]

एक लाख कपड़े की पट्टियाँ, सफेद, पीली और लाल रंग की।
मेरे सिर के ऊपर ले जाए जाते हैं:
यही वस्त्र देने का फल है। (96) [3469]

रेशमी कपड़ा2551 और ऊनी कंबल2552 भी,
खोमा और सूती कपड़ा:2553
मुझे ये हर जगह मिल रहे हैं।
परिणामस्वरूप2554 [उन्हें देने के].2555 (97) [3470]

दिवंगत आत्मा के लिए कटोरे भेंट करना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2556
मुझे दस परिणाम प्राप्त हुए,2557
मेरे कर्म के अनुसार: (98) [3471]

मैं हमेशा खाना खाता रहता हूँ
सोने की थालियाँ और क्रिस्टल की थालियाँ, 2558
चांदी से बनी प्लेटें भी
[और] प्लेटें जो माणिक से बनी हैं। (99) [3472]

मैं सुरक्षित हूँ, उत्पीड़न से मुक्त हूँ, उत्पीड़न से मुक्त हूँ।

2546 रीडिंग dāruṇena damenti te with BJTS for PTS dārune na damenti te , “They do not tame the cruel ones.”
2547 reading na h'evaṃ with BJTS for PTS na heva
2548 adaṇḍena
2549 अ'सत्तेना
2550 उत्तम महिला
2551 रीडिंग vaṇṇe kittento with BJTS for PTS vaṇṇaŋ kittento , “प्रशंसा करना सद्गुण”
2552 रीडिंग ekapañhaṃ with BJTS for PTS ekapañhe , “एकल प्रश्न”
2553 सारथी । सारथी , कोचमैन या सारथी, घोड़ों के प्रशिक्षक को भी दर्शाता है, जो घोड़ों को नियंत्रण में रखता है।
2554 s'u'vimiuttā
2555 अनासावा
2556 निब्बुता , शाब्दिक अर्थ, "बुझा हुआ," "ठंडा," अर्थात् निर्वाण में।
2557 उपाधिक्खये , अर्थात्, "पुनर्जन्म के आधार के विनाश में।" उपाधि (पुनर्जन्म से आसक्ति, पुनर्जन्म का कारण, निर्वाण में बाधा) को उपाधियों (बहुवचन) की विभिन्न सूचियों में वर्गीकृत किया गया है , जैसे आसक्ति, गलत विचार, दोष, कर्म, बुरा आचरण आदि।
2558 बीजेटीएस, मानक छंद के इस भिन्न रूप को प्रस्तुत करने में पीटीएस से सहमत है।
2559 anīti
2560 अनुपद्दवा , साथ ही “अक्षुब्ध,” “सुरक्षित”

और मुझे हर समय सम्मानित किया जाता है। मुझे भोजन और पेय पदार्थ प्राप्त होते हैं।
कपड़े और सोफे [आराम करने के लिए]। (100) [3473]

मेरी संपत्ति कभी खत्म नहीं होती; मैं स्थिर हृदय वाला व्यक्ति हूँ। मैं शिक्षण का हमेशा शौकीन रहा हूँ।
कुछ खामियां हैं2563 और मैं अछूता हूँ.2564 (101) [3474]

देवताओं के संसार में हो या मनुष्यों के संसार में, ये गुण मेरे पीछे-पीछे चलते हैं। हर जगह छाया मेरा पीछा नहीं छोड़ती।
जैसे कि [मैं] एक पेड़ के नीचे था।2566 (102) [3475]

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध प्रतिमा देने के बाद,
और इसी प्रकार भिक्षुओं की सभा में, कई अच्छी तरह से निर्मित चाकू, 2567 विभिन्न 2568 बंधन शैलियों से बंधे हुए, मुझे आठ परिणाम प्राप्त हुए, 2569
मेरे कर्मों के अनुसार: (103) [3476]2570

मैं एक देवता हूँ, और मैं कांपता नहीं,2571 आत्मविश्वास में परिपूर्ण,2572 [मेरे पास]2573 साहस2574 [और] पौरुष है,2575

2561 अपासिटा
2562 रीडिंग होमी विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस भोमी , जो संभवत: *“हो◦*” को “ भो◦ ” के रूप में गलत पढ़ना है — सिंहली लिपि में उनकी समानता को देखते हुए एक आसान गलती।
2563 appakilesa
2564 अनासावा
2565 बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) पीटीएस अनुबद्धा के स्थान पर अनुबन्धा पढ़ते हैं , जिसका अर्थ समान है।
2566 लिट., "पेड़ की छाया जैसी छाया हर जगह मेरा साथ नहीं छोड़ रही है"

2567 vā'sī
2568 citta° . मैं BJTS का अनुसरण करते हुए इसे vicitta , यानी "विविध" पढ़ता हूँ।
2569 अट्ठानिसंसे । मैंने यहाँ आठ को इस प्रकार पढ़ा: (1) देवता होना, (2) अविचल होना, (3) आत्मविश्वासी होना, (4) साहसी होना, (5) पौरुषी होना, (6) मानसिक रूप से सतर्क या ऊर्जावान होना, (7) अशुद्धता दूर करने वाला ज्ञान प्राप्त करना और (8) उत्तम और असीम पुण्य प्राप्त करना।
2570 PTS और BJTS इस बात से सहमत हैं कि इसे चार पैरों वाली कविता के बजाय छह पैरों वाली कविता माना जाए। मेरा मानना है कि कवियों
वे यह स्पष्ट करना चाहते थे कि ये चाकू ऊपर बताए अनुसार प्रकार और शैली में भिन्न थे, और इसलिए वे इन कथनों के लिए चार-फुट के टेम्पलेट से असंतुष्ट थे, जो एक सामान्य "चाकू" से अधिक कुछ भी अनुमति नहीं देता था।
2571 में 'visārī ' को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS visāliī ("व्यापक व्यक्ति," visāla से ?) के लिए पढ़ा गया है और सिंहली पाठ को लिया गया है।
अनुवाद में मैंने मुख्य शब्द के रूप में gloss (sasala no vūyem) का प्रयोग किया है।
2572 v'esārajjesu , शाब्दिक अर्थ, "बुद्ध या अरहंत के आत्म-विश्वास में", जिसके चार प्रकार बताए गए हैं। आरडी, एसवी: "चारों का पूर्ण वर्णन एम i.71 sq. में दिया गया है, अर्थात् सर्वोच्च ज्ञान, खीणासव अवस्था, बाधाओं का ज्ञान, मोक्ष के मार्ग का ज्ञान और उपदेश।"
2573 होमी = शाब्दिक अर्थ, "हूँ"
2574 धिति
2575 viriyavā

[और] मेरा दिमाग हमेशा सतर्क रहता है।2576 (104) [3477]

परिणामस्वरूप [उन्हें देने के],2577
मुझे सर्वत्र ऐसा ज्ञान प्राप्त हो रहा है जो अशुद्धता को दूर करता है।
[और] असीम योग्यता। (105) [3478]

मैंने प्रसन्नता से 2578 रुपये दिए
बुद्ध और भिक्षुओं के लिए,2579 कई कैंची2580 जो खुरदरी नहीं थीं2581 और न ही असमान थीं,2582 और अच्छी तरह से धुली हुई थीं।2583
मुझे पाँच परिणाम प्राप्त हुए,2584
मेरे कर्मों के अनुसार: (106) [3479, 3480ए-बी]2585

मुझे उन्हें देने के कारण प्राप्त होता है:
एक शुद्ध हृदय2586 [और] पौरुष,
धैर्य, प्रेम-कृपा की तलवार,2587 [और] सर्वोच्च2588 ज्ञान-हथियार2589 लालसा-बाण को तोड़ने के लिए:
ज्ञान हीरे जितना मजबूत है।25902591 (107) [3480सी-डी, 3481]

बुद्ध के लिए सुई देना 2592
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2593
मुझे पाँच परिणाम प्राप्त हुए,2594
मेरे कर्म के अनुसार: (108) [3482]

2576 पग्गहिता-मन , लिट., "जोरदार ढंग से लगाया गया दिमाग"
2577 में tāsaṃ को PTS और BJTS tassa ("इसका") के स्थान पर PTS वैकल्पिक शब्द से पढ़ा गया है, और "उन" को "उन चाकुओं" के रूप में लिया गया है।
2578 शाब्दिक रूप से, "देने के बाद"
2579 संघ
2580 सत्थके , एक छोटी चाकू या कैंची, यहाँ = पिप्पला
2581 ए-फारुसा
2582 ए-कक्कासे
2583 रीडिंग सुधोते विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस अधोते ('अशुद्ध,' 'बिना धुला')
2584 pañcānisaŋse . मैंने यहाँ पाँच को इस प्रकार पढ़ा: शुद्ध हृदयता, पौरुष, धैर्य, प्रेम और ज्ञान।
2585 यहाँ पीटीएस दो छह-चरण वाले श्लोक देता है, जबकि बीजेटीएस पाठ को तीन चार-चरण वाले श्लोकों में विभाजित करता है। मैं फिर से एबीसीडी पद्धति को अपनाता हूँ, इस बार बीजेटीएस संख्याओं पर लागू करते हुए, यह इंगित करने के लिए कि प्रासंगिक सामग्री दोनों ग्रंथों में कहाँ पाई जाती है।
2586 k'alyāṇacittaŋ , शुद्ध या सुंदर या दयालु हृदय वाला
2587 मेट्टा-सत्थक
2588 अनुत्तरा
2589 paññā-sattham
2590 लिट., "के समान"
2591 या वज्रपात: v'aijrena
2592 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
2593 शाब्दिक रूप से, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण वाले भिक्षु": संघे गुणवरुत्तमे । अन्यत्र की तरह, बीजेटीएस पढ़ता है gaṇavaruttame , "सर्वोच्च शानदार समूह"
2594 pañcānisaŋse . मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) पूजित होना, (2) संदेह से मुक्त होना, (3) बहुत सुंदर होना, (4) बहुत धनी होना और (5) तीक्ष्ण बुद्धि होना।

जन्म-जन्मांतर तक स्थानांतरण करते हुए,
मेरी हमेशा पूजा की जाती है, 2595 संदेह से मुक्त, 2596
बहुत सुंदर, धनवान
[और मेरी] बुद्धि बहुत तेज है। (109) [3483]

मैं गहन तथ्यों और सूक्ष्म स्थितियों के ज्ञान से देखता हूँ। मेरा ज्ञान सभी अंधकार को दूर करता है।
ठीक एक सर्वोच्च वज्रपात की तरह।2599 (110) [3484]

बुद्ध के लिए क्लिपर्स2600 देना2601
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2602
मुझे पाँच परिणाम प्राप्त हुए,2603
मेरे कर्म के अनुसार: (111) [3485]

मुझे हर जगह प्राप्त होता है
दासी लड़कियाँ और दास, गायें और घोड़े, नौकर और असंख्य पहरेदार,2604
नाई, भोजन प्रदाता2605 [और] रसोइये। (112) [3486]

वेल-गॉन-वन के लिए पंखे 2606 और ताड़ के पत्तों से बने पंखे 2607
मुझे आठ परिणाम प्राप्त हुए, 2608
मेरे कर्म के अनुसार: (113) [3487] मुझे ठंड [या] गर्मी का पता नहीं है,

---

2595 नमासियो
2596 k'aṅkhachedo , [मेरा] संदेह दूर हो गया है या कट गया है
2597 शाब्दिक रूप से, "मैंने देखा," passayiŋ । PTS alt. passāmi (वर्तमान काल) इस पूरे अनुच्छेद में वर्तमान काल के प्रयोग के अनुरूपता बनाए रखने के लिए उपयुक्त है।
2598 गंभीर , शाब्दिक अर्थ, "गहरा"
2599 या हीरा, वजिरग्गसमंग । यहाँ "अंधकार को दूर करने" पर ज़ोर देने के कारण "बिजली" शब्द अधिक उपयुक्त है, हालाँकि एक चमकदार हीरा भी यही काम कर सकता है।
2600 लीटर, "नाखून काटने वाला"
2601 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
2602 शाब्दिक रूप से, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण वाले भिक्षु": संघे गुणवरुत्तमे । अन्यत्र की तरह, बीजेटीएस पढ़ता है gaṇavaruttame , "सर्वोच्च शानदार समूह"
2603 pañcānisaŋse . मैं यहाँ पाँच को (1) दासों, (2) घरेलू पशुओं, (3) नौकरों/परिचारकों, (4) चौकीदारों/रक्षकों और (5) निजी परिचारकों (जो बाल काटते हैं, खाना लाते और पकाते हैं) की प्राप्ति के रूप में गिनता हूँ।
2604 रीडिंग ārakkhake with BJTS for PTS ārakkhe , "सुरक्षा"
2605 पाठ भट्टके को BJTS के साथ PTS भटके के लिए पढ़ा जा रहा है , "सेवक," जो इस श्लोक के दूसरे भाग में पहले से ही निर्धारित है।
2606 विधुपने
2607 लिट., "अच्छा (सोभने) पलमायरा-पत्ती-पंखे (तलवंते)"
2608 अट्ठानिसंगसे । मैं यहाँ आठ की गणना इस प्रकार करता हूँ: (1) अत्यधिक तापमान के प्रति अचेतनता, (2) बुखार से पीड़ित न होना, (3) कष्ट का अनुभव न करना, (4) हृदय की पीड़ा का अनुभव न करना, (5) कामवासना की आग बुझाना, (6) घृणा की आग बुझाना, (7) अभिमान की आग बुझाना और (8) गलत विचारों की आग बुझाना।
2609 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी

[और] तेज बुखार2610 ज्ञात नहीं है। मुझे कोई तकलीफ नहीं होती2611
न ही ऐसी यातनाएँ जो मेरे हृदय को झुलसा दें।2612 (114) [3488]

मेरी सारी आग बुझ गई है 2613
इसके परिणामस्वरूप:
कामवासना की आग2614 और घृणा की आग,2615
अभिमान और गलत विचारों की आग.2616 (115) [3489]

भिक्षुओं के लिए मोर के पंख और बैल की पूंछ देना, सर्वोच्च सभा, 2617
मैं उन लोगों में से एक हूँ जिनके दोष शांत हो गए हैं;
मैं दोषरहित निवास कर रहा हूँ। (116) [3490]

बुद्ध के लिए छलनी देना26182619

[और वे भिक्षु जो] शिक्षा देते हैं,2620
मुझे पाँच परिणाम प्राप्त हुए,2621
मेरे कर्मों के अनुसार। (117) [3491]

अन्य सभी से आगे बढ़कर, मुझे एक दिव्य जीवनकाल प्राप्त होता है।
सहने के लिए हमेशा कुछ न कुछ कम ही होता है।
चोरों या [अन्य] दुश्मनों से.2624 (118) [3492]

कोई परेशानी भी नहीं हुई है
न तो हथियारों से और न ही जहर से,2625
असमय मृत्यु जैसी कोई चीज नहीं है2626
मेरे2627 [उन्हें देने] का परिणाम। (119) [3493]

2610 pariḷāho
2611 दरथांग , जिसका अर्थ "बुखार" भी हो सकता है।
2612 cittasantāpanaŋ , शाब्दिक अर्थ, "हृदय की जलन," आरडी के अनुसार लाक्षणिक अर्थ है पीड़ा, यातना
2613 nibbutā
2614 r'āgaggī
2615 dosaggī
2616 शाब्दिक रूप से, "अभिमान की आग (मानाग्गी) और गलत विचारों की आग (दिट्ठी-अग्गी)"
2617 saṅghe gaṇuttame , शाब्दिक अर्थ, “भिक्षुओं की सभा, सर्वोच्च समूह को”। ध्यान दें कि यहाँ PTS में gaṇa लिखा है। इन आवर्ती यौगिकों में गुण ("सद्गुण") के लिए ("समूह") का प्रयोग किया जाता है, जैसा कि बीजेटीएस काफी हद तक लगातार करता है।
2618 parissavane
2619 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
2620 में धम्मकरुत्तमे (शाब्दिक अर्थ, "शिक्षा के सर्वोच्च कर्ता") को पीटीएस गनुत-तमे ("सर्वोच्च समूह") के स्थान पर बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ पढ़ा जा रहा है।
2621 pañcānisaŋse . मैं यहाँ पाँच की गणना इस प्रकार करता हूँ (1) दिव्य जीवनकाल, (2) चोरों और शत्रुओं से थोड़ा सहना, (3) हथियारों से कोई परेशानी नहीं या (4) जहर से, और (5) असमय मृत्यु नहीं।
2622 शाब्दिक रूप से, “मैं वह हूँ जो…”
2623 अप्पासायहा
2624 c'ora-paccatthikehi vā
2625 लिट., “जहर द्वारा”
2626 अंतरामरण
2627 BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ मामा (सामान्य) पढ़ना PTS मामाŋ (सामान्य या कर्म कारक) के लिए

तेल के कंटेनर 2628 देने के लिए
बुद्ध2629 [और भिक्षुओं के लिए भी],2630
मुझे पाँच परिणाम प्राप्त हुए,2631
मेरे 2632 कर्म के अनुसार: (120) [3494]

मेरा रूप-रंग बहुत आकर्षक है।
अच्छी वाणी2633 और उच्च इरादे;2634
मेरा दिमाग भ्रमित नहीं है।
मैं सभी सुरक्षा उपायों से सुरक्षित हूँ। (121) [3495]

सुई के डिब्बे 2635 देने के लिए
बुद्ध2636 [और भिक्षुओं के लिए भी],2637
मुझे तीन परिणाम प्राप्त होते हैं,2638
मेरे 2639 कर्म के अनुसार: (122) [3496]

मेरे मन और शरीर में आनंद 2640
[और] इंद्रियों से उत्पन्न आनंद:2641
मुझे ये गुण प्राप्त हो रहे हैं
इसके परिणामस्वरूप [देने के]। (123) [3497]

बुद्ध 2643 के लिए कंधे की पट्टियाँ 2642 देना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2644
मुझे तीन परिणाम प्राप्त होते हैं,2645
मेरे कर्म के अनुसार: (124) [3498]

2628 t'eladhare
2629 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
2630 शाब्दिक रूप से, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण वाले भिक्षुओं के लिए": संघे गुणवरुत्तमे । अन्यत्र की तरह, बीजेटीएस पढ़ता है
gaṇavaruttame , "सर्वोच्च शानदार समूह"
2631 pañcānisaŋse . मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) आकर्षक रूप, (2) अच्छी वाणी, (3) उच्च इरादे (या मानसिक गतिविधि), (4) मानसिक भ्रम या अशांति का अभाव और (5) सभी प्रकार की सुरक्षा द्वारा संरक्षित।
2632 रीडिंग मामा (सामान्य) पीटीएस मामाŋ (सामान्य या कर्म कारक) के लिए बीजेटीएस के साथ
2633 रीडिंग सुगाडो विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस सुगाटो , "वेल-गॉन"
2634 s'usamuggata-mānasa
2635 s'ūcighare
2636 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
2637 शाब्दिक रूप से, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण वाले भिक्षुओं के लिए": संघे गुणवरुत्तमे । अन्यत्र की तरह, बीजेटीएस पढ़ता है
gaṇavaruttame , "सर्वोच्च शानदार समूह"
2638 tīnānisaŋse . मैं यहाँ तीनों को (1) मानसिक सुख, (2) शारीरिक सुख और (3) इंद्रियों के माध्यम से उत्पन्न सुख के रूप में गिनता हूँ।
2639 BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ मामा (सामान्य) पढ़ना PTS मामाŋ (सामान्य या कर्म कारक) के लिए
2640 लिट., "मानसिक सुख और शारीरिक सुख"
2641 iriyāpathaja
2642 रीडिंग aṃsabandhe with JPTS and PTS alt for PTS aŋsabaddhe (baddha = lucky, arrow or bull)
2643 लिट., "विजेता के लिए" (जाइन)

2644 शाब्दिक रूप से, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण वाले भिक्षुओं के लिए": संघे गुणवरुत्तमे । अन्यत्र की तरह, बीजेटीएस पढ़ता है
gaṇavaruttame , "सर्वोच्च शानदार समूह"
2645 tīnānisaŋse . मैं यहाँ तीन को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) शिक्षा की गहरी समझ (या मन-पढ़ना), (2) दूसरे जीवन को याद करना, और (3) अच्छी त्वचा होना।

मैं महान शिक्षा को गहराई से जानता हूँ;2646
मुझे दूसरा जीवन याद है;2647
हर जगह मेरी त्वचा अच्छी है।
इसके परिणामस्वरूप [देने के]। (125) [3499]

विक्टर 2650 के लिए गर्डल 2649 देना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2651
मुझे छह परिणाम प्राप्त हुए, 2652
मेरे कर्म के अनुसार: (126) [3500]

ध्यान की अवस्थाओं में दृढ़2653,2654
मैं ध्यान की अवस्थाओं में लीन रहता हूँ;
मैं गुटों के बिना एक समूह में हूँ,2655
मेरे शब्दों को हमेशा अच्छी तरह से लिया जाता है।2656 (127) [3501]

मुझमें जागरूकता उत्पन्न होती है;
मुझे कभी डर नहीं लगता।2657
देवताओं की दुनिया में हो या मनुष्यों की दुनिया में,
ये गुण 2658 [मुझे] के बाद आते हैं। (128) [3502]

विक्टर [और] के लिए मल त्यागना 2659
वे भिक्षु जिनमें असाधारण सद्गुण हैं,2660
मैं पाँच [विभिन्न] प्रकार का उत्तराधिकारी हूँ;2661

2646 sadhamme gādhaŋ vindāmi , शाब्दिक अर्थ, "मैं महान शिक्षा की गहराई को जानता हूँ।" BJTS (और PTS वैकल्पिक) इसे ce- toñanañ ca vindāmi पढ़ते हैं , "मैं मन के ज्ञान को जानता हूँ," जिसे BJTS दूसरों के मन में निहित ज्ञान को जानने, अर्थात् मन-पढ़ने के रूप में व्याख्यायित करता है।
2647 dutiyaŋ bhavaŋ , BJTS व्याख्या करता है deveni bhavaya . मेरा अनुमान है कि इसका अर्थ है "मुझे दो पिछली बातें याद हैं"
क्या यह तीन जन्मों की अवस्थाओं में से दूसरी अवस्था (जिसे भाव भी कहते हैं) यानी निर्मित (रूप) को संदर्भित करता है? अस्तित्व की अवस्था?
2648 s'ucchavi homi
2649 k'ā'y'abandhane
2650 रीडिंग जाइन विद बी.जे.टी.एस. (और पी.टी.एस. वैकल्पिक) पी.टी.एस. सुगेट ("वेल-गॉन-वन") के लिए, जो एक मेट्रिकली-असंतुलित ध्वनि छंद उत्पन्न करता है।

2651 शाब्दिक रूप से, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण वाले भिक्षुओं के लिए": संघे गुणवरुत्तमे । अन्यत्र की तरह, बीजेटीएस पढ़ता है

gaṇavaruttame , “सर्वोच्च शानदार समूह”

2652 चानिसंसे । मैं यहाँ छह की गणना करता हूँ: (1) ध्यान की अवस्था में न कांपना, (2) ध्यान की अवस्था में रहना, (3) गुटों के बिना समूहों में रहना, (4) हमेशा स्वीकार्य या सुखद या अच्छी तरह से लिए गए शब्दों को बोलना, (5) सती (सती) होना, और (6) भय न होना।

2653 ना कंपामी , शाब्दिक अर्थ, "मैं कांपता (थरथराता, डगमगाता) नहीं हूँ"

2654 समाधीसु , शाब्दिक अर्थ, " समाधियों के बीच" । बहुवचन विभिन्न प्रकार की समाधि या विभिन्न प्रकार की ध्यान अवस्थाओं का सुझाव देता है।

2655 abhejjapariso homi

2656 ādeyyavacano sadā

2657 tā'so na mayhaŋ vijjati , शाब्दिक अर्थ, “मुझमें भय नहीं पाया जाता”

2658 बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) पीटीएस अनुबद्धा के स्थान पर अनुबन्धा पढ़ते हैं , जिसका अर्थ समान है।

2659 आधारके , साथ ही स्टैंड, पल्पिट, डेस्क। बीजेटीएस इसे भिक्षापात्र रखने के लिए एक स्टैंड के रूप में समझता है।

2660 शाब्दिक रूप से, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण वाले भिक्षुओं के लिए": संघे गुणवरुत्तमे । अन्यत्र की तरह, बीजेटीएस पढ़ता है

gaṇavaruttame , “सर्वोच्च शानदार समूह”

2661 pancavaṇṇehi dāyādo एक रहस्यमय पद है, क्योंकि vaṇṇa (रंग, जाति, रूप, चमक, सौंदर्य, अभिव्यक्ति, प्रकार, स्वर, बनावट, समानता, गुण, प्रशंसा, कारण) शब्द का अर्थ व्यापक है । BJTS

मैं किसी भी बात से विचलित नहीं होता। (129) [3503]

जो भी शिक्षाएँ मैंने सुनी हैं, जो ज्ञान और जागरूकता उत्पन्न करती हैं, वे मेरे मन में बनी रहती हैं2662 वे कभी लुप्त नहीं होतीं।
बहुत अच्छी तरह से पहचाना जा रहा है। (130) [3504]

बर्तन और भोजन देने के बाद
बुद्ध और सर्वोच्च समूह के लिए,2663
मुझे तीन परिणाम प्राप्त होते हैं,2664
मेरे कर्म के अनुसार: (131) [3505]

मुझे खाने के बर्तन मिल रहे हैं
सोने और रत्नों से बने, उसी प्रकार क्रिस्टल से बने बर्तन।
और यहाँ तक कि माणिक्य से बने हुए भी। (132) [3506]

मेरे पास हमेशा आनंद लेने के लिए चीजें होती हैं: 2665 पत्नियां और दासियां और दासी लड़कियां भी, हाथी-घोड़ा-रथ-सैनिक, 2666 और महिलाएं समर्पित हैं।2667 (133) [3507]

मुझे हमेशा आनंद लेने के लिए कुछ न कुछ मिलता रहता है;
मैं सीखने के सभी रूपों का अवलोकन करता हूँ:2668
प्राचीन ज्ञान2670 और वैदिक मंत्र2671
और अनेक विविध विषय।2672 (134) [3508]

सुप्रसिद्ध आत्मा और भिक्षुओं, सर्वोच्च समूह के लिए थालियाँ अर्पित करते हुए, मुझे तीन परिणाम प्राप्त होते हैं।2673
मेरे कर्मों के अनुसार। (135) [3509]

सिंहली व्याख्या के अनुसार इसका अर्थ "'पाँच अलग-अलग प्रकार का उत्तराधिकारी'" या "पात्र के पाँच रूप (अनुस = अनुहसा) प्राप्त करने वाला व्यक्ति" हो सकता है। यहाँ अनुवाद के लिए "प्रकार" शब्द का चयन करने से अस्पष्टता बनी रहती है: पाँच प्रकारों का उल्लेख न करने से अर्थ की व्यापक व्याख्या की गुंजाइश रहती है, हालाँकि यह स्वीकार करना होगा कि अपने आप में यह अनिश्चितता के अलावा कोई विशेष अर्थ नहीं देता।

2662 में पीटीएस वता के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ धता का पाठ , जिसका अर्थ है "प्रतिज्ञाएँ," अर्थात्, "मेरी प्रतिज्ञाएँ नष्ट नहीं होतीं"

2663 में पीटीएस भी ऊपर दिए गए guṇ° के बजाय gaṇuttame पढ़ता है।

2664 tīṇānisaṇse . मैं यहाँ तीनों को (1) के रूप में गिनता हूँ

यहां 2665 और अगले श्लोक में मैंने परिभोगानि सब्बादा पढ़ा है , जहां बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) में परिभोगादिसम्पदा का अर्थ है , "आनंद लेने योग्य वस्तुओं की प्राप्ति आदि।" परिभोगा का अर्थ "उपयोगिता" और "आनंदनीयता" दोनों हो सकता है।

2666, यानी चार गुना सेना

2667 itthī patibbatā c'eva , "महिलाएं तो समर्पित पत्नियां भी हैं!"

2668 nisāmemi

2669 सब्बां सिप्पां (संस्कृत: शिल्प), सभी उदार कलाएँ, सभी प्रकार का ज्ञान या सीखी हुई कलाएँ

2670 vijjā

2671 मंतापड़े

2672 āgame

2673 tīṇānisaṇse . मैं यहाँ तीन को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) कीमती थालियों की प्राप्ति, (2) जैविक थालियों की प्राप्ति और (3) निर्धारित गुणों की प्राप्ति।

मुझे [महंगी] प्लेटें मिल रही हैं
सोने और रत्नों से बने, उसी प्रकार क्रिस्टल से बने बर्तन।
और यहाँ तक कि माणिक्य से बने हुए भी। (136) [3510]

मुझे प्लेटें भी मिल रही हैं।
बोधि2674 [पत्तियों] से बना,2675 लौकी से बना,2676
और इसी प्रकार कमल के पत्तों से बना हुआ,2677
[और] शहद पीने के लिए गोले।2678 (137) [3511]

इसके परिणामस्वरूप,
ये गुण भी प्राप्त होते हैं:
सद्गुण के लिए प्रतिज्ञाओं में अच्छा आचरण2679,2680
और अच्छे शिष्टाचार के संबंध में।2681 (138) [3512]

बुद्ध 2682 के लिए दवाइयाँ देना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2683

मुझे दस परिणाम प्राप्त हुए,2684
मेरे कर्मों के अनुसार। (139) [3513]

मैं 2685 साल का, दीर्घायु, बलवान और वीर, सुंदर, प्रसिद्ध और खुशहाल हूँ।
उत्पीड़न से मुक्त,2686 [भी] सुरक्षित,2687
और मुझे हर समय सम्मानित महसूस होता है। मुझे अपनों से अलग नहीं रखा जाता।
इसके परिणामस्वरूप। (140) [3514]2689

2674 अ'सत्थका , " अश्वत्थ [वृक्ष] का," फ़िकस रिलिजियोसा, गौतम बुद्ध का बोधि वृक्ष
2675 को एक पवित्र वृक्ष मानते हुए, यह संभावना नहीं है कि यहाँ फिकस रिलिजियोसा की लकड़ी का उल्लेख किया गया हो। मुझे नहीं पता कि इसकी पत्तियों से बनी प्लेट कैसी होगी, लेकिन यह एक बेहतर व्याख्या प्रतीत होती है।
2676 फलामाये , शाब्दिक अर्थ, "फलों से बना।" मैं बीजेटीएस का अनुसरण करते हुए इसे लौकी , लाबु के "फल" के संदर्भ में लेता हूँ।
इसके विपरीत , आर.डी., phalamaye sv, जो कहते हैं कि यह phalikāmaye का संक्षिप्त रूप है , कम से कम वर्तमान मामले में यह संभावना नहीं है क्योंकि पिछले श्लोक में क्रिस्टल से बनी प्लेटों का उल्लेख किया गया है।
2677 पोखरापट्टे
2678 मधुपानकसंखे । सांखे शब्द का प्रयोग शंख के साथ-साथ सीप के लिए भी किया जा सकता है।
2679 paṭipatti को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS paṭilabhe , "प्राप्त होते हैं" के लिए पढ़ा जाता है
2680 v'atte guṇe , BJTS व्याख्याएँ: vatāvat guṇehi
2681 ācārakiriyāsu ca , या "सही अभ्यास के रूपों में से"
2682 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
2683 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण का"। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa ("समूह") पढ़ता है।
2684 dasānisaṇse . मैं यहाँ दस को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) दीर्घायु, (2) शारीरिक शक्ति, (3) वीरता, (4) सौंदर्य, (5) प्रसिद्धि, (6) सुख, (7) उत्पीड़न से मुक्ति, (8) सुरक्षा, (9) सम्मान, और (10) प्रियजनों के साथ रहना।
2685 होमी को BJTS के साथ PTS भोमी के लिए पढ़ना, जो संभवतः *"हो°*" को " भो° " के रूप में गलत पढ़ना है — एक आसान
सिंहली लिपि में समानता के कारण यह एक गलती है।
2686 अनुपद्दवा , साथ ही "अक्षुब्ध," "सुरक्षित"
2687 anīti
2688 अपासिटा
2689 पीटीएस और बीजेटीएस इस बात से सहमत हैं कि इसे छह पैरों वाला श्लोक माना जाना चाहिए।

विक्टर के लिए shoes2690 देना [और]
सर्वोच्च उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षुओं, मुझे तीन परिणाम प्राप्त होते हैं,2691
मेरे कर्मों के अनुसार। (141) [3515]

[प्रथम], पालकी जिन्हें जोता गया है2692
हाथियों और घोड़ों को मिलाकर कुल छह मिलियन।
हर समय मेरी प्रतीक्षा करते रहते हैं। (142) [3516]

जैसे ही मैं संसार में पुनर्जन्म लेता हूँ, 2693 रत्नों और ऊन से बनी सैंडल 2694, 2695 सोने और चांदी से भी बनी हुई।
अस्तित्व में आना; [वे] मेरे पैर उठाते हैं।2696 (143) [3517]

वे सही दिशा में दौड़ रहे हैं26972698
और दोषी आचरण को शुद्ध करें।2699
मुझे ये गुण प्राप्त हो रहे हैं
इसके परिणामस्वरूप [देने के]। (144) [3518]

बुद्ध के लिए 2700 चप्पलें देना 2701 [और] उत्कृष्ट गुणों वाले भिक्षुओं के लिए, 2702 जादुई चप्पलें पहनकर, 2703
मैं इच्छा के अनुसार निवास करता हूँ।2704 (145) [3519]

बुद्ध और सर्वोच्च समूह के लिए चेहरा पोंछने के लिए नैपकिन देना2705, मुझे पाँच परिणाम अनुभव होते हैं,2706
मेरे कर्मों के अनुसार। (146) [3520]

2690 उपाहने

2691 tīṇānisaŋse . मैं यहाँ तीनों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) पालकी द्वारा सेवा की गई (2) कीमती जूतों का उठना (3) जूते दोषी आचरण को शुद्ध करते हैं

2692 सैंडामानिका को सैंडाहमानिका के रूप में पढ़ना , न कि इसे सैंडति से लेना , बहना।

2693 भावे , शाब्दिक अर्थ, "अस्तित्व में"

2694 °pādukā

2695 bambalikā को BJTS के साथ PTS maṇḍalikā , "जिला अधिकारियों" के लिए पढ़ना

2696 पदुद्धारे को पद (पैर) + उद्धारा (उद्धरति के मूल अर्थ , "ऊपर उठाता है") के रूप में लेते हुए, हालांकि आर.डी. कहा गया है कि इस यौगिक शब्द का प्रयोग SnA में "श्लोक का सारांश" के अर्थ में किया जाता है, शाब्दिक रूप से, "पैरों को हटाना"।

2697 पतिधावंती (बीजेटीएस पति° पढ़ें)

2698 में PTS niyamaŋ ("संयम," "सीमा," "ब्रह्मांडीय नियम") के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ niyāmaṃ का पाठ किया गया है।

2699 रीडिंग āgu-ācāra-sodhanaṃ with BJTS for PTS ācāraguṇasodhanaŋ ("पुनर्गुणी आचरण")

2700 पादुका

2701 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"

2702 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्‌गुण का"। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa ("समूह") पढ़ता है।

2703 iddhipādukam āruyha , शाब्दिक अर्थ, " इद्धि [महाशक्तियों] से युक्त सैंडल पर कदम रखते हुए "

2704 y'adicchakaŋ , शाब्दिक अर्थ, "जो मेरी इच्छा है" या शायद "जैसा मैं चाहता हूँ"

2705 मुख-पुंचना-कोले , शाब्दिक अर्थ, "चेहरा पोंछने के लिए नैपकिन (या चिथड़े, कपड़े के टुकड़े, रूमाल)"

2706 pañcānisaŋse . मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) सुनहरे रंग का, बेदाग शरीर; (2) सुंदर, (3) मजबूत, (4) चिकना, (5) गंदगी और धूल से मैला नहीं।

सुनहरे रंग की, बेदाग, सुंदर और शक्ति से परिपूर्ण, मेरा शरीर बहुत चिकना है।
मैं गंदगी और धूल से मैला नहीं हूँ।
मुझे ये गुण प्राप्त हो रहे हैं
इसके परिणामस्वरूप [देने के]। (147) [3521]2709

बुद्ध को चलने की छड़ी भेंट करना 2710
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2711
मुझे छह परिणाम प्राप्त हुए,2712
मेरे कर्मों के अनुसार। (148) [3522]

मेरे अनेक पुत्र हैं, मैं कभी भयभीत नहीं होती;2713 सहने के लिए हमेशा थोड़ा ही होता है,2715
मैं हर तरह की सुरक्षा से सुरक्षित हूँ। मुझे किसी भी तरह की असफलता का अनुभव नहीं है;2716
मेरा दिमाग नियंत्रण से बाहर नहीं है।2717 (149) [3523]2718

जड़ी-बूटियाँ2719 [और] मलहम2720 देने के बाद
बुद्ध और सर्वोच्च भिक्षुओं के लिए,2721
मुझे आठ परिणाम प्राप्त हुए हैं2722
मेरे कर्मों के अनुसार। (150) [3524]

मैं उन लोगों में से हूं जिनकी आंखें [हमेशा] बड़ी रहती हैं।

2707 बीजेटीएस और पीटीएस वैकल्पिक पाठ पीटीएस लिप्पाटी ("गंदा होना" पीएसई शब्दकोश, सिंह. गैल्वेई के अनुसार ; आरडी लिप्पाटी को लिम्पाटी का निष्क्रिय रूप मानता है) के लिए लिम्पाटी ("धब्बा लगा हुआ") पढ़ता है , लेकिन चूंकि पूर्व का अर्थ "गंदा" भी हो सकता है, इसलिए अंतर महत्वपूर्ण नहीं है।

2708 r'ajojallaŋ

2709 पीटीएस और बीजेटीएस इस बात से सहमत हैं कि इसे छह पैरों वाला श्लोक माना जाना चाहिए।

2710 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"

2711 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण का"। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa ("समूह") पढ़ता है।

2712 chānisaŋse . मैं यहाँ छह को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) अनेक संतानें, (2) भय का अभाव, (3) कम सहनशीलता, (4) अच्छी तरह से संरक्षित, (5) असफलता का अभाव, और (6) अच्छी तरह से नियंत्रित मन (या गंजेपन का अभाव, आदि)

2713 tā'so mayhaŋ na vijjati , शाब्दिक अर्थ, "मुझे डर नहीं लगता"

2714 शाब्दिक रूप से, "मैं वह हूँ जो..."

2715 अप्पासायहा

2716 में, BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ khalitampi na jānāmi का पाठ PTS calitaŋ maŋ na jānāmi ("मुझे कंपन का अनुभव नहीं होता") के लिए किया गया है। विफलता (गलत काम, लड़खड़ाना, ठोकर खाना, परेशान होना या बुरा बर्ताव होना) के अलावा, khalitaṃ का अर्थ "गंजापन" भी हो सकता है। इन गुणों का न होना पुण्य का सकारात्मक परिणाम होगा।

2717 रीडिंग abhantù� mānasaù� mama with BJTS (bhant = मुड़ना, डगमगाना, अस्थिर, एक गाड़ी के लिए प्रयुक्त) नियंत्रण से बाहर है) पीटीएस के लिए āgataŋ mānasaŋ mamaŋ (वैकल्पिक: मामा), "मेरा मन आ गया है"। पीटीएस asantaŋ भी देता है।
(शांति का अभाव, अशांत) एक वैकल्पिक पाठ के रूप में, जो आगतंग की तुलना में अधिक उपयुक्त होगा ।

2718 पीटीएस और बीजेटीएस इस बात से सहमत हैं कि इसे छह पैरों वाला श्लोक माना जाना चाहिए।

2719 ओसाधम , विशेष रूप से औषधीय जड़ी-बूटियाँ या औषधियाँ बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली हर्बल सामग्रियाँ

2720 añjanaŋ

2721 संघे गणुत्तमे , शाब्दिक अर्थ, "भिक्षुओं की सभा जो सर्वोच्च समूह है"

2722 अट्ठानिसंगसे । मैं यहाँ आठ को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) बड़ी आँखें [चाहे वे हों] (2) सफेद आँखें, (3) पीली आँखें, [या] (4) लाल आँखें; (5) निर्मल आँखें, (6) साफ आँखें, (7) रोगमुक्त आँखें, (8) "दिव्य आँख"।

चाहे वे सफेद हों, पीले हों या लाल। मेरी आँखें निर्मल और निर्मल हैं।
और [वे] सभी रोगों से मुक्त हैं।2725 (151) [3525]

मुझे "दिव्य दृष्टि" प्राप्त हो रही है।
अद्वितीय ज्ञान की दृष्टि। मुझे ये गुण प्राप्त हो रहे हैं।
इसके परिणामस्वरूप [देने के]। (152) [3526]

वेल-गॉन-वन के लिए कीज़2726 देना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2727
मुझे नॉलेज-की प्राप्त हो रही है
जो धम्म का द्वार खोलता है .2728 (153) [3527]

बुद्ध2729 के लिए प्रमुख मामले प्रस्तुत करना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2730
मुझे दो परिणाम प्राप्त होते हैं,2731
मेरे कर्मों के अनुसार:
जैसे ही मैं दुनिया में पुनर्जन्म लेता हूँ,2732
[वहाँ] थोड़ा क्रोध है,2733 कोई दुख नहीं है।2734 (154) [3528]2735
बुद्ध 2736 के लिए पट्टियाँ देना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2737
मुझे पाँच परिणाम प्राप्त हुए,2738
मेरे कर्मों के अनुसार। (155) [3529] ध्यान की अवस्थाओं में स्थिर2739,2740

2723 यह बीजेटीएस सिंहली व्याख्या का अनुसरण करता है। मेरा मानना है कि "सफेद आँखें" (या "सफेद भाग वाली आँखें") मनुष्यों को, "पीली (या "सुनहरी") आँखें" देवताओं को और "लाल आँखें" (लोहितक्खा) साँपों या आत्माओं (यक्षों) को संदर्भित करती हैं। हम इन रंगों को उनकी बड़ी आँखों से स्पष्ट रूप से दिखाई देने के रूप में भी समझ सकते हैं।

2724 anāvila-pasanna-akkha

2725 sabba-roga-vivajjita

2726 कुन्सिके

2727 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण का"। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa ("समूह") पढ़ता है।

2728 धम्म-द्वार-विवरणन , लिट., "जो धम्म का द्वार खोलता है। "

2729 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"

2730 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण का"। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa ("समूह") पढ़ता है।

2731 d'v'ānisaŋse . मैं यहाँ इन दोनों को (1) कम क्रोध वाला और (2) बिना दुःख (या कष्ट) वाला मानता हूँ।

2732 भावे , शाब्दिक अर्थ, "अस्तित्व में"

2733 appakodho , शाब्दिक अर्थ, "मैं कम क्रोध वाला व्यक्ति हूँ"
2734 anāyāso , शाब्दिक अर्थ, “मैं एक हूँ, दु:ख रहित”
2735 पीटीएस और बीजेटीएस इस बात से सहमत हैं कि इसे छह पैरों वाला श्लोक माना जाना चाहिए।
2736 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
2737 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, “सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण का”। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa (“समूह”) पढ़ता है।
2738 pañcānisaṇse . मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) समाधियों में दृढ़ता , (2) समाधियों में निवास , (3) एक एकजुट समूह में होना, (4) ऐसे शब्द बोलना जो अच्छी तरह से लिए जाते हैं, और (5) संपत्ति का बड़ा धन।
2739 ना कंपामी , शाब्दिक अर्थ, "मैं कांपता (थरथराता, डगमगाता) नहीं हूँ"
2740 समाधीसु , शाब्दिक अर्थ, " समाधियों के बीच" । बहुवचन विभिन्न प्रकार की समाधि या विभिन्न प्रकार की ध्यान अवस्थाओं का सुझाव देता है।

मैं ध्यान की अवस्थाओं में लीन रहता हूँ;
मैं गुटों के बिना एक समूह में हूँ,2741
मेरी बातों को हमेशा सराहा जाता है।2742
जैसे ही मैं दुनिया में पुनर्जन्म लेता हूँ,2743
वहाँ बहुत अधिक संपत्ति है।

विक्टर के लिए स्मोक-ट्यूब्स2747 देना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2748
मुझे तीन परिणाम प्राप्त होते हैं,2749
मेरे कर्मों के अनुसार। (157) [3531]

मेरी अंतरात्मा2750 कभी भी2751 कुटिल नहीं होती, [और मेरी] मांसपेशियां2752 सुस्पष्ट हैं;2753
मुझे “दिव्य दृष्टि” प्राप्त हो रही है।
इसके परिणामस्वरूप [देने के]। (158) [3532]

बुद्ध के लिए दीपक-प्लेट देना27542755
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2756
मुझे तीन परिणाम प्राप्त होते हैं,2757
मेरे कर्मों के अनुसार। (159) [3533]

मैं अच्छे कुल का हूं, मेरा शरीर अच्छा है।
[और मैं] बुद्धिमान हूँ,2760 और बुद्धिमान के रूप में सम्मानित हूँ।2761

2741 abhejjapariso homi
2742 ādeyyavacano sadā
2743 भावे , शाब्दिक अर्थ, "अस्तित्व में"
2744 पीटीएस जतिक्का , बीजेटीएस जयति
2745 भोगसंपत्ति
2746 पीटीएस और बीजेटीएस इस बात से सहमत हैं कि इसे छह पैरों वाला श्लोक माना जाना चाहिए।

2747 धूमनत्ते . आरडी: “अर्थात चिकित्सा दवाओं के धुएं को सूंघने के लिए एक शल्य चिकित्सा उपकरण Vin i.204; ii.120; J iv.363; Tha 14”
2748 गुणवरुत्तमे , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण का"। बीजेटीएस यहाँ अन्यत्र की तरह गण ("समूह") पढ़ता है।
2749 tīṇānisaṇse . मैं यहाँ तीन को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) स्वच्छ अंतरात्मा, (2) अच्छी मांसपेशियां और (3) “दिव्य दृष्टि”
2750 सती , स्मृति (संस्कृत: स्मृति), सजगता, चेतना आदि।
2751 शाब्दिक अर्थ, “नहीं”
2752 PTS nahāruyo , BJTS nahāravo
2753 BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS susambaddhā (सुव्यवस्थित, सुव्यवस्थित) का पठन
(अच्छी तरह से बंधे हुए), हालांकि बाद वाला एक सुगठित शरीर का भी आभास कराता है।
2754 dīpathāle . (BJTS [और PTS वैकल्पिक] dpaṭṭhāne , “दीपक रखने के स्थान” पढ़ते हैं)। (18a-b) [3391] पर वास्तविक दाना के वर्णन में हमें “दीपक-धारक,” dīpadhārake मिलता है । मैं इन सभी शब्दों को एक ही प्रकार की वस्तु के संदर्भ में लेता हूँ, जिसे मैं (संभवतः छोटे मिट्टी के) दीपों के लिए प्लेट जैसे धारक के रूप में कल्पना करता हूँ।
2755 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए”
2756 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, “सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण का”। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa (“समूह”) पढ़ता है।
2757 tīṇānisaṇse . मैं यहाँ तीन को (1) अच्छा जन्म, (2) अच्छा शरीर, और (3) ज्ञान और बुद्धि के रूप में गिनता हूँ।
2758 जातिमा , शाब्दिक अर्थ, "जन्मजात व्यक्ति" या "उच्च जाति का व्यक्ति"
2759 aṅgasampanno , शाब्दिक अर्थ, “मेरे पास अंग हैं”
2760 paññavā
2761 में बुद्धि-सम्मतो को बीजेटीएस द्वारा पीटीएस बुद्ध-सम्मतो ("बुद्ध के रूप में [या बुद्ध द्वारा?] पूजनीय") के रूप में पढ़ा गया है। बाद वाले का अर्थ "बुद्ध द्वारा चयनित" भी हो सकता है।

मुझे ये गुण प्राप्त हो रहे हैं
इसके परिणामस्वरूप [देने के]। (160) [3534]

बुद्ध और सर्वोच्च समूह के लिए पात्र2762 और टोकरियाँ2763 देते हुए,
मुझे दस परिणाम प्राप्त हुए,2764
मेरे कर्मों के अनुसार। (161) [3535]

मैं हमेशा सतर्क रहता हूँ, 2765 को बहुत प्रसिद्धि मिली है, 2766
[और] खुशी,2767 इसी प्रकार [मेरी] स्थिति;2768
मैं समर्पित हूँ,2769 और नाज़ुक हूँ,2770
[और] सभी कष्टों से दूर रहे।2771 (162) [3536]

मैं अपने व्यवसाय के लिए बर्तनों और टोकरियों के भी कई गुणों का प्राप्तकर्ता हूं।
मैं वह व्यक्ति हूँ जिसकी परेशानियाँ दूर हो गई हैं।2775 (163) [3537]

मुझे चारों रंग मिल रहे हैं
हाथियों, घोड़ों और रत्नों का।
वे चीजें कभी खत्म नहीं होतीं:
यही पात्र देने में फल है। (164) [3538]

मलहम रखने के लिए ट्यूब देना2776
बुद्ध और सर्वोच्च समूह के लिए, मुझे पाँच परिणाम प्राप्त होते हैं,2777

2762 तुम्बाके , जल-पात्र
2763 या “बक्से”: करांडे
2764 dasānisaŋse . मैं यहाँ दस को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) अच्छी तरह से संरक्षित, (2) सुख से युक्त, (3) महान प्रसिद्धि वाले, (4) अच्छी स्थिति में, (5) समर्पित, (6) नाजुक, (7) संकट से बचा हुआ, (8) अच्छे कार्य कौशल, बर्तन और टोकरियों के प्राप्तकर्ता, (9) परेशानियाँ दूर हो जाती हैं, (10) अक्षय हाथियों, घोड़ों और चार रंगों के रत्नों के प्राप्तकर्ता।
2765 गुट्टो
2766 महायासवा
2767 s'ukhasamaṅgī
2768 में पीटीएस tathāgattī के लिए BJTS (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ tathā gatī का पाठ किया गया है , जिसका अर्थ है "और इस प्रकार का [अर्थात, महान] शरीर"।
2769 भट्टिकातो , “सेवा की,” यहाँ तक कि “एक सेवक”
2770 s'ukhumālo , जिसे परिष्कृत, कोमल भी कहा जाता है
2771 sabba-īti-parivajjito
2772 विपुल
2773 गुण
2774 reading samāvacaraṇaṃ mama with BJTS for PTS samāvacaraṇā mama
2775 s'u'vivajjita-ubbego
2776 यहाँ मैंने añjana-nāḷiyo (“मरहम की डंठलें” या “मरहम की नलियाँ”) पढ़ा, BJTS ने PTS hatthī līlaṅgake (“खेल-कूद वाले शरीर वाले हाथी”?) के लिए इसका इस्तेमाल किया है। पाठ दूषित है, और BJTS कम से कम समझ में आता है, हालाँकि यह मूल दान के क्रम से बाहर है (अर्थ में अपात्त्व योग्य होने की बात तो छोड़ ही दें), इसलिए यह एक नकली श्लोक हो सकता है - शायद किसी बाद के संपादक का पसंदीदा विषय, या बस कुछ ऐसा जो प्रसारण प्रक्रिया में किसी बिंदु पर जीवित अनुभव का हिस्सा नहीं रह गया हो? PTS के वैकल्पिक पाठों में °lilaṅgate , hatthalīlaṅgane और hattholiṅgake (!) शामिल हैं, जिनमें से कोई भी सहायक नहीं है। PTS पाठ के अलावा, BJTS वैकल्पिक पाठों का भी उल्लेख करता है। malabharaṇiyo , जिसका अर्थ भी संदिग्ध है (“रंजित आभूषणों वाली महिलाएं,” या इसे māla° , “पुष्प आभूषण?” पढ़ा जाए?)
2777 pañcānisaŋse . मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) एक [अच्छा] शरीर होना, (2) सभी शुभ गुणों से संपन्न होना

मेरे कर्मों के अनुसार। (165) [3539]

हर समय मेरे पास एक शरीर होता है
सभी शुभ चिह्नों से युक्त, 2778 दीर्घायु और ज्ञान से सुसज्जित, 2779 सभी दुखों से मुक्त। 2780 (166) [3540]

कैंची2781 देना जो पतली2782 थीं
[और] भिक्षुओं के लिए भी बहुत तीखा27832784
मुझे ज्ञान प्राप्त होता है, बेजोड़ 2785 और
शुद्ध, जो अशुद्धियों को दूर करता है। (167) [3541]

बुद्ध के लिए चिमटी देना27862787

[और] उत्कृष्ट सद्‌गुण वाले भिक्षु,2788
मुझे ज्ञान प्राप्त होता है, बेजोड़ 2789 और
शुद्ध, जो अशुद्धियों को दूर करता है। (168) [3542]

बुद्ध के लिए नाक साफ करने वाले 2790 रुपये देना 2791
[और] उत्कृष्ट सद्‌गुण वाले भिक्षु,2792
मुझे आठ परिणाम प्राप्त हुए, 2793
मेरे कर्मों के अनुसार। (169) [3543]

मुझे आस्था है2794 [और] नैतिकता है,2795

अंक, (3) लंबी आयु, (4) ज्ञान, (5) सभी दुखों से मुक्ति।

2778 सब्बा-लक्खाना-सम्पन्नो

2779 ā'yu-paññā-samāhito

2780 sabbāyāsa-vinimutto

2781 पिप्पले

2782 t'anu-dhāre = “ले जाने में पतला”? या जैसा कि आरडी सुझाव देते हैं, क्या इसे tanu के रूप में “शरीर” पढ़ा जाना चाहिए , यानी “शरीर पर ले जाया गया”?

2783 s'unisite

2784 यहाँ, जैसा कि पूरे पाठ में है, शाब्दिक रूप से, "भिक्षुओं की सभा के लिए," " संघ के लिए "

2785 अतुल , जिसका वजन नहीं किया जा सकता, जिसे मापा नहीं जा सकता, जिसकी बराबरी नहीं की जा सकती

2786 saṇḍāse

2787 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए”

2788 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, “सर्वोच्च [और] शानदार सद्‌गुण का”। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa (“समूह”) पढ़ता है।

2789 अतुल , जिसका वजन नहीं किया जा सकता, जिसे मापा नहीं जा सकता, जिसकी बराबरी नहीं की जा सकती

2790 नत्थुके । बीजेटीएस में इसे तत्थुके पढ़ा गया है । मूल दान के विवरण में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह दान मुख (मुख) और नाक (नत्थुकंग) के लिए शोधनंग (वहाँ शोधनंग) का था। मुख-सफाई करने वालों के लिए अलग-अलग आनिसंसा नीचे दिए गए हैं (श्लोक 194 [3568])। वर्तमान श्लोक में आनिसंसा का संबंध अंग्रेजी में जिसे हम "नाक साफ रखना" कहते हैं, उससे प्रतीत होता है, हालांकि मुझे नहीं पता कि पाली में भी आमतौर पर यही अर्थ निकाला जाता है या नहीं। मुख-सफाई करने वालों के लिए आनिसंसा (श्लोक 194 [3468], नीचे) निश्चित रूप से मूल दान की प्रकृति से मेल खाते हैं।

2791 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए”

2792 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्‌गुण का"। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa ("समूह") पढ़ता है।

2793 aṭṭhānisaṇse . मैं यहाँ आठ को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) विश्वास, (2) नैतिकता, (3) शर्म, (4) गलत काम का डर, (5) खुशी, (6) उदारता, (7) धैर्य और (8) ज्ञान।

2794 साधना

2795 sīlaŋ

शर्म,2796 पाप से डरने का गुण,2797

मैं खुशमिजाज, उदार और धैर्यवान हूं।
और ज्ञान मेरा आठवां गुण है। (170) [3544]

बुद्ध के लिए छोटी कुर्सियाँ देना27982799
[और] असाधारण सद्गुण वाले भिक्षु,2800
मुझे पाँच परिणाम प्राप्त हुए,2801
मेरे कर्मों के अनुसार। (171) [3545]

मैं एक प्रतिष्ठित कुल में पैदा हुआ हूँ,2802
मैं बहुत अमीर आदमी बन गया,2803
सभी लोग मेरा सम्मान कर रहे हैं,2804
मेरे लिए गौरव उत्पन्न हो रहा है।2805 (172) [3546]

एक लाख युगों से चार घोड़ों पर सवार पालकी2806 निरंतर मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं,
उन्हें देने में आनंद आ रहा है।2807 (173) [3547]

बुद्ध के लिए तकिए देना28082809
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2810
मुझे छह परिणाम प्राप्त हुए,2811
मेरे कर्मों के अनुसार। (174) [3548]

मेरा शरीर आनुपातिक है,2812
मुझे सम्मानित महसूस हो रहा है,2813 सौम्य,2814 सुंदर,2815

2796 hiriŋ

2797 ओट्टाप्पियाŋ

2798 पीठके

2799 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"

2800 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण का"। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa ("समूह") पढ़ता है।

2801 pañcānisaŋse . मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) प्रतिष्ठित जन्म, (2) बहुत धनी, (3) बहुत सम्मानित, (4) गौरवशाली, और (5) घोड़ों के साथ पालकियों की निरंतर आपूर्ति

2802 ucce kule

2803 mahābhogo bhavāmi

2804 sabbe maŋ apacāyanti

2805 रीडिंग मामा (सामान्य) पीटीएस मामाŋ (सामान्य या कर्म कारक) के लिए बीजेटीएस के साथ

2806 में पीटीएस शब्द caturassarā , "चार कोनों वाला," "आयताकार" के स्थान पर caturassakā ("चार घोड़ों वाला") पढ़ा गया है , हालाँकि बाद वाला भी इस संदर्भ में समझ में आता है।

2807 या उन्हें वितरित करना या साझा करना: सविभागा-रतो [अहाṃ]

2808 bhisiyo

2809 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"

2810 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, “सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण का”। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa (“समूह”) पढ़ता है।

2811 चानिसांगसे । मैं यहाँ छह को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) गद्दे, (2) विभिन्न प्रकार के आवरण, (3) विभिन्न प्रकार के लबादे, (4) विभिन्न प्रकार के गलीचे, (5) खाली या व्यर्थ नहीं, और (6) ध्यानमग्न/ झानों का साधक।

2812 समागत्तो , शाब्दिक अर्थ, "मैं एक समरूप शरीर वाला हूँ"

2813 apacito

2814 मुडुको

2815 c'ārudassano , शाब्दिक अर्थ, "देखने में सुखद"

मुझे एक ऐसा दल मिलता है जो बुद्धिमान है:2816
तकिये देने का यही फल है। (175) [3549]

सूती गद्दे 2817 और विभिन्न प्रकार के 2818
ऊन के आवरण2819 और रेशम के आवरण;2820
मुझे कई तरह की चीजें प्राप्त होती हैं
महीन भांग का कपड़ा2821 और ऊनी कंबल.2822 (176) [3550]

और लबादे2823 जो त्वचा पर कोमल हों,
और मुलायम चमड़े2824 और बांस2825 वाले; मुझे विभिन्न प्रकार के कालीन मिल रहे हैं:2826
तकिये देने का यही फल है। (177) [3551]

जहां तक मुझे याद है,2827
जब से मैंने विवेक प्राप्त किया है,2828
व्यर्थ नहीं, ध्यान ही मेरा बिस्तर है:2830
तकिये देने का यही फल है। (178) [3552]

विक्टर के लिए तकिए 2831 देना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2832
मुझे छह परिणाम प्राप्त हुए,2833
मेरे कर्मों के अनुसार। (179) [3553]

मुझे 2834 पर आराम दिया जा रहा है

2816 लभामि नानापरिवरण

2817 tūlikā

2818 PTS cittikā के लिए BJTS के साथ cittakā पढ़ना

2819 vikatikāyo

2820 k'aṭṭhissā

2821 v'ara-potthake

2822 k'ambale

2823 pāvārike

2824 मदुका-अजिना◦ , "नरम [मृग-चमड़े से बने]
2825 v'eṇiyo
2826 ◦ अत्थारे
2827 y'ato sarāmi attānaŋ , शाब्दिक अर्थ, "जब से मुझे स्वयं की याद आती है"
2828 या "जब से मैं यौवनारंभ में पहुंचा," yato patto 'smi viññuta , शाब्दिक रूप से, "जब से मैं यौवनारंभ में पहुंचा;" लेकिन BJTS सिंहली व्याख्या (näṇavat , "ज्ञान रखने वाला") का अनुसरण करते हुए, मैं इस शब्द का अनुवाद इसके व्यापक अर्थ में करता हूं, "समझ" या "विवेक"।
2829 या खाली: a-tuccho
2830 रीडिंग atuccho jhāna-maño (शाब्दिक अर्थ, "मैं वह हूँ जिसका बिस्तर ध्यान है , ध्यान संबंधी उपलब्धि") BJTS (और PTS विकल्प) के साथ PTS atucchojjhānamañño के लिए
2831 बिम्बोहेन
2832 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्गुण का"। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa ("समूह") पढ़ता है।
2833 चानिसांगसे । मैं यहाँ छह की गणना इस प्रकार करता हूँ: (1) गद्दीदार होना और एक महान शरीर होना, (2) अष्टांग मार्ग और भिक्षुत्व के चार फलों का ज्ञान, (3) दान, वशीकरण, आत्म-संयम और असीमता के रूपों का ज्ञान, (4) प्रतिज्ञाओं, सद्गुणों, प्रथाओं और अच्छे शिष्टाचार का ज्ञान, (5) आगे-पीछे चलने, प्रयास करने और परिश्रम का ज्ञान, और (6) नैतिकता, ध्यान, ज्ञान और अतुलनीय स्वतंत्रता का ज्ञान।
2834 या "ऊपर उठाया गया" "ऊपर रखा गया": पीटीएस उपपादमी के लिए बीजेटीएस के साथ उपपादमी पढ़ना

ऊन और कमल से बने तकिए, और साथ ही लाल चंदन से बने तकिए;
मेरे पास 2835 एक उत्कृष्ट शरीर है। 2836 (180) [3554]

उत्कृष्ट अष्टांगिक मार्ग और
भिक्षु जीवन से प्राप्त होने वाले चार फल:
मुझे इन बातों की जानकारी दी जाती है।
[और] मैं हर समय वहीं रहता हूँ। (181) [3555]

देना,2838 वश में करना,2839 और आत्म-संयम;2840 [और] असीमता के [चार] रूप:2841 इनका ज्ञान [मुझे] प्राप्त होता है
[और] मैं वहाँ हर समय निवास करता हूँ। (182) [3556]

प्रतिज्ञाएँ2843 और सद्गुण2844 और आचरण,2845 और अच्छे शिष्टाचार के प्रकार:2846 मुझे इनका ज्ञान दिया गया है।
[और] मैं प्रतिदिन 2847 [वहाँ] निवास करता हूँ। (183) [3557]

आगे-पीछे चलना2848 या प्रयास करना; वह प्रयास जो ज्ञान की ओर ले जाता है:2849 इन सबका ज्ञान मुझे प्राप्त होता है;
मैं अपनी इच्छा के अनुसार निवास करता हूँ। (184) [3558]

नैतिकता,2851 ध्यान2852
और ज्ञान,2853 अद्वितीय स्वतंत्रता:2854
मुझे इन बातों की जानकारी दी जाती है।

2835 रीडिंग मामा (सामान्य, शाब्दिक रूप से, "मेरे लिए [वहाँ हैं]") BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS मामांग (सामान्य या कर्म कारक) के लिए।
2836 उत्तमांगन , "सर्वोच्च अंग"
2837 विहार
2838 दाने
2839 महिला
2840 saññame = saṃyame की वैकल्पिक वर्तनी
2841 appamaññesu (BJTS में appamaññāsu लिखा है) rūpisu , अर्थात् चार ब्रह्मा-विहार या ईश्वरीय अवस्थाएँ: प्रेम (मेट्टा), करुणा (करुणा), सहानुभूतिपूर्ण आनंद (मुदिता) और समभाव (उपेक्खा)।
2842 विहार
2843 v'atte
2844 गुण
2845 रीडिंग paṭipatti with BJTS for PTS pañcame , "the fifth"
2846 ācārakiriyāsu ca , या "सही अभ्यास के रूपों में से"
2847 विहार
2848 c'aṅkame
2849 या "ज्ञानोदय की ओर" या "जागृति की ओर": बोधा-पक्खिके
2850 विहारमी
2851 sīlaŋ
2852 समाधि
2853 पन्ना
2854 vimutti ca anuttarā

[और] मैं 2855 [पूर्ण] आनंद में रहता हूँ। (185) [3559]

विक्टर के लिए पुआल की कुर्सियाँ 2856 देना
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2857
मुझे चार परिणाम प्राप्त होते हैं,2858
मेरे कर्मों के अनुसार। (186) [3560]

मैं सबसे अच्छी पालकी ढूंढ रहा हूँ।
सोने से बना [और] रत्नों से बना, हाथीदांत से बना [और] उत्तम लकड़ी से बना:2859
यह पुआल से बने स्टूल का फल है। (187) [3561]

विक्टर के लिए फुटस्टूल 2860 दे रहे हैं
[और] उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षु,2861
मुझे दो परिणाम प्राप्त होते हैं, 2862
मेरे कर्मों के अनुसार। (188) [3562]

मुझे कई वाहन प्राप्त हुए: 2863
यह एक पायदान का फल है।

दासी लड़कियां, दास और पत्नियां और मेरे सभी अन्य आश्रित
मेरी ठीक से देखभाल करो:
वह एक पायदान का फल है। (189) [3563]2865

अभिषेक के लिए तेल देना2866
बुद्ध और सर्वोच्च समूह के लिए, मुझे पाँच परिणाम प्राप्त होते हैं,2867
मेरे कर्मों के अनुसार। (190) [3564]

रोग का अभाव, सौंदर्य का होना,
[और] शिक्षा को शीघ्रता से समझ लेना2868

2855 विहारमी

2856 palālapīṭhe , BJTS में phalapīṭhe लिखा है , फल (लौकी?) से बने स्टूल।

2857 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्‌गुण का"। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa ("समूह") पढ़ता है।

2858 BJTS (और PTS alt.) PTS caturānisaŋse के लिए dvānisaŋse ("दो परिणाम") पढ़ते हैं (दो परिणाम) पढ़ा जाता है । मैं यहाँ चार परिणाम गिन रहा हूँ, इसलिए PTS पाठ को ही मान रहा हूँ: (1) सोने, (2) रत्नों, (3) हाथीदांत और (4) उत्तम लकड़ी से बनी उत्कृष्ट पालकी।

2859 danta-sāra-maye

2860 pādapīṭhe

2861 गुणवरुत्तमे , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्‌गुण का"। बीजेटीएस यहाँ अन्यत्र की तरह गण ("समूह") पढ़ता है।

2862 d'v'ānisaŋse . मैं यहाँ दो को (1) कई वाहन प्राप्त करना, और (2) दासों, पत्नियों और अन्य आश्रितों द्वारा उचित रूप से देखभाल करना मानता हूँ।

2863 y'āne

2864 सम्मा

2865 पीटीएस और बीजेटीएस इस बात से सहमत हैं कि इसे छह पैरों वाला श्लोक माना जाना चाहिए।

2866 t'el'abbhañjane , BJTS ग्लॉस निर्दिष्ट करता है कि ये शरीर पर मलने के लिए तेल हैं।

2867 pañcānisaŋse . मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) अच्छा स्वास्थ्य, (2) सुंदरता, (3) त्वरित समझ (या अनुप्रयोग) धम्म का , (4) भोजन और पेय की प्राप्ति, और (5) दीर्घायु।

2868 nisantitā , शाब्दिक रूप से, लागू करना, ध्यानपूर्वक अवलोकन करना; मैं इस शब्द के अनुवाद में BJTS सिंह. ग्लॉस (väṭahena) का अनुसरण करता हूँ, जिसका अर्थ है "समझना" (समझना)।

बहुत सारा खाना और पेय प्राप्त करना,
[और लंबा] जीवन2869 मेरे लिए पाँचवाँ है। (191) [3565]

शुद्ध मक्खन देने के लिए 2870
सर्वोच्च, उत्कृष्ट सद्‌गुण वाले भिक्षुओं, मुझे पाँच परिणाम प्राप्त होते हैं,2871
मेरे कर्मों के अनुसार। (192) [3566]

मैं बलवान हूँ, सुंदरता से परिपूर्ण हूँ, हमेशा खुश रहती हूँ2872 और जन्म से ही दुबली-पतली हूँ।2873
मैं रोगमुक्त और पवित्र हूँ।

घी देने का फल यही है। (193) [3567]

बुद्ध और सर्वोच्च समूह के लिए मुख शोधक 2874 प्रदान करना,
मुझे पाँच परिणाम प्राप्त हुए,2875
मेरे कर्मों के अनुसार। (194) [3568]

मेरी आवाज़ साफ़ है2876 [और] मधुर है,2877
मुझे अस्थमा की खांसी नहीं है।
और नीले कमलों की सुगंध2879
हमेशा मेरे मुँह से हवा निकलती रहती है। (195) [3569]

बुद्ध और सर्वोच्च समूह के लिए अच्छी तरह से तैयार किए गए 2880 दूध-दही 2881 देना,
मुझे बहुत आनंद आ रहा है।
[और] मेरे शरीर के प्रति सजगता।2885 (196) [3570]

2869 वर्ष

2870 सप्पिटेला , "घी-तेल"

2871 pañcānisaŋse . मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) शक्ति, (2) सुंदरता, (3) खुशी, (4) पतलापन, और (5) स्वास्थ्य और पवित्रता।

2872 pahaṭṭha°

2873 ° tanujo

2874 मुखधोवनका ŋ । BJTS (और PTS वैकल्पिक) ने मुखशोधनकम् पढ़ा , उसी अर्थ के साथ।

2875 pañcānisaŋse . मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) एक साफ (या स्पष्ट) गला, (2) मधुर ध्वनि वाली [आवाज], (3) खांसी से मुक्त, (4) अस्थमा से मुक्त, और (5) सांस जो नीले कमल की तरह महकती है।

2876 visuddhakaṇṭho

2877 मधुरसारो (बीजेटीएस मधुरसारो पढ़ता है)

2878 कासस्सासविज्जितो (बीजेटीएस कासासा° पढ़ता है)

2879 reading uppalagandho with BJTS for PTS upphalagandho (probably a typo)

2880 संपन्नांग

2881 दधिं

2882 भुंजमी । इस पद में मूल अर्थ "खाना" अधिक उपयुक्त हो सकता है, लेकिन मैं क्रिया को भोजन के संदर्भ में लेता हूँ।
शरीर के प्रति सजगता का भी "आनंद" लिया जा सकता है, इसलिए अधिक सामान्य "आनंद लेने" को ही प्राथमिकता दें।

2883 amataŋ

2884 में vittaṃ (संपत्ति, धन) का पाठ PTS cittaŋ ("हृदय") के लिए BJTS के साथ किया गया है, हालांकि BJTS का वैकल्पिक रूप bhattaṃ ("चावल") है।
इससे सबसे स्पष्ट पठन प्राप्त होगा।

2885 शाब्दिक रूप से, " शरीर की उत्कृष्ट (वरं) जागरूकता (कायगतं सतिं); बीजेटीएस वरम कयागतासतिं पढ़ता है , जिसका अर्थ समान है।

2886 रंगों और सुगंधों वाला शहद प्रदान करना
[और] बुद्ध के प्रति रुचि2887 [और] समूह, मैं [अब] स्वतंत्रता का रस पीता हूँ,2888

जो अद्वितीय है,2889 अतुलनीय.2890 (197) [3571]

बुद्ध और सर्वोच्च समूह के लिए वास्तविक 2891 रस अर्पित करते हुए, मैं चार फलों का अनुभव करता हूँ, 2892
मेरे कर्मों के अनुसार। (198) [3572]

बुद्ध और सर्वोच्च समूह को भोजन और पेय पदार्थ देने के बाद मुझे दस परिणाम प्राप्त हुए।2893
मेरे कर्मों के अनुसार। (199) [3573]

मैं हमेशा लंबी आयु वाला और बलवान, एक नायक, सुंदर और प्रसिद्ध व्यक्ति हूँ।
और खुश; एक प्राप्तकर्ता
खाने-पीने के मामले में, साहसी, 2894 होशियार। 2895
जैसे ही मैं दुनिया में पुनर्जन्म लेता हूँ,2896
मुझे ये गुण प्राप्त हो रहे हैं। (200) [3574]2897

बुद्ध के लिए धूप अर्पित करना28982899
[और] असाधारण सद्‌गुण वाले भिक्षु,2900
मुझे दस परिणाम प्राप्त हुए,2901
मेरे कर्मों के अनुसार। (201) [3575]

मेरे शरीर से अच्छी खुशबू आती है, मैं मशहूर हूँ।

2886 °upetaŋ , जिसका शाब्दिक अर्थ है, "से सुसज्जित"। इसका तात्पर्य यह है कि शहद का रंग, सुगंध और स्वाद अच्छा था।
2887 लिट., “विजेता के लिए”
2888 pive muttirasam ahaŋ
2889 अतुलियां .
2890 अनुपमाॅ
2891 य'अथाभूतं, जिसका अर्थ है "मूल", "प्राकृतिक"। मैं इसे पिछले श्लोक में मुक्ति के रस के संकेत से जुड़ा हुआ मानता हूँ।
2892 c'aturo phale , ie, the four fruits of monkhood, the four stages of the path: sotāpatti , sakadāgāmi , anāgāmi ,
अरहतफला (धारा में प्रवेश करने वाला, एक बार लौटने वाला, न लौटने वाला, अरिहंत)
2893 dasānisaŋse . मैं यहाँ दस को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) दीर्घायु, (2) शक्ति, (3) वीरता, (4) सौंदर्य, (5) प्रसिद्धि, (6) सुख, (7) भोजन प्राप्त करना, (8) पेय प्राप्त करना, (9) साहस, (10) बुद्धि।
2894 s'ūro
2895 paññāavā
2896 भावे , शाब्दिक अर्थ, "अस्तित्व में"
2897 पीटीएस और बीजेटीएस इस बात से सहमत हैं कि इसे छह पैरों वाला श्लोक माना जाना चाहिए।
2898 धूमाॅ ...
2899 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
2900 guṇavaruttame , शाब्दिक अर्थ, "सर्वोच्च [और] शानदार सद्‌गुण का"। BJTS यहाँ अन्यत्र की तरह gaṇa ("समूह") पढ़ता है।
2901 dasānisaŋse . मैं यहाँ दस को (1) के रूप में गिनता हूँ
2902 s'ugandhadeho , शाब्दिक अर्थ, "मैं वह व्यक्ति हूँ जिसके शरीर से सुखद गंध आती है"

तेज-सोचने वाला2903 साथ ही चतुर;2904
मेरे पास तीक्ष्ण और व्यापक ज्ञान है;2905
मेरे पास उज्ज्वल 2906 [और] गहन ज्ञान है। (202) [3576]

जैसे ही मैं दुनिया में पुनर्जन्म लेता हूँ,2907
मेरे पास व्यापक और सजग ज्ञान है।2908
अब, ऐसा करने की वजह से, मुझे
शुभ, सुखी शांति प्राप्त की।2909 (203) [3577]

बुद्ध की उपस्थिति में रहना मेरे लिए बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (204) [3578]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (205) [3579]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (206) [3580]

इस प्रकार पूज्य पिलिन्दवच्च2910 थेरा ने ये श्लोक कहे।

पिलिन्दवच्चा2911 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

2903 sīghapañño , "मैं उस बुद्धि के साथ एक हूँ जो शीघ्र है"

2904 कित्तिमा

2905 tikkhapañño bhūripañño , शाब्दिक अर्थ, "मैं तीक्ष्ण बुद्धि से एक हूँ, मैं व्यापक बुद्धि से एक हूँ"

2906 रीडिंग hāsa < hāsu° with BJTS (and PTS alt.) for PTS bhāsa-gambhīra-pañño

2907 भावे , शाब्दिक अर्थ, "अस्तित्व में"

2908 v'epulla-javana-pañño . javana का मूल अर्थ "तेज़" है और इसे कभी-कभी इसके समतुल्य माना जाता है sīgha , जिसका उल्लेख पिछले श्लोक में पहले ही किया जा चुका है।

2909 santisukhaŋ sivaŋ

2910 cf. #15, और ऊपर दिए गए नोट को देखें। BJTS में नाम पिलिन्दवच्च लिखा गया है । ऐसा लगता है कि वे एक ऐतिहासिक भिक्षु थे, जिनका उल्लेख धर्मग्रंथों और टीकाओं में बार-बार मिलता है। "पिलिंदा" उनका दिया गया नाम था, "वच्चा" उनके गोत्र (वंश) को दर्शाता है।

2911 BJTS में नाम Piḷindavaccha लिखा गया है ।

---

389. {392.}2912 Sela2913

हंसवती नगर में,
मैं सड़क व्यवस्था का प्रभारी था।2914
अपने सभी रिश्तेदारों को बुलाते हुए,
मैंने [उनसे तब] ये शब्द कहे: (1) [3581]

"बुद्ध का जन्म संसार में हुआ है, जो पुण्य का अतुलनीय क्षेत्र है।
फाउंडेशन फॉर एवरी वर्ल्ड, 2916
बलिदान प्राप्तकर्ता। (2) [3582]

क्षत्रिय और शहरवासी,
धनी लोग और ब्राह्मण, प्रसन्नता से भरे हुए,
उन्होंने स्वयं को एक गिल्ड में गठित किया है।2917 (3) [3583]

हाथियों पर सवार,2919 शाही अंगरक्षक,2920 रथ चालक2921 और पैदल सैनिक2922 अपने दिलों में आनंद के साथ प्रसन्न थे।
उन्होंने स्वयं को एक गिल्ड में गठित किया है।2923 (4) [3584]

शक्तिशाली स्वामी2925 और राजकुमार,2926

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 2912 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

2913 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

2914 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

2915 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

2916 शाब्दिक रूप से, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

2917 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

2918 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

2919 शाब्दिक रूप से, "गया"

2920 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

2921 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

2922 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

2923 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

2924 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
2925 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
2926 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

वैश्य और ब्राह्मण दोनों ही प्रसन्न थे, उनके हृदयों में आनंद व्याप्त था।
उन्होंने स्वयं को एक गिल्ड में गठित किया है।2927 (5) [3585]

रसोइये2929 [और] बाल संवारने वाले,2930
स्नान कराने वाले लड़के,2931 माला बनाने वाले,2932
प्रसन्न, उनके हृदयों में आनंद से भरा हुआ।
उन्होंने स्वयं को एक गिल्ड में गठित किया है।2934 (6) [3586]

रंगसाज़,2935 और बुनकर,2936
चमड़ा बनाने वाले,2937 और स्नान करने वाली लड़कियां,2938
प्रसन्न, उनके हृदयों में आनंद से भरा हुआ।
उन्होंने स्वयं को एक गिल्ड में गठित किया है।2939 (7) [3587]

तीर बनाने वाले,2941 चमड़े के कारीगर,2942 बढ़ई2943 और सोने के कारीगर,2944 टिन के कारीगर,2945 और चटाई बनाने वाले,2946
उन्होंने स्वयं को एक संघ में संगठित कर लिया है।2948 (8) [3588-3589]2949
किराए पर रखे गए नौकर2950 [और] संगीतकार,2951 और असंख्य दास और नौकर,2952 अपनी क्षमता के अनुसार,2953

2927 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
2928 लिट., "एक फूल पर"
2929 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
2930 khiḍḍāratiyaÁ
2931 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
2932 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"
2933 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
2934 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
2935 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
2936 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
2937 pariḷāho
2938 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
2939 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
2940 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
2941 samādhikusalo ahaŋ

2942 iddhipādesu kovido
2943 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”
2944 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
2945 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
2946 mahābhisakkasaṅkāso
2947 dosavyādhitikicchako
2948 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
2949 दिट्ठिगण्ड°
2950 लोकापज्जोटो
2951 sanarāmarasakkato
2952 नारदिको
2953 लिट., “में”

---

have2954 ने स्वयं को एक गिल्ड में गठित किया.2955 (9) [3590]

जल लाने वाले, 2956 लकड़ी इकट्ठा करने वाले, 2957
जुताई करने वाले,2958 और घास ढोने वाले,2959
अपनी सामर्थ्य की सीमा तक,2960
have2961 ने स्वयं को एक गिल्ड में गठित किया.2962 (10) [3591]

फूलवाले2963 और माली2964, साथ ही फल-सब्जी विक्रेता2965 और फल ढोने वाले2966, अपनी-अपनी क्षमता2967 के अनुसार
have2968 ने स्वयं को एक गिल्ड में गठित किया.2969 (11) [3592]

वेश्याएं, 2970 दासी लड़कियां जो पानी लाती हैं, 2971
केक बेचने वाली महिलाएं [या] मछली बेचने वाली महिलाएं,2972
अपनी सामर्थ्य की सीमा तक,2973
have2974 ने स्वयं को एक गिल्ड में गठित किया.2975 (12) [3593]

आप सभी एकत्रित होकर, आइए हम भी एक समूह के रूप में एकजुट हों; आइए अब हम सेवा करें
योग्यता का अतुलनीय क्षेत्र।" (13) [3594]

मेरी बातें सुनकर,

2954 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
2955 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”
2956 महास्सादंग
2957 महरसंग
2958 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए
2959 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
2960 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव

2961 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
2962 लिट., “मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था”
2963 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
2964 या “शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना”
2965 लिट., “बहिर्वाहों का विनाश”
2966 या “जो आगे बढ़ चुका था”: पब्बाजितो
2967 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।
2968 शाब्दिक रूप से, "यहाँ"
2969 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।
2970 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय उसके ऊपर रखता है।
2971 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"
2972 sampahaŋsitā
2973 भोट्टा , बीजेटीएस में इसे भेट्टा ("तोड़ने वाला") पढ़ा जाता है।
2974 chettā
2975 sotā
2976 pasaŋsitā
2977 akhilo
2978 visālo . BJTS इसे visallo (“दर्द से मुक्त”) पढ़ता है

एक ऐसा समूह बनाया जो हमेशा के लिए कायम रहेगा
[और] एक अच्छी तरह से निर्मित बैठक-कक्ष का निर्माण किया गया29792980
भिक्षु सभा में [उन लोगों के लिए].2981 (14) [3595]

उस हॉल को समर्पित करने के बाद, प्रसन्न मन से, उन सभी लोगों से घिरे हुए,
मैं संबुद्ध के पास गया। (15) [3596]

जगत के स्वामी, मनुष्यों के श्रेष्ठ बैल, संबुद्ध के पास पहुँचकर और गुरु के चरणों की पूजा करके,
मैंने ये शब्द [उस समय उससे] कहे थे: (16) [3597]

“ये तीन सौ लोग, हीरो, एक समूह के रूप में एक साथ हैं,
हे ऋषि, मैंने आपके लिए नियुक्त किया है।
यह अच्छी तरह से निर्मित बैठक-कक्ष।" (17) [3598]

आँखों को तृप्त करने वाला, इसे स्वीकार करते हुए
भिक्षुओं की सभा के सामने, 2984
तब बुद्ध ने ये श्लोक कहे।
मेरे तीन सौ [लोगों] के सामने: (18) [3599]

“तीन सौ और यह सर्वश्रेष्ठ भी2985, एक साथ एक के रूप में अनुरूप2986
इस [महान] उपलब्धि को हासिल करने के बाद,2987

आप सभी इसका आनंद लेने वाले हैं। (19) [3600]

जब आपका अंतिम पुनर्जन्म होगा, तब आप सभी निर्वाण प्राप्त करेंगे।
शीतलता की अवस्था, अतुलनीय,2988
अजन्मा, अमर शांति।" (20) [3601]

बुद्ध ने इसी प्रकार भविष्यवाणी की थी,2989
सर्वज्ञानी, 2990 सर्वश्रेष्ठ भिक्षु, 2991

2979 anīgho
2980 अकाथंकाथि , ilt. "नहीं कह रहा, 'क्यों'?"
2981 अनेजो
2982 विराजो
2983 खट्टा । बीजेटीएस इसे खंत (विनम्र) पढ़ता है ("विनम्र")
2984 रीडिंग गंटा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस गंधा ("सुगंधित")
2985 रीडिंग वट्टा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस मेट्टा ("लव")
2986 pakāsitā
2987 t'āretā
2988 अत्थकारेता का पाठ बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ तारेता ("क्रॉसर") के पीटीएस पुनरावृति के लिए किया गया है।
2989 k'āretā
2990 सम्पदालता , बीजेटीएस सम्पदालता
2991 पापेटा

और बुद्ध के वचन सुनकर,
मैंने [अपनी] मानसिक खुशी की घोषणा की।2992 (21) [3602]

तीस हजार युगों तक मैं
देवताओं की दुनिया में आनंदित।
देवताओं के स्वामी से पांच सौ बार,
मैंने वहाँ दैवीय शासन का प्रयोग किया। (22) [3603]

मैं भी एक हजार बार था
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। दैवीय शासन का प्रयोग करते हुए
तब सभी महान देवताओं ने मेरी पूजा की। (23) [3604]

यहाँ, इस मानव साम्राज्य में,2993 [मेरा]
मेरे रिश्तेदार मेरे अनुचर हैं।2994
जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ, तब वहाँ एक ब्राह्मण, वासेट्ठ, 2995 उपस्थित थे।
आठ सौ मिलियन की संपत्ति के साथ;2996
मैं उनका पुत्र था।

जन्म के समय मेरा नाम "सेला" था।
वैदिक विज्ञान के एक मास्टर।2997 (24-25) [3605-3606]

मैं पैदल घूमते हुए,2998 अपने छात्रों की सेवा करते हुए2999, तपस्वी केनिया3000 को देखा3000
उलझे बालों के साथ, राख लगाए हुए, 3002
बलिदान करने के लिए तैयार।3003
[उसे देखकर] मैंने ये शब्द कहे: [सेला:]
“पत्नी को साथ ला रहे हो? किसी शादी में जा रहे हो?3004
या आपने राजा को आमंत्रित किया है?3005 (26-27) [3607-3608]

2992 साहित्य , या "सहनकर्ता"
2993 में, BJTS के साथ kantā का पाठ किया गया है, जिसमें PTS द्वारा hantā की पुनरावृत्ति की गई है , जिसे दोनों पाठ श्लोक में अगले शब्द के रूप में पढ़ते हैं।
2994 हंत
2995 रीडिंग ātāpī with BJTS for PTS tātâpi (“also the Protector”)
2996 t'āpaso , इससे पंक्ति में नौ अक्षर बनते हैं, जिसे "हत्यारा" को संक्षिप्त करके आठ अक्षरों के रूप में उच्चारित करने की आवश्यकता है।
"स्लेयर" में
2997 samacitto
2998 'समासामो , (बीजेटीएस सिंह की व्याख्या के अनुसार; इसका मूल रूप समासामो भी हो सकता है , जिसका अर्थ है "हमेशा एक जैसा")
2999 a'sahāyo , शाब्दिक अर्थ, “मित्रहीन”
3000 रीडिंग दयासायो (और निम्नलिखित व्याख्या) पीटीएस दयायासो ("दयालुता के लिए प्रसिद्ध" "दयालुता-प्रसिद्ध") के लिए बीजेटीएस के साथ
3001 accherasanto
3002 अकुहो , शाब्दिक अर्थ, "धोखे से मुक्त" "ईमानदार"
3003 क'अतावी , अर्थात् एक अरहंत, जिसने वह किया है जो किया जाना चाहिए
3004 i'sisattamo
3005 nittiṇṇakaṅkho

मैं बलिदान करना चाहता हूँ3006
ब्राह्मणों के लिए जो देवताओं की तरह सोचते हैं,3007
लेकिन मुझे राजाओं ने आमंत्रित नहीं किया है।
[और] कोई बलिदान नहीं मिला है।” (28) [3609]

[केन्या:]
मेरे लिए दुल्हनें लाने का कोई मतलब नहीं है; मैं खुद भी दुल्हनों के पास नहीं जाता।
जिसे मैंने आज आमंत्रित किया है
यह अपने देवताओं के साथ दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है, शाक्यों को आनंदित करने वाला है।
जो प्राणियों को सुख प्रदान करता है 3008
सभी प्राणियों के प्रति मित्रता के कारण;3009

ये तैयारियाँ उनके लिए हैं। (29-30) [3610-3611]

जंगली मैंगोस्टीन का चमकीला रंग, 3010
अतुलनीय, असीम, बुद्ध, स्वरूप में अद्वितीय।
कल के लिए आमंत्रित किया गया है। (31) [3612]

जैसे भट्टी के ऊपर पीटा हुआ सोना, देवदार के कोयले की तरह चमकता हुआ, महान नायक बिजली की तरह चमकता है।
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को।3015 (32) [3613]

पहाड़ पर जलती हुई आग की तरह, पंद्रहवें दिन के चंद्रमा की तरह,3016 जलते हुए सरकंडों के समान रंग का —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (33) [3614] निडर, भय पर विजय पाने वाला,3017

3006 nimmāno

3007 अप्पमेय्या , शाब्दिक अर्थ, "मापा नहीं जा सकता"

3008 अनुपमा , शाब्दिक अर्थ, "वह जिसके लिए कोई रूपक नहीं है"

3009 sabbavākyapathātīto , शाब्दिक अर्थ, "वह जिसके लिए सभी कथनों के मार्ग अतीत में हैं"

3010 saccaneyyantago , शाब्दिक अर्थ, "वह जो सत्यों के अंत तक पहुँच चुका है ताकि उसे समझा जा सके [या निर्देश दिया जा सके, नेतृत्व किया जा सके, मार्गदर्शन किया जा सके (नेति का क्रियापद)]"

3011 जिनो

3012 sattasāravare . BJTS इसे महल को संशोधित करने के रूप में व्याख्या करता है, लेकिन पाली मुझे इससे अधिक अस्पष्ट प्रतीत होती है। v. [5887] और [6287] में बुद्ध-विशेषण के रूप में sattasāra° के प्रयोग की तुलना करें।

3013 रीडिंग akaṃ dhammakathaṃ ahaṃ with BJTS for PTS ahaŋ dhammakathaŋ ahaŋ ("मैं धम्म- प्रचारक मैं")

3014 nissāso , BJTS ग्लॉस māgē piṭataṭa heḷana vātaya ("वह हवा जिसे मैं नीचे फेंकता/अपने बाहरी हिस्से में निकाल देता हूँ")

3015 रीडिंग sabbagandhe 'tiseti (= atisayati) BJTS के साथ PTS sabbagandho ti seti ("यह 'सभी अच्छी सुगंध' को नीचे रखता है
") और इसके बाद बीजेटीएस सिंहली ग्लॉस

3016 बीजेटीएस में एटिसैंटो के लिए एडिसैंटो ("घोषणा") पढ़ा जाता है

3017 रीडिंग guṇatthavassa sabbaṃ taṃ phaleṃ tu paramambhūtaṃ with BJTS for PTS guṇatthavassapupphan tan phalan tu param abbhutaŋ ("वह फल जो सद्गुण के अर्थ में अत्यंत चमत्कारी रूप से खिलता है")

अस्तित्व-समाप्तकर्ता, 3018 ऋषि,
महान नायक शेर के समान है —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (34) [3615]

बुद्ध की शिक्षाओं में निपुण, दूसरों से कम कष्ट सहने वाला।
महान नायक हाथी के समान होता है —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (35) [3616]

महान शिक्षा देने में निपुण, अद्वितीय, बुद्ध-हाथी, महान नायक बैल के समान है।

मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (36) [3617]

असीम सौंदर्य, असीम प्रसिद्धि, विभिन्न चिह्नों को धारण किए हुए,
महान नायक इंद्र3022 के समान है —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (37) [3618]

शक्तिशाली व्यक्ति,3023 जिसका समूह शक्तिशाली है,3024
मैजेस्टिक वन, 3025 हार्ड टू अप्रोच, 3026
महान नायक ब्रह्मा के समान हैं।3027 —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (38) [3619]

टीचिंग-रीचर,3028 टेन-पावर्ड वन,3029
सर्वोत्कृष्ट शक्ति के स्वामी, 3030
महान नायक पृथ्वी के समान है —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (39) [3620]

नैतिकता नामक लहरों से परिपूर्ण, शिक्षा के ज्ञान को मथने वाला,

[?]), और BJTS ग्लॉस का अनुसरण किया: बुद्ध गुणकितियागे ए सियालु विपाक अतिशय विस्मयाजनक य ।
3018 पाठ का चौथा (अनुवाद में तीसरा) भाग त्रुटिपूर्ण प्रतीत होता है। IPTS में rasaddhovisamāyuto लिखा है , जिसका अर्थ है "शुद्ध स्वाद से बंधा हुआ"। BJTS में (टाइपोग्राफिकल त्रुटि?) saradvadhanisamāyuto (= rasad- hvanisaāmyuto ?) लिखा है। दोनों ही मामलों में वैकल्पिक अनुवाद और भी अनिश्चित हैं। मैं BJTS के सिंहली अनुवाद का अनुवाद करता हूँ, mad- hura svaradhvani yuktavūyem (- mihirihaddha ättem), जिसका अर्थ है "मैं मधुर ध्वनि से बंधा हुआ (मेरी ध्वनि मधुर है)"।

3019 reading khīṇe ayusi with BJTS for PTS khīṇ' ev' āyu pi ("जीवन भी निश्चित रूप से नष्ट हो जाता है")
3020 शाब्दिक रूप से, "आप सभी इसे सुनें" (द्वितीय व्यक्ति बहुवचन क्रिया)
3021 ya'sassī
3022 शाब्दिक रूप से, "इसलिए मैं खुश हूँ"
3023 दुःखान्तकरण बुद्ध , शाब्दिक अर्थ: "दुखों का अंत करने वाला बुद्ध"
3024 धम्मॅ ...
3025 जनायण , लिट., "मैंने उत्पादन किया"
3026 या "विधर्मी": कुटित्थिये
3027 रीडिंग titthikākiṇṇe with BJTS for PTS titthikâkiṇṇo ("मैं प्रतिद्वंद्वियों से घिरा हुआ हूँ")
3028 v'adanto , शाब्दिक अर्थ, "कहना," "बताना"
3029 में पीटीएस varaŋ ("उत्कृष्ट") के लिए BJTS (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ vadaṃ पढ़ा गया है।
3030 रीडिंग जनास्सा विद बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) फॉर पीटीएस °जिनासा ("विजेता का")

महान नायक समुद्र के समान है —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (40) [3621]

पहुँचना कठिन,3031 वश में करना कठिन,3032

अडिग,3033 उठा हुआ,3034 ऊंचा,3035
महान नायक माउंट मेरु3036 की तरह —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (41) [3622]

अनंत ज्ञान का, निष्पक्ष, 3037
अमापनीय, 3038 शीर्ष पर पहुंच गए, 3039
महान नायक आकाश के समान है —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (42) [3623]

डर और भय से ग्रस्त लोगों के लिए सहायता 3040, शरणार्थियों के लिए संरक्षण 3041, 3042
महान नायक सांत्वना प्रदान करता है3043 — मैंने उसे आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (43) [3624]

ज्ञान और मंत्रों का निवास स्थान,3045
पुण्य-क्षेत्र सुख चाहने वालों के लिए 3046
महान नायक, रत्नों की खान —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (44) [3625]

कम्फर्टर,3047 विस्मयकारी,3048
भिक्षुत्व के फल का दाता,
महान नायक बादल की तरह है3049 —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (45) [3626]

3031 रीडिंग sarado va sasaṅko 'haṃ with BJTS for PTS saraŋ divasasanko 'haŋ ("मैं झील के लिए दिन में चंद्रमा हूँ" [?])
3032 लिट., "मैं था"
3033 शाब्दिक रूप से, "अच्छी तरह से चला गया व्यक्ति," सुगाताŋ
3034 y'athāsattivasena
3035 v'āgīso , "[मैं एक हूँ] वाणी पर महारत के साथ"
3036 में विमतिपट्टा को पीटीएस विमतिंग पट्टा के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है , हालांकि बाद वाला (व्याकरणिक दृष्टि से कुछ हद तक गलत) समान अर्थ व्यक्त करता है।
3037 apades' ahaṃ को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS apaniŋ (समान अर्थ, apaneti से) के लिए पढ़ना
3038 tiṇṇasamsārasāgaro
3039 BJTS mañcado ("Mañcada") पढ़ता है
3040 BJTS में supaṭo ("Supaṭa") पढ़ा जाता है
3041 यह पीटीएस शब्द bodhisammajako ("बोधिसम्मजक") का बीजेटीएस पाठ है ।
3042 r'akkhasā = rākṣasā
3043 पन्नागा
3044 mahānubhāvā isayo
3045 k'amaṇḍalu-dharā . यह विशेष पात्र गैर-बौद्ध तपस्वियों का एक विशिष्ट चिह्न है।
3046 jaṭā-bhāra-bharita , शाब्दिक अर्थ, "गुंथी हुई चोटी और भार/भारी बोझ से भरा हुआ"।
3047 युगामत्तं च पेक्खंत , शाब्दिक अर्थ, "हल की लंबाई तक आगे देखना," यानी, बस थोड़ा सा, अपनी निगाहें सामने की जमीन पर टिकाए रखना।

3048 गच्चन्टी , शाब्दिक अर्थ, "जाना"
3049 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ सयान च उपसम्पन्न पढ़ना ("और यह आपूर्ति की गई है")

द आई ऑफ द वर्ल्ड, 3050 द हीरो, 3051
हर अंधकार का निवारण करने वाला, 3052
महान नायक सूर्य के समान है —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (46) [3627]

ऋषि, प्रकृति के द्रष्टा, वस्तुओं से मुक्ति के द्रष्टा, महान नायक चंद्रमा के समान है —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (47) [3628]

हे पूजनीय, संसार में विराजमान, शुभ चिह्नों से सुशोभित, अतुलनीय, महान ऋषि —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। [3629]3056

जिसका ज्ञान असीम है,3057
अतुलनीय नैतिकता,3058
जिसकी स्वतंत्रता का कोई सानी नहीं है,3059
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (48) [3630]

जिसका साहस3060 अतुलनीय है, जिसकी दृढ़ता अकल्पनीय है3061, जिसका प्रयास सर्वश्रेष्ठ है —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (49) [3631]

जुनून, नफरत, मूर्खता
और सभी विष नष्ट हो जाते हैं;
महान नायक एक नशे की तरह है3062 —
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (50) [3632]

सभी प्रकार के दर्द, अपवित्रता, रोग के अंधकार का निवारण होता है; महान नायक एक चिकित्सक के समान है।
मैंने उन्हें आमंत्रित किया है, बुद्ध को। (51) [3633]

3050 पतिहिरस्स इदान फलां
3051 lohadoṇiŋ gahetvāna
3052 v'anamajjhe , शाब्दिक अर्थ, "जंगल के बीच में"
3053 पीटीएस में 'अपैसिता' और बीजेटीएस में 'अवसिता' लिखा है ; ये दोनों शब्द समानार्थी हैं और एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जा सकते हैं।
3054 reading uggatejāna with BJTS for PTS uggatejana
3055 °saddena , शाब्दिक अर्थ, "ध्वनि के साथ"
3056 या "प्रशिक्षित:" विनीता
3057 appamaññāsu kovidā , अर्थात् "ईश्वरीय अवस्थाओं" (ब्रह्मविहारा) के अभ्यास में कुशल, अर्थात् प्रेम, करुणा, सहानुभूतिपूर्ण आनंद और समभाव।
3058 में abhilāsino शब्द को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS abhilābhino , "प्राप्त करना" के स्थान पर पढ़ा गया है।

3059 samayaŋ saŋviditvāna
3060 अतापी , शाब्दिक अर्थ, "जलना"
3061 saŋviggamānaso
3062 अगलम , सिंह। अगिल, अगरु, अगुरु

"मित्र, यह ध्वनि प्राप्त करना कठिन है, जिसे [यहाँ] "बुद्ध" कहा गया है। "बुद्ध", "बुद्ध" सुनना।"
आप सभी को मेरी तरह आनंदित होना चाहिए।"3063 (52) [3634]

[सेला:]
अपनी खुशी को अपने अंदर दबाकर न रखना
यह मेरे बाहर के लोगों तक प्रवाहित हुआ। मैं, आनंदमय विचारों से परिपूर्ण होकर,3064
उस समय मैंने उससे ये शब्द कहे: (53) [3635]

"तो फिर वह परम पूज्य, संसार का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का श्रेष्ठ पुरुष कहाँ है? उसके चले जाने के बाद मैं उसे कहाँ देख पाऊँगा?"
भिक्षुत्व के फल का दाता?" (54) [3636]

उन्होंने मेरा दाहिना हाथ पकड़ लिया,3065 रोमांचित होकर, अपने हाथों को आपस में जोड़कर, मुझे शिक्षाओं का राजा दिखाया,3066
जो दु:ख के तीरों को हटाता है। (55) [3637]

[केन्या:]
"क्या आप इस विशाल जंगल को देख रहे हैं, जो एक बड़े तूफानी बादल की तरह उठा हुआ है, गहरे नीले रंग का, बिल्कुल काजल की तरह।"
क्या यह समुद्र जितना ही दृश्यमान है?3068 (56) [3638]

बुद्ध अब वहां निवास कर रहे हैं।
अनियंत्रित-संरक्षक,3069 [महान] ऋषि, जो प्रशिक्षित किए जा सकने वालों को निर्देश देते हैं,
जागृति के भागों को ज्ञात करना।"3070 (57) [3639]

[सेला:]
जैसे प्यासा पानी की तलाश करता है, जैसे भूखा भोजन की खोज करता है, जैसे गाय अपने बछड़े के लिए ललचाती है,

---

3063 reading panasaṃ devagandhikaṃ with BJTS for PTS vansaṇḍe va gandhika� ("वन उपवन में सुगंधित")
3064 या "हाथी के ललाट लोब जितना बड़ा:" कुंभमट्टंग
3065 cittaŋ , शाब्दिक अर्थ, "विचार" या "मन"
3066 शाब्दिक रूप से, "ऐसा व्यक्ति बन गया है जिसके पास है"
3067 शाब्दिक अर्थ, "अडिग" "अविचलित"
3068 शाब्दिक रूप से, "अस्तित्व में आना"
3069 adantadamako का अर्थ या तो "अनियंत्रित को वश में करने वाला" या "अनियंत्रित को वश में करने वाला" हो सकता है; मैं हाइफ़न के साथ अस्पष्टता को खुला छोड़ देता हूँ, यहाँ "अनियंत्रित को वश में करने वाला" के लिए अपनी प्राथमिकता स्वीकार करता हूँ (जो कि BJTS का भी पाठ है, dametar पर RD देखें), और जप में उच्चारण की अनुशंसा करता हूँ जो यौगिक में पहले शब्द पर जोर और स्वर के माध्यम से इस बात पर जोर दे सकता है कि बुद्ध वह हैं जो अनियंत्रित/जंगली लोगों को वश में करते हैं।

3070 bodhento bodhapakkhiye , जिसे BJTS (37) जागृति या ज्ञानोदय के पहलुओं या गुणों के रूप में व्याख्यायित करता है- उल्लेख (बोध , यहाँ = बोधि , आरडी एसवी देखें)

मैं विजेता की तलाश में गया। (58) [3640]

शिष्टाचार और अच्छे आचरण का ज्ञान3071
मैंने अपने छात्रों को बुद्ध की उपस्थिति में जाने का प्रशिक्षण दिया।
शिक्षा के अनुरूप संयम:3072 (59) [3641]

'आशीर्वाद प्राप्त लोगों तक पहुंचना कठिन होता है, जैसे अकेले भटकते शेर।'
सावधानी से, कदम दर कदम चलते हुए,3073
मेरे पीछे आओ, हे पुरुषों। (60) [3642]

सांप के जहर की तरह भयानक, शेर की तरह, जानवरों के राजा की तरह, मदमस्त हाथी की तरह,
अतः बुद्धों तक पहुँचना कठिन है। (61) [3643]

हे मनुष्यों, [किसी भी आवश्यकता] की उपेक्षा करने वाले
[आपको खांसी या छींक आ सकती है], सावधानी से, कदम-दर-कदम चलते हुए,3074
बुद्ध की उपस्थिति में जाओ। (62) [3644]

बुद्धों के पास जाना कठिन है,3075
वे ऐसे लोग हैं जो एकांत का आनंद लेते हैं।
कम आवाज़ करो, 3076 पहुँचना मुश्किल, अपने देवताओं के साथ [दुनिया में] पूजनीय। (63) [3645]

जब मैं उससे प्रश्न पूछ रहा होता हूँ, या मैत्रीपूर्ण अभिवादन का आदान-प्रदान कर रहा होता हूँ,
तो आप सभी को कम आवाज करनी चाहिए;
वहाँ ऐसे खड़े हो जाओ जैसे तुम ऋषि हो।3078 (64) [3646]

वह किस महान शिक्षा का प्रचार कर रहा है?3079
शांतिपूर्ण, जो निर्वाण की ओर ले जाता है।
अर्थ को ध्यान से सुनें,3080
शिक्षा को प्रसन्नतापूर्वक सुनकर।"3081 (65) [3647]

संबुद्ध के पास पहुँचने पर

3071 ācāra-upacāraññū

3072 धम्मनुच्चवासंवरं (बीजेटीएस इसे धम्मनुच्चवी° पढ़ता है)

3073 pade padaŋ nikkhipantā , शाब्दिक अर्थ, "धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए [अपने पैर] रखना"

3074 pade padaŋ nikkhipantā , शाब्दिक अर्थ, "धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए [अपने पैर] रखना"

3075 durūpansaṅkamā

3076 अप्पासद्दा

3077 रीडिंग यदा 'हं बीजेटीएस के साथ पीटीएस यवाहां के लिए , "जहाँ तक मैं..."
3078 munibhutā va , ye, silently
3079 रीडिंग देसेटी विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस देसेसी , “आप उपदेश देते हैं”
3080 nisāmetha
3081 लिट., "महान शिक्षण," सद्धम्मसवनं सुखं

मैंने ऋषि से अभिवादन का आदान-प्रदान किया। [जब मैं] उनसे बातचीत कर रहा था,
मैंने [महान व्यक्ति] के निशान देखे।3083 (66) [3648]

मुझे तीस अंक दिखाई दे रहे हैं, केवल दो अंकों पर संदेह है:
अपनी शक्तियों के माध्यम से3084 ऋषि ने मुझे दिखाया
[उसका] लिंग एक आवरण में बंद है.3085 (67) [3649]

[और फिर बुद्ध ने] अपनी जीभ [उसके] कान3086 में और उसकी नाक पर रखी।
विजेता ने अपने माथे के ऊपरी सिरे को छुआ।3087
[और] उसने इसे अपनी जीभ से ढक लिया। (68) [3650]

मैंने उनके शुभ चिह्नों को देखकर, सभी गुणों को पूरा करते हुए, यह निष्कर्ष निकाला है कि, "वे एक बुद्ध हैं।"
मैं अपने सभी छात्रों के साथ आगे बढ़ा। (69) [3651]

मैं उन तीन सौ लोगों के साथ बेघर होने के लिए निकल पड़ा।
जब आठ महीने [अभी भी] नहीं बीते थे, हम सभी ने निर्वाण प्राप्त कर लिया।3089 (70) [3652]

अतुलनीय पुण्य क्षेत्र के लिए [अच्छे] कर्म करते हुए, हम सबने मिलकर पुनर्जन्म लिया।
हम सब मिलकर [दुनिया से] मुँह मोड़ लिया। (71) [3653]

मैंने [उस नए हॉल के लिए] 3091 छत की कड़ियाँ 3092 दीं, गिल्ड के नियमों के भीतर रहते हुए।
उस कार्य के कारण, मुझे शाबाश!
मुझे आठ अच्छे परिणाम मिल रहे हैं।3095 (72) [3654]

3082 k'athaŋ vītisāretvā
3083, अर्थात् महापुरुष के शरीर पर स्थित बत्तीस शुभ चिह्न , जो यह संकेत देते हैं कि वह या तो एक बुद्ध या फिर चक्र घुमाने वाला सम्राट।
3084 r'eading iddhiyā* with BJTS for PTS itthiyaÁ (“to a woman,” sic!)*
3085 k'osohitaŋ vatthaguyhaŋ , BJTS इसे kosohitavatthaguyhaŋ पढ़ता है
3086 k'aṇṇasote , “उसके श्रवण अंग पर”
3087 reading patamasi nalāṭantaṃ with BJTS for PTS paṭtimasanalāṭaŋ taŋ
3088 niṭṭhaŋ gantvā , शाब्दिक अर्थ, “निष्कर्ष पर पहुँचकर”
3089 सब्बे पत्त' अम्हा निब्बुतिन
3090 एकाटो , लिट., "एक के रूप में"
3091 शाब्दिक अर्थ, “देने के बाद”

3092 रीडिंग gopānasīyo with BJTS for PTS gopānasī
3093 रीडिंग vasī with BJTS (and PTS alt.) for PTS vasiŋ
3094 pūgadhamme
3095 हेतु , शाब्दिक अर्थ, कारण; मैं इन्हें ānisaṃsas (सिंह. anusas aṭak labami) के रूप में समझने में BJTS की व्याख्या का अनुसरण करता हूँ। BJTS
हेतु (जो शायद मेट्री कॉसा हो सकता है) के प्रयोग की व्याख्या इस प्रकार की गई है: "उस अच्छे कर्म, यानी उस कर्म को, वास्तविक बनाना-"

मेरी पूजा सभी दिशाओं में की जाती है, और मेरे पास अमृतमय भोजन है;
मैं सबका सहारा हूँ;3097
मुझे आतंक का अनुभव नहीं होता।3098 (73) [3655]

मुझे कोई बीमारी नहीं होती।
और मैं अपनी लंबी आयु की रक्षा करता हूँ। मैं उत्तम त्वचा वाला व्यक्ति हूँ।
मैं उन आवासों में रहता हूँ जिन्हें मैं चुनता हूँ।3100 (74) [3656]

गिल्ड के नियम के भीतर शेष3101,3102 मैंने आठ शहतीर दिए3103 [संख्यांकित]। आठवें के बाद3104 [मुझे प्राप्त हुआ] विश्लेषण3105 अरहंतशिप के साथ। (75) [3657]

सभी उपलब्धियाँ प्राप्त,3107 कर्तव्य पूर्ण,3108 दोषमुक्त,3109 [मैं] आज आपका पुत्र हूँ, महान ऋषि।
[और] “आठ राफ्टर्स”3110 [अब मेरा] नाम है। (76) [3658]

गिल्ड के नियम के भीतर शेष3111,3112 स्तंभ3113 मैंने दिए3114 [संख्यांकित] पाँच। उस कार्य के कारण, शाबाश [मेरे द्वारा],
मुझे पाँच अच्छे परिणाम मिल रहे हैं।3115 (77) [3659]

पुत्र।" मैं यहाँ आठ को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) हर जगह पूजा जाता है, (2) अमृतमय भोजन, (3) सभी द्वारा समर्थित, (4) कोई भय नहीं, (5) कोई रोग नहीं, (6) लंबी आयु, (7) उत्तम त्वचा, (8) चुने हुए या वांछित निवास।

3096 पूजितो
3097 पीटीएस पतिट्ठा भोसिŋ सब्बेसां के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ पतिठ होमी सब्बेसां पढ़ना
3098 शाब्दिक रूप से, "होना," "पाना"
3099 tā'so
3100 ā'vā'se patthite vase
3101 रीडिंग vasī with BJTS (and PTS alt.) for PTS vasiŋ
3102 pūgadhamme
3103 शाब्दिक अर्थ, "देने के बाद"
3104 या, "उन आठ के अतिरिक्त"
3105 पटिसम्भिदा , अर्थात् (चार) विश्लेषणात्मक गुणों में निपुणता, अरहंतत्व का एक लक्षण।
3106 शाब्दिक अर्थ, "और"। यहाँ ' ca' दो अलग-अलग ānisaṃsas को एक में जोड़ता है, जिसे अंतिम पद में एकवचन सर्वनाम etaŋ से संदर्भित किया गया है।
3107 sabbavositavosāno , शाब्दिक अर्थ, "वह व्यक्ति जिसने सभी सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हों," "अरहंत होना"

3108 काताकिको , यानी, "अरिहंत होना"

3109 अनासावो , यानी, "अरिहंत होना"

3110 अठगोपनासि नाम

3111 रीडिंग vasī with BJTS (and PTS alt.) for PTS vasiŋ

3112 pūgadhamme

3113 thamhāni

3114 शाब्दिक रूप से, "देने के बाद"

3115 हेतु , शाब्दिक अर्थ, कारण; मैं बीजेटीएस का अनुसरण करते हुए इन्हें आनिसंस (सिंह. अनुसस पहक लबामि) के रूप में समझता हूँ। मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) प्रेम से अविचलित, (2) धनी, (3) जिसके वचन सुने जाते हैं, जिससे कोई अपराधबोध नहीं होता, (4) मन अनियंत्रित नहीं, अविचलित, और (5) अरहंत (निर्मल, आदरणीय, आज्ञाकारी, कर्तव्य पूर्ण)।

मैं प्रेम से अविचलित रहता हूँ,3116
मेरे पास संपत्ति की कमी नहीं है,3117
मैं उन लोगों में से एक हूँ जिनके शब्दों को लोग अच्छे से लेते हैं।3118
[और] इसी प्रकार मैं कोई अपराध नहीं करता।3119 (78) [3660]

मेरा दिमाग बेकाबू नहीं है,3120
मैं किसी भी बात से विचलित नहीं होता, ईश्वर की कृपा से मेरा कोई दाग नहीं है।
उस कार्य के कारण, शाबाश [मेरे द्वारा]। (79) [3661]

मैं आदरणीय हूँ,3122 आज्ञाकारी हूँ,3123
कर्तव्य पूर्ण,3124 दोषमुक्त;3125
मैं आपका अनुयायी हूँ, महान नायक।
एक पूजनीय भिक्षु,3126 हे ऋषि। (80) [3662]

एक अच्छी तरह से बनी पालकी बनाकर, मैंने [फिर] उस हॉल को समर्पित किया।3127
उस कार्य के कारण, मुझे शाबाश!
मुझे पाँच अच्छे परिणाम मिल रहे हैं।3128 (81) [3663]

मैं एक प्रतिष्ठित कुल में पैदा हुआ हूँ,3129
मैं बहुत अमीर आदमी बन गया,3130
मैं वह व्यक्ति हूं जो सभी सफलताएं प्राप्त करता है।
मैं लालच से ग्रस्त नहीं हूँ।3133 (82) [3664]

जिस भी गाँव में मैं चाहूँ

बुद्ध का निष्कलंक अनुयायी)।

3116 acalo homi mettāya

3117 अनुनाभोगवा

3118 adeyyavacano homi

3119 न धनसेमि यथा अहं

3120 पाठ abhantù� mānasaù� mama, BJTS के अनुसार (भंत = डगमगाना, डगमगाना, अस्थिर, अनियंत्रित गाड़ी के लिए प्रयुक्त) PTS āgataŋ mānasaŋ mamaŋ (वैकल्पिक mama) के लिए, जिसका अर्थ है "मेरा मन आ गया है"। PTS एक वैकल्पिक पाठ के रूप में asantaŋ (शांति का अभाव, विचलित) भी देता है , जो āgataŋ से बेहतर होगा ।

3121 vimalo homi sāsane

3122 sagāravo

3123 sappaṭisso

3124 काताकिको , यानी, "अरिहंत होना"

3125 अनासावो , यानी, "अरिहंत होना"

3126 भिक्खु तन वन्दते , शाब्दिक अर्थ, "एक भिक्षु जिसकी पूजा की जाती है"

3127 paññapes' ahaŋ

3128 हेतु , शाब्दिक अर्थ, कारण; मैं बी.जे.टी.एस. का अनुसरण करते हुए इन्हें आनिसंस (सिंह. अनुसस पहक लबामि) समझता हूँ। मैं यहाँ पाँचों को इस प्रकार गिनता हूँ: (1) अच्छा जन्म, (2) अपार धन, (3) सर्वोपरि सफलता, (4) कंजूसी या लोभ का अभाव, (5) जादुई पालकी।

3129 ucce kule

3130 mahābhogo bhavāmi

3131 पीटीएस सब्बासंपत्तिको के लिए बीजेटीएस के साथ सब्बासंपत्तिको होमी पढ़ना

3132 शाब्दिक अर्थ, “मुझे नहीं मिला”, “मुझे नहीं पता”, “मुझे अनुभव नहीं होता”

3133 मैकचेराŋ = मैकचेरियाŋ2

मेरी पालकी आकर रुकती है,3134
उस सर्वश्रेष्ठ पालकी के माध्यम से,
मैं इच्छा अनुसार यात्रा करता हूँ। (83) [3665]

उस पालकी के उपहार के कारण, मैंने अपने भीतर के सारे अंधकार को दूर कर दिया।
ऋषि, यह भिक्षु,3135 सभी शक्तियों से संपन्न
विशेष ज्ञान,3136 आपकी पूजा करता है। (84) [3666]

मैंने अपने सभी कर्तव्यों का निर्वाह किया।
और दूसरों के कर्तव्य भी।3137
उस नेक काम की वजह से, मैं
निर्भय शहर में प्रवेश किया।3138 (85) [3667]

मैंने बुद्ध को भोजन दिया और
साथ ही वह अच्छी तरह से निर्मित हॉल भी।
उस कार्य के कारण, मुझे शाबाश!
मैं उस सर्वोत्तम अवस्था में पहुँच गया।3139 (86) [3668]

संसार में जो लोग पशुओं को वश में करने में कुशल हैं, वे इन हाथियों और घोड़ों को वश में करें। विभिन्न प्रकार के दंडों का प्रयोग करते हुए।3140

वे क्रूरता के माध्यम से पालतू बनाते हैं।3141 (87) [3669]

ऐसा नहीं,3142 हे महान नायक, क्या तुम यहाँ पुरुषों और महिलाओं को वश में करते हो?
बल का प्रयोग न करना,3143 बिना हथियारों के,3144
आप सर्वोच्च वशीकरण में वश में करते हैं।3145 (88) [3670]

दान देने के गुणों की प्रशंसा करते हुए3146
हे ऋषि, आप उपदेश देने में निपुण हैं;
एक ही प्रश्न का उत्तर देते हुए3147
हे ऋषि, आपने तीन सौ को मुक्त किया। (89) [3671]

3134 उपतित्तति , शाब्दिक अर्थ, "वहाँ खड़ा है," "दृढ़ता से खड़ा हो जाता है"

3135 थेरो , "बुजुर्ग"

3136 सब्बाभिन्ना-बालापट्टो

3137 para-kiccatta-kiccāni , "वे कर्तव्य जो दूसरों द्वारा किए जाने हैं"। मैं इस संयुक्त शब्द को पढ़ते समय BJTS की व्याख्या का अनुसरण करता हूँ; इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उसने अपने स्वयं के कर्तव्यों का पालन किया, जिसमें दूसरों की सेवा से संबंधित कर्तव्य भी शामिल हैं।

3138 पविसिं अभयं पुराण अर्थात निर्वाण।

3139 PTS seṭṭhan taŋ के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ seṭṭhattaṃ (शाब्दिक रूप से, "सर्वोत्तमता") का पाठ करना

3140 कैरेत्वा (बीजेटीएस पढ़ता है करित्वा) कैराना नाना

3141 रीडिंग dāruṇena damenti te with BJTS for PTS dārune na damenti te , "They do not tame the cruel ones."

3142 रीडिंग na h'evaṃ with BJTS for PTS na heva

3143 adaṇḍena

3144 अ'सत्थेना

3145 उत्तम महिला

3146 रीडिंग vaṇṇe kittento with BJTS for PTS vaṇṇaŋ kittento , "प्रशंसा करना सद्गुण"

3147 रीडिंग ekapañhaṃ with BJTS for PTS ekapañhe , "एकल प्रश्न"

हम सारथी के वश में हैं,3148
पूरी तरह से मुक्त,3149 पवित्र,3150 सभी विशेष ज्ञानों द्वारा सशक्त,
बेस को नष्ट करने में बुझा दिया गया।3152 (90) [3672]

उस समय मैंने जो उपहार दिया था, उसके बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, हर भय पर विजय प्राप्त कर ली गई है:
हॉल देने का यही फल है। (91) [3673]

बुद्ध की उपस्थिति में मेरा होना3153
यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (92) [3674]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (93) [3675]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (94) [3676]

इस प्रकार पूज्य सेला थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सेला थेरा की कथा का अंत हो गया है।

3148 सारथी । सारथी , कोचमैन या सारथी, घोड़ों के प्रशिक्षक को भी दर्शाता है, जो घोड़ों को नियंत्रण में रखता है।
3149 s'u'vimiuttā
3150 anāsavā
3151 निब्बुता , शाब्दिक अर्थ, "बुझा हुआ," "शांत," अर्थात् निर्वाण में।
3152 उपाधिक्खये , अर्थात्, "पुनर्जन्म के आधार के विनाश में।" उपाधि (पुनर्जन्म से आसक्ति, पुनर्जन्म का कारण, निर्वाण में बाधा) को उपाधियों (बहुवचन) की विभिन्न सूचियों में वर्गीकृत किया गया है , जैसे आसक्ति, गलत विचार, दोष, कर्म, बुरा आचरण आदि।
3153 बीजेटीएस, मानक छंद के इस भिन्न रूप को प्रस्तुत करने में पीटीएस से सहमत है।

---

390. {393.}3154 सब्बाकित्तिका3155

मैंने विश्व के नेता को देखा, (3d) [3679]3156
डिनर प्लेट के समान चमकता हुआ वृक्ष,3157 दीपों के वृक्ष के समान प्रज्वलित, भोर के तारे के समान दीप्तिमान,3158
बादलों के समूह में बिजली की तरह, (1) [3677]

भयभीत नहीं, कभी भयभीत नहीं, शेर की तरह, पशुओं का राजा, ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशित करता हुआ,3159
विधर्मियों के समूहों को कुचलना,3160 (2) [3678]

इस [संपूर्ण] दुनिया को ऊपर उठाते हुए, हर संदेह को दूर करते हुए,3161
जानवरों के राजा की तरह दहाड़ते हुए। (3a-c) [3679a-c]3163

उलझे बालों के साथ, खाल ओढ़े, ऊंचे, मजबूत और शक्तिशाली, मैं
took3164 [my] منا ...
इसे [उसके] पैरों के तलवों पर फैला दो। (4) [3680]

एक [सुगंधित] काली लता लेते हुए,3167
मैंने तथागत को अभिषेक किया।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3154 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3155 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
3156 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
3157 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
3158 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
3159 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
3160 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
3161 शाब्दिक अर्थ, “गया”
3162 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
3163 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
3164 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
3165 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
3166 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में गेण्डु पढ़ा जाता है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
3167 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
3168 °विकुटी°; मैं इसे परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तुलिका°) के रूप में समझता हूँ।

बुद्ध का अभिषेक करने के बाद,3169
मैंने विश्व के नेता की प्रशंसा की: (5) [3681]

“हे महान ऋषि, बाढ़ पार करने वाले, आप [संपूर्ण] विश्व को ऊपर उठा रहे हैं। आप ज्ञान के प्रकाश से जगमगा रहे हैं।”
[आपका] सर्वोच्च बिजली जैसा ज्ञान। (6) [3682]

आप शिक्षा का पहिया घुमाते हैं, आप प्रतिद्वंद्वी विधर्मियों को कुचलते हैं,3172
बुल, बैठकों में विजेता, 3173
आप [पूरी] दुनिया को हिला रहे हैं। (7) [3683]

विशाल सागर की लहरों की तरह, जो किनारे से टकराकर टूट जाती हैं, हर भ्रामक दृष्टिकोण बिखर जाता है।
[जब यह दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है]3174 आपकी जानकारी पर। (8) [3684]

जब एक नेट3175 जिसमें बहुत महीन
झील में जाल बिछाया गया है3176, जीव3177 जाल में उलझ गए हैं3178

तुरंत [खुद को] उत्पीड़ित पाते हैं। (9) [3685]

अतः संसार में विभिन्न संप्रदायों से जुड़े विधर्मी,3179
हे सुखी, छटपटाओ,3180
आपके महान ज्ञान में उलझा हुआ।3181 (10) [3686]

बाढ़ में फंसे लोगों के लिए आप ही सहारा हैं, आप ही प्रभु हैं, जिनके कोई रिश्तेदार नहीं हैं, भय से पीड़ित लोगों के लिए आप ही शरण हैं।

घास या ऊन (देखें आरडी., एसवी)

3169 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
3170 लिट., "एक फूल पर"
3171 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
3172 khiḍḍāratiyaÁ
3173 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
3174 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
3175 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
3176 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
3177 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
3178 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
3179 pariḷāho
3180 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
3181 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
3182 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
3183 samādhikusalo ahaŋ
3184 iddhipādesu kovido

राहत3185 स्वतंत्रता चाहने वालों के लिए, (11) [3687]

एकमात्र नायक,3186 अद्वितीय व्यक्ति,3187
करुणा और प्रेम का ढेर, 3188
नैतिक एक, 3189 अद्वितीय, 3190 शांतिपूर्ण, 3191
मास्टर,3192 न्यूट्रल,3193 द विनिंग रोड,3194 (12) [3688]

ज्ञानी,3195 जिसका भ्रम नष्ट हो गया,3196
कामवासना रहित,3197 जो अनकही बातें कहता है,3198
आपने नफ़रत को त्याग दिया है (3199)
स्टेनलेस वन,3201 प्रतिबंधित,3202 शुद्ध वन,3203 (13) [3689]

आसक्ति-मुक्त,3204 अभिमान का नाश,3205
अरहंत, 3206 त्रिलोक-अग्रदूत, 3207
सीमा-मुक्त,3208 शिक्षण-सम्मानकर्ता,3209
लक्ष्य-प्राप्तकर्ता,3210 जिसका नियम मित्रता है,3211 (14) [3690]

आप फेरी अक्रॉस3212 एक जहाज की तरह,

3185 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

3186 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है

3187 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

3188 mahābhisakkasaṅkāso

3189 dosavyādhitikicchako

3190 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

3191 दिठ्ठिगण्ड°

3192 लोकापज्जोटो

3193 sanarāmarasakkato

3194 नारदिको

3195 लिट., “में”

3196 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।

3197 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”

3198 महास्सादंग

3199 महरसंग

3200 शब्द, "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"

3201 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha

3202 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव

3203 पीटीएस याहिŋ ताहिŋ; बीजेटीएस ताहिं ताहिं

3204 लिट., "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंध से भरा हुआ था"

3205 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]

3206 या “शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना”

3207 लिट., “बहिर्वाहों का विनाश”

3208 या “जो बाहर गया था”: पब्बाजितो

3209 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।

3210 लिट., “यहाँ”

3211 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।

3212 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय उसके ऊपर रखता है।

राहत लाओ3213 जैसे दबा हुआ खजाना,3214
निर्भयता से भरे हुए हैं, जैसे शेर होता है।

अभिमानी3216 हाथी-राजा की तरह।" (15) [3691]

उन दस छंदों से प्रशंसा करने के बाद
महान प्रसिद्धि के पद्ममुत्तरा
गुरु के चरणों की पूजा करने के बाद, मैं चुपचाप खड़ा रहा। (16) [3692]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
भिक्षुओं के बीच खड़े शिक्षक
सभा ने तब ये आयतें पढ़ीं: (17) [3693]

जिसने मेरी नैतिकता की प्रशंसा की,
मैं अपने ज्ञान और शिक्षण के आधार पर उनके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (18) [3694]

वह साठ हजार युगों तक देवताओं की दुनिया में आनंदित रहेगा। अन्य देवताओं पर विजय प्राप्त करते हुए,
वह शासन करेगा। (19) [3695]

इसके बाद, अपने पुण्यमय मूल से प्रेरित होकर, वह भगवान गौतम के विधान में आगे बढ़ेगा। (20) [3696]

आगे बढ़ते हुए, बचते हुए
उसके शरीर के साथ किए गए बुरे कर्म3217, उसके सभी दोषों को नष्ट करते हुए,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा,3218 बेदाग।" (21) [3697]

"जैसे कोई बादल गरजते हुए इस दुनिया की [बारिश की] प्यास बुझाता है,"
आपने भी ऐसा ही किया, महान नायक!
मुझे अपनी गर्जना से तृप्त करो। (22) [3698]

नैतिकता, ज्ञान की प्रशंसा करते हुए,
शिक्षण और विश्व के नेता,

3213 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"

3214 sampahaŋsitā

3215 भोट्टा , बीजेटीएस में इसे भेट्टा ("तोड़ने वाला") पढ़ा जाता है।

3216 chettā

3217 sotā

3218 pasaŋsitā

मुझे परम शांति प्राप्त हुई।
निर्वाण, अविचल अवस्था। (23) [3699]

अतः अब वास्तव में भगवान,

वह मनमोहक आकृति लंबे समय तक बनी रहे;
[लोगों]3219 को यह सीखना चाहिए कि [अब] क्या ज्ञात है,3220
और [उन्हें] अमर अवस्था प्राप्त करनी चाहिए।3221 (24) [3700]

यह मेरा आखिरी प्रयास है;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं। सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए,
मैं [अब] जीवित हूँ, बेदाग। (25) [3701]

एक लाख युगों में
क्योंकि मैंने [उस समय] बुद्ध की प्रशंसा की थी, इसलिए मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
यह बुद्धों की प्रशंसा का फल है। (26) [3702]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो गए हैं। सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (27) [3703]

बुद्ध की उपस्थिति में मेरा होना3222
यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) [3704]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (29) [3705]

इस प्रकार पूज्य सब्बकित्तिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सब्बकित्तिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

3219 akhilo
3220 visālo . BJTS इसे visallo (“दर्द से मुक्त”) पढ़ता है
3221 anīgho
3222 अकाथंकाथि , ilt. "नहीं कह रहा, 'क्यों'?"

---

391. {394.}3223 मधुदायक3224

सिंधु नदी के किनारे मेरा एक सुंदर आश्रम था।
There3225 मैं छात्रों को निर्देश दे रहा हूँ
इतिहास और [संकेतों को पढ़ने] में। (1) [3706]

वे सिंधु नदी की ढलानों पर रहते थे।
शिक्षाओं की इच्छा रखने वाले,3226 विद्वान लोग,3227
वैदिक विज्ञान में स्नातकोत्तर,3228
अच्छी शिक्षा सुनना चाहते हैं.3229 (2) [3707]

वे व्याख्या करने में कुशल थे3230
शकुन और संकेतों को पढ़ना।3231
जीवन के अंतिम अर्थ की खोज में,
फिर वे जंगल में रहने लगे। (3) [3708]

उस समय सुमेधा नामक सम्बुद्ध संसार में प्रकट हुए। हम पर दया से भरकर,
[बुद्ध, मार्गदर्शक] 3232 हमारे पास आए। (4) [3709]

घास से चटाई बनाना3233
विश्व के नेता सुमेधा के लिए,
वह महान नायक जो पास आ रहा था,
मैंने इसे दुनिया के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति को दे दिया। (5) [3710]

मैंने जंगल से शहद लाकर सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को अर्पित किया।
संबुद्ध ने उपभोग कर लिया था
[इसने] [उस समय हमसे] ये शब्द कहे: (6) [3711]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3223 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3224 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

3225 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

3226 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

3227 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

3228 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

3229 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

3230 लिट., "गया"

3231 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

3232 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

3233 शाब्दिक रूप से, "योग्य"

जिसने मुझे यह शहद दिया,
अपने हाथों से किए गए कार्यों से [अच्छी तरह संतुष्ट होकर], मैं उनके बारे में विस्तार से बताऊंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (7) [3712]

इस शहद देने की वजह से, और घास की चटाई की वजह से, तीस हजार युगों तक वह
देवताओं के संसार में आनंदित होगा। (8) [3713]

तीस हजार युगों के बाद, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (9) [3714]

उस व्यक्ति के धम्म का योग्य उत्तराधिकारी , धम्म की वैध संतान, सभी दोषों को भली-भांति जानने वाला,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग।" (10) [3715]

देवताओं के लोक से यहाँ आकर, जब मैं अपनी माँ के गर्भ के पास पहुँचा, तब शहद की वर्षा हुई;3234
पृथ्वी शहद से ढकी हुई थी।3235 (11) [3716]

जब मैं गर्भ से बाहर आ रहा था, मानो बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण ढंग से,3236 तभी शहद की बारिश हुई
मेरे लिए लगातार बारिश हो रही है। (12) [3717]

घर छोड़कर मैं बेघर हो गया।
मुझे 3237 खाद्य पदार्थ और पेय प्राप्त हो रहे हैं:
शहद देने का यही फल है। (13) [3718]

चाहे मैं मनुष्य के रूप में जन्म लूं या दिव्य रूप में, मेरी सभी इच्छाएं पूरी होती हैं।
सिर्फ उस शहद के उपहार की वजह से,

3234 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

3235 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

3236 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

3237 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया।3238 (14) [3719]

जब भगवान बारिश कर रहे होते हैं, मैं हमेशा चार उंगल ऊँची घास पर पवित्र और सुखी रहता हूँ।
या3239 एक पेड़ से ढका हुआ3240 जो पूरी तरह से खिल गया है,3241
एक खाली घर में, एक मंडप में, [या] पेड़ की जड़ में।3242 (15-16) [3720]3243

मैंने अस्तित्व के सभी पहलुओं पर विजय प्राप्त कर ली है।
बड़ा [या] छोटा [या] मध्यम.3244
आज मैं दोषों से मुक्त हूँ;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (17) [3721]

उस समय मैंने जो उपहार दिया था, उसके बाद से तीस हजार युगों में मैंने कभी भी पुनर्जन्म का अनुभव नहीं किया है:
शहद देने का यही फल है। (18) [3722]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो गए हैं। सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (19) [3723]

बुद्ध की उपस्थिति में मेरा होना3245
यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) [3724]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (21) [3725]

इस प्रकार पूज्य मधुदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मधुदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

3238 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

3239 लिट., "एक फूल पर"

3240 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

3241 khiḍḍāratiyaÁ

3242 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

3243 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

3244 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

3245 शाब्दिक रूप से, " पूजा "

---

392. {395.}3246 पदुमकुतागारिया3247

पियादस्सी, भगवान
स्वयं एक हो जाओ, विश्व नेता, एकांत प्रेमी, संबुद्ध
ध्यान में निपुण, ऋषि थे। (1) [3726]

जंगल में एक उपवन में प्रवेश करते हुए, महान ऋषि पियादस्सी ने चिथड़ों से बने अपने वस्त्रों को फैलाया।
बैठ गया, परम व्यक्ति। (2) [3727]

मैं उस समय जंगल में एक छोटे से बाग में हिरण का शिकार करता था।3249
मैं लगभग 3250 मीटर पीछे घूम रहा था
फिर, चित्तीदार3251 हिरण की खोज। (3) [3728]

[तब] मैंने वहाँ संबुद्ध को देखा, बाढ़ पार करने वाले, निष्कलंक, एक भव्य साल के पेड़ की तरह खिले हुए।
जैसे उदय हुआ सौ किरणों वाला [सूर्य]। (4) [3729]

देवताओं के देव, महान ख्यातिप्राप्त पियादस्सी को एक प्राकृतिक झील में प्रवेश करते हुए देखकर,
मैं तब कुछ कमल लेकर आया था। (5) [3730]

उन सौ पंखुड़ियों वाले सुंदर कमलों को लाने के बाद, एक छज्जे वाली झोपड़ी बनाने के बाद, मैंने
[तब] इसे कमलों से ढक दिया। (6) [3731]

दयालु, करुणामयी, पियादस्सी, महान ऋषि
बुद्ध ने सात रात और सात दिन तक यह यात्रा की।
विक्टर उस छज्जे वाली झोपड़ी में रहता था। (7) [3732]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3246 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3247 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

3248 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

3249 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

3250 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

3251 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

पुराने [कमलों] को फेंकते हुए,
मैंने [तब] इसे नए से ढक दिया।
मैं उस पूरे समय वहीं खड़ा रहा।
हाथों को आपस में जोड़कर [पूजा में]। (8) [3733]

ध्यान से उठते हुए, महान ऋषि पियादस्सी सभी दिशाओं में देख रहे हैं।
विश्व का नेता बैठ गया। (9) [3734]

उस समय सुदस्सन3252 बुद्ध के शक्तिशाली सेवक थे। वे बुद्ध, गुरु पियादस्सी के विचारों को जानते थे।
अस्सी हजार सिद्ध भिक्षुओं से घिरे हुए, वह विश्व नेता के पास गए।
जंगल में खुशी से बैठे।3253 (10-11) [3735-3736]

उस वन में निवास करने वाले सभी देवता, बुद्ध के विचारों को जानते हुए,
फिर वहाँ एकत्रित हुए। (12) [3737]

जब आत्माएं, कुंभण्ड और राक्षस एक साथ आए, और भिक्षुओं की सभा पहुंची,
विजेता ने ये पद कहे: (13) [3738]

"जिसने एक सप्ताह तक मेरी उपासना की और मेरे लिए निवास स्थान बनाया,
मैं उनके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (14) [3739]

मैं अपने ज्ञान के माध्यम से उन बातों का वर्णन करूंगा जिन्हें बताना बहुत कठिन है, जो गहरी, बहुत सूक्ष्म और अच्छी तरह से समझाई गई हैं;
आप सब मेरी बात सुनो: (15) [3740]

चौदह युगों तक [यह] देवताओं पर शासन करेगा।
वे उन्हें आकाश में ले जाएंगे

3252 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
3253 लिट., "गया"
3254 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
3255 लिट., "गिर गया"
3256 लिट., "योग्य"

उसके लिए एक ऊँची छत वाली झोपड़ी,
कमल के फूलों से अच्छी तरह ढका हुआ:
यह पूर्व कर्मों का फल है। (16) [3741]3257

चौबीस सौ 3258 युगों के लिए

वह इधर-उधर जन्म लेगा।3259
फूलों से बना एक उड़ता हुआ महल32603261
वहाँ आकाश में ले जाया जाएगा। (17) [3742]

जैसे कमल के पत्ते की सतह पर पानी नहीं चिपकता, वैसे ही अशुद्धियाँ भी नहीं चिपकतीं।
[इस ज्ञान का धारक]। (18) [3743]

यह वाला, 3262 को चकनाचूर करने के बाद
पाँच बाधाएँ3263 [अपने] मन से, इरादे को जन्म देते हुए,3264 घर से निकलते हुए वह त्याग देगा; उसके बाद पुष्पमय महल
ले जाया जा रहा है, आगे बढ़ेगा। (18e-f, 19) [3744]3265
जब वह किसी पेड़ के नीचे निवास कर रहा होता है, या जब उसकी जागरूकता तीव्र होती है,3266 तब फूलों से बना वह महल दिखाई देता है
उसके सिर पर ले जाया जाएगा। (20) [3745]

वस्त्र, दान, भोजन, आवश्यक वस्तुएँ और रहने के स्थान प्रदान करने के बाद
भिक्षुओं की सभा को,3267
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग।" (21) [3746]

गैबल वाली झोपड़ी के साथ actions3268 के माध्यम से,

3257 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

3258 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

3259 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

3260 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

3261 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

3262 लिट., "एक फूल पर"

3263 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

3264 khiḍḍāratiyaÁ

3265 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

3266 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"

3267 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

3268 शाब्दिक रूप से, " पूजा "

मैं दीक्षा लेने के लिए आगे बढ़ा;3269
जब मैं किसी पेड़ के नीचे बैठा होता हूँ,

गैबल वाली झोपड़ी मेरे लिए ले जाई गई है। (22) [3747]

मुझमें इरादों का कोई अस्तित्व नहीं है।
भिक्षा के रूप में वस्त्र या भोजन प्राप्त करने के लिए। मेरे कर्म के संबंध में।
मैं [दोनों] पहले से तैयार कर लेता हूँ। (23) [3748]

मैंने अनगिनत लाखों युगों तक जीवन व्यतीत किया है, जिनकी गिनती करना असंभव है।
वे मेरे लिए व्यर्थ ही बीत गए;3274
विश्व-नेताओं को मुक्त कर दिया गया है।3275 (24) [3749]

अठारह सौ युग पहले पियादस्सी नामक मार्गदर्शक रहते थे। उनकी लगन से सेवा करने के बाद,3276
मैं इस [वर्तमान] गर्भ में आया। (25) [3750]

यहाँ3277 मैंने3278 संबुद्ध अनोमा को देखा,3279 पाँच आँखों वाले। [फिर] उनके पास जाकर, मैं
बेघर जीवन में आगे बढ़ गया। (26) [3751]

रोग के अंत करने वाले, विजय प्राप्त करने वाले बुद्ध ने मुझे मार्ग का उपदेश दिया। उनके उपदेश सुनने के बाद,
मुझे अमर अवस्था का अहसास हुआ। (27) [3752]

उन्हें प्रसन्न करके, संबुद्ध, गौतम, शाक्यों के श्रेष्ठ बैल,
सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए,
मैं [अब] निष्कलंक होकर जीवित हूँ। [3753]

अठारह सौ युगों में

3269 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
3270 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
3271 pariḷāho
3272 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
3273 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
3274 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
3275 samādhikusalo ahaŋ
3276 iddhipādesu kovido
3277 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
3278 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
3279 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
3280 mahābhisakkasaṅkāso

जब से मैंने बुद्ध की पूजा की है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (29) [3754]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो गए हैं। सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (30) [3755]

बुद्ध की उपस्थिति में रहना मेरे लिए बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (31) [3756]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (32) [3757]

इस प्रकार पूज्य पद्मकूटागरिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पद्माकुटागरिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

393. {396.}3282 बक्कुला3283

हिमालयी क्षेत्र में,
शोभिता नाम का एक पर्वत है। मेरा सुव्यवस्थित आश्रम
इसका निर्माण [मेरे] स्वयं के छात्रों द्वारा [वहाँ] किया गया था। (1) [3758]

वहाँ कई छतरियाँ थीं,3284
और फूलदार चीनी पवित्र वृक्ष।3285
वहाँ बहुत सारे लकड़ी के सेब के पेड़ थे3286,3287

3281 dosavyādhitikicchako
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3282 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
3283 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
3284 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
3285 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
3286 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

3287 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

और जीवजीवक 3288 खिले हुए हैं। (2) [3759]

वहाँ बहुत से निग्गुंडी के पेड़ थे, बेर, आंवला, फारुसका और लौकी भी थीं।
और सफेद कमल3295 खिले हुए फूल। (3) [3760]

वहाँ आलका और बेल3296 थे , केला3297 और नींबू3298 के पेड़ भी थे; वहाँ बहुत सारा गन्ना3299 था, अर्जुन3300 और पियांगुक 3301 (4) [3761]

नीम,3302 सलाला ,3303 पीला
चीज़वुड्स,3304 बरगद,3305 वुड-एप्पल के पेड़,3306
मेरा आश्रम भी कुछ ऐसा ही था;
मैं तब अपने छात्रों के साथ वहाँ रहता था। (5) [3762]

अनोमादस्सी, हे भगवान!
स्वयं को एक करने वाला, विश्व नेता, एकांत स्थान की तलाश में है,
[तब] मेरे आश्रम में आ गया। (6) [3763]

जब महान नायक पास आया,3307
महान प्रसिद्धि के अनोमादस्सी

3288 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

3289 शाब्दिक रूप से, "गया"

3290 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

3291 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

3292 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

3293 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

3294 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

3295 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

3296 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

3297 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

3298 लिट., “एक फूल पर”

3299 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

3300 khiḍḍāratiyaÁ

3301 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

3302 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, “मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में”

3303 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।

3304 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”

3305 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

3306 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी

3307 pariḷāho

अचानक [कुछ] आंतरिक दर्द,3308
जगत के स्वामी के लिए उठ खड़ा हुआ। (7) [3764]

आश्रम में घूमते हुए,
मैंने विश्व के नेता को देखा। सम्बुद्ध, नेत्रपूर्ण, महान प्रसिद्धि वाले, के पास जाकर और उनके आचरण को देखकर,3309
मैंने उस समय उसका निदान किया था: "निस्संदेह [कुछ] बीमारी है।"
बुद्ध के भीतर जन्म हुआ है।” (8-9) [3765-3766] चिकित्सा का अभ्यास करने की इच्छा रखते हुए,
मैं वापस आश्रम की ओर भागा।
मेरे छात्रों की उपस्थिति में,
फिर मैंने अपने सभी छात्रों को संबोधित किया। (10) [3767]

सभी छात्र सम्मानजनक थे; मेरी बात सुनने के बाद, वे एक समूह में एकत्रित हो गए।
मैं, जिसने शिक्षक का सम्मान किया। (11) [3768]

पहाड़ पर तेजी से चढ़ने के बाद,
मैंने सभी औषधीय जड़ी-बूटियाँ एकत्र कर लीं।
उन्हें तरल में बदलना,3313
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को दे दिया। (12) [3769]

जब महान नायक ने 3314 [इसे] ग्रहण किया, सर्वज्ञ, विश्व नेता,
जल्दी ही [उस] बीमारी3315 को दबा दिया गया3316
अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए, महान ऋषि। (13) [3770]

उसकी पीड़ा दूर होते देख,3317
महान ख्याति प्राप्त अनोमादस्सी, अपनी सीट पर बैठने के बाद,
उन्होंने [उस समय हमसे] ये छंद कहे: (14) [3771]

“जिसने मुझे दवा दी”

3308 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

3309 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)

3310 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

3311 samādhikusalo ahaŋ

3312 iddhipādesu kovido

3313 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

3314 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है

3315 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।

3316 mahābhisakkasaṅkāso

3317 dosavyādhitikicchako

और [इस प्रकार] मेरी बीमारी से मुझे राहत मिली, मैं उनके बारे में विस्तार से बताऊंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (15) [3772]

वह एक लाख युगों तक देवताओं की दुनिया में आनंदित रहेगा।
जब वहां वाद्ययंत्र 3318 बजाए जाते हैं,
यह व्यक्ति लगातार रोमांचित रहेगा। (16) [3773]

अपनी उत्तम जड़ों से प्रेरित होकर, वह मनुष्यों की दुनिया में आकर, हजार बार प्रार्थना करेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (17) [3774]

पचपनवें युग में [अतः]
वह राजा होगा3319 जिसका नाम अनोमा होगा,3320 गुलाब-सेब के उपवन का स्वामी,3321 चारों दिशाओं में विजयी।3322 (18) [3775]

एक शक्तिशाली, चक्र घुमाने वाला राजा, सात रत्नों का स्वामी।
वह संप्रभुता का प्रयोग करेगा।
आकाश को भी हिला देने वाला।3323 (19) [3776]

चाहे वह मनुष्य के रूप में जन्म ले या दिव्य रूप में, वह एक ऐसा व्यक्ति होगा जिसमें बहुत कम रोग होंगे।
अपनी संपत्ति त्यागते हुए,3324
वह दुनिया में 3325 बीमारियों से ऊपर उठ जाएगा। (20) [3777]

अब से अनगिनत युगों बाद, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (21) [3778]

उस व्यक्ति के धम्म का योग्य उत्तराधिकारी , धम्म की वैध संतान, सभी दोषों को भली-भांति जानने वाला,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग।” (22) [3779]

3318 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

3319 दिड्डिगण्ड°

3320 लोकापज्जोटो

3321 sanarāmarasakkato

3322 नारदिक्को
3323 लिट., “में”
3324 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
3325 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”

अपने सभी दोषों को जलाकर वह आसक्ति की बाढ़ को पार करेगा। वह गुरु का अनुयायी होगा।
[भिक्षु] जिसका नाम बक्कुला है। (23) [3780]

यह सब जानकर, शाक्य वंश के श्रेष्ठ गौतम, भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए...
उसे उस प्रमुख स्थान पर स्थापित करेगा।”3326 (24) [3781]

अनोमादस्सी, हे भगवान!
स्वयं को एक करने वाला, विश्व नेता, एकांत स्थान की तलाश में है,
मेरे आश्रम में आया [उस समय]। (25) [3782]

मैंने सभी औषधीय जड़ी-बूटियों के साथ उस महान नायक की सेवा की जो मेरे पास आए थे, सर्वज्ञानी, विश्व नेता।
[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (26) [3783]

मैं उस बीज की फसल को खर्च करने की शुरुआत भी नहीं कर सकता जिसे अच्छी तरह से बोया गया था, उस कर्म का फल जो मैंने उसके लिए अच्छा किया था।
बहुत समय पहले मेरे द्वारा किया गया अच्छा काम।3329 (27) [3784]

विश्व के नेता को देखने वाले मुझे अच्छा लाभ प्राप्त हुआ; उस कार्य के शेष भाग के माध्यम से,
मुझे अमर अवस्था का अहसास हुआ। (28) [3785]

यह सब जानकर, शाक्य वंश के श्रेष्ठ गौतम, भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए,
[ने] उस प्रमुख स्थान पर रखा है। (29) [3786]

युगों की विशाल संख्या में
मैंने उस समय जो कर्म किया था, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
यह औषधि का फल है। (30) [3787]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो गए हैं। सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (31) [3788]

3326 महास्सादंग
3327 महरसंग
3328 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए”
3329 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha

---

बुद्ध की उपस्थिति में रहना मेरे लिए बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (32) [3789]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (33) [3790]

इस प्रकार पूज्य बक्कुला थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बक्कुला थेरा की कथा का अंत हो गया है।

---

394. {397.}3330 गिरीमानन्द3331

मेरी पत्नी का देहांत हो गया था, मेरा बेटा कब्रिस्तान गया था;
मैंने एक ही चिता पर खुद को जलाया था
[मेरी] माँ, पिता और भाई। (1) [3791]

मैं उस दुःख से व्याकुल हो गया था, मैं कमजोर और पीला पड़ गया था और मानसिक रूप से विक्षिप्त हो गया था।
उस दुःख के कारण बहुत पीड़ा हुई। (2) [3792]

दुःख के तीर से घायल होकर, मैं जंगल के किनारे तक गया। वहाँ मुझे केवल जंगली फल मिले, जिन्हें खाकर मैं आगे बढ़ा।
मैं एक पेड़ की तलहटी में रहता था। (3) [3793]

सम्बुद्ध ने सुमेधा नाम दिया, विजेता, रोग-सहजता को दूर करने वाला,
मुझे ऊपर उठाने की इच्छा के साथ,
तब वह मेरी उपस्थिति में आया। (4) [3794]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3330 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3331 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

3332 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

3333 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
3334 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

महान ऋषि सुमेधा के चरणों की आहट सुनकर,
मैंने अपना सिर ऊपर उठाया
महान ऋषि पर दृष्टि डाली।3335 (5) [3795]

जब वह महान नायक मेरे पास आया, तब मुझे बहुत खुशी हुई। विश्व नेता को देखकर,
अंततः मेरा मन शांत हो गया। (6) [3796]

होश में आने के बाद,3337
मैंने उसे मुट्ठी भर पत्ते दिए।
तब भगवान [वहाँ] करुणावश बैठ गए, हे दृष्टिवान। (7) [3797]

वहाँ बैठे हुए, भगवान सुमेधा, जगत के नेता, बुद्ध ने मुझे उपदेश दिया।
जो शोक के तीरों को दूर करता है: (8) [3798]

“अनचाहे3338 [वे]3339 वहाँ से आए हैं3340;
छुट्टी नहीं ले रहे हैं3341 [वे] यहाँ से चले गए हैं। जैसे [वे] आए थे, वैसे ही [वे] चले गए हैं;
उस पर विलाप करने से क्या लाभ है?3342 (9) [3799]

जैसे, जब बारिश हो रही होती है, तो लोग3343 सड़क पर यात्रा कर रहे होते हैं,3344 अपना सामान लेकर,3345 जा रहे होते हैं
[एक जगह जहाँ] बारिश नहीं हो रही है, (10) [3800]

और जब बारिश बंद हो जाती है,

3335 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
3336 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
3337 शाब्दिक रूप से, "गया"
3338 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
3339 शाब्दिक रूप से, "गिर गया"
3340 लिट., “योग्य”
3341 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
3342 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

3343 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
3344 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
3345 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा जा रहा है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
3346 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"

वे अपनी योजना के अनुसार कार्य जारी रखते हैं;
इस प्रकार तुम्हारी माता और पिता भी:3349
उस पर विलाप करने से क्या लाभ है? (11) [3801]

हम सब अजनबी हैं, मेहमान हैं, डगमगा रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं, और कांप रहे हैं।
इस प्रकार तुम्हारे माता-पिता भी:
उस पर विलाप करने से क्या लाभ है? (12) [3802]

जैसे एक सर्प3350 अपनी पुरानी केंचुली को त्यागकर रेंगता है,3351,3352 वैसे ही तुम्हारी माता और पिता भी:
उनके शव3353 यहाँ छोड़ दिए गए हैं।” (13) [3803]

बुद्ध के वचनों को समझते हुए, मैंने दुःख के तीर को हटा दिया। सुख उत्पन्न करते हुए, मैंने
सर्वश्रेष्ठ बुद्धों की पूजा की। (14) [3804]

महान हाथी की पूजा,3355
मैंने 3356 सुमेधा, नेता की पेशकश की
दुनिया का, फूलों का एक डंठल3357
दिव्य सुगंध से परिपूर्ण। (15) [3805]

संबुद्ध की पूजा करने के बाद, अपने हाथों को अपने सिर पर रखकर, उनके प्रमुख गुणों का स्मरण करते हुए,
मैंने विश्व के नेता की प्रशंसा की: (16) [3806]

“महान नायक, आप ही वह हैं जिन्होंने 3359 को पार किया है।”
सर्वज्ञ, विश्व-नेतृत्वकर्ता। आप समस्त प्राणियों का उत्थान कर रहे हैं।
हे महान ऋषि, आपके ज्ञान से। (17) [3807]

आपने सारी उलझन दूर कर दी

3347 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
3348 khiḍḍāratiyaÁ
3349 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
3350 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, “मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में”
3351 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।
3352 शाब्दिक रूप से, “ पूजा ”

3353 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

3354 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी

3355 pariḷāho

3356 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

3357 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)

3358 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

3359 samādhikusalo ahaŋ

और संदेह भी, हे महान ऋषि। आप मुझे मार्ग दिखा रहे हैं।
हे दृष्टिवान, आपके ज्ञान के माध्यम से। (18) [3808]

लक्ष्य प्राप्त कर चुके अरहंत, 3361 छह ज्ञान धारक, शक्तिशाली, 3362 आकाश में विचरण करने वाले बुद्धिमान,
हर समय आपको घेरे रहते हैं। (19) [3809]

आपके अनुयायी फल दे रहे हैं।
जिन्होंने उपलब्धि प्राप्त कर ली है;3364 और जो प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं;3365
आपके अनुयायियों की संख्या लगातार बढ़ रही है।
जैसे सूर्योदय के समय कमल [फूल].3366 (20) [3810]

जैसे सागर3367 अविचलित, अद्वितीय और पार करना कठिन है, वैसे ही तुम भी हो, हे नेत्रपूर्ण।
ज्ञान से परिपूर्ण, अनंत।” (21) [3811]

विश्व के विजेता की पूजा करने के बाद,3368
वह दृष्टिभ्रमित, महान प्रसिद्धि वाला, प्रत्येक दिशा की प्रशंसा करने वाला,
झुककर 3369 मैं [वहाँ से] चला गया। (22) [3812]

देवताओं के लोक से गिरते हुए,3370
जन्म-जन्मांतर से गुजरते हुए, मैं अपनी माँ के गर्भ से सचेत और स्मरणशील होकर निकला। (23)[3813]

घर छोड़कर मैं बेघर हो गया। उत्साही,3371 और बुद्धिमान भी।
मैंने ध्यान में चराई की।3372 (24) [3814]

3360 iddhipādesu kovido

3361 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

3362 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है

3363 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

3364 mahābhisakkasaṅkāso

3365 dosavyādhitikicchako

3366 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

3367 दिट्ठिगण्ड°

3368 लोकपज्जोटो

3369 sanarāmarasakkato

3370 नारदिक्को

3371 लिट., “में”

3372 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।

बहुत प्रयास करने के बाद,3373
उस महान ऋषि को प्रसन्न करने के बाद, मैं अब भटक रहा हूँ।
जैसे चंद्रमा बादलों के समूह से मुक्त हो गया हो।3374 (25) [3815]

मैं अब एकांतवास पर दृढ़ संकल्पित हूँ,3375
शांत,3376 पुनर्जन्म के आधार से रहित;3377
सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए,
मैं अब भी बेदाग़ जीवित हूँ। (26) [3816]

तीस हजार युगों में
जब से मैंने बुद्ध की पूजा की है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (27) [3817]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो गए हैं। सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (28) [3818]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (29) [3819]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (30) [3820]

इस प्रकार पूज्य गिरिमानंद थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

गिरिमानंद थेरा की कथा का अंत हो गया है।

3373 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”

3374 महास्सादंग

3375 महरसंग

3376 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए”

3377 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha

3378 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव

---

395. {398.}3379 सलामामंदापिया3380

जब काकुसंध का देहांत हुआ,3381 ब्राह्मण, सिद्ध पुरुष,3382 साला इकट्ठा करते हुए 3383 फूल,3384
मैंने एक मंडप का निर्माण किया।3385 (1) [3821]

तावतिंसा जाकर,
मुझे एक आलीशान हवेली मिली।
मैंने अन्य सभी देवताओं को पीछे छोड़ दिया:
यह अच्छे कर्मों का फल है। (2) [3822]

चाहे दिन हो या रात, चलते-फिरते रहूँ या खड़े रहूँ, मैं साला के फूलों से ढका रहता हूँ:
यह अच्छे कर्मों का फल है। (3) [3823]

इसी [वर्तमान] युग 3387 के भीतर
चूंकि मैंने बुद्ध की पूजा की है, इसलिए मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [3824]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो गए हैं। सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (5) [3825]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [3826]

विश्लेषण के चार तरीके,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3379 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3380 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

3381 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

3382 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

3383 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

3384 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

3385 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

3386 शाब्दिक रूप से, "गया"

3387 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

3388 शाब्दिक रूप से, "गिर गया"

और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [3827]

इस प्रकार पूज्य सलामण्डपिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सलामण्डपिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

396. {399.}3389 सब्बदायक3390

विशाल महासागर में तैरता हुआ, मेरा महल [तब] बहुत अच्छी तरह से बनाया गया था।
वहाँ एक तालाब भी था, जो अच्छी तरह से बना हुआ था।
[लाल हंसों की चीखों से भरा हुआ],3392 (1) [3828]

मंडलक 3393 के फूलों और गुलाबी और नीले कमलों से ढका हुआ ।
और वहाँ एक नदी बह रही थी,
सुंदर, उत्कृष्ट किनारों के साथ, (2) [3829]

मछलियों और कछुओं से ढका हुआ,3394
विभिन्न पक्षियों के साथ3395 लगभग फैले हुए,3396
मोरों और बगुले की आवाज़ों से शोरगुल भरा हुआ।3397 [और] बगुले,3398
[और] कोयल जैसी पक्षियों की [पुकार]।3399 (3) [3830]

कबूतर 3400 [और] रवि हंस 3401 [भी],

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3389 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3390 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

3391 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
3392 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
3393 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
3394 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
3395 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
3396 शाब्दिक रूप से, "गया"
3397 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
3398 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
3399 शाब्दिक रूप से, "योग्य"
3400 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
3401 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे ऐतिहासिक स्थिति के सुराग हों, फिर भी वे शायद आज की तुलना में अधिक समझने योग्य नहीं रहे होंगे।

रूड्डी गीज़3402 और नादिकारास ,
लैपविंग3403 [और] मैना पक्षी3404 यहाँ हैं, छोटे बंदर,3405 जीवजीवक .3406 (4) [3831]

यह हंसों और बगुले, उल्लू और कई पिंगलों की आवाज़ों से गूंजता है ।
इस रेत में सात रत्न समाहित हैं।
[रत्नों और कीमती मोतियों से भरा हुआ]। (5) [3832]

सोने से बने सभी वृक्षों में तरह-तरह की सुगंध व्याप्त थी।
वे मेरे महल को रोशन कर रहे हैं [वहाँ],
दिन-रात, हर समय। (6) [3833]

सुबह-शाम साठ हजार वाद्य यंत्र बजाए जा रहे हैं। सोलह हजार महिलाएं भी शामिल हैं।
वे लगातार मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। (7) [3834]

अपने महल से विदा होकर, हृदय में प्रसन्नता लिए,
मैंने उस महान यशस्वी सुमेधा, विश्व के नेता की पूजा की। (8) [3835]

संबुद्ध का अभिवादन करने के बाद, उन्हें [और] सभा को आमंत्रित करते हुए,3408
तब उस बुद्धिमान व्यक्ति3409 ने आने के लिए सहमति दी।
सुमेधा, विश्व के नेता। (9) [3836]

मुझे धम्म का उपदेश देने के बाद ,3410 महान ऋषि ने [बाद में] विदा ली। संबुद्ध को प्रणाम करने के बाद,
मैं [तब] अपने महल लौट आया। (10) [3837]

मैंने वहां मौजूद सभी लोगों को बुलाया: "आप सभी एक साथ इकट्ठा हो जाओ।

जिसकी मूल रचना की गई थी।

3402 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
3403 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
3404 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
3405 लिट., "एक फूल पर"
3406 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
3407 khiḍḍāratiyaÁ
3408 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
3409 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"
3410 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
3411 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "

दिन के पहले भाग में,
बुद्ध महल में आएंगे।" (11) [3838]

"हम, जो आपके आस-पास रहते हैं, हमें कुछ ऐसा मिला है जो हमारे लिए फायदेमंद है।
हम भी पूजा करेंगे
शिक्षक, बुद्धों में सर्वश्रेष्ठ।" (12) [3839]

खाना-पीना परोसने के बाद, मैंने घोषणा की कि अब समय आ गया है।
विश्व नेता आ गया
एक लाख स्वामी के साथ.3413 (13) [3840]

मैं पाँच लोगों के साथ उससे मिलने गया।
संगीत वाद्ययंत्र [ध्वनि]।
सर्वोच्च व्यक्ति3416 बैठ गया
ठोस सोने से बनी कुर्सी.3417 (14) [3841]

मैंने ऊपर एक चंदवा रखा, 3418, 3419
जो ठोस सोने से बना था;3420
फिर पंखे [इत्र]3421 फैला रहे हैं
भिक्षुओं की सभा के भीतर। (15) [3842]

मैंने भिक्षुओं की सभा को अपने भाषण से मंत्रमुग्ध कर दिया।
बहुत अधिक भोजन और पेय के साथ; मैंने अलग-अलग जोड़े दिए
भिक्षुओं की सभा को वस्त्र 3422। (16) [3843]

जिसे वे सुमेधा कहते थे, संसार की आहुतियों का पात्र,3423 भिक्षुओं की सभा में बैठा हुआ था,
उस समय ये [छह] आयतें बोलीं: (17) [3844]

“जिसने मुझे भोजन और पेय दिया और सभा को भी भोजन कराया,

3412 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
3413 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
3414 pariḷāho
3415 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
3416 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
3417 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
3418 samādhikusalo ahaŋ
3419 iddhipādesu kovido
3420 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”
3421 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
3422 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।
3423 mahābhisakkasaṅkāso
3424 dosavyādhitikicchako

मैं उनके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (18) [3845]

अठारह सौ युगों तक वह देवताओं के संसार में आनंदित रहेगा। वह हज़ार बार राजा बनेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (19) [3846]

चाहे वह किसी भी गर्भ में पुनर्जन्म ले, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ,
ठोस सोने की छत
हमेशा 3425 उसके लिए ले जाया जाएगा। (20) [3847]

तीस हजार युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (21) [3848]

उस व्यक्ति के धम्म का योग्य उत्तराधिकारी , धम्म की वैध संतान, सभी दोषों को भली-भांति जानने वाला,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग। (22) [3849]

भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए,
तब वह शेर की दहाड़ मारेगा।3426
उनकी चिता पर एक छतरी रखी हुई है;3427
इसके नीचे3428 उसका अंतिम संस्कार किया जाता है।" (23) [3850]

मैंने भिक्षुत्व प्राप्त कर लिया है; मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं। किसी मंडप या वृक्ष की जड़ में,
मुझे जलती हुई गर्मी का ज्ञान नहीं है। (24) [3851]

उस समय मैंने जो उपहार दिया था, उसके बाद से तीस हजार युगों में मैंने कभी भी पुनर्जन्म का अनुभव नहीं किया है:
सब कुछ देने का फल। (25) [3852]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो गए हैं। सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (26) [3853]

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में होना

3425 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
3426 दिठ्ठिगण्ड°
3427 लोकापज्जोटो
3428 sanarāmarasakkato

यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (27) [3854]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) [3855]

इस प्रकार पूज्य सब्बडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सब्बडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

397. {400.}3429 अजिता3430

द विक्टर, 3431 पदुमुत्तरा,
वह हर चीज का स्वामी था।3432

हिमालय में समाहित,
विश्व का नेता बैठ गया। (1) [3856]

मैंने संबुद्ध को नहीं देखा।
मुझे उसकी आवाज भी नहीं सुनाई दी। मेरे खाने के लिए भोजन की तलाश में,
मैं जंगल में भटक रहा था। (2) [3857]

वहाँ मैंने संबुद्ध के दर्शन किए।
बत्तीस महान चिह्नों को धारण करते हुए।3433
बुद्ध को देखकर मुझे यह विचार आया,3434
“यह किस प्रकार का प्राणी हो सकता है?” (3) [3858]

उसके शरीर पर मौजूद निशानों की जांच करते हुए, मुझे अपने लोककथाओं के अध्ययन की याद आ गई।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3429 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
3430 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
3431 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
3432 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
3433 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
3434 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
3435 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
3436 शाब्दिक रूप से, "गया"

जो अच्छे शब्द मैंने [एक बार] सुने थे,
से3437 बुजुर्ग3438 बुद्धिमान पुरुष:3439 (4) [3859]

“उनके उस वचन के अनुसार, यह [व्यक्ति] बुद्ध होगा; तो फिर मुझे उसका सम्मान करना चाहिए;
यह मेरी स्थिति को शुद्ध करेगा।”3440 (5) [3860]

जल्दी ही मेरे आश्रम में आ रहा हूँ,
मैंने कुछ भैंस का घी लिया, और उसे ले जाने के लिए एक बर्तन लिया।
मैं [उसके पास] गया, पुरुषों का बैल।3443 (6) [3861]

तीन टांगों वाला [स्टूल] लेकर,3444 मैंने उसे एक खुली जगह में खड़ा कर दिया। [उस स्टूल पर रखे] एक दीपक को जलाकर, मैंने [बुद्ध] की आठ बार पूजा की। (7) [3862]

सात रात और सात दिन तक बुद्ध, परम पुरुष, वहां विराजमान रहे।
फिर [आखिरी] रात के अंत में,3445
[बुद्ध] विश्व नेता बनकर खड़े हुए। [3863]

खुशी से, अपने दिल में आनंद लिए, मैंने सात रातों और सात दिनों तक रोशनी जलाई।
[बैठे हुए] बुद्ध के लिए वह दीपक,
अपने हाथों से किए गए काम से [बहुत संतुष्ट]। [3864]

जंगलों की सभी मनमोहक सुगंधें3446
गंधमादन पर्वत पर,
बुद्ध की महिमा के माध्यम से3447
फिर विजेता के पास गया। [3865]

3437 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
3438 शाब्दिक रूप से, "गिर गया"
3439 शाब्दिक रूप से, "योग्य"
3440 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
3441 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
3442 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
3443 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
3444 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा जा रहा है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
3445 लिट., “एक फूल पर”
3446 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
3447 khiḍḍāratiyaÁ

उस समय सभी वृक्ष खिले हुए थे। बुद्ध की महिमा के कारण
उत्पादित सभी पुष्प सुगंध,3448
उसी क्षण एक में एकत्रित हो गया। [3866]

हिमालय के सभी क्षेत्रों में, नागदेव और गरुड़ दोनों ही शिक्षा सुनने की इच्छा रखते थे।
बुद्ध की उपस्थिति में आया। [3867]

देवला नाम का भिक्षु बुद्ध का प्रमुख सेवक था। उसके एक लाख गुरु थे।
उन्होंने बुद्ध से भी संपर्क किया।3449 [3868]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए,
[तब] उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कहीं: [3869]

जिसने मेरे लिए दीपक जलाया है,
अपने हाथों से किए गए कार्यों से प्रसन्न होकर, मैं उनके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: [3870]

साठ हजार युगों तक वह
वह देवताओं की दुनिया में आनंदित होगा। वह हजार बार राजा बनेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। [3871]

देवताओं के स्वामी के रूप में छत्तीस बार, वह दिव्य शासन का संचालन करेंगे।
पृथ्वी पर सात सौ [गुना] 3450
वह एक विशाल राज्य पर शासन करेगा,3451 [और उसके पास] बहुत सारे स्थानीय शासन होंगे, जिनकी गिनती करना असंभव होगा।[3872]3452

इस दीपक-अर्पण के कारण, उसमें "दिव्य दृष्टि" विकसित होगी।
यह वाला हमेशा देखने वाला है
आठ कोसा 3453 सभी दिशाओं में.3454 [3873]

3448 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
3449 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"
3450 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
3451 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "
3452 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
3453 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
3454 pariḷāho

देवताओं के लोक से पतित होकर, जब इस व्यक्ति का पुनर्जन्म होता है, चाहे दिन में हो या रात में,
उसके लिए एक दीपक ले जाया जाएगा। [3874]

जब इस व्यक्ति का 3455वां पुनर्जन्म होता है, तो वह अच्छे कर्मों का स्वामी होता है,
वह [दुनिया को] रोशन करेगा
पूरे शहर में जहाँ वह है। [3875]

वह जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लेता है, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ, उसके द्वारा किए गए दीपक अर्पण के कारण।
उन आठ दीपों के फल के कारण, लोग इस एक दीप से आगे नहीं बढ़ पाएंगे:

यही दीपक देने का फल है। [3876]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। [3877]

उस व्यक्ति के धम्म का योग्य उत्तराधिकारी , धम्म की वैध संतान, सभी दोषों को भली-भांति जानने वाला,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग। [3878]

उन्हें प्रसन्न करके, संबुद्ध, गौतम, शाक्यों के श्रेष्ठ बैल,
वह गुरु का अनुयायी होगा।
और उसका नाम अजिता होगा। [3879]

साठ हजार युगों तक मैं
देवताओं की दुनिया में आनंदित।
उस स्थान पर भी मेरे सौ दीपक हैं
हर समय [तेजी से] जल रहे हैं।3456 [3880]

देवताओं के लोक में हो या मनुष्यों के लोक में, मेरी [स्वयं की] दीप्ति3457 फैलती है। सर्वश्रेष्ठ बुद्ध का स्मरण करते हुए,
मैं अत्यधिक हंसी उत्पन्न करता हूँ। [3881]

तुसिता स्वर्ग से गिरते हुए,
मैं मां के गर्भ से बाहर आया।

3455 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
3456 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
3457 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

जब वह व्यक्ति 3458 पैदा हो रहा था, तब [हमेशा] बहुत प्रकाश था। [3882]

घर छोड़कर मैं बेघर हो गया। बावरी जाकर,
मैं उनका छात्र बनने के लिए सहमत हो गया।3459 [3883]

हिमालय में रहना,
मैंने वर्ल्ड-लीडर 3460 के बारे में सुना। परम अर्थ की खोज में,
मैंने [बुद्ध], मार्गदर्शक से संपर्क किया।3461 [3884]

वश में करने वाला, बुद्ध, वश में करने वाला, बाढ़ पार करने वाला, पुनर्जन्म से परे, 3462 बुद्ध ने निर्वाण के बारे में बात की।
सभी बीमारियों से मुक्ति। [3885]

उनका मेरे पास आना सफल रहा;

मैंने महान ऋषि का सत्कार किया। तीनों ज्ञान प्राप्त करने के बाद,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [3886]

एक लाख युगों में
जब से मैंने उसे वह दीपक दिया है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यही दीपक देने का फल है। [3887]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो गए हैं। सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (26) [3888]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (27) [3889]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) [3890]

3458 samādhikusalo ahaŋ
3459 iddhipādesu kovido
3460 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”
3461 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
3462 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

इस प्रकार पूज्य अजिता थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अजिता थेरा की कथा का अंत हो गया है।
सारांश: पिलिंडावाचा3463 और सेला,
सब्बाकिट्टी, मदुंददा, कुतागारी और बक्कुला, गिरि, सलसासावहया,3464
सब्बादा और अजिता भी:
यहां आयतों की संख्या एक सौ पांच है और इसके अलावा बीस और हैं।

पिलिन्दवच्चा3465 अध्याय, चालीसवाँ।
इसके बाद पद्म और आरक्खड़ अध्यायों का सारांश है।
उम्मा और गंधोदेकेना, एकपदमा, सद्दासानि, मंदारम, बोधियावंदका, अवनंद और पिलिंडी [भी]।
और इन आयतों की भी गिनती की गई है, ग्यारह सौ आयतों के अलावा चौहत्तर आयतें।

दस अध्याय3466 जिन्हें पदुमा कहा जाता है।

चौथा सौ3467 समाप्त हो गया है।

मेत्तेय्या अध्याय, इकतालीसवाँ

---

398. {401.}3468 तिसामेटेय्य3469

शोभिता नामक तपस्वी
वह पहाड़ों के बीच रहता था।

3463 mahābhisakkasaṅkāso
3464 dosavyādhitikicchako
3465 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
3466 दिठ्ठिगण्ड°
3467 लोकापज्जोटो
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3468 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
3469 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

पर्वत की ढलान के शीर्ष के पास,
केवल जंगली फल खाकर [जो उसे मिले]। (1) [3891]

कुछ आग और लकड़ी लाने के बाद, मैं इसे प्रज्वलित कर रहा हूँ।
अंतिम लक्ष्य की तलाश में
ब्रह्मा के लोक में पुनर्जन्म लेना। (2) [3892]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
मुझे ऊपर उठाने की इच्छा के साथ,
तब वह मेरी उपस्थिति में आया। (3) [3893]

[पदुमत्तरा बुद्ध]:
"हे पुण्यवान, तुम क्यों परिश्रम कर रहे हो? मुझे आग और लकड़ी दो। मैं आग की पूजा करूँगा।"
यह मेरे लिए 3471 पवित्रता होगी।" (4) [3894]

[नायक]:
आप बहुत भाग्यशाली हैं, महोदय।
हे दिव्यात्मा, आप समझते हैं।3473
आप मेरे लिए आग बुझा दें;
तो यहाँ आग [और] लकड़ी है।" (5) [3895]

उसके बाद, विक्टर ने लकड़ियाँ लेकर, लकड़ियों को जलाए बिना आग को प्रज्वलित किया:
महान ऋषि द्वारा रचित एक चमत्कार। (6) [3896]

[पदुमत्तरा बुद्ध]:
"तुम्हारी यह आग नहीं जल रही है;
आपकी भेंट का कोई अस्तित्व नहीं है;
तुम्हारी यह प्रतिज्ञा अर्थहीन है;
तुम्हें मेरी इस अग्नि की पूजा करनी चाहिए।" (7) [3897]

[नायक]:
"हे महान नायक, यह कैसी आग है?"

3470 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
3471 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
3472 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
3473 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
3474 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
3475 lit., "गया"

क्या आप उसी के बारे में बात कर रहे हैं? आपको मुझे भी इसके बारे में बताना चाहिए;
हम दोनों तुम्हारी उस [अग्नि] की पूजा करेंगे।" (8) [3898]

[पदुमत्तरा बुद्ध]: "कारणों सहित वस्तुओं का अंत, दोषों का भस्म होना, और क्रोध और घृणा का त्याग करना:
वे तीनों चीजें मेरी भेंट हैं।" (9) [3899]

[नायक]:
"हे महान वीर, आप किस प्रकार के हैं? हे सुखी, आपका कुल क्या है? अभ्यास करने की आपकी विधि क्या है?"
यह मुझे बेहद प्रसन्न करता है।" (10) [3900]

[पदुमत्तरा बुद्ध]:
"मैं योद्धा 3476 वंश में जन्मा हूँ, विशेष ज्ञान का स्वामी हूँ। सभी दोष समाप्त हो चुके हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा।" (11) [3901]

[नायक]:

“यदि आप बुद्ध हैं, सर्वज्ञानी हैं,3477
प्रकाश-निर्माता,3478 अंधकार-निवारक,3479 [तब] मैं आपकी स्तुति करूँगा3480 हे दिव्य;3481 आप रोग के अंतकर्ता हैं।” (12) [3902]

मैंने अपनी हिरण की चमड़ी की चादर बिछाकर उसे बैठने के लिए जगह दी।
“हे सर्वज्ञ, कृपया वहीं बैठिए;
[और] मैं [तब] आपकी सेवा करूंगा।” (13) [3903]

भगवान बुद्ध वहाँ बैठ गए।
उस हिरण की चमड़ी पर, अच्छी तरह फैला हुआ। सम्बुद्ध को आमंत्रित करते हुए,
फिर मैं पहाड़ों में चला गया। (14) [3904]

3476 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
3477 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
3478 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
3479 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए लैटिन शब्द "हजार" और "सौ" के संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
3480 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
3481 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

कंधे पर रखे बैग को भर लेने के बाद,3482
मैं कुछ जंगली मैंगोस्टीन3483 फल लाया। इसे शहद के साथ मिलाकर,
मैंने वह फल बुद्ध को दिया। (15) [3905]

जब मैं [उसके बारे में] ध्यान कर रहा था,
फिर विजेता ने [वह फल] खा लिया।
विश्व नेता को निहारते हुए मुझे वहाँ आनंद मिला। (16) [3906]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
मैं अब भी अपनी कुटिया में बैठा हूँ।
[तब] मेरे बारे में ये आयतें बोलीं: (17) [3907]

[पदुमत्तरा बुद्ध]:
“जिसने मुझे [यह फल] खिलाया, मैं उसके हाथों से [बहुत प्रसन्न होकर] उसके बारे में विस्तार से बताऊंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (18) [3908]

पच्चीस बार [भविष्य में,]
वह दैवीय शासन का प्रयोग करेगा।

वह हजार बार राजा बनेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (19) [3909]

उसके लिए, जो अपने पूर्व कर्मों से ग्रसित है और अपने विचारों को भलीभांति समझता है,
वहाँ भोजन, पेय पदार्थ, कपड़े और बिस्तर होंगे जो बहुत महंगे होंगे। (20) [3910]

वह अपने अच्छे कर्मों के अनुसार बार-बार पुनर्जन्म लेगा;3484 वह सुखी होगा।
और हमेशा कष्ट से मुक्त। (21) [3911]

वह जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म ले, चाहे वह मानव रूप हो या दिव्य रूप, हर स्थान पर सुखी रहे।
वह मानव अवस्था को प्राप्त करेगा। (22) [3912]

एक विद्वान [और] मंत्र-ज्ञाता,3486

3482 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
3483 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा जा रहा है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
3484 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"
3485 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
3486 khiḍḍāratiyaÁ

तीनों वेदों के ज्ञाता,
संबुद्ध के पास पहुँचने पर,
वह अरहंत बनने जा रहा है।" (23) [3913]

[नायक]:
जहां तक मुझे अपने जीवन की याद है,
जब तक मुझे ज्ञान प्राप्त है, मेरे पास धन की कोई कमी नहीं है:
फल देने का फल यही है। (24) [3914]

सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त करके मैंने अपनी समस्त कामवासना और घृणा का नाश कर दिया;
सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (25) [3915]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (26) [3916]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (27) [3917]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) [3918]

इस प्रकार पूज्य तिस्सा-मेत्तेय्या थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिस्सा-मेत्तेय्या थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

399. {402.}3487 पुणक3488

स्वयंभू, अजेय, बुद्ध, जो एक बीमारी से ग्रसित थे,
वह पहाड़ों के बीच रहता था।
पर्वत ढलान के शीर्ष के पास। (1) [3919]

मेरे आश्रम के चारों ओर [वहाँ,]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3487 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
3488 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

जब बुद्ध का निधन हो रहा था,3489
हर समय चीख-पुकार मची रहती थी।
हर समय [तेज रोशनी] थी। (2) [3920]

उस पूरे वन क्षेत्र में सभी भालू3490 और भेड़िये,3491 कारा बाना भालू,3492 बाघ3493 और शेर भी,
हर समय जोर-जोर से दहाड़ रहे हैं। (3) [3921]

उन अजीबोगरीब अपशकुनों को देखने के बाद3494
मैंने पहाड़ की ढलान पर चढ़ाई की।
वहाँ मैंने [उन्हें] देखा, संबुद्ध, अजेय, एक भव्य साल के पेड़ की तरह खिले हुए, देह त्यागते हुए।
जैसे सौ किरणों वाला उगता हुआ सूर्य, कोयले की तरह चमकता हुआ (जो अभी भी गर्म है),
3497 अजेय का निधन हो गया। (4-5) [3922-3923]

इसे घास और लकड़ियों से भर देना,
फिर मैंने वहाँ उसके लिए एक चिता बनाई। उस सुव्यवस्थित चिता को बनाने के बाद,
मैंने [बुद्ध के] शव का दाह संस्कार किया। (6) [3924]

मैंने उसके शव का अंतिम संस्कार कर दिया था,
मैंने वहाँ सुगंधित जल छिड़का। आकाश में खड़ी एक आत्मा3498
मेरे लिए हमेशा के लिए एक नाम तय कर दिया: (7) [3925]

“वह कर्तव्य आपने महान ऋषि, स्वयं-स्वरूप के लिए पूरा किया था।

3489 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

3490 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

3491 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

3492 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

3493 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

3494 शाब्दिक रूप से, "गया"

3495 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

3496 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

3497 शाब्दिक रूप से, "योग्य"

3498 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]।"

3499 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

हे ऋषि, आप सदा ऋषि ही रहेंगे।
नाम दिया गया “पूर्ण एक”3500 [प्रत्येक जीवनकाल में]।” (8) [3926]

उस शरीर से गिरने के बाद,
मैं देवताओं के लोक में गया।
वहाँ एक दिव्य रूप से निर्मित इत्र है3501
तब आकाश में उत्सर्जित होता है। (9) [3927]

उस [देवताओं के संसार] में भी
मुझे दिया गया नाम “पूरा नाम” था।3502
चाहे जन्म से मनुष्य हो या दिव्य,
मैं अपने सभी इरादों को पूरा करता हूँ। (10) [3928]

यह मेरे लिए आखिरी बार है;
मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है।3503
और यहाँ भी "पूरा वाला" है
मुझे दिया गया नाम [जो] सुप्रसिद्ध है। (11) [3929]

शाक्यों के श्रेष्ठ पुरुष, गौतम संबुद्ध को सभी दोषों का भली-भांति ज्ञान रखते हुए भी, उन्होंने उनका मनोरंजन किया।
मैं अब भी बेदाग़ हूँ। (12) [3930]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
शव के लिए कर्तव्यों का फल। (13) [3931]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। अपने सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए,
मैं अब भी बेदाग़ जीवित हूँ। (14) [3932]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) [3933]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (16) [3934]

3500 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
3501 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
3502 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
3503 लिट., "एक फूल पर"

इस प्रकार पूज्य पुण्णक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पुण्णक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

400. {403.}3504 Mettagu3505

हिमालयी क्षेत्र में,

अशोक नाम का एक पर्वत है।3506
उस स्थान पर मेरा आश्रम था, जिसका निर्माण विस्साकम्मा ने करवाया था।3507 (1) [3935]

सम्बुद्ध का नाम सुमेधा था,
प्रमुख,3508 दयालु,3509 ऋषि,3510
सुबह खुद कपड़े पहनना,
मेरे पास भीख मांगने आया। (2) [3936]

[देखकर] वह महान नायक जो आया था,3511
विश्व के नेता सुमेधा ने एक अच्छा भिक्षापात्र लेकर कहा, मैं
इसे स्पष्ट मक्खन से भर दिया।3512 (3) [3937]

मैं अपने दोनों हाथों को जोड़कर इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, सुमेधा, विश्व के नेता को अर्पित करता हूँ।
मैंने वहाँ अपने हृदय को प्रसन्नता प्रदान की। (4) [3938]

इस घी-अर्पण के कारण, जो दृढ़ निश्चय और संकल्प के साथ किया गया, चाहे वह मनुष्य के रूप में जन्मा हो या दिव्य,
मुझे अत्यधिक आराम मिलता है। (5) [3940]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3504 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3505 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

3506 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

3507 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

3508 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

3509 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

3510 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

3511 लिट., "गया"

3512 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

3513 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

कष्ट की अवस्थाओं से बचना,3514
मैं जन्म-जन्मांतर तक जन्म लेता हूँ। इस पर अपना मन दृढ़ करते हुए,3515
मैं अमरता की अवस्था प्राप्त कर रहा हूँ। (6) [3941]

"हे ब्राह्मण, यह लाभ तुम्हारे लिए अच्छा है कि तुमने मुझे देखा। मुझे देखने के लिए तुम यहाँ आए थे।"
तुम अरहंत बनने जा रहे हो। (7) [3942]

महान ख्याति प्राप्त करने के बाद आत्मविश्वास रखें और भयभीत न हों। इस घी के ग्रंथ को देने के बाद,
तुम जन्म लेने से मुक्त हो जाओगे। (8) [3943]

इस घी-अर्पण के कारण
और प्रेमपूर्ण हृदय से अभ्यास करते हुए,3516
अठारह सौ युगों तक तुम
देवताओं के संसार में आनंदित होगा। (9) [3944]

और अठारह बार तुम सभी देवताओं के राजा बनोगे, और तुम्हारा बहुत अधिक स्थानीय शासन होगा।
गिनती से असंख्य। (10) [3945]

और इक्यावन बार आप होंगे
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है, गुलाब-सेब के उपवन का स्वामी,3517 चारों दिशाओं में विजयी।3518 (11) [3946]

विशाल सागर की तरह शांत, पृथ्वी की तरह स्थिर,
ठीक इसी तरह से आपकी संपत्ति
अथाह होने वाले हैं।"3519 (12) [3947]

मैंने हार मानकर आगे बढ़ना शुरू किया।
छह सौ मिलियन मूल्य का सोना।

3514 लिट., "योग्य"

3515 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

3516 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

3517 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

3518 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

3519 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

जो अच्छा है उसकी तलाश करना,
मैं [पहले] बावरी गया। (13) [3948]

जब मैं वहाँ मंत्रों, वैदिक विज्ञान3520 और चिह्नों का अध्ययन कर रहा था, तभी आप (महाराज) प्रकट हुए।

उस भ्रम को नष्ट करना.3521 (14) [3949]

आपसे मिलने की तीव्र इच्छा रखते हुए,
हे महान ऋषि, मैं आपके पास आया हूँ। आपका उपदेश सुनकर,
तब मैंने अमरता की अवस्था प्राप्त की। (15) [3950]

तीस हजार युग पहले
मैंने वो घी बुद्ध को दे दिया। 3522 के अंतराल में मुझे नहीं पता
मेरे द्वारा घी की भीख माँगना3523. (16) [3951]

जब मेरे इरादे स्पष्ट हो जाते हैं, तब मेरी इच्छाएं प्रकट होती हैं।
मेरे हृदय ने यह जान लिया है कि मेरा पुनर्जन्म हुआ है, और मैं सभी को प्रसन्न करता हूँ। (17) [3952]

हे बुद्ध! हे शिक्षा!
ओह! हमारे गुरु की [महान] उपलब्धि! थोड़ा सा घी देने के बाद,
मुझे असीम रूप से प्राप्त होता है। (18) [3953]

विशाल महासागर का जल, माउंट मेरु की ढलान का विस्तार,
3524 आधा चौथाई 3525 नहीं होगा
मेरे लिए उत्पन्न हो रहे घी का। (19) [3954]

ब्रह्मांड का संपूर्ण विस्तार, एक [विशाल] ढेर में समाहित
3526 [भरने में सक्षम नहीं होगा]
मेरे द्वारा पहने गए कपड़ों का स्थान। (20) [3955]

हिमालय, पर्वतों का राजा, हालांकि यह सबसे श्रेष्ठ पर्वत है,

3520 लिट., "एक फूल पर"
3521 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
3522 khiḍḍāratiyaÁ
3523 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
3524 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
3525 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
3526 शाब्दिक रूप से, " पूजा "

यह तुलनीय भी नहीं है।
मुझे अभिषेक करने वाले इत्रों के लिए। (21) [3956]

कपड़े, इत्र, घी और भोजन, या दुनिया में मौजूद हर चीज,
और निर्वाण, बिना शर्त:3527
घी देने का फल यही है। (22) [3957]

आज मेरा सोफा सचेतनता है,3528 मेरे चरागाह की ध्यानमग्न अवस्थाएँ हैं,3529 मेरा भोजन ज्ञान के सात भाग हैं:3530 घी देने का फल यही है। (23) [3958]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। अपने सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए, मैं अब भी बेदाग़ जीवित हूँ। (24) [3959]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [3960]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (26) [3961]

इस प्रकार पूज्य मेट्टागु थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मेट्टागु थेरा की कथा का अंत हो गया है।

3527 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
3528 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
3529 pariḷāho
3530 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.6 थेरपदाना
स्रोत: जेएस वाल्टर्स
नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अंतर्वस्तु

1.51451. {454.}4684 तिनुक्कधारिया4685
1.52452. {455.}4687 अक्कमनाडिका4688
1.53453. {456.}4691 वनकोरडिया4692
1.54454. {457.}4694 एकचट्टिय4695
1.55455. {458.}4702 जातिपुफिया4703
1.56456. {459.}4714 पत्तिपुप्पिया4715
1.57457. {460.}4722 गंधपूजक4723
1.58458. {461.}4729 सलाकुसुमिया4730
1.59459. {462.}4734 सीतापूजक4735
1.60460. {463.}4738 सीताकानिब्बूपाका4739
1.61461. {464.}4740 सेतुदायक4741
1.62462. {465.}4742 सुमनतालवन्तिया4743
1.63463. {466.}4745 अवंताफलिया4746
1.64464. {467.}4751 लबज्दायका4752
1.65465. {468.}4757 पिल्लकफलदायका4758
1.66466. {469.}4761 सयंपतिभाणिय4762
1.67467. {470.}4772 निमित्तव्यकारण्य4773
1.68468. {471.}4792 नामामालिया4793
1.69469. {472.}4799 मणिपूजक4800
1.70470. {473.}4820 उक्कासाटिका4821
1.71471. {474.}4837 सुमनविजनिया4838
1.72472. {475.}4841 कुम्मासडिका4842
1.73473. {476.}4844 कुशथकदायक4845
1.74474. {477.}4848 गिरिपुन्नगिया4849
1.75475. {478.}4854 वल्लिकाराफलदायका4855
1.76476. {479.}4860 पंधिदायक4861
1.77477. {480.}4868 पुलिनाकामिया4869
1.78478. {481.}4873 पौंशुकुलासनिका4874
1.79479. {482.}4883 बुद्धसंज्ञक4884
1.80480. {483.}4905 भिसादायक4906
1.81481. {484.}4917 Ñāṇatthavika4918
1.82482. {485.}4939 कैंडनामालिया4940
1.83483. {486.}4965 धातुपूजक4966
1.84484. {487.}4969 पुनिनुप्पादक4970
1.85485. {488.}5004 तारानिया5005
1.86486. {489.}5017 धम्मरुसी5018
1.87487. {490.}5051 सलामंदपिया5052
1.88488. {491.}5069 तिन्निकिनखानिपुफिया5070
1.89489. {492.}5075 पौंसकुलपुजाका5076
1.90490. {493.}5080 कोरंडपुफ़िया5081
1.91491. {494.}5093 किसुकापुप्पिया5094
1.92492. {495.}5096 उपादहदुस्सादायका5097

अपदाना: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 401-500

---

401. {404.}3531 धोताका3532

भागीरथी नदी का नाम 3533 रखा गया
इसे हिमालय से पानी मिलता है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3531 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
3532 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
3533 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

यह हमेशा बहता रहता है।
हंसवती के द्वार से होकर गुजरा। (1) [3962]

शोभिता नामक आश्रम, 3535
अच्छी तरह से निर्मित, यह नदी की ढलानों पर स्थित है।
बुद्ध, पद्ममुत्तरा,
विश्व का नेता वहाँ निवास कर रहा था। (2) [3963]

उन्हें लोगों द्वारा उसी प्रकार सम्मानित किया गया, जैसे इंद्र को तीस देवताओं द्वारा सम्मानित किया गया था।
भगवान वहां बैठे थे।
निडर होकर [बिल्कुल] शेर की तरह। (3) [3964]

मैं हंसवती नगर में रहने वाला एक ब्राह्मण था।
उस समय मेरा नाम चालंगा था,3537
मुझे इस प्रकार नाम दिया गया [क्योंकि] मैं एक ऋषि था। (4) [3965]

उस समय मेरे चारों ओर एक हजार आठ सौ 3538 छात्र मौजूद थे।
उन छात्रों के साथ मिलकर 3539 लोगों को शामिल किया गया,
मैं नदी के किनारे गया। (5) [3966]

उस स्थान पर मैंने [बौद्ध] भिक्षुओं को देखा, बिना छल के,3540 बुराई से शुद्ध होकर,3541 भागीरथी [नदी] पार करते हुए।
उस समय मैंने इस प्रकार विचार किया: (6) [3967]

"बुद्ध के ये महान ख्यातिप्राप्त पुत्र संध्या और सूर्योदय के बीच से गुजर रहे हैं; वे स्वयं ही व्याकुल हैं।"
[और] उनकी चीजें3542 बर्बाद हो रही हैं। (7) [3968]

बुद्ध को देवताओं सहित संसार का मुखिया कहा जाता है।

3534 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
3535 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
3536 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
3537 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
3538 lit., "गया"
3539 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
3540 लिट., "गिर गया"
3541 लिट., "योग्य"
3542 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

मैंने अभी तक दान नहीं किया है3543
जो मेरे पुनर्जन्म के मार्ग को शुद्ध करेगा। (8) [3969]

तो फिर मैं बेस्ट बुद्धा के लिए नदी पर पुल क्यों नहीं बनवा देता? उस काम को करवाने के लिए, मैं
इस अस्तित्व में पुनर्जन्म लें।" (9) [3970]

एक लाख का दान
मैंने [उसके लिए वहाँ] एक पुल बनवाया, इस विश्वास के साथ कि "यह कार्य करने से
मेरे लिए बहुत बड़ा [लाभ] होगा।3546 " (10) [3971]

उस पुल का निर्माण करवाने के बाद, मैं विश्व नेता के पास गया।
मेरे सिर पर हाथ एक साथ दबे हुए थे,
मैंने ये शब्द [उस समय उससे] कहे थे: (11) [3972]

"एक लाख का दान देकर, मैंने आपके लिए इस भव्य पुल का निर्माण करवाया है;
कृपया इसे स्वीकार करें, हे महान ऋषि।" (12) [3973]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए,
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (13) [3974]

"जिसने मेरे लिए यह पुल बनवाया, अपने हाथों से इसे बनवाकर वह बहुत प्रसन्न हुआ, मैं उसके बारे में विस्तार से बताऊंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (14) [3975]

किसी गुफा में गिर गया (3549) या (3550)
किसी पर्वत या वृक्ष का शिखर
मरने पर भी वह पकड़ा जाएगा:3552

बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में 3543 में कई भिन्नताओं के साथ 'गेण्डु' लिखा है । कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।

3544 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

3545 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

3546 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

3547 लिट., "एक फूल पर"

3548 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

3549 khiḍḍāratiyaÁ

3550 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

3551 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"

3552 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

पुल बनाने का यही फल है। (15) [3976]

जैसे हवा3553 अपनी बढ़ती जड़ों को फैलाते हुए बरगद3554 को विचलित नहीं करती, वैसे ही शत्रु3556 उसे पराजित नहीं कर पाएंगे3557:
पुल बनाने का यही फल है। (16) [3977]

कोई चोर उसे पराजित नहीं कर पाएगा3558 और राजा3559 उसका तिरस्कार नहीं करेगा। वह अपने सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा:3561
पुल देने का यही फल है। (17) [3978]

यहां तक कि एक असुरक्षित स्थान में भी,
सूर्य की भीषण गर्मी से झुलसते हुए, अपने अच्छे कर्मों के अनुरूप,3562
उसे कोई असुविधा महसूस नहीं होगी।3563 (18) [3979]

चाहे देवताओं का संसार हो या मनुष्यों का, एक सुगठित हाथी-गाड़ी हमेशा अस्तित्व में आएगी।
वह क्या सोच रहा है, यह समझना। (19) [3980]

एक हजार तेज रफ्तार गाड़ियां
सिंध के घोड़े हवा की तरह तेज़ होते हैं
वह सुबह और शाम को उसके पास आएगा:
पुल बनाने का यही फल है। (20) [3981]

मनुष्य अवस्था में आकर, यह व्यक्ति प्रसन्न होगा; यहाँ भी इसी व्यक्ति के लिए...
हाथी-गाड़ी दिखाई देगी.3564 (21) [3982]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (22) [3983]

3553 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
3554 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
3555 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
3556 pariḷāho
3557 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
3558 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
3559 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
3560 samādhikusalo ahaŋ
3561 iddhipādesu kovido
3562 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
3563 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
3564 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, सभी दोषों को भली-भांति जानने वाला
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग।" (23) [3984]

ओह! मैंने तो खूब कर्मों का फल भुगता।
जिसका नाम "सर्वश्रेष्ठ कमल" है, उसके लिए, यह कार्य करने के बाद, वहाँ
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया।3567 (24) [3985]

प्रयास करने के बाद,3568 मैं
शांत,3569 पुनर्जन्म के आधारों से रहित;3570
टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (25) [3986]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो गए हैं। सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (26) [3988]3571
मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (27) [3987]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) [3989]

इस प्रकार पूज्य धोतका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

धोतका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

3565 mahābhisakkasaṅkāso
3566 dosavyādhitikicchako
3567 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
3568 दिट्ठिगण्ड°
3569 लोकापज्जोटो
3570 sanarāmarasakkato
3571 नारदिक्को

---

402. {405.}3572 उपासिव3573

हिमालयी क्षेत्र में,
अनोमा नाम का एक पहाड़ है। मेरी सुंदर ढंग से बनी कुटिया वहीं है।
पत्तों से अच्छी तरह से निर्मित हॉल के साथ। (1) [3990]

और वहाँ एक नदी बह रही है, सुंदर, उत्कृष्ट किनारों वाली।
और उन किनारों के साथ-साथ 3574 बढ़ रहे हैं
कई गुलाबी और नीले कमल। (2) [3991]

वह नदी तब बह रही थी, मछलियों और कछुओं से ढकी हुई, शीशफिश,3575 पावुसा ,3576 व'अलजा ,3577
रीड-फिश,3578 रेड-फिश3579 [और] मैगुरा .3580 (3) [3992]

तिमिरा [पेड़] वहां खिल रहे हैं, अशोक, 3581 खुद्दामलका , 3582
लॉरेल,3583 और माउंटेन लॉरेल3584 के पेड़
मेरे आश्रम को सुगंधित कर रहे हैं। (4) [3993]

वहाँ शीतकालीन चेरी3585 खिल रही है, और अरबी चमेली के जंगल;3586

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3572 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3573 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

3574 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

3575 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

3576 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

3577 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

3578 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

3579 लिट., "गया"

3580 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

3581 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

3582 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

3583 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

3584 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम संचरण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

3585 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

3586 °विकुटी°; मैं इसे परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तुलिका°) के रूप में समझता हूँ।

---

sal 3587 और salalā 3588 [पेड़] वहां हैं,
और बहुत सारे खिलते कैम्पाका .3589 (5) [3994]

अर्जुन के वृक्ष 3590, हिप्टेज लताएँ 3591 और गन्ना 3592 खिल रहे हैं; सिल्वर ग्रेवुड 3593, मधुगंधी 3594
मेरे आश्रम में खिल रहा है। (6) [3995]

प्रत्येक तरफ आधा लीग क्षेत्र बिम्बिजलिका 3595 से ढका हुआ है।
गोल्डन शावर,3596 ट्रम्पेट-फूल,3597
चमेली,3598 भी पियांगुका .3599 (7) [3996]

म'आतंगव और सत्तली 3600
ट्रम्पेट-फूल,3601 चीनी चेस्ट ट्री,3602
वहां बहुत सारे सेज-लीफ अलंगियम3603 हैं,
[और] तालकूट 3604 खिल रहा है। (8) [3997]

वहाँ बहुत सारे सालेय्यक 3605 हैं, जो मेरे आश्रम में खिल रहे हैं। बहुत से पेड़ सुंदर लगते हैं जब वे फूल से भर जाते हैं।
चारों ओर से उसकी सुगंध फैली हुई थी
मेरे आश्रम में मंडरा रही हैं। (9-10ए-बी) [3998]3606

मायरोबलान3607 [और] गूजबेरी,3608

घास या ऊन (देखें आरडी., एसवी)
3587 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस द्वारा पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

3588 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"
3589 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
3590 khiḍḍāratiyaÁ
3591 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
3592 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"
3593 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
3594 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
3595 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
3596 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
3597 pariḷāho
3598 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
3599 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
3600 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
3601 samādhikusalo ahaŋ
3602 iddhipādesu kovido
3603 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
3604 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
3605 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
3606 mahābhisakkasaṅkāso
3607 dosavyādhitikicchako
3608 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

आम,3609 गुलाब-सेब,3610 बहेड़ा,3611
बेर, 3612 मार्किंगनट, 3613 [और] बेल, 3614
साथ ही फ़ारुसका 3615 फल, (10सी-डी, 11ए-बी) [3999]

जंगली मैंगोस्टीन, 3616 चिरौली-अखरोट, 3617
महुवा3618 और कसुमरी ,3619
ब्रेडफ्रूट3620 [और] जैक3621 [वहाँ उग रहे हैं], केले3622 [और] जुजुबे फल,3623 (11सी-डी, 12ए-बी) [4000]

वहाँ बड़ी मात्रा में हॉग-प्लम3624 और साथ ही वल्लीकारा 3625 फल भी पाए जाते हैं।
सिट्रॉन3626 और सपारिया 3627 [पेड़]
मेरे आश्रम में खिल रहे हैं। (12सी-डी, 13ए-बी) [4001]

आलका और इसिमुग्गा ,3628
उसके बाद बहुत सारे मोडा -फल;3629
चारों ओर, पके फलों से लदा हुआ,3630
वेव-लीफ़ेड3632 और ग्लोमेरस3633 फ़िगर्स हैं। (13सी-डी, 14ए-बी) [4002]

वहां काली मिर्च,3634 और काली मिर्च के दाने3635 हैं।

3609 दिट्ठिगण्ड°
3610 लोकापज्जोटो
3611 sanarāmarasakkato
3612 नारदिक्को
3613 शाब्दिक रूप से, “में”
3614 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
3615 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”
3616 महास्सादंग
3617 महरसंग
3618 शाब्दिक रूप से, "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
3619 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
3620 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव
3621 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
3622 लिट., “मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंध से महकता था”
3623 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
3624 या “शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना”
3625 लिट., “बहिर्वाहों का विनाश”
3626 या “जो बाहर गया था”: पब्बाजितो
3627 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।
3628 शाब्दिक रूप से, "यहाँ"
3629 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।
3630 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है।
3631 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"
3632 sampahaṇsitā
3633 भोट्टा , बीजेटीएस में इसे भेट्टा ("तोड़ने वाला") पढ़ा जाता है।

3634 chettā

3635 sotā

बरगद,3636 और लकड़ी के सेब के पेड़,3637
बहुत सारे गुच्छेदार अंजीर के पेड़,3638
कंडपक्का और परी [पेड़]। (14सी-डी, 15ए-बी) [4003===

मेरे आश्रम में ये और कई अन्य पेड़ भी फल दे रहे हैं। साथ ही कई फूल वाले पेड़ भी हैं।
मेरे आश्रम में फूल खिल रहे हैं। (15सी-डी, 16ए-बी) [4004]

टाइटन अरुम,3639 भी बाइंडवीड,3640
बिलानी , तक्कादानी [बल्ब],
ālaka और tālaka [भी]
मेरे आश्रम में [सभी] पाए जाते हैं। (16सी-डी, 17ए-बी) [4005]

मेरे उस आश्रम के पास, लगभग 3641 नंबर पर, एक बड़ी प्राकृतिक झील थी।
यह खूबसूरत था, और इसके किनारे अच्छे थे।
ठंडा पानी, [क्रिस्टल-] साफ़ पानी। (17सी-डी, 18ए-बी) [4006]

कई गुलाबी और नीले कमल
वहां सफेद कमलों के साथ मिश्रित हैं;
मंडलक के 3642 फूलों से ढका हुआ ,
यह विभिन्न [अच्छी] सुगंधों से भरा है। (18सी-डी, 19ए-बी) [4007]

वहाँ गुलाबी कमल अंकुरित होते हैं; अन्य, फूल खिलते हैं और पराग उत्पन्न करते हैं। कई गुलाबी कमल की कलियाँ और पत्तियाँ [और] पेरिकार्प्स3643 तैरते हैं3644 [उस झील पर]। (19सी-डी, 20ए-बी) [4008]

कमल के तनों से शहद बहता है3645
[और] दूध [और] घी3646 कमल की जड़ों से।3647
चारों ओर, उसी की गंध फैली हुई थी,
यह विभिन्न [अच्छी] सुगंधों से भरा है। (20सी-डी, 21ए-बी) [4009]

श्वेत कमल, 3648 अम्बगन्धि , और अनेक नैयिता देखी जाती हैं;

3636 pasaŋsitā

3637 akhilo

3638 visālo . BJTS इसे visallo (“दर्द से मुक्त”) पढ़ता है

3639 anīgho

3640 अकथानकथि , ilt. "नहीं कह रहा, 'क्यों'?"

3641 अनेजो

3642 विराजो
3643 खट्टा । बीजेटीएस इसे खंत (विनम्र) पढ़ता है।
3644 रीडिंग गंटा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस गंधा ("सुगंधित")
3645 रीडिंग वट्टा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस मेट्टा ("लव")
3646 pakāsitā
3647 t'āretā
3648 अत्थकारेता का पाठ बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ तारेता ("क्रॉसर") के पीटीएस पुनरावृति के लिए किया गया है।

एक प्राकृतिक झील के अनुरूप,
बहुत सारे स्क्रू-पाइन3649 खिले हुए हैं। (21सी-डी, 22ए-बी) [4010]

बंधुजीव 3650 पूर्ण रूप से खिले हुए, मीठी सुगंध वाले 3651 सेतवारी 3652 मगरमच्छ 3653 और घड़ियाल 3654
[और अन्य] भयंकर जानवर3655 वहाँ पैदा होते हैं। (22सी-डी, 23ए-बी) [4011]

उस प्राकृतिक झील में कई उग्गहा 3656 और अजगर 3657 रहते हैं; शीशफिश 3658 पावुसा 3659 व'अलजा 3660
रीड-फिश,3661 रेड-फिश3662 [और] मैगुरा .3663 (23सी-डी, 24ए-बी) [4012]

यह मछलियों और कछुओं से ढका हुआ है,3664 साथ ही छोटे, बिना पूंछ वाले बंदरों से भी;3665 कबूतर3666 और रवि हंस3667 भी।
जंगली जंगल फाउल,3668 नादिकारस , (24सी-डी, 25ए-बी) [4013]

वाटल्ड लैपविंग्स3669 और रूडी गीज़,3670
चम्पाकस 3671 और तीतर,3672

3649 k'āretā
3650 सम्पदालता , बीजेटीएस सम्पदालता
3651 पापेता
3652 साहित्य , या "सहनकर्ता"
3653 में, BJTS के साथ kantā का पाठ किया गया है, जिसमें PTS में hantā की पुनरावृत्ति है , जिसे दोनों पाठ श्लोक में अगले शब्द के रूप में पढ़ते हैं।
3654 हंता
3655 रीडिंग ātāpī with BJTS for PTS tātâpi ("also the Protector")
3656 t'āpaso , इससे पंक्ति में नौ अक्षर बनते हैं, जिसे "हत्यारा" को संक्षिप्त करके आठ अक्षरों के रूप में उच्चारित करने की आवश्यकता है।
"स्लेयर" में
3657 samacitto
3658 'समासामो , (बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस के अनुसार; इसका मूल रूप समासामो भी हो सकता है , "हमेशा एक जैसा")
3659 a'sahāyo , शाब्दिक अर्थ, "मित्रहीन"
3660 रीडिंग दयासायो (और निम्नलिखित व्याख्या) बीजेटीएस के साथ पीटीएस दयायासो ("दयालुता के लिए प्रसिद्ध" "दयालुता-प्रसिद्ध") के लिए

3661 accherasanto

3662 अकुहो , शाब्दिक अर्थ, "धोखे से मुक्त" "ईमानदार"

3663 क'तावी , अर्थात् एक अरहंत, जिसने वह किया है जो किया जाना चाहिए

3664 i'sisattamo

3665 nittiṇṇakaṅkho

3666 nimmāno

3667 अप्पमेय्या , शाब्दिक अर्थ, "मापा नहीं जा सकता"

3668 अनुपमा , शाब्दिक अर्थ, "वह जिसके लिए कोई रूपक नहीं है"

3669 sabbavākyapathātīto , शाब्दिक अर्थ, "वह जिसके लिए सभी कथनों के मार्ग अतीत में हैं"

3670 saccaneyyantago , शाब्दिक अर्थ, "वह जो सत्यों के अंत तक पहुँच चुका है जिसे समझा जाना है [या निर्देश दिया जाना है, नेतृत्व किया जाना है, मार्गदर्शन किया जाना है (नेति का क्रियापद)]"

3671 जिनो

3672 sattasāravare . BJTS इसे महल को संशोधित करने के रूप में व्याख्या करता है, लेकिन पाली मुझे इससे अधिक अस्पष्ट प्रतीत होती है। v. [5887] और [6287] में बुद्ध-विशेषण के रूप में sattasāra° के प्रयोग की तुलना करें।

गिलहरी,3673 [भी] ओस्प्रे3674 [और] बाज,3675
[और] कई [पक्षी जिन्हें] उद्धारा कहा जाता है , (25सी-डी, 26ए-बी) [4014]

धान के पक्षी,3676 सीलोन लोरिकेट्स,3677 केकड़े3678 और कई याक-बैल3679 [भी], कारेणिया 3680 और तिलक
वे [तब] उस झील पर निवास कर रहे हैं। (26सी-डी, 27ए-बी) [4015]

शेर, बाघ और तेंदुए,
भालू3681 [और] भेड़िये,3682 k'ara bānā भालू,3683
बंदर,3684 और यहाँ तक कि सेंटॉर3685
मेरे आश्रम के अंदर देखे जाते हैं। (27सी-डी, 28ए-बी) [4016]

उन [मीठी] सुगंधों को सूंघते हुए, उन फलों का सेवन करते हुए, सुगंधित पानी पीते हुए, मैं
मैं अपने आश्रम में रहता हूँ। (28सी-डी, 29ए-बी) [4017]

एनी -हिरण 3686 साथ ही जंगली सूअर, 3687 चित्तीदार हिरण, 3688 [भी] छोटी नस्लें, 3689 और अग्गिका [और] जोतिका 3690
मेरे आश्रम में रह रहे हैं। (29सी-डी, 30ए-बी) [4018]

3673 रीडिंग akaṃ dhammakathaṃ ahaṃ with BJTS for PTS ahaŋ dhammakathaŋ ahaŋ ("मैं धम्म- प्रचारक मैं")

3674 nissāso , BJTS ग्लॉस māgē piṭatata heḷana vātaya ("वह हवा जिसे मैं नीचे फेंकता/अपने बाहरी हिस्से में निकाल देता हूँ")

3675 रीडिंग sabbagandhe 'tiseti (= atisayati) BJTS के साथ PTS sabbagandho ti seti ("यह 'सभी अच्छी सुगंध' को नीचे रखता है")

") और इसके बाद बीजेटीएस सिंहली ग्लॉस

3676 BJTS में एटिसैंटो के लिए एडिसैंटो ("घोषणा") पढ़ा जाता है

3677 guṇatthavassa sabbaṃ taṃ phalaṃ tu paramambhūtaṃ को BJTS के साथ PTS guṇatthavassapupphan tan phalan tu param abbhutaŋ (“वह फल जो सद्‌गुण के अर्थ में अत्यंत चमत्कारी रूप से खिलता है” [?]) के लिए पढ़ा गया, और BJTS व्याख्या का अनुसरण किया गया: buddha guṇakitiyāge ē siyalu vipāka atiśaya vismayajanaka ya .
3678 पाठ का चौथा (अनुवाद में तीसरा) पद त्रुटिपूर्ण प्रतीत होता है। IPTS इसे rasaddhovisamāyuto पढ़ता है । “शुद्ध स्वाद से बंधा हुआ।” BJTS में लिखा है (टाइपोग्राफिकल त्रुटि?) saradvadhanisamāyuto (= rasad- hvanisaāmyuto ?)। दोनों ही मामलों में वैकल्पिक अनुवाद और भी अनिश्चित हैं। मैं BJTS के सिंहली अनुवाद का अनुवाद करता हूँ, mad- hura svaradhvani yukta vūyem (- mihirihaddha ättem), “मैं मधुर ध्वनि से बंधा हुआ (मेरे पास एक मधुर ध्वनि है)”।
3679 रीडिंग khīṇe ayusi with BJTS for PTS khīṇ' ev' āyu pi (“जीवन भी निश्चित रूप से नष्ट हो जाता है”)
3680 lit., “तुम सब इसे सुनो” (द्वितीय व्यक्ति बहुवचन क्रिया)
3681 ya'sassī
3682 शाब्दिक रूप से, "इसलिए मैं खुश हूँ"
3683 दुःखान्तकरण बुद्ध , शाब्दिक अर्थ: "दुखों का अंत करने वाला बुद्ध"
3684 धम्मॅ ...
3685 जनायण , लिट., "मैंने उत्पादन किया"
3686 या “विधर्मी”: कुटिंत्थिये
3687 BJTS द्वारा PTS के लिए titthikākiṇṇe का पाठ titthikâkiṇṇo (“मैं प्रतिद्वंद्वियों से घिरा हुआ हूँ”)
3688 v'adanto , शाब्दिक अर्थ, “कहना,” “बताना”
3689 में पीटीएस varaŋ (“उत्कृष्ट”) के लिए BJTS (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ vadaṃ पढ़ा जा रहा है।
3690 रीडिंग जनास्सा विद बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) फॉर पीटीएस °जिनासा (“विजेता का”)

हंस3691 [और] कर्ल्यू3692 और मोर3693 भी, मैना पक्षी3694 और कोयल भी;3695
कई मांजारीकाएं हैं , 3696
owls3697 और poṭṭhasīsas 3698 वहाँ। (30c-d, 31a-b) [4019]

वहाँ भूत-प्रेत हैं,3699 साथ ही टाइटन भी हैं,3700 कई परियाँ हैं,3701 [साथ ही] राक्षस भी हैं,3702 गरुल हैं , साथ ही सर्प-राक्षस भी हैं,3703
वहाँ मेरे आश्रम में रहते हुए। (31सी-डी, 32ए-बी) [4020]

महान शक्तियों से युक्त ऋषि,3704 शांत हृदय वाले और एकाग्र, लंबे मुंह वाले जलपात्र धारण किए हुए,3705 सभी हिरण के चमड़े के वस्त्र पहने हुए,
चोटी पहने और [वजन उठाए हुए],3706
मेरे आश्रम में रह रहे हैं। (32सी-डी, 33) [4021]

बस हल की लंबाई जितनी दूरी तक आगे देखते हुए,3707
चतुर और शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला, चाहे कुछ मिले या न मिले, सुखी।
वे मेरे आश्रम में रह रहे हैं। (34) [4022]

छाल से बने अपने वस्त्रों को उतार फेंकते हुए, हिरण के चमड़े के अपने वस्त्रों को खड़खड़ाते हुए, केवल अपनी ही ताकत के सहारे,
फिर वे आकाश में उड़ रहे हैं। (35) [4023]

वे पानी नहीं ले जा रहे हैं।

3691 रीडिंग sarado va sasaṅko 'haṃ with BJTS for PTS saraŋ divasasanko 'haŋ ("मैं झील के लिए दिन में चंद्रमा हूँ" [?])
3692 लिट., "मैं था"
3693 शाब्दिक रूप से, "अच्छी तरह से चला गया व्यक्ति," सुगातांग
3694 y'athāsattivasena
3695 v'āgīso , "[मैं एक हूँ] वाणी पर महारत के साथ"
3696 में विमतिपट्टा को पीटीएस विमतिंग पट्टा के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है , हालांकि बाद वाला (व्याकरणिक दृष्टि से कुछ हद तक गलत) समान अर्थ व्यक्त करता है।
3697 apades' ahaṃ को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS apaniŋ (समान अर्थ, fr. apaneti) के लिए पढ़ना
3698 tiṇṇasamsārasāgaro
3699 BJTS mañcado ("Mañcada") पढ़ता है
3700 BJTS supaṭo ("Supaṭa") पढ़ता है
3701 यह पीटीएस शब्द bodhisammajako ("बोधिसम्मजक") का बीजेटीएस पाठ है ।
3702 r'akkhasā = rākṣasā
3703 पन्नागा
3704 mahānubhāvā isayo
3705 k'amaṇḍalu-dharā . यह विशेष पात्र गैर-बौद्ध तपस्वियों का एक विशिष्ट चिह्न है।
3706 jaṭā-bhāra-bharita , शाब्दिक अर्थ, "गुंथी हुई चोटी और भार/भारी बोझ से भरा हुआ"।
3707 युगामत्तं च पेक्खंत , शाब्दिक अर्थ, "हल की लंबाई तक आगे देखना," यानी, बस थोड़ा सा, अपनी निगाहें सामने की जमीन पर टिकाए रखना।
3708 गच्चनती , शाब्दिक अर्थ, "जाना"

न तो आग जलाने के लिए शाखाएँ और न ही लकड़ी;
[वे चीजें] स्वयं ही उपलब्ध हो जाती हैं:3709
यह एक चमत्कार का फल है।3710 (36) [4024]

लोहे का टब लेकर,3711 वे जंगल के अंदर रह रहे हैं;3712 यहाँ तक कि हाथी, बड़े कोबरा भी
और शेर उन्हें डराते नहीं हैं। (37) [4025]

कुछ लोग गोयाना की यात्रा करते थे, अन्य लोग पुब्बाविदेह की।
और कुछ लोग उत्तरुकुरु की ओर जा रहे हैं।
3713 [केवल उनकी] अपनी ताकत पर निर्भर;
वहां से अपना भिक्षा भोजन लेकर आना,
वे इसे एक साथ खा रहे हैं। (38, 39ए-बी) [4026]

जब वे सभी प्रखर तपस्वी,3714 वे तटस्थ तपस्वी, प्रस्थान कर रहे थे, तब जंगल शोरगुल से भर गया।
हिरण के चमड़े के वस्त्रों का फड़फड़ाना। (39सी-डी, 40ए-बी) [4027]

मेरे छात्र, वे महान नायक, वे प्रखर तपस्वी, इसी प्रकार के थे; मैं हमेशा उनसे घिरा रहता था।
मैं अपने आश्रम में रह रहा हूँ। (40सी-डी, 41ए-बी) [4028]

अपने कर्मों से संतुष्ट होकर, शिक्षित होकर,3716 लोग एक साथ आते हैं,
नैतिक रूप से ईमानदार और चतुर,
[चार] असीम अवस्थाओं में कुशल,3717
wishing3718 [to boost their] own karma,
वे मुझे प्रसन्न कर रहे हैं। (41सी-डी, 42) [4029]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञाता, बलिदान प्राप्तकर्ता, उचित समय को पहचानते हुए,3719

3709 पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ सयान च उपसम्पन्ना पढ़ना अयम च उपसम्पन्नो ("और यह आपूर्ति की गई है"

3710 पातिहिरस्स इदान फलन

3711 lohadoṇiŋ gahetvāna

3712 v'anamajjhe , शाब्दिक अर्थ, "जंगल के बीच में"

3713 पीटीएस में 'अपैसिता' और बीजेटीएस में 'अवसिता' पढ़ा जाता है ; ये शब्द समानार्थी हैं और एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जा सकते हैं।

3714 reading uggatejāna with BJTS for PTS uggatejana

3715 °saddena , शाब्दिक अर्थ, "ध्वनि के साथ"

3716 या "प्रशिक्षित:" विनीता

3717 appamaññāsu kovidā , अर्थात् "ईश्वरीय अवस्थाओं" (ब्रह्मविहारा) के अभ्यास में कुशल, अर्थात् प्रेम, करुणा, सहानुभूतिपूर्ण आनंद और समभाव।

3718 में abhilāsino शब्द को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS abhilābhino , "प्राप्त करना" के स्थान पर पढ़ा गया है।

3719 samayaŋ saŋviditvāna

गाइड मेरे आश्रम के पास आया। (43) [4030]

पास आकर, उत्साही संबुद्ध, चतुर ऋषि, संबुद्ध ने अपना कटोरा उठाया,
मेरे पास भीख मांगने आया। (44) [4031]

घास की चटाई बिछाना
उस महान नायक के लिए जो पास आया था, जिसका नाम "सर्वश्रेष्ठ कमल" था।
मैंने उसे साल के फूलों से नहला दिया। (45) [4032]

संबुद्ध को बिठाकर,
मेरा मन भावनाओं से उफान मार उठा।
तेजी से पहाड़ पर चढ़ते हुए,
मैं [कुछ सुगंधित] एलोवेरा की लकड़ी लाया।3722 (46) [4033]

दिव्य सुगंध लेते हुए
जैक फ्रूट3723 पानी के जग जितना बड़ा,3724
इसे अपने कंधे पर उठाते हुए,
मैं नेता के पास गया। (47) [4034]

मैंने बुद्ध को फल देकर उन पर एलोवेरा का लेप लगाया।
मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।
मैंने सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की पूजा की। (48) [4035]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
उन महान ऋषियों के बीच बैठे हुए,
[तब] मेरे बारे में ये आयतें बोलीं: (49) [4036]

"जिसने मुझे फल और एलोवेरा दिया, और बैठने के लिए जगह भी दी,"
मैं उनके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (50) [4037]

किसी गाँव या जंगल में,
पहाड़ों की चोटियों पर या गुफाओं के अंदर, इस आदमी की इच्छाओं को पहचानते हुए,3725
भोजन अस्तित्व में आएगा। (51) [4038]

3720 अतापी , शाब्दिक अर्थ, "जलना"
3721 saŋviggamānaso
3722 अगलम , सिंह। अगिल, अगरु, अगुरु
3723 reading panasaṃ devagandhikaṃ with BJTS for PTS vansaṇḍe va gandhika� ("वन उपवन में सुगंधित")
3724 या "हाथी के ललाट लोब जितना बड़ा:" कुंभमट्टंग
3725 cittaŋ , शाब्दिक अर्थ, "विचार" या "मन"

चाहे वह देवताओं के लोक में जन्मा हो या मनुष्यों के लोक में, यह व्यक्ति
वह अपने दल को संतुष्ट करेगा
भोजन और [साथ ही] वस्त्रों के साथ। (52) [4039]

चाहे वह जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म ले, चाहे वह मानव हो या दिव्य, उसके पास असीमित भोजन हो।
यह व्यक्ति पुनर्जन्म लेने वाला है। (53) [4040]

तीस हजार युगों तक वह देवताओं के संसार में आनंदित रहेगा। हजार बार वह राजा बनेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (54) [4041]

वह इकहत्तर [अलग-अलग] बार दैवीय शासन करेगा।
[और उसके पास] बहुत स्थानीय शासन होगा, गिनती में अनगिनत। (55) [4042]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (56) [4043]

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, समस्त दोषों का भली-भांति ज्ञाता,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग।” (57) [4044]

मुझे इससे काफी लाभ हुआ, जो यह था कि मैंने नेता के दर्शन किए। तीनों ज्ञान प्राप्त करने के बाद,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (58) [4045]

किसी गाँव या जंगल में,
पहाड़ों की चोटियों पर या गुफाओं के अंदर, यह पहचानते हुए कि मैं क्या कामना कर रहा हूँ,
खाना हमेशा मेरे पास आता रहता है। (59) [4046]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (60) [4047]

3726 शाब्दिक अर्थ, "ऐसा व्यक्ति बन गया है जो"
3727 शाब्दिक अर्थ, “अडिग” “अविचलित”
3728 शाब्दिक रूप से, "अस्तित्व में आना"

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (61) [4048]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (62) [4049]

इस प्रकार पूज्य उपासिव थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उपासिव थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

403. {406.}3729 नंदा3730

उस समय मैं जंगल में एक छोटे से बाग में हिरण का शिकार करता था।
3731 चित्तीदार हिरणों की खोज करते समय,
मैंने वहाँ स्वयं को एक होते देखा। (1) [4050]

अनुराद्ध नामक सम्बुद्ध,3732 स्वयंभू, अजेय, एकांतप्रिय, ज्ञानी,3733
उस समय जंगल में डूब गया3734। (2) [4051]

लकड़ी की चार छड़ें इकट्ठा करके, मैंने उन्हें चारों कोनों पर रख दिया। एक सुदृढ़ मंडप का निर्माण करते हुए,
मैंने इसे कमल के फूलों से ढक दिया।3735 (3) [4052]

पैवेलियन को ढकने के बाद,
मैंने स्वयं-एकत्व को प्रणाम किया।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3729 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3730 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

3731 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

3732 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

3733 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

3734 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

3735 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

मैंने अपना धनुष वहीं एक तरफ रख दिया।
मैं बेघर हो गया। (4) [4053]

बाहर जाने के कुछ ही समय बाद मैं बीमार पड़ गया।3736
भूतपूर्व कर्मों के माध्यम से पुनर्जन्म लेना,
मैं वहीं मर गया। (5) [4054]

अपने पूर्व कर्मों से बंधा हुआ, मैं तुसिता स्वर्ग गया।
वहाँ सोने से बना एक महल है3737
इच्छा के अनुसार उत्पादित किया जाता है। (6) [4055]

मेरा दिव्य रथ प्रतीक्षा कर रहा है, एक हजार घोड़ों से युक्त वाहन। उस रथ में सवार होकर,
मैं इच्छा अनुसार यात्रा करता हूँ। (7) [4056]

जब मैं वहां से बाहर जा रहा हूँ,3738 एक देवता के रूप में पुनर्जन्म लेकर,3739
मेरे लिए एक मंडप खड़ा किया गया है
हर तरफ सौ मील। (8) [4057]

मैं [हमेशा] बिस्तर पर आराम से लेट जाता हूँ।

जो हमेशा फूलों से भरा रहता है। और आकाश से, गुलाबी कमल गिरते हैं।
हर समय मुझ पर बारिश हो रही है। (9) [4058]

जब प्रकाश की किरणें धड़क रही हों और सूर्य की गर्मी दुनिया को झुलसा रही हो, तब भी वह गर्मी मुझे परेशान नहीं कर रही है:
यह एक मंडप का फल है। (10) [4059]

मैं सभी बुरे पुनर्जन्मों से परे हूं;
दुख की अवस्थाएँ 3741 मेरे लिए बंद हैं। एक मंडप या वृक्ष की जड़ में,
मुझे जलती हुई गर्मी का ज्ञान नहीं है। (11) [4060]

3736 शाब्दिक रूप से, "गया"
3737 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
3738 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
3739 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
3740 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
3741 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

पृथ्वी पर धारणा को ठीक करना,3742
मैं [विशाल] महासागर पार करता हूँ।3743
ये मेरे अच्छे कर्मों का फल है।
उस बुद्ध- पूजा को करने का । (12) [4061]

सड़कें बनाते हुए, भले ही कोई सड़क न हो, मैं आकाश में यात्रा कर रहा हूँ।
ओह! मैंने अच्छा कर्म किया!
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (13) [4062]

मुझे पूर्व जन्मों का ज्ञान है, "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो चुकी है।
मेरे सारे दोष नष्ट हो गए हैं:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (14) [4063]

बुद्ध की वैध संतान, महान शिक्षा के योग्य उत्तराधिकारी, मैंने अपने पिछले जन्म का त्याग कर दिया है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (15) [4064]

मैं वह हूं जिसने शाक्यों के श्रेष्ठ बैल, गौतम को प्रसन्न किया।
धम्म का उत्तराधिकारी होने के नाते , मैं इसका ध्वज धारण करता हूँ:3745
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (16) [4065]

शाक्य वंश के सांड, गौतम संबुद्ध की सेवा करने के बाद,
मैंने विश्व के नेता से पूछा
[के बारे में] वह रास्ता जो आगे जाता है.3746 (17) [4066]

पूछे जाने पर, बुद्ध ने [तब] उस गहन और सूक्ष्म अवस्था के बारे में बताया। उनकी उस शिक्षा को सुनकर,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया।3747 (18) [4067]

ओह! मैंने कितना अच्छा कर्म किया! मैं जन्म लेने के बंधन से पूरी तरह मुक्त हो गया हूँ;
मैंने सभी अशुद्धियों को नष्ट कर दिया है;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (19) [4068]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;

3742 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
3743 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
3744 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
3745 लिट., "एक फूल पर"
3746 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
3747 khiḍḍāratiyaÁ

सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (20) [4069]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (21) [4070]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (22) [4071]

इस प्रकार पूज्य नंदा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नंदा थेरा की कथा का अंत हो गया है।

---

404. {407.}3748 हेमाका3749

पर्वत की ढलान के शीर्ष के पास, अनोमा नामक तपस्वी ने एक सुव्यवस्थित आश्रम का निर्माण करवाया,
तब पत्तों से बने एक हॉल में निवास किया। (1) [4072]

उनके द्वारा किए गए प्रयास (3750) सफल रहे;
लक्ष्य 3751 उसकी अपनी ताकत से 3752 प्राप्त किया गया।
अपने भिक्षु जीवन में भी वीर,
वह उत्साही, चतुर और बुद्धिमान था। (2) [4073]

अपने धर्म में विश्वास रखते हुए,3754
वह दूसरों के सिद्धांतों में निपुण था,3755
विशेषज्ञ3756 और कुशल [पढ़ने में]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3748 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3749 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

3750 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

3751 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

3752 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

3753 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

3754 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

3755 लिट., "गया"

3756 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

पृथ्वी और आकाश में शगुन3757। (3) [4074]

ध्यानमग्न, समाधि-प्रेमी ऋषि
उसे लालच नहीं था,3758 वह शोकमुक्त था,3759
मुझे खुशी होगी चाहे मिले या न मिले।
कम खाना खाया,3760 जानवरों को नहीं मारा।3761 (4) [4075]

पियादस्सी, संबुद्ध,
प्रधान,3762 दयालु, ऋषि, जो सभी प्राणियों की सहायता करना चाहते हैं,3763
करुणा के साथ शिक्षा का प्रसार करें।3764 (5) [4076]

पियादस्सी, महान ऋषि,
ऐसे लोगों को देखकर जो समझ सकते थे,3766
जाकर वह उन्हें प्रोत्साहित कर रहा है।
हजार ब्रह्मांडों में.3767 (6) [4077]

मुझे ऊपर उठाने की इच्छा से,
फिर वह मेरी कुटिया के पास आया। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था।3768
और न ही मैंने उसके बारे में किसी से सुना था। (7) [4078]

उस समय मुझे शकुन, सपने और शुभ संकेत बहुत स्पष्ट रूप से समझ आते थे।
कुंडली का विशेषज्ञ, 3769
[दोनों] पृथ्वी पर और आकाश में। (8) [4079]

बुद्ध के बारे में सुनकर,
मुझे उसके लिए बहुत खुशी हुई।3770
चाहे खाना खा रहे हों या बैठे हों,

3757 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

3758 लिट., "योग्य"

3759 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

3760 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

3761 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

3762 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

3763 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

3764 लिट., "एक फूल पर"

3765 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

3766 khiḍḍāratiyaÁ

3767 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

3768 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

3769 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

3770 शाब्दिक रूप से, " पूजा "

मुझे वह हर समय याद रहता है। (9) [4080]

जब मैं इस प्रकार स्मरण कर रहा था,
भगवान बुद्ध ने मेरे बारे में भी सोचा। मुझे हर पल आनंद मिलता रहा।
जब मैंने बुद्ध के बारे में सोचा। (10) [4081]

बाद में लौटकर,
वह महान ऋषि मेरे पास आए। जब वे आए (3771) तब मुझे पता नहीं था।
कि वह बुद्ध हैं, महान ऋषि। (11) [4082]

दया से परिपूर्ण, करुणामय, महान ऋषि पियादस्सी ने तब अपना परिचय मुझसे कराया:
“मैं संसार में बुद्ध हूँ।”3772 (12) [4083]

महान ऋषि संबुद्ध, पियादस्सी को जानने के बाद,
मेरा हृदय आनंद से भर गया।
मैंने ये शब्द [उस समय उससे] कहे थे: (13) [4084]

आप दूसरों पर बैठे हैं
कुर्सियाँ, पालकी और डेक-कुर्सियाँ, परन्तु आप, समस्त चीजों के द्रष्टा,
रत्नजड़ित सिंहासन पर बैठना चाहिए।3775 (14) [4085]

उस समय [किसी ने]3776 ने 3777 बनाया
सभी रत्नों से बनी एक कुर्सी, एक जादुई रूप से निर्मित 3778 सीटें
पियादस्सी, महान ऋषि के लिए। (15) [4086]

फिर मैंने एक गुलाब सेब का फल दिया,3779
पानी के घड़े जितना बड़ा,3780
उस कुर्सी पर बैठे [बुद्ध] के लिए
रत्नों से जादुई रूप से निर्मित। (16) [4087]

उस समय महान ऋषि ने इसे खाया।

3771 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

3772 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी

3773 pariḷāho

3774 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

3775 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)

3776 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

3777 samādhikusalo ahaŋ

3778 iddhipādesu kovido

3779 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

3780 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है

मेरे लिए [बहुत] हंसी पैदा कर रहा है3781.
फिर मेरे हृदय को प्रसन्नता प्रदान करते हुए,
मैंने शिक्षक को प्रणाम किया। (17) [4088]

लेकिन हे भगवान पियादस्सी,
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल, उस रत्नजड़ित सिंहासन पर विराजमान है।
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (18) [4089]

“जिसने मुझे यह रत्नजड़ित कुर्सी और यह अमृतमय फल दिया है,
मैं उनके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (19) [4090]

“सत्तर युगों तक
वह देवताओं की दुनिया में आनंदित होगा, और सत्तावन बार वह ऐसा करेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (20) [4091]

देवताओं के स्वामी, बत्तीस बार, वह दिव्य शासन का संचालन करेंगे।
[और वहाँ] बहुत स्थानीय शासन होगा, जिसकी गिनती करना असंभव है। (21) [4092]

उन्हें रत्नों से बनी और माणिक्य से बनी हुई कुर्सियाँ प्राप्त होंगी।
और कई पालकी अच्छी तरह से बनी हुई थीं
सोने में से 3783 [और] चांदी में से 3784 (22) [4093]

यहां तक कि जब हम इधर-उधर पैदल चलते थे, तब भी विभिन्न प्रकार की पालकीें दिखाई देती थीं।
हर समय प्रतीक्षा करेगा
[यह] व्यक्ति अच्छे कर्मों से युक्त है। (23) [4094]

छज्जों वाली झोपड़ियाँ, महल और बेहद महंगे पलंग, ये सब समय के साथ अस्तित्व में आ जाएँगे।
वह क्या सोच रहा है, यह समझना। (24) [4095]

और साठ हजार हाथी, सभी आभूषणों से सजे हुए, सोने के मुकुट पहने हुए , सोने के बने साज-सामान से ढके हुए।

3781 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
3782 mahābhisakkasaṅkāso
3783 dosavyādhitikicchako
3784 ॰विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
3785 दिठ्ठिगण्ड॰

हाथ में भाले और अंकुश लिए हाथी प्रशिक्षकों द्वारा सवार 3786 लोग इस [आदमी] की प्रतीक्षा करने जा रहे हैं:
यह रत्नजड़ित कुर्सी का फल है। (25-26) [4096-4097]

साठ हजार घोड़े, सभी आभूषणों से सजे हुए, उत्तम नस्ल के, सिंध से लाए गए 3787 घोड़े, तेज रफ्तार वाहन, कवचधारी और हाथों में धनुष लिए घोड़ों के प्रशिक्षकों द्वारा सवार 3788 लोग इस [आदमी] की सेवा में आ रहे हैं।
यह रत्नजड़ित कुर्सी का फल है। (27-28) [4098-4099]

साठ हजार रथ भी, सभी अलंकरणों से सजे हुए, तेंदुओं और बाघों की खालों से ढके हुए, झंडे फहराए हुए, कवच पहने और हाथों में धनुष लिए पशु प्रशिक्षकों द्वारा संचालित, निरंतर इस व्यक्ति की सेवा करेंगे:
यह रत्नजड़ित कुर्सी का फल है। (29-30) [4100-4101]

साठ हजार दुधारू गायें, लाल रंग की,3792 सर्वश्रेष्ठ में से सर्वश्रेष्ठ,3793 अनेक अच्छे बछड़ों को जन्म देंगी:
यह रत्नजड़ित कुर्सी का फल है। (31) [4102]

साठ हजार महिलाएं भी थीं, जो सभी प्रकार के आभूषणों, विभिन्न प्रकार के कपड़ों और गहनों से सजी हुई थीं।
और रत्नजड़ित बालियां पहने, लंबी पलकों वाली, प्यारी मुस्कान वाली3794 और पतली कमर वाली, देखने में मनमोहक3795 वह लगातार इस [आदमी] की सेवा करेगी:
यह रत्नजड़ित कुर्सी का फल है। (32-33) [4103-4104]

3786 लोकापज्जोटो
3787 sanarāmarasakkato
3788 नारदिको
3789 लिट., “में”
3790 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
3791 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”
3792 महास्सादंग
3793 महरसंग
3794 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए”
3795 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha

---

अब से अठारह सौ युगों बाद,
गौतम नामक नेत्रपूर्ण देव, अंधकार का निवारण करते हैं।
संसार में बुद्ध होंगे। (34) [4105]

उसे देखने पर, [यह व्यक्ति] खाली हाथ चला जाएगा। गुरु को प्रसन्न करके, वह
व्यवस्था में आनंद लें। (35) [4106]

उनकी शिक्षा सुनकर, वे दोषों का नाश करेंगे। समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग। (36) [4107]

मेरे लिए पूर्ण शांति लाने वाला जुए में लगा बैल भी बहुत मेहनत से ही संभव है।3796
परम अर्थ की कामना करते हुए,
मैं व्यवस्था में निवास करता हूँ। (37) [4108]

यह मेरे लिए आखिरी बार है;
मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है।3797
सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो चुकी हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (38) [4109]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (39) [4110]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (40) [4111]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (41) [4112]

इस प्रकार पूज्य हेमका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

हेमका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

3796 पणिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव
3797 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं

---

405. {408.}3798 Todeyya3799

केतुमती में, सबसे अच्छा शहर,
3800 ईस्वी में विजया नाम का एक राजा था।
एक नायक, जो महान शक्ति से संपन्न है,3801
तब उस शहर में निवास करते हुए। (1) [4113]

उस राजा की आलस्य के कारण, जंगल के जंगली लोग3802 उठ खड़े हुए।
वे जासूस थे,3803 और गंदी ज़बान वाले लोग थे;3804
उन्होंने तब देश को तबाह कर दिया। (2) [4114]

जब सीमावर्ती क्षेत्रों ने [उसे] क्रोधित किया, तो राजा3805 ने तुरंत [अपने] आश्रितों3806 और अधिकारियों3807 को इकट्ठा किया।
उन सभी शत्रुओं को रोकने के लिए। (3) [4115]

हाथी सवार,3809 संतरी,3810 योद्धा,3811 ढालधारी सैनिक,3812 तीरंदाज,3813 और पराक्रमी कुलीन:3814

वे सब उस समय एकत्रित हुए। (4) [4116]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3798 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

3799 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

3800 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

3801 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

3802 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

3803 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

3804 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

3805 लिट., "गया"

3806 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

3807 lit., "गिर गया"

3808 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

3809 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

3810 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप

भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

3811 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

3812 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

3813 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

3814 लिट., "एक फूल पर"

रसोइये3815 [और] बाल संवारने वाले,3816 स्नान कराने वाले लड़के,3817 माला बनाने वाले,3818 नायक3819 [और] विजयी सैनिक:3820

वे सब उस समय एकत्रित हुए। (5) [4117]

तलवारबाज3821 और साथ ही वेटर3822

धनुर्धर और कवचधारी लोग, शिकारी3823 और विजयी सैनिक:3824 वे सब उस समय एकत्रित हुए। (6) [4118]

म'आतंगस 3825 तीन तरीकों से संभोग करते हुए 3826 [और] साठ वर्ष की आयु के हाथी, सोने के मुकुट से सजे हुए:
वे सब उस समय एकत्रित हुए। (7) [4119]

जिन सैनिकों ने यह काम किया है,
शीत [साथ ही] गर्मी सहन करना:3829 साथ ही मल-त्याग:3830
वे सब उस समय एकत्रित हुए। (8) [4120]

शंखों की ध्वनि, ढोलों की ध्वनि, और इस प्रकार तुरहियों की ध्वनि;3831
वे उन [आवाजों] से प्रसन्न हो रहे थे।
उस समय सभी एकत्रित हुए। (9) [4121]

जो कुचलते हैं और जो चोट पहुँचाते हैं3832
त्रिशूल3833 [और] चाकू3834 [और] मंत्रों3835 के साथ

3815 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
3816 khiḍḍāratiyaÁ
3817 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
3818 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
3819 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।
3820 शाब्दिक रूप से, “ पूजा ”
3821 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
3822 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
3823 pariḷāho
3824 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
3825 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
3826 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
3827 samādhikusalo ahaŋ
3828 iddhipādesu kovido
3829 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”
3830 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
3831 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
3832 mahābhisakkasaṅkāso
3833 dosavyādhitikicchako
3834 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
3835 दिट्ठिगण्ड°

कवच और भाले:
वे सब उस समय एकत्रित हुए। (10) [4122]

कवच धारण किए हुए,3836 वह राजा, विजयहीन विजेता,3837 उस समय त्रिशूलों पर लटका दिया गया था।

साठ हजार जीव। (11) [4123]

तब लोगों ने चीख मारी, “हाय! राजा अधर्मी है। इसका अंत कब होगा?”
जो नरक में जल रहा है उसके लिए?3839 (12) [4124]

फिर मैं बिस्तर पर करवटें बदलता रहा।
[मानो]3841 मैं लेटा हुआ हूँ3842 नरक में:3843
मैं दिन-रात नहीं सोता;
वे मुझे त्रिशूल से यातना देते हैं। (13) [4125]

“इस लापरवाह राजशाही, इन वाहनों या इस सेना का क्या फायदा है?”
वे मेरा भरण-पोषण करने में सक्षम नहीं हैं;
वे मुझे हर समय डराते रहते हैं। (14) [4126]

इन बेटों और इन पत्नियों का, और साथ ही इस पूरे राजतंत्र का क्या फायदा है?
तो फिर मैं अब आगे क्यों न बढ़ूँ?
मैं पुनर्जन्म के मार्ग को शुद्ध करूँगा। (15) [4127]

मेरी सारी संपत्ति की उपेक्षा करते हुए
युद्ध लड़ते हुए मैंने अपने साठ हजार हाथियों को छोड़ दिया, जो सभी आभूषणों से सजे हुए थे, सोने के मुकुटों से युक्त थे , सोने के बने साज-सामान से ढके हुए थे, और हाथी प्रशिक्षकों द्वारा सवार थे।
उनके हाथों में भाले और अंकुश थे।3845

3836 लोकापज्जोटो
3837 sanarāmarasakkato
3838 नारदिको
3839 लिट., “में”
3840 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
3841 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”
3842 महास्सादंग
3843 महरसंग
3844 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए”
3845 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha

---

अपने ही बुरे कर्मों से भयभीत होकर,
मैं बेघर हो गया। (16-18ए-बी) [4128-4129]3846

मेरे साठ हजार घोड़े भी, सभी आभूषणों से सजे हुए, उत्तम नस्ल के, सिंध से लाए गए 3847 घोड़े, तेज गति से चलने वाले वाहन, जिन पर कवचधारी और हाथों में धनुष लिए घोड़ों के प्रशिक्षक सवार थे - उन सभी को मैंने त्याग दिया।
मैं बेघर हो गया। (18सी-डी-20ए-बी) [4130-4131]

साठ हजार रथ भी, सभी आभूषणों से सजे हुए, तेंदुओं की खालों से ढके हुए।
और इसी प्रकार बाघों के लिए 3850 झंडे फहराए गए —
उन सभी को त्यागकर,
मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (20c-d-21) [4132]3851

साठ हजार दुधारू गायें [साथ ही], [और] दूध के लिए सभी धातु की बाल्टियाँ3852 — उन्हें भी हटा देना,
मैं बेघर हो गया। (22) [4133]

मेरी साठ हज़ार स्त्रियाँ भी, सभी आभूषणों से सजी हुई, विभिन्न प्रकार के वस्त्रों और गहनों से सुसज्जित।
और रत्नजड़ित बालियां पहने हुए, लंबी पलकों के साथ, प्यारी मुस्कान के साथ3853
और पतली कमर, देखने में आकर्षक3854 —
उन्हें रोते हुए छोड़कर,
मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (23-24) [4134-4135]

और साठ हजार गाँव, हर तरह से परिपूर्ण — उस संपूर्ण राजशाही को त्यागकर।
मैं बेघर हो गया। (25) [4136]

3846 पणिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव
3847 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
3848 लिट., "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था"
3849 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
3850 या "शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना"
3851 लिट., "बहिर्वाहों का विनाश"
3852 या "जो बाहर गया था": पब्बाजितो
3853 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।
3854 शाब्दिक रूप से, "यहाँ"

शहर से बाहर निकलकर मैं हिमालय की ओर बढ़ा।
भागीरथी3855 नदी के तट पर,
मैंने एक आश्रम का निर्माण किया। (26) [4137]

पत्तियों से एक हॉल बनाने के बाद
मैंने अपने लिए एक गर्म कमरा बनाया;3856
प्रयास करने पर दृढ़,3857 संकल्पित,3858
मैं अपने आश्रम में रह रहा हूँ। (27) [4138]

मेरे मन में भय उत्पन्न नहीं होता;
मुझे कोई भय या डरावनी चीजें दिखाई नहीं देतीं।
पेड़ों के नीचे ध्यान करते समय,
मंडपों में 3859 या खाली घरों में। (28) [4139]

सम्बुद्ध, सुमेधा, प्रधान, करुणामय, ज्ञान के प्रकाश से प्रज्वलित ऋषि,
उस समय दुनिया में उत्पन्न हुआ। (29) [4140]

उस समय मेरे आश्रम के पास एक शक्तिशाली आत्मा3860 निवास करती थी। जब सर्वश्रेष्ठ बुद्ध का जन्म हुआ,
फिर उन्होंने मुझे [वह तथ्य] बताया: (30) [4141]

"इस संसार में एक बुद्ध का उदय हुआ है, एक दर्शनीय पुरुष जिसका नाम सुमेधा है; वह सभी लोगों को पार करने में सहायता कर रहा है;
वह तुम्हें भी पार करा देगा।" (31) [4142]

आत्मा के वचन सुनने के बाद,
मैं हर समय बहुत भावुक था;
सोचते हुए, "एक बुद्ध! एक बुद्ध!"
मैंने अपना आश्रम तैयार किया। (32) [4143]

आग जलाने के लिए लकड़ी काटने के बाद
और अपने आश्रम की पूजा करने के बाद, मैंने अपनी सोने की चटाई को समतल किया।
मैं [तब] जंगल से बाहर निकल गया। (33) [4144]

3855 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।

3856 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है।
3857 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"
3858 sampahaŋsitā
3859 भोट्टा , बीजेटीएस में इसे भेट्टा ("तोड़ने वाला") पढ़ा जाता है।
3860 chettā
3861 sotā
3862 pasaŋsitā

चंदन को गांव-गांव, शहर-शहर ले जाना,
देवताओं के परमेश्वर, [उनकी] खोज में
फिर मैं गाइड के पास गया। (34) [4145]

उस समय, भगवान सुमेधा, विश्व के नेता,
तब वे चार [महान] सत्यों का प्रचार कर रहे थे और लोगों को ज्ञान प्रदान कर रहे थे। (35) [4146]

मैंने अपने दोनों हाथों को एक साथ दबाया और चंदन को अपने सिर पर रखा, संबुद्ध को प्रणाम किया।
मैंने तब उससे ये आयतें कही थीं: (36) [4147]

जब चमेली के पेड़3864 फूल रहे होते हैं

उनकी सुगंध उनके चारों ओर फैली हुई है;3865
हे वीर, सदाचार की सुगंध से तुम हर दिशा में व्याप्त हो। (37) [4148]

जब साल के पेड़3867 फूलते हैं, चंपक,3868 आयरनवुड,3869 वैनिका ,3870
हिप्टेज लताएँ,3871 और [भी] स्क्रू-पाइन,3872
[उनकी सुगंध] हवा के साथ फैल जाती है। (38) [4149]

आपकी [इत्र जैसी] खुशबू सूंघकर मैं हिमालय से यहां आया हूं।
मैं आपकी पूजा करता हूँ,3873 हे महान ऋषि,
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, हे महान प्रसिद्धि का।" (39) [4150]

मैंने विश्व नेता सुमेधा का उत्तम चंदन से अभिषेक किया, जिससे मेरे हृदय को प्रसन्नता हुई।
मैं उस समय चुपचाप खड़ा रहा। (40) [4151]

सुमेधा नामक भगवान,
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का सांड,

3863 akhilo
3864 visālo . BJTS इसे visallo ("दर्द से मुक्त") पढ़ता है
3865 anīgho
3866 अकाथंकाथि , ilt. "नहीं कह रहा, 'क्यों'?"
3867 अनेजो
3868 विराजो
3869 खट्टा । बीजेटीएस इसे खंत (विनम्र) पढ़ता है।
3870 रीडिंग गंटा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस गंधा ("सुगंधित")
3871 PTS mettā ("प्रेम") के लिए BJTS के साथ vattā का पाठ
3872 pakāsitā
3873 t'āretā

भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (41) [4152]

"जिसने मेरे गुणों की प्रशंसा की और
जिसने चंदन से मेरी पूजा की; मैं उसके बारे में विस्तार से बताऊंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (42) [4153]

पच्चीस युगों तक वह एक सुंदर पुरुष बना रहेगा।
जो स्वागत योग्य शब्द बोलता है, pious3875
[और] सीधा, महान शक्ति से परिपूर्ण।3876 (43) [4154]

छब्बीसवें युग में उसने

वह देवताओं की दुनिया में आनंदित होगा। वह हजार बार राजा बनेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (44) [4155]

देवताओं के स्वामी, तैंतीस बार दिव्य शासन करेंगे।
[और वहाँ] बहुत स्थानीय शासन होगा, जिसकी गिनती करना असंभव है। (45) [4156]

वहां से गिरने के बाद, यह व्यक्ति मानव अवस्था में प्रवेश करेगा।
अपने अच्छे कर्मों से बंधा हुआ वह है
ब्रह्मा का संबंधी बनने जा रहा है।3878 (46) [4157]

विद्वान, सभी मंत्रों का ज्ञाता, तीनों वेदों का ज्ञाता।
तीन शुभ चिह्नों से युक्त
ब्राह्मण बावरी होगा। (47) [4158]

उस व्यक्ति का शिष्य बनकर वह मंत्रों का उस्ताद बन जाएगा।
शाक्यों के सांड, गौतम संबुद्ध की ओर बढ़ते हुए,
सूक्ष्म प्रश्न पूछकर, सीधे मार्ग पर चलते हुए, वह सभी दोषों को भली-भांति जानता था।
निर्वाण प्राप्त करेंगे, बेदाग। (48-49) [4159-4160]

3874 में तारेटा ("क्रॉसर") के पीटीएस पुनरावृति के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ अत्थकारेता का पाठ किया गया है।

3875 k'āretā

3876 सम्पदालता , बीजेटीएस सम्पदालता

3877 पापेता

3878 साहित्य , या "सहनकर्ता"

3879 में, BJTS के साथ kantā का पाठ किया गया है, जिसमें PTS में hantā की पुनरावृत्ति है , जिसे दोनों पाठ श्लोक में अगले शब्द के रूप में पढ़ते हैं।

मेरे भीतर की तीनों अग्नियां3880 बुझ गई हैं; समस्त [नया] अस्तित्व नष्ट हो गया है; समस्त अशुद्धियों को भली-भांति जानते हुए,
मैं अब भी बेदाग़ जीवित हूँ। (50) [4161]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (51) [4162]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (52) [4163]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (53) [4164]

इस प्रकार पूज्य तोदेय्या थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तोदेय्या थेरा की कथा का अंत हो गया है।

406. {409.}3881 जातुकणिका3882

हंसवती नगर में,
मैं एक धनी व्यक्ति का पुत्र था।3883
मैं हर समय अपना मनोरंजन करता रहता हूँ।
इंद्रिय सुखों से संपन्न। (1) [4165]

तीन महलों में से एक पर चढ़ना 3884
वास्तुकारों द्वारा मेरे लिए उठाया गया 3885,3886

3880 हंता
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 3881 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
3882 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
3883 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
3884 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
3885 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
3886 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मैं लगातार अपना मनोरंजन करता रहता हूँ
वहाँ नृत्य और गायन के साथ। (2) [4166]

मेरे लिए संगीत वाद्ययंत्र बजाए गए, सही धुन बनाए रखें।
सभी महिलाएं नृत्य कर रही हैं;
वे मेरा ध्यान भटका रहे हैं। (3) [4167]

सिर घुमाने वाले,3890 छोटे बौने नर्तक,3891 कुटिया में बैठने वाले,3892 बीच में बैठने वाले,3893 उछलने वाले,3894 और हास्य नर्तक3895
वे हमेशा मेरा मनोरंजन करते हैं। (4) [4168]

झांझ बजाने वाले, 3896 कुंभथून बजाने वाले, 3897 अनेक नर्तक, 3898 कठपुतली कलाकार; 3899 [वे] नर्तक और कठपुतली कलाकार
वे हमेशा मेरा मनोरंजन करते हैं। (5) [4169]

स्नान कराने वाले लड़के3900 [और] बाल संवारने वाले,3901 रसोइये,3902 माला बनाने वाले,3903 पासा खेलने वाले,3904 सभी मुक्केबाज3905 [और] पहलवान3906
वे हमेशा मेरा मनोरंजन करते हैं। (6) [4170]

3887 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

3888 शाब्दिक रूप से, "गया"

3889 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

3890 लिट., “गिर गया”

3891 शाब्दिक अर्थ, “योग्य”

3892 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

3893 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

3894 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

3895 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

3896 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

3897 लिट., “एक फूल पर”

3898 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

3899 khiḍḍāratiyaÁ

3900 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

3901 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, “मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में”

3902 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।

3903 शाब्दिक रूप से, “ पूजा ”

3904 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

3905 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी

3906 pariḷāho

जब वे सुप्रशिक्षित3907 पेशेवर3908
वे [विभिन्न3909 कलाओं] में खेल रहे हैं, मुझे रात और दिन का अंतर नहीं पता,

जैसे इंद्र3910 तीस देवताओं के साथ।3911 (7) [4171]

राहगीर,3912 सड़क पर लोग,3913 भिखारी3914 और कई यात्री,3915 वे हमेशा मेरे पास आते रहते हैं।
[और] मेरे घर पर भोजन करते हैं। (8) [4172]

[बौद्ध] भिक्षु और ब्राह्मण भी, पुण्य के लिए अद्वितीय क्षेत्र3916 हैं, जो मेरे पुण्य को बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं3917
मेरे घर भी आ रहे हैं। (9) [4173]

सभी जैन: पादक 3918
Laṭakas ,3919 Pupphasāṭakas ,3920
T'edaṇḍakas ,3921 Ekasikhas 3922
मेरे घर भी आ रहे हैं। (10) [4174]

अजीविका: गोधम्मस , 3923
विलुट्टाविस , 3924 देव'अधम्मिस , 3925
[और] राजोज्जल्लाधर , 3926
मेरे घर भी आ रहे हैं। (11) [4175] तपस्वी और वनवासी:
3907 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
3908 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)

3909 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
3910 samādhikusalo ahaŋ
3911 iddhipādesu kovido
3912 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
3913 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
3914 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
3915 mahābhisakkasaṅkāso
3916 dosavyādhitikicchako
3917 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
3918 दिट्ठिगण्ड°
3919 लोकापज्जोटो
3920 sanarāmarasakkato
3921 नारदिक्को
3922 लिट., "में"
3923 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
3924 निब्बाती , या "वह शांत हो जाता है"
3925 महास्सादंग
3926 महरसंग

परिवत्तकस , 3927 सिद्धिपट्ट 3928

अनेक कोंड , 3929 पुग्गलिका , 3930
मेरे घर भी आ रहे हैं। (12) [4176]

ओ'ड्डकस , 3931 और दामिलास , 3932
साकुलस ,3933 मलयाकास ,3934
सबरस ,3935 और योनाकास 3936 भी
मेरे घर भी आ रहे हैं। (13) [4177]

अंधक ,3937 सभी मुण्डक ,3938
कोलकास ,3939 सानुविंदकास ,3940
और अरवाचिनारथस 3941
मेरे घर भी आ रहे हैं। (14) [4178]

अलसंदकास ,3942 पल्लावकास ,3943
बब्बारस ,3944 भग्गा-कारुसास ,3945
रोहिता 3946 और सेतापुत्ता 3947
मेरे घर भी आ रहे हैं। (15) [4179]

मधुरकास ,3948 कोसलकास ,3949
कासिकास ,3950 हत्थिपोराकास ,3951
इसिंदस 3952 और मत्तलस 3953 [भी]

3927 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
3928 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
3929 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव
3930 पीटीएस याहिŋ ताहिŋ; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
3931 लिट., "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था"
3932 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
3933 या "शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना"
3934 लिट., "बहिर्वाहों का विनाश"
3935 या "जो बाहर गया था": पब्बाजितो
3936 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।
3937 शाब्दिक रूप से, "यहाँ"
3938 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।
3939 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है।
3940 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"
3941 sampahaŋsitā
3942 भोट्टा , बीजेटीएस में इसे भेट्टा ("तोड़ने वाला") पढ़ा जाता है।
3943 chettā
3944 sotā
3945 pasaŋsitā

3946 akhilo
3947 visālo . BJTS इसे visallo (“दर्द से मुक्त”) पढ़ता है
3948 anīgho
3949 अकाथंकाथि , ilt. "नहीं कह रहा, 'क्यों'?"
3950 अनेजो
3951 विराजो
3952 खट्टा । बीजेटीएस इसे खंत (विनम्र) पढ़ता है ("विनम्र")
3953 रीडिंग गंटा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस गंधा (“सुगंधित”)

मेरे घर भी आ रहे हैं। (16) [4180]

वेलावकास 3954 और अराममास ,3955
ओक्कलास ,3956 अनेक मेकलास ,3957
खुद्दाकास 3958 और सुद्दाकास 3959 [भी]
मेरे घर भी आ रहे हैं। (17) [4181]

रोहनास , 3960 और सिंधवस , 3961
चित्तस 3962 [और] एकांकिकास ,3963
सूरत 3964 और अपारंत 3965
मेरे घर भी आ रहे हैं। (18) [4182]

सुपारिकास ,3966 किकुमारस 3967
M'alayas ,3968 Soṇṇabhūmakas ,3969
वज्जिहारस 3970 भी, वे सभी
मेरे घर भी आ रहे हैं। (19) [4183]

टोकरी बनाने वाले,3971 बुनकर,3972 चमड़े का काम करने वाले,3973 और बढ़ई,3974 धातु शिल्पकार,3975 साथ ही कुम्हार,3976
मेरे घर भी आ रहे हैं। (20) [4184]

रत्न विक्रेता3977 और कांस्य विक्रेता3978

3954 PTS mettā (“प्रेम”) के लिए BJTS के साथ vattā का पाठ
3955 pakāsitā
3956 t'āretā
3957 में तारेटा ("क्रॉसर") के पीटीएस पुनरावृति के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ अत्थकारेता का पाठ किया गया है।
3958 k'āretā
3959 सम्पदालता , बीजेटीएस सम्पदालता
3960 पापेता
3961 साहित्य , या "सहनकर्ता"

3962 में, BJTS के साथ kantā का पाठ किया गया है, जिसमें PTS में hantā की पुनरावृत्ति है , जिसे दोनों ग्रंथों में श्लोक में अगला शब्द माना गया है।
3963 हंताई
3964 रीडिंग ātāpī with BJTS for PTS tātâpi (“also the Protector”)
3965 t'āpaso , इससे पंक्ति में नौ अक्षर बनते हैं, जिसे "हत्यारा" को संक्षिप्त करके आठ अक्षरों के रूप में उच्चारित करने की आवश्यकता है।
"स्लेयर" में
3966 samacitto
3967 'समासामो , (बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस के अनुसार; इसका मूल रूप समासामो भी हो सकता है , जिसका अर्थ है "हमेशा एक जैसा")
3968 a'sahāyo , शाब्दिक अर्थ, “मित्रहीन”
3969 रीडिंग दयासायो (और निम्नलिखित व्याख्या) बीजेटीएस के साथ पीटीएस दयायासो ("दयालुता के लिए प्रसिद्ध" "दयालुता-प्रसिद्ध") के लिए
3970 accherasanto
3971 अकुहो , शाब्दिक अर्थ, "धोखे से मुक्त" "ईमानदार"
3972 क'अतावी , अर्थात् एक अरहंत, जिसने वह किया है जो किया जाना चाहिए
3973 i'sisattamo
3974 nittiṇṇakaṅkho
3975 nimmāno
3976 अप्पमेय्या , शाब्दिक अर्थ, "मापा नहीं जा सकता"
3977 अनुपमा , शाब्दिक अर्थ, "वह जिसके लिए कोई रूपक नहीं है"
3978 sabbavākyapathātīto , शाब्दिक अर्थ, “वह जिसके लिए सभी कथनों के मार्ग अतीत में हैं”

सोने के कामगार3979 और कपड़े के व्यापारी3980
और जो लोग टिन में काम करते हैं, वे सभी
मेरे घर भी आ रहे हैं। (21) [4185]

तीरंदाज3981 और धनुष बनाने वाले,3982 बुनकर3983 और इत्र बनाने वाले,3984 साथ ही दर्जी,3985 ये सभी
मेरे घर भी आ रहे हैं। (22) [4186]

तेल-हैंडलर3986 और लकड़ी-संग्रहकर्ता,3987
पानी ढोने वाले3988 और नौकर,
रसोइये3989 और वे जो सूप3990 की रक्षा करते हैं
मेरे घर भी आ रहे हैं। (23) [4187]

द्वारपाल3991 और प्रहरी,3992 स्तुतिगानकर्ता,3993 फूल तोड़ने वाले, हाथी सवार3994 और रखवाले3995
मेरे घर भी आ रहे हैं। (24) [4188]

मैंने आलसी लोगों को [धन] दे दिया
महाराजा आनंद

3979 saccaneyyantago , शाब्दिक अर्थ, "वह जो सत्यों के अंत तक पहुँच चुका है जिसे समझा जाना है [या निर्देश दिया जाना है, नेतृत्व किया जाना है, मार्गदर्शन किया जाना है (नेति का क्रियापद)]"

3980 जिनो

3981 sattasāravare . BJTS इसे महल को संशोधित करने के रूप में व्याख्या करता है, लेकिन पाली मुझे इससे अधिक अस्पष्ट लगती है। v. [5887] और [6287] में बुद्ध-विशेषण के रूप में sattasāra° के प्रयोग की तुलना करें।

3982 रीडिंग akaṃ dhammakathaṃ ahaṃ with BJTS for PTS ahaŋ dhammakathaŋ ahaŋ ("मैं धम्म- प्रचारक मैं")

3983 nissāso , BJTS ग्लॉस māgē piṭatаṭa heḷana vātaya ("वह हवा जिसे मैं नीचे फेंकता/अपने बाहरी हिस्से में निकाल देता हूँ")

3984 रीडिंग sabbagandhe 'tiseti (= atisayati) BJTS के साथ PTS sabbagandho ti seti ("यह 'सभी अच्छी सुगंधों' को नीचे रखता है")

") और इसके बाद बीजेटीएस सिंहली ग्लॉस

3985 BJTS में एटिसैंटो के लिए एडिसैंटो ("घोषणा") पढ़ा जाता है

3986 रीडिंग guṇatthavassa sabbaṃ taṃ phalaṃ tu paramambhūtaṃ with BJTS for PTS guṇatthavassapupphan tan phalan tu param abbhutaŋ ("वह फल जो सद्गुण के अर्थ में अत्यंत चमत्कारी रूप से खिलता है" [?]), और BJTS ग्लॉस का अनुसरण किया: buddha guṇakitiyāge ē siyalu vipāka atiśaya vismayajanaka ya .

3987 पाठ का चौथा (अनुवाद में तीसरा) पद त्रुटिपूर्ण प्रतीत होता है। IPTS इसे rasaddhovisamāyuto पढ़ता है । "शुद्ध स्वाद से बंधा हुआ।" BJTS में लिखा है (टाइपोग्राफिकल त्रुटि?) saradvadhanisamāyuto (= rasad- hvanisaāmyuto ?)। दोनों ही मामलों में वैकल्पिक अनुवाद और भी अनिश्चित हैं। मैं BJTS के सिंहली अनुवाद का अनुवाद करता हूँ, mad- hura svaradhvani yukta vūyem (- mihirihaddha ättem), "मैं मधुर ध्वनि से बंधा हुआ (मेरे पास एक मधुर ध्वनि है)"।

3988 रीडिंग khīṇe ayusi with BJTS for PTS khīṇ' ev' āyu pi ("जीवन भी निश्चित रूप से नष्ट हो जाता है")

3989 शाब्दिक रूप से, "आप सभी इसे सुनें" (द्वितीय व्यक्ति बहुवचन क्रिया)

3990 ya'sassī

3991 शाब्दिक रूप से, "इसलिए मैं खुश हूँ"

3992 दुःखान्तकरण बुद्ध , शाब्दिक अर्थ: "दुखों का अंत करने वाला बुद्ध"

3993 धम्मॅ ...

3994 जनायण , लिट., "मैंने उत्पादन किया"

3995 या "विधर्मी": कुटित्थिये

उसकी कमी को कवर करना 3996
सात रंगों के रत्नों के साथ। (25) [4189]

मैं सभी रत्नों से संतुष्ट हूँ।
जिन लोगों की मैंने प्रशंसा की, यानी विभिन्न रंगों के लोगों का समूह,
वे क्या सोच रहे थे, यह समझना। (26) [4190]

जब मधुर शब्द बोले जा रहे थे, जब ढोल बज रहे थे, जब शंख बजाए जा रहे थे,
मैं अपने घर में आनंदित हूँ। (27) [4191]

उस काल में बुद्ध3997 नेता पदुमत्तरा थे।

वह एक लाख लोगों के साथ था
जिनके दोष [अब] विलुप्त हो गए थे।3998 (28) [4192]

आँखों को भाने वाला आगे बढ़ चुका था
भिक्षुओं के साथ सड़क। हर दिशा को रोशन करते हुए।
वह दीपकों के वृक्ष की तरह प्रज्वलित हुआ। (29) [4193]

वे सभी यात्रा करने वाले विश्व नेता के लिए अपने ढोल पीट रहे हैं।
उनकी [शानदार] रोशनी फैल रही है,
जैसे सूरज उग चुका हो। (30) [4194]

यहां तक कि उन 4001 पैनल वाली खिड़कियों के पीछे भी, जिन तक इसकी किरणें नहीं पहुंच पातीं,
हर समय, घरों के अंदर,
वहाँ एक जबरदस्त प्रतिभा थी। (31) [4195]

बुद्ध की ज्योति देखने के बाद मैंने सभा में उपस्थित लोगों से कहा, "निस्संदेह, यह सर्वश्रेष्ठ बुद्ध हैं।"
क्या यह सड़क पर जा रहा है? (32) [4196]

महल से नीचे उतरकर मैं तुरंत बाजार की ओर चल पड़ा।

3996 रीडिंग titthikākiṇṇe with BJTS for PTS titthikâkiṇṇo ("मैं प्रतिद्वंद्वियों से घिरा हुआ हूँ")
3997 v'adanto , शाब्दिक अर्थ, "कहना," "बताना"
3998 में पीटीएस varaŋ ("उत्कृष्ट") के लिए BJTS (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ vadaṃ पढ़ा गया है।
3999 रीडिंग जनास्सा विद बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) फॉर पीटीएस °जिनासा ("विजेता का")
4000 रीडिंग sarado va sasaṅko 'haṃ with BJTS for PTS saraŋ divasasanko 'haŋ ("मैं झील के लिए दिन में चंद्रमा हूँ" [?])
4001 लिट., "मैं था"

संबुद्ध को प्रणाम करने के बाद,
मैंने ये शब्द [उस समय उससे] कहे थे: (33) [4197]

हे बुद्ध, मुझ पर दया करो।
नेता [जिसका नाम] सर्वोच्च कमल है।"
तब ऋषि ने आने की सहमति दी।
एक लाख स्वामियों के साथ। (34) [4198]

इस प्रकार संबुद्ध को आमंत्रित करते हुए,
मैं उसे अपने विशाल घर ले गया।
वहाँ मैंने महान ऋषि को संतुष्ट किया।
खाने-पीने के साथ। (35) [4199]

यह जानते हुए कि खाने के लिए बहुत देर हो चुकी है
हे तटस्थ, सर्वश्रेष्ठ बुद्ध के लिए, मैंने सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की सेवा की।
सौ संगीत वाद्ययंत्र। (36) [4200]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
अपने ही घर के अंदर बैठे हुए,
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (37) [4201]

"जिसने मुझे यंत्रों से सेवा की और जिसने मुझे भोजन और पेय पदार्थ दान में दिए, मैं उसके बारे में विस्तार से बताऊंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (38) [4202]

यह व्यक्ति पूरी दुनिया को एक राज्य में बदलने जा रहा है। सोने और धन से संपन्न होकर,
वह प्रचुर भोजन वाला होगा। (39) [4203]

पाँच सिद्धांतों का पालन करना,4003 [और] फिर दस प्रकार के कार्यों का पालन करना;4004 प्रगति करना,
वह [तब] अपने दल को प्रशिक्षित करेगा। (40) [4204]

साठ हजार यंत्र [और]
जो महिलाएं पूरी तरह से सजी-धजी हैं
इसके लिए लगातार खेलते रहेंगे:
यही उपस्थिति का फल है। (41) [4205]

वह तीस हजार युगों तक देवताओं की दुनिया में आनंदित रहेगा।

4002 lit., "द वेल-गॉन-वन," सुगाताŋ
4003 y'athāsattivasena
4004 v'āgīso , "[मैं एक हूँ] वाणी पर महारत के साथ"

देवताओं के स्वामी, चौंसठ बार,
वह दैवीय शासन का प्रयोग करेगा। (42) [4206]

और चौहत्तर बार वह ऐसा ही करेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है, [और वहाँ] बहुत स्थानीय शासन होगा, गिनती में अनगिनत। (43) [4207]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (44) [4208]

वह जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लेता है, चाहे वह मानव रूप हो या दिव्य रूप, धन की कमी से रहित होकर।
वह मानवीय अवस्था में जाएगा। (45) [4209]

एक विद्वान बनकर, तीनों वेदों के ज्ञाता बनकर,
यह व्यक्ति परम अर्थ की खोज में [पूरी] पृथ्वी पर भटकेगा। (46) [4210]

और उसके बाद वह अपनी उत्तम जड़ों से प्रेरित होकर आगे बढ़ेगा। वह इस व्यवस्था में रोमांचित होगा।
गौतम, भगवान। (47) [4211]

शाक्यों के श्रेष्ठ बैल गौतम संबुद्ध को प्रसन्न करने के बाद,
अपने पापों को जलाकर,
यह अरहंत बनेगा।" (48) [4212]

जंगल के शेर-राजा की तरह, जानवरों के राजा शेर की तरह, आज मैं बिना किसी डर के जी रहा हूँ।
बुद्ध के 4005 युग में। (49) [4213]

मुझे नहीं लगता कि मेरा जन्म अभाव में होगा या मेरा पुनर्जन्म बुरा होगा।
देवताओं या मनुष्यों की दुनिया में:
यही उपस्थिति का फल है। (50) [4213] मैं [अब] एकांतवास पर ध्यान केंद्रित कर रहा हूँ,4006
4005 में विमतिपट्टा को पीटीएस विमतिंग पट्टा के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है , हालांकि बाद वाला (व्याकरणिक दृष्टि से कुछ हद तक गलत) समान अर्थ व्यक्त करता है।
4006 में apades' ahaṃ को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS apaniŋ (समान अर्थ, apaneti से) के लिए पढ़ा गया है।

शांत, 4007 पुनर्जन्म के आधार से रहित; 4008
टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (51) [4215]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (52) [4216]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (53) [4217]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (54) [4218]

इस प्रकार पूज्य जतुकण्णिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

जतुकन्निक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

407. {410.}4009 उडेना4010

हिमालयी क्षेत्र में,
पद्मा नाम का एक पर्वत है।4011
मेरा सुगठित आश्रम [वहाँ है]
पत्तों से बने सुव्यवस्थित हॉल के साथ। (1) [4219]

वहां बहने वाली नदियों के किनारे अच्छे हैं और वे सुंदर हैं, उनका पानी साफ और ठंडा है;
[वे] नदियाँ हमेशा सुंदर होती हैं। (2) [4220]

4007 tiṇṇasamsārasāgaro

4008 BJTS mañcado (“Mañcada”) पढ़ता है

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4009 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4010 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

4011 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

वहाँ शीशफ़िश, 4012 पावुसा 4013 मछली हैं,
v'alaja ,4014 रीड-फिश4015 [और] रेड-फिश.4016
वे नदी में चमक रहे हैं;
नदियाँ हमेशा [उन्हें] ले जाती हैं।4018 (3) [4221]

वे आम, गुलाब सेब आदि के रंग में लिपटे हुए हैं।
k'areri 4022 [और] कोरल-बीन वृक्ष,4023 गोल्डन शावर,4024 ट्रम्पेट-फूल,4025 मेरे आश्रम को सुशोभित करते हुए। (4) [4222===

Alangium,4026 red bimbijāl ,4027
और मायाकारी 4028 [वृक्ष] खिले हुए हैं और सुगंध फैला रहे हैं, मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (5) [4223]

हिप्टेज लताएँ4029 और सत्तलिका ,4030 आयरनवुड4031 [और] साल 4032 फूल में दिव्य सुगंध बिखेर रहे हैं, मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (6) [4224]

4012 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को संदर्भित करता है।

4013 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4014 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4015 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4016 शाब्दिक रूप से, "गया"
4017 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4018 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4019 शाब्दिक रूप से, "योग्य"
4020 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए लैटिन शब्द "हजार" और "सौ" के संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूं। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4021 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस कई रूपों में गेण्डु पढ़ता है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
4022 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4023 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
4024 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा जा रहा है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4025 लिट., “एक फूल पर”
4026 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
4027 khiḍḍāratiyaÁ
4028 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
4029 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, “मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में”
4030 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।
4031 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”
4032 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

नीम, 4033 सलाला , 4034 पीली चीज़वुड 4035
और अट्ठंग 4036 [वृक्ष] पूरी तरह खिले हुए हैं, दिव्य सुगंध बिखेर रहे हैं, मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (7) [4225]

मेरे आश्रम में बहुत सारे फल हैं: मायरोबलन4037 [और] आंवला,4038 आम,4039 गुलाब-सेब,4040 बहेरा,4041 बेर,4042 मार्किंगनट,4043 बेल.4044 (8) [4226]

मेरे आश्रम में कदम4045 और केले के पेड़ खिल रहे हैं। दिव्य सुगंध बिखेरते हुए, वे मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (9) [4227]

अशोकपिंडी , 4046 कैवरी , 4047
और पीले चीज़वुड4048 [पेड़] खिले हुए हैं, जिनसे दिव्य सुगंध निकल रही है।
मेरे आश्रम को सुशोभित करना। (10) [4228]

वहाँ लॉरेल4049 [और] माउंटेन लॉरेल4050 [पेड़] [और] तिमिरा [पेड़] खिले हुए हैं।
दिव्य सुगंध बिखेर रही हैं, मेरे आश्रम को सुशोभित कर रही हैं। (11) [4229]

निग्गुंडी , 4051 सिरिनिगुंडी 4052

4033 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी

4034 pariḷāho

4035 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

4036 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)

4037 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

4038 samādhikusalo ahaŋ

4039 iddhipādesu kovido

4040 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

4041 mārasenāpamaddano , BJTS reads mārasenappamaddano

4042 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।

4043 mahābhisakkasaṅkāso

4044 dosavyādhitikicchako

4045 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

4046 दिठ्ठिगण्ड°

4047 लोकापज्जोटो

4048 sanarāmarasakkato

4049 नारदिको

4050 लीटर, “में”

4051 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।

4052 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”

और खिले हुए चंपक के वृक्षों से दिव्य सुगंध निकल रही है।
मेरे आश्रम को सुशोभित करना। (12) [4230]

[आश्रम] के पास एक तालाब है, जो लाल हंसों के गीतों से भरा है,4054 और मंडलक के फूलों से ढका है4055
और गुलाबी और नीले कमलों के साथ।4056 (13) [4231]

इसमें साफ पानी है, ठंडा पानी है।
अच्छे स्नान-फोर्ड4057 जो सुंदर हैं। यह स्पष्ट है, क्रिस्टल के समान, मेरे आश्रम को सुशोभित करता है। (14) [4232]

वहाँ गुलाबी कमल खिल रहे हैं, और सफेद और नीले कमल भी। यह मंडलक से ढका हुआ है ।
मेरे आश्रम को सुशोभित करना। (15) [4233]

शीटफिश4059 [भी] पावुसा 4060 मछली,
v'alaja ,4061 रीड-फिश4062 [और] रेड-फिश4063
उस [तालाब] में तैर रहे हैं 4064,4065
मेरे आश्रम को सुशोभित करना। (16) [4234]

मगरमच्छ4066 और घड़ियाल,4067 कछुए और [अन्य] भयंकर जानवर,4068 ओगाहा ,4069 [और] अजगर4070 [भी] मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (17) [4235]

4053 महास्सादंग
4054 महरसंग
4055 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
4056 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
4057 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव
4058 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
4059 लिट., "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था"
4060 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
4061 या "शिक्षा में उन चारों का पोषण करना"
4062 लिट., "बहिर्वाहों का विनाश"
4063 या "जो आगे बढ़ चुका था": पब्बाजितो
4064 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।
4065 लिट., "यहाँ"
4066 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।
4067 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है।
4068 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"
4069 sampahaṇsitā
4070 भोट्टा , बीजेटीएस में इसे भेट्टा ("तोड़ने वाला") पढ़ा जाता है।

कबूतर4071 और रवि -हंस4072, साथ ही रूडी गीज़4073 और नादिकारा , लैपविंग्स4074 [और] मैना पक्षी4075 मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (18) [4236]

नायिता , अंबागंधी , जैसी झाड़ियाँ
और स्क्रू-पाइन4076 वहाँ खिल रहे हैं, अपनी दिव्य सुगंध बिखेर रहे हैं, मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (19) [4237]

शेर, बाघ और तेंदुए,
भालू4077 [और] भेड़िये,4078 k'ara bānā भालू4079
जंगल में घूम रहे हैं, मेरे आश्रम को सुंदर बना रहे हैं। (20) [4238]

उलझे हुए बालों का भार उठाने वाले,4080
जो हिरण के चमड़े के बाहरी वस्त्र पहने हुए हैं, वे जंगल में घूम रहे हैं, मेरी कुटिया को सुशोभित कर रहे हैं। (21) [4239]

हिरण की चमड़ी के वस्त्र पहनने वाले वे [सन्यासी] चतुर हैं और शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं।
और वे सब थोड़ा-थोड़ा खाना खा रहे हैं, मेरे आश्रम को सजा रहे हैं। (22) [4240]

अपने 4081 कंधे के जुए को ढोते हुए, 4082

फिर जंगल में घुसते हुए,
केवल जड़ वाली सब्जियां और जंगली फल खाना,
[वे] तब आश्रम में रहते हैं.4083 (23) [4241]

वे न तो आग जलाने के लिए लकड़ी ले जाते हैं और न ही पैर धोने के लिए पानी; उनकी सामूहिक महिमा के कारण,4084
[कि सब कुछ] अपने आप ही आगे बढ़ जाता है। (24) [4242]

4071 chettā
4072 sotā
4073 pasaŋsitā
4074 akhilo
4075 visālo . BJTS इसे visallo (“दर्द से मुक्त”) पढ़ता है
4076 anīgho
4077 अकाथंकाथि , ilt. "नहीं कह रहा, 'क्यों'?"
4078 अनेजो
4079 विराजो
4080 खट्टा । बीजेटीएस इसे खंत पढ़ता है ("विनम्र" "आज्ञाकारी")
4081 रीडिंग गंटा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस गंधा (“सुगंधित”)
4082 रीडिंग वट्टा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस मेट्टा (“लव”)
4083 pakāsitā
4084 t'āretā

वे चौरासी हजार ऋषि उस स्थान पर एकत्रित हुए थे;
सभी ध्यान का अभ्यास करते हैं4085 और
अंतिम अर्थ की तलाश कर रहे हैं। (25) [4243]

सभी तपस्वी, ब्रह्मचारी हैं।
निंदा करते हुए,4086 स्थिर मन के लिए प्रतिज्ञाओं के साथ4087
और आकाश में उड़ने में सक्षम;4088
वे तब आश्रम में रहते हैं। (26) [4244]

वे पाँच दिनों तक शांतिपूर्वक एकत्रित होते, एक दूसरे की पूजा करते।
वे जिस दिशा में जा रहे हैं, उसी दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।4089 (27) [4245]

विजेता, पदुमुत्तरा,
वह हर चीज का स्वामी था।4090
अंधकार को दूर भगाते हुए,
उस समय विजेता उठा। (28) [4246]

वहाँ एक शक्तिशाली आत्मा थी4091
[तब,] मैं अपने आश्रम के पास रहता था।

उन्होंने मेरे सामने संबुद्ध की प्रशंसा की।
जिसका नाम “अल्टीमेट लोटस” है।4093 (29) [4247]

“यह एक बुद्ध हैं जिनका पुनरुत्थान हुआ है।”
महान ऋषि, पद्ममुत्तरा;
जल्दी जाने के बाद, महोदय, 4094 अब आप
संबुद्ध को [उससे] मिलना चाहिए।”4095 (30) [4248]

आत्मा के वचन सुनने के बाद, अत्यंत स्पष्ट मन से, आश्रम को सहारा देकर;
फिर मैं जंगल से निकल पड़ा। (31) [4249]

4085 अत्थकारेता का पाठ बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ, पीटीएस में तारेता ("क्रॉसर") के पुनरावृति के लिए।
4086 k'āretā
4087 सम्पदालता , बीजेटीएस सम्पदालता
4088 पापेता
4089 साहित्य , या "सहनकर्ता"
4090 में, BJTS के साथ kantā का पाठ किया गया है, जिसमें PTS में hantā की पुनरावृत्ति है , जिसे दोनों पाठ श्लोक में अगले शब्द के रूप में पढ़ते हैं।
4091 hantā
4092 रीडिंग ātāpī with BJTS for PTS tātâpi (“also the Protector”)
4093 t'āpaso , इससे पंक्ति में नौ अक्षर बनते हैं, जिसे "हत्यारा" को संक्षिप्त करके आठ अक्षरों के रूप में उच्चारित करने की आवश्यकता है।
"स्लेयर" में
4094 samacitto
4095 'समासामो , (बीजेटीएस सिंह की व्याख्या के अनुसार; इसका मूल रूप समासामो भी हो सकता है , जिसका अर्थ है "हमेशा एक जैसा")
4096 a'sahāyo , शाब्दिक अर्थ, “मित्रहीन”

मानो मेरे कपड़े अब आग की लपटों में घिरे हों,4097
आश्रम से जल्दी निकलकर, केवल एक रात रुककर,4098
मैं मार्गदर्शक [बुद्ध] के पास आया। (32) [4250]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
चार आर्य सत्यों की व्याख्या करते हुए,
अमर मार्ग की घोषणा कर रहा था। (33) [4251]

खिलते हुए गुलाबी कमल को लेते हुए,4099
मैं उस महान ऋषि के पास गया। प्रसन्नता से, मेरे हृदय में आनंद था।
मैंने इसे बुद्ध को अर्पित किया। (34) [4252]

“परम कमल” नाम के संबुद्ध की पूजा करने के बाद, एक कंधे पर हिरण की खाल रखकर,

मैंने विश्व के नेता की प्रशंसा की: (35) [2453]

“जिस ज्ञान के बल पर बुद्ध [अब] यहाँ निर्मल होकर निवास करते हैं, मैं उस ज्ञान की स्तुति करूंगा;
आप सब मेरी बात सुनो। (36) [2454]

अस्तित्व की धारा को अवरुद्ध करते हुए,4101 आप सभी प्राणियों को पार ले जाते हैं। आपके उपदेश को सुनकर,
वे लालसा की धारा को पार कर रहे हैं।4102 (37) [2455]

आप ही सांस लेने वालों के गुरु हैं, आप ही ध्वज, झंडा और स्तंभ हैं;
तुम ही लक्ष्य हो, तुम ही आधार हो।
द्वीप,4103 द्विपादों में सर्वश्रेष्ठ। (38) [2456]

विश्वभर में समूहों4104 के प्रमुखों को अग्रणी शिक्षक कहा जाता है।4105
आप सर्वज्ञ, सर्वोत्कृष्ट हैं;

4097 रीडिंग दयासायो (और निम्नलिखित व्याख्या) बीजेटीएस के साथ पीटीएस दयायासो ("दयालुता के लिए प्रसिद्ध" "दयालुता-प्रसिद्ध") के लिए

4098 accherasanto

4099 अकुहो , शाब्दिक अर्थ, "धोखे से मुक्त" "ईमानदार"

4100 क'तावी , अर्थात् एक अरहंत, जिसने वह किया है जो किया जाना चाहिए

4101 i'sisattamo

4102 nittiṇṇakaṅkho

4103 nimmāno

4104 अप्पमेय्या , शाब्दिक अर्थ, "मापा नहीं जा सकता"

4105 अनुपमा , शाब्दिक अर्थ, "वह जिसके लिए कोई रूपक नहीं है"

वे सब आपके समूह में आ गए हैं।4106 (39) [4257]

हे सर्वज्ञ, आपके ज्ञान के माध्यम से, 4107
आप कई लोगों को पार कराते हैं। आपको देखने आ रहा हूँ,
वे पीड़ा का अंत करते हैं। (40) [4258]

चाहे जो भी परफ्यूम बनाए जाएं,
हे सुंदरी, इस संसार में अपनी सुगंध बिखेरो। तुम्हारी [मधुर] सुगंध की कोई बराबरी नहीं।
हे पुण्य का क्षेत्र, हे महान ऋषि। (41) [4259]

हे सुंदर दृष्टि वाले, तुम मुक्ति दिलाते हो
दयनीय अवस्थाओं से,4108 [और] पशुओं के गर्भों से।4109
हे महान ऋषि, आप व्याख्या कर रहे हैं
शांति का निःशर्त मार्ग।” (42) [4260]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए,
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (43) [4261]

"जिसने [इस प्रकार] मेरे ज्ञान की पूजा की, [अपने हाथों से] प्रसन्न होकर,
मैं उनके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (44) [4262]

तीस हजार युगों तक वह देवताओं के संसार में आनंदित रहेगा। हजार बार वह राजा बनेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है।" (45) [4263]

मुझे इससे अच्छा लाभ हुआ, क्योंकि मैंने संबुद्ध को प्रसन्न किया। समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए,
मैं अब भी बेदाग़ जीवित हूँ। (46) [4264]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

---

4106 sabbavākyapathātīto , शाब्दिक अर्थ, "वह जिसके लिए सभी कथनों के मार्ग अतीत में हैं"
4107 saccaneyyantago , शाब्दिक अर्थ, "वह जो सत्यों के अंत तक पहुँच चुका है जिसे समझा जाना है [या निर्देश दिया जाना है, नेतृत्व किया जाना है, मार्गदर्शन किया जाना है (नेति का क्रियापद)]"
4108 जिनो
4109 sattasāravare . BJTS इसे महल को संशोधित करने के रूप में व्याख्या करता है, लेकिन पाली मुझे इससे अधिक अस्पष्ट लगती है। v. [5887] और [6287] में बुद्ध-विशेषण के रूप में sattasāra° के प्रयोग की तुलना करें।
4110 रीडिंग akaṃ dhammakathaṃ ahaṃ with BJTS for PTS ahaŋ dhammakathaŋ ahaŋ ("मैं धम्म- प्रचारक मैं")

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (47) [4265]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (48) [4266]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (49) [4267]

इस प्रकार पूज्य उदेना थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उदेना थेरा की कथा का अंत हो गया है।

समीक्षा:

मेटेय्या, पुणका थेरा, मेट्टागु, और धोवका भी,4111
उपासिव, जिसे नंदा भी कहते हैं,
और हेमका वहां से सातवें स्थान पर हैं। तोदेय्या और जतुकण्णी,
और उदेना, जो बहुत प्रसिद्ध थे।
यहां तीन सौ श्लोक हैं, इसके अलावा अस्सी-तीन और श्लोक हैं।

मेत्तिया अध्याय, इकतालीसवाँ

भद्दाली अध्याय, बयालीसवाँ

---

408. {411.}4112 भड्डलि4113

सुमेधा नामक सम्बुद्ध, जो प्रधान, करुणावान, ऋषि, जगत के प्रधान, एकांतप्रिय थे, हिमालय में आए। (1) [4268]

4111 nissāso , BJTS ग्लॉस māgē piṭataṭa heḷana vātaya (“वह हवा जिसे मैं नीचे फेंकता/अपने बाहरी हिस्से में निकाल देता हूँ”)
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 4112 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
4113 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

हिमालय में प्रवेश करते हुए, विश्व के नेता, परम पुरुष सुमेधा, बैठ गए।
कमल मुद्रा में आना.4115 (2) [4269]

सुमेधा, विश्व के नेता, उनकी ध्यान अवस्था प्राप्त हुई,4116 परम पुरुष, बुद्ध,
वहाँ सात रातों और सात दिनों तक बैठा रहा। (3) [4270]

भार ढोने वाले खंभे को ले जाना,4117
मैं भी जंगल में घुस गया।4118
वहाँ मैंने संबुद्ध को देखा।
बाढ़ पार करने वाला, निष्कलंक। (4) [4271]

झाड़ू उठाने के बाद,
फिर मैंने आश्रम की सफाई की। चारों कोनों में लकड़ियाँ गाड़कर,
मैंने तब उसके लिए एक मंडप बनाया। (5) [4272]

मैंने साल के पेड़ से फूल लाकर मंडप को फूलों से ढक दिया।

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।
मैंने उनकी पूजा की, जो इस दुनिया से चले गए थे। (6) [4273]

जिसे वे "सुमेधा" कहते हैं,4119
बहुत बुद्धिमान4120 [और] समझदार,4121
भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए,
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (7) [4274]

यह जानकर कि बुद्ध बोलेंगे,4122 सभी देवता एक साथ आए, [सोचते हुए],
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, दर्शनीय बुद्ध
निःसंदेह धम्म का प्रचार करेगा ।"4123 (8) [4275]

4114 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4115 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4116 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4117 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4118 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4119 शाब्दिक रूप से, "गया"
4120 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4121 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4122 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4123 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं "तू" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का फायदा उठाता हूँ-

---

सम्बुद्ध, सुमेधा, यज्ञ प्राप्तकर्ता,
देवताओं की सभा में बैठे हुए,
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (9) [4276]

"जिसने एक सप्ताह तक मेरे लिए साल के फूलों से ढका हुआ मंडप धारण किया था,"
मैं उनके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (10) [4277]

चाहे वह देवता के रूप में जन्म ले या मनुष्य के रूप में, उसका रंग स्वर्णमय होगा।
प्रचुर धन-संपत्ति के साथ एक हो जाना,
वह कामुक सुखों का आनंद लेगा।4124 (11) [4278]

[तब] साठ हजार हाथी, सभी आभूषणों से सजे हुए, सोने के मुकुट पहने हुए ,
सोने से बने हार्नेस में लिपटा हुआ, (12) [4279]

हाथ में भाले और अंकुश लिए हाथी प्रशिक्षकों द्वारा सवार, 4125 इस आदमी के स्वामित्व में आ जाएंगे।
और शाम और सुबह उसकी सेवा करो।4126
उन हाथियों से घिरा हुआ,
यह व्यक्ति [संसार में] आनंदित होगा। (13) [4280]4127

साठ हजार घोड़े [भी], सभी आभूषणों से सजे हुए, उत्तम नस्ल के, अच्छी वंशावली वाले,4128
सिंध से घोड़े, तेज वाहन, (14) [4281]

घोड़ों के प्रशिक्षकों द्वारा सवार, धनुष और एकधारी तलवारें लिए हुए, 4129 लोग लगातार इस [आदमी] की सेवा करेंगे:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (15) [4282]

मीटर को बनाए रखने के लिए "रेत" और "सौ" का प्रयोग किया गया है। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "हजार कंढ (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4124 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

4125 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4126 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
4127 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस द्वारा पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4128 लिट., "एक फूल पर"
4129 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
4130 khiḍḍāratiyaÁ

साठ हजार रथ भी, सभी आभूषणों से सजे हुए, तेंदुओं की खालों से ढके हुए।
और इसी प्रकार बाघ,4132 झंडे फहराए गए, (16) [4283]

कवच पहने और हाथों में धनुष लिए पशु प्रशिक्षकों4133 द्वारा सवार होकर, वे लगातार इस [आदमी] की प्रतीक्षा करेंगे:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (17) [4284]

और साठ हजार गाँव, हर तरह से पूर्ण रूप से परिपूर्ण।
अनाज और प्रचुर धन से समृद्ध,4134
कुल मिलाकर शानदार,4135
वह हर समय उसके लिए प्रकट होगा:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (18) [4285]4136
सेना के चार भाग: हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल सैनिक।

मैं इस [आदमी] का लगातार इंतजार करूंगा:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (19) [4286]

अठारह सौ युगों तक वह देवताओं के संसार में आनंदित रहेगा। वह 4137 हजार बार राजा बनेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (20) [4287]

उस दौरान वह तीन सौ बार दैवीय शासन करेगा।
[और वहाँ] बहुत स्थानीय शासन होगा, जिसकी गिनती करना असंभव है। (21) [4288]

तीस हजार युगों के बाद, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (22) [4289]

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, समस्त दोषों का भली-भांति ज्ञाता,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग।" (23) [4290]

4131 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
4132 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"
4133 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
4134 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "
4135 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
4136 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
4137 pariḷāho

तीस हजार युग पहले
मैंने विश्व के नेता को देखा।
तब से लेकर अब तक के पूरे समय में,4138
मैं अमर अवस्था की तलाश में था। (24) [4291]

मुझे इस बात का लाभ मिला कि मुझे इस नियम की जानकारी थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [4292]

हे सुसंस्कृत व्यक्ति, आपकी प्रशंसा हो!4139
हे परम पुरुष, आपकी जय हो!
आपके ज्ञान की प्रशंसा करने के बाद,
मैंने अब अमरता की अवस्था प्राप्त कर ली है। (26) [4293]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव रूप हो या दिव्य रूप, मैं हर जगह खुश हूं।
मेरे प्रशंसात्मक ज्ञान का फल। (27) [4294]

यह मेरे लिए आखिरी बार है;
मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है।4140
टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (28) [4295]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (29) [4296]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (30) [4297]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (31) [4298]

इस प्रकार पूज्य भद्दाली थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

भद्दाली थेरा की कथा का अंत हो गया है।

4138 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
4139 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
4140 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

---

409. {412.}4141 एकचट्टिय4142

चंदाभागा नदी के किनारे मेरा एक सुव्यवस्थित आश्रम था।
यह अत्यंत सफेद रेत से भरा हुआ था।
[और] पत्तों से बने हॉल से सुसज्जित। (1) [4299]

वहाँ की नदी बहुत सुंदर थी।
समतल किनारों और अच्छे स्नान-मार्गों के साथ। यह मछलियों और कछुओं से भरा हुआ था;
मगरमच्छों ने इसका सहारा लिया। (2) [4300]

वहाँ भालू, मोर और तेंदुए, भारतीय4143 कोयल और मैना पक्षी थे;
वे हमेशा चहकते और गुर्राते रहते हैं,4144
मेरे आश्रम को सुशोभित करना। (3) [4301]

अपनी प्यारी आवाज़ों के साथ कोयल4145

और हंस4146 अपनी मधुर आवाज़ में वहाँ हमेशा अपने गीत गाते रहते हैं4147, मेरे आश्रम को सुशोभित करते हैं। (4) [4302]

शेर, बाघ और जंगली सूअर भी।
भेड़िये,4148 [अधिक] भेड़िये,4149 क'रा बाना भालू,4150 दहाड़ना4151 खराब पहाड़ी सड़कों पर भी,4152 मेरे आश्रम को सुंदर बनाना। (5) [4303===

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4141 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4142 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4143 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4144 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4145 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4146 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4147 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4148 शाब्दिक रूप से, "गया"
4149 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4150 लीटर, "गिर गया"
4151 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4152 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए लैटिन शब्द "हजार" और "सौ" के संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

एनी -हिरण4153 और सरभ -हिरण,4154 सियार4155 और कई सूअर4156 [भी], खराब पहाड़ी रास्तों पर भी रोते हैं4157,4158 मेरे आश्रम को सुंदर बनाते हैं। (6) [4304]

गोल्डन शावर4159 और चंपक [पेड़],4160 ट्रम्पेट-फूल,4161 चीनी चेस्ट ट्री,4162 हिप्टेज4163 लताएँ और अशोक के पेड़4164 मेरे आश्रम में खिल रहे हैं। (7) [4305]

सेज-लीफ अलंगियम,4165 चमेली,4166
सत्तलि , 4167 बिम्बिजालिका , 4168
k'aṇṇikā और डिनर-प्लेट वृक्ष4169
मेरे आश्रम में खिल रहे हैं। (8) [4306]

आयरनवुड,4170 साल 4171 और सलाला ,4172 खिले हुए सफेद कमल यहाँ हैं; दिव्य सुगंध बिखेरते हुए, वे मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (9) [4307]

अर्जुन4173 और सिल्वर ग्रेवुड,4174
फूलदार गन्ना4175 यहाँ है,

बीजेटीएस के अनुसार 4153 में, पीटीएस में कई रूपों में 'गेण्डु' लिखा है । कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।

4154 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4155 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
4156 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4157 लिट., "एक फूल पर"
4158 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
4159 khiḍḍāratiyaÁ
4160 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
4161 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
4162 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
4163 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
4164 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
4165 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
4166 pariḷāho
4167 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
4168 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
4169 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
4170 samādhikusalo ahaŋ
4171 iddhipādesu kovido
4172 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
4173 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
4174 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
4175 mahābhisakkasaṅkāso

---

sal 4176 और kaṅgu 4177 - फूल [भी, हैं]
मेरे आश्रम को सुशोभित करना। (10) [4308]

आम,4178 गुलाब-सेब,4179 मूंगा-बीन का पेड़,4180 नीम,4181 और साल-कल्याणी ,4182 दिव्य सुगंध बिखेरते हुए मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (11) [4309]

अशोक4183 और बेल4184 [पेड़], यहाँ खिलते हुए भगिनीमाला ,

दिव्य सुगंधों का प्रवाह मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहा है। (12) [4310]

कदम4185 और केला4186 [पेड़] और
i'simugga 4187 को वहाँ लगाया गया है।
वे निरंतर फल देते हैं, जिससे मेरा आश्रम सुशोभित होता है। (13) [4311]

मायरोबलन4188 [और] आंवला,4189 आम,4190 गुलाब-सेब,4191 बहेरा,4192 बेर,4193 मार्किंगनट,4194 बेल4195
मेरे आश्रम में फल-फूल रहे हैं। (14) [4312]

[आश्रम] के पास एक तालाब है, जिसमें नहाने के लिए अच्छे घाट हैं, सुंदर है, और मंडलक के फूलों से ढका हुआ है।4196

4176 dosavyādhitikicchako
4177 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
4178 दिठ्ठिगण्ड°
4179 लोकापज्जोटो
4180 sanarāmarasakkato
4181 नारदिक्को
4182 लिट., "में"
4183 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
4184 निब्बाती , या "वह शांत हो जाता है"
4185 महास्सादंग
4186 महरसंग
4187 शाब्दिक रूप से, "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
4188 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
4189 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव
4190 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
4191 शाब्दिक अर्थ, "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था"
4192 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
4193 या "शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना"
4194 लिट., "बहिर्वाहों का विनाश"
4195 या "जो बाहर गया था": पब्बाजितो
4196 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।

और गुलाबी और नीले कमलों के साथ।4197 (15) [4313]

वहाँ गुलाबी कमल अंकुरित होते हैं; अन्य, फूलने पर पराग उत्पन्न करते हैं। गिरे हुए पत्तों वाले काण्निका वृक्ष4198
मेरे आश्रम में खिल रहे हैं। (16) [4314]

शीटफ़िश,4199 [भी] पावुसा 4200 मछली, वलाजा ,4201 रीड-फ़िश4202 [और] रेड-फ़िश4203 तैर रही हैं4204 साफ़ पानी में, मेरे आश्रम को सुंदर बना रही हैं। (17) [4315]

नायिता , अंबागंधी , जैसी झाड़ियाँ
और स्क्रू-पाइन, 4205 पानी के अनुकूल, दिव्य सुगंध बिखेरते हुए मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (18) [4316]

जड़ों से शहद बह रहा है
[और] दूध [और] तेल4206 तनों से बहता है;
दिव्य सुगंध बिखेरते हुए, वे मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (19) [4317]

वहाँ की रेत बहुत सुंदर है, पानी के किनारे बिखरी हुई है।4207
युवा कलियाँ4208 हमेशा खिलती रहती हैं,
मेरे आश्रम को सुशोभित करना। (20) [4318]

उलझे हुए बालों का भार उठाने वाले,4210 हिरण के चमड़े के बाहरी वस्त्र पहनने वाले, छाल से बने वस्त्रों में सजे हुए, मेरे आश्रम को सुशोभित कर रहे हैं। (21) [4319]

बस हल की लंबाई जितनी दूरी आगे देखते हुए,4211

4197 शाब्दिक रूप से, "यहाँ"
4198 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।
4199 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय उसके ऊपर रखता है।
4200 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"
4201 sampahaŋsitā
4202 भोट्टा , बीजेटीएस में इसे भेट्टा ("तोड़ने वाला") पढ़ा जाता है।
4203 chettā
4204 sotā
4205 pasaŋsitā
4206 akhilo
4207 visālo . BJTS इसे visallo ("दर्द से मुक्त") पढ़ता है
4208 anīgho
4209 अकाथंकाथि , ilt. "नहीं कह रहा, 'क्यों'?"
4210 अनेजो
4211 विराजो

चतुर और शांतिपूर्ण जीवन जी रहे हैं,
मैं वासना में लिप्त होने की तलाश में नहीं हूँ।
वे मेरे आश्रम में रह रहे हैं। (22) [4320]

नाखून और बगल के बाल लंबे हो गए हैं,
उनके दांतों में कीचड़, सिर मिट्टी से सने हुए, सभी कीचड़ से सने वस्त्र पहने हुए,4213 वे मेरे आश्रम में रह रहे हैं। (23) [4321]

[छह] विशेष ज्ञान-पूर्णताकर्ता,4214
वे सभी हवा में यात्रा कर सकते हैं।
वे आकाश में ऊपर उठ रहे हैं, मेरे आश्रम को सुंदर बना रहे हैं। (24) [4322]

उन छात्रों से घिरा हुआ, मैं
मैं जंगल में रह रहा हूँ।
मुझे दिन और रात का फर्क नहीं पता।
हमेशा ध्यान करते रहना.4215 (25) [4323]

उस काल में बुद्ध4216 अत्थादस्सी थे, जो महान ऋषि थे। अंधकार को दूर करने वाले,
विश्व का नेता उठा। (26) [4324]

उस समय एक विद्यार्थी मेरे आश्रम में आया,4217 गुप्त मंत्रों के बारे में पूछने के लिए,4218
छह शाखाएँ, [पढ़ना] चिह्न। (27) [4325]

"बुद्धों का अवतार हुआ, महान ऋषि अत्थादस्सी; उन्होंने चार आर्य सत्यों की व्याख्या की।"
वह अमर मार्ग की घोषणा कर रहा है।" (28) [4326]

रोमांचित, खुशी से मेरे रोंगटे खड़े हो गए,4220
आश्रम से बाहर निकलकर, शिक्षण में प्रवेश करने की आशा में,
मैंने ये शब्द [अपने छात्रों से] कहे: (29) [4327]

4212 खट्टा । बीजेटीएस इसे खंत (विनम्र) पढ़ता है।
4213 रीडिंग गंटा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस गंधा ("सुगंधित")
4214 PTS mettā ("प्रेम") के लिए BJTS के साथ vattā का पाठ
4215 pakāsitā
4216 t'āretā
4217 अत्थकारेता का पाठ बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ तारेता ("क्रॉसर") के पीटीएस पुनरावृति के लिए किया गया है।
4218 k'āretā
4219 सम्पदालता , बीजेटीएस सम्पदालता
4220 पापेता
4221 साहित्य , या "सहनकर्ता"

"बृहत्तर महान लक्षणों से युक्त एक बुद्ध ने संसार में जन्म लिया है। आओ, तुम सब, चलो अब चलें।"
महान संबुद्ध के मध्य में।" (30) [4328]

तब उन सभी ने महान शिक्षा में निपुण होकर मेरी सलाह का पालन किया। वे परम अर्थ के साधक थे।
उन्होंने सहमति जताते हुए कहा, "उत्कृष्ट!" (31) [4329]

उलझे हुए बालों का भार ढोते हुए, हिरण के चमड़े के बाहरी वस्त्र पहने हुए, परम अर्थ की खोज में लगे हुए,

फिर जंगल से चले गए। (32) [4330]

उस काल में बुद्ध4223 अत्थादस्सी के नाम से प्रसिद्ध थे। उन्होंने चार आर्य सत्यों की व्याख्या की।
वह अमर मार्ग की घोषणा कर रहा है। (33) [4331]

मैंने एक सफेद छाता लिया और उसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध प्रतिमा के लिए ले गया। पूरे एक दिन तक उसे अपने साथ लिए घूमता रहा।
मैंने [तब] सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की पूजा की। (34) [4332]

अत्थादस्सी, भगवान
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल, भिक्षुओं की सभा में विराजमान।
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (35) [4333]

"मेरे लिए यह छाता किसने उठाया?"
अपने हाथों से किए गए कार्य से प्रसन्न होकर, मैं उसके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा:
आप सब मेरी बात सुनो: (36) [4334]

जब भी इसका पुनर्जन्म होगा, चाहे देवता के रूप में हो या मनुष्य के रूप में, इसके लिए छतरियां4224 उठाई जाएंगी:
छतरियां देने का फल। (37) [4335]

सतहत्तर युगों तक
वह देवताओं की दुनिया में आनंदित होगा। वह हजार बार राजा बनेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (38) [4336]

4222 में बीजेटीएस के साथ कांटा का पाठ किया गया है, जिसमें पीटीएस पाठ में हंता शब्द की पुनरावृत्ति की गई है , जिसे दोनों पाठ श्लोक में अगले शब्द के रूप में पढ़ते हैं।
4223 hantā
4224 PTS tātâpi ("रक्षक भी") के लिए BJTS के साथ ātāpī का पाठ

वह सतहत्तर बार दैवीय शासन करेगा।
[और वहाँ] बहुत स्थानीय शासन होगा, जिसकी गिनती करना असंभव है। (39) [4337]

अठारह सौ युगों बाद, शाक्यों के श्रेष्ठ पुरुष गौतम
अंधकार को दूर करना,
वह उठेगा, पाँच आँखों वाला। (40) [4338]

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, समस्त दोषों का भली-भांति ज्ञाता,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग।" (41) [4339]

चूंकि मैं ही वह कर्मकर्ता था, जो बुद्ध की छत्रछाया धारण किए हुए था, [अब तक] मुझे नहीं पता।
एक सफेद छाता नहीं ले जाया गया। (42) [4340]

यह मेरे लिए आखिरी बार है;
मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है;4225
आज छाता लेकर चलने वाले
यह हर समय होता रहता है। (43) [4341]

ओह! मेरे कर्मों का फल मुझे खूब मिला।
अत्थादस्सी, तटस्थ। सभी दोष समाप्त हो गए हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (44) [4342]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (45) [4343]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (46) [4344]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (47) [4345]

इस प्रकार पूज्य एकाचत्तीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

4225 t'āpaso , इससे पंक्ति में नौ अक्षर बनते हैं, जिसे "हत्यारा" को संक्षिप्त करके आठ अक्षरों के रूप में उच्चारित करने की आवश्यकता है।
"स्लेयर" में

एकचट्टिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

410. {413.}4226 तिनासुलकचादानिया4227

उस समय मैंने विचार किया
जन्म और बुढ़ापा [और] मृत्यु। अकेले [घर से] बाहर जाना,4228
मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (1) [4346]

भटकते हुए, मैं
नदी के किनारे आकर रुका।
वहाँ नदी के किनारे मैंने देखा
[पृथ्वी का एक टुकड़ा] पूर्ण रूप से.4231 (2) [4347]

मैंने वहां एक आश्रम बनाया है और मैं उसी आश्रम में रह रहा हूं।
मेरा पैदल मार्ग अच्छी तरह से बना हुआ है।
आवास4232 विभिन्न पक्षियों के झुंड4233.4234 (3) [4348]

वे विश्वासपूर्वक मेरे पास आते हैं।
और वे अपने प्यारे गीत मुझे सुनाते हैं। उनके साथ आनंद लेते हुए, मैं आश्रम में रह रहा हूँ। (4) [4349]

मेरी उस कुटिया के पास चार अलग-अलग प्रकार के जंगली जानवर थे।
जो अपने 4237 [वन] ठिकानों से बाहर आए
और मेरे लिए गरज की तरह दहाड़ा। (5) [4350]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4226 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4227 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4228 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4229 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4230 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4231 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4232 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

4233 शाब्दिक रूप से, "गया"

4234 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

4235 लिट., "गिर गया"

4236 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

4237 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

जब वे जंगली जानवर आवाजें निकाल रहे थे, तब मुझे बहुत आनंद आया। उन जानवरों की तलाश करते हुए,4238
मैंने विश्व के नेता को देखा। (6) [4351]

फिर, देवताओं के ईश्वर, विश्व के प्रधान नेता तिस्सा को प्रसन्न और प्रसन्न हृदय से देखकर,
मैंने 4239 आयरनवुड पराग की पेशकश की। 4240 (7) [4352]

मैंने विश्व के नेता की प्रशंसा की, जैसे सूर्योदय के समय सूर्य की, जैसे खिलते हुए राजसी साल के वृक्ष की।
भोर के तारे की तरह चमकते हुए:4241 (8) [4353]

"हे सर्वज्ञ, अपने ज्ञान से आप इस संसार को इसके देवताओं से प्रकाशित करते हैं। आपको प्रसन्न करने के बाद,
वे पुनर्जन्म से मुक्त हैं। (9) [4354]

सर्वज्ञ, सब कुछ देखने वाले 4242 बुद्धों को न देखकर, कामवासना और घृणा से अवरुद्ध लोग 4243 अविची नरक में उतरते हैं। 4244 (10) [4355]

हे सर्वज्ञ, हे विश्व नेता, आपको देखने आने वाले सभी लोग अस्तित्व से मुक्त हो जाते हैं।
[और] अमर अवस्था को महसूस करें। (11) [4356]

जब बुद्ध, दृष्टिहीन, प्रकाश फैलाने वाले प्रकट होते हैं,
वे सत्य के प्रकाश को प्रदर्शित करते हैं।
सभी अशुद्धियों को जलाकर राख कर देना। (12) [4357]

विश्व के प्रमुख नेता, संबुद्ध तिस्सा की प्रशंसा करने के बाद,

बीजेटीएस के अनुसार 4238 में, पीटीएस में कई रूपों में 'गेण्डु' लिखा है । कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।
4239 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4240 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
4241 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4242 लिट., "एक फूल पर"
4243 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
4244 khiḍḍāratiyaÁ
4245 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

खुश, और प्रसन्न हृदय से,
मैंने 4246 अरबी चमेली 4247 फूल भेंट किए। (13) [4358]

मेरी सोच को भांपते हुए, विश्व के प्रमुख नेता टिस्सा अपनी सीट पर बैठ गए।
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (14) [4359]

"जिसने मुझे फूलों से सजाया, अपने हाथों से प्रसन्न होकर, मैं उसके बारे में विस्तार से बताऊंगी;
आप सब मेरी बात सुनो: (15) [4360]

वह पच्चीस बार देवताओं पर शासन करेगा।
और वह पचहत्तर बार होगा

एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (16) [4361]

और वहां बहुत अधिक स्थानीय शासन होगा, जिसकी गिनती करना असंभव है।
उसके कर्मों के फलस्वरूप
4248 फूलों से पूजा करने का । (17) [4362]

जब यह व्यक्ति अपना सिर धो ले, यदि वह फूल की इच्छा करे,
[तब] उसके अच्छे कर्मों से बंधा हुआ,
[यह] उसके सामने प्रकट होगा। (18) [4363]

जो भी कामना की जाती है, वह सब पूरा हो जाता है।
अपने इरादों को पूरा करने के बाद,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग। (19) [4364]

अठारहवाँ पाठ भाग: अशुद्धियों को जलाकर, सजग और बुद्धिमान होकर,
एक ही सीट पर बैठे हुए,
वह अरहंत पद प्राप्त करेगा।" (20) [4365]

इधर-उधर चलते हुए, लेटते हुए, बैठते हुए या खड़े होते हुए, सर्वश्रेष्ठ बुद्ध का स्मरण करते हुए,

---

4246 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
4247 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
4248 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
4249 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
4250 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी

मैं हर समय जीवित हूँ।4251 (21) [4366]

मुझमें कोई कमी नहीं है
मैं जिन वस्त्रों और भोजन की भीख मांगता हूँ, उनमें
आवश्यकताओं [और] बिस्तर और सीट:4252
यह बुद्ध -पूजा का फल है । (22) [4367]

अब अमरता प्राप्त हो गई है, शांति की अतुलनीय [महान] अवस्था। समस्त दोषों को भली-भांति जानते हुए,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ।4253 (23) [4368]

पिछले बानवे युगों में
मैंने बुद्ध की पूजा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध -पूजा का फल है । (24) [4369]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (25) [4370]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (26) [4371]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (27) [4372]

इस प्रकार पूज्य तिनसूलकचादनिया4254 थेरा ने ये श्लोक कहे।

तिनसूलकचादनिया4255 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

4251 pariḷāho
4252 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
4253 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
4254 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
4255 samādhikusalo ahaŋ

---

411. {414.}4256 मधुमासदायक4257

शहर में, बंधुमती,
मैं उस समय सूअर का मांस बेचने वाला था।4258 तिल्ली और फेफड़े पकाकर,4259
मैंने उस मांस पर शहद डाला।4260 (1) [4373]

एक सभा में जाने के बाद,4261
मैंने एक कटोरा उठाया।
उस कटोरे को [मांस से] भरते हुए, मैं
इसे भिक्षुओं की सभा को दे दिया। (2) [4374]

वहाँ के सबसे वरिष्ठ भिक्षु ने मुझे 4262 [पुण्य] प्रदान किया: "इस कटोरे को [मांस से] भरने के कारण,
उसे बहुत खुशी मिलेगी। (3) [4375]

अपने अंतिम भ्रमण के दौरान, अपनी उत्तम जड़ों से प्रेरित होकर, दो उपलब्धियों को प्राप्त करते हुए,
वह अशुद्धियों को नष्ट कर देगा। (4) [4376]

वहाँ मेरे हृदय को प्रसन्नता प्राप्त हुई, फिर मैं तावतिंसा गया।

वहाँ खाना-पीना भी।
मुझे बहुत खुशी मिलती है। (5) [4377]

किसी मंडप या वृक्ष की जड़ में, पूर्व कर्मों को याद करते हुए,
भोजन और पेय दोनों की मूसलाधार बारिश
मुझ पर हर समय बारिश हो रही है। (6) [4378]

यह मेरे लिए आखिरी बार है;

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4256 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4257 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
4258 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4259 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4260 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4261 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4262 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4263 शाब्दिक रूप से, "गया"
4264 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है।4265
यहां भी भोजन और पेय दोनों 4266 हैं।
हर समय मुझ पर बारिश हो रही है। (7) [4379]

मांस दान करने के कारण, जन्म-मृत्यु के चक्र में रहने के कारण, और सभी दोषों को भली-भांति जानने के कारण,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ।4267 (8) [4380]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय वह भेंट दी थी।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
मांस देने का फल यही है। (9) [4381]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (10) [4382]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [4383]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [4384]

इस प्रकार पूज्य मधुमंसदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मधुमंगसादायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

412. {415.}4268 नागपल्लवक4269

शहर में, बंधुमती,
मैं शाही बगीचे में रहता था।

4265 लिट., “गिर गया”
4266 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4267 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4268 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें और भी बहुत कुछ है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
4269 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

[उस समय], मेरे आश्रम के पास,
विश्व का नेता बैठ गया। (1) [4385]

मैंने लोहे की लकड़ी का एक अंकुर लेकर बुद्ध को अर्पित किया।
मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।
मैंने वेल-गॉन-वन को सलाम किया। (2) [4386]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने 4270 की पेशकश की [कि] अंकुर [उस समय], मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [4387]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [4388]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4389]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4390]

इस प्रकार पूज्य नागपल्लवक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नागपल्लवका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

413. {416.}4271 एकादिपिय4272

जब सुप्रसिद्ध व्यक्ति का निधन हुआ,4273
सिद्धार्थ, विश्व के नेता,

4270 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 4271 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
4272 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4273 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

सभी देवता और मनुष्य
सर्वश्रेष्ठ द्विपाद की पूजा कर रहे हैं। (1) [4391]

और जब विश्व नेता सिद्धार्थ के लिए एक मंदिर4275 स्थापित किया गया था,
वे शिक्षक के मंदिर की पूजा यथासंभव उत्साहपूर्वक कर रहे हैं। (2) [4392]

मंदिर के आसपास, मैं
बुद्ध के लिए एक दीपक जलाया।
मैंने पूरी रात अपना दीपक जलाए रखा।
अगले दिन सूर्योदय होने तक। (3) [4393]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (4) [4394]

वहाँ मेरा सुनिर्मित महल है
"एकल दीपक" के नाम से जाना जाता था। हवेली में मेरे लिए एक लाख दीपक हमेशा जलाए जाते हैं। (5) [4395]

जैसे सूरज उगता है, वैसे ही मेरा शरीर हमेशा चमकता रहता है।
मेरे लिए हर समय प्रकाश रहता है
मेरे शरीर के सभी प्रकाश के माध्यम से। (6) [4396]

दीवारों के आर-पार, चट्टानों के आर-पार और पहाड़ों की चोटियों को पार करते हुए,4276
मैं अपनी आँखों से देख रहा हूँ,
[यहाँ तक कि] सौ मील [दूर]। (7) [4397]

और सतहत्तर बार मैंने देवताओं के संसार में आनंद लिया। और इकतीस बार,
मैंने वहाँ दैवीय शासन का प्रयोग किया। (8) [4398]

और [फिर] अट्ठाईस बार मैं एक ऐसा राजा बना जिसने [कानून का] पहिया घुमाया।
वहाँ बहुत स्थानीय शासन भी था, जिसकी गिनती करना असंभव था। (9) [4399]

देवताओं के लोक से गिरते हुए,

4274 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
4275 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4276 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मेरा जन्म मां के गर्भ में हुआ था।
मेरी माँ के गर्भ में भी,
मेरी एक आँख खुली रहती है।4278 (10) [4400]

मैं मात्र चार वर्ष की आयु में बेघर हो गया था।
आठ महीने बीतने से पहले ही मैंने अरहंत पद प्राप्त कर लिया। (11) [4401]

मैंने अपनी "दिव्य दृष्टि" को शुद्ध किया;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं। हर तरह की अशुद्धि दूर हो जाती है:
यह एक ही दीपक का फल है। (12) [4402]

दीवारों के आर-पार, चट्टानों के आर-पार भी; मैं देख रहा हूँ, पार कर रहा हूँ
यहां तक कि पूरी पर्वत चोटी भी:4279
यह एक ही दीपक का फल है। (13) [4403]

असमान स्थान भी इसके लिए उपयुक्त हैं
मुझे अंधकार का ज्ञान नहीं है; मैं किसी भी चीज को अंधकारमय नहीं देखता।
यह एक ही दीपक का फल है। (14) [4404]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [बुद्ध] को एक दीपक दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
यह एक ही दीपक का फल है। (15) [4405]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (16) [4406]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (17) [4407]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (18) [4408]

इस प्रकार पूज्य एकादीपीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

4277 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4278 lit., "गया"
4279 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

एकादीपीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

414. {417.}4280 उच्चांगपुप्पिया4281

शहर में, बंधुमती,
मैं उस समय माली का काम करता था।
मेरी गोद4282 [फूलों से भर जाने के बाद,]
मैं उनके साथ बाज़ार गया। (1) [4409]

उस काल में बुद्ध (4284), भिक्षुओं की सभा द्वारा सम्मानित, विश्व नेता, गुजर रहे थे (4285)।
उनकी अपार महिमा के माध्यम से।4286 (2) [4410]

विश्व के दीपक को देखकर, विपस्सी, विश्व को पार करने वाले,
मेरी गोद से एक फूल लेते हुए,
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को अर्पित किया। (3) [4411]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने [उस समय] 4288 को एक फूल भेंट किया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [4412]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [4413]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4280 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4281 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4282 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4283 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4284 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4285 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4286 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

4287 शाब्दिक रूप से, "गया"

4288 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4414]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4415]

इस प्रकार पूज्य उच्चांगपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उच्चांगपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

415. {418.}4289 यगुदायक4290

किसी अनजान व्यक्ति को ले जाना,4291
मैं उस समय एक गाँव में गया था। वहाँ मैंने एक भरी हुई नदी देखी।
मैं एक मठ के पास पहुँचा।4293 (1) [4416]

वनवासी,4294 सजग,4295 ध्यानमग्न,4296 खुरदुरे वस्त्र धारण करने वाले4297 बुद्धिमान, एकांतप्रिय थे।
उस मठ में रहना। (2) [4417]

उनकी नियति4298 काट दी गई थी, अच्छी तरह से मुक्त, तटस्थ लोगों की;
वे भीख मांगने नहीं गए
यदि नदी ने [उन्हें] अवरुद्ध कर दिया.4299 (3) [4418]

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4289 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4290 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4291 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4292 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4293 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4294 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4295 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4296 लिट., "गया"
4297 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4298 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4299 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

विस्मय से, 4300 हाथों को जोड़कर, मेरे पास जो चावल के दाने थे, उन्हें लेकर, 4301
मैंने तब दलिया दान किया। (4) [4419]

उन भिक्षुओं को पाँच बार दलिया देकर, अपने हाथों से प्रसन्न होकर, अपने कर्मों से संतुष्ट होकर,
तब मैं तावतिंसा गया। (5) [4420]

तीस.4303 के समूह में मेरे लिए रत्नों से बना एक महल अस्तित्व में आया।
मैंने महिलाओं के एक समूह के साथ आनंद लिया
उस शानदार हवेली में [मेरी]। (6) [4421]

मैंने तैंतीस बार देवताओं के स्वामी के रूप में वहां दिव्य शासन किया।
तीस बार एक पहिया घुमाने वाला राजा,
मैंने आधिपत्य का प्रयोग किया।4304 (7) [4422]

वहाँ स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव है।
देवताओं या मनुष्यों की दुनिया में,
मुझे [हमेशा] बहुत प्रसिद्धि मिली। (8) [4423]

जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ, तो मैं बेघर हो गया।
जैसे ही 4305 [मेरे] बाल काटे गए,
मुझे पूर्ण सफलता का एहसास हुआ।4306 (9) [4424]

क्षय के कारण, वृद्धावस्था के कारण,4308 इस शव पर विचार करते हुए43094310 [मेरा], प्रशिक्षण नियम सिखाए जाने से पहले,4311

4300 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4301 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
4302 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4303 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

4304 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा जा रहा है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4305 लिट., "एक फूल पर"
4306 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
4307 khiḍḍāratiyaÁ
4308 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
4309 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"
4310 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
4311 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (10) [4425]

मेरा उत्कृष्ट उपहार बहुत ही सदुपयोग साबित हुआ;
[मेरा] ट्रेड4312 बहुत अच्छी तरह से लागू किया गया था।4313
उस दलिया-उपहार के कारण ही,
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (11) [4426]

मुझे 4314 का कोई अनुभव नहीं है
दुःख, विलाप और बीमारी, न ही मन को सताने वाली पीड़ा:
यह दलिया देने का फल है। (12) [4427]

ओह! वह दलिया तो बहुत ही सार्थक रहा! भिक्षुओं की सभा को दलिया देना, असाधारण पुण्य के क्षेत्र में!
मुझे ये पाँच अच्छे परिणाम पसंद हैं: (13) [4428]

मैं बीमार नहीं पड़ती, मैं खूबसूरत हूं।
शिक्षण प्रक्रिया शीघ्र ही देखी जाती है।
मुझे [भरपूर] खाना और पेय पदार्थ मिलते हैं।
और [मेरा लंबा] जीवनकाल पाँचवाँ है। (14) [4429]

जो कोई भी श्रद्धा से भरकर भिक्षुओं की सभा को दलिया देगा, उस बुद्धिमान व्यक्ति को भी लाभ मिलेगा।
ये पाँच [सबसे स्वागत योग्य] लाभ.4315 (15) [4430]

जो होना चाहिए था वह सब हो चुका है; मैंने पुनर्जन्मों का अंत कर दिया है।4316
सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो चुकी हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (16)4317

मैं गांव-गांव, शहर-शहर भटक रहा हूँ।
उनकी स्तुति करते हुए, संबुद्ध
और [बुद्ध की] सद्गुणी शिक्षा। (17)4318

उस समय मैंने जो उपहार दिया था, उसके बाद से तीस हजार युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:

4312 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
4313 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
4314 pariḷāho
4315 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
4316 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
4317 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
4318 samādhikusalo ahaŋ

यह दलिया देने का फल है। (18) [4431]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (19) [4432]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) [4433]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (21) [4434]

इस प्रकार पूज्य यागुदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

यागुदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

416. {419.}4319 पथोदानदायक4320

उस समय मैं जंगल में घूमता था और नियमित वन कार्य करता था।4321
आधा पिंट पका हुआ चावल लेकर,4322
मैं जंगल में काम करने गया। (1) [4435]

वहाँ मैंने उन्हें देखा, संबुद्ध, स्वयंभू, अजेय, भिक्षा मांगने के लिए जंगल से निकले हुए।
उसे देखकर मेरा हृदय प्रसन्न हुआ। (2) [4436]

मैं दूसरों के लिए काम करने के लिए बाध्य हूँ।
और मेरे लिए कोई योग्यता नहीं है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4319 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4320 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4321 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4322 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4323 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

मेरे पास आधा पाइंट पका हुआ चावल है;
मैं इसे [महान] ऋषि को खिलाऊँगा। (3) [4437]

मैंने आधा पाइंट चावल लेकर उसे स्वयंभू एक को दे दिया। जब मैं [उनका] ध्यान कर रहा था,
तब ऋषि ने [वह पका हुआ चावल] खाया। (4) [4438]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (5) [4439]

देवताओं के स्वामी ने छत्तीस बार वहाँ दिव्य शासन किया।
मैं तैंतीस बार राजा बना।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (6) [4440]

वहाँ स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव है।
मैं [हमेशा] खुश और प्रसिद्ध हूं:
आधा पिंट चावल का फल। (7) [4441]

जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए, मुझे असीमित धन प्राप्त होता है।
मेरे पास संपत्ति की कोई कमी नहीं है:
आधा पिंट चावल का फल। (8) [4442]

मेरे लिए संपत्ति नदी की धारा के समान हो जाती है;4324
मैं उन्हें माप भी नहीं सकता:
आधा पिंट चावल का फल। (9) [4443]

लोग कहते हैं, "यह खाओ," "इसका आनंद लो," "इस अच्छे बिस्तर पर लेटकर सो जाओ।" इसी वजह से मैं हमेशा खुश रहता हूँ।
आधा पिंट चावल का फल। (10) [4444]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह उपहार दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
आधा पिंट चावल का फल। (11) [4445]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (12) [4446]

4324 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) [4447]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) [4448]

इस प्रकार पूज्य पथोदनदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पथोदानदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

417. {420.}4325 Mañcadāayaka4326

जब सिद्धार्थ निर्वाण प्राप्त कर चुके, हे करुणावान, हे विश्व नेता,
[और] पूरी दुनिया में फैल गया,4327
देवता और मनुष्य उनका सम्मान कर रहे थे, (1) [4449]

मैं वहाँ एक निम्न जाति का व्यक्ति था, लंबी कुर्सियाँ और स्टूल बनाने वाला।
मैं उस काम से अपनी जीविका कमाता हूँ।
और इसके द्वारा मैं अपने बच्चों का पेट भरता हूँ। (2) [4450]

एक अच्छी तरह से बनी लंबी कुर्सी बनाने के बाद, अपने हाथों से किए गए काम से संतुष्ट होकर, मैं स्वयं उसके पास गया और फिर...
इसे भिक्षुओं की सभा को दे दिया। (3) [4451]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (4) [4452]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4325 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4326 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4327 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4328 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

देवताओं के लोक में जाकर, मैं तीस लोगों के समूह में आनंदित होता हूँ।4329
बहुत महंगे बिस्तर आते हैं
मेरी इच्छा के अनुसार हो। (5) [4453]

पचास बार मैं देवताओं का स्वामी बना, और मैंने वहाँ दिव्य शासन किया। अस्सी बार मैं राजा बना।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (6) [4454]

वहाँ स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव है।
मैं [हमेशा] खुश और प्रसिद्ध हूं:
बिस्तर देने का यही फल है। (7) [4455]

यदि मैं देवताओं के लोक से गिरकर मनुष्य के रूप में आ जाऊं,
बहुत महंगा, बिस्तर बेहतरीन हैं
मेरे लिए स्वयं ही आ गए। (8) [4456]

यह मेरे लिए आखिरी बार है;
मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है।4330
अब भी, जब झूठ बोलने का समय आता है
नीचे, मेरे लिए एक बिस्तर इंतज़ार कर रहा है। (9) [4457]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह उपहार दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
बिस्तर देने का यही फल है। (10) [4458]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (11) [4459]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [4460]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) [4461]

इस प्रकार पूज्य मंचडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

4329 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4330 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मांचदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

समीक्षा:

भद्दली और एकचट्टा, तिनसुला और मानसदा। नागपल्लविका, दीप्ति, उच्चांगि, यागुदायका, पथोदनी, मनकादादा:
यहां जिन आयतों की गिनती की गई है उनकी संख्या दो सौ है और
उन दो सौ श्लोकों से एक श्लोक अधिक।

भद्दाली अध्याय, बयालीसवाँ

साकिंसममज्जका अध्याय, तैंतालीसवाँ

---

418. {421.}4331 साकिŋसम्मज्जका4332

सभी वृक्षों के प्रमुख, भगवान विपस्सी के बोधि वृक्ष (तुरही-पुष्प) को देखकर,
मैंने वहाँ अपने हृदय को प्रसन्नता प्रदान की। (1) [4462]

मैं हमेशा अपने साथ झाड़ू लेकर उस बोधि वृक्ष की सफाई करता था। उस बोधि वृक्ष की सफाई करने के बाद,
मैंने तुरही-फूल की पूजा की। (2) [4463]

वहाँ मेरे हृदय को आनंदित करते हुए, मैंने अपने सिर पर हाथ रखकर उस बोधि वृक्ष की प्रशंसा की।
झुककर, 4334 वहाँ से चले गए। (3) [4464]

पैदल पथ पर चलते हुए,4335

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4331 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4332 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4333 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4334 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4335 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

सर्वोच्च वृक्ष को याद करते हुए,4336
[उस समय] एक python4337 ने मुझे हरा दिया।
भयानक रूप का, अत्यंत बलवान। (4) [4465]

मेरे कर्मों के फल के कारण,4338
मृत्यु के निकट होने पर भी मैं खुश था।
[अजगर ने] मेरा शरीर निगल लिया;4340
मुझे देवताओं की दुनिया में आनंद आया। (5) [4466]

मेरा मन हमेशा शांत, शुद्ध और एकदम स्पष्ट रहता है।4341
मुझे दुःख के तीरों का ज्ञान नहीं है।
[और न ही] मेरे दिल में कोई पीड़ा। (6) [4467]

मुझे खुजली, दाद, चकत्ते, फोड़े, कुष्ठ रोग, मिर्गी और खुजली नहीं होती है।
वह सफाई का फल है। (7) [4468]

दुःख और विलाप दोनों
मेरे हृदय में 4349 ज्ञात नहीं हैं। मेरा मन स्पष्ट और अनासक्त है:4350
वह सफाई का फल है। (8) [4469]

मेरा मन शुद्ध है, ध्यान की अवस्था में मैं किसी चीज से आसक्त नहीं रहता।4351
इनमें से जो भी राज्य4352 मैं चाहूँ,

4336 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4337 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

4338 शाब्दिक रूप से, "गया"

4339 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

4340 लिट., “गिर गया”
4341 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4342 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4343 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
4344 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4345 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
4346 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4347 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"
4348 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
4349 khiḍḍāratiyaÁ
4350 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
4351 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
4352 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।

यह [हमेशा] मेरे लिए होता है। (9) [4470]

मैं वासनापूर्ण मार्गों से आसक्त नहीं हूँ और न ही घृणास्पद मार्गों से; मैं अज्ञानता में भ्रमित नहीं हूँ।
वह सफाई का फल है। (10) [4471]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय वह कर्म किया था।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
वह सफाई का फल है। (11) [4472]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (12) [4473]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) [4474]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) [4475]

इस प्रकार पूज्य साकिंशम्मज्जक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

साकिंशम्माज्जका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

419. {422.}4353 एकदुस्सदायका4354

हंसवती नगर में
मैं तब घास ढोने वाला था।
मैं घास ढोकर अपना जीवन यापन करता हूँ।
और इसके ज़रिए मैं अपने बच्चों का पेट भरता हूँ। (1) [4476]

विजेता, पदुमुत्तरा,
वह हर चीज का स्वामी था।4355

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4353 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4354 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4355 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर वाली रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया) के रूप में। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

अंधकार को दूर भगाते हुए,
उस समय विश्व नेता का उदय हुआ। (2) [4477]

अपने घर में बैठे हुए, उस समय मेरे मन में ये विचार आया:
"बुद्ध संसार में अवतरित हुए हैं,
[लेकिन] मेरे पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। (3) [4478]

मेरे पास केवल यही एक लबादा है, मेरे पास अपना कोई दाता नहीं है। पीड़ा नरक का एक नमूना है;4356
मैं अब दान लगाऊंगा।" (4) [4479]

इस प्रकार विचार करते हुए,
मैंने अपने मन को प्रसन्न किया। उस एक कपड़े के टुकड़े को लेकर,
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को दे दिया। (5) [4480]

वह एक कपड़ा देने के बाद,

मैंने खुशी के जोरदार नारों को जन्म दिया, "यदि आप बुद्ध हैं, तो ज्ञानी,
मुझे पार ले चलो, हे महान ऋषि।" (6) [4481]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
अपनी प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए,
[बुद्ध] ने तब मुझे धन्यवाद दिया: (7) [4482]

"इस एक ही वस्त्र के उपहार के कारण, जो इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ दिया गया है, वह किसी बुरी जगह पर नहीं जाएगा।"
एक लाख4357 युगों के लिए। (8) [4483]

वह छत्तीस बार देवताओं के स्वामी के रूप में दिव्य शासन करेगा।
और वह तैंतीस बार बनेगा
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (9) [4484]

क्षेत्रीय शासन का काफी प्रभाव होगा, जिसकी गणना करना असंभव है।
देवताओं की दुनिया में हो या मनुष्यों की दुनिया में,
आप अस्तित्व में पुनर्जन्म लेंगे। (10) [4485]

सुंदर और गुणों से परिपूर्ण,

संभवतः, और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी प्रकार का जौ से बना भोजन है।

4356 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
4357 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

एक ऐसे शरीर के साथ जो अतुलनीय है, आप जब चाहें, अटूट असीमित वस्त्र प्राप्त करेंगे।" (11) [4486]

जब उन्होंने यह कहा, तब सर्वोच्च कमल के नाम से प्रसिद्ध बुद्ध,4358 वीर4359 आकाश में विराजमान हो गए।
ठीक हवा में हंस-राजा की तरह। (12) [4487]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ, मेरे पास संपत्ति की कोई कमी नहीं होगी:
यह एक ही कपड़े का फल है। (13) [4488]

मेरे हर कदम के साथ, 4360 कपड़ा मेरे लिए उत्पन्न होता है। मैं नीचे कपड़े पर खड़ा होता हूँ;
मेरे ऊपर एक चंदवा। (14) [4489]

और आज भी मैं यही कामना कर रहा हूँ।
कि मैं किसी कपड़े से पूरे ब्रह्मांड को भी ढक सकूँ।
अपने जंगलों और पहाड़ों के साथ। (15) [4490]

सिर्फ उस एक कपड़े की वजह से, जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए, मैं 4361वें नंबर पर सुनहरे रंग का था।
जन्म से जन्म तक स्थानांतरण.4362 (16) [4491]

उस एक कपड़े का एक परिणाम:
कहीं भी कोई विनाश नहीं हुआ।4363
यह मेरा आखिरी जीवन होगा;
[कि] अब मेरे लिए फल दे रहा है। (17) [4492]

उस समय जब मैंने वह वस्त्र दिया था, तब से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
यह एक ही कपड़े का फल है। (18) [4493]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

4358 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4359 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4360 लिट., “गया”
4361 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4362 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4363 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (19) [4494]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) [4495]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (21) [4496]

इस प्रकार पूज्य एकदुसदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकदुस्सादायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

420. {423.}4364 एकासनदायक4365

हिमालयी क्षेत्र में,
कोसिका नाम का एक पर्वत है। मेरा सुगठित आश्रम वहीं स्थित है।
पत्तों से बने सुव्यवस्थित हॉल के साथ। (1) [4497]

उस समय मेरा नाम नारदा था, और मुझे कस्सपा के नाम से जाना जाता था।
मैं कोसिका में रह रहा हूँ।
पवित्रता के मार्ग की खोज.4366 (2) [4498]

विजेता, पदुमुत्तरा,
सर्वथा के महान स्वामी, एकांत प्रेमी, सम्बुद्ध
हवा के रास्ते में [वहाँ] आया। (3) [4499]

महान ऋषि की किरणों को जंगल के ऊपर से उड़ते हुए देखकर, [तब]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4364 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4365 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4366 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4367 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4368 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

मैंने लकड़ियों से एक सोफा बनाया।
और [मैंने] चमड़े का चोला4369 [उस पर] फैला दिया। (4) [4500]

उसके लिए वह सीट तैयार करने के बाद,
मैंने अपने हाथों को अपने सिर पर दबाकर अपनी महान मानसिक स्थिति को व्यक्त किया।
मैंने उस समय उससे ये शब्द कहे थे: (5) [4501]

"[आप]4370 सर्जन हैं,4371 [महान] हीरो हैं, बीमारों के लिए चिकित्सक4372 हैं।
हे मार्गदर्शक, मुझे अपना उपचार प्रदान करें।
जो किसी बीमारी से पीड़ित हो। (6) [4502]

हे ऋषि, जो लोग सही मार्ग की खोज में लगे हैं, हे श्रेष्ठ बुद्ध, वे आपको देखकर सदा अपने लक्ष्य में सफल होते हैं।
उनका अस्तित्व चकनाचूर हो गया है।4375 (7) [4503]

मेरे पास आपको देने के लिए कुछ नहीं है; मैं केवल जंगली फल खाकर ही अपना जीवन यापन करता हूँ। लेकिन मेरे पास देने के लिए यह कुर्सी है।
इस लकड़ी से बने सोफे पर बैठ जाओ। (8) [4504]

भगवान बुद्ध वहाँ सिंहराज की तरह निडर होकर बैठ गए। वहाँ कुछ क्षण बिताने के बाद,
उन्होंने ये शब्द मुझसे तब कहे थे: (9) [4505]

आत्मविश्वास रखो, डरो मत;
आपको मनोकामना पूरी करने वाला पत्थर प्राप्त हुआ है।4376
भविष्य में आपकी सभी मनोकामनाएं पूरी होंगी। (10) [4506]

आपने असाधारण योग्यता के क्षेत्र में जो कुछ किया है, वह कोई मामूली बात नहीं है। आप स्वयं का उत्थान कर सकते हैं।

4369 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4370 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4371 शाब्दिक अर्थ, “गया”
4372 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4373 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4374 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4375 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4376 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

जिसका मन [अच्छी तरह से] नियंत्रित है। (11) [4507]

इस आसन के उपहार के कारण, जो इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ एक लाख युगों तक किया गया।
आप कष्ट में नहीं पड़ेंगे।

हे देवताओं के स्वामी, पचास बार आप दिव्य शासन का संचालन करेंगे।
और अस्सी बार तुम राजा बनोगे।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (13) [4509]

और वहां बहुत अधिक स्थानीय शासन होगा, जिसकी गिनती करना असंभव होगा।
हर जगह खुश रहना,
तुम अस्तित्व में पुनर्जन्म लोगे।” (14) [4510]

यह सब कहने के बाद, संबुद्ध, नेता, परम कमल,
हीरो4379 आकाश में उड़ान भर गया।
ठीक हवा में हंस-राजा की तरह। (15) [4511]

हाथी और घोड़े से चलने वाले वाहन, रथ और पालकी सहित—मैं ये सब प्राप्त कर रहा हूँ:
यह एक सीट का फल है। (16) [4512]

जंगल में प्रवेश करने के बाद भी, जब भी मुझे बैठने की इच्छा होती है, मैं अपने विचारों को समझने की कोशिश करता हूँ,
एक पालकी मेरी प्रतीक्षा कर रही है। (17) [4513]

जब भी मुझे बैठने की इच्छा होती है, मैं पानी में चला जाता हूँ, यह समझने की कोशिश करता हूँ कि मैं क्या सोच रहा हूँ।
एक पालकी मेरी प्रतीक्षा कर रही है। (18) [4514]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूँ, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ, एक लाख पालकीों के साथ।
हर समय मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। (19) [4515]

मैं [केवल] दो अवस्थाओं में ही पुनर्जन्म लेता हूँ:

4377 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4378 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
4379 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4380 लिट., "एक फूल पर"

चाहे वह किसी देवता का हो या किसी मनुष्य का।
[जब मैं इंसान था] मैं दो कुलों में पैदा हुआ था:
क्षत्रिय या ब्राह्मण। (20) [4516]

एक सीट देने के बाद
असाधारण योग्यता के क्षेत्र में, शिक्षण की पालकी लेकर,
मैं दोषरहित जीवन जी रहा हूँ। (21) [4517]

उस समय मैंने जो उपहार दिया था, उसके बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
यह एक सीट का फल है। (22) [4518]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (23) [4519]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) [4520]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [4521]

इस प्रकार पूज्य एकासनदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकासनदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

421. {424.}4381 सत्तकदमपुप्फ्य4382

हिमालयी क्षेत्र में,
कदंबा नाम का एक पहाड़ है।4383
सात बुद्ध एक साथ रहते थे।
[वहाँ] पहाड़ की तरफ। (1) [4522]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4381 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4382 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4383 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

एक कदम4384 [वृक्ष] को खिलते हुए देखकर, मैंने अपने दोनों हाथों को एक साथ दबाकर उसके सात फूल तोड़ लिए।
मैंने उन्हें योग्यता को ध्यान में रखते हुए रखा।4385 (2) [4523]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (3) [4524]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [4525]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [4526]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4527]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4528]

इस प्रकार पूज्य सत्तकदंबपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सत्तकदंबपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

4384 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
4385 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

---

422. {425.}4386 कोरंडपुफिया4387

मैं उस समय वनकर्मी था,4388
जैसे कि 4389 पिता और दादा थे।4390
मैं जानवरों को मारकर अपनी जीविका कमाता हूँ,4391
मेरे लिए कोई अच्छाई4392 मौजूद नहीं है। (1) [4529]

जिस इलाके में मैं रहता था,
टिस्सा, विश्व के प्रमुख नेता, दृष्टिपूर्ण व्यक्ति, करुणापूर्वक
मुझे अपने तीन पदचिह्न दिखाए। (2) [4530]

और तिस्सा नामक शिक्षक के पदचिह्नों को देखकर, प्रसन्न होकर, और प्रसन्न हृदय से,
मैंने उसके पैरों के बारे में अपने दिल को प्रसन्न किया। (3) [4531]

एक कोरण्ड 4394 को खिलते हुए देखकर,
धरती में उगने वाला पैर-पीने वाला,4395
फूलों वाली एक टहनी लेकर, मैं
उन श्रेष्ठ चरणों की पूजा की। (4) [4532]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (5) [4533]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ, मैं कोरण्ड के रंग की ही हूं ।
[और] बेहद खूबसूरत.4396 (6) [4534]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4386 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4387 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4388 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4389 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4390 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4391 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4392 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4393 शाब्दिक रूप से, "गया"
4394 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4395 लिट., "गिर गया"
4396 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह 4397 फीट की पूजा का फल है। (7) [4535]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (8) [4536]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [4537]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [4538]

इस प्रकार पूज्य कोरण्डपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कोरण्डपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

423. {426.}4398 घटमांडायक4399

विश्व के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के श्रेष्ठ, सुविचारित, धन्य पुरुष को देखकर, वह विशाल वन में प्रवेश कर गया।
आंतरिक पीड़ा से व्याकुल,4401
मेरे मन को प्रसन्नता प्रदान करना,
मैंने कुछ घी से मलाई प्रस्तुत की।4402 (1) [4539]4403

4397 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में, मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, अंश, गांठ, एक छोटी माप), सौ भेंदु। " [लंबा? मोटा?]।"
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 4398 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
4399 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4400 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4401 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4402 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4403 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

ऐसा करने और उसे इकट्ठा करने से,4404 भागीरथी नदी,4405 और यहाँ तक कि चारों महान महासागर भी अस्तित्व में आए।
मुझे घी की क्रीम दे रहे हैं। (2) [4540]

और यह [संपूर्ण] भयानक पृथ्वी भी, असीम, गिनती से परे, मेरे विचारों को समझ नहीं पा रही है।
शहद और चीनी में बदल जाता है.4406 (3) [4541]

चारों महाद्वीपों पर ये वृक्ष, धरती में उगने वाले, पैरों से पानी पीने वाले, 4407 जो मेरे विचारों को समझते हैं,
मेरे लिए 4408 इच्छा वृक्षों में बदल जाओ। (4) [4542]

पचास बार देवताओं के स्वामी के रूप में, मैंने वहाँ दिव्य शासन किया। और इक्यावन बार मैं वहाँ था।

एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। [और मैंने] अनगिनत स्थानीय शासन का आनंद लिया। (5) [4543]4409

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह उपहार दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह घी से प्राप्त मलाई का फल है। (6) [4544]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [4545]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4546]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

4404 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4405 lit., "गया"
4406 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4407 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4408 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4409 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]।"

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [4547]

इस प्रकार पूज्य घटमण्डायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

घटमण्डायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

424. {427.}4410 एकधम्मसवानिय4411

विजेता, पदुमुत्तरा,
वह हर चीज का उस्ताद था।
चार आर्य सत्यों का उपदेश देते हुए उन्होंने कई लोगों को पार कराया। (1) [4548]

फिर मैंने जटाधारी तपस्वी4412 के रूप में कठोर तपस्या की।4413

मैंने छाल से बने अपने कपड़े उतार फेंके,
मैंने उस समय आकाश में यात्रा की थी। (2) [4549]

मैं [तब] उनके बारे में, जो बुद्धों में सर्वश्रेष्ठ हैं, चर्चा करने में असमर्थ हूँ। जैसे कोई पक्षी चट्टान से टकरा जाता है,
मैं आगे बढ़ने में असमर्थ हूँ।4415 (3) [4550]

पानी पर चलने के बाद, मैं आकाश में उड़ रहा हूँ। पहले मेरा व्यवहार
कभी बाधित नहीं हुआ था। (4) [4551]

"ठीक है, अब मैं इसकी जांच करूंगा।"
मुझे शायद थोड़ा-बहुत फायदा मिल जाए। आकाश से उतरते हुए मैं फिर
शिक्षक की मधुर ध्वनि सुनी।
जो अनित्यता का उपदेश दे रहा था

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4410 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4411 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4412 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4413 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

4414 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4415 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4416 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

एक ऐसी आवाज के साथ जो मोहक थी, सुनने में अच्छी थी, सुंदर थी।
मैंने उस समय [शिक्षण] का कार्यभार संभाला। (5-6) [4552-4553]

अनित्यता को समझते हुए,4417
मैं अपने आश्रम लौट गया। जीवन भर वहीं रहा।
मैं [बाद में] वहीं पर चल बसा। (7) [4554]

बाद के जन्मों में,
मुझे शिक्षण.4418 के बारे में सुनने की याद आई।
उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (8) [4555]4419

तीस हजार युगों तक मैं
देवताओं की दुनिया में आनंदित,
और [वहाँ रहते हुए] मैंने इक्यावन बार ऐसा किया।
देवताओं पर शासन किया। (9) [4556]

और इक्कीस बार मैं [तब] था
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। [और मैंने] बहुत स्थानीय शासन का आनंद लिया, गिनती में अनगिनत। (10) [4557]

मैंने अपने अच्छे कर्मों का फल भोगा, जन्म-जन्मांतर तक सुखी रहा। उस अनुभूति को याद करते हुए, मैं जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेता रहा।
मुझे अंत समझ नहीं आया,4421
निर्वाण, शाश्वत अवस्था। (11) [4558]4422

अपने पिता के घर में बैठे हुए,
एक भिक्षु, जिसने अपनी इंद्रियों पर पूर्णतः नियंत्रण रखा हुआ था, इस उपदेश की व्याख्या कर रहा था।4423

4417 शाब्दिक रूप से, "गया"
4418 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4419 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4420 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4421 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए लैटिन शब्द "हजार" और "सौ" के संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4422 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
4423 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

अनित्यता के बारे में बात की गई:4424 (12) [4559]

“वास्तव में, सब कुछ परिवर्तनशील है;
जो चीजें उत्पन्न होती हैं और फिर नष्ट हो जाती हैं, वे जन्म लेने और फिर मरने के समान हैं;
उनसे राहत मिलना सुखद है।” (13) [4560]

उस श्लोक को सुनने के तुरंत बाद, मुझे अपनी पिछली धारणा याद आ गई।
एक ही सीट पर बैठते हुए,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (14) [4561]

जब मैं महज सात वर्ष का था, तब मैंने अरहंत पद प्राप्त किया।
स्वयं बुद्ध ने मुझे दीक्षा दी थी:

शिक्षा सुनने का फल। (15) [4562]

एक लाख युगों में
जब से मैंने उस समय की शिक्षा सुनी है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
शिक्षा सुनने का फल। (16) [4563]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (17) [4564]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (18) [4565]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (19) [4566]

इस प्रकार पूज्य एकधम्मसवनीया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकधम्मसवनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

4424 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

---

425. {428.}4425 Sucintita4426

हंसवती नगर में,
मैं उस समय किसान था।
मैं खेती करके अपना जीवन यापन करता हूँ।
और इसके द्वारा मैं अपने बच्चों का पेट भरता हूँ। (1) [4567]

उस समय मेरा खेत उपजाऊ था, और मेरा अनाज बीज पैदा कर रहा था;4427 जब फल लगने का समय आया,
फिर मैंने इसके बारे में इस प्रकार सोचा: (2) [4568]

“यह सही नहीं है, यह उचित नहीं है।”
जो व्यक्ति सद्गुणों को जानता है,4428
कि भिक्षुओं को दिए बिना,4429
मुझे इसका सर्वोत्तम सेवन करना चाहिए। (3) [4569]

यह बुद्ध निष्पक्ष हैं,4430
बत्तीस महान चिह्नों को धारण करते हुए;
उनके द्वारा पाले गए 4431 भिक्षुओं की सभा
यह अद्वितीय योग्यता क्षेत्र है। (4) [4570]

मैं वहां दान दूंगा।
नई फसल में से प्रत्येक का पहला भाग।"4432
इस तरह से सोचने पर, मैं
प्रसन्न था, प्रसन्न मन से।4433 (5) [4571]

फिर मैं अपने खेत से अनाज लेकर संबुद्ध के पास गया।
विश्व के सर्वश्रेष्ठ पुरुष, पुरुषों के सांड, संबुद्ध के पास पहुँचकर,
और गुरु के चरणों की पूजा करना,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4425 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4426 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4427 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4428 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4429 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4430 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4431 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4432 शाब्दिक रूप से, "गया"
4433 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

मैंने बुद्ध से ये शब्द कहे: (6) [4572]4434

"अनाज की नई फसल अच्छी हुई है;
आप उपहार प्राप्तकर्ता हैं।
हे ऋषि, मुझ पर दया करो,
कृपया इसे स्वीकार करें, हे सुंदर आँखों वाले।"4437 (7) [4573]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
मैं क्या सोच रहा था, यह समझने की कोशिश करते हुए,

उन्होंने [उस समय मुझसे] ये शब्द कहे: (8) [4574]

"चार लोग [रास्ते में] प्रवेश कर चुके हैं;
इसके फल में चार स्थापित हैं।4438
भिक्षुओं की यह सभा ईमानदार है।
ज्ञान और नैतिकता में स्थिर। (9) [4575]

अनुष्ठान करने वाले लोगों के [अच्छे] पुनर्जन्मों के लिए किया गया पुण्य,4439
पुण्य अर्जित करने की चाह रखने वाले प्राणी,
भिक्षुओं के लिए उपहार स्वरूप,4440 बहुत फल देता है। (10) [4576]

नई फसल, और उससे भी अधिक, इन भिक्षुओं को दी जानी है।4441
यह प्रस्ताव रखते हुए, सभा के भिक्षुओं को अपने उस घर में ले चलो। तुम्हारे घर में जो कुछ तैयार किया गया है,
इसे भिक्षुओं की सभा को दे दो।" (11) [4577]4442

प्रमुख भिक्षुओं ने इसका प्रस्ताव रखा।
मेरे घर में जो कुछ तैयार किया गया था, उस सभा में उपस्थित हों।
मैंने भिक्षुओं की सभा को दिया। (12) [4578]

उस कर्म के फलस्वरूप,

4434 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4435 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4436 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4437 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
4438 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4439 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
4440 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा जा रहा है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4441 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"
4442 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

दृढ़ निश्चय और संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करते हुए,
मैं तब तावतिंसा गया। (13) [4579]

वहाँ मेरा सुगठित महल सोने का बना हुआ था, जो चमकीला था। वह साठ मील ऊँचा था।

[और यह] तीस लीग चौड़ा था। (14) [4580]

उन्नीसवाँ पाठ भाग।
मेरा वह महल खचाखच भरा हुआ था, जिसमें महिलाओं के विभिन्न समूह मौजूद थे। वे वहाँ खाना-पीना कर रही थीं।
मैं तीस देवताओं के बीच रहता हूँ।4443 (15) [4581]

और मैंने [उस समय] लगातार तीन बार दैवीय शासन किया, और लगातार पाँच बार मैंने
वह एक ऐसा सम्राट था जो सत्ता का पहिया घुमाता था, [और मैंने] अनगिनत स्थानीय शासन का आनंद लिया। (16) [4582]4444

जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए, मुझे असीमित धन प्राप्त होता है।
मेरे पास संपत्ति की कोई कमी नहीं है:
वह नई फसल का फल है। (17) [4583]

हाथी और घोड़े से चलने वाले वाहन, पालकी और रथ भी —
मैं इन सभी को प्राप्त कर रहा हूँ:
यह नई फसल का फल है। (18) [4584]

नए कपड़े [और इसी प्रकार] नए फल, नया भोजन जिसका स्वाद सर्वोत्तम हो —
मैं इन सभी को प्राप्त कर रहा हूँ:
यह नई फसल का फल है। (19) [4585]

रेशमी कपड़ा4445 और ऊनी कंबल4446 भी,
खोमा और सूती कपड़ा4447 — मैं ये सब प्राप्त कर रहा हूँ:
वह नई फसल का फल है। (20) [4586]

दास महिलाओं के समूह, दासों के समूह,

4443 khiḍḍāratiyaÁ
4444 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
4445 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
4446 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।
4447 शाब्दिक रूप से, “ पूजा ”

और वो महिलाएं जो पूरी तरह से सजी-धजी हैं - मैं उन सभी को प्राप्त कर रहा हूँ:
वह नई फसल का फल है। (21) [4587]

मुझे न ठंड लग रही है, न गर्मी; तेज बुखार भी नहीं है। और न ही मानसिक पीड़ा है।
मेरे मन में इसका कोई अस्तित्व नहीं है। (22) [4588]

लोग कहते हैं, “यह खाओ,” “इसका आनंद लो,” “इस अच्छे बिस्तर पर लेटकर सो जाओ।” मुझे ये सब मिल रहा है:
यह नई फसल का फल है। (23) [4589]

अब मेरे लिए आखिरी समय है;
मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है।
आज मैंने जो फल दान किए, उनकी कीमत 4450 है।
यह मुझे हमेशा खुश करता है। (24) [4590]

अपनी नई फसल दान करने के बाद,
असाधारण सद्गुण वाले भिक्षुओं के लिए,4451
मुझे आठ परिणाम प्राप्त हुए,4452
मेरे कर्मों के अनुसार। (25) [4591]

मैं सुंदर हूँ और प्रसिद्ध भी, बहुत धनी4453 और हानि से मुक्त; हमेशा बहुमत में,4454
मेरे दल में कोई गुट नहीं है।
मैं दुनिया में जिनसे भी मिलता-जुलता हूँ, वे सभी मुझे सम्मान देते हैं।
और जो भी उपहार4455 हों,
मुझे [हमेशा] प्रत्येक का पहला मिलता है।4456 (26-27) [4592-4593]

भिक्षुओं के बीच में4457 या सर्वश्रेष्ठ बुद्ध के आमने-सामने, सभी [अन्य] को पार करते हुए,
दानदाता मुझे दान दे रहे हैं। (28) [4594]

4448 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
4449 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
4450 pariḷāho
4451 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
4452 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
4453 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
4454 samādhikusalo ahaŋ
4455 iddhipādesu kovido
4456 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
4457 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है

पहली नई फसल देने के बाद,
उत्कृष्ट सद्गुण वाले भिक्षुओं के लिए,4458
मुझे ये परिणाम बहुत अच्छे लग रहे हैं:
यह नई फसल का फल है। (29) [4595]

उस दान के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
यह नई फसल का फल है। (30) [4596]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (31) [4597]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (32) [4598]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (33) [4599]

इस प्रकार पूज्य सुसिंतिता थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुसिंटिटा थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

---

426. {429.}4459 सोवनाकिंखानिया4460

विश्वास के साथ घर छोड़कर, मैं बेघर होकर निकल पड़ा। छाल से बने वस्त्र पहने हुए, मैं
मैंने तपस्या में विश्वास रखा।4461 (1) [4600]

अत्थादस्सी, भगवान
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का सांड,

4458 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4459 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4460 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4461 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

उस काल में अस्तित्व में आया,
कई लोगों को पार ले जाना। (2) [4601]

मेरी सारी शक्ति एक गंभीर बीमारी के कारण समाप्त हो गई थी। सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को याद करते हुए।
एक उत्कृष्ट स्तूप का निर्माण
मैंने प्रसन्न मन से उस स्तूप पर हजारों सुनहरे किंखनी फूल बिखेरे।
मेरा मन [उत्साह से भरा हुआ] है।4463 (3-4) [4602-4603]

मानो मैं संबुद्ध के सामने खड़ा था, मैंने उस स्तूप की सेवा की।
उसके बारे में मानसिक आनंद के साथ, अत्थादस्सी, तटस्थ व्यक्ति। (5) [4604]

4465 में देवताओं के लोक में पुनर्जन्म लेकर, मैं अपार आनंद प्राप्त कर रहा हूँ।
वहाँ मेरा रंग स्वर्णिम था:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (6) [4605]

[वहाँ] मेरे पास आठ सौ मिलियन महिलाएं थीं जो अपने आभूषणों से सजी हुई थीं।4466
वे हर समय मेरी प्रतीक्षा करते रहते हैं:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (7) [4606]

वहाँ साठ हजार वाद्ययंत्र, भेरा- ढोल4467 और पणव -ढोल4468, शंख और देण्डिमा मौजूद हैं। ढोल4469 भी हैं।
ढोल की मधुर ध्वनि बोलते हुए.4470 (8) [4607]

और साथ ही चौरासी हजार अलंकृत हाथी।

4462 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
4463 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4464 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4465 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4466 शाब्दिक रूप से, "गया"
4467 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4468 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4469 शाब्दिक रूप से, "योग्य"
4470 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

तीन रास्तों से संभोग करते हुए 4471 नर हाथी 4472 [और] साठ वर्ष के हाथी, सोने के जालों से ढके हुए, [हमेशा] मेरी सेवा में रहते हैं 4473
और युद्ध के लिए सुसज्जित हाथी,4474
मुझे कभी कमी नहीं होती।4475 (9-10) [4608-4609]

मुझे परिणाम से खुशी हो रही है
सुनहरे किंखानी के 4476 फूल। मैंने 58 बार अभ्यास किया।
सभी देवताओं पर संप्रभुता। (11) [4610]

और इकहत्तर बार मैं था

एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। पृथ्वी पर, एक सौ एक बार।
मैंने विश्व-शासन का प्रयोग किया। (12) [4611]

अब उसने अमरता प्राप्त कर ली है, वह असीम है, उसे समझना कठिन है।
सभी बेड़ियाँ नष्ट हो चुकी हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (13) [4612]

उस फूल को भेंट करने के बाद से अठारह सौ युग बीत चुके हैं,
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (14) [4613]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (15) [4614]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (16) [4615]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में 4471 में कई रूपों में 'गेण्डु' लिखा है । कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में शायद उतने ही अस्पष्ट रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।
4472 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4473 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
4474 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा जा रहा है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4475 लिट., "एक फूल पर"
4476 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (17) [4616]

इस प्रकार पूज्य सोवण्णकिंखनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सोवण्णकिंखनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

427. {430.}4477 सोवनकट्टारिका4478

स्वयं-संयमित,4479 बुद्ध, स्वयं को वश में करने वाला,4480 सजग,4481
ब्रह्मा के पथ पर विचरण करते हुए, 4482
मानसिक राहत में आनंद लेना,4483 (1) [4617]

बाढ़ पार करने वाला, 4484 ध्यान और समाधि से प्रेम करने वाला संबुद्ध, 4485 बैठा हुआ ऋषि, 4486 प्राप्तकर्ता, 4487
नीले कमल की पंखुड़ियों की तरह शानदार:4488 (2) [4618]

मैं पानी रखने के लिए लौकी लेकर सर्वश्रेष्ठ बुद्ध के पास पहुँचा।
बुद्ध के चरणों को धोने के बाद,
मैंने वह [पानी] लौकी [उसे] दी। (3) [4619]

तब संबुद्ध ने नेता पद्ममुत्तरा को बुलवाया।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4477 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4478 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4479 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4480 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4481 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4482 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4483 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4484 शाब्दिक रूप से, "गया"
4485 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4486 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4487 शाब्दिक रूप से, "योग्य"
4488 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4489 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

"इस [लौकी] के साथ [और अधिक] पानी लाते हुए,

इसे मेरे पैरों के तलवों पर रख दो।” (4) [4620]

सहमत होते हुए, "उत्कृष्ट" कहते हुए, और शिक्षक के प्रति आदर दिखाते हुए, लौकी से पानी ढोते हुए,4490
मैं इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध के पास लाया। (5) [4621]

महान नायक ने इसके लिए धन्यवाद दिया, मेरे हृदय की पीड़ा को शांत करते हुए कहा, "मुझे यह लौकी देने के कारण,
जो तुम सोचते हो, उसे पूरा होने दो। (6) [4622]

उसके बाद पंद्रह-पंद्रह युगों तक मैंने देवताओं की दुनिया में आनंद लिया और तीस बार मैं राजा बना।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (7) [4623]

चाहे दिन हो या रात, चलते-फिरते हो या खड़े रहते हो, सोने से बना पानी का घड़ा4492
मेरे ठीक सामने खड़ा है। (8) [4624]

बुद्ध को लौकी अर्पित करने पर मुझे सोने का पानी का पात्र प्राप्त होता है:
यह कार्य बिना किसी परेशानी के संपन्न हुआ।4493
बाद में यह इतना विशाल हो जाता है। (9) [4625]

एक लाख युगों में
जब से मैंने उसे वह लौकी दी है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह लौकी देने का फल है। (10) [4626]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (11) [4627]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [4628]

4490 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4491 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
4492 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस द्वारा पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4493 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) [4629]

इस प्रकार पूज्य सोवण्णकट्टिक4494 थेरा ने ये श्लोक कहे।

सोवण्णकट्ट्रिका 4495 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: Sakiŋsammajjaka Thera,
Ekadussī, thus Āsanī,
फिर कदंब [और] कोरांडा, घटाओन, सावनिका, सुसिंतिता, किखनिका,
और सोना-कट्टारिका4496 भी:
यहां सौ श्लोक हैं और साथ ही इकहत्तर और श्लोक हैं।

साकिंसममज्जका अध्याय, तैंतालीसवाँ

एकविहार्य अध्याय, चौवालीसवाँ

---

428. {431.}4497 एकविहारिया4498

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में
ब्रह्मा के सगे संबंधी, महान यशार्ज, जिनका वंश कश्यप कहलाता है,4499
सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता, [बुद्ध] प्रकट हुए। (1) [4630]

नॉन-डिलेड वन, 4500 असमर्थित, 4501

4494 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
4495 khiḍḍāratiyaÁ
4496 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4497 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4498 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4499 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4500 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4501 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

जिसका मन अंतरिक्ष के समान समतल है,4502
बहुत खाली, 4503 तटस्थ, 4504 पसंद नहीं

उपस्थिति का,4505 स्वामी,4506 (2) [4631]

हृदय अनासक्त,4507 दोषमुक्त,4508
कबीले और समूह में घुलमिल न जाना,4509
अत्यंत दयालु, नायक
अनुशासन के साधनों में कुशल,4510 (3) [4632]

दूसरों के प्रति कर्तव्यों में सक्रिय,4511
[संपूर्ण विश्व को] उसके देवताओं के साथ प्रशिक्षित करना,4512
निर्वाण की ओर ले जाने वाले मार्ग पर जमी कीचड़ को सुखाना — अमर, परम आनंद, बुढ़ापे और मृत्यु की बाधा —4513
वह जो दुनिया भर में मदद करता है 4515
वह एक विशाल भीड़ के बीच बैठा था। (4-5) [4633-4634]

भगवान, 4516 कोयल की आवाज के साथ, 4517
ब्रह्मा की ध्वनि, 4518 तथागत, 4519
बहुत खराब सड़कों पर फंसे लोगों को उठाना4520
जो नेता के बिना खो गए हैं, 4521 (6) [4635]

4502 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4503 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

4504 लिट., "गया"

4505 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

4506 लिट., "गिर गया"

4507 लिट., "योग्य"

4508 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

4509 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

4510 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

4511 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

4512 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

4513 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"

4514 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

4515 khiḍḍāratiyaÁ

4516 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

4517 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"

4518 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

4519 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
4520 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
4521 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
4522 pariḷāho

तब मुझे विश्व नेता का दर्शन हुआ, जो निर्मल शिक्षा का प्रचार कर रहे थे। उनकी शिक्षा सुनने के बाद,
मैं बेघर हो गया। (7) [4636]

आगे बढ़ते हुए, मैं विजेता के विधान के बारे में सोच रहा था; कई धारणाओं से बोझिल था।
मैं सुंदर जंगलों में अकेला रहता था। (8) [4637]

शारीरिक एकांत बन गया
महान स्थिति4523 [तब] मेरे लिए, मानसिक एकांत से ग्रस्त,
बैठकों को भयभीत होकर देखते हुए.4524 (9) [4638]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (10) [4639]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [4640]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [4641]

इस प्रकार पूज्य एकविहार्य थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकविहारीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

429. {432.}4525 एकसंखिया4526

वहाँ एक बड़ा उत्सव था
विपस्सी बुद्ध का 4527 बोधि [वृक्ष].

4523 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
4524 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 4525 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

4526 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4527 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या खमीर रहित भोजन के रूप में।

जनता एकजुट हो गई,
पूजा करना4528 [कि] उत्कृष्ट बोधि। (1) [4642]

"निश्चित रूप से वह किसी से कमतर नहीं है।"
जिसका यह बोधि वृक्ष है;
यह बुद्धों का सर्वश्रेष्ठ संग्रह होगा;
शिक्षक के [वृक्ष] की पूजा की जानी चाहिए।"4529 (2) [4643]

उसके बाद, मैंने एक शंख लेकर उस बोधि वृक्ष के समक्ष प्रार्थना की।
हर रोज [उस शंख को] बजाते हुए,
मैंने सर्वोच्च बोधि की पूजा की। (3) [4644]

मृत्यु के निकट उस कर्म को करने से मुझे देवताओं का लोक प्राप्त हुआ। जब मेरा [मानव] शरीर नष्ट हो गया,
मुझे देवताओं की दुनिया में आनंद आया। (4) [4645]

रोमांचित, खुश, बेहद खुश, [खेलते हुए]4530
साठ हजार यंत्र [वे]
मुझे हर समय सेवा प्रदान करो:
यह बुद्ध- पूजा का फल है , (5) [4646]

इस युग में मैं 4531 इकहत्तर राजाओं में से एक था जिनका नाम सुदस्सन4532 था।
गुलाब-सेब के बाग के स्वामी,4533
चारों तरफ से विजयी.4534 (6) [4647]

सौ प्रकार के 4535 उपकरण हर समय मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।
मैं अपने कर्मों का फल भोग रहा हूँ:
यही उपस्थिति का फल है। (7) [4648]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव रूप हो या दिव्य, मेरे लिए ढोल हमेशा बजते रहते हैं।
यहां तक कि [मेरी] माँ के गर्भ में भी। (8) [4649]

केक या जंकेट (PSI: Sinh. roṭiya)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई खाद्य पदार्थ है।

4528 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4529 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4530 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4531 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4532 लिट., "गया"
4533 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4534 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4535 लिट., "योग्य"

संबुद्ध की सेवा करने के बाद, उस समस्त आनंद का अनुभव करने के बाद,4536
[अब] मैंने अमर अवस्था, शुभ, शांत, अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (9) [4650]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय वह कर्म किया था।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (10) [4651]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (11) [4652]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [4653]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) [4654]

इस प्रकार पूज्य एकाॅखिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकासंखिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

430. {433.}4537 पतिहिरासन्नक4538

विजेता, पदुमत्तरा, बलि प्राप्तकर्ता,
उस समय शहर में प्रवेश किया,
एक लाख स्वामी के साथ.4539 (1) [4655]

4536 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 4537 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।

यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

4538 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4539 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

जब परम शांतिप्रिय,
तटस्थ व्यक्ति शहर में प्रवेश कर गया,
कई रत्न चमक रहे थे, और
हर समय तेज शोर होता रहता था। (2) [4656]

बुद्ध की [महान] महिमा के माध्यम से,4540
ढोल बजाए और पीटे जा रहे थे;
जब बुद्ध ने नगर में प्रवेश किया, तो वीणाएँ अपने आप बजने लगीं। (3) [4657]

मैं सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, पद्ममुत्तरा, महान ऋषि 4542 का सम्मान कर रहा हूँ;
चमत्कार देखने के बाद,
मैंने [इस पर] अपने दिल को प्रसन्न किया। (4) [4658]

"हे बुद्ध! हे शिक्षा!"
ओह! हमारे शिक्षक की [महान] उपलब्धि!
किसी की इच्छा के बिना, उपकरणों
ये सब अपने आप ही खेले जा रहे हैं!" (5) [4659]

उस ज्ञान को प्राप्त करने के बाद से एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
बुद्धों को समझने का फल। (6) [4660]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [4661]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4662]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [4663]

इस प्रकार पूज्य पाटिहीरसंञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पाटिहीरसंञ्चक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

4540 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
4541 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4542 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

---

431. {434.}4543 शाणथविका4544

मैंने अल्टीमेट बाइपेड देखा,
खाने की थाली जैसे पेड़ की तरह चमक रहा है,4545
दीपकों के वृक्ष की तरह प्रज्वलित,
मानो सोने से बना हो, चमक रहा हो। (1) [4664]

मैंने अपना पानी का घड़ा,4546 अपने छाल के वस्त्र और अपना सुराही,4547 एक कंधे पर हिरण की खाल रखकर,
मैंने [तब] सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की प्रशंसा की: (2) [4665]

"महान ऋषि, ज्ञान के प्रकाश को फैलाते हुए,4548
जो भ्रम और अंधकार को दूर करता है
भ्रम के जाल द्वारा निर्मित
तुम ही हो जिसने पार कर लिया है। (3) [4666]

हे अद्वितीय, आप इस संसार को संपूर्ण रूप से ऊपर उठाते हैं;
यह अपने संपूर्ण विस्तार में नहीं है4552
आपकी जानकारी के लिए एक उपमा4553। (4) [4667]

उस ज्ञान के कारण, बुद्ध4554
उन्हें 4555 "सर्वज्ञ" के रूप में जाना जाता है।4556

मैं महान नायक हूं, मैं उनकी पूजा करता हूं।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4543 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4544 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4545 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4546 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4547 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4548 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4549 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4550 लीटर, "गया"
4551 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4552 लिट., "गिर गया"
4553 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4554 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4555 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
4556 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

अबाधित,4557 सर्वज्ञ।"4558 (5) [4668]

मैंने जब से सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की प्रशंसा की है, तब से लेकर अब तक के एक लाख युगों में मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
ज्ञान की प्रशंसा करने का यही फल है। (6) [4669]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [4670]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4671]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [4672]

इस प्रकार पूज्य ञाणथविका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

ञाणथविका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

432. {435.}4559 उच्छुकाण्डिका4560

शहर में, बंधुमती,
मैं उस समय द्वारपाल था।
मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
[जो] हर चीज का स्वामी था। (1) [4673]

प्रसन्नता से, हृदय में आनंद लिए, गन्ने की एक डंडी लाते हुए,4561

4557 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

4558 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4559 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4560 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

4561 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मैंने इसे [उन्हें] दिया, सर्वश्रेष्ठ बुद्ध।
महान ऋषि [जिन्हें विपस्सी के नाम से जाना जाता है]। (2) [4674]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने [बुद्ध को] गन्ना दिया, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
गन्ने के डंठल का फल। (3) [4675]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [4676]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4677]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4678]

इस प्रकार पूज्य उच्छुकण्डिका 4562 थेरा ने ये श्लोक कहे।

उच्छुकंडिका 4563 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

433. {436.}4564 कलामबदायका4565

संबुद्ध 4566 ने रोमासा 4567 नाम दिया
वह पहाड़ की ढलान पर रहता था।
मैंने उस [बुद्ध] को bindweed4568 दिया।
[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (1) [4679]

4562 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
4563 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4564 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4565 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4566 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4567 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4568 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

पिछले चौरानवे युगों में

मैंने तब वह दान दिया था, मुझे कभी भी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
यह बेलदार घास देने का फल है। (2) [4680]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4681]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4682]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4683]

इस प्रकार पूज्य कलांबडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कलाम्बाडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

434. {437.}4569 अम्बातक4570

जंगल में बुद्ध को देखकर,
स्वयं-निर्मित, अजेय, ने एक बेर लिया,4571 I
इसे स्वयं-एक हो जाने को दिया। (1) [4684]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने तब उसे वह फल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (2) [4685]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4569 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4570 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4571 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4686]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4687]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4688]

इस प्रकार पूज्य अंबाटक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अंबाटक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

435. {438.}4572 हरितकाडयक4573

मायरोबलन4574 और आंवला,4575 आम, गुलाब सेब,4576 बहेरा,4577 बेर,4578 मार्किंगनट,4579 बेल4580 —
मैं इसे स्वयं ले जा रहा हूँ। (1) [4689]

ध्यान करने वाले, ऋषि को देखना,
समाधि-प्रेमी, एक [पहाड़] की ढलान पर, एक महान ऋषि [वहाँ निवास करते हुए] अकेले, जो रोग से पीड़ित थे, एक मरुबलन का सेवन करते हुए, मैं
इसे स्वयं-स्वरूपित को दिया गया। जब औषधि का सेवन किया गया,4581

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4572 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4573 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4574 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4575 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4576 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4577 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4578 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4579 lit., "गया"
4580 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4581 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

इससे [बुद्ध की] बीमारी दूर हो गई। (2-3) [4690-4691]

दर्द दूर होने के साथ,
तब बुद्ध ने धन्यवाद व्यक्त किया:4582
"चिकित्सा के इस वरदान और रोग निवारण4583 के कारण, चाहे वह दिव्य हो या मनुष्य, या किसी अन्य अस्तित्व में जन्मा हो,4584
आप हर जगह खुश रहें।
और आपको कभी कोई बीमारी न हो। (4-5) [4692-4693]

यह सब कहने के बाद, संबुद्ध ने कहा,
स्वयं एक हो जाने वाले, महान ऋषि, नायक, 4585 आकाश में विलीन हो गए।
ठीक हवा में हंस-राजा की तरह। (6) [4694]

जब से मैंने मायरोबालन दिया
महान ऋषि, स्वयं-रूपी, इस [वर्तमान] जन्म [मेरे] तक मुझे कोई बीमारी नहीं हुई। (7) [4695]

यह मेरे लिए आखिरी बार है;
मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है।4586
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4696]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने तब उसे दवा दी थी, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
यह औषधि का फल है। (9) [4697]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (10) [4698]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

4582 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4583 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4584 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप

भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

4585 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

4586 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [4699]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [4700]

इस प्रकार पूज्य हरितकदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

हरिटकडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

436. {439.}4587 अंबापिनडिया4588

मैं उस समय हाथियों का राजा था।
हल के डंडों जैसे नुकीले दांतों के साथ, पूरी तरह से विकसित। एक विशाल जंगल में भटकते हुए,4589
मैंने विश्व के नेता को देखा। (1) [4701]

आमों का एक गुच्छा लेते हुए,4590
मैंने उन्हें शिक्षक को दे दिया।
महान नायक ने उन्हें स्वीकार कर लिया।
सिद्धार्थ, विश्व के नेता। (2) [4702]

जब I4591 उसके बारे में ध्यान कर रहा था,
फिर विजेता ने [उस फल] का सेवन किया। वहाँ मेरे हृदय को प्रसन्नता पहुँचाते हुए, मेरा तुसिता में पुनर्जन्म हुआ।4592 (3) [4703]

वहां से गिरने के बाद, मैं
वह एक ऐसा सम्राट था जो पहिया घुमाता था। [फिर] उसी विधि से, मुझे, महान सौभाग्य प्राप्त हुआ,4593 परिश्रम पर दृढ़ रहने वाला व्यक्ति होने के नाते,

---

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4587 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4588 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4589 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4590 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4591 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4592 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4593 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

शांत, 4594 पुनर्जन्म के आधार से रहित, 4595
सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए,
मैं [यहाँ अभी] बेदाग रह रहा हूँ। (4-5) [4704-4705]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने तब उसे वह फल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (6) [4706]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [4707]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4708]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [4709]

इस प्रकार पूज्य अंबपिंडिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अंबापिंडिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

437. {440.}4596 जंबुफलिया4597

जब पद्ममुत्तरा बुद्ध,
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ व्यक्ति, भीख माँगते हुए घूम रहा था, सर्वोच्च प्रसिद्धि बनाए हुए, (1) [4710]
सबसे अच्छे [गुलाब-सेब]4598 फल को लेते हुए, एक ऐसे दिमाग के साथ जो बिल्कुल स्पष्ट था,

---

4594 लिट., "गया"
4595 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4596 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4597 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4598 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मैंने इसे शिक्षक को दे दिया,
हीरो, उपहारों का हकदार। (2) [4711]

हे द्विपाद स्वामी, हे विश्व के सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों के बैल, उस कर्म के कारण,
मैंने अविचल स्थान प्राप्त कर लिया है
सभी विजय और पराजय से परे। (3) [4712]

उस दान के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
यही सर्वोत्तम देने का फल है। (4) [4713]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [4714]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4715]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4716]

इस प्रकार पूज्य जंबुफालिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

जंबुफालिया थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।
सारांश: एकविहारी थेरा और
सांखिका, पाटिहीरक,

थविका और उच्छुकांडी4600
कलंब', अम्बातकपाद,4601
हरिटक और अम्बापिंडी
जंबुदा दसवीं [कविता] के रूप में आती है।
यहां छियासी श्लोक हैं, जिनकी गणना जानकार लोग करते हैं।

एकविहार्य अध्याय, चौवालीसवाँ

4599 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
4600 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4601 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

विभीतकी 4602 अध्याय, पैंतालीसवाँ

---

438. {441.}4603 विभीतकामिञ्जय4604

महान नायक काकुसंध सर्वज्ञ थे। उन्होंने 4605 को समूह से अलग कर दिया।
वह [तब] जंगल में चला गया। (1) [4717]

अनेक बीज एकत्र करने के बाद,4606
मैंने उन्हें बेल के एक टुकड़े पर पिरो दिया। उस समय भगवान एक पर्वत पर ध्यान कर रहे थे। (2) [4718]

देवताओं के देव को देखकर, मैंने अत्यंत स्पष्ट मन से, उन सभी बीजों को, हे वीर, उपहारों के योग्य, उनके समक्ष प्रस्तुत किया। (3) [4719]

वर्तमान युग के भीतर, तब से
मैंने तब उसे वह फल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
यह अनेक बीजों का फल है। (4) [4720]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [4721]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4722]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4602 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4603 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4604 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4605 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी भाग को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4606 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4723]

इस प्रकार पूज्य विभीतकमिंजय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

विभीतकमिंजय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

439. {442.}4607 कोलादायका4608

मैं उस समय हिरण के चमड़े के वस्त्र पहने हुए था। खारी का बोझ ढोते हुए, मैं
आश्रम में बेर लाए गए4610। (1) [4724]

उस समय बुद्ध, सिख धर्म के अनुयायी, अकेले थे और उनके साथ कोई और नहीं था।4611
फिर वह मेरी कुटिया के पास आया, हर समय चमकता हुआ। (2) [4725]

अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए, आज्ञाकारी4612 की उपासना करते हुए,4613 उन्हें अपने दोनों हाथों से ग्रहण करते हुए
मैंने बुद्ध को बेर दिए। (3) [4726]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने तब उसे वह फल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
बेर देने का फल। (4) [4727]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [4728]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4607 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4608 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4609 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4610 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4611 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4612 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4613 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4729]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4730]

इस प्रकार पूज्य कोलडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कोलाडायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

440. {443.}4614 बिलाफालिया4615

चंदाभागा नदी के किनारे, मेरा सुव्यवस्थित आश्रम
इसमें विभिन्न प्रकार के वृक्ष पाए जाते थे।
[और] फलों से लदे बेल के पेड़ों से भरा हुआ। (1) [4731]

एक सुगंधित बेल वृक्ष को देखकर,4616 मैंने, सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को याद करते हुए, एक खारी भार भर लिया ,
काकुसंध के पास पहुँचकर, रोमांचित और भावों से अभिभूत होकर,
एकदम स्पष्ट मन से,

मैंने वह बेल फल दिया जो मैं लाया था।
[उसे,] हीरो, मेरिट-फील्ड। (2-3) [4732-4733]

वर्तमान युग के भीतर, तब से
मैंने तब उसे वह फल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (4) [4734]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4614 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4615 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4616 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [4735]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4736]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4737]

इस प्रकार पूज्य बिलफलिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बिलाफालिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

441. {444.}4617 भल्लाताकाडयक4618

स्वर्ण रंग के संबुद्ध के लिए घास से बनी चटाई बिछाते हुए, बत्तीस महान चिह्नों को धारण किए हुए, जंगल के शिखर पर उड़ते हुए, घास4619

खिले हुए राजसी साल के पेड़ की तरह,
मैंने उनसे, बुद्धों में सर्वश्रेष्ठ से, पूछा: "बुद्ध मुझ पर दया करें;
मैं तुम्हें भिक्षा भोजन देना चाहूँगा। (1-2) [4738-4739]

दयालु, करुणामयी, अत्थादस्सी, महान यशस्वी, मेरे मन की बात जानकर, मेरे आश्रम में अवतरित हुए। (3) [4740]

नीचे उतरते हुए, संबुद्ध तब
पत्तों से बनी उस चटाई पर बैठ गया।4622

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4617 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4618 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4619 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4620 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4621 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4622 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

कुछ मार्किंगनट लेने के बाद,4623
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को दे दिया। (4) [4741]

जब मैं [उनका] ध्यान कर रहा था,
फिर विजेता ने उस फल का सेवन किया। इससे मेरे हृदय को आनंद प्राप्त हुआ।
तब मैंने [उनकी] पूजा की, विजेता की। (5) [4742]

अठारह सौ युगों में
जब से मैंने उसे वह फल दिया है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
फल देने का फल यही है। (6) [4743]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [4744]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4745]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [4746]

इस प्रकार पूज्य भल्लाटकडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

भल्लाटकडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

442. {445.}4624 उतुऽहिपुफिया4625

मैंने एक उतुल्ही फूल लेकर उसे बोधि को अर्पित किया।
जब वह बरगद का पेड़ बड़ा हो गया था,

4623 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4624 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4625 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4626 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

सुनहरे रंग के सूर्यप्रकाश में.4627 (1) [4747]

वर्तमान युग के भीतर, तब से
मैंने तब एक फूल भेंट किया था।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बोधि -पूजा का फल है । (2) [4748]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4749]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4750]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4751]

इस प्रकार पूज्य उतुहिपुप्पिया4628 थेरा ने ये श्लोक कहे।

Utuḷhipupphiya4629 Thera की कथा समाप्त हो गई है।

---

443. {446.}4630 अम्बाताकिया4631

ऋषि वेस्साभू खिले हुए साल के जंगल में प्रवेश कर गए,
एक खराब पहाड़ी सड़क पर बैठ गया
शेर की तरह, कुलीन व्यक्ति.4632 (1) [4752]

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।

4627 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
4628 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4629 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4630 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4631 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4632 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मैंने उन्हें 4633 हॉग-प्लम 4634 भेंट किए, जो पुण्य-क्षेत्र, महान नायक हैं।
अपने हाथों से [अच्छी तरह से] संतुष्ट महसूस कर रहा हूँ। (2) [4753]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उसे वह फूल भेंट किया4635, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध -पूजा का फल है । (3) [4754]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;

सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो गए हैं। सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं;
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [4755]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4756]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4757]

इस प्रकार पूज्य अम्बाटकीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अंबाटकीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

444. {447.}4637 सिहासनिका4638

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद का भाव लिए मैंने उन्हें सिंह-सिंहासन भेंट किया, हे पद्ममुत्तरा, हे भगवान!
सभी प्राणियों का शुभचिंतक.4639 (1) [4758]

4633 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

4634 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4635 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4636 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4637 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4638 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4639 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

देवताओं के संसार में हो या मनुष्यों के संसार में, मैं जहाँ कहीं भी रह रहा हूँ, मुझे एक विशाल महल प्राप्त हो रहा है:
यह सिंह-सिंहासन का फल है। (2) [4759]

कई सोफे4640 जो सोने के बने थे, चांदी के बने थे, माणिक के बने थे,
रत्नों से बना, क्रिस्टल से बना,
मेरे लिए हर समय उत्पादित होते हैं। (3) [4760]

बोधि के लिए आसन बनाना
मैं "सर्वश्रेष्ठ कमल" नामक [बुद्ध] के वंश में जन्मा हूँ;
ओह! शिक्षण की उपयुक्तता!4641 (4) [4761]

जब से मैंने उसके लिए वह सिंह-सिंहासन बनाया है, तब से लेकर अब तक के एक लाख युगों में मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
यह सिंह-सिंहासन का फल है। (5) [4762]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (6) [4763]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4764]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4765]

इस प्रकार पूज्य सिहासानिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सिहासानिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

4640 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
4641 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

---

445. {448.}4642 पदपीठिया4643

सम्बुद्ध, सुमेधा नामक प्रधान, दयालु, ऋषि, जिन्होंने अनेक प्राणियों को पार कराया,
[तब] निर्वाण प्राप्त किया, महान-प्रसिद्ध। (1) [4766]

प्रसन्नता से, मन में आनंद लिए, मैंने पैरों के लिए एक स्टूल बनवाया।
उसके सिंह-सिंहासन के निकट,

सुमेधा, महान ऋषि। (2) [4767]

वह पुण्य कर्म करना जो फलदायी हो और सुख की ओर ले जाए,4644 अपने अच्छे4645 कर्मों के अनुरूप होना,
मैं [तब] तावतिंसा गया। (3) [4768]

जब मैं उस [दुनिया] में रह रहा था, अच्छे कर्मों से संपन्न होकर, जब मैंने अपने पैरों को सोने की तरह ऊपर उठाया
तब मेरे लिए पाँव-पीठ [होने लगता है]। (4) [4769]

जो लोग ध्यान आकर्षित कर रहे हैं, उनके लिए यह लाभ अच्छा है; निर्वाण में [बुद्ध] की सेवा करना,4647
उन्हें अपार खुशी मिल रही है। (5) [4770]

मेरा कर्म भी बहुत अच्छा फलदायी रहा, [सावधानीपूर्वक] व्यापारियों को काम पर रखकर। एक पायदान बनवाने के बाद,
मुझे सोने की कुर्सी मिल रही है। (6) [4771]

मैं जिस भी दिशा में जाऊं, 4649
किसी भी कारण से, मैं

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4642 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4643 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4644 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4645 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4646 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4647 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4648 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4649 शाब्दिक रूप से, "गया"

सोने की कुर्सी पर कदम रखते हुए:
यह अच्छे कर्मों का फल है। (7) [4772]

उस कर्म को करने के बाद से तीस हजार युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
वह एक पायदान का फल है। (8) [4773]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (9) [4774]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [4775]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [4776]

इस प्रकार पूज्य पादपीठिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पादपीठिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

446. {449.}4651 वेदिकारक4652

पद्ममुत्तरा बुद्ध की उत्कृष्ट बोधि प्रतिमा (4653) के चरणों के लिए एक अच्छी तरह से बनी रेलिंग का निर्माण करना।
मैंने अपने दिल को खुशी दी। (1) [4777]

वास्तव में उत्कृष्ट 4654 सामान, 4655

4650 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4651 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4652 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4653 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4654 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4655 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

मानव निर्मित वस्तुएँ और गैर-मानव निर्मित वस्तुएँ,4656
आकाश से मुझ पर वर्षा हो रही है:

वह रेलिंग का फल है। (2) [4778]

जब धमकी देने वाली सेनाएँ एकत्रित हो रही हों, तब दोनों ओर से हमला किया जाना,4657
मुझे कोई भय या डर नहीं दिख रहा है:
वह रेलिंग का फल है। (3) [4779]

मैं क्या सोच रहा हूँ, यह समझना
एक अच्छा महल मेरे लिए कई महंगे बिस्तरों के साथ बनाया जाता है:
वह रेलिंग का फल है। (4) [4780]

उस रेलिंग को बनवाने के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
वह रेलिंग का फल है। (5) [4781]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (6) [4782]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4783]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4784]

इस प्रकार पूज्य वेदिकारक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वेदिकारक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

4656 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4657 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4658 lit., “गया”

---

447. {450.}4659 बोधिघरिया4660

प्रसन्नता से भरे हृदय से मैंने भगवान सिद्धार्थ के लिए एक बोधिवृक्ष मंदिर4661 बनवाया।
द्विपद-स्वामी, तटस्थ एक। (1) [4785]

तुसिता में पुनर्जन्म, 4662

मैं रत्नों से बने घर में रहता हूँ।
मेरे लिए न तो ठंड है और न ही गर्मी;
हवा मेरे शरीर को नहीं छूती। (2) [4786]

इसके बाद छप्पनवें युग में
मैं एक चक्र-घुमाने वाला सम्राट था; मेरा नगर कासिका (4663) विस्साकम्मा (4664) द्वारा निर्मित किया गया था।
वह शहर दस लीग लंबा था और आठ लीग चौड़ा था। उस शहर में कुछ भी नहीं बना था।
]4665 छड़ें [या] लताओं [या] मिट्टी। (3-4) [4787-4788]

विस्साकम्मा द्वारा निर्मित मंगला नामक मेरा महल, जिसकी लंबाई एक लीग है,
और यह आधा लीग चौड़ा था। (5) [4789]

इसके चौरासी हजार स्तंभ पूरी तरह से ठोस सोने के बने थे; शिखर रत्नों से बने थे।
और छतें चांदी की बनी थीं। (6) [4790]

वह घर जो पूरी तरह से ठोस सोने का बना था, जिसका निर्माण विस्साकम्मा ने करवाया था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4659 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4660 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4661 कुम्मासा , संस्कृतः कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4662 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी भाग को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

4663 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4664 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4665 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

4666 शाब्दिक रूप से, "गया"

उस समय मुझ पर कब्जा था:
यह एक मंदिर देने का फल है।4667 (7) [4791]

इन सब चीजों का आनंद लेने के बाद,
देवताओं और मनुष्यों के संसार में, आज मैंने निर्वाण प्राप्त कर लिया है।
वह शांतिपूर्ण अवस्था जिसकी कोई तुलना नहीं है। (8) [4792]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने वह बोधि वृक्ष मंदिर बनवाया था, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है।
यह मंदिर देने का फल है। (9) [4793]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (10) [4794]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [4795]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [4796]

इस प्रकार पूज्य बोधिघारिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बोधिघारिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: विभीतकी, 4669 कोलाफली,
बिल्ला-भल्लातकप्पादा, निग्रोधा4670 और अंबाटाकी, आसनी, पदपीठका,
वेदिका, बोधिघारिका:
इस अध्याय में जिन आयतों की गणना की गई है, वे कुल मिलाकर अस्सी से एक कम हैं।

4667 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4668 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4669 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4670 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

विभीतकी अध्याय, पैंतालीसवाँ

जगतिदायीक अध्याय, छियालीसवाँ

---

448. {451.}4671 जगतिदायक4672

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।
मैंने उत्कृष्ट बोधि 4674 के चरणों के लिए पृथ्वी 4673 का स्थान साफ करवाया था।

धम्मदस्सी [बुद्ध], ऋषि का। (1) [4797]

किसी चट्टान या पहाड़ से गिरने पर, [जब] मैं पेड़ से गिरता हूँ, तो मुझे गिरने से बचाने के लिए सहारा मिलता है:
यह धरती के एक छोटे से टुकड़े का फल है। (2) [4798]

चोर मुझे परेशान नहीं कर रहे हैं [और] शासक4675 भी मुझे तुच्छ नहीं समझते; मैं अपने सभी मित्रों से आगे निकल रहा हूँ:
यह धरती के एक छोटे से टुकड़े का फल है। (3) [4799]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लेता हूँ, चाहे वह मानव हो या दिव्य, हर जगह मेरी पूजा की जाती है:4676
यह धरती के एक छोटे से टुकड़े का फल है। (4) [4800]

अठारह सौ युगों में जब से मैंने उस धरती के टुकड़े को तैयार किया है, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
यह धरती के एक छोटे से टुकड़े का फल है। (5) [4801]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4671 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4672 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4673 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4674 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4675 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4676 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (6) [4802]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4803]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4804]

इस प्रकार पूज्य जगतिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

जगतिदायीक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

449. {452.}4677 मोरहत्थिया4678

कुछ मोर के पंख इकट्ठा करना,
तब मैं विश्व नेता के पास पहुँचा। प्रसन्नता से, मेरे हृदय में आनंद का संचार हो रहा था।
मैंने उसे वे मोर के पंख दिए। (1) [4805]

उन 4679 मोर के पंखों के माध्यम से, [दिया गया]
इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ,
मेरे भीतर की तीनों आग बुझ गई हैं; मुझे अपार खुशी मिल रही है। (2) [4806]

हे बुद्ध! हे शिक्षा!
ओह! हमारे गुरु की [महान] उपलब्धि! उन्होंने मोर के पंख दिए हैं,
मुझे अपार खुशी मिल रही है। (3) [4807]

मेरे भीतर की तीनों आग बुझ गई हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं;

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4677 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4678 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4679 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4680 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4681 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

सभी अशुद्धियाँ समाप्त हो गई हैं।
मैं अब भी बेदाग़ जीवित हूँ। (4) [4808]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने तब [उसे] वह दान दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह मोर के पंखों का फल है। (5) [4809]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (6) [4810]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4811]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4812]

इस प्रकार पूज्य मोराहथिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मोराहथिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

450. {453.}4682 सिहासनविज्ञान4683

मैंने भगवान तिस्सा (बुद्ध) के बोधि वृक्ष की पूजा की। वहाँ पंखा लेकर,
मैंने [बोधि के] सिंह-सिंहासन को हवा दी। (1) [4813]

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस समय उस सिंह-सिंहासन को हवा दी थी, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
यह उसे हवा देने का फल है। (2) [4814]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4815]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4682 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4683 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4816]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4817]

इस प्रकार पूज्य सिहासनवीजनीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सिहासनविजनीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

451. {454.}4684 तिनुक्कधारिया4685

प्रसन्नता से, हृदय में आनंद लिए, मैंने तीन घास की मशालें उठाईं।
उत्कृष्ट बोधि4686 के चरण
पदुमुत्तारा बुद्ध की. (1) [4818]

जब से मैंने उन मशालों को थामे हुए लाखों युग बीत चुके हैं, तब से मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
मशालें देने का यही फल है। (2) [4819]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4820]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4821]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4684 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4685 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4686 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4822]

इस प्रकार पूज्य तिनुक्कधारिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिनुक्कधारिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

452. {455.}4687 अक्कमनादायका4688

मैंने काकुसंध, महान ऋषि, ब्राह्मण, सिद्ध पुरुष, 4690 को दोपहर के आराम के दौरान कदम रखने के लिए एक तख्ता दिया। (1) [4823]

इस [वर्तमान] युग में, जब से मैंने [उसे] वह दान दिया है, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
वह पैर के तख्ते का फल है। (2) [4824]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4825]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4826]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4827]

इस प्रकार वास्तव में आदरणीय अक्कमनदायका थेरा ने ये श्लोक कहे।

अक्कमनदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4687 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4688 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4689 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4690 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

453. {456.}4691 वनकोराडिया4692

जंगली कोरण्ड [फूल] लेना ,4693
मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया।
सिद्धार्थ, भगवान,
दुनिया का सबसे अच्छा, तटस्थ। (1) [4828]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने तब [उसे] वह फूल भेंट किया था, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्म के बारे में कुछ नहीं जाना है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [4829]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4830]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4831]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4832]

इस प्रकार पूज्य वनकोरांडिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वनकोरंडिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4691 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4692 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
4693 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

454. {457.}4694 एकचट्टिय4695

दुनिया जलते हुए कोयले में तब्दील हो गई थी, धरती गर्म अंगारों से भर गई थी।4696
पद्ममुत्तरा, हे भगवान!
खुली हवा में इधर-उधर चलते रहे। (1) [4833]

सफेद छाता लिए मैं सड़क पर आगे बढ़ गया।
वहाँ संबुद्ध के दर्शन करके,
मुझे खुशी का अनुभव हुआ। (2) [4834]

धरती सूर्य की किरणों से भरी हुई है;
यह धरती जलते हुए कोयले के समान है।
तेज हवाएँ चल रही हैं4697
शरीर की सांस को कम करना।4698 (3) [4835]

कृपया इसे स्वीकार करें, [मेरी] छतरी।
जो [सूर्य की] गर्मी [और] हवाओं को रोकता है, गर्मी और ठंड दोनों को मारता है; [इसके माध्यम से] मैं निर्वाण को स्पर्श करूँगा। (4) [4836]

हे दयालु, करुणामयी, पद्ममुत्तरा, महान ख्यातिप्राप्त, मेरे मन की बात जानने वाले,
तब विजेता ने इसे स्वीकार कर लिया। (5) [4837]

तीस युगों तक देवताओं के स्वामी,
मैंने [तब] दैवीय शासन का प्रयोग किया।
और पाँच सौ [अलग-अलग] बार,
मैं एक राजा था जो पहिया घुमाता था। (6) [4838]

[वहाँ] स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव था।
मैं अपने कर्मों का फल भोग रहा हूँ।
पहले मेरे द्वारा अच्छी तरह से किया गया। (7) [4839]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4694 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4695 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4696 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4697 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4698 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4699 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

यह मेरे लिए आखिरी बार है;
मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है।4700
अभी भी 4701 एक सफेद छाता
यह मेरे लिए हर समय ले जाया जाता है। (8) [4840]

जब से मैंने वह छाता दिया था, तब से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
छतरियां देने का फल। (9) [4841]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (10) [4842]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [4843]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [4844]

इस प्रकार पूज्य एकाचत्तीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकचट्टिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

455. {458.}4702 जातिपुफिया4703

जब भगवान बुद्ध का देहांत हुआ, 4704
पद्ममुत्तरा, अत्यंत प्रसिद्ध, फूलों को एक डिब्बे में रखते हुए, 4705

4700 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4701 lit., "गया"

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4702 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4703 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4704 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4705 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

मैंने उन्हें अवशेषों को अर्पित किया।4706 (1) [4845]

वहाँ मेरे हृदय को सुख पहुँचाकर, मैं निम्माना (स्वर्ग) चला गया।4707
4708 में देवताओं के लोक में निवास करते हुए,
मुझे अपने अच्छे कर्म याद आ गए। (2) [4846]

आकाश से मुझ पर लगातार फूलों की वर्षा हो रही है। मनुष्यों के बीच स्थानांतरण4710
मैं एक ऐसा राजा था जिसकी बहुत प्रसिद्धि थी। (3) [4847]

उस स्थान पर प्रतिदिन मुझ पर फूलों की वर्षा हो रही है, उस पुष्प अर्पण के कारण।4711
उस एक को जो सब कुछ देखता है। (4) [4848]

यह मेरे लिए आखिरी बार है;
मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है।4712
आज भी, फूलों की बारिश होती है
मुझ पर हर दिन बारिश हो रही है। (5) [4849]

उस फूल को भेंट करने के बाद से लेकर अब तक के लाखों युगों में,
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह अवशेष-पूजा का फल है।4713 (6) [4850]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [4851]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [4852]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

4706 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4707 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4708 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

4709 lit., “गया”

4710 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

4711 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

4712 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

4713 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]।"

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [4853]

इस प्रकार पूज्य जतिपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

जातिपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

456. {459.}4714 पट्टिपुप्पिया4715

जब अवशेषों को ले जाया जा रहा था, जब ढोल बज रहे थे, मैं प्रसन्न था, मेरे हृदय में आनंद था।
मैंने एक लाल लोध4716 फूल भेंट किया। (1) [4854]

एक लाख युगों में
जब से मैंने [उस समय] वह फूल भेंट किया था, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
यह अवशेष-पूजा का फल है।4719 (2) [4855]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4856]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4857]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4858]

इस प्रकार पूज्य पट्टिपुप्पिया4720 थेरा ने ये श्लोक कहे।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4714 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4715 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4716 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4717 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4718 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4719 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4720 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

पट्टिपुप्पिया 4721 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

457. {460.}4722 गंधपूजक4723

जब चिताएं बनाई गईं तो विभिन्न सुगंधें4724 एकत्रित की गईं। प्रसन्न, मेरे हृदय में आनंद के साथ,
मैंने कुछ सुगंधों की पेशकश की। (1) [4859]

एक लाख युगों में
क्योंकि मैंने उस चिता की पूजा की थी [उस समय], इसलिए मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह 4726 चिताओं की पूजा का फल है। (2) [4860]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4861]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4862]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4863]

इस प्रकार पूज्य गंधपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

गंधपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

समीक्षा:

4721 शाब्दिक अर्थ, “गया”
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4722 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4723 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
4724 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4725 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4726 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

जगती और4727 मोरहत्थी, आसनी, उक्कधारका, अक्कामी, वनकोरंडी, चट्टादा, जातिपूजक,
और बड़े पट्टिपुप्फी,4728
दसवां गंधपूजक है।
इसमें सड़सठ श्लोक हैं।
जिनकी गिनती जानकार लोग करते हैं।

जगतिदायीक अध्याय, छियालीसवाँ

सालकुसुमिया अध्याय, सैंतालीसवाँ

---

458. {461.}4729 सलाकुसुमिया4730

जब भगवान बुद्ध का देहांत हुआ—जिनका नाम “सर्वश्रेष्ठ कमल” था—जब चिता खड़ी की गई,
मैंने वहाँ एक साल का फूल चढ़ाया। (1) [4864]

उस फूल को भेंट करने के बाद से लेकर अब तक के लाखों युगों में,
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह 4733 चिताओं की पूजा का फल है। (2) [4865]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। मैं अपने सभी दोषों को भली-भांति जानता हूँ।
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4866]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

4727 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4728 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4729 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4730 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4731 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4732 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

4733 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4867]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4868]

इस प्रकार पूज्य सालकुसुमिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सालकुसुमिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

459. {462.}4734 सीतापूजक4735

जब बुद्ध4736 को जलाया जा रहा था, सिख धर्म, विश्व का रिश्तेदार,
मैंने अंतिम संस्कार की चिता अर्पित की
आठ [सुगंधित] चंपक फूल। (1) [4869]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने तब वह फूल भेंट किया।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह 4737 चिताओं की पूजा का फल है। (2) [4870]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4871]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4872]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4734 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4735 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4736 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4737 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4873]

इस प्रकार पूज्य चितपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

चितपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

460. {463.}4738 सीताकानिब्बापाका4739

जब वेस्साभू [बुद्ध] के शव का अंतिम संस्कार किया जा रहा था, तब महान ऋषि ने सुगंधित जल ग्रहण किया।
मैंने अंतिम संस्कार की चिता बुझा दी। (1) [4874]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस चिता को बुझा दिया।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह सुगंधित जल का फल है। (2) [4875]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4876]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4877]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4878]

इस प्रकार पूज्य चित्तकनिब्बापक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सीताकानिब्बापक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4738 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4739 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

---

461. {464.}4740 सेतुदायक4741

प्रसन्नता से, मन में आनंद भरकर, मैंने एक पुल का निर्माण करवाया।
[ध्यान] मार्ग के पास
विपस्सी, भगवान का। (1) [4879]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस पुल का निर्माण [उस समय] करवाया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
वह एक पुल का फल है। (2) [4880]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4881]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4882]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4883]

इस प्रकार पूज्य सेतुदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सेतुदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

462. {465.}4742 सुमनतालवन्तिया4743

मैंने ताड़ के पौधे का एक पंखा दिया,4744
चमेली के फूलों से ढका हुआ,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4740 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4741 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4742 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4743 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4744 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

सिद्धार्थ, भगवान, [और]
इसे महान प्रसिद्धि वाले के लिए वहन किया। (1) [4884]

पिछले चौरानवे युगों में

मैंने तब वह ताड़ के पत्ते का पंखा उसे दे दिया।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह ताड़ के पत्तों का फल है। (2) [4885]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [4886]

बुद्ध की उपस्थिति में रहना मेरे लिए बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (3) [4887]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4888]

इस प्रकार पूज्य सुमनतालवन्तीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुमनतालवन्तीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

463. {466.}4745 अवंताफलिया4746

हे भगवान, सौ किरणों वाले, 4747 स्वयंभू, अजेय, एकांतप्रिय, 4748 संबुद्ध,
भोजन की तलाश में निकले। (1) [4889]

मैंने हाथ में फल पकड़े हुए देखा
पुरुषों का वह बैल जो पास आ रहा था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4745 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4746 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4747 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4748 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।
मैंने उसे डंठल हटाकर फल दिए। (2) [4890]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने [उसे] वह फल [उस समय] दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (3) [4891]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [4892]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4893]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4894]

इस प्रकार पूज्य अवन्तफालिया4749 थेरा ने ये श्लोक कहे।

अवन्तफालिया 4750 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

464. {467.}4751 लबुजदायका4752

शहर में, बंधुमती,
मैंने तब एक आश्रम में काम किया।4753
मैंने निष्कलंक बुद्ध को देखा।
[जो] आकाश में यात्रा कर रहा था। (1) [4895]

ब्रेडफ्रूट4754 [वृक्ष] का फल लेकर, मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को दे दिया।

4749 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4750 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4751 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4752 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

4753 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4754 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

आकाश में विराजमान, शांत, महान ख्यातिप्राप्त ने इसे स्वीकार किया। अत्यंत निर्मल मन से, बुद्ध को वह फल अर्पित करके, जो मेरे लिए आनंददायी था, इस संसार में सुख लेकर आया।
तब मुझे अपार आनंद और असीम, परम प्रसन्नता का अनुभव हुआ।
सचमुच एक अनमोल रत्न का निर्माण हुआ था।
[मैं,] यहाँ-वहाँ पुनर्जन्म लेता रहता हूँ।4755 (2-3) [4896-4898]4756

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय [बुद्ध को] फल दिए थे, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (4) [4899]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [4900]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4901]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4902]

इस प्रकार पूज्य लाबुजादायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

लबुजदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

465. {468.}4757 पिलक्खफलदायका4758

जंगल में बुद्ध को देखना,4759
अत्थादस्सी, महान प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति,

4755 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4756 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4757 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4758 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4759 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या खमीर रहित भोजन के रूप में।

प्रसन्न, मेरे हृदय में आनंद से भरा हुआ।
मैंने उसे लहरदार पत्तों वाला अंजीर 4760 फल दिया। (1) [4903]

बुद्ध को फल देने के बाद से अठारह सौ युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है:
फल देने का फल यही है। (2) [4904]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4905]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4906]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4907]

इस प्रकार पूज्य पिलक्खफलदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पिलाक्खफलदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

466. {469.}4761 सयंपतिभाणिय4762

"देवताओं के परमेश्वर, मनुष्यों के सांड को भोजन की थाली जैसे चमकते वृक्ष के समान देखकर कौन प्रसन्न नहीं होगा?"
[जब वह] सड़क पर जा रहा है? (1) [4908]

इसे देखकर कौन खुश नहीं होगा?
क्या वह ज्ञान का प्रकाश फैलाकर, [सभी] अंधकार को दूर भगाकर, बहुत से लोगों को पार ले जा रहा है? (2) [4909]

केक या जंकेट (PSI: Sinh. roṭiya)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई खाद्य पदार्थ है।

4760 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4761 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4762 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

विश्व के नेता को जाते देखकर कौन प्रसन्न नहीं होगा?
एक लाख स्वामियों के साथ, [और] अनेक प्राणियों को ऊपर उठाना? (3) [4910]

इसे देखकर कौन खुश नहीं होगा?
उसने शिक्षा का ढोल बजाया, जो शेर की दहाड़ की तरह गूंज रहा था।
फोर्ड-पूजा करने वालों के समूहों को कुचलना?4764 (4) [4911]

इसे देखकर कौन खुश नहीं होगा?
ब्रह्मा समेत सभी देवता
ब्रह्मा के लोक से इतनी दूर आकर [बुद्ध] से सूक्ष्म प्रश्न पूछते हैं? (5) [4912]

इसे देखकर कौन खुश नहीं होगा?
[दुनिया] अपने देवताओं के साथ उसके लिए प्रार्थना करते हुए, दोनों हाथ जोड़कर, उसके कारण पुण्य का आनंद ले रही है? (6) [4913]

सभी लोगों को एक साथ आकर 4765 को आयोजित होने वाले 'आकर्षक कार्यक्रम' में भाग लेते देख कौन प्रसन्न नहीं होगा?
आमंत्रित,4766 वह विचलित नहीं होता। (7) [4914]

असंख्य ढोलों की गर्जना और मदमस्त हाथियों की चिंघाड़ सुनकर कौन प्रसन्न नहीं होगा?
जब वह शहर में प्रवेश कर रहा है? (8) [4915]

इसे देखकर कौन खुश नहीं होगा?
सर्व-उज्ज्वल वन4767 हमेशा चमकता रहता है, [और] उभरे हुए धब्बे4768 समतल हो जाते हैं,
जब वह सड़क पर जा रहा है?4769 (9) [4916]

इसे देखकर कौन खुश नहीं होगा?
वह प्रत्येक प्राणी को निर्देश दे रहा है।

4763 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4764 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4765 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4766 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4767 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4768 lit., “गया”
4769 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

पूरे ब्रह्मांड में सुनी जा रही है,4770
जब धन्य व्यक्ति4771 बोल रहे हों?” (10) [4917]

एक लाख युगों में
जब से मैंने बुद्ध की इस प्रकार प्रशंसा की है, तब से मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
यही उसकी प्रशंसा करने का फल है। (11) [4918]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (12) [4919]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) [4920]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) [4921]

इस प्रकार पूज्य सायम्पाटिभाणिय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सायम्पाटिभाणिय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

467. {470.}4772 निमित्तव्यकारण्य4773

हिमालय में डूबा हुआ, मैं मंत्रों का जाप कर रहा हूँ, और चौवन हजार छात्र
उस स्थान पर मेरी सेवा की। (1) [4922]

उन सभी ने इसे कंठस्थ किया, 4774 सच्चे ज्ञानी, 4775

4770 lit., “गिर गया”

4771 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4772 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4773 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

4774 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4775 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

वे वैदिक विज्ञान के स्वामी थे;4776 अपनी मर्जी से आए थे,4777 वे हिमालय में निवास करते थे। (2) [4923]

एक महान ख्यातिप्राप्त ईश्वर का पुत्र, तुसिता [स्वर्ग] से गिरकर, 4778 एक माता के गर्भ में पुनर्जन्म लिया।
ध्यानपूर्वक [और] याद रखना। (3) [4924]

जब बुद्ध4779 का जन्म हो रहा था, तब दस हजार विश्व-व्यवस्था कांप उठी।
[और] जो अंधे थे उन्हें 4780 आंखें प्राप्त हुईं,4781
जब नेता का जन्म हो रहा था। (4) [4925]

यह पूरी [महान उदार]4782 पृथ्वी हर तरह से कांप उठी।4783
चिल्लाने की आवाज सुनकर,
तब जनता भयभीत हो गई थी। (5) [4926]

सभी लोग एक साथ आ गए,
और वे मेरे सामने आ गए।
“[महान उदार] धरती कांप उठी है, इसका क्या परिणाम होगा?” (6) [4927]

मैंने उनसे कहा, “डरो मत;
आपको डरने की कोई बात नहीं है। आप सभी को आत्मविश्वास रखना चाहिए;
यह शगुन खुशी का संकेत देता है। (7) [4928]

[यह महान प्रचुर] भूकंप आठ कारणों में से [एक] के साथ संपर्क4784 के माध्यम से आता है। इसी प्रकार [यह] संकेत भी [देखा जाता है]:
प्रकाश की एक विशाल चमक है। (8) [4929]

निःसंदेह सर्वश्रेष्ठ बुद्ध प्रतिमा।
एक बेहद खूबसूरत जीव का जन्म जल्द ही होगा!

4776 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4777 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4778 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4779 शाब्दिक रूप से, "गया"
4780 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4781 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4782 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4783 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4784 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

इस प्रकार लोगों को सूचित करने के बाद,
मैंने पाँच सिद्धांतों के बारे में बात की।4785 (9) [4930]

पांच उपदेशों के बारे में सुनकर,4786 और बुद्ध के जन्म के बारे में सुनकर, जो प्राप्त करना कठिन है, खुशी और उत्साह से भरपूर,4787
खुशी से उनके बाल खड़े हो गए।4788 (10) [4931]

पिछले बानवे युगों में
मैंने [उस समय] लक्षणों की व्याख्या की थी, मुझे अब तक कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही व्याख्या का फल है। (11) [4932]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (12) [4933]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) [4934]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) [4935]

इस प्रकार पूज्य निमित्तव्याकरणीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

निमित्तव्याकरणीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: सालकुसुमिया थेरा, 4789
पूजा और निब्बापक [भी], सेतुदा और तलावंती, अवना, 4790 लबुजा-प्पाडा, पिलक्खा4791 और पतिभानि, ब्राह्मण वेय्यकरनका:

4785 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4786 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
4787 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस द्वारा पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4788 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"
4789 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
4790 khiḍḍāratiyaÁ
4791 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

ठीक दो सौ छंद
यहां उनकी गिनती उन लोगों द्वारा की जाती है जो जानते हैं।

सालकुसुमिया अध्याय, सैंतालीसवाँ

नलमाली अध्याय, अड़तालीसवाँ

---

468. {471.}4792 नामामालिया4793

मैंने विश्व के नेता को देखा,
स्वर्ण रंग का संबुद्ध, बलि का पात्र,
जंगल के शीर्ष के साथ उड़ना 4794। (1) [4936]

एक सरकंडे का फूल लेकर,4795
मैं हर समय यात्रा पर निकलता रहता हूँ।
वहाँ मैंने संबुद्ध को देखा।
बाढ़ पार करने वाला, निष्कलंक। (2) [4937]

प्रसन्नता से, अपने हृदय में आनंद लिए, मैंने वह सरकंडे का फूल भेंट किया।
महान नायक, उपहारों के योग्य, 4797
संपूर्ण विश्व का दयावान.4798 (3) [4938]

पिछले इकत्तीस युगों में

मैंने उसे वह फूल भेंट किया।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [4939]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [4940]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4792 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4793 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4794 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4795 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4796 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4797 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4798 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [4941]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [4942]

इस प्रकार पूज्य नलमालिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नलमालिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

469. {472.}4799 मणिपूजक4800

विजेता पद्ममुत्तरा सर्वज्ञ, एकांतप्रिय और संबुद्ध थे।

वह आकाश में उड़ रहा था [उस समय]। (1) [4943]

हिमालयी क्षेत्र में,
वहाँ एक बड़ी प्राकृतिक झील थी। मेरा महल वहीं स्थित था।
मेरे अच्छे कर्मों से जुड़ा हुआ। (2) [4944]

महल से बाहर निकलने पर मैंने विश्व के नेता को देखा, जो नीले जल लिली की तरह चमक रहा था।4803
अग्नि-वेदी की तरह धधक रहा है। (3) [4945]

[सोचते हुए,] "मैं नेता की पूजा करूँगा," [हालाँकि] मैंने खोजा, मुझे कोई फूल नहीं दिखा।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4799 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4800 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4801 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4802 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4803 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4804 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4805 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

मेरे स्वयं के हृदय को आनंद प्रदान करते हुए,
मैंने तब गुरु की पूजा की। (4) [4946]

मेरे सिर पर जो रत्न था,4806
मैंने विश्व नेता, उनकी पूजा की: "शुभकामना हो कि परिणाम अच्छा हो।"
इस भेंट का 4808 एक रत्न का।" (5) [4947]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
शिक्षक, आकाश में खड़े हैं,
तब मेरे बारे में यह आयत कही गई: (6) [4948]

"अपने विचार का अच्छा परिणाम आने दो; तुम्हें अपार सुख प्राप्त हो। इस अनमोल रत्न को अर्पित करने के कारण..."
आपको महान प्रसिद्धि का अनुभव करने दें। (7) [4949]

यह सब कहने के बाद, भगवान,
जिसका नाम "सर्वश्रेष्ठ कमल" था।
तब सर्वश्रेष्ठ बुद्ध उड़ गए,4810
जहां [उसका] मन उसे निर्देशित करता था। (8) [4950]

हे देवताओं के स्वामी, मैंने साठ युगों तक दिव्य शासन किया।
और सौ बार और मैं
वह एक सम्राट था जो पहिया घुमाता था। (9) [4951]

जब मैं अपने पूर्व कर्मों को याद रखने वाला देवता बन गया, तब मुझे एक रत्न प्राप्त हुआ।
[जो मेरे प्रकाश के स्रोत के रूप में कार्य करता था] 4811 (10) [4952]

उस समय छियासी हजार स्त्रियाँ मुझसे पत्नियाँ बनकर विवाहित हुईं, उन्हें विभिन्न प्रकार के वस्त्र और आभूषण पहनाए गए।
और रत्नों से बनी बालियां पहने हुए,

4806 लिट., “गया”
4807 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4808 lit., “गिर गया”
4809 लिट., “योग्य”
4810 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4811 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में gendu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

लंबी पलकों, प्यारी मुस्कान4812 और पतली कमर के साथ, देखने में मनमोहक।4813 [वे] लगातार मेरी प्रतीक्षा कर रही हैं:
रत्नों की भेंट चढ़ाने का यही फल है। (11-12) [4953-4954]

खुद को सजाने के लिए अच्छी तरह से बनाई गई 4814 चीजें
वे मेरी इच्छा के अनुसार मेरे पास आ रहे हैं।
सोने और रत्नों से बना हुआ,
[और] इसी प्रकार माणिक से बनाया गया। (13) [4955]

मनमोहक छज्जेदार झोपड़ियाँ और गुफाएँ, और बेहद महंगे बिस्तर, यह समझते हुए कि मैं क्या सोच रहा हूँ,
इच्छा के अनुसार उत्पादित होते हैं। (14) [4956]

जो लोग बुद्ध के प्रवचन सुनने का अवसर पाते हैं, उन्हें इससे भरपूर लाभ मिलता है।
मानव जाति के लिए पुण्य क्षेत्र,
सभी सांस लेने वालों के लिए औषधि। (15) [4957]

मेरा कर्म भी इतना अच्छा रहा कि मुझे नेता के दर्शन हुए।
मैं सभी कष्टों से मुक्त हूँ;4815
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (16) [4958]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ, चारों ओर सात रत्न विद्यमान रहेंगे;
मेरे लिए हर समय प्रकाश रहता है। (17) [4959]

उस अनमोल भेंट के कारण,4816
सौभाग्य का आनंद लेते हुए,4817
मुझे ज्ञान का प्रकाश दिखाई देता है;
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (18) [4960]

जब से मैंने वह रत्न [उसे] भेंट किया है, तब से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
यह रत्नों की भेंट का फल है।4819 (19) [4961]

4812 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4813 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
4814 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4815 लिट., "एक फूल पर"
4816 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
4817 khiḍḍāratiyaÁ
4818 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
4819 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (20) [4962]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (21) [4963]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (22) [4964]

इस प्रकार पूज्य मणिपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मणिपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

470. {473.}4820 उक्कासाटिका4821

कोसिका नामक धन्य पुरुष, ध्यानमग्न, समाधि-प्रेमी, बुद्ध, एकांतप्रिय, ऋषि।
उस समय Cittakṭa4822 पर रहते थे। (1) [4965]

महिलाओं की टुकड़ियों के साथ हिमालय में छलांग लगाई।
मैंने [उन्हें] देखा, कोसिका बुद्ध।
पंद्रहवें दिन चंद्रमा की तरह.4824 (2) [4966]

सौ जलती हुई मशालों के साथ,
मैंने उस समय उनकी सेवा की।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4820 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4821 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4822 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4823 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4824 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4825 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4826 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

शेष सात रातें और दिन,
आठवें दिन मैं चला गया।4827 (3) [4967]

स्वयंभू, अजेय कोसिका बुद्ध की पूजा करने के बाद प्रसन्न हृदय से वे उठे।
मैंने उसे एक बार भोजन भी दिया। (4) [4968]

विश्व के सर्वश्रेष्ठ, दो पैरों वाले स्वामी, पुरुषों के बैल के लिए उस कर्म के माध्यम से,
तुसिता:4828 में मेरा पुनर्जन्म हुआ।
वह उस एक भोजन का फल है। (5) [4969]

दिन के दौरान और साथ ही
रात में, मेरे लिए हमेशा रोशनी रहती है;
चारों ओर सौ मील तक,
मैं प्रकाश से परिपूर्ण हूँ। (6) [4970]

इसके बाद पचपनवें युग में
मैं पहिया घुमाने वाला राजा था, गुलाब-सेब के बाग का स्वामी, 4829 चारों तरफ से विजयी। 4830 (7) [4971]

उस समय मेरा शहर समृद्ध, खुशहाल और सुव्यवस्थित था।
इसकी लंबाई तीस लीग थी।
और [यह] बीस लीग चौड़ा था। (8) [4972]

मेरे शहर का नाम शोभना रखा गया था;4831
इसका निर्माण विस्साकम्मा ने करवाया था।
इसमें दस ध्वनियों की कमी नहीं थी,4832
झांझों के साथ अच्छी तरह से संगत।4833 (9) [4973]

उस शहर में कुछ भी 4834 लकड़ियों या लताओं या मिट्टी से नहीं बना था।

4827 lit., "गया"
4828 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4829 lit., "गिर गया"
4830 लिट., "योग्य"
4831 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4832 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
4833 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4834 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

सब कुछ सोने का बना हुआ था।
[और] यह हर समय चमक रहा था। (10) [4974]

इसके चारों ओर चार प्राचीर दीवारें थीं; वे रत्नों से निर्मित थीं। बीच में एक ताड़ का पेड़ था।
पॉन्ड 4835 विस्साकम्मा द्वारा बनाया गया था। (11) [4975]

वहाँ दस हजार तालाब भी थे, जो गुलाबी और नीले कमलों से ढके हुए थे।
सफेद कमलों से ढका हुआ [भी],

[सभी] विभिन्न सुगंधों का उत्सर्जन करते हुए। (12) [4976]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उसके लिए वो मशालें उठाईं4836, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
मशालें ले जाने का फल। (13) [4977]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (14) [4978]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) [4979]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (16) [4980]

इस प्रकार पूज्य उक्कासतिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उक्कासटिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

4835 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4836 लिट., "एक फूल पर"

---

471. {474.}4837 सुमनविजनिया4838

मैंने चमेली से ढके पंखे से बोधि को हवा दी।
उत्कृष्ट बोधि4840 के चरण
विपस्सी, भगवान का। (1) [4981]

ग्यारह युगों में
मैंने उस शानदार बोधि वृक्ष को हवा दी, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
वह फूँकने का फल है। (2) [4982]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4983]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4984]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4985]

इस प्रकार पूज्य सुमनवीजनीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुमनविजनीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4837 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4838 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4839 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4840 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

472. {475.}4841 कुम्मासदायका4842

जब महान ऋषि विपस्सी अपनी इच्छा अनुसार घूम रहे थे, तब उन्होंने देखा कि उनका कटोरा खाली है।
मैंने इसे जौ के दलिया से भर दिया।4843 (1) [4986]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय दान में भोजन दिया था, मुझे कभी कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला:
यह जौ के दलिया का फल है। (2) [4987]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4988]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4989]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4990]

इस प्रकार पूज्य कुम्मासादायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कुम्मासादायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4841 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4842 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

4843 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

473. {476.}4844 कुशत्थकदायक4845

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।
मैंने दान के लिए आठ टिकट दिए (4846)
हे भगवान कस्सपा को,
ब्राह्मण, सिद्ध पुरुष.4847 (1) [4991]

वर्तमान युग के भीतर, तब से
मैंने तब उन आठ लोगों को रोजी-रोटी दी थी, और तब से मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
यह आठ भोजन-भुगतानों का फल है। (2) [4992]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4993]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4994]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [4995]

इस प्रकार पूज्य कुसत्तकदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कुसट्टकडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4844 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4845 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4846 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4847 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

474. {477.}4848 गिरिपुन्नगिया4849

उस समय चित्तकूट 4850 में शोभिता नामक भगवान निवास करते थे।
कुछ माउंटेन लॉरेल4851 [फल] लेते हुए,
मैंने स्वयं-एक हो जाने की पूजा की। (1) [4996]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने [उस समय] बुद्ध की पूजा की थी, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई ज्ञान नहीं है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (2) [4997]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [4998]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [4999]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5000]

इस प्रकार पूज्य गिरिपुन्नागीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

गिरिपुन्नागिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4848 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4849 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4850 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4851 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4852 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4853 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

---

475. {478.}4854 वल्लिकाराफलदायका4855

उस समय तक्कारा 4856 में सुमना नामक सम्बुद्ध निवास करते थे। कुछ वल्लिकार 4857 फल लेकर,
मैंने इसे स्वयं-निर्माण को दे दिया। (1) [5001]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह फल दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (2) [5002]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [5003]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [5004]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5005]

इस प्रकार पूज्य वल्लिकारफलदायक4858 थेरा ने ये श्लोक कहे।

वल्लिकारफलदायक4859 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4854 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4855 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4856 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4857 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4858 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4859 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

---

476. {479.}4860 पणधिदायक4861

अनोमादस्सी, हे भगवान!
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, पुरुषों का सांड, दोपहर के आराम के समय बाहर चला गया।
सड़क पर आ गया, आँखों से भरा हुआ। (1) [5006]

मैंने अच्छे से बने जूते पहने और सड़क पर चल पड़ा।
वहाँ मैंने संबुद्ध को देखा।
कटोरा ले जाना,4862 सुंदर.4863 (2) [5007]

अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए, मैंने अपने उन जूतों को निकालकर बुद्ध के चरणों में रख दिया।
मैंने ये शब्द [उस समय उससे] कहे थे: (3) [5008]

"हे महान ऋषि, हे सफल व्यक्ति, हे प्रभु, हे मार्गदर्शक, इन जूतों को पहन लो।"
मुझे इससे फल प्राप्त होगा;
मेरे उद्देश्य को सफल होने दो!" (4) [5009]

अनोमादस्सी, हे भगवान!
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, पुरुषों का बैल, उन जूतों को पहनने के बाद,
उन्होंने [मेरे बारे में उस समय] ये शब्द कहे: (5) [5010]

"जिस व्यक्ति ने मुझे ये जूते दिए, अपने हाथों से इन्हें पाकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ, मैं उसके बारे में विस्तार से बताऊंगा;

आप सब मेरी बात सुनो:” (6) [5011]

यह जानकर कि बुद्ध बोलेंगे,4866 सभी देवता वहाँ एकत्रित हो गए।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4860 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4861 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
4862 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4863 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4864 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4865 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4866 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

प्रसन्न, भावनाओं से ओतप्रोत,
रोमांचित होकर, उन्होंने अपने हाथ जोड़ लिए। (7) [5012]

“जूतों की इस भेंट के कारण, यह व्यक्ति खुश होने वाला है, और पचपन बार अलग-अलग तरीके से खुश होगा।”
वह दैवीय शासन का प्रयोग करेगा। (8) [5013]

वह हजार बार राजा बनेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है, [और वहाँ] बहुत स्थानीय शासन होगा, गिनती में अनगिनत। (9) [5014]

अब से अनगिनत युगों बाद, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (10) [5015]

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, समस्त दोषों का भली-भांति ज्ञाता,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग। (11) [5016]

पुण्य से परिपूर्ण होकर, वह देवताओं या मनुष्यों के लोक में पुनर्जन्म लेगा; उसे वाहन प्राप्त होंगे, जो
दिव्य वाहनों से मिलते-जुलते हैं।" (12) [5017]

मेरे महल और पालकी, सजे-धजे हाथी और
रथों को उत्तम नस्ल के घोड़ों से जोता गया

वे हमेशा मेरे लिए प्रकट होते हैं। (13) [5018]

जब मैं घर से निकलता हूँ, तो मैं रथ पर निकलता हूँ।
जब मेरे बाल काटे जा रहे थे,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (14) [5019]

मुझे इससे काफी लाभ हुआ, क्योंकि मैंने [ध्यानपूर्वक] व्यापारियों को नियुक्त किया, [फिर] उन्हें [केवल] एक जोड़ी जूते दिए।
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (15) [5020]

अनगिनत युगों के दौरान
जब से मैंने [उस समय] वे जूते दिए हैं, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
यह जूतों की एक जोड़ी का फल है। (16) [5021]

4867 lit., “गया”

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (17) [5022]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (18) [5023]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (19) [5024]

इस प्रकार पूज्य पाणधिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पानधिडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

477. {480.}4868 पुलिनाकाकमिया4869

अतीत में, एक वन उपवन में,
मैं हिरण का शिकार करने वाला व्यक्ति था। एक हिरण की तलाश में ,4870
मैंने [वहाँ] बुद्ध का मार्ग देखा। (1) [5025]

दिल में खुशी लिए, अपनी गोद की जेब में रेत लिए हुए, मैं प्रसन्न था।
मैंने इसे फुटपाथ पर छिड़क दिया

अच्छी तरह से चले गए एक, शानदार एक.4871 (2) [5026]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय वह रेत छिड़की थी, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
रेत देने का फल यही है। (3) [5027]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4868 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4869 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4870 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4871 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5028]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5029]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5030]

इस प्रकार पूज्य पुलिनाचंकमिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पुलिनाचंकमिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: नाममाली, मनिददा,
उक्कासतिका, विजानी,
कुम्मासा और कुसौथा [भी], गिरिपुन्नगिया, वल्लिकारा,4872 पनाधिदा भी
[और] फिर पुलिनाचंकमा:
ये पच्चीस आयतें हैं।
जिनकी गिनती जानकार लोग करते हैं।

नलमाली अध्याय, अड़तालीसवाँ

पांसुकुला अध्याय, उनतालीसवाँ

---

478. {481.}4873 पौंशुकुलासनिका4874

तिस्सा नामक धन्य पुरुष थे
स्वयं को एक बनाओ, सर्वोपरि मनुष्य।4875

4872 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4873 अपदाना नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4874 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4875 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या जंकेट (पीएसआई: सिंह. रोटीया) के रूप में। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

अपने चिथड़े-चिट्टे वस्त्र को पीछे छोड़ते हुए,
विजेता ने अपने निवास में प्रवेश किया।4876 (1) [5031]

मैंने अपना धनुष उठाया जो फैला हुआ था,4877
भोजन की तलाश में भटकना,4878
साथ4879 एक गोलाकार तलवार4880 [भी,]
मैं [तब] उपवन में प्रवेश कर गया। (2) [5032]

वहाँ मैंने [बुद्ध का] फटे-पुराने वस्त्र को एक पेड़ की चोटी पर लटका हुआ देखा।4881
वहीं पर धनुष फेंकते हुए,
मैंने अपने हाथों को अपने सिर पर दबाया, (3) [5033]

मुझे बहुत खुशी है, मेरे दिल में प्रसन्नता है, और अपार आनंद है, सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को याद करते हुए।
मैंने तब [उसके] चिथड़े-चिथड़े वस्त्र की पूजा की थी। उसके बाद के बानवे युगों में
मैंने उस फटे-पुराने वस्त्र की पूजा की थी [उस समय], मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यही उपासना का फल है। (4) [5034-5035]4882

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [5036]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5037]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [5038]

इस प्रकार पूज्य पांशुकुलसंनिक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

संभवतः, और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी प्रकार का जौ से बना भोजन है।

4876 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
4877 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4878 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4879 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4880 lit., “गया”
4881 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4882 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

पांसुकुलासंनिक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

479. {482.}4883 बुद्धसञ्ञक4884

[पढ़ने में] अंक4885 और इतिहास,4886
ग्लॉसेस4887 [और] अनुष्ठानिक कानून के साथ,
मैं विद्वान था, मंत्रों का ज्ञाता था,4888
तीनों वेदों के स्वामी। (1) [5039]

तब कई छात्र मेरे पास आए, मानो नदी की धारा बह रही हो।
मैं उन्हें मंत्र सिखा रहा हूँ।
दिन-रात, मैं आलसी नहीं हूँ। (2) [5040]

उस समय सिद्धार्थ नामक सम्बुद्ध का संसार में उदय हुआ। उन्होंने अंधकार को दूर भगाया।
उन्होंने ज्ञान का प्रकाश प्रदर्शित किया। (3) [5041]

मेरे छात्रों में से एक

मैंने अपने 4889 [अन्य] छात्रों से बातचीत की;
उस तथ्य को सुनकर [जिस पर उन्होंने चर्चा की],
फिर उन्होंने मुझे [यह तथ्य] बताया: (4) [5042]

"दुनिया में एक बुद्ध का उदय हुआ है,
सर्वज्ञानी, विश्व नेता।
लोग उनकी ओर रुख कर रहे हैं;
हमें कुछ भी नहीं मिलने वाला है।"4890 (5) [5043]

"बुद्ध स्वतः ही जन्म लेते हैं,4891
वे आकर्षक व्यक्तित्व वाले, बेहद प्रसिद्ध व्यक्तित्व वाले।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4883 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4884 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4885 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4886 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
4887 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
4888 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4889 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4890 लिट., "गया"
4891 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

तो फिर मैं भी जाकर क्यों न देख लूँ?
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, विश्व-नेता?"4892 (6) [5044]

मेरी हिरण की चमड़ी ले जाने के बाद,
[मेरे] छाल के वस्त्र, [और] पानी का घड़ा,4893
अपने आश्रम से प्रस्थान करते हुए,
मैंने अपने छात्रों को इस प्रकार सलाह दी: (7) [5045]

"एक घने अंजीर के पेड़ के खिलने की तरह,4894
[और] चंद्रमा में खरगोश की तरह,4895

[और] कौवों के [मां के] दूध की तरह,4896
विश्व नेता को पाना कठिन है। (8) [5046]

संसार में एक बुद्ध का उदय हुआ है! मनुष्य का जन्म भी मुश्किल से मिलता है, और श्रवण शक्ति तो और भी कठिन है।
जब दोनों एक साथ घटित होते हैं। (9) [5047]

संसार में एक बुद्ध का उदय हुआ है!
हम उन्हें अपने जीवन में देखेंगे।4898
चलो, अब हम सब अंदर चलते हैं
सम्मासंबुद्ध की उपस्थिति।" (10) [5048]

वे सभी पानी के बर्तन पकड़े हुए थे।
और उन्होंने खुरदरी छाल और हिरण की खाल से बने वस्त्र पहने थे।
वे,4899 उलझे हुए बालों का भार वहन करते हुए,4900
फिर जंगल से चले गए। (11) [5049]

बस हल की लंबाई जितनी दूरी आगे देखते हुए,4901
परम अर्थ की खोज में, नन्हे हाथियों की तरह आते हुए,
वे निडर थे, शेरों की तरह। (12) [5050]

4892 लिट., "गिर गया"
4893 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4894 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए लैटिन शब्द "हजार" और "सौ" के संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4895 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
4896 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
4897 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
4898 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
4899 लिट., "एक फूल पर"
4900 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
4901 khiḍḍāratiyaÁ

चिंताओं से मुक्त और अडिग, 4902 चतुर और शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए, 4903
वे सर्वश्रेष्ठ बुद्धों के पास पहुँचे। (13) [5051]

जब डेढ़ मील शेष रह गया था, तब मुझे बीमारी हो गई। सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को याद करते हुए,
मैं वहीं मर गया। (14) [5052]

पिछले चौरानवे युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्मों के बारे में कुछ नहीं जाना है:
बुद्धों को समझने का फल। (15) [5053]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (16) [5054]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (17) [5055]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (18) [5056]

इस प्रकार पूज्य बुद्धसंञ्चक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बुद्धसंञ्चक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

480. {483.}4905 भिसादायक4906

मैं हाथियों से भरे एक तालाब में डुबकी लगाकर वहां से कमल की जड़ उखाड़ रहा हूँ।
क्योंकि [वे ही हैं] जो मैं तब खा रहा हूँ। (1) [5057]

4902 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

4903 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"

4904 नवा , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4905 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4906 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

उस काल में बुद्ध 4907 का नाम पद्ममुत्तरा था।
लाल रंग से रंगे वस्त्र पहने हुए, 4908 बुद्ध

वह आकाश में यात्रा कर रहा है [वहाँ], चिथड़ों से बने अपने वस्त्रों को हिला रहा है।
फिर मैंने [उसके वस्त्रों की] आवाज सुनी, [और] ऊपर [आकाश की ओर] देखते हुए,
मैंने विश्व के नेता को देखा। (2-3) [5058-5059]

वहीं पर रहते हुए, मैंने विश्व नेता को आमंत्रित किया: "जड़ों से शहद बह रहा है"
[और] दूध [और] तेल4911 तनों से बहता है;
हे दृष्टिभ्रमित बुद्ध, कृपा करके मुझसे कुछ स्वीकार करें।
फिर दयालु शिक्षक,
महान प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति अवतरित हुए। (4-5ए-बी) [5060-5061]4912

उस सुंदर नेत्र ने दया भाव से मेरा भिक्षापात्र स्वीकार कर लिया। उसे स्वीकार करते हुए, संबुद्ध ने
उन्होंने मुझे इस प्रकार धन्यवाद व्यक्त किया: (5सी-डी, 6ए-बी) [5062]

हे पुण्यवान, प्रसन्न रहो;
आपका पुनर्जन्म संपन्न हो। कमल की जड़ के इस उपहार के कारण,
आपको अपार सुख प्राप्त हो। (6सी-एफ) [5063]

हालांकि, संबुद्ध,
जिसका नाम "सर्वश्रेष्ठ कमल" था।
संबुद्ध ने वह भोजन ग्रहण किया,
विक्टर आसमान से उड़ गया। (7) [5064]

और अधिक कमल की जड़ लेकर मैं अपने आश्रम लौट आया। उस जड़ को एक पेड़ पर लटकाकर,

---

4907 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4908 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

4909 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4910 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4911 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

4912 शाब्दिक रूप से, "गया"

4913 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

मुझे अपनी भेंट याद आ गई। (8) [5065]

फिर एक भीषण आंधी चली:

इसने जंगल को हिला दिया।
वह स्थान शोर से भर गया था।
वहाँ बिजली की कड़क फूट रही है। (9) [5066]

फिर आसमान से बिजली गिरी और सीधे मेरे सिर पर जा लगी। इसी वजह से मैं बैठ गया।
मैं वहीं मर गया। (10) [5067]

[तब] मेरे अच्छे कर्मों से बंधे होने के कारण, मेरा तुसिता में पुनर्जन्म हुआ।
जब मेरा शरीर गिर पड़ा,
मुझे देवताओं की दुनिया में आनंद आया। (11) [5068]

तब छियासी हजार स्त्रियाँ [सुंदर वस्त्रों और आभूषणों से सजी हुई] शाम और सुबह मेरी सेवा करती थीं:
कमल की जड़ देने का फल। (12) [5069]

मानव गर्भ में आने के बाद, मैं हर समय खुश रहती हूँ।
मेरे पास संपत्ति की कोई कमी नहीं है:
कमल की जड़ देने का फल। (13) [5070]

फिर, हे देवताओं के परमेश्वर, तटस्थ परमेश्वर द्वारा दया किए जाने पर, समस्त दोष दूर हो जाते हैं;
अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (14) [5071]

एक लाख युगों में
जब से मैंने उस समय भिक्षा में भोजन दिया है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
कमल की जड़ देने का फल। (15) [5072]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (16) [5073]

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में होना

4914 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4915 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
4916 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]।"

यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (17) [5074]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (18) [5075]

इस प्रकार पूज्य भीषदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

भीषदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

481. {484.}4917 Ñāṇatthavika4918

मेरा सुव्यवस्थित आश्रम [वहाँ] था।
दक्षिणी हिमालय में। जीवन के परम अर्थ की खोज में।
मैं तब जंगल में रह रहा हूँ। (1) [5076]

जड़ों और फलों से संतुष्ट, चाहे मुझे वे मिलें या न मिलें, एक उचित शिक्षक की तलाश में,4919
मैं [उस समय] अकेला रह रहा हूँ। (2) [5077]

उस समय सुमेधा नामक सम्बुद्ध का संसार में उदय हुआ।
चार आर्य सत्यों का उपदेश देते हुए;
उसने कई लोगों को पार कराया। (3) [5078]

मैंने बुद्ध के बारे में नहीं सुना था, और किसी ने मुझे उनके बारे में बताया भी नहीं था। जब आठवां वर्ष बीत गया, तब मैंने
विश्व के नेता के बारे में सुना। (4) [5079]

आग जलाने के लिए लकड़ी लाने के बाद, कुटिया की सफाई करने के बाद,

---

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4917 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4918 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
4919 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
4920 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

मेरे कंधे का बोझ उठा लेने के बाद,4921
मैं तब जंगल से निकल पड़ा। (5) [5080]

गांवों और कस्बों में एक रात रुकते हुए, धीरे-धीरे मैं आगे बढ़ा।
[शहर का नाम] चंदावती.4923 (6) [5081]

उस काल में बुद्ध 4924
सुमेधा, विश्व-नेता थे। अमरता की अवस्था का उपदेश देते हुए, वे अनेक प्राणियों का उत्थान कर रहे हैं। (7) [5082]

लोगों की भीड़ को पार करते हुए, ईश्वर की आराधना करते हुए,4925 एक कंधे पर हिरण की खाल रखते हुए
मैंने विश्व के नेता की प्रशंसा की: (8) [5083]

"तुम ही सांस लेने वालों के गुरु हो, तुम ही ध्वज, झंडा और स्तंभ हो;
तुम ही लक्ष्य हो, तुम ही आधार हो।
द्वीप,4926 द्विपादों में सर्वश्रेष्ठ। (9) [5084]

इक्कीसवाँ पाठ भाग
दर्शन में तेज, 4927 हीरो, आप लोगों को पार ले जाते हैं।
दुनिया में इसके जैसा कोई दूसरा सितारा नहीं है
वह [आपसे] ऊँचा है, हे ऋषि। (10) [5085]

इसे मापना संभव है
समुद्र4928 घास के एक तिनके के साथ,4929
लेकिन इसे कभी मापा नहीं जा सकता था
हे सर्वज्ञ, आपका ज्ञान। (11) [5086]

पृथ्वी को एक तुलनीय गोले पर उठाना संभव है।

4921 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4922 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

4923 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

4924 शाब्दिक रूप से, "गया"

4925 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

4926 लिट., "गिर गया"

4927 शाब्दिक रूप से, "योग्य"

4928 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

4929 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

लेकिन इसे कभी मापा नहीं जा सकता था
हे सर्वज्ञ, आपकी बुद्धिमत्ता। (12) [5087]

किसी रस्सी से या इंच-इंच में सभी स्थान को मापना संभव है, लेकिन कभी भी किसी को मापना संभव नहीं है।
हे सर्वज्ञ, आपका अच्छा आचरण। (13) [5088]

विशाल महासागर का जल,
और इस उपजाऊ धरती का स्थान,
ये दोनों ही चीजें मापी जा सकती हैं;
तुम अतुलनीय हो, आँखों से परिपूर्ण।" (14) [5089]

उन छह श्लोकों में परम प्रसिद्ध, सर्वज्ञ ईश्वर की स्तुति करने के बाद, दोनों हाथों को जोड़कर,
फिर मैं वहाँ चुपचाप बैठा रहा। (15) [5090]

जिसे वे "सुमेधा" कहते हैं,4930
बहुत बुद्धिमान4931 [और] समझदार,4932
भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए,
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (16) [5091]

"जिसने मेरे ज्ञान की प्रशंसा की है, अपने हाथों से प्रसन्न होकर, मैं उसके बारे में विस्तार से बताऊंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: (17) [5092]

सतहत्तर युगों तक
वह देवताओं की दुनिया में आनंदित होगा।
हजार बार देवताओं के स्वामी,
वह दैवीय शासन का प्रयोग करेगा। (18) [5093]

इसके अलावा, सौ बार अलग-अलग, वह एक ऐसा राजा होगा जो पहिया घुमाएगा। [और] बहुत स्थानीय शासन होगा, गिनती में अनगिनत। (19) [5094]

चाहे जन्म से मनुष्य हो या दिव्य, अच्छे कर्मों से युक्त हो, और विचारों से रहित इरादे रखता हो,
वह तीक्ष्ण बुद्धि वाला होगा। (20) [5095]

4930 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

4931 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

4932 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस द्वारा पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

4933 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"

तीस हजार युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (21) [5096]

घर से निकलकर वह खाली हाथ बाहर जाएगा। उसकी उम्र केवल सात साल है।
वह 4934 अरहंत पद प्राप्त करेगा।" (22) [5097]

जहां तक मुझे याद है, 4935
जब से मैंने विवेक प्राप्त किया है,4936
अंतराल 4937 में मुझे नहीं पता
कोई भी विचार जो सुखद नहीं है। (23) [5098]

प्रत्येक जन्म में पुनर्जन्म लेते हुए, मुझे सौभाग्य प्राप्त होता है।
मेरे पास संपत्ति की कोई कमी नहीं है:
ज्ञान की प्रशंसा करने का फल यही है। (24) [5099]

मेरे भीतर की तीनों आग बुझ गई हैं; समस्त [नया] अस्तित्व नष्ट हो गया है; समस्त अशुद्धियों को भली-भांति जानते हुए,
मैं अब पवित्र निवास कर रहा हूँ। (25) [5100]

तीस हजार युगों में
क्योंकि मैंने बुद्ध के ज्ञान की प्रशंसा की है, इसलिए मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का सामना नहीं करना पड़ा है।
ज्ञान की प्रशंसा करने का फल यही है। (26) [5101]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (27) [5102]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) [5103]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

4934 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

4935 khiḍḍāratiyaÁ

4936 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

4937 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"

4938 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (29) [5104]

इस प्रकार पूज्य ञाणत्थविका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

ञाणत्थविका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

482. {485.}4939 कैंडनामालिया4940

पांचों इंद्रिय सुखों का त्याग करना, जो प्रिय और आनंददायक हैं; आठ सौ मिलियन का त्याग करना,
मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (1) [5105]

आगे बढ़ने के बाद मैंने हार मान ली।
शरीर के साथ बुरे कर्म4942 [किया गया]। शब्दों के माध्यम से बुरे आचरण को त्यागकर, मैं नदी के किनारे निवास करता था। (2) [5106]

[तब] सर्वश्रेष्ठ बुद्ध मेरे पास आए, जो उस नदी के पास अकेले रहते थे।4943
मुझे नहीं पता था कि "वह बुद्ध हैं;"
मैंने [उसका] सौहार्दपूर्ण स्वागत किया।4944 (3) [5107]

उन्हें वह मैत्रीपूर्ण स्वागत देते हुए,
तब मैंने उससे उसका नाम और गोत्र पूछा: "क्या तुम देवता हो, संगीत की अप्सरा हो?"
या4945 [यहाँ तक कि] उदार इंद्र? (4) [5108]

अन्यथा तुम कौन हो? किसके पुत्र हो?
[जैसे] स्वयं भगवान4946 यहाँ आए हों [अभी], आप सभी दिशाओं में चमक रहे हैं,
जैसे सूरज उग रहा हो। (5) [5109]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4939 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4940 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4941 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4942 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4943 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4944 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
4945 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
4946 शाब्दिक रूप से, "गया"

हे सौभाग्यशाली! तुम्हारे पैर पर हजार तीलियों वाले पहियों के निशान दिखाई दे रहे हैं।
तो आप कौन हैं? किसके पुत्र हैं? फिर हम यह कैसे जान सकते हैं? कृपया अपना नाम और अपने कुल का उल्लेख करें;
कृपया मेरे संदेह दूर कर दीजिए!” (6) [5110]4948

मैं न तो देवता हूँ, न संगीत की अप्सरा, और न ही उदार इंद्र।
और मेरा ईश्वर के रूप में कोई अस्तित्व नहीं है:
मैं उनसे श्रेष्ठ हूँ। (7) [5111]

अतीत में मैं बिखर गया था
उनका दायरा, इंद्रिय सुखों की जंजीरें;4949
सभी अशुद्धियों को नष्ट करके,
सर्वश्रेष्ठ जागृति प्राप्त हुई.4950 (8) [5112]

उनकी ये बातें सुनकर,
मैंने उस समय उनसे ये शब्द कहे थे: “यदि आप बुद्ध हैं, हे महान ऋषि,
कृपया यहाँ बैठ जाइए, सर्वज्ञानी। मैं आपकी पूजा करने जा रहा हूँ।
आप दुखों के अंतकर्ता हैं। (9) [5113]4952

मैंने अपनी हिरण की खाल से बनी वस्तु को फैलाकर [तब] शिक्षक को दे दिया।
भगवान बुद्ध वहाँ बैठ गए
एक शेर पहाड़ी गुफा में। (10) [5114]

तेजी से पहाड़ पर चढ़ते हुए,
मैंने आम के पेड़ का फल, एक सुंदर साल का फूल और
[कुछ] बहुत ही कीमती चंदन। (11) [5115]

मैंने जल्दी से वह सब लेकर विश्व नेता के पास जाकर बुद्ध को फल भेंट किए।
मैंने उसे वह साल का फूल भेंट किया। (12) [5116]

4947 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
4948 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
4949 शाब्दिक रूप से, "योग्य"
4950 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
4951 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप

भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

4952 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

चंदन से अभिषेक करना,4953
तब मैंने प्रसन्नतापूर्वक, हृदय में आनंद के साथ गुरु की उपासना की।
[और] अत्यधिक आनंद के साथ। (13) [5117]

मेरे हिरण के चमड़े के वस्त्र पर विराजमान, सुमेधा, विश्व के नेता,
तब मैंने अपने कर्मों की प्रशंसा की।
जिससे मुझे मुस्कुराने का मौका मिला4954 [उसके बारे में]: (14) [5118]

"आम के इस उपहार के कारण, और सुगंध और फूलों दोनों के कारण, पच्चीस सौ युगों से
वह देवताओं की दुनिया में आनंदित होगा।
इरादों में विचार की कमी नहीं थी,4955
वह बहुत शक्तिशाली होगा।4956 (15) [5119]4957

छब्बीस सौ युगों के लिए
वह देवताओं की दुनिया में आनंदित होगा। वह एक ऐसा राजा होगा जो पहिया घुमाएगा, चारों ओर विजयी होगा।4958 (16) [5120]

विस्साकम्मा द्वारा निर्मित वेभारा नामक नगर पूरी तरह से सोने का बना होगा।
विभिन्न रत्नों से सुशोभित। (17) [5121]

इसी विधि से वह विवेकपूर्ण ढंग से पुनर्जन्म लेगा। प्रत्येक स्थान पर सुखी रहते हुए, चाहे वह देवता हो या मनुष्य, जब उसे अपना अंतिम पुनर्जन्म प्राप्त होगा,
वह ब्राह्मण के रूप में जन्म लेगा। (18) [5122]4959

घर से निकल जाने पर वह बेघर हो जाएगा। विशेष ज्ञान में महारत हासिल करना,4960
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग।" (19) [5123]

4953 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

4954 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

4955 लिट., "एक फूल पर"

4956 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

4957 khiḍḍāratiyaÁ

4958 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

4959 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

4960 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

यह सब कहने के बाद, जब मैंने [उनका] ध्यान किया, तब मैंने उस संबुद्ध, सुमेधा, जगत के नेता का भी ध्यान किया।
[तब] आकाश में विदा हो गया। (20) [5124]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। [5125]4961

तुसिता से गिरने के बाद,
मेरा जन्म मां के गर्भ में हुआ था।
संपत्ति की कोई कमी नहीं है।
[यहाँ तक कि] जब मैं गर्भ में हूँ। (21) [5126]

माँ के गर्भ में रहते हुए भी मुझे भोजन और पेय पदार्थों का आनंद मिलता है; मेरी इच्छा के कारण ही इनका उत्पादन होता है।
मेरी माँ के लिए, जैसा वह चाहती है। (22) [5127]

जब मैं [केवल] पाँच साल का था, तब मैं बेघर हो गया था।
मैंने अरहंत पद प्राप्त कर लिया
जब मेरे बाल काटे जा रहे थे। (23) [5128]

अपने पूर्व कर्मों की खोज करते हुए, मैंने उन्हें बच्चे की तरह नहीं देखा;4962
मुझे कर्म याद आ गया
[संपूर्ण] तीस हजार युग। (24) [5129]

हे सुसंस्कृत व्यक्ति, आपकी प्रशंसा हो!4963
हे परम पुरुष, आपकी जय हो! आपके युग में आने पर,
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (25) [5130]

तीस हजार युगों में
चूंकि मैंने बुद्ध की पूजा की है, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (26) [5131]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (27) [5132]

4961 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”
4962 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
4963 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
4964 pariḷāho

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) [5133]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (29) [5134]

इस प्रकार पूज्य चंदनमालिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

चंदनमालिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

483. {486.}4965 धातुपूजक4966

जब जगत के स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया, तब जगत के नेता सिद्धार्थ ने...
अपने रिश्तेदारों को बुलाकर,
मैंने 4967 [बुद्ध के] अवशेषों की पूजा की। (1) [5135]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उन अवशेषों की पूजा की थी, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
यह अवशेष-पूजा का फल है। (2) [5136]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [5137]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [5138]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 4965 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

4966 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दश:, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4967 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4968 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5139]

इस प्रकार पूज्य धातुपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

धातुपूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

484. {487.}4969 पुणिनुप्पादक4970

हिमालय के एक पर्वत पर, मैं देवला नामक तपस्वी हूँ।
वहाँ मेरा ध्यान करने का मार्ग
गैर-मानव प्राणियों द्वारा बनाया गया था।4971 (1) [5140]

उलझे बालों का बोझ ढोते हुए, पानी का घड़ा लिए, फिर जीवन के अंतिम अर्थ की तलाश में।
मैं जंगल से चला गया। (2) [5141]

वहाँ छियासी हजार छात्र थे।
उस समय मेरी सेवा में लगे हुए थे।
अपने कार्यों सहित सुप्रसिद्ध,4972
वे जंगल में रह रहे हैं। (3) [5142]

आश्रम से बाहर निकलकर मैंने रेत से एक स्तूप बनाया। विभिन्न प्रकार के फूलों को इकट्ठा करके,
मैंने तब उस स्तूप की पूजा की। (4) [5143]

वहाँ मेरे हृदय को प्रसन्नता हुई और मैं पुनः आश्रम में प्रवेश कर गया।
मेरे सभी छात्र एक साथ आओ,
मुझसे पूछा [कि] इसका क्या मतलब है:4974 (5) [5144]

4969 अपदाना नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
4970 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

4971 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

4972 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

4973 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

4974 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

हम सभी यह जानना चाहेंगे कि आप किस देवता का सम्मान कर रहे हैं।
उस रेत से बने स्तूप पर:
पूछे जाने पर, कृपया हमें बताएं।4975 (6) [5145]

“जो देखने में सुंदर हैं, जो बहुत प्रसिद्ध हैं, उनके पास कोई दृष्टि नहीं है4976 [और] कोई जादू टोना नहीं है;4977 मैं उन्हीं का सम्मान कर रहा हूँ,
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, महान प्रसिद्धि वाले।” (7) [5146]

“वे किस प्रकार महान नायक, सर्वज्ञ, विश्व स्वामी हैं? वे कैसे दिखते हैं? उनका आचरण कैसा है?”
वे किस प्रकार से अत्यधिक प्रसिद्ध हैं?” (8) [5147]

“बुद्धों के बत्तीस महान चिह्न होते हैं, और चालीस [वयस्क] दांत भी होते हैं।4979
उनकी आंखें बछिया जैसी पलकों वाली थीं4980
जंगली मुलेठी के फलों से मिलते जुलते हैं।4981 (9) [5148]

और जब वे बुद्ध चल रहे होते हैं,4982
वे बस हल की लंबाई जितनी दूरी तक ही आगे देखते हैं।4983
उनमें किसी व्यक्ति की आवाज नहीं होती;4984
उनकी सुरीली ध्वनि4985 सुनाई नहीं देती। (10) [5149]

और जब वे सुप्रसिद्ध लोग चलते हैं, तो वे [एक-एक करके] पैर उठाते हैं,4986 [हमेशा] दाहिने पैर से शुरू करते हैं: यही बुद्धों का स्वभाव है। (11) [5150]

और वे बुद्ध भयभीत नहीं होते, ठीक वैसे ही जैसे शेर, पशुओं के राजा।

4975 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

4976 lit., “गया”

4977 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

4978 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

4979 शाब्दिक रूप से, "योग्य"

4980 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

4981 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप

भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

4982 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

4983 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

4984 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

4985 लिट., “एक फूल पर”

4986 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

वे कभी भी अपनी प्रशंसा नहीं करते और न ही जीवित प्राणियों की निंदा करते हैं। (12) [5151]

वे अहंकार और तिरस्कार से मुक्त हैं, सभी प्राणियों के प्रति उनका यही भाव है। बुद्ध केवल निस्वार्थ भाव से ही स्तुति करते हैं।
यही बुद्धों का स्वभाव है। (13) [5152]

और जब बुद्धों का जन्म होता है, तो वे अपने आप से प्रकाश विकीर्ण करते हैं।
[और] छह [अलग-अलग] तरीकों से4987 वे कारण बनते हैं
इस पूरी [समृद्ध] पृथ्वी को हिला देने के लिए। (14) [5153]

और वे नरक को देख सकते हैं, और उस समय नरक ठंडा हो जाता है।
एक विशाल बादल से भी बारिश होती है:
यही बुद्धों का स्वभाव है। (15) [5154]

ऐसे ही महान हाथी हैं, अतुलनीय,4988 महान प्रसिद्धि वाले;
सौंदर्य में वे बेजोड़ हैं,4989
इस प्रकार चले गए लोग, माप से परे।" (16) [5155]

मेरे सभी छात्र, आदरणीय,
[तब] उन्होंने मेरे भाषण के लिए धन्यवाद व्यक्त किया, और 4990 ने भी [मेरे साथ] सहमति जताई।
जहां तक वे कर सकते थे और उनके पास शक्ति थी। (17) [5156]

अपने अच्छे कर्मों की कामना करते हुए, वे उस रेत के स्तूप की पूजा कर रहे हैं। मेरे उस भाषण पर विश्वास रखते हुए,
उनका मन बुद्धत्व की ओर विचरण करने लगा। (18) [5157]

फिर ईश्वर का एक महान पुत्र तुसिता स्वर्ग से नीचे आ गिरा।
उनका जन्म मां के गर्भ में हुआ था।

दस हजार [जगत] को हिला देना। (19) [5158]

मैं उस रास्ते पर खड़ा था जो उस समय मेरे आश्रम के पास था। मेरे सभी छात्र वहाँ इकट्ठा हो गए थे,
ठीक उसी समय मेरी उपस्थिति में आया। (20) [5159]

4987 khiḍḍāratiyaÁ
4988 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
4989 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
4990 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
4991 शाब्दिक रूप से, " पूजा "

"धरती बैल की तरह गरज रही है; यह जानवरों के राजा की तरह दहाड़ रही है। यह मगरमच्छ की तरह कांप रही है4992;
इसका परिणाम क्या होगा?" (21) [5160]

"बुद्ध4993 के बारे में मैंने [आपके लिए] विस्तार से बताया था,
रेत से बने स्तूप के पास, भगवान, गुरु, अब
मां के गर्भ में जन्म लिया है।" (22) [5161]

उनके लिए शिक्षा पर चर्चा करते हुए, [और] महान ऋषि का विस्तृत वर्णन करते हुए, [वहाँ] अपने छात्रों को उपदेश देते हुए, मैं पद्मासन में बैठा। (23) [5162]

एक गंभीर बीमारी के कारण मेरी सारी शक्ति समाप्त हो गई थी। सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को याद करते हुए।
मैं वहीं मर गया। (24) [5163]

मेरे सभी छात्र एकत्रित हुए; उन्होंने उस समय मेरे लिए चिता बनाई और मेरे नश्वर अवशेषों को लेकर,4995
उन्होंने मुझे चिता पर उठा लिया। (25) [5164]

चिता की देखभाल करने के बाद,
शोक के तीरों से घायल होकर, उन्होंने अपने सिर पर हाथ रखे हुए थे।
एक साथ आओ। उन्होंने विलाप किया। (26) [5165]

जब वे व्यर्थ ही विलाप कर रहे थे,4997
मैं [तब] चिता के पास [वापस] आया। "मैं तुम्हारा [मृत] गुरु हूँ, हे ज्ञानियों;
मेरे निधन पर शोक मत करो। (27) [5166]

सर्वोच्च भलाई के लिए दिन-रात प्रयास करो, आलसी मत बनो। तुम सब लापरवाही मत करो;
आपका मोमेंट4998 आपको दिया जाता है।" (28) [5167]

4992 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

4993 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
4994 pariḷāho
4995 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
4996 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
4997 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
4998 samādhikusalo ahaŋ

मैंने अपने छात्रों को इस प्रकार उपदेश दिया और फिर देवताओं की दुनिया में लौट आया।
उसके बाद अठारह युगों तक
मुझे देवताओं की दुनिया में आनंद आया। (29) [5168]

और [फिर] सौ बार मैं था
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। और सौ बार ऐसा ही।
मैं एक राजा था जो पहिया घुमाता था। और सौ बार ऐसा ही करता था।
मैंने [तब] दैवीय शासन का प्रयोग किया। (30) [5169]4999
शेष युगों में मैं
देवता या मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लिया।5000
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह उत्पन्न करने का फल है.5001 (31) [5170]

जैसे कि कत्तिका माह में बहुत से वृक्ष पूरी तरह खिल जाते हैं, उसी प्रकार उस मौसम में भी,
मैं एक महान ऋषि के रूप में विकसित हुआ हूँ। (32) [5171]

मेरे लिए पूर्ण शांति लाने वाला जुए में लगा बैल भी बलि का बकरा है।5003
टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह
मैं बिना किसी बंधन के रह रहा हूँ। (33) [5172]

एक लाख युगों में
क्योंकि मैंने [उस समय] बुद्ध की प्रशंसा की थी, इसलिए मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:
यह बुद्धों की प्रशंसा का फल है। (34) [5173]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (35) [5174]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (36) [5175]

विश्लेषण के चार तरीके,

4999 iddhipādesu kovido

5000 lit., “did pūjā ”

5001 mārasenāpamaddano , BJTS reads mārasenappamaddano

5002 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

5003 mahābhisakkasaṅkāso

और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (37) [5176]

इस प्रकार पूज्य पुलिनुप्पादक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पुलिनुप्पादक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

485. {488.}5004 तारानिया5005

अत्थादस्सी, भगवान
स्वयं-एक, विश्व-नेता, तथागत तब विनता नदी के तट पर आ गया।5006 (1) [5177]

फिर एक जल में रहने वाला कछुआ, [मैं] पानी से बाहर आया था।
मैं विश्व नेता के पास गया,
बुद्ध; वह पार करना चाहता था। (2) [5178]

“हे अत्थादस्सी, हे महान ऋषि, बुद्ध मुझ पर आरोहण करें;
मैं तुम्हें पार ले जाऊँगा; तुम
वे दुखों का अंत करने वाले हैं।” (3) [5179]

मेरी सोच को भांपते हुए, महान ख्यातिप्राप्त अत्थादस्सी मेरी पीठ पर चढ़ गए।
वहाँ विश्व का नेता खड़ा था। (4) [5180]

जहां तक मुझे याद है, 5008
जब से मैंने विवेक प्राप्त किया है,5009
मुझे ऐसी खुशी कभी नहीं मिली।
जैसे जब उसके तलवे [तब] मेरी पीठ को छूते हैं। (5) [5181]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5004 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5005 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

5006 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5007 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5008 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5009 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5010 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

नदी पार करने के बाद, सम्बुद्ध, अत्थादस्सी, जो परम प्रसिद्ध थे, नदी के किनारे पर ही रह गए।
तब उन्होंने मेरे बारे में ये आयतें कही थीं: (6) [5182]

"जैसे ही मैं लोगों को पार ले जाता हूँ
मन में उठने वाली शंकाओं की धारा, यह कछुआ राजा, गुणों से परिपूर्ण है।
मुझे नदी पार कराता है। (7) [5183]

बुद्ध की यात्रा और प्रेममय हृदयता के अभ्यास के माध्यम से,
अठारह सौ युगों तक वह
देवताओं के संसार में आनंदित होगा। (8) [5184]

देवताओं की दुनिया से यहाँ वापस आकर, अपनी पवित्र जड़ों से प्रेरित होकर,
एक ही सीट पर बैठे हुए,
वह संदेह की धारा को पार कर जाएगा। (9) [5185]

जैसे किसी बीज को उपजाऊ खेत में बोया जाता है:5011
जब बारिश होती है, 5012 उचित समर्थन के साथ, 5013
फल किसान को प्रसन्न करता है;
इसी प्रकार, सम्मासंबुद्ध द्वारा प्रचारित इस बुद्ध-क्षेत्र में भी: जब वर्षा होती है,5014 उचित समर्थन के साथ,
यह फल मुझे प्रसन्न करेगा।" (10-11) [5186-5187]

मैं परिश्रम करने के लिए दृढ़ संकल्पित व्यक्ति हूँ।
शांत, 5015 पुनर्जन्म के आधार से रहित, 5016
सभी दोषों को भली-भांति जानते हुए,
मैं अब भी बेदाग़ जीवित हूँ। (12) [5188]

उस कर्म को करने के बाद से अठारह सौ युगों में, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
यह नौका विहार का फल है। (13) [5189]

5011 lit., “गया”
5012 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5013 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
5014 लिट., “योग्य”
5015 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए लैटिन शब्द "हजार" और "सौ" के संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5016 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस कई रूपों में गेण्डु पढ़ता है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (14) [5190]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) [5191]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (16) [5192]

इस प्रकार पूज्य ताराणिय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

ताराणीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

486. {489.}5017 धम्मरुसी5018

जब दीपांकर बुद्ध थे, तब विजेता ने सुमेधा के बारे में कहा:
अब से अनगिनत युगों बाद,
यह बुद्ध बनेगा। (1) [5193]

माया नाम की स्त्री इस [व्यक्ति] की जन्मदाता माता होगी; पिता का नाम शुद्धोधन है;
इसका नाम गौतम रखा जाएगा। (2) [5194]

परिश्रम करने में दृढ़ रहने वाला, तपस्या का अभ्यास करने वाला,
संबुद्ध जागृत होंगे5019

महान प्रसिद्ध, बोधि वृक्ष की जड़ों में.5020 (3) [5195]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5017 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5018 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5019 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5020 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

उपतिस्सा5021 और कोलिता5022
ये [दो] मुख्य अनुयायी होंगे;5023
जिसका नाम आनंद है
इस विजेता की सेवा करेगा। (4) [5196]

खेमा और उप्पलावण्णा
प्रमुख महिला अनुयायी होंगी;5024
चित्त और आलवक
प्रमुख धर्मनिष्ठ गृहस्थ बनें।5025 (5) [5197]

खुज्जुत्तारा, नंदमाता
प्रमुख धर्मनिष्ठ गृहस्थ महिलाएं होंगी;5026
इस नायक का बोधि वृक्ष
अश्वत्थ वृक्ष के नाम से जाना जाता है।"5027 (6) [5198]

उन शब्दों को सुनने के बाद
महान ऋषि, अद्वितीय, 5028
देवता और मनुष्य दोनों ही अत्यधिक प्रसन्न हैं।
उसकी प्रशंसा करते हुए, हाथ जोड़कर। (7) [5199]

उस समय मैं मेघा नाम का एक सुशिक्षित युवक था।5030
सुमेधा के लिए सर्वश्रेष्ठ भविष्यवाणी सुनकर, [तब] एक महान ऋषि, सुमेधा में करुणा का विश्वास पैदा करते हुए, font5031
जब उस नायक ने संसार का त्याग किया,5032
मैंने भी उनके साथ ही त्याग कर दिया। (8-9) [5200-5201] मठवासी नियमों में संयमित5033,5034

5021 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5022 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5023 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5024 लिट., "गया"
5025 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5026 लिट., "गिर गया"
5027 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5028 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5029 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5030 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5031 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
5032 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5033 लिट., "एक फूल पर"
5034 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

और [भी] पाँचों अर्थों में,
वह पवित्र, सचेत और एक नायक के समान जीवन जीता था।
विक्टर ने जो सिखाया, उसका कर्ता।5035 (10) [5202]

जब मैं उस तरह से जी रहा था,
मैं सही रास्ते से भटक गया, बुरे व्यवहार के लिए उकसाया गया
मेरा एक खास दुष्ट मित्र। (11) [5203]

तर्क द्वारा नियंत्रित होने के कारण,5037
मैं व्यवस्था से गिर गया;5038
उसके बाद, उस बुरे दोस्त द्वारा,
मेरी माँ की हत्या की साजिश रची गई थी। (12) [5204]

मैंने बिना अंतराल वाला कर्म किया, 5039
और मैंने दुष्ट इरादे से हत्या की;
मैं वहां से सीधे नरक में गिर गया,5040
बहुत ही क्रूर [स्थान] में जन्म हुआ। (13) [5205]

उस दयनीय स्थिति में चले जाने के कारण,5041

मैं लंबे समय तक पीड़ा में पुनर्जन्म लेता रहा,5042
हीरो को दोबारा न देख पाना,
सुमेधा, पुरुषों में बैल। (14) [5206]

इस युग में, सागर में, मैं एक तिमिंगला मछली थी।5043
समुद्र में एक जहाज देखकर,
मैं भोजन की तलाश में उसके पास गया। (15) [5207]

मुझे देखकर व्यापारी भयभीत हो गए और उन्हें बुद्धों के श्रेष्ठ दर्शन की याद आ गई; मैंने एक बहुत तेज आवाज सुनी,
"गौतामा!" [वे भयभीत होकर चिल्लाए]। (16) [5208]

अतीत की धारणा को याद करते हुए,
मैं वहीं पर मर गया। मेरा पुनर्जन्म श्रावस्ती में हुआ।
एक उच्च श्रेणी के कुल में ब्राह्मण। (17) [5209]

5035 khiḍḍāratiyaÁ
5036 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
5037 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5038 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
5039 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
5040 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
5041 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
5042 pariḷāho
5043 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

मेरा नाम धम्मरुची था, जो हर बुराई से घृणा करता था।
विश्व का दीपक देखकर, [केवल] सात वर्ष की आयु में, (18) [5210]

मैं महान जेतवन गया, 5044
[और] बेघर हो गया। मैं हर रात तीन बार बुद्ध के पास जाता हूँ, और हर दिन भी। (19) [5211]

मुझे देखकर, मुझे देखकर, ऋषि ने मुझे "दीर्घकालीन धम्मरुचि" कहकर पुकारा। इसके बाद मैंने बुद्ध को बताया।
[मेरे] पिछले कर्म कैसे आगे बढ़े थे: (20) [5212]

बहुत लंबा, सैकड़ों अच्छे कार्यों से चिह्नित,5045
स्थितियाँ [तब] धीरे-धीरे 5046 शुद्ध की गईं। आज मैं वास्तव में बारीकी से देख रहा हूँ,
मैं तुम्हारा अद्वितीय शरीर देख रहा हूँ। (21) [5213]5047

बहुत लंबा, इससे अंधकार नष्ट हो जाता है।5048
पवित्रता की रक्षा करने के कारण, धारा को शुद्ध किया गया है। बहुत लंबे समय से, अब बिना किसी दोष के शुद्ध किया गया है।

हे महान ऋषि, क्या आँख ज्ञान से बनी है? (22) [5214]

बहुत समय बीत गया, अब हम फिर से आपके साथ हैं; नष्ट नहीं हुए, फिर से लंबा अंतराल था; आज, फिर से हम आपके साथ हैं।
हे गौतम, कर्म यूं ही गायब नहीं हो जाते। (23) [5215]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (24) [5216]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [5217]

5044 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
5045 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
5046 samādhikusalo ahaŋ
5047 iddhipādesu kovido
5048 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
5049 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
5050 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (26) [5218]

इस प्रकार पूज्य धम्मरुची थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

धम्मरुची थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

487. {490.}5051 सलामंदपिया5052

साल के पेड़ों के घने जंगल में स्थित , मैंने एक सुव्यवस्थित आश्रम बनाया था।
जो साल के फूलों से ढका हुआ था ;
मैं उस समय जंगल में रहता हूँ। (1) [5219]

हे भगवान, पियादस्सी,
स्वयं एक हो जाओ, प्रधान व्यक्ति, एकांत प्रेमी, सम्बुद्ध
फिर साल के जंगल में आ गया । (2) [5220]

आश्रम छोड़कर मैं जंगल में चला गया। खाने के लिए जड़ें और फल ढूंढते हुए।
मैं तब जंगल में घूम रहा हूँ। (3) [5221]

वहाँ मैंने उन्हें देखा, सम्बुद्ध, पियादस्सी, महान यशात्मा।
अच्छी तरह से बैठा हुआ, [लक्ष्य] प्राप्त करना,
विशाल जंगल में चमकता [प्रकाश]। (4) [5222]

वहाँ लकड़ी की चार छड़ें रखकर, एक सुव्यवस्थित मंडप का निर्माण किया गया।
उस समय बुद्ध के ऊपर
मैंने इसे साल के फूलों से ढक दिया। (5) [5223]

मैंने सात दिनों तक [उसे] पकड़े रखा।
साल के फूलों से ढका हुआ मंडप।
इससे मेरे हृदय को आनंद मिलता है।
मैंने सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की पूजा की। (6) [5224] उस समय भगवान [तब]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5051 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5052 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

वह ध्यान से उठ खड़ा हुआ।5053
बस हल की लंबाई जितनी दूरी आगे देखते हुए,5054
परम पुरुष बैठ गया। (7) [5225]

वरुण नाम के इस व्यक्ति ने गुरु पियादस्सी के शिष्य से शिक्षा प्राप्त की।
एक लाख गुरुओं के साथ,5055
फिर मार्गदर्शक [बुद्ध] के पास पहुँचे। (8) [5226]

पियादस्सी, भगवान
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल, भिक्षुओं की सभा में विराजमान।
फिर विक्टर ने मुस्कुराहट दिखाई।5056 (9) [5227]

अनुरुद्ध, परिचारक, पियादस्सी, शिक्षक,
उसने अपना चोगा एक कंधे पर रख लिया।
[तब] ने महान ऋषि से [यह] पूछा: (10) [5228]

"हे भगवान, गुरु के मुस्कुराने का कारण क्या है?"
जब कारण ज्ञात हो रहा था
क्या आपने उसे प्रदर्शित किया, हे शिक्षक?" (11) [5229]

"इस युवक ने मेरे लिए एक सप्ताह तक फूलों की छतरी पकड़ी रखी:
अपने कर्मों को याद करके,
मैंने उस समय वह मुस्कान प्रदर्शित की। (12) [5230]

मुझे उस अच्छे कर्म के फलने-फूलने के लिए पर्याप्त जगह नज़र नहीं आती। चाहे देवताओं की दुनिया हो या मनुष्यों की।
पर्याप्त स्थान नहीं मिला। (13) [5231]

जब [यह] अच्छे कर्मों का स्वामी 5058 देवताओं के लोक में रह रहा होता है,
जहां तक उनके [पूरे] दल का सवाल है,
वहाँ एक साल का चंदवा होगा । (14) [5232]

5053 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5054 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

5055 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5056 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5057 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

5058 lit., "गया"

इसके अच्छे कर्मों के फल के रूप में,5059
वहाँ रहकर वह उन नृत्यों से प्रसन्न होगा जो सभी दिव्य हैं।
और गीतों [और] भाषणों [के द्वारा भी]। (15) [5233]

जहां तक उनके [पूरे] दल का सवाल है,
कई 50-60 उत्तम इत्र होंगे, और साल के फूलों की बारिश होगी।
वहाँ हर समय बारिश होती रहेगी। (16) [5234]

जब यह व्यक्ति वहां से गिर जाएगा, तो वह मानव अवस्था में चला जाएगा।
यहां भी फूलों की छतरी है
हर समय ले जाया जाएगा। (17) [5235]

और यहाँ भी नृत्य और गीत, झांझ की संगति में,5061 निरंतर उसकी सेवा में रहेंगे:
यह बुद्ध -पूजा का फल है । (18) [5236]

साथ ही, जब सूरज उग रहा होता है,

साल की मूसलाधार बारिश होगी। उसके अच्छे कर्मों से जुड़ा हुआ,5062
[वह बारिश] हर समय होती रहेगी। (19) [5237]

अठारह सौ युगों के बाद, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (20) [5238]

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, समस्त दोषों का भली-भांति ज्ञाता,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग। (21) [5239]

वहाँ एक साल की छतरी होगी
जो इस शिक्षा को समझ लेता है, उसके लिए वह छत्रछाया मौजूद रहेगी ।
उसे चिता पर जलाए जाने के लिए।" (22) [5240]

परिणाम का विस्तृत विवरण देते हुए [मेरे लिए], पियादस्सी [बुद्ध], महान ऋषि।

5059 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5060 लिट., "गिर गया"
5061 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5062 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

मैंने अपने अनुयायियों को धर्म का उपदेश दिया।
धर्म-वर्षा से उन्हें तरोताज़ा करते हुए। (23) [5241]

देवताओं के बीच तीस युगों तक मैंने दैवीय शासन किया, और चौंसठ से अधिक बार मैं
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (24) [5242]

देवताओं की दुनिया से यहाँ आकर मुझे अपार आनंद मिल रहा है।
यहां भी एक साल का चंदवा है:
यह चंदवा का फल है.5063 (25) [5243]

यह मेरे लिए आखिरी बार है;
मेरा अंतिम पुनर्जन्म चल रहा है।5064
यहां भी एक साल की छतरी है
मेरे लिए यह हर समय मौजूद रहता है। (26) 5065

महान ऋषि गौतम, शाक्यों के श्रेष्ठ पुरुषोत्तम को प्रसन्न करके,
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है।

सभी विजय और पराजय से परे। (27) [5244]

अठारह सौ युगों में
जब से मैंने बुद्ध की पूजा की है [तब से], मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं हुआ है:
यह बुद्ध -पूजा का फल है । (28) [5245]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (29) [5246]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (30) [5247]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

बीजेटीएस के अनुसार 5063 में, पीटीएस में कई रूपों में 'गेण्डु' लिखा है । कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।

5064 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

5065 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

5066 में uddalomika° को BJTS द्वारा PTS uddhalomikā के स्थान पर पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, देखें RD, sv)

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (31) [5248]

इस प्रकार पूज्य सालमंडपिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सालमंडपिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: नाममाली, मनिददा,
उक्कासतिका, विजानी,
कुम्मासा और कुसंठा [भी], गिरिपुन्नगिया, वल्लिकारा, 5067 पनाधिदा भी
[और] फिर पुलिनाचंकमा:
ये पच्चीस आयतें हैं।
जिनकी गिनती जानकार लोग करते हैं।

पांसुकुला अध्याय, उनतालीसवाँ

किंखानिपुप्पिया 5068, अध्याय पचासवाँ

---

488. {491.}5069 तिन्निकिनखानिपुफिया5070

मैंने बुद्ध को देखा, जो निष्कलंक, विपस्सी, विश्व के नेता थे, एक थालीनुमा वृक्ष की तरह चमक रहे थे।
पहाड़ की ढलान पर बैठे हुए। (1) [5249]

मैंने तीन किंखानी 5071 फूल लेकर [बुद्ध को] अर्पित किए।
संबुद्ध की पूजा करने के बाद,
मैं दक्षिण की ओर मुख करके चला गया। (2) [5250]

5067 lit., “एक फूल पर”
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5068 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5069 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
5070 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5071 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5072 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (3) [5251]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस बुद्ध की पूजा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध -पूजा का फल है । (4) [5252]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [5253]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5254]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [5255]

इस प्रकार पूज्य तिनिकिंखानिपुप्पिया5073 थेरा ने ये श्लोक कहे।

टीनिकिंखानिपुप्पिया5074 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

489. {492.}5075 पौंसुकुलपुजाका5076

हिमालयी क्षेत्र में,
उदाका नाम का एक पर्वत है।5077
वहाँ मैंने बुद्ध का फटे-पुराने वस्त्र देखा।
पेड़ के शीर्ष पर फंसा हुआ.5078 (1) [5256]

5073 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5074 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5075 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5076 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

5077 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5078 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी भाग को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

उस समय वहाँ उग रहे तीन किंखानी (5079) फूलों को प्रसन्नतापूर्वक और प्रसन्न हृदय से तोड़ते हुए,
मैंने उन्हें उस चिथड़े-मटके को अर्पित किया। (2) [5257]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (3) [5258]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस बुद्ध की पूजा की।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [5259]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [5260]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5261]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [5262]

इस प्रकार पूज्य पांशुकुलपूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पांसुकुलपुजका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

5079 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

---

490. {493.}5080 कोरंडपुफिया5081

मैं उस समय वनकर्मी था।5082
जैसे कि 5083 पिता और दादा थे।5084
मैं जानवरों को मारकर अपनी जीविका कमाता हूँ,5085
मेरे लिए कोई अच्छाई5086 मौजूद नहीं है। (1) [5263]

जिस इलाके में मैं रहता था,
टिस्सा, विश्व के प्रमुख नेता, दृष्टिपूर्ण व्यक्ति, करुणापूर्वक
मुझे अपने तीन पदचिह्न दिखाए। (2) [5264]

और तिस्सा नामक शिक्षक के पदचिह्नों को देखकर, प्रसन्न होकर, [और] प्रसन्न हृदय से,
मैंने उसके पैरों के बारे में अपने दिल को प्रसन्न किया। (3) [5265]

खिले हुए कोरण्ड 5088 को देखकर ,
धरती में उगने वाला पैर-पीने वाला,5089
फूलों वाली एक टहनी लेकर, मैं

उन श्रेष्ठ चरणों की पूजा की । (4) [5266]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (5) [5267]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव हो या दिव्य, मेरी त्वचा 5090 कोरण्ड रंग की होगी;
मैं बेहद खूबसूरत हूँ।5091 (6) [5268]

{फैंसी ब्रेकेट} में दिए गए 5080 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5081 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5082 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5083 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

5084 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5085 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5086 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

5087 lit., "गया"

5088 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

5089 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

5090 लिट., "योग्य"

5091 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं "तू" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का फायदा उठाता हूँ-

---

पिछले बानवे युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह 5092 फीट की पूजा का फल है। (7) [5269]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (8) [5270]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [5271]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [5272]

इस प्रकार पूज्य कोरण्डपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कोरण्डपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

491. {494.}5093 किसुकापुप्पिया5094

एक खिले हुए पुलस वृक्ष को देखकर, हाथों को जोड़कर फैलाकर, सिद्धार्थ बुद्ध को याद करते हुए,
मैंने आकाश में पूजा की। (1) [5273]

उस कर्म के अच्छे ढंग से, इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ किए जाने के कारण,

---

मीटर को बनाए रखने के लिए "रेत" और "सौ" का प्रयोग किया गया है। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "हजार कंढ (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

5092 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में gendu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 5093 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

5094 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5095 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

अपने मानव शरीर का त्याग करते हुए,
मैं तब तावतिंसा गया। (2) [5274]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [5275]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5276]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5277]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5278]

इस प्रकार पूज्य किंशुकापुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

किंशुकापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

492. {495.}5096 उपाडहदुस्सादायका5097

पद्ममुत्तरा बुद्ध के अनुयायी सुजाता नामक व्यक्ति,5098 चिथड़ों से बने वस्त्र की खोज कर रहा था।
हमेशा 5099 कचरे के बीच से गुजर रहा है। (1) [5279]

हंसवती नगर में,
मैं दूसरों का भाड़े का कर्मचारी था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5096 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5097 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5098 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5099 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5100 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

उसे आधा कपड़ा देकर,
मैंने सिर झुकाकर [उन्हें] प्रणाम किया। (2) [5280]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (3) [5281]

मैंने तैंतीस बार देवताओं के स्वामी के रूप में वहाँ दिव्य शासन किया। मैं सतहत्तर बार था।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (4) [5282]

[वहाँ] बहुत से स्थानीय नियम भी थे, जिनकी गिनती करना असंभव था। आधा कपड़ा देने के कारण,
मुझे किसी बात का डर नहीं है, मैं प्रसन्न हूँ।5101 (5) [5283]

और आज [अगर] मैं कामना कर रहा हूँ,
चाहे जंगल में हो या पहाड़ पर, मैं खोमा के कपड़े से ढका रहता हूँ।
वह आधे कपड़े का फल है। (6) [5284]

उस दान के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
वह आधे कपड़े का फल है। (7) [5285]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (8) [5286]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [5287]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [5288]

इस प्रकार पूज्य उपद्धदुस्सादायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उपाद्दुस्सदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

5101 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

---

493. {496.}5102 घटमंड़ायक5103

विश्व के सर्वश्रेष्ठ, मनुष्यों के श्रेष्ठ, सुविचारित, धन्य पुरुष को देखकर, महान वन में प्रवेश किया।
आंतरिक पीड़ा से व्याकुल,5105

मेरे मन को प्रसन्नता प्रदान करना,
मैंने कुछ घी से मलाई प्रस्तुत की।5106 (1) [5289]5107

ऐसा करने और उसे इकट्ठा करने से,5108 भागीरथी नदी,5109 और यहाँ तक कि चारों महान महासागर भी अस्तित्व में आए।
मुझे घी की क्रीम उपलब्ध करा रहे हैं। (2) [5290]

और यह [संपूर्ण] भयानक पृथ्वी भी, असीम, गिनती से परे, मेरे विचारों को समझ नहीं पा रही है।
शहद और चीनी में बदल जाता है.5110 (3) [5291]

चारों महाद्वीपों पर ये वृक्ष, धरती में उगने वाले, पैरों से पानी पीने वाले,5111 जो मेरे विचारों को समझते हैं,
मेरे लिए 5112 इच्छा वृक्षों में बदल जाओ। (4) [5292]

पचास बार देवताओं के स्वामी के रूप में, मैंने वहाँ दिव्य शासन किया। और इक्यावन बार मैं वहाँ था।
एक ऐसा राजा जो कानून का पहिया घुमाता है। [और मैंने] स्थानीय शासन का भरपूर आनंद लिया।
गिनती से असंख्य। (5) [5293]5113

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5102 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5103 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

5104 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5105 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

5106 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5107 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5108 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

5109 lit., “गया”

5110 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

5111 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

5112 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

5113 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं "तू" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का फायदा उठाता हूँ-

---

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह उपहार दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह घी से प्राप्त मलाई का फल है। (6) [5294]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [5295]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [5296]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [5297]

इस प्रकार पूज्य घटमण्डायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

घटमण्डायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

494. {497.}5114 उदकदायका5115

प्रसन्नता से, मन में आनंद लिए, मैंने पीने के पानी का जग भर दिया।
उत्कृष्ट भिक्षुओं की सभा के लिए
पदुमुत्तारा बुद्ध की. (1) [5298]

पहाड़ की चोटी पर या खराब सड़क पर 5116
या पृथ्वी पर किसी भी स्थान पर, यदि मुझे पीने का पानी चाहिए हो,
यह मेरे लिए जल्दी से तैयार किया जाता है। (2) [5299]

मीटर को बनाए रखने के लिए "रेत" और "सौ" का प्रयोग किया गया है। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "हजार कंढ (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटी माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]।"

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5114 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
5115 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5116 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

उस दान के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
पानी देने का यही फल है। (3) [5300]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5301]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5302]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5303]

इस प्रकार पूज्य उदकदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उदकडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

495. {498.}5117 पूसीनाथुपिया5118

हिमालयी क्षेत्र में,
समांग नाम का एक पर्वत है।5119
मेरे पास एक सुव्यवस्थित आश्रम था
पत्तों के हॉल से सुसज्जित [वहाँ तब]। (1) [5304]

मेरा नाम नारद था, मेरे बाल उलझे हुए थे, और मैंने कठोर तपस्या की।
उस समय चौदह हजार 5120 छात्र थे।
वे मेरी पूजा कर रहे हैं [उस स्थान पर]। (2) [5305]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5117 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5118 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5119 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5120 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5121 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

तब एकांत में रहने के कारण,
मैंने इस प्रकार विचार किया:
सभी लोग मेरी पूजा करते हैं।
[लेकिन] मैं किसी की पूजा नहीं करता। (3) [5306]

मेरे पास कोई सलाहकार नहीं है;
मुझसे बात करने वाला कोई नहीं है;
न कोई शिक्षक और न कोई गुरु,
मैं जंगल में एक घर में आता हूँ। (4) [5307]

मेरे लिए ऐसा कोई शिक्षक नहीं है जिसे मैं सम्मान देता हूँ।
और आदरपूर्ण हृदय से सेवा करना;
मेरा वनवास अर्थहीन है। (5) [5308]

मैं किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश करूंगा जिसे मैं उपहार दे सकूं और जिसका मैं सम्मान कर सकूं;
मैं उनकी सहायता का आनंद लेते हुए जीवन व्यतीत करूंगा।
जिसे कोई भी दोषी नहीं ठहराएगा।5123 (6) [5309]

मेरे आश्रम के बहुत पास,
वहाँ ऊँचे किनारों और अच्छी ढलानों वाली एक नदी थी, जो बहुत सुंदर थी।
[और] शुद्ध सफेद रेत से बिखरा हुआ। (7) [5310]

उस समय जब मैं उस नदी के पास पहुँचा, जिसका नाम अमरिका था, और कुछ रेत जमा करने के बाद, मैंने उस रेत से स्तूप बनाया। (8) [5311]

“वे [पुरुष] जो संबुद्ध थे, सृजन के अंतकर्ता थे, ऋषि थे,
मैं इसे एक के निशानों के साथ बनाऊंगा
उनके लिए इस प्रकार के स्तूप बनाए गए थे। (9) [5312]

मैंने अपना स्तूप रेत से बनाया है, मानो मैंने उसे सोने से बनाया हो।
मैंने इसे 5124 से 5125 तीन हजार से ढक दिया
स्वर्ण रंग के किंखानी 5126 फूल। (10) [5313]

मैं संध्या और सूर्योदय की प्रशंसा कर रहा हूँ।
खुशी से भरे हुए, हाथ आपस में जुड़े हुए।

5122 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5123 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5124 लिट., “गया”
5125 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5126 लिट., “गिर गया”

मानो संबुद्ध के सामने खड़े हों,
मैंने रेत के उस स्तूप की पूजा की। (11) [5314]

जब अशुद्धियाँ उत्पन्न होती हैं5127 [या]
घर से जुड़ी चिंताएँ,5128
मुझे वह सुगठित 5129 स्तूप याद है,
और हमेशा [उन्हें इस तरह देखो]: (12) [5315]

“Living5130 निर्भर होने के कारण
अर्थ संवाहक, 5131 मार्गदर्शक, 5132
यह आपके लिए उपयुक्त नहीं है
5133 दोषों के साथ रहना, महोदय.5134 (13) [5316]

जब मैं स्तूप के सामने सिर झुकाता हूँ, तब मेरे मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होता है;
मैं बुरी प्रतिबिंबों को दूर भगाता हूँ 5135 जैसे
एक हाथी को अंकुश से पीड़ा हुई। (14) [5317]

मृत्यु के राजा5137 ने [तब] मुझे कुचल दिया, और इस प्रकार मेरा जीवन5138 समाप्त कर दिया। मैं वहीं पर मर गया5139
मैं ब्रह्मा के लोक में गया। (15) [5318]

वहाँ जीवन भर निवास करते हुए,5140
मेरा जन्म तीस लोगों के बीच हुआ था।5141
देवताओं के स्वामी से अस्सी बार,
मैंने वहाँ दैवीय शासन किया। (16) [5319] और [फिर] तीन सौ बार मैं था

5127 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5128 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5129 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5130 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

5131 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
5132 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा जा रहा है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5133 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"
5134 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5135 khiḍḍāratiyaÁ
5136 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
5137 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5138 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
5139 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
5140 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
5141 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी

एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है, [और मैंने] बहुत स्थानीय शासन का आनंद लिया, गिनती में अनगिनत। (17) [5320]

मुझे इसके परिणाम अच्छे लग रहे हैं।
तीन [हज़ार] किंखानी 5142 फूल। बाईस हज़ार [लोग] हर जीवन में मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। (18) [5321]

स्तूप की पूजा करने के कारण,
मैं धूल-मिट्टी से सना हुआ नहीं हूँ;5144
मेरे अंगों से पसीना नहीं निकल रहा है; मैं बेहद खूबसूरत हूँ। (19) [5322]

ओह! मेरे द्वारा निर्मित यह स्तूप कितना सुंदर है; अमरिका नदी का सुंदर दृश्य! मैंने 5145 रेत से स्तूप का निर्माण किया है।
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (20) [5323]

"फील्ड" या "नॉन-फील्ड" में कोई अंतर नहीं है।
सार की तलाश करने वाले व्यक्ति द्वारा,5146
जो अच्छे कर्म करने की इच्छा रखता हो;
[उसका] अभ्यास [इस प्रकार] पूरा हो गया है।5147 (21) [5324]

जैसे कोई बलवान व्यक्ति नदी पार कर सकता है;5148
सुरक्षात्मक छड़ी लेकर चलना,
वह एक बड़ी झील के पार छलांग लगाता था, इसलिए मैं इस छड़ी पर निर्भर था,
अस्तित्व के विशाल सागर को पार करेगा:
उनके प्रयासों और ऊर्जा के माध्यम से
एक आदमी समुद्र पार करेगा। (22-23) [5325-5326]

और इसी प्रकार मेरे कर्मों का फल भी मिला।
जो मेरी थोड़ी सी सुरक्षा थी;5149
उस कर्म के आधार पर,

मैंने पुनः बनने की प्रक्रिया को पार कर लिया।5150 (24) [5327]

5142 pariḷāho
5143 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
5144 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
5145 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
5146 samādhikusalo ahaŋ
5147 iddhipādesu kovido
5148 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
5149 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
5150 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

जब मेरे पुण्य कर्मों से प्रेरित होकर मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ,
मेरा पुनर्जन्म श्रावस्ती, 5151 में हुआ है।
एक धनी [कुल] में बड़े हॉल के साथ.5152 (25) [5328]

मेरे माता-पिता को आस्था थी, इसलिए उन्होंने बुद्ध की शरण ली;
उन दोनों ने [अमर] अवस्था को देखा था, व्यवस्था की ओर मुड़ते हुए। (26) [5329]

बोधि वृक्ष से छाल लेना5153
उन्होंने सोने का स्तूप बनवाया।
वे शाम और सुबह इसकी प्रशंसा कर रहे हैं।
शाक्यों के पुत्र से आमने-सामने। (27) [5330]

उन्होंने रात के तीन पहर सोने के स्तूप के बाहर बुद्ध के प्रकट होने की प्रशंसा करते हुए बिताए।
जिस दिन पूर्णिमा थी.5155 (28) [5331]

मैंने [सोने का] स्तूप देखकर रेत के स्तूप की याद कर ली। एक आसन पर बैठते हुए,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (29) [5332]

बाईसवाँ पाठ भाग
उस महान नायक की खोज करते हुए, मैंने धम्म के सेनापति को देखा।5156
घर से निकल जाने के बाद,
मैं उसकी उपस्थिति में बाहर गया। (30) [5333]

मात्र सात वर्ष की आयु में ही मैंने अरहंत पद प्राप्त कर लिया था। मेरे गुणों को जानकर, बुद्ध ने...
आँखों को भाने वाले ने [तब] मुझे नियुक्त किया। (31) [5334]

यह काम मैंने बचपन में ही पूरा कर लिया था; जो भी करना था, वह मैंने ही किया था।
बुद्ध के 5157 युग में। (32) [5336]5158

5151 mahābhisakkasaṅkāso
5152 dosavyādhitikicchako
5153 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
5154 दिट्ठिगण्ड°
5155 लोकापज्जोटो
5156 sanarāmarasakkato
5157 नारदिको
5158 लिट., “में”

सारी नफरत और डर अतीत की बात है; सारे बंधन टूट गए हैं, मैं एक ऋषि हूँ। मैं आपका अनुयायी हूँ, महान नायक।
स्वर्ण स्तूप का फल.5159 (33) [5337]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5338]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5339]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5340]

इस प्रकार पूज्य पुलिनथूपिया5160 थेरा ने ये श्लोक कहे।

पुलिनथुपिया5161 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

496. {499.}5162 नासिकाकुटिकादायक5163

हिमालयी क्षेत्र में,
भारिका नाम का एक पर्वत है।5164
स्वयं एक हो जाओ, नारद,
तब वह एक पेड़ की जड़ों में रहता था। (1) [5341]

मैंने सरकंडों से एक घर बनाया, उसे घास से ढक दिया, और फिर एक रास्ता साफ किया।
उन्होंने [उन्हें] स्वयं-एक हो जाने को दे दिया। (2) [5342]

5159 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
5160 निब्बाती , या "वह शांत हो जाता है"
5161 महास्सादंग
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5162 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5163 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5164 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (3) [5343]

वहाँ मेरा सुव्यवस्थित महल था, जो एक छोटी सी सरकंडे की झोपड़ी की तरह बना हुआ था।
लंबाई में साठ लीग मापा गया, [और]
[इसकी माप] चौड़ाई में तीस लीग थी। (4) [5344]

मैंने उस समय चौदह युगों तक देवताओं की दुनिया में आनंद लिया, और बाद में इकहत्तर बार।
मैंने वहाँ दैवीय शासन का प्रयोग किया। (5) [5345]

और उसके बाद चौंतीस बार मैं एक ऐसा राजा बना जिसने शासन किया। बहुत स्थानीय शासन भी था, जिसकी गिनती करना असंभव है। (6) [5346]

शिक्षण-महल पर चढ़ना, हर तरह से एक उत्कृष्ट रूपक,5165
मैं वहीं रहना चाहूंगा जहां मैं रहना चाहता हूं।
बुद्ध के 5166 युग में। (7) [5347]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।
एक छोटी सी सरकंडे की झोपड़ी का फल। (8) [5348]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (9) [5349]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [5351]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [5352]

5165 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
5166 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

इस प्रकार पूज्य नलकुटिकदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नलकुटिकडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

497. {500.}5167 पियालाफलदायका5168

मैं पहले शिकारी था।
उस समय मैं जंगलों में घूम रहा था। मैंने बुद्ध की प्रतिमा देखी, स्टेनलेस वन।
[जो] हर चीज का स्वामी था। (1) [5353]

पियाला फल ले जाते हुए ,
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, पुण्य के क्षेत्र, नायक को दिया।
[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (2) [5354]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह फल दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (3) [5355]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5356]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5357]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5358]

इस प्रकार पूज्य पियालफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पियालाफलदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

समीक्षा:
किंखानी5169 और पांसुकूला,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5167 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5168 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5169 कुम्मासा , संस्कृत कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, जो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में होता है (PSI yavayen kaḷ)

कोरांडापुप्फी, 5170 किन्नसुका, उपान्धदुस्सी, घाटदा, उदका, थुपकारक, नादागरी नौवां है, पियालाफलादायका।
यहां सौ आयतें हैं, और उससे नौ आयतें अधिक भी हैं।

किंखानिपुप्फिया अध्याय, पचासवाँ अध्याय।5171
इसके बाद अध्यायों का सारांश है: मतेय्या अध्याय, भद्दाली, 5172
और साकिंसममज्जका भी;
एक अध्याय [जिसका नाम] विभेतकी, जगती, सालपुप्फिया है,
Naḷamāla, Paŋsukūla,
और इस प्रकार5173 किंखाणिपुप्फिया.5174
यहां बयासी श्लोक हैं।
और चौदह सौ [और भी]।
दस अध्याय 5175 जिन्हें मतेय्या 5176 कहा जाता है।

पांचवां सौ5177 पूरा हो गया है।5178

अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षापात्र"), या फिर बिना खमीर की रोटी या जंकेट (पीएसआई: सिंह. रोटिया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला अर्थ अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5170 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5171 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5172 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5173 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5174 शाब्दिक अर्थ, "गया"
5175 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5176 lit., "गिर गया"

5177 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5178 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

कणिकारा अध्याय, इक्यावनवाँ

---

498. {501.}5179 तिनिकाणिकारापुफिया5180

सम्बुद्ध नामक सम्बुद्ध, बत्तीस महान लक्षणों को धारण करने वाले, एकांतप्रिय, सम्बुद्ध।
हिमालय तक आ गया। (1) [5359]

हिमालय में समाहित,
प्रधान, दयालु, ऋषि, कमल मुद्रा में आसीन,5181
बैठ गया, परम व्यक्ति। (2) [5360]

मैं उस समय जादूगर 5182 था।
[जो] आकाश में यात्रा कर सकता था;
अपना सुगठित त्रिशूल लेकर मैं
वह आकाश से होकर गुजर रहा था [ठीक वहीं]। (3) [5361]

जैसे पहाड़ पर आग जल रही हो, जैसे पंद्रहवें दिन चाँद चमक रहा हो,5183 बुद्ध जंगल में प्रज्वलित हुए, जैसे खिले हुए राजसी साल के पेड़ की तरह। (4) [5362]

जंगल के ऊपर से नीचे आते हुए,
बुद्ध की किरणें [सारे] अंतरिक्ष में फैल गईं,5184
नरकट की आग के रंग के साथ।5185
यह देखकर मेरा मन प्रसन्न हुआ। (5) [5362]

घूमते-घूमते मुझे एक फूल दिखाई दिया,
दिव्य सुगंध से युक्त एक डिनर प्लेट 5186। तीन फूल लिए हुए।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5179 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5180 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5181 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5182 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

5183 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5184 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5185 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

5186 lit., "गया"

मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया।5187 (6) [5363]

बुद्ध की महान शक्ति से, ठीक उसी समय मेरे वे तीनों फूल, जिनकी डंठलें ऊपर की ओर और पंखुड़ियाँ नीचे की ओर मुड़ी हुई थीं,
वे शिक्षक के लिए छाया बना रहे हैं। (7) [5364]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (8) [5365]

वहाँ मेरा सुनिर्मित महल है
इसे "डिनर-प्लेट" के नाम से जाना जाता था।5189
इसकी लंबाई साठ लीग थी।
[और यह] तीस लीग चौड़ा था। (9) [5366]

एक लाख शिखर,
एक मिल- कण्ड 5190 सेंट- भेण्डु 5191 [बड़ा], सोने का बना हुआ, झंडों से ढका हुआ,
उस हवेली पर मेरे लिए प्रकट हुआ। (10) [5367]

क्रिस्टल से बनी पालकी,
सोने से बना [या] रत्नों से बना, और माणिक्य से भी बना।
मैं जहाँ चाहूँ वहाँ जाऊँगा 5192 यदि मैं चाहूँ। (11) [5368]

और वहाँ एक महंगा बिस्तर था, जिसमें एक असेंबल किया हुआ गद्दा था, जिसके एक सिरे पर ऊनी कंबल था।
और [बहुत सारे] तकियों से सुसज्जित। (12) [5369]

महल से निकलकर, मैं दिव्य यात्राओं पर विचरण कर रहा हूँ, अपनी इच्छा के अनुसार चल रहा हूँ।
देवताओं की सभा द्वारा सम्मानित। (13) [5370]

5187 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

5188 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

5189 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

5190 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5191 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5192 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5193 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
5194 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

मैं नीचे फ्लावर्स5195 पर खड़ा हूँ;
मेरे ऊपर एक छत्र है।
हर तरफ सौ मील
डिनर-प्लेट [पेड़ों] से ढका हुआ है.5196 (14) [5371]

वहाँ साठ हजार वाद्ययंत्र शाम और सुबह मेरी सेवा में तत्पर रहते हैं।
वे लगातार मेरी देखभाल कर रहे हैं।
दिन-रात वे आलसी नहीं हैं। (15) [5372]

मुझे खेल और सुख-सुविधाओं में आनंद आता है;5197
इच्छाओं की कामना करते हुए, मैं आनंदित होता हूँ
नृत्य और गायन के कारण,
वहाँ तालवाद और भाषण। (16) [5373]

वहाँ खाने-पीने के बाद मैं तीस,5198 लोगों के बीच महिलाओं की टुकड़ियों के साथ आनंद मना रहा हूँ।
मैं अपने महान महल में आनंदित होता हूँ।5199 (17) [5374]

और मैंने वहां पांच सौ [अलग-अलग] बार दैवीय शासन का प्रयोग किया।
और तीन सौ [अलग-अलग] बार, मैं एक ऐसा राजा था जो शासन करता था। [और मैंने] स्थानीय शासन का भरपूर आनंद लिया।
गिनती से असंख्य। (18) [5375]5200

जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए, मुझे अनेक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं।
मेरे पास संपत्ति की कोई कमी नहीं है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (19) [5376]

मैं [केवल] दो अवस्थाओं में ही पुनर्जन्म लेता हूँ:
चाहे वह किसी देवता का हो या किसी मनुष्य का।
मुझे पुनर्जन्म की कोई अन्य अवस्था ज्ञात नहीं है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (20) [5377]

मैं दो उच्च कुलों, क्षत्रिय और ब्राह्मण में जन्मा हूँ।
मैं निम्न कुलों में जन्म नहीं लेता:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (21) [5378]

5195 लिट., "एक फूल पर"
5196 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5197 khiḍḍāratiyaÁ
5198 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
5199 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5200 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद पहले चरण में "नया" और दूसरे चरण में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

मुझे हाथी और घोड़े से चलने वाले वाहन, पालकी और रथ, सब कुछ प्राप्त हो रहा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (22) [5379]

दासों की टुकड़ियाँ, दासी कन्याओं की टुकड़ियाँ और सजी-धजी स्त्रियाँ।
मुझे ये सब मिल रहा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (23) [5380]

रेशमी कपड़ा, ऊनी कपड़ा,
मुझे खोमा का कपड़ा और सूती सामान भी मिल रहा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (24) [5381]

नए कपड़े और ताजे, शुद्ध फल, 5201 सबसे स्वादिष्ट भोजन,
मुझे ये सब मिल रहा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (25) [5382]

लोग कह रहे हैं, "इसे खाओ, आनंद लो।"
कृपया इस [सुंदर] बिस्तर पर लेट जाइए," मुझे यह सब मिल रहा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (26) [5383]

मुझे हर जगह सम्मान दिया जाता है5202 [और] मेरी बहुत ऊँची ख्याति है, मैं हमेशा बहुमत में रहता हूँ,5203
मेरे दल में कोई गुटबाजी नहीं है। मैं अपने रिश्तेदारों में सबसे श्रेष्ठ हूँ।
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (27) [5384]5204

मुझे सर्दी-जुकाम के बारे में जानकारी नहीं है, और न ही गर्मी के बारे में, और न ही तेज बुखार के बारे में। इसी तरह, मुझमें भी यह नहीं पाया जाता है।
मन [या] हृदय की पीड़ा। (28) [5385]

सुनहरे रंग का होने के कारण,
मैं जन्म-जन्मांतर तक जन्म लेता हूँ। मुझे कोई बुरा रंग नहीं पता।

यह बुद्ध- पूजा का फल है ।(29) [5386]

5201 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”
5202 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
5203 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
5204 pariḷāho
5205 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
5206 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)

देवताओं की दुनिया से गिरते हुए, मेरी पवित्र जड़ों से प्रेरित होकर,
मेरा पुनर्जन्म श्रावस्ती, 5207 में हुआ है।
एक धनी [कुल] में बड़े हॉल के साथ.5208 (30) [5387]

पांचों इंद्रिय सुखों का त्याग करना,5209
मैं बेघर हो गया। मेरी उम्र सिर्फ सात साल थी।
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (31) [5388]

मेरे गुणों को जानकर, बुद्ध
उस अद्भुत व्यक्ति ने [तब] मुझे नियुक्त किया। एक युवा बालक जो सम्मान के योग्य है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है ।(32) [5389]

“दिव्य दृष्टि” शुद्ध हो जाती है;
मैं ध्यान की अवस्थाओं में निपुण हूँ।5210
सिद्ध किए गए विशेष ज्ञान:
यह बुद्ध- पूजा का फल है ।(33) [5390]

विश्लेषणात्मक विधियों में निपुण, जादुई शक्तियों में पारंगत, विशेष ज्ञान में परिपूर्ण:
यह बुद्ध- पूजा का फल है ।(34) [5391]

तीस हजार युगों में
जब से मैंने बुद्ध की पूजा की है, तब से मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है ।(35) [5392]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (36) [5393]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (37) [5394]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

5207 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

5208 samādhikusalo ahaŋ

5209 iddhipādesu kovido

5210 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

5211 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है

5212 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (38) [5395]

इस प्रकार पूज्य तिणिकणिकारपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

टीणिकणिकारपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

499. {502.}5213 एकपट्टादायक5214

हंसवती नगर में,
मैं उस समय कुम्हार था।
मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
बाढ़ पार करने वाला, निष्कलंक। (1) [5396]

मैंने उन्हें सर्वश्रेष्ठ बुद्ध प्रतिमा भेंट की।
मिट्टी से बना एक सुंदर कटोरा। वह कटोरा बुद्ध को अर्पित करना,5215
ईमानदार व्यक्ति,5216 तटस्थ व्यक्ति, (2) [5397]

अस्तित्व में पुनर्जन्म होना,
मुझे सोने की प्लेटें 5217 और चांदी, सोने आदि से बने चपटे कटोरे 5218 प्राप्त हो रहे हैं।
और कुछ रत्नों से बने हुए; (3) [5398]

मुझे ये सभी व्यंजन बहुत पसंद आ रहे हैं:5219
यह अच्छे कर्मों का फल है।
मैं 5221 कटोरे बनाने का मालिक हूँ।
प्रसिद्ध और धनी लोगों के लिए। (4) [5399]

जैसे किसी बीज को उपजाऊ खेत में बोया जाता है:5222

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5213 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5214 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5215 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5216 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5217 शाब्दिक रूप से, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5218 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5219 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5220 lit., "गया"
5221 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5222 लिट., "गिर गया"

जब बारिश होती है, 5223 उचित समर्थन के साथ, 5224
फल किसान को प्रसन्न करता है;
इस प्रकार यह कटोरा दान भी है।
बुद्ध-क्षेत्र में अच्छी तरह से रोपित:
जब बारिश होती है, आनंद लाने वाली [बारिश,]5225
यह फल मुझे प्रसन्न करेगा। (5-6) [5400-5401]

योग्यता के क्षेत्र जहां तक मौजूद हैं —
यहां तक कि सभाएँ5226 और समूह5227 भी —
बुद्ध-क्षेत्र का कोई सानी नहीं है,5228
सभी को [महान] खुशी देना.5229 (7) [5402]

हे सुसंस्कृत व्यक्ति, आपकी प्रशंसा हो!5231
हे परम पुरुष, आपकी जय हो! एक कटोरा देने के बाद,
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (8) [5403]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह कटोरा दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (9) [5404]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (10) [5405]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [5406]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

5223 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5224 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5225 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5226 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5227 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
5228 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5229 लिट., “एक फूल पर”
5230 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5231 khiḍḍāratiyaÁ

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [5407]

इस प्रकार पूज्य एकपट्टडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

एकपट्टडायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

500. {503.}5232 कसुमरिफलदायक5233

मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
दुनिया का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, पुरुषों का बैल, पहाड़ की ढलान पर बैठा हुआ था।
डिनर-प्लेट ट्री की तरह चमक रहा है.5234 (1) [5408]

प्रसन्न, हृदय में आनंद लिए, हाथों को सिर पर जोड़कर, कासुमारी 5235 फल इकट्ठा करते हुए,
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को दे दिया। (2) [5409]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने वह फल [बुद्ध को] दे दिया, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ:
फल देने का फल यही है। (3) [5410]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5411]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5412]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5232 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5233 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5234 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5235 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5413]

इस प्रकार पूज्य कासुमारीफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कासुमारीफलदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 3.7 थेरपदाना
स्रोत: जेएस वाल्टर्स
नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अंतर्वस्तु

अपदाना: प्रमुख थेरा (प्रबुद्ध शिष्य) 501-559

---

501. {504.}5236 अवतफलिया5237

हे भगवान, सौ किरणों वाले, स्वयंभू, अजेय, अपने एकांत से उठ खड़े हुए।
भोजन की तलाश में निकले। (1) [5414]

हाथ में फल लिए हुए, मैंने पुरुषों के उस श्रेष्ठ बैल को आते हुए देखा। मैं प्रसन्न और आनंदित था।
मैंने उसे डंठल हटाकर फल दिए। (2) [5415]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने [उसे] वह फल [उस समय] दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (3) [5416]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5417]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5418]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5419]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5236 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5237 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5238 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

इस प्रकार पूज्य अवताफलीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अवताफलीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

502. {505.}5239 पैराफलिया5240

मैंने स्वर्णमय संबुद्ध, बलि ग्रहणकर्ता को देखा।
जो सड़क पर आ गए थे,
डिनर प्लेट के पेड़ की तरह चमक रहा है। (1) [5420]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने तब उसे पारा- फल5241 दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (2) [5421]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [5422]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [5423]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5424]

इस प्रकार पूज्य पारफलीय5242 थेरा ने ये श्लोक कहे।

पाराफलीय5243 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5239 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5240 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5241 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5242 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5243 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

503. {506.}5244 मातुलुंगफलदायका5245

मैंने विश्व के नेता को देखा, जो भोजन की थाली जैसे पेड़ की तरह चमक रहा था,5246 पंद्रहवें दिन के चंद्रमा की तरह,5247
दीपकों के वृक्ष की तरह प्रज्वलित। (1) [5425]

नींबू का फल लेने के बाद
फिर मैंने इसे शिक्षक को दे दिया।
उपहारों के योग्य, 5248 नायक,
[अपने] हाथों से अच्छा महसूस कर रहा हूँ-] प्रसन्न। (2) [5426]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह फल दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (3) [5427]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5428]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5429]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5430]

इस प्रकार पूज्य मातुलुंगफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मातुलंगफलदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5244 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5245 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5246 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5247 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5248 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

---

504. {507.}5249 अजेलाफलदायका5250

सम्बुद्ध का नाम अज्जुना5251 था
तब वे हिमालय में रहते थे।
वह अच्छे आचरण से संपन्न है,
ध्यान में निपुण,5252 ऋषि। (1) [5431]

पानी के जग के बराबर 5253
अजेला ,5254 जी'व'आजी'व'अका ,
[और] छाते के पत्ते भी ले रहे हैं,5255
मैंने [उन्हें] शिक्षक को दे दिया। (2) [5432]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह फल दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (3) [5433]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5434]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5435]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5436]

इस प्रकार पूज्य अजेलफलादायका5256 थेरा ने ये श्लोक कहे।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5249 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5250 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5251 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5252 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

5253 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5254 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5255 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

5256 लिट., "गया"

अजेलफलादायका5257 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

505. {508.}5258 अमोरफालिया5259

मैंने अमोरा 5260 नामक एक फल दिया।
स्वर्ण रंग के संबुद्ध को, बलि प्राप्तकर्ता को,
जो सड़क पर आ गए थे। (1) [5437]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह फल दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (2) [5438]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [5439]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [5440]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5441]

इस प्रकार पूज्य अमोरफालिया5261 थेरा ने ये श्लोक कहे।

अमोरफालिया5262 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

5257 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5258 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5259 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5260 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5261 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5262 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

---

506. {509.}5263 तलफलिया5264

हे भगवान, सौ किरणों वाले, स्वयंभू, अजेय, अपने एकांत से उठ खड़े हुए।
भोजन की तलाश में निकले। (1) [5442]

हाथ में फल लिए हुए, मैंने पुरुषों के उस श्रेष्ठ बैल को आते हुए देखा। मैं प्रसन्न और आनंदित था।
मैंने उसे ताड़ का फल दिया। (2) [5443]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने [उसे] वह फल [उस समय] दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:

फल देने का फल यही है। (3) [5444]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5445]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5446]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5447]

इस प्रकार पूज्य तालफलीय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तालफलीय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5263 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5264 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5265 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

507. {510.}5266 नाइकेरदायक5267

शहर में, बंधुमती,
मैंने तब एक आश्रम में काम किया।5268
मैंने निष्कलंक बुद्ध को देखा।
[जो] आकाश में यात्रा कर रहा था। (1) [5448]

एक नारियल लेने के बाद,
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को दे दिया। आकाश में विराजमान, शांत स्वभाव वाले,
महान ख्यातिवान ने इसे स्वीकार किया। (2) [5449]

अत्यंत स्पष्ट मन से, बुद्ध को वह फल अर्पित करने के बाद, जो मेरे लिए आनंद का स्रोत था, इस संसार में सुख लाने वाला था, तब मुझे महान आनंद और विशाल, परम सुख प्राप्त हुआ।
सचमुच एक अनमोल रत्न का निर्माण हुआ था।
[मैं,] यहाँ-वहाँ पुनर्जन्म ले रहा हूँ।5269 (3-4) [5450-5451]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय [बुद्ध को] फल दिए थे, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (5) [5452]

दिव्य दृष्टि शुद्ध हो जाती है;
मैं ध्यान की अवस्थाओं में निपुण हूँ।5270
सिद्ध किए गए विशेष ज्ञान:
फल देने का फल यही है। (6) [5453]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [5454]

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में होना

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5266 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5267 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5268 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5269 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5270 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [5455]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [5456]

इस प्रकार पूज्य नालिकराडायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नालिकरदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: कणिकार और एकपट्टा
Kāsumārī, thus Āvaṭa,
पारा5271 और मातुलुंगा [भी], अजेला, अमोरा भी,5272
ताला और इस प्रकार नालिकेरा:
यहां जिन आयतों की गिनती की गई है, उनकी संख्या ठीक सौ है, इससे कम या ज्यादा नहीं।5273

कणिकारा अध्याय, इक्यावनवाँ अध्याय 5274

कुरेंजियफलदायक 5275 अध्याय, बावनवाँ

---

508. {511.}5276 कुरेंजियाफलदायका5277

मैं पहले शिकारी था।
उस समय मैं जंगलों में घूम रहा था। मैंने बुद्ध की प्रतिमा देखी, स्टेनलेस वन।
[जो] हर चीज का स्वामी था। (1) [5457]

5271 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5272 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

5273 lit., "गया"

5274 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5275 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5276 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5277 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

कुरेंजिया 5278 फल ले जा रहा है ,
मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, पुण्य के क्षेत्र, नायक को दिया।
[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (2) [5458]

पिछले इकत्तीस युगों में

मैंने उस समय [उसे] वह फल दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (3) [5459]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5460]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5461]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5462]

इस प्रकार पूज्य कुरेंजियफलदायका5279 थेरा ने ये श्लोक कहे।

कुरेंजियफलदायका5280 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

509. {512.}5281 कपित्थफलदायक5282

मैंने स्वर्ण रंग के संबुद्ध, बलि प्राप्तकर्ता को लकड़ी का सेब5283 नामक फल दिया।
जो सड़क पर आ गए थे। (1) [5463]

5278 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
5279 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5280 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5281 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5282 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5283 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह फल दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (2) [5464]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [5465]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [5466]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5467]

इस प्रकार पूज्य कपित्थफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कपित्थफलदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

510. {513.}5284 कोसुम्भफलिया5285

मैंने मार्गोसा5286 [फल] दिया
स्वर्ण रंग के संबुद्ध, देवताओं के देवता, मनुष्यों के बैल,
जो सड़क पर आ गए थे। (1) [5468]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उस समय [उसे] वह फल दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। (2) [5469]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5284 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5285 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5286 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [5470]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [5471]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5472]

इस प्रकार पूज्य कोसुम्भाफालिया5287 थेरा ने ये श्लोक कहे।

कोसुम्भाफालिया5288 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

511. {514.}5289 केतकपुफिया5290

परम पुरुष विनाता नदी के तट पर निवास करते थे।
मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
शांत व्यक्ति,5292 बहुत संयमित व्यक्ति.5293 (1) [5473]

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।
मैंने [तब] चीड़ के फूल से सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की पूजा की,5294
शहद जैसी सुगंध के साथ। (2) [5474]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उसे तब वह फूल दिया था।

5287 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

5288 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5289 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5290 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

5291 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5292 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

5293 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5294 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5295 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [5475]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5476]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5477]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5478]

इस प्रकार पूज्य केतकपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

केतकापुफिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

512. {515.}5296 नागपुप्पिया5297

मैंने आयरनवुड5298 फूल दिया
स्वर्ण रंग के संबुद्ध को, बलि प्राप्तकर्ता को,
जो सड़क पर आ गए थे। (1) [5479]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उसे तब वह फूल दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
फल देने का फल यही है। (2) [5480]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [5481]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5296 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5297 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5298 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [5482]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5483]

इस प्रकार पूज्य नागपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नागपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

513. {516.}5299 अज्जुनपुफिया5300

उस समय मैं चंदाभागा नदी के किनारे पर किन्नरा 5301 हुआ करता था।
मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
स्वयं-निर्मित, अजेय। (1) [5484]

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।
विस्मय से, हाथ जोड़कर, अर्जुन का फूल लेते हुए।
मैंने स्वयं-एक हो जाने की पूजा की। (2) [5485]

उस कर्म के उत्तम कर्मफल के कारण, दृढ़ निश्चय और संकल्प के साथ, मैंने अपना किन्नर शरीर त्याग दिया।
मैं तब तावतिंसा गया। (3) [5486]

देवताओं के स्वामी ने चौंतीस बार वहां दिव्य शासन किया।
और दस बार एक पहिया घुमाने वाला राजा,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5299 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5300 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5301 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5302 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

5303 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5304 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मैंने आधिपत्य का प्रयोग किया।5305 (4) [5487]

[वहाँ] स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव था।
[जैसे] एक अच्छे खेत में बोया गया बीज5306
स्वयं-एकत्व में मेरा है। (5) [5488]

मेरे लिए अच्छा कर्म फल मिला; मैं बेघर हो गया। आज मैं सम्मान का पात्र हूँ।
बुद्ध के 5307 युग में। (6) [5489]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [5490]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [5491]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [5492]

इस प्रकार पूज्य अजुनपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अजजुनापुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

514. {517.}5308 कुटजपुफिया5309

हिमालयी क्षेत्र में,
कावला नाम का एक पहाड़ है।5310

5305 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5306 lit., "गया"
5307 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5308 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5309 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5310 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

बुद्ध ने सुदस्सन का नाम रखा।
पहाड़ की ढलान पर रह रहा था। (1) [5493]

हिमालयी फूल लेकर,
मैंने उस समय आकाश में यात्रा की। मैंने निर्मल बुद्ध को देखा।
बाढ़ पार करने वाला,5311 अछूता.5312 (2) [5494]

शीतकालीन चेरी के फूल को लेते हुए,
मैंने उसे उसी वक्त उसके सिर पर रख दिया। मैंने उसे बुद्ध को अर्पित किया।
स्वयं-एक हो जाओ, महान ऋषि। (3) [5495]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उसे वह फूल भेंट किया।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (4) [5496]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [5497]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5498]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [5499]

इस प्रकार पूज्य कुटजपुप्पिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कुटजपुप्पिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

5311 रत्तंबरधरो , लिट., "लाल अम्बरा धारण करने वाला।" धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

5312 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5313 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

---

515. {518.}5314 घोसासन्नका5315

उस समय मैं जंगल में एक छोटे से बाग में हिरण का शिकार करता था।
मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
देवताओं की सभा द्वारा सम्मानित।5316 (1) [5500]

चार आर्य सत्यों की व्याख्या,
वह अमरता का उपदेश दे रहा था। मैंने उसकी मधुर शिक्षा सुनी।
सिख धर्म का, विश्व का रिश्तेदार। (2) [5501]

मैंने अद्वितीय, बेजोड़ की ध्वनि से अपने हृदय को प्रसन्न किया।5317
वहाँ मेरा मन प्रसन्न हो जाने के बाद,
मैंने अस्तित्व को पार किया, पार करना कठिन है। (3) [5502]

पिछले इकत्तीस युगों में
मुझे तब यह धारणा प्राप्त हुई, और तब से मैंने बुरे पुनर्जन्मों के बारे में कुछ नहीं जाना है:
यह ध्वनि को समझने का फल है। (4) [5503]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [5504]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5505]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [5504 (5506)]5318

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5314 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5315 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5316 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह जौ से बना कोई भोजन है।
5317 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5318 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

इस प्रकार पूज्य घोषासञ्ञक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

घोषासञ्ञक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

516. {519.}5319 सब्बाफलदायका5320

उस समय मेरा नाम वरुण था, जो मंत्रों का एक ब्राह्मण गुरु था।
दस बेटों को त्यागने के बाद,
फिर मैं जंगल में घुस गया। (1) [5505]

एक सुगठित, सुव्यवस्थित और सुंदर आश्रम बनाकर, पत्तों का एक हॉल बनाकर, मैं जंगल में रह रहा हूँ। (2) [5506]

पदुमुत्तरा, विश्व-ज्ञानी, यज्ञ-प्राप्तकर्ता
मुझे ऊपर उठाने की इच्छा के साथ,

[तब] मेरे आश्रम में आ गया। (3) [5507]

उस पूरे वनक्षेत्र में, उनके प्रकाश की एक विशाल चमक फैली हुई थी।
बुद्ध की विशेष शक्तियों द्वारा5323
उसने उस समय जंगल को रोशन कर दिया था। (4) [5508]

उस 5324 चमत्कार को देखने के बाद
सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, तटस्थ व्यक्ति, पत्तों से बना थैला लिए हुए,5325
मैंने उस समय इसे फलों से भर दिया। (5) [5509]

बुद्ध के पास जाकर,
मैंने उसे फल थैली के साथ दे दिए।5326

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5319 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5320 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5321 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5322 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

5323 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5324 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5325 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

5326 lit., "गया"

बुद्ध ने मुझ पर दया करते हुए कहा,
उन्होंने [उस समय मुझसे] ये शब्द कहे: (6) [5510]

" खारी भार लाने के बाद, तुम मेरे पीछे-पीछे आ जाना, और जब सभा इसे खा लेगी,
आपके लिए अच्छा कर्म होगा। (7) [5511]

उस पत्तों से भरे थैले को लेकर,5330 मैं
इसे भिक्षुओं की सभा को दे दिया।
वहाँ अपने मन को प्रसन्न करने के बाद, मेरा पुनर्जन्म तुसिता में हुआ। (8) [5512]

वहाँ, मेरे अच्छे कर्मों से बंधे होने के कारण, मैं हर समय आनंद ले रहा हूँ।

मेरे लिए प्रस्तुत किए गए नृत्य और गीत,
और वे भाषण जो दिव्य हैं। (9) [5513]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ, मेरे पास संपत्ति की कोई कमी नहीं होगी:
फल देने का फल यही है। (10) [5514]

बुद्ध को फल देने के बाद,5332
मैं आधिपत्य का प्रयोग कर रहा हूँ
चारों महान महाद्वीपों के माध्यम से,
जिसमें महासागर और पर्वत शामिल हैं। (11) [5515]

जहां तक वे पक्षियों के झुंड आकाश में उड़ रहे हैं, वे
मेरे अधिकार का पालन भी करो5333:
फल देने का फल यही है। (12) [5516]

सभी आत्माएँ,5334 भूत,5335 और राक्षस, कुंभण्ड और गरूण ,

5327 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5328 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
5329 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5330 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में, मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंढ (भाग, अंश, गांठ, एक छोटी माप), सौ भेंदु। " [लंबा? मोटा?]"।
5331 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5332 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5333 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
5334 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा जा रहा है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5335 लिट., “एक फूल पर”

उस जंगल में उस उपवन में, मेरी सेवा करने के लिए मेरे पास आओ। (13) [5517]

कछुए [और] कुत्ते5336 [और] मधुमक्खियाँ, मक्खियाँ5337 और मच्छर5338 वे भी5339 मेरे अधिकार का पालन करते हैं:
फल देने का फल यही है। (14) [5518]

सुपर्ण कहलाने वाले पक्षी, जो पक्षियों से उत्पन्न होते हैं, लेकिन उनमें बहुत शक्ति होती है, वे भी मेरी शरण में आते हैं:
फल देने का फल यही है। (15) [5519]

नाग-देवता जो दीर्घायु, महाशक्तियों और महान प्रसिद्धि से परिपूर्ण हैं; वे भी मेरे अधिकार का पालन करते हैं।
फल देने का फल यही है। (16) [5520]

शेर, बाघ और तेंदुए,
भालू,5341 भेड़िये,5342 k'ara bānā भालू;5343 वे भी मेरे अधिकार का पालन करते हैं:
फल देने का फल यही है। (17) [5521]

जो लोग जड़ी-बूटियों5344 और घास5345 में रहते हैं
और वे भी जो आकाश में रहते हैं;
वे सब मुझसे शरण लेने आते हैं:
फल देने का फल यही है। (18) [5522]

देखना मुश्किल है 5346 [और] बहुत सूक्ष्म, गहरा, बहुत अच्छी तरह से स्पष्ट किया गया;
उस शिक्षा को देखकर मैं निवास करता हूँ:
फल देने का फल यही है। (19) [5523]

देखी गई आठ मुक्तियाँ,
मैं अब निर्मल अवस्था में निवास कर रहा हूँ;
ऊर्जावान, बुद्धिमान:

5336 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5337 khiḍḍār'ati'y'ā
5338 टाइडेस , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
5339 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5340 नवा , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
5341 शाब्दिक रूप से, " पूजा" "
5342 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
5343 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
5344 pariḷāho
5345 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
5346 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)

फल देने का फल यही है। (20) [5524]

वे बुद्ध के पुत्र, जो आठ फलों से परिपूर्ण, दोषरहित और अत्यंत प्रसिद्ध थे,
मैं भी अब उनमें से एक हूँ:
फल देने का फल यही है। (21) [5525]

विशेष ज्ञान में महारत हासिल करना, मेरी उत्तम जड़ों से प्रेरित होना, सभी दोषों को भली-भांति जानना,
मैं अब भी बेदाग़ जीवित हूँ। (22) [5526]

तीन ज्ञान, शक्तियाँ5347 प्राप्त, बुद्ध के पुत्र हैं, जो अत्यधिक प्रसिद्ध हैं, और जिन्हें "दिव्य श्रवण" की शक्ति प्राप्त है:
मैं भी अब उनमें से एक हूँ। (23) [5527]

एक लाख युगों में,
जब से मैंने उसे वह फल दिया है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
फल देने का फल यही है। (24) [5528]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (25) [5529]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (26) [5530]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (27) [5531]

इस प्रकार पूज्य सब्बफलदायका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सब्बफलदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

5347 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

---

517. {520.}5348 पदुमधारिया5349

हिमालय पर्वतमाला के निकट,
रोमासा नाम का एक पहाड़ है।5350
संभव के नाम से जाने जाने वाले बुद्ध
फिर वह वहाँ खुले में रहने लगा। (1) [5532]

अपने निवास से बाहर निकलते हुए,
मैं उसके लिए एक कमल का फूल लाया। एक ही फूल लाने के बाद,
मैं पुनर्जन्म की ओर आगे बढ़ा। (2) [5533]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उसे वह फूल भेंट किया।
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [5534]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5535]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5536]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5537]

इस प्रकार पूज्य पद्मधारिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पद्मधारिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

समीक्षा:

5348 अपदाना नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5349 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5350 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया))। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5351 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5352 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

कुरेंजिया और कपित्था, कोसुम्भा, केतका, नागपुप्प, अज्जुना, कुटजी, घोसासन्याका और सब्बाफलदा थेरा,
फिर पदुमधारिका [दसवां]:
यहां अस्सी श्लोक हैं, इसके अलावा
उस [संख्या] से तीन श्लोक अधिक।

कुरेंजियाफलदायक अध्याय, बावनवाँ अध्याय (5353)

तिणदायक 5354 अध्याय, तिरपनवाँ

518. {521.}5355 तिनामुथिदायक5356

हिमालयी क्षेत्र में,
वहाँ लंबका नाम का एक पर्वत है।5357
संबुद्ध, उपतिस्सा,
खुली हवा में इधर-उधर चलते रहे। (1) [5538]

उस समय मैं जंगल में एक छोटे से बाग में हिरण का शिकार करता था।
देवताओं में श्रेष्ठ उस ईश्वर को देखकर,
फिर मैंने मुट्ठी भर घास दी। (2) [5539]

इसे बुद्ध को देने के लिए
वहाँ बैठकर, मैंने अपने मन को प्रसन्न किया। संबुद्ध को प्रणाम करते हुए, मैंने
[तब] उत्तर की ओर मुख करके प्रस्थान किया। (3) [5540]

कुछ समय बाद ही, जानवरों का एक राजा5358
यात्रा के दौरान मुझे चोट लगी।5359

5353 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5354 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5355 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

5356 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5357 रत्तंबरधरो , लिट., “लाल अम्बरा धारण करने वाला।” धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

5358 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5359 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

उस शेर द्वारा गिराए जाने पर,
मैं वहीं मर गया। (4) [5541]

जब मैंने सर्वश्रेष्ठ बुद्ध, निष्कलंक बुद्ध के लिए वह कर्म किया, 5360 तो वह तुरंत 5361 तीर की तरह छूट गया।
मैं देवताओं के लोक में गया। (5) [5542]

मेरी प्यारी बलिदानी पोस्ट 5362
good5363 कर्म द्वारा बनाया गया
was mil- kaṇḍa 5364 cent- bheṇḍu 5365 [large]
सोने से बना, झंडों से ढका हुआ। (6) [5543]

अपनी शानदार रोशनी बिखेरते हुए,
जैसे सौ किरणों वाला [सूर्य] उदय हुआ हो, वैसे ही यह दिव्य कन्याओं से भरा हुआ है।
मुझे वहाँ बहुत आनंद आया। (7) [5544]

देवताओं के लोक से गिरकर, अपनी पवित्र जड़ों से प्रेरित होकर, मानव अवस्था में वापस लौटकर,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया।5366 (8) [5545]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उसे बैठने के लिए जगह दी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
मुट्ठी भर घास का फल। (9) [5546]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (10) [5547]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [5548]

5360 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5361 lit., "गया"
5362 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5363 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
5364 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5365 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5366 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [5549]

इस प्रकार पूज्य तिनमुट्ठिदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तिनमुट्ठिदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

519. {522.}5367 पेच्चदायक5368

मैंने एक पेच्चा उपहार में दिया । कहते हैं] उपहार में दी , 5369
अत्यंत प्रसन्नता के साथ, दोनों हाथों से, भगवान विपस्सी को प्रणाम करता हूँ।
दुनिया का सबसे अच्छा, तटस्थ। (1) [5550]

हाथी और घोड़े जैसे वाहन, दिव्य वाहन प्राप्त होते हैं; यह सब एक पेच्छा के उपहार के कारण होता है। ।
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (2) [5551]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उसे वह पेक्का दिया दिया था , मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
पेच्चा देने का फल । (3) [5552]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (10) [5553]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [5554]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5367 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5368 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5369 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [5555]

इस प्रकार पूज्य पेच्चादायक5370 थेरा ने ये श्लोक कहे।

पेच्चादायक5371 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

520. {523.}5372 सारनागमानिया5373

उस समय हम एक नाव पर सवार हुए, भिक्षु और मैं,5374 एक अजीवक ।
जब नाव टुकड़े-टुकड़े हो गई,
उस बौद्ध भिक्षु ने मुझे शरण दी। (1) [5556]

पिछले इकत्तीस युगों में
उन्होंने मुझे [उस समय] शरण दी थी, मुझे कभी भी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
शरण लेने का फल। (2) [5557]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [5558]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [5559]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5560]

इस प्रकार पूज्य सरणागमनिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सरणागमनिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

5370 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

5371 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5372 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5373 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

5374 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

---

521. {524.}5375 अभांजनदायक5376

शहर में, बंधुमती,
मैं शाही बगीचे में रहता था।
तब मैंने हिरण के चमड़े के वस्त्र पहने थे,5377
पानी के बर्तन का वाहक। (1) [5561]

मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
स्वयं-निर्मित, अजेय, ऊर्जावान, 5378 ध्यानी,
समाधि के प्रेमी, उस्ताद, 5379
हे जलप्रपात पार करने वाले, निष्कलंक, समस्त सुखों में सफल। उन्हें देखकर प्रसन्न और प्रसन्न।
मैंने उसे कुछ मरहम दिया। (2-3) [5562-5563]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने तब उसे वह मरहम दिया था, और तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
वह मरहम का फल है। (4) [5564]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [5565]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5566]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [5567]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5375 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5376 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5377 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5378 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

5379 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5380 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

इस प्रकार पूज्य अब्भंजनदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अब्भंजनदायका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

522. {525.}5381 सुपतादायक5382

विश्व के नेता विपस्सी दोपहर की नींद से उठ रहे थे।
हल्के कपड़े का एक अच्छा टुकड़ा देना,5383
तब मुझे स्वर्ग में आनंद आया। (1) [5568]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उसे कपड़े का वह अच्छा टुकड़ा दिया,5384
मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:
अच्छे कपड़े का फल.5385 (2) [5569]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [5570]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [5571]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5572]

इस प्रकार पूज्य सुपटाडायक5386 थेरा ने ये श्लोक कहे।

सुपटाडायक5387 थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5381 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5382 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5383 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5384 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5385 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5386 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5387 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

523. {526.}5388 दण्डदायक5389

जंगल में डूबा हुआ, वनों में,
मैंने उस समय कुछ बांस काटे थे। एक छड़ी लेकर,5390
मैंने इसे विधानसभा को दे दिया।5391 (1) [5573]

मेरे मन में उमड़ी खुशी के कारण, "आपको सुख मिले!" कहकर मैंने वह छड़ी आपको भेंट की।
मैं उत्तर की ओर मुख करके चला गया। (2) [5574]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उस समय [भिक्षुओं को] वह छड़ी दी थी, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:
छड़ी देने का यही फल है। (3) [5575]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5576]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5577]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5578]

इस प्रकार पूज्य दंडदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

दंडदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5388 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5389 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5390 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5391 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

---

524. {527.}5392 गिरीनेलपूजक5393

मैं पहले शिकारी था।
उस समय मैं जंगलों में घूम रहा था। मैंने बुद्ध की प्रतिमा देखी, स्टेनलेस वन।
[जो] हर चीज का स्वामी था। (1) [5579]

प्रसन्नता से, अपने हृदय में आनंद लिए, मैंने 5394 गिरिनिल 5395 फूल अर्पित किए
दयालु के लिए,
डिलाइटर,5396 सभी प्राणियों का मित्र.5397 (2) [5580]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उसे वह फूल भेंट किया था, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (3) [5581]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [5582]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [5583]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5584]

इस प्रकार पूज्य गिरिनलापूजक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

गिरीनेलापूजक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5392 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5393 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5394 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5395 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5396 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5397 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5398 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

---

525. {528.}5399 बोधिसम्मज्जका5400

पहले मैं स्तूप के प्रांगण में गिरे बोधि के पत्ते उठाता था।
और [झाड़ू लगाने के बाद] उन्हें फेंक दिया।
मैंने [तब] बीस गुण प्राप्त किए:5401 (1) [5585]

उस कर्म के बल पर, जन्म-जन्मांतर करते हुए, मैं [केवल] दो अवस्थाओं में जन्म-जन्मांतर करता हूँ:
वह किसी देवता का हो, या किसी मनुष्य का। (2) [5586]

देवताओं के लोक से गिरकर, मनुष्य रूप में आकर, मेरा जन्म [केवल] दो कुलों में हो रहा है:
क्षत्रिय और ब्राह्मण। (3) [5587]

मेरे अंग परिपूर्ण हैं, उचित लंबाई और परिधि के साथ; मैं बहुत सुंदर और भव्य हूँ।
[के साथ] पूर्ण अंग, कोई कमी नहीं। (4) [5588]

देवताओं के लोक में हो या मनुष्यों के लोक में, मैं जिस भी स्थान पर पुनर्जन्म लूं, जीवन भर सुनहरे रंग का ही रहूंगा।
पिघले हुए सोने से तुलना की जानी है।5402 (5) [5589]

5403 पूरी तरह से फेंके गए बोधि पत्तों के कारण, मेरी बाहरी त्वचा हर समय
लचीला [और] नरम [और] चिकना है,5404
[और] एक बहुत छोटे लड़के की तरह बढ़िया।5405 (6) [5590]

जब मेरा शरीर उठ खड़ा हुआ
पुनर्जन्म की किसी भी अवस्था में,5406

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5399 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5400 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
5401 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5402 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5403 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5404 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5405 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5406 lit., “गया”

मैं धूल-मिट्टी से सना हुआ नहीं हूँ:5407
5408 फेंके गए पत्तों का परिणाम। (7) [5591]

जब गर्मी हो या जलती हुई हवा हो, या उस पर आग की गर्मी हो,
मेरे शरीर से पसीना नहीं निकलता:
फेंके गए पत्तों का परिणाम। (8) [5592]

मेरे शरीर पर दाद नहीं है,5409
चकत्ते,5410 फोड़े,5411 कुष्ठ रोग,5412
और इसी प्रकार [न तो] तिल5413 [और न ही] फोड़े:5414
फेंके गए पत्तों का परिणाम। (9) [5593]

और इसका एक और गुण है, जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म होना;
मेरे शरीर में कोई बीमारी नहीं है:5415

फेंके गए पत्तों का परिणाम। (10) [5594]

और इसका एक और गुण है, जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म होना;
ऐसी कोई पीड़ा नहीं है जो मन से उत्पन्न हो:
फेंके गए पत्तों का परिणाम। (11) [5595]

और इसका एक और गुण है, जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म होना;
इसके कोई शत्रु नहीं हैं:5416
फेंके गए पत्तों का परिणाम। (12) [5596]

और इसका एक और गुण है, जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म होना; संपत्ति की कोई कमी नहीं होती:
फेंके गए पत्तों का परिणाम। (13) [5597] और इसमें एक और गुण है,

---

5407 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5408 lit., "गिर गया"
5409 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5410 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5411 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5412 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5413 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
5414 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5415 लिट., "एक फूल पर"
5416 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

जन्म-जन्मांतर होना;
पानी में कोई डर नहीं होता।
न ही आग से, न राजाओं से, और न ही चोरों से। (14) [5598]

और इसका एक और गुण है, जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म होना;
दास और दासी महिलाएं मेरी सेवा कर रही हैं।
[उनके] दिलों के अनुसार.5418 (15) [5599]

जब वह 5419 मानव अवस्था में जन्म लेता है, तो जीवनकाल के किसी भी माप के साथ, वह जीवनकाल फिर कम नहीं होता है।
यह जीवनकाल की पूरी सीमा तक रहता है। (16) [5600]

मेरे शहर और देश के लोग, जो अंदर और बाहर घूमते रहते हैं, हर समय व्यस्त रहते हैं।
बढ़ने और खुश रहने की इच्छा।5421 (17) [5601]

मैं धनी, प्रसिद्ध और वैभवशाली हूँ;
मेरे रिश्तेदारों की तरफ से।
कांपने और भूतों के भय से मुक्त,5422
प्रत्येक जीवन से [प्रत्येक नए] जीवन तक। (18) [5602]

देवता [और] मनुष्य [और] टाइटन्स5423 [साथ ही], संगीत-अप्सराएँ, आत्माएँ5424 [और] राक्षस;5425 वे हमेशा मेरी रक्षा करते हैं,
अस्तित्व में पुनर्जन्म लेते हैं। (19) [5603]

देवताओं और मनुष्यों दोनों के लोक में प्रसिद्धि प्राप्त करने के बाद,
अंत में मैंने [अब] प्राप्त कर लिया है
शांतिपूर्ण, अतुलनीय निर्वाण। (20) [5604]

धनवान व्यक्ति के लिए जो 5426 पुण्य अर्जित करता है, संबुद्ध का उल्लेख करते हुए,
या शिक्षक का बोधि,

5417 khiḍḍār'ati'y'ā
5418 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
5419 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5420 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।
5421 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”
5422 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
5423 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
5424 pariḷāho
5425 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
5426 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)

ऐसी कौन सी चीज़ है जिसे प्राप्त करना कठिन है? [5605]5427

धर्म में मार्ग-फल के मामले में दूसरों से श्रेष्ठ होना,
समाधि की अवस्था में, विशेष ज्ञान, सद्गुण;
मैं निर्वाण प्राप्त करता हूँ, निष्कलंक। (21) [5606]

पहले, प्रसन्न मन से,
मैंने बोधि के उन पत्तों को फेंक दिया;5428
इन बीस [गुणों] से संपन्न 5429
मैं हर समय विद्यमान हूँ। (22) [5607]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (23) [5608]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) [5609]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [5610]

इस प्रकार पूज्य बोधिसम्मज्जक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बोधिसम्मज्जक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

526. {529.}5430 अमाण्डफलदायक5431

विजेता, पद्ममुत्तरा, सर्वज्ञ थे। ध्यान से उठते हुए,5432

5427 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

5428 samādhikusalo ahaŋ

5429 iddhipādesu kovido

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5430 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5431 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5432 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

विश्व नेता इधर-उधर टहलते रहे। (1) [5611]

खारी भार लेने के बाद ,
मैं उस समय फल ले जा रहा था।
मैंने निर्मल बुद्ध की प्रतिमा देखी।
महान ऋषि इधर-उधर टहल रहे थे। (2) [5612]

प्रसन्नता से भरे हृदय से, हाथों को सिर पर जोड़कर, संबुद्ध को प्रणाम करते हुए,

मैंने उसे अरंडी का फल दिया।5433 (3) [5613]

उस समय मैंने जो फल दिया था, उसके बाद से लेकर अब तक लाखों युगों में मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
यह अरंडी के तेल का फल है। (4) [5614]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [5615]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [5616]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [5617]

इस प्रकार पूज्य आमण्डफलदायक थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आमण्डफलदायक थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

527. {530.}5434 सुगंधा5435

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में
ब्रह्मा के संबंधी, महान यशस्वी,

5433 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
{बड़े कोष्ठकों} में दिए गए 5434 अपदान क्रमांक BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें अधिक जानकारी शामिल है।
यह अनुवाद की मुख्य क्रमांकन प्रणाली को निर्धारित करने वाले पीटीएस संस्करण की तुलना में व्यक्तिगत कविताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
5435 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

उनके वंश के माध्यम से कस्सपा नाम दिया गया,5436
सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता,5437 [बुद्ध] का उदय हुआ। (1) [5617]5438

अस्सी छोटे चिह्नों से युक्त, बत्तीस बड़े चिह्नों को धारण करने वाला, 5439 फ़ैदम-विशाल आभा वाला,
प्रकाश-किरणों के जाल में चला गया,5440 (2) [5618]

चंद्रमा की तरह सुखदायक, सूर्य के समान प्रकाश का स्रोत, वर्षा के बादल के समान प्यास बुझाने वाला।
समुद्र की तरह रत्नों की खान, (3) [5619]

पृथ्वी के समान नैतिक मूल्यों के माध्यम से; आकाश के समान ज्ञान के माध्यम से; ध्यान के माध्यम से5442
हिमालय की तरह; हवा की तरह
वह किसी बात पर अडिग नहीं रहता। (4) [5620]

एक समय में, हे महान ऋषि, जो असंख्य लोगों के बीच विश्वासयोग्य हैं,5443 [महान] सत्यों की व्याख्या कर रहे हैं।
[और] जनता को ऊपर उठाना। (5) [5621]

उस समय मैं बनारस में एक करोड़पति का बेटा था, बहुत मशहूर था।
उस समय मैं मास्टर5444 था
पर्याप्त धन और अनाज। (6) [5622]

पैदल घूमते हुए,
मैं "हिरण-पार्क"5445 [वन] तक आया।
वहाँ मैंने बुद्ध के समान एक प्रतिमा देखी।
जो स्पष्ट और मनमोहक शब्दों में अमरता की अवस्था का उपदेश दे रहा था।

5436 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5437 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5438 शाब्दिक अर्थ, "जाना," संदर्भ को देखते हुए अन्यत्र "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5439 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5440 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5441 शाब्दिक अर्थ, "गया"
5442 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5443 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
5444 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5445 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए लैटिन शब्द "हजार" और "सौ" के संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

कोयल की मधुर ध्वनि के साथ, हंस या ढोल की आवाज के साथ,
लोगों को समझाना। (7-8) [5623-5624]

उस ईश्वर को देखकर जो देवताओं से भी ऊपर है,
और उसकी मीठी-मीठी बातें सुनकर, उसने काफी धन-संपत्ति त्याग दी थी,
मैं बेघर हो गया। (9) [5625]

इस प्रकार, थोड़े ही समय में, वे एक अत्यंत विद्वान भिक्षु बन गए।
मैं धम्म का प्रचारक बन गया।
विविध बुद्धि होना। (10) [5626]

तब विशाल जनसमूह के बीच, मैं प्रसन्न मन से बार-बार बुद्ध के स्वर्णिम रंग की प्रशंसा करता रहा।
[उसकी] सुंदरता की प्रशंसा करने में कुशल:5447 (11) [5627]

"यह बुद्ध हैं, जो निष्कलंक हैं,5448
स्पष्ट, 5449 संदेह दूर, 5450
जिसके सारे कर्म नष्ट हो गए हों,5451
शर्तों के अंत में मुक्त.5452 (12) [5628]

ये हैं भगवान बुद्ध;
वह अतुलनीय है, वह शेर है।
ब्रह्मा-चक्र का टर्नर 5453
देवताओं सहित दुनिया के लिए; (13) [5629]

वश में करने वाला, वश में करने वाला, शांतिप्रिय
द अपीज़र,5454 ब्लोन आउट,5455 द सेज,5456
द क्वेंचर5457 और द कम्फर्टेड,5458

बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में 5446 में कई भिन्नताओं के साथ 'गेण्डु' लिखा है । कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।

5447 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

5448 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)

5449 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

5450 लिट., "एक फूल पर"

5451 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

5452 khiḍḍār'ati'y'ā

5453 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

5454 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

5455 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

5456 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "

5457 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

5458 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी

लोगों का दिलासा देने वाला 5459; (14) [5630]

नायक, ईश्वर, ज्ञानी, बुद्धि, करुणामय, स्वामी, विजेता और विजयी
पुनर्जन्म नहीं होना, 5460 बेघर एक; 5461 (15) [5631]

वासना रहित, 5462 अडिग, बुद्धिमान, 5463
अविभाजित, अद्वितीय, 5464 ऋषि, 5465
जुए का वाहक,5466 बैल, हाथी, शेर, इंद्र5467 गुरुओं में; (16) [5632]

भावहीन व्यक्ति, 5468 निर्मल व्यक्ति, 5469 ईश्वर, 5470
वक्ताओं के ईश्वर, 5471 दोष-त्यागी, 5472
अबाधित5473 और दुःख से मुक्त,5474
अद्वितीय,5475 संयमित,5476 शुद्ध एक;5477 (17) [5633]

ब्राह्मण,5478 भिक्षु5479 [और] भगवान,5480
चिकित्सक 5481 [और] सर्जन 5482
योद्धा, 5483 बुद्ध, पवित्र विद्या, 5484

5459 pariḷāho
5460 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
5461 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
5462 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
5463 samādhikusalo ahaŋ
5464 iddhipādesu kovido
5465 शाब्दिक रूप से, "पूजा की"
5466 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
5467 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।
5468 महाभिऽसक्कसंकाऽसो
5469 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ
5470 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
5471 दिट्ठिगण्ड°
5472 लोकापज्जोटो
5473 sanar'āmar'a'sakk'at'o
5474 नारदिको
5475 लिट., "में"
5476 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
5477 निब्बाती , या "वह शांत हो जाता है"
5478 mahā'ssādaŋ
5479 mahār'a'saŋ

5480 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए”
5481 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
5482 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव
5483 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
5484 लिट., "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था"

अविचलित,5485 प्रसन्न,5486 स्वतंत्र;5487 (18) [5634]

समर्थक, 5488 तैयार, 5489 संहारक, 5490 कर्ता, 5491 मार्गदर्शक, 5492 व्याख्याता, 5493 प्रसन्न करने वाला, 5494 आनंद लेने वाला, 5495
काटने वाला,5496 सुनने वाला,5497 प्रशंसित;5498 (19) [5635]

अबाधित 5499 और व्यापक, 5500
स्पष्ट एक, 5501 अनिश्चित नहीं, 5502
वासना रहित,5503 बेदाग,5504 साथी,5505
गोअर,5506 स्पीकर,5507 व्याख्याता;5508 (20) [5636]

क्रॉसर,5509 अर्थ-निर्माता,5510
निर्माता,5511 [भी] फाड़ने वाला,5512
प्राप्तकर्ता, 5513 वाहक, 5514 प्रिय, 5515
स्लेयर,5516 एनर्जेटिक,5517 एसेटिक,5518 (21) [5637]

5485 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
5486 या “शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना”
5487 लिट., “बहिर्वाहों का विनाश”
5488 या “जो बाहर गया था”: पब्बाजितो
5489 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।
5490 लिट., “यहाँ”
5491 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।
5492 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है।
5493 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"
5494 sampahaŋsit'ā
5495 भोट्टा , बीजेटीएस में इसे भेट्टा ("तोड़ने वाला") पढ़ा जाता है।
5496 चेत्त्'आ
5497 sotā
5498 pa'saŋsitā
5499 akhilo
5500 visālo . BJTS इसे visallo (“दर्द से मुक्त”) पढ़ता है
5501 anīgho
5502 अकथाकथि , ilt. "नहीं कह रहा, 'क्यों'?"

5503 अनेजो
5504 विराजो
5505 खट्टा । बीजेटीएस इसे खंत (विनम्र) पढ़ता है ("विनम्र")
5506 रीडिंग गंटा विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस गंधा ("सुगंधित")
5507 pTS mettā ("प्रेम") के लिए BJTS के साथ v'atta का पाठ
5508 pakā'sit'ā
5509 t'ār'et'ā
5510 अत्थकारेता का पाठ बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ तारेता ("क्रॉसर") के पीटीएस पुनरावृति के लिए।
5511 k'ār'et'ā
5512 सम्पदालता , बीजेटीएस सम्पदालता
5513 पापेता
5514 साहित्य , या "सहनकर्ता"
5515 में k'antā का पाठ BJTS द्वारा PTS में hantā के पुनरावर्तन के साथ किया गया है , जिसे दोनों पाठ श्लोक में अगले शब्द के रूप में पढ़ते हैं।
5516 hant'ā
5517 PTS tātâpi ("रक्षक भी") के लिए BJTS के साथ ātāpī का पाठ
5518 t'āpaso , इससे पंक्ति में नौ अक्षर बनते हैं, जिसे "हत्यारा" को संक्षिप्त करके आठ अक्षरों के रूप में उच्चारित करने की आवश्यकता है।

समभाव वाला 5519 [और] निष्पक्ष, 5520
आत्मनिर्भर, 5521 दयालुता का घर, 5522
बेहद शांतिपूर्ण,5523 ईमानदार,5524
कर्मकर्ता, 5525 सातवाँ ऋषि; 5526 (22) [5638]

संदेह से परे पार किया, 5527 अहंकार से मुक्त, 5528
असीम एक, 5529 अतुलनीय, 5530
सभी कहावतों के रास्तों पर यात्रा की,5531
सत्य को जानने के लिए प्राप्त किया,5532 विक्टर.5533 (23) [5639]

[बुद्ध का] महल सर्वश्रेष्ठ प्राणियों में अमरता लाता है;5534
शक्तिशाली लोगों को इस पर भरोसा है
बुद्ध, शिक्षण और सभा।" (24) [5640]

इन गुणों के माध्यम से,
मैंने धम्म का प्रचार किया ,5535
भीड़ के बीच प्रशंसा करना
तीनों लोकों का अतुलनीय शरणस्थल। (25) [5641]

तुसिता में, जहाँ से मुझे बहुत सुख मिला, वहाँ से गिरकर, लोगों के बीच से गिरकर,
मुझे जन्म से ही बहुत अच्छी खुशबू आती है। (26) [5642]

मेरी हवा,5536 मेरे मुँह की सुगंध,

"स्लेयर" में

5519 samacitt'o
5520 'समासामो , (बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस के अनुसार; इसका मूल रूप समासामो भी हो सकता है , जिसका अर्थ है "हमेशा एक जैसा")
5521 a'sahāyo , शाब्दिक अर्थ, “मित्रहीन”
5522 रीडिंग दयासायो (और निम्नलिखित व्याख्या) बीजेटीएस के साथ पीटीएस दयायासो ("दयालुता के लिए प्रसिद्ध" "दयालुता-प्रसिद्ध") के लिए
5523 accherasanto
5524 अकुहो , शाब्दिक अर्थ, "धोखे से मुक्त" "ईमानदार"
5525 क'तावी , अर्थात् एक अरहंत, जिसने वह किया है जो किया जाना चाहिए
5526 i'si'satt'amo
5527 nittiṇṇak'aṅkho
5528 nimmāno
5529 अप्पमेय्या , शाब्दिक अर्थ, "मापा नहीं जा सकता"
5530 अनुपमा , शाब्दिक अर्थ, "वह जिसके लिए कोई रूपक नहीं है"
5531 sabbavākyapathātīto , शाब्दिक अर्थ, “वह जिसके लिए सभी कथनों के मार्ग अतीत में हैं”
5532 saccaneyyantago , शाब्दिक अर्थ, "वह जो सत्यों के अंत तक पहुँच चुका है जिसे समझा जाना है [या निर्देश दिया जाना है, नेतृत्व किया जाना है, मार्गदर्शन किया जाना है (नेति का क्रियापद)]"
5533 जिनो
5534 sattasāravare . BJTS इसे महल को संशोधित करने के रूप में व्याख्या करता है, लेकिन पाली मुझे इससे अधिक अस्पष्ट लगती है। v. [5887] और [6287] में बुद्ध-विशेषण के रूप में sattasāra° के प्रयोग की तुलना करें।
5535 BJTS के साथ akaṃ dhammakathaṃ ahaṃ पढ़ना PTS ahaŋ dhammakathaŋ ahaŋ (“मैं धम्म -प्रचारक मैं")
5536 nissāso , BJTS ग्लॉस māgē piṭatața heḷana vātaya (“वह हवा जिसे मैं नीचे फेंकता/अपने बाहरी हिस्से में निकाल देता हूँ”)

इसी प्रकार मेरे शरीर की दुर्गंध भी।
और मेरे पसीने की गंध, हमेशा अन्य सभी इत्रों से श्रेष्ठ होती है। (27) [5643]

मेरे मुंह से हमेशा गुलाबी और नीले कमल और चमेली की खुशबू आती है। और मेरे शरीर से भी वैसी ही खुशबू आती है।
हमेशा बहुत शांति से बह रहा है.5538 (28) [5644]

आप सभी एकाग्र मन से मेरी बात सुनें, मैं उस अद्भुत फल की प्रशंसा करूंगा।
जिसने सद्गुण के मूल्य की प्रशंसा की।5539 (29) [5645]

जब लोग एकत्रित होते हैं, तब दयालुतापूर्वक बुद्ध के गुणों का वर्णन करते हुए, मधुर ध्वनि से बंधे हुए,5540
मैं हर जगह खुश हूँ, (30) [5646]

प्रसिद्ध, खुशहाल, प्रिय, शानदार, देखने में सुंदर
एक वक्ता, जिसे नजरअंदाज नहीं किया गया।
दोषरहित और [अत्यंत] बुद्धिमान भी। (31) [5647]

जब जीवन समाप्त हो जाता है, तो बुद्ध के भक्तों के लिए निर्वाण तक पहुंचना आसान होता है।
मैं उनकी [सुविधा] का कारण बता रहा हूँ;
अब इसे सच्चाई से सुनो: (32) [5648]

मैंने विधिपूर्वक अभिवादन किया।
परम पूज्य ईश्वर की शांतिप्रियता के कारण ही मैं प्रसिद्ध हूँ।5543
[जब] मैं यहाँ-वहाँ पुनर्जन्म लेता हूँ। (33) [5649]

5537 रीडिंग sabbagandhe "tiseti (= atisayati) BJTS के साथ PTS sabbagandho ti seti ("यह 'सभी अच्छी सुगंध' को नीचे रखता है") और BJTS सिंहला ग्लॉस का अनुसरण करते हुए
5538 BJTS में एटिसैंटो के लिए एडिसैंटो ("घोषणा") लिखा है
5539 guṇatthavassa sabbaṃ taṃ phalaṃ tu paramambhūtaṃ को BJTS के साथ PTS guṇatthavassapupphan tan phalan tu param abbhutaŋ ("वह फल जो सद्गुण के अर्थ में अत्यंत चमत्कारी रूप से खिलता है" [?]) के लिए पढ़ा गया, और BJTS व्याख्या का अनुसरण किया गया: buddha guṇakitiyāge ē siyalu vipāka atiśaya vismayajanaka ya .
5540 पाठ का चौथा (अनुवाद में तीसरा) पद त्रुटिपूर्ण प्रतीत होता है। IPTS इसे rasaddhovisamāyuto पढ़ता है । "शुद्ध स्वाद से बंधा हुआ।" BJTS में लिखा है (टाइपोग्राफिकल त्रुटि?) saradvadhanisamāyuto (= rasad- hvanisaāmyuto ?)। दोनों ही मामलों में वैकल्पिक अनुवाद और भी अनिश्चित हैं। मैं BJTS के सिंहली अनुवाद का अनुवाद करता हूँ, mad- hura svaradhvani yukta vūyem (- mihirihaddha ättem), "मैं मधुर ध्वनि से बंधा हुआ (मेरे पास एक मधुर ध्वनि है)"।
5541 रीडिंग khīṇe ayusi with BJTS for PTS khīṇ' ev' āyu pi ("जीवन भी निश्चित रूप से नष्ट हो जाता है")
5542 lit., "तुम सब इसे सुनो" (द्वितीय व्यक्ति बहुवचन क्रिया)
5543 ya'sassī

मैं खुश हूँ क्योंकि मैंने दुखों का अंत करने वाले बुद्ध की प्रशंसा की।
[और] शांतिपूर्ण, बिना शर्त सत्य,5546
प्राणियों को सुख प्रदान करना। (34) [5650]

बुद्ध के गुणों की घोषणा करते हुए, बुद्ध में आनंद से लीन होकर,
मैंने उसे स्वयं और दूसरों के लिए प्रिय बना दिया।
अन्य; इसलिए मैं प्रिय हूँ। (35) [5651]

दुष्ट प्रतिद्वंद्वियों पर विजय प्राप्त करना 5548
प्रतिद्वंद्वियों से भरी भीड़ में, सद्गुणों की प्रशंसा करते हुए मैंने प्रकाश फैलाया।
नेता; इसलिए मैं शानदार हूँ। (36) [5652]

संबुद्ध के गुणों का वर्णन करके, मैंने उन्हें लोगों के लिए प्रिय बना दिया।
जैसे शरद ऋतु में चंद्रमा होता है;5553
इसलिए मैं देखने में सुंदर हूँ। (37) [5653]

मैंने अपने सभी शब्दों से बुद्ध की प्रशंसा की।
जहां तक मैं सक्षम था;5556
इसलिए मैं धाराप्रवाह बोलता हूँ,5557
[और] विविध बुद्धि रखते हैं। (38) [5654]

महान शिक्षा से मैंने उन मूर्खों को रोका जो संदेह से ग्रस्त होकर,5558 उस महान ऋषि का तिरस्कार करते हैं; इसलिए मेरी उपेक्षा नहीं की जाती। (39) [5655]

बुद्ध के गुणों के माध्यम से,

5544 शाब्दिक अर्थ, "इसलिए मैं खुश हूँ"
5545 दुःखान्तकरण 'बुद्धं , शाब्दिक अर्थ: "दुखों का अंत करने वाला बुद्ध"
5546 धम्मॅ ...
5547 जनायण , लिट., "मैंने उत्पादन किया"
5548 या "विधर्मी": कुटित्थिये
5549 रीडिंग titthikākiṇṇe with BJTS for PTS titthikâkiṇṇo ("मैं प्रतिद्वंद्वियों से घिरा हुआ हूँ")
5550 v'adanto , शाब्दिक अर्थ, "कहना," "बताना"
5551 में पीटीएस varaŋ ("उत्कृष्ट") के लिए BJTS (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ v'adaṃ पढ़ा जा रहा है।
5552 पीटीएस °jinassa ("विजेता का") के लिए BJTS (और PTS विकल्प) के साथ janassa का पाठ
5553 रीडिंग sarado va sasaṅko 'haṃ with BJTS for PTS saraŋ divasasanko 'haŋ ("मैं झील के लिए दिन में चंद्रमा हूँ" [?])
5554 लिट., "मैं था"
5555 शाब्दिक रूप से, "अच्छी तरह से चला गया व्यक्ति," सुगातांग
5556 y'athā'sattiv'a'sena
5557 v'āgīso , "[मैं एक हूँ] वाणी पर महारत के साथ"
5558 में विमतिपट्टा को पीटीएस विमतिंग पट्टा के स्थान पर बीजेटीएस से पढ़ा गया है , हालांकि बाद वाला (व्याकरणिक दृष्टि से कुछ हद तक गलत) समान अर्थ व्यक्त करता है।

मैंने प्राणियों के दोषों को दूर भगा दिया। मैं अब दोषों से मुक्त हूँ।
उस कर्म के फलस्वरूप। (40) [5656]

मैं एक उपदेशक हूँ जो बुद्ध का स्मरण कराता है, और मैं श्रोताओं के लिए बुद्ध को लेकर आया।
इसलिए मैं सूक्ष्म अर्थों पर चिंतन करने की बुद्धि से संपन्न हूँ। (41) [5657]

मेरे सभी दोष नष्ट हो गए हैं; मैंने अस्तित्व के सागर को पार कर लिया है।5560
अग्नि के समान, [मैं] किसी भी चीज़ से आसक्त नहीं हूँ; मैं निर्वाण प्राप्त करूँगा। (42) [5658]

इसी [वर्तमान] युग के भीतर
क्योंकि मैंने बुद्ध की इस प्रकार प्रशंसा की है, इसलिए मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं भुगतना पड़ा है।
यह बुद्धों की प्रशंसा का फल है। (43) [5659]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह, मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (44) [5660]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (45) [5661]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (46) [5662]

इस प्रकार पूज्य सुगंधा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सुगंधा थेरा की कथा का अंत हो गया है।

समीक्षा:

तिनदा और पेच्चदा5561 भी, सरण', अभंजनप्पाडा, पुपति5562 और दंडदायि, और इसी तरह नेलापूजी भी,

---

5559 apades' 'ahaṃ को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS apaniŋ (समान अर्थ, fr. apaneti) के लिए पढ़ना
5560 टीना'संसार'सागर'ओ
5561 BJTS mañcado (“Mañcada”) पढ़ता है
5562 BJTS में supaṭo (“Supaṭa”) पढ़ा जाता है

बोधिसम्मजक', 5563 आमंड, और दसवें सुगंधा, एक ब्राह्मण। यहाँ कुल मिलाकर गिने गए हैं
एक सौ तेईस श्लोक।

तिणदायक अध्याय, तिरपनवाँ

कच्चाना अध्याय, चौवनवाँ

---

528. {531.}5564 महाकच्चन5565

विजेता, पदुमुत्तरा,
वासना रहित,5566 अजेय विजेता,5567
नेता का अस्तित्व सामने आया।
एक लाख युगों बाद। (1) [5663]

कमल के पत्ते जैसी आंखों वाला नायक, 5568
चंद्रमा के समान पवित्र मुख के साथ,5569
सोने के पहाड़ की तरह चमकता हुआ,5570
जब सूर्य धधक रहा हो तो उतना ही चमकीला,5571 (2) [5664]

प्राणियों की आँखों [और] मन का परिवहन,5572
उत्कृष्ट अंकों से सुशोभित, 5573
सभी कहावतों के रास्तों पर यात्रा की,5574
लोगों और देवताओं द्वारा सम्मानित, 5575 (3) [5665]

5563 यह पीटीएस शब्द bodhisammajako (“बोधिसम्मजक”) का बीजेटीएस पाठ है ।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5564 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5565 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
5566 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5567 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5568 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5569 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5570 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5571 lit., “गया”
5572 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5573 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
5574 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5575 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

संबुद्ध, जागृत प्राणियों को जगाना, 5576
वाक्पटु, 5577 मधुर ध्वनि वाला, 5578
करुणा का निरंतर घोंसला, 5579
भीड़ के बीच आत्मविश्वास से भरपूर,
वहाँ वे मधुर शिक्षा का प्रचार कर रहे हैं, चार आर्य सत्यों को ग्रहण कर रहे हैं।5580
वह सांस लेने वालों को ऊपर उठा रहा है।

जब वे भ्रम के दलदल में डूब जाते हैं। (4-5) [5666-5667]

एक तपस्वी होने के नाते, अकेले,
तब मेरा घर हिमालय था। मैंने विक्टर को यात्रा करते हुए देखा।5581
आकाश के माध्यम से मनुष्यों की दुनिया। (6) [5668]

उसके समक्ष जाकर,
तब मैंने उन्हें धम्म का उपदेश देते हुए सुना।
और महान सद्गुण की प्रशंसा करते हुए
उस हीरो के अनुयायियों में से एक: (7) [5669]

“जिसके द्वारा5582 यह [भिक्षु] कच्चायना5583
5584 विस्तृत स्पष्टीकरण प्रदान करता है
मेरे द्वारा कही गई बातों के अनुसार, संक्षेप में, वह बहुत से लोगों को और मुझे भी प्रसन्न करता है।
मुझे कोई और अनुयायी नहीं दिख रहा है
या फिर कोई भी व्यक्ति जो इस तरह से उपदेश देता हो।
इस प्रकार वह शीर्ष पर है, उस अग्रणी स्थान पर;5586
इसलिए आपको 5587 [उसे] विचार करना चाहिए, भिक्षुओं।" (8-9) [5670-5671]

उस समय, उस मधुर वाणी को सुनकर आश्चर्यचकित होकर, वे हिमालय की ओर चल पड़े।
ढेर सारे फूल वापस लाते हुए,

बीजेटीएस के अनुसार 5576 में, पीटीएस में कई रूपों में 'गेण्डु' लिखा है । कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।
5577 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5578 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तूलिका°) के रूप में समझता हूँ (देखें आर.डी., एस.वी.)
5579 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5580 लिट., “एक फूल पर”
5581 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5582 khiḍḍār'ati'y'ā
5583 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
5584 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5585 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।
5586 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”
5587 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

विश्व के शरणस्थल की पूजा करने के बाद,
मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था।
उस समय, मेरी इच्छा को समझते हुए,

शरणहीन व्यक्ति5590 ने भविष्यवाणी की: (10-11) [5672-5673]

आप सभी इस महान ऋषि को देखिए,5591
चमकदार सोने के रंग की त्वचा,
ऊपर की ओर बढ़ते बाल, चौड़े कंधे,5592 दृढ़ता से खड़ा,5593 हाथ जोड़े हुए,5594 हँसी से भरी आँखें,
घर पर बुद्ध की प्रशंसा करने में,5595
शिक्षा को उत्कृष्ट रूप से ग्रहण करते हुए,5596
छिड़के हुए अमृत के समान।5597 (12-13) [5673-5674]5598

कच्चाना के सद्गुणों के बारे में सुनकर,
वह वहाँ खड़ा होकर उस जगह की कामना कर रहा है। बहुत दूर भविष्य में,
वह महान ऋषि गौतम हैं, जो उस धर्म के योग्य उत्तराधिकारी हैं , धर्म की वैध संतान हैं।
यह व्यक्ति उस गुरु का अनुयायी होगा;
तब उसका नाम कच्चना होगा। (14-15) [5675-5676]

अत्यंत विद्वान, महान ज्ञान से परिपूर्ण, निष्कर्ष निकालने में कुशल, एक ऋषि।
वह उस [इच्छित] स्थान को प्राप्त कर लेगा।
जैसा कि मैंने पहले ही भविष्यवाणी कर दी है। (16) [5677]

उस कर्म को करने के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (17) [5678]

मैं [केवल] दो अवस्थाओं में ही पुनर्जन्म लेता हूँ:

5588 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी

5589 pariḷāho

5590 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

5591 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके के रूप में और भी बल दिया गया है) , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)

5592 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

5593 samādhikusalo ahaŋ

5594 iddhipādesu kovido

5595 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "

5596 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है

5597 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।

5598 महाभि'सक्कसंका'सो

5599 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ

5600 ॰विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

चाहे वह किसी देवता का हो या किसी मनुष्य का।
मैं दूसरे पुनर्जन्मों में नहीं जाता:

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (18) [5679]

[जब मैं इंसान था] मैं दो कुलों में पैदा हुआ था:
क्षत्रिय या ब्राह्मण।
मैं निम्न कुलों में जन्म नहीं लेता:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (19) [5680]

अब, अपने अंतिम जन्म में, मेरा जन्म उज्जैन नगर में हुआ, 5601 तेज, वेदों का स्वामी, तिरितिवच्छ का पुत्र, 5602
ब्राह्मण परामर्शदाता कौन था?5603
[राजा] का, पज्जोत चंद;5604
मेरी माँ का कैंडापडुमा;5605
मैं कच्चाना हूँ, जिसकी त्वचा उत्कृष्ट है। (20-21) [5681-5682]

पृथ्वी के रक्षक द्वारा भेजा गया 5606
पुण्य के ढेर, नेता, स्वतंत्रता नगर के द्वार को देखकर बुद्ध को आमंत्रित करने के लिए, 5607
और उनके त्रुटिहीन भाषण को सुनकर, जो पुनर्जन्म के मैल को धो देता है,
मैंने अमर शांति प्राप्त कर ली।
पाँच सौ [सहयोगियों] के साथ। (22-23) [5683-5684]

जन्मजात ही निष्कर्ष निकालने में कुशल, बेहद धनी और आकर्षक।
मुझे उस सबसे प्रमुख स्थान पर रखा गया था।
अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति का, बुद्धिमान व्यक्ति का।5608 (24) [5685]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (25) [5686]

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में होना

5601 diṭṭhigaṇḍa°
5602 लोकापज्जोटो
5603 sanar'āmar'a'sakk'at'o
5604 नारदिक्को
5605 लिट., “में”
5606 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
5607 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”
5608 mahā'ssādaŋ

यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (26) [5687]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (27) [5688]

इस प्रकार पूज्य महाकच्चाना थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

महाकच्चाना थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

529. {532.}5609 वक्कली5610

एक लाख युगों बाद [संसार में] एक नेता का उदय हुआ।
श्रेष्ठ नाम वाला, 5611 असीम एक, 5612
जिसका नाम पदुमुत्तरा था। (1) [5689]

[उनका] भाषण कमल के गुणों से युक्त था,5613 त्वचा5614 कमल की तरह निर्मल थी;5615 [बुद्ध] संसार से अछूते थे, जैसे गुलाबी कमल पानी से। (2) [5690]

बुद्धिमान,5616, कमल के पत्तों जैसी आँखों वाला,5617
प्रिय, कमल के समान,5618
उसमें कमल जैसी अद्भुत सुगंध थी;5619
इसलिए उसका [नाम] "सर्वश्रेष्ठ कमल" था।5620 (3) [5691]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5609 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5610 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5611 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5612 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5613 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5614 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5615 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5616 lit., "गया"

5617 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5618 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
5619 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5620 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में, मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंड (भाग, अंश, पिंड, एक छोटा सा हिस्सा) "

दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, अभिमान से मुक्त, 5621
कहावत 5622 अंधों के लिए आंखें, 5623
सद्गुण-खजाना,5624 शांति का मुखौटा,5625
करुणामय विचारों का सागर, 5626 (4) [5692]

ब्रह्मा, दैत्यों और देवताओं द्वारा सराहे गए,5627
महान नायक, सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, 5628
देवताओं के साथ-साथ पुरुषों से भी भरा हुआ,5629
एक बार, लोगों के बीच निवास करते हुए,5630 वह (5) [5693]

उन्होंने अपने मधुर भाषण से पूरी भीड़ को प्रसन्न कर दिया।
और उसकी आवाज शहद जैसी मीठी थी।
[जबकि] अपने ही अनुयायी की प्रशंसा कर रहे हैं: (6) [5694]

"विश्वास में दृढ़, नेक मन से, और अपनी दिखावट के लिए ललक से भरा हुआ,5631 उसके जैसा कोई दूसरा नहीं है"
जैसा कि यह भिक्षु [नाम] वक्कली है।"5632 (7) [5695]

उस समय मैं हंसवती नगर में एक ब्राह्मण का पुत्र था।
बुद्ध का भाषण सुनने के बाद,
मुझे उस जगह की बहुत चाह थी। (8) [5696]

स्टेनलेस स्टील वाले को आमंत्रित करते हुए,
तथागत, अपने अनुयायियों को एक सप्ताह तक भोजन कराने के बाद,
मैंने उन्हें नए कपड़े से ढक दिया। (9) [5697]

असीम सागर में डूबे बुद्ध को प्रणाम करते हुए, मैं अपना सिर झुकाता हूँ।

माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]।" .

बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में 5621 में कई भिन्नताओं के साथ 'गेण्डु' लिखा है । कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।
5622 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5623 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

5624 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस द्वारा पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5625 लिट., "एक फूल पर"
5626 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5627 khiḍḍār'ati'y'ā
5628 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
5629 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5630 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
5631 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "
5632 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

सद्‌गुणों से परिपूर्ण, आनंद से लबालब,
मैंने उससे ये शब्द कहे [तभी]: (10) [5698]

"हे [महान] ऋषि, सात दिन पहले,
आपने उस भिक्षु की प्रशंसा की जो आस्थावान भिक्षुओं में सबसे आगे है;
मैं [किसी दिन] उसके जैसा बन जाऊँगा।" (11) [5699]

जब यह कहा गया, तो महान नायक, जिसकी दृष्टि अबाधित है,
उस महान ऋषि ने यह भाषण दिया।
[इकट्ठी] भीड़ के लिए: (12) [5700]

आप सभी लोग इस युवक को देखिए,
चमकीले सुनहरे रंग के वस्त्र पहने हुए,5633
उसके धड़ पर सोने की ब्राह्मण की माला 5634,
लोगों की आँखों [और] दिमागों को स्थानांतरित करना। (13) [5701]

बहुत दूर भविष्य में,
यह अनुयायी होगा
गौतम [बुद्ध], महान ऋषि,
विश्वास पर दृढ़ रहने वालों में सबसे आगे। (14) [5702]

चाहे वह मनुष्य के रूप में जन्मा हो या दिव्य रूप से, वहाँ हर तरह की पीड़ा से बचता हो, हर संपत्ति से सुसज्जित हो।
वह खुशी-खुशी पुनर्जन्म लेगा। (15) [5703]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (16) [5704]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्म की वैध संतान, जिसका नाम वक्काली है

शिक्षक का अनुयायी होगा। (17) [5705]

उस कर्म की श्रेष्ठता के कारण,5635 और [मेरे] इरादे और संकल्प के कारण, [अपने] मानव शरीर का त्याग करते हुए,
मैं तब तावतिंसा गया। (18) [5706]

जन्म-जन्मांतर तक आवागमन करते हुए, हर स्थान पर सुखी रहना।

5633 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
5634 pariḷāho
5635 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

मेरा जन्म एक विशेष 5636 कबीले में हुआ था।
श्रावस्ती नगर में। (19) [5707]

महान ऋषि के चरणों में, [मेरे माता-पिता], भूत-प्रेतों के भय से भयभीत होकर,5637 दुखी मन से मुझे [वहाँ] लिटा दिया, मैं [अपनी पीठ के बल] सीधा लेटा हुआ सो रहा था, ताजा मक्खन की तरह कोमल।
नवजात कमल के अंकुर की तरह कोमल। "हे प्रभु, हम आपको यह [लड़का] सौंप रहे हैं;
कृपया उनका समर्थन करें,5638 हे [विश्व-]नेता।" (20-21) [5708-5709]

भयभीत लोगों के लिए शरणस्थली, [महान] ऋषि ने तब मुझे अपने कमल के समान कोमल हाथों से स्वीकार किया।
जो जालीदार था और शंखों से चिह्नित था। (22) [5710]

तब से मैं उसकी रक्षा में हूँ जिसकी रक्षा कोई नहीं करता;5639 पुनर्जन्म के सभी आधारों से मुक्त,5640 मैं
[मैं] बहुत खुशी से पला-बढ़ा हूँ। (23) [5711]

हर पल जब मैं उससे, उस बिछड़े हुए इंसान से वंचित रहती हूँ, तो मुझे उसकी बहुत याद आती है; क्योंकि मैं केवल सात साल की हूँ।
मैं बेघर हो गया। (24) [5712]

असंतुष्ट, मैं तरस रहा हूँ
उसका रूप सभी अच्छे गुणों से युक्त है,5641
सभी पूर्णता द्वारा उत्पादित, 5642
सौभाग्य का सर्वोच्च घर.5643 (25) [5713]

बुद्ध के स्वरूप के प्रति मेरे प्रेम को जानते हुए, विजेता ने मुझे फटकारा: "बस करो, वक्काली! आनंद क्यों ले रहे हो?"
रूप में, मूर्खों द्वारा आनंदित? (26) [5714]

जो महान शिक्षा को देखता है, वह बुद्धिमान व्यक्ति मुझे देख रहा है;

5636 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
5637 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
5638 samādhikusalo ahaŋ

5639 iddhipādesu kovido
5640 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”
5641 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
5642 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।
5643 महाभिऽसक्कसंकाऽसो

[परन्तु] महान शिक्षा को न देखकर, वह मुझे भी नहीं देख रहा है। (27) [5715]

शरीर अनंत खतरों से भरा है, इसे विषैले वृक्ष के समान बताया गया है; यह हर बीमारी का घर है।
यह तो बस दुखों का ढेर है। (28) [5716]

रूप से ऊब जाना, इसे इस रूप में देखना
भागों का उत्थान और पतन,5644
खुशी से, कोई पहुँचने वाला है
सभी अशुद्धियों का अंत।" (29) [5717]

इस प्रकार उनके द्वारा निर्देश दिए जाने पर,
नेता द्वारा, मित्रवत ऋषि द्वारा, गिद्ध शिखर पर आरोहण करने के बाद, 5645
मैंने एक गुफा में ध्यान किया।5646 (30) [5718]

पर्वत की तलहटी में खड़े महान ऋषि ने मुझसे कहा, “हे वक्कली,” और विजेता के शब्दों को सुनकर रोमांचित हो गए।5647
मैं उस पर्वत की ढलान से छलांग लगाकर सैकड़ों आदमियों की लंबाई जितनी ऊँचाई तक पहुँचा, फिर बुद्ध की भव्य प्रतिमा के बीच से गुजरा।
मैं आराम से जमीन पर पहुँच गया। (31-32) [5719-5720]

उन्होंने एक बार फिर धम्म का उपदेश दिया , जिसमें शरीर के अंगों के उत्थान और पतन का वर्णन था।
[और इस बार,] शिक्षा को समझते हुए,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (33) [5721]

फिर एक विशाल जनसमूह के बीच,
हे महान बुद्धि वाले, मृत्यु के अंतिम पड़ाव पर पहुँच चुके उस व्यक्ति ने मुझे नियुक्त किया है।
विश्वास पर दृढ़ रहने वालों में सबसे आगे। (34) [5722]

उस [अच्छे] कर्म को करने के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । (35) [5723]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;
सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

5644 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ
5645 ॰विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

5646 दिट्ठिगण्ड°
5647 लोकापज्जोटो

टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (36) [5724]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (37) [5725]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (38) [5726]

इस प्रकार पूज्य वक्कली थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वक्कली थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

530. {533.}5648 महाकप्पिन5649

विजेता, पद्ममुत्तरा, हर चीज में पारंगत थे।
वह विश्व के दायरे में ऊपर उठा,5650
शरद ऋतु के आकाश में सूर्य की तरह। (1) [5727]

अपनी शब्द-किरणों से वह ज्ञान की वस्तुओं नामक कमलों को जागृत करता है।
अपने विचार-किरणों से नेता सफाई करता है
गंदगी [जिसे] अपवित्रता के रूप में जाना जाता है। (2) [5728]

प्रतिद्वंद्वियों की प्रसिद्धि सूर्य द्वारा जुगनू की रोशनी की तरह नष्ट हो जाती है;
वह सत्यता का प्रकाश फैलाता है5652
जैसे कोई रत्न सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिंबित करता है। (3) [5729]

जैसे सागर रत्नों के लिए होता है, वैसे ही वह गुणी लोगों के लिए भविष्य है;

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5648 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5649 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5650 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5651 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

5652 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

जैसे जीवित प्राणियों के लिए वर्षा का बादल,
वह शिक्षा के बादल से वर्षा करता है। (4) [5730]

मैं उस समय "हंसा" नामक नगर में मजिस्ट्रेट5653 था;5654 पास आते ही मैंने शिक्षा सुनी,
"सुपरब लोटस" नामक एक का,5655
जो मेरे मन को शुद्ध कर रहा था5656
[जबकि] गुण की व्याख्या करते हुए
एक अनुयायी जिसने यह कृत्य किया था,5657
भिक्षुओं का उपदेशक। (5-6) [5731-5732]

प्रसन्न होकर,5658 खुश होकर,5659 सुनकर, [तब] तथागत को आमंत्रित करके, [उन्हें] अपने छात्रों के साथ भोजन कराकर,
मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। (7) [5733]

तब उस परम भाग्यशाली ने हंस या ढोल की तरह ऊँची आवाज़ में कहा,5660 "उसे देखो, एक महान मंत्री, मामलों की जाँच करने में कुशल।"
मेरे पैरों के सामने गिर पड़ा,
उसके शरीर के बाल 5661 ऊपर की ओर बढ़ रहे हैं,
वर्षा-बादल के रंग का5662 [और] चौड़े कंधों वाला,5663
मनमोहक आँखों और चेहरे के साथ, (8-9) [5734-5735]

एक विशाल दल-बल के साथ, राजत्व की ओर अग्रसर, अत्यंत प्रसिद्ध। दयालुता के साथ वह शुभकामनाएं दे रहा है।
इस विलेखकर्ता के स्थान के लिए.5665 (10) [5736]

5653 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5654 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

5655 lit., "गया"

5656 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

5657 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

5658 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

5659 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

5660 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

5661 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

5662 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

5663 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

5664 शाब्दिक अर्थ, "एक फूल पर"

5665 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

इस दान-पुण्य के कारण, जो इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ एक लाख युगों तक किया गया,5666
वह बुरे राज्य में पैदा नहीं होगा।5668 (11) [5737]

देवताओं में दिव्य भाग्य5669; मनुष्यों में महानता [जन्म के समय]: उसका आनंद लेने के बाद, विश्राम के माध्यम से,5670 वह निर्वाण प्राप्त करेगा। (12) [5738]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (13) [5739]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्मा की वैध संतान, जिसका नाम कप्पिना है।
शिक्षक का अनुयायी होगा।" (14) [5740]

और अतः, अच्छे कर्म करने के बाद, विजेता के विधान में, अपने मानव शरीर का त्याग करके,
मैं तब तावतिंसा गया। (15) [5741]

मैंने धार्मिक रूप से5671 [दोनों] दैवीय और मानवीय राज्यों पर शासन किया, और मेरा जन्म बनारस के निकट हुआ।
नौकरों के एक कबीले में जो बुनाई करते हैं.5672 (16) [5742]

हजारों अनुयायियों के साथ, अपनी मुख्य रानी के साथ, मैंने पाँच सौ लोगों की सेवा की।
स्वयं से प्रबुद्ध बुद्ध।5673 (17) [5743]

तीन महीने तक उन्हें भोजन कराने के बाद, हमने उन्हें तीन वस्त्र दिए। वहाँ से गिरकर हम सब

5666 khiḍḍār'ati'y'ā

5667 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

5668 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5669 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
5670 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "
5671 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
5672 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
5673 pariḷāho
5674 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

तीस [देवताओं] के बीच उत्पन्न हुआ.5675 (18) [5744]

वहां से गिरने के बाद हम सभी फिर से मानव अस्तित्व में लौट आए।
हम कुक्कुटा शहर में 5676 नंबर पर पैदा हुए थे।
हिमालय की ओर। (19) [5745]

जन्म के समय मेरा नाम कप्पिना था;
राजा का पुत्र, बहुत प्रसिद्ध।
बाकी लोग एक कबीले में पैदा हुए थे।
मंत्रीगण; उन्होंने मेरी सेवा की। (20) [5746]

राजत्व का सुख प्राप्त करके, मैं हर सुख में समृद्ध हो गया।
व्यापारियों से सुनकर मुझे पता चला,5678
कि बुद्ध का उदय हुआ था: (21) [5747]

"संसार में एक बुद्ध का उदय हुआ है; अद्वितीय,5679 एकमात्र व्यक्ति,5680 वे महान शिक्षा की घोषणा कर रहे हैं: परम, अमर आराम। (22) [5748]

और उनके विद्यार्थी पूरी तरह से सक्रिय, स्वतंत्र और पवित्र हैं।"
वह अच्छी बात सुनने के बाद, [और]
व्यापारियों को सम्मान देते हुए, (23) [5749]

मैंने राजसत्ता त्याग दी, मंत्रियों सहित, मैं बुद्ध के प्रति समर्पित होकर चला गया।
महान कनाडा नदी को देखना5683 —
समतल किनारों वाला, पानी से भरा हुआ, थोड़ा ऊबड़-खाबड़, बिना सहारे के।
एक तीव्र धारा जिसे पार करना कठिन है —
बुद्ध के सद्गुणों को याद करते हुए,
मैं सुरक्षित रूप से पार हो गया। (24-25) [5750-5751]

"यदि [वह] अस्तित्व की धारा को पार कर जाए, बुद्ध, ज्ञाता, संसार के अंत की ओर जाने वाला,

---

5675 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
5676 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

5677 samādhikusalo ahaŋ
5678 iddhipādesu kovido
5679 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
5680 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
5681 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।
5682 महाभिऽसक्कसङ्काऽसो
5683 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ

उस सत्यता के कारण,
मेरी यात्रा सफल हो! (26) [5752]

यदि यह मार्ग शांति की ओर जाता है,
और मुक्ति एक शांतिपूर्ण आराम है, क्योंकि यह सत्य है।
मेरी यात्रा सफल हो! (27) [5753]

यदि भिक्षुओं5684 ने बंजर भूमि को पार कर लिया है, जो पुण्य का अतुलनीय क्षेत्र है,
उस सत्यता के कारण,
मेरी यात्रा सफल हो!" (28) [5754]

जब वह सत्य-इच्छा 5685 पूरी हो गई, तो सड़क से पानी हट गया।
इस प्रकार मैंने सुरक्षित रूप से पार कर लिया।
नदी के सुंदर तट पर। (29) [5755]

मैंने बुद्ध को बैठे हुए देखा, जैसे सूर्योदय के समय सूर्य सोने के पहाड़ की तरह चमक रहा हो।
दीपकों के वृक्ष की तरह चमकते हुए, (30) [5756]

अपने अनुयायियों से घिरा हुआ
चंद्रमा और तारों की तरह, देवताओं के राजा की तरह 5686 वर्षा करते हुए
आनंदमय उपदेश-जल। (31) [5757]

मंत्रियों के साथ आराधना करते हुए, मैं एक तरफ से उनके पास गया।
और फिर, अपनी इच्छा को पहचानते हुए,
बुद्ध ने वहाँ धम्म का उपदेश दिया । (32) [5758]

उस निष्कलंक शिक्षा को सुनकर, हमने विजेता से यह कहा:
"हे महान ऋषि, कृपया [अब] हमें दीक्षा दें, हम अस्तित्व से विरक्त हैं।" (33) [5759]

"हे भिक्षुओं, धर्म का उपदेश भली-भांति दिया गया है , जिससे आप दुखों का अंत कर सकते हैं;
ब्रह्मचर्य का मार्ग अपनाते हुए विचरण करना।
इस प्रकार सातवें ऋषि ने कहा। (34) [5760]

जब यह बात कही गई, तो हम सभी भिक्षुओं के समान दिखने लगे;

5684 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
5685 diṭṭhigaṇḍa°
5686 लोकपज्जोटो

हम सब तब पूरी तरह से पुरोहित हो चुके थे।
शिक्षाओं में धारा-प्रवेशकर्ता.5687 (35) [5761]

फिर जेतवन की ओर प्रस्थान करते हुए,
मार्गदर्शक ने हमें निर्देश दिए। इस प्रकार विजेता द्वारा निर्देश दिए गए।
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (36) [5762]

इसके बाद मैंने उन्हें फटकारा,5688
मेरे साथ हज़ार भिक्षु भी थे। फिर, मेरे निर्देश के कारण,
वे भी अशुद्धियों से मुक्त हो गए।5689 (37) [5763]

विजेता, उस सद्गुण से प्रसन्न होकर, [तब] उसे उस सर्वोपरि स्थान पर रखा, "भिक्षुओं के उपदेशकों के बीच,
कप्पिना का शीर्ष," [उसने] लोगों से कहा। (38) [5764]

कर्म ने एक लाख का फल दिया
[युगों बाद] ने मुझे यहाँ [इसका] फल दिखाया:
पूरी तरह से मुक्त, तीर की तरह तेज,
मैंने अपने दोषों को नष्ट कर दिया है। (39) [5765]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (40) [5766]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (41) [5767]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (42) [5768]

इस प्रकार पूज्य महाकप्पिना थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

महाकप्पिना थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

5687 sanar'āmar'a'sakk'at'o

5688 नारदिको
5689 लिट., “में”
5690 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
5691 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”

---

531. {534.}5692 डब्बामल्ला5693

विजेता, पदुमुत्तरा,
समस्त लोकों के ज्ञाता, पाँच नेत्रों वाले ऋषि उठे।
एक लाख युगों बाद। (1) [5769]

उपदेशक,5694 प्रशिक्षक,5695
सभी सांसों पर विजय प्राप्त करने वाला, उपदेश देने में कुशल, बुद्ध।
कई लोगों को बाढ़ पार करने के लिए मजबूर किया। (2) [5770]

दयालु, 5698 करुणामय, 5699
सभी प्राणों के शुभचिंतक5700 ने पाँच सिद्धांतों में यह स्थापित किया।
सभी प्रतिद्वंद्वी जो आ चुके थे। (3) [5771]

इस प्रकार वह प्रतिद्वंद्वियों द्वारा अस्पष्ट5701 और बहुत प्रसिद्ध5702 था, तथा अरहंतों द्वारा सुशोभित5703 था।
जो स्वामी और तटस्थ थे। (4) [5772]

उस महान ऋषि का शरीर अट्ठावन क्यूबिट (5704) लंबा था; वह सोने के समान मूल्यवान था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5692 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5693 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
5694 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5695 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5696 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5697 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5698 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5699 lit., “गया”
5700 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5701 lit., “गिर गया”
5702 लिट., “योग्य”
5703 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5704 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5705 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

बत्तीस महान चिह्नों को धारण करते हुए। (5) [5773]

उस समय लोगों की जीवन अवधि एक लाख वर्ष थी। इतने लंबे समय तक इस दुनिया में रहना,
उसने कई लोगों को पार कराया। (6) [5774]

मैं उस समय हंसवती में एक करोड़पति का पुत्र था, और बहुत प्रसिद्ध था। (संसार के दीपक की ओर अग्रसर, 5706)
मैंने धम्म का उपदेश सुना । (7) [5775]

यह सुनकर मुझे खुशी हुई
बुद्ध के वे शब्द जो अपने अनुयायी, उस भिक्षु की प्रशंसा करते हैं।
भिक्षुओं के लिए आवास नियुक्त करना5707. (8) [5776]

मैंने अपना सिर उनके चरणों में झुकाया।
हे महान ऋषि, मैं आपकी आकांक्षाओं को पूरा करना चाहता था।
वह स्थान, उन लोगों में सबसे आगे जो
विधानसभा का प्रबंधन करें। (9) [5777]

उस समय महान नायक ने कहा;5708 उन्होंने मेरे कर्मों की इस प्रकार प्रशंसा की: “जिसने विश्व के नेता को भोजन कराया,
विधानसभा के साथ, एक सप्ताह के लिए, (10) [5778]

जिसकी आंखें कमल के पत्तों के समान हैं, सिंह के समान कंधे वाला, सुनहरी त्वचा वाला; मेरे चरणों के सामने गिरा हुआ।
उसने उस [सर्वोच्च] स्थान की कामना की है। (11) [5779]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (12) [5780]

वह बुद्ध का अनुयायी होगा

डब्बा नाम से प्रसिद्ध।
यह वाला सबसे ऊपर रहने वाला है
तब आवास का आवंटनकर्ता।" (13) [5781]

उस कर्म के अच्छे ढंग से, इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ किए जाने के कारण,

---

5706 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
5707 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5708 lit., "एक फूल पर"

अपने मानव शरीर का त्याग करते हुए,
मैं तब तावतिंसा गया। (14) [5782]

मैंने तीन सौ बार [देवताओं के स्वामी] ने [वहाँ] दिव्य शासन किया।
और [फिर] पाँच सौ बार मैं था
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (15) [5783]

[वहाँ] स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव था।
उस कर्म की शक्ति से,
मैं हर जगह खुश था। (16) [5784]

विपस्सी के नाम से प्रसिद्ध नेता, जिन्हें हर चीज की गहरी समझ है, 5709
आकर्षक आँखों वाला, उदय हुआ
विश्व, इक्यावन युग पहले। (17) [5785]

मैंने दुष्ट विचारों वाले उस तटस्थ व्यक्ति के एक अनुयायी को फटकारा।
जिसने सभी अशुद्धियों को नष्ट कर दिया था,
यह जानते हुए भी कि, "वह पवित्र है।" (18) [5786]

भोजन टिकट उपलब्ध कराने के बाद,5710
मैंने महान ऋषियों और उनके अनुयायियों को दूध में पका हुआ चावल अर्पित किया।
उसी पुरुष नायक का।5711 (19) [5787]

इस शुभ युग के दौरान
ब्रह्मा के सगे संबंधी, महान यशादा, जिनका वंश कश्यप कहलाता है,5712
सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता,5713 [बुद्ध,] उठे। (20) [5788]

व्यवस्था को रोशन करते हुए, दुष्ट प्रतिद्वंद्वियों पर विजय प्राप्त करते हुए, सीखने के इच्छुक लोगों को शिक्षा देते हुए, वह
निर्वाण प्राप्त किया,5714 अनुयायियों के साथ.5715 (21) [5789]

बाल बिखरे हुए, आँखों में आँसू लिए, देवता।
वे भावुक हो गए और जब प्रभु ने उन्हें देखा तो वे रोने लगे।

5709 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5710 khiḍḍār'ati'y'ā
5711 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
5712 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5713 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।
5714 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”
5715 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

और छात्र निर्वाण प्राप्त कर चुके थे, [उनके]
वितरण 5716 [अपने] लक्ष्य तक पहुँच रहा है: (22) [5790]

अफसोस! हममें कोई खास गुण नहीं हैं।
धम्म -नेत्र नष्ट हो जाता है ।5717
हमें अनुपालन करने वालों को देखने का अवसर नहीं मिलेगा।
हम महान शिक्षा नहीं सुनेंगे।” (23) [5791]

ठीक उसी समय, यह सारी पृथ्वी, जो अविचल है, कांप उठी, और सागर मानो शोक में डूबा हुआ था।5718
एक दयनीय गीत गा रहा था। (24) [5792]

और चारों दिशाओं में ढोल गैर-मानव प्राणियों द्वारा बजाए जा रहे थे; हर तरफ से बिजली कड़क रही थी।5719
डरावने5720 [वहाँ मौजूद प्राणी]। (25) [5793]

उल्कापिंड 5721 आकाश से नीचे गिरा।
और जिसका झंडा धुआँ है5722 देखा गया5723।
जंगली जानवर दर्दनाक ढंग से दहाड़ रहे थे।
और पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले सभी प्राणी। (26) [5794]

भयंकर अपशकुनों को देखकर, जो व्यवस्था की स्थापना को चिह्नित करते हैं,57245725555555555555657265 ...
वहाँ [अभी भी बचे हुए] हम भिक्षुओं ने हिलकर [इसके बारे में इस तरह सोचा]: (27) [5795]

“[अब], हमारी अनुमति के बिना, हमारे लिए जीवन ही काफी है। जंगल में प्रवेश करके हम प्रयास करेंगे।”
विजेता के विधान में।” (28) [5796]

हमने एक ऊँचा, शानदार पहाड़ देखा
उस समय जंगल में।

5716 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी

5717 pariḷāho
5718 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
5719 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
5720 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
5721 samādhikusalo ahaŋ
5722 iddhipādesu kovido
5723 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”
5724 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
5725 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
5726 महाभिऽसक्कसङ्काऽसो
5727 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ

सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते हुए, 5728
हम सीढ़ियों से गिर गए। (29) [5797]

फिर एक बुजुर्ग5730 ने हमें चेतावनी दी: “बुद्ध का उदय पाना कठिन है; तुम्हारे लिए अच्छी बात यह है कि तुम्हें विश्वास प्राप्त हो, जो इस युग का छोटा सा अवशेष है।
वे गिर पड़े हैं, अंतहीन दुख के सागर में अपना मौका गंवा रहे हैं।
इसलिए भरपूर प्रयास किए जाने चाहिए
जबकि ऋषि का विचार बना रहता है।” (30-31) [5798-5799]

वह बुजुर्ग अरहंत थे।
एक गैर-वापसीकर्ता उसके पीछे-पीछे गया।5731
अच्छे नैतिक मूल्यों में दृढ़ रहते हुए,
हम में से बाकी लोग देवताओं के लोक में चले गए। (32) [5800]

उस पवित्र धाम में उस एक [भिक्षु]5732 ने निर्वाण प्राप्त किया, अस्तित्व को पार किया;5733 [परन्तु] मैं और पुक्कुसाती [भी],
साभिया, वैसे ही बाहिया, वैसे ही कुमार-कस्सप,
हम यहाँ-वहाँ पुनर्जन्म लेते हैं [अब]5734
जीवन के बंधनों से मुक्त,
गौतम [बुद्ध] द्वारा दया की गई। (33-34) [5801-5802]

कुसिनारन मल्ल में जन्मे,
गर्भ में भी मैं सचेत थी। मृत माँ5735 को चिता पर उठाया गया;
मैं [उनमें से एक था] जो उससे अलग हो गया था। (35) [5803]

मैं लकड़ी के ढेर पर उतरा;5738
इसलिए मुझे “डब्बा” के नाम से जाना जाता था।5739
पवित्र जीवन की शक्ति के माध्यम से,5740

5728 ०विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

5729 दिठ्ठिगण्ड°
5730 लोकापज्जोटो
5731 sanar'āmar'a'sakk'at'o
5732 नारदिक्को
5733 लिट., “में”
5734 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
5735 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”
5736 mahā'ssādaŋ
5737 mahār'a'saŋ
5738 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए”
5739 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
5740 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव

मुझे रिहा कर दिया गया, [महज] सात साल का। (36) [5804]

दूध-चावल के फल के कारण,5741
मुझे पाँच उत्तम गुण प्राप्त हैं;5742
शुद्ध भिक्षु को फटकार लगाने के कारण,5743
मुझे कई बुरे लोगों ने उकसाया।5744 (37) [5805]

अब मैं पुण्य और पाप दोनों से परे हो चुका हूँ। परम शांति प्राप्त कर चुका हूँ।
मैं अब भी बेदाग़ जीवित हूँ। (38) [5806]

जो लोग मेरी बात मान रहे थे, उन्हें हंसाते हुए मैंने उनके लिए आवास की व्यवस्था कर दी।
विजेता, उस सद्गुण से प्रसन्न होकर,
[तब] मुझे उस सबसे आगे वाले स्थान पर रख दिया। (39) [5807]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (40) [5808]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (41) [5809]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (42) [5810]

इस प्रकार पूज्य दब्बमल्लपुत्त थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

दब्बमल्लपुत्त थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

5741 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
5742 लिट., "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था"
5743 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
5744 या "शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना"
5745 लिट., "बहिर्वाहों का विनाश"

---

532. {535.}5746 कुमार-कस्सापा5747

एक लाख युगों बाद [संसार में] नेता का उदय हुआ।
हीरो, हर दुनिया का दोस्त, 5748
जिसका नाम पदुमुत्तरा था। (1) [5811]

उस समय एक ब्राह्मण होने के नाते, एक प्रतिष्ठित वैदिक गुरु, दोपहर के आराम के दौरान भ्रमण करते हुए,5749
मैंने विश्व के नेता को देखा, जो चार आर्य सत्यों की व्याख्या कर रहे थे, देवताओं के साथ दुनिया को जागृत कर रहे थे, और भीड़ में उनकी स्तुति कर रहे थे।
विविध प्रवचन वाले शीर्ष पर। (2-3) [5812-5813]

उस समय, प्रसन्न हृदय से, उस दिवंगत आत्मा को आमंत्रित करते हुए, एक मंडप को सजाया गया था।
विभिन्न रंगों से रंगे हुए, विभिन्न रत्नों से जगमगाते हुए कपड़ों के थानों के साथ,
मैंने [उसे] उसमें मौजूद 5750 भिक्षुओं के साथ भोजन कराया।
एक सप्ताह तक उन्हें विविध, उत्तम और स्वादिष्ट भोजन खिलाने के बाद, विभिन्न रंगों के फूलों से उनकी और उनके अनुयायियों की पूजा करने के बाद,
उसके पैरों के सामने गिरते हुए,
मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। (4-6) [5814-5816]

तब परम पूज्य ऋषि,5752 करुणा के स्वाद के एकमात्र भंडार,5753 ने कहा: "उस परम पूज्य ब्राह्मण को देखो,
कमल के समान चेहरे और आंखों वाला

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5746 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5747 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5748 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5749 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5750 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5751 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5752 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5753 lit., "गया"

अत्यंत आनंद और प्रसन्नता से भरा हुआ, उसके शरीर के बाल ऊपर की ओर बढ़ रहे थे, उसकी बड़ी-बड़ी आँखें अत्यंत प्रसन्न थीं, वह मेरी कृपा पाने के लिए लालची था।
मेरे पैरों के सामने गिर पड़ा,
खुशी-खुशी एक उद्देश्य की ओर मुड़ा [उद्देश्य:]5754
वह उस [सर्वोच्च] स्थान की कामना कर रहा है
[उपदेशकों के साथ] विविध प्रवचन.5755 (7-9) [5617-5819]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (10) [5820]

उस धर्म के योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, कुमार-कस्सपा, वह
शिक्षक का अनुयायी होगा। (11) [5821]

उस वस्त्र की शक्ति के माध्यम से, जिस पर अनेक प्रकार के फूल और रत्न जड़े हुए थे,
वह सर्वोच्च स्थान प्राप्त करेगा।
विभिन्न प्रवचनों वाले [उपदेशकों] का।" (12) [5822]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (13) [5823]

मंच पर एक अभिनेता की तरह अस्तित्व के दायरे का भ्रमण करना,5756
हिरण का पुत्र [नाम] साखा,5758
मैं एक हिरणी के गर्भ में प्रवेश कर गया। (14) [5824]

और फिर जब मैं गर्भ में था, मेरी माँ की मृत्यु का समय निकट आ गया।5759
मेरी माँ साखा द्वारा बनाया गया 5760

5754 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5755 लिट., "गिर गया"
5756 लिट., "योग्य"

5757 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5758 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5759 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5760 °विकुटी°; मैं इसे परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तुलिका°) के रूप में समझता हूँ।

निग्रोधा की शरण लेने गया। (15) [5825]

उस हिरण-राजा [निग्रोध] द्वारा, वह
उसे [उसकी आसन्न] मृत्यु से मुक्त कर दिया गया। उसने [इसके बजाय] अपने जीवन का बलिदान दिया।
[निग्रोधा] ने तब मुझे इस प्रकार सलाह दी: (16) [5826]

केवल निग्रोधा ही परोसी जानी चाहिए;
साखा के साथ संगति मत रखो।5761
निरोध की देखरेख में मृत्यु बेहतर है।
साखा की देखरेख में जीवन से बेहतर।" (17) [5827]

हिरणों के राजा की उस सलाह से प्रेरित होकर, मेरी माँ और मैं, उनकी सलाह के कारण,
मनमोहक तुसिता स्वर्ग में आए5762
मानो हम अपना घर लेकर विदेश चले गए हों। (18-19) [5828]5763

फिर, जब हीरो कस्सपा का उपदेश अपने लक्ष्य तक पहुँच गया, तो वे पर्वत की चोटी पर चढ़ गए।
विक्टर की शिक्षाओं में लगे हुए,5764 (20) [5829]

अब, राजगृह 5765 [शहर] में,
मेरा जन्म एक धनी परिवार में हुआ था।
मेरी माँ, जब मैं उनके गर्भ में थी,
बेघर हो गया था। (21) [5830]

जब उन्हें पता चला कि वह गर्भवती है, तो वे देवदत्त5768 के पास गए। उन्होंने कहा, "तुम सब लोग निर्वासित हो जाओ5769"
यह बौद्ध भिक्षुणी5770 जो दुष्ट है।" (22) [5831]

अब [उसे] भी ऋषियों के स्वामी,5771 विजेता द्वारा दया दिखाई गई है,
मेरी माँ खुशहाल जीवन जी रही है।
बौद्ध भिक्षुणियों के लिए एक मठ में। (23) [5832]

घास या ऊन (देखें आरडी., एसवी)

5761 में उद्दालोमिका॰ को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5762 लिट., "एक फूल पर"
5763 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5764 khiḍḍār'ati'y'ā
5765 टाइडेस , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
5766 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5767 नवा , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
5768 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
5769 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
5770 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
5771 pariḷāho

यह जानकर, कोसला के पृथ्वी रक्षक ने राजकुमार की तरह मेरी देखभाल की।5772
और नाम से मैं "कस्सापा" था। (24) [5833]

क्योंकि वहाँ "महान कस्सपा" थे, इसलिए मुझे "लड़का कस्सपा" के नाम से जाना जाता था। बुद्ध के इस उपदेश को सुनकर कि शरीर चींटी के टीले के समान है,5773 मेरा मन पूरी तरह से आसक्ति से मुक्त हो गया।
राजा पायासी को वश में करने के बाद, 5774
तब मैंने वह सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। (25-26) [5834-5835]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (27) [5836]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) [5837]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (29) [5838]

इस प्रकार पूज्य कुमार-कस्सपा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कुमार-कस्सपा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

533. {536.}5775 बाहिया5776

एक लाख युगों बाद [संसार में] नेता का उदय हुआ।

5772 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
5773 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
5774 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5775 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5776 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

महान प्रकाश, 5777 तीनों लोकों के प्रमुख, 5778
जिसका नाम पदुमुत्तरा था। (1) [5839]

एक भिक्षु के सद्‌गुणों की प्रशंसा करते हुए ऋषि की बातें सुनकर मेरा मन रोमांचित हो उठा।
जिन्हें तुरंत समझ आ गई थी;5779
महान ऋषि के लिए एक कार्य करते हुए, एक सप्ताह तक दान दिया।
अपने छात्रों के साथ ऋषि के पास, मैं
उन्हें प्रणाम करते हुए, संबुद्ध।
तब उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा की। (2-3) [5840-5841]

बुद्ध ने मेरे विषय में भविष्यवाणी की थी: "तुम सब इस ब्राह्मण को देखो, जो मेरे चरणों में गिरा हुआ है।"
चौड़े कंधों वाला, [मुझे] निहारता हुआ, [उसके] धड़ पर सोने की ब्राह्मण की माला5781, उसके शरीर पर सफेद त्वचा,
जिसके होंठ उभरे हुए और तांबे जैसे लाल हैं,
सफेद, नुकीले और समरूप दांत, सद्‌गुण की चरम शक्ति के साथ, [उसके] शरीर के बाल ऊपर की ओर बढ़ रहे हैं, इंद्रियां सद्‌गुण से सराबोर हैं,5783 आनंद से खिलते चेहरे के साथ, तात्कालिक समझ रखने वाले भिक्षु के स्थान की कामना करते हुए।
भविष्य में, एक महान नायक
गौतम नाम से अस्तित्व में आएगा। (4-7) [5842-5845]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्म की वैध संतान, जिसका नाम बाहिया है
शिक्षक का अनुयायी होगा।" (8) [5846]

तब बहुत प्रसन्न होकर, जागृत होकर, जब तक मैं जीवित रहा, करता रहा।

5777 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5778 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।
5779 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5780 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5781 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5782 lit., “गया”
5783 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

ऋषि के लिए कर्म, पतन, मैं चला गया
स्वर्ग में, मानो मेरा अपना घर हो। (9) [5847]

उस कर्म के प्रभाव के कारण, चाहे मैं देवता के रूप में जन्म लूं या मनुष्य के रूप में, मैं [तब] पुनर्जन्म लेता हूं।
हर जगह सौभाग्य का आनंद लिया। (10) [5848]

फिर, जब हीरो कस्सपा का आदेश अपने लक्ष्य तक पहुँच गया, यानी पर्वत की चोटी पर चढ़ गया,
विक्टर की शिक्षाओं में लगे हुए,5784 (11) [5849]

शुद्ध नैतिक मूल्यों वाले, बुद्धिमान, विजेता की योजना के अनुयायी,
वहाँ से गिरे, [हम] पाँच लोग,5785
[तब] देवताओं के लोक में गया। (12) [5850]

फिर मेरा जन्म बाहिया के रूप में हुआ, 5786
भारुकच्छा में, 5787 सर्वश्रेष्ठ शहर।
वहाँ से मैं नाव द्वारा आगे बढ़ता हूँ।
खतरों से भरे समुद्र पर।5788 (13) [5851]

कुछ दिनों के बाद
वहाँ से नाव को तोड़ दिया गया;5789
फिर मैं 5790 [महासागर] में गिर गया,
भयानक, डरावना, समुद्री-राक्षस-खदान.5791 (14) [5852]

उस समय, बहुत संघर्ष के बाद, समुद्र पार करने के बाद, दिशाहीन अवस्था में,5792 मैं पहुंचा।
अच्छे बंदरगाह सुप्पारा.5793 (15) [5853]

5784 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
5785 लिट., “योग्य”
5786 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5787 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप

भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

5788 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

5789 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

5790 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

5791 lit., "एक फूल पर"

5792 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

5793 khiḍḍār'ati'y'ā

मैंने छाल से बने वस्त्र पहने और भिक्षा मांगने के लिए गांव में प्रवेश किया।
तब वहाँ एक व्यक्ति प्रसन्न होकर बोला, "यह एक अरहंत हैं जो आए हैं;5795 उनका आदर करो5796 भोजन और पेय, वस्त्र और बिस्तर देकर।"
और [इसके अलावा] दवा के साथ,
हम उस कर्म के फल से प्रसन्न होंगे।" (16-17) [5854-5855]

उसे प्राप्त करने के बाद, वापस जाना,
[इस प्रकार] उनके द्वारा सम्मानित और पूजित,5797
मैंने गलती से इस विचार को जन्म दिया
[कि] "यह एक अरहंत है।" (18) [5856]

बाद में, अपने मन को समझने के बाद,
वापस न लौटने वाले ईश्वर ने 5798 को फटकारा: 5799 "तुम मार्ग, विधि नहीं जानते; 5800 तुम अरहंत कैसे हो सकते हो?" (19) [5857]

उसके द्वारा फटकारे जाने पर मैं विचलित हो गया; मैंने उससे वापस इस प्रकार पूछा: "वे कौन हैं, या संसार में कहाँ हैं?"
[वे] सर्वोच्च पुरुष, अरहंत? (20) [5858]

"अत्यंत बुद्धिमान,5801 अत्यंत बुद्धिमान,5802
विक्टर, श्रावस्ती में, कोसल के महल में,
शाक्यों का पुत्र, अरहंत, निष्कलंक
अरहंतत्व प्राप्त करने के लिए धम्म का प्रचार कर रहा है ।" (21-22) [5859]5803

तब उसके बारे में यह सुनकर मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ, मानो कोई गरीब खजाना पाकर आश्चर्यचकित हो गया हो।
परम अरहंत पद के लिए मन रोमांचित हो गया, और
जानो 5804 सुंदर दिखने वाला, 5805 असीमित चरागाह। 5806 (23-24) [5860]

5794 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

5795 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

5796 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

5797 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
5798 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
5799 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
5800 pariḷāho
5801 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
5802 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
5803 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
5804 samādhikusalo ahaŋ
5805 iddhipādesu kovido
5806 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "

उस समय प्रसन्न होकर, शिक्षक के लिए प्रस्थान करते हुए,5807
मैं हमेशा उस विजेता को देखता हूँ जिसका चेहरा बेदाग है।5808
विजिता नामक रमणीय उपवन की ओर बढ़ते हुए, 5809
मैंने ब्राह्मणों से पूछा, "विश्व का आनंद कहाँ है?"5810 (25-26) [5861]

तब उन्होंने उत्तर दिया, "वह जिसकी पूजा मनुष्य और देवता दोनों करते हैं।"5811
कुछ खाने की इच्छा से शहर में प्रवेश किया है;5812
बहुत जल्दी ही, ऋषि को देखने के लिए उत्सुक, 5813
उसके पास जाओ और उसकी पूजा करो, जो लोगों में सबसे श्रेष्ठ है।5814 (27-28) [5862]

और फिर, शीघ्रता से सर्वश्रेष्ठ नगर श्रावस्ती जाकर,
मैंने बुद्ध को विचरण करते देखा
भिक्षा के लिए, लोभ या इच्छा के बिना, हाथ में कटोरा लिए, एकाग्र दृष्टि से, मानो अमृत बाँट रहे हों,5815 सौभाग्य के निवास के समान,5816
चेहरा सूर्य की तेज रोशनी से जगमगा रहा है। (29-30) [5863-5864]

एक साथ आना, सिर झुकाना,
तब मैंने उनसे ये शब्द कहे: "हे गौतम, आप ही मेरी शरण बनो।"
जो गलत रास्ते पर भटक गया हो।" (31) [5865]

सातवें ऋषि ने मुझसे यह कहा: "मैं जीवों को पार कराने के लिए भिक्षायात्रा पर निकला हूँ;
आपको धम्म बताने का समय आ गया है । (32) [5866]

मैंने बार-बार बुद्ध से धर्म के प्रति लालसा रखते हुए प्रार्थना की । तब उन्होंने मुझे धर्म का उपदेश दिया।
वह अवस्था जो गहरी और खाली है। (33) [5867]

उनकी शिक्षा सुनकर, मैंने बहिर्वाहों का विनाश प्राप्त किया।5817

5807 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
5808 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

5809 महाभि'सक्कसंका'सो

5810 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ

5811 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

5812 दिठ्ठिगण्ड°

5813 लोकापज्जोटो

5814 sanar'āmar'a'sakk'at'o

5815 नारदिको

5816 लिट., “में”

5817 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।

मेरी जीवन अवधि पूरी तरह से नष्ट हो गई।
हे!5818 शिक्षक की दयालुता!5819 (34) [5868]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (35) [5869]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (36) [5870]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (37) [5871]

इस प्रकार बाहिया दारुचिरिया नामक बुजुर्ग ने भविष्यवाणी की।5821
वह कूड़े के ढेर पर गिर गया।5822
जब उसे एक गाय ने सींगों से घायल कर दिया था। (38) [5872]

अपने पूर्व आचरण का विस्तृत वर्णन करने के बाद, वह अत्यंत बुद्धिमान वीर पूर्णतः स्वर्ग सिधार गया।5824
श्रावस्ती में, सर्वोच्च नगरी। (39) [5873]

फिर शहर से प्रस्थान करते हुए,
सातवें ऋषि ने उसे देखकर— लकड़ी के वस्त्र धारण करने वाले ज्ञानी, बाह्यलोक में आए बाह्यलोक से आए व्यक्ति को देखकर,5825
अब सुरक्षित जमीन पर गिर गया है,5826
इंद्र के गिरे हुए ध्वज के समान,
जीवनकाल समाप्त, अपवित्रता समाप्त, 5827 ए
विजेता की शिक्षाओं का पालन करने वाला 5828 — (40-41) [5874-5875]

5818 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”

5819 mahā'ssādaŋ

5820 mahār'a'saŋ
5821 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
5822 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
5823 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव
5824 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
5825 लिट., "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था"
5826 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
5827 या "शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना"
5828 लिट., "बहिर्वाहों का विनाश"

शिक्षक ने अपने अनुयायियों से कहा
जो शिक्षाओं में आनंदित होते थे:5829
"प्राप्त करो, और उसे लेकर जला दो,
आपके साथी भिक्षु का शरीर.5830 (42) [5876]

एक स्तूप बनाओ [और] उसकी पूजा करो5831; इस महान ज्ञानी ने निर्वाण प्राप्त किया, तात्कालिक समझ में अग्रणी5832, मेरे शब्दों पर ध्यान देने वाला अनुयायी। (43) [5877]

किसी श्लोक का एक शब्द, जिसे सुनकर मन शांत हो जाता है, हजार श्लोकों से भी बेहतर है, यदि
उनके पास अर्थहीन शब्द हैं।5833 (44) [5878]

जहां जल और पृथ्वी, अग्नि और वायु का कोई आधार नहीं होता, वहां तारे नहीं चमकते, और सूर्य अदृश्य रहता है;
वहां चंद्रमा से प्रकाश नहीं मिलता, [और]
वहाँ अंधकार नहीं पाया जाता। (45, 46ए-बी) [5879]5834

और जब कोई स्वयं उस स्थान को जान लेता है, तो वह एक ऋषि या बुद्धिमान ब्राह्मण बन जाता है।
वह रूप और रूपहीनता से, सुख और दुख से मुक्त हो चुका है।
इस प्रकार [बुद्ध] ने कहा, हे भगवान,
ऋषि, तीनों लोकों के शरणस्थल। (46सी-डी, 47) [5880]

इस प्रकार पूज्य बाहिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

बाहिया थेरा की कथा का अंत हो गया है।

5829 या "जो बाहर गया था": पब्बाजितो
5830 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।
5831 शाब्दिक अर्थ, "यहाँ"
5832 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।
5833 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है।
5834 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"

534. {537.}5835 महाकौष्ठिका5836

विजेता, पदुमुत्तरा,
समस्त लोकों के ज्ञाता, पाँच नेत्रों वाले ऋषि उठे।
एक लाख युगों बाद। (1) [5881]5837
उपदेशक, 5838 प्रशिक्षक, 5839
सभी सांसों पर विजय प्राप्त करने वाला, उपदेश देने में कुशल, बुद्ध।
कई लोगों को बाढ़ पार करने के लिए मजबूर किया। (2) [5882]

दयालु,5842 करुणामय,5843
सभी प्राणों के शुभचिंतक5844 ने पाँच सिद्धांतों में यह स्थापित किया।
सभी प्रतिद्वंद्वी जो आ चुके थे। (3) [5883]

इस प्रकार वह प्रतिद्वंद्वियों द्वारा अस्पष्ट5845 और बहुत प्रसिद्ध5846 था, तथा अरहंतों द्वारा सुशोभित5847 था।
जो स्वामी और तटस्थ थे। (4) [5884]

उस महान ऋषि का शरीर अट्ठावन क्यूबिट (5848) लंबा था; वह सोने के समान मूल्यवान था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5835 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5836 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5837 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5838 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

5839 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ को देखते हुए "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5840 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5841 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

5842 लिट., "गया"

5843 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

5844 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

5845 लिट., "योग्य"

5846 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5847 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5848 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5849 °विकुटी°; मैं इसे परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (तुलिका°) के रूप में समझता हूँ।

बत्तीस महान चिह्नों को धारण करते हुए। (5) [5885]

उस समय लोगों की जीवन अवधि एक लाख वर्ष थी। इतने लंबे समय तक इस दुनिया में रहना,
उसने कई लोगों को पार कराया। (6) [5886]

फिर मैं वेदों के ब्राह्मण गुरु हंसवती में रहने लगा। (सर्वश्रेष्ठ कठोर लकड़ी के पास पहुँचते हुए, 5850)
मैंने धम्म का उपदेश सुना । (7) [5887]

फिर [बुद्ध] ने एक अनुयायी को नियुक्त किया,
जो विकसित चिंतन में परिचारित थे,5851 अर्थ और शिक्षण, व्युत्पत्ति और उपदेश में कुशल थे,
एक हीरो, उस सर्वोपरि स्थान पर। यह सुनकर मैं रोमांचित हो गया; फिर एक हफ्ते तक मैंने उसे खाना खिलाया।
बेस्ट विक्टर, 5852 अपने अनुयायियों के साथ। (8-9) [5888-5889]

अपने शिष्यों के साथ ज्ञान सागर5853 को नए वस्त्रों से ढककर, अपने चरणों में प्रणाम करते हुए,
मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। (10) [5890]

इसके बाद विश्व प्रमुख ने कहा: "उस उत्कृष्ट ब्राह्मण को देखो,
[अब] मेरे पैरों के सामने झुकी हुई, कमल-पेट की चमक के साथ।5854 (11) [5891]

यह व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ बुद्ध के भिक्षु का स्थान प्राप्त करने की आकांक्षा रखता है।
उस आस्था, उदारता और शिक्षा को सुनने के कारण,
वह जन्म-जन्मांतर तक जन्म लेता रहेगा और हर स्थान पर सुखी रहेगा;
बहुत दूर भविष्य में,
उसे वह रमणीय [स्थान] प्राप्त होगा। (12-13) [5892-5893]

एक लाख युगों में,

घास या ऊन (देखें आरडी., एसवी)

5850 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5851 लिट., "एक फूल पर"

5852 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5853 khiḍḍār'ati'y'ā
5854 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

ओक्काका (इक्ष्वाकु) कुल में उत्पन्न,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (14) [5894]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्म की वैध संतान, जिसका नाम कोट्टिता है
शिक्षक का अनुयायी होगा।" (15) [5895]

यह सुनकर मैं रोमांचित हो गया, और फिर जीवन भर सचेत, प्रेममय और बुद्धिमान बना रहा।
मैंने विजेता (16) [5896] की सेवा की।

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (17) [5897]

मैंने तीन सौ बार [देवताओं के स्वामी] ने [वहाँ] दिव्य शासन किया।
और [फिर] पाँच सौ बार मैं था
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (18) [5898]

[वहाँ] स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव था।
उस कर्म की शक्ति से,
मैं हर जगह खुश था। (19) [5899]

मैं [केवल] दो अवस्थाओं में ही पुनर्जन्म लेता हूँ:
चाहे वह किसी देवता का हो या किसी मनुष्य का।
मैं दूसरे पुनर्जन्मों में नहीं जाता:
यह अच्छे अभ्यास का फल है।5856 (20) [5900]

मैं दो उच्च कुलों, क्षत्रिय और ब्राह्मण में जन्मा हूँ।
मैं निम्न कुलों में जन्म नहीं लेता:
यह अच्छे अभ्यास का फल है। (21) [5901]

जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ, तब मैं ब्रह्मा का वंशज था, और ब्राह्मण कुल में पुनर्जन्म लिया था।
श्रावस्ती में, बहुत धनी। (22) [5902]

5855 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5856 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
5857 शाब्दिक रूप से, " पूजा "

5858 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

माता का नाम चंदवती था;
मेरे पिता अस्सलायन।
जब पूरी बुद्धिमत्ता के साथ
बुद्ध ने मेरे पिता को उपदेश दिया,
अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति से प्रसन्न होकर, मैं बेघर हो गया। मोग्गलाना मेरे शिक्षक थे;
सारी का बालक5861 मेरा गुरु था। (23-24) [5903-5904]

जब मेरे बाल काटे जा रहे थे,
दृष्टियाँ भी अपनी जड़ों सहित कट गईं। भगवा वस्त्र धारण करके रहते हुए,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (25) [5905]

क्योंकि मेरे विचार का अर्थ और शिक्षण, व्युत्पत्ति और उपदेश अच्छी तरह से विकसित थे,
विश्व प्रमुख ने मुझे उस स्थान पर रखा।5862 (26) [5906]

उपतिस्सा द्वारा प्रश्न पूछा गया, 5863 I
explained5864 with no[thing] indistinct.
इस प्रकार विश्लेषणात्मक तरीकों में,
मैं धर्म में सर्वोपरि हूँ।5865 (27) [5907]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (28) [5908]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (29) [5909]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (30) [5910]

इस प्रकार पूज्य महाकोट्ठिका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

5859 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी

5860 pariḷāho

5861 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

5862 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)

5863 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

5864 samādhikusalo ahaŋ

5865 iddhipādesu kovido

महाकोट्ठिका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

535. {538.}5866 उरुवेलकासापा5867

विजेता, पदुमुत्तरा,
समस्त लोकों के ज्ञाता, पाँच नेत्रों वाले ऋषि उठे।
एक लाख युगों बाद। (1) [5911]5868
उपदेशक, 5869 प्रशिक्षक, 5870
सांस लेने वाले सभी जीवों में से क्रॉसर-ओवर5871
उपदेश देने में कुशल,5872 [वह], बुद्ध,
कई लोगों को बाढ़ पार करने के लिए मजबूर किया। (2) [5912]

दयालु, 5873 करुणामय, 5874
सभी प्राणों के शुभचिंतक5875 ने पाँच सिद्धांतों में यह स्थापित किया।
सभी प्रतिद्वंद्वी जो आ चुके थे। (3) [5913]

इस प्रकार वह प्रतिद्वंद्वियों द्वारा अस्पष्ट5876 और बहुत प्रसिद्ध5877 था, तथा अरहंतों द्वारा सुशोभित5878 था।
जो स्वामी और तटस्थ थे। (4) [5914]

उस महान ऋषि का शरीर

5866 अपदाना नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

5867 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5868 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया))। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

5869 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

5870 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

5871 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

5872 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

5873 lit., "गया"

5874 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5875 lit., “गिर गया”
5876 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5877 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5878 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस इसे गेण्डु पढ़ता है। लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

अट्ठावन क्यूबिट 5879 [ऊंचाई] तक बढ़ गया;
वह सोने के समान मूल्यवान था,5880
बत्तीस महान चिह्नों को धारण करना। (5) [5915]

उस समय लोगों की जीवन अवधि एक लाख वर्ष थी। इतने लंबे समय तक इस दुनिया में रहना,
उसने कई लोगों को पार कराया। (6) [5916]

तब मैं हंसवती में रहता था।
एक उच्च सम्मानित ब्राह्मण। विश्व के लिए मशाल की ओर अग्रसर, 5881
मैंने धम्म का उपदेश सुना । (7) [5917]

उस महान व्यक्ति के 5882 अनुयायियों में से एक के पास एक विशाल दल था।
उन्हें सुनकर मैं रोमांचित हो गया।
उस प्रमुख स्थान पर रखा जाना। (8) [5918]

महान विजेता को आमंत्रित करते हुए,5883
मैंने उसे दान दिया।
मेरे 5884 बड़े दल के साथ, जिसमें एक हजार ब्राह्मण भी शामिल थे। (9) [5919]

नेता को प्रणाम करने के बाद, खुशी से एक तरफ खड़े होकर, भारी दान देते हुए,
मैंने उससे ये शब्द कहे [तभी]: (10) [5920]

“हे वीर, आप पर मेरे विश्वास और आपकी सेवा करने के कारण, मुझे एक बड़ा दल प्रदान कीजिए।”
[जबकि] इधर-उधर प्रवास करते हुए।” (11) [5921]

[बुद्ध], कोयल की आवाज वाले5886 शिक्षक, हाथी की तुरही जैसी आवाज वाले,5887 ने उस समय अनुचरों से बात की:
आप सभी इस ब्राह्मण को देखिए,

5879 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5880 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

5881 में उद्दालोमिका॰ को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस द्वारा पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5882 लिट., "एक फूल पर"
5883 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5884 khiḍḍār'ati'y'ā
5885 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
5886 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
5887 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

सुनहरे रंग की विशाल भुजाओं वाला, कमल के समान चेहरे और आंखों वाला, ऊपर की ओर बढ़ते शरीर के बालों वाला।
खुश, अपने सद्गुण में विश्वास के साथ।5888 (12-13) [5922-5923]

यह उस स्थान तक पहुंचने की आकांक्षा रखता है
शेर की दहाड़ वाले भिक्षु का।5889
बहुत दूर भविष्य में,
उसे वह रमणीय [स्थान] प्राप्त होगा। (14) [5924]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (15) [5925]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्म की वैध संतान, जिसका नाम कस्सपा है
शिक्षक का अनुयायी होगा।" (16) [5926]

[तब] बानवे युग पहले,
एक शिक्षक थे, अद्वितीय, 5890
अतुलनीय, 5891 अद्वितीय: 5892
फुस्सा, विश्व का प्रमुख नेता। (17) [5927]

उस एक ने, समस्त अंधकार का नाश करके, उस विशाल उलझन को सुलझाकर,5893
अमरता की वर्षा हुई,
[दुनिया] को [उसके] देवताओं से ताज़ा करना। (18) [5928]

बनारस शहर में,
[पुनर्जन्म] राजा के पुत्र5894 उस समय, हम तीन भाई थे, हम सभी
राजा के विश्वास में। (19) [5929]

बलवान, वीर अंगों और रूप-रंग के साथ,5895
हम युद्ध में कभी पराजित नहीं हुए हैं।
फिर सीमावर्ती क्षेत्रों में अशांति फैल गई,

पृथ्वी के स्वामी ने हमसे कहा: (20) [5930]

5888 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”
5889 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
5890 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
5891 pariḷāho
5892 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
5893 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
5894 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
5895 samādhikusalo ahaŋ

“आओ, सीमावर्ती क्षेत्रों में जाकर, उस वन सेना का सफाया करो,5896 मेरे राज्य को शांत करने के बाद,
फिर से आना,” उसने कहा। (21) [5931]

इसके बाद हमने [राजा से] कहा: “यदि आप हमें [बुद्ध], [विश्व के] नेता की सेवा करने की [अनुमति] देंगे,
तब हम तुम्हारे 5897 [शत्रुओं] को साफ कर देंगे।” (22) [5932]

फिर, पृथ्वी के रक्षक द्वारा भेजी गई हमारी इच्छा पूरी होने पर, हम सीमावर्ती क्षेत्रों को हथियारबंद बना देते हैं।
मुक्त होकर, हम फिर उसके पास आए। (23) [5933]

राजा से यह निवेदन करके कि हमें गुरु, विश्व-नेता की सेवा करने की अनुमति दी जाए, और इस प्रकार श्रेष्ठ ऋषि को प्राप्त करके,5898 हम
जब तक हम जीवित रहे, उसकी पूजा करते रहे। (24) [5934]

बहुत महंगा कपड़ा देना,
और प्रचुर मात्रा में 5900 स्वादिष्ट [दान भोजन],
और आवास5901 [जो] आनंददायक थे, और लाभकारी5902 दवाइयाँ
भिक्षुओं के साथ ऋषि के पास,5903 शिक्षा के कारण जन्म के प्रति तटस्थ, हम, नैतिक [और] दयालु,
ध्यान में लीन मन, प्रेममय हृदय, जो हर समय विश्व नेता की सेवा करते रहे हों,
जब विश्व प्रमुख ने निर्वाण प्राप्त किया,
अपनी पूरी ताकत से पूजा करना,5905 (25-27) [5935-5937]

वहाँ से गिरकर स्वर्ग चला गया,5906
हम तीनों ने अनुभव किया
उस स्थान पर होने पर बहुत खुशी मिलती है:

5896 iddhipādesu kovido
5897 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”
5898 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
5899 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।
5900 महाभि'सक्कसंका'सो

5901 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ

5902 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

5903 दिठ्ठिगण्ड°

5904 लोकापज्जोटो

5905 sanar'āmar'a'sakk'at'o

5906 narādicco

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (28) [5938]

मंच पर एक जादूगर की तरह5907 जो खुद को बहुत बड़ा दिखाता है, इस प्रकार अस्तित्व में भ्रमण करता है5908
विदेह का राजा बन गया।5909 (29) [5939]

नग्न5910 गुण,5911 के शब्द पर
गलत विचारों पर निर्भर हो जाना,
मैं एक बुरे रास्ते पर चल पड़ा।
दी गई सलाह पर ध्यान न देना5914
मेरी बेटी [जिसे रुजा के नाम से जाना जाता है] द्वारा, 5915
मुझे [बाद में] बहुत सलाह दी गई
ब्राह्मण नारद द्वारा, 5916
गुण के बुरे विचारों का त्याग करके, विशिष्टता के साथ पूर्णता प्राप्त करके
दस [स्वास्थ्यवर्धक] कार्य करने के तरीके,5917
अपने शरीर को त्यागकर, मैं
महल के साथ स्वर्ग गया। (30-32) [5940-5942]

जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ, तब मैं ब्रह्मा का संबंधी था।
बनारस में अपार धन-दौलत के साथ जन्म हुआ,5919
एक बड़े ब्राह्मण परिवार में.5920 (33) [5943]

मृत्यु, बीमारी और बुढ़ापे से भयभीत होकर, अपनी अपार संपत्ति का त्याग करके, निर्वाण के मार्ग की खोज में,
मैं जटिला के रूप में निकला।5921 (34) [5944]

और फिर मेरे वो दो भाई
वह भी मेरे साथ चला गया।

5907 लिट., "में"

5908 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।

5909 निब्बाती , या "वह शांत हो जाता है"

5910 mahā'ssādaŋ

5911 mahār'a'saŋ

5912 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"

5913 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
5914 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव
5915 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
5916 lit., "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था"
5917 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
5918 या "शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना"
5919 लिट., "बहिर्वाहों का विनाश"
5920 या "जो बाहर गया था": पब्बाजितो
5921 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।

उरुवेला में निर्माण करने के बाद
एक आश्रम, मैं [तब] वहाँ रहता था। (35) [5945]

मेरे वंश के कारण मुझे "कस्सापा" नाम दिया गया, क्योंकि मैं उरुवेला में रहता था।
इसलिए मैं [इस नाम से] जाना जाता था।
"उरुवेला कस्सपा" का 5922 (36) [5946]

मेरा भाई नदी के पास रहता था;5923
उनका नाम "नदी कस्सपा" था। [दूसरा व्यक्ति] गया के पास रहता था;
नाम से वह "गया कस्सपा" है। (37) [5947]

नादिकसप्पा के लिए दो सौ, और मंझले भाई के लिए तीन सौ। मेरे लिए कम से कम पाँच सौ।
वे सभी छात्र जो [तब] मेरे पीछे आए। (38) [5948]

फिर बुद्ध, अनेक चमत्कार करते हुए, मेरे पास, विश्व-प्रमुख, मनुष्यों के सारथी के पास आए।
उन्होंने मुझे [सही मार्ग पर] निर्देशित किया। (39) [5949]

मुझे एक लाख लोगों के साथ "भिक्षु बनो" कहकर दीक्षा दी गई थी;
मैंने अरहंत पद प्राप्त कर लिया।
उन सभी के साथ भी। (40) [5950]

वे और कई अन्य लोग भी
वे मेरे विद्यार्थी थे। मैं उन्हें निर्देश देने में सक्षम था।
जैसा कि सातवें ऋषि ने मुझे सलाह दी। (41) [5951]

उन्होंने मुझे सबसे आगे रखा
विशाल दल-भरी मंडली वालों में से! हे! बुद्ध के लिए किया गया यह कार्य कितना अद्भुत है!
[निश्चित रूप से] मेरे लिए फलदायी साबित हुआ। (42) [5952]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (43) [5953]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

5922 शाब्दिक अर्थ, "यहाँ"
5923 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (44) [5954]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (45) [5955]

इस प्रकार पूज्य उरुवेलकस्सपा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

उरुवेलकसप्पा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

536. {539.}5924 राधा5925

विजेता, पदुमुत्तरा,
समस्त लोकों के ज्ञाता, पाँच नेत्रों वाले ऋषि उठे।
एक लाख युगों बाद। (1) [5956]5926
उपदेशक, 5927 प्रशिक्षक, 5928
सभी सांसों पर विजय प्राप्त करने वाला, उपदेश देने में कुशल, बुद्ध।
कई लोगों को बाढ़ पार करने के लिए मजबूर किया। (2) [5957]

दयालु,5931 करुणामय,5932
सभी प्राणों के शुभचिंतक5933 ने पाँच सिद्धांतों में इसकी स्थापना की।
सभी प्रतिद्वंद्वी जो आ चुके थे। (3) [5958]

इस तरह वह अनकंफ्यूज्ड5934 था

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5924 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5925 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

5926 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया) । खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5927 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5928 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5929 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना” “चिंतन करना” “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
5930 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
5931 शाब्दिक अर्थ, “गया”
5932 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5933 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
5934 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

और प्रतिद्वंद्वियों द्वारा बहुत प्रसिद्ध5935, अरहंतों द्वारा अलंकृत5936
जो स्वामी और तटस्थ थे। (4) [5959]

उस महान ऋषि का शरीर अट्ठावन क्यूबिट5937 लंबा था; वह सोने के समान मूल्यवान था।
बत्तीस महान चिह्नों को धारण करना। (5) [5960]

उस समय लोगों की जीवन अवधि एक लाख वर्ष थी। इतने लंबे समय तक इस दुनिया में रहना,
उसने कई लोगों को पार कराया। (6) [5961]

फिर मैं मंत्रों के ब्राह्मण गुरु हंसवती में रहने लगा। उत्तम पुरुष के पास पहुँचते हुए, 5939
मैंने धम्म का उपदेश सुना , (7) [5962]

महान नायक, विश्व नेता, जनसमूहों में विश्वासयोग्य,5940 ने 5941 एक बुद्धिमान भिक्षु को नियुक्त किया,5942
उस [गुण] के सर्वोपरि स्थान में। (8) [5963]

उस समय नेता और सभा के लिए कार्य करने के बाद,
मैंने उनके चरणों में सिर झुकाया,
मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। (9) [5964]

अपनी मधुर आवाज से5943 सभी अशुद्धियों और दागों को दूर करते हुए, वह सोने की ईंटों की तरह चमकदार,5944
तब भगवान ने मुझसे कहा,

5935 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए लैटिन शब्द "हजार" और "सौ" के संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

5936 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5937 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5938 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
5939 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5940 लिट., "एक फूल पर"
5941 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5942 khiḍḍār'ati'y'ā
5943 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
5944 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

आप सुखी और दीर्घायु हों; आपका उद्देश्य पूर्ण हो। आपके लिए अत्यंत फलदायी होगा।
यह कार्य भिक्षुओं5946 और मेरे लिए किया गया। (10-11) [5965-5966]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (12) [5967]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्म की वैध संतान, जिसे राधा नाम दिया गया।
शिक्षक का अनुयायी होगा।" (13) [5968]

तुम्हारे सद्गुणों से प्रसन्न होकर, शाक्यों के पुत्र, पुरुषों के श्रेष्ठ, नेता तुम्हें नियुक्त करने जा रहे हैं।5947
जो लोग तेज बुद्धि रखते हैं उनमें सबसे आगे। (14) [5969]

यह सुनकर मैं रोमांचित हो गया, और फिर जीवन भर सचेत, प्रेममय और बुद्धिमान बना रहा।
मैंने विजेता की सेवा की। (15) [5970]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (16) [5971]

मैंने तीन सौ बार [देवताओं के स्वामी] ने [वहाँ] दिव्य शासन किया।
और [फिर] पाँच सौ बार मैं था
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। (17) [5972]

[वहाँ] स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव था।
उस कर्म की शक्ति से,
मैं हर जगह खुश था। (18) [5973]

जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ, तब मेरा जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ था।
गरीब, 5949 [और] कपड़ों और भोजन की कमी से जूझ रहे हैं,

5945 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
5946 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
5947 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
5948 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
5949 pariḷāho

राजगीर में, अंतिम शहर.5950 (19) [5974]

जब मैं बूढ़ा और कमजोर हो गया था, तब मैंने तटस्थ सारिपुत्त को एक करछुल भर भोजन दिया।
और मैं [उनके] आश्रम में आया। (20) [5975]

मुझे कोई भी दीक्षा नहीं दे रहा था।
वृद्ध और कमजोर होते हुए;5952
इसी कारण से, पुराना और बदरंग हो गया है।
मैं उस समय दुखी था। (21) [5976]

मुझे देखकर, महान करुणा,5953 महान ऋषि ने मुझसे कहा: "इस दुःख का क्या अर्थ है, पुत्र?
मुझे अपनी मानसिक पीड़ा के बारे में बताओ।" (22) [5977]

मैं पुरोहित नहीं बनूंगा, हीरो।
आपके सुप्रसिद्ध शासनकाल में;
इसलिए मैं दुःख से व्याकुल हूँ;
हे नेता, मेरी शरण बनो।" (23) [5978]

फिर भिक्षुओं को एक साथ बुलाकर,
सातवें ऋषि ने उनसे इस प्रकार प्रश्न किया: "जो लोग स्मरण रखते हैं, वे बोलें।"
इसकी सेवा [हमारे लिए]।" (24) [5979]

उस समय सारिपुत्त ने कहा:
मुझे उनका [हमारे लिए] किया गया कार्य याद है। उन्होंने हमें एक चम्मच भर खाना दिया था।
मुझे [तब] भिक्षा के लिए भटकना पड़ा।" (25) [5980]

उत्कृष्ट, उत्कृष्ट, आभारी सारिपुत्त! [अब] आप इस [पुरुष, एक] वृद्ध ब्राह्मण को नियुक्त करें;
वह एक शुद्ध नस्ल का घोड़ा बनने जा रहा है।5954 (26) [5981]

फिर मुझे आगे बढ़ना पड़ा और मुझे मिल गया।
उचित अनुष्ठान के साथ नियुक्त।5955

थोड़े ही समय में [मैंने] यह उपलब्धि प्राप्त कर ली

5950 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
5951 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
5952 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
5953 samādhikusalo ahaŋ
5954 iddhipādesu kovido
5955 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "

अपवित्रताओं का विनाश.5956 (27) [5982]

मैं रोमांचित और सचेत होकर ऋषि के शब्दों को ध्यानपूर्वक सुन रहा हूँ।
फिर विजेता ने मुझे उसमें बिठा दिया।
तेज बुद्धि वालों का सर्वोपरि स्थान। (28) [5983]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (29) [5984]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (30) [5985]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (31) [5986]

इस प्रकार पूज्य राधा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

राधा थेरा की कथा का अंत हो गया है।

---

537. {540.}5957 मोघराजा5958

विजेता, पदुमुत्तरा,
समस्त लोकों के ज्ञाता, पाँच नेत्रों वाले ऋषि उठे।
एक लाख युगों बाद। (1) [5987]5959
उपदेशक, 5960 प्रशिक्षक, 5961
क्रॉसर-5962 से अधिक सभी सांस लेने वाले,

5956 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 5957 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
5958 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
5959 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
5960 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
5961 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
5962 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

उपदेश देने में कुशल,5963 [वह], बुद्ध,
कई लोगों को बाढ़ पार करने के लिए मजबूर किया। (2) [5988]

दयालु, 5964 करुणामय, 5965
सभी प्राणों के शुभचिंतक5966 ने पाँच सिद्धांतों में यह स्थापित किया।
सभी प्रतिद्वंद्वी जो आ चुके थे। (3) [5989]

इस प्रकार वह प्रतिद्वंद्वियों द्वारा अस्पष्ट5967 और बहुत प्रसिद्ध5968 था, तथा अरहंतों द्वारा सुशोभित5969 था।
जो स्वामी और तटस्थ थे। (4) [5990]

उस महान ऋषि का शरीर अट्ठावन क्यूबिट (5970) लंबा था; वह सोने के समान मूल्यवान था।
बत्तीस महान चिह्नों को धारण करना। (5) [5991]

उस समय लोगों की जीवन अवधि एक लाख वर्ष थी। इतने लंबे समय तक इस दुनिया में रहना,
उसने कई लोगों को पार कराया। (6) [5992]

मैं उस समय हंसवती में था;
मैं एक विशेष 5972 कुल में पैदा हुआ था। दूसरों के लिए काम करने के लिए बाध्य, 5973 मैं
कोई संपत्ति नहीं थी। (7) [5993]

अधूरे तल पर रहना 5974
विशेष सीटों के लिए एक भंडारगृह का, 5975
मैंने वहाँ [उस फर्श पर] आग जलाई;

5963 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल))

5964 lit., "गया"
5965 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
5966 lit., "गिर गया"
5967 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
5968 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
5969 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
5970 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
5971 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
5972 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस द्वारा पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
5973 lit., "एक फूल पर"
5974 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
5975 khiḍḍār'ati'y'ā

धरती कठोर होकर काली पड़ गई। (8) [5994]

फिर भगवान ने अपने अनुयायियों को चार आर्य सत्य समझाते हुए एक अनुयायी की जमकर प्रशंसा की।
जिन्होंने निम्न दर्जे के कपड़े के वस्त्र पहने थे।5976 (9) [5995]

तब, उनके उस सद्गुण से रोमांचित होकर, वे तथागत के समक्ष गिर पड़े।
मैं उस सर्वोच्च स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था।
खुरदुरे वस्त्रों वालों में सबसे आगे। (10) [5996]

तब बुद्ध पद्ममुत्तरा ने अपने सभी अनुयायियों से कहा: "तुम सब उस व्यक्ति को देखो, फटे-पुराने कपड़े पहने हुए, दुबला-पतला शरीर लिए हुए,
उसके चेहरे पर आनंद और प्रसन्नता थी, वह आस्था से भरपूर था, खुश था, शरीर के बाल ऊपर की ओर बढ़े हुए थे।
दृढ़, हॉल में भोजन करते हुए।5977 (11-12) [5997-5998]

वह उस स्थान को प्राप्त करने की इच्छा रखता है।
इस भिक्षु का नाम सक्कासेना है;5978
उनकी आशा है कि यह प्रकट होगा
यह [भिक्षु] खुरदुरे कपड़े के वस्त्र पहने हुए है।" (13) [5999]

यह सुनकर,5979 रोमांचित होकर, विजेता के सामने सिर झुकाकर, विजेता के विधान में जीवन भर अच्छे कर्म करते हुए5980
उस कर्म के फलस्वरूप, मैंने दृढ़ निश्चय और संकल्प के साथ अपने मानव शरीर का त्याग कर दिया।
मैं तावतिंसा गया था। (14-15) [6000-6001]

विशेष सीटों के लिए भंडारगृह में फर्श जलाने के कृत्य के माध्यम से,
पूरे हजार [वर्षों] के लिए, मैं
नरक में जलते हुए, पीड़ा में रहते हुए। (16) [6002]

उस कर्म के शेष के कारण,
मैंने पाँच सौ [और] पुनर्जन्म लिए।

5976 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
5977 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, “मेरे परम (या उत्कृष्ट) महल में”
5978 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।
5979 शाब्दिक रूप से, “ पूजा ”
5980 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

मानव वंश में जन्म लेने के कारण,
[और] मेरी जाति के चिह्नों से चिह्नित।5981 (17) [6003]

उन्हीं पांच सौ पुनर्जन्मों के लिए, मैं त्वचा रोग से पीड़ित हूं।
मुझे बहुत कष्ट सहना पड़ा।
उस कर्म की शक्ति के माध्यम से। (18) [6004]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में, आनंद से परिपूर्ण मन के साथ,
मैंने भीख मांगकर प्राप्त भोजन से लोगों का मनोरंजन किया।
उपरिट्ठ, प्रसिद्ध व्यक्ति.5982 (19) [6005]

शेष कर्म5983 के दौरान मैंने इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ अपने मानव शरीर का त्याग किया,
मैं तब तावतिंसा गया। (20) [6006]

जब मेरा आखिरी 5984 पुनर्जन्म हुआ, तो मैं एक योद्धा 5985 कबीले में पैदा हुआ।
मेरे पिता की मृत्यु के बाद,
तब मेरे पास एक बड़ा राज्य था। (21) [6007]

त्वचा रोग से पीड़ित होने के कारण मुझे रात में आराम नहीं मिलता। निरर्थक शाही आराम के कारण,5986
तब मुझे “बेकार लोगों का राजा” कहा जाता था।5987
शरीर की खामियों को देखकर,
मैं बेघर हो गया। मैंने विद्यार्थी के रूप में दाखिला लिया।
बावरी, प्रमुख ब्राह्मण का। (23) [6009]

एक विशाल दल के साथ, पुरुषों के नेता के पास पहुँचते हुए,5988
मैंने एक सूक्ष्म प्रश्न पूछा
हीरो, डिबेटर-क्रशर.5989 (24) [6010] “[इस दुनिया में या अगली दुनिया में]

5981 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी

5982 pariḷāho

5983 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

5984 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)

5985 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

5986 samādhikusalo ahaŋ

5987 iddhipādesu kovido

5988 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

5989 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है

[या] ब्रह्मा के लोक में [उसके] देवताओं के साथ, [क्या] वह आपको, गौतम, प्रसिद्ध व्यक्ति, के दर्शन नहीं जान सकता? (25) [6011]

इस प्रकार उत्कृष्ट ज्ञान रखने वाला व्यक्ति5991 प्रश्न के माध्यम से इस बिंदु पर आता है, [जबकि] उस दुनिया को देखते हुए, [तब], क्या मृत्यु का राजा उसे नहीं देखता? (26) [6012]

सभी रोगों के चिकित्सक, 5992
बुद्ध ने मुझे उत्तर दिया: “संसार को खाली समझो।”
मोगराज;5995 हमेशा सचेत,
[और] अपने [झूठे] विचारों को जड़ से उखाड़ फेंकना,5996
इस तरह वह मृत्यु से परे चला जाएगा।
इस प्रकार दुनिया को देखते हुए,
मृत्यु का राजा उसे नहीं देखता। (27-28) [6013-6014]

और उस आयत का समापन इस प्रकार है, अपने बाल और दाढ़ी काटकर, केसरिया वस्त्र धारण करना।
मैं अरहंत भिक्षु बन गया। (29) [6015]

बीमारी से पीड़ित होने के कारण मैं सभा मठों में नहीं रहता।
“मठ को नाराज मत करो” —
उस शब्द से मैं और भी अधिक उत्पीड़ित हो जाता हूँ। (30) [6016]

कूड़े के ढेरों के ऊपर से, श्मशान भूमि से, गाड़ियों के रास्तों से [कपड़ा] लेकर, मैंने उससे [अपना] वस्त्र बनाया।
मैंने मोटे कपड़े का चोला पहना हुआ है। (31) [6017]

मुझे इस बात से प्रसन्नता हुई कि मेरे सद्गुणों के कारण, महान चिकित्सक, नेता ने मुझे सर्वोच्च स्थान पर बिठाया।
जो खुरदुरे कपड़े के वस्त्र पहनते हैं। (32) [6018]

5990 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।

5991 महाभि'सक्कसंका'सो

5992 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ

5993 ॰विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

5994 दिट्ठिगण्ड°

5995 लोकापज्जोटो

5996 sanar'āmar'a'sakk'at'o

5997 narādicco

5998 लिट., "में"

5999 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।

पुण्य और पाप दोनों ही नष्ट हो जाते हैं;
हर बीमारी दूर हो जाती है।
आग की तरह, [मैं] किसी भी चीज़ से आसक्त नहीं हूँ; मैं निर्वाण प्राप्त करूँगा। (33) [6019]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (34) [6020]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (35) [6021]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (36) [6022]

इस प्रकार पूज्य मोगराज थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

मोगराज थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

समीक्षा:

Kaccāna, Vakkalī Thera,
जिसका नाम महाकप्पिना, डब्बा, और उसका नाम कुमार, बहिया, मास्टर कोथिता, उरुवेलकस्सप, राधा,
और पंडित मोगराजा।
यहां तीन सौ छंद हैं, जो अन्य बासठ छंदों पर ढेर किए गए हैं।

कच्चाना अध्याय, चौवनवाँ (6000)

6000 nibbāti , या "वह शांत हो जाता है"

भद्दिया अध्याय, पचपनवाँ

538. {541.}6001 लकुङ्कभद्दिया6002

विजेता, पदुमुत्तरा,
सब कुछ देखने वाली दृष्टि वाला, पाँच आँखों वाला, प्रकट हुआ।
एक लाख युगों बाद। (1) [6023]

तब मैं हंसवती में रहता था।
एक करोड़पति का बेटा, बहुत अमीर। पैदल घूमते हुए,
मैं भिक्षुओं के आश्रम में गया।6003 (2) [6024]

उस समय, विश्व के मशाल, नेता, धम्म का उपदेश दे रहे थे । उन्होंने एक अनुयायी की जमकर प्रशंसा की।
मधुर आवाज वालों में विशिष्ट। (3) [6025]

यह सुनकर मैं रोमांचित हो गया और मैंने महान ऋषि के लिए एक नेक काम किया।
गुरु के चरणों की पूजा करने के बाद,
मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। (4) [6026]

फिर भिक्षुओं की सभा के बीच,
बुद्ध, मार्गदर्शक,6005 ने भविष्यवाणी की: "बहुत दूर भविष्य में,
उसे वह रमणीय [स्थान] प्राप्त होगा। (5) [6027]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (6) [6028]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्म की वैध संतान,

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6001 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

6002 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

6003 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी के रूप में (पीएसआई यवयेन कल अहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या जंकेट के रूप में (पीएसआई: सिंह. रोटीया))। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

6004 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

6005 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

जिसका नाम भद्दिया है
शिक्षक का अनुयायी होगा।" (7) [6029]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (8) [6030]

[तब] बानवे युग पहले,
फुस्सा नाम का नेता उठा,
पहुँचना कठिन, 6006 वश में करना कठिन, 6007
सभी लोकों में सर्वोच्च,6008 विजेता। (9) [6031]

उन्हें सुचारु आचरण का वरदान प्राप्त था।
भव्य, 6010 सीधा और राजसी, 6011
हर प्राणी के लिए शुभकामनाएँ, 6012
उसने बहुतों को गुलामी से मुक्त कराया। (10) [6032]

मैं [तब] एक चित्तीदार कोयल थी,6013
उनके उत्तम आश्रम, "नंदा" में।6014
मैं आम के पेड़ में रह रहा हूँ।
[फुस्सा बुद्ध की] सुगंधित कुटिया के पास.6015 (11) [6033]

सर्वोच्च विजेता को देखकर,6016
दान के योग्य, 6017 भीख मांगने जाना, [मेरे] हृदय को आनंदित करना,
तब मैंने मधुर स्वर में पुकारा। (12) [6034]

फिर राजमहल उद्यान में जाकर आमों का एक गुच्छा ले आए,
बहुत पका हुआ, सुनहरे रंग की त्वचा वाला।
मैं उन्हें संबुद्ध के पास लाया। (13) [6035]

6006 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

6007 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

6008 शाब्दिक रूप से, "गया"

6009 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

6010 लिट., "गिर गया"

6011 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

6012 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

6013 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप

भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

6014 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

6015 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

6016 में uddalomika° को BJTS द्वारा PTS uddhalomikā के स्थान पर पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, RD, sv देखें)

6017 शाब्दिक रूप से, "एक फूल पर"

तब मेरे हृदय को जानकर, विजेता ने, महान करुणा के साथ, नेता ने, भिक्षा ग्रहण करने के लिए अपना कटोरा उठाया।
उसके परिचारक के हाथ से.6018 (14) [6036]

मैं प्रसन्न मन से दे रहा हूँ
ग्रेट सेज6019 में आमों का एक गुच्छा रखा गया है
कटोरे में अपने दोनों पंख दबाकर (प्रशंसा में), मैंने मधुर स्वर में, कानों को भाने वाली ध्वनि में पुकारा।
सुनने योग्य, बहुत सुंदर, बुद्ध पूजा के लिए ।
[फिर] मेरे घोंसले6021 में जा रहा हूँ। (15-16) [6037-6038]

फिर एक बाज़6022 दुष्ट मन से,6023 ऊपर उड़कर,6024 मुझे मार डाला, मेरे हृदय में प्रेम और दया थी, मेरे
इच्छाएँ बुद्ध के प्रेम में बदल गईं। (17) [6039]

वहाँ से गिरकर, तुसिता में, जहाँ मैंने बहुत सुख का अनुभव किया था, मैं एक मानव गर्भ में आ गई।
उस कर्म की शक्ति के माध्यम से। (18) [6040]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में
ब्रह्मा के संबंधी, महान यशस्वी, जिनकी वंश परंपरा के अनुसार उनका नाम कश्यप है,6026
सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता,6027 [बुद्ध,] उत्पन्न हुए। (19) [6041]

व्यवस्था को रोशन करते हुए, दुष्ट प्रतिद्वंद्वियों पर विजय प्राप्त करते हुए, सीखने के इच्छुक लोगों को शिक्षा देते हुए, वह
निर्वाण प्राप्त किया, 6028 अनुयायियों के साथ। 6029 (20) [6042]

जब विश्व प्रमुख ने निर्वाण प्राप्त किया,

6018 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

6019 khiḍḍār'ati'y'ā

6020 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

6021 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

6022 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।

6023 शाब्दिक रूप से, " पूजा "

6024 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

6025 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी

6026 pariḷāho
6027 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
6028 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
6029 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

असंख्य लोग प्रसन्न होकर गुरु का स्तूप बना रहे हैं।
बुद्ध की पूजा करने के लिए 6030. (21) [6043]

उन्होंने आपस में इस प्रकार सलाह दी: "आइए, हम उस महान ऋषि के लिए सात मील ऊँचा स्तूप बनाएँ।"
सभी सात रत्नों से सुशोभित। (22) [6044]

6031 कासी के राजा की सेना का नेता, 6032 किकी,
मैंने एक मामूली उपाय की बात की थी,
स्तूप के माप के रूप में 6033। (23) [6045]

उस समय, मेरे कहने पर, उन्होंने उस वीर पुरुष के लिए एक मील ऊँचा स्तूप बनवाया।
[जो] विभिन्न रत्नों से सुशोभित था। (24) [6046]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (25) [6047]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, मैं एक करोड़पति परिवार में पैदा हुआ हूँ, जो धनी, समृद्ध और बेहद अमीर है।
महान नगर श्रावस्ती में। (26) [6048]

शहर के प्रवेश द्वार पर देखकर
बुद्ध,6035 [मेरा] मन चकित हो गया, आगे बढ़ते हुए, थोड़े ही समय में,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (27) [6049]

स्तूप का आकार छोटा करने के कर्म के फल स्वरूप, मैं बौने शरीर के साथ पैदा हुआ हूँ।
जो अनादर के योग्य है। (28) [6050]

सातवें ऋषि की मधुर ध्वनि से आराधना करने के बाद,

6030 samādhikusalo ahaŋ
6031 iddhipādesu kovido
6032 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
6033 mārasenāpamaddano , BJTS reads mārasenappamaddano
6034 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
6035 महाभि'सक्कसंका'सो
6036 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ

मैंने शीर्ष स्थान प्राप्त किया
मधुर आवाज वाले भिक्षु। (29) [6051]

बुद्ध को फल देने और सद्गुणों के अनुरूप चलने के कारण, मुझे भिक्षुत्व का फल प्राप्त हुआ।
मैं अब भी बेदाग़ जीवित हूँ। (30) [6052]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (31) [6053]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (32) [6054]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (33) [6055]

इस प्रकार पूज्य लकुंटकभद्दिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

लकुंटकभद्दिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

539. {542.}6037 कनख-रेवता6038

विजेता, पदुमुत्तरा,
सब कुछ देखने वाला, दुनिया का नेता, उदय हुआ।
एक लाख युगों बाद। (1) [6056]

सिंह-जबड़े वाला6039 और ब्रह्मा-स्वर वाला,6040 उसकी ध्वनि6041 हंस या ढोल जैसी थी;

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6037 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

6038 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

6039 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

6040 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
6041 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

हाथी की तरह वीर चाल,6042
बहुत चमकीला [जैसे] चंद्रमा [या] सूर्य, (2) [6057]

बहुत बुद्धिमान, 6043 महान नायक,
महान ध्यानी, महान मित्र, 6044
अत्यंत दयालु,6045 प्रभु,
महान अंधकार का निरोधक,6046 (3) [6058]

तीनों लोकों के प्रमुख, 6047 संबुद्ध, ऋषि, प्राणियों की इच्छाओं के ज्ञाता, 6048
कई लोगों का नेतृत्व करना जिनका नेतृत्व किया जा सकता है6049
जब भी वह धम्म का उपदेश देता है , (4) [6059]

विक्टर ने अपने दल के बीच प्रशंसा करते हुए 6050 लोगों को प्रसन्न किया।
एक नायक, ध्यान करने वाला, शांत
[और] अबाधित समाधि-प्रेमी [भिक्षु]। (5) [6060]

तब मैं वेदों के ब्राह्मण गुरु हंसवती में रहने लगा। उपदेश सुनकर मैं रोमांचित हो गया,
मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। (6) [6061]

तब विजेता ने भविष्यवाणी की,
नेता, सभा के बीच में,
"हे ब्राह्मण, तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए, क्योंकि
आप उस रमणीय [स्थान] को प्राप्त करेंगे। (7) [6062]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (8) [6063]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,

6042 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
6043 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
6044 शाब्दिक रूप से, "गया"
6045 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
6046 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

6047 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
6048 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
6049 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
6050 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
6051 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

धम्म की वैध संतान, जिसका नाम रेवता है
शिक्षक का अनुयायी होगा।" (9) [6064]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (10) [6065]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, मेरा जन्म कोलिया शहर में हुआ है।
एक समृद्ध क्षत्रिय कुल में,
धनी, समृद्ध, बहुत धनी। (11) [6066]

जब बुद्ध ने धम्म का उपदेश दिया
कपिलवस्तु [शहर] में,
वेल-गॉन-वन में प्रसन्न होना6052
मैं बेघर हो गया। (12) [6067]

मुझे इधर-उधर कई संदेह थे, [क्या] उचित है, [क्या] अनुचित है;6053 [जब] मैं सर्वोच्च धम्म का प्रचार कर रहा था ।
बुद्ध ने उन सभी समस्याओं का समाधान किया। (13) [6068]

उसके बाद मैंने अस्तित्व को पार कर लिया।
फिर समाधि की अवस्था में मिलने वाले आनंद के शौकीन
मैं जीवित था। उस समय, मुझे देखकर,
बुद्ध ने मेरे बारे में यह कहा: (14) [6069]

"इस दुनिया में या दूसरी दुनिया में जो भी संदेह मौजूद हों,6055 [चाहे] वे स्वयं को ज्ञात हों या किसी और को, ध्यान करने वाले उन सभी को त्याग देते हैं।"
पवित्र जीवन जीना,6056 ऊर्जावान रूप से।"6057 (15) [6070]6058

कर्म ने एक लाख का फल दिया
[युगों बाद] ने मुझे यहाँ [इसका] फल दिखाया:
पूरी तरह से मुक्त, तीर की तरह तेज,

मैंने अपने दोषों को नष्ट कर दिया है। (16) [6071]

फिर विश्व-श्रेष्ठ,6059 ऋषि,

6052 में उद्दालोमिका॰ को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
6053 लिट., "एक फूल पर"
6054 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
6055 khiḍḍār'ati'y'ā
6056 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
6057 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
6058 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
6059 शाब्दिक रूप से, " पूजा "

ट्रान्स संगीत के प्रति मेरा प्रेम देखकर,
तब उस महान ऋषि ने मुझे नियुक्त किया:
"ध्यान करने वाले भिक्षुओं में सबसे आगे।" (17) [6072]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (18) [6073]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (19) [6074]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) [6075]

इस प्रकार पूज्य कंख-रेवत थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कंख-रेवत थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

540. {543.}6060 Sīvali6061

विजेता, पदुमुत्तरा,
सब कुछ देखने वाला, दुनिया का नेता, उदय हुआ।
एक लाख युगों बाद। (1) [6076]

उनके नैतिक मूल्यों को मापा नहीं जा सकता था, उनकी ध्यान अवस्थाएँ बिजली की तरह तीव्र थीं, उनका विशाल ज्ञान भी मापा नहीं जा सकता था।
और किसी भी चीज़ से अलग स्वतंत्रता।6064 (2) [6077]

नेता ने धम्म का उपदेश दिया

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6060 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6061 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
6062 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
6063 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
6064 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

पुरुष, देवता,6065 सर्प-देवता [और]
सभी ब्रह्मा एक साथ आते हैं।
[बौद्ध] भिक्षुओं और ब्राह्मणों के साथ मिश्रित। (3) [6078]

भीड़ में आत्मविश्वास से भरे हुए, 6066 [बुद्ध] ने पुण्य से भरपूर, बहुत ग्रहणशील और उपहार के योग्य स्थान रखा।
उस प्रमुख स्थान पर अनुयायी। (4) [6079]

मैं उस समय क्षत्रिय था।
"हंसा" नामक नगर में;6067
विक्टर के शब्दों को सुनकर [के बारे में]
अनुयायी की सदाचारिता,6068 (5) [6080]

बुद्ध को एक सप्ताह के लिए आमंत्रित करना
मैंने [उसे] उसके अनुयायियों के साथ भोजन कराया। बड़े पैमाने पर दान दिया।
मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। (6) [6081]

फिर [वह], लोगों में श्रेष्ठ, मुझे अपने चरणों में झुकते हुए देखकर, महान नायक ने अपनी मधुर आवाज में कहा,
मेरे विषय में ये शब्द कहे: (7) [6082]

फिर भीड़, चाहत में
विजेता, देवताओं, टाइटन्स, संगीत अप्सराओं, अत्यंत शक्तिशाली ब्रह्माओं के वचन सुनने के लिए,6070

और [बौद्ध] भिक्षुओं और ब्राह्मणों ने हाथ जोड़कर उनकी प्रशंसा की: “हे श्रेष्ठ पुरुष, आपकी जय हो!”
हे परम पुरुष, आपकी जय हो! इस क्षत्रिय ने एक सप्ताह तक यह सेवा प्रदान की।
आपको भारी दान दिया जा रहा है।6072
हम उनके लिए फल सुनने की कामना करते हैं;

6065 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

6066 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

6067 शाब्दिक रूप से, "गया"

6068 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

6069 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

6070 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

6071 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

6072 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

हे महान ऋषि, भविष्यवाणी कीजिए। (8-10) [6083-6085]

उसके बाद भगवान बुद्ध ने कहा, “तुम सब मेरी बातें ध्यान से सुनो:
कौन बता सकता है कि उपहार का फल क्या है?
बुद्ध के लिए सुस्थापित
[या] सभा, हद से ज़्यादा?
इसके फल असीम होंगे।
यह धनी व्यक्ति सचमुच कामना कर रहा है
उस परम स्थान को प्राप्त करने के लिए। (11-12) [6086-6087]

वह भिक्षु सुदस्सना की तरह ही अपार धन अर्जित करेगा,6074 [और] मेरी तरह भी [भी];
उसे भविष्य में वह प्राप्त होगा। (13) [6088]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (14) [6089]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्म की वैध संतान, जिसका नाम सीवली है
शिक्षक का अनुयायी होगा।” (15) [6090]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (16) [6091]

[तब] इक्यावन युग पहले,
विश्व नेता विपस्सी का उदय हुआ, सुंदर आँखों वाले,6075
हर चीज़ में अंतर्दृष्टि के साथ.6076 (17) [6092]

फिर मैं बंधुमती में रहने लगा।
किसी विशेष गोत्र का सदस्य;6077
मुझ पर दया की जाती थी और मुझे चाहा जाता था।
एक कर्म को समाप्त करने के इरादे से.6079 (18) [6093]

6073 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
6074 °विकुटी°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
6075 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
6076 लिट., "एक फूल पर"
6077 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
6078 khiḍḍār'ati'y'ā
6079 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में

फिर एक निगम6080 ने महान ऋषि विपस्सी के लिए एक मठवासी विद्यालय6081 का निर्माण किया।
जो बड़ा और व्यापक रूप से प्रसिद्ध था। (19) [6094]

ठोस भोजन के साथ देने के लिए नए प्रकार के दही और शहद की खोज
महान दान-दान के अंत में,
उन्हें 6083 [देने के लिए कोई नहीं मिला]। (20) [6095]

फिर उसमें से कुछ लेकर,6084
ताजा दही और शहद भी।
मैं निरीक्षक के घर गया,6085
और यह खोजते हुए कि उन्होंने मुझे देखा।6086 (21) [6096]

एक हजार की पेशकश करने पर भी,
उन्हें वे दोनों चीजें प्राप्त नहीं हुईं।6087
तब मैंने इस बारे में इस प्रकार सोचा: "वह [कीमत] बहुत कम नहीं होगी। चूंकि ये सभी लोग उस दिवंगत आत्मा का सम्मान कर रहे हैं,
इसलिए मैं भी एक [पुण्य] कार्य करूंगा।"
विश्व-प्रभु के लिए सभा के साथ।" (22-23) [6097-6098]

फिर इस तरह सोचने के बाद, दही और

मैंने उन्हें शहद दे दिया
सभा के साथ विश्व का स्वामी। (24) [6099]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (25) [6100]

फिर से, बनारस में, होने के कारण
एक राजा [जो] बहुत प्रसिद्ध था, एक शत्रु पर क्रोधित हो गया [तब,]
मैंने गेटवे को अवरुद्ध करवा दिया। (26) [6101]

6080 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
6081 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
6082 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
6083 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
6084 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
6085 pariḷāho
6086 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
6087 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
6088 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

फिर, तपस्वियों को भी रोकते हुए, इसकी एक सप्ताह तक इस प्रकार रखवाली की गई।6089
इसलिए, इसके परिणामस्वरूप
कर्म, मैं बुरी तरह नरक में गिर गया।6091 (27) [6102]

और अब मेरे अंतिम पुनर्जन्म में,
क्षत्रिय के अच्छे कर्मों के कारण,6092
मेरा जन्म कोलिया शहर में हुआ है;
मेरी माँ सुप्पावासा,6093 थीं
पिता महाली लिच्छवी.6094
द्वार अवरुद्ध करने के कारण, मेरी गर्भावस्था सात साल तक चली।
मेरी माँ के गर्भ में पीड़ा। (28-29) [6103-6104]

जन्म नलिका में एक सप्ताह का उल्लंघन, 6095
मुझे बहुत कष्ट सहना पड़ता है। क्योंकि उसने [तब] स्वीकृति दे दी थी।
मेरी माँ को बहुत कष्ट हुआ [अब].6096 (30) [6105]

श्रावस्ती से प्रस्थान करते हुए, मैं
बुद्ध को उस पर दया आई थी;
जिस दिन मैंने यात्रा शुरू की, उसी दिन
मैं बेघर हो गया। (31) [6106]

मेरे गुरुः सारिपुत्त; शक्तिशाली 6097 मोग्गलाना, ज्ञानी, ने मुझे [शिक्षक के रूप में] शिक्षा दी।
[जब वह] मेरे बाल हटा रहा था। (32) [6107]

जब मेरे बाल काटे जा रहे थे, उसी दौरान मुझे अरहंत पद प्राप्त हुआ।
देवता, नागदेव और मनुष्य
मुझे आवश्यक वस्तुएँ ला रहे हैं।6098 (33) [6108]

क्योंकि, प्रसन्न होकर, मैंने पूजा की6099
[बुद्ध] ने पद्ममुत्तरा नाम रखा

6089 samādhikusalo ahaŋ
6090 iddhipādesu kovido
6091 शाब्दिक रूप से, "पूजा की"
6092 mārasenāpamaddano , BJTS reads mārasenappamaddano
6093 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
6094 महाभि'सक्कसंका'सो
6095 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ
6096 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
6097 diṭṭhigaṇḍa°
6098 लोकपज्जोटो
6099 sanar'āmar'a'sakk'at'o

और मार्गदर्शक, विपस्सी [बुद्ध],
मैं आवश्यकताओं से विशिष्ट हूँ। (34) [6109]

उन कर्मों की विशिष्टता के कारण, मुझे हर जगह अपार और असीम धन प्राप्त हो रहा है।
जंगलों, गाँव, पानी [और] ज़मीन में। (35) [6110]

जब गाइड रेवता को देखने के उद्देश्य से यात्रा कर रहा हो,
विश्व के प्रमुख नेता, तीस हजार भिक्षुओं के साथ, महान ज्ञानी, 6100 महान नायक,
विश्व के प्रमुख नेता भिक्षुओं के साथ, 6101
तब मैंने बुद्ध को देवताओं द्वारा मेरे लिए लाई गई आवश्यक वस्तुओं से सेवा की; जाने के बाद उन्होंने रेवता को देखा।
फिर जेतवन की ओर प्रस्थान करते हुए,
[उन्होंने] मुझे उस सबसे प्रमुख स्थान पर रखा। (36-38) [6111-6113]

शिक्षक, हर दुनिया का मित्र, 6103
भीड़ के बीच मेरी प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा: "हे भिक्षुओं, सिवली सबसे आगे हैं।"
मेरे छात्रों में प्राप्तकर्ता।" (39) [6114]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (40) [6115]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (41) [6116]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (42) [6117]

इस प्रकार पूज्य सिवली थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सिवली थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

6100 narādicco
6101 लिट., “में”
6102 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
6103 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”

---

541. {544.}6104 वांगीसा6105

विजेता, पदुमुत्तरा,
सब कुछ देखने वाला, दुनिया का नेता, उदय हुआ।
एक लाख युगों बाद। (1) [6118]

जैसे सागर की लहरें, और जैसे आकाश में तारे, वैसे ही संबुद्ध का वचन है।
अरहंतों द्वारा विचार किया जाता है। (2) [6119]

भीड़ में सर्वोच्च विजेता
बौद्ध भिक्षुओं और ब्राह्मणों के साथ मिश्रित होने के कारण, लोगों द्वारा उनका सम्मान किया जाता है।
देवताओं, टाइटन्स और सर्प-देवताओं के साथ। (3) [6120]

विजेता, विश्व को पार करने वाला,6106 अपनी किरणों से दुनिया को प्रकाशित करता है,6107 और अपने शब्दों से द्वार खोलता है,6108
आज्ञाकारी कमल[-लोग].6109 (4) [6121]

सर्वोच्च पुरुष, चार पूर्ण विश्वासों से परिपूर्ण,6110
भय और कायरता का त्याग,6111
शांति प्राप्त होने पर आश्वस्त है,6112.6113 (5) [6122]

विश्व-प्रमुख को बुद्धत्व के संपूर्ण क्षेत्र के रूप में मान्यता प्राप्त है,6114 [जो कि] उत्कृष्ट बैल का स्थान है;6115

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6104 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

6105 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

6106 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

6107 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

6108 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

6109 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

6110 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

6111 शाब्दिक रूप से, "गया"

6112 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

6113 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

6114 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

6115 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में, मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंड (भाग, अंश, टुकड़ा, छोटा) "

इसका खंडन करने वाला कोई नहीं है। (6) [6123]

जब तटस्थ व्यक्ति, [बुद्ध], निर्भय होकर सिंह की गर्जना करते हैं6116
न कोई ईश्वर, न कोई मनुष्य, न स्वयं ईश्वर6117
मौजूद है जो [उसके शब्दों] का खंडन करता है। (7) [6124]

उत्तम धम्म का उपदेश देते हुए , देवताओं सहित संसार का भ्रमण कराते हुए, जनसमूहों के बीच आत्मविश्वास से परिपूर्ण।
वह धम्म के पहिये को घुमा रहा है । (8) [6125]

एक सम्मानित अनुयायी के उच्च गुणों की प्रशंसा करते हुए,
वाक्पटुता में अग्रणी6118 [भिक्षुओं],
उसने उसे उस प्रमुख स्थान पर नियुक्त किया। (9) [6126]

तब मैं हंसवती में रहता था।
एक ब्राह्मण [इसी प्रकार] सम्मानित, जन्म से ही समस्त वेदों का ज्ञान रखने वाला।
भाषण का स्वामी,6119 वाद-विवाद-कुचलने वाला.6120 (10) [6127]

उस महान नायक के पास पहुँचकर, धम्म उपदेश सुनकर , मुझे अपार आनंद प्राप्त हुआ।
अनुयायी के सद्‌गुण से प्रेम करना। (11) [6128]

विश्व के आनंददाता, सुशोभित व्यक्ति को सभा के साथ आमंत्रित करते हुए,
मैंने उन्हें सात दिनों तक भोजन परोसा।
[और] फिर मैंने [उन्हें] कपड़े से ढक दिया।6123 (12) [6129]

उनके चरणों में सिर झुकाकर, मुझे विदा मिल गई, हाथ जोड़कर, प्रसन्नता से, एक तरफ खड़ा था।
मैंने परम विजेता की प्रशंसा की: (13) [6130]

माप), सौ भेण्डु [लंबा? मोटा?]।"

बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में 6116 में कई रूपों में 'गेण्डु' लिखा है । कम से कम प्रसारण के दौरान, ये अस्पष्ट छंद आज की तुलना में शायद उतने ही अस्पष्ट रहे होंगे, भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के संकेत हों जिसमें मूल रचना की गई थी।

6117 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

6118 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

6119 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

6120 लिट., "एक फूल पर"

6121 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

6122 khiḍḍār'ati'y'ā

6123 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

हे ऋषियों के तेंदुए, आपकी जय हो!6124
हे श्रेष्ठ पुरुष, आपकी जय हो! हे समस्त लोकों के स्वामी, आपकी जय हो!
हे निर्भीकता के निर्माता, आपकी प्रशंसा हो!6125 (14) [6131]

हे मृत्यु के भ्रम को दूर करने वाले, आपकी जय हो!6126
आपको सलाम, झूठे विचारों का नाश करने वाले!6127
हे शांतिदायक दिलासा देने वाले, आपकी जय हो!6128
आपकी प्रशंसा हो, शरण से परे चले गए!6129 (15) [6132]

हे पूजनीय: 6130 प्रभुहीनों के प्रभु, भयभीतों के साहसदाता, 6131 थके हुए लोगों के विश्राम स्थल, 6132
शरण चाहने वालों के लिए शरण।" (16) [6133]

महान सद्‌गुण वाले की प्रशंसा करते हुए,6133
मैंने संबुद्ध से इसी प्रकार वक्ताओं के ईश्वर से कहा:6134
"मैं उस भिक्षु की स्थिति प्राप्त कर रहा हूँ।"6135 (17) [6134]

असीम वाक्पटुता वाले,6136
उस समय भगवान ने कहा:
“यह वह व्यक्ति था जिसने अनुयायियों के साथ एक सप्ताह तक बुद्ध की उपासना की, और
उन्होंने मेरे सद्गुणों की प्रशंसा की।
अपने हाथों से किए गए कार्यों से प्रसन्न होकर, वह उस स्थान को प्राप्त करने की इच्छा रखता है।
उस भिक्षु का जो वक्ताओं का देवता है। (18-19) [6135-6136]

बहुत दूर भविष्य में,
उसे वह रमणीय स्थान प्राप्त होगा।
आनंद लेते हुए, बिना किसी कमी के।

6124 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
6125 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।
6126 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”
6127 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
6128 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी
6129 pariḷāho
6130 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
6131 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
6132 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
6133 samādhikusalo ahaŋ
6134 iddhipādesu kovido
6135 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”
6136 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
6137 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

देवताओं और मनुष्यों के बीच सुख 6138। (20) [6137]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (21) [6138]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्म की वैध संतान, जिसका नाम वांगीसा है
शिक्षक का अनुयायी होगा।” (22) [6139]

यह सुनकर मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ, और फिर जीवन भर, प्रेममयी हृदय से, मैंने अपना जीवन यापन किया।
इस प्रकार जाने वाला व्यक्ति आवश्यक शर्तों के साथ। (23) [6140]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (24) [6141]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, मेरा जन्म एक भिक्षु वंश में हुआ है।
जब मैं थी तब मेरा जन्म हो चुका था।
[केवल] मेरे जन्म के सात साल बाद। (25) [6142]

मैं जन्म से ही सभी वेदों का ज्ञाता हूं, वाणी शिक्षकों के बीच आत्मविश्वास से भरा हूं, मेरी आवाज मधुर है और मैं विविध भाषाओं में बोलने में सक्षम हूं।
अन्य भाषणों को कुचलते हुए। (26) [6143]

वंग में जन्मा, मैं "वंग लॉर्ड" हूँ,6139
या [मैं] "शब्दों का स्वामी" के रूप में जाना जाता हूँ;6140
इस प्रकार मेरा नाम "वांगीसा" पड़ गया।
जिसे विश्व भर में सम्मानित किया जाता है। (27) [6144]

जब मुझे विवेक प्राप्त हो गया,
अभी भी6141 मेरी जवानी के पहले चरण6142 में, तब प्यारे राजगीर [शहर] में
मैंने [भिक्षु] सारिपुत्त को देखा, (28) [6145]

पच्चीसवाँ पाठ भाग

6138 महाभिऽसक्कसंकाऽसो
6139 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ
6140 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
6141 दिट्ठिगण्ड°
6142 लोकापज्जोटो

भिक्षा और भोजन की तलाश में इधर-उधर भटकते हुए, हाथ में कटोरा लिए, अत्यंत संयमित, आँखें स्थिर, कम बोलने वाला,6143
हल की लंबाई से आगे नहीं देख रहे.6144 (29) [6146]

उन्हें देखकर, मैं विस्मयचकित हो गया, और मैंने अपने लिए उचित शब्दों में बात की।
[सुंदर] छंदों और पंक्तियों में,
क्षणिक विचारों के धब्बों से मुक्त।6145 (30) [6147]

तब उस बुद्धिमान, उस नायक ने उत्तर में मुझसे इस प्रकार कहा: "जिसका वर्णन मेरे गुरु ने किया है,
संबुद्ध, विश्व के नेता।" (31ए-बी) [6148]6146

[फिर उन्होंने] एक भावुक भाषण दिया, जिसका सामना करना कठिन था,6147 अंतिम।
6148 [कि] रंगीन 6149 बोलने से प्रसन्न
तटस्थ [सारिपुत्त] द्वारा,
उनके चरणों में सिर झुकाकर,
मैंने कहा, "मुझे दीक्षा प्रदान करो।" (31सी-डी, 32) [6149]6151

तब, महान ज्ञान से परिपूर्ण उस व्यक्ति ने मुझे श्रेष्ठ बुद्ध के पास ले जाया। मैंने उनके चरणों में सिर झुकाकर प्रणाम किया।
मैं शिक्षक की उपस्थिति में बैठा था। (33क-ख) [6150]6152

बेस्ट डिबेटर6153 ने मुझसे कहा, "वांगीसा, क्या तुम किसी को जानते हो?
क्या कला का कोई अस्तित्व ही नहीं है? मैंने इस बारे में बात की।
और [तब] मैंने [उससे] कहा, "मुझे पता है"। (33सी-डी) [6151]6154

"अपने ज्ञान की विशिष्टता के आधार पर, यदि संभव हो तो, [तो अब] इसके बारे में बात करें।"
जंगल में फेंकी गई एक मृत खोपड़ी,

6143 sanar'āmar'a'sakk'at'o
6144 नारदिक्को
6145 लिट., "में"
6146 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सकलता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
6147 निब्बाती , या "वह शांत हो जाता है"
6148 mahā'ssādaŋ
6149 mahār'a'saŋ
6150 लिट., "अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए"
6151 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
6152 पनिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव
6153 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
6154 लिट., "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था"

बारह वर्ष बीत जाने के बाद भी।" (34) [6152]

जब मैंने सहमति जताते हुए कहा, "जी हाँ, महोदय।"
उसने मुझे तीन (ऐसे मृत) खोपड़ियाँ दिखाईं। मैंने कहा कि वे (अब) पुनर्जन्म ले चुके हैं।
नरक में, मनुष्य के रूप में,6156 देवताओं के साथ। (35) [6153]

उस समय नेता ने मुझे दिखाया
एक एकाकी बुद्ध की खोपड़ी। उसके बाद, बिना किसी आधार के, 6157
मैंने दीक्षा का अनुरोध किया। (36) [6154]

आगे बढ़ने के बाद, मैंने प्रशंसा की
इस और उस जगह पर एक व्यक्ति का अच्छा जाना।6158
इसलिए भिक्षु नाराज हो गए।
मेरी ओर देखते हुए, "उसके पास कवि का दिमाग है।" (37) [6155]

अतः मेरी परीक्षा लेने के लिए, बुद्ध ने मुझसे कहा:

“क्या ये छंद विचारोत्तेजक अलंकार हैं?
या क्या वे निराधार बोले गए हैं?” (38) [6156]

“हीरो, मैं कवि बनने की प्रवृत्ति का नहीं हूँ;
मैंने इन्हें तर्क सहित कहा है। “तो फिर, हे वांगीसा,
अब तुम मेरी प्रशंसा में गीत गाते हो।"6160 (39) [6157]

उस समय मैंने हीरो की प्रशंसा की थी।
सातवें ऋषि, मेरे छंदों के साथ।
फिर तुरंत ही, प्रसन्न होकर,
विजेता ने मुझे सबसे आगे रखा। (40) [6158]

मेरे बोलने और मेरे मन के माध्यम से
तब मैं कुछ अन्य लोगों से घृणा करता था जो
अच्छे व्यवहार वाले थे।6161 उत्तेजित होकर6162 मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (41) [6159]

"वाक्पटुता में अग्रणी कोई दूसरा व्यक्ति नहीं मिलता।"

6155 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
6156 या “शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना”
6157 लिट., “बहिर्वाहों का विनाश”
6158 या “जो बाहर गया था”: पब्बाजितो
6159 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।
6160 शाब्दिक अर्थ, “यहाँ”
6161 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।
6162 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है।

जैसे कि यह भिक्षु [नाम] वांगीसा है;
इसलिए आपको 6163 [उसे] विचार करना चाहिए, भिक्षुओं।" (42) [6160]

कर्म ने एक लाख का फल दिया
[युगों बाद] ने मुझे यहाँ [इसका] फल दिखाया:
पूरी तरह से मुक्त, तीर की तरह तेज,
मैंने अपने दोषों को नष्ट कर दिया है। (43) [6161]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (44) [6162]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (45) [6163]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (46) [6164]

इस प्रकार पूज्य वांगीसा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वांगीसा थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

542. {545.}6164 नंदका6165

विजेता, पदुमुत्तरा,
सब कुछ देखने वाला, दुनिया का नेता, उदय हुआ।
एक लाख युगों बाद। (1) [6165]

सभी प्राणियों के प्रति मित्रता भाव से, उनकी खुशी और लाभ के लिए, सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता, सुसंस्कृत पुरुष,
[दुनिया] में [इसके] देवताओं के साथ अभ्यास किया गया। (2) [6166]

6163 धारेथा , शाब्दिक अर्थ, "ले जाना", "याद करना", "स्मरण करना", "ध्यान रखना"
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6164 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6165 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
6166 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

कौन प्रसिद्धि की ऊंचाइयों पर पहुंचा, 6167 शानदार, 6168
प्रशंसा द्वारा समर्थित, 6169 विजेता,
प्रत्येक लोक के पूजनीय6170, सभी दिशाओं में सुप्रसिद्ध6171, (3) [6167]

जिसने उलझन को पार किया,6172
जो "कैसे? कैसे?" कहने से आगे बढ़ गए,6173
जिनके मन के इरादे पूरे हो गए हैं,6174
सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया।6175 (4) [6168]

द अल्टीमेट मैन, प्रोड्यूसर6176
उत्पादन न होने की राह पर,6177
जो घोषित नहीं किया गया था, उसे घोषित कर दिया गया।
और उसने अजन्मे को जन्म दिया। (5) [6169]

मार्ग-ज्ञाता,6178 मार्ग-परीक्षक,6179 वह मार्ग-वक्ता है,6180 पुरुषों का सांड। कुशल6181 मार्ग पर,6182 शिक्षक है
ड्राइवरों का सर्वश्रेष्ठ6183.6184 (6) [6170]

तब महान करुणावान, मार्गदर्शक, धम्म का उपदेश देते हुए , फंसे हुए प्राणियों को ऊपर उठाते हैं।
सड़क पर [जिसे] भ्रम के रूप में जाना जाता है। (7) [6171]

महान ऋषि ने एक अनुयायी की प्रशंसा की।

6167 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
6168 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
6169 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
6170 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
6171 शाब्दिक अर्थ, "गया"
6172 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
6173 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
6174 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
6175 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
6176 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
6177 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
6178 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
6179 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
6180 लिट., "एक फूल पर"
6181 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
6182 khiḍḍār'ati'y'ā
6183 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
6184 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

जिसे सर्वश्रेष्ठ माना जाता था

बौद्ध भिक्षुणियों को उपदेश देते हुए,
[और] उसे उस सबसे आगे वाले स्थान पर रखा। (8) [6172]

यह सुनकर मैं रोमांचित हो गया। [उद्धृत], उस दिवंगत को आमंत्रित करके, [उद्धृत] को सभा में भोजन कराकर,
मैंने उस सर्वोच्च स्थान की आकांक्षा की। (9) [6173]

उस समय प्रभु भी रोमांचित हो गए।
महान ऋषि ने मुझसे ये शब्द कहे: "हे दीर्घायु, प्रसन्न रहो;
वह सुंदर [स्थान] प्राप्त करेगा। (10) [6174]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (11) [6175]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्म की वैध संतान, जिसका नाम नंदका है
शिक्षक का अनुयायी होगा।" (12) [6176]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तावतिंसा गया था। (13) [6177]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, मैं एक करोड़पति परिवार में पैदा हुआ हूँ, जो धनी, समृद्ध और बेहद अमीर है।
महान नगर श्रावस्ती में। (14) [6178]

शहर के द्वार पर उस सुधरे हुए व्यक्ति को देखकर मैं चकित रह गया;6186 जब [उसे] जेता आश्रम मिला,6187
मैं बेघर हो गया। (15) [6179]

कुछ ही समय बाद,
मैंने अरहंत पद प्राप्त कर लिया।
तब मैं वह हूँ जिसने अस्तित्व को पार कर लिया है, सर्व-द्रष्टा द्वारा निर्देशित।6188 (16) [6180]

6185 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
6186 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "
6187 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
6188 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी

मैंने भिक्षुणियों को धम्म का उपदेश दिया और प्रश्नोत्तर सत्र संपन्न कराया। मेरे द्वारा निर्देशित होकर, उन सभी ने धम्म का उपदेश दिया।
[अरहंत] बन गए, अपवित्र। (17) [6181]

उनमें से पांच सौ थे, किसी को भी किसी चीज की कमी नहीं थी;
उस समय प्रसन्न होकर महान मित्र,6189 ने मुझे सर्वोपरि स्थान पर बिठाया।

जो ननों को निर्देश देते हैं। (18) [6182]

कर्म ने एक लाख का फल दिया
[युगों बाद] ने मुझे यहाँ [इसका] फल दिखाया:
पूरी तरह से मुक्त, तीर की तरह तेज,
मैंने अपने दोषों को नष्ट कर दिया है। (19) [6183]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (20) [6184]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (21) [6185]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (22) [6186]

इस प्रकार पूज्य नंदका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नंदका थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

543. {546.}6190 कादुदायि6191

विजेता, पदुमुत्तरा,
सब कुछ देखने वाला, दुनिया का नेता, उदय हुआ।
एक लाख युगों बाद। (1) [6187]

6189 pariḷāho

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6190 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

6191 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

शिक्षक, नेताओं में सर्वश्रेष्ठ, 6192
विक्टर, सही-गलत का ज्ञाता, 6193
आभारी, 6194 लाभों के प्रति सचेत, 6195
चौराहे पर उन लोगों को प्रोत्साहित करता है।6196 ...

दयालुता का घर, 6198 की जाँच
[चीज़ें] उनके सर्वज्ञ ज्ञान से, सद्‌गुणों का असीम भंडार6199
अपने उत्कृष्ट धम्म का प्रचार कर रहे हैं । (3) [6189]

एक समय में, महान नायक ने असंख्य लोगों को एकत्रित किया और मधुर धम्म का उपदेश दिया ।
चार [महान] सत्यों के साथ। (4) [6190]

आरंभ, मध्य और अंत में शुद्ध उस उत्कृष्ट शिक्षा को सुनकर धम्म का अंतर्मन हुआ।
एक लाख प्राणियों के लिए। (5) [6191]

उस समय पृथ्वी गर्जना करने लगी और बादल गरजने लगे; देवता, ब्रह्मा, मनुष्य और दैत्य।
जारी 6202 कहते हुए "उत्कृष्ट!" (6) [6192]

हे दयालु शिक्षक!
हे! महान धम्म का उपदेश ! हे! विजेता डूबे हुओं को उठाता है!
अस्तित्व के सागर में।" (7) [6193]

6192 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह.   रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
6193 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
6194 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
6195 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
6196 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
6197 शाब्दिक रूप से, "गया"
6198 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
6199 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
6200 शब्द, "योग्य"
6201 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
6202 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

जब ब्रह्मा देवताओं और मनुष्यों के साथ इस प्रकार भावनाओं से उत्तेजित हो गए,6203 तो विजेता ने एक अनुयायी की प्रशंसा की,

कुलों में प्रसन्न करने वालों में सबसे आगे। (8) [6194]

मैं तब हंसवती में रहता था, मंत्रियों के कुल में जन्मा था। सुखमय और सुंदर।
मैं धनी था, मेरे पास प्रचुर धन था। (9) [6195]

स्वान आश्रम पहुँचकर, तथागत की आराधना करते हुए, उनके मधुर धम्म को सुनकर ,
तटस्थ व्यक्ति की सेवा करने के बाद, (10) [6196]

उनके चरणों में झुककर, मैं
मैंने उस समय उनसे ये शब्द कहे: "हे ऋषि, जिनकी आपने प्रशंसा की है, जो कुलों को प्रसन्न करने वालों में श्रेष्ठ हैं,
मैं उनके समान बनूंगा, हे वीर।
बुद्ध के 6208 युग में।" (11) [6197, 6198a-b]6209

तब महान करुणावान ने मुझे अमृत छिड़कते हुए कहा, "पुत्र, हे प्रयासशील, तुम उस सुंदर स्थान को प्राप्त करोगे। विजेता के लिए कर्म करके।"
तो फिर यह फल के बिना कैसे हो सकता है? (12) [6198सी-डी, 6199]

एक लाख युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। (13) [6200]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,
धम्म की वैध संतान, जिसका नाम उदयी है
शिक्षक का अनुयायी होगा।" (14) [6201]

6203 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
6204 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
6205 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
6206 लिट., "एक फूल पर"
6207 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
6208 khiḍḍār'ati'y'ā
6209 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
6210 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

यह सुनकर मैं रोमांचित हो गया, और फिर जीवन भर, प्रेममय हृदय से, मैंने मार्गदर्शक की सेवा की।
विजेता, आवश्यकताओं के साथ। (15) [6202]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (16) [6203]

और अब मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, सुंदर कपिलवस्तु में,
मैं एक पादरी के परिवार में पैदा हुआ हूँ।
सुद्धोदना6211 को [हमारे] राजा के रूप में। (17) [6204]

जब रमणीय लुम्बिनी उपवन में, पुरुषों में श्रेष्ठ कहे जाने वाले सिद्धार्थ का जन्म हुआ, तो उनका जन्म कल्याण और कल्याण के लिए हुआ।
प्रत्येक दुनिया की खुशी, (18) [6205]

उसी दिन मेरा भी जन्म हुआ, और मैं उनके साथ बड़ा हुआ, प्रिय, मित्रवत और बेहद प्यारा।
कानून में आत्मविश्वासी और कुशल। (19) [6206]

उनतीस वर्ष की आयु में, वह वहाँ से प्रस्थान करके आगे बढ़ा। छह वर्षों तक उसने अपने आप को विकृत किया।
वह [तब] बुद्ध, मार्गदर्शक थे। (20) [6207]

मृत्यु और उसकी सेना पर विजय प्राप्त करके, सभी अशुद्धियों को दूर करके, जीवन के जलप्रपात को पार करके,
वह [तब] दुनिया में बुद्ध थे।6212 (21) [6208]

ईसा 6213 नामक स्थान पर जाकर उन्होंने पाँच लोगों के समूह को निर्देश दिया; 6214 फिर धन्य परमेश्वर ने निर्देश दिया
[लोग], इधर-उधर जा रहे हैं। (22) [6209]

जो लोग नेतृत्व करने योग्य थे, उन्हें निर्देश देते हुए, देवताओं के साथ [संसार] की सहायता करते हुए, मंगला पर्वत के पास पहुँचते हुए,6215

6211 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
6212 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
6213 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
6214 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
6215 pariḷāho

फिर विक्टर उस स्थान पर रहने लगा। (23) [6210]

फिर पृथ्वी के रक्षक सुद्धोदन द्वारा भेजा गया, 6216 जाते हुए, देखकर
दस शक्तियों वाला एक, 6217 आगे बढ़ रहा है,
मैं भी अरहंत बन गया। (24) [6211]

फिर मैंने महान ऋषि से इसके बारे में पूछा और उसे कपिला वापस ले आया।6218
फिर वहाँ दोबारा जाने के बाद
मैं महान कबीले को आनंद ला रहा हूँ।6219 (25) [6212]

उस सद्गुण से प्रसन्न होकर, विजय प्राप्त करने वाले, जनमानस के बैल ने मुझसे बात की।

गाइड ने मुझे सर्वप्रथम नियुक्त किया।
कुलों को प्रसन्न करने वालों के बीच। (26) [6213]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (27) [6214]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (28) [6215]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (29) [6216]

इस प्रकार पूज्य कालुदायी थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

कालुदयी थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

6216 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
6217 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)
6218 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
6219 samādhikusalo ahaŋ

---

544. {547.}6220 अभया6221

विजेता, पदुमुत्तरा,
सब कुछ देखने वाला, दुनिया का नेता, उदय हुआ।
एक लाख युगों बाद। (1) [6217]

तथागत शरण लेने जा रहे किसी व्यक्ति को उपदेश देता है, [और]
वह किसी को नैतिकता के बारे में उपदेश देता है।
कार्य करने के सर्वोच्च दस तरीकों में।6222 (2) [6218]

हीरो किसी को कुछ देता है
भिक्षुत्व का अंतिम फल,
और इसी प्रकार आठ उपलब्धियाँ;6223
वह तीनों ज्ञान प्रदान करता है। (3) [6219]

सुप्रीम मैन6224 छह विशेष ज्ञानों में से किसी एक प्राणी से आग्रह करता है,

और प्रभु किसी को देता है
चार विश्लेषणात्मक तरीके। (4) [6220]

लोगों को जागृत होते देखकर,
अनगिनत लीगों में, पलक झपकते ही उनके पास पहुँच गए।
मनुष्यों का सारथी उपदेश देता है। (5) [6221]

तब मैं हंसवती में रहता था; मैं एक ब्राह्मण का पुत्र था, समस्त वेदों का ज्ञाता था, व्याकरणविद् के रूप में पूजनीय था, व्युत्पत्ति में कुशल था, परिभाषाओं में आत्मविश्वासी था।
श्लोक-ज्ञाता,6225 अनुष्ठान-ज्ञाता,6226

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6220 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6221 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, शामिल किया गया है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
6222 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
6223 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
6224 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
6225 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
6226 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

[भी] छंदशास्त्र में चतुर.6227 (6-7) [6222-6223]

पैदल घूमते हुए,
स्वान हर्मिटेज,6228 के पास पहुँचने पर
मैंने उसे देखा, सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता,6229
महान जनता द्वारा सम्मानित,6230 (8) [6224]

धम्म का निर्मल प्रचार करना । मैं, विपरीत विचारों के साथ,
उसके पास जाने के बाद,
उनके निष्कलंक शब्दों को सुनने के बाद, (9) [6225]

[एक शब्द की तलाश में] जो ऋषि द्वारा गलत या दोहराया गया था।
or6231 फेंका हुआ या अर्थहीन,
मुझे कोई नहीं दिखा; इसलिए मैं आगे बढ़ गया। (10) [6226]

कुछ ही समय बाद, सभी शिक्षकों के बीच विश्वास हासिल करने के कारण, मुझे एक विशेषज्ञ के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।6232
बुद्ध के सूक्ष्म शब्दों में। (11) [6227]

6233 को एक साथ रखने के बाद
उनके लिए चार सुगठित 6234 छंद, जो तीनों लोकों के मुखिया की प्रशंसा करते हैं।
मैंने [उन्हें] प्रतिदिन उपदेश दिया। (12) [6228]

"इस भयावह अस्तित्व में तुम
वासना से मुक्त हैं, 6236 महान नायक; 6237
दया के कारण, तुम नहीं मरते,6238
इस प्रकार [आप] 'दयालु ऋषि' हैं। (13) [6229]

6227 शाब्दिक रूप से, "गया"
6228 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
6229 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
6230 लिट., "योग्य"
6231 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
6232 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
6233 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
6234 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
6235 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
6236 लिट., "एक फूल पर"
6237 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
6238 khiḍḍār'ati'y'ā

कोई ऐसा व्यक्ति जो आम इंसान हो और अपवित्रताओं से अप्रभावित हो।
[होगा] चौकस6240 और सचेत;6241
इस प्रकार [बुद्ध का] अकल्पनीय। (14) [6230]

ये अपने आप नष्ट नहीं होते, यहाँ तक कि किसी के कमजोर दोष भी, जो ज्ञान की अग्नि में भस्म हो जाते हैं।
अगर ऐसा हुआ तो यह एक चमत्कार होगा। (15) [6231]

वह जो समस्त लोकों का गुरु है:6242

उसके लिए दुनिया ही एक शिक्षक है;
इसलिए उन्हें 'विश्व-शिक्षक' के रूप में जाना जाता है।6243
[और] दुनिया उसका अनुसरण कर रही है।" (16) [6232]

मैंने उन [उत्कृष्ट छंदों] की प्रशंसा की।
संबुद्ध,6244 धम्म -उपदेशक;6245
ऐसा मैं जीवन भर करता रहूंगा।
मृत्यु के बाद6246 मैं स्वर्ग गया।6247 (17) [6233]

एक लाख युगों में
जब से मैंने बुद्ध की इस प्रकार प्रशंसा की है, तब से मुझे किसी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ है:
यह बुद्ध की प्रशंसा का फल है। (18) [6234]

मुझे बहुत कुछ अनुभव हुआ।
देवताओं के लोक में महान राजसत्ता, और [यहाँ पृथ्वी पर] स्थानीय राजसत्ता।
[और] पहिया घुमाने वाली राजशाही [भी]। (19) [6235]

मैं [केवल] दो अवस्थाओं में ही पुनर्जन्म लेता हूँ:
चाहे वह किसी देवता का हो या किसी मनुष्य का।
मुझे अन्य पुनर्जन्मों के बारे में जानकारी नहीं है;
यह बुद्ध की प्रशंसा का फल है। (20) [6236]

[जब मैं इंसान था] मैं दो कुलों में पैदा हुआ था:
क्षत्रिय या ब्राह्मण।

6239 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में
6240 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
6241 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
6242 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
6243 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
6244 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
6245 pariḷāho
6246 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
6247 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)

मुझे छोटे कुलों में जन्म संख्या 6248 नहीं मिलती:
यह बुद्ध की स्तुति का फल है। (21) [6237]

अब, मेरे अंतिम अस्तित्व में, राजगीर में, परम नगरी,6249
मैं राजा बिम्बिसार का पुत्र हूँ।
और [मेरा दिया गया] नाम अभया है। (22) [6238]

एक दुष्ट मित्र से प्रभावित,6250
मैं एक जैन को देखकर अचंभित रह गया।
जैन धर्म के नेता द्वारा भेजा गया, 6252
मैंने सर्वश्रेष्ठ बुद्धों से संपर्क किया। (23) [6239]

एक सूक्ष्म प्रश्न पूछने के बाद, बुद्ध का सर्वोच्च उत्तर सुनकर, आगे बढ़ने पर, कुछ ही समय में,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (24) [6240]

सर्वश्रेष्ठ विजेता की प्रशंसा करने के बाद, 6253
मेरी [स्वयं] हर समय प्रशंसा होती है। मेरे शरीर और मुख से अच्छी सुगंध आती है।
मुझे खुशी का वरदान प्राप्त है। (25) [6241]

इस प्रकार मैं वास्तव में बहुत बुद्धिमान हूँ।
मैं तीक्ष्ण, चतुर और त्वरित बुद्धि से बोलता हूँ, और विविध प्रकार की भाषा का प्रयोग करता हूँ।
उस कर्म की शक्ति के माध्यम से। (26) [6242]

मेरे हृदय में प्रसन्नता के साथ, योग्य की प्रशंसा करते हुए,6254
अतुलनीय, 6255 स्वयं-बनना 6256 पदुमुत्तरा, उसके फल के रूप में, दुख से भरे स्थान पर,
एक लाख 6257 युगों तक, मैं नहीं गया। (27) [6243]6258

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (28) [6244]

6248 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

6249 samādhikusalo ahaŋ

6250 iddhipādesu kovido

6251 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

6252 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है

6253 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-खेल है।

6254 महाभिऽसक्कसंकाऽसो

6255 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ

6256 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना

6257 diṭṭhigaṇḍa°

6258 लोकापज्जोटो

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (29) [6245]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (30) [6246]

इस प्रकार पूज्य अभय थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

अभय थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

545. {548.}6259 लोमसाकांगिया6260

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में
ब्रह्मा के संबंधी, महान यशस्वी, कस्सपा नाम से जाने जाने वाले, 6261
सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता,6262 [बुद्ध,] उत्पन्न हुए। (1) [6247]

उस समय चंदन और मैं, दोनों ही धर्म के मार्ग पर चलते हुए, अंत तक धम्म का पालन कर रहे थे।
व्यवस्था में जीवन का, (2) [6248]

वहां से गिरने वाले दोनों का पुनर्जन्म हुआ।
तुसिता स्वर्ग में [देवताओं के रूप में]।
वहाँ अन्य लोगों को पछाड़ते हुए6264, दिव्य नृत्यों, गीतों, भाषणों और दृष्टि से शुरू होने वाली दस उपलब्धियों के माध्यम से,
अपने जीवनकाल को पूरी तरह से जीना,
हम बेहद खुश हैं। (3-4) [6249-6250]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6259 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6260 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
6261 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
6262 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
6263 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
6264 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

वहां से गिरने के बाद, चंदना का पुनर्जन्म तीस देवताओं के बीच हुआ;

मैं शाक्य वंश का पुत्र था, 6265
कपिलवस्तु नगर में. (5) [6251]

जब विश्व के नेता [बुद्ध] से वरिष्ठ उदयि ने पूछा, 6266
शाक्यों के प्रति करुणा के साथ कपिलवस्तु लौट आए, (6) [6252]

शाक्यों में से जो अभिमानी थे, वे बुद्ध के गुणों को न जानते हुए संबुद्ध को प्रणाम नहीं कर रहे थे।
जाति-अभिमानी,6268 अनादरपूर्ण.6269 (7) [6253]

आकाश में इधर-उधर घूमते हुए, उनके मन में उठ रहे विचारों को समझने की कोशिश करते हुए,
विक्टर ने वर्षा के देवता की तरह बारिश की,6270
[और] अग्नि देवता की तरह प्रज्वलित हुआ।6271 (8) [6254]

अपनी अद्वितीय आकृति का प्रदर्शन करते हुए, उन्होंने उसे फिर से लुप्त कर दिया। एक होते हुए भी वे अनेक हो गए।
[और फिर] वह फिर अकेला हो गया। (9) [6255]

उन्होंने अनेक रूपों में, अंधकार में और प्रकाश में भी स्वयं को प्रकट किया। उस चमत्कार को करने के बाद,
ऋषि ने अपने रिश्तेदारों को निर्देश दिया। (10) [6256]

एक विशाल बादल जो चार महाद्वीपों जितना चौड़ा है।
हर समय [दुनिया पर] वर्षा होती रहती थी।
फिर बुद्ध ने उन सभी को उपदेश दिया।
वेस्संतरा जातक .6272 (11) [6257]

उस समय वे सभी क्षत्रिय,

6265 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
6266 lit., “गया”
6267 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
6268 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
6269 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
6270 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
6271 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
6272 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

अपनी जातिगत अभिमान का नाश करके, उन्होंने बुद्ध की शरण ली।
तब [राजा] सुद्धोदना6273 ने यह कहा: (12) [6258]

“हे परम बुद्धिमान6274, यह तीसरी बार है जब मैं आपके चरणों की पूजा कर रहा हूँ, सर्वव्यापी दृष्टि वाले;6275
[पहली बार] तब हुआ था जब [तुम्हारे] जन्म से धरती कांप उठी थी।
[अगला] जब गुलाब-सेब की छाया तुम्हें नहीं छोड़ती थी।”6276 (13) [6259]6277

बुद्ध की अपार शक्ति को देखकर,6278 मैं भी चकित रह गया।6279
ठीक उसी स्थान से आगे बढ़ते हुए,
मैं निवास करता था, मेरी माँ द्वारा पूजा की जाती थी।6280 (14) [6260]

चंदन, जो अब एक देवता का पुत्र था, मेरे पास आया और फिर उसने भद्देकरत्त सूत्र पर मेरी परीक्षा ली ।
संक्षिप्त [और] विस्तारित रूपों में.6283 (15) [6261]

फिर उसके उकसाने पर,
मैंने पुरुषों के नेता से संपर्क किया।6284
भद्देकरत्ता सुनकर ,
स्थानांतरित,6285 मुझे जंगल के जीवन की लालसा थी। (16) [6262]

फिर मैंने अपनी माँ से इसके बारे में पूछा।
अकेले जंगल जाना।
मेरी मां ने कहा, "तुम बहुत नाज़ुक हो।"
उस [मार्ग] से दूर रहो।”6286 फिर मैंने कहा: (17) [6263]

“[जब] मैं एकांत का अभ्यास कर रहा हूँ,6287
मैं अपनी छाती से धक्का दूंगा

6273 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

6274 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

6275 लिट., “एक फूल पर”

6276 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

6277 khiḍḍār'ati'y'ā

6278 तिदास , अर्थात्, तावतिंस स्वर्ग में

6279 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

6280 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में “नया” और द्वितीय पद में “ताज़ा” के रूप में किया गया है।

6281 शाब्दिक अर्थ, “ पूजा ”

6282 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

6283 या “मुझे नहीं पता,” ना जानामी

6284 pariḷāho

6285 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

6286 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया गया है)

6287 pañca-kāma-guṇe , “इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र,” अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

बलि घास6288 [और] गन्ना घास,6289
कस्कस घास,6290 कोमल घास,6291 खुरदरी घास.6292 (18) [6264]

जंगल में जाकर, विजेता के आदेश और भद्देकरत्ता में दी गई सलाह को याद करते हुए ,
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (19) [6265]

अतीत का पीछा नहीं करना चाहिए; भविष्य की कामना नहीं करनी चाहिए। जो बीत चुका है, उसे पीछे छोड़ देना चाहिए।
और भविष्य अप्राप्य है। (20) [6266]

हर जगह 6293 जो किसी चीज को स्पष्ट रूप से देखता है जो उठती है [फिर गिरती है],
वह बुद्धिमान व्यक्ति6294 निर्वाण का पोषण करता है6295
अजेय [और] स्थिर। (21) [6267]

[अब,] आज6296 प्रयास किया जाना चाहिए;6297
कौन जानता है कि कल मृत्यु होगी या नहीं?
us6299 के लिए कोई अनुबंध मौजूद नहीं है
मृत्यु की विशाल सेना के साथ। (22) [6268]

“इस प्रकार जीवन जीना, दिन-रात अथक परिश्रम करना, आलस्य से दूर रहना, यही वास्तव में भद्देकरत्तो है ।”
[तो] कहते हैं6300 ऋषि, शांतिप्रिय।”6301 (23) [6269]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (24) [6270]

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में होना

6288 samādhikusalo ahaŋ
6289 iddhipādesu kovido
6290 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”
6291 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
6292 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
6293 महाभि'सक्कसंका'सो
6294 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ
6295 ॰विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
6296 diṭṭhigaṇḍa°
6297 लोकापज्जोटो
6298 sanar'āmar'a'sakk'at'o
6299 narādicco
6300 लीटर, “में”

6301 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सकलता की ओर अग्रसर"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।

यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [6271]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (26) [6272]

इस प्रकार पूज्य लोमसकंगिया थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

लोमासकांगिया थेरा की कथा समाप्त हो गई है।

---

546. {549.}6302 वनवाच्चा6303

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में
ब्रह्मा के संबंधी, महान यशस्वी, कस्सपा नाम से जाने जाने वाले, 6304
सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता,6305 [बुद्ध,] उत्पन्न हुए। (1) [6273]

फिर मैं, बुद्ध के उपदेशों का अनुसरण करते हुए, पवित्र जीवन में विचरण करने के बाद,6306
जब तक मैं जीवित रहा, वहाँ से गिरता रहा।6307 (2) [6274]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (3) [6275]

वहाँ से गिरकर, जंगल में,
मैं [तब] एक कबूतर के रूप में पैदा हुआ था।6308
वहाँ एक बौद्ध भिक्षु6309 रह रहा था।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6302 अपदान नंबर BJTS संस्करण से मेल खाते हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6303 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
6304 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई:

सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
6305 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
6306 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
6307 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
6308 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
6309 lit., "गया"

हमेशा समाधि में आनंदित रहने वाला,6310
प्रेममय हृदय वाला, दयालु,
हमेशा बेहद प्रसन्न चेहरे के साथ,6311
निष्पक्ष, एक महान नायक,
[चार] असीम [अवस्थाओं] में सीखा.6312 (4-5) [6276-6277]

कुछ ही समय में मुझे भरोसा हो गया
बुद्ध का वह अनुयायी,6313
जिनके विचार अवरोध रहित थे, सभी जीवित प्राणियों के प्रति मित्रवत थे। (6) [6278]

फिर जब भी मैं उनके पास जाता, वे प्रतिदिन धम्म का उपदेश देते और मुझे थोड़ा भोजन देते।
मुझे, उनके चरणों के सामने बैठा हुआ। (7) [6279]

उस समय विक्टर के पुत्र के प्रति अपार प्रेम के साथ [इस प्रकार] जीवन व्यतीत करने के बाद, मृत्यु के बाद6315 मैं6316 स्वर्ग चला गया,
विदेश में रहने के बाद घर जैसा लगता है ।6317 (8) [6280]

अच्छे कर्मों के फलस्वरूप स्वर्ग से गिरकर मेरा पुनर्जन्म मनुष्य के रूप में हुआ है।
घर में जीवन को त्याग देना,
मैं [तब] बार-बार बाहर गया ।6318 (9) [6281]

भिक्षु, तपस्वी या ब्राह्मण के रूप में,
इस प्रकार मैं उन लोगों में से एक था जो जंगल में रहने के लिए निकल पड़ा था।
[विभिन्न] सैकड़ों [जीवनों] में। (10) [6282]

और अब मेरे अंतिम पुनर्जन्म में,
सुंदर कपिलवस्तु में एक ब्राह्मण [नाम] वचागोट्टा,

6310 reading sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
6311 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

6312 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
6313 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
6314 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
6315 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
6316 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
6317 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के स्थान पर बीजेटीएस से पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
6318 शाब्दिक अर्थ, "एक फूल पर"

मैं अपनी पत्नी के साथ रवाना हुआ।6319 (11) [6283]

मेरी माँ को प्रसव के समय तीव्र इच्छा हुई, जिसके कारण उन्होंने जंगल में रहने का निश्चय कर लिया।
जब मैं उसके गर्भ से बाहर आया था। (12) [6284]

मेरी मां ने मुझे एक खूबसूरत जंगल में जन्म दिया।
जब मैं उसके गर्भ से निकला,
उन्होंने मुझे केसरिया कपड़े में लपेट दिया।6320 (13) [6285]

उसके बाद शाक्यन वंश के ध्वजवाहक राजकुमार सिद्धार्थ का जन्म हुआ।6321
मैं उनका प्रिय मित्र बन गया।
विश्वास में रखा गया और सम्मानित किया गया। (14) [6286]

जब बीइंग्स हार्डवुड6322 ने अपनी अपार प्रसिद्धि का त्याग करते हुए प्रस्थान किया,
आगे बढ़ने के बाद,
मैं हिमालय गया। (15) [6287]

जंगलों में आदरणीय कस्सपा, कठोरता के उपदेशक को देखकर,6323 विजेता के उठने की खबर सुनकर,
मैंने पुरुषों के कोचमैन से संपर्क किया।6324 (16) [6288]

फिर उन्होंने मुझे धम्म का उपदेश दिया , जिसमें सभी अर्थों की व्याख्या भी शामिल थी।
फिर, [बुद्ध के नेतृत्व में] आगे बढ़ते हुए,
मैं फिर से जंगल में गया। (17) [6289]

वहाँ उत्साहपूर्वक रहते हुए मैंने [तब] छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए। ओह! मुझे अच्छा लाभ प्राप्त हुआ है!
मेरे अच्छे दोस्त द्वारा दया की जा रही है। (18) [6290]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह, मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (19) [6291]

6319 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
6320 khiḍḍār'ati'y'ā
6321 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
6322 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
6323 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
6324 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "
6325 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) [6292]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (21) [6293]

इस प्रकार पूज्य वनवच्छ थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

वनवच्छ थेरा की कथा यहीं समाप्त होती है।

---

547. {550.}6326 कुलसुगन्धा6327

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में
ब्रह्मा के संबंधी, महान यशस्वी, कस्सपा नाम से जाने जाने वाले, 6328
सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता,6329 [बुद्ध,] उत्पन्न हुए। (1) [6294]

अस्सी छोटे अंक रखने वाले, 6330
बत्तीस महान चिह्नों को धारण करते हुए,6331
एक फ़ैदम-विशाल आभा होना,
प्रकाश-किरणों के जाल में चला गया,6333 (2) [6295]

चंद्रमा की तरह सुखदायक, सूर्य के समान प्रकाश का स्रोत, वर्षा के बादल के समान प्यास बुझाने वाला।
सागर की तरह रत्नों की खान, (3) [6296]

पृथ्वी के समान नैतिक मूल्यों के माध्यम से; ज्ञान के माध्यम से

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6326 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6327 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
6328 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
6329 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
6330 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
6331 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ
6332 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
6333 शाब्दिक रूप से, "गया"
6334 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

आकाश की तरह; ध्यान के माध्यम से6335
हिमालय की तरह; हवा की तरह
वह किसी बात पर अडिग नहीं रहता। (4) [6297]

उसी समय मेरा जन्म बनारस में एक बड़े परिवार में हुआ था।
अनाज और प्रचुर धन से समृद्ध,6336
विभिन्न रत्नों के ढेर के साथ। (5) [6298]

नेता के पास पहुँचते हुए, जो एक बड़े दल के साथ बैठे थे,
मैंने [उन्हें उपदेश देते हुए] धम्म सुना , जो अमर है, मन को प्रसन्न करता है।6337 (6) [6299]

नक्षत्रों वाले चंद्रमा के समान बत्तीस चिह्नों को धारण करने वाला, अस्सी छोटे चिह्नों को धारण करने वाला,
खिले हुए राजसी साल के पेड़ की तरह, (7) [6300]

किरणों के जाल से घिरा हुआ, 6340
जैसे सोने का चमकता पहाड़,6341
एक फ़ैदम-विशाल आभा होना,
जैसे सूर्य झील पर चमक रहा हो, (8) [6301]

उत्कृष्ट सुनहरे चेहरे वाला 6343 विक्टर,
रत्नों से बने पर्वत के समान, करुणा से परिपूर्ण हृदय के साथ,6344
जैसे सागर [उसके] सद्गुण के माध्यम से।6345 (9) [6302]

परम पुरुष, मेरु पर्वत की तरह,
उनकी प्रशंसा विश्व भर में प्रसिद्ध है;6346

6335 लिट., “गिर गया”
6336 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"
6337 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
6338 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
6339 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
6340 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
6341 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)
6342 लिट., “एक फूल पर”
6343 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
6344 khiḍḍār'ati'y'ā
6345 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
6346 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

प्रसिद्धि से व्यापक, 6347 [महान] नायक,
ऋषि, जो अंतरिक्ष के समान है,6348 (10) [6303]

हृदय अनासक्त6349 हर जगह, नेता [इस प्रकार] हवा के समान है; सभी जीवित प्राणियों के लिए सहारा6350,
सातवां ऋषि पृथ्वी के समान है। (11) [6304]

[कस्सापा,] संसार से अछूता, जैसे पानी में गुलाबी कमल,
आग के पहाड़ की तरह चमकता है
बुरी वाणी की झाड़ियों को जलाना.6351 (12) [6305]

हर जगह, एक विषनाशक की तरह,6352
वह अपवित्रता-विष को नष्ट करता है,6353
सद्गुण की सुगंध से सुशोभित,6354
गंधमादन पर्वत की तरह। (13) [6306]

हीरो गुणों का खजाना है6355
जैसे सागर रत्नों से बना होता है;
थोरब्रेड मैन6356 सिंधी घोड़े की तरह,

वह अपवित्रता की गंदगी को दूर ले जाता है।6357 (14) [6307]

एक महान योद्धा की तरह,
वह मृत्यु की सेना को कुचल देता है;6358
वह एक पहिए को घुमाने वाले राजा के समान है।
ज्ञान के स्वामी के [सात] रत्न.6359 (15) [6308]

ठीक वैसे ही जैसे कोई चिकित्सक,6360
वह रोग का उपचार करता है [जिसे] दोष कहा जाता है;6361
ठीक वैसे ही जैसे एक बेहतरीन सर्जन होता है,

6347 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
6348 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "
6349 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
6350 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
6351 pariḷāho
6352 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
6353 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
6354 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।
6355 samādhikusalo ahaŋ
6356 iddhipādesu kovido
6357 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "
6358 mārasenāpamaddano , BJTS इसे mārasenappamaddano पढ़ता है
6359 bojjhaṅgaratan'issaro , जो चक्र घुमाने वाले सम्राट के "सात रत्नों" (चक्र आदि) पर आधारित एक शब्द-क्रीड़ा है।
6360 महाभि'सक्कसंका'सो
6361 दोसाऽव्यऽआधितिकिऽचाकऽओ

वह फोड़े को निकालता है [जिसे झूठा कहा जाता है] विचार.6363 (16) [6309]

उस समय, विश्व की मशाल,6364
देवताओं और मनुष्यों दोनों द्वारा सम्मानित,6365
पुरुषों के बीच सूर्य,6366 विजेता,
उन्होंने अपने अनुचरों को धम्म का उपदेश दिया ।(17) [6310]

"दान देने से धनवान बनता है, नैतिकता से सुख मिलता है, ध्यान से निर्वाण प्राप्त होता है।"
इस प्रकार उन्होंने निर्देश दिया। (18) [6311]

दल में सभी लोग
यह सुनकर, [उसका] बहुत मधुर उपदेश, आरंभ, मध्य और अंत में शुद्ध,
बहुत स्वादिष्ट, 6371 अमृत के समान। (19) [6312]

उनकी मधुर शिक्षा सुनकर, विक्टर के विधान से प्रसन्न होकर,
बुद्ध6372 की शरण लेने जा रहा हूँ।
मैंने जीवन भर उसकी प्रशंसा की। (20) [6313]

उस समय, प्रत्येक माह आठ दिनों के लिए,6373
मैंने जमीन को ढक दिया
सुगंधित कुटिया [जहाँ] ऋषि रहते थे, चार प्रकार की सुगंधित [वस्तुओं] के साथ, उस अच्छी सुगंध के लिए मेरी इच्छा6374 के कारण।
मेरे स्वयं के गंधहीन शरीर के लिए।
तब विजेता ने भविष्यवाणी की कि
[मैं] उस सुगंधित शरीर को प्राप्त करूँगा: (21-22) [6314-6315]

जिसने जमीन को ढक दिया
उस कर्म के फलस्वरूप, मेरी अपनी सुगंधित झोपड़ी में भी सुगंध फैली हुई थी।

6362 °विफालाको , लिट., "डी-फ्रूटर," बीजेटीएस सिंह। चमकदार सिंदुना
6363 diṭṭhigaṇḍa°
6364 लोकपज्जोटो
6365 sanar'āmar'a'sakk'at'o
6366 narādicco
6367 लिट., “में”
6368 s'ugatūpago , शाब्दिक अर्थ, "सदाबहारता की ओर अग्रसर होना"। इसे इस प्रकार भी पढ़ा जा सकता है: नैतिकता के माध्यम से उस सुखी व्यक्ति की ओर अग्रसर होना।
6369 निब्बाती , या “वह शांत हो जाता है”
6370 mahā'ssādaŋ
6371 mahār'a'saŋ
6372 लिट., “अच्छी तरह से चले गए व्यक्ति के लिए”
6373 reading māse aṭṭhadinesv-ahaṃ with BJTS for PTS māse aṭṭhadine svaha
6374 पणिधाय , या "दृढ़ संकल्प", सिंह। प्रार्थनाव

[यथा] यहाँ-वहाँ पुनर्जन्म लेते हुए,6375
यह पुरुष ऐसा होगा जिसका संपूर्ण शरीर सुगंधित होगा। सद्गुणों की सुगंध से परिपूर्ण।
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग।” (23-24) [6316-6317]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। (25) [6318]

और अब अपने अंतिम पुनर्जन्म में, मैं ब्राह्मणों के कुल में जन्म लेता हूँ। जब मैं गर्भ में निवास कर रहा था,
मेरी माँ का शरीर सुगंधित था।6376 (26) [6319]

और जब मैं अपनी माता के गर्भ से निकल रहा था, तब श्रावस्ती नगर में खुशियों की लहर दौड़ गई।
सुगंध, मानो इसे सुगंधित किया गया हो। (27) [6320]

और सुगंधित फूलों की वर्षा, दिव्य सुगंध वाली, मनमोहक और बहुत ही कीमती धूप भी।
उस पूरे समय हवा चलती रही। (28) [6321]

और देवताओं ने उस घर पर वर्षा की, जिस घर में मेरा जन्म हुआ था।
सभी अच्छी सुगंधों से भरपूर सुगंधित [बारिश]
धूप और फूलों के प्रकार भी। (29) [6322]

और जब मैं, एक भाग्यशाली युवक, अपनी जवानी के चरम पर था, तब पुरुषों का सारथी बना।
सेला6377 को अनुचरों के साथ निर्देशित किया। (30) [6323]

मैं भी उन सभी के साथ श्रावस्ती नगर आया। बुद्ध की भव्य प्रतिमा को देखकर
शक्ति, मैं उस समय निकल गया। (31) [6324]

नैतिकता, ध्यान, ज्ञान
और वह स्वतंत्रता जिसकी कोई तुलना नहीं है;
उन चार चीजों की खेती करना,6378

6375 पीटीएस याहिन ताहिन; बीजेटीएस ताहिं ताहिं
6376 लिट., "मेरी माँ का पूरा शरीर सुगंधित था"
6377 #389 {392}, ऊपर, विशेष रूप से vv.66-71 [3648-3653]
6378 या "शिक्षा में उन चारों का पालन-पोषण करना"

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया।6379 (32) [6325]

और जब मैं संन्यासी था,6380
और जब मैं अरहंत था, और जब मैंने निर्वाण प्राप्त किया,
तब एक अच्छी महक वाली बारिश हुई। (33) [6326]

मेरे शरीर से हमेशा कीमती चंदन, चंपा और नीले कमल की सुगंध आती रहती है।
ठीक इसी तरह, मैं इधर-उधर जाकर इत्र लगा रही हूँ।
हर तरह से सभी विभिन्न गंधों को दबाना। (34) [6327]6381

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (35) [6328]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (36) [6329]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (37) [6330]

इस प्रकार पूज्य चूलसुगंध थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

चूलसुगंध थेरा की कथा समाप्त हो गई है।
सारांश: भद्दिया, बुजुर्ग रेवता,
और सिवली, महान प्राप्तकर्ता, वंगिसा, नंदका, कंडुदायि, इस प्रकार अभय, लोमसा और वनवाचा,
और सुगंधा ने दसवें के रूप में यह कार्य किया।
यहां तीन सौ श्लोक हैं।
और उससे सोलह अधिक।

इसके बाद अध्यायों का सारांश दिया गया है:

कनिकारा, फलदा, तिनदायका नामक अध्याय,

6379 लिट., "बहिर्वाहों का विनाश"
6380 या "जो बाहर गया था": पब्बाजितो
6381 यह श्लोक बारह-अक्षर वाले चरणों के साथ अधिक जटिल छंद में है।

कच्चाना, भद्दिया अध्याय;
यहां जिन छंदों की गणना की गई है
इस 6382 [समूह] में नौ सौ हैं
और ठीक चौरासी [और]।
पांच गुना एक सौ पचास
यहां अपदानों की व्याख्या की गई है। सारांश श्लोकों के साथ।
ये छह हजार [श्लोक] हैं
और दो सौ श्लोक भी।
इसके अलावा अठारह और छंद।

इस हद तक बुद्धपदाना, पच्चेकबुद्धपदाना और थेरापदाना पूर्ण हो चुके हैं। इसे निर्वाण का आधार बनाया जाए!6383

भद्दिया अध्याय, पचपनवाँ 6384

यासा अध्याय, छप्पनवाँ 6385

{551.}6386 Yasa6387

विशाल महासागर में तैरता हुआ, मेरा महल [तब] बहुत अच्छी तरह से बनाया गया था।
वहाँ एक तालाब भी था, जो अच्छी तरह से बना हुआ था।
लाल हंसों की चीखों से भरा हुआ,6389 [6331]

मंडलक 6390 के फूलों और गुलाबी और नीले कमलों से ढका हुआ ।
और वहाँ एक नदी बह रही थी, सुंदर, उत्कृष्ट किनारों के साथ, [6332]

6382 शाब्दिक अर्थ, "यहाँ"
6383 बीजेटीएस इन दो समापन पंक्तियों को छोड़ देता है, क्योंकि अपदान का बीजेटीएस संस्करण यहाँ समाप्त नहीं होता है, भले ही बीजेटीएस एक अपूर्ण सौ (सातकं) के लिए इन अध्याय सारांश छंदों को शामिल करता है।
6384 BJTS इस कथन को सारांश के बाद के बजाय ऊपर रखता है।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6385 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6386 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
6387 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
6388 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
6389 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
6390 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मछलियों और कछुओं से ढका हुआ,6391
विभिन्न पक्षी चारों ओर फैले हुए हैं, 6392
मोरों और बगुले की आवाज़ों से शोरगुल भरा हुआ है।
[और] कोयल जैसी पक्षियों की [पुकार]।6395 [6333]

कबूतर6396 [और] रवि हंस6397 [भी], रूडी गीज़6398 और नादिचार ,
लैपविंग6399 [और] मैना पक्षी6400 यहाँ हैं, छोटे बंदर,6401 जीवजीवक .6402 [6334]

यह हंसों और बगुले, उल्लू और कई पिंगलों की आवाज़ों से गूंजता है ।
इस रेत में सात रत्न समाहित हैं।
[कीमती मोतियों और रत्नों से भरा हुआ]। [6335]

सोने से बने सभी वृक्षों में तरह-तरह की सुगंध व्याप्त थी।
वे मेरे महल को रोशन कर रहे हैं [वहाँ],
दिन-रात, हर समय। [6336]

सुबह-शाम साठ हजार वाद्ययंत्र बजाए जा रहे हैं। सोलह हजार महिलाएं भी लगातार मेरी सेवा में लगी हुई हैं। [6337]

अपने महल से विदा होकर, हृदय में प्रसन्नता लिए,
मैंने उस महान यशस्वी सुमेधा, विश्व के नेता की पूजा की। [6338]

संबुद्ध को प्रणाम करने के बाद,

6391 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
6392 लिट., "गया"
6393 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
6394 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
6395 लिट., "योग्य"
6396 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।
6397 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस में कई रूपों में geṇḍu लिखा है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।
6398 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार
6399 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)
6400 पठन uddalomika° BJTS के साथ PTS uddhalomikā के लिए (जिसका अर्थ लगभग समान है, देखें RD, sv)
6401 लिट., "एक फूल पर"
6402 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?
6403 khiḍḍār'ati'y'ā

उन्हें [और] विधानसभा को आमंत्रित करना,
तब उस ज्ञानी ने आने की सहमति दी, सुमेधा, विश्व के नेता। [6339]

मुझे धम्म का उपदेश देने के बाद ,6404 महान ऋषि ने [बाद में] विदा ली। संबुद्ध को प्रणाम करने के बाद,
मैं [तब] अपने महल लौट आया। [6340]

मैंने वहां मौजूद सभी लोगों को बुलाया: "आप सभी एक साथ इकट्ठा हो जाओ।
दिन के पहले भाग में,
बुद्ध महल में आएंगे। [6341]

"हम, जो आपके निकट रहते हैं, हमें कुछ ऐसा प्राप्त हुआ है जो हमारे लिए लाभकारी है। हम भी आपकी पूजा करेंगे।"
शिक्षक, बुद्धों में सर्वश्रेष्ठ। [6342]

खाना-पीना परोसने के बाद, मैंने घोषणा की कि अब समय आ गया है।

विश्व नेता आ गया
एक लाख स्वामी के साथ.6406 [6343]

मैं पाँच वाद्ययंत्र बजाते हुए [उससे] मिलने गया।
सर्वोच्च व्यक्ति 6407 बैठ गया
ठोस सोने से बनी कुर्सी। [6344]

मैंने ऊपर एक चंदवा लगाया,
जो ठोस सोने से बना था; पंखे फिर भिक्षुओं की सभा में [इत्र] फैला रहे हैं। [6345]

मैंने भिक्षुओं की सभा को अपने भाषण से मंत्रमुग्ध कर दिया।
बहुत अधिक भोजन और पेय के साथ; मैंने अलग-अलग जोड़े दिए
भिक्षुओं की सभा को वस्त्र 6409। [6346]

जिसे उन्होंने सुमेधा, बलिदान प्राप्तकर्ता कहा,6410

6404 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
6405 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"
6406 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
6407 शाब्दिक रूप से, " पूजा "
6408 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
6409 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
6410 pariḷāho

भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए,
उस समय उन्होंने ये [छह] छंद कहे: [6347]

"जिसने मुझे भोजन और पेय दिया और इन सभी भिक्षुओं को भी भोजन कराया,"
मैं उनके बारे में विस्तृत जानकारी दूंगा;
आप सब मेरी बात सुनो: [6348]

अठारह सौ युगों तक वह देवताओं के संसार में आनंदित रहेगा। वह हजार बार राजा बनेगा।
एक राजा जो [कानून का] पहिया घुमाता है। [6349]

चाहे वह किसी भी गर्भ में पुनर्जन्म ले, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ,
ठोस सोने की छत
हमेशा 6412 उसके लिए ले जाया जाएगा। [6350]

तीस हजार युगों में, ओक्काका (इक्ष्वाकु) के वंश में उत्पन्न होकर,
जिसका नाम गौतम है
वह दुनिया में शिक्षक होगा। [6351]

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, समस्त दोषों का भली-भांति ज्ञाता,
वह निर्वाण प्राप्त करेगा, बेदाग। [6352]

भिक्षुओं की सभा में बैठे हुए
तब वह शेर की दहाड़ मारेगा।6413
उनकी चिता पर एक छतरी रखी हुई है;6414
इसके नीचे6415 उसका अंतिम संस्कार किया जाता है।" [6353]

मैंने भिक्षुत्व प्राप्त कर लिया है; मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं। किसी मंडप या वृक्ष की जड़ में,
मुझे भयंकर गर्मी का ज्ञान नहीं है। [6354]

उस समय मैंने जो उपहार दिया था, उसके बाद से तीस हजार युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
सब कुछ देने का फल। [6355]

6411 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"

6412 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)

6413 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

6414 samādhikusalo ahaŋ

6415 iddhipādesu kovido

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। [6356]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6357]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6358]

इस प्रकार पूज्य यासा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

प्रथम यासा थेरा की कथा।

{552.}6416 नादी-कस्सापा6417

जब पद्ममुत्तरा बुद्ध,
विश्व का सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ व्यक्ति, भिक्षा मांगते हुए, अपनी असाधारण प्रसिद्धि को बनाए हुए था।
किसी प्रकार का सर्वोत्तम फल लेना,
मैंने इसे शिक्षक को दे दिया, [6359]

दो पैरों वाला स्वामी, 6418 विश्व का सर्वश्रेष्ठ, पुरुषों का बैल। उस कर्म के कारण,
मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है।
सभी विजय और पराजय से परे। [6360]

उस दान के बाद से लेकर अब तक के एक लाख युगों में, मैंने कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखा है:
यही सर्वोत्तम देने का फल है। [6361]

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6416 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

6417 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

6418 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। [6362]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6363]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6364]

इस प्रकार पूज्य नादिकसप्पा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

द्वितीय नादिकसप्पा थेरा की कथा।

{553.}6419 गया-कस्सापा6420

मैं [तब] हिरण के चमड़े के वस्त्र पहने हुए था, और कंधे पर एक भारी जुआ लादे हुए था। खारी का बोझ ढोते हुए, मैं
बेर6422 को आश्रम में लाया गया। [6365]

उस युग में भगवान
वह अकेला था, उसके साथ कोई और नहीं था।
फिर वह मेरी कुटिया की ओर बढ़ा, हर समय तेज रोशनी बिखेरता हुआ। [6366]

अपने हृदय को प्रसन्न करते हुए, आज्ञाकारी ईश्वर की पूजा करते हुए,6424

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6419 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।

6420 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।

472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)

6421 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

6422 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

इससे बना वस्त्र।

6423 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

6424 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, “ध्यान करना”, “चिंतन करना”, “सोचना”; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

6425 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

उन्हें अपने दोनों हाथों से लेते हुए
मैंने बुद्ध को बेर दिए। [6367]

पिछले इकत्तीस युगों में
मैंने उसे वह फल तब दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई ज्ञान नहीं है: बेर देने का फल। [6368]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। [6369]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6370]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6371]

इस प्रकार पूज्य गया-कस्सपा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

तीसरे गया-कसप्पा थेरा की कथा।

{554.}6426 किम्बिला6427

जब काकुसंध का देहांत हुआ,6428 ब्राह्मण, सिद्ध पुरुष,6429 सालाला इकट्ठा करते हुए 6430 फूल,
मैंने एक मंडप का निर्माण किया।6431 [6372]

तावतिंसा जाकर,
मुझे एक आलीशान हवेली मिली।

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6426 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6427 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
6428 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
6429 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
6430 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित
6431 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

मैंने अन्य सभी देवताओं को पीछे छोड़ दिया:
यह अच्छे कर्मों का फल है। [6373]

चाहे दिन हो या रात, चलते-फिरते रहूँ या खड़े रहूँ, मैं सलाला के फूलों से ढका रहता हूँ:
यह अच्छे कर्मों का फल है। [6374]

इसी [वर्तमान] युग 6433 के भीतर
चूंकि मैंने बुद्ध की पूजा की है, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6375]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। [6376]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6377]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6378]

इस प्रकार पूज्य किम्बिला थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

किम्बिला थेरा, चौथे की कथा।

{555.}6435 वज्जीपुत्त6436

धन्य पुरुष, हजार किरणों वाले, 6437
स्वयं-निर्मित, अजेय,

6432 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)
6433 शाब्दिक रूप से, "गया"
6434 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6435 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6436 “शुभ,” एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक (“जौ का दलिया दाता”)
6437 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

अपने एकांत से उठते हुए,
भोजन की तलाश में निकल पड़ा। [6379]

हाथ में फल लिए हुए, मैंने पुरुषों के उस श्रेष्ठ बैल को आते हुए देखा। मैं प्रसन्न और आनंदित था।
मैंने उसे डंठल सहित फल दिए। [6380]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने [उसे] वह फल [उस समय] दिया था, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:
फल देने का फल यही है। [6381]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। [6382]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6383]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6384]

इस प्रकार पूज्य वज्जीपुत्त थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

पांचवें वज्जीपुत्त थेरा की कथा।

{556.}6438 उत्तरा6439

सम्बुद्ध सुमेधा, बत्तीस महान लक्षणों वाले, एकांतप्रिय, धन्य पुरुष।
हिमालय तक आ गया। [6385]

हिमालय में समाहित,
प्रधान, दयालु, ऋषि

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6438 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6439 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

पद्मासन में आना,6440
बैठ गया, परम व्यक्ति। [6386]

मैं उस समय जादूगर6441 था।
[जो] आकाश में यात्रा कर सकता था;
मैं अपना पुराना 6442 त्रिशूल ले जा रहा हूँ।

वह आसमान से होकर गुजर रहा था [ठीक वहीं]। [6387]

जैसे पहाड़ पर आग जल रही हो, जैसे पंद्रहवें दिन चाँद चमक रहा हो,6443 बुद्ध जंगल में प्रज्वलित हुए, जैसे खिले हुए राजसी साल के पेड़ की तरह। [6388]

जंगल के ऊपर से उतरते हुए, बुद्ध की किरणें नरकट की आग के रंग से पूरे आकाश को भर गईं।6444
यह देखकर मुझे प्रसन्नता हुई।

घूमते-घूमते मुझे एक फूल दिखाई दिया,
दिव्य सुगंध से युक्त एक डिनर प्लेट6445। तीन फूल लिए हुए,
मैंने उन्हें बुद्ध को अर्पित किया।

बुद्ध की राजसी शक्ति के माध्यम से, [तभी] मेरे वे तीन फूल, तने ऊपर की ओर मुड़े हुए, पंखुड़ियाँ नीचे की ओर, वे गुरु के लिए छाया बना रहे हैं। [6391]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,
मैं तब तावतिंसा गया। [6392]

वहाँ मेरा सुनिर्मित महल है
इसे "डिनर-प्लेट" के नाम से जाना जाता था।6448

6440 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

6441 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।

6442 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

6443 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना" "चिंतन करना" "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

6444 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

6445 lit., "गया"

6446 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

6447 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"

6448 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

इसकी लंबाई साठ लीग थी।
[और यह] तीस लीग चौड़ा था। [6393]

एक लाख शिखर,

एक मिल- कण्ड 6449 सेंट- भेण्डु 6450 [बड़ा], सोने का बना हुआ, झंडों से ढका हुआ,
वह हवेली मेरे लिए प्रकट हुई। [6394]

क्रिस्टल से बनी पालकी,
सोने से बना [या] रत्नों से बना, और माणिक्य से भी बना।
मैं जहाँ चाहूँ वहाँ जाऊँगा, यदि मैं चाहूँ। [6395]

और वहाँ एक महंगा बिस्तर था, जिसमें एक असेंबल किया हुआ गद्दा था, जिसके एक सिरे पर ऊनी कंबल था।
और [बहुत सारे] तकियों से सुसज्जित। [6396]

महल से निकलकर, मैं दिव्य यात्राओं पर विचरण कर रहा हूँ, अपनी इच्छा के अनुसार चल रहा हूँ।
देवताओं की सभा द्वारा सम्मानित। [6397]

मैं नीचे फ्लावर्स6454 पर खड़ा हूँ;
मेरे ऊपर एक छत्र है।
हर तरफ सौ मील
डिनर-प्लेट [पेड़ों] से ढका हुआ है.6455 [6398]

वहाँ साठ हजार वाद्ययंत्र शाम और सुबह मेरी सेवा में तत्पर रहते हैं।
वे लगातार मेरी देखभाल कर रहे हैं।
दिन-रात वे आलसी नहीं हैं। [6399]

मुझे खेल और सुख-सुविधाओं में आनंद आता है;6456
इच्छाओं की कामना करते हुए, मैं आनंदित होता हूँ

6449 यहाँ और निम्नलिखित नवशब्द में मैं छंद को बनाए रखने के लिए "हजार" और "सौ" के लिए लैटिन संक्षिप्त रूप के अंग्रेजी उपयोग का लाभ उठाता हूँ। पाली में इसका शाब्दिक अर्थ है, "एक हजार कंद (भाग, हिस्सा, गांठ, एक छोटा माप), सौ भेंदु [लंबा? मोटा?]"।

6450 बीजेटीएस के अनुसार, पीटीएस कई रूपों में गेण्डु पढ़ता है । कम से कम प्रसारण में, ये अस्पष्ट माप
भले ही वे उस ऐतिहासिक परिस्थिति के सुराग हों जिसमें मूल रचना की गई थी, फिर भी वे आज की तुलना में शायद अधिक बोधगम्य नहीं रहे होंगे।

6451 y'enicchakā , BJTS सिंहली व्याख्या kämäti tänaka के अनुसार

6452 °vikutī°; मैं इसे घास या ऊन की परतों को ढेर करके ("इकट्ठा करके") निर्मित गद्दे (tūlikā°) के रूप में समझता हूँ (देखें आरडी., एसवी)

6453 में उद्दालोमिका° को पीटीएस उद्दालोमिका के लिए बीजेटीएस के साथ पढ़ा गया है (जिसका अर्थ लगभग समान है, आरडी, एसवी देखें)

6454 लिट., "एक फूल पर"

6455 या शायद फूल? या दोनों, यानी खिले हुए पेड़?

6456 khiḍḍār'ati'y'ā

नृत्य और गायन के कारण,

वहाँ के वाद्य यंत्र और भाषण। [6400]

वहाँ खाने-पीने के बाद मैं तीस,6457 लोगों के बीच, महिलाओं की टोलियों के साथ, आनंद मना रहा हूँ।
मैं अपने महान महल में आनंदित हूँ।6458 [6401]

और मैंने वहां पांच सौ [अलग-अलग] बार दैवीय शासन का प्रयोग किया।
और तीन सौ [विभिन्न] बार, मैं एक राजा था जो पहिया घुमाता था। [और मैंने] अनगिनत स्थानीय शासन का आनंद लिया। [6402]

जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए, मुझे अनेक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं।
मेरे पास संपत्ति की कोई कमी नहीं है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6403]

मैं [केवल] दो अवस्थाओं में ही पुनर्जन्म लेता हूँ:
चाहे वह किसी देवता का हो या किसी मनुष्य का।
मुझे पुनर्जन्म की कोई अन्य अवस्था ज्ञात नहीं है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6404]

मैं दो उच्च कुलों, क्षत्रिय और ब्राह्मण में जन्मा हूँ।
मुझे छोटे कुलों के बारे में जानकारी नहीं है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6405]

मुझे हाथी और घोड़े से चलने वाले वाहन, पालकी और रथ, सब कुछ प्राप्त हो रहा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6406]

दासों की टुकड़ियाँ, दासी कन्याओं की टुकड़ियाँ और सजी-धजी स्त्रियाँ।
मुझे ये सब मिल रहा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6407]

रेशमी कपड़ा, ऊनी कपड़ा,
मुझे खोमा का कपड़ा और सूती सामान भी मिल रहा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6408]

नए कपड़े और ताजे फल।

6457 तिदास , अर्थात् तावतिंस स्वर्ग में
6458 vyamha-m-uttame , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे] परम (या उत्कृष्ट) महल में"

मुझे सबसे स्वादिष्ट प्योर6459 भोजन मिल रहा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6409]

लोग कह रहे हैं, "इसे खाओ, आनंद लो।"

कृपया इस [सुंदर] बिस्तर पर लेट जाइए," मुझे यह सब मिल रहा है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6410]

मुझे हर जगह सम्मान दिया जाता है6460 [और] मेरी बहुत ऊँची ख्याति है, मैं हमेशा बहुमत में रहता हूँ,6461
मेरे दल में कोई गुट नहीं है। [6411]

मुझे सर्दी-जुकाम का ज्ञान नहीं है, और न ही बुखार का। इसी प्रकार मुझमें मन या हृदय का कोई कष्ट नहीं है।

सुनहरे रंग का होने के कारण,
मैं जन्म-जन्मांतर तक जन्म लेता हूँ। मुझे कोई बुरा रंग नहीं पता।
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6413]

देवताओं की दुनिया से गिरते हुए, मेरी पवित्र जड़ों से प्रेरित होकर,
मेरा पुनर्जन्म श्रावस्ती, 6464 में हुआ है।
एक धनी [कुल] में बड़े हॉल के साथ.6465 [6414]

पांचों इंद्रिय सुखों का त्याग करना,6466
मैं बेघर हो गया। मेरी उम्र सिर्फ सात साल थी।
मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। [6415]

मेरे गुणों को जानकर, बुद्ध
उस अद्‌भुत व्यक्ति ने [तब] मुझे नियुक्त किया। एक युवा बालक जो सम्मान के योग्य है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6416]

6459 nava , वही विशेषण जिसका अनुवाद प्रथम पद में "नया" और द्वितीय पद में "ताज़ा" के रूप में किया गया है।
6460 शाब्दिक अर्थ, " पूजा "
6461 महापक्खो , शाब्दिक अर्थ, "महान गुटों में से एक" "एक शक्तिशाली दल वाला व्यक्ति,"
6462 या "मुझे नहीं पता," ना जानामी
6463 pariḷāho
6464 शाब्दिक रूप से, "शहर में, श्रावस्ती,"
6465 महासाले , धन का प्रतीक (जिसे सु-अढके , "अत्यंत धनी" या "अत्यंत प्रभावशाली" के रूप में और भी बल दिया जाता है)
6466 pañca-kāma-guṇe , "इंद्रिय सुख के पाँच सूत्र," अर्थात् पाँच इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त होने वाले सुख।

दिव्य दृष्टि शुद्ध हो जाती है;
मैं ध्यान की अवस्थाओं में निपुण हूँ।
सिद्ध किए गए विशेष ज्ञान:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6417]

विश्लेषणात्मक तरीके प्राप्त किए गए,
सभी महाशक्तियों में कुशल,6468
विशेष ज्ञान में निपुण:

यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6418]

तीस हजार युगों में
जब से मैंने बुद्ध की पूजा की है, तब से मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं हुआ है:
यह बुद्ध- पूजा का फल है । [6419]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। [6420]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6421]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6422]

इस प्रकार पूज्य उत्तरा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

छठे उत्तरा थेरा की कथा।

{557.}6470 अपारा उत्तरा6471

जब जगत के स्वामी ने निर्वाण प्राप्त किया, तब जगत के नेता सिद्धार्थ ने...

6467 samādhikusalo ahaŋ
6468 iddhipādesu kovido
6469 शाब्दिक रूप से, "पूजा की"
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6470 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6471 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है। 472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")

अपने रिश्तेदारों को बुलाकर,
मैंने [बुद्ध के] अवशेषों की पूजा की। [6423]

पिछले चौरानवे युगों में
मैंने उन अवशेषों की पूजा की थी, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला है:

यह अवशेष पूजा का फल है। [6424]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। [6425]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6426]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6427]

इस प्रकार पूज्य अपरा उत्तरा थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

सातवें अपारा उत्तरा थेरा की कथा।

{558.}6474 भद्दाजी6475

मैं हाथियों से भरे एक तालाब में डुबकी लगाकर वहां से कमल की जड़ उखाड़ रहा हूँ।
क्योंकि [वे ही] मैं तब खा रहा होता हूँ। [6428]

उस काल में बुद्ध 6476

6472 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।
6473 r'attambaradharo , शाब्दिक अर्थ, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," यहाँ अंबारा एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।
इससे बना वस्त्र।
{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6474 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6475 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
6476 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा") के रूप में, या बिना खमीर की रोटी या जंकेट (पीएसआई: सिंह. रोटीया) के रूप में। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

उनका नाम पदुमुत्तरा था।
लाल रंग से रंगे वस्त्र पहने हुए,6477 बुद्ध आकाश में यात्रा कर रहे हैं,6478 चिथड़ों से बने अपने वस्त्रों को झटकते हुए।
फिर मैंने [उसके वस्त्रों की] आवाज सुनी, [और] ऊपर [आकाश की ओर] देखते हुए,
मैंने विश्व के नेता को देखा। [6429-6430]

वहीं पर रहते हुए, मैंने विश्व नेता को आमंत्रित किया: "जड़ों से शहद बह रहा है"
[और] दूध [और] तेल6480 तनों से बहता है;
बुद्ध को, जो दृष्टि को परिपूर्ण करने वाले हैं,
दया करके मुझसे कुछ स्वीकार करो। [6431]

तब दयालु, महान ख्याति प्राप्त गुरु अवतरित हुए।
उस सुंदर नेत्र ने दया भाव से मेरा भिक्षापात्र स्वीकार कर लिया। उसे स्वीकार करते हुए, संबुद्ध ने
उन्होंने मुझे इस प्रकार धन्यवाद व्यक्त किया: [6432]

हे पुण्यवान, प्रसन्न रहो;
आपका पुनर्जन्म संपन्न हो। कमल की जड़ के इस उपहार के कारण,
आपको अपार सुख प्राप्त हो। [6433]

हालांकि, संबुद्ध,
जिसका नाम "सर्वश्रेष्ठ कमल" था।
संबुद्ध ने वह भोजन ग्रहण किया,
विक्टर आसमान से उड़ गया। [6434]

और अधिक कमल की जड़ लेकर मैं अपने आश्रम लौट आया। उस जड़ को एक पेड़ पर लटकाकर,
मुझे अपनी भेंट याद आ गई। [6435]

फिर एक भीषण आंधी चली;
इसने जंगल को हिला दिया।

संभवतः, और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी प्रकार का जौ से बना भोजन है।

6477 r'attambaradharo , शाब्दिक रूप से, "लाल अंबारा धारण करने वाला ," बाद वाला एक प्रकार के कपड़े के साथ-साथ उससे बने ऊपरी वस्त्र को भी संदर्भित करता है।

6478 शाब्दिक अर्थ, "जाना," अन्यत्र संदर्भ के अनुसार "उड़ना" के रूप में अनुवादित

6479 nijjhāyamāno , शाब्दिक अर्थ, "ध्यान करना", "चिंतन करना", "सोचना"; मैं BJTS सिंहली व्याख्या balannā vu mama का अनुसरण करता हूँ

6480 सप्पी , शाब्दिक अर्थ, घी, शुद्ध मक्खन (गी तेल)

6481 शाब्दिक अर्थ, "गया"

6482 रीडिंग sañcālesi with BJTS for PTS sañjālesi

वह स्थान शोर से भर गया था।
वहाँ बिजली की कड़क फूट रही थी। [6436]

फिर आकाश से बिजली गिरी और सीधे मेरे सिर पर लगी। इसी वजह से मैं बैठ गया।
मैं मौके पर ही मर गया। [6437]

[तब] मेरे अच्छे कर्मों से बंधे होने के कारण, मेरा तुसिता में पुनर्जन्म हुआ।
जब मेरा [मानव] शरीर नीचे गिरा, तो मुझे देवताओं की दुनिया में आनंद आया। [6438]

तब छियासी हजार स्त्रियाँ [सुंदर वस्त्रों और आभूषणों से सजी हुई] शाम और सुबह मेरी सेवा करती थीं:
कमल की जड़ देने का फल। [6439]

मानव गर्भ में आने के बाद, मैं हर समय खुश रहती हूँ।
मेरे पास संपत्ति की कोई कमी नहीं है:
कमल की जड़ देने का फल। [6440]

फिर, हे देवताओं के परमेश्वर, तटस्थ परमेश्वर द्वारा दया किए जाने पर, समस्त दोष दूर हो जाते हैं;
अब पुनर्जन्म नहीं होगा। [6441]

एक लाख युगों में
जब से मैंने उस समय भिक्षा में भोजन दिया है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:
कमल की जड़ देने का फल। [6442]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। [6443]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6444]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

6483 शाब्दिक अर्थ, "गिर गया"
6484 शाब्दिक अर्थ, "योग्य"

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6445]

इस प्रकार पूज्य भद्दाजी थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

आठवें भद्दाजी थेरा की कथा।

{559.}6485 Sīvaka6486

जब महान ऋषि विपस्सी अपनी इच्छा अनुसार घूम रहे थे, तब उन्होंने देखा कि उनका कटोरा खाली है।
मैंने इसे जौ के दलिया से भर दिया।6487 [6446]

पिछले इक्यावन युगों में
मैंने उस समय दान में भोजन दिया था, मुझे कभी कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला:
यह जौ के दलिया का फल है। [6447]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,
मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। [6448]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।
तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6449]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,
छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,
मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! [6450]

इस प्रकार पूज्य सिवका थेरा ने ये श्लोक कहे थे।

नौवें शिवक थेरा की कथा।

उसका सारांश यह है:

{फैंसी ब्रैकेट} में दिए गए 6485 अपदान नंबर BJTS संस्करण के अनुरूप हैं, जिसमें PTS संस्करण की तुलना में अधिक व्यक्तिगत कविताएँ हैं, जो इस अनुवाद की मुख्य संख्या निर्धारित करता है।
6486 "शुभ," एक ऐतिहासिक भिक्षु, देखें डीपीपीएन II: 1162. यही अपदान ऊपर, शब्दशः, इस प्रकार शामिल है।
472 {475}, कुम्मासादायक ("जौ का दलिया दाता")
6487 कुम्मासा , संस्कृत: कुलमाष , जौ से बना एक व्यंजन, या तो नरम दलिया या खिचड़ी (पीएसआई यवयेन कल आहारयक , "जौ से बना भोजन;" बीजेटीएस सिंह. ग्लॉस कोमुपिंडु , "नरम उबला हुआ भिक्षा"), या बिना खमीर की रोटी या व्यंजन (पीएसआई: सिंह. रोटीया)। खाली कटोरे को "भरने" के वर्णन को देखते हुए, पहला विकल्प अधिक संभावित लगता है और मैंने उसी के अनुसार अनुवाद किया है। यह किसी भी तरह से जौ से बना कोई भोजन है।

यासा और नदी-कस्सप, गया, किम्बिला, वज्जिता, दो उत्तर और भद्दाजी और शिवक अंतिम।

यासा अध्याय, छप्पनवाँ अध्याय।

थेरापदान समाप्त हो गया है ।

(पुस्तक “मचसा” [बीजेटीएस के वैकल्पिक संस्करणों में से एक] में थेरा रट्ठपाल और उपवान के अपदानों को यस अध्याय के अंत में समाहित दिखाया गया है। यह समझना चाहिए कि इन्हें यहाँ नहीं दिखाया गया है क्योंकि ये अपदानपाली के प्रथम भाग के दूसरे और तीसरे अध्यायों में आते हैं [रट्ठपाल दूसरे अध्याय में क्रमांक 18 पर है; उपवान तीसरे अध्याय में क्रमांक 22 पर है]।)

स्रोत: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
थेरीस (वरिष्ठ ननों) की किंवदंतियाँ

अब थेरीस की कथाएँ सुनो:1

सुमेधा अध्याय, पहला

1. सुमेधा2
जब कोणागमना, हे भगवान,

अपने नए निवास, मठवासी आश्रम में था,3 [हम] जो तीन महिला मित्र थीं, [तब] एक मठ दान किया।4 (1) [1]

दस बार [और फिर] सौ बार, और फिर सौ सौ बार,5 हम देवताओं के बीच पुनर्जन्म हुए;

कौन बता सकता है कि मनुष्य पुनर्जन्म कैसे होते हैं? (2) [2]

देवताओं में हमारे पास अपार शक्ति थी; मनुष्य की शक्ति का कौन वर्णन कर सकता है? सात रत्नों वाली प्रमुख रानी,6

मैं एक अनमोल महिला थी। (3) [3]

1 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत करता है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

2 ka'ssape 'jinasāsane , शाब्दिक अर्थ, "विजयी कस्सपा [बुद्ध] के विधान में" 3 पीटीएस °brahmaceram के स्थान पर बीजेटीएस ° brahmacariyam का पाठ , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन" "पवित्र जीवन" "ब्रह्मवास" 4 अर्थात्, तैंतीस देवता। 5 पीटीएस mahāmuni , महान ऋषि के स्थान पर बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ mahāmune का पाठ। 6 यह पीटीएस bhikkhunī Selā के लिए बीजेटीएस पाठ है। 7 यह पंक्ति केवल बीजेटीएस में है, जो यहां और अन्यत्र Pesalā पढ़ता है।

यहां अच्छे कर्मों का संचय होने के कारण, हम सफल कुलों से हैं: धनंजनी और खेमा भी।

मेरे साथ, तीन महिलाएं। (4) [4]

उस आश्रम को अच्छी तरह से बनवाकर, उसके हर हिस्से को सजाकर, हमने प्रसन्नतापूर्वक उसे दान कर दिया।

बुद्ध के नेतृत्व वाली सभा को।9 (5) [5]

मैं जिस भी स्थान पर पुनर्जन्म लूं,

10 के अनुसार, उस कर्म के अनुसार, देवताओं और मनुष्यों में भी,

मैं सर्वोच्च स्थान प्राप्त करता हूँ। (6) [6]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में

ब्रह्मा के संबंधी, परम प्रसिद्ध, [बुद्ध] जिन्हें कश्यप11 के नाम से जाना जाता है

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का जन्म हुआ। (7) [7]

उस महान ऋषि का सेवक उस समय काशी का राजा, किकी, मनुष्यों का शासक था।

बनारस में, सबसे बड़ा शहर। (8) [8]

उस [शासक] की सात बेटियाँ थीं, शाही कन्याएँ जो आराम से पली-बढ़ी थीं। वे बुद्ध की सेवा करने की शौकीन थीं।

उन्होंने धार्मिक जीवन का अभ्यास किया।12 (9) [9]

उन [लड़कियों] की सहयोगी बनकर, नैतिक सिद्धांतों में दृढ़ रहकर, बहुत सावधानी से उपहार देते हुए,

मैंने घर में रहते हुए प्रतिज्ञाओं का अभ्यास किया।(10) [10]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (11) [11] वहाँ से गिरकर मैं यम के पास गया,13

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

9 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

10 यह उपसंहार केवल BJTS में ही मिलता है; PTS में यह नहीं है।

11 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

पीटीएस महामुनि , महान ऋषि के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ महामुने का 12वां पाठ।

13 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक रूप से, "[मैं] पूरा कर रहा हूँ (या भर रहा हूँ, यह अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है]

फिर मैं तुसिता गया, और फिर निम्मानारती गया।

और फिर वासावट्टी नगर। (12) [12]

मैं जिस भी स्थान पर पुनर्जन्म लूँ, अच्छे कर्म करने में दृढ़ रहूँ,14

मुझे मुख्य रानी के पद पर नियुक्त किया गया था।

उन सभी [स्वर्गों] में राजाओं के। (13) [13]

फिर मानवता में विलीन हो गया,

मुझे मुख्य रानी के पद पर नियुक्त किया गया था।

उन राजाओं के बारे में जिन्होंने [कानून का] पहिया घुमाया

और राजा [बड़े क्षेत्रों पर शासन करते हुए]।15 (14) [14]

देवताओं और मनुष्यों के बीच सुख का अनुभव करने के बाद, हर जगह सहज महसूस करने के बाद,

मैंने कई जन्मों के माध्यम से 16 यात्रा की। (15) [15]

यही कारण है, यही वजह है, जड़ है, व्यवस्था के लिए धैर्य है,

पहली पहचान,18

इस धम्म प्रेमी का निर्वाण। (16) [16]19

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (17) [17]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (18) [18]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (19) [19]

उसका नाम) एक अपूर्ण सौ," यानी, "मैं 100वां गुलाम था"

14 puṇṇā ti nāmaŋ

15 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

16 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

17 पाठ महामुने (भाषण) बीजेटीएस के साथ पीटीएस तदा मुनि ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

18 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

19 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

इस प्रकार पूज्य भिक्षुणी सुमेधा ने ये श्लोक कहे। [सुमेधा थेरी की कथा यहीं समाप्त होती है।]

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 4.1-थेरिस सूची >> 2.मेखलादायिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स
नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
2. मेखलदायिका22
मैंने एक स्तूप का निर्माण करवाया था।23

भगवान सिद्धार्थ के लिए, मैंने अपना कमर का आभूषण अर्पित किया।24

ताकि शिक्षक की मरम्मत की जा सके।25 (1) [20]

जब वह विशाल स्तूप बनकर तैयार हो गया, तो मैंने एक और आभूषण दिया।26

विश्व के मार्गदर्शक, ऋषि के लिए,

[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (2) [21]

पिछले चौरानवे युगों में

मैंने तब वह कमर का आभूषण दिया था, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:

स्तूपों के निर्माण का यही फल है। (3) [22]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [23]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [24]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [25]

इस प्रकार भिक्खुनी मेखलादायिका थेरी27 ने ये श्लोक कहे।

20 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

21 danto , या “वश में किया हुआ”

22 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

23 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

24 का'स्सपे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कस्पा (बुद्ध) की व्यवस्था में"

25 पठन °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

26 अर्थात् तैंतीस देवता।

27 PTS महामुनि , महान ऋषि के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ महामुने पढ़ना।

मेखलादायिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 3.मण्डपादायिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
3. मंडपदायिका 28

मैंने बुद्ध कोणागमना के लिए एक मंडप बनवाया और निरंतर वस्त्र दान करता रहा।

बुद्ध को, जगत के संबंधी। (1) [26]

मैं जिस भी देश में जाऊं,

चाहे वह छोटा शहर हो या शाही नगर, मुझे हर जगह पूजा दी जाती है :

यह अच्छे कर्मों का फल है।29 (2) [27]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (3) [28]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (4) [29]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [30]

इस प्रकार, भिक्खुनी मंदपदायिका ने ये श्लोक कहे थे।

मांडपदायिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान 4.1-थेरिस सूची >> 4.संकमनात्त

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40

4. संकमनत्ता30

जब भगवान कोंडञ्ञ ने

दुनिया का सर्वश्रेष्ठ, तटस्थ व्यक्ति, सड़क पर यात्रा कर रहा था।

जीवित प्राणियों को पार कराना, (1) [31]

28 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

29 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

30 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

मेरे घर से बाहर आने के बाद,

मैंने चेहरा नीचे करके वहीं लेट गया।

दुनिया का सबसे अच्छा, दयालु,

फिर मेरे सिर पर एक कदम रखा। (2) [32]

मेरे सिर पर पैर रखने के बाद, विश्व के नेता ने [तब] छोड़ दिया। मेरे दिल में जो खुशी थी, उसके कारण।

मैं तुसिता [स्वर्ग] गया। (3) [33]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (4) [34]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (5) [35]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [36]

इस प्रकार भिक्खुनी संकमनात्ता ने ये श्लोक कहे।

संकमनत्ता थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 4.1-थेरिस सूची >> 5.तीनिनामलिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
5. तिनिन◌ँमालिका31

उस समय मैं चंदाभागा नदी के किनारे किन्नरी हुआ करती थी।32

मैंने वहां स्टेनलेस बुद्ध की मूर्ति देखी।

स्वयं-बनें, अजेय। (1) [37]

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।

विस्मय से व्याकुल होकर,33 हाथ जोड़कर, सरकंडों से बनी माला धारण करते हुए,

मैंने स्वयं-एकत्व की पूजा की। (2) [38]

31 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

32 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

33 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

उस कर्म के फलस्वरूप,

मैं तैंतीस [देवताओं] के पास गया।34

मुझे मुख्य रानी के पद पर नियुक्त किया गया था।

देवताओं के छत्तीस राजाओं में से। (3) [39-40]

मैं दस चक्र-चालकों के प्रधान राजा की रानी के स्थान पर स्थिर थी। मेरा हृदय व्याकुल था,35

मैं बेघर हो गया। (4) [40]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;

मेरे लिए अस्तित्व का वध हो गया है।36

मेरे सभी दोष नष्ट हो गए हैं;

अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (5) [42]37

पिछले चौरानवे युगों में

मैंने उस फूल से पूजा की ।

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (6) [41]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (7) [43]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [44]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [45]

इस प्रकार, भिक्खुनी तिणिनलमालिका ने ये श्लोक कहे थे।

तिणिनलमालिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

34 पाठ ॰ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) ॰ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

35 यानी तैंतीस देवता।

36 PTS महामुनि , महान ऋषि के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ महामुने पढ़ना।

37 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 6.एकपिण्डदायिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
6. एकपिण्डदायिका38

शहर में, बंधुमती,

बंधुमा नाम का एक राजा था।3940

मैं [तब] उस राजा की पत्नी थी, एक निश्चित तरीके से व्यवहार कर रही थी।41 (1) [46]

अकेले जाकर, बैठकर, मैंने इस प्रकार चिंतन किया:

मैंने कोई भी ऐसा नेक काम नहीं किया है जो मुझे

जब मेरी मृत्यु हो जाएगी, तो मैं ले जा सकता हूँ। (2) [47]

मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं है कि मैं निश्चित रूप से नरक में जाऊंगा, जो धधकती हुई आग से भरा होगा और दुखों से लदा होगा।

भयानक रूप का, [और] बहुत क्रूर।" (3) [48]

राजा से संपर्क करने के बाद,

तब मैंने उससे ये शब्द कहे: "हे क्षत्रिय, मुझे दे दो।"

एक भिक्षु, [जिसे] मैं [इसके बाद] भोजन कराऊंगा।" (4) [49]

उस महान राजा ने मुझे एक प्रतिभाशाली भिक्षु दिया।

अपना कटोरा लेने के बाद,

मैंने उसे दूध-चावल से संतुष्ट किया।42 (5) [50]

मैंने इसे दूध-चावल से भर दिया और फिर उस पर सुगंधित मरहम लगाया। इसके ऊपर जाली लगाकर,

मैंने इसे नीले कमल से बंद कर दिया।43 (6) [51]

उसे अपने जीवन भर के चिंतन का विषय बनाकर, वहाँ अपने हृदय को सुख प्रदान करते हुए, मैं तावतिंसा गया। (7) [52]

मुझे देवताओं के बीच तीस राजाओं की प्रधान रानी के स्थान पर स्थापित किया गया था।

38 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

39 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

40 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्या [बुद्ध] की व्यवस्था में"

41 पाठ °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

42, अर्थात् तैंतीस देवता।

43 पीटीएस महामुनि , महान ऋषि के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ महामुने पढ़ना।

44 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है

मेरे मन की जो इच्छा हो

इच्छानुसार अस्तित्व में आता है। (8) [53]

मुझे मुख्य रानी के पद पर नियुक्त किया गया था।

बीस राजाओं में से जिन्होंने पहिया घुमाया। संचित [पुण्य] के साथ,

मैंने जन्मों के माध्यम से पुनर्जन्म लिया। (9) [54]

मैं हर बंधन से मुक्त हो गया हूँ;

मेरी आधारभूत परतें नष्ट हो गई हैं;45

सभी अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं;

अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (10) [55]

पिछले इक्यावन युगों में

मैंने उस समय दान दिया था, मुझे अब तक कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है:

यही उस भोजन का फल है जिसके लिए भीख मांगी जाती है। (11) [56]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (12) [57]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) [58]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) [59]

इस प्रकार भिक्खुनी एकपिण्डदायिका ने ये श्लोक कहे।

एकपिंडदायिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
7. कटच्छुभिक्खदायिका46

मैंने भीख मांगकर प्राप्त भोजन का एक चम्मच लेकर उसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को अर्पित कर दिया।

शिक्षक, जिनका नाम तिस्सा था,

जो भोजन की भीख मांगते हुए भटक रहा था। (1) [60]

45 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

46 "पत्थर," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

इसे स्वीकार करते हुए, संबुद्ध, तिस्सा, विश्व के प्रधान नेता, शिक्षक, मार्ग पर खड़े हैं,

उन्होंने मुझे यह धन्यवाद दिया: (2) [61]

"भीख में मिले इस एक चम्मच भोजन को देने से तुम तावतिंस जाओगे।"

आपको देवताओं के छत्तीस राजाओं की मुख्य रानी के स्थान पर स्थापित किया जाएगा। (3) [62]

आप पचास राजाओं की मुख्य रानी के स्थान पर स्थिर रहेंगे जो पहिया घुमाते हैं। आपके मन में जो भी इच्छा हो, वह आपको प्रतिदिन प्राप्त होगी। (4) [63]

अत्यधिक सुख का अनुभव करने के बाद, आप निःसंपन्न होकर आगे बढ़ेंगे।48

तुम्हारे सभी दोषों को नष्ट करते हुए,

तुम निर्वाण प्राप्त करोगे, बेदाग।" (5) [64]

यह कहकर संबुद्ध, तिस्सा, विश्व के प्रधान नेता, वीर, आकाश में उड़ गए।

ठीक हवा में हंस-राजा की तरह। (6) [65]

मेरी शानदार प्रस्तुति बहुत अच्छी रही।

मैंने अपना बलिदान बखूबी दिया।49

भीख मांगकर दिया गया वह एक चम्मच भोजन देना,

मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है। (7) [66]

पिछले बानवे युगों में

मैंने उस समय दान दिया था, मुझे अब तक कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं मिला है:

भीख मांगने पर भोजन देने का यही फल है। (8) [67]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (9) [68]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [69]

47 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

48 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

49 पाठ °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मवास"

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [70]

इस प्रकार, भिक्खुनी कटच्छुभिक्खदायिका ने ये श्लोक कहे।

कटच्छुभिक्खदायिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 8.सत्तुप्पलमलिकाय
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
8. सत्तूपलमालिकाय 50

अरुणावती नगर में,

अरुणवा नाम का एक राजा रहता था।51

मैं उस राजा की पत्नी थी।

उसके द्वारा यात्रा पर भेजा गया।52 (1) [71]

सात फूल लेकर, दिव्य सुगंध से भरपूर नीले कमल को लेकर, उस सुंदर महल में लेटकर,

तब मैंने इस प्रकार विचार किया: (2) [72]

“ये फूल मेरे किस काम के हैं?”

मेरे सिर के ऊपर लगाया गया?

वे मेरे लिए बेहतर विकल्प होंगे।

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध के [महान] ज्ञान के लिए। (3) [73]

वे संबुद्ध का सम्मान कर रहे हैं; महल के द्वार के पास बैठे हुए, जब संबुद्ध यहाँ आते हैं,

मैं भी महान ऋषि की पूजा करूँगा।" (4) [74]

अर्जुन वृक्ष के समान तेजस्वी,54 पशुओं के राजा सिंह के समान, भिक्षुओं की सभा के साथ,

विक्टर [तब] सड़क पर आया। (5) [75]

बुद्ध की किरणों को देखकर, प्रसन्न होकर, भावविभोर होकर, द्वार खोलकर, मैं

[तब] उन्होंने सर्वश्रेष्ठ बुद्धों की पूजा की। (6) [76]

50 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

51 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

52 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

53 पाठ °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

54 अर्थात् तैंतीस देवता।

मैंने आकाश में वे सात नीले कमल बिखेर दिए। फिर बुद्ध के सिर को ढकते हुए,

वे [आकाश में] रुके हुए थे। (7) [77]

दिल में उत्साह और मन में प्रसन्नता लिए हुए,

विस्मय से भर गया,55 हाथों को जोड़कर, मेरे दिल को वहां खुशी पहुंचाते हुए,

मैं तब तावतिंसा गया। (8) [78]

मेरे सिर के ऊपर नीले कमल के फूल की छतरियाँ हैं।

तब मुझसे दिव्य सुगंध निकलती है:

सात कमलों का फल। (9) [79]

जब भी मुझे अपने रिश्तेदारों के समूह के साथ कहीं भेजा जाता है, तो साथ में नीले कमल ले जाए जाते हैं।

मेरे पूरे दल पर। (10) [80]

मैं देवताओं के सत्तर राजाओं की प्रधान रानी के पद पर नियुक्त थी। हर जगह एक महिला शासक थी।

मैं जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेता रहा। (11) [81]

मुझे 63 चक्र-घुमाने वाले राजाओं की मुख्य रानी के स्थान पर स्थापित किया गया था।

वे सभी मेरी [इच्छाओं] के अनुरूप हैं;

मैं वह व्यक्ति हूँ जिसके शब्दों को सुना जाता है।58 (12) [82]

मेरा रंग और उससे निकलने वाली सुगंध

वे नीले कमल के फूलों के समान हैं; मैंने कभी बुरे पुनर्जन्म को नहीं जाना है:

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (13) [83]

महाशक्तियों में निपुण,

ज्ञान के भागों को केंद्र बिंदु के रूप में पसंद करने वाला,59

विशेष ज्ञान में निपुणता प्राप्त की:

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (14) [84]

ध्यान बनाए रखने में कुशल,60

55 PTS महामुनि , महान ऋषि के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ महामुने का पठन।

56 यह पीटीएस भिक्षुणी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

57 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

58 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

59 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

60 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

शांत ध्यान में चरते हुए, उपयुक्त परिश्रम करते हुए:61

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (15) [85]

मेरा प्रयास इस बोझ को वहन कर रहा है

मुझे आसक्तियों से मुक्ति दिलाई;62

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं।

अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (16) [86]

पिछले इकत्तीस युगों में

मैंने उस फूल से उनकी पूजा की, मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं पता चला;

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (17) [87]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (18) [88]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (19) [89]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) [90]

इस प्रकार भिक्खुनी सत्तुप्पलामालिकाय ने ये श्लोक कहे।

सत्तुप्पलामालिकाया थेरी63 की कथा समाप्त हो गई है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान4.1-थेरिस सूची >> 9.पंचादिपिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
9. पंचदीपिका 64

हंसवती नगर में,

मैं उस समय घुमक्कड़ था। एक आश्रम से दूसरे आश्रम भटकता रहता था।

मैं भलाई की कामना करते हुए भटकता रहा।65 (1) [91]

61 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

62 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज।

63 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

64 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

65 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

एक दिन जब चंद्रमा घट रहा था,66

मैंने सर्वोच्च बोधि वृक्ष के दर्शन किए। वहाँ जाकर मेरे हृदय को अपार प्रसन्नता हुई।

मैं उस बोधि की जड़ों में बैठ गया। (2) [92]

श्रद्धा भाव से हृदय को थामे, हाथों को सिर पर जोड़े, वहाँ मानसिक सुख का अनुभव करते हुए,

फिर मैंने इस प्रकार विचार किया: (3) [93]

यदि [उसके पास] असीम सद्गुण हैं, वह अद्वितीय है, उसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं है,

बुद्ध मुझे कोई चमत्कार दिखाएँ;

उसे इस बोधि वृक्ष को चमकाने दो। (4) [94]

जब मैंने वह आकांक्षा व्यक्त की,

तब बोधि वृक्ष प्रज्वलित हो उठा। यह सभी दिशाओं में चमक उठा, हर अच्छे रंग को प्रदर्शित करते हुए।67 (5) [95]

मैं सात रात और सात दिन उस बोधि वृक्ष की जड़ों में बैठा रहा, और जब सातवां दिन आया,

मैंने दीयों का एक भेंट चढ़ाया। (6) [96]

मैंने उन्हें अपनी सीट के चारों ओर रखकर पाँच दीपक जलाए।

[और] फिर मेरे सभी दीपक जलते रहे, जब तक कि सूरज दोबारा नहीं उग गया। (7) [97]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (8) [98]

वहाँ मेरा सुनिर्मित दिव्य महल “पंचदीपी”70 के नाम से जाना जाता था।

इसकी ऊंचाई सौ मील थी।

[और] उस समय चौड़ाई में साठ लीग.71 (9) [99]

मेरे आसपास अनगिनत दीपक जल रहे हैं।

66 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

67 पाठ °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मवास"

68 यानी तैंतीस देवता।

69 PTS महामुनि , महान ऋषि के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ महामुने पढ़ना।

70 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

71 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

तब दिव्य जगत प्रकाशित हो जाता है

लैंप की रोशनी से, इसके किनारों तक।72 (10) [100]

यदि पूर्व दिशा की ओर देखते हुए खड़े होने पर, मैं ऊपर, नीचे और सामने कुछ देखना चाहूँ,

मैं सब कुछ अपनी आँखों से देखता हूँ। (11) [101]

जहां तक मैं देखना चाहूँ,73

अच्छे से किए गए काम और अच्छे से नहीं किए गए काम,74

मेरी दृष्टि में कोई बाधा नहीं है।

वहाँ पेड़ों और पहाड़ों में। (12) [102]

मुझे देवताओं के बीच अस्सी राजाओं की प्रधान रानी के स्थान पर स्थापित किया गया था।

मुझे मुख्य रानी के पद पर नियुक्त किया गया था।

सौ पहिए घुमाने वाले राजाओं में से। (13) [103]

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ,

मेरे आस-पास, एक [पूरा] लाख

मेरे लिए वहाँ दीपक जल रहे हैं। (14) [104]

देवताओं के लोक से गिरकर, एक माँ के गर्भ में जन्म लेकर, जब मैं उस माँ के गर्भ में था,

मेरी आँखें हर समय खुली रहती थीं।75 (15) [105]

मेरे अच्छे कर्मों के कारण,76

प्रसव कक्ष में पूरे एक लाख दीपक जलाए गए हैं:

यह पाँच दीपक देने का फल है। (16) [106]

जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ,

मैंने अपना मन कामवासना से दूर कर लिया। मैंने अमरता प्राप्त कर ली।

अमर शीतल अवस्था, निर्वाण। (17) [107]

जब मैं मात्र सात वर्ष का था, तब मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। मेरे गुणों को पहचानते हुए, बुद्ध ने

गौतम ने [मुझे उसी समय] दीक्षा दी। (18) [108]

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, बीजेटीएस में दिखाई देते हैं लेकिन पीटीएस में नहीं।

73 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

74 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

75 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

76 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

एक चबूतरे पर ध्यान करते हुए,77

पेड़ के नीचे, महलों में,

गुफाओं या खाली इमारतों में [तब]

मेरे लिए वहाँ पाँच दीपक जल रहे हैं। (19) [109]

मेरी दिव्य दृष्टि शुद्ध हो गई है;

मुझे एकाग्रता में निपुणता प्राप्त है। मैं विशेष ज्ञान में उत्कृष्ट हूं:

यह पाँच दीपक देने का फल है। (20) [110]

हर उपलब्धि हासिल हो गई है; मेरा कर्तव्य पूरा हो गया है, मैं बेदाग हूँ।

मैं पाँच दीपों से आपकी पूजा कर रहा हूँ।

पैर, महान नायक, हे आँखों को भाने वाले। (21) [111]

एक लाख युगों में

जब से मैंने उसे वे दीपक दिए हैं, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:

यह पाँच दीपक देने का फल है। (22) [112]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (23) [113]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) [114]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [115]

इस प्रकार भिक्खुनी पंचदीपिका ने ये श्लोक कहे।

पंचदीपिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान 4.1-थेरिस सूची >> 10.उदकदायिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
10. उदकदायिका 78

शहर में, बंधुमती,

तब मैं पानी लाने का काम करता था।

77 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, “[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है),” अर्थात्, “मैं 100वीं दासी थी”

78 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

पानी ढोकर जीवन यापन करना

मैं अपने बच्चों का पालन-पोषण इसी तरह कर रहा हूँ।79 (1) [116]

मुझे वे चीजें नहीं दी जा सकतीं।

अद्वितीय योग्यता के क्षेत्र में।" पानी के टावर पर जाना,80

मैंने [बुद्ध को]81 पानी दिया। (2) [117]

उस कर्म के अच्छे फल के कारण मैं तावतिंस गया।

वहाँ मेरे पास पानी ढोकर बनाया गया एक सुव्यवस्थित महल था।82 (3) [118]

मैं हर समय घिरा रहता हूँ

हजार अप्सराओं द्वारा, [और] मैं हमेशा उनसे आगे निकल रहा हूँ

उन सभी को [सभी] दस तरीकों से।83 (4) [119]

मुझे देवताओं के बीच पचास राजाओं की प्रधान रानी के स्थान पर स्थापित किया गया था।

मुझे मुख्य रानी के पद पर नियुक्त किया गया था।

बीस राजाओं में से जिन्होंने पहिया घुमाया। (5) [120]

मानव और दिव्य, दो अवस्थाओं में पुनर्जन्म लेते हुए।

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:

पानी देने का यही फल है। (6) [121]

पहाड़ की चोटी पर हो या खराब सड़क पर, हवा में हो या जमीन पर, जब भी मुझे पानी की जरूरत होती है,

मुझे यह बहुत जल्दी मिल जाता है। (7) [122]

सूखे के समय में [मेरा] क्षेत्र न तो भीषण गर्मी से झुलसता है और न ही उबलता है; मैं जो सोच रहा हूँ उसे समझने की कोशिश कर रहा हूँ

एक बड़ा वर्षा-बादल [हमेशा] वर्षा करता है। (8) [123]

जब भी मुझे कहीं भेजा जाता है,

अपने परिजनों की सभा के साथ, यदि मैं बारिश की कामना कर रहा हूँ

तब एक बड़ा वर्षा-बादल उत्पन्न होता है। (9) [124]

79 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

80 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्या [बुद्ध] की व्यवस्था में"

81 पाठ °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

82, अर्थात् तैंतीस देवता।

83 PTS महामुनि , महान ऋषि के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ महामुने पढ़ना।

जलने या बुखार होने से मेरे शरीर पर कभी कोई असर नहीं पड़ता; मेरे शरीर पर धूल नहीं है:

पानी देने का यही फल है। (10) [125]

आज मेरा मन शुद्ध हो गया है और दुष्ट व्यक्ति चला गया है।

मेरे सभी दोष नष्ट हो गए हैं;

अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (11) [126]

पिछले इक्यावन युगों में

मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।

पानी देने का यही फल है। (12) [127]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (13) [128]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) [129]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) [130]

इस प्रकार वास्तव में भिखुनी उदकादायिका ने ये श्लोक कहे।

उदकदायिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

समीक्षा:

सुमेधा, मेखलादादा, मंडपपा, संकमंडला, नलामलि, पिंडदादा, कटच्चु, उप्पलप्पादा, दीपाद-ओडकाडा भी;

यहां के श्लोक 85 की गणना इस प्रकार की जाती है:

एक श्लोक और सौ [भी]

और उसमें सत्रह और जोड़ दिए गए।

सुमेधा अध्याय, पहला

84 यह पीटीएस भिक्षुणी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

85 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान4.1-थेरिस सूची >> 11.एकोपोसथिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
11. Ekūposathikā86

एकुपोसाथिका अध्याय, द्वितीय

शहर में, बंधुमती,

बंधुमा नाम का एक राजा था।87

पूर्णिमा के दिन, वह

89 पूर्णिमा दिवस का पालन किया। 90 (1) [131]

उस समय मैं भी वहीं रहती थी; मैं पानी ढोने वाली दासी थी। सेना को राजा के साथ देखकर,

तब मैंने इस प्रकार विचार किया: (2) [132]

स्वयं राजा ने अपने शासनकाल को भंग करते हुए पूर्णिमा के दिन का पालन करना शुरू कर दिया। निश्चय ही यह कर्म फलदायी साबित हो रहा है।

जनता प्रसन्न है। (3) [133]

अपने बुरे पुनर्जन्म और दरिद्रता पर गहन विचार करने के बाद, अपने मन को प्रसन्न करने के बाद, मैंने

पूर्णिमा दिवस का पालन किया। (4) [134]

बुद्ध के 91वें युग में पूर्णिमा के दिन का अवलोकन करने के बाद,

उस कर्म के फलस्वरूप,

मैं तब तावतिंसा गया। (5) [135]

वहाँ मेरा सुनिर्मित दिव्य महल एक [संपूर्ण] लीग ऊँचाई तक फैला हुआ था, जिसमें सुंदर छज्जे वाली कोठरियाँ थीं, जो बड़े सोफे से सजी थीं। (6) [136]

एक लाख अप्सराएँ सदा मेरी देखभाल करती हैं। अन्य देवताओं से श्रेष्ठ होने के कारण,

मैं हमेशा उनसे बेहतर प्रदर्शन करता हूँ। (7) [137]

86 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

87 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

88 का'स्सपे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कस्पा (बुद्ध) की व्यवस्था में"

89 BJTS के साथ PTS के लिए °ब्रह्मचर्यम का पाठ °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

90 यानी तैंतीस देवता।

91 PTS महामुनि , महान ऋषि के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ महामुने पढ़ना।

मुझे देवताओं के चौसठ राजाओं की प्रधान रानी के स्थान पर स्थापित किया गया था।

मुझे मुख्य रानी के पद पर नियुक्त किया गया था।

तिरसठ पहिए घुमाने वाले राजाओं में से। (8) [138]

सुनहरे रंग की त्वचा होने के कारण,

मैंने कई जन्मों का सफर तय किया है। हर जगह मेरी विशिष्टता है:

पूर्णिमा दिवस के पालन का फल। (9) [139]

हाथी और घोड़े की गाड़ियाँ, और रथों के लिए संपूर्ण साज-सामान; मैं ये सब प्राप्त करता हूँ:

पूर्णिमा के दिन के पालन का फल। (10) [140]

सोने की बनी वस्तुएँ, चाँदी की वस्तुएँ, और क्रिस्टल की बनी वस्तुएँ भी।

और इसी प्रकार माणिक से भी बना हुआ;

मुझे वे सभी [अच्छी चीजें] प्राप्त होती हैं। (11) [141]

रेशमी और ऊनी वस्त्र, खोमा और कपास से बने कपड़े, और [अन्य] बहुत महंगे कपड़े;

मुझे वे सभी [अच्छी चीजें] प्राप्त होती हैं। (12) [142]

मैं भोजन, पेय पदार्थ, ठोस खाद्य पदार्थ, और इसी प्रकार वस्त्र, बिस्तर और कुर्सियाँ प्राप्त करूँगा।

पूर्णिमा दिवस के पालन का फल। (13) [143]

बेहतरीन सुगंध, साथ ही फूलों की मालाएँ, चेहरे के पाउडर और मलहम भी; मैं ये सब [मेकअप] प्राप्त करना चाहूँगी।

पूर्णिमा दिवस के पालन का फल। (14) [144]

छज्जेदार छत वाले महल, मंडप, बहुमंजिला हवेली, गुफाएँ;

मैं उन सभी [आवासों] को प्राप्त कर लूंगा:

पूर्णिमा दिवस के पालन का फल। (15) [145]

जब मैं महज सात साल का था, तब मैं बेघर हो गया था।

जब आठवां महीना [तब] आ गया, तब मैंने [अपना] अरहंत पद प्राप्त किया। (16) [146]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;

सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

मेरे सभी दोष नष्ट हो गए हैं;

अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (17) [147]

पिछले इक्यावन युगों में

मैंने उस समय अच्छा कर्म किया था, इसलिए मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है।

पूर्णिमा दिवस के पालन का फल। (18) [148]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (19) [149]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) [150]

इस प्रकार, भिक्खुनी एकुपोसाथिका ने ये श्लोक कहे।

एकुपोसाथिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 4.1-थेरिस सूची >> 12.सललापुफिका

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
12. सलालापुप्पिका 92
उस समय मैं चंदाभागा नदी के किनारे एक किन्नरी हुआ करती थी।

और फिर मैंने देवताओं के ईश्वर को देखा,

पुरुषों का बैल, इधर-उधर चलता हुआ। (1) [151]

सलाला [फूल] तोड़ना

मैंने इसे सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को दे दिया।

[और फिर] महान नायक ने दिव्य सुगंध से सलाल को सूंघा । (2) [152]

इसे स्वीकार करते हुए संबुद्ध, विपस्सी, विश्व के नेता, महान नायक ने इसे फिर से सूंघा।

[मेरे लिए] जब मैं [उसे] देख रहा था। (3) [153]

तब मैंने अपने हाथों को जोड़कर दो पैरों वाले प्राणियों में श्रेष्ठ की पूजा की। इससे मेरे हृदय को आनंद मिला।

फिर मैं पर्वत पर चढ़ गया। (4) [154]

पिछले इक्यावन युगों में

मैंने उसे तब वह फूल दिया था।

92 "पत्थर," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

मुझे कभी भी कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:

यह बुद्ध- पूजा का फल है । (5) [155]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (6) [156]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [157]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (8) [158]

इस प्रकार, भिक्खुनी सललापुप्पिका ने ये श्लोक कहे थे।

सलालापुप्पिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान 4.1-थेरिस सूची >> 13.मोदकादायिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
13. मोदकदायिका 93

शहर में, बंधुमती,

मैं पानी ढोने वाली दासी थी। अपनी मजदूरी मिलने के बाद,

मैं पानी लाने वाले के साथ गया। (1) [159]

मार्ग में एक भिक्षु को देखकर, जो शांत हृदय से एकाग्र था, प्रसन्न था, और उसके हृदय में आनंद था,

मैंने [भिक्षु] को तीन मिठाई दी [तब]। (2) [160]

उस कर्म के कारण, जो उसने अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ नब्बे युगों से भी अधिक समय तक किया।

मैं शोक के स्थान पर नहीं गया। (3) [161]

उसे भौतिक वस्तुएं देना,

फिर मैंने उन सभी चीजों का अनुभव किया।

उन तीन मिठाइयों को देने के बाद

मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली। (4) [162]

93 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (5) [163]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (6) [164]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (7) [165]

इस प्रकार भिक्खुनी मोदकदायिका94 ने ये श्लोक कहे।

मोदकदायिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
14. एकासनदायिका 95

हंसवती नगर में,

मैं तब माला बनाने का काम करती थी। मेरी माँ और मेरे पिताजी भी।

[हर दिन] काम पर चला गया। (1) [166]

जब सूर्य आकाश में ऊँचा था,96

मैंने उसी समय एक [बौद्ध] भिक्षु को देखा।

जो सड़क पर जा रहा था,

[इसलिए] मैंने उसके लिए एक सीट बिछा दी। (2) [167]

ऊनी गलीचों और सजावटों से उस आसन को तैयार करते हुए,97 प्रसन्नता से, मेरे हृदय में आनंद है,

मैंने [तब] उस भिक्षु से ये शब्द कहे: (3) [168]

जमीन झुलस गई है और बहुत गर्म है;

सूर्य दोपहर के चरम पर है;98

94 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

95 “पत्थर,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

96 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

97 का'स्सपे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कस्पा (बुद्ध) की व्यवस्था में"

98 पठन °ब्रह्मचर्यम, पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

अभी हवा नहीं चल रही है;

अब बैठने का सही समय है।99 (4) [169]

हे महान ऋषि, यह आसन [पहले से ही] आपके लिए तैयार किया गया है; मुझ पर दया करके।

कृपया मेरी इस सीट पर बैठ जाइए।” (5) [170]

वह भिक्षु, जो शांत स्वभाव का और शुद्ध मन वाला था, मेरी विनती पर वहीं बैठ गया। उसने अपना भिक्षापात्र उठाया और...

मैंने उतना ही दिया जितना वह धारण कर सकता था।100 (6) [171]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (7) [172]

वहाँ मेरा सुनिर्मित दिव्य महल, उस आसन को प्रदान करने से सुशोभित, साठ मील की ऊँचाई तक फैला हुआ था।

[और तब] तीस लीग चौड़ा था। (8) [173]

मेरे लिए कई तरह के सोफे थे, सोने के बने और चांदी के बने, इसी तरह [कुछ] क्रिस्टल के बने थे, और माणिक के भी बने थे। (9) [174]

मेरा सोफा तकियों से अच्छी तरह सजा हुआ था, और उस पर कढ़ाईदार ऊनी कालीन बिछे हुए थे।

और रत्नों से जड़ी रेशम की चादरें,

साथ ही [कुछ] झालरदार फर.101 (10) [175]

जब भी मुझे यात्रा करने की इच्छा होती है,

हंसी और मनोरंजन से भरपूर, मैं सबसे अच्छे सोफे के साथ जा रहा हूँ।

मेरी इच्छाओं के अनुसार। (11) [176]

मुझे देवताओं के बीच अस्सी राजाओं की प्रधान रानी के स्थान पर स्थापित किया गया था।

मुझे मुख्य रानी के पद पर नियुक्त किया गया था।

सत्तर चक्र-घुमाने वाले राजाओं में से। (12) [177]

जन्म-जन्मांतर तक पुनर्जन्म लेते हुए, मैंने [हमेशा] अपार धन-संपत्ति प्राप्त की।

99, अर्थात् तैंतीस देवता।

पीटीएस महामुनि , महान ऋषि के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ 100 पठन महामुने।

101 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

धन-संपत्ति की कोई कमी नहीं थी:

एक सीट देने का यही फल है। (13) [178]

मानव और दिव्य, दो अवस्थाओं में पुनर्जन्म लेते हुए।

मुझे किसी दूसरे राज्य के बारे में पता नहीं था:

एक सीट देने का यही फल है। (14) [179]

मैं केवल दो जातियों में पुनर्जन्म लेता हूँ, 102 क्षत्रिय या फिर ब्राह्मण। मैं हर जगह उच्च कुल का हूँ:

एक सीट देने का यही फल है। (15) [180]

मुझे किसी प्रकार की मानसिक उथल-पुथल का अनुभव नहीं है।

और न ही मेरा हृदय तब व्याकुल होता है। मैं कुरूपता को भी नहीं जानता।

एक सीट देने का यही फल है। (16) [181]

मेरी सेवा के लिए दाइयां इंतजार कर रही हैं।

और अनेक कुबड़ी नौकरानियाँ;103

मैं एक चक्कर से दूसरे चक्कर में जा रहा हूँ:

एक सीट देने का यही फल है। (17) [182]

दूसरे लोग मुझे नहलाते और खिलाते हैं, और प्रतिदिन मुझे दुलारते हैं। दूसरे लोग मुझे इत्र लगाते हैं:

एक सीट देने का यही फल है। (18) [183]

जब मैं किसी खाली कमरे में, किसी मंडप में, किसी पेड़ के नीचे बैठकर, अपने विचारों को समझने का प्रयास करता हूँ,

फिर मेरे लिए एक सोफा लाया जाता है। (19) [184]

अब यह मेरा अंतिम जीवनकाल है, मैं अपना आखिरी अस्तित्व जी रहा हूँ।

आज भी, मेरे शासन को तोड़ते हुए,104

मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (20) [185]

एक लाख युगों में

जब से मैंने उसे वह उपहार दिया है, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म नहीं देखने को मिला है:

एक सीट देने का यही फल है। (21) [186]

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;

102 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, बीजेटीएस में दिखाई देते हैं लेकिन पीटीएस में नहीं।

104 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (22) [187]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (23) [188]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) [189]

इस प्रकार पूज्य भिक्षुणी एकासनदायिका ने ये श्लोक कहे।

एकासनदायिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 15.पंचादिपिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
15. पंचदीपिका 106

हंसवती नगर में,

मैं उस समय घुमक्कड़ था। आश्रम से मठ तक,

मैं भलाई की चाह में भटकता रहा। (1) [190]

एक दिन जब चंद्रमा घट रहा था, मैंने सर्वोच्च बोधि वृक्ष के दर्शन किए। उसे देखकर मेरे हृदय को अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ।

मैं उस बोधि की जड़ों में बैठ गया। (2) [191]

श्रद्धा भाव से खड़े होकर, हाथों को सिर पर जोड़े हुए, वहाँ मानसिक सुख का अनुभव करते हुए,

फिर मैंने इस प्रकार विचार किया: (3) [192]

यदि [उसके पास] असीम सद्गुण हैं, वह अद्वितीय है, उसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं है,

बुद्ध मुझे कोई चमत्कार दिखाएँ;

उसे इस बोधि वृक्ष को चमकाने दो। (4) [193]

जब मैंने वह आकांक्षा व्यक्त की,

इसके बाद बोधि वृक्ष में आग भड़क उठी।

105 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

106 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

यह सभी दिशाओं में चमक उठा, हर अच्छे रंग को प्रदर्शित करते हुए। (5) [194]

मैं सात रात और सात दिन उस बोधि वृक्ष की जड़ों में बैठा रहा, और जब सातवां दिन आया,

मैंने दीपों का अर्पण किया। (6) [195]

मैंने उन्हें अपनी सीट के चारों ओर रखकर पाँच दीपक जलाए।

[और] फिर मेरे सभी दीपक जलते रहे, जब तक कि सूरज दोबारा नहीं उग गया। (7) [196]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (8) [197]

वहाँ मेरा सुनिर्मित दिव्य महल "पंचदीपी"108 के नाम से जाना जाता था।

इसकी ऊंचाई पूरी तरह से साठ लीग थी।

[और] उस समय चौड़ाई में तीस लीग थे। (9) [198]

मेरे आसपास अनगिनत दीपक जल रहे हैं।

तब दिव्य जगत प्रकाशित हो जाता है

लैंप की रोशनी से, इसके किनारों तक।109 (10) [199]

यदि पूर्व दिशा की ओर देखते हुए खड़े होने पर, मैं ऊपर, नीचे और सामने कुछ देखना चाहूँ,

मैं सब कुछ अपनी आँखों से देखता हूँ। (11) [200]

जहां तक मैं देखना चाहूँ,

अच्छे से किए गए कार्य और अच्छे से नहीं किए गए कार्य,110

मेरी दृष्टि में कोई बाधा नहीं है।

वहाँ पेड़ों और पहाड़ों में। (12) [201]

मुझे देवताओं के बीच अस्सी राजाओं की प्रधान रानी के स्थान पर स्थापित किया गया था।

मुझे मुख्य रानी के पद पर नियुक्त किया गया था।

सौ पहिए घुमाने वाले राजाओं में से। (13) [202]

107 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

108 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

109 पठन °ब्रह्मचर्यम, पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मवास"

110 यानी तैंतीस देवता।

मैं जिस भी गर्भ में पुनर्जन्म लूं, चाहे वह मानव गर्भ हो या दिव्य गर्भ,

मेरे आस-पास, एक [पूरा] लाख

मेरे लिए वहाँ दीपक जल रहे हैं। (14) [203]

देवताओं के लोक से गिरकर, मेरा जन्म एक माँ के गर्भ में हुआ। जब मैं उस माँ के गर्भ में था...

मेरी आँखें हर समय खुली रहती थीं। (15) [204]

मेरे अच्छे कर्मों के कारण,

प्रसव कक्ष में एक लाख दीपक जलाए गए हैं:111

यह पाँच दीपक देने का फल है। (16) [205]

जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ,

मैंने अपना मन कामवासना से दूर कर लिया। मैंने अमरता प्राप्त कर ली।

अमर शीतल अवस्था, निर्वाण। (17) [206]

जब मैं मात्र सात वर्ष का था, तब मैंने अरहंत पद प्राप्त किया।

बुद्ध ने मुझे उसी समय दीक्षा दी:

यह पाँच दीपक देने का फल है। (18) [207]

एक चबूतरे पर ध्यान करते हुए,112

पेड़ के नीचे, खाली जगहें,113

वहां हमेशा एक दीपक जलता रहता है:

यह पाँच दीपक देने का फल है। (19) [208]

मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है;

मुझे एकाग्रता में निपुणता प्राप्त है। मैं विशेष ज्ञान में उत्कृष्ट हूं:

यह पाँच दीपक देने का फल है। (20) [209]

हर उपलब्धि हासिल हो गई है; मेरा कर्तव्य पूरा हो गया है, मैं बेदाग हूँ।

फाइव लैंप्स अब आपकी पूजा कर रहा है।

पैर, महान नायक, हे आँखों को भाने वाले। (21) [210]

एक लाख युगों में

जब से मैंने उसे वे दीपक दिए हैं, तब से मुझे कोई बुरा पुनर्जन्म देखने को नहीं मिला है:

यह पाँच दीपक देने का फल है। (22) [211]

111 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

112 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

113 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें यहाँ और अन्यत्र Pesalā लिखा है।

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (23) [212]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) [213]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [214]

इस प्रकार भिक्खुनी पंचदीपिका ने ये श्लोक कहे।

पंचदीपिका थेरी की कथा समाप्त हो गई है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान4.1-थेरिस सूची >> 16.सलामलिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
16. सालमालिका 114

उस समय मैं चंदाभागा नदी के किनारे एक किन्नरी हुआ करती थी।

मैंने स्टेनलेस स्टील वाला बुद्ध देखा।

स्वयं-बनने वाला, अजेय। (1) [215]

मेरे हृदय में प्रसन्नता और आनंद है।

विस्मय से,115 हाथ जोड़कर, एक साल 116 [-फूल] की माला लेते हुए,

मैंने स्वयं-एकत्व की पूजा की। (2) [216]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (3) [217]

मैं देवताओं के छत्तीस राजाओं की प्रधान रानी के पद पर विराजमान थी। मेरे मन में जो भी इच्छा हो,

इच्छानुसार अस्तित्व में आता है। (4) [218]

114 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

115 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

116 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कस्पा (बुद्ध) की व्यवस्था में"

मुझे दस चक्र-चालकों वाले राजाओं की प्रधान रानी के पद पर नियुक्त किया गया था। एक नेक दिल महिला होने के नाते,

मैंने जन्मों के माध्यम से पुनर्जन्म लिया। (5) [219]

मेरी पवित्रता स्पष्ट है; मैं बेघर होकर निकला। आज मैं पूजा के योग्य हूँ।

बुद्ध के 117वें युग में। (6) [220]

आज मेरा मन शुद्ध हो गया है, और वह दुष्ट व्यक्ति चला गया है।

मेरे सभी दोष नष्ट हो गए हैं;

अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (7) [221]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (8) [223]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (9) [224]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (10) [225]

पिछले चौरानवे युगों में

मैंने उस समय बुद्ध की पूजा की थी, मुझे बुरे पुनर्जन्म का कोई अनुभव नहीं है:

यह एक साल 118 -माला का फल है । (11) [222]119

मेरे सारे दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;

सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं।

मेरे सभी दोष नष्ट हो गए हैं;

अब पुनर्जन्म नहीं होगा। (12)

इस प्रकार भिक्खुनी सालमालिका120 ने ये श्लोक कहे।

सालामालिका121 थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

117 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

118 यानी तैंतीस देवता।

119 PTS महामुनि , महान ऋषि के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ महामुने पढ़ना।

120 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

121 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें यहाँ और अन्यत्र Pesalā लिखा है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान 4.1-थेरिस सूची >> 17.महापजापति गौतमी
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: बुद्ध की माता का अंतिम दिन; जैसा है वैसा ही प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
17. गौतमी (महापजापति गौतमी-रानी, बुद्ध की मौसी और सौतेली माँ) 122

एक दिन [महान] विश्व का दीपक, मनुष्यों का कारवां नेता,

महावन हॉल में निवास करते थे।

वेसाली की ढलानदार छतों के बीच। (1) [226]

उस समय विजेता की माता की बहन, बौद्ध भिक्षुणी महान गौतमी, भिक्षुणियों के एक आश्रम में रह रही थीं।

उस रमणीय शहर में निर्मित।123 (2) [227]

यह विचार उसके मन में तब आया जब वह मुक्त बौद्ध भिक्षुणियों से अलग होकर अकेले चली गई थी।

पांच गुना सौ की गिनती: (2e-f, 3a-b)124 [228]

मैं बुद्ध के अंतिम निर्वाण को नहीं देख पाऊंगा, जो कि दो प्रमुख अनुयायियों का निर्वाण है।

न ही राहुल, आनंद, नंदा। (3सी-एफ) [229]

जीवन के 126 घटकों को नष्ट करके और उन्हें त्यागकर, मैं निर्वाण प्राप्त करूँगा, जिसकी अनुमति [उसने] दी है।

महान ऋषि, जगत के स्वामी।" (4) [230]

वह तर्क भी हुआ

पांच सौ बौद्ध भिक्षुणियों को;

वह तर्क भी [उत्पन्न हुआ]

खेमा से शुरू होने वाली [ननों] को। (5) [231]

उस समय भूकंप आया; देवताओं की गर्जना हुई। शोक से व्याकुल होकर, उस आश्रम में रहने वाली देवियाँ (ननों के लिए) दयनीय रूप से रोने लगीं।

वहाँ [शरणस्थल में] उन्होंने अपने आँसू बहाए। (6) [232]127

122 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

123 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

124 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

125 पठन °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ: "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

126 यानी तैंतीस देवता।

127 PTS महामुनि , महान ऋषि के लिए BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ महामुने पढ़ना।

[और फिर] वे सभी 128 बौद्ध भिक्षुणियां, गौतमी के पास पहुँचने के बाद,

उन्होंने अपने सिर उसके पैरों पर रख दिए।

उन्होंने ये शब्द कहे [उन्होंने उससे कहा]: (7) [233]

"बहन, अकेले चली गई थी, और हम पर पानी की बूँदें छिड़की गईं।"

अविचल पृथ्वी कांप रही है, देवताओं की गर्जना गूंज रही है, विलाप सुनाई दे रहे हैं:130

तो फिर इसका क्या अर्थ है, गोतमी?" (8) [234]131

फिर उसने उन्हें सब कुछ बता दिया।

ठीक वैसे ही जैसे उसने तर्क दिया था। उन सभी ने भी गौतमी को यही बताया।

ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने तर्क दिया था। (9) [235]

"यदि आप चाहें, बहन—अतुलनीय और पवित्र निर्वाण—तो हम सब भी निर्वाण प्राप्त कर लेंगे।"

बुद्ध की सहमति से, हे धर्मात्मा.132 (10) [236]

हम तुम्हारे साथ ही घर और अस्तित्व से भी निकल चुके हैं; और निश्चित रूप से तुम्हारे साथ ही आगे बढ़ेंगे।

निर्वाण, सर्वोच्च नगर की ओर।" (11) [237]

उसने कहा, "बाहर जाने वाली महिलाओं से क्या कहा जा सकता है?"133 [और] फिर उन सभी के साथ

उसने बौद्ध ननों का घोंसला छोड़ दिया।134 (12) [238]

"इस शरणस्थल में निवास करने वाली देवियाँ मुझे क्षमा करें; यही मेरा अंतिम दर्शन होगा।"

[इस] बौद्ध भिक्षुणियों के निवास का। (13) [239]

मैं बिना शर्तपन की ओर जाऊंगा।

जहां न तो मृत्यु है और न ही क्षय।

128 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

129 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, बीजेटीएस में दिखाई देते हैं लेकिन पीटीएस में नहीं।

131 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

132 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

133 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

134 पीटीएस महामुनि , महान ऋषि के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) के साथ महामुने पढ़ना।

किसी को अप्रिय परिस्थितियों का सामना नहीं करना पड़ता,

और न ही सुखद चीजों से अलग हो जाओ।" (14) [240]

उन शब्दों को सुनकर, भावहीन न होते हुए, सुशोभित बुद्ध के उन वंशजों ने शोक से भर कर विलाप किया:

अफसोस, हमारे पास बहुत कम योग्यता है। (15) [241]

उन महिलाओं के बिना बौद्ध भिक्षुणियों का यह आश्रम अब वीरान हो गया है; विजेता के उत्तराधिकारी अब कहीं नजर नहीं आते।

जैसे ही तारे भोर में गायब हो जाते हैं। (16) [242]

गौतमी निर्वाण प्राप्त करती है

पांच सौ भिक्षुणियों के साथ, जैसे गंगा समुद्र में बहती है,

पाँच सौ सहायक नदियों के साथ।"136 (17) [243]

विश्वासी गृहस्थ स्त्रियों ने,137 उसे138 सड़क पर जाते हुए देखकर, अपने घरों से बाहर आकर,

उसके चरणों में झुककर उसने यह कहा: (18) [244]

“हे महान सौभाग्यशाली,139 संतुष्ट रहो।140

"हमें बेसहारा छोड़कर चले जाने पर निर्वाण तुम्हारे लिए उचित नहीं है।"

उस तरह से व्याकुल होकर वे महिलाएं विलाप करने लगीं। (19) [245]

उनके दुख को दूर करने के लिए,

गौतमी ने मधुर शब्दों में कहा: “बच्चों, रोना बंद करो।”

आज, जो आपके हंसने का समय है; (20) [246]

मैंने पीड़ा को समझ लिया है,141 पीड़ा का कारण दूर हो गया है, मैंने पीड़ा का निवारण अनुभव किया है।

मैंने मार्ग का निर्माण किया है। (21) [247] (प्रथम पाठ भाग)142

135 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, “[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है),” अर्थात्, “मैं 100वीं दासी थी”

136 puṇṇā ti nāmaŋ

137 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

138 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

139 पाठ महामुने (भाषण) बीजेटीएस के साथ पीटीएस तदा मुनि ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

140 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

141 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

142 सहसक्खेना , अर्थात्, शकरा/इंद्र, देवताओं के राजा

मैंने गुरु की पूजा की है, मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था!

भारी सामान नीचे रख दिया गया है।

अस्तित्व से संबंध हटा दिए गए। (22) [248]

जिस कारण से मैं निकला

[मेरे] घर से बेघर होने तक — मैंने [अब] वह उद्देश्य प्राप्त कर लिया है: सभी बंधनों का विनाश। (23) [249]

जब तक बुद्ध और उनकी महान शिक्षाएं हमारे बीच मौजूद हैं, तब तक किसी चीज की कमी नहीं है - यही मेरे निर्वाण का समय है;

मेरे लिए शोक मत करो, बच्चों। (24) [250]

कोंडान्या, 143 आनंद, 144 नंद, 145

राहुल,146 विजेता शेष;

विधानसभा का हंसमुख और घनिष्ठ माहौल,

प्रतिद्वंद्वियों का अहंकार नष्ट हो गया है। (25) [251]

ओक्काका वंश में प्रसिद्ध 147 व्यक्ति उच्च कोटि का है, 148 मृत्यु-नाशक; 149 बच्चों, क्या अब समय नहीं आ गया है?

[मेरे लिए] निर्वाण प्राप्त करना? (26) [252]

मेरी बहुत पुरानी इच्छा आज आखिरकार पूरी हो गई है।

यह आनंद के ढोल बजाने का समय है।

तो फिर इन आँसुओं का क्या मतलब है, बच्चों? (27) [253]

अगर आपको मुझ पर दया आती है, और अगर आप सभी इसकी सराहना करते हैं

143 डांटो , या "वश में किया हुआ"

144 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

145 vimutt'o

146 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

147 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

148 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

149 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "

महान शिक्षा की स्थिरता,

तो आपको मजबूत और उत्साही होना चाहिए। (28) [254]

मेरे अनुरोध पर, संबुद्ध ने महिलाओं को दीक्षा दी।

इसलिए जैसा कि मैंने स्वयं को दिखाया है,

आप सभी को उसका अनुसरण करना चाहिए।" (29) [255]

इस प्रकार सलाह देने के बाद, बौद्ध भिक्षुणियों द्वारा आगे रखी गई उन महिलाओं ने ऊपर जाकर पूजा की।

बुद्ध से उसने यह कहा: (30) [256]

"शाबाश, मैं तुम्हारी माँ हूँ, और तुम मेरे पिता हो, हीरो;

हे प्रभु,150 जो अच्छी शिक्षा का आनंद प्रदान करता है,151

हे गौतम, मैं आपसे ही जन्मा हूँ। (31) [257]

हे सुपुर्दगी करने वाले, तुम्हारा शरीर, जो मांस और हड्डियों से बना है,153 मेरे द्वारा निर्मित किया गया था; मेरा निष्कलंक शरीर, जो सत्य से बना है,154

इसका पालन-पोषण आपने किया था, [गौतम।] (32) [258]

मैंने तुम्हें माँ के दूध से पाला, जो क्षण भर के लिए प्यास बुझाता है। तुमसे मैंने सत्य का दूध पिया, जो बिना किसी रुकावट के शांतिपूर्ण था। (33) [259]

हे महान ऋषि, आपकी रक्षा और पालन-पोषण के लिए आप मेरे ऋणी नहीं हैं। ऐसा पुत्र प्राप्त करना ही मेरा उद्देश्य है।

पुत्र चाहने वाली महिलाएं [इच्छा].156 (34) [260]

राजाओं की माताएँ, मंधाता की तरह, अस्तित्व के सागर में विलीन हो जाती हैं।

हे पुत्र, तेरे द्वारा ही मैंने पार किया है

150 #23, ऊपर

खंड 151 में कहा गया है, " बीस करोड़ लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है धम्म की अंतर्दृष्टि, धम्म में प्रवेश , धम्म की समझ या धम्म में प्रवेश, शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

152 y'akkho

153 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, "जिनके पास नहीं है"

154 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

155 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

156 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे bhikkhunī Sukkā पढ़ता है।

[जीवन,] यह बनने का सागर। (35) [261]

महिलाएं आसानी से प्राप्त कर सकती हैं

“राजा की माता” या “प्रधान रानी” नाम।

नाम, "बुद्ध की माता"

प्राप्त करना सबसे कठिन [नाम] है। (36) [262]

हे वीर, मुझे वह नाम मिल गया! आपकी कृपा से मेरी मनोकामना पूरी हुई। चाहे छोटी बात हो या बड़ी बात,

वह सब मेरे द्वारा पूरा किया गया है। (37) [263]

इस शरीर को त्यागकर,

मैं पूर्ण निर्वाण प्राप्त करना चाहता हूँ। हे वीर, मुझे इसकी अनुमति दीजिए।

ओ रोग-समाधानकर्ता,157 ओ नेता। (38) [264]

अपने पैरों को लिली के फूलों की तरह फैलाओ।

जिन पर पहिया, अंकुश और ध्वज अंकित हैं। मैं आपको प्रणाम करूंगा।

अपने बेटे के लिए [माँ के] प्यार के साथ।158 (39) [265]

मुझे अपना शरीर दिखाओ;

यह सोने के ढेर जैसा दिखता है।

अपने शरीर पर एक आखिरी अच्छी नज़र डाल लो।

[तब] मैं शांति की ओर चलता हूँ, नेता।” (40) [266]

बत्तीस महान चिह्नों से चिह्नित, यह प्रकाश से सुशोभित था:

विक्टर ने उसे अपना शरीर दिखाया।

एक हल्का सूरज160 से 161 एक शाम का बादल.162 (41) [267]

फिर उसने अपना सिर नीचे रख दिया

उसके पैरों के तलवे पहियों से चिह्नित थे, जो खिले हुए कमलों के समान थे।

[जैसे] उगते सूरज की तरह चमकीला। (42) [268]

मैं पुरुषों के लिए सूर्य को प्रणाम कर रहा हूँ,163

सौर कबीले का ध्वज;164

157 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

158 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए बीजेटीएस के साथ आप केसी हत्थपरिकम्मम पढ़ रहे हैं

159 शाब्दिक रूप से, "भविष्य में" (एकवचन)

160 सम्मुखा , अर्थात् "एक साथ"

161 तुयहम , संभवतः बोधिसत्व को संबोधित करते हुए।

162 पठन anubhontī ciraṃ kālaṃ with BJTS for PTS tuyhaŋ vo paricāre ca ("और आप सभी आपकी सेवा करेंगे")

163 जाताम्हे (BJTS के साथ) पीटीएस अजाता ("हम अजन्मे हैं;" इसका गलत अर्थ है अजातो "वह अजन्मा है")

164 °putta° शाब्दिक अर्थ, "पुत्र"

जब मैं अंतिम बार मर जाऊँगा,

मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊंगा। (43) [269]

विश्व के मुखिया के तौर पर यह माना जाता है कि हर गलती महिलाएं ही करती हैं।166

अगर मुझसे कोई गलती हुई हो,

इसे क्षमा करो, करुणा की मेरी।167 (44) [270]

मैंने बार-बार आपसे महिलाओं को पुरोहित बनाने की विनती की थी।

अगर मुझसे इसमें कोई गलती हुई हो,

इसे क्षमा कर दो, हे पुरुषों में श्रेष्ठ बैल। (45) [271]

हे वीर, आपकी अनुमति से,

मैंने बौद्ध भिक्षुणियों को निर्देश दिए। अगर मैंने उस दौरान कोई गलत सलाह दी हो,

क्षमा करो, क्षमा के स्वामी।"168 (46) [272]

जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता, उसे क्षमा करना भी असंभव है।

[जो] सद्‌गुणों से सुशोभित है?169

मैं आपसे और क्या कहूँ?

आप निर्वाण कब प्राप्त करेंगे? (47) [273]

मेरे पवित्र और पूर्ण भिक्षु सभा में संसार से मुक्ति पाने की इच्छा रखने वाले लोग भोर में ढलते हुए अर्धचंद्र के समान हैं।

इसके चंगुल के विनाश को देखने के बाद।"170 (48) [274]171

जैसे मेरु पर्वत के चारों ओर तारे और चंद्रमा परिक्रमा करते हैं, वैसे ही अन्य ननों ने भी उनकी परिक्रमा की।

मुख्य विजेता ने उनके चरणों में झुककर प्रणाम किया,

वे वहाँ खड़े होकर [भगवान] के चेहरे को निहार रहे थे। (49) [275]

पहले [मेरी] आँखें और कान आपको देखकर और आपकी वाणी सुनकर संतुष्ट नहीं होते थे। [परन्तु अब,] पूर्णता प्राप्त कर लेने के बाद, मेरा मन

शिक्षा के स्वाद से संतुष्ट है। (50) [276]

जब तुम भीड़ के बीच दहाड़ते हो,

165 लिट., “हम हर समय नहीं हैं...”

166 रीडिंग cikkhallabhūmimasuciṃ with BJTS for PTS cikkhallabhūmiŋ gamanaŋ (“कीचड़ भरे रास्तों पर जाना”)

167 reading pubbakammabalena no with BJTS for PTS pubbakammaphalan tato (“after the fruit of previous karma”)

168 संसारपथ-नित्तिना

169 पाठ vītarāgā bhavāmase with BJTS (and PTS alt.) for PTS n'atthi dāni punabbhavo (“अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा”)

170 t'ato tato

171 बीजेटीएस और पीटीएस में वैकल्पिक रूप से सहा के स्थान पर समा ("बराबर") पढ़ा जाता है ।

सोफिस्टों के अहंकार को नष्ट करते हुए,

जो लोग आपका चेहरा देख रहे हैं, वे भाग्यशाली हैं, हे पुरुषों के बैल।172 (51) [277]

बैटल-एंडर, 173 भाग्यशाली भी,

क्या वे आपके सुंदर पैरों की पूजा करते हैं, जिनकी चौड़ी एड़ियाँ, फैली हुई उंगलियाँ और तांबे के रंग के नाखून हैं। (52) [278]

हे सर्वश्रेष्ठ पुरुष, तुम भी भाग्यशाली हो।

वे लोग जो आपकी बातों को ध्यान से सुनते हैं, अपूर्णताओं को मिटाने वाले, मित्रवत होते हैं।

शहद की तरह मीठा और आनंद से भरपूर। (53) [279]

मैं भाग्यशाली हूँ, महान नायक!

आपके चरणों की पूजा करने के इरादे से174।

अस्तित्वगत रेगिस्तान पार कर लिया,

[मैं] अच्छी शिक्षा के कारण चमकता हूँ।”175 (54) [280]

तब उस धर्मपरायण महिला176 ने भिक्षुओं की सभा को [अपने विचार]177 समझाए, और राहुल की पूजा करने के बाद,

आनंद [और] नंदा, उसने कहा:178 (55) [281]

"मैं अपने शरीर से थक गया हूँ, जो एक साँप के बिल के समान है।"

एक रोगगृह, बीमारियों का ढेर,180

वृद्धावस्था और मृत्यु में चरना,

विभिन्न दोषों और लार से ढका हुआ,181

दूसरों पर निर्भर, निष्क्रिय।182

इसलिए मैं निर्वाण की कामना करता हूँ;

मुझे अपनी अनुमति दो, बच्चों।" (56-57) [282-283]

172 bodhanatthāya tavaŋ (PTS वैकल्पिक शब्द tava); इस वाक्यांश का अनुवाद "आपके ज्ञान के लिए" भी किया जा सकता है।

[मुझे]"

173 या, जैसा कि ऊपर बताया गया है, "मुझे जानने के लिए"

174 PTS mahā-isi (nom.) के लिए BJTS के साथ mahā - isiṃ (acc.) पढ़ना

175 लिट., "महान नायक ने भविष्यवाणी की"

176 बीजेटीएस इस श्लोक को एक तारांकित फुटनोट में रखता है, यह मानते हुए कि यह इसके कई वैकल्पिक संस्करणों में आता है।

177 बीजेटीएस, पीटीएस से सहमत होते हुए इसे महा-इसे (वोक.) के रूप में प्रस्तुत करता है , लेकिन वैकल्पिक पाठ महा-इसी का संदर्भ देता है।

(नामवाचक), संभवतः बुद्ध द्वारा सुमेधा को "महान ऋषि" कहकर संबोधित करने से परेशान थे।

178 रीडिंग manāpā with BJTS for PTS manasā

179 पढ़ना यथा... पीटीएस यथा के लिए बीजेटीएस के साथ अनुरक्खंति 'सामिनो ... अनुरक्खति सामि नं ("जैसा कि हमारे गुरु रक्षा करते हैं")

180 लिट., "मेरे मन में कोई हलचल नहीं है"

181 यह और इसके बाद के 19 श्लोक (कुल 20 श्लोक) बीजेटीएस में शामिल नहीं हैं। श्लोक (62) और (63) बीजेटीएस [1092]-[1093] में दिखाई देते हैं।

182 लिट., "और एक महिला"

नंदा और भाग्यशाली राहुल,

जो शोकमुक्त, बिना किसी बंधन के, बुद्धिमान [और] अडिग रूप से दृढ़ थे, उन्होंने चीजों के तरीके पर विचार किया: (58) [284]

"स्थायी वस्तुओं के प्रति लालच पर धिक्कार है:

केले की लकड़ी के समान बेकार, एक भ्रामक मृगतृष्णा के समान।

क्षणभंगुर और लगातार बदलता रहता है। (59) [285]

सभी परिस्थितिजन्य वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं, जहाँ तक विक्टर की चाची का संबंध है।

जिसने बुद्ध का दूध पिया,

गोतामी, बिना किसी निशान के चली जाती है।"183 (60) [286]

आनंद तब [अभी भी] प्रशिक्षण ले रहा था, विजेता से प्रेम करता था, [पर अभी भी] दुखी था। [उससे विनती करते हुए] वहाँ, आँसू बहाते हुए, वह दयनीय रूप से विलाप कर रहा था: (61) [287]

"गौतमी मुस्कुराते हुए जा रही हैं;184 निश्चय ही जल्द ही बुद्ध भी निर्वाण की ओर अग्रसर होंगे।"

जैसे आग जिसका ईंधन खत्म हो गया हो।" (62) [288]

गौतमी ने आनंद से कहा

जो इस प्रकार विलाप कर रहा था: "हे पुत्र, बुद्ध की सेवा करने के इच्छुक,

आपकी बुद्धि समुद्र जितनी गहरी है,185 (63) [289]

इसलिए तुम्हें शोक नहीं करना चाहिए, जब मुस्कुराने का समय आ गया है! पुत्र, तुमने मेरी सहायता की है।

मैंने निर्वाण का अनुभव किया है।186 (64) [290]

हे प्रिय, तुम्हारे अनुरोध पर ही बुद्ध ने हमें दीक्षा दी। अतः पुत्र, व्याकुल मत हो;

आपका प्रयास अब फलदायी हो रहा है। (65) [291]

वह अवस्था जो प्राचीन काल में नहीं देखी गई थी,187

और इसी प्रकार प्रतिद्वंद्वी शिक्षकों द्वारा भी।

183 लिट., "और एक महिला"

184 etesaŋ devedevānaŋ

185 अधिकारं सदा मयहं , शाब्दिक अर्थ, "मेरी सेवा निरंतर है" "मेरी सेवा दैनिक है"

186 या करें: कारती से

187 सधम्म° , प्रकाशित "अच्छी शिक्षा"

यह बात [बौद्ध] युवतियों को ज्ञात है।

जब वे [केवल] सात वर्ष के होते हैं। (66) [292]

इसलिए [मुझे] अंतिम बार देख लो,

बुद्ध के वचन का संरक्षक;188

बेटा, मैं उस जगह जा रहा हूँ

जहां जो चला गया है उसे देखा नहीं जा सकता। (67) [293]

एक बार जब वे धम्म का उपदेश दे रहे थे , तब विश्व के प्रधान नेता को छींक आ गई। उस समय, करुणावश,

मैंने उससे शुभकामनाओं के शब्द कहे: (68) [294]

“हे महान वीर, दीर्घायु हो! हे महान ऋषि, युगों तक जीवित रहो! समस्त विश्व के कल्याण के लिए,”

बूढ़े मत हो [और] मर मत जाओ! (69) [295]

तब बुद्ध ने मुझसे, जिसने उनसे इस प्रकार बात की थी, यह कहा: “बुद्धों की पूजा नहीं की जानी चाहिए।”

जैसे तुम उपासना कर रहे हो, गौतमी।” (70) [296]

तो फिर, हे सर्वज्ञतावान,

क्या तथागतों की पूजा की जानी चाहिए? बुद्धों की पूजा कैसे नहीं की जानी चाहिए? पूछे जाने पर, मुझे यह सब बताएँ। (71) [297]

“मेरे अनुयायियों को देखो, एकजुट, अत्यंत ऊर्जावान,

अपने प्रयास में निरंतर दृढ़ रहना —

यह बुद्धों की पूजा है।”189 (72) [298]

फिर, शरणस्थल पर वापस जाकर, अकेले ही मैं सोचने लगा:

“प्रभु, जो तीनों लोकों के छोर तक पहुँचे,190

एक संयुक्त दल की तरह। (73) [299]

तो फिर, मैं पूर्ण निर्वाण प्राप्त करूँगा; मुझे इसमें कोई बाधा नहीं दिखनी चाहिए!” मैं इस प्रकार चिंतन करते हुए,

सातवें ऋषि को देखने के बाद, (74) [300]

मैंने अपने पूर्ण निर्वाण के समय की घोषणा बुद्ध, यानी मार्गदर्शक को की।

188 धम्मेसु सीनानां सदा सद्धम्म-कारिनो

189 aṭṭhamāse , BJTS में addhamāse ("आधा महीना") लिखा है

190 पीटीएस बुहुन एके के लिए बीजेटीएस के साथ बहु 'नेके पढ़ना

और फिर उन्होंने मुझे अपनी सहमति दे दी:

"तुम्हें समय का ज्ञान है, हे गौतमी।" (75) [301]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (76) [302]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (77) [303]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (78) [304]

"कुछ मूर्ख लोग इस बात पर संदेह करते हैं कि महिलाएं

धम्म -प्रवेश प्राप्त करना.191

उनकी उस [गलत] धारणा को दूर करने के लिए, चमत्कार दिखाओ, गौतमी।" (79) [305]

फिर संबुद्ध को प्रणाम करके, आकाश में ऊपर उठकर,

बुद्ध की सहमति से, गौतमी ने अनेक चमत्कार प्रदर्शित किए। (80) [306]

अकेले होने पर, [तब] उसका क्लोन बनाया गया; और क्लोन होने पर, फिर से192 अकेली। प्रकट होना [फिर] गायब हो जाना,

वह दीवारों से होकर गुजरी, आसमान से होकर गुजरी। (81) [307]

वह पृथ्वी से अनासक्त होकर यात्रा करती थी;

वह भी उसमें डूब गई।

वह पानी पर वैसे ही चलती थी जैसे जमीन पर, उसकी सतह को बिना तोड़े। (82) [308]

पालथी मारकर बैठी वह पक्षी की तरह आकाश में उड़ती चली गई।

191 यह और इसके बाद के समापन छंद पीटीएस में यहां नहीं दिखाई देते हैं, और ये असामान्य हैं (हालांकि अद्वितीय नहीं)।

अपदाना के लिए जिसमें व्यक्तिगत कविताएँ आमतौर पर उस चीज़ के साथ समाप्त होती हैं जिसे मैंने "समापन छंद" कहा है (श्लोक)।

85-87) [1023-1025]। दिलचस्प बात यह है कि वे (साथ ही एक और, जो कहीं और भी दोहराया गया है) उसी असामान्य दोहराव के बाद की स्थिति में, नीचे, अपदान #30, यशोधरा के साथ अठारह हजार ननों के श्लोक 57-59 (साथ ही 60) के रूप में दिखाई देते हैं, और उस अपदान के बीजेटीएस संस्करण में भी इसी स्थिति में हैं (श्लोक [1100-1102] साथ ही [1103])।

192 पीटीएस में थेरी शब्द नहीं है, जिसे मैंने बीजेटीएस से लिया है।

193 में s'ūnā vaṇitakibbisā को BJTS (और PTS वैकल्पिक) के साथ PTS sūnā 'va nītakibbisā ("पाप की ओर ले जाने वाले कसाईखाने की तरह" ?) के लिए पढ़ा गया है।

उसने अपने शरीर से नियंत्रण हासिल किया।

ब्रह्मा के घर तक अंतरिक्ष का। (83) [309]

माउंट मेरु को आधार मानते हुए,

उसने विशाल धरती को अपना छाता बना लिया। जड़ समेत उसे थामे हुए, घुमाते हुए।

वह आकाश में इधर-उधर चलती रही। (84) [310]

और ठीक उसी तरह जैसे छह सूर्य एक साथ उगे थे, उसने पूरी दुनिया को क्रोधित कर दिया। मानो यह समय का अंत हो।

उसने पृथ्वी को ज्वालाओं से सजाया। (85) [311]

उसने मेरु, मंदरा, दद्दारा, महान मुक्कालिंडा - पर्वतों पर अधिकार कर लिया।

उन सभी को एक ही मुट्ठी में,

जैसे वे [छोटे] सरसों के बीज थे। (86) [312]

उसने अपनी उंगली की नोक से दिन और रात दोनों के निर्माताओं को छुपा लिया।

मानो हजारों सूर्य और चंद्रमा हों

वह एक हार था जिसे उसने पहन रखा था। (87) [313]

उसने एक ही हाथ में चारों महान महासागरों का जल धारण कर रखा था; उसने मूसलाधार वर्षा की।

जैसे कोई प्रलयकारी बादल। (88) [314]

उसने आकाश में एक चरखेबाज को उसके दल के साथ प्रकट किया।

उसने [विष्णु को] सूअर और दहाड़ते हुए शेर और गरुड़ के रूप में दिखाया। (89) [315]

अकेले होने पर, उसने कल्पना की

बौद्ध भिक्षुणियों का एक विशाल समूह। उन्हें फिर से गायब कर देना,

अकेले में उसने ऋषि से यह कहा: (90) [316]

"तुम्हारी माँ की बहन, महान नायिका,"

वह व्यक्ति वही है जिसने वही किया है जो आपने उसे सिखाया है।194

अपने 195 लक्ष्यों को प्राप्त करने वाली,

वह आपके चरणों की पूजा करती है, हे आँखों वाले।" (91) [317]

आकाश से उतरते हुए, अनेक चमत्कार दिखाते हुए,

194 jegucchaŋ ; BJTS में इसे bībhacchaṃ पढ़ा गया है , जिसका अर्थ लगभग समान है (घृणित, भयानक, डरावना)

195 या, बीजेटीएस के साथ विपस्सन्ती को पढ़ना , "जांच करना" "अंतर्दृष्टि लागू करना"

196 lit., "in the" "in that"

विश्व के दीपक की पूजा करना,

वह एक तरफ बैठ गई। (92) [318]

"हे महान ऋषि, मैं एक [बुजुर्ग महिला] हूँ,197

जन्म से एक सौ बीस वर्ष बाद।

हे वीर, इतना ही काफी है;

मैं निर्वाण प्राप्त कर रहा हूँ, नेता।" (93) [319]

सभी भीड़ आश्चर्यचकित रह गई।

फिर [उनके] हाथों को एक साथ दबाकर कहा, "बहन, [तुम्हारे पास] अलौकिक चमत्कारों में 198 [महान] क्षमता है।" (94) [320]

विजेता, पदुमुत्तरा,

सब कुछ देखने वाला, दुनिया का नेता, उदय हुआ।

एक लाख युगों बाद। (95) [321]

मेरा जन्म हंसवती में हुआ था।

मंत्रियों के एक कुल में,

सभी प्रकार के नौकरों से सुसज्जित, धनी, समृद्ध, बहुत धनी। (96) [322]

एक बार, जब मैं पिता के साथ घूम रहा था —

दासों के एक समूह द्वारा उपस्थित —

अपने विशाल दल के साथ,

[मैंने] उस पुरुषों के बीच के उस सांड से संपर्क किया। (97) [323]

विजेता, शरद ऋतु के पुत्र की तरह, किरणों की मालाओं से घिरा हुआ है।

बिना किसी बंधन के, वह धम्म -बादल

देवताओं के राजा की तरह बरसा। (98) [324]

उसे देखकर, मन प्रसन्न होकर और उसकी मधुर आवाज सुनकर,

पुरुषों के नेता ने अपनी चाची को नियुक्त किया

ननों में सबसे आगे। (99) [325]

पूरे दिन यह सब सुनते हुए,

मैंने तटस्थ व्यक्ति को बड़े-बड़े गिफ और बहुत सारी आवश्यक वस्तुएँ दीं।

सभा के साथ पुरुषों का मुखिया। (100) [326]

उनके चरणों में गिरकर, मैंने उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा की।

197 चित्तस्मिं वसिभूतस्मिं , शाब्दिक अर्थ, "जब मैं अपने मन का स्वामी (या "अपने मन पर नियंत्रण") बन गया"

198 सुभाविता , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे द्वारा] सुविकसित" या "सुसंस्कृत" "सुचारू ध्यानमग्न"

और फिर वह अत्यंत सचेत व्यक्ति,

सातवें ऋषि ने [भीड़ से] कहा: (101) [327]

वह महिला जिसने एक सप्ताह तक विश्व के नेता को सभा का भोजन कराया, मैं उसके बारे में विस्तार से बताऊंगा:

आप सब मेरी बात सुनो: (102) [328]

एक लाख युगों में, ओक्काका के वंश में उत्पन्न होकर,

जिसका नाम गौतम है

वह दुनिया में शिक्षक होगा। (103) [329]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,

धम्म की वैध संतान, जिसका नाम गौतमी है।

शिक्षक का अनुयायी होगा। (104) [330]

वह उसकी मां की बहन होगी।

बुद्ध की धाय माँ ने जीवन भर उनकी सेवा की। उन्हें सर्वोच्च स्थान प्राप्त होगा।

वरिष्ठ बौद्ध भिक्षुणियों के बीच।" (105) [331]

यह सुनकर मैं अत्यंत प्रसन्न हुआ, और फिर जीवन भर मैंने विजेता की सभी आवश्यक सेवाओं के साथ सेवा की।

उसके बाद, [मृत्यु हो जाने के बाद], (106) [332]

तावतिंसा के बीच जन्म हुआ

सभी सुख-सुविधाओं और धन से परिपूर्ण देवताओं को भी मैं दस गुना अधिक श्रेष्ठ मानता था।

[वहाँ रहने वाले] अन्य सभी [देवता]: (107) [333]

आकृतियों, ध्वनियों और सुगंधों के माध्यम से, स्वादों और उन चीजों के माध्यम से जिन्हें मैं स्पर्श करता हूँ,

जीवनकाल, रंग-रूप, खुशी और प्रसिद्धि के संदर्भ में भी (108) [334]

और इसी प्रकार सर्वोच्च शक्ति के माध्यम से

मैंने उन दस चीजों को प्राप्त करके चमक बिखेरी।

वहाँ मैं प्रिय बन गया

देवताओं के राजा की प्रमुख रानी। (109) [335]

कर्म के चक्र में घूमते हुए, कर्म की हवा से बहते हुए, मेरा जन्म एक दास-गाँव में हुआ था।

199 sattisūlūpamā kāmā , शाब्दिक अर्थ, "तलवारें और कटार इंद्रिय सुखों के समान हैं (या उनके लिए उपमाएँ हैं)"

कासी200 राजा के राज्य में। (110) [336]

प्रतिदिन उस स्थान पर पांच सौ गुलाम रहते थे।

मैं उसकी पत्नी थी जो था

वहाँ रहने वाले सभी दासों में से सर्वश्रेष्ठ। (111) [337]

पांच सौ स्वयंभू बुद्ध भिक्षा मांगने हमारे गांव में आए। मेरे सभी स्त्री संबंधी भी साथ आए।

उन्हें देखकर मैं रोमांचित हो गया। (112) [338]

हम सभी ने मिलकर एक संघ बनाया है,201

हमने उन [बुद्धों] की चार महीने तक सेवा की। प्रत्येक को तीन वस्त्र देकर,

हम पतियों के साथ स्थानांतरित हुए202। (113) [339]

हम सब अपने पतियों के साथ वहां से गिर गए और तावतिंसा चले गए।

और अब, [मेरे] अंतिम पुनर्जन्म में, देवदहा नगर में जन्म लेकर, (114) [340]

मेरे पिता, अंजना203 शाक्य,204

मेरी माँ सुलाखाना थीं।205

हम कपिलवस्तु [नगर] में सुद्धोदना के घर के लिए निकले। (115) [341]

शाक्यन वंश की अन्य स्त्रियाँ206 भी शाक्यन परिवार में आईं। उन सब में विशिष्ट थीं,

मैं विक्टर की धाय थी। (116) [342]

मेरे बेटे के चले जाने के बाद

बुद्ध बन गया, [विश्व का] मार्गदर्शक। उसके बाद मैंने पाँच सौ लोगों के साथ संसार का त्याग कर दिया।207 (117) [343]

शाक्यन नायकों के साथ-साथ,

मैंने शांति के सुख का अनुभव किया।

200 khandhā pi adhikuṭṭanā , शाब्दिक अर्थ, "यहाँ तक कि समुच्चय (या आयाम [व्यक्तिगत अस्तित्व के: नाम और रूप, संवेदना, बोध, विन्यास और चेतना])

201 शाब्दिक रूप से, "अब मुझे नापसंद है"

202 शाब्दिक रूप से, "में" "उसमें"

203 शाब्दिक रूप से, "के बीच"

204 या सभाएँ (यहाँ तक कि सभा के चार भाग भी), जनसमूह, अनुचर

205 seṭṭhaŋ , व्युत्पत्ति के अनुसार उनके पदनाम "करोड़पति" से संबंधित है; BJTS, जो पूरे काम के लिए अधिक विशिष्ट है, aggaṃ पढ़ता है , "[वह] सबसे आगे है"

206 °matīnaŋ , शाब्दिक अर्थ, "उन (स्त्रियों) में से जो वरदान प्राप्त हैं"

207 शाब्दिक रूप से, "बाहर निकल जाने के बाद"

वे [पुरुष] थे जो पहले

हमारे [स्वयं] पतियों के रूप में जन्म हुआ था। (118) [344]

गुण सृजित करने वाले एक साथ,208

उन्होंने [अब] महत्वपूर्ण क्षण को पकड़ लिया है। वेल-गॉन-वन द्वारा दया किए जाने पर, उन्होंने अरहंतत्व का अनुभव किया। (119) [345]

वहाँ मौजूद शेष बौद्ध भिक्षुणियाँ तब सब हवा में ऊपर उठ गईं।

चमकीले तारों की तरह एक साथ आओ

वे महिलाएं, जिनमें अपार शक्तियां थीं, चमक उठीं। (120) [346]

उन्होंने अपनी विविध शक्तियों का प्रदर्शन उसी प्रकार किया जैसे कोई सुनार 209 प्रकार के आभूषण प्रदर्शित करता है।

जो कारीगरी में अच्छी तरह से प्रशिक्षित है। (121) [347]

कई तरह के चमत्कारों को प्रदर्शित करने के बाद,

कुशल वाद-विवादकर्ता को प्रसन्न करने के बाद,211

फिर ऋषि और उनके अनुयायी आकाश से अवतरित होकर, मनुष्यों के मुखिया द्वारा अनुमति प्राप्त सातवें ऋषि की पूजा करने के बाद,

वे उस जगह पर फिर से बैठ गए। (122-123) [348-349]

"अरे, हीरो, यह गौतमी ही थी जिसने हम सब पर दया दिखाई।"

आपके अच्छे कर्मों से सुगंधित,212 [हम]

हमारी बाधाओं के विनाश तक पहुँच गया।213 (124) [350]

हमारे पाप अब जलकर राख हो गए हैं;

सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

हम बिना किसी बंधन के जी रहे हैं। (125) [351]

बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना हमारे लिए बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

हमने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (126) [352]

208 सहा । मैं इस सामाजिक कर्मिक रूप से अधिक निर्धारित अनुवाद को देने में बी.जे.टी.एस. सिंहला ग्लॉस (एक वा) का अनुसरण करता हूँ।

209 का उच्चारण करते समय दो शब्दांशों के रूप में उच्चारण करें, “diff 'rent”

210 लिट., “का”

211 v'ādipa'v'ar'aŋ

212 या “योग्यता,” पुन्नेही । “अच्छे कर्म” बहुवचन को बनाए रखेंगे।

213 ā'sa'v'akkha'y'aŋ

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

हमने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (127) [353]

हम चमत्कारों के उस्ताद हैं।

हे महान ऋषि, हम “दिव्य श्रवण” क्षमता के स्वामी हैं।

[और] दूसरों के दिलों में क्या है, यह जानना। (128) [354]

हम अपने सभी पूर्व जन्मों को जानते हैं; अब "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी प्रतिबंध नष्ट हो गए हैं;

अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा। (129) [355]

हे महान ऋषि, आपकी उपस्थिति में ही हमारा ज्ञान, अर्थ और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश का ज्ञान प्राप्त हुआ। (130) [356]

हे गुरुदेव, आप प्रेम से परिपूर्ण हृदय वाली बौद्ध भिक्षुणियों से घिरे हुए हैं; हे महान ऋषि, अपनी अनुमति दीजिए।

हम सभी निर्वाण प्राप्त कर सकें। (131) [357]

विजेता ने कहा, "मैं उन महिलाओं से क्या कहूँ जो मुझसे कह रही हैं..."

क्या हम निर्वाण प्राप्त करने जा रहे हैं?

जान लो कि अब यही तुम्हारा समय है।" (132) [358]

उस समय गौतमी से शुरू होकर, सभी बौद्ध भिक्षुणियां, जो विजेता की पूजा करती थीं, उठ खड़ी हुईं।

अपनी सीटों से उठकर चले गए।214 (133) [359]

विश्व के प्रमुख नेता, बुद्धिमान व्यक्ति, 215

लोगों के एक बड़े समूह के साथ, उसने अपनी मौसी का अनुसरण किया।

जब तक वह द्वार तक नहीं पहुँच गई। (134) [360]

फिर गौतमी जमीन पर गिर पड़ी।

विश्व के रिश्तेदार के चरणों में, और अन्य सभी [ननों] के साथ

अंतिम चरण-पूजा की। (135) [361]

यह मेरा अंतिम दृष्टिकोण होगा

214 बीजेटीएस के साथ agamaŋsu पढ़ना (पीटीएस वैकल्पिक agamiṃsu की तुलना में) पीटीएस agamīsu ("गैर-गांवों के बीच"?) के लिए

215 बीजेटीएस में पीटीएस के लिए वीरो , "नायक" लिखा है, जबकि पीटीएस में धीरो , "बुद्धिमान व्यक्ति" लिखा है।

हे समस्त जगत के स्वामी, मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊंगा।

चेहरा, अमृत का स्रोत। (136) [362]

अब तुम्हारे उन पैरों को और प्रणाम नहीं; मैं उन्हें फिर कभी नहीं छूऊंगा।

हे वीर, [संपूर्ण] विश्व के प्रमुख, आज मैं निर्वाण प्राप्त करूँगा! (137) [363]

जैसी परिस्थितियाँ हैं, उनमें आपका शारीरिक स्वरूप या चेहरा कैसा है? सभी परिस्थितिजन्य वस्तुएँ ऐसी ही होती हैं।

कोई आराम प्रदान नहीं करना, तुच्छ। (138) [364]

उनके साथ वापस अपने ननों के आश्रम में जाकर वह अर्धपद्मासन में बैठ गई।

अपनी श्रेष्ठ सीट पर। (139) [365]

उस समय वहां मौजूद गृहस्थ महिलाएं, जो बुद्ध के उपदेशों की भक्त थीं, उन्हें आगे बढ़ते हुए सुनकर,

वे पैर पूजने वाले उसके पास पहुँचे, (140) [366]

वे अपनी मुट्ठियों से अपनी छाती पीट रहे थे और जोर-जोर से दयनीय चीखें मार रहे थे।

दु:ख से व्याकुल होकर वे धरती पर गिर पड़े।

जैसे लताएँ जड़ से काट दी जाती हैं। (141) [367]

"हे शरणदाता, प्रभु, हमें निर्वाण की ओर जाने के लिए मत छोड़ो।"

हम सब अपना सिर झुकाकर

[हे गौतमी] आपसे विनती कर रहे हैं।" (142) [368]

उनमें से एक साधारण महिला, जो निष्ठावान और बुद्धिमान थी, सबसे अधिक प्रयास कर रही थी। उसके सिर पर धीरे से हाथ फेरते हुए,

[गोतामी] ने उससे ये शब्द कहे: 217 (143) [369]

“बस करो इस अवसाद से, बच्चे, जो मृत्यु के जाल में फंसा हुआ है;218 सब कुछ क्षणभंगुर है,

निरंतर कांपता हुआ, हानि में समाप्त होता है।” (144) [370]

216 addhapallaṅkam ābhujya (BJTS read aḍḍhapallaṅkam ābhujja), with one leg crossed and one bend hook-wise.

217 पीटीएस abraviŋ (“मैंने बोला”) के लिए बीजेटीएस (और पीटीएस विकल्प) के साथ अंतिम क्रिया abravi (“उसने बात की”) को पढ़ना।

218 mār'apā'sānu'v'attinā

फिर उन सभी को विदा करने के बाद, वह पहली, दूसरी और तीसरी परिवर्तित अवस्था में प्रवेश कर गई।

और फिर उसने चौथा प्राप्त किया। (145) [371]

क्रम में, [और ऊपर की ओर बढ़ते हुए:]

अनंत अंतरिक्ष का तल,

वह तल जिसमें अनुभूति शुद्ध होती है,

और जहाँ शून्यता दिखाई देती है। (146) [372]

उल्टे क्रम में, गोतमी

उन सभी परिवर्तित अवस्थाओं में प्रवेश किया, अंतिम से लेकर पहली तक।

और फिर वापस चौथे पर। (147) [373]

ऊपर उठते हुए, वह निर्वाण की अवस्था में पहुँच गई, जैसे बिना ईंधन के जलते दीपक की लौ।

एक भीषण भूकंप आया था;

आकाश से बिजली की चमक गिरी। (148) [374]

गरज की आवाज तेज थी; वहां एकत्रित देवता विलाप कर रहे थे। आकाश से फूलों की वर्षा हो रही थी।

पृथ्वी पर वर्षा हो रही थी। (149) [375]

राजसी मेरु पर्वत भी मंच पर नर्तकी की तरह कांप उठा;

विशाल सागर को बहुत दुख हुआ।

और वह दुख से रो रहा था। (150) [376]

देवता, नागदेव और टाइटन भी, यहाँ तक कि ब्रह्मा भी उस समय भयभीत होकर बोले,220 [कहा,] "यह अब विलीन हो गया है; वास्तव में सब कुछ प्रवाह में है।" (151) [377]

उसके चारों ओर मौजूद [अन्य ननें],

जिन्होंने बुद्ध की शिक्षाओं का अभ्यास किया,221

तब उन्होंने भी निर्वाण प्राप्त कर लिया।

जैसे बिना ईंधन के दीपकों की लौ। (152) [378]

अफसोस! अंत में अटैचमेंट कट ही जाते हैं!

हाय! सब कुछ बदल जाता है! हाय! जीवन का अंत विनाश में होता है।

इस तरह [लोग] विलाप कर रहे थे। (153) [379]

219 लिट., "अंतिम प्रथम परिवर्तित अवस्था"

220 पीटीएस में tavade लिखा है , जबकि बीजेटीएस (और पीटीएस का वैकल्पिक संस्करण) में taṅkhaṇe ("उस क्षण में") लिखा है।

221 शाब्दिक अर्थ, "छूट"

फिर ब्रह्मा और देवता

वह सातवें ऋषि के पास गया और उचित कार्य किया।

सांसारिक रीति-रिवाज के अनुसार। (154) [380]

तब शिक्षक ने आनंद से कहा,

जिसका ज्ञान सागर के समान गहरा था, उसने कहा, “अब जाओ, आनंद, भिक्षुओं को बताओ।”

मेरी माँ निर्वाण प्राप्त कर चुकी हैं।” (155) [381]

तब आनंद, जो अपना आनंद खो चुके थे,222 जिनकी आँखें आँसुओं से भर रही थीं, अपने शब्दों में रुंधते हुए बोले,223 “हे बौद्ध भिक्षुओं, एक साथ आओ,

जो उत्तर में रह रहे हैं,

या पूर्व में, या दक्षिण में, या पश्चिम में। वे सब मेरी बातें ध्यान से सुनें।

भिक्षु जो वेल-गॉन-वन के उत्तराधिकारी हैं। (156-157) [382-383]

इस गौतमी ने, जिसने ऋषि के शरीर को सावधानीपूर्वक ऊपर उठाया,

शांति से चला गया है, [अब दिखाई नहीं देता,]

जैसे सूर्योदय के समय तारे दिखाई देते हैं। (158) [384]

वह घर चली गई है, 224 उसे पीछे छोड़कर।

“बुद्ध की माता” पदनाम

जहां तक कि वह पंच-नेत्र वाला भी,

नेता किसी को जाते हुए नहीं देख सकता। (159) [385]

प्रत्येक को उस दिवंगत आत्मा पर विश्वास था, और ऋषि के प्रत्येक शिष्य को भी।

अब बुद्ध के पुत्र को आना चाहिए,225

बुद्ध की माता का सम्मान करने के लिए।" (160) [386]

यह सुनकर भिक्षु तुरंत आ गए, यहां तक कि वे भी जो दूर-दूर रहते थे।

कुछ लोग बुद्ध की महिमा से आए थे।

कुछ महाशक्तियों में कुशल थे। (161) [387]

[वहाँ के लोगों ने] उस स्थान पर एक शवयात्रा बनाई जहाँ गौतमी को [अब] रखा गया था,226

222 उनके नाम के अर्थ पर आधारित एक व्यंग्य: tadā 'nando nirānando

223 लिट., "गड़गड़ाहट की आवाज़ के साथ"

224 पीटीएस पाठ gatāsayaŋ को स्वीकार करते हुए । बीजेटीएस (और पीटीएस वैकल्पिक) gatāsamaṃ पढ़ता है , "अतुलनीय के पास चला गया"

[राज्य?]"

225 लिट., "अच्छे से चले गए व्यक्ति का उत्तराधिकारी"

226 पीटीएस सुत्ता 'पी गौतमी , बीजेटीएस सुत्तासी गोतमी (सुत्ता-असी गौतमी)

एक अच्छी, सुंदर छज्जे वाली झोपड़ी में,

उत्कृष्ट [और] सोने से बना हुआ। (162) [388]

चार "विश्व रक्षक" देवताओं ने शवयात्रा को अपने कंधों पर उठाया; शकरा से शुरू होने वाले अन्य देवताओं ने भी ऐसा ही किया।

गैबल वाली झोपड़ी के अंदर इकट्ठा हुए। (163) [389]

वहाँ पाँच सौ छज्जेदार झोपड़ियाँ थीं, जिनका रंग शरद ऋतु के सूरज जैसा था।

जिनका निर्माण विस्साकम्मा ने करवाया था।

[उन सभी महान बौद्ध भिक्षुणियों के लिए]। (164) [390]

उन सभी [पांच सौ] बौद्ध भिक्षुणियों को शवयात्रा के लिए अर्थी पर लिटाया गया था।

देवताओं के कंधों पर उठाया गया,

उचित क्रम में पंक्तिबद्ध। (165) [391]

आकाश में एक छतरी

यह हर चीज पर फैला हुआ था।

सूर्य, चंद्रमा और सभी तारे

उस पर [तरल] सोने से चित्र बनाए गए थे। (166) [392]

विभिन्न प्रकार के झंडे फहराए गए, फूलों का आवरण फैलाया गया; धरती से फूल उग आए।

जैसे आकाश में उठती हुई धूप227। (167) [393]

सूर्य और चंद्रमा दोनों दिखाई दे रहे थे, और सभी तारे टिमटिमा रहे थे;228 और यहाँ तक कि जब दोपहर का समय था,

सूर्य चंद्रमा की तरह नहीं जलता था। (168) [394]

देवताओं ने दिव्य सुगंधों से सुगंधित मालाओं की भेंट चढ़ाई और गीतों से गौतमी का सम्मान किया।

नृत्यों और प्रवचनों के साथ। (169) [395]

नागदेवों, दैत्यों और ब्रह्माओं ने अपनी-अपनी शक्तियों और सामर्थ्य के अनुसार, निर्धारित स्थान पर भेंटें अर्पित कीं।

माता जो निर्वाण में थीं। (170) [396] आगे सभी को ले जाया गया

227 बीजेटीएस में ogatākāsapadumā ("आकाश में उगते कमल") लिखा है।

228 मंत्रोच्चार करते समय "ट्विंकलिंग" का उच्चारण पूरे तीन शब्दांशों के रूप में करें, ताकि लय बनी रहे, या यदि इसे दो शब्दांशों में संक्षिप्त किया जाए तो "और [सभी] तारे टिमटिमा रहे थे" में संशोधित करें।

229 शाब्दिक रूप से, "पूजा की "

निर्वाण प्राप्त कर चुके व्यक्ति के उत्तराधिकारियों के बाद गौतमी को ले जाया गया।

बुद्ध की सम्मानित धाय माँ। (171) [397]

सबसे आगे देवता और मनुष्य हैं, नागदेव, दानव और ब्रह्मा, और उनके पीछे अनुयायियों के साथ बुद्ध हैं।

अपनी माँ की पूजा करने के लिए आगे बढ़े।230 (172) [398]

बुद्ध का अंतिम निर्वाण इस प्रकार का नहीं था। गौतमी का अंतिम निर्वाण।

यह अत्यंत चमत्कारिक था। (173) [399]

बुद्ध और भिक्षु बुद्ध के अंतिम निर्वाण में दिखाई नहीं देंगे।

बुद्ध गौतमी के यहाँ हैं;231

सारिपुत्त और इसी प्रकार आगे भी। (174) [400]

फिर उन्होंने अंत्येष्टि की चिताएं बनाईं।

इसमें तरह-तरह की सुगंधित लकड़ियों का इस्तेमाल किया गया है और इस पर सुगंधित पाउडर छिड़का गया है।

उन [महान ननों] का वहीं अंतिम संस्कार किया गया था। (175) [401]

शेष भाग और हड्डियाँ232 पूरी तरह से आग में भस्म हो गईं। और उस समय आनंद ने कहा

यह भाषण, [जो] बहुत मार्मिक था:233 (176) [402]

"गौतमी का कोई निशान नहीं बचा है234 और उनके शव का दाह संस्कार कर दिया गया है, जो इस बात का संकेत देता है कि बुद्ध का

निर्वाण भी शीघ्र ही प्राप्त होगा।" (177) [403]

बुद्ध के आग्रह पर आनंद ने उस समय गौतमी के पवित्र अवशेषों को उनके भिक्षापात्र में रख दिया।

[और] उन्हें प्रभु के समक्ष प्रस्तुत किया। (178) [404]

230 शाब्दिक रूप से, "अपनी माँ की पूजा करने जा रहा है"

231 शाब्दिक अर्थ, "गोतमी के [अंतिम] निर्वाण पर"

232 लिट., "शेष भाग, शेष हड्डियाँ।" मैंने पहले अनुवाद किया था "केवल उसकी हड्डियाँ ही बची थीं," लेकिन अब मेरा मानना है कि यह गलत था; मांसल भाग (आदि) और हड्डियाँ दोनों पूरी तरह से जल गई थीं; नीचे संदर्भित "अवशेष" श्मशान की राख में बचे हुए छोटे रत्न जैसे टुकड़े होंगे, न कि हड्डियाँ।

233 saŋvegajanakaŋ vaco , शाब्दिक अर्थ, "भावना उत्पन्न करने वाला शब्द।" Saṃvega एक गहन भावनात्मक अंतर्दृष्टि है

वास्तविकता की प्रकृति, जो अक्सर धार्मिक कार्यों को प्रेरित करती है, की तुलना उब्बेगा से की जानी चाहिए , जो मृत्यु के प्रति सामान्य भावनात्मक प्रतिक्रियाएं, सामान्य शोक, दुःख आदि हैं।

234 निधानं , शाब्दिक अर्थ, "कर्मों के धन के बिना," या अधिक शाब्दिक रूप से, "अधिकारहीन"

सातवें ऋषि, बुद्ध ने उन्हें अपने दोनों हाथों से उठाकर कहा: "जिस प्रकार एक विशालकाय, लकड़ी से लदे पेड़ का तना, चाहे वह कितना भी विशाल क्यों न हो, टुकड़ों में टूट जाता है,

इसलिए गौतमी, जो एक नन थीं,235

वह अपने अंतिम निर्वाण तक पहुँच चुकी है। (179-180) [405-406]

ओह! यह तो एक अद्भुत चीज है!

मेरी माँ, जो निर्वाण प्राप्त कर चुकी हैं, अपने पीछे केवल अवशेष छोड़ गई हैं।236

शोक नहीं किया [और विलाप नहीं कर रहा था]। (181) [407]

दूसरों के लिए शोक न करते हुए, उसने अस्तित्व के सागर को पार कर लिया है। वह शांत हो गई है, वह निर्वाण में है।

अब उसकी पीड़ा टल गई है। (182) [408]

हे भिक्षुओं, उसके बारे में यह जान लो कि वह बहुत बुद्धिमान स्त्री थी।237

विशाल और व्यापक ज्ञान के साथ,238

बौद्ध भिक्षुणियों में विशिष्ट। (183) [409]

उसने "दिव्य कान" नामक महाशक्ति में महारत हासिल कर ली थी। गौतमी इस तत्व की पारखी थी।

दूसरों के हृदयों में संचित ज्ञान। (184) [410]

उसे अपने पिछले जन्म याद आ गए; उसकी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई।

सभी अशुद्धियों को नष्ट कर दिया गया;

उसका पुनर्जन्म नहीं होगा। (185) [411]

उसने अर्थ और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश के अपने ज्ञान को शुद्ध कर लिया था।

इसी कारण उसने शोक नहीं किया। (186) [412]

आग से चमकती हुई लोहे की छड़ को पीटने पर वह धीरे-धीरे ठंडी हो जाती है, [जिससे कोई राख नहीं बचती:]

235 शाब्दिक रूप से, “भिक्षुओं की सभा का:” भिक्खुनीसंघास्सा

236 sarīramattasesāya , शाब्दिक अर्थ, "[केवल] कुछ अवशेष शेष हैं"

237 paṇḍitā' si

238 शाब्दिक अर्थ, "विशाल ज्ञान के साथ, व्यापक ज्ञान के साथ"

इस तरह यह ज्ञात नहीं है कि [वह] कहाँ गई।239 (187) [413]

सच्चे रूप से मुक्त व्यक्ति के पुनर्जन्म स्थान का पता नहीं लगाया जा सकता है।

जो वासना के बंधनों की बाढ़ को पार करते हैं,

जो अटूट खुशी तक पहुँच चुके हैं।240 (188) [414]

इसलिए स्वयं अपने लिए दीपक बनो; जागरूकता के क्षेत्र में चरते रहो। ज्ञान के सात भागों को प्राप्त करके,

आप सभी को अपना कष्ट समाप्त करना चाहिए।241 (189) [415]

इस प्रकार, भिक्खुनी महापजापतिगोतमी ने ये श्लोक कहे थे।

महापजापतिगोतमी थेरी की कथा समाप्त हो गई है।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 18.खेमा
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
18. खेमा242

विजेता, पदुमुत्तरा,

सब कुछ देखने वाला, दुनिया का नेता, उदय हुआ।

एक लाख युगों बाद। (1) [416]

मेरा जन्म हंसवती में हुआ था।

फिर करोड़पतियों के एक परिवार में, जो विभिन्न रत्नों से जगमगा रहा था,

परम सुख से संपन्न। (2) [417]

उस महान नायक से संपर्क करने के बाद,

मैंने [उन्हें] उनके धम्म का उपदेश देते हुए सुना । उसके बाद, प्रसन्न होकर, मैंने विजयदाता की शरण ली। (3) [418]

माता-पिता से विनती करने के बाद, मार्गदर्शक को आमंत्रित करने के बाद,

मैंने बुद्ध को उनके अनुयायियों के साथ एक सप्ताह तक भोजन कराया। (4) [419]

उन सात दिनों के अंत में, मनुष्यों के सारथी ने रखा

239 शाब्दिक रूप से, "[उसकी] पुनर्जन्म की अवस्था (गति) ज्ञात नहीं है"। उपमा यह है कि गोतमी, भट्टी में लोहे की छड़ में जलती हुई लौ की तरह, बिना किसी निशान के गायब हो गई है, "ठंडी हो गई है"।

240 acalaŋ sukhaŋ . BJTS, Apadāna के समग्र स्वरूप के अनुरूप , acalaŋ padaŋ ("अविचल अवस्था") पढ़ता है।

241 या "बीमारी का अंत करो:" dukkhass' antaŋ karissathā ti .

242 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

एक महान नन243 सर्वोपरि स्थान पर

उन लोगों में जो बहुत बुद्धिमान हैं। (5) [420]

यह सुनकर, अत्यंत प्रसन्न होकर,

उसके लिए और भी अच्छे काम करते हुए,

महान ऋषि ने प्रणाम करने के बाद,

मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। (6) [421]

तब विजेता ने मुझसे यह कहा: "तुम्हारी आकांक्षा पूरी हो! सभा में मेरे लिए किए गए कार्य

[तुम्हारे लिए] असीम फल देगा। (7) [422]

एक लाख युगों में, ओक्काका के वंश में उत्पन्न होकर,

जिसका नाम गौतम है

वह दुनिया में शिक्षक होगा। (8) [423]

उस धर्म की योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, तुम ही हो जिसका नाम खेमा है।

[और] वह सर्वोपरि स्थान प्राप्त करेगा।" (9) [424]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (10) [425]

वहाँ से गिरकर मैं यमराज के पास गया,245

[और] फिर मैं तुसिता गया, और फिर निम्मानारती गया,246

और फिर वासावट्टी नगर। (11) [426]

जिस भी स्थान पर मेरा पुनर्जन्म होता है, उस कर्म के अनुसार, हर जगह मुझे प्रधान रानी बनाया जाता है।

[वहाँ] राजाओं के [देवताओं के]। (12) [427]

वहाँ से पतित होकर, मानव अवस्था में, [हर जगह] मुझे उन राजाओं की प्रधान रानी बनाया गया जो [कानून का] पहिया घुमाते हैं।

और [शक्तिशाली] क्षेत्रीय राजा। (13) [428]

243 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

244 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

245 पठन °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ: "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

246 यानी तैंतीस देवता।

देवताओं और मनुष्यों दोनों के बीच सफलता का अनुभव करने के बाद, हर जगह सुखी होने के कारण,

मैंने युगों तक पुनर्जन्म लिया।247 (14) [429]

[तब] इक्यावन युग पहले,

विश्व नेता विपस्सी उठे, सुंदर नेत्रों वाले,248

हर चीज़ में अंतर्दृष्टि के साथ.249 (15) [430]

मैं उस विश्व नेता, पुरुषों के बीच सारथी के पास गया। उनकी उदात्त शिक्षा सुनकर,

मैं बेघर हो गया। (16) [431]

पवित्र जीवन जीने के बाद250

उस ज्ञानी व्यक्ति के शासनकाल में, पूरे दस हजार वर्षों के दौरान,

प्रयास पर दृढ़, बहुत विद्वान, (17) [432]

अनेक कारणों में निपुण,251 चार [नोअर] सत्यों में विशेषज्ञ, चतुर, विविध वक्ता, [मैं था]

जिसने शिक्षक की शिक्षाओं का पालन किया है। (18) [433]

वहाँ से गिरने के बाद मेरा पुनर्जन्म हुआ

तुसिता, प्रसिद्धि और वैभव के साथ।

मैंने वहां मौजूद अन्य [देवताओं] को पीछे छोड़ दिया।

पवित्र जीवन के फल के रूप में।252 (19) [434]

मैं जिस भी स्थान पर पुनर्जन्म लूं, मैं बहुत धनी, समृद्ध, बुद्धिमान और सुंदर होऊंगी।

[और] मेरा दल अच्छी तरह से प्रशिक्षित है। (20) [435]

मेरे कर्मों के फलस्वरूप, विजेता के शासनकाल में किए गए प्रयासों के कारण,

मुझे हर उपलब्धि से आनंद मिलता है।

आसानी से प्राप्त हुआ, मन को प्रसन्न करने वाला। (21) [436]

मेरे अच्छे आचरण के फल स्वरूप,

247 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

248 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

249 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

251 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

252 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

कोई भी मेरे साथ अपमानजनक व्यवहार नहीं करता, यहाँ तक कि वह भी जो मेरा पति था।

मैं जिस भी स्थान पर पुनर्जन्म लूँ।253 (22) [437]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में

ब्रह्मा के संबंधी, परम प्रसिद्ध, जिनका नाम कोणागमना था,

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता, [बुद्ध,] प्रकट हुए। (23) [438]

हम उस समय बनारस के एक बहुत ही समृद्ध कुल में पैदा हुए थे: धनंजनी, सुमेधा भी।

मेरे साथ, तीन महिलाएं। (24) [439]

हम गृहस्थ दानदाताओं ने ऋषि को एक हजार पाउंड और एक आश्रम दान में दिए।

विधानसभा के लिए, 254 का दान करते हुए

उस स्थान255 को सभा के साथ उसके पास। (25) [440]

हम तीनों महिलाएं वहां से गिर गईं।

तावतिंसा में पुनर्जन्म हुआ था256

[जहाँ] हमने सर्वोच्च प्रसिद्धि प्राप्त की, और लोगों के बीच भी उतनी ही प्रसिद्धि। (26) [441]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में,

ब्रह्मा के संबंधी, परम प्रसिद्ध, [बुद्ध] जिन्हें कश्यप के नाम से जाना जाता है257

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का जन्म हुआ। (27) [442]

उस महान ऋषि का सेवक उस समय काशी का राजा, किकी, मनुष्यों का शासक था।

बनारस में, सबसे बड़ा शहर। (28) [443]

मैं उस [राजा की] सबसे बड़ी बेटी थी।

"समानी" नाम से प्रसिद्ध।258

सर्वश्रेष्ठ विक्टर की शिक्षा को सुनना,

मैंने दीक्षा लेने का विकल्प चुना। (29) [444]

हमारे पिता ने इसकी अनुमति नहीं दी;

हम उस दौरान घर पर ही रहे।

253 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

254 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

255 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

256 puṇṇā ti nāmaŋ

257 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

258 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

आरामदायक 259 शाही युवतियां ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए पूरे जोश के साथ [हमारा] अभ्यास कर रही हैं,

हजार वर्षों के बीस गुना तक, बुद्ध की सेवा करने के शौकीन,

[राजा की] सात आनंदित पुत्रियाँ। (30-31) [445-446]

समानी और समानगुट्टा,260

भिक्खुनी, भिक्खदायिका, धम्मा और सुधम्मा भी,

और सातवीं संघदायिका, (32) [447]

[अब] मैं, और उप्पलवन्ना, पटाचारा और कुंडाला,261

किसागोतामी, धम्मदिन्ना,262

और विशाखा सातवां है। (33) [448]

एक बार जब सूर्य लोगों के बीच था

अद्भुत सत्य का प्रचार कर रहे थे,263 इसे सुनकर, मैंने महानिदानसुत्तंत को याद कर लिया ।264 (34) [449]

उन कर्मों (265) के कारण, जो मैंने अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ किए, अपने मानव शरीर का त्याग करके,

मैं तब तावतिंसा गया। (35) [450]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, सर्वश्रेष्ठ नगर सागाला में,

मैं मद्दा राजा की पुत्री हूँ, 266

बहुत पसंद किया जाने वाला, प्रिय [और] प्यारा। (36) [451]

उस शहर में सब कुछ शांतिपूर्ण था।

259 पाठ महामुने (भाषण) पीटीएस तदा मुनि के लिए बीजेटीएस के साथ ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

260 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

261 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

262 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

263 डांटो , या "वश में किया हुआ"

264 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

265 vimutt'o

266 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

267 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-पंक्ति वाले छंदों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो अनुवाद के दौरान विकृत हो गया है? मैंने अपदाना में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो अनुवाद में अपेक्षाकृत पहले कहीं सात शब्दांशों के लोप [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ शब्दांशों के लोप [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] का संकेत देता है)।

जब मेरा जन्म हो रहा था। उसके बाद, उस गुण के कारण,268

उन्होंने मुझे "खेमा" नाम दिया। (37) [452]

जब मैंने यौवन की चरम अवस्था प्राप्त की,

मैं सौंदर्य और गरिमा से परिपूर्ण थी।270

उस समय मेरे पिता ने मुझे

[महान] राजा बिम्बिसार को। (38) [453]

मैं उनकी सबसे प्रिय [रानी] थी।

अपनी सुंदरता पर बहुत गर्व करते हुए। [सोचते हुए,] "वह सुंदरता की बुराई करता है।"

मैंने दयालु व्यक्ति को चकमा दिया।273274 (39) [454]

उस समय, राजा बिम्बिसार,

मेरे प्रति ज्ञान और अपार प्रेम के साथ, बांस के जंगल की प्रशंसा करने के बाद,275

मेरे लिए गायक लाए [इसकी प्रशंसा करने के लिए]: (40) [455]

"हमारा मानना है कि जिसने बांस के इस रमणीय वन को नहीं देखा है, वह इसे देख ही नहीं सकता।"

और न ही वेल-गॉन-वन का अड्डा,

[जॉय नाम के बगीचे] को नहीं देखा है।276 (41) [456]

लेकिन जिसने बांस के जंगल को देखा है, लोगों द्वारा अनुभव किए जाने वाले 'आनंद' को देखा है,277

कि किसी ने 'जॉय' नामक [बगीचा] देखा है।

देवताओं के राजा द्वारा बहुत आनंद लिया गया।278 (42) [457]

'जॉय' नामक बगीचे को त्यागते हुए,

मिशन प्रक्रिया (क्योंकि यह सभी विद्यमान पांडुलिपियों को प्रभावित करती है)। अपादान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले छंद-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन बुनियादी इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो तब चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

268 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

269 शाब्दिक रूप से, "पूजा की"

270 #23, ऊपर

खंड 271 में कहा गया है, " बीस करोड़ लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है धम्म की अंतर्दृष्टि, धम्म में प्रवेश , धम्म की समझ या धम्म में प्रवेश, शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

272 y'akkho

273 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, “जिनके पास नहीं है”

274 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

275 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

276 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे bhikkhunī Sukkā पढ़ता है।

277 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

278 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए बीजेटीएस के साथ आप केसी हत्थपरिकम्मम पढ़ रहे हैं

पृथ्वी की सतह पर उतरते हुए, देवता संतुष्ट और आश्चर्यचकित हैं।

सुंदर बांस के उपवन को देखकर। (43) [458]

कौन सा वक्ता राजाओं के पुण्य से उत्पन्न संचित सद्‌गुणों का पूरी तरह से वर्णन कर सकता है?

बुद्ध के पुण्य से सुशोभित? (44) [459]

इसकी भव्यता के बारे में सुनकर, जो मेरे कानों को बहुत भाया, उस बगीचे को देखने की इच्छा हुई।

फिर मैंने राजा को इसकी सूचना दी। (45) [460]

फिर पृथ्वी के स्वामी राजा, अपने विशाल दल के साथ,

मुझे जुलूस के माध्यम से वहाँ ले जाया गया

मैं उस बगीचे को देखने के लिए तरस रहा था। (46) [461]

“जाओ और उस उपवन की अपार संपदा को देखो, जो आँखों को भाता है; वह सदा प्रकाशमान रहता है।”

बुद्ध की आभा से रंगा हुआ।" (47) [462]

और जब ऋषि भिक्षा मांगते हुए राजगीर, सर्वश्रेष्ठ नगर में प्रवेश कर गए,281

ठीक उसी समय282 मैं बाहर गया,

उस उपवन को देखने की इच्छा रखते हुए। (48) [463]

फिर मैं उस खिले हुए उपवन में प्रवेश किया, जो विभिन्न प्रकार की मधुमक्खियों की भिनभिनाहट से जीवंत था।

भारतीय कोयल के गीतों से भरपूर,

[और] मोर मंडली द्वारा नृत्य, (49) [464]

शोरगुल से मुक्त, साफ-सुथरा, विभिन्न प्रकार के पैदल मार्गों से सुशोभित, और जगह-जगह झोपड़ियों और मंडपों से युक्त।

विविध योगियों से सुशोभित। (50) [465]

वहाँ घूमते हुए मैंने सोचा,

"मेरी आँखें अब अपनी उपयोगिता साबित कर रही हैं।"283

279 शाब्दिक रूप से, "भविष्य में" (एकवचन)

280 सम्मुख , अर्थात् "एक साथ"

281 तुयहम , संभवतः बोधिसत्व को संबोधित करते हुए।

282 पठन anubhontī ciraṃ kālaṃ with BJTS for PTS tuyhaŋ vo paricāre ca ("और आप सभी आपकी सेवा करेंगे")

283 जटाम्ह का पाठ, पीटीएस अजाता ("हम अजन्मे हैं;" इसका गलत अर्थ है अजातो "वह अजन्मा है") के लिए बीजेटीएस के साथ

उस स्थान पर देखकर

मैंने उसके बारे में सोचा, एक युवा भिक्षुः (51) [466]

एक रमणीय उपवन में ठहरना

इस तरह, प्रारंभिक युवावस्था में मानो वसंत ऋतु हो, भरपूर संपदा से भरपूर

एक ऐसे शरीर के साथ जो मनभावन हो, (52) [467]

गंजे सिर वाले, केसरिया वस्त्रों में लिपटे हुए,284

पेड़ की तलहटी में बैठा हुआ

वह ध्यान करता है, एक बौद्ध भिक्षु, इंद्रिय सुख का त्याग करते हुए।285 (53) [468]

क्या इस शुभ शिक्षा का अभ्यास वृद्ध लोगों द्वारा नहीं किया जाना चाहिए,286 गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के बाद?

अपनी पसंद के अनुसार आनंद का आनंद ले रहे हैं? (54) [469]

यह जानकर कि वह खाली था,

मैं सुगंधित घर, विक्टर के घर के पास पहुँचा, [लेकिन] विक्टर को देखा, जैसे सूरज उग रहा हो, (55) [470]

वह अकेले ही खुशी से बैठा था,287

एक खूबसूरत महिला द्वारा पंखा किया जा रहा है।

उस दृश्य को देखकर मैंने कुछ इस तरह सोचा:

"क्या यह पुरुषों का बैल दयनीय नहीं है?288 (56) [471]

वह स्त्री, सोने की तरह चमक रही थी, उसकी आंखें और चेहरा गुलाबी कमलों की तरह थे।

लाल होंठों वाली, चमेली जैसी दिखने वाली,289

मन और आँखों को भाने वाला, (57) [472]

सुनहरे झूलों जैसे कानों वाली, पानी के घड़ों जैसी सुडौल छातियाँ, पतली कमर, आकर्षक नितंबों वाली,

सुंदर जांघें आकर्षक आभूषणों के साथ, (58) [473]

उत्तम नीले रेशम के वस्त्र पहने हुए,

284 °पुत्ता° शाब्दिक अर्थ, "पुत्र"

285 लिट., “हम हर समय नहीं हैं...”

286 रीडिंग cikkhallabhūmimasuciṃ with BJTS for PTS cikkhallabhūmiŋ gamanaŋ (“कीचड़ भरे रास्तों पर जाना”)

287 reading pubbakammabalena no with BJTS for PTS pubbakammaphalan tato (“पिछले कर्मों के फल के बाद”)

288 संसारपथ-नित्तिना

289 पाठ vītarāgā bhavāmase with BJTS (and PTS alt.) for PTS n'atthi dāni punabbhavo (“अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा”)

290 t'ato tato

291 बीजेटीएस और पीटीएस में वैकल्पिक रूप से सहा के स्थान पर समा ("बराबर") पढ़ा जाता है ।

लाल रंग की सीमा से सुसज्जित, असंतोषजनक दिखने वाला,292

उसका व्यवहार मुस्कुराता हुआ है।” (59) [474]

उसे देखकर मैंने सोचा: “वाह! यह तो बेहद खूबसूरत है! मैंने पहले कभी ऐसी सुंदरता नहीं देखी।”

मेरी अपनी आँखों से [ऐसी सुंदरता]!” (60) [475]

फिर बुढ़ापे ने उसे जकड़ लिया, उसका रंग फीका पड़ गया, उसका चेहरा विकृत हो गया।

उसके दांत गिर गए, उसके बाल सफेद हो गए,

उसका मुँह लार से सना हुआ था, (61) [476]

कान सिकुड़ गए, आँखों में मोतियाबिंद हो गया,294 स्तन लटक गए और बदसूरत हो गए; झुर्रियाँ उसके पूरे शरीर पर फैल गईं।

[और] उस शरीर पर नसें उभर आईं, (62) [477]

टेढ़े-मेढ़े अंगों वाला, छड़ी के सहारे झुका हुआ, उभरी हुई पसलियों वाला, दुबला-पतला, कांपता हुआ, जमीन पर गिरा हुआ।

वह हर सांस के लिए हांफ रही थी।295 (63) [478]

और फिर मैं अत्यंत भावुक हो गया।296

आश्चर्यचकित होकर, मेरे रोंगटे खड़े हो गए, मैंने कहा, "अशुद्ध सुंदरता पर धिक्कार है!"

यह वह जगह है जहाँ [केवल] मूर्ख आनंदित होते हैं! (64) [479]

तब महान करुणावान ने यह जानकर कि मेरा मन प्रसन्न और रोमांचित था,

उन्होंने मुझसे इन छंदों में बात की: (65) [480]

"खेमा, इस जटिल ढेर को देखो, यह बीमार, घिनौना और सड़ा हुआ है।

इसमें से रिसाव हो रहा है और यह टपक रहा है।

मूर्ख लोगों का आनंद। (66) [481]

292 bodhanatthāya tavaŋ (PTS वैकल्पिक शब्द tava); इस वाक्यांश का अनुवाद "आपके ज्ञान के लिए" भी किया जा सकता है।

[मुझे]"

293 या, जैसा कि ऊपर बताया गया है, "मुझे जानने के लिए"

294 PTS mahā-isi (nom.) के लिए BJTS के साथ mahā - isiṃ (acc.) पढ़ना

295 लिट., "महान नायक ने भविष्यवाणी की"

296 बीजेटीएस इस श्लोक को एक तारांकित फुटनोट में रखता है, यह मानते हुए कि यह इसके कई वैकल्पिक संस्करणों में आता है।

297 बीजेटीएस, पीटीएस से सहमत होते हुए इसे महा-इसे (वोक.) के रूप में प्रस्तुत करता है , लेकिन वैकल्पिक पाठ महा-इसी का संदर्भ देता है।

(नामवाचक), संभवतः बुद्ध द्वारा सुमेधा को "महान ऋषि" कहकर संबोधित करने से परेशान थे।

298 रीडिंग manāpā with BJTS for PTS manasā

एकाग्रचित्त होकर, दृढ़ता से, अशुद्धता पर अपना ध्यान केंद्रित करो।

अपने शरीर के प्रति सचेत रहें;

मोहभंग पर दृढ़ रहना। (67) [482]

जैसा यह है, वैसा ही वह भी है;

ठीक वैसे ही, यह भी वैसा ही है:

अंदर और बाहर दोनों तरफ,

शरीर-सुख से विरक्त हो जाओ। (68) [483]

मुक्ति को बढ़ावा दें

और अंतर्निहित अहंकार को त्याग दें।299

फिर, अहंकार को समझकर, तुम शांति से विचरण करोगे। (69) [484]

जो लोग उस धारा का अनुसरण कर रहे हैं, कामवासना से उत्तेजित होकर, मकड़ी की तरह अपने लिए जाले बुन रहे हैं; दूसरे, उन्हें काटकर आगे बढ़ रहे हैं।

उदासीन, कामवासना के सुखों का त्याग करते हुए।" (70-71) [485].300

तब मनुष्यों के सारथी ने मेरी मानसिक तत्परता को जानते हुए,

मुझे निर्देश देने के लिए उपदेश दिया गया

महनिदानसुत्तन्त .301 (72) [486

उस सर्वश्रेष्ठ सूत्र को सुनकर , मैं

मुझे अपनी पुरानी यादें ताजा हो गईं।

वहाँ खड़े रहने मात्र से ही मुझे शांति मिल रही थी;

मैंने अपनी " धम्म दृष्टि" को शुद्ध किया। (73) [487]

तुरंत नीचे गिरना

महान ऋषि के चरणों में,

मैंने उस समय ये शब्द कहे थे।

अपराध स्वीकार करने के लिए [उसके समक्ष]। (74) [488]

हे समस्त द्रष्टा, आपकी जय हो!

करुणा के घर, आपकी जय हो! अस्तित्व को पार करने वाले, आपकी जय हो!

आपको बधाई हो, अमरता का मार्ग!302 (75) [489]

दृश्यों के घने जंगल में डूब गया,

299 पढ़ना यथा... पीटीएस यथा के लिए बीजेटीएस के साथ अनुरक्खंति 'सामिनो ... अनुरक्खति सामि नं ("जैसा कि हमारे गुरु रक्षा करते हैं")

300 लिट., "मेरे मन में कोई हलचल नहीं है"

301 यह और इसके बाद के 19 श्लोक (कुल 20 श्लोक) बीजेटीएस में शामिल नहीं हैं। श्लोक (62) और (63) बीजेटीएस [1092]-[1093] में दिखाई देते हैं।

302 लिट., "और एक महिला"

303 लिट., "और एक महिला"

मैं तीव्र वासना से मदहोश था। [अब] मुझे अनुशासन में आनंद आता है।

आपके धार्मिक चाल द्वारा अनुशासित।304 (76) [490]

उन्हें आनंद नहीं मिलता क्योंकि वे आप जैसे महान ऋषियों को नहीं देखते, अस्तित्व के सागर में विराजमान प्राणी,305

बहुत बेचैनी से गुजर रहे हैं। (77) [491]

यद्यपि निकट था306 मैं संसार के सहायक,307 अहिंसा,308 मृत्यु का अंत करने वाले को देखने नहीं गया;309

मैं उस अपराध को स्वीकार करता/करती हूँ। (78) [492]

सौंदर्य के प्रति जुनूनी होने के कारण, मैं नहीं गई।

परोपकारी को,310 महान मित्र,311

उसे संदेह था कि वह unfriendly होगा;

मैं उस अपराध को स्वीकार करता/करती हूँ।" (79) [493]

और फिर मधुर वाणी वाले,312 महान करुणामयी विजेता ने,313 मुझे अमृत से सराबोर करते हुए कहा,

"खेमा, तुम्हें [हमारे साथ] यहीं रहना चाहिए।" (80) [494]

फिर सिर झुकाकर परिक्रमा करने के बाद,

राजा को देखने के बाद,

मैंने ये शब्द [उससे ठीक उसी समय] कहे। (81) [495]

"हे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाले,

वह नेक चाल314 जो तुमने सोची! उपवन देखने की इच्छा से, मैंने देखा315

304 etesaŋ devedevānaŋ

305 अधिकारं सदा मयहं , शाब्दिक अर्थ: "मेरी सेवा निरंतर है" "मेरी सेवा दैनिक है"

306 या करें: कारती से

307 सधम्म॰ , प्रकाशित "अच्छी शिक्षा"

308 धम्मेसु सीनानां सदा सद्धम्म-कारिनो

309 aṭṭhamāse , BJTS इसे addhamāse ("आधा महीना") पढ़ता है

310 पीटीएस बुहुन एके के लिए बीजेटीएस के साथ बहु 'नेके पढ़ना

311 यह और इसके बाद के समापन श्लोक पीटीएस में यहाँ नहीं मिलते हैं, और ये असामान्य हैं (हालाँकि अद्वितीय नहीं)।

अपदाना के लिए जिसमें व्यक्तिगत कविताएँ आमतौर पर उस चीज़ के साथ समाप्त होती हैं जिसे मैंने "समापन छंद" कहा है (श्लोक)।

85-87) [1023-1025]। दिलचस्प बात यह है कि वे (साथ ही एक और, जो कहीं और भी दोहराया गया है) उसी असामान्य दोहराव के बाद की स्थिति में, नीचे, अपदान #30, यशोधरा के साथ अठारह हजार ननों के श्लोक 57-59 (साथ ही 60) के रूप में दिखाई देते हैं, और उस अपदान के बीजेटीएस संस्करण में भी इसी स्थिति में हैं (श्लोक [1100-1102] साथ ही [1103])।

312 पीटीएस में थेरी शब्द शामिल नहीं है, जिसे मैंने बीजेटीएस से लिया है।

313 रीडिंग s'ūnā vaṇitakibbisā with BJTS (and PTS alt.) for PTS sūnā 'va nītakibbisā ("like a slaughterhouse leading to pap" ?)

314 jegucchaŋ ; BJTS में इसे bībhaccham पढ़ा गया है , जिसका अर्थ लगभग समान है (घृणित, भयानक, डरावना)

315 या, बीजेटीएस के साथ विपस्सन्ती का पाठ करते हुए , "जांच करना" "अंतर्दृष्टि लागू करना"

ऋषि, वह जो लालसा से मुक्त है।316 (82) [496]

हे राजा, यदि यह आपको पसंद हो,

मैं तटस्थ ईश्वर के विधान में आगे बढ़ूंगा, सौंदर्य से थक चुका हूं।

क्योंकि ऋषि ने मुझे जो बताया था।" (83) [497]

फिर पृथ्वी के स्वामी, राजा ने अपने हाथ जोड़कर कहा, "हे भाग्यशाली, मैं तुम्हें अनुमति देता हूँ।"

आपका आगे बढ़ना सफल हो!" (84) [498]

और फिर मेरे जाने के बाद,

जब मैंने सात महीने तक सेवा की, और दीपक की लौ को उठते-गिरते देखा,

मेरा मन अत्यंत विचलित हो गया, (85) [499]

सभी सांसारिक चीजों से तंग आकर, कारणों के ढेरों में निपुण होकर,317 चारों प्रकार की बाढ़ को पार करते हुए,

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (86) [500]

मैंने "दिव्य श्रवण" नामक महाशक्ति में महारत हासिल कर ली थी। मैं इसमें भी निपुण था।

दूसरों के हृदयों में संचित ज्ञान। (87) [501]318

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी “दिव्य दृष्टि” शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (88) [502]

बुद्ध के युग में,

मैंने अर्थ और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश के अपने ज्ञान को शुद्ध किया है। (89) [503]

शुद्धिकरण में कुशल,319 कथावत्थु में विश्वास रखने वाला ,320 और उस व्यवस्था में जो मैंने दी है

अभिधामिक पद्धति में महारत हासिल की।321 (90) [504]

316 lit., “in the” “in that”

317 चित्तस्मिं वसिभूतस्मिं , शाब्दिक अर्थ, "जब मैं अपने मन का स्वामी (या "नियंत्रण") बन गया"

318 सुभाविता , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे द्वारा] सुविकसित" या "सुसंस्कृत" "सुचारू ध्यान"

319 sattisūlūpamā kāmā , शाब्दिक अर्थ, “तलवारें और कटार इंद्रिय सुखों के समान हैं (या उनकी उपमाएँ हैं)”

320 khandhā pi adhikuṭṭanā , शाब्दिक अर्थ, “यहाँ तक कि समुच्चय (या आयाम [व्यक्तिगत अस्तित्व के: नाम और रूप, संवेदना, बोध, विन्यास और चेतना])

321 शाब्दिक अर्थ, "अब मुझे नापसंद है"

फिर, तोरणवत्थु,322 में सूक्ष्म प्रश्न पूछे जाने पर,

कोसल [राजा] की पत्नी, रानी

मैंने सत्य के अनुसार व्याख्या की।323 (91) [505]

उस समय राजा पास आ रहा था...

वेल-गॉन-वन ने भी उससे यही पूछा।

तब बुद्ध ने ठीक इसी प्रकार समझाया।

[उन प्रश्नों] की व्याख्या मैंने की थी। (92) [506]

विजेता उस गुण से रोमांचित होकर मुझे सबसे आगे बिठा दिया; परम पुरुष ने मुझे यह उपाधि दी।

“महान ज्ञान वाली ननों की प्रमुख।” (93) [507]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (94) [508]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (95) [509]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (96) [510]

इस प्रकार भिक्खुनी खेमा ने ये श्लोक कहे थे।

खेमा थेरी की कथा समाप्त हो गई है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 19.उप्पलवन्ना
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
19. उप्पलावण्णा 324

उपलवण्णा नामक भिक्षुणी, महाशक्तियों की स्वामिनी,

गुरु के चरणों की पूजा करने के बाद,

मैंने उस समय उससे ये शब्द कहे: (1) [511]

322 lit., “in the” “in that”

323 शाब्दिक अर्थ, "के बीच"

324 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

“जन्म और पुनर्जन्म325 पार हो चुके हैं, मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली है।

मैंने समस्त कष्टों का नाश कर दिया है;

मैं इसकी घोषणा कर रहा हूँ, हे महान ऋषि। (2) [512]

बुद्ध के उपदेशों से प्रसन्न असंख्य लोगों में,

यदि मैंने [कुछ] लोगों के साथ अन्याय किया है, तो क्या वे विजेता का सामना करते हुए [इसे] क्षमा कर देंगे? (3) [513]

हे महान ऋषि, मैं यह घोषणा करता हूँ कि

अगर मुझसे कोई गलती हुई है,

अस्तित्व में स्थानांतरण करना,

आप उस अपराध को क्षमा कर दें। (4) [514]

“मेरी विधि का पालन करने वालों को अपनी महाशक्तियाँ दिखाओ। आज से ही सारे संदेह दूर कर दो।”

भीड़, जो चौगुनी है।”330 (5) [515]

“महान नायक, मैं आपकी पुत्री हूँ।”

हे ज्ञानी,331 हे तेजस्वी,332

मैंने बहुत कठिन कार्य किए हैं।

कठिन और अनेक [भी]। (6) [516]

मेरी त्वचा का रंग नीले कमल के रंग जैसा है;

मेरा नाम “ब्लू लोटस” है।333

मैं आपका अनुयायी हूँ, महान नायक।

हे आँखों वाले, आपके चरणों की पूजा करते हुए। (7) [517]

राहुल334 और मैं स्वयं

हमारी समान सोच के कारण,

समान परिस्थितियों में पैदा हुए थे335

विभिन्न सौ कई [बार]। (8) [518]

पुनर्जन्म उसके साथ है।

325 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

326 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

327 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मवास"

328, अर्थात् तैंतीस देवता।

329 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

330 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

331 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

332 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

333 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

334 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

335 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

और जन्म के बाद भी, साथ-साथ। [अब] हमारे अंतिम अस्तित्व में

दोनों, [विभिन्न]336 परिस्थितियों में पैदा हुए, (9) [519]

एक साथ: राहुल का [तुम्हारा] पुत्र;

मैं आपकी बेटी हूँ, मेरा नाम "ब्लू लोटस" है। मेरे महाशक्तियों को देखो, हीरो;

मैं शिक्षक को अपनी शक्ति दिखाऊंगा।" (10) [520]

उसने चारों महान महासागरों को अपनी हथेली पर रख दिया, ठीक वैसे ही जैसे कोई युवा चिकित्सक करता है।337

क्या मूत्राशय के लिए तेल नियत है.338 (11) [521]

मिट्टी को उखाड़कर, उसने उसे अपने हाथ की हथेली पर रख दिया, मानो कोई कोमल छोटा लड़का उसे चुन रहा हो।339

एक [फूल जो] रंगों से भरा है.340 (12) [522]

उसकी हथेली, जो ब्रह्मांड जितनी विशाल थी,341 ऊपर से दुनिया को ढके हुए थी, जिससे विभिन्न रंगों की बारिश की बूंदें गिरीं।

बार-बार बरसना। (13) [523]

मिट्टी को ओखली में बदलना, मेरु पर्वत को अपना मूसल बनाना, मानो कोई युवा पीसने वाली लड़की हो।

342 अनाज [आटा] पीसते हुए, [उसने] बजरी बनाई। (14) [524]

"मैं सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की पुत्री हूँ; मेरा नाम "नीला कमल" है। मैं महाशक्तियों की स्वामी हूँ।"

मैं आपके विधान का पालन करता हूँ।" (15) [525]

विभिन्न रूपांतरण करते हुए,343 उन्हें विश्व के नेता को दिखाते हुए, नाम और वंश की घोषणा करते हुए,

मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ, हे आँखों वाले। (16) [526]

336 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

337 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

338 puṇṇā ti nāmaŋ

339 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

340 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

341 पाठ mahāmune (voc.) BJTS के साथ PTS tadā muni ("तब ऋषि [नामवाचक];" PTS वैकल्पिक tadā mune , "तब, हे ऋषि")

342 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

343 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

मैंने "दिव्य श्रवण" नामक महाशक्ति में महारत हासिल कर ली है। मैं एक महान ऋषि भी हूँ।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (17) [527]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (18) [528]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा ज्ञान विशाल344 और त्रुटिहीन है,

महान ऋषि की महिमा के माध्यम से। (19) [529]

उपस्थिति और अनुपस्थिति में345

पूर्व में, मुख्य विजेताओं में से,

मेरे द्वारा बहुत सेवाएँ प्रदान की गईं

हे महान ऋषि, आपके लिए,346 (20) [530]

हे ऋषि, पूर्व में मेरे द्वारा कौन से अच्छे कर्म किए गए थे?

मेरे द्वारा अर्जित पुण्य का कारण यह था कि

हे महान नायक, आपके लिए। (21) [531]

गलत व्यवहार से बचना348349 [और]

[नौ] असंभव स्थान;350

जीवन का अंतिम लक्ष्य मेरा कर्तव्य है।

हे महान नायक, आपके लिए। (22) [532]

मैंने अपने [निजी धन] से दान दिया।

दस हजार दस मिलियन351 [सोने में];

344 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

345 डांटो , या "वश में किया हुआ"

346 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

347 vimutt'o

348 सिंगी-निक्खा-सवण्नो , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

349 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

350 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

351 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

मेरा जीवन ही त्याग दिया गया था

हे महान नायक, आपके लिए।” (23) [533]

तब वे सभी अत्यंत संयमित होकर, अपने हाथों को सिर पर रखकर बोले, "बहन, तुमने यह प्रयास कैसे किया?"

ऐसी बेजोड़ महाशक्ति के लिए?" [534]352

एक लाख युगों बाद

मैं नागदेवी कन्या थी, जिसका नाम विमला था।353

युवतियों में बहुत सम्मानित। (24) [535]

बुद्ध के विधान से प्रसन्न महान नाग महोरागा ने पद्ममुत्तरा को आमंत्रित किया।

महान शक्ति का,356 अनुयायियों के साथ। (25) [536]

संगीत वाद्ययंत्र बजाना, संबुद्ध से मिलने जाना,

उन्होंने बुद्ध के मार्ग को तैयार किया357 —

रत्नों से बना एक मंडप,

रत्नों से बनी पालकी, रत्नों से बनी आनंद की वस्तुएँ,

रत्नों से मिश्रित रेत बिखरी हुई थी।

रत्नों से सजे झंडों से सुशोभित। (26-27) [537-538]

विश्व के नेता, अपने चारों ओर मौजूद भारी जनसमूह से घिरे हुए, एक उत्कृष्ट स्थान पर बैठ गए।

वहाँ महोरागा के महल में। (28) [539]

नागराज, जो अत्यंत प्रसिद्ध था, ने उत्कृष्ट और उत्कृष्ट उपहार दिए।

भोजन और पेय पदार्थ, ठोस भोजन [जो पेट भरता है,]

so[x] भोजन [पीने के लिए,] बहुत महंगा। (29) [540]

खाना खाने के बाद, कुल्ला करने के बाद

352 #23, ऊपर

खंड 353 में कहा गया है, " बीस करोड़ लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है धम्म की अंतर्दृष्टि, धम्म में प्रवेश , धम्म की समझ या धम्म में प्रवेश, शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

354 य'अक्खो

355 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, “वे लोग जिनके पास नहीं है”

356 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

357 PTS महामुनि (नामवाचक) के लिए BJTS के साथ महामुने (भाषण) पढ़ना

कटोरा पूरी तरह से, संबुद्ध

फिर धन्यवाद व्यक्त किया।

[हमारे लिए,] नाग-देवता कन्याएँ। (30) [541]

मेरे दिल में जो था उसे समझना

और मेरा मन जो उन पर स्थिर था, गुरु में आनंद ले रहा था,

जब नाग कन्याओं ने उस महान नायक को देखा जिसका नाम सर्वश्रेष्ठ कमल, सर्वज्ञ358 था, खिलते हुए, उस क्षण,

एक नन को महाशक्तियों के साथ दिखाया गया। (31-32) [542-543]

वह बौद्ध भिक्षुणी, जो अत्यंत कुशल थी, ने अनेक प्रकार की महाशक्तियों का प्रदर्शन किया।

बेहद आनंदित और विस्मयचकित।

मैंने शिक्षक से यह कहा: (33) [544]

मैंने भी महाशक्ति देखी

इस खुश [बौद्ध भिक्षुणी] का।359

हीरो, आखिर वो कैसे बन गई?

महाशक्तियों में इतना कुशल? (34) [545]

“[यह नन] महान शक्तियों वाली मेरी वैध पुत्री है, मुख से जन्मी;361 उसने मेरे निर्देशों का पालन किया है, इस प्रकार362

वह महाशक्तियों में इतनी कुशल है363।” (35) [546]

बुद्ध के वचन सुनकर मैं वास्तव में प्रसन्न हुआ और मेरी आकांक्षा जागी।

मैं भी वैसा ही बनूंगा।

महाशक्तियों में इतना कुशल। (36) [547]

मैं बेहद खुश हूँ, मैं प्रसन्न हूँ;

अभी तक न आए भविष्य में, मेरी सर्वोच्च आकांक्षा पूरी हो गई।

मैं उसके समान बनूँगी, हे नेता।” (37) [548]

खाने-पीने से संतुष्टिदायक364

विधानसभा के साथ विश्व का अग्रणी,

358 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे bhikkhunī Sukkā पढ़ता है।

359 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

360 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए बीजेटीएस के साथ y'e keci हत्थपरिकम्मम पढ़ रहे हैं

361 शाब्दिक रूप से, "भविष्य में" (एकवचन)

362 सम्मुखा , अर्थात् “एक साथ”

363 तुयहम , संभवतः बोधिसत्व को संबोधित करते हुए।

364 पठन anubhontī ciraṃ kālaṃ with BJTS for PTS tuyhaŋ vo paricāre ca ("और आप सभी आपकी सेवा करेंगे")

रत्नों से बनी पालकी पर,

एक चमकते मंडप के भीतर, (38) [549]

मैंने विश्व के नेता की पूजा की, और यह भी कि मेरा रंग उन्हीं के रंग का हो।

अरुणा 365 [प्रकार] नीला कमल,

कोबरा का सबसे प्रमुख फूल। (39) [550]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (40) [551]

वहाँ से गिरकर, मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लेकर, मैंने दिया

स्वयं-निर्माण [अकेला बुद्ध]

भिक्षा भोजन कमलों से ढका हुआ। (41) [552]

इसी युग के इक्यावनवें भाग में विपस्सी नामक नेता का उदय हुआ, जो देखने में सुंदर थे।366

वह जिसकी निगाहें हर चीज़ पर टिकी हैं। (42) [553]

बनारस के सर्वोच्च नगर में एक करोड़पति की पुत्री होने के नाते, संबुद्ध को आमंत्रित करना।

विश्व के नेता सभा के साथ, (43) [554]

बहुत दान करने के बाद

मार्गदर्शक को बड़ा दान देना,367 और कमलों से पूजा करना368, मैं

उनके माध्यम से शानदार रंग की कामना की।369 (44) [555]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में

ब्रह्मा के संबंधी, परम प्रसिद्ध, [बुद्ध] जिन्हें कश्यप के नाम से जाना जाता है370

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का जन्म हुआ। (45) [556]

उस समय महान ऋषि का सेवक ही मनुष्यों का शासक था।

365 रीडिंग जटाम्हा, पीटीएस अजाता ("[हम] अजन्मे हैं;" इसका बुरा रूप है अजातो "वह अजन्मा है") के लिए बीजेटीएस के साथ

366 °putta° शाब्दिक अर्थ, "पुत्र"

367 शाब्दिक रूप से, "हर समय हम नहीं हैं..."

368 रीडिंग cikkhallabhūmimasuciṃ with BJTS for PTS cikkhallabhūmiŋ gamanaŋ ("कीचड़ भरे रास्तों पर जाना")

369 reading pubbakammabalena no with BJTS for PTS pubbakammaphalan tato ("पिछले कर्मों के फल के बाद")

370 संसारपथ-नित्तिना

काशी के राजा, जिनका नाम किकी था,

बनारस में, सबसे बड़ा शहर। (46) [557]

मैं उस [राजा की] दूसरी पुत्री थी, जिसका नाम समणगुट्टा था।371

सर्वश्रेष्ठ विक्टर की शिक्षा को सुनना,

मैंने दीक्षा लेने का विकल्प चुना। (47) [558]

हमारे पिता ने इसकी अनुमति नहीं दी;

हम उस दौरान घर पर ही रहे, आरामदायक 372 शाही युवतियाँ

ब्रह्मचर्य के पालन में पूरी लगन से अभ्यास करना।

हजार वर्षों के बीस गुना तक, बुद्ध की सेवा करने के शौकीन,

[राजा की] सात आनंदित पुत्रियाँ। (48-49) [559-560]

समानी और समानगुट्टा,373

भिक्खुनी, भिक्खदायिका, धम्मा और सुधम्मा भी,

और सातवीं संघदायिका, (50) [561]

[अब] मैं, और [भिक्षुणी] खेमा, पटाचारा और कुण्डला,374

किसागोतामी, धम्मदिन्ना,375

और विशाखा सातवां है। (51) [562]

उन कर्मों376 के कारण, जो मैंने अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ किए, अपने मानव शरीर का त्याग करके,

मैं तब तावतिंसा गया। (52) [563]

वहां से गिरकर, एक महान कुल में मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लेना,

मैंने एक अरहंत को एक वस्त्र दिया

कीमती केसरिया रंग के रेशम का।377 (53) [564]

वहाँ से गिरकर, पुनर्जन्म लेकर

371 पाठ vītarāgā bhavāmase with BJTS (and PTS alt.) for PTS n'atthi dāni punabbhavo (“अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा”)

372 t'ato tato

373 बीजेटीएस और पीटीएस में वैकल्पिक रूप से सहा के स्थान पर समा ("बराबर") पढ़ा जाता है ।

374 bodhanatthāya tavaŋ (PTS वैकल्पिक रूप से tava); इस वाक्यांश का अनुवाद "आपके ज्ञान के लिए" भी किया जा सकता है।

[मुझे]"

375 या, जैसा कि ऊपर बताया गया है, "मुझे जानने के लिए"

376 PTS mahā-isi (nom.) के लिए BJTS के साथ mahā - isiṃ (acc.) पढ़ना

377 शाब्दिक रूप से, "महान नायक ने भविष्यवाणी की"

अरिट्ठपुरा में ब्राह्मण 378, तिरीतवच्छ की पुत्री,

मैं आकर्षक था379 उम्मादंती.380 (54) [565]

वहाँ से गिरकर, मेरा जन्म एक साधारण से ग्रामीण परिवार में हुआ। मैं उस समय पहरा देने में व्यस्त था।

अधपके खेत में चावल। (55) [566]

एक एकांत बुद्ध को देखकर, उन्हें भुने हुए धान के पाँच सौ दाने देकर,383 कमलों से आच्छादित,

मैं पाँच सौ पुत्र चाहता था।384 (56) [567]

उन इच्छाओं385 के साथ, उस आत्म-स्वरूप को शहद देने के बाद, मैं वहाँ से गिरकर पुनर्जन्म लिया।

जंगल में कमल में। (57) [568]

काशी राजा की प्रमुख रानी होने के नाते,

मुझे सम्मान और पूजा प्राप्त थी।386

मैंने उसके लिए राजसी राजकुमारों को जन्म दिया।

पाँच सौ से कम नहीं। (58) [569]

जब [मेरे बेटे] जवान हो गए,387 अपने जल क्रीड़ाओं में भाग लेते हुए, गिरे हुए कमल [पंखुड़ियों] को देखकर,

वे 388 अकेले-नेताओं में बदल गए।389 [59] [570]

तब मुझे बहुत दुख हुआ, क्योंकि मैं शोक में डूबा हुआ था।

उन नायकों में से जो मेरे पुत्र थे।390

378 बीजेटीएस इस श्लोक को एक तारांकित फुटनोट में रखता है, यह मानते हुए कि यह इसके कई वैकल्पिक संस्करणों में आता है।

379 बीजेटीएस, पीटीएस से सहमत होते हुए इसे महा-इसे (वोक.) के रूप में प्रस्तुत करता है , लेकिन वैकल्पिक पाठ महा-इसी का संदर्भ देता है।

(नामवाचक), संभवतः बुद्ध द्वारा सुमेधा को "महान ऋषि" कहकर संबोधित करने से परेशान थे।

380 रीडिंग manāpā with BJTS for PTS manasā

381 पढ़ना यथा... पीटीएस यथा के लिए बीजेटीएस के साथ अनुरक्खंति 'सामिनो ... अनुरक्खति सामि नं ("जैसा कि हमारे गुरु रक्षा करते हैं")

382 लिट., "मेरे मन में कोई हलचल नहीं है"

383 यह और इसके बाद के 19 श्लोक (कुल 20 श्लोक) बीजेटीएस में शामिल नहीं हैं। श्लोक (62) और (63) बीजेटीएस [1092]-[1093] में दिखाई देते हैं।

384 शाब्दिक रूप से, "और एक महिला"

385 लिट., "और एक महिला"

386 etesaŋ devedevānaŋ

387 अधिकारं सदा मयहं , शाब्दिक अर्थ: "मेरी सेवा निरंतर है" "मेरी सेवा दैनिक है"

388 या करें: कारती से

389 सधम्म° , प्रकाशित "अच्छी शिक्षा"

390 धम्मेसु सीनानां सदा सद्धम्म-कारिनो

वहाँ से गिरकर, मेरा जन्म इसिगिली के पास एक गाँव में हुआ।391 (60) [571]

जब [मैं], बुद्ध-माता [पुनर्जन्म लेती हूँ,]

फिर मैंने अपनी अच्छी तरह से रक्षा की,392

चावल का दलिया लेकर जा रहा था,393 उसने आठ अकेले नेताओं को गांव में भिक्षा मांगने जाते देखा था,

मुझे अपने पूर्व बेटों की याद आ गई।

फिर दूध की एक धार फूट पड़ी।

मेरे बेटों के प्रति प्रेम के कारण मुझसे। (61-62) [572-573]

और फिर मैंने उन्हें चावल का दलिया खिलाया, अपने हाथों से किए काम से मुझे बहुत संतुष्टि मिली। वहीं से गिरकर मेरा पुनर्जन्म हुआ।

"आनंद" में तैंतीस देवताओं के साथ। (63) [574]

सुख और दुख दोनों का अनुभव करते हुए, जन्म-जन्मांतर तक भटकते हुए, मेरा जीवन ही त्याग दिया गया था।

हे महान नायक, आपके लिए। (64) [575]

इस प्रकार, विभिन्न रूपों में दुख, विभिन्न रूपों में सुख:

जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ, तब मेरा जन्म श्रावस्ती नगर में हुआ।

एक धनी करोड़पति के परिवार में, आरामदायक, सजा हुआ, विभिन्न रत्नों से जगमगाता हुआ, 395

सभी इंद्रिय सुखों से परिपूर्ण। (65-66) [576-577]

मुझे सम्मान और पूजा प्राप्त थी,396

आदरणीय, साथ ही सम्मानित भी। मैंने दीप्तिमान सौंदर्य प्राप्त किया।

कुलों में बहुत सम्मानित। (67) [578]

और मेरी बहुत मांग थी।

391 aṭṭhamāse , BJTS इसे addhamāse ("आधा महीना") पढ़ता है

392 पीटीएस बुहुन एके के लिए बीजेटीएस के साथ बहु 'नेके पढ़ना

393 यह और इसके बाद के समापन श्लोक पीटीएस में नहीं मिलते हैं, और ये असामान्य हैं (हालांकि अद्वितीय नहीं)।

अपदाना के लिए जिसमें व्यक्तिगत कविताएँ आमतौर पर उस चीज़ के साथ समाप्त होती हैं जिसे मैंने "समापन छंद" कहा है (श्लोक)।

85-87) [1023-1025]। दिलचस्प बात यह है कि वे (साथ ही एक और, जो कहीं और भी दोहराया गया है) उसी असामान्य दोहराव के बाद की स्थिति में, नीचे, अपदान #30, यशोधरा के साथ अठारह हजार ननों के श्लोक 57-59 (साथ ही 60) के रूप में दिखाई देते हैं, और उस अपदान के बीजेटीएस संस्करण में भी इसी स्थिति में हैं (श्लोक [1100-1102] साथ ही [1103])।

394 पीटीएस में थेरी शब्द का उल्लेख नहीं है, जिसे मैंने बीजेटीएस से लिया है।

395 रीडिंग s'ūnā vaṇitakibbisā with BJTS (and PTS alt.) for PTS sūnā 'va nītakibbisā ("like a slaughterhouse leading to pap" ?)

396 jegucchaŋ ; BJTS में इसे bībhacchaṃ पढ़ा गया है , जिसका अर्थ लगभग समान है (घृणित, भयानक, डरावना)

सुंदरता के सौभाग्य से, सैकड़ों लोगों द्वारा चाही गई

करोड़पति के बेटों में से [वहाँ रहते हैं]। (68) [579]

अपना घर छोड़ने के बाद,

मैं बेघर हो गया।

जब आठ महीने भी नहीं बीते थे,

मैंने चार [महान] सत्यों को प्राप्त किया। (69) [580]

"397 महाशक्तियों ने मिलकर चार घोड़ों वाला रथ बनाया,

मैं उनके चरणों की पूजा करूंगा

बुद्ध, जगत के स्वामी, तेजस्वी।" (70) [581]

"हे भिक्षुणी, खिले हुए वृक्ष के पास पहुँचकर, तुम उस साला वृक्ष की जड़ों में अकेली रह जाती हो।"

प्राकृतिक सुंदरता में आपका कोई सानी नहीं है।

हे मूर्ख, क्या तुम व्यभिचारी पुरुषों से नहीं डरते?" (71) [582]398

"भले ही एक लाख व्यभिचारी पुरुष हों

अगर कोई इस जगह पर आए और इस तरह से व्यवहार करे, तो मैं बिल्कुल भी भयभीत नहीं होऊंगा, मेरा रोंगटे भी नहीं खड़े होंगे:

मुझे अकेले में मृत्यु से डर नहीं लगता। (72) [583]

मैं, यह [नन] गायब हो रही हूँ; मैं तुम्हारे गर्भ में छिप रही हूँ;

आप मुझे यहाँ खड़े हुए नहीं देख सकते।

आपकी भौहों के बीच [जगह] पर। (73) [584]

अपने मन का स्वामी बनना,399

मैंने 400 महाशक्तियाँ विकसित कर ली हैं; मैं सभी बंधनों से मुक्त हो गया हूँ:

मैं तुमसे नहीं डरता, मित्र। (74) [585]

इंद्रिय सुख तलवारें और खंजर हैं;

हीप्स402 जल्लाद के ब्लॉक। अब मुझे403 आनंद नापसंद है।

जिन इंद्रिय-सुखों की आपने बात की। (75) [586]

हर जगह सुखों का वध हो रहा है;

397 या, बीजेटीएस के साथ विपस्सन्ती को पढ़ते हुए , "जांच करना" "अंतर्दृष्टि लागू करना"

398 शाब्दिक रूप से, "में" "उसमें"

399 चित्तस्मिं वसिभूतस्मिं , शाब्दिक अर्थ, "जब मैं अपने मन का स्वामी (या "नियंत्रण") बन गया"

400 सुभाविता , शाब्दिक अर्थ, "[मेरे द्वारा] सुविकसित" या "सुसंस्कृत" "सुचारू ध्यान"

401 sattisūlūpamā kāmā , शाब्दिक अर्थ, “तलवारें और कटार इंद्रिय सुखों के समान हैं (या उनके लिए उपमाएँ हैं)”

402 khandhā pi adhikuṭṭanā , शाब्दिक अर्थ, “यहाँ तक कि समुच्चय (या आयाम [व्यक्तिगत अस्तित्व के: नाम और रूप, संवेदना, बोध, विन्यास और चेतना])

403 शाब्दिक अर्थ, "अब मुझे नापसंद है"

अंधकार का समूह नष्ट हो गया है। हे दुष्ट, इसे इस प्रकार जान लो:

हे अंत-निर्माता, तुम मारे जा चुके हो।” (76) [587]

विजेता, मेरे 404 गुणों से प्रसन्न होकर, मुझे उस सबसे आगे वाले स्थान पर बिठा दिया।

To405 भीड़406 गाइड ने मुझे [घोषणा की]

“उनमें से सर्वश्रेष्ठ407 जिनके पास महाशक्तियाँ हैं।” (77) [588]

मैंने गुरु की पूजा की है; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था।

भारी सामान नीचे रख दिया गया है।

अस्तित्व से संबंध टूट गए। (78) [589]

जिस कारण से मैं निकला

[मेरे] घर से बेघर होने तक — मैंने [अब] वह उद्देश्य प्राप्त कर लिया है: सभी बंधनों का विनाश। (79) [590]

जब तक वे मेरे लिए मठवासी वस्त्र और भिक्षापात्र ला रहे हैं, तब तक सभी आवश्यक वस्तुएँ और आवास उपलब्ध हो चुके होंगे।

हर जगह से हजारों की संख्या में। (80) [591]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (81) [592]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (82) [593]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (83) [594]

इस प्रकार भिक्खुनी उप्पलावण्णा ने ये श्लोक कहे।

उप्पलावन्ना थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

404 lit., “in the” “in that”

405 लिट., “के बीच”

406 या सभाएँ (यहाँ तक कि सभा के चार भाग भी), जनसमूह, अनुचर

407 seṭṭhaŋ , व्युत्पत्ति के अनुसार उनके पदनाम "करोड़पति" से संबंधित है; BJTS, जो पूरे काम के लिए अधिक विशिष्ट है, aggaṃ पढ़ता है , "[वह] सबसे आगे है"

408 °matīnaŋ , शाब्दिक अर्थ, "उन (स्त्रियों) में से जो वरदान प्राप्त हैं"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 20.पताचार
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
20. पटचारा409

विजेता, पद्ममुत्तरा, सर्वज्ञ थे। वह नेता संसार में प्रकट हुए।

एक लाख युगों बाद। (1) [595]

मेरा जन्म हंसवती में हुआ था।

फिर करोड़पतियों के एक परिवार में, जो विभिन्न रत्नों से जगमगा रहा था,

परम सुख से संपन्न। (2) [596]

उस महान नायक से संपर्क करने के बाद,

मैंने उन्हें धम्म का उपदेश देते हुए सुना ।

फिर, मेरे हृदय में आनंद उत्पन्न हुआ, मैं

शरण के लिए विजेता के पास पहुँचे। (3) [597]

फिर विजेता की प्रशंसा उन लोगों में सबसे श्रेष्ठ के रूप में की गई जो अनुशासन का पालन करते हैं,410

एक बौद्ध भिक्षुणी, विनम्र, तटस्थ,

क्या अनुमति है और क्या नहीं, इस बारे में सावधान रहें। (4) [598]

फिर, आनंद से भरे हृदय से, उस स्थान पर स्थिर होने की कामना करते हुए, दस शक्तियों वाले ईश्वर को आमंत्रित करते हुए,411

विश्व के नेता, सभा के साथ, (5) [599]

एक सप्ताह तक उन्हें भोजन कराने के बाद, उन्हें मठवासी वस्त्र पहनाकर,412 उनके चरणों में सिर झुकाकर,

मैंने ये शब्द [उस बुद्ध से] कहे: (6) [600]

“हे नेता, यदि यह सफल रहा, तो मैं बिल्कुल उसी के समान हो जाऊंगा जिसकी आपने प्रशंसा की थी, हे वीर।”

आज से आठ दिन पहले।" (7) [601]

तब गुरु ने मुझसे कहा: “हे सौभाग्यशाली, डरो मत; निश्चिंत होकर सांस लो। अभी जो भविष्य आया है, उसमें...”

आप उस इच्छित स्थान को प्राप्त कर लेंगे। (8) [602]

409 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

410 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

411 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

412 पठन °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ: "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

एक लाख युगों में, ओक्काका के वंश में उत्पन्न होकर,

जिसका नाम गौतम है

वह दुनिया में शिक्षक होगा। (9) [603]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,

धम्म की वैध संतान, जिसे पटाचारा के नाम से जाना जाता है।

शिक्षक का अनुयायी होगा।” (10) [604]

उस समय अत्यधिक प्रसन्न होकर,

जब तक जीवन रहा, प्रेम से भरे हृदय से, मैंने विक्टर की सेवा की।

विश्व के नेता अपनी सभा के साथ। (11) [605]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (12) [606]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में

ब्रह्मा के संबंधी, परम प्रसिद्ध, [बुद्ध] जिन्हें कश्यप के नाम से जाना जाता है413

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का जन्म हुआ। (13) [607]

उस महान ऋषि का सेवक उस समय काशी का राजा, किकी, मनुष्यों का शासक था।

बनारस में, सबसे बड़ा शहर। (14) [608]

मैं उनकी तीसरी [शाही] पुत्री थी, जिसका नाम समणगुट्टा था।414

सर्वश्रेष्ठ विक्टर की शिक्षा को सुनना,

मैंने दीक्षा लेने का विकल्प चुना। (15) [609]

हमारे पिता ने इसकी अनुमति नहीं दी;

हम उस दौरान घर पर ही रहे, आरामदायक 415 शाही युवतियाँ

ब्रह्मचर्य के पालन में पूरी लगन से अभ्यास करना।

हजार वर्षों के बीस गुना तक, बुद्ध की सेवा करने के शौकीन,

[राजा की] सात आनंदित पुत्रियाँ। (16-17) [610-611]

413, अर्थात् तैंतीस देवता।

414 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

415 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

समानी और समानगुट्टा,416

भिक्खुनी, भिक्खदायिका, धम्मा और सुधम्मा भी,

और सातवीं संघदायिका, (18) [612]

[अब] मैं और उप्पलावण्णा,

खेमा और भद्दा नाम की भिक्षुणी, 417

किसागोतामी, धम्मदिन्ना,418

और विशाखा सातवां है। (19) [613]

उन कर्मों419 के कारण, जो मैंने अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ किए, अपने मानव शरीर का त्याग करके,

मैं तब तावतिंसा गया। (20) [614]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, मैं एक करोड़पति परिवार में पैदा हुआ हूँ, जो धनी, समृद्ध और बेहद अमीर है।

श्रावस्ती में, जो सर्वश्रेष्ठ नगर है। (21) [615]

जब मैं एक युवती बन गई, 420 अपने ही विचारों से अभिभूत होकर, एक आदमी को देखने के बाद

देश, मैं उसके साथ चला गया। (22) [616]

मुझे एक ही पुत्र हुआ था;

दूसरा बच्चा मेरे गर्भ में था। उस समय मैंने यह निश्चय कर लिया था,

मैं माता-पिता से मिलने जाऊंगा। (23) [617]

मेरे पति421 इससे खुश नहीं थे।

फिर, जब वह यात्रा पर था, तो मैं चुपके से घर से अकेले निकल गई।

परम श्रावस्ती जाने के लिए. (24) [618]

फिर मेरे पति423 मेरे पीछे आए;

वह रास्ते में मुझसे मिल गया।

416 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

417 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

418 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

419 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

420 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

421 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

422 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, “[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है),” अर्थात्, “मैं 100वीं दासी थी”

423 puṇṇā ti nāmaŋ

फिर मेरे कर्मों से उपजी प्रसव पीड़ा424

शुरू हुआ, [और वे] बहुत क्रूर थे। (25) [619]

मेरे प्रसव के समय,

वहाँ एक विशाल वर्षा का बादल उठा, और फिर मेरे पति के चले जाने के बाद

घास ढूंढने के लिए, 425 को एक साँप ने मार डाला। (26) [620]

तब दुखी और असहाय,

दर्दनाक प्रसव पीड़ा में,426

रिश्तेदार के घर की ओर जा रहे हैं,427

एक उफनती धारा को देखकर,428 (27) [621]

अपने नवजात शिशु को गोद में लेकर मैं अकेले ही नदी के दूसरे किनारे पर चली गई। अपने नवजात बेटे को दूध पिलाने के बाद,

मेरे दूसरे [बेटे] को पार कराने में मदद करने के लिए, (28) [622]

मैंने मुड़कर देखा; एक मछली पकड़ने वाला पक्षी उड़ गया।

मेरा रोता हुआ बच्चा। [फिर] धारा उसे बहा ले गई, [मेरे] दूसरे [बेटे] को।

मैं दु:ख से व्याकुल हो गया था। (29) [623]

श्रावस्ती नगर जा रहा हूँ,

मुझे पता चला कि मेरे रिश्तेदार मर गए हैं। उस समय मैं बहुत दुखी था, मैंने कहा,

अत्यंत शोक से अभिभूत, (30) [624]

मेरे दोनों बेटे गुजर चुके हैं, मेरे पति सड़क पर ही मृत पाए गए; मेरी माँ, पिता और भाई भी।

एक ही चिता पर जल रहे हैं।" (31) [625]

फिर मैं पीला और दुबला पड़ गया, असहाय हो गया; मैं मानसिक रूप से बहुत उदास था।

उसके बाद, घूमते-फिरते मैंने देखा

[उसे,] मनुष्यों का सारथी। (32) [626]

तब शिक्षक ने मुझसे यह कहा: "दु:ख मत करो, बच्चे; निश्चिंत होकर सांस लो।"

आपको स्वयं की खोज करनी चाहिए;

क्यों व्यर्थ ही खुद को कष्ट दे रहे हो? (33) [627]

424 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

425 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

426 पाठ महामुने (भाषण) पीटीएस तदा मुनि के लिए बीजेटीएस के साथ ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

427 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

428 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

आश्रय देने के लिए कोई पुत्र नहीं है, न पिता हैं और न ही रिश्तेदार।

रिश्तेदारों के पास कोई आश्रय नहीं है

जब अंत-निर्माता द्वारा किसी को पकड़ लिया जाता है।" (34) [628]

ऋषि का भाषण सुनने के बाद, मुझे प्रथम [मार्ग] फल का अहसास हुआ। आगे बढ़ने के कुछ ही समय बाद,

मैंने अपना अरहंत पद प्राप्त किया। (35) [629]

मैंने महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है

[जैसे] "दिव्य कान" तत्व।

मैं दूसरों के दिलों को भी जानता हूँ।

मैंने वही किया जो शिक्षक ने सिखाया था।429 (36) [630]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियों को दूर करते हुए,

मैं 430 शुद्ध हूँ, [मैं] बेदाग हूँ। (37) [631]

फिर मैंने सर्वदर्शी432 की उपस्थिति में संपूर्ण अनुशासन431 सीखा, और मैंने [उनके लिए] उसका पाठ किया।

हर विवरण में सही। (38) [632]

विजेता, मेरे गुणों से प्रसन्न होकर, मुझे उस सर्वोपरि स्थान पर बिठाया: “केवल पाटाचारा ही सर्वोपरि है।”

जो लोग अनुशासन का पालन करते हैं।”434 (39) [633]

मैंने गुरु की पूजा की है; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था।

भारी सामान नीचे रख दिया गया है।

अस्तित्व से संबंध टूट गए। (40) [634]

429 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

430 डांटो , या "वश में किया हुआ"

431 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

432 vimutt'o

433 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

434 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

जिस कारण से मैंने अपना घर छोड़कर बेघर होने का फैसला किया था, वह उद्देश्य अब मैंने प्राप्त कर लिया है:

सभी बंधनों का विनाश। (41) [635]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (42) [636]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (43) [637]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (44) [638]

इस प्रकार भिक्खुनी पातचारा ने ये श्लोक कहे थे।

पटाचारा थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

सारांश:435

एकुपोसथिका, और साथ ही सलादा और तिमोदका, एकासनप्पादा, दीपा, नलामली और गोतमी, खेमा, उप्पलवन्ना और बौद्ध भिक्षुणी पटाचारा।

यहां चार सौ श्लोक हैं।

इसके अलावा छियानवे [श्लोक और भी]।

एकुपोसाथिका अध्याय, द्वितीय
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 4.1-थेरिस सूची >> 21.भद्दा-कुंडलकेसा
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

अपादान: प्रमुख थेरिस (प्रबुद्ध भिक्षुणियाँ) 1-40
21. भद्दा-कुंडलकेश436

कुण्डलकेसा अध्याय, तीसरा

विजेता, पद्ममुत्तरा, हर चीज में पारंगत थे।

435 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

436 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

वह नेता दुनिया में उभरा

एक लाख युगों बाद। (1) [639]

मेरा जन्म हंसवती में हुआ था।

फिर करोड़पतियों के एक परिवार में, जो विभिन्न रत्नों से जगमगा रहा था,

परम सुख से परिपूर्ण। (2) [640]

उस महान नायक से संपर्क करने के बाद,

मैंने उन्हें धम्म का उपदेश देते हुए सुना ।

फिर, मेरे हृदय में आनंद उत्पन्न हुआ, मैं

शरण के लिए विजेता के पास पहुँचे। (3) [641]

फिर महान करुणावान, मार्गदर्शक, पद्ममुत्तरा,

एक नन437 को सबसे आगे [स्थान]438 पर स्थापित किया

जिनकी अंतर्ज्ञान शक्ति तीव्र होती है.439 (4) [642]

यह सुनकर, अत्यंत प्रसन्न होकर, मैंने महान ऋषि को दान दिया और उनके चरणों में सिर झुकाया।

मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। (5) [643]

महान नायक ने इसकी पुष्टि की: “भाग्यशाली, तुम जो भी चाहोगे उसमें सफलता प्राप्त करोगे।”

खुश रहो, [तुम्हें] संतुष्टि महसूस होनी चाहिए। (6) [644]

एक लाख युगों में, ओक्काका के वंश में उत्पन्न होकर,

जिसका नाम गौतम है

वह दुनिया में शिक्षक होगा। (7) [645]

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी , धर्म की वैध संतान, जिसका नाम भद्दाकुंडलकेसा है।

तुम शिक्षक के अनुयायी बनोगे।” (8) [646]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (9) [647]

437 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

438 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्या [बुद्ध] की व्यवस्था में"

439 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

440, अर्थात् तैंतीस देवता।

441 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

वहाँ से गिरकर मैं यमराज के पास गया,442

[और] फिर मैं तुसिता गया, और फिर निम्मानारती गया,443

और फिर वासावत्ती शहर। (10) [648]

जिस भी स्थान पर मेरा पुनर्जन्म होता है, उस कर्म के अनुसार, हर जगह मुझे प्रधान रानी बनाया जाता है।

[वहाँ] राजाओं के [देवताओं के]। (11) [649]

वहाँ से पतित होकर, मानव अवस्था में, [हर जगह] मुझे उन राजाओं की प्रधान रानी बनाया गया जो [कानून का] पहिया घुमाते हैं।

और [शक्तिशाली] क्षेत्रीय राजा। (12) [650]

देवताओं और मनुष्यों दोनों के बीच सफलता का अनुभव करने के बाद, हर जगह सुखी होने के कारण,

मैंने युगों तक पुनर्जन्म लिया।444 (13) [651]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में,

ब्रह्मा के संबंधी, परम प्रसिद्ध, [बुद्ध] जिन्हें कश्यप के नाम से जाना जाता है445

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का जन्म हुआ। (14) [652]

उस महान ऋषि का सेवक उस समय काशी का राजा, किकी, मनुष्यों का शासक था।

बनारस में, सबसे बड़ा शहर। (15) [653]

मैं उस राजा की चौथी पुत्री थी, जो भिक्खदायिका के नाम से प्रसिद्ध थी।446

सर्वश्रेष्ठ विक्टर की शिक्षा को सुनना,

मैंने दीक्षा लेने का विकल्प चुना। (16) [654]

हमारे पिता ने इसकी अनुमति नहीं दी;

हम उस दौरान घर पर ही रहे, आरामदायक 447 शाही युवतियाँ

ब्रह्मचर्य के पालन में पूरी लगन से अभ्यास करना।

हजार वर्षों के बीस गुना के लिए,

442 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

443 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, बीजेटीएस में दिखाई देते हैं लेकिन पीटीएस में नहीं।

445 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

446 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

447 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

बुद्ध की सेवा करने का शौकीन,

[राजा की] सात आनंदित पुत्रियाँ। (17-18) [655-656]

समानी और समानगुट्टा,448

भिक्खुनी, भिक्खदायिका, धम्मा और सुधम्मा भी,

और सातवीं संघदायिका, (19) [657]

[अब] उप्पलवन्ना, खेमा [भी] पटाचारा और मैं, किसागोतमी, धम्मदिन्ना,449

और विशाखा सातवां है। (20) [658]

उन कर्मों (450) के कारण, जो मैंने अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ किए, अपने मानव शरीर का त्याग करके,

मैं तब तावतिंसा गया। (21) [659]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, गिरिब्बाजा में, 451 सर्वश्रेष्ठ शहर,

मैं अमीर करोड़पतियों के परिवार में पैदा हुआ था।452

जब मैं एक युवती बन गई थी,453 (22) [660]

मैं एक चोर की ओर आकर्षित हुआ जिसे फांसी के लिए ले जाया जा रहा था,454

मेरे पिता ने एक हजार का भुगतान किया।

उसे फांसी से मुक्त करा दिया। (23) [661]

उसके बाद, मेरे विवेक को समझते हुए, [मेरे पिता] ने मुझे उस [चोर] को सौंप दिया। मैं उसके लिए भरोसेमंद था, [और]

अत्यंत दयालु [और] मित्रवत। (24) [662]

उसने मेरे गहनों के लालच में आकर,455

वह शत्रु बुरे इरादे से,456

मुझे चोरों के कगार पर ले गया457

448 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

449 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, “[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है),” अर्थात्, “मैं 100वीं दासी थी”

450 puṇṇā ti nāmaŋ

451 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

452 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

453 पाठ महामुने (भाषण) बीजेटीएस के साथ पीटीएस तदा मुनि ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

454 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

455 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

456 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

457 डांटो , या "वश में किया हुआ"

पहाड़ पर, हत्या की साजिश रचते हुए। (25) [663]

फिर सत्तुका तक फैला हुआ,458

हाथ जो अच्छी तरह से एक साथ दबाए हुए थे,459

अपनी सांस की रक्षा करना।

मैंने उससे ये शब्द कहे [तभी] (26) [664]

यह सोने का कंगन, जिसमें कई मोती और रत्न जड़े हैं, महोदय, इसे आप सब अपने साथ ले जाइए;

घोषणा करो कि [मैं तुम्हारा] बिस्तर-दास हूँ।"460 (27) [665]

“इसे उतार दो, हे सुंदरी, और अधिक दुःख मत करो; मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता।”

वह धन जिसे मैंने हत्या करके प्राप्त नहीं किया। (28) [666]

जब तक मुझे याद है,

जब से मैंने विवेक प्राप्त किया है,461

मैंने कोई और विकल्प स्वीकार नहीं किया है

मुझसे भी अधिक प्रिय। (29) [667]

“इधर आओ! तुम्हें गले लगाने के बाद, [बस एक और] परिक्रमा।”

और 462 के बाद अब ऐसा नहीं होगा

आपके और मेरे बीच संभोग।"463 (30) [668]

हर परिस्थिति में बुद्धिमान होना ही मनुष्य का काम नहीं है; उसे इधर-उधर ध्यान देना चाहिए।

स्त्री ही बुद्धिमान है। (31) [669]

हर परिस्थिति में बुद्धिमान होना ही सही नहीं है;

458 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

459 vimutt'o

460 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

461 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

462 त'अŋ...'गुण'सं'अ'य'अŋ

463 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

तेज सोच और अच्छी रणनीति वाला

स्त्री ही बुद्धिमान है। (32) [670]

बहुत जल्दी, पलक झपकते ही, मुझे एक चतुर तरकीब सूझी: जैसे कोई हिरण शक्तिशाली धनुष से शिकार हो जाता है,

सत्तुका का वध मैंने किया। (33) [671]

जो उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों को जल्दी समझने में विफल रहता है,

उस मूर्ख चोर की हत्या कर दी जाती है।

पर्वत के गर्भ में। (34) [672]

जो व्यक्ति उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों को शीघ्रता से समझने में विफल नहीं होता,

वह सांसारिक बंधनों से मुक्त हो चुकी है;

मैं तब सत्तुका से ऐसा ही था। (35) [673]

फिर मैंने उसे, सत्तुका को, गिरा दिया

464 से एक खतरनाक पहाड़ी सड़क। उपस्थिति में आना

कुछ सफेद वस्त्रधारी [प्रशिक्षुओं] के साथ, मैं आगे बढ़ा। (36) [674]

फिर 465 चिमटियों का इस्तेमाल करके मेरे सारे बाल नोचने के बाद, कुछ ही समय में मेरा दीक्षा संस्कार हो गया।

उन्होंने अपनी परंपरा का विस्तार से वर्णन किया। (37) [675]

फिर जब मैंने यह सब जान लिया, तो मैं अकेले जाकर बैठ गया और उस परंपरा के बारे में सोचने लगा।

[तब] एक कुत्ता एक इंसान का हाथ लाया, उसे चबाकर अलग कर दिया,466 और मेरे पास गिराने के बाद भाग गया।

उस सड़े हुए हाथ को देखकर, मैं

इसे ध्यान के लिए ले लिया।467 (38-39) [676-677]

फिर गहरी भावना उत्पन्न करते हुए, मैंने अपने सहधर्मियों से पूछा।

उन्होंने कहा: "शाक्यन [बौद्ध] भिक्षुओं

464 #23, ऊपर

खंड 465 में कहा गया है, " बीस करोड़ लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है धम्म की अंतर्दृष्टि, धम्म में प्रवेश , धम्म की समझ या धम्म में प्रवेश, शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

466 y'akkho

467 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, "जिनके पास नहीं है"

अपने प्रश्नों के उत्तर जानो। (40) [678]

“मैं बुद्ध के अनुयायियों से जाकर इसका अर्थ पूछूंगा।” वे सब मुझे अपने साथ ले गए।

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में। (41) [679]

उन्होंने मुझे धम्म का उपदेश दिया : विचार-क्षेत्रों और तत्वों में व्याप्त ढेर; गुरु ने अप्रियता का उपदेश दिया।

अनित्यता, रोग, अनात्म। (42) [680]

उनके धर्म को सुनने के बाद , मैं

[तब] मैंने “ धम्म दृष्टि” को शुद्ध किया । उत्तम शिक्षा में पारंगत होकर, मैंने दीक्षा लेने के लिए आगे बढ़ने का अनुरोध किया।468

उस समय उन्होंने मुझसे कहा: “आओ, भाग्यशाली,” नेता ने कहा।

फिर पूर्णतः पुरोहित होने के बाद, मैं

थोड़ा सा पानी देखा। (43-44) [681-682]

अपने पैरों को साफ करते हुए, यह समझते हुए कि

कुछ पानी उछला, कुछ नीचे गिरा।

तब मुझे यह एहसास हुआ,

“सभी सशर्त चीजें ऐसी ही होती हैं।” (45) [683]

तब मेरा हृदय पूर्णतः मुक्त हो गया, बिना किसी आसक्ति के।470

फिर विजेता ने मुझे सबसे आगे घोषित किया

जिनकी अंतर्ज्ञान शक्ति तीव्र होती है। (46) [684]

मैंने महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है

[जैसे] "दिव्य कान" तत्व।

मैं दूसरों के दिलों को भी जानता हूँ।

मैंने वही किया जो शिक्षक ने सिखाया था।471 (47) [685]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियों को दूर करते हुए,

मैं 472 शुद्ध हूँ, [मैं] बेदाग हूँ। (48) [686]

मैंने गुरु की पूजा की है;

468 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

469 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

470 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे भिक्खुनी सुक्का पढ़ता है।

471 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

472 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए बीजेटीएस के साथ आप केसी हत्थपरिकम्मम पढ़ रहे हैं

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था।

भारी सामान नीचे रख दिया गया है।

अस्तित्व से संबंध टूट गए। (49) [687]

जिस कारण से मैंने अपना घर छोड़कर बेघर होने का फैसला किया था, वह उद्देश्य अब मैंने प्राप्त कर लिया है:

सभी बंधनों का विनाश। (50) [688]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा ज्ञान विशाल473 और त्रुटिहीन है,

महान ऋषि की महिमा के माध्यम से। (51) [689]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (52) [690]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (53) [691]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (54) [692]

इस प्रकार भिक्खुनी भद्दा-कुंडलकेसा ने ये श्लोक कहे थे।

भद्दा-कुंडलकेसा थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 22.किसागोतामी
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

22. किसागोतमी474

विजेता, पद्ममुत्तरा, सर्वज्ञ थे। वह नेता संसार में प्रकट हुए।

एक लाख युगों बाद। (1) [693]

तब मैं हंसवती में रहता था।

एक साधारण परिवार में जन्म।

473 शाब्दिक रूप से, "भविष्य में" (एकवचन)

474 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

सर्वश्रेष्ठ पुरुषों के पास पहुँचने पर,475

मैं उसके पास शरण लेने गया। (2) [694]

और मैंने उनके धम्म को सुना , जिसमें चार [महान] सत्य समाहित थे, जो शहद के समान अत्यंत मधुर थे।

खुशी और मानसिक शांति लाता है। (3) [695]

एक समय था जब नायक, [बुद्ध,]

उसे उस प्रमुख स्थान पर रखा जा रहा था

एक बौद्ध भिक्षुणी जो खुरदुरे वस्त्र पहनती थी;476

उन्होंने [उसकी] प्रशंसा की, परम पुरुष। (4) [696]

काफी आनंद उत्पन्न करते हुए,

उस बौद्ध भिक्षुणी के सद्गुणों के बारे में सुनकर, जो बुद्ध की सेवा कर रही थी,

शक्तियों और सामर्थ्य के अनुसार, (5) [697]

उस वीर ऋषि को प्रणाम करते हुए, मैंने उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा की।

संबुद्ध ने [उसकी] स्वीकृति दी।

उस [सर्वोच्च] स्थान की प्राप्ति, (6) [698]

“एक लाख युगों में, ओक्काका के वंश से उत्पन्न होकर,

जिसका नाम गौतम है

वह दुनिया में शिक्षक होगा। (7) [699]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,

धम्म की वैध संतान, जिसका नाम किसागोतमी है।

शिक्षक का अनुयायी होगा।” (8) [700]

उस समय अत्यधिक प्रसन्न होकर,

जब तक जीवन रहा, प्रेम से भरे हृदय से, मैंने विक्टर की सेवा की।

गाइड, आवश्यक शर्तें प्रदान करता है। (9) [701]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (10) [702]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में,

ब्रह्मा के संबंधी, परम प्रसिद्ध व्यक्ति

475 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

476 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

[बुद्ध] जिन्हें कश्यप477 के नाम से जाना जाता है

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का जन्म हुआ। (11) [703]

उस महान ऋषि का सेवक उस समय काशी का राजा, किकी, मनुष्यों का शासक था।

बनारस में, सबसे बड़ा शहर। (12) [704]

मैं उनकी शाही बेटी थी।

धम्मा के नाम से सुप्रसिद्ध।478

सर्वश्रेष्ठ विक्टर की शिक्षा को सुनना,

मैंने दीक्षा लेने का विकल्प चुना। (13) [705]

हमारे पिता ने इसकी अनुमति नहीं दी;

हम उस दौरान घर पर ही रहे, आरामदायक 479 शाही युवतियाँ

ब्रह्मचर्य के पालन में पूरी लगन से अभ्यास करना।

हजार वर्षों के बीस गुना तक, बुद्ध की सेवा करने के शौकीन,

[राजा की] सात आनंदित पुत्रियाँ। (14-15) [706-707]

समानी और समानगुट्टा,480

भिक्खुनी, भिक्खदायिका, धम्मा और सुधम्मा भी,

और सातवीं संघदायिका, (16) [708]

[अब] खेमा, उप्पलवन्ना, पटाचारा और कुंडाला,481

[भिक्षुणी] धम्मदिन्ना और मैं

और विशाखा सातवां है। (17) [709]

उन कर्मों (482) के कारण, जो मैंने अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ किए, अपने मानव शरीर का त्याग करके,

मैं तब तावतिंसा गया। (18) [710]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, मेरा जन्म एक करोड़पति परिवार में हुआ है।

गरीब, धनहीन, अपंग

477 रीडिंग °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ: "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

478, अर्थात् तैंतीस देवता।

479 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

480 यह पीटीएस भिक्षुणी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

481 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

482 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

[लेकिन] एक धनी कुल में शादी कर ली। (19) [711]

मेरे पति को छोड़कर, बाकी सब मेरी तरफ इशारा करते हुए कह रहे हैं, "बेचारी!" लेकिन 484 के बाद मैं गर्भवती हो गई।

तब मुझे उन सभी से प्यार मिला। (20) [712]

जब वह भाग्यशाली छोटा लड़का [मेरा,]

कोमल शरीर वाला, आरामदायक,485

मुझे उतना ही प्रिय जितना मेरी अपनी सांस।

फिर यम के वश में आ गया,486 (21) [713]

दु:ख से व्याकुल, अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए, आँखों में आँसू लिए, मुँह से रोते हुए, उस लड़के के मृत शरीर को ढोते हुए, मैं विलाप करते हुए घूम रहा हूँ। (22) [714]

फिर एक डॉक्टर द्वारा जांच की गई।

सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक से संपर्क करना,488

मैंने कहा, "मुझे दवा दो।"

मेरे बेटे को वापस जीवन में लाने के लिए, महोदय।"489 (23) [715]

विजेता, जो विचित्र भाषण में कुशल था,490 ने कहा, “मेरे लिए एक सफेद सरसों का बीज लाओ,491 जो किसी भी घर से इकट्ठा किया गया हो।”

जहां [लोगों] की मृत्यु ज्ञात नहीं है।” (24) [716]

फिर श्रावस्ती जाकर, वहाँ ऐसा कोई घर न देखकर,

मुझे सफेद सरसों के बीज कहाँ मिल सकते हैं?

तब मुझे जागरूकता प्राप्त हुई। (25) [717]

अपने बच्चे के शव को फेंककर मैं विश्व नेता के पास गई। दूर से मुझे देखकर

मधुर स्वर वाली492 [तब] ने [मुझसे] कहा। (26) [718]

483 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

484 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

485 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

486 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

487 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, “[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है),” अर्थात्, “मैं 100वीं दासी थी”

488 puṇṇā ti nāmaŋ

489 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

490 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

491 पाठ महामुने (भाषण) बीजेटीएस के साथ पीटीएस तदा मुनि ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

492 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

"सौ साल के जीवन से बेहतर,

चीजों के उत्थान और पतन को न देखना, एक दिन के लिए जीना है।

चीजों को उठते-गिरते देखना। (27) [719]

न तो गाँव की स्थिति493, न ही कस्बे की, और न ही किसी एक कबीले की स्थिति।

यही पूरी दुनिया की हालत है।

इसके देवताओं के साथ: जो कुछ भी है उसकी अस्थिरता।" (28) [720]494

उन [दो] श्लोकों को सुनकर मैंने अपनी " धम्म दृष्टि" को शुद्ध किया।

फिर महान शिक्षा में सीखा,

मैं बेघर हो गया। (29) [721]

फिर जो व्यक्ति प्रस्थान कर चुका था, वह सेवा कार्य में लगा हुआ था,495

कुछ ही समय बाद,

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (30) [722]

मैंने महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है

[जैसे] "दिव्य कान" तत्व।

मैं दूसरों के दिलों को भी जानता हूँ।

मैंने वही किया जो शिक्षक ने सिखाया था।496 (31) [723]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियों को दूर करते हुए,

मैं 497 शुद्ध हूँ, [मैं] बेदाग हूँ। (32) [724]

मैंने गुरु की पूजा की है; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था।

भारी सामान नीचे रख दिया गया है।

अस्तित्व से संबंध टूट गए। (33) [725]

जिस कारण से मैंने अपना घर छोड़कर बेघर होने का फैसला किया था, वह उद्देश्य अब मैंने प्राप्त कर लिया है:

सभी बंधनों का विनाश। (34) [726]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

493 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

494 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

495 डांटो , या "वश में किया हुआ"

496 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

497 vimutt'o

महान ऋषि की महिमा के कारण मेरा ज्ञान विशाल498 और त्रुटिहीन है। (35) [727]

मैंने खुरदुरे वस्त्र पहने हैं, मेरी संघा भी खुरदुरे वस्त्रों से बनी है।

[एक कफ़न उठाया गया और] सड़क के किनारे एक कब्रिस्तान से लाया गया। (36) [728]

विजेता, मेरे गुणों से प्रसन्न होकर, मार्गदर्शक ने भीड़ में मुझे सबसे आगे रखा।

जो खुरदुरे वस्त्र पहनते हैं। (37) [729]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (38) [730]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (39) [731]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (40) [732]

इस प्रकार भिक्खुनी किसागोतमी ने ये श्लोक कहे थे।

किसागोतमी थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

498 सिंगी-निक्खा-सवण्णो , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या वजन भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

499 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-

12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

23. धम्मदिन्ना501

विजेता, पद्ममुत्तरा, सर्वज्ञ थे। वह नेता संसार में प्रकट हुए।

एक लाख युगों बाद। (1) [733]

तब मैं हंसवती में रहता था।

[जन्म] एक साधारण परिवार में हुआ। मैंने दूसरों के लिए काम किया, नैतिकता से प्रेरित, बुद्धिमान। (2) [734]

पद्ममुत्तरा बुद्ध के प्रमुख अनुयायी सुजाता मठ से प्रस्थान करते हुए।

भिक्षा-भोजन के लिए भीख मांग रहा था। (3) [735]

मैं उस समय पानी ढोने वाला था, और घड़ा लेकर जाता था।

उसे देखकर मैंने उसे थोड़ा सा सूप दिया।

[अपने] हाथों से बहुत प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ। (4) [736]

[मेरी बात मानकर]

वह वहाँ बैठ गया और उसका आनंद लेने लगा। उसे उस घर तक ले जाने के बाद,

मैंने उसे कुछ ठोस भोजन दिया। (5) [737]

तब मेरे मालिक,502 प्रसन्न होकर, मुझे अपनी बहू बना लिया। अपनी सास के साथ जाते हुए,

मैंने संबुद्ध की पूजा की। (6) [738]

फिर उन्होंने एक बौद्ध भिक्षुणी की प्रशंसा की जो धम्म की प्रचारक थीं ।

उन्होंने उसे उस सर्वोपरि स्थान पर बिठाया;

यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। (7) [739]

फिर, सुशोभित विश्व नेता को सभा के साथ आमंत्रित करके, उन्हें एक बड़ा दान दिया गया।

मैं उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता था। (8) [740]

तब उस दूर जा चुके व्यक्ति ने मुझसे कहा,

501 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

502 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

झांझ की मधुर ध्वनि के साथ:503

"हे मेरी सेवा करने वाले, हे सभा के सेवक,

हे अच्छे उपदेश के श्रोता, हे धर्मनिष्ठ, हे सौभाग्यशाली, हर्षित हो जाओ:

तुम अपनी इच्छा का फल प्राप्त करोगे। (9-10) [741-742]

एक लाख युगों में, ओक्काका के वंश में उत्पन्न होकर,

जिसका नाम गौतम है

वह दुनिया में शिक्षक होगा। (11) [743]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,

धम्म की वैध संतान,

जिसका नाम धम्मदिन्ना होगा, वह गुरु का अनुयायी होगा।" (12) [744]

उस समय अत्यधिक प्रसन्न होकर,

जब तक जीवन रहा, प्रेम से भरे हृदय से, मैंने विक्टर की सेवा की।

गाइड, आवश्यक शर्तें प्रदान करता है। (13) [745]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (14) [746]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में

ब्रह्मा के संबंधी, परम प्रसिद्ध, [बुद्ध] जिन्हें कश्यप505 के नाम से जाना जाता है।

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का जन्म हुआ। (15) [747]

उस महान ऋषि का सेवक उस समय काशी का राजा, किकी, मनुष्यों का शासक था।

बनारस में, सबसे बड़ा शहर। (16) [748]

मैं उनकी छठी [शाही] पुत्री थी।

सुधम्मा नाम से प्रसिद्ध।506

सर्वश्रेष्ठ विक्टर की शिक्षा को सुनना,

मैंने दीक्षा लेने का विकल्प चुना। (17) [749]

हमारे पिता ने इसकी अनुमति नहीं दी;

503 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

504 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मवास"

505 यानी तैंतीस देवता।

506 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

हम उस दौरान घर पर ही रहे, आरामदायक 507 शाही युवतियाँ

ब्रह्मचर्य के पालन में पूरी लगन से अभ्यास करना।

हजार वर्षों के बीस गुना तक, बुद्ध की सेवा करने के शौकीन,

[राजा की] सात आनंदित पुत्रियाँ। (18-19) [750-751]

समानी और समानगुट्टा,508

भिक्खुनी, भिक्खदायिका, धम्मा और सुधम्मा भी,

और सातवीं संघदायिका, (20) [752]

[अब] खेमा उप्पलवन्ना, पटाचारा और कुंडला, 509 [किसा] गोतमी, मैं भी,

और विशाखा सातवां है। (21) [753]

उन कर्मों (510) के कारण, जो मैंने अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ किए, मैंने अपने मानव शरीर का त्याग कर दिया।

मैं तब तावतिंसा गया। (22) [754]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, मैं एक करोड़पति परिवार में, धनी, हर सुख से संपन्न, राजगीर में, एक उत्कृष्ट शहर में जन्म लेता हूँ। (23) [755]

जब मैं युवती बन गई,511 सौंदर्य के गुण से युक्त, दूसरे [अच्छे] कुल में विवाह किया,512

मैं सुख से परिपूर्ण होकर निवास करता था। (24) [756]

विश्व शरणस्थल पर आकर, बुद्ध के माध्यम से [उनके] धम्म -उपदेश को सुनकर,513 मेरे पति ने एक अनित्य का फल प्राप्त किया। (25) [757]

फिर मुझे अनुमति मिलने पर मैं भी बेघर हो गया।

507 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

508 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

509 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

510 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

511 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

512 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

513 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

कुछ ही समय बाद,

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (26) [758]

फिर एक आम आदमी मेरे पास आया और उसने मुझसे कई गहरे और सूक्ष्म प्रश्न पूछे;

मैंने उन सभी को [उसे] समझाया। (27) [759]

विजेता, मेरे गुणों से प्रसन्न होकर, मुझे बौद्ध भिक्षुणी और धम्म प्रचारक के रूप में उस सर्वोपरि स्थान पर स्थापित किया ।

मुझे कोई और ऐसा व्यक्ति नहीं दिखता जो

धम्मदिन्ना के समान बुद्धिमान;

इसलिए आपको भिक्षुओं पर विचार करना चाहिए। मैं वास्तव में एक बुद्धिमान महिला हूँ।

जिस पर नेता को दया आई। (28-29) [760-761]

मैंने गुरु की पूजा की है; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था।

भारी सामान नीचे रख दिया गया है।

अस्तित्व से संबंध टूट गए। (30) [762]

जिस कारण से मैं अपने घर से निकलकर बेघर हो गया था — मैंने अब वह उद्देश्य प्राप्त कर लिया है: सभी बंधनों का विनाश। (31) [763]

मैंने महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है

[जैसे] "दिव्य कान" तत्व।

मैं दूसरों के दिलों को भी जानता हूँ।

मैंने वही किया जो शिक्षक ने सिखाया था।516 (32) [764]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियों को दूर करते हुए,

मैं 517 शुद्ध हूँ, [मैं] बेदाग हूँ। (33) [765]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (34) [766]

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध की उपस्थिति में होना

514 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

515 puṇṇā ti nāmaŋ

516 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

517 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

यह मेरे लिए बहुत अच्छी बात थी।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (35) [767]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (36) [768]

इस प्रकार भिक्खुनी धम्मदिन्ना ने ये श्लोक कहे।

धम्मदिन्ना थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 24.सकुला
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

24. सकुला 518

विजेता, पद्ममुत्तरा, सर्वज्ञ थे। वह नेता संसार में प्रकट हुए।

एक लाख युगों बाद। (1) [769]

सभी प्राणियों के कल्याण, सुख और लाभ के लिए,

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता, शुद्ध नस्ल का आदमी, 519

520 में [दुनिया] में [अपने] देवताओं के साथ आया। (2) [770]

सर्वोत्कृष्ट यश प्राप्तकर्ता,521 विजेता, भाग्यशाली,522 प्रशंसा से सुशोभित,523 समस्त विश्व के लिए विजेता,

व्यापक रूप से ज्ञात 524 सभी दिशाओं में 525, (3) [771]

संदेह का नाश करने वाला,526 अनिश्चितता से परे जाने वाला,527 इरादों से भरे मन वाला,528

518 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

519 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

520 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

521 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

522, अर्थात् तैंतीस देवता।

523 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

524 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

525 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

526 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

527 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

528 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

सर्वोच्च जागृति प्राप्त की।529 (4) [772]

अल्टीमेट मैन,530 प्रोजेनिटर531

उस पथ का जो अभी तक बनना बाकी था,532

घोषित किया [जो] अघोषित था, उत्पन्न किया [जो] अउत्पादित था। (5) [773]

पथ-ज्ञाता,533 पथ-समझदार,534

पथ-प्रचारक,535 पुरुषों का बैल, पथ-कुशल, शिक्षक, [बुद्ध,] सर्वश्रेष्ठ सारथी थे।536 (6) [774]

महान करुणावान शिक्षक, मार्गदर्शक, धम्म का उपदेश दे रहे थे , सभी जीवित प्राणियों को जीवन प्रदान कर रहे थे।

भ्रम के दलदल में डूबा हुआ। (7) [775]

मैं हंसवती में पैदा हुआ था, सभी क्षत्रियों को प्रसन्न करते हुए;537

मैं तब बहुत खूबसूरत थी।

धन के लिए निर्धारित,538 प्रिय, तेजस्वी। (8) [776]

मैं एक मनमोहक बेटी थी

महान राजा आनंद की पुत्री और इस प्रकार, दूसरी माता से सगी बहन।539

उसका नाम पदुमुत्तरा है। (9) [777]

मैं अपने सभी आभूषणों से सजी हुई, राजसी युवतियों के साथ, महान नायक के पास जा रही थी।

मैंने उन्हें धम्म का उपदेश देते हुए सुना । (10) [778]

और फिर, भीड़ के बीच,

[संपूर्ण] विश्व के गुरु ने 540 प्रशंसा की

529 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

530 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज।

531 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, “[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है),” अर्थात्, “मैं 100वीं दासी थी”

532 puṇṇā ti nāmaŋ

533 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

534 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

535 पाठ महामुने (भाषण) बीजेटीएस के साथ पीटीएस तदा मुनि ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

536 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

537 या गिरिब्बाजा, यहाँ राजगाहन

538 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

539 डांटो , या "वश में किया हुआ"

540 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

एक बौद्ध भिक्षुणी जिसके पास "दिव्य दृष्टि" है।

[और] उसे उस सबसे आगे वाले स्थान पर रखा। (11) [779]

यह सुनकर मुझे खुशी हुई;

शिक्षक को दान देने के बाद,

और संबुद्ध की पूजा करना,

मैंने “दिव्य दृष्टि” की आकांक्षा की। (12) [780]

फिर गुरु ने मुझसे कहा: “हे प्रसन्न जन, तुम्हारी कामना सर्वस्व सिद्ध हो; तुम्हें तुम्हारी आकांक्षा के अनुसार फल मिलेगा।”

धम्म के लिए भिक्षा का फल -लैंप.541 (13) [781]

एक लाख युगों में, ओक्काका के वंश में उत्पन्न होकर,

जिसका नाम गौतम है

वह दुनिया में शिक्षक होगा। (14) [782]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,

धम्म की वैध संतान, जिसका नाम सकुला है।

शिक्षक का अनुयायी होगा।" (15) [783]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (16) [784]

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में

ब्रह्मा के संबंधी, परम प्रसिद्ध, [बुद्ध] जिन्हें कश्यप के नाम से जाना जाता है542

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का जन्म हुआ। (17) [785]

मैं उस समय एक भिक्षु था, अकेले ही अपना जीवन व्यतीत करता था। भीख मांगते हुए इधर-उधर भटकते हुए,

मुझे कुछ 543 तिल का तेल प्राप्त हुआ। (18) [786]

541 vimutt'o

542 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

543 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-पंक्ति वाले छंदों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मुझे इस "श्लोक" को छंदबद्ध रूप से समझने में कठिनाई हो रही है। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो अनुवाद के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो यह दर्शाता है कि पीटीएस के पाठ में सात शब्दांश या बीजेटीएस के

पाठ में आठ शब्दांश अपेक्षाकृत शुरुआती दौर में लुप्त हो गए होंगे (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी मिलने वाले श्लोक रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है।

उस तेल से दीपक जलाकर, एकदम शांत मन से, मैं हर रात ध्यान देता था।

द्विपादों में सर्वश्रेष्ठ का मंदिर 544। (19) [787]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (20) [788]

मैं जिस भी स्थान पर पुनर्जन्म लेता हूँ, उस कर्म के अनुसार, मैं जहाँ भी भटकता हूँ,

जब मैं वहां से चला जाता हूँ, तो वहाँ बड़े-बड़े लैंप होते हैं। (21) [789]

किसी भी दीवार को पार करके, किसी भी चट्टान को पार करके, पहाड़ की चोटी के पार जाकर,

मैं जो चाहूँ देख सकता हूँ:

यही दीपक देने का फल है। (22) [790]

मैं एक ऐसा व्यक्ति हूं जिसकी आंखें पवित्र हैं;

मैं अपनी प्रसिद्धि के बल पर आगे बढ़ रहा हूँ; मैं निष्ठावान, बुद्धिमान और सचेत हूँ:

यही दीपक देने का फल है। (23) [791]

और अब, अपने अंतिम पुनर्जन्म में, मैं ब्राह्मण कुल में जन्म लेता हूँ।

अनाज और प्रचुर धन से समृद्ध,

राजा द्वारा प्रसन्न और सम्मानित545। (24) [792]

मैं हर तरह से परिपूर्ण था, सभी आभूषणों से सुशोभित था। [एक बार] खिड़की में खड़े होकर मैंने उस सुदाग़ व्यक्ति को देखा।

शहर का द्वार, यश की बुलंदियों से जगमगाता हुआ, देवताओं और लोगों द्वारा सम्मानित, [महान] चिह्नों से सुशोभित,

अस्सी छोटे चिह्नों से संपन्न। (25-26) [793-794]

प्रसन्नता से भरे और रोमांचित हृदय के साथ, मैंने पुरोहित बनने का निर्णय लिया।

कुछ ही समय बाद,

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (27) [795]

जो मिलकर चार अलग-अलग पैर बनाते हैं।

544 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

545 शाब्दिक रूप से, "पूजा की"

546 #23, ऊपर

मैंने महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है

[जैसे] "दिव्य कान" तत्व।

मैं दूसरों के दिलों को भी जानता हूँ।

मैंने वही किया जो शिक्षक ने सिखाया था।547 (28) [796]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियों को दूर करते हुए,

मैं 548 शुद्ध हूँ, [मैं] बेदाग हूँ। (29) [797]

मैंने गुरु की पूजा की है; मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था।

भारी सामान नीचे रख दिया गया है।

अस्तित्व से संबंध टूट गए। (30) [798]

जिस कारण से मैं अपने घर से निकलकर बेघर हो गया था — मैंने अब वह उद्देश्य प्राप्त कर लिया है: सभी बंधनों का विनाश। (31) [799]

फिर अत्यंत दयालु

एक व्यक्ति ने मुझे उस सर्वोच्च स्थान पर नियुक्त किया:

सर्वोच्च पुरुष549 [ने कहा,] "सकुला

'दिव्य दृष्टि' [ननों] में सबसे आगे है। (32) [800]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (33) [801]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (34) [802]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (35) [803]

इस प्रकार भिक्खुनी सकुला ने ये श्लोक कहे।

547 शाब्दिक अर्थ, " बीस मिलियन लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है " धम्म की अंतर्दृष्टि", " धम्म में प्रवेश ", " धम्म की समझ " , या "धम्म में प्रवेश " , शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

548 y'akkho

549 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, “वे लोग जिनके पास नहीं है”

सकुला थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 25.नंद(जनपदकल्याणी)
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

25. नंदा (जनपदकल्याणी)550

विजेता, पद्ममुत्तरा, सर्वज्ञ थे। वह नेता संसार में प्रकट हुए।

एक लाख युगों बाद। (1) [804]

उपदेशक,551 प्रशिक्षक,552

सभी सांसों पर विजय प्राप्त करने वाला, उपदेश देने में कुशल, बुद्ध।

कई लोगों को बाढ़ पार करने के लिए मजबूर किया। (2) [805]

दयालु,555 करुणामय,556

सभी प्राणों के शुभचिंतक557 ने पाँच सिद्धांतों में यह स्थापित किया।

सभी प्रतिद्वंद्वी जो आ चुके थे। (3) [806]

इस प्रकार वह प्रतिद्वंद्वियों द्वारा अस्पष्ट558 और बहुत प्रसिद्ध559 था, तथा अरहंतों द्वारा सुशोभित560 था।

जो स्वामी और तटस्थ थे। (4) [807]

उस महान ऋषि का शरीर अट्ठावन क्यूबिट561 लंबा था; वह सोने के समान मूल्यवान था।562

बत्तीस महान चिह्नों को धारण करते हुए। (5) [808]

उस समय लोगों की जीवन अवधि

[पूरे] एक लाख वर्ष।

550 “पत्थर,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

551 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

552 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

553 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

554, अर्थात् तैंतीस देवता।

555 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

556 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

557 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

558 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

559 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

560 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

561 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

562 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

इतने लंबे समय तक [दुनिया में] रहना,

उसने कई लोगों को पार कराया। (6) [809]

मेरा जन्म हंसवती में हुआ था।

फिर करोड़पतियों के एक परिवार में, जो विभिन्न रत्नों से जगमगा रहा था,

परम सुख से संपन्न। (7) [810]

महान नायक के पास पहुँचने पर,

मैंने उन्हें धम्म का उपदेश देते हुए सुना , अंततः यह बहुत ही मधुर था।

जो परम सत्य को प्रकट करता है। (8) [811]

फिर [उसे आमंत्रित करने के बाद]

थ्री-वर्ल्ड्स-एंडर, असेंबली के साथ मिलकर, उसे एक बड़ा दान देते हैं।

अपने हाथों से प्रसन्न होकर, मैंने नायक के सामने सिर झुकाया।

विधानसभा के साथ विश्व के अग्रणी के रूप में, मैंने उस सर्वोच्च स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखी।

ध्यान करने वाली बौद्ध भिक्षुणियों के बारे में। (9-10) [812-813]

फिर अनटेम्ड-टेमर,565 मास्टर,566

तीनों लोकों के लिए शरण,567 [बुद्ध,]

मनुष्यों के तेंदुए ने भविष्यवाणी की थी:568

“आपको वह शुभ [स्थान] प्राप्त होगा। (11) [814]

एक लाख युगों में, ओक्काका के वंश में उत्पन्न होकर,

जिसका नाम गौतम है

वह दुनिया में शिक्षक होगा। (12) [815]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,

धम्म की वैध संतान,

वह जो नंदा नाम से जानी जाती है,

शिक्षक का अनुयायी होगा।" (13) [816]

उस समय अत्यधिक प्रसन्न होकर,

जब तक जीवन है, हृदय प्रेम से भरा रहेगा।

563 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

564 puṇṇā ti nāmaŋ

565 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

566 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

567 पाठ महामुने (भाषण) बीजेटीएस के साथ पीटीएस तदा मुनि ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

568 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

मैंने विक्टर में भाग लिया,

गाइड, आवश्यक शर्तें प्रदान करता है। (14) [817]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (15) [818]

वहाँ से गिरकर मैं यमराज के पास गया,569

[और] फिर मैं तुसिता गया, और फिर निम्मानारती गया,570

और फिर वासावट्टी नगर। (16) [819]

जिस भी स्थान पर मेरा पुनर्जन्म होता है, उस कर्म के अनुसार, हर जगह मुझे प्रधान रानी बनाया जाता है।

[वहाँ] राजाओं के [देवताओं के]। (17) [820]

वहाँ से पतित होकर, मानव अवस्था में, [हर जगह] मुझे उन राजाओं की प्रधान रानी बनाया गया जो [कानून का] पहिया घुमाते हैं।

और [शक्तिशाली] क्षेत्रीय राजा। (18) [821]

देवताओं और मनुष्यों दोनों के बीच सफलता का अनुभव करने के बाद, हर जगह सुखी होने के कारण,

मैंने युगों तक पुनर्जन्म लिया।571 (19) [822]

जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ, तब मैं राजा सुद्धोदन की निष्कलंक572 पुत्री थी,573 [जो यहाँ रहती थी]

रमणीय574 कपिलवस्तु.575 (20) [823]

569 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

570 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

571 डांटो , या "वश में किया हुआ"

572 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

573 vimutt'o

574 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

575 ये पंक्तियाँ (पीटीएस में 41 शब्दांश, बीजेटीएस में 40 शब्दांश [जो पुराणजतिलेहि के बाद 'च' को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों

को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

मेरी शान और सुंदरता देखकर वह शाक्यन वंश हर्षित हो रहा था।577

इसलिए उन्होंने इसका नाम "नंदा" रखा।

मुझे सुखद और उत्कृष्ट लगा। (21) [824]

[मैं]578 "सुंदरता"579 के रूप में प्रसिद्ध थी

उसी रमणीय शहर की सभी युवतियों में से,

सिवाय [बेशक] यशोदरा.581 (22) [825]

मेरे बड़े भाई बुद्ध हैं,582 और बीच वाले भाई583 भी संत हैं;584 वे गृहस्थ जीवन में अकेले रहते हैं।

मुझे माँ द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है:585 (23) [826]

"पुत्र, तुम बुद्ध के अनुयायी शाक्य वंश में जन्मे हो।"

आप घर में 586 [वहाँ] क्यों बैठे हैं?

आपके सभी आनंद से वंचित होना?587 (24) [827]

अशुद्ध विचार588 यौवन सौंदर्य है,589

वृद्धावस्था के प्रभाव में;

यहां तक कि एक स्वस्थ जीवन भी,

रोग में समाप्त होता है, मृत्यु में समाप्त होता है। (25) [828]

अपने ही सुंदर रूप को देखो: मनमोहक, आकर्षक,590 यह सुशोभित और अलंकृत है।

576 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

577 शाब्दिक रूप से, "पूजा की"

578 #23, ऊपर

खंड 579 में कहा गया है, " बीस करोड़ लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है धम्म की अंतर्दृष्टि, धम्म में प्रवेश , धम्म की समझ या धम्म में प्रवेश, शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

580 y'akkho

581 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, "जिनके पास नहीं है"

582 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti नहीं तोड़ता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

583 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

584 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे भिक्खुनी सुक्का पढ़ता है।

585 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

586 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए बीजेटीएस के साथ आप केसी हत्थपरिकम्मम पढ़ रहे हैं

587 शाब्दिक रूप से, "भविष्य में" (एकवचन)

588 सम्मुखा , अर्थात् "एक साथ"

589 तुयहम , संभवतः बोधिसत्व को संबोधित करते हुए।

590 पठन anubhontī ciraṃ kālaṃ with BJTS for PTS tuyhaŋ vo paricāre ca ("और आप सभी आपकी सेवा करेंगे")

जैसे 591 देवी भाग्य अलंकृत, 592 (26) [829]

जैसे सांद्रित593 विश्व-सार594 आँखों के लिए औषधीय मरहम,595 योग्यता के लिए प्रशंसा उत्पन्न करना,596 ओक्काका कबीले को प्रसन्न करना; (27) [830]

बहुत जल्द ही बुढ़ापा इस पर हावी हो जाएगा।

बच्चा घर छोड़कर चला गया,

हे निर्दोष, शिक्षा को चुनो। (28) [831]

अपनी माँ की बातें सुनकर मैं बेघर हो गया।

शरीर में, लेकिन मेरे दिल में नहीं।

[अभी भी] युवावस्था और सुंदरता से मोहित। (29) [832]

मदर599 ने कहा कि परिवर्तित अवस्थाओं के अध्ययन के माध्यम से अपना आधार बनाओ,601 [इसे आगे बढ़ाते हुए] बड़े प्रयास के साथ।

मुझे इस बारे में उत्साह नहीं था। (30) [833]

तब महान करुणावान ने मुझे इंद्रिय सुखों में लीन देखा। अपनी असाधारण शक्ति से मुझे सौंदर्य से विरक्त करने के लिए,

विक्टर ने मेरे मन में जो कल्पना की थी

दृष्टि रेखा, एक चमकती हुई महिला;

591 में जटाम्ह का पाठ बीजेटीएस द्वारा पीटीएस अजता ("हम अजन्मे हैं;" इसका गलत अर्थ है अजतो "वह अजन्मा है")

592 °putta° शाब्दिक अर्थ, "पुत्र"

593 लिट., "हर समय हम नहीं हैं..."

594 रीडिंग cikkhallabhūmimasuciṃ with BJTS for PTS cikkhallabhūmiŋ gamanaŋ ("कीचड़ भरे रास्तों पर जाना")

595 reading pubbakammabalena no with BJTS for PTS pubbakammaphalan tato ("पिछले कर्मों के फल के बाद")

596 संसारपथ-नित्तिना

597 पाठ vītarāgā bhavāmase with BJTS (and PTS alt.) for PTS n'atthi dāni punabbhavo ("अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा")

598 t'ato tato

599 बीजेटीएस और पीटीएस में वैकल्पिक रूप से सहा के स्थान पर समा ("बराबर") पढ़ा जाता है ।

600 bodhanatthāya tavaŋ (PTS वैकल्पिक शब्द tava); इस वाक्यांश का अनुवाद "आपके ज्ञान के लिए" भी किया जा सकता है।

[मुझे]"

601 या, जैसा कि ऊपर बताया गया है, "मुझे जानने के लिए"

602 पाठ mahā-isiṃ (acc.) BJTS के साथ PTS mahā-isi (nom.) के लिए

603 शाब्दिक अर्थ, "महान नायक ने भविष्यवाणी की"

604 बीजेटीएस इस श्लोक को एक तारांकित फुटनोट में रखता है, यह मानते हुए कि यह इसके कई वैकल्पिक संस्करणों में आता है।

605 बीजेटीएस, पीटीएस से सहमत होते हुए इसे महा-इसे (वोक.) के रूप में प्रस्तुत करता है , लेकिन वैकल्पिक पाठ महा-इसी का संदर्भ देता है।

(नामवाचक), संभवतः बुद्ध द्वारा सुमेधा को "महान ऋषि" कहकर संबोधित करने से परेशान थे।

वह बेहद खूबसूरत थी, सचमुच प्रतिभाशाली थी।

मुझसे भी अधिक सुंदर। (31-32) [834-835]

और मैं उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गया।

बहुत ही आश्चर्यजनक शरीर,

मैंने मन ही मन सोचा, “आज का दिन फलदायी रहा।”

यह मानव आँखों की प्राप्ति है।” (33) [836]

मैंने उससे कहा, “ओह, भाग्यशाली!609

मुझे बताओ कि तुम यहाँ कैसे आए, और अगर हो सके तो मुझे ज़रूर बताओ।

[आपका] गोत्र, [आपका] नाम, [आपका] परिवार।" (34) [837]

“सवाल पूछने का समय नहीं है, तुम भाग्यशाली हो;

मुझे अपना सिर आपकी गोद में रखने दीजिए।

जैसे कि मेरे अंगों में धंस रहा हो611

वह एक पल के लिए आराम से लेट गई। (35) [838]

फिर उसने अपना सिर मेरी गोद में रख दिया

वह सुंदर आँखों से वहाँ फैली हुई थी। एक मकड़ी,613 बहुत जहरीली,

उस [महिला] के माथे पर गिरा। (36) [839]

जब वह उस पर गिरा, तो उसके पूरे शरीर पर फोड़े निकल आए; वे फूटकर मवाद से भर गए।

रक्त के साथ मिश्रित सड़े हुए मवाद के टुकड़े। (37) [840]

और उसका चेहरा भी विकृत हो गया था, लाश की सड़ी हुई दुर्गंध से; और उसका शरीर भी सड़ रहा था।614

[अब] सूज गया है और नीला पड़ रहा है। (38) [841]

उसके सभी अंग कांप रहे थे, वह हर सांस के लिए हांफ रही थी,615 अपनी पीड़ा को प्रकट कर रही थी,

606 रीडिंग manāpā with BJTS for PTS manasā

607 पढ़ना यथा... पीटीएस यथा के लिए बीजेटीएस के साथ अनुरक्खंति 'सामिनो ... अनुरक्खति सामि नं ("जैसा कि हमारे गुरु रक्षा करते हैं")

608 लिट., "[मेरे मन में] कोई हलचल नहीं है"

609 यह और इसके बाद के 19 श्लोक (कुल 20 श्लोक) बीजेटीएस में शामिल नहीं हैं। श्लोक (62) और (63) बीजेटीएस [1092]-[1093] में दिखाई देते हैं।

610 लिट., “और एक महिला”

611 शाब्दिक रूप से, "और एक महिला"

612 etesaŋ devedevānaŋ

613 अधिकारं सदा मयहं , शाब्दिक अर्थ: "मेरी सेवा निरंतर है" "मेरी सेवा दैनिक है"

614 या करें: कारती से

615 सधम्म° , प्रकाशित "अच्छी शिक्षा"

वह दयनीय ढंग से विलाप करती थी [इस प्रकार:] (39) [842]

मैं पीड़ा से ग्रस्त हूँ,616

असहनीय पीड़ा महसूस करना;

मैं घोर पीड़ा में डूब गया हूँ।

हे मित्र, मेरे लिए शरण बनो।" (40) [843]

"तुम्हारे चेहरे की वो चमक कहाँ गई? तुम्हारी वो आकर्षक लंबी नाक कहाँ गई? तुम्हारे वो खूबसूरत तांबे जैसे लाल होंठ कहाँ गए?"

तुम्हारा [सुंदर] चेहरा कहाँ चला गया? (41) [844]

तुम्हारा वो मुँह कहाँ है, जो चाँद की तरह चमकता था? तुम्हारी शंख जैसी गर्दन कहाँ चली गई? और तुम्हारे वो दोनों कान, जो झूलों की तरह हिलते थे?

अब [बुरी तरह से] बदरंग हो गए हैं। (42) [845]

तुम्हारे दूध से भरे स्तन, जो जग के आकार के थे और नुकीली युवा कलियों जैसे दिखते थे, खुल गए हैं; तुम एक

भयानक दुर्गंध से सड़ा हुआ शव। (43) [846]

[तुम्हारी] पतली कमर619 [और] नितंब,

मांस की दुकान 620 जहाँ घाव और पाप 621 जन्म लेते हैं

अब मल से सुशोभित हैं। हे! सुंदरता शाश्वत नहीं है! (44) [847]

हर जन्मा शरीर एक जैसा है: सड़ा हुआ और डरावना, किसी घिनौने कब्रिस्तान की तरह।

जहां [केवल] मूर्ख ही [अपना] आनंद पाते हैं।" (45) [848]

तब महान दयालु, मेरे भाई, जगत के नेता, ने मुझे देखकर मेरे हृदय में परिवर्तन ला दिया।

उन्होंने मुझसे ये आयतें कही थीं: (46) [849]

616 धम्मेसु सीनानां सदा सद्धम्म-कारिनो

617 aṭṭhamāse , BJTS इसे addhamāse ("आधा महीना") पढ़ता है

618 पीटीएस बुहुन एके के लिए बीजेटीएस के साथ बहु 'नेके पढ़ना

619 यह और इसके बाद के समापन श्लोक पीटीएस में यहाँ नहीं मिलते हैं, और ये असामान्य हैं (हालाँकि अद्वितीय नहीं)।

अपदाना के लिए जिसमें व्यक्तिगत कविताएँ आमतौर पर उस चीज़ के साथ समाप्त होती हैं जिसे मैंने "समापन छंद" कहा है (श्लोक)।

85-87) [1023-1025]। दिलचस्प बात यह है कि वे (साथ ही एक और, जो कहीं और भी दोहराया गया है) उसी असामान्य दोहराव के बाद की स्थिति में, नीचे, अपदान #30, यशोधरा के साथ अठारह हजार ननों के श्लोक 57-59 (साथ ही 60) के रूप में दिखाई देते हैं, और उस अपदान के बीजेटीएस संस्करण में भी इसी स्थिति में हैं (श्लोक [1100-1102] साथ ही [1103])।

620 PTS में Therī शब्द शामिल नहीं है, जिसे मैंने BJTS से लिया है।

621 रीडिंग s'ūnā vaṇitakibbisā with BJTS (and PTS alt.) for PTS sūnā 'va nītakibbisā ("like a slaughterhouse leading to pap" ?)

622 jegucchaŋ ; BJTS में इसे bībhacchaṃ पढ़ा जाता है , जिसका अर्थ लगभग समान है (घृणित, भयानक, डरावना)

"नंदा, अपने शरीर को देखो, यह भी एक बीमार और सड़ता हुआ शव है।"

घृणा के माध्यम से खेती करना

आपका मन, सुव्यवस्थित और शांत। (47) [850]

जैसा यह है, वैसा ही वह है; जैसा वह है, वैसा ही यह है: सड़ा हुआ और दुर्गंधयुक्त।

केवल मूर्खों को ही आनंदित करने वाला। (48) [851]

इस प्रकार दिन-रात परिश्रम करते हुए,

तुम अपनी बुद्धि से देखोगे, घृणा से मुँह मोड़कर। (49) [852]

उसके बाद मैं बहुत भावुक हो गया।

उन सुशोभित छंदों को सुनकर;

वहाँ शांति से रहना,623

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (50) [853]

मैं जहाँ भी बैठता हूँ,

मैं उच्चतम परिवर्तित अवस्थाओं तक पहुँचता हूँ।

विजेता, मेरे सद्‌गुण से प्रसन्न होकर,

[तब] मुझे उस सबसे आगे वाले स्थान पर रख दिया। (51) [854]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (52) [855]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (53) [856]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (54) [857]

इस प्रकार भिक्खुनी नंदा ने ये श्लोक कहे।

नंदा थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

623 या, बीजेटीएस के साथ विपस्सन्ती का पाठ करते हुए , "जांच करना" "अंतर्दृष्टि लागू करना"

624 लिट., "में" "उसमें"
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान4.1-थेरिस सूची >> 26.सोना
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

26. सोना 625

विजेता, पद्ममुत्तरा, सर्वज्ञ थे। वह नेता संसार में प्रकट हुए।

एक लाख युगों बाद। (1) [858]

उनका जन्म एक करोड़पति परिवार में हुआ था।

मैं प्रसन्न, सम्मानित, प्रिय था। उत्कृष्ट ऋषि के पास पहुँचते हुए,

मैंने उसके शब्द सुने, शहद जैसे मीठे। (2) [859]

यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई।

विजेता ने नन की प्रशंसा उन लोगों में सबसे आगे की, जो शिक्षक की सेवा में दृढ़ प्रयास करती हैं। (3) [860]

फिर संबुद्ध की पूजा करते हुए, मैंने उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा की।

महान नायक ने इसकी पुष्टि की: "तुम्हारी आकांक्षा सफल होगी। (4) [861]

एक लाख युगों में, ओक्काका के वंश में उत्पन्न होकर,

जिसका नाम गौतम है

वह दुनिया में शिक्षक होगा। (5) [862]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,

धम्म की वैध संतान, जिसे सोना के नाम से जाना जाता है।

शिक्षक का अनुयायी होगा।" (6) [863]

उस समय अत्यधिक प्रसन्न होकर,

जब तक जीवन रहा, प्रेम से भरे हृदय से, मैंने विक्टर की सेवा की।

गाइड, आवश्यक शर्तें प्रदान करता है। (7) [864]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (8) [865]

625 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

626 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

627 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

628 रीडिंग °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ: "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, मैं एक करोड़पति परिवार में पैदा हुआ हूँ, जो धनी, समृद्ध और बेहद अमीर है।

श्रावस्ती में, जो सर्वश्रेष्ठ नगर है। (9) [866]

जब मैं एक युवती बन गई,629

पति के कुल में जाकर, मैं 630 दस पुत्रों की माता बनी।

बहुत सुंदर और विशिष्ट। (10) [867]

वे सभी सुखमय थे, जनता की नजरों में मनभावन थे, और शत्रुओं के लिए भी प्रतिभाशाली थे।

कहने की जरूरत नहीं, वे मुझे बहुत प्यारे हैं। (11) [868]

फिर, मेरी इच्छा के बिना ही,632

जो मेरे पति थे, वे बुद्ध के 633वें युग में प्रस्थान कर गए थे।

मेरे उन बेटों से घिरा हुआ। (12) [869]

और फिर, अकेले में, मैंने चिंतन किया:

"मेरे लिए इस जीवन से बहुत हो गया,636

बुढ़ापा और दुख में जीना,

bere[x] of637 [मेरे] पति [और] पुत्र। (13) [870]

मैं भी उस जगह जाऊंगा

जहां मेरे पति अब पहुंच चुके हैं।"638

इस तरह से विचार करने के बाद,

मैं बेघर हो गया। (14) [871]

और फिर भिक्षुणियां मुझे बौद्ध भिक्षुणियों के आश्रम में अकेला छोड़कर यह निर्देश लेकर चली गईं:

"हमारे जाने के दौरान पानी गर्म कर देना।" (15) [872]

फिर मैंने पानी लाकर उसे डाला।

629, अर्थात् तैंतीस देवता।

630 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज।

631 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

632 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

634 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

635 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

636 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

637 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

638 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, “[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है),” अर्थात्, “मैं 100वीं दासी थी”

एक छोटे बर्तन में639 [उसके लिए प्रयुक्त]। [इसे चूल्हे पर रखने के बाद,]

बैठे-बैठे मैंने अपने दिल को प्रज्वलित किया। (16) [873]

शरीर की रोगग्रस्तता, सारहीनता, अनित्यता को देखकर, सभी दोषों को दूर करना,

मैंने अपना अरहंत पद प्राप्त कर लिया। (17) [874]

फिर वापस आने पर, उन बौद्ध भिक्षुणियों ने मुझसे गर्म पानी के बारे में पूछा।

आग पर ध्यान केंद्रित करने के माध्यम से,641

मैंने जल्दी से लौ जला दी। (18) [875]

आश्चर्यचकित होकर, [ननों] ने यह बात सर्वश्रेष्ठ विजेता को सुना दी।

यह सुनकर प्रभु अत्यंत प्रसन्न हुए।

उन्होंने [मेरे बारे में ठीक उसी समय] यह श्लोक कहा: (19) [876]

"कठोर प्रयास से जिया गया एक दिन भी एक सदी से बेहतर है।"

निष्क्रिय अवस्था में रहते थे, ऊर्जा का अभाव था।" (20) [877]

महान नायक मेरे अनुकरणीय आचरण से अत्यंत प्रसन्न हुए।

उस महान ऋषि ने कहा कि मैं सर्वोपरि हूँ

उन लोगों में से जो कड़ी मेहनत करते हैं। (21) [878]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (22) [879]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (23) [880]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) [881]

इस प्रकार भिक्खुनी सोना ने ये श्लोक कहे।

639 puṇṇā ti nāmaŋ

640 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

641 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

सोना थेरी की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 27.भद्दा-कपिलानि

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

27. भद्दा-कापिलानी

विक्टर पदुमत्तरा

वह एक था जिसकी निगाहें हर चीज़ पर थीं। [विश्व का] वह नेता पैदा हुआ था।

एक लाख युगों बाद। (1) [882]

उस समय हंसवती में विदेह नाम का एक नेता था।642

एक करोड़पति जिसके पास कई रत्न हैं;

मैं उस समय उसकी पत्नी थी। (2) [883]

एक बार वह अपने नौकरों के साथ मानव सूर्य के पास गया।

[और] बुद्ध की शिक्षा सुनी, जिससे समस्त दुख का अंत हुआ। (3) [884]

नेता ने तपस्या में श्रेष्ठ अनुयायी की प्रशंसा की; यह सुनकर उसने एक सप्ताह तक दान दिया।

बुद्ध को, तटस्थ व्यक्ति। (4) [885]

बुद्ध के चरणों में सिर झुकाकर, उन्होंने उस सर्वोच्च स्थान की आकांक्षा की, जिससे उनके अनुयायी मुस्कुरा उठे।

ठीक तब644 [कि] लोगों के बीच बैल (5) [886]

करोड़पति पर दया करते हुए, उसने ये छंद [उससे ज़ोर से] कहे: "तुम्हें इच्छित अवस्था प्राप्त होगी;

हे पुत्र, तुम निर्वाण प्राप्त करोगे। (6) [887]

एक लाख युगों में, ओक्काका के वंश में उत्पन्न होकर,

जिसका नाम गौतम है

वह दुनिया में शिक्षक होगा। (7) [888]

उस धर्म का योग्य उत्तराधिकारी, धर्म की वैध संतान,

642 "पत्थर," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

643 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

644 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्या [बुद्ध] की व्यवस्था में"

जिसका नाम कस्सपा है

शिक्षक का अनुयायी होगा।" (8) [889]

यह सुनकर प्रसन्न होकर कि जब तक वह जीवित रहेगा, वह विक्टर, गाइड की आवश्यक सेवाओं के साथ सेवा करेगा,

एक ऐसे हृदय के साथ जो प्रेम से भरा हुआ था। (9) [890]

व्यवस्था को रोशन करना, गंदे विधर्मियों को कुचलना,

जिन्हें सिखाया जा सकता है, उन्हें निर्देश देना,645

वह अपने अनुयायियों के साथ 646 पर चल बसे। (10) [891]

जब उस विश्व-प्रमुख ने निर्वाण प्राप्त किया, तो उसने अपने सगे-संबंधियों और मित्रों को एकत्रित किया।

शिक्षक की पूजा करना,

उनके साथ [उन्होंने तब] निर्माण किया था (11) [892]

एक स्तूप जो रत्नों से बना था, सात मील [ऊंचाई में] तक उठता था, जो सूर्य की तरह चमकता था; जैसे खिले हुए राजसी साल के पेड़ की तरह। (12) [893]

वहाँ [स्तूप पर] उन्होंने सात प्रकार के रत्नों से सात लाख [उत्कृष्ट] कटोरे बनवाए थे।

वे आग में जलते सरकंडों की तरह चमक रहे थे। (13) [894]

उसके बाद उन्होंने वहां सुगंधित तेल से भरे दीपक जलाए और महान ऋषि की पूजा की।

जो हर जीवित प्राणी पर दया करता था। (14) [895]

उन्होंने वहाँ सात लाख "समृद्धि के पात्र" बनवाए, जो सभी महान ऋषि की पूजा करने के लिए रत्नों से भरे हुए थे। (15) [896]

सोने की माला खड़ी की गई, जिसके चारों ओर चौंसठ कलश रखे थे;647

यह रंगों से जगमगा रहा था।

जैसे शरद ऋतु में दिन बनाने वाला648। (16) [897]

रत्नों से निर्मित मेहराब

645 रीडिंग °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ: "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

646, अर्थात् तैंतीस देवता।

647 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

648 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

चारों द्वार भव्य हैं। रत्नों से बने तख्ते, खूबसूरती से ऊपर उठाए गए, भव्य हैं। (17) [898]

बेहद खूबसूरती से बने आभूषण उस स्तूप को घेरे हुए हैं, चमक रहे हैं। झंडे आसमान में लहरा रहे हैं;

रत्नों से निर्मित, वे चमकते हैं। (18) [899]

रत्नों से बना वह लाल मंदिर, सुगठित और बहुरंगी,649

रंगों से अत्यधिक चमक रहा था।

जैसे सूर्य650 शाम को करता है। (19) [900]

स्तूप में तीन चबूतरे थे;

एक को उसने पीले मरहम से भर दिया,651

एक जिसमें लाल रंग का आर्सेनिक है,652

एक काले काजल के पेस्ट के साथ.653 (20) [901]

उस प्रकार पूजा करने के बाद, हे प्रिय, उस परम पूज्य के लिए,654 उसने भिक्षुओं के समुदाय को दे दिया।

जितना वह कर सकता था, उसने अपना पूरा जीवन भर भिक्षा दी।655 (21) [902]

उस करोड़पति के साथ-साथ मैंने भी, जब तक मैं जीवित रहा, यही किया।

उन पुण्यपूर्ण कार्यों का पूरी तरह से अध्ययन करें;

[और] उसके साथ मुझे अच्छे पुनर्जन्म मिले। (22) [903]

खुशी का अनुभव करना,656

मनुष्य और देवता दोनों के रूप में,

मेरा भी उनके साथ पुनर्जन्म हुआ था।

शरीर के साथ एक परछाई की तरह। (23) [904]

विपस्सी के नाम से जाने जाने वाले नेता का उदय इक्यावन युग पहले हुआ था, [बुद्ध,] जो आंखों को भाने वाले हैं।

सभी चीजों में अंतर्दृष्टि रखने वाला। (24) [905]

649 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

651 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

652 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

653 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

654 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

655 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, “[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है),” अर्थात्, “मैं 100वीं दासी थी”

656 puṇṇā ti nāmaŋ

फिर वह 657 बंधुमती में रहने लगा।

उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध एक ब्राह्मण,658

शास्त्रों और धर्म से समृद्ध,659

लेकिन 660 धन के मामले में बहुत गरीब। (25) [906]

और उस समय, उसी विचार से, मैं उनकी ब्राह्मण स्त्री [पत्नी] थी। एक बार उस श्रेष्ठ द्विज पुरुष ने

उस महान ऋषि से मुलाकात हुई, (26) [907]

जनसभा के बीच बैठकर, अमरता की अवस्था का उपदेश देते हुए। धम्म सुनकर, अत्यंत प्रसन्न होकर,

उसने अपना लबादा [उस ऋषि को] दे दिया। (27) [908]

एक ही कपड़े में घर जाते हुए,

उन्होंने मुझसे उसी वक्त ये शब्द कहे: "इस महान अच्छे कर्म में आनंद लो,

बुद्ध को दिया गया लबादा।" (28) [909]

फिर मैंने हाथ जोड़कर, पूर्णतः संतुष्ट होकर प्रसन्नतापूर्वक कहा: "पतिदेव, यह लबादा बहुत अच्छा है।"

सर्वश्रेष्ठ बुद्ध को, तटस्थ एक।" (29) [910]

खुश और [अच्छी तरह से] तैयार होकर, जन्म-जन्मांतर तक वह सुंदर बनारस शहर में राजा, पृथ्वी का स्वामी था। (30) [911]

मैं उस [राजा] की मुख्य रानी थी, उसकी स्त्रियों के दल में सर्वोच्च।

मैं उनके लिए बेहद प्रिय था।

मेरे पति के प्रति अतीत के प्रेम के कारण।661 (31) [912]

आठ एकाकी नेताओं662 को भीख मांगते हुए देखकर, वह अत्यधिक प्रसन्न हो गया,

उन्हें बहुत महंगी भिक्षा दी। (32) [913]

उन्हें फिर से आमंत्रित करने के बाद,

657 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

658 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

659 पाठ महामुने (भाषण) पीटीएस तदा मुनि के लिए बीजेटीएस के साथ ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

660 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

661 या गिरिब्बाजा, यहाँ राजगाहन

662 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

एक रत्न मंडप बनाकर,

सुनारों द्वारा बनाए गए संग्रहण कटोरे, साथ ही ठोस सोने की एक ट्रे भी।

फिर उसने उन सभी को, जो सोने की सीटों पर बैठे थे,664 एक अत्यंत समृद्ध दान की पेशकश की।

[अपने] हाथों से संतुष्ट महसूस करते हुए। (33-34) [914-915]

मैंने वही दान दिया।

उस समय कासी665 के राजा के साथ। फिर से मेरा पुनर्जन्म हुआ।

कासी फाटकों के बाहर गांव.666 (35) [916]

वह अपने भाइयों के साथ एक समृद्ध पारिवारिक परिवार में खुश था।

मैं बड़े भाई की पत्नी थी।

एक महिला जिसने अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा किया।668 (36) [917]

एक अकेले बुद्ध को देखकर,

जो मेरा सबसे छोटा भाई था, उसने अपना हिस्सा [उस बुद्ध को] दे दिया;

जब वह आया तो मैंने उसे यह बताया। (37) [918]

उन्होंने उस दान की प्रशंसा नहीं की, इसलिए बुद्ध से वह भोजन वापस लेकर मैंने उन्हें दे दिया;

फिर उसने उसे [स्वयं] दे दिया। (38) [919]

फिर क्रोधित होकर उस भोजन को फेंककर,670 मैंने बुद्ध का कटोरा [दूसरी बार] वापस लिया, और उसे मिट्टी से भर दिया।

663 डांटो , या "वश में किया हुआ"

664 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

665 vimutt'o

666 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

667 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

668 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

669 शाब्दिक रूप से, “पूजा की ”

670 #23, ऊपर

[और] इसे उस तटस्थ व्यक्ति को दे दिया। (39) [920]

और ठीक उसी समय जब उसने वे भिक्षाएँ प्राप्त कीं, जो सड़ी हुई और अपवित्र थीं,671

उसका मन भी उतना ही प्रसन्न था;672

यह देखकर मैं बहुत भावुक हो गया।673 (40) [921]

मैंने फिर उससे वह कटोरा लिया और उसे सुगंधित इत्र से साफ किया। मेरा मन तब आनंद से भर गया था।

मैंने उन्हें आदरपूर्वक घी दिया।674 (41) [922]

मैं जिस भी स्थान पर पुनर्जन्म लूं, दान देने के कारण मैं सुंदर हूं; बुद्ध को बेस्वाद भोजन देने के कारण,

मेरी सांसों से भयानक दुर्गंध आ रही है। (42) [923]

फिर जब बुद्ध-कस्सापा का स्तूप पूरा हो रहा था, तो प्रसन्न होकर मैंने [तब] इसके लिए दान दिया।

सोने से बनी एक उत्कृष्ट टाइल। (43) [924]

चार जन्मों तक उस टाइल पर सुगंधित पदार्थों का प्रयोग करते रहने के कारण,

मेरे प्रत्येक अंग से दुर्गंध का दोष दूर हो गया था। (44) [925]

सात हजार कटोरे बनाकर, जिनमें से प्रत्येक सात रत्नों से सुशोभित था और घी से भरा हुआ था,

उनमें हजार बत्तियाँ रखना,676 (45) [926]

अत्यंत प्रसन्न मन से मैंने उन सभी को जलाना शुरू कर दिया।

और उन्हें सात पंक्तियों में बिछा दिया।

जगत के स्वामी की पूजा करना (46) [927]

671 शाब्दिक अर्थ में, " बीस मिलियन लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिसामय , जिसका अर्थ है " धम्म की अंतर्दृष्टि", " धम्म में प्रवेश ", " धम्म की समझ " , या "धम्म में प्रवेश ", शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

672 y'akkho

673 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, “जिनके पास नहीं है”

674 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

675 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

676 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे bhikkhunī Sukkā पढ़ता है।

677 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

और उस समय विशेष रूप से

मुझे भी उस पुण्य में हिस्सा मिला। फिर से कासियनों में678

वह सुमित्ता थे, जो एक प्रसिद्ध ऋषि थे।679 (47) [928]

मैं [ऋषि सुमित्ता की] पत्नी थी, खुश, आनंदित और [बहुत] प्रिय। और फिर उन्होंने [कुछ] अकेले लोगों को दे दिया।

एक विशाल लबादा [वस्त्रों के लिए उपयोग करने हेतु]। (48) [929]

मैंने भी उस पुण्य में भाग लिया, उस महान दान का अनुमोदन करते हुए। फिर काशी देश में680

उसका पुनर्जन्म हुआ, एक कोलियन.681 (49) [930]

और फिर, कोलियन वंश के पाँच सौ पुत्रों के साथ,

उन्होंने लोनली पर 682 में भाग लिया

बुद्ध, पाँच सौ [संख्या में]। (50) [931]

तीन महीने के लिए 683 [उन्हें] संतुष्ट करना

उन्होंने उन बुद्धों को तीन वस्त्र दिए। मैं उस समय कोलियन की पत्नी थी।

योग्यता के मार्ग का अनुसरण करते हुए। (51) [932]

वहां से गिरने के बाद वह नंदा के नाम से प्रसिद्ध राजा बन गया।

मैं [राजा नंदा की] प्रधान रानी थी;

मेरी हर इच्छा पूरी हो गई। (52) [933]

वहाँ से गिरकर, बन गया

ब्रह्मदत्त, पृथ्वी के स्वामी, अपने जीवनकाल तक,

फिर उन्होंने सभी की सेवा की।

पद्मावती के पुत्र पाँच सौ एकांत ऋषि राजमहल में निवास करते थे।

मैंने भी उन दिवंगत आत्माओं की पूजा की। (53-54) [934-935]

678 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए बीजेटीएस के साथ आप केसी हत्थपरिकम्मम पढ़ रहे हैं

679 शाब्दिक रूप से, "भविष्य में" (एकवचन)

680 सम्मुखा , अर्थात् "एक साथ"

681 तुयहम , संभवतः बोधिसत्व को संबोधित करते हुए।

682 पठन anubhontī ciraṃ kālaṃ with BJTS for PTS tuyhaŋ vo paricāre ca ("और आप सभी आपकी सेवा करेंगे")

683 रीडिंग जटाम्ह (बीजेटीएस के साथ पीटीएस अजता ("हम अजन्मे हैं;" इसका गलत अर्थ है अजतो "वह अजन्मा है")

684 °putta° शाब्दिक अर्थ, "पुत्र"

685 लिट., "हम हर समय नहीं हैं..."

हम दोनों ने स्तूपों का निर्माण किया था,

संसार का त्याग करके आगे बढ़ना,

असीम अवस्थाओं का अनुभव किया,686

[और] फिर हम ब्रह्मा के लोक में गए। (55) [936]

महातीथ में पतित होकर वह उच्च कुल का पिप्पलायन है। माता: सुमनदेवी और

पिता: ब्राह्मण कोसिगोत्ता। (56) [937]

मद्दा देश में, मैं ब्राह्मण कपिल की पुत्री थी; मेरी माता का नाम सुचीमती था।

सागला सर्वश्रेष्ठ नगर है। (57) [938]

मेरे पिता ने मुझे एक मोटे सोने के आभूषण से सजाकर बुद्धिमान कस्सपा को सौंप दिया।

जिसने मेरे प्रति इच्छा से परहेज किया था। (58) [939]

एक बार कर्मों के अंत की कामना करते हुए आगे बढ़े उस दयालु व्यक्ति को कुछ प्राणियों को देखकर भय आ गया।

कौवों और इसी तरह के पक्षियों द्वारा खा लिया गया। (59) [940]

तब मैं भी घर में विचलित हो गया,689 तिल में पैदा हुए और फिर धूप से पके हुए कीड़ों को देखकर।

कुछ कौवों द्वारा खाया जा रहा है। (60) [941]

जब बुद्धिमान [कसप्पा] ने त्याग कर दिया, तो मैंने भी उनका अनुसरण करते हुए त्याग कर दिया।

मैं [तब] पाँच वर्षों तक वहाँ रहा।

त्यागियों के पथ690 के साथ। (61) [942]

जब विजेता की धाय गोतमी संन्यासिनी बनकर चली गईं, तब वे बुद्ध से मिलीं,

मुझे भी उनका निर्देश प्राप्त हुआ। (62) [943]

कुछ ही समय बाद,

686 रीडिंग cikkhallabhūmimasuciṃ with BJTS for PTS cikkhallabhūmiŋ gamanaŋ (“कीचड़ भरे रास्तों पर जाना”)

687 reading pubbakammabalena no with BJTS for PTS pubbakammaphalan tato (“after the fruit of previous karma”)

688 संसारपथ-नित्तिना

689 पाठ vītarāgā bhavāmase with BJTS (and PTS alt.) for PTS n'atthi dāni punabbhavo ("अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा")

690 t'ato tato

मैंने अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली।

ओह! "सुंदर दोस्त" होने का क्या ही मज़ा है!

तेजस्वी कस्सपा का! (63) [944]

बुद्ध का वैध पुत्र,691

बहुत ध्यान देने वाला, कस्सपा।

वह व्यक्ति जो पिछले जन्मों के बारे में जानता है।

और वह स्वर्ग और नरक देखता है। (64) [945]

फिर उसने जन्म का नाश प्राप्त किया;

विशेष ज्ञान में निपुणता प्राप्त की;

तीनों ज्ञानों से परिपूर्ण एक ऋषि,

वह ब्राह्मण त्रिगुण ज्ञाता है। (65) [946]

ठीक इसी प्रकार भद्दा-कापिलानी,

त्रिज्ञ जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है। वह वह है जो अपना अंतिम शरीर धारण करती है, मारा और उसके वाहन को पराजित करती है। (66) [947]

दुनिया में व्याप्त खतरों को देखते हुए,

हम दोनों संन्यासी बनकर निकले। अब हम दोषों से मुक्त हैं;

शांत हो गया, ठंडा हो गया, निर्वाण प्राप्त कर लिया। (67) [948]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (68) [949]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (69) [950]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (70) [951]

इस प्रकार भिक्खुनी भद्दा-कापिलानी ने ये श्लोक कहे।

भद्दा-कापिलानी थेरी 692 की कथा समाप्त हुई।

691 बीजेटीएस और पीटीएस में वैकल्पिक रूप से सहा के स्थान पर समा ("बराबर") पढ़ा जाता है ।

692 bodhanatthāya tavaŋ (PTS वैकल्पिक नाम tava); इस वाक्यांश का अनुवाद "आपके मुझे जानने के लिए" भी किया जा सकता है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 28.यशोधरा, भगवान बुद्ध की पत्नी

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

<<<< पिछला । अगला >>>>

यह पृष्ठ वास्तव में अपदाना ग्रंथ से संबंधित है। यह भगवान बुद्ध की पत्नी, यशोदरा के बारे में है, जिन्हें यशोवती, भद्धकंचना या बिम्बादेवी भी कहा जाता है। वे अपनी सास, रानी महा-प्रजापजी-गोतमी के साथ भिक्षुणी बन गईं और भिक्षुणियों के लिए बने अलग मठ में रहने लगीं। उन्होंने धम्म के मार्ग पर चलते हुए सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त किया। बुद्ध के परिवार के बारे में बौद्ध धर्म से संबंधित अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न 20 भी देखें ।
78 वर्ष की आयु में अपने शरीर त्यागने के दिन उन्होंने ये बातें कहीं:

28. यशोदरा (बुद्ध की पत्नी)

एक समय पुरुषों का नेता राजगाह शहर में एक पहाड़ी गुफा में ठहरा हुआ था।

जो सुंदर और समृद्ध था। [952]693

उस समय यही तर्क दिया गया था।

उस नगर में निवास करने वाली यशोधरा नामक भिक्षुणी द्वारा,

एक सुंदर मठ के अंदर [वहाँ]: [953]

"नंदा, राहुल (पुत्र) और भद्दा; साथ ही दो प्रमुख अनुयायी; सुद्धोदना महाराजा (राजा और ससुर)।"

और गोतमी प्रजापति (रानी, बाद में भिक्षुणियों की प्रमुख); [954]

महान ख्याति के महान थेरा; और महान शक्तियों वाली थेरी:694 वे शांतिपूर्ण [निर्वाण] में चले गए हैं, दीपक की लौ की तरह निशानहीन। [955]

जब तक जगत का स्वामी जीवित है, मैं भी उसी शांतिपूर्ण मार्ग पर चलूंगा।" और इन सब बातों पर विचार करने के बाद,

उसने अपने जीवन के अंत का पूर्वाभास कर लिया था। [956]

यह पूर्वाभास करते हुए कि जीवन के सभी तत्व उसी दिन नष्ट हो जाएंगे, वह अपने आश्रम से निकल पड़ी।

अपना वस्त्र और कटोरा लिए हुए। [957]

एक लाख 695 भिक्षुणियों द्वारा सम्मानित, [यशोधरा नामक भिक्षुणी,] अत्यंत शक्तिशाली, अत्यंत बुद्धिमान,

[तब] संबुद्ध के पास गया। (1) [958]

संबुद्ध की पूजा करने के बाद,

पहिए के निशान वाले [पैरों के तलवों] पर, एक तरफ बैठे हुए [उसके बगल में]

उसने शिक्षक से ये शब्द कहे: (2) [959]

693 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

694 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

695 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

अब मेरी उम्र अठहत्तर वर्ष हो गई है, बुढ़ापे का अंतिम चरण आ चुका है;

मैं महान ऋषि को रिपोर्ट कर रहा हूँ:

मैंने गुफा में [संतत्व] प्राप्त किया है। (3) [960]

अब मेरे लिए बुढ़ापा परिपक्व हो चुका है;

सचमुच मेरा जीवन तुच्छ है। मैं तुम्हें सब कुछ त्यागकर चला जाऊंगा।

मेरी शरण स्वयं में ही बनी है। (4) [961]

बुढ़ापे के अंतिम दिनों में,

मृत्यु शरीर को टुकड़ों-टुकड़ों में तोड़ देती है;

आज रात को, महान नायक,

मैं निर्वाण प्राप्त करूँगा। (5) [962]

जहां न जन्म है, न बुढ़ापा, न बीमारी और न मृत्यु, हे महान ऋषि, मैं उस महान नगर की ओर जा रहा हूँ।

[जो,] बिना शर्त, उसकी कोई मृत्यु नहीं होती। (6) [963]

इस विशाल जनसमूह में,696 ये सभी शिक्षक का आदर करते हैं,697 और जानते हैं कि प्रत्येक अपूर्णता

आमने-सामने क्षमा की जाती है, ऋषि। (7) [964]

पिछले जन्मों में (पूर्व जन्मों में) एक शरीर से दूसरे शरीर में जाना।

अगर मैंने कभी आपको परेशान किया हो,699

मैं इसकी घोषणा कर रहा हूँ, महान नायक;

कृपया मेरी अपूर्णता को क्षमा करें। (8) [965]

उसकी बात सुनकर ऋषियों के स्वामी (बुद्ध) ने 700 कहा: “मैं तुमसे इससे बेहतर और क्या कह सकता हूँ?

आप निर्वाण कब प्राप्त करेंगे? [966]

अब अपनी महाशक्तियों का प्रदर्शन करो, हे मेरे विधान के कर्ता;

व्यवस्था में संदेह को रहने दो

सभी सभाओं के लिए काट दिया जाए।"702 (9) [967]

696 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

697, अर्थात् तैंतीस देवता।

698 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

699 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

700 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

702 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

ऋषि के वचन सुनकर, बौद्ध भिक्षुणी यशोदरा ने ऋषियों के राजा की आराधना की।

[तब] ने [बुद्ध] से यह भाषण दिया: [968]

मैं यशोदरा हूं, हीरो;

घर में मैं तुम्हारी मुख्य रानी थी,703

शाक्य वंश में जन्मा,

महिलाओं के बीच स्थापित.704 (10) [969]

हे वीर, आपके घर में, मैं

वह नेता था, सबका स्वामी था।

वहाँ मौजूद [महिलाओं की संख्या]

एक लाख छियानवे. (11) [970]

वे सभी महिलाएं, जो सौंदर्य और शालीनता के गुणों से परिपूर्ण हैं, युवा और सुभाषी हैं, आदर करती हैं...

मुझे, जैसे लोग देवताओं की पूजा करते हैं।705 (12) [971]

शाक्यन पुत्र के घर में हजार कन्याओं की नेता,

सुख और दुख में वे एक समान हैं,706

जैसे देवता [उस बगीचे में जिसका नाम] “आनंद” है। (13) [972]

इच्छा के सार से परे, सौंदर्य के सार के रूप में स्थिर,

सुंदरता के मामले में उनका कोई मुकाबला नहीं है।

विश्व के नेता के अलावा।" (14) [973]

इन शब्दों से शुरू होने वाले शब्द बोलते हुए, आकाश में उठकर,

यशोदरा ने विविध प्रकार के प्रदर्शन किए।

बुद्ध की अनुमति से शक्तियाँ,707। [974]708

संबुद्ध की उपासना करते हुए, उसने गुरु को अलौकिक शक्तियाँ दिखाईं।

उसने असाधारण महाशक्तियों का प्रदर्शन किया।

703 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

704 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

705 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

706 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

707 puṇṇā ti nāmaŋ

708 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

709 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुण्णिका के लिए

710 पाठ महामुने (भाषण) पीटीएस तदा मुनि के लिए बीजेटीएस के साथ ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

विविध, विभिन्न रूपों वाला। (15)711

शरीर ब्रह्मांड जितना विशाल है,712

उसने उत्तर में महाद्वीप713 को अपना सिर बनाया; पूर्व और पश्चिम को अपने पंख; और भारत को अपना धड़ बनाया; (16) [975]

पूंछ के पंख: दक्षिणी महासागर; [अन्य] पंख: विभिन्न नदियाँ;

उसकी आंखें चांद और सूरज जैसी थीं।

[उसका] प्रतीक ब्रह्मांडीय माउंट मेरु था। (17) [976]

[उसकी] चोंच में, दुनिया के छोर पर स्थित पर्वत,714 [वह] एक पेड़715 को उसकी जड़ों सहित ले जा रही थी। उसके पास आकर, [उसे] पंखा झलते हुए,]

वह विश्व नेता की पूजा कर रही है। (18) [977]

उसने स्वयं को हाथी, घोड़ा, पर्वत, सागर, चंद्रमा और सूर्य, मेरु पर्वत का रूप धारण किया।

और शकरा, [देवताओं का राजा]। (19) [978]

उसने हजार गुना संसार को खिलते हुए कमलों से ढक दिया,717 [और फिर कहा,] "मैं यशोदरा हूँ, वीरांगना;

मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ, हे आँखों वाले।" (20) [979]

और ब्रह्मा (प्रधान देवदूत) का रूप प्रकट करते हुए, उन्होंने पुण्य के सिद्धांत का प्रचार किया;718 "मैं यशोदरा, वीरांगना हूँ;

मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ, हे दृष्टिपूर्ण।" (21) [980]

711 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

712 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

713 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

714 डांटो , या "वश में किया हुआ"

715 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

716 vimutt'o

717 सिंगी-निक्खा-सवण्णो , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

718 ये पंक्तियाँ (पीटीएस में 41 अक्षर, बीजेटीएस में 40 अक्षर [जो पुराणजतिलेहि के बाद 'च' को छोड़ देता है]) पीटीएस और बीजेटीएस दोनों द्वारा एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत की गई हैं, हालांकि वे दो पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ती हैं और मुझे यह समझ नहीं आ रहा है कि इस "श्लोक" को छंद के अनुसार कैसे समझा जाए। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण में विकृत हो गया है? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे सटीक अनुवाद का प्रयास किया है , अर्थात् 12-12-12-12 छंद (जो संचरण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों के लोप [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों के लोप [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को

प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले छंद-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूलभूत इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

मैंने "दिव्य श्रवण" जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। मैं एक महान ऋषि भी हूँ।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (22) [981]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (23) [982]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

आपकी उपस्थिति में, हे महान नायक। (24) [983]

विश्व-स्वामियों, 719 सभी बुद्धों के साथ मेरी मुलाकात आप लोगों को अच्छी तरह से दिखाई दी; 720 उनके प्रति मेरी व्यापक सेवा

यह आपके लिए था, हे महान ऋषि। (25) [984]

हे ऋषि, मेरे द्वारा पूर्व में किए गए अच्छे कर्मों को याद कीजिए; उनसे मुझे पुण्य प्राप्त हुआ था।

हे महान नायक, आपके लिए। (26) [985]

मैंने कदाचार से परहेज किया, बाधा उत्पन्न की 721

[नौ] असंभव स्थान;722

मैंने जीवन का बलिदान दिया है।

हे महान नायक, आपके लिए। (27) [986]

मैंने स्वयं को पत्नी बनने के लिए समर्पित कर दिया।

कई दसियों अरब गुना। मुझे इस बात की कोई चिंता नहीं थी।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (28) [987]

मैंने स्वयं को सेवा में समर्पित कर दिया, कई दसियों अरब बार। मुझे इस बात का कोई दुख नहीं था।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (29) [988]

719 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

720 शाब्दिक रूप से, "पूजा की"

721 #23, ऊपर

722 शाब्दिक अर्थ, " बीस मिलियन लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है " धम्म की अंतर्दृष्टि", " धम्म में प्रवेश ", " धम्म की समझ " , या "धम्म में प्रवेश " , शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

723 y'akkho

मैंने कई दसियों अरब बार भोजन उपलब्ध कराने के लिए खुद को समर्पित किया। मुझे इस बात का कोई दुख नहीं था।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (30) [989]

मैंने तुम्हें अपने सारे जीवन दे दिए हैं, कई दसियों अरब बार। मैं स्वयं को भय से मुक्त करूँगा।

मैं अपना जीवन [एक बार फिर] त्याग दूँगा। (31) [990]

हे महान ऋषि, आपके लिए मैं एक स्त्री की चीजों को नहीं छुपाती, विभिन्न प्रकार के कई वस्त्रों को छुपाती हूँ।

725 [मेरे] अंगों पर लगे आभूषण। (32) [991]

धन-दौलत और अनाज, गाँव और छोटे कस्बे भी त्याग दिए गए हैं।

खेत और बेटे और बेटियाँ [भी]

हे महान ऋषि, त्याग दिया गया है। (33) [992]

हाथी, घोड़े, गायें, गुलाम और नौकरानियाँ सभी को अनगिनत मात्रा में त्याग दिया गया है।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (34) [993]

मुझे जो भी देने को कहा जाएगा

मैं भिखारियों को दान के रूप में वह देता हूँ; मुझे किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं दिखती।

अंतिम उपहार देने से। (35) [994]

मुझे 727 बीमारियों का अनुभव हुआ है

इस बहुविविध अस्तित्व में अनगिनत प्रकार के लोग मौजूद हैं।728

हे महान नायक, आपके लिए। (36) [995]

मुझे सुख-सुविधाएं प्राप्त करने में कोई रोमांच नहीं मिलता;

मुझे 729 परेशानियों से कोई परेशानी नहीं होती। मैं हर जगह संतुलित रहता हूँ।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (37) [996]

[दोनों] का अनुभव करने के बाद

724 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, "वे लोग जिनके पास नहीं है"

725 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

726 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

727 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे bhikkhunī Sukkā पढ़ता है।

728 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

729 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए बीजेटीएस के साथ आप पढ़ रहे हैं

मार्ग में सुख और दुख दोनों का सामना करते हुए, महान ऋषि ने ज्ञानोदय प्राप्त किया।

वह शिक्षा जिसके लिए बुद्ध ने प्रयास किया। (38) [997]

आपके और मेरे द्वारा अन्य विश्व-स्वामियों से बहुत मुलाकातें हुईं, चाहे आप ब्रह्मा हों या कोई और।

गौतम बुद्ध, 733 विश्व के नेता। (39) [998]

मैंने बहुत सारी सेवाएँ कीं।

हे महान ऋषि, आपके लिए;

जब आप बुद्ध की शिक्षाओं की खोज कर रहे थे,734

मैं [हमेशा] आपका परिचारक था। (40) [999]

एक लाख युग [और]

चार अगणनीय [युग]

अतः, दीपांकर, महान नायक,

विश्व के नेता का जन्म हुआ। (41) [1000]

पास के किसी देश में, उसे आमंत्रित करते हुए, उस दिवंगत आत्मा के प्रसन्न मन वाले लोग सफाई कर रहे हैं।

जिस सड़क से वह आ रहा है। (42) [1001]

उस समय सुमेधा नाम का एक ब्राह्मण था। वह मार्ग तैयार करवा रहा था।

उस सर्वज्ञ के लिए जो आ रहा था। (43) [1002]

उस समय मैं एक कुंवारी लड़की थी, जो एक ब्राह्मण परिवार में जन्मी थी और सुमित्ता नाम से जानी जाती थी।

मैं उस सभा में गया। (44) [1003]

शिक्षक को अर्पित करने के लिए नीले कमल के आठ मुट्ठी भर फूल (735) के साथ

सभी लोगों के बीच

मैंने उस भयंकर [तपस्वी] ऋषि को देखा।736 (45) [1004]

730 शाब्दिक अर्थ, "भविष्य में" (एकवचन)

731 सम्मुखा , अर्थात् "एक साथ"

732 तुयहम , संभवतः बोधिसत्व को संबोधित करते हुए।

733 पठन anubhontī ciraṃ kālaṃ with BJTS for PTS tuyhaŋ vo paricāre ca ("और आप सभी आपकी सेवा करेंगे")

734 में जटाम्ह का पाठ बीजेटीएस द्वारा पीटीएस अजता ("हम अजन्मे हैं;" इसका गलत अर्थ है अजतो "वह अजन्मा है")

735 °putta° शाब्दिक अर्थ, "पुत्र"

736 लिट., "हर समय हम नहीं हैं..."

उसे छाल के ऊपर बैठे हुए देखकर,737 उत्कृष्ट738 और मनमोहक,739 तब मैंने [अपने मन में इस प्रकार सोचा:]

"[यह] मेरा जीवन फलदायी हो रहा है।" (46) [1005]

उस समय मैंने उस ऋषि को देखा

वह प्रयास [जो उस समय] फलदायी हो रहा था;

पिछले कर्मों के कारण, मेरा

संबुद्ध में हृदय प्रसन्न हुआ। (47) [1006]

मेरे हृदय को और भी प्रसन्न करते हुए, मैंने कहा, "हे उच्च विचारों वाले ऋषि,

कोई और उपहार न देखकर [देने के लिए]

मैं तुम्हें फूल दे रहा हूँ, ऋषि।740 (48) [1007]

हे ऋषि, आपके लिए पाँच मुट्ठी भर हैं;

शेष तीन741 मेरे लिए हैं।

इस [उपहार] के माध्यम से सफलता मिले।

हे ऋषि, आपके जागरण के लिए। (49) [1008]

चौथा पाठ भाग

तब उस ऋषि ने, ज्ञानोदय के लिए फूल लेकर, लोगों के बीच पूजा की।

हे प्रसिद्ध, महान ऋषि 745 जो आ रहे थे। (50) [1009]

महान ऋषि [जिनका नाम] दीपांकर था, ने लोगों के बीच [उन्हें] देखकर [भविष्य में बुद्धत्व प्राप्त होने की] भविष्यवाणी की।746

[उस] ऋषि के लिए जिसका मन ऊँचा है। (51) [1010]

महान ऋषि दीपांकर ने भविष्यवाणी की कि मेरा कर्म असंख्य युगों तक जारी रहेगा।

737 रीडिंग cikkhallabhūmimasuciṃ with BJTS for PTS cikkhallabhūmiŋ gamanaŋ ("कीचड़ भरे रास्तों पर जाना")

738 reading pubbakammabalena no with BJTS for PTS pubbakammaphalan tato ("पिछले कर्मों के फल के बाद")

739 संसारपथ-नित्तिना

740 पाठ vītarāgā bhavāmase with BJTS (and PTS alt.) for PTS n'atthi dāni punabbhavo ("अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा")

741 t'ato tato

742 BJTS और PTS में वैकल्पिक रूप से saha के स्थान पर samā ("बराबर") पढ़ा जाता है ।

743 bodhanatthāya tavaŋ (PTS वैकल्पिक शब्द tava); इस वाक्यांश का अनुवाद "आपके ज्ञान के लिए" भी किया जा सकता है।

[मुझे]"

744 या, जैसा कि ऊपर बताया गया है, "मुझे जानने के लिए"

745 PTS mahā-isi (nom.) के लिए BJTS के साथ mahā - isiṃ (acc.) पढ़ना

746 शाब्दिक अर्थ, "महान नायक ने भविष्यवाणी की"

हे महान ऋषि, आपकी महिमा हो: (52)747

वह आपके जैसी ही स्वभाव और आचरण वाली पत्नी होगी; इसी कर्म के फलस्वरूप वह प्रेममय होगी।

हे महान ऋषि, आपके लिए।748 (53) [1011]

सुंदर दिखने वाली और बेहद प्रिय, आकर्षक, मीठी बातें करने वाली, वह एक प्यारी महिला होगी।

[और] आपके सिद्धांतों में एक उत्तराधिकारी। (54) [1012]

जिस प्रकार स्वामी अपने द्वारा संचित वस्तुओं की रक्षा करते हैं, उसी प्रकार यह भी उनकी रक्षा करेगा।

[सभी] चीजें जो स्वास्थ्यवर्धक हैं। (55) [1013]

आपके भविष्य के प्रति करुणा से भरी, वह आपकी सभी खूबियों को पूरा करेगी। पिंजरे से मुक्त हुए शेर की तरह,

वह जागृति प्राप्त करेगी।" (56) [1014]

बुद्ध के वचन से प्रसन्न होकर, मैंने उसी प्रकार व्यवहार करते हुए जीवन व्यतीत किया।

बुद्ध ने असंख्य युग पहले मेरे लिए भविष्यवाणी की थी। (57) [1015]

जब मैंने वह कर्म सफलतापूर्वक पूरा किया तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

मैंने अनगिनत गर्भाशयों का अनुभव किया है,

दैवीय [साथ ही] मानवीय [लोग]। (58) [1016]

देवताओं और मनुष्यों के बीच सुख और दुख का अनुभव करते हुए, जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ,

मैं शाक्यान वंश में पैदा हुआ था। (59) [1017]

सुंदर और अत्यंत धनी, प्रसिद्ध और उतनी ही गुणी; हर योग्यता से संपन्न।

मैं कुलों में बहुत सम्मानित हूँ। (60) [1018]

747 बीजेटीएस इस श्लोक को एक तारांकित फुटनोट में रखता है, यह मानते हुए कि यह इसके कई वैकल्पिक संस्करणों में आता है।

748 बीजेटीएस, पीटीएस से सहमत होते हुए इसे महा-इसे (वोक.) के रूप में प्रस्तुत करता है , लेकिन वैकल्पिक पाठ महा-इसी का संदर्भ देता है।

(नामवाचक), संभवतः बुद्ध द्वारा सुमेधा को "महान ऋषि" कहकर संबोधित करने से परेशान थे।

749 रीडिंग manāpā with BJTS for PTS manasā

750 पढ़ना यथा... पीटीएस यथा के लिए बीजेटीएस के साथ अनुरक्खंति 'सामिनो ... अनुरक्खति सामि नं ("जैसा कि हमारे गुरु रक्षा करते हैं")

धन-दौलत, शोहरत, आतिथ्य सत्कार,

और सांसारिक चीजों में लिप्त होना — ये मेरे मन को विचलित नहीं करते;751

मुझे किसी भी चीज से डर नहीं है। (61) [1019]

मुझे उपस्थित होने के लिए नियुक्त किया गया था

भगवान बुद्ध ने राजा के हरम में जो कहा था, उस पर

तब क्षत्रिय नगर में। (62)752

मैं एक नौकरानी हूं।

और [वह] जो सुख और दुख का अनुभव करती है, एक महिला753 जो तथ्यों की घोषणा करती है,

एक महिला754 जो दयालु है। (63)

मैंने पाँच अरब बुद्धों को, और नौ अरब अन्य बुद्धों को भी, विशाल दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के ऊपर देवता.755 (64)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

ग्यारह अरब [अन्य लोगों] के लिए

और पचास अरब [बुद्ध और]। (65)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (66)

बीस अरब [अन्य] बुद्ध और [एक और] तीस अरब –

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी देवता। (67)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

चालीस अरब [और बुद्धों के लिए,]

और [एक और] पचास अरब। (68)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

751 लिट., “मेरे मन में कोई हलचल नहीं है”

752 यह और इसके बाद के 19 श्लोक (कुल 20 श्लोक) बीजेटीएस में शामिल नहीं हैं। श्लोक (62) और (63) बीजेटीएस [1092]-[1093] में दिखाई देते हैं।

753 लिट., “और एक महिला”

754 लिट., “और एक महिला”

755 etesaŋ devedevānaŋ

756 अधिकारं सदा मयहं , शाब्दिक अर्थ: "मेरी सेवा निरंतर है" "मेरी सेवा दैनिक है"

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (69)

साठ अरब [अन्य] बुद्ध, [एक और] सत्तर अरब —

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी देवता। (70)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

अस्सी अरब [और बुद्धों के लिए,]

और [एक और] नब्बे अरब। (71)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (72)

लाखों-करोड़ों

जो विश्व के प्रमुख नेता थे; मैंने उन्हें व्यापक दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी देवता। (73)

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ।

एक और नब्बे ट्रिलियन तक

जो विश्व के नेता भी थे। (74)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ (75)

महान ऋषियों को [जिनकी संख्या थी]

आठ सौ पचास ट्रिलियन, और सात सौ पचासी अरब [अतिरिक्त बुद्ध]। (76)

मैंने उन्हें बहुत दान दिया।

वे [बुद्ध,] देवताओं के भी स्वामी देवता;

हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (77)

हे अकेले बुद्धों, वासना से मुक्त, छह सौ चालीस मिलियन; हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (78)

बुद्धों के अनगिनत अनुयायी,

मैं दोषों से मुक्त और निष्कलंक हूँ; हे महान राजा, मेरी बात सुनो: मैं निरंतर सेवा कर रहा हूँ। (79)

मैं हमेशा शिक्षण का अभ्यास करता हूँ।

उन लोगों में से जो शिक्षाओं का अभ्यास करते हैं,759

शिक्षण का अभ्यास करते समय सहज महसूस करना,

इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में। (80)

शिक्षण-अभ्यास का अच्छी तरह से अभ्यास किया जाना चाहिए;

वह अभ्यास कुप्रथा नहीं है। [मैं] इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में शिक्षण का अभ्यास करने में सहज हूँ। (81)

पुनर्जन्मों से विरक्ति होकर, मैं हजारों भिक्षुणियों से घिरी हुई, निर्जनता (त्याग) की राह पर चल पड़ी।

कुछ भी त्यागने के बाद। (82) [1020]

अपना घर छोड़ने के बाद,

मैं बेघर हो गया।

जब आठ महीने 760 अभी बीते भी नहीं थे

मैंने चार [महान] सत्यों को प्राप्त किया। (83) [1021]

समुद्र की लहरों की तरह, लोग अनेक प्रकार के मठवासी वस्त्र और भिक्षा लेकर भोजन के लिए आ रहे हैं।

आवश्यकताएँ [साथ ही] आवास। (84) [1022]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (85) [1023]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (86) [1024]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान (महाशक्तियां) प्राप्त कर लीं।

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (87) [1025]

757 या करें: कारती से

758 सधम्म° , प्रकाशित "अच्छी शिक्षा"

759 धम्मेसु सीनानां सदा सद्धम्म-कारिनो

760 aṭṭhamāse , BJTS इसे addhamāse (“आधा महीना”) पढ़ता है

761 पीटीएस बुहुन एके के लिए बीजेटीएस के साथ बहु 'नेके पढ़ना

इस प्रकार अनेक प्रकार के दुख और अनेक प्रकार के सुख होते हैं;

अब शुद्ध जीवन प्राप्त हो चुका है।

मैंने सभी उपलब्धियाँ प्राप्त कर ली हैं। [1026]762

जो स्त्री स्वयं को महान ऋषि के पुण्य के लिए समर्पित करती है, उसे [उनका] साथ और [अपूर्ण निर्वाण] प्राप्त होता है। [1027]

अतीत पूरी तरह से नष्ट हो गया है, और वर्तमान और भविष्य भी; मेरे सारे कर्म नष्ट हो गए हैं:

मैं आपके चरणों की पूजा करता हूँ, हे दृष्टिपूर्ण।” [1028]

इस प्रकार भिक्खुनी यशोदरा ने ये श्लोक कहे।

यशोदरा थेरी763 की कथा समाप्त हुई।
टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दाक निकाय >> अपादान >> अपदान 4.1-थेरिस सूची >> 29.यासोवती द्वारा निर्देशित दस हजार भिक्षुणियाँ
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

29. यासोवती के नेतृत्व में दस हजार ननें 764

एक लाख युग [और]

चार अगणनीय [युग]

अतः, दीपांकर, विजेता,

विश्व के नेता का जन्म हुआ। (1) [1029]

महान नायक दीपांकर

मार्गदर्शक ने उस समय भविष्यवाणी की थी कि

सुमेधा और सुमित्ता

सुख और दुख में एक समान रहो। (2) [1030]

देखना और घूमना-फिरना

दुनिया अपने देवताओं समेत, हमसे मिलने में शामिल थी।

[बुद्ध ने] उनके लिए जो भविष्यवाणी की थी। (3) [1031] "तुम,765 [सुमेधा,] सब होगे

762 यह और इसके बाद के समापन श्लोक पीटीएस में नहीं मिलते हैं, और ये असामान्य हैं (हालांकि अद्वितीय नहीं)।

अपदाना के लिए जिसमें व्यक्तिगत कविताएँ आमतौर पर उस चीज़ के साथ समाप्त होती हैं जिसे मैंने "समापन छंद" कहा है (श्लोक)।

85-87) [1023-1025]। दिलचस्प बात यह है कि वे (साथ ही एक और, जो कहीं और भी दोहराया गया है) उसी असामान्य दोहराव के बाद की स्थिति में, नीचे, अपदान #30, यशोधरा के साथ अठारह हजार ननों के श्लोक 57-59 (साथ ही 60) के रूप में दिखाई देते हैं, और उस अपदान के बीजेटीएस संस्करण में भी इसी स्थिति में हैं (श्लोक [1100-1102] साथ ही [1103])।

763 PTS में Therī शब्द शामिल नहीं है, जिसे मैंने BJTS से लिया है।

764 "पत्थर," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

765 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

हमारे पति भविष्य में मिले;

हम सब आपके लिए वांछनीय होंगे

पत्नियों से कहो कि तुम्हें क्या प्रिय है। (4) [1032]

यह सब दान-पुण्य और नैतिक मूल्यों, तथा ध्यान का संवर्धन था;

लंबे समय तक हमारा सब कुछ

हे महान ऋषि, इसे त्याग दिया गया है। (5) [1033]

सुगंधित पदार्थ और मलहम, मालाएँ और दीपक, जो शुद्ध सोने से बने थे, जो कुछ भी हम चाहते थे, वह सब हमें मिल जाता था।

हे महान ऋषि, सब कुछ त्याग दिया गया था। (6) [1034]

और हमने जो अन्य कर्म किए हैं, और मनुष्य के सभी सुख, लंबे समय से हमारे लिए सब कुछ हैं।

हे महान ऋषि, इसे त्याग दिया गया है। (7) [1035]

विभिन्न जन्मों में पुनर्जन्म लेते हुए, हमने बहुत अच्छा कर्म किया; [आपको] पति के रूप में अनुभव करते हुए, जन्म-जन्मांतर लेते हुए, (8) [1036]

जब हमारा अंतिम जन्म शाक्यन राजकुमार के घर में हुआ,767 तब हम विभिन्न कुलों में उत्पन्न हुए।

आकर्षक स्वर्गीय अप्सराएँ.768 (9) [1037]

हमने प्रसिद्धि प्राप्त की है, सबसे अधिक लाभ के साथ; हमारी पूजा की जाती है769 और हमारा बहुत सम्मान किया जाता है। हम हमेशा आदरणीय हैं।

खाने-पीने की चीजें प्राप्त करना। (10) [1038]

घर छोड़ने के बाद, बेघर होने की ओर अग्रसर,

जब आठ महीने771 अभी बीते भी नहीं थे,

हम सभी ने निर्वाण प्राप्त किया। (11) [1039]

हमें हमेशा पूजा और सम्मान मिलता है, और हमें खाने-पीने की चीजें मिलती हैं।

766 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

767 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मवास"

768, अर्थात् तैंतीस देवता।

769 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

770 यह पीटीएस भिक्षुणी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

771 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

और कपड़े [और साथ ही] रहने की जगह [भी;]

[लोग] हमें सभी आवश्यक वस्तुएँ लाते हैं। (12) [1040]

हमारे 772 दोष अब जलकर नष्ट हो गए हैं;

सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

हम बिना किसी बंधन के जी रहे हैं। (13) [1041]

बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना हमारे लिए बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

हमने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (14) [1042]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

हमने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) [1043]

इस प्रकार, यशोवती के नेतृत्व में दस हजार बौद्ध भिक्षुणियों ने भगवान बुद्ध के समक्ष आमने-सामने इन श्लोकों का पाठ किया।

यशोदरा के नेतृत्व में दस हजार बौद्ध भिक्षुणियों की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान4.1-थेरिस सूची >> 30. अठारह हजार भिक्षुणियों का नेतृत्व यशोधरा ने किया
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

30. यशोदरा के नेतृत्व में अठारह हजार ननों का समूह 773

यशोदरा के नेतृत्व में शाक्यन वंश में जन्मीं अठारह हजार बौद्ध भिक्षुणियां।

संबुद्ध के पास गया। (1) [1044]

वे सभी अठारह हजार महिलाएं महाशक्तियों से परिपूर्ण हैं। ऋषि के चरणों की पूजा करने वाली महिलाएं...

वे अपनी शक्ति की सीमा की घोषणा कर रहे हैं। (2) [1045]

"जन्म, वृद्धावस्था, रोग और मृत्यु सब नष्ट हो जाते हैं, हे महान ऋषि; हमें शांतिपूर्ण मार्ग पर ले चलो।"

अमर और अपवित्र। (3) [1046]

यदि शहर में मुसीबत आ जाए, तो हे महान ऋषि, यह सबके लिए भी मुसीबत का कारण बन सकता है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

773 “पत्थर,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

वे सब हमारी कमियों को जानते हैं;

नेता, [हमें अपनी] क्षमा प्रदान करें।” (4) [1047]

“[अब] अपनी महाशक्तियों का प्रदर्शन करो, मेरे विधान का पालन करने वालों;

उस हद तक संदेह को दूर करें

सभी सभाओं के बीच।” (5) [1048]

“हम यशोदरा हैं, हे महान वीर; हम मनभावन हैं, मधुर शब्द बोलते हैं। [और] घर में, हे महान वीर,

हम सभी को आपकी प्रमुख रानियों के रूप में नियुक्त किया गया था।774 (6) [1049]

हे वीर, आपके घर में हम ही मुखिया थे, हम ही सबके स्वामी थे।

वहाँ मौजूद [महिलाओं की संख्या]

एक लाख छियानवे। (7) [1050]

हम सभी महिलाएं सौंदर्य और शालीनता के गुणों से संपन्न हैं; युवा, सुस्पष्ट वक्ता, हम आदरणीय हैं।

जैसे देवता775 [लोगों द्वारा पूजे जाते हैं]। (8) [1051]

हम सभी अठारह हजार महिलाएं

शाक्य वंश में जन्मा,

ये प्रसिद्ध हैं,776 [यशोधरा,]

उस समय हजारों के नेता। (9) [1052]

इच्छा के सार से परे, सौंदर्य के सार के रूप में स्थिर,

सुंदरता के मामले में हमारा कोई मुकाबला नहीं है।

अन्य हजारों लोगों के बीच, महान ऋषि।" (10) [1053]

संबुद्ध की उपासना करते हुए, उन्होंने गुरु को महाशक्तियाँ दिखाईं।

उन्होंने महान महाशक्तियाँ प्रदर्शित कीं, विविध, विभिन्न रूपों वाली। (11) [1054]

शरीर ब्रह्मांड जितना विशाल है,779

उन्होंने उत्तर में महाद्वीप 780 बनाया

774 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

775 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्या [बुद्ध] की व्यवस्था में"

776 रीडिंग °ब्रह्मचर्यम (बीजेटीएस द्वारा पीटीएस के लिए) °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ: "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

777, अर्थात् तैंतीस देवता।

778 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

779 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

780 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

[उनके] सिर; दोनों अन्य द्वीप पंख; [और बनाया] भारत [उनके] धड़; (12) [1055]

पूंछ के पंख: दक्षिणी महासागर; [अन्य] पंख: विभिन्न नदियाँ;

उनकी आंखें चांद और सूरज थीं।

[उनके] शिखर [थे] ब्रह्मांडीय माउंट मेरु। (13) [1056]

[उनकी] चोंच में, दुनिया के छोर पर स्थित पर्वत,781

वे जड़ों समेत एक पेड़ उठा लाए। उसके पास आकर, उसे पंखा झलते हुए,

वे विश्व के नेता की पूजा कर रहे हैं। (14) [1057]

[तब] उन्होंने अपने लिए 783 हाथी बनाए, उसी प्रकार घोड़े, पहाड़, महासागर भी बनाए।

चंद्रमा और सूर्य, मेरु पर्वत,

और शकरा, [देवताओं का राजा]। (15) [1058]

"हम यशोदराओं की तरह हैं, 784 हीरो;

हम आपके चरणों की पूजा करते हैं, हे दर्शनीय प्रभु।

हे महामहिम, हे नायक,

हम परिपूर्ण हो चुके हैं, हे पुरुषों के नेता। (16) [1059]

हमने "दिव्य श्रवण" जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। हम ही स्वामी हैं, महान ऋषि।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (17) [1060]

हम अपने पूर्व जन्मों को याद करते हैं; हमारी "दिव्य दृष्टियाँ" शुद्ध हो जाती हैं। सभी दोष नष्ट हो जाते हैं;

हम दोबारा जन्म नहीं लेंगे। (18) [1061]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

हमारा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

आपकी उपस्थिति में, हे महान नायक.785 (19) [1062]

सभी बुद्धों के साथ हमारी मुलाकात,786

विश्व-स्वामियों को [आपके सामने] प्रदर्शित किया गया था;

781 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

782 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

783 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

784 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

785 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

786 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

हमारी व्यापक सेवा [उन्हें]

यह आपके लिए था, हे महान ऋषि। (20) [1063]

हे ऋषि, हमारे द्वारा पूर्व में किए गए अच्छे कर्मों को याद कीजिए; उनसे हमने पुण्य अर्जित किया था।

हे महान नायक, आपके लिए। (21) [1064]

हमने दुर्व्यवहार से परहेज किया, बाधा डाली 787

[नौ] असंभव स्थान;788

हमने जीवन का बलिदान दिया है।

हे महान नायक, आपके लिए। (22) [1065]

हमें कई दसियों अरब बार आपकी पत्नियाँ बनने का अवसर दिया गया। हमें इस बात का कोई दुख नहीं था।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (23) [1066]

हमें कई दसियों अरब बार सेवा करने का अवसर दिया गया। हमें इस बात की कोई चिंता नहीं थी।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (24) [1067]

हमें कई दसियों अरब बार भोजन उपलब्ध कराने का दायित्व सौंपा गया था। हमें इस बात की कोई चिंता नहीं थी।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (25) [1068]

हमने तुम्हें अपना सारा जीवन, कई दसियों अरब बार दिया है। हम भय से मुक्त होंगे।

एक बार फिर अपनी जान दे रहे हैं। (26) [1069]

हे महान ऋषि, आपके लिए हम एक स्त्री की चीजों को नहीं छिपाते, विभिन्न प्रकार के कई वस्त्र।

हमारे अंगों पर लगाए गए आभूषण। (27) [1070]

धन-दौलत और अनाज, गाँव और छोटे कस्बे भी त्याग दिए गए हैं।

खेत और बेटे और बेटियाँ [भी]

हे महान ऋषि, त्याग दिया गया है। (28) [1071]

787 puṇṇā ti nāmaŋ

788 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

789 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

790 पाठ महामुने (भाषण) पीटीएस तदा मुनि के लिए बीजेटीएस के साथ ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

791 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

हाथी, घोड़े, गायें, गुलाम और नौकरानियां असंख्य संख्या में त्याग दिए गए हैं।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (29) [1072]

हमें जो भी देने को कहा जाए

हम भिखारियों को दान के रूप में वह देते हैं;

हमें किसी प्रकार की परेशानी नहीं दिखती।

अंतिम उपहार देने से। (30) [1073]

हमने इस विविध जीवन में अनगिनत प्रकार की 793 बीमारियों का अनुभव किया है।

हे महान नायक, आपके लिए। (31) [1074]

सुख-सुविधाएँ प्राप्त करने पर भी हम रोमांचित नहीं होते; हम परेशानियों से विचलित नहीं होते। हम हर जगह संतुलित रहते हैं।

हे महान ऋषि, आपके लिए। (32) [1075]

[दोनों] का अनुभव करने के बाद

मार्ग में सुख और दुख दोनों का सामना करते हुए, महान ऋषि ने ज्ञानोदय प्राप्त किया।

वह शिक्षा जिसके लिए बुद्ध ने प्रयास किया। (33) [1076]

आपके और हमारे द्वारा अन्य विश्व-स्वामियों से बहुत मुलाकातें हुईं, चाहे आप ब्रह्मा हों या कोई और।

गौतम बुद्ध, 799 विश्व के नेता। (34) [1077]

हमने बहुत सारी सेवाएँ प्रदान कीं।

हे महान ऋषि, आपके लिए;

792 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

793 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

794 डांटो , या "वश में किया हुआ"

795 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

796 vimutt'o

797 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

798 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

799 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

जब आप बुद्ध की शिक्षाओं की खोज कर रहे थे,800

हम [हमेशा] आपके सेवक थे। (35) [1078]

एक लाख युग [और]

चार अगणनीय [युग]

अतः, दीपांकर, महान नायक,

विश्व के नेता का जन्म हुआ। (36) [1079]

पास के किसी देश में, उसे आमंत्रित करते हुए, उस दिवंगत आत्मा के प्रसन्न मन वाले लोग सफाई कर रहे हैं।

जिस सड़क से वह आ रहा है। (37) [1080]

उस समय सुमेधा नाम का एक ब्राह्मण था। वह मार्ग तैयार करवा रहा था।

उस सर्वज्ञ के लिए जो आ रहा था। (38) [1081]

उस समय हम सब कुंवारी लड़कियां थीं।

जो ब्राह्मण वंश में पैदा हुए थे;

हम उस सभा में ले गए

पानी में, ज़मीन पर उगाए गए फूल.801 (39) [1082]

ठीक उसी समय महान वीर बुद्ध, दीपांकर ने भविष्य में बुद्धत्व की भविष्यवाणी की।802

[उस] ऋषि के लिए जिसका मन प्रेममय है। (40) [1083]

जब वह अपने कर्मों की प्रशंसा कर रहा था, तब पृथ्वी अपने देवताओं सहित कांप रही थी, गरज रही थी और हिल रही थी।

[उस] ऋषि के लिए जिसका मन प्रेममय है। (41) [1084]

दिव्य कन्याएँ, मानव स्त्रियाँ,

हम और [संपूर्ण विश्व] अपने देवताओं के साथ, विभिन्न वस्तुओं से पूजा करते हुए803

प्रस्तावित किया जाना, 804 हमने इच्छाएँ कीं। (42) [1085]

बुद्ध प्रतिमा जिसका नाम "उज्ज्वल दीपक" है।

800 शाब्दिक अर्थ, " पूजा की "

801 #23, ऊपर

802 शाब्दिक अर्थ में, " बीस मिलियन लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है " धम्म की अंतर्दृष्टि", " धम्म में प्रवेश ", " धम्म की समझ " , या "धम्म में प्रवेश ", शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

803 y'akkho

804 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, “वे लोग जिनके पास नहीं है”

उन्होंने [उस समय] उनसे भविष्यवाणी की: “जिन्होंने आज इच्छा की है, वे आमने-सामने [एक साथ पुनर्जन्म लेंगे] ।” (43) [1086]

बुद्ध के वचन से प्रसन्न होकर, हम उसी प्रकार व्यवहार करते हुए जीवन व्यतीत करते थे।

बुद्ध ने असंख्य युगों पहले हमारे लिए भविष्यवाणी की थी। (44) [1087]

जब हमने वह कर्म सफलतापूर्वक पूरा किया तो हमें मन में प्रसन्नता हुई;

हमने अनगिनत गर्भाशयों का अनुभव किया,

दैवीय [साथ ही] मानवीय [वाले]। (45) [1088]

देवताओं और मनुष्यों के बीच सुख और दुख का अनुभव करते हुए, जब हमारा अंतिम पुनर्जन्म हुआ,

हम शाक्यान वंश में पैदा हुए थे। (46) [1089]

सुंदर और अत्यंत धनी, प्रसिद्ध और उतनी ही गुणी; हर योग्यता से संपन्न।

हम कुलों में बहुत सम्मानित हैं। (47) [1090]

धन-दौलत, शोहरत, आतिथ्य सत्कार,

और सांसारिक चीजों में लिप्त होना — ये हमारे मन को विचलित नहीं करते;805

हमें किसी भी चीज से डर नहीं है। (48) [1091]

हमें उपस्थित होने के लिए नियुक्त किया गया था

भगवान बुद्ध ने राजा के हरम में जो कहा था, उस पर

तब क्षत्रिय नगर में। (49) [1092]

हम ऐसी महिलाएं हैं जो नौकरानियां हैं।

और वे लोग जो सुख और दुख का अनुभव करते हैं, और वे महिलाएं जो तथ्यों को प्रकट करती हैं,

जो महिलाएं दयालु हैं। (50) [1093]

शिक्षण-अभ्यास का सही अभ्यास होने पर वह अभ्यास गलत अभ्यास नहीं कहलाता। शिक्षण का अभ्यास करने में हमें सहजता महसूस होती है।

इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में। (51) [1094]

घर छोड़ने के बाद,

805 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

बेघर होने की ओर आगे बढ़ना,

जब आठ महीने807 अभी बीते भी नहीं थे,

हमने चार [महान] सत्यों को प्राप्त किया। (52) [1095]

समुद्र की लहरों की तरह, लोग अनेक प्रकार के मठवासी वस्त्र और भिक्षा लेकर भोजन के लिए आ रहे हैं।

आवश्यकताएँ [साथ ही] आवास। (53) [1096]

हमारे पाप अब जलकर राख हो गए हैं;

सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

हम बिना किसी बंधन के जी रहे हैं। (54) [1097]

बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना हमारे लिए बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

हमने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (55) [1098]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

हमने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (56) [1099]

इस प्रकार अनेक प्रकार के दुख और अनेक प्रकार के सुख होते हैं;

अब शुद्ध जीवन प्राप्त हो चुका है।

हमने सभी उपलब्धियाँ प्राप्त कर ली हैं। (57) [1100]

वे महिलाएं जो महान ऋषि के पुण्य के लिए स्वयं को समर्पित कर रही हैं

उसके साथ संगति प्राप्त करना,809

[और] बिना शर्त निर्वाण.810 (58) [1101]

अतीत पूरी तरह से नष्ट हो गया है, और वर्तमान और भविष्य भी; हमारे सारे कर्म नष्ट हो गए हैं।

हम आपके चरणों की पूजा करते हैं, हे दृष्टिपूर्ण।" (59) [1102]

मैं महिलाओं से और क्या कह सकता हूँ?

806 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

807 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे भिक्खुनी सुक्का पढ़ता है।

808 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

809 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए BJTS के साथ y'e keci हत्थपरिकम्मम पढ़ रहे हैं

810 शाब्दिक रूप से, "भविष्य में" (एकवचन)

811 सम्मुखा , अर्थात् "एक साथ"

812 तुयहम , संभवतः बोधिसत्व को संबोधित करते हुए।

जो निर्वाण की ओर जा रहे हैं? बद्ध दोषों को शांत करना

आपको अमरता की अवस्था प्राप्त करनी चाहिए।" (60) [1103]

इस प्रकार, यशोदरा के नेतृत्व में अठारह हजार बौद्ध भिक्षुणियों ने इन श्लोकों का उच्चारण किया।

यशोदरा के नेतृत्व में अठारह हजार बौद्ध भिक्षुणियों की कथा समाप्त होती है।

सारांश: कुण्डला, जिसे गोतमी भी कहते हैं,

धम्मदिन्ना और सकुला, 815

उत्कृष्ट नंदा और सोना

कपिलाणी, यशोदरा,

और दस हजार बौद्ध भिक्षुणियाँ [भी] अठारह हजार भिक्षुणियाँ: 816 यहाँ गिने गए श्लोकों की संख्या एक सौ चालीस है

और साथ ही अठहत्तर [और भी]।

कुण्डलकेसा अध्याय, तीसरा

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 4.1-थेरिस सूची >> 31. यासावती द्वारा संचालित अठारह हजार क्षत्रिय युवती बौद्ध भिक्षुणियाँ
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

31. यशवती के नेतृत्व में अठारह हजार क्षत्रिय कन्या बौद्ध भिक्षुणियां 818

खत्तिया अध्याय, 817, चौथा

हे महान ऋषि, हम घोषणा करते हैं कि “संपूर्ण अस्तित्व नष्ट हो गया है; हम अस्तित्व के बंधनों से मुक्त हो गए हैं।”

सभी बहिर्वाह 819 हमारे लिए मौजूद नहीं हैं। 820 (1) [1104]

पिछले अच्छे कर्मों का फल 821,

813 पठन anubhontī ciraṃ kālaṃ with BJTS for PTS tuyhaŋ vo paricāre ca (“और आप सभी आपकी सेवा करेंगे”)

814 में जटाम्ह का पाठ बीजेटीएस द्वारा पीटीएस अजता (“हम अजन्मे हैं;” इसका गलत अर्थ है अजतो “वह अजन्मा है”)

815 °putta° शाब्दिक अर्थ, “पुत्र”

816 शाब्दिक रूप से, "हर समय हम नहीं हैं..."

817 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

818 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

819 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

820 पठन °ब्रह्मचर्यम, पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

821, अर्थात् तैंतीस देवता।

जो भी कामना की गई हो,822

यह सब सामान 823 दिया गया है

हे महान ऋषि, आपके लिए।824 (2) [1105]

बुद्धों की इच्छाएँ, एकाकी

बुद्ध और उनके अनुयायियों के बारे में,

यह सब सामान 825 दिया जा चुका है

हे महान ऋषि, आपके लिए।826 (3) [1106]

यह कर्म, चाहे छोटा हो या बड़ा, बौद्ध भिक्षुओं की उत्कृष्ट इच्छा और उच्च पदस्थ कुलों की सेवा है।

हमारे द्वारा किया गया है,827 हे महान ऋषि.828 (4) [1107]

उस पुण्यकारी मूल से प्रेरित होकर, उस कर्म का फल भोगते हुए, सभी मनुष्यों से श्रेष्ठ होते हुए,

हम क्षत्रिय वंश में पैदा हुए थे। (5) [1108]

[हमेशा] साथ में जन्म लेते हैं, जब कर्म पूरा हो जाता है, और जाति के अनुसार, इस अंतिम [जन्म] में 831 एक साथ जन्म लेते हैं।

[हम] क्षत्रिय हैं, 832 कुलों में जन्मे। (6) [1109]

हे महान वीर, हरम में

मानो देवताओं के [बगीचे] "आनंद" में, [हम] सुंदर हैं, बहुत धनी हैं,

सम्मान और पूजा प्राप्त करना.833 (7) [1110]

थककर हम घर से निकलकर बेघर हो गए। कुछ दिन वहीं रुके रहे,

हम सभी ने निर्वाण प्राप्त किया। (8) [1111]

लोग बहुत सारे उपहार ला रहे हैं।

822 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

823 यह पीटीएस भिक्षुणी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

824 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

826 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

827 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

828 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

829 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

830 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

831 puṇṇā ti nāmaŋ

832 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

833 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्निका के लिए

मठवासी वस्त्र और भोजन के लिए भिक्षा, आवश्यक वस्तुएँ [साथ ही] आवास;

हम हमेशा सम्मानित और पूजे जाते हैं।834 (9) [1112]

हमारे पाप अब जलकर राख हो गए हैं;

सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

हम बिना किसी बंधन के जी रहे हैं। (10) [1113]

बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना हमारे लिए बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

हमने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [1114]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

हमने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (11) [1115]

इस प्रकार अठारह हजार क्षत्रिय कन्या बौद्ध भिक्षुणियाँ

यशवती के नेतृत्व में इन श्लोकों का उच्चारण किया गया।

अठारह हजार क्षत्रिय बौद्ध भिक्षुणियों की कथा

यशवती द्वारा निर्देशित नाटक का समापन हो चुका है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान4.1-थेरिस सूची >> 32. चौरासी हजार ब्राह्मण युवती नन
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

32. चौरासी हजार ब्राह्मण कन्या ननें 835

हे महान ऋषि, आपके नगर में 836 लोग हैं

चौरासी हजार [युवतियां,]

बहुत कोमल हाथों और पैरों से,

जो ब्राह्मण वंश में जन्मे हैं। (1) [1116]

हे महान ऋषि, आपके नगर में हर देश से कई कन्याएँ हैं, जो वैश्य और शूद्र वंश में जन्मी हैं।

और देवता, सर्प-देवता और किन्नर । (2) [1117]

उनमें से कुछ लोग पहले ही निकल चुके हैं;

कई लोगों को सत्य की अंतर्दृष्टि प्राप्त है;

834 पाठ महामुने (भाषण) पीटीएस तदा मुनि के लिए बीजेटीएस के साथ ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

835 “पत्थर,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

836 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

837 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

838 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

देवता, किन्नर और नाग देवता

भविष्य में इसका आनंद लेंगे। (3) [1118]

हर तरह की प्रसिद्धि का अनुभव करना, हर उपलब्धि हासिल करना,

[जिन्होंने] आपमें आनंद प्राप्त किया है, वे भविष्य में भी इसका आनंद उठाएंगे। (4) [1119]

और 840 हम ब्राह्मणों की पुत्रियाँ हैं, जो ब्राह्मण कुलों में जन्मी हैं। हमारी इच्छा से, 841 हे महान ऋषि,

हम आपके चरणों की पूजा करते हैं, हे दृष्टिपूर्ण प्रभु। (5) [1120]

सभी अस्तित्वों तक पहुँच चुके हैं, 842 लालसाओं को जड़ से उखाड़ दिया गया है; सुप्त प्रवृत्तियों को काट दिया गया है।

योग्यता[-आधारित] समुच्चय टूट गया। (6) [1121]

सभी चरागाह ध्यान में,843

इसी प्रकार परिवर्तित अवस्थाओं में महारत हासिल कर ली है;844

हम हमेशा आनंदमय जीवन जिएंगे

परिवर्तित अवस्थाओं के माध्यम से शिक्षण में.845 (7) [1122]

अस्तित्व से संबंध, अज्ञानता,

सभी तत्व भी त्याग दिए जाते हैं। हे नेता, हम यहाँ से जाने के बाद जन्म लेते हैं।

रास्ते में देखना बहुत मुश्किल है। (8) [1123]

“बहुत समय से तुम मेरे 846 सेवक रहे हो, जो करना आवश्यक है वो करते रहे हो। बहुतों के संदेह दूर करते हुए,

आप सभी निर्वाण प्राप्त करें। (9) [1124]

ऋषि के चरणों की पूजा करने के बाद,

उन्होंने अपनी महाशक्तियों का प्रदर्शन किया।847

कुछ में [बहुत तेज रोशनी] दिखाई दे रही है।

और उसके बाद अंधेरा कर दिया। (10) [1125]

वे चंद्रमा और सूर्य को दिखा रहे हैं।

839, अर्थात् तैंतीस देवता।

840 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज।

841 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

842 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

844 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

845 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

846 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

847 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

और विशाल महासागर अपनी मछलियों के साथ;

वे माउंट मेरु और उसे दिखा रहे हैं

कोरल ट्री 848 [स्वर्ग में,] घेरा हुआ। (11) [1126]

महाशक्ति के माध्यम से वे दिखा रहे हैं

तावतिंसा और यम क्षेत्र, तुसिता [और] निम्मिता देवता,

[और] वासवत्ती महान स्वामी। (12) [1127]

कुछ चित्र ब्रह्मा [देवताओं] को दर्शा रहे हैं।

और एक बहुत ही महंगा पैदल मार्ग;

स्वयं को ब्रह्मा के समान दिखाने का प्रयास करना

वे उस धम्म का प्रचार करते हैं जो निरर्थक है।850 (13) [1128]

विभिन्न रूपांतरण करते हुए, बुद्ध की 851 महाशक्तियों का प्रदर्शन करते हुए,

उन सभी ने अपनी ताकत का प्रदर्शन किया।

[तब उन्होंने] शिक्षक के चरणों की पूजा की। (14) [1129]

हमने "दिव्य श्रवण" जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। हम ही स्वामी हैं, महान ऋषि।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (15) [1130]

हम अपने पूर्व जन्मों को याद करते हैं; हमारी "दिव्य दृष्टियाँ" शुद्ध हो जाती हैं। सभी दोष नष्ट हो जाते हैं;

हम पुनर्जन्म नहीं लेंगे। (16) [1131]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

हमारा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

आपकी उपस्थिति में, हे महान नायक।852 (17) [1132]

विश्व के सभी भगवानों, बुद्धों के साथ हमारी 853वीं मुलाकात आपको दिखाई गई; उनके प्रति हमारी व्यापक सेवा का भी वर्णन किया गया।

यह आपके लिए था, हे महान ऋषि। (18) [1133]

हे ऋषि, अपने अच्छे कर्मों को याद कीजिए।

848 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

849 puṇṇā ti nāmaŋ

850 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

851 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

852 पाठ महामुने (भाषण) पीटीएस तदा मुनि के लिए बीजेटीएस के साथ ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

853 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

जो काम पहले हम करते थे; वह पुण्य हमने अर्जित किया था।

हे महान नायक, आपके लिए। (19) [1134]

एक लाख युगों बाद

पदुमुत्तरा ऋषि थे।854

हंसवती नामक नगर

वह बुद्ध के वंश का घर था। (20) [1135]

गंगा नदी हमेशा हंसवती के द्वार से होकर बहती है।

बौद्ध भिक्षु नदी से परेशान हैं, आगे बढ़ने में असमर्थ हैं। (21) [1136]

एक दिन, फिर दो, फिर तीन, उसके बाद एक सप्ताह, फिर एक महीना।

फिर पूरे चार महीने [हो सकते हैं]

वे भिक्षु], आगे बढ़ने में असमर्थ। (22) [1137]

तब भविष्य के बुद्ध 857 एक स्थानीय नेता थे, 858 जिनका नाम जटिला था।

उन फंसे हुए बौद्ध भिक्षुओं को देखकर

उन्होंने नदी पर एक पुल बनाया।860 (23) [1138]

फिर, एक लाख [खर्च करके,]

नदी पर बना पुल, he861

उसके लिए एक मठ बनाया

निकटवर्ती तट पर सभा। (24) [1139]

महिलाएं और पुरुष दोनों,

उच्च और निम्न स्थिति वाले कुलों से,

854 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

855 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

856 डांटो , या "वश में किया हुआ"

857 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

858 vimutt'o

859 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

860 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

861 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

862 [धन] समान शेयरों के लिए प्रदान किया गया

उसके पुल और मठ में। (25) [1140]

हम और दूसरी महिलाएं भी,

शहर और ग्रामीण इलाकों में,

जिनका दिमाग बहुत ही स्पष्ट था,

वे उस कर्म के [सही] उत्तराधिकारी थे। (26) [1141]

महिलाएं [और] पुरुष863 और लड़के [भी,]

और साथ ही कई युवा लड़कियां भी,

[एक साथ जुड़कर] अपने पुल और मठ के लिए [साफ] रेत फैलाई। (27) [1142]

सड़क की सफाई करना, झंडे बनाना, केले के बैनर बनाना, 864 प्रचुरता के बर्तन बनाना, 865 और शिक्षक का सम्मान करना

धूप, कुन्नम और मालाओं के साथ, (28) [1143]

मठ बनाने के बाद

और पुल ने, व्यापक दान देने के बाद, मार्गदर्शक को आमंत्रित किया।

he866 जागृति की आकांक्षा रखता था.867 (29) [1144]

पद्ममुत्तरा, महान नायक,

सांस लेने वाले सभी जीवों में से क्रॉसर-ओवर868

महान ऋषि ने [बोधिसत्व] जटिला को धन्यवाद दिया:870 (30) [1145]

"जन्म-जन्मांतर से गुजरते हुए,

जब एक लाख [युग]

बीत चुके हैं, [भाग्यशाली] युग में, वह ज्ञानोदय प्राप्त करेगा। (31) [1146]

इन पुरुषों और महिलाओं ने व्यवस्था की है

862 शाब्दिक रूप से, "पूजा की"

863 #23, ऊपर

864 शाब्दिक अर्थ, " बीस मिलियन लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है " धम्म की अंतर्दृष्टि", " धम्म में प्रवेश ", " धम्म की समझ " , या "धम्म में प्रवेश ", शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

865 y'akkho

866 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, "जिनके पास नहीं है"

867 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

868 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

869 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे bhikkhunī Sukkā पढ़ता है।

870 रीडिंग "k'ā'si' 'jaṭilassa with BJTS for PTS kāsi-jaṭilassa , see previous note

हाथ से 871 क्या काम करना था, क्या सब कुछ भविष्य में 872 अभी आना बाकी है

आमने-सामने होना.873 (32) [1147]

उस कर्म के फलस्वरूप,

इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ किया गया, देवताओं के स्वर्ग में पुनर्जन्म हुआ।

वे सब आपके परिचारक होंगे।"874 (33) [1148]

जन्म-जन्मांतर तक, हमने लंबे समय तक अनगिनत वर्षों के दिव्य आनंद का अनुभव किया।

और अनगिनत [ऐसे] मानव [पुनर्जन्म]। (34) [1149]

एक लाख युगों तक, अच्छे कर्मों की प्राप्ति से, हम पुरुषों के बीच कोमल कन्याएँ हैं; इसी प्रकार

देवताओं के शानदार शहर में। (35) [1150]

सुंदर, धनी और प्रसिद्ध होने के साथ-साथ प्रशंसित और सम्मानित भी, हमें निरंतर प्रशंसा और सम्मान प्राप्त होता रहता है।

[कि] अच्छे कर्मों की प्राप्ति। (36) [1151]

जब हमारा अंतिम पुनर्जन्म हुआ, तो हम ब्राह्मण कुल में, अत्यंत कोमल हाथों और पैरों के साथ जन्म लेते हैं।876

शाक्यान राजकुमार के घर में.877 (37) [1152]

हम पृथ्वी को कभी भी बिना सजावट के नहीं देख रहे हैं।

और हमें कीचड़ भरी सड़कें दिखाई नहीं देतीं।

[जब] उन्हें साफ नहीं किया गया है,879 महान ऋषि। (38) [1153]

जब हम उस घर में रहते थे, तो हमारा हमेशा सम्मान किया जाता था; वे हमेशा सब कुछ लाते रहते थे।

871 पीटीएस केसी हत्थापदाओन ("कुछ, हाथ [और] पैर") के लिए बीजेटीएस के साथ आप केसी हत्थपरिकम्मम पढ़ रहे हैं

872 शाब्दिक रूप से, "भविष्य में" (एकवचन)

873 सम्मुखा , अर्थात् "एक साथ"

874 तुयहम , संभवतः बोधिसत्व को संबोधित करते हुए।

875 पठन anubhontī ciraṃ kālaṃ with BJTS for PTS tuyhaŋ vo paricāre ca ("और आप सभी आपकी सेवा करेंगे")

876 रीडिंग जटाम्ह (बीजेटीएस के साथ पीटीएस अजता के लिए) ("[हम] अजन्मे हैं;" इसका बुरा अर्थ है अजतो "वह अजन्मा है")

877 °पुत्ता° शाब्दिक अर्थ, "पुत्र"

878 शाब्दिक रूप से, "हर समय हम नहीं हैं..."

879 रीडिंग cikkhallabhūmimasuciṃ with BJTS for PTS cikkhallabhūmiŋ gamanaŋ ("कीचड़ भरे रास्तों पर जाना")

हमारे पिछले कर्मों की शक्ति के माध्यम से।880 (39) [1154]

अपने घरों को छोड़कर बेघर होने के बाद,

हमने पुनर्जन्म का मार्ग पार कर लिया है;881

हम वासना से मुक्त हो गए हैं।882 (40) [1155]

वे हर समय हमारे लिए मठवासी वस्त्र और भोजन के लिए भिक्षा लाते रहते हैं, साथ ही आवश्यक वस्तुएं और आवास भी उपलब्ध कराते हैं।

हजारों की संख्या में और अधिक से अधिक।883 (41) [1156]

हमारे पाप अब जलकर राख हो गए हैं;

सभी [नए] अस्तित्व नष्ट हो जाते हैं। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

हम बिना किसी बंधन के जी रहे हैं। (42) [1157]

बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना हमारे लिए बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

हमने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (43) [1158]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

हमने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (44) [1159]

इस प्रकार वास्तव में चौरासी हजार ब्राह्मण बौद्ध भिक्षुणियों ने इन श्लोकों का उच्चारण किया।

चौरासी हजार ब्राह्मण बौद्ध भिक्षुणियों की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान4.1-थेरिस सूची >> 33. उप्पलादायिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

33. उप्पलादायिका 884

अरुणावती नगर में,

क्षत्रिय अरुण रहते थे।

मैं उस राजा की पत्नी थी;

880 reading pubbakammabalena no with BJTS for PTS pubbakammaphalan tato ("after the fruit of previous karma")

881 संसारपथ-नित्तिना

882 पाठ vītarāgā bhavāmase with BJTS (and PTS alt.) for PTS n'atthi dāni punabbhavo ("अब कोई पुनर्जन्म नहीं होगा")

883 t'ato tato

884 "पत्थर," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

उस स्थान पर885 मैं अभ्यास कर रहा था.886 (1) [1160]

अकेले जाकर बैठ जाने पर मैंने इस पर इस प्रकार विचार किया: "मैंने कोई अच्छा कर्म नहीं किया है।"

अपनी यात्रा पर साथ ले जाने के लिए।888 (2) [1161]

तो क्या मैं नरक में नहीं जा रहा हूँ, जो धधकती हुई लाल आग की तरह जल रहा है, अत्यंत क्रूर है?

एक भयानक रूप के साथ, और कड़वा?

मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है।" (3) [1162]

इस प्रकार सोच-विचार करने के बाद, राजा के पास जाकर मुझे जो प्रसन्नता हुई,

मैंने उससे ये शब्द कहे [विनती करते हुए:] (4) [1163]

"हे राजा, 889 हम [जिन्हें] "स्त्री" कहा जाता है"

हमेशा हमारे आदमियों के पीछे-पीछे चलो।890

मुझे एक बौद्ध भिक्षु दे दीजिए;

मैं उसे भोजन कराऊंगा, हे क्षत्रिय।" (5) [1164]

उस समय राजा ने मुझे दिया

एक भिक्षु जिसकी इंद्रियां [अच्छी तरह से] नियंत्रित थीं। भिक्षापात्र उठाने के बाद,

मैंने इसे उत्कृष्ट भोजन से भर दिया। (6) [1165]

इसे उत्तम भोजन से भरकर, एक हजार रुपये मूल्य का एक उत्तम वस्त्र उतारकर,

मैंने इसे प्रसन्न मन से दिया। (7) [1166]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (8) [1167]

मुझे देवताओं के एक हजार राजाओं की प्रधान रानी के स्थान पर स्थापित किया गया था।

मुझे मुख्य रानी के पद पर नियुक्त किया गया था।

885 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

886 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

887 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

888, अर्थात् तैंतीस देवता।

889 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

890 यह पीटीएस भिक्षुणी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

891 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

एक हजार पहिए घुमाने वाले राजाओं का। (9) [1168]

[वहाँ] स्थानीय शासन भी बहुत अधिक था, जिसकी गिनती करना असंभव था,892

[और भी बहुत कुछ था],893 विविध

इसके बाद उस कर्म का फल। (10) [1169]

मैं हमेशा नीले कमल के रंग की, बहुत सुंदर, आकर्षक हूँ।

एक स्त्री जो हर तरह से परिपूर्ण है,

कुलीन जन्म [और] तेजस्वी.894 (11) [1170]

जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म हुआ

मैं शाक्यान वंश में जन्मी थी, जो एक हजार महिलाओं की मुखिया थी।

सुद्धोदना के पुत्र से संलग्न.895 (12) [1171]

घर में ऊबकर मैं बेघर हो गया। सातवीं रात आने से पहले ही मैं घर से बाहर निकल गया।896

मैंने चार [महान] सत्यों को प्राप्त किया। (13) [1172]

मुझे प्राप्त उपहारों, मठवासी वस्त्रों, भोजन के लिए दान, आवश्यक वस्तुओं और आवासों की गिनती नहीं कर सकता।

यह भिक्षा देने का फल है।897 (14) [1173]

हे ऋषि, मेरे द्वारा पूर्व में किए गए अच्छे कर्मों को याद कीजिए; मैंने अपने बहुत से कर्मों का बलिदान दिया है।

हे महान नायक, आपके लिए। (15) [1174]

पिछले इकत्तीस युगों में

मैंने उस समय दान दिया था, मुझे कभी बुरे पुनर्जन्म का अनुभव नहीं हुआ:

यह भिक्षा देने का फल है।898 (16) [1175]

मैं [केवल] दो अवस्थाओं में ही पुनर्जन्म लेता हूँ:

एक देवी या एक महिला के रूप में।

892 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

893 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

894 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

895 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

896 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

897 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

898 puṇṇā ti nāmaŋ

मुझे अन्य पुनर्जन्मों के बारे में जानकारी नहीं है;

यह भिक्षा देने का फल है। (17) [1176]

[जब मैं इंसान था] मैं उच्च कुलों में पैदा हुआ हूँ, जिनके पास बड़े-बड़े हॉल हैं, बहुत धनी हैं;

मैं छोटे कबीलों को नहीं देखता:

यह भिक्षा देने का फल है। (18) [1177]

जन्म-जन्मांतर करते हुए, अपनी पवित्र जड़ों से प्रेरित होकर, मुझे वह कुछ भी नहीं दिखता जो मुझे अप्रिय लगे:

प्रसन्न मन से किए गए कर्मों का फल। (19) [1178]

मैंने "दिव्य श्रवण" जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। मैं एक महान ऋषि भी हूँ।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (20) [1179]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (21) [1180]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

आपकी उपस्थिति में, हे महान वीर। (22) [1181]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (23) [1182]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) [1183]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [1184]

इस प्रकार, भिक्षुणी उप्पलादायिका ने भगवान बुद्ध के समक्ष इन श्लोकों का उच्चारण किया।

एक।

899 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

900 बीजेटीएस रीडिंग, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

भिक्खुनी उप्पलादायिका की कथा समाप्त हो गई है

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

34. सिगालका-माता901

विजेता, पद्ममुत्तरा, सर्वज्ञ थे। वह नेता संसार में प्रकट हुए।

एक लाख युगों बाद। (1) [1185]

मेरा जन्म हंसवती में हुआ था।

मंत्रियों के एक कुल में,

धनी, समृद्ध, अत्यंत धनी, विभिन्न रत्नों से जगमगाता हुआ। (2) [1186]

अपने पिता के साथ चलते हुए, चारों ओर भीड़ से घिरे हुए,

बुद्ध की शिक्षा सुनकर,

मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (3) [1187]

आगे बढ़ने के बाद मैंने शरीर सहित अपने बुरे कर्मों का त्याग कर दिया।

मैंने अपने जीवन जीने के तरीके को शुद्ध किया।

भाषण के माध्यम से खराब आचरण को छोड़कर। (4) [1188]

बुद्ध, उनकी शिक्षाओं और उनसे प्रसन्न होकर

सभा; उत्सुक, सम्मानजनक,

महान शिक्षाओं को सुनने का आदी;

मुझे बुद्ध के दर्शन करने की तीव्र इच्छा है। (5) [1189]

फिर मैंने एक बौद्ध भिक्षुणी के बारे में सुना, जो आस्था के माध्यम से मुक्ति पाने वालों में अग्रणी थीं।902

उस स्थान को प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हुए,

फिर मैंने तीनों प्रशिक्षण पूरे किए।903

दया चाहने वालों के लिए विश्राम, 904

इसके बाद, जाने वाले ने यह कहा: (6, 7ए-बी) [1190]905

“वह व्यक्ति जिसकी आस्था तथागत में दृढ़ है, जो डगमगा नहीं है,

901 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

902 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

903 का'स्सपे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कस्पा (बुद्ध) की व्यवस्था में"

904 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

905, अर्थात् तैंतीस देवता।

906 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज।

और जिनके नैतिक मूल्य907 सुंदर हैं,

कुलीन लोगों को प्रिय, और प्रशंसित; (7सी-डी, 8ए-बी) [1191]

जिसकी अंतर्दृष्टि निष्पक्ष है और जिसे सभा में आनंद मिलता है:

ऐसा कहा जाता है, "वह दुखी नहीं है;"

उसका जीवन व्यर्थ नहीं माना जाता। (8सी-डी, 9ए-बी) [1192]

इसलिए, हे बुद्धिमानों, अपने आप को समर्पित करो।

आस्था और नैतिकता के लिए,

धम्म की ओर - अंतर्दृष्टि और आनंद;909

बुद्ध के उपदेश का सार।" (9सी-डी, 10ए-बी) [1193]

यह सुनकर, अत्यंत प्रसन्न होकर,

मैंने उनसे अपनी इच्छा के बारे में सवाल किया।

फिर सर्वोच्च,910 असीम,911

गाइड,912 ने [इस तरह से] भविष्यवाणी की: (10सी-डी, 11ए-बी) [1194]

"सुंदर स्त्री, बुद्ध में प्रसन्न,913

आपको वह शुभ मनोकामना पूरी होगी। एक लाख युगों में।

ओक्काका के वंश में उत्पन्न,

जिसका नाम गौतम है

वह संसार में शिक्षक होगा। (11सी-डी, 12) [1195]

उस व्यक्ति के धर्म का योग्य उत्तराधिकारी ,

धम्म की वैध संतान को उसने सिगालक की माता नाम दिया।

शिक्षक का अनुयायी होगा।" (13) [1196]

यह सुनकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई कि मैं प्रेम से भरे हृदय से जीवन भर सेवा करता रहूँगा।

विक्टर, गाइड, मेरे अभ्यासों के माध्यम से।914 (14) [1197]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

907 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

908 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

909 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

910 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

911 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

912 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

913 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

914 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

मैं तब तावतिंसा गया। (15) [1198]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, गिरिब्बाजा में, 915 सर्वश्रेष्ठ शहर,

मैं अमीर करोड़पतियों के परिवार में पैदा हुआ था।

बहुत अधिक मात्रा में रत्नों के साथ। (16) [1199]

मेरे बेटे का नाम सिगालका था, जो गलत रास्ते पर चलने में आनंद लेता था और दृश्यों के जंगल में खो जाता था।

दिशाओं की पूजा करने के लिए उत्सुक। (17) [1200]

सड़क पर खड़े होकर, मार्गदर्शक बुद्ध ने उसे शहर की ओर आते हुए देखकर सलाह दी और उसकी प्रशंसा की।

निर्देश 917 भोजन के गोले के साथ। (18) [1201]

जब वे धम्म का उपदेश दे रहे थे , तब आनंद की अद्‌भुत चीखें सुनाई दीं; बीस मिलियन पुरुष और महिलाएं

शिक्षण में अंतर्दृष्टि प्राप्त की।921 (19) [1202]

फिर भीड़ में जाकर,

वेल-गॉन-वन का भाषण सुनकर, धारा-प्रवेश का फल प्राप्त करके,

मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (20) [1203]

कुछ ही समय बाद, बुद्ध के दर्शन की तीव्र इच्छा से, उनके माध्यम से ध्यान को परिष्कृत करते हुए,

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (21) [1204]

मैं बुद्ध के दर्शन के लिए प्रतिदिन 923 बजे जाता हूँ। मुझे उन्हें देखकर संतुष्टि नहीं मिलती।

केवल [उसका] आँखों को भाने वाला शरीर,924 (22) [1205]

सभी पूर्णताओं द्वारा निर्मित,

915 puṇṇā ti nāmaŋ

916 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

917 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

918 पाठ महामुने (भाषण) बीजेटीएस के साथ पीटीएस तदा मुनि ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

919 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

920 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

921 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

922 डांटो , या "वश में किया हुआ"

923 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

924 vimutt'o

सौभाग्य का उत्कृष्ट आश्रय स्थल,

उनका शरीर, सभी अच्छाइयों से परिपूर्ण था:

असंतुष्ट, मैं रह रहा हूँ 925 [वहाँ]। (23) [1206]

विजेता उस सद्‌गुण से प्रसन्न होकर मुझे उस सर्वोपरि स्थान पर बिठाया: "सिगालक की माता"

विश्वास द्वारा मुक्त किए गए लोगों में सबसे आगे।"926 (24) [1207]

मैंने "दिव्य श्रवण" जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। मैं एक महान ऋषि भी हूँ।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (25) [1208]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (26) [1209]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

हे महान वीर, आपकी उपस्थिति में। (27) [1210]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (28) [1211]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (29) [1212]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

925 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

926 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (30) [1213]

इस प्रकार वास्तव में भिक्खुनि सिगलाका-माता ने ये श्लोक कहे।

सिगलका-माता थेरी927 की कथा समाप्त हो गई है

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 35. सुक्का
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

35. सुक्का 928

इक्यावन युग पहले

नेता, जिसका नाम विपस्सी था, उठा, जो देखने में सुंदर था।

वह जिसकी निगाहें हर चीज़ पर टिकी हैं। (1) [1214]

मैं उस समय बंधुमती में था।

एक साधारण कुल में जन्म हुआ। ऋषि की शिक्षा सुनकर,

मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (2) [1215]

शिक्षा की विद्वान वाहक, कुशल उपदेशक, विविध प्रवचन देने वाली, मैं एक ऐसी नन थी जिसने अभ्यास किया।

बुद्ध का विधान। (3) [1216]

फिर जनता के साथ मित्रतापूर्ण ढंग से अनेक धम्म प्रवचन देने के बाद, वहीं से मेरा पुनर्जन्म हुआ।

तुसिता में वैभव से परिपूर्ण। (4) [1217]

इकत्तीस युगों बाद, सिख धर्म।

आग का ढेर, 930 प्रसिद्धि की धधकती आग, विजेता, सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता,

[बुद्ध,] 931 में दुनिया में अवतरित हुए। (5) [1218]

उसी समय आगे बढ़ते हुए, बुद्ध के उपदेशों में निपुण होकर, विजयी के वचनों को प्रकाशमान करते हुए,

फिर मैं तीस [देवताओं] के पास गया। (6) [1219]

नेता का नाम भी वेस्साभू था।

यह घटना इकत्तीस युगों बाद उत्पन्न हुई।

927 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

928 “पत्थर,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

929 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

930 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

931 रीडिंग °ब्रह्मचरियम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

और तब भी मैं वही था:932

[एक बौद्ध भिक्षुणी] विशाल ज्ञान के साथ। (7) [1220]

मैं धर्म का वाहक बनकर आगे बढ़ा हूँ ।

बुद्ध के 933वें उपदेश को प्रकाशमान किया। सुंदर देवताओं के नगर में चले गए।

मुझे बहुत आराम मिला। (8) [1221]

इस [वर्तमान] शुभ युग में, सर्वोच्च विजेता काकुसंध, 934 का उदय हुआ, उत्कृष्ट तेंदुआ, 935

और तब भी मैं वैसा ही था। (9) [1222]

आगे बढ़ गया, [मैं] प्रकाशित

ऋषि का विचार, जीवन भर रहेगा।936

वहाँ से गिरने के बाद, मैं इतनी दूर चला गया

तीस [देवताओं] के क्षेत्र के रूप में। (10) [1223]

और इसी युग में नेता कोनागमना

इसके बाद उत्कृष्ट दीपक 937 प्रकट हुआ।

सभी प्राणियों में सर्वोच्च। (11) [1224]

उस समय भी, तटस्थ धर्म के मार्ग पर चलते हुए, हे धम्म के विद्वान वाहक , मैं

बुद्ध के 938 उपदेश को प्रकाशमान किया। (12) [1225]

इस [भाग्यशाली] युग में भी

कस्सपा [बुद्ध,] सातवें ऋषि, उठे, जगत के शरणस्थल,939

गैर-शत्रुतापूर्ण एक, 940 मृत्यु का अंत.941 (13) [1226]

व्यवस्था में आगे बढ़ गया

उस हीरो अमंग मेन942 का भी,

932, अर्थात् तैंतीस देवता।

933 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

934 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

935 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

936 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

937 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

938 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

939 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

940 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज।

941 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

942 puṇṇā ti nāmaŋ

मैंने अच्छी शिक्षा को कंठस्थ कर लिया, पूछताछ में आत्मविश्वास था, (14) [1227]

बहुत नैतिक, साथ ही विनम्र भी।

तीनों प्रशिक्षणों में [अत्यंत] कुशल,943

धम्म पर अनेक प्रवचन देते हुए

जब तक मैं जीवित रहा, मित्रता के साथ।944 (15) [1228]

उस कर्म के फलस्वरूप, अच्छे इरादे और दृढ़ संकल्प के साथ, अपने मानव शरीर का त्याग करने के कारण,

मैं तब तावतिंसा गया। (16) [1229]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, गिरिब्बाजा में, 945 सर्वश्रेष्ठ शहर,

मैं अमीर करोड़पतियों के परिवार में पैदा हुआ था।

बहुत अधिक मात्रा में रत्नों के साथ। (17) [1230]

जब विश्व के नेता गौतम एक हजार भिक्षुओं से घिरे हुए राजगीर नगर में प्रवेश किया, तब

हजार आंखों वाले [ईश्वर:]948 (18) [1231] द्वारा प्रशंसा की गई

"संयमित व्यक्ति,949 पूर्व तपस्वियों950 के साथ संयमित;

मुक्त व्यक्ति,951 उन मुक्त लोगों के साथ;

[जिसका रंग] सोने के सिक्के जैसा था, भगवान राजगृह नगर में प्रवेश कर गए।" (19) [1232]953

बुद्ध की महिमा देखकर,

943 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

944 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

945 पाठ महामुने (भाषण) बीजेटीएस के साथ पीटीएस तदा मुनि ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

946 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

947 या गिरिब्बाजा, यहां राजगहां

948 सहसक्खेना , अर्थात्, देवताओं के राजा शक्र/इंद्र

949 डांटो , या "वश में किया हुआ"

950 पुराणजतिलेहि , शाब्दिक अर्थ, "पूर्व जटाधारी [तपस्वी]"

951 vimutt'o

952 Siṅgī-nikkha-savaṇṇo , शाब्दिक रूप से, "सुनहरे/अदरक के सिक्के के समान रंग वाला;" निक्खा एक आभूषण या एक भार भी हो सकता है। वैसे भी, जोर इस बात पर है कि बुद्ध सोने की तरह चमकदार थे।

953 ये पंक्तियाँ (PTS में 41 शब्दांश, BJTS में 40 शब्दांश [जो purāṇajaṭilehi के बाद ca को छोड़ देता है]) पूर्व-

पीटीएस और बीजेटीएस दोनों ने इसे एक ही श्लोक के रूप में प्रस्तुत किया है, हालांकि वे दो-चरणों वाली पंक्तियों को अलग-अलग तरीके से तोड़ते हैं और मैं इस "श्लोक" को छंद के अनुसार समझने में असमर्थ हूँ। क्या यह किसी गद्य पाठ का उद्धरण है? क्या यह अधिक जटिल छंद में लिखा गया कोई श्लोक है, जो प्रसारण के दौरान विकृत हो गया हो? मैंने अपदान में बाद वाली संभावना के सबसे निकट अनुवाद किया है , अर्थात् एक 12-12-12-12 श्लोक (जो प्रसारण प्रक्रिया में अपेक्षाकृत पहले सात अक्षरों [पीटीएस के पाठ के मामले में] या आठ अक्षरों [बीजेटीएस के पाठ के मामले में] के संभावित लोप का संकेत देता है (क्योंकि यह सभी मौजूदा पांडुलिपियों को प्रभावित करता है)। अपदान में कहीं और कभी-कभी पाए जाने वाले श्लोक-रूप के अनुरूप होने के अलावा , यह अंतर्निहित 12-12-12-12 संरचना उन मूल इकाइयों के लिए बहुत अच्छी तरह से काम करती है जो फिर चार अलग-अलग चरणों का निर्माण करती हैं।

और उसे सुनकर, गुणों का ढेर, 954

बुद्ध में मेरी रुचि जगाते हुए,

मैंने पूरी शक्ति से उसकी पूजा की। (20) [1233]

इसके कुछ समय बाद, धम्मदिन्ना की उपस्थिति में,956

अपने घर से निकल जाने के बाद,

मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (21) [1234]

बाल कटते समय मैंने सभी अशुद्धियों को नष्ट कर दिया। आगे बढ़ते हुए, कुछ ही समय में, मैंने सीख लिया।

[बुद्ध का] संपूर्ण प्रवचन। (22) [1235]

उसके बाद मैंने धम्म का प्रचार किया।

लोगों की एक विशाल सभा में।

जब धम्म का प्रचार किया जा रहा था, तब शिक्षा में अंतर्दृष्टि थी।957 (23) [1236]

हजारों लोगों को [अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हुए] देखकर, आश्चर्यचकित होकर, एक आत्मा,958 मुझसे बहुत प्रसन्न हुई,

राजगीर में घूमते हुए [यह कहा]: (24) [1237]

राजगीर के ये लोग शहद से मदहोश अप्सराओं की तरह क्यों व्यवहार कर रहे हैं, जब तक कि वे सुक्का का सम्मान नहीं कर रहे हों?

अमृतमय अवस्था का उपदेश कौन दे रहा है? (25) [1238]

मुझे लगता है कि बुद्धिमान लोग उस अप्रतिरोध्य और शुद्ध पेय का सेवन कर रहे हैं।

यात्रियों की तरह शक्ति प्रदान करने वाला

[बारिश के बादल से बारिश का पानी पीना]। (26) [1239]

मैंने महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है

[जैसे] "दिव्य कान" तत्व।

954 t'aŋ...'guna'sañc'a'y'aŋ

955 शाब्दिक रूप से, "पूजा की"

956 #23, ऊपर

957 शाब्दिक अर्थ, " बीस मिलियन लोगों को धम्म की अंतर्दृष्टि प्राप्त हुई ।" धम्मभिशमय , जिसका अर्थ है " धम्म की अंतर्दृष्टि", " धम्म में प्रवेश ", " धम्म की समझ " , या "धम्म में प्रवेश " , शिक्षा के मूल तत्वों पर दृढ़ पकड़ प्राप्त करना। बुद्धवंश में प्रत्येक बुद्ध के विवरण में इसे एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया गया है , जो वहां वर्णित बुद्ध-उपलब्धियों की कई श्रेणियों में से एक है।

958 y'akkho

959 y'e...na , शाब्दिक अर्थ, "वे लोग जिनके पास नहीं है"

960 PTS में payirupāsanti छंद को तोड़ता है; BJTS में upāsanti ऐसा नहीं करता। दोनों मूलतः एक ही क्रिया हैं, पहले वाले में अतिरिक्त pari < payir लगा हुआ है।

मैं भी एक गुरु हूँ, महान ऋषि, 961

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (27) [1240]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (28) [1241]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

हे महान वीर, आपकी उपस्थिति में। (29) [1242]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (30) [1243]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (31) [1244]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (32) [1245]

इस प्रकार भिक्षुणी सुक्का ने ये श्लोक कहे।

सुक्का थेरी 962 की कथा समाप्त हो गई है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपदान4.1-थेरिस सूची >> 36. अभिरूपानंद
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

36. अभिरूपानंदा 963

इक्यावन युग पहले

नेता, जिसका नाम विपस्सी था, उदय हुआ, जो देखने में सुंदर था,964

वह जिसकी निगाहें हर चीज़ पर टिकी हैं। (1) [1246]

मैं उस समय बंधुमती में था।

एक बड़े कुल में जन्मा, समृद्ध

961 रीडिंग महामुने (वोक.) पीटीएस महामुनि (नोम.) के लिए बीजेटीएस के साथ

962 यह बीजेटीएस का पाठ है। पीटीएस इसे भिक्खुनी सुक्का पढ़ता है।

963 "स्टोन," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

964 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

[और] समृद्ध; सुंदर और प्रिय,

मैं लोगों द्वारा पूजा जाता हूँ। (2) [1247]

विश्व के नेता, महान नायक विपस्सी के पास जाकर, उनकी शिक्षा सुनकर, मैं आगे बढ़ा।

पुरुषों के नेता की शरण में। (3) [1248]

नैतिक रूप से संयमित रहते हुए, जब सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति967 को निर्वाण प्राप्त हुआ, तो मैंने968 को एक सोने का छाता भेंट किया।

अवशेष स्तूप के ऊपर। (4) [1249]

मैं उदार और नैतिक हूं।

जीवन भर; वहाँ से गिरकर, अपने मानव शरीर को त्यागकर,

मैं तब तावतिंसा गया। (5) [1250]

मैं दस मायनों में दूसरों से बेहतर प्रदर्शन कर रहा था

वहाँ रहने वाले अन्य सभी देवता:

आकृतियों [और] ध्वनियों [और] सुगंधों के माध्यम से, स्वादों और [जिन चीजों को मैं] छूता हूँ, (6) [1251]

जीवनकाल, रंग-रूप, खुशी और प्रसिद्धि के मामले में भी

और इसी प्रकार सर्वोच्च शक्ति के माध्यम से

मैंने उन दस को प्राप्त करके प्रकाशमान किया। (7) [1252]

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, मेरा जन्म कपिलवस्तु में हुआ है।969

मैं नंदा नाम से प्रसिद्ध हूँ।

शाक्यान खेमाका की पुत्री। (8) [1253]

उपनाम970 “बहुत सुंदर”971

मेरी सुंदरता का संकेत दिया;972

जब मुझे विवेक प्राप्त हो गया,

मैं भव्य सौंदर्य से सुशोभित हूँ।973 (9) [1254]

965 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

966 रीडिंग ॰ब्रह्मचर्यम विद बीजेटीएस फॉर पीटीएस ॰ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

967, अर्थात् तैंतीस देवता।

968 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

969 यह पीटीएस भिक्षुणी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

970 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

971 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

972 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

973 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

फिर एक बहुत बड़ी लड़ाई हुई 974

शाक्यनों के बीच me975 से अधिक।

फिर मेरे पिता ने मेरा पुरोहिती संस्कार करवाया।

"शाक्यों नष्ट न होने दें।"976 (10) [1255]

इस तरह आगे बढ़ते हुए, यह सुनकर

क्योंकि परम पुरुष सौंदर्य से घृणा करता है, इसलिए मैं बुद्ध के पास नहीं गया।

अपनी सुंदरता पर गर्व करना। (11) [1256]

सलाह लेने भी नहीं जा रहा, मुझे बुद्ध के दर्शन करने से भी डर लगता है।

फिर विक्टर मुझे ले गया

एक चाल के माध्यम से उसकी उपस्थिति। (12) [1257]

मार्ग में चतुर, [बुद्ध]

तीन अलग-अलग स्त्रियों को दिव्य अप्सराओं के समान रूप में प्रकट किया गया:

[एक] युवा, [एक] बीमार, [तीसरा] मृत। (13) [1258]

उन्हें देखकर, मैं अत्यंत भावुक हो गया, और शरीरों में आनंद लेने की मेरी इच्छा समाप्त हो गई। मैं वहाँ अस्तित्व से ऊबकर खड़ा रहा।

तब नेता ने मुझसे यह कहा: (14) [1259]

"नंदा, इस जटिल ढेर को देखो, यह बीमार, घिनौना और सड़ा हुआ है।

इसमें से रिसाव हो रहा है और यह टपक रहा है।

मूर्ख लोगों का आनंद। (15) [1260]

एकाग्रचित्त होकर, दृढ़ता से, अशुद्धता पर अपना ध्यान केंद्रित करो।

जैसा यह है, वैसा ही वह भी है;

जैसा वह है, वैसा ही यह भी है। (16) [1261]

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि इस तरह दिन-रात परिश्रम करने से,

तुम अपनी बुद्धि से देख लोगे।

घृणा से मुँह मोड़कर।" (17) [1262]

उस [उद्देश्य] में देरी न करते हुए,

974 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

975 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज।

976 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

977 puṇṇā ti nāmaŋ

978 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

इस सब पर अच्छी तरह से विचार करने के बाद, मैंने इस शरीर को वैसे ही देखा जैसा वह है।

अंदर और बाहर। (18) [1263]

तब मुझे शरीरों से घृणा होती है, और आंतरिक रूप से मैं वासना से मुक्त हो जाता हूँ; मैं लापरवाह नहीं रहता, अब बंधनों में नहीं बंधा रहता।

शांति में, और [मैंने] निर्वाण प्राप्त कर लिया है। (19) [1264]

मैंने "दिव्य श्रवण" जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। मैं एक महान ऋषि भी हूँ, 980।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (20) [1265]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (21) [1266]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

हे महान वीर, आपकी उपस्थिति में। (22) [1267]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (23) [1268]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (24) [1269]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (25) [1270]

इस प्रकार भिक्षुणी अभिरूपानंद ने ये श्लोक कहे।

अभिरूपानंद थेरी 981 की कथा समाप्त हुई।

979 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

980 पाठ महामुने (भाषण) पीटीएस तदा मुनि के लिए बीजेटीएस के साथ ("तब ऋषि [नामवाचक];" पीटीएस वैकल्पिक तदा मुने , "तब, हे ऋषि")

981 यह पीटीएस भिक्षुणी अभिरूपानंद के लिए बीजेटीएस पाठ है।

टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 4.1-थेरिस सूची >> 37. अद्धकासिका

अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

37. अड्ढकासिका 982

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में,

ब्रह्मा के संबंधी, परम प्रसिद्ध, [बुद्ध] जिन्हें कश्यप983 के नाम से जाना जाता है

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का जन्म हुआ। (1) [1271]

उस समय, बुद्ध के उस संप्रदाय में दीक्षा प्राप्त करने के बाद,

मैं पांचों इंद्रियों में संयमित हूँ।

और मठवासी अनुशासन में।984 (2) [1272]

खाने-पीने में संयम बरतते हुए, मैं सतर्क रहने के लिए प्रतिबद्ध था, अभ्यास पर ध्यान केंद्रित करता था। एक बार [हालाँकि] गंदे मन से,

मैंने एक पवित्र 987 नन की मानहानि की

[यह कहकर,] "[वह] एक वेश्या है।" उस बुरे कर्म के कारण,

मैं एक [भयानक] नरक में जल रहा था। (3-4) [1273-1274]

उस कर्म के शेष फल के कारण,

मैं वेश्याओं के कुल में पैदा हुई थी, बार-बार पाप करती रही;

और [फिर] मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, (5) [1275]

मैं कसिअन समुदाय में, 988 में एक करोड़पति परिवार में पैदा हुआ था। 989 [पूर्व] ब्रह्मचर्य के कारण मैं

खूबसूरत,990 देवताओं के बीच अप्सरा की तरह। (6) [1276]

राजगीर जैसे सर्वश्रेष्ठ शहर में मेरी असाधारण सुंदरता को देखकर, उन्होंने मुझे 991 के कारण वेश्यावृत्ति में धकेल दिया।

[मेरी] पूर्व में निंदा की गई। (7) [1277]

982 "पत्थर," केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= "सुखद")

983 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

984 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्या [बुद्ध] की व्यवस्था में"

985 रीडिंग °ब्रह्मचर्यम, बीजेटीएस के साथ पीटीएस के लिए °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

986, अर्थात् तैंतीस देवता।

987 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

988 यह पीटीएस भिक्षुणी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

989 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में तो दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

991 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

अच्छी शिक्षा सुनने के बाद

जिसका उपदेश पूर्व अनुभवों से परिपूर्ण सर्वश्रेष्ठ बुद्ध ने दिया था।

मैं बेघर होकर निकल पड़ा। (8) [1278]

विजयदाता की उपस्थिति में जाने के बाद, दीक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखते हुए।

यह सुनकर कि बदमाश सड़क पर थे,

मुझे दूत द्वारा दीक्षा दी गई।996 (9) [1279]

मेरे सारे कर्म जलकर राख हो गए, पुण्य और पाप दोनों ही;

जन्म और पुनर्जन्म 997 पार हो गया,

और वेश्यावृत्ति को त्याग दिया गया है। (10) [1280]

मैंने "दिव्य श्रवण" जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। मैं एक महान ऋषि भी हूँ।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (11) [1281]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (12) [1282]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

आपकी उपस्थिति में, हे महान वीर। (13) [1283]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (14) [1284]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) [1285]

विश्लेषण के चार तरीके,

992 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है।

993 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

994 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

995 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

996 puṇṇā ti nāmaŋ

997 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (16) [1286]

इस प्रकार भिक्षुणी अड्ढकासिका ने ये श्लोक कहे।

अड्ढकासिका थेरी 998 की कथा समाप्त हो गई है।
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान 4.1-थेरिस सूची >> 38. पुणिका
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

38. पुण्णिका999

भगवान बुद्ध के मार्गदर्शन में विपस्सी, सिख धर्म और वेसाभु के मार्ग पर चलते हुए,

ऋषि काकुसंध [बुद्ध], कोनागमन, तटस्थ एक,

और बुद्ध कश्यप के बारे में,

मैं नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण एक नन हूँ।

चतुर, इंद्रियों पर [अच्छी तरह से] नियंत्रण रखने वाला। (1-2) [1287-1288]

शिक्षा के विद्वान वाहक, शिक्षा के अर्थ के जिज्ञासु, शिक्षा के अध्ययनकर्ता, शिक्षा के श्रोता

और शिक्षा का उपासक, (3) [1289]

मैं विजय के युग में लोगों के बीच उपदेश दे रहा हूँ। मेरे गहन ज्ञान के कारण,

मैंने दयालु साथियों को तुच्छ समझा।1001 (4) [1290]

और अब, अपने अंतिम पुनर्जन्म में, मैं श्रावस्ती में जन्मी एक जल-घड़ा चलाने वाली दासी हूँ, जो सर्वश्रेष्ठ नगर है।

अनाथपिंडी[का] के घर में.1002 (5) [1291]

पानी का बोझ ढोते हुए, मैंने एक विद्वान ब्राह्मण को ठंडे पानी में खड़ा देखा।

उसे देखने के बाद मैंने यह कहा: (6) [1292]

998 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्णिका के लिए

999 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

1000 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

1001 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

1002 पठन °ब्रह्मचर्यम, पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

"पानी ढोने के लिए मैं हमेशा ठंड में पानी के पास जाता हूँ।"

गुरु की 1003 छड़ी के डर से भयभीत,

गलतियों के भय से पीड़ित। (7) [1293]1004

किस बात से डरते हो, ब्राह्मण? ठंड से कांपते हुए तुम हमेशा पानी में उतर जाते हो, इतनी ठंड में।

आपके द्वारा अनुभव किया जा रहा है।" (8) [1294]1005

"पुणिक्ा, तुम निश्चित रूप से जानती हो।"

आप मुझसे पूछ रहे हैं कि कौन अच्छा कर्म कर रहा है और किसे नुकसान पहुंचा रहा है।

बुरे कर्मों का परिणाम (9) [1295]1008

चाहे वह बूढ़ा हो या जवान, चाहे वह बुरे कर्म करता हो,

केवल अपने ऊपर पानी छिड़ककर,

वह उस बुरे कर्म से मुक्त हो जाता है। (10) [1296]1010

मैंने जल से बाहर आते समय उनसे धम्म का श्लोक 1011 कहा । यह सुनकर वे बहुत भावुक हो गए;

आगे बढ़ने पर, वह एक अरहंत था। (11) [1297]

जब मेरा जन्म दास कुल में हुआ, तब मैंने पूरे सौ की संख्या पूरी की।1012

इसलिए उन्होंने मुझे "पूर्णकर्ता" नाम दिया,1013

और मुझे मेरी गुलामी से मुक्त किया। (12) [1298]

करोड़पति की सहमति मिलने पर, मैं बेघर हो गया। कुछ ही समय बाद,

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (13) [1299]

मैंने महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है

1003, अर्थात् तैंतीस देवता।

1004 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज।

1005 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

1006 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जिसमें अन्यत्र की तरह यहाँ भी Pesalā लिखा है।

1007 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

1008 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

1009 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

1010 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं होता।

1011 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज।

1012 pūrentī ūnakasataŋ , शाब्दिक अर्थ, "[मैं] एक अपूर्ण सौ को पूरा कर रही हूँ (या भर रही हूँ, यह उसके नाम के अर्थ पर आधारित कई शब्दों में से एक है)," अर्थात्, "मैं 100वीं दासी थी"

1013 puṇṇā ti nāmaŋ

[जैसे] "दिव्य कान" तत्व। मैं भी एक गुरु हूँ, महान ऋषि हूँ।

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (14) [1300]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (15) [1301]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

हे महान वीर, आपकी उपस्थिति में। (16) [1302]

ध्यान के माध्यम से, बहुत ज्ञान प्राप्त होता है;

सुनी-सुनाई बातों के माध्यम से ही व्यक्ति ने सीखा है;

लेकिन कर्म नष्ट नहीं होगा1014

उच्च कुल के लोगों के अभिमान के माध्यम से। (17) [1303]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (18) [1304]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (19) [1305]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (20) [1306]

इस प्रकार, भिक्षुणी पुन्निका ने ये श्लोक कहे।

पुन्निका थेरी 1015 की कथा समाप्त हुई।

1014 PTS का अर्थ है panassati , BJTS का अर्थ है vinassati

1015 बीजेटीएस पाठ, पीटीएस भिक्खुनी पुन्निका के लिए
टिपिटक >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 39. अम्बपाली
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला । अगला >>>>

39. अंबपाली 1016

महान ऋषि फुस्सा [बुद्ध] थे, [जैसे] चित्तीदार किरणों की माला।1017

मैं [उस बुद्ध की] सगी बहन थी।

बुद्ध के क्षत्रिय वंश में जन्म हुआ। (1) [1307]

उनकी शिक्षा को सुनने के बाद, अत्यंत स्पष्ट मन से, उन्हें बड़ी मात्रा में दान दिया।

मैं सुंदरता प्राप्त करने की आकांक्षा रखती थी। (2) [1308]

इकत्तीस युग पहले, 1018

विश्व के प्रमुख नेता सिख धर्म का उदय हुआ, जो विश्व का प्रकाशमान दीपक है।

तीनों लोकों का शरणस्थल, विजेता। (3) [1309]

फिर मेरा जन्म एक ब्राह्मण कुल में, सुंदर आरुण नगर में हुआ।

किसी बात पर क्रोधित होकर मैंने मुक्त मन वाली एक नन को शाप दिया। (4) [1310]

मैंने वेश्या की तरह दुर्व्यवहार किया, मैंने व्यवस्था को दूषित कर दिया।1019

उस बुरे कर्म के कारण, उस भिक्षुणी को इस प्रकार शाप देने के कारण,

मैं एक भयानक नरक में गया, जो भयंकर पीड़ा से भरा हुआ था।

वहाँ से गिरकर, [फिर से] पुनर्जन्म हुआ

मानव,1020 मैं एक तपस्वी था।1021 (5-6) [1311-1312]

दस हजार [विभिन्न] जन्मों तक मैं वेश्यावृत्ति में फंसी रही;

इस प्रकार मैं बुराई से मुक्त नहीं हुआ।

जैसे कि मैंने 1022 तीव्र विष खा लिया हो। (7) [1313]

कस्सपा के शासनकाल में, 1023

1016 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

1017 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

1018 कासापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

1019 पठन °ब्रह्मचर्यम, पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

1020, अर्थात् तैंतीस देवता।

1021 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज।

1022 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

1023 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ता है।

मैंने ब्रह्मचर्य का पालन किया (ननहुयन का पालन किया) 1024। उस कर्म के फलस्वरूप मेरा जन्म हुआ।

तीस के शहर में.1025 (8) [1314]

जब मेरा अंतिम पुनर्जन्म स्वतःस्फूर्त रूप से हुआ,1026

मेरा जन्म आम के पेड़ों की शाखाओं के बीच हुआ था;

इसलिए मैं “आम-सुरक्षित” था। (9) [1315]

दस मिलियन प्राणियों के साथ, जो इस युग में आगे बढ़े,1027

मैंने अविचल अवस्था प्राप्त कर ली।

बुद्ध की वैध पुत्री। (10) [1316]

मैंने "दिव्य श्रवण" जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। मैं एक महान ऋषि भी हूँ, 1028

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (11) [1317]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (12) [1318]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

आपकी उपस्थिति में, हे महान वीर। (13) [1319]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (14) [1320]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (15) [1321]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

1024 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

1025 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

1026 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

1027 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं है

1028 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (16) [1322]

इस प्रकार भिक्षुणी अंबपाली ने ये श्लोक कहे।

भिक्षुणी अंबपाली की कथा समाप्त होती है।

टिपिटका >> सुत्त पिटक >> खुद्दक निकाय >> अपादान >> अपादान4.1-थेरिस सूची >> 40. सेला
अनुवादक: जेएस वाल्टर्स

नोट: इसे यथावत प्रस्तुत किया गया है।

<<<< पिछला

40. सेला 1029

इस [वर्तमान] सौभाग्यशाली युग में,

ब्रह्मा के सगे संबंधी, परम प्रसिद्ध, कस्सपा के नाम से जाने जाने वाले बुद्ध।

सर्वश्रेष्ठ वाद-विवादकर्ता का जन्म हुआ। (1) [1323]

मैं श्रावस्ती नामक एक शानदार शहर में एक गृहस्थ बौद्ध परिवार में पैदा हुआ हूँ।

उस शानदार विक्टर को देखने के बाद,

और [उन्हें] धम्म का उपदेश देते हुए सुनकर , (2a-d)1030 [1324]

जब भी मैं उस महान नायक की शरण में गया, मैंने नैतिकता का मार्ग अपनाया।

बड़ी आबादी के बीच, (2e-f, 3a-b) [1325]

पुरुषों का महारथी अपने सर्वोच्च ज्ञानोदय की व्याख्या कर रहा था।

ऐसी बातें जो पहले कभी सुनी नहीं गई थीं,

“[जीवन] पीड़ा है,” (3सी-एफ) [1326] से शुरू करते हुए

यह सुनकर और इसे अपनाकर, मेरे भीतर अंतर्दृष्टि, चिंतन, ज्ञान, विज्ञान और अंतर्ज्ञान का विकास हुआ।

और मैंने भिक्षुओं से उनके बारे में पूछा। (4) [1327]

कस्सपा के शासनकाल में, 1031

मैंने ब्रह्मचर्य का पालन किया।1032

उस कर्म के फलस्वरूप मेरा जन्म हुआ।

तीस के शहर में.1033 (5) [1328]

1029 “स्टोन,” केवल यहीं ज्ञात है, लेकिन मलालासेकेरा द्वारा इसे एक ऐतिहासिक नन के रूप में माना गया है, डीपीपीएन II: 1290. बीजेटीएस पढ़ता है

P'esalā , यहाँ और इस apadāna में अन्यत्र (= “सुखद”)

1030 पीटीएस इस और अगले श्लोक को छह-चरणों वाले श्लोकों के रूप में प्रस्तुत करता है, जिसमें कुल तीन श्लोकों में वही सामग्री उसी क्रम में प्रस्तुत की जाती है जिस क्रम में बीजेटीएस चार श्लोकों में प्रस्तुत करता है।

1031 का'सापे 'जिनसासने , लिट., "विक्टर, कास्पा [बुद्ध] की व्यवस्था में"

1032 पठन °ब्रह्मचर्यम, पीटीएस के लिए बीजेटीएस के साथ °ब्रह्मचरम , शाब्दिक अर्थ, "ब्रह्म-जीवन", "पवित्र जीवन", "ब्रह्मचर्य"

1033, अर्थात् तैंतीस देवता।

और अब, मेरे अंतिम पुनर्जन्म में, एक बड़े करोड़पति परिवार में जन्म लेकर, मैंने उनसे संपर्क किया और उनके बारे में सुना।

बुद्ध की महान सत्य से परिपूर्ण शिक्षा, (6) [1329]

वहाँ से निकलने के कुछ ही समय में मैंने सत्य के मूल सिद्धांतों को समझ लिया; सभी अशुद्धियों को दूर करते हुए,

मैंने अरहंत पद प्राप्त किया। (7) [1330]

मैंने "दिव्य श्रवण" जैसी महाशक्तियों में महारत हासिल कर ली है। मैं एक महान ऋषि भी हूँ, 1034

दूसरों के हृदयों में मौजूद ज्ञान का। (8) [1331]

मुझे अपने पूर्व जन्म याद हैं; मेरी "दिव्य दृष्टि" शुद्ध हो गई है।

सभी अशुद्धियाँ नष्ट हो गई हैं;

मैं पुनर्जन्म नहीं लूंगा। (9) [1332]

अर्थ में और शिक्षा, व्युत्पत्ति और उपदेश में,

मेरा यह ज्ञान उत्पन्न हुआ था

आपकी उपस्थिति में, हे महान वीर। (10) [1333]

मेरे सारे दोष अब जलकर राख हो गए हैं; समस्त नया अस्तित्व नष्ट हो गया है। टूटी हुई जंजीरों वाले हाथियों की तरह,

मैं बिना किसी बंधन के जी रहा हूँ। (11) [1334]

मेरे लिए बेस्ट बुद्धा की उपस्थिति में रहना बहुत अच्छा अनुभव था।

तीनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त हो जाते हैं;

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (12) [1335]

विश्लेषण के चार तरीके और ये आठ मुक्ति,

छह विशेष ज्ञान प्राप्त किए गए,

मैंने वही किया है जो बुद्ध ने सिखाया था! (13) [1336]

इस प्रकार भिक्षुणी सेला ने ये श्लोक कहे।

सेला थेरी (1035) की कथा समाप्त हुई।

समीक्षा:

1034 रीडिंग महामुने विद बीजेटीएस (और पीटीएस ऑल्ट.) फॉर पीटीएस महामुनि , ग्रेट सेज.

1035 यह पीटीएस भिक्खुनी सेला के लिए बीजेटीएस पाठ है।

क्षत्रिय और ब्राह्मण, इसी तरह उप्पलादायिका, सिगलामाता और सुक्का,

अभिरूप, अधकासिका,

वेश्या, पुण्णा और बौद्ध भिक्षुणी अंबपाली भी।

और सेला [तब] दसवां बनाता है।1036

यहां दो सौ श्लोक हैं, साथ ही बयालीस और श्लोक हैं।1037

क्षत्रिय अध्याय, चौथा अध्याय।1038

और फिर अध्यायों का सारांश है: सुमेधा, एकुपोसाथा,

कुण्डलकेसी खत्तिया

एक हजार तीन सौ श्लोकों के साथ सैंतालीस और श्लोक मिश्रित हैं। उद्दाना श्लोकों के साथ।

जो लोग जानते हैं, उनके द्वारा गिने जाने पर, एक हजार तीन सौ आयतें और सत्तावन [अधिक] हैं।1039

थेरी -अपदान का समापन 1040 में हुआ।

अपदान समाप्त हुआ

1036 यह पंक्ति केवल BJTS में है, जो यहाँ और अन्यत्र Pesalā पढ़ती है।

1037 अध्याय में छंदों की गणना करने वाले ये अंतिम दो चरण, अपेक्षित अध्याय सारांश के अधिकांश भाग की तरह, BJTS में दिखाई देते हैं लेकिन PTS में नहीं।

1038 यह केवल BJTS में दिखाई देता है, और अध्याय सारांश के बाद के बजाय पहले दिखाई देता है।

1039 यह उपसंहार केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS इसे छोड़ देता है।

1040 यह केवल BJTS में दिखाई देता है; PTS में यह नहीं होता।